

विदेह - प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

विदेह

VIDEHA e-JOURNAL · SINCE 2000

अंक

४८१

विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर

०१ अक्टूबर २०२६ · वर्ष १९ · ISSN 2229-547X

www.videha.co.in

विदेह ४५१

विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलनः मानुषीमिह संस्कृताम्

सम्पादकः गजेन्द्र ठाकुर।

[विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X Videha e-Journal (since 2000) at www.videha.co.in]

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट (©) धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ, अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादन अथवा संचारन-प्रसारण नै कएल जा सकैत अछि।

(c) २०००-२०२६. सर्वाधिकार सुरक्षित। भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , <http://www.geocities.com/ggajendra> आदि लिंकर आ अखनो ५ जुलाई २००४ क पोस्ट <http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html> केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि (किछु दिन लेल <http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html> लिंकर, सीत wayback machine of [https://web.archive.org/web/*//videha.358capture\(s\)from2004to2016-http://videha.com/भालसरिकगाछ-प्रथममैथिलीब्लॉग/मैथिलीब्लॉगकएग्रीगेटर/](https://web.archive.org/web/*//videha.358capture(s)from2004to2016-http://videha.com/भालसरिकगाछ-प्रथममैथिलीब्लॉग/मैथिलीब्लॉगकएग्रीगेटर/)।

ई मैथिलीक पहिल इन्टरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ “विदेह” पड़लै। इन्टरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे <http://www.videha.co.in/> पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब “भालसरिक गाछ” जालवृत्त “विदेह” ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers and writers to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, prose and verse in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili and from Maithili into English. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

(c)२०००-२०२६. विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA. सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur. In respect of materials e-published in Videha, the Editor, Videha holds the right to create the web archives/ theme-based web archives, right to translate/ transliterate those archives and create translated/ transliterated web-archives, and the right to e-publish/ print-publish all these archives. रचनाकार/ संग्रहकर्ता अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना/ संग्रह (संपूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकार/ संग्रहकर्ता मध्य) editorial.staff.videha@zohomail.in केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमे पठा सकैत छथि, संगमे ओ अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो सेहो पठाबथि। एतऽ प्रकाशित रचना/ संग्रह सभक कौपीराइट रचनाकार/ संग्रहकर्ताक लगमे छन्हि आ जतऽ रचनाकार/ संग्रहकर्ताक नाम नै अछि ततऽ ई संपादकाधीन अछि। सम्पादक: विदेह ई-प्रकाशित रचनाक वेब-आर्काइव/ थीम-आधारित वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार, ऐ सभ आर्काइवक अनुवाद आ लिप्यंतरण आ तकरो वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार, आ ऐ सभ आर्काइवक ई-प्रकाशन/प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ऐ सभ लेल कोनो रॉयल्टी/पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रॉयल्टी/पारिश्रमिकक इच्छुक रचनाकार/संग्रहकर्ता विदेहसँ नै जुड़थु। विदेह ई पत्रिकाक मासमे दू टा अंक निकलैत अछि जे मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ www.videha.co.in पर ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

Font/Keyboard Source: <https://fonts.google.com/>, <https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts>, <https://keyman.com/>

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@zohomail.in. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

© Preeti Thakur (sales.videha@gmail.com) Cover design: AUM GAJENDRA THAKUR

VIDEHA:451



समानान्तर परम्पराक विद्यापति- चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा।

for the writers, readers, and listeners of Mithilā,

who have kept the lamp of Maithili burning

through a thousand years of storms

.....

“The Parallel is not the marginal

but the truthful, in long delay.”

Mānuṣīm iha saṁskṛtām

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान्- मानुषीमिह संस्कृतम्।

मिथिलाक ओइ लेखक,

पाठक आ श्रोता लोकनि लेल,

जे सहस्र वर्षक झंझावात मे सेहो

मैथिलीक दीप प्रज्वलित रखने छथि।

समानांतर कात-करोट मे हएब नै अछि,

वरन् ई अछि असल सत्य, जे अपन समय लेलक अछि।

अनुक्रमणिका / CONTENTS

विदेह अंक ४५१ [०१ अक्टूबर २०२६]

वर्ष १९ मास २५६ ISSN 2229-547X

खण्ड २ क समस्त आलेख आ कविताक पृष्ठ-संकेत

०.१.अंक ४५० पर टिप्पणी.....१

गद्य Prose

१.१. हितनाथ झा- मैथिली साहित्यमे तारानाथ झा एवं हुनक परिवारक योगदान २९.....३

१.२. कल्पना झा- मैथिली साहित्यमे श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार' एवं हुनक परिवारक
योगदान-१०.....११

१.३. लालदेव कामत- एखन बजबाक समय अछि : पाठकीय प्रतिक्रिया.....१७

१.४. प्रीति कुमारी- समकालीन भारतीय साहित्य पत्रिका अंक - २४६ वर्ष -४७ ,मास जुलाई
-अगस्त २०२६ मादे.....२०

१.५. प्रणव कुमार झा- प्लास्टिकक बढ़ैत उपयोग, कचरा प्रबंधनक संकट आ विकल्पक खोज
.....२४

१.६. आचार्य रामानंद मंडल-गोस्वामी बनाम ब्राह्मण/ मिथक बनाम चमत्कार.....३७

१.७. गजेन्द्र ठाकुर — ८२ टा चयनित कथा : आधुनिक साहित्यिक समीक्षा.....४२

१.८. गजेन्द्र ठाकुर — पाँच प्रतिशत अन्हार : विस्तृत आलोचनात्मक अध्ययन.....८५

१.९. गजेन्द्र ठाकुर — नित नवल वृषेश चन्द्र लाल.....१२६

१.१०. गजेन्द्र ठाकुर — नित नवल कमला चौधरी.....३०८

१.११. गजेन्द्र ठाकुर — नित नवल ललिता झा.....३८२

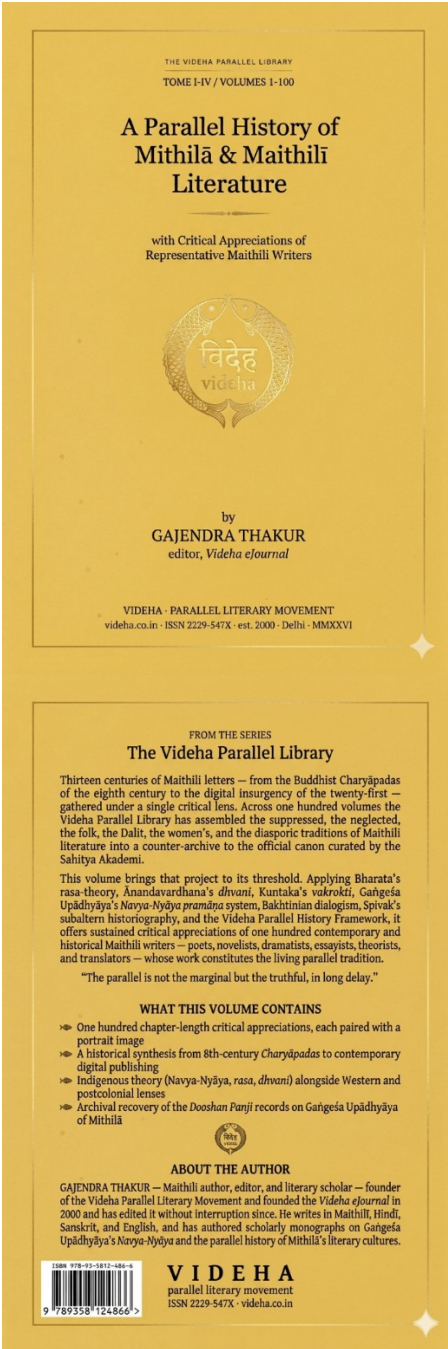
१.१२. गजेन्द्र ठाकुर — नित नवल वीरेन्द्र मल्लिक.....	४१३
१.१३. गजेन्द्र ठाकुर — नित नवल योगानन्द झा.....	५३९
१.१४. गजेन्द्र ठाकुर — नित नवल कुणाल.....	८१९

पृष्ठ-संख्या खण्ड २ के छपल पृष्ठाङ्क अनुसार अछि; मूल अध्ययन-पोथीसभक आन्तरिक पृष्ठाङ्क ओहिसँ भिन्न भऽ सकैत अछि।

पद्य Poetry

२.१. अशोक कुमार ठाकुर-बिहारक बाढ़िक पुकार.....	८६८
२.२. राम शंकर झा "मैथिल"-हे कान्हा.....	८७१
२.३. संतोष कुमार राय 'बटोही'- जंतर- मंतर.....	८७५
२.४. आशीष अनचिन्हार- दू टा गजल.....	८७७
२.५. तेलुगु काव्य: काठक घोड़ा [मूल तेलुगु 'कोय्या गुर्रम'] मूल तेलुगु: नग्नमुनि (मानेपल्लि हृषीकेशवराव) मैथिली अनुवाद: मानेश्वर मनुज [खण्ड १२].....	८७९

LA PARALLEL HISTORY OF MITHILA & MAITHILI LITERATURE [TOME 1-4; VOLUMES 1-100] BY GAJENDRA THAKUR



APPENDIX: METHODOLOGICAL NOTE

The Nepal Bikram Samvat years cited have been converted to approximate CE years using the standard offset of BS minus 56–57 years. Web sources consulted include the Videha digital archive (videha.co.in). All URLs were last accessed April 2026. This research was

prepared using primary texts, and standard academic resources. All quoted material is from the cited sources. For the most current scholarship, consult the Videha Parallel History series at www.videha.co.in/gajenthakur.htm.

A PARALLEL HISTORY OF MAITHILI LITERATURE: INTRODUCTION

DALIT LITERARY CRITICISM: TELUGU, GUJARATI, AND ODIS DALIT LITERATURE IN MAITHILI TRANSLATION

GANGES UPADHYAYA: LIFE, LOGIC, AND LEGACY IN THE NAVYA-NYAYA TRADITION [NAVYA-NYAYA'S HIERARCHICAL USE OF LIMITORS IS COMPATIBLE WITH MODERN ARTIFICIAL INTELLIGENCE AND NATURAL LANGUAGE PROCESSING (NLP)]

MITHILA & MAITHILI: CRITICAL ANALYSIS OF INSTITUTIONS

THE MAITHILI GHAZAL

VIDEHA (ISSUE 1-350) SADEHA SERIES (1-37)

VIDEHA ISSUES 351-438

VIDEHA MAITHILI PARALLEL DRAMA THEATRE

VIDEHA PARALLEL AUDIO VIDEO ARCHIVE

VIDEHA PARALLEL CHILDREN'S LITERATURE

Abdur Razzak, Abha Jha, Abhilash Thakur, Achhe Lal Shastri, Ajit Kumar Jha, Amit Mishra, Amod Kumar Jha, Amrendra Yadav, Anamika Raj, Anand Kumar Jha, Anil Mallik, Anjani Kumar Verma, Anmol Jha, Arvind Thakur, Ashish Anchinhar, Ashok (kathakar Ashok), Ashraf Rain, Dr. Bacheshwar Jha, Badri Nath Roy 'Amatya', Pt. Bal Govind 'Arya', Bechan Thakur, Pandit Bhavnath Jha, Bibhuti Anand, Bijayendra Jha, Binay Bhushan, Bindeshwar Thakur, Chandan Kumar Jha, Dinesh Kumar Mishra, Durganand Mandal, Gajendra Thakur, Ghanashyam Ghanero, Gopalji Jha 'Gopesh', Gyanvardhan Kanth, Harimohan Jha, Hitendra Gupta, Hitnath Jha, Hriday Narayan Jha, Ilarani Singh, Jagdanand Jha 'Manu', Jagdish Chandra Thakur 'Anil', Jagdish Prasad Mandal, Jhauli Paswan, Jitendra Kumar Jha 'Jeetu', Dr. Kailash Kumar Mishra, Kalikant Jha 'Buch', Kalpana Jha, Kalpana Jha, Bokaro, Kalpana Jha, Delhi, Kalpana Jha, Patna, Kameshwar Choudhary, Kameshwar Jha 'Kamal', Dr. Kamini Kamayini, Kamla Chaudhary, Kapileshwar Raut, Kedar Nath Chaudhary, Dr. Kirtinath Jha, Dr. Kishan Karigar, Krishna Kumar Kashyap, Kumar Manoj Kashyap, Kumar Pawan, Kundan Kumar Karn, Kusum Thakur, Lal Dev Kamat, Lalita Jha, Lallan Prasad Thakur, Laxman Jha 'Sagar', Mala Jha, Manmohan Jha, Meena Jha, Mithilesh Kumar Jha, Munnaji, Munnaji, Munni Kamat, Nabo Narayan Mishra, Nagendra Kumar, Nand Kumar Mishra 'Nand', Nand Vilas Roy, Nanda Vilas Ray, Narayan Yadav, Narayanji Chaudhary, Narendra Jha, Navendu Kumar Jha, Neeraj Renu, OM Prakash Jha, Panna Jha, Phanishwar Nath Renu, Prabhat Rai Bhatt, Pradeep Bihari, Pradeep Pushpa, Pranav Jha, Prayas Premi Maithil, Preeti Thakur, Premilata Mishra 'Prem', Premshankar Singh, Rabindra Narayan Mishra, Rajdeo Mandal, Rajeev Ranjan Mishra, Rajnandan Lal Das, Ram Bharos Kapari 'Bhramar', Ram Chandra Roy, Ram Sogarth Yadav, Ram Vilas Sahu, Acharya Ramanand Mandal, Prof. Dr. Ramawatar Yadav, Ramdeo Prasad Mandal 'Jharudar', Ramesh, Ramesh Narayan, Rameshwar Prasad Mandal, Pandit Ramji Chaudhary, Ramji Prasad Mandal, Acharya Ramlochan Sharan, Ramlochan Thakur, Ravi Mishra Bhardwaj, Ravibhushan Pathak, Ravindra Nath Thakur, S.C. Suman, Sandeep Kumar Safi, Sanju Das, Santosh Kumar Mishra, Santosh Kumar Roy 'Batohi', Satyanand Pathak, Shail Jha 'Sagar', Dr. Shambhu Kumar Singh, Shanti Lakshmi Chaudhary, Shardinu Chaudhary, Shashi Bala, Shashidhar Kumar 'Videh', Shiv Kumar Jha 'Tillu', Dr. Shiv Kumar Prasad, Shivshankar Singh Thakur, Shivshankar Srinivas, Dr. Shubh Kumar Barnwal, Shyam Darihare, Siyaram Jha 'Saras', Srikanth Shekhar 'Ajneya', Subhash Chandra Yadav, Subhash Kumar Kamat, Subodh Jha, Subodh Kumar Thakur, Sujit Kumar Jha, Sushil, Sweta Jha Chaudhary, Taranand Viyogi, Prof. Udaya Narayana Singh Nachiketa, Umesh Mandal, Umesh Paswan, Veena Thakur, Vibha Rani, Vibhuti Anand, Vijaynath Jha, Vineet Utpal, Yoganand Jha, Prof. Dr. Yogendra P. Yadava, Yogendra Pathak Viyogi

A Parallel History of Mithila & Maithili Literature, Original Poem in Maithili, Translated into English, Children's Literature Theory, Children's Picture-Story Literature, Contemporary Mithila Artists, Contemporary Mithila Artists, Dalit and Subaltern Literature, Dalit Literary Criticism, Dalit Literary Criticism — Gujarati Dalit Literature in Maithili Translation, Dalit Literary Criticism — Odia Dalit Literature in Maithili Translation, Dalit Literary Criticism — Telugu Dalit Literature in Maithili Translation, Digital Maithili Children's Literature, Digital Maithili Literature, The Epistemology of Parallelism — Videha Sadeha Series and the Maithili Digital Renaissance, Gangesa Upadhyaya / Navya-Nyāya, Gangesa Upadhyaya — Life, Logic, and Legacy in the Navya-Nyaya Tradition, Institution Critical Analysis, Language Transmission, Laprek vs Bihani Kathā, Maithili Bihani Kathā — The Seed Story Tradition in Maithili Literature, The Maithili Ghazal — History, Theory, Revival, and the Anchinhar Era, Maithili Micronarrative, Mithila & Maithili — Critical Analysis of Institutions, Awards and Recognition Frameworks, Mithila & Maithili Institution Critical Analysis, Parallel Literature Movement, Seed Story Tradition, Tirhuta / Mithilakshar, Videha 351–438 Critic, Videha Children Literature Expanded, Videha Children Literature Expanded — Parallel Children Literature in Maithili, Videha eJournal, Videha Issues 1–350, Videha Issues 351–438, Videha Issues 351–438 — Epistemological and Canonical Transformations, The Videha Maithili Parallel Drama Theatre, Videha Maithili Parallel Drama Theatre, The Videha Maithili Parallel Drama Theatre — Critical Historiography and Epistemological Analysis, The Videha Parallel Audio Video Archive, Videha Parallel Audio Video Archive, The Videha Parallel Audio Video Archive — Digital Remediation and Subaltern Historiography, Videha Parallel Audio Video Critic, Videha Parallel Children Literature, Videha Parallel Drama Critic, Videha Parallel History Framework, Videha Sadeha 1–37 / Issues 1–350 Critic, Videha Sadeha, Videha Sadeha Series 1–37, Vidyapati, the Primal Poet of Maithili (Pre-Jyotirishvara), Women's Writing, Young Readers in Maithili
... AND MORE TO COME IN TOME 5.

A PARALLEL HISTORY OF MITHILA & MAITHILI LITERATURE [TOME 1-4; VOLUMES 1-100] BY GAJENDRA THAKUR

[ISBN NUMBER: 978-93-5812-486-6]

GOOGLE PLAY BOOK [TOME 1-4; VOLUMES 1-100]

<https://play.google.com/store/books/details?id=uvjREQAAQBAJ>

GOOGLE PLAY AUDIOBOOK [TOME 1-4; VOLUMES 1-100]

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAEBas1rzEM>

AMAZON KINDLE [TOME 1-4; VOLUMES 1-100]

<https://www.amazon.in/dp/B0GX2XRKM7>

POTHI.COM HARDBACKS

POTHI TOME 1 [VOLUMES 01-25]

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-parallel-history-mithila-maithili-literature/>

POTHI TOME 2 [VOLUMES 26-50]

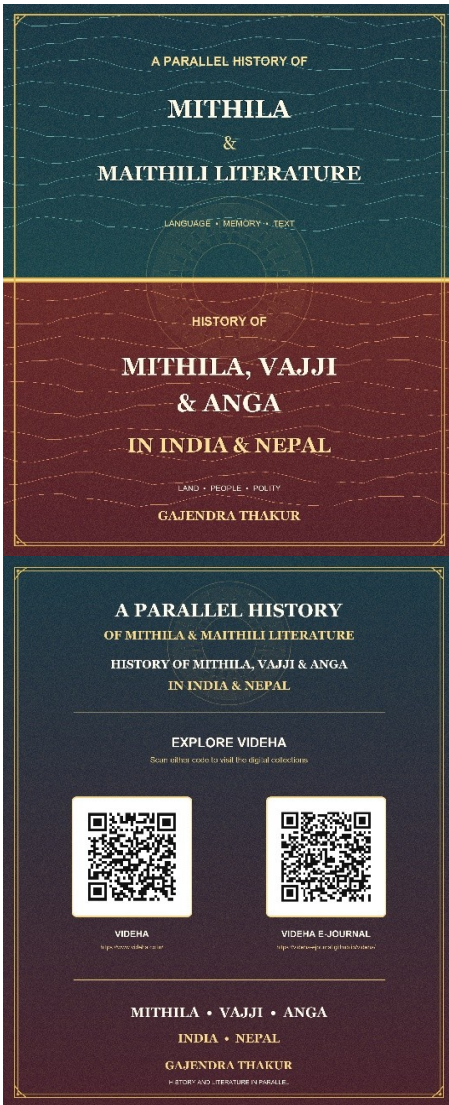
<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-parallel-history-mithila-maithili-tome-2/>

POTHI TOME 3 [VOLUMES 51-75]

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-parallel-history-mithila-maithili-literature-volume-1-100-tome-3-volume-51-75-b/>

POTHI TOME 4 [VOLUMES 76-100]

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-parallel-history-mithila-maithili-literature-volume-1-100-tome-4-volume-76-100/>



HISTORY OF MITHILA, VAJJI & ANGA IN INDIA & NEPAL: FROM PREHISTORY TO THE CONTEMPORARY PERIOD [A PARALLEL HISTORY OF MITHILA & MAITHILI LITERATURE] VOLUME I

POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-history-of-mithila-vajji-anga-india-nepal/>

Google Playbook

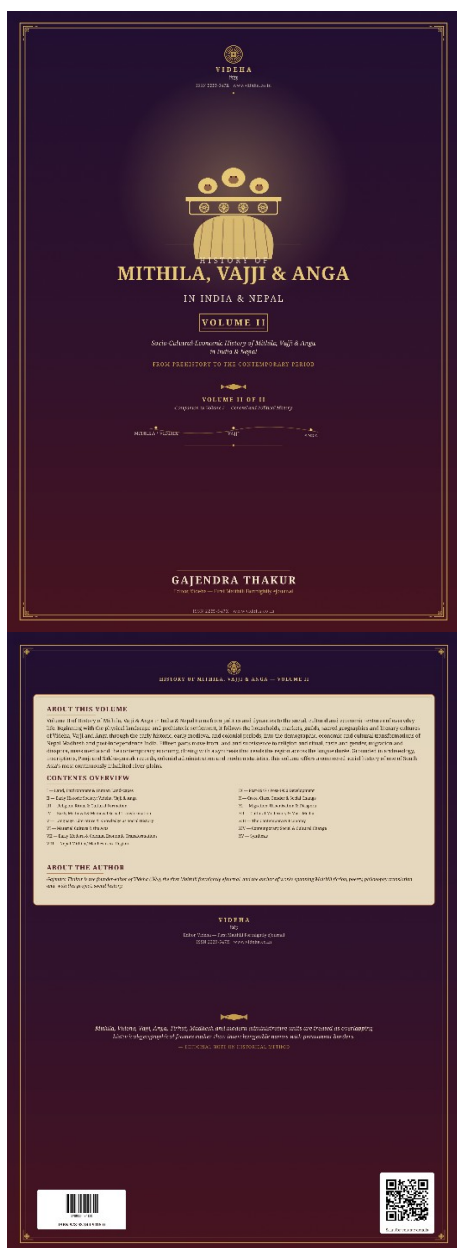
<https://play.google.com/store/books/details?id=xisIEgAAQBAJ>

Google Play Audiobook

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAEAG7I6uSM>

AMAZON KINDLE

<https://www.amazon.in/dp/B0HHJ27ZG4>



HISTORY OF MITHILA, VAJJI & ANGA: SOCIO-CULTURAL-ECONOMIC HISTORY OF MITHILA, VAJJI & ANGA IN INDIA & NEPAL FROM PREHISTORY TO THE CONTEMPORARY PERIOD [A PARALLEL HISTORY OF MITHILA & MAITHILI LITERATURE] VOLUME II

POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-history-of-mithila-vajji-anga-in-india-nepal-volume-ii-part-1/>

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-history-of-mithila-vajji-anga-in-india-nepal-volume-ii-part-ii/>

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-history-of-mithila-vajji-anga-in-india-nepal-volume-ii-part-3/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=qKEJEqAAQBAJ>

Google Play Audiobook

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAEFAGGTJZJM>

Amazon Kindle

<https://www.amazon.in/dp/B0HHYHNXZ7>

II. DECODING PANJI: VOLUME I-VI

Decoding the Panji of Mithila

Surprising Insights from India and Nepal's Oldest Social Network

The Panji system of Mithila is a remarkable example of how communities preserved, recorded and transmitted social memory across generations. Spanning centuries, it functions as one of the world's oldest social networks—long before the digital age. This book decodes the structure, purpose and significance of Panji, bringing to light its value for understanding kinship, migration, marriage alliances and societal organization in India and Nepal.

Bridging tradition with modern research, this work offers surprising insights for scholars of sociology, anthropology and genomic genealogy. It opens new pathways for interdisciplinary studies, showing how ancient records can inform contemporary social science and genealogical mapping.

Gajendra Thakur



ISBN 978-93-5915-894-5

www.videha.co.in



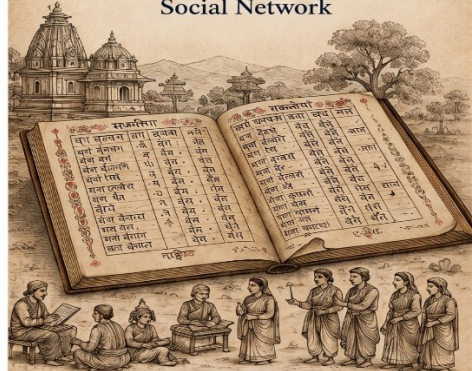
ISBN



videha.co.in

Decoding the Panji of Mithila

Surprising Insights from India and Nepal's Oldest Social Network



For the Research Students of Sociology, Anthropology and Genome/ Genealogical Mapping

Gajendra Thakur

Editor

Videha Maithili eJournal

VIDEHA

DECODING THE PANJI OF MITHILA VOLUME II

Genealogical Mapping, Mūla, Dūṣan, and the Videha Panji Search System

Panji is Mithila's grammar of memory.
पञ्जी मिथिलाक स्मृतिक व्याकरण अछि।

Gajendra Thakur
Editor
Videha — First Maithili Fortnightly eJournal
www.videha.co.in

Decoding the Panji of Mithila Volume II

Decoding the Panji of Mithila Volume II introduces Mithila's Panji Prabandha as a layered archive of genealogy, marriage rules, mūla, mūlāgrāma, gotra-pravara, maternal lines, scholarly titles, Dūṣan records, village memory, and historical persons. The book explains Panji as genealogical mapping, not modern DNA, and proposes the Videha Panji Search System as a responsible digital search aid.

Important Ethical Note

Panji records are historical and genealogical sources. They are not modern genetic proof, legal proof, or automatic marriage clearance. Dūṣan records must not be used to stigmatize living persons, families, villages, or communities.

Scan to read
पुढ़ खोलनाक लेल स्कैन करू



Videha — First Maithili Fortnightly eJournal
www.videha.co.in

VIDEHA EDITIONS

DECODING THE PANJI OF MITHILA
VOLUME II • GENELOGICAL MAPPING VOLUME II, KHAND 2

In the third volume of this undertaking, Gajendra Thakur turns to the Uptia Panji — one of Mithila's genealogical registers — and submits it to a discipline rarely brought to manuscript genealogy before: the index, whose rigour of semantic mapping, what reveals is neither pure philology nor pure science, but a third thing — a complete, line-by-line decoding of a record that has long outlived the families it describes. Continuing the work begun in Volumes I and II, this Khand 2 of Genome-Mapping Volume I carries Mithila's tradition of written memory into the grammar of the genome itself.

"A Panji is not read so much as re-entered — each name a doorway back into the house that bore it."

© 2023 VIDEHA EDITIONS

EDITED BY
Gajendra Thakur
Videha • ISBN: 2287-912X

VOLUME II OF THE SERIES
DECODING THE PANJI OF MITHILA




SCAN FOR MORE • VIDEHA.CO.IN

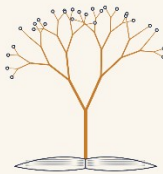
VIDEHA EDITIONS • VIDEHA.CO.IN • 800-2287-912X

VIDEHA • MITHILA STUDIES

DECODING THE PANJI OF MITHILA

मिथिलाक पञ्जीक उद्घाटन

VOLUME III



A Complete Index-wise Decoding
of Genome Mapping
Volume I — Khand 2
BASED ON UPTIA PANJI

GAJENDRA THAKUR

VIDEHA EDITIONS • ISBN 2287-912X • VIDEHA.CO.IN



VIDHA EDITIONS

DECODING THE PANJI OF MITHILA
VOLUME IV • BASED ON THE NAGRAM PANJI

The fourth volume turns to the Nagram Panji, one of the named registers through which Mithila's genealogists have long kept track of lineage, marriage, and descent. Gajendra Thakur's index-wise method builds here as before; each entry is drawn out of the manuscript's continuous list and set back into its own place, so that what was compressed into a single running record becomes legible again as a structure of families, names, and the lines that connect them.

"Every Panji is a village that has agreed, for the length of a list, to stand still."

[CLICK THE INTRODUCTION](#)

ALSO FROM VIDHA EDITIONS
VOLUME 3 OF THIS SERIES
Decoding the Panji of Mithila

EDITED BY
Gajendra Thakur
Vidha • ISBN 2286-3475



ISBN 2286-3475

SCAN FOR MORE • VIDHA.CO.IN

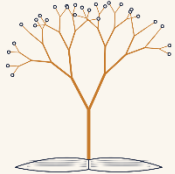
VIDHA EDITIONS • VIDHA.CO.IN • ISBN 2286-3475

VIDHA • MITHILA STUDIES

**DECODING THE
PANJI OF MITHILA**

मिथिलाक पञ्जिक उपपाठन

VOLUME IV



Based on the Nagram Panji

GAJENDRA THAKUR

VIDHA EDITIONS • ISBN 2286-3475 • VIDHA.CO.IN



VIDHA EDITIONS

DECODING THE PANJI OF MITHILA
VOLUME V • GENEOLOGICAL MAPPING OF THE 1500-AD

The fifth volume turns to the Panji of Volume II, mapping Mithila's genealogical record across the years 450 to 2000 AD. Rather than read the manuscript as a single continuous text, Gajendra Thakur decodes it index by index, setting out the branching and rejoining of lineages that the original compilers folded into one continuous list. The result is less a translation than an excavation — each entry restored to its place across more than a millennium and a half of recorded memory.

"A genealogy is a kind of clock — wind it back far enough and the names start keeping their own time."

[CLICK THE INTRODUCTION](#)

ALSO FROM VIDHA EDITIONS
VOLUME 3 OF THIS SERIES
Decoding the Panji of Mithila

EDITED BY
Gajendra Thakur
Vidha • ISBN 2286-3475



ISBN 2286-3475

SCAN FOR MORE • VIDHA.CO.IN

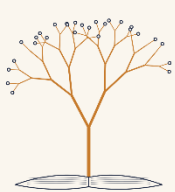
VIDHA EDITIONS • VIDHA.CO.IN • ISBN 2286-3475

VIDHA • MITHILA STUDIES

**DECODING THE
PANJI OF MITHILA**

मिथिलाक पञ्जिक उपपाठन

VOLUME V

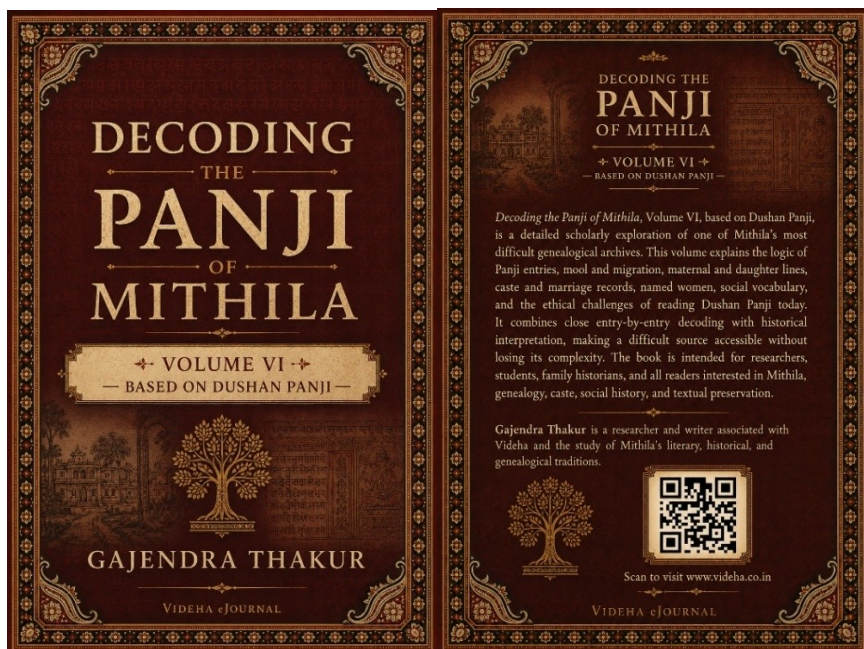


*Genealogical Mapping of Mithila
450 AD — 2000 AD*

BASED ON VOLUME II PANJI

GAJENDRA THAKUR

VIDHA EDITIONS • ISBN 2286-3475 • VIDHA.CO.IN



Decoding the Panji of Mithila Volume I-VI

POTHI.COM HARDBACK:

Decoding the Panji of Mithila : Surprising Insights from India and Nepal's Oldest Social Network [Volume I]

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-decoding-panji-mithila/>

Decoding the Panji of Mithila Volume II: Genealogical Mapping, Mūla, Dūṣaṇ, and the Videha Panji Search System [Based on Prachin Panji]

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-decoding-panji-mithila-volume-ii/>

Decoding the Panji of Mithila Volume III: A Complete Index-wise Decoding of Genome Mapping Volume I - Khand 2 Based on Uptip Panji

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-decoding-panji-mithila-volume-iii/>

Decoding the Panji of Mithila Volume IV: Based on the Nagram Panji

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-decoding-panji-mithila-volume-iv/>

Decoding the Panji of Mithila Volume V: Based on Volume II Panji: Genealogical Mapping of Mithila, 450 AD-2009 AD

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-decoding-panji-mithila-volume-v/>

Decoding the Panji of Mithila Volume VI: Based on Dushan Panji

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-decoding-panji-mithila-0/>

KINDLE EDITIONS:

Decoding the Panji of Mithila : Surprising Insights from India and Nepal's Oldest Social Network Volume I

<https://www.amazon.in/dp/B0H463RVT8>

Decoding the Panji of Mithila Volume II: Genealogical Mapping, Mūla, Dūṣaṇ, and the Videha Panji Search System

<https://www.amazon.in/dp/B0H6NPRTYB>

Decoding the Panji of Mithila Volume III: A Complete Index-wise Decoding of Genome Mapping Volume I - Khand 2 Based on Uptip Panji

<https://www.amazon.in/dp/B0H6R4BBFB>

Decoding the Panji of Mithila Volume IV: Based on the Nagram Panji

<https://www.amazon.in/dp/B0H6R6VSBF>

Decoding the Panji of Mithila Volume V: Based on Volume II Panji: Genealogical Mapping of Mithila, 450 AD-2009 AD
<https://www.amazon.in/dp/B0H6R4BBFD>

Decoding the Panji of Mithila Volume VI: Based on Dushan Panji
<https://www.amazon.in/dp/B0H6R2YCFP>

Google Playbooks:

Decoding Panji: Volume I
<https://play.google.com/store/books/details?id=rrniEQAAQBAJ>
 Decoding Panji: Volume II
<https://play.google.com/store/books/details?id=5RrxEQAAQBAJ>
 Decoding Panji: Volume III
<https://play.google.com/store/books/details?id=XD2EQAAQBAJ>
 Decoding Panji: Volume IV
<https://play.google.com/store/books/details?id=bfn2EQAAQBAJ>
 Decoding Panji: Volume V
<https://play.google.com/store/books/details?id=hGH4EQAAQBAJ>
 Decoding Panji: Volume VI
<https://play.google.com/store/books/details?id=pcH6EQAAQBAJ>

Google Play Audiobooks:

Decoding Panji: Volume I
<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAAE64VahPM>
 Decoding Panji: Volume II
<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAAE6wVeBPM>
 Decoding Panji: Volume III
<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAAE6hDjE0M>
 Decoding Panji: Volume IV
<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAAE6jFbMvM>
 Decoding Panji: Volume V
<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAAE6Ui4SxM>
 Decoding Panji: Volume VI
<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAAE61jGW2M>

III. गद्य पद्य भारती खण्ड १ आ २ (विदेह सदेह २८ & विदेह सदेह ३७)

[विभिन्न भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य रचना (खण्ड-१) & (खण्ड-२) (विदेह www.videha.co.in/ पेटार अंक १-३५० सँ)
 [खण्ड १ ISBN No: 978-93-341-0402-8; खण्ड २ ISBN No: 978-93-5890-150-4]

१

विदेह सदेह २८

GADYA PADYA BHARTI 1

विभिन्न भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य रचना (खण्ड-१) (विदेह www.videha.co.in/ पेटार अंक १-३५० सँ)
<https://store.pothi.com/book/editor-gajendra-thakur-gadya-padya-bharti-1/>

२

विदेह सदेह ३७

GADYA PADYA BHARTI 2

विभिन्न भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य रचना (खण्ड-२) (विदेह www.videha.co.in/ पेटार अंक १-३५० सँ)
<https://store.pothi.com/book/translator-gajendra-thakur-gadya-padya-bharti-2/>

IV: SELF LEARNING SERIES (MAITHILI-ENGLISH BILINGUAL)

<https://play.google.com/store/books/details?id=PgcDEqAAQBAJ>

[illegible]

मैथिली रेडियो नाटक: स्वयं सीखू मार्गदर्शिका (MAITHILI-ENGLISH BILINGUAL)

POTHI PAPERBACK

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-maithili-radio-natak/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=bwcDEgAAQBAJ>

V: गोहि सभक बीच जलसमाधि- गजेन्द्र ठाकुर (मैथिलीक आइ धरिक सभसँ पैघ उपन्यास)



POTHI.COM HARDBACK

Khand 0:

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-gohi-sabhak-beech-jalsamadhi-part-0/>

Khand 1:

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-gohi-sabhak-beech-jalsamadhi-part-1/>

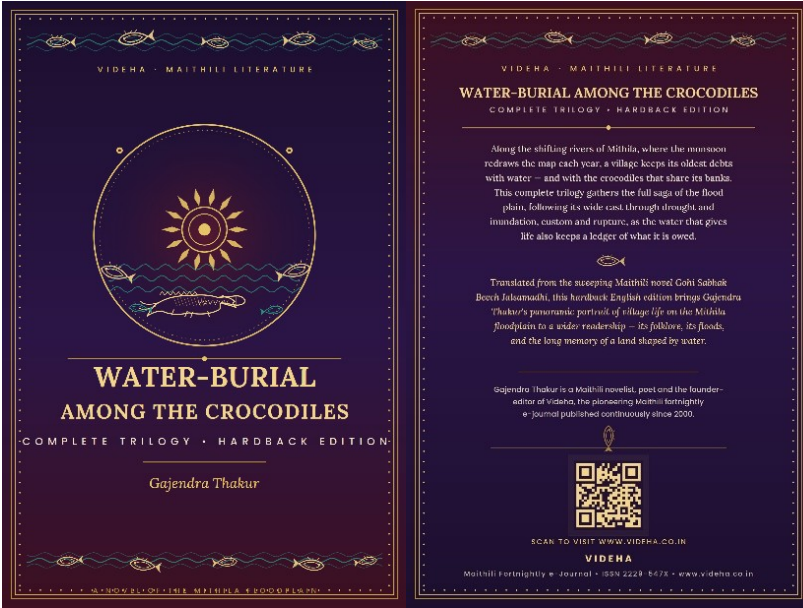
Khand 2:

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-gohi-sabhak-beech-jalsamadhi-part-2/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=pKX4EQAAQBAJ>

WATER-BURIAL AMONG THE CROCODILES [ENGLISH TRANSLATION BY THE AUTHOR GAJENDRA THAKUR HIMSELF]



POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-water-burial-among-the-crocodiles-volume-0/>

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-water-burial-among-the-crocodiles-volume-1/>

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-water-burial-among-the-crocodiles-volume-2/>

Kindle Edition

<https://www.amazon.in/dp/B0HG3NTT13>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=dmoEEgAAQBAJ>

Google Play Audiobook

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAAEAGpHjkbM>

TEACHING SERIES

Gohi Sabhak Beech Jalsamadhi Teaching Course

www.archive.org/download/vidaha-petar-2/Gohi_Jalsamadhi_Teaching_merge.pdf

Water-Burial Among the Crocodiles Teaching Course

https://archive.org/download/vidaha-petar-2/Videha_Teaching_Gohi_Jalsamadhi_Batch1-87.pdf

VI. स्वप्नमे मिज्झर होइत WHEN DREAMS MERGE

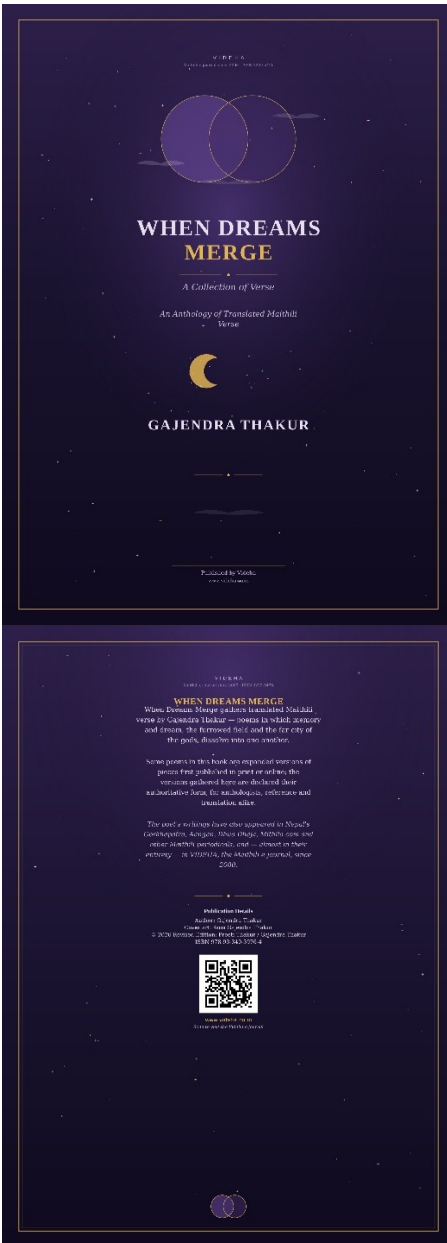


POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A4%B8%E0%A4%B5%E0%A4%AA%E0%A4%A8-%E0%A4%AE-%E0%A4%AE%E0%A4%9C%E0%A4%9D%E0%A4%B0-%E0%A4%B9%E0%A4%87%E0%A4%A4/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=qAwKEgAAQBAJ>



POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-when-dreams-merge/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=us0JEgAAQBAJ&pli=1>

Google Play Audiobook

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAAEAGOT55KM>

AMAZON KINDLE

<https://www.amazon.in/dp/B0HJ1KXLZR>

VII: मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा विज्ञान (ठेठी, अंगिका आ बज्जिकाकें संग लऽ कऽ)- गजेन्द्र ठाकुर



साहित्य अकादेमीक संकीर्ण मैथिली भाषा विभागसँ विदेह (मैथिली साहित्यक समानान्तर मंच) ऐ अर्थमे सेहो फराक अछि जे विदेहमे ठेठी, अंगिका आ बज्जिका सन सहभाषाकें संग लऽ कऽ मिथिलाक बोली-वैविध्यक समग्र चित्र देल जाइत अछि। विदेहमे ठेठी, अंगिका आ बज्जिकाक भाषा विज्ञान, रचना आ व्याकरण मैथिलीक संग देल गेल अछि। मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा विज्ञान (ठेठी, अंगिका आ बज्जिकाकें संग लऽ कऽ)- गजेन्द्र ठाकुर, संगे विदेहमे ठेठी, अंगिका आ बज्जिकाक साहित्य ई-प्रकाशित आ समीक्षित सेहो होइत अछि।- गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक, विदेह ISSN 2229-547X

POTHI.COM HARDBACK

https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-maithili_thethi_angika_bajjika/

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=pKX4EQAAQBAJ>

VIDEHA
First Maithili fortnightly ejournal • ISSN: 2229-847X

विदेह

शुद्ध मैथिली
लेखन-शैली निर्देशिका
गजेंद्र ठाकुर
परीचरित संस्करण — २०२६

ठेठी-अंगिका
लेखन-शैली निर्देशिका
लेखन — अनुवाद — सम्पादन — भाषाई सहायक
परीचरित संस्करण — २०२६
Gajendra Thakur

बज्जिका
लेखन-शैली निर्देशिका
केन्द्र प्रालिखन — लिपि-अभिप्रेत सम्पादन
परीचरित संस्करण — २०२६
Gajendra Thakur

विदेह • प्रथम मैथिली पत्रिका ई-जर्नल
विदेह
www.videha.co.in

VIDEHA
First Maithili Fortnightly eJournal • ISSN: 2229-847X

विदेह

शुद्ध मैथिली • ठेठी-अंगिका • बज्जिका
लेखन-शैली निर्देशिका


Videha Website
<https://www.videha.co.in>


Videha eJournal
<https://videha.ejournal.github.io/videha/>

विदेह • प्रथम मैथिली पत्रिका ई-जर्नल
विदेह
www.videha.co.in

विदेह शुद्ध मैथिली लेखन-शैली निर्देशिका (बज्जिका आ ठेठी-अंगिका केँ संग लऽ कऽ)

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=BYQZEgAAQBAJ>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%B5%E0%A4%A6%E0%A4%B9-%E0%A4%B6%E0%A4%A6%E0%A4%A7-%E0%A4%AE%E0%A4%A5%E0%A4%B2-%E0%A4%B2%E0%A4%96%E0%A4%A8-%E0%A4%B6%E0%A4%B2-%E0%A4%A8%E0%A4%B0%E0%A4%A6%E0%A4%B6%E0%A4%95-%E0%A4%AC%E0%A4%9C%E0%A4%9C%E0%A4%95-%E0%A4%86-%E0%A4%A0%E0%A4%A0-%E0%A4%85%E0%A4%97%E0%A4%95-%E0%A4%95-%E0%A4%B8%E0%A4%97-%E0%A4%B2%E0%A4%BD-%E0%A4%95%E0%A4%BD/>

विदेह

शुद्ध मैथिली

लेखन-शैली निर्देशिका

गजेन्द्र ठाकुर

संशोधित आ परिचालित संस्करण • २०२६

विदेह - प्रथम मैथिली पात्रिक ई-पत्रिका

विदेह शुद्ध मैथिली

लेखन-शैली निर्देशिका

मैथिली वर्तनी, व्याकरण, शब्दप्रयोग, अनुवाद, समीक्षा, सम्पादन आ प्रकाशनक व्यापक निर्देशिका।

२६ भाग • ५१२ विषय • युनिकोड वेवनामती
मूल वर्तनी शिक्षान - मैथिलीमे मुक्तायुक्त केवत 'क' आ 'क';
शब्दारम्भक 'क' आ 'क' मुक्तारहित।

- शब्द
- वर्तनी
- व्याकरण
- शैली
- अनुवाद
- शोध
- प्रकाशन

विदेह वेबसाइट
https://www.vidiha.co.in

विदेह ई-जर्नल
https://vidiha-ejournal.github.io/vidiha-ejournal

गजेन्द्र ठाकुर
विदेह - प्रथम मैथिली पात्रिक ई-पत्रिका

आईएसएन २२२९-५४७४
२०२६ • ६ • १ पृष्ठ

VIDEHA MAITHILI STYLE MANUAL

https://vidiha-ejournal.github.io/vidiha-ejournal/VIDEHA_STYLE_MANUAL_MAITHILI.pdf

VIDEHA

First Maithili fortnightly ejournal • ISSN 2229-547X

विदेह

ठेठी-अंगिका

लेखन-शैली निर्देशिका

लेखन — अनुवाद — सम्पादन — भाषिक जीव

परिचालित संस्करण — २०२६

Gajendra Thakur

विदेह
www.vidiha.co.in

VIDEHA

एहि पोथीक विषय

ई निर्देशिका ठेठी-अंगिकाक स्वर, सर्वनाम, सहायक क्रिया, ध्वनिगत भेद, वाक्यलय आ लोकशब्दकें केन्द्रमे राखिके लेखनक पद्धति बतावे छै। भाषिक स्रोत, क्षेत्रीय प्रयोग आ लोकपाठक असंग मान सुरक्षित राखल गेल छै।

मुख्य विशेषता

- सर्वनाम, आदर, क्रिया आ नकारक समीक्षा
- साधारण आ ध्वन्यात्मक लिखनक भेद
- स्रोतगत ५२० शब्द-प्रविष्टिक संग्रह
- अनुवाद, साहित्य, सम्पादन आ गुणवत्ता-जीव

विदेहक डिजिटल संसाधन

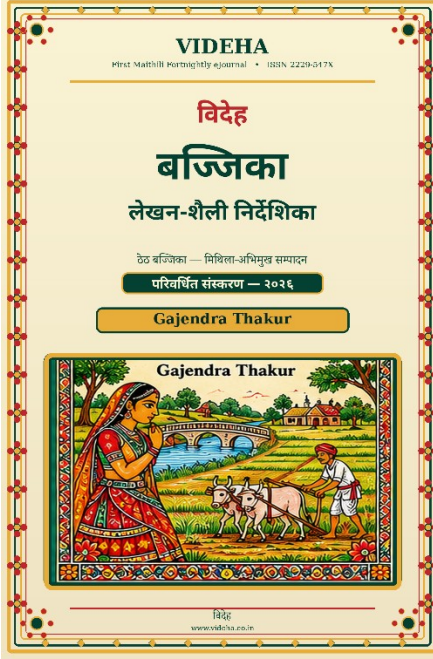
विदेह जाल-पता
<https://www.vidiha.co.in/>

विदेह अंगितेख
<https://vidiha-ejournal.github.io/vidiha-ejournal/>

Gajendra Thakur
विदेह - प्रथम मैथिली पात्रिक ई-पत्रिका

VIDEHA THETHI-ANGIKA STYLE MANUAL

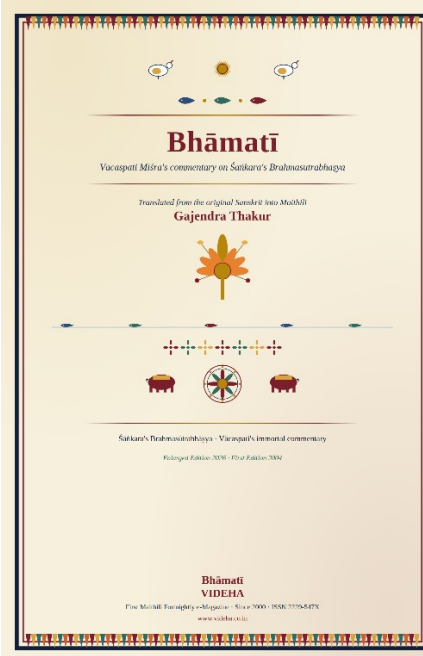
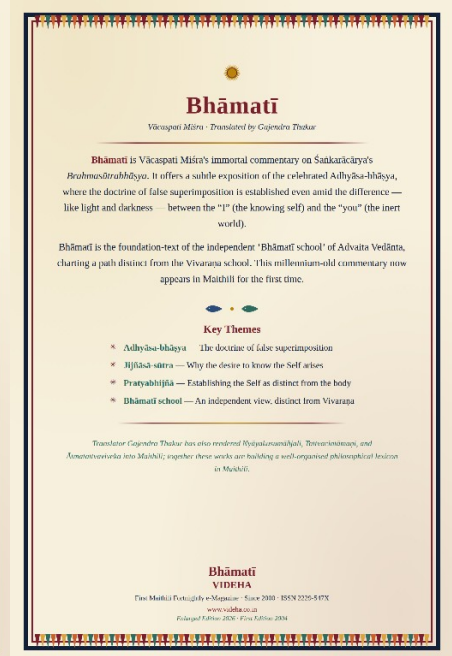
https://vidiha-ejournal.github.io/vidiha-ejournal/VIDEHA_STYLE_MANUAL_THETHI-ANGIKA.pdf



VIDEHA BAJJIKA STYLE MANUAL

https://videha-ejournal.github.io/videha-ejournal/VIDEHA_STYLE_MANUAL_BAJJIKA.pdf

VIII: भामती (वाचस्पति) / आत्मतत्त्वविवेक (उदयन) / न्यायकुसुमाञ्जलि (उदयन) / तत्त्वचिन्तामणि (मंगेश) [मूल संस्कृत सँ मैथिली अनुवाद आ तखन अंग्रेजी अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर] (MAITHILI-ENGLISH BILINGUAL)



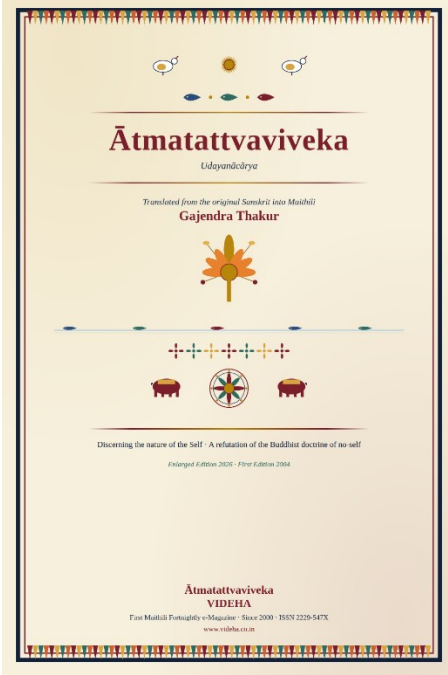
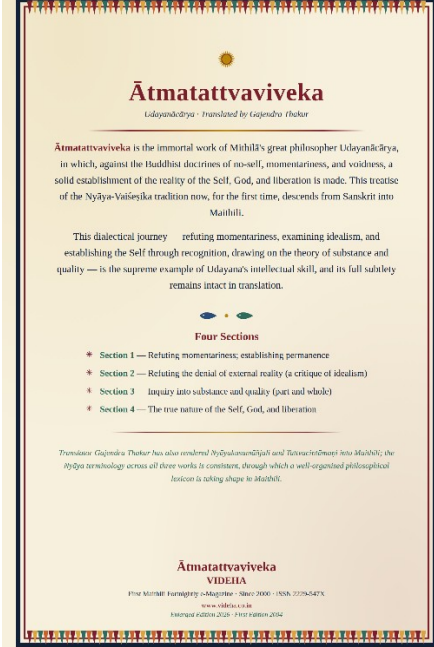
भामती (वाचस्पति) [मूल संस्कृत सँ मैथिली अनुवाद आ तखन अंग्रेजी अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर] (MAITHILI-ENGLISH BILINGUAL)

POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-bhamti/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=PWcAEgAAQBAJ>



आत्मतत्त्वविवेक (उदयन) [मूल संस्कृत सँ मैथिली अनुवाद आ तखन अंग्रेजी अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर] (MAITHILI-ENGLISH BILINGUAL)
POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%AE%E0%A5%82%E0%A4%B2-%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%95%E0%A5%83%E0%A4%A4-%E0%A4%89%E0%A4%A6%E0%A4%AF%E0%A4%A8-atmatattvaviveka/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=l2cAEgAAQBAJ>



न्यायकुसुमाञ्जलि (उदयन) [मूल संस्कृत सँ मैथिली अनुवाद आ तखन अंग्रेजी अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर] (MAITHILI-ENGLISH BILINGUAL)

POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%AE%E0%A5%82%E0%A4%B2-%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%95%E0%A5%83%E0%A4%A4-%E0%A4%89%E0%A4%A6%E0%A4%AF%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%9A%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%AF-%E2%80%A2-%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%95%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%B8%E0%A4%81-%E0%A4%AE%E0%A5%88%E0%A4%A5%E0%A4%BF%E0%A4%B2%E0%A5%80-%E0%A4%85%E0%A4%A8%E0%A5%81%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%A6-%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A5%87%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%BE%E0%A4%95%E0%A5%81%E0%A4%B0-nyayakusumanjali/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=APECegAAQBAJ>



तत्त्वचिन्तामणि (गंगेश) [मूल संस्कृत से मैथिली अनुवाद आ तखन अंग्रेजी अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर] (MAITHILI-ENGLISH BILINGUAL)

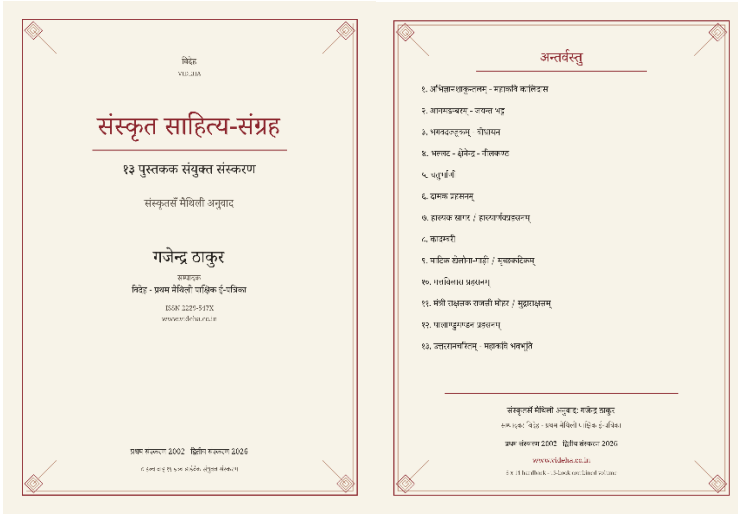
POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-tattvachintamani/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=FLP3EQAAQBAJ>

IX.[अभिज्ञानशाकुन्तलम् (महाकवि कालिदास); आगमडम्बरम् -जयन्त भट्ट; भगवदज्जुकम् -बोधायन; कवि भल्लट- भल्लट-शतक (भल्लटक शत अन्योक्ति), महाकवि क्षेमेन्द्र- छल-कौशलक विलास (कलाविलास), कवि नीलकण्ठ- कलियुग-विडम्बना (व्यंग्य); चतुर्भाण- श्री शुद्धक केर मूल संस्कृत- पद्याप्राभूतकम् (कमलक भेंट), ईश्वरदत्तक मूल संस्कृत- धूर्तवित्संवाद: (धूर्त आ दलालक विचार-विमर्श), वररुचिक मूल - उभयाभिसारिका (परस्पर प्रेम-पलायन) आ महाकवि श्यामिलक केर मूल संस्कृत- पादताडितकम् (लात); दामक प्रहसनम् (सम्भवत: भास रचित); हास्यक सागर / हास्याण्विप्रहसनम् (मूल संस्कृत प्रहसन श्री जगदीश्वर भट्टाचार्य); कादम्बरी (वाणभट्ट आ भूषणभट्ट); माटिक खेलौना-गाड़ी / मूच्छकटिकम् (शुद्धक रचित संस्कृत नाटक); मत्तविलास प्रहसनम् (पल्लव नरेश श्री महेन्द्रविक्रम वर्मा प्रथम केर मूल संस्कृत प्रहसन); मंत्री राक्षसक राजसी मोहर / मुद्राराक्षसम् (विशाखदत्त रचित संस्कृत नाटक); पालाण्डुमण्डन प्रहसनम् (हरिजीवन मिश्रक संस्कृत प्रहसन); उत्तररामचरितम् (महाकवि भवभूति)]- संस्कृतसे मैथिली अनुवाद आ तखन अंग्रेजी अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर (MAITHILI-ENGLISH BILINGUAL)



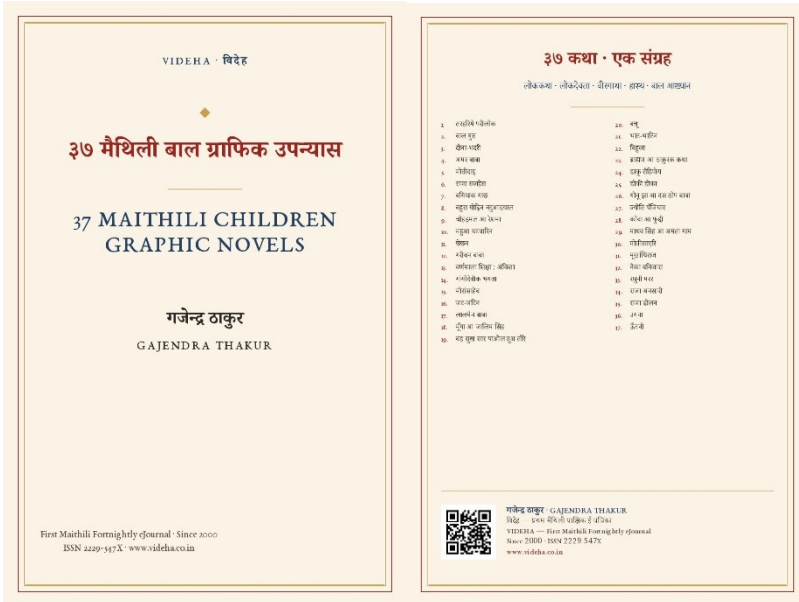
POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-sanskrit-sahitya-13-books/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=8ZkFEgAAQBAJ>

X. ३७ टा मैथिली बाल उपन्यास गजेन्द्र ठाकुर



३७टा मैथिली बाल उपन्यास गजेन्द्र ठाकुर

POTHI.COM HARDBACKS

खण्ड १ (१-१० बाल उपन्यास)

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A5%A9%E0%A5%AD-%E0%A4%9F-%E0%A4%AE%E0%A4%A5%E0%A4%B2-%E0%A4%AC%E0%A4%B2-%E0%A4%89%E0%A4%AA%E0%A4%A8%E0%A4%AF%E0%A4%B8-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A7/>

खण्ड २ (११-२० बाल उपन्यास)

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A5%A9%E0%A5%AD-%E0%A4%9F-%E0%A4%AE%E0%A4%A5%E0%A4%B2-%E0%A4%AC%E0%A4%B2-%E0%A4%89%E0%A4%AA%E0%A4%A8%E0%A4%AF%E0%A4%B8-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A8/>

खण्ड ३ (२१-३० बाल उपन्यास)

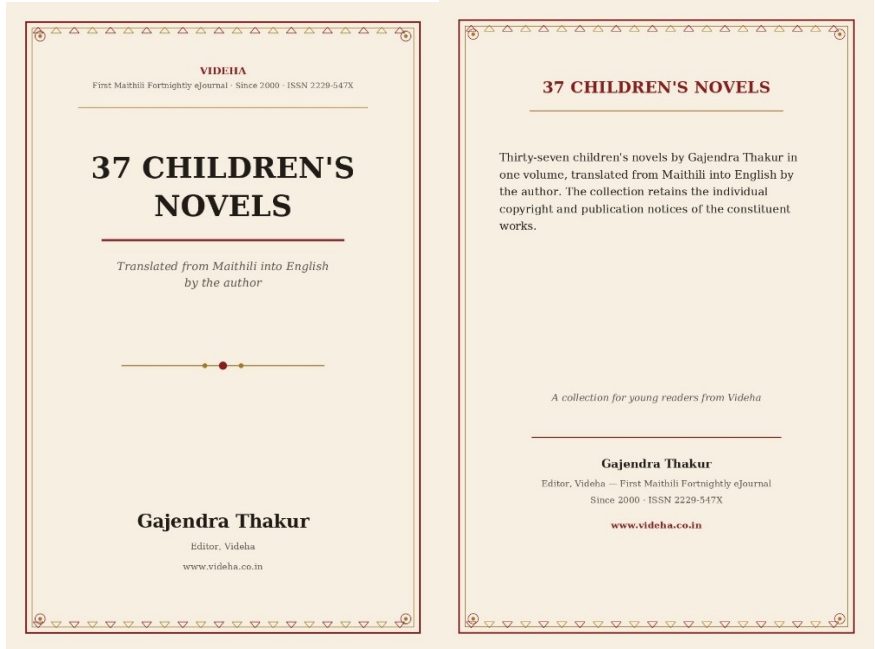
<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A5%A9%E0%A5%AD-%E0%A4%9F-%E0%A4%AE%E0%A4%A5%E0%A4%B2-%E0%A4%AC%E0%A4%B2-%E0%A4%89%E0%A4%AA%E0%A4%A8%E0%A4%AF%E0%A4%B8-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A9/>

खण्ड ४ (३१-३७ बाल उपन्यास)

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A5%A9%E0%A5%AD-%E0%A4%9F-%E0%A4%AE%E0%A4%A5%E0%A4%B2-%E0%A4%AC%E0%A4%B2-%E0%A4%89%E0%A4%AA%E0%A4%A8%E0%A4%AF%E0%A4%B8-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%AA/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=gdlFEgAAQBAJ>



37 MAITHILI CHILDREN NOVELS IN ENGLISH TRANSLATION

POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-37-maithili-children-novels-in-english-translation-part-1/>

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-37-maithili-children-novels-in-english-translation-part-2/>

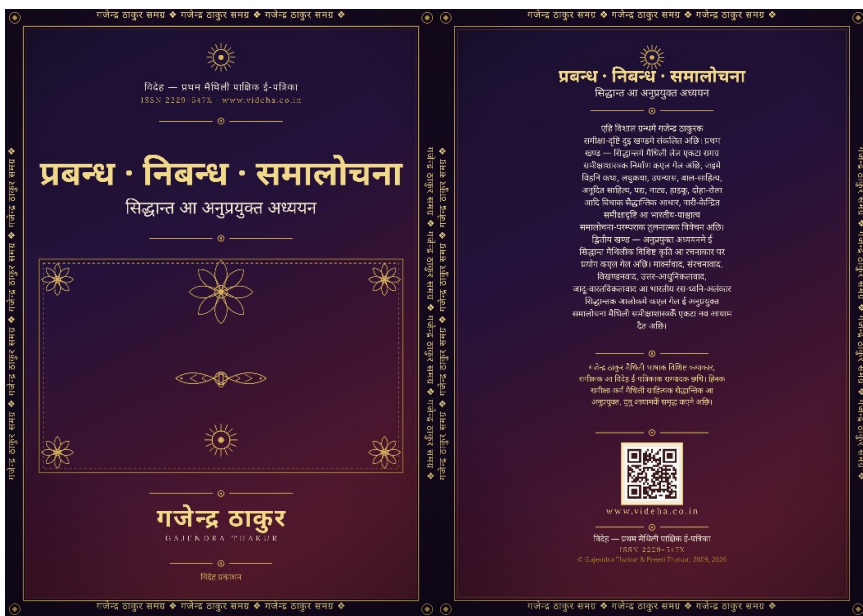
Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=QtUFEgAAQBAJ>

Google Playbook Audiobook

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAAEAG8I-ySM>

XI. प्रबन्ध • निबन्ध • समालोचना सिद्धान्त आ अनुग्रयुक्त अध्ययन- गजेन्द्र ठाकुर



खण्ड-१

खण्ड-२

Google Playbook

XII. रंग-संगम (खण्ड १ आ २): १२ टा मैथिली नाटक आ तकर अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर- गजेन्द्र ठाकुर



POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%B0%E0%A4%97-%E0%A4%B8%E0%A4%97%E0%A4%AE/>
Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=Ae4GEgAAQBAJ>



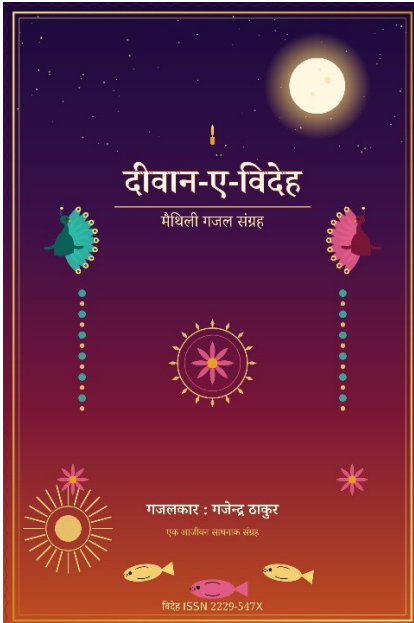
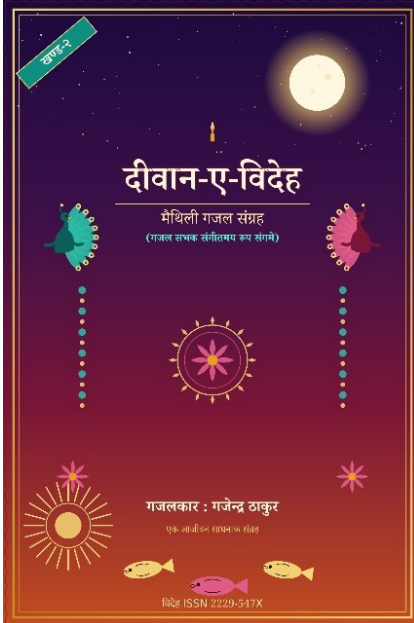
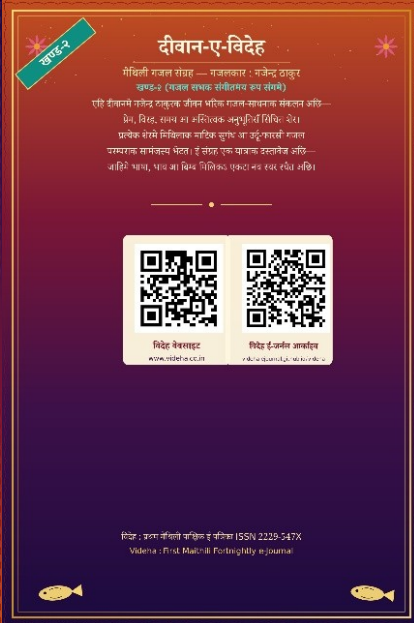
Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=S70VEgAAQBAJ>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%B0%E0%A4%97-%E0%A4%B8%E0%A4%97%E0%A4%AE-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%1-A%E0%A5%A8/>

XIII. दीवान-ए-विदेह खण्ड १ आ २- गजेन्द्र ठाकुर



POTHI.COM HARDBACK

खण्ड-१

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A4%A6%E0%A4%B5%E0%A4%A8-%E0%A4%8F-%E0%A4%B5%E0%A4%A6%E0%A4%B9-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A7/>

खण्ड-२

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A4%A6%E0%A4%B5%E0%A4%A8-%E0%A4%8F-%E0%A4%B5%E0%A4%A6%E0%A4%B9-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A8/>
Google Playbook

खण्ड-१

<https://play.google.com/store/books/details?id=fzwLEgAAQBAJ>

खण्ड-२

<https://play.google.com/store/books/details?id=nYcMEgAAQBAJ>

XIII. अकुलाइत सुर (खण्ड-१: किशोर गजल, खण्ड-२: किशोर कविता-गीत)

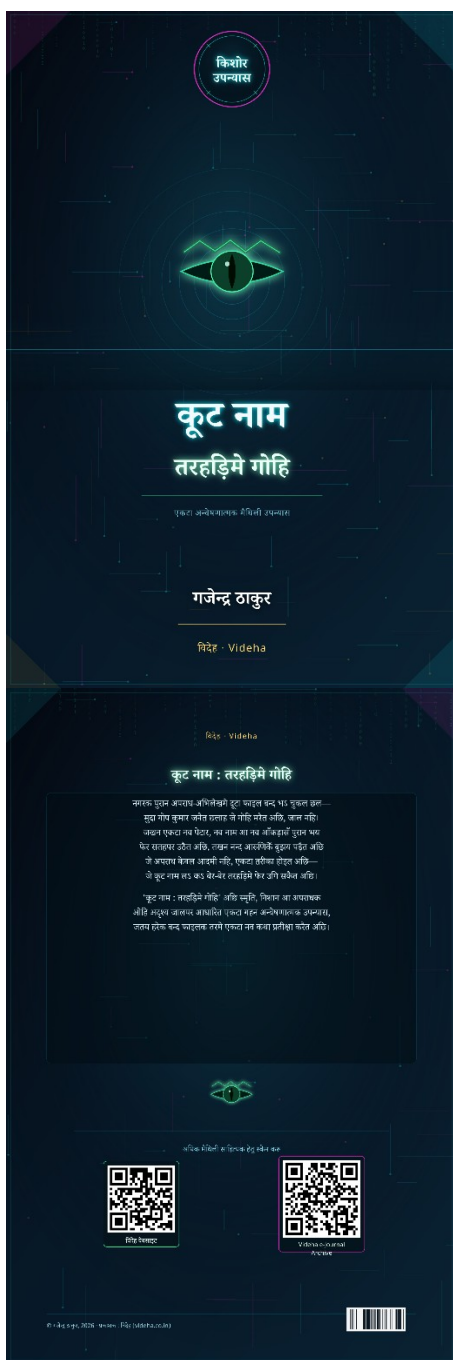


POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A4%A6%E0%A4%B5%E0%A4%A8-%E0%A4%B5%E0%A4%A6%E0%A4%B9-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A8/>
Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=Q7cLEgAAQBAJ>

XIV. कूट शब्द तरहड़िमे गोहि (साइबर अपराध आधारित किशोर उपन्यास)



POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0%E0%A4%95%E0%A4%9F-%E0%A4%A8%E0%A4%AE-%E0%A4%A4%E0%A4%B0%E0%A4%B9%E0%A4%A1%E0%A4%AE-%E0%A4%97%E0%A4%B9/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=xSMEgAAQBAJ>

XV. नव पाँखि (किशोर कथा संग्रह)



POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A4%A8%E0%A4%B5-%E0%A4%AA%E0%A4%96/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=jTwLEgAAQBAJ>

XVI. विदेह शोध-लेख (अंक १ सँ ४४७ धरि)



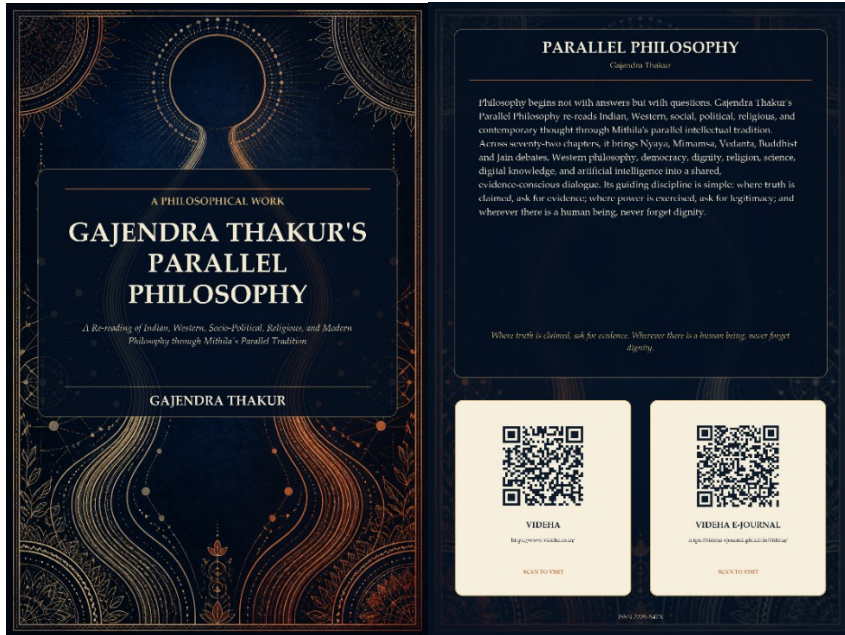
POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A4%B5%E0%A4%A6%E0%A4%B9-%E0%A4%B6%E0%A4%B7-%E0%A4%B2%E0%A4%96-%E0%A4%85%E0%A4%95-%E0%A5%A7-%E0%A4%B8-%E0%A5%AA%E0%A5%AA%E0%A5%AD-%E0%A4%A7%E0%A4%B0/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=k14HEgAAQBAJ>

XVII. गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन GAJENDRA THAKUR'S PARALLEL PHILOSOPHY (MAITHILI-ENGLISH BILINGUAL)

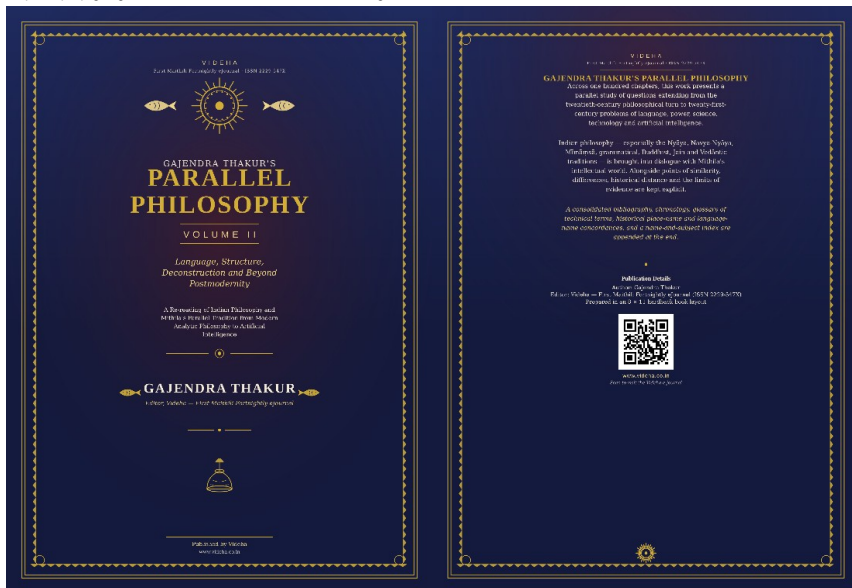


VOLUME I (MAITHILI-ENGLISH BILINGUAL)

POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-gajendra-thakurs-parallel-philosophy/>

Google Playbook

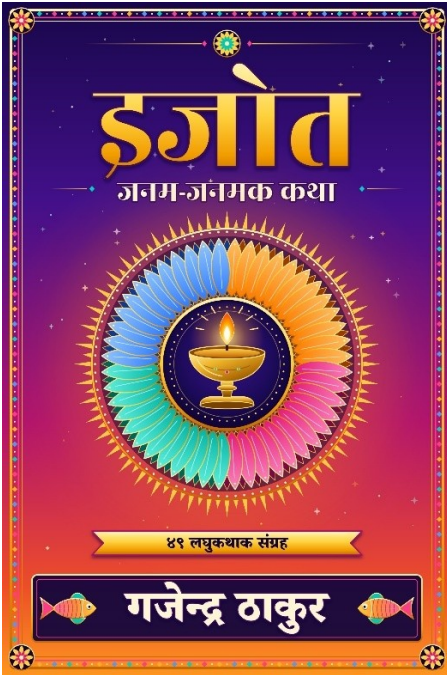
<https://play.google.com/store/books/details?id=PQ8IEgAAQBAJ>


VOLUME II (MAITHILI-ENGLISH BILINGUAL)

POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0%E0%A4%95-%E0%A4%B8%E0%A4%AE%E0%A4%A8%E0%A4%A8%E0%A4%A4%E0%A4%B0-%E0%A4%A6%E0%A4%B0%E0%A4%B6%E0%A4%A8-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A8/>
Google Playbook
<https://play.google.com/store/books/details?id=78kJEqAAQBAJ>

XVIII. MAITHILI SHORT STORIES



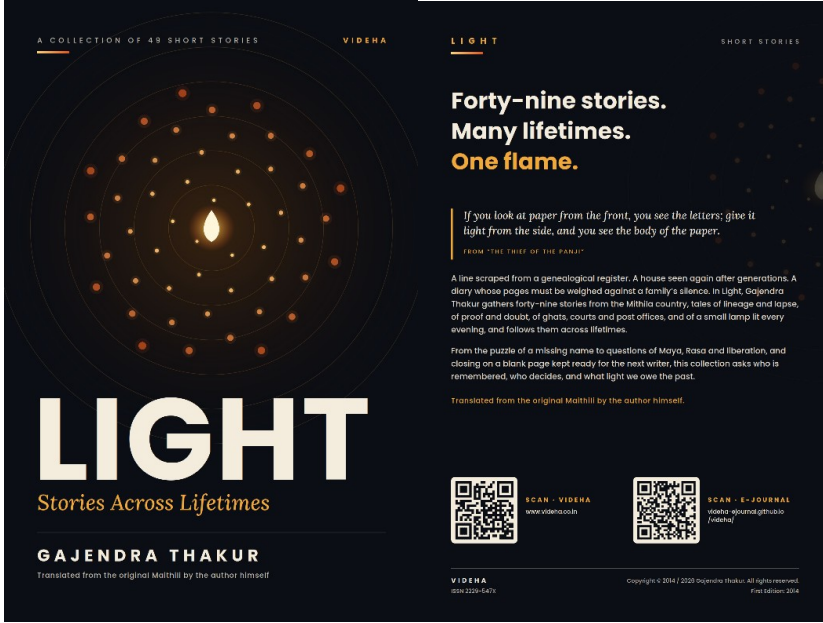
इजोत: जनम-जनमक कथा

Google Playbook

https://play.google.com/store/books/details?id=M_oVEgAAQBAJ

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%87%E0%A4%9C%E0%A4%A4/>



LIGHT: STORIES ACROSS LIFETIMES

Google Playbook [Audiobook]

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAAECG1VCVxM>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=A9YSEgAAQBAJ>

Amazon Kindle

<https://www.amazon.in/dp/B0HMP6N55V>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-light/>



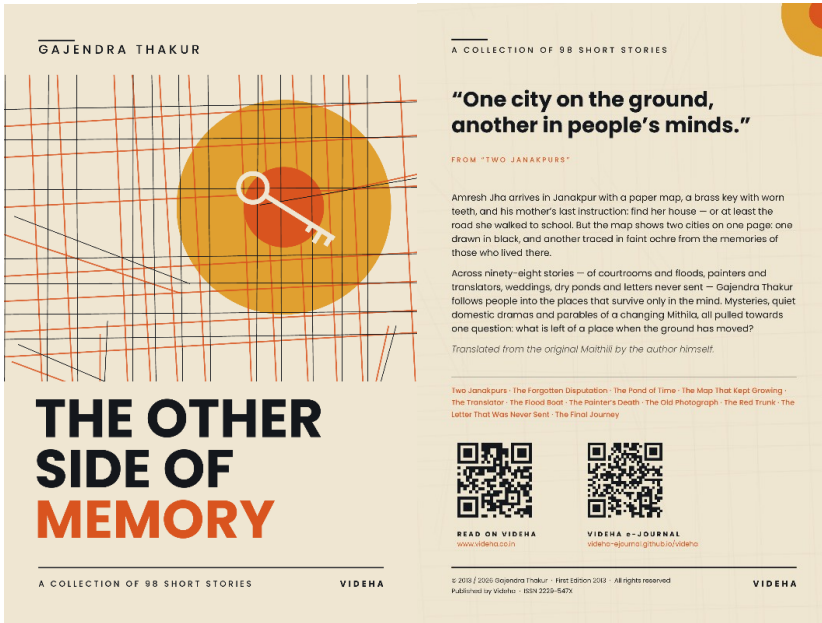
स्मृतिक दोसर दिस

Google Playbook

https://play.google.com/store/books/details?id=R_oVEgAAQBAJ

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%B8%E0%A4%AE%E0%A4%A9%E0%A4%95-%E0%A4%A6%E0%A4%B8%E0%A4%B0-%E0%A4%A6%E0%A4%B8/>



THE OTHER SIDE OF MEMORY

Google Playbook [Audiobook]

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAECG1T2VqM>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=UglUEgAAQBAJ>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-the-other-side-of-memory/>



कथा-शतत्रयी (खण्ड १-३)

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=mLoSEgAAQBAJ>

POTHI HARDBACK

खण्ड-१

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%95%E0%A4%A5-%E0%A4%B6%E0%A4%E0%A4%E0%A4%E0%A4%B0%E0%A4%AF-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A7/>

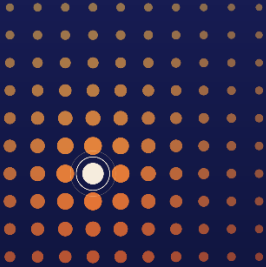
खण्ड-२

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%95%E0%A4%A5-%E0%A4%B6%E0%A4%E0%A4%E0%A4%E0%A4%B0%E0%A4%AF-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A8/>

खण्ड-३

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%95%E0%A4%A5-%E0%A4%B6%E0%A4%E0%A4%E0%A4%E0%A4%B0%E0%A4%AF-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A9/>

THREE HUNDRED SELECTED STORIES



The Hundred- Story Trilogy

VOLUME I

GAJENDRA THAKUR Stories 1-100

●●●●●●●●●●

*A story lives as long
as people and
language live.*

Gajendra Thakur's three hundred selected stories form a vivid mirror of the many shapes of life in Mithila, Vajji and Anga: folk life, human relationships, changing times, village and town, sorrow and joy, tradition and modernity, nature and society, women and men, childhood, old age, life away from home, memory, struggle and hope.

Across these three volumes, the simplicity of the people's language, the depth of life, and the cultural pulse of Mithila, Vajji and Anga dwell together.

INSIDE VOLUME I
*The Flowerpot by the Window • Pension Day • Two Cups of Tea
The Broken Clock • The Star on the Roof • The Last Light*



SCAN TO VISIT
videha.co.in



SCAN TO VISIT
videha-ajournal@videha.co.in

Translated from the original Mithila into English by the author. © Gajendra Thakur / First published 2012, 2019.

SHORT STORIES • MITHILA, VAJJI & ANGA

THE HUNDRED- STORY TRILOGY

VOLUME
II



“
*Stories remain alive as long as
people and language remain
alive.*
— GAJENDRA THAKUR

Gajendra Thakur's three hundred selected stories form a vivid mirror of the many shapes of life in Mithila, Vajji and Anga: folk life, human relationships, changing times, village and city, sorrow and joy, tradition and modernity, nature and society, women and men, childhood, old age, migration, memory, struggle and hope.

Across these three volumes, the simplicity of the people's language, the depth of life, and the cultural pulse of Mithila, Vajji and Anga dwell together.

IN THIS VOLUME

*Beyond the Embankment
The Veranda University
The Philosopher Betel Seller
A Feast on Debt
Carlene Milk*

*Half a Samosa
Love on Credit
The Rented Dog
Silent Testimony
The Dream of One Bigha*

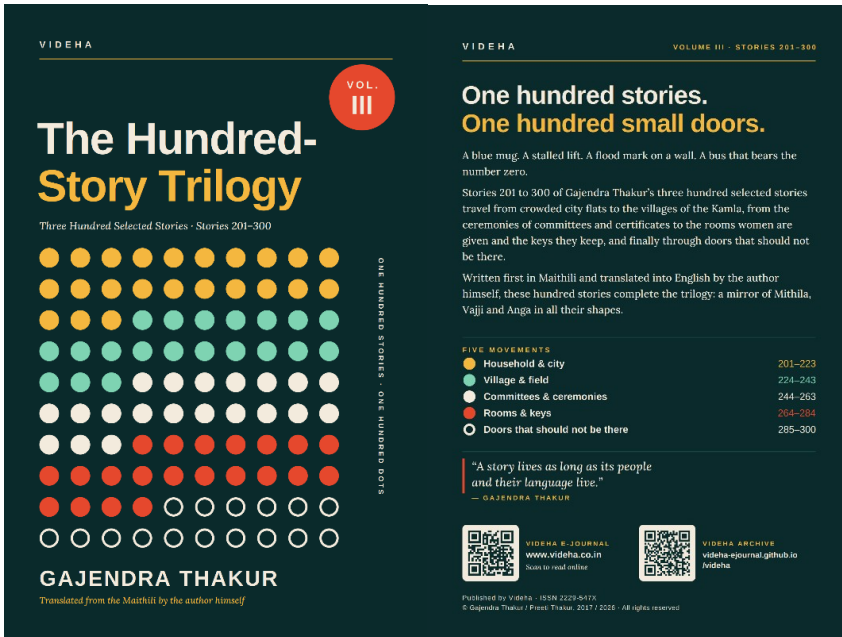
Three Hundred Selected Stories
STORIES 101 - 200
GAJENDRA THAKUR



SCAN TO VISIT
Videha
videha.co.in
videha-ajournal@videha.co.in



Translated from the original Mithila into English by the author himself.



THE HUNDRED-STORY TRILOGY (VOLUME I-III)

Google Playbook **[Audiobook]**

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAECGfQw9mM>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=kIQUeGAAQBAJ>

POTHI HARDBACK

VOLUME I

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-the-hundred-story-trilogy-volume-i/>

VOLUME II

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-the-hundred-story-trilogy-volume-ii/>

VOLUME III

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-the-hundred-story-trilogy-volume-iii/>



कथा-त्रिधारा (खण्ड १-३)

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=O2kTEgAAQBAJ>

POTHI HARDBACK

खण्ड-१

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%95%E0%A4%A5%E0%A4%A4%E0%A4%B0%E0%A4%A7%E0%A4%B0-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A7/>

खण्ड-२

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%95%E0%A4%A5-%E0%A4%A4%E0%A4%B0%E0%A4%A7%E0%A4%B0-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A8/>

खण्ड-३

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%95%E0%A4%A5-%E0%A4%A4%E0%A4%B0%E0%A4%A7%E0%A4%B0-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A9/>



Three Streams of Stories

STORIES 201–300

VOLUME
III

“A story remains alive for as long as people and language remain alive.”

GAJENDRA THAKUR

Risk life and human relationships, changing times, village and city, sorrow and joy, tradition and modernity, migration, memory, struggle and hope: Gajendra Thakur's three hundred selected stories are a vivid mirror of the many shapes of life in Mithila, Vajji and Anga.

This final volume moves from wage-days, seed and flood loans in the village, through locked rooms and uncertain rights, to the offices, storms and endless registers of officialdom, and out into the quiet evenings of a small town, where a lost library sleeps every version of the truth.

Written in the simple, unhurried language of its people, and translated into English by the author himself.

INSIDE THIS VOLUME

201–218 The village School Shoes Wages The food loan
218–239 The uncertainty The locked storm in kitchen room the black mirror
240–260 The office Chair Number Supervisor Bee Taps
261–278 The fire that never closes The bank dead The closed account
279–300 The small town Lights on the Bridge The library of Mithila

GAJENDRA THAKUR

Translated from the Original Material into English by the Author himself

VIDEHA

Three Hundred Selected Stories

VIDEHA

ISBN 978-81-7471

© Gajendra Thakur / First Edition, 2020 / 2021

All rights reserved.

Scan to read more at videha



VIDEHA



GAJENDRA THAKUR

THREE STREAMS OF STORIES (VOLUME I-III)

Google Playbook [Audiobook]

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAECG1QIVnM>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=QkoUEgAAQBAJ>

POTHI HARDBACK

VOLUME I

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-three-streams-of-stories-volume-i/>

VOLUME II

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-three-streams-of-stories-volume-ii/>

VOLUME III

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-three-streams-of-stories-volume-iii/>



Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=Edw7EgAAQBAI>

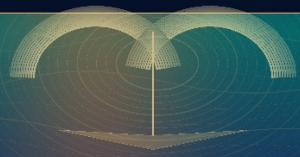
ROTHI HARDBACK

https://store.npthi.com/book/0%500%A40%A50%500%A40%B2_0%500%A40%050%500%A40%A50%500%A40%050%500%A40%B0

VIDEHA • FICTION

82 SELECTED STORIES

FROM TEN MAITHILI COLLECTIONS



GAJENDRA THAKUR
Selected and Edited by Ashish Anchinhar

TRANSLATED FROM ORIGINAL MAITHILI INTO ENGLISH
BY THE AUTHOR HIMSELF

82 SELECTED STORIES

*Eighty-two stories. Ten source volumes.
One literary landscape.*

Drawn from ten Maithili books and volumes, these eighty-two stories move through the villages and towns of Mithila, Vajji and Anga. Their worlds are formed by memory, family ties, social hierarchies, work, justice, language and the difficult choices of everyday life.

The collection moves from brief fiction to long stories, from the histories held in manuscripts and homes to questions of class, dignity and the changing public world. Each story retains its own circumstances, characters and ending.

Selected and edited by Ashish Anchinhar, the stories are presented in the sequence of the original Maithili anthology.

GAJENDRA THAKUR • VIDEHA

VIDEHA



www.vidha.in

VIDEHA ARCHIVE



<https://archive.vidha.in>

FIRST MAITHILI EDITION: 1961 • ISBN 93329347X

82 SELECTED STORIES FROM TEN MAITHILI COLLECTIONS: GAJENDRA THAKUR

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=bH0aEqAAQBAJ>

Google Playbook (Audiobook)

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAEBGch8ySM>

Amazon Kindle

<https://www.amazon.in/dp/B0HNF9HN8R>

XIX. MAITHILI NOVELS

अनुवादक

गजेन्द्र ठाकुर

अनुवादक

गजेन्द्र ठाकुर



<https://www.vidha.in>



<https://archive.vidha.in>

अनुवादक

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=DNqVEgAAQBAJ>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%85%E0%A4%A8%E0%A4%B5%E0%A4%A6%E0%A4%95/>



THE TRANSLATOR

Google Playbook (Audiobook)

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAEFCG316fyM>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=RUKWEgAAQBAJ>

AMAZON KINDLE

<https://www.amazon.in/dp/B0HLZHMNZ9>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-the-translator/>



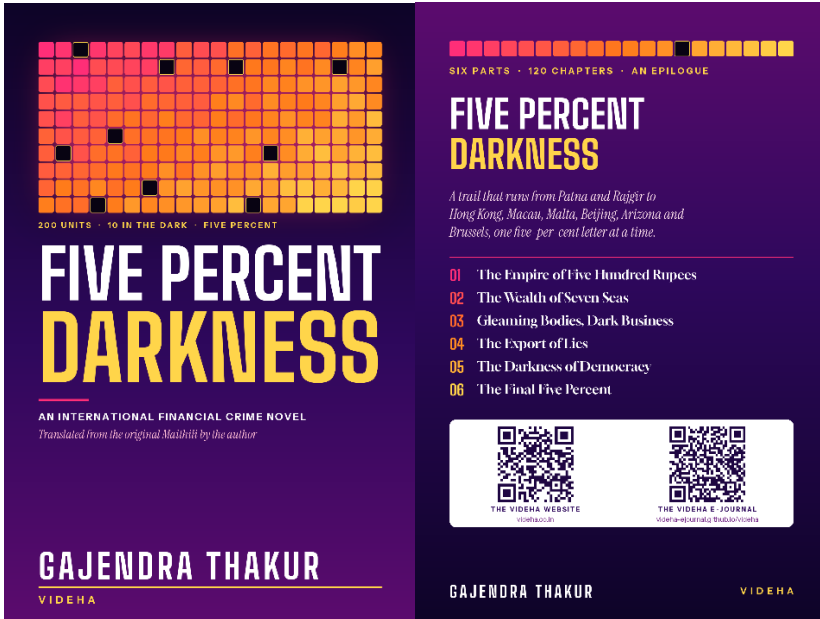
पाँच प्रतिशत अन्धार

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=9uUZEqAAQBAJ>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%AA%E0%A4%9A-%E0%A4%AA%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A4%B6%E0%A4%A4-%E0%A4%85%E0%A4%A8%E0%A4%B9%E0%A4%B0/>



FIVE PERCENT DARKNESS

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=5QAaEgAAQBAJ>

Google Playbook (Audiobook)

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAAEBGAKFCFM>

Amazon Kindle

<https://www.amazon.in/dp/BOHNGZLNCC>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-five-percent-darkness/>



नव्य न्याय आ अपततीय जुआजाल

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=4NoVEgAAQBAJ>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%A8%E0%A4%B5%E0%A4%AF-%E0%A4%A8%E0%A4%AF%E0%A4%AF-%E0%A4%86-%E0%A4%85%E0%A4%AA%E0%A4%A4%E0%A4%9F%E0%A4%AF-%E0%A4%9C%E0%A4%86-%E0%A4%9C%E0%A4%B2/>



NAVYA NYAYA AND THE OFFSHORE GAMBLING WEB

Google Playbook

https://play.google.com/store/books/details?id=_lkWEgAAQBAJ

Google Playbook (Audiobook)

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAEBGAB5ASM>

AMAZON KINDLE

<https://www.amazon.in/dp/B0HM267KJW>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-navya-nyaya-and-the-offshore-gambling-web/>



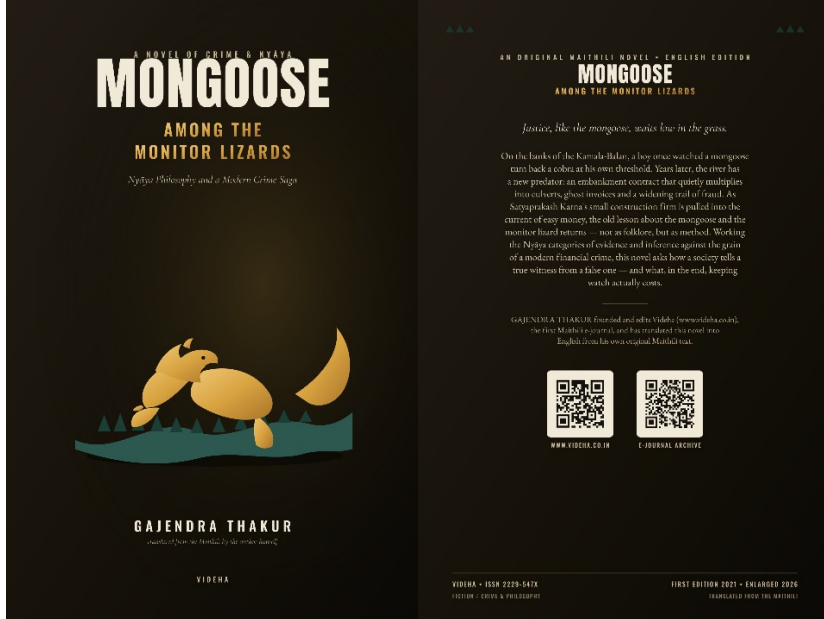
विज्जी गोहि सभक बीच

Google Playbook

https://play.google.com/store/books/details?id=s_kVEgAAQBAJ

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%AC%E0%A4%9C%E0%A4%9C%E0%A4%97%E0%A4%B9-%E0%A4%B8%E0%A4%AD%E0%A4%95-%E0%A4%AC%E0%A4%9A/>



MONGOOSE AMONG THE MONITOR LIZARDS

Google Playbook **[Audiobook]**

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAAEFCGNXB15M>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=josSEgAAQBAJ>

AMAZON KINDLE

<https://www.amazon.in/dp/B0HL6FV3HX>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-mongoose-among-the-monitor-lizards/>



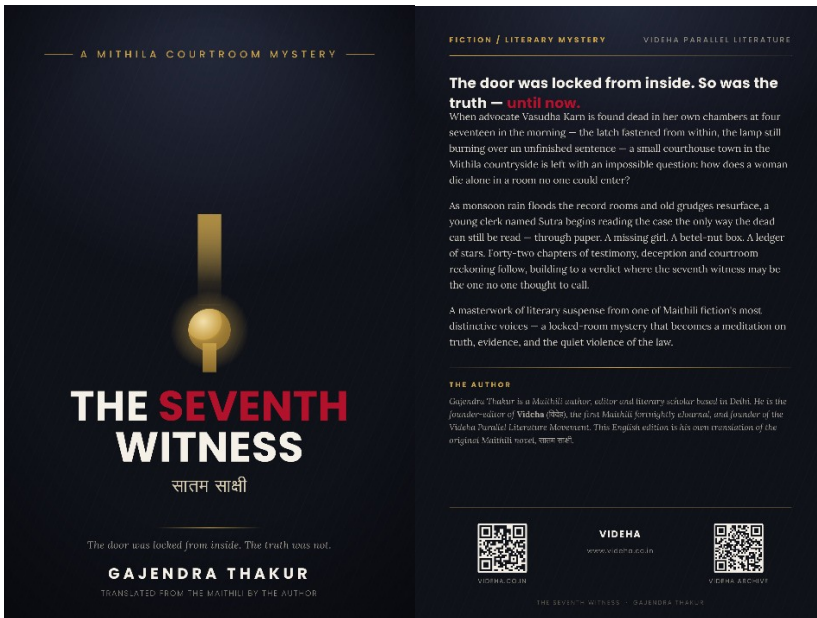
सातम साक्षी

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=1fkVEgAAQBAJ>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%B8%E0%A4%E0%A4%E0%A4%E0%A4%B8%E0%A4%95%E0%A4%B7/>



THE SEVENTH WITNESS

Google Playbook **[Audiobook]**

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAAECGtOr1nM>

Google Playbook

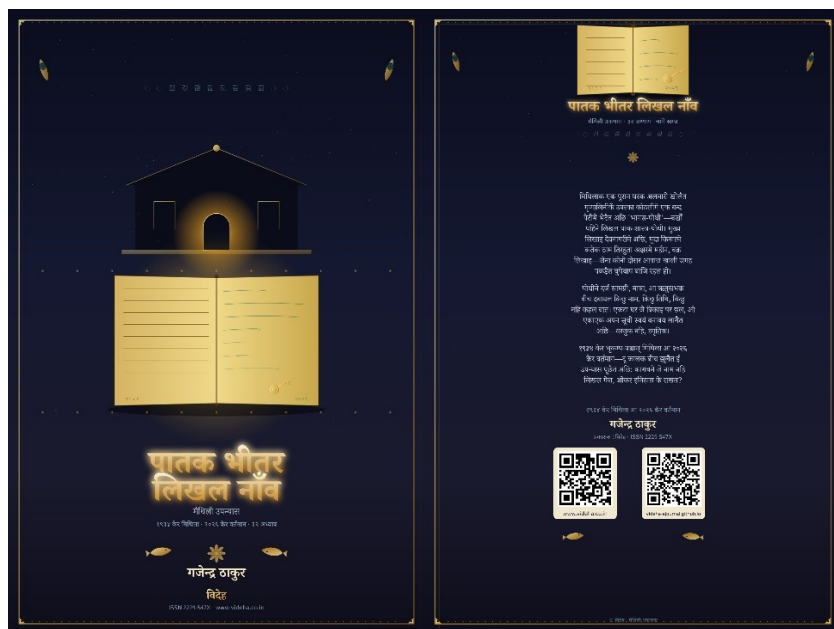
<https://play.google.com/store/books/details?id=goYSEgAAQBAJ>

Amazon Kindle

<https://www.amazon.in/dp/B0HMP663WK>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-the-seventh-witness/>



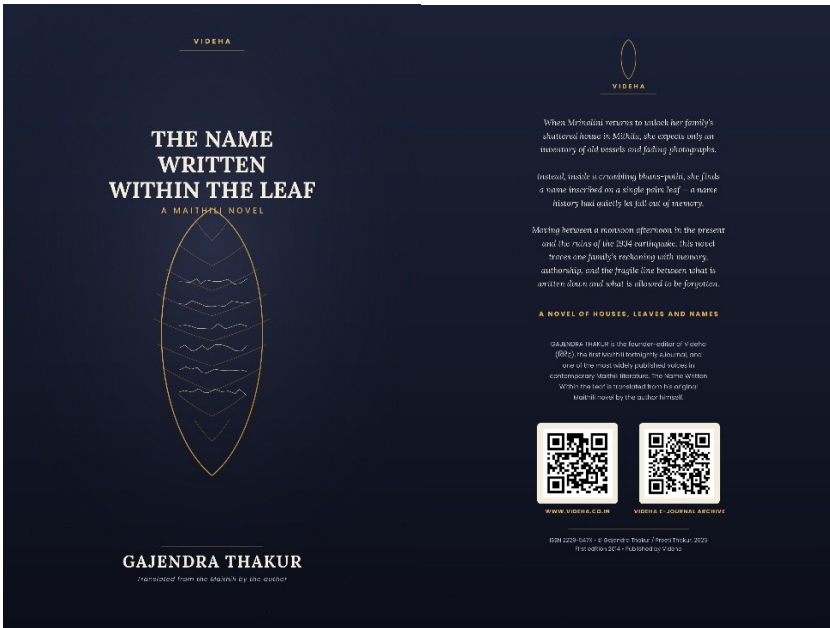
पातक भीतर लिखल नाँव

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=5fkVEgAAQBAJ>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%AA%E0%A4%A4%E0%A4%95-%E0%A4%AD%E0%A4%A4%E0%A4%B0-%E0%A4%B2%E0%A4%96%E0%A4%B2-%E0%A4%A8%E0%A4%B5/>



THE NAME WRITTEN WITHIN THE LEAF

Google Playbook [Audiobook]

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAECGtWL19M>

Google Playbook

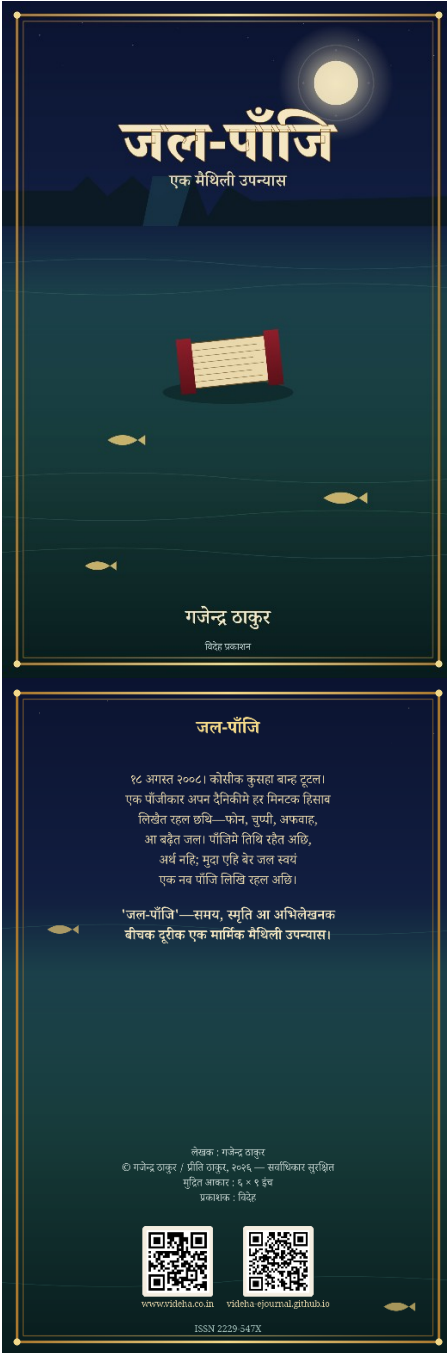
<https://play.google.com/store/books/details?id=iRcSEgAAQBAJ>

AMAZON KINDLE

<https://www.amazon.in/dp/B0HL5KGJ4T>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-the-name-written-within-the-leaf/>



जल-पाँजि

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=-kVEgAAQBAJ>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%9C%E0%A4%B2%E0%A4%AA%E0%A4%9C/>



JAL-PANJI: WATER REGISTER

Google Playbook [Audiobook]

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAECGtXL15M>
 Google Playbook
<https://play.google.com/store/books/details?id=CoIRegAAQBAJ>
 AMAZON KINDLE
<https://www.amazon.in/dp/B0HL4THJWH>
 POTH HARDBACK
<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-jal-panji-water-register/>

रिदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ञ पत्रिका

विदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका <https://www.videha.co.in/>
 विदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका <https://videha-ejournal.github.io/videha/>
 VIDEHA 23 LANGUAGE TRANSLITERATOR https://www.videha.co.in/new_page_101.htm
 विदेह लिपि परिवर्तक IPA · IAST · Tirhuta · Braille <https://www.videha.co.in/script-converter.html>
 विदेह आ सदेह सम्पूर्ण इंडेक्स <https://www.videha.co.in/script-converter.html>
 विदेह पेटार VIDEHA ARCHIVE <https://www.videha.co.in/archive.htm>
 विदेह मैथिली थिसर्स — मैथिली-अंग्रेजी / अंग्रेजी-मैथिली शब्दकोश <https://www.videha.co.in/maithili-thesaurus.html>
 विदेह मैथिली ↔ अंग्रेजी अनुवादक · Videha Maithili ↔ English Translator <https://www.videha.co.in/maithili-translator.html>
 विदेह पञ्जी प्रबन्ध — मैथिल ब्राह्मण वंशावली इंडेक्स <https://www.videha.co.in/panji-mool-index.html>
 विदेह गद्य <https://www.videha.co.in/prose.htm>
 विदेह पद्य <https://www.videha.co.in/verse.htm>
 विदेह स्त्री कोना <https://www.videha.co.in/femcorner.htm>
 A PARALLEL HISTORY OF MITHILA & MAITHILI LITERATURE <https://www.videha.co.in/gajenthakur.htm>
 विदेह मिथिला रत्न <https://www.videha.co.in/ratna.htm>
 विदेह मिथिलाक खोज <https://www.videha.co.in/discovery.htm>
 विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण <https://www.videha.co.in/investigation.htm>
 विदेह पुरान अंक <https://www.videha.co.in/videha.htm>
 विदेह पोथी <https://www.videha.co.in/pothi.htm>
 विदेह दृश्य-श्रव्य नाट्य उत्सव https://www.videha.co.in/Audio_Video.htm
 विदेह शिशु, बाल आ किशोर उत्सव <https://www.videha.co.in/kids.htm>
 विदेह ई-लर्निङ्ग / विदेह ई-लर्निङ्ग क्विज <https://www.videha.co.in/videha-elearning.htm> [विदेह ई-लर्निङ्ग क्विज UPSC / BPSC / UGC-NET / NTA हेतु मैथिली भाषा, साहित्य आ मिथिला इतिहास पर निःशुल्क प्रश्नोत्तरी — क्विज खोलबा लेल कार्ड पर क्लिक करू। शब्दकोश मिथिलाक इतिहास साहित्यक इतिहास UPSC / UGC-NET समानान्तर इतिहास मिथिला पञ्जी मैथिली गजल वेब पत्रकारिता विदेह चित्रकला · कला · संगीत विदेह दृश्य-श्रव्य विदेह विशेषांक / सम्मान विदेह प्रश्नोत्तरी विदेह नाट्य उत्सव विदेह शिशु उत्सव विदेह स्त्री कोना]
 Videha Converters- Thesaurus, Panji, Script Converters, Transliterations, Translators, eLearning Quizzes, Maithili Language Search and other Technical Tools <https://www.videha.co.in/videha-converters.htm>
 विदेह आ सदेह दुनू <https://archive.org/details/VidehaAndSadeha>
 Videha Github: <https://github.com/videha-ejournal/>
 TWITTER / X <https://x.com/videha>
 FACEBOOK <https://www.facebook.com/groups/videha/>
 Videha Googlegroups <https://groups.google.com/g/videha>
 Videha Mithila, Vajji & Anga: <https://videha-ejournal.github.io/mithila-vajji-anga/>
 Preeti Thakur & Gajendra Thakur <https://videha-ejournal.github.io/gajendra-preeti/en/>
 प्रीति ठाकुर आ गजेन्द्र ठाकुर <https://videha-ejournal.github.io/gajendra-preeti/>
 Videha Scholar Research: <https://videha-ejournal.github.io/videha/research/>
 Videha Research Alphabetical/ Subjectwise: <https://videha-ejournal.github.io/videha/research/videha-scholar-research-book.html>
 A PARALLEL HISTORY OF MAITHILI LITERATURE [INCLUDING THETHI, ANGIKA & BAJJIKA]
<https://youtu.be/6h-nDjYHIME?si=ZVoaTnb13v8mnlaS>
 PARALLEL PHILOSOPHY VOLUME I
<https://www.youtube.com/playlist?list=PLAzN1jZn-iOU>
 PARALLEL PHILOSOPHY VOLUME II
<https://www.youtube.com/playlist?list=PLEeNFaEfYdO>

PARALLEL HISTORY VOLUME I

<https://www.youtube.com/playlist?list=PLcQhodF4PphE>

PARALLEL HISTORY VOLUME II

<https://www.youtube.com/playlist?list=PLGfQDv03lFio>

गजेन्द्र ठाकुर समग्र

<https://www.videha.co.in/gajendra-thakur-samagra.htm>

<https://videha-ejournal.github.io/videha/gajendra-thakur-samagra.htm>

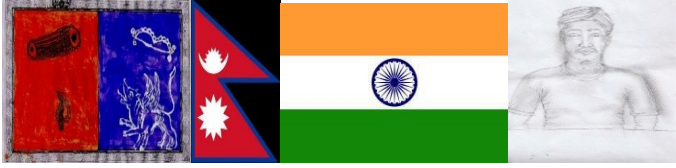


V.L.F. Videha Literature Festival: [https://videha-ejournal.github.io/videha-literature-](https://videha-ejournal.github.io/videha-literature-festival/)

[festival/](https://videha-ejournal.github.io/videha-literature-festival/)



VIDEHA विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका www.videha.co.in आ <https://videha-ejournal.github.io/videha/> दुनू लिंक पर उपलब्ध अछि।



०.१.अंक ४५० पर टिप्पणी

प्रणव झा, नई दिल्ली

जगदानंद झा मनु के लघुकथा “माटिक बासन” अशोक कुमार ठाकुर के गजल-गीत निक लगल। विप्रकांत मण्डल के लघुकथा ‘उपास’ गुदगुदेलक। “माटिक बासन” के संदर्भ मे ई कहब जे कला/प्राचीन कला के बहुत रास रिप्लेसमेंट अवश्य आयल अछि आम लोक लेल, मुदा खास लोक के बीच ओकर मांग एखानहु छाईक। ताही लेल सकिल इनहंसमेंट, नव जवाना के हिसाब से नवाचार आ फ्यूजन आ निक मार्केटिंग एखनहु कला के डिमांडिंग आ जीविका के साधन बनाबई अछि। ई बड़का बीजनेश establishment से सिखल जा सकय अछि, जे सभ मारिते रास पुराण चीज सभ के आई सफलतापूर्वक नव रैपर मे लपेट के बेच रहल अछि। कथा मे सुशीलक बेटा विभू के सफलता मे सेहो एहि स्ट्रेटजी के हाथ रहल।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@zohomail.in पर पठाउ।

गद्य Prose

१.१. हितनाथ झा- मैथिली साहित्यमे तारानाथ झा एवं हुनक परिवारक योगदान २९



हितनाथ झा

(मैथिलीमे ग्रामगाथा विधाकेँ नव जीवन देनिहार, पाठकीय विधाक अगुआ।

संपर्क-9430743070)

मैथिली साहित्यमे तारानाथ झा एवं हुनक परिवारक योगदान२९

वृद्ध योगधर बाबूक विवाह

(गल्प)

श्री अच्युतानन्द झा बी.ए. बी.एल.

(२९-१०-३४)

की कहू उमाशंकर बाबू, हम बड़े अभागल छी, नहि तँ एहि बुढ़ारी वयसमे हमरा कतहु पत्नी-मृत्युक असह्य विपत्ति पड़िते?। हमरा घरमे क्यो नहि अछि- अछैत धन सम्पत्तिक अथवा एहि रूपेँ कहू जे भोग-विलासक उपाय और इच्छा रहितहुँ ईश्वर हमरा बाबाजी बना देलैन्ह। हम बड़े घोर विपत्तिमे पड़ि गेल छी। हमरा भगवान एतेक सम्पत्ति द' क' एहन यातना कियैक देलैन्हि?। हम अपने तँ वृद्ध भेलहुँ- हम घर बाहर दुनू कोना केँ देखि सकब ?। बाहरक काज जँ कोनहुना देखबो करब, तँ आँगन मे के धरत और संभारत।

गृहिणी नहि रहने हमर बाहरी कुल उद्यम विफल हैत, कियैक तँ बाहर मे हम जे संग्रह करब से घरमे आबिकँ लुटि जायत। अनका ममते कोन होएतैक?। आवेशहुक तँ अभावे रहतैक। संस्कृतमे एक कहबी छैक जे " न गृहं गृहमित्याहुः, गृहिणी गृहमुच्यते" से हमरा अक्षरशः सत्य अनुभव होइछ। हम आब वृद्ध भेलहुँ, हम यदि एखन विवाह करी तँ हमरा स्त्री केँ एहि बातक डर सर्वदा बनल रहबाक सम्भव जे " हमर ई वृद्ध पति कखन स्वर्ग द्वारोन्मुख होयताह तकर कोन ठेकान - ई तँ बतौर पाहुने थिकाह, सब सम्पत्तिक मालकिन हमहिं थिकहुँ- हम जँ ओरिया क' राखब तँ हमरे काज आओत।" तखन उमा बाबू अपने तँ जनितहि छी- हमरा बालको सभ जे छथि से नावालिगेसब छथि। धन जे संचय होएतैन्ह से तँ हुनके लोकनिकँ काज अओतैन्हि। छोट अवस्थामे एखन जँ ओ सब स्वतन्त्र होइ जयताह, तँ कुल सम्पत्तिकँ डुबा दै जयताह। तँ जाधरि हम जीबैत छी ताधरि तँ कोनो कथे नहि, जे तकरा वादो जँ ओ लोकनि सतमाइक तरमे रहै जयताह, तँ धन सम्पत्ति बाँचल रहै जयतैन्ह और अपनालोकनिक बुद्धि जखन परिपक्व होइ जयतैन्ह तखन ओकर सदुपयोग करै जयताह। और बहुत की कहू उमा बाबू, वृद्धावस्था मे सेवा-शुश्रूषा जेहन स्त्री करत, तह बेटा पुतहु बुते कथी लै हैत ?।

हा !!! धर्मशास्त्र-कार लोकनि वृद्ध जगत केर परम उपकार कय गेलाह जखन कि ओ सब लिपिबद्ध कयलन्हि जे - " पति केहनो दुरवस्था मे रहथि, तथापि हुनका प्रति लेशमात्रो उपेक्षा बुद्धि कयने स्त्री नरकगमिनी हो।" अन्तिम पद तँ वृद्ध केँ एकदम निश्चिन्त और सुखी बना देलक। कोनहुना विवाह धरि भेल ताके, तकरा बाद तँ बिना मूल्यक दासी ठाढ़ भ' जाइति। धन्यवाद हुनका लोकनि काँ।

उमा बाबू एतेक काल धरि योगधर बाबूक उपरोक्त सब बात चुपचाप सुनैत गेलाह। बिचारै छलाह जे योगधर बाबू अपन तूँ ती बजा लैथु, तखन हमहुँ समुचित उत्तर देवैन्हि। हुनका आशा छलैन्हि जे युक्ति-युक्त उत्तर पाविकँ योगधर बाबू अपन हृद्गत भावकेँ हुनका मनोनुकूल परिवर्तन करताह। परन्तु देखी केहन मान होइ छैन्हि। ई सब बात मोनमे बिचारितहि छलाह कि श्यामाचरण, भूतनाथ, लोकेश्वर, आत्मानन्द और सच्चिदानन्द बाबू प्रभृति गण्य-मान्य लोक सब एकत्रित भय योगधर बाबूक ओहि ठाम

पहुँचि गेलाह। हुनको लोकनिक उद्देश्य वैह छलैन्हि जे उमाबाबू कहै ले प्रोन्मुख भेल छलाह। आइ- काल्हि ग्राम-मण्डली मे सर्वत्र योगधर बाबूक असमय विवाहक चर्चा, टीका-टिप्पणी और समालोचना गरम रूपेँ भय रहल अछि।

योगधर बाबू अपने जे कहल से हम सूनल परन्तु हमरो जँ किछु सुनितहुँ तँ हमहुँ एहि विषयपर अपन अभिमत कहि सुनाबितहुँ।

उमाशंकर बाबू अपने तँ बड़े महान लोक छी जे हमर तँ ई सिद्धान्त अछि जे सुनी बात छोट पैघ सभक, परन्तु करी वैह जे अपना नीक लागे।

उमा बाबू तँ " करी वैह जे अपना नीक लागै" सूनिक्ँ निराशाक कालिमा देखय लगलाह, तथापि निम्न-लिखित उक्ति बजलाह।

धर्मशास्त्रक आदेश अछि जे " भाय्या पुत्र प्रयोजना" से भगवान अपनेकें चारि लाल सन लाल देने छथि। अपनेक जेठ जन बालक आब शीघ्रे समर्थ होयताह, हुनके विवाह-दान दिन नीक जकाँ करियैन्ह, पुतहुकें घरमे आनिक्ँ घर स्थिर करी ताही मे शोभा अछि। यावत काल धरि जेठजन बाबूक विवाह द्विरागमन होयबाक छैन्हि ताधरि अपने कन्या सबहिकें बजा कें गृह कार्य सञ्चालन कराउ। कन्या बुतें अन्यथा होयबाक तँ कोनो टा संभवे नहि। आवेशो हुनका लोकनिसँ बढ़िकें के करत ?। हुनका लोकनि पूर्ण ज्ञानवती सब छथि और तकर यश नैहर सासुर दुहूँ ठाम सुरभित छैन्हि।

अनेक बालक सब तेहन सत्पात्र ओ सद्बुद्धि सम्पन्न सब छथि जे हमरा सबहिकें हुनका लोकनिक पूर्ण भरोश रहैछ। हमरालोकनिकें ओ सब देशोद्धार-कार्यक सूत्रधार रूपेँ दृष्टिगोचर होइ छथि। हिनका लोकनिक बड़े विलक्षण बुद्धि छैन्हि। गुरुजनक सम्मान करबामे ओ सब बड़े निपुण छथि। किछुए दिनमे अपनेक बालक सब पण्डित भ' भ' कें अपन गामकें के कहय, देश भरिकें उज्ज्वल करै जयताह। हिनका लोकनिसँ सेवा-सुश्रुषा मे कथमपि त्रुटि नै होयबाक सम्भव। हिनका सब पण्डित छथि और

कर्तव्याकर्तव्यक पूर्ण विचार होयतैन्हतँ हिनका लोकनिसँ अन्यथा होयबाक कोनो टा शंका नहि।

प्रत्युत अपनेकेँ भावी स्त्रीयहि सँ दुःख पहुँचबाक बेशी डर कियैक तँ एक तँ ओ बड़े छोटि रहतीह और दोसर अशिक्षता तँ जानियेँ केँ रहतीह और तँ कर्तव्याकर्तव्यक ज्ञान सँ हीन रहतीह औरो एक बात अछि, अपने यद्यपि हुनकासँ सन्तुष्टो रही तथापि ओ अपनेसँ तद्वते रहतीह कि नहि तकर हमरा पूर्ण भय अछि।

योगधर बाबू अपने कहल जे ओ जे संचय करतीह से एही बालक लोकनि काँ काज औतैन्हि से हमरा सम्यक रूपेँ बुद्धिस्थ नहि होइछ। सतमाय और सतौत मे साश्चितिक द्वेष भाव होइ छैक। सतौतसब छोट रहौक वा पैघ और सतमायक अनिष्ट साधन नहियो करैत हो तथापि सतमायकेँ ओकरा देखियेकेँ दुःख होइ छैक। आइ काल्हिक कोन कथा जे जे सत्ययुगहुमे एहि दुनूकेँ शाश्चितिक विरोध रहैत छलैक। एखन तँ कलियुगे थीक, एखन तँ युगहिक धर्मे ई विरोध हैब स्वाभाविक होयतैक। विचार करू योगधर बाबू जे रामचन्द्र सन सतौत ककरा होयतैक- हुनक सन विवेकी, न्यायी, क्रियावान और समचित्त के हैत, तथापि कैकेयी हुनक सतमाय अपन धर्मकेँ नहि छोडलैन्हि। रामकेँ वन पठौने बिना नहि रहलीह। और अपन बेटा भरतकेँ राज्य दियौने बिना चैन नहि भेलीह।

अपनहुँ आब परम् वृद्ध भेलहुँ- एही अवस्थाक स्त्री " प्राणेभ्योऽपि गरीयसी" होइ छैक। अपने प्रमाद्य वश भय बुद्धि-भ्रष्ट भय जायब एवं कर्तव्याकर्तव्यक विचार सँ रहित भय एहि लाल सभक परम् कष्टक कारण भय जयबैन्ह जाहिसँ उद्धृत हैब हिनका सबहि काँ परम् दुःसाध्य होइ जयतैन्हि। अपने केँ सुखक लेश मात्रो धरि होयत कि नहि, परन्तु बालक सबहि काँ दुःखक पारावार नहि रहतैन्हि। अपनेकेँ यदि कनेको एहि बालक सबहिपर दया और स्नेह हो तँ पुनर्विवाहक स्वप्नो धरि नहि देखू। एहीमे अपनेकेँ एहि लौकिक एवं पारलौकिक सुख अछि। " स जातो येन जातेन, याति वंशः समुन्नतिम् " अपने चारि सुयोग्य पुत्रक उत्पादन कयने छी जाहिसँ वंशक भावी उन्नति अवश्यम्भावी अछि। अपने देवता और पितर सबहिकेँ अपन क्रिया सँ सन्तुष्ट कयने छियैन्हि, जकर फलो विद्यमान अछि और तत्प्रयुक्त अपनेकेँ समाजमे पूर्ण यश और प्रतिष्ठा अछि। हमरा

सबहिक्कें दुःख एही बातक अछि जे ई असमय विवाह रूपी कुत्सित कर्म कयने अपनेक जीवन कलंकित भय जायत। अपनहुँकें एवं नेनहु लोकनिकें दारुण कष्टक अनुभव होएतैन्हि।

उमाशंकर बाबू अपनेक उत्तर सूनल। परन्तु हमरा बड़े दुःख होइछ जे अपने हमरा परमवृद्धकें बुझै छी। केश पाकल और दाँत टूटल देखलहुँ कि झट अनुमान कय लेल जे हमर इंद्रियादियो शिथिल भय गेल। आब ने नवयुवक लोकनि काँ पन्द्रहे बीस वर्षक अवस्थामे बिना विवाहे रहिए नहि होइ छैन्हि, परन्तु हमरहुसँ पूर्वक समयमे 40 / 50 वर्षक अवस्थामे तँ लोक सब प्रथमे विवाह करैत छल। हमरे एखन कोन वयस भेलै जे विवाह नहि करी। एखन हमरा केवल 59म् (उन्सठिम्) वर्ष थीक- सद्वातो पट्टा सूनल नहि अछि। दू चारि मासक वा परमावधि गोटेक वर्षक बात रहै तँ मानलो जाय। हमरा ज्योतिषी परसू टिप्पणि देखिकें कहने छथि जे एखन दस पन्द्रह वर्ष कोनो डर नहि अछि। तखन विवाह कियैक नहि करब। परुकहु साल एक 68 म् वर्षक बूढ़कें कन्या भेल छैन्हि। हमरा तँ एखन साठियो नहि पुरले। अपने लोकनि चारिये बालकमे सन्तुष्ट छी, हम अपनेलोकनिकें कहै छी- " हमरा विवाह करय दै जाउ, दश वर्षहिक अभ्यन्तरमे औरो चारि सन्तानक उत्पत्ति कय वंशक समुन्नित करब। यदि ओना नहि हैत तँ मकरध्वज सन सन औषधिक सेवन करब, अवश्ये बुढ़ारी वयसक सुख उठायब। यदि शास्त्र प्रमाण थिक और हमरामे नास्तिकता बुद्धि नहि अछि तँ हम अवश्यमेव कृतकार्य होयब। कहूँ औ श्यामाचरण बाबू लोकनि हम अनर्गल बात कहै छियैन्हि?। फारसीमे एक कहबी छैक - " हिम्मत मरदाँ, मदते खुदा"। साहसीकें ईश्वर सहायक होइ छथिन्ह। औ बाबूलोकनि ! हमर तँ इएह सिद्धान्त अछि।

श्यामाचरण बाबू लोकनि एक स्वरसँ कहलथिन्ह जे जखन अपनेकें सिद्धान्त सुदृढ अछि, तखन हमरालोकनिक परामर्श देनहि की हैत। हमरालोकनिक अयलासँ अपनेकें अनेक तरहक कष्ट भेल हो से सम्भव, तदर्थ हमरासभ क्षमाप्रार्थी होइ छी। हमरालोकनि अपन बात घुरा लै छी, अपने अपन मनोनुकूल कार्य कय देखल जाउ जे की परिणाम होइछ। हमरालोकनि एखन जाइ छी।

योगधर बाबूकें हिनकालोकनिक विदा होयबाक समयमे उठलोसन होयबाक विचार नहि भेलैन्हि।

2

शिरोमणि बाबू ! आइ हमर बड़े भाग्य जे अपनेक दर्शन प्राप्त भेल। हम अपनहिक भेट लै उत्कण्ठित छलहुँ। एखन कतयसँ आबि रहल छी ?।

योगधर बाबू हमर तँ ई कार्ये थीक जे एक ठामसँ दोसर ठाम जाइत अबैत रही जे अपनहि सन सन महान व्यक्तिक सेवा करबाक शुभ अवसर प्राप्त हो। हम जहियासँ अपनेक ओहिठामक अशुभ संवाद सूनल तहिएसँ अपनेक जिज्ञासा करइ लै उत्कण्ठित छलहुँ। कहू बाबू आब अपने की विचार कय रहल छी ?। आब शुद्ध बड़े कम दिन छैक, आलस्य कयने कार्य सुधरब कठिन हैत।

की कहू शिरोमणि बाबू हम तँ बड़े अवग्रहमे पड़ि गेल छी। गामक लोक सब कहैछ जे आब अहाँ विवाह दान करैक योग्य नहि छी। दुइ तीनि दिन होइछ जे एहि गामक पाँच सात व्यक्ति पण्डितम्मन्य सब हमरा कत पण्डिताइ झाड़ि आयल रहथि जे विवाहक स्वप्नो नहि देखी। परन्तु हमहुँ तेहन उत्तर देलियैन्हि जे अपन अपन सन मुँह बना केँ चल जाइत गेलाह। हम तँ सिद्धान्त कैल जे एही बेर जेना तेना विवाह अवश्ये करब।

हँ बाबू अपने विवाह अवश्य कयल जाइ। अपनेकेँ भेले कि ? केवल शरीरक त्वचा मात्र लरकि गेल अछि और दाँत टुटले अछि और केश पाकि गेल अछि। परन्तु एहि सभसँ कोन त्रुटि भेल हैत, अपनेक हाड़-काठ तँ पूर्ववते अछि। अपनेकेँ जे विवाहक अयोग्य कहै जाइ छथि से सब परश्रीकातर थिकाह। अपनेक ग्रामीण सब अपनेक अभ्युदय नहि देखि सकै छथि अतएव एहन परामर्श दैत छथि। परन्तु चावश ! अपनहुँ खूब फटकारलियैन्हि। हुनका सभकेँ छकैबाक हेतु अपने सभा वास्तुक बाद लगले ओतय चलल जाय। हमहुँ अयबे करब। तखन देखबी जे अपनेक विवाह कोना नहि होइये।

अस्तु एखन हम जाइ छी।

श्री योगधरबाबू हुनका अड़ियातै ले उठल सन भेलाह और हुनकर यात्रा -साफल्यक निमित्त " गणनान्ता गणपति ॐ हवामहे" इत्यादि वेदध्वनि करय लगलाह।

शिरो• -हाँ ! हाँ !! योगी बाबू अपने बैसल जाउ , अपने बैसल जाउ। हम अपनेक कार्य्य अपना जकाँ करब। अपने सौराठ सभा शीघ्रे आबी।

(क्रमशः)

(प्रभात, वर्ष 2, अंक 11, नवम्बर 1934)

(ई गल्प अपूर्ण अछि। आगाँक भाग दिसम्बर 34क अंकमे नहि अछि। आ एकर बादक अंक उपलब्ध नहि अछि। तत्कालीन समयक स्थिति-परिस्थिति आ सामाजिक व्यवस्थाक नीक जकाँ एहि गल्पमे वर्णन कयल गेल अछि, जे आब इतिहास भए गेल अछि। एहि गल्पक लेखक कोन गामक छलाह, से नहि कतौ लिखल अछि। कोइलखक छल हेताह अथवा आनो गामक, हुनक वंशजक लग जँ आगाँक अंश उपलब्ध होनि तँ सूचित करथि। एखन तँ पाठके पर निर्भर अछि जे योगधर बाबूक विवाह भेलनि कि व्यवधान अयलनि, गामक पण्डित सभक बात रहलनि कि घटकक प्रपंचक शिकार भेलाह , आब तँ कल्पने कय सकैत छी जे सभा गाछी गेलाह कि नहि?- हितनाथ झा)

संपादकीय सूचना-एहि सिरीजक पुरान क्रम एहि लिंकपर जा कऽ पढ़ि सकैत छी-

[मैथिली साहित्यमे तारानाथ झा एवं हुनक परिवारक योगदान-1](#)

[मैथिली साहित्यमे तारानाथ झा एवं हुनक परिवारक योगदान-2](#)

[मैथिली साहित्यमे तारानाथ झा एवं हुनक परिवारक योगदान-3](#)

[मैथिली साहित्यमे तारानाथ झा एवं हुनक परिवारक योगदान-4](#)

[मैथिली साहित्यमे तारानाथ झा एवं हुनक परिवारक योगदान-5](#)

[मैथिली साहित्यमे तारानाथ झा एवं हुनक परिवारक योगदान-6](#)

१.२. कल्पना झा- मैथिली साहित्यमे श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार' एवं हुनक परिवारक योगदान-१०



कल्पना झा

मैथिली साहित्यमे श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार' एवं हुनक परिवारक योगदान-१०
'कूल डैड' / सहृदय पिता 'विद्यालंकार'

'विद्यालंकार' जीक सामाजिक उपलब्धि आ हुनकर सार्वजनिक छवि पर चर्चाक उपरान्त आब गप्प करब हुनकर व्यक्तित्वक दोसर पहलू, मतलब पारिवारिक जीवन मे हुनकर बात-व्यवहार पर। घरक भीतर हुनकर छवि केहन छलनि, ताहि पर गप्प करब सेहो आवश्यक अछि। कोनो सफल व्यक्तिक व्यक्तित्व पर चर्चा अपूर्णहि मानल जाएत, जँ हुनकर पारिवारिक जीवन पर चर्चा नहि कएल जाए। सफल व्यक्ति ओ नहि जे सामाजिक मंच पर सफलताक उच्चतम शिखर पर विराजित भऽ जाए, मुदा घरक

भीतर घरक लोक हुनकर व्यवहार सँ परेशान रहथि। ओहना सार्वजनिक छवि (public persona) नीक बना कऽ राखब ओतेक कठिन नहि छै जतेक कठिन घरक भीतर आजीवन संतुलित व्यवहार राखैत सभ संबंधक निर्वहन करब छै। मुदा से दुनू क्षेत्रमे सामंजस्य बैसबैत अपन प्रतिष्ठा बनौने रहलाह 'विद्यालंकार' जी। गृहस्थ धर्मक निर्वहन लेल सेहो ततबे तत्पर रहलाह आजीवन, जतेक देस आ समाज-सेवा लेल तत्पर रहलाह ओ। मतलब सामाजिक आ पारिवारिक जीवन मे कुशलतापूर्वक सामंजस्य बैसबैत एकटा आदर्श प्रस्तुत करबा मे सफल रहलाह, एहन जनतब भेटि रहल अछि हमरा।

'विद्यालंकार' जीक पारिवारिक जीवन पर चर्चा लेल सामग्री जुटेबाक क्रम मे अपन मसिया सासु (श्रीमती मंजुला झा) सँ पुछलियनि फोन पर, "नाना जी केहन पिता छलाह मौसी? कोनो संस्मरण सुनाबथु ने..." एहि प्रश्नक जवाब मे मौसी कहलनि, "आइ काल्हि बच्चा सभ बाजैत अछि ने, 'कूल', से तेहने छलाह बाबूजी। एकदम 'कूल डैड'। मोन नहि पड़ैए जे कहियो कोनो भाए-बहिन केँ जोरसँ चिकरि कऽ सोरो कएने हेथिन। डाँटब-मारब तऽ दूरक बात। परिवारक अन्य सदस्य सेहो इएह कहनाम छनि। एहि सन्दर्भ मे बेरा-बेरी परिवारक अन्य सदस्य सभसँ सेहो गप्प कएलहुँ हम।

छओ गोट पुत्री, अम्बा, त्रिपुरा, उर्मिला, मंजुला, सुशील, मधु आ दू गोट पुत्र ललन जी, मदन जीक पिता श्रीकान्त ठाकुर, धाकड़ पत्रकार बला चोला उतारि कऽ प्रवेश करैत छलाह घरक भीतर। घरक भीतर ओ एकटा जिम्मेदार पति आ पिता मात्र बनल रहलाह। पिताक मूलभूत कर्तव्य जे छै, माने सन्तानक लालन-पालन लेल अर्थोपार्जन करब, सुरक्षा आ संरक्षण सुनिश्चित करब, तकर निर्वहन तँ सहजहि कएबे कएलनि। एकर अतिरिक्त सभ धिया-पूताक शिक्षा-दीक्षा पर विशेष 'फोकस' रहलनि हुनकर। एकेडमिक शिक्षाक संग नैतिक शिक्षाक प्रति जागरूक छलाह ओ। जहिना स्वयं जड़ि सँ जुड़ल रहलाह, तहिना धिया-पूता केँ अपन परम्परा, अपन संस्कृति सँ जुड़ल रहब सिखौलनि। कहबाक माने धिया-पूताक व्यक्तित्व-निर्माण मे शिक्षा आ संस्कार, दुनूक महत्व केँ नीक जकाँ बुझैत छलाह 'विद्यालंकार' जी।

जहिना ओ देस लेल, समाज लेल, संस्था लेल, हीत-मीत लेल कर्तव्यनिष्ठ छलाह, तहिना आठो सन्तान लेल सेहो छलाह। एहन नहि छलनि जे समाजक लेल बेहाल छी आ अपन धिया-पूता दूर भेल जा रहल अछि। अपन धिया-पूता केँ सन्मार्ग पर चलबाक प्रेरणा मात्र कहि-सुनि कऽ देब पर्याप्त नहि रहैत छै; धिया-पूताक सोझाँ अपन कर्मक माध्यम सँ सेहो आदर्श प्रस्तुत करब आवश्यक रहैत छै। धिया-पूता माता-पिताक व्यवहार सँ बहुत किछु सीखैत अछि। से 'विद्यालंकार' अपन कृत्यक रूप मे संयम, सहानुभूति आ सामाजिक जिम्मेदारी निभाबैत आदर्श प्रस्तुत करैत रहलाह धिया-पूताक सोझाँ। स्वाभाविके, धिया-पूताक चरित्र-निर्माण पर हुनकर आदर्श-व्यवहारक बहुत सकारात्मक प्रभाव पड़लनि।

हमहूँ आब गृहस्थ जीवन मे प्रवेश कऽ चुकल दू टा युवा पुत्रक माए छी, तऽ हम अपन अनुभवक आधार पर कहि सकैत छी जे धिया-पूताक व्यक्तित्व-निर्माण लेल माता-पिता के बहुत रास मामला मे बड्ड बेसी सजगताक आवश्यकता रहैत छै। माने धिया-पूता केँ कतेक रोक-टोक कएल जाए, कतेक छूट देल जाए, सभ किछु मे एकटा सन्तुलन बना कऽ राखब आवश्यक रहैत छै। से सन्तुलन बनाबए मे कतहु-ने-कतहु चूक भेलनि 'विद्यालंकार' जी सँ। कारण हमरा मौसी सँ गप्पक क्रम मे पता चलल अछि जे मात्र पन्द्रह बरखक बएस मे हुनकर ज्येष्ठ पुत्र ललन जी (ऑफिशियल नाम अशोक ठाकुर) केँ गाड़ी (फोर व्हीलर) दऽ देल गेल छलनि ड्राइव करबा लेल। कने बेसीए 'कूल डैड' छलाह 'विद्यालंकार' जी। जतहु रोक-टोक करब आवश्यक छलनि, ततहु 'कूल' बनल रहलाह। तकर परिणाम ई भेलनि जे कइअक बेर गाड़ी ठोकि कऽ हाथ-पैर तोड़बा चुकल छलथिन पुत्र ललन जी।

स्वतन्त्रता भले बेसी देलथिन धिया-पूता केँ मुदा आत्मनिर्भरताक पाठ नीक जकाँ पढ़ौलथिन। आ तँ करियर-वाइज सफल छलथिन हुनकर दुनू पुत्र। ताहि दिन बेटी सभ करियर-वाइज सेटल होएबाक लेल पढ़ितहि नहि छलीह, तँ मौसी सभ बस ग्रेजुएशन धरि पढ़लि छथि। तकर बाद सभ अपन-अपन घर-गृहस्थी मे रमि गेलीह।

पिता 'विद्यालंकार'क स्नेह आ समय हुनकर सन्तान सभ केँ भेटलनि, जे हुनका लोकनिक मानसिक ओ भावनात्मक विकास मे सहायक रहलनि। आदर्श पिता जकाँ आत्मीयता देखबैत, अपन सन्तान सभ केँ ई विश्वास दिऔलनि जे अहाँ सभ जेहन छी, तेहने हमरा स्वीकार्य छी। हमर सिनेहक पात्र छी।

ओवरऑल मे देखल जाए तँ पिता-धर्मक पालन इमानदारी सँ करैत धिया-पूताक सुख-सुविधाक व्यवस्था करबा सँ लऽ कऽ हुनका लोकनिक उज्ज्वल भविष्य लेल उचित मार्गदर्शन दैत रहलाह अपना जीबैत काल धरि। मात्र शिक्षा आ करियरक क्षेत्र मे नहि अपितु एकटा नीक मनुक्ख बनबा लेल सेहो हुनका सभ केँ प्रेरित कएलनि। धिया-पूताक रुचि आ प्रतिभाक सम्मान करैत हुनकर सभक मार्गदर्शन करैत रहलाह। कहियो ककरो पर अपन विचार थोपलनि नहि। कोनो तरहक दबाव नहि देलनि। वास्तव मे 'कूल डैड' / सहृदय पिता एहने पिता केँ ने कहल जाएत ?

संपादकीय सूचना- एहि सिरीजक पुरान क्रम एहि लिंकपर जा कऽ पढ़ि सकैत छी-

- [मैथिली साहित्यमे श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार'एवं हुनक परिवारक योगदान-1](#)
- [मैथिली साहित्यमे श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार'एवं हुनक परिवारक योगदान-2](#)
- [मैथिली साहित्यमे श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार'एवं हुनक परिवारक योगदान-3](#)
- [मैथिली साहित्यमे श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार'एवं हुनक परिवारक योगदान-4](#)
- [मैथिली साहित्यमे श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार'एवं हुनक परिवारक योगदान-5](#)
- [मैथिली साहित्यमे श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार'एवं हुनक परिवारक योगदान-6](#)
- [मैथिली साहित्यमे श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार'एवं हुनक परिवारक योगदान-7](#)
- [मैथिली साहित्यमे श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार'एवं हुनक परिवारक योगदान-8](#)
- [मैथिली साहित्यमे श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार'एवं हुनक परिवारक योगदान-9](#)

विद्यालंकारजीसँ पहिने विदेहपर व्यासजीक कृतित्वपर कल्पनाजी लीखि रहल छथि। पाठक व्यासजीपर प्रकाशित एखन धरिक सभ खंड निच्चा केर लिंकपर जा कऽ पढ़ि सकै छथि-

- [मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-1](#)
- [मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-2](#)
- [मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-3](#)
- [मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-4](#)
- [मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-5](#)
- [मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-6](#)
- [मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-7](#)
- [मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-8](#)
- [मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-9](#)
- [मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-10](#)
- [मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-11](#)
- [मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-12](#)
- [मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-13](#)
- [मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-14](#)
- [मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-15](#)
- [मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-16](#)
- [मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-17](#)
- [मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-18](#)
- [मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-19](#)
- [मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-20](#)
- [मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-21](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-22](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-23](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-24](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-25](#)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@zohomail.in पर पठाउ।

१.३. लालदेव कामत- एखन बजबाक समय अछि : पाठकीय प्रतिक्रिया



लालदेव कामत

एखन बजबाक समय अछि : पाठकीय प्रतिक्रिया

उपरोक्त कविता संग्रह मैथिली पोथी ९८ पृष्ठक य, जकर दाम २९० टाका आओर आई एस बी एन ९७८- ९३- ४८८६५-१८-२ नं० छै। तकरा २०२५ ई०मे प्रकाशित निर्मली सँ पल्लवी प्रकाशन केलक हेन। ऐ पोथीकेँ रचनाकार श्री प्रदीप पुष्प जी अपन माता - पिताकेँ समर्पित केलनि हय। तथ्यपूर्ण काव्यके रचैता कविवर प्रदीप पुष्प अपन नव रचना लगधक दू दर्जन सँ बेसियेक संग्रह " एखन बजबाक समय अछि" आनि पाठकक समक्ष परोसलनि अछ। एहि नवोदित कवि सह गजलकार केर परिचय पहिले जानि ली। मूलनाम प्रदीप कुमार जीके जन्म २३ फरवरी सन् १९८२ केँ श्री हरेराम मंडलजी आ श्रीमती लक्ष्मी देवी जीक घर भेलनि। हिनक बाबाजी संत प्रवर ननौर ग्राम - पंचायतक चर्चित मुखिया रहथि। मधुबनी जिलाक रूद्रपुर थानाक अन्तर्गत ई प्रसिद्ध गाम अहि। एतय मैथिली साहित्यक 'सगर राति दीप जरय ' बैनर तर त्रिमासिक मैथिली कथा गोष्ठी प्रदीप जी आयोजित करौने रहथि, आ अपन एक अंग्रेजी पोथीक लोकार्पण सेहो। हिनक साहित्यिक अभिरुचिक फलस्वरूप पहिल मैथिली भाषा में पोथी 'मोनक देहरि पर' गजल संग्रह २०२१ ई० मे छपल छन्हि, जकर दोसरो संस्करण बहरायल छैक। श्री प्रदीप जीक' साहित्यिक गुण प्रकाश आकाशवाणी आ दूरदर्शनके श्रोता - दर्शकगण बीच होईत रहलनि हेन। ओ नालन्दा खुला विश्वविद्यालय - पटना सँ हिन्दीमे स्नातकोत्तर आ रामपुर -जमालपुर (दलसिंहसराय) केर प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय सँ डी एल एड० कयने छथि। जीविकोपार्जन लेल पूर्वमे प्रखंड शिक्षक उत्क्रमित

म०वि०विक्रमपट्टी - खानपुर (समस्तीपुर) आ २०२४ सँ स्नातक ग्रेड हिन्दी उ०म०वि०-
रढ़ियाम - भसौर ,बेनीपुर(दरिभंगा) वर्तमानमे धकजरी (अंधराठाढ़ी) म विद्यालय
अध्यापक छथि।

ऐ पाँतिक लेखक सँ पहिल भेंटघांट १० शाल पूर्व प्रदीप जीकेँ झंझारपुर मासीक काव्य
गोष्ठीमे नूतन बरखक अवसर पर भेल रहन्हि। नियमित आयोजक श्री आनन्दजी माँछ -
भातके बिझो संध्या काल करौलनि तँ प्रदीपजी बजलाह हम बिनु कंठीधारी दूधा वैष्णव
छी। से प्रस्तुत हिनक कविता संग्रहक पोथीमे "बाबा" शिर्षककेँ पढ़हैत काल पाठक
लोकनिके झलैक उठत ई दृष्टांत। पाँति द्रष्टव्य - : बाबा

बढ़ मोन पड़ै छी

अहाँ खेबा काल

हम जोगौने छी अहाँक

कहल आ आदेश

तेजने छी माँछ - माँसु आइयो धरि

तँ दोस - महिनमे असगरे

बनल छी वैष्णव

मने बिनु कंठीक बबाजी

भावसँ भरल हिनक कविता बढ़ सरस छन्हि, परिपक्व विचारकेँ कविताक माध्यम
प्रस्तुत करबाक एक नायब तरीका ताकलाह अछि। ओना ओ गजल विधामे अपन बात
बेसी गहिरपन आ भावपूर्ण देखा चुकल छथि। हिनक अधिकतर कविता स्त्री विमर्श सँ
ओतप्रोत छन्हि,जे पाठ शिर्षक 'यै अहाँ' , ओ नइ बँचैत अछि, सलमाक प्रति,तूँ.
आदि।

पर्यावरणीय वनस्पतिमे सनातनी व्यवस्था अनुकूल जतय बड़ - पिपर गाछक
बिशालताक पैघौत देखबाक परम्परा बनल रहल अछि; ताहिठाम कवि बिनु पंजी
व्यवस्थाक सामान्य लोकक मोनमे दुइबक अनिवार्यता अदौ सँ उपस्थित रहल एक
प्रतीकक तुलना करैत नहिं अघाय छथि। आओर बहुजनमे सचेत होय ले संदेशक संचार
कयने छै। शोषण केर विरुद्ध पाँतिक गरहैन एहि तरहँ भेल य - :

.... तैयो निर्विकार भावे उपस्थित रहल हरेक पूजामे

बेरि - बेरि नोचा कऽ अपन छोटछीन देह

उखड़बा कऽ अपन बाँहि

गमाकऽ अपन नवजात

बनल रहल सनातनी व्यवस्थाक संवाहक

आस्थाक बलिवेदी पर ..कटैत

तेजैत रहल प्राण सभदिन ..!!!!!!

मनुख छी हम 'कवितामे' कविक संत्रास उजागर भेल अछि ,जे पढ़ैतकाल अहाँक रूईयां - रूईयां भुटैक जाएत। पछुआयल मानवके दोहण - शोषण जे प्रायोजित छै, से सत्ताधारी विधायक जे नै करा छोड़य! दढ़ ओ बांचल रहैत आयल जे चारण - गानमे डुबल रहल हेन। तँ बगुला आ हाँसमे अन्तर बुझबाक खगौट जनेलाह हें।

ओ नइ बँचैत अछि.... शिर्षक कवितामे डेग - डेग पर मनुख केँ अवघात सँ प्रभावित होईत चिन्तित छथि ; कविजी तेसर अन्तरामे बेटी केँ सब किछु सँ बँचैत पपियाह मोनक अधलाह नेत सँ नै बाँचैत हेबाक मनोवैज्ञानिक दर्शन रखबामे समर्थ भेलाह हेन। संग्रहक सब कविता एक सँ एक उपरा उपरी आ पठनीय छैक। पल्लवि प्रकाशनके मुद्रण त्रुटि सँ सुधी पाठककेँ शब्दक अर्थ असहज करैत छैक,तँ भविष्यमे पुर्नमुद्रण में किछु संशोधन कय सुधार आवश्यक अछि। यथा - तूँ .. शिर्षकमे सुनने केँ सुन ने होयत। बितैत उमर आ हम पाठमे डू केर जगह ड अक्षर आनो ठाम भ' गेल छै। कविता लेखन केर दौड़मे मैथिली साहित्यमे वाढ़ि आयल छैक,अकविता विधामे शब्द ,शिल्प ,कथ्य केँ अनुप्रमाणिकताक संग रचै ले आब रस , अलंकार,लक्षणा - व्यंजना नहि परवाह कयल जाईछ। कवि जीक निशान्न रचना तुलनात्मक रुपें सभक रचना सँ पृथक स्थान बनौने अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.vidaha@zohomail.in पर पठाउ।

१.४. प्रीति कुमारी- समकालीन भारतीय साहित्य पत्रिका अंक - २४६ वर्ष -४७ ,मास जुलाई
-अगस्त २०२६ मादे



प्रीति कुमारी बीए. बीएड.

**समकालीन भारतीय साहित्य पत्रिका अंक - २४६ वर्ष -४७ ,मास जुलाई -अगस्त
२०२६ मादे**

साहित्य अकादमीके द्विमासिक पत्रिका हिन्दीमे नियमित रूपेँ प्रकाशित होइत आबि रहल अछि। एहि पत्रिका केँ भारतके चोटिक पत्रिका श्रेणीमे राखि १९८० ई० सँ अनेकों विद्वान सम्पादक लोकनि पाठक बीच निरपेक्ष भाव सँ देखेलाह। मुदा हालके ऐ पत्रिकामे सम्पादक श्री बलराम जी मोहनं १८१०३ ३३९३३ जे पाँच पृष्ठमे 'भारतीय मनुष्य की छवियाँ' शिर्षक सँ सम्पादकीय प्रस्तुत कयलन्हि, ताहि सँ १० करोड़ मैथिली भाषी बिहारके समाजकेँ घोर निराशा भेलनि अछि। ओ ऐ पत्रिकामे मैथिली उपन्यास'केँ उल्लेख नहिँ करैत अनभिज्ञ रहलाह। जहनकि मैथिली उपन्यास'क १९१४ सँ अद्यतन सूचि बढ़ पैग अर्थात् २५० सँ लगधक बेसियेक छैक। यथा -:

क्र.उपन्यासक नाओं-प्रकाशन वर्ष-उपन्यासकार

०१. निर्दय सासु १९१४ जनार्दन झा 'जनसीदन'
०२. शशिकला १९१५ जनार्दन झा 'जनसीदन'
०३. सुमति १९१८ रासबिहारी लाल दास
०४. कलियुगी संयासी वा ढकोसलानन्द १९२१
०५. मनुष्यक मोल १९२४ भोल झा

06. मिथिला दर्पण 1914 ले. 1925.प्र जनार्दन झा 'जनसीदन'
- 07-पुनर्विवाह-1926-जनार्दन झा 'जनसीदन'
- 08-चन्द्रग्रहण-1933-काँचीनाथ झा 'किरण'
- 09.कन्यादान-1933-प्रो. हरिमोहन झा
- 10.चामुण्डा-1933-लक्ष्मीपति सिंह
- 11.अगिलही-1935- कुमार गंगा नन्द सिंह
- 12.माधवी माधव-1935- हरिनन्दन ठाकुर 'सरोज'
- 13.सौंदर्योपासनाक पुरस्कार -1938-चौधरी केदार नाथ ठाकुर
- 14.सुशीला- 1943- गंगापति सिंह
- 15.द्विरागमण-1943-प्रो. हरिमोहन झा
- 16.भलमानुस-1944-योगानन्द झा
- 17.असहाय जाया-1945-ब्रजनन्
- 18.द्विरागमण रहस्य-1945-46-जनार्दन झा 'जनसीदन'
- 19.पारो-1946-वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'
- 20.जयवार-1946-शारदानन्द झा
- 21.कुमार-1946-उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' 22.वनमानुस-1947-अवध नारायण झा
- 23.माला- मिथिला मिहिरमे प्र.-कश्यप सुरेन्द्र झा सुमन
- 24.चन्द्रकला-1950-बद्री नारायण दास
25. प्रतिमा-1950-शैलेन्द्र मोहन झा
- 26.वीर कन्या-1950-चन्द्र नाथ मिश्र 'अमर'
- 27.अनल पथ-1954-मणिपद्म
- 28.नवतुरिया-1954-वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'
- 29.मधुश्रावणी-1956-शैलेन्द्र मोहन झा
- 30.कृष्ण हत्या-1957-गणेश चन्द्र झा
- 31.रत्नाहार-1957-गणेश चन्द्र झा
- 32.आन्दोलन-1958-छत्रधारी लाल दास
- 33.दूर्वाक्षत-1958-तारानाथ कण्ठ

- 34.आदि कथा-1958-राजकमल
- 35.चानो दाइ-1959-सोमदेव
- 36.बिहाड़ि, पात आ पाथर-1960-मायानन्द मिश्र
- 37.विद्यापति-1960-मणिपद्म
- 38.विदागरी-1963-चन्द्र नाथ मिश्र 'अमर'
- 39.ब्रह्मपिशाच-1964-सोमदेव
- 40.भोरुकबा-1965-धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'
- 41.पृथ्वीपुत्र-1965-ललित
- 42.खोता आ चिड़े-1965-मायानन्द मिश्र
- 43.पवित्रा-1966-योगानन्द झा
- 44.अर्द्धनारीश्वर-1966-67- मणिपद्म
- 45.बिनु मायक बेटी-1967-श्यामा झा
- 46.बाटक भेंट जीनगीक गेंठ-1967-विन्देश्वर मण्डल ,आदि.....! मैथिली भाषा सँ हिंदी समेत आनो भाषामे अनुवाद'क पोथीक' एक पैग सूचि हेरबाक आवश्यकता छैक।

श्री बलराम जी भारतीय भाषामे उपन्यास लेखनक विस्तार सँ चर्चा करैत मैथिलीके उपन्यास साहित्य केँ पूर्णतः नजैर अन्दाज करैत जतय ऐ प्रतिष्ठित पत्रिकाक' गरिमा आ विश्वसनीयताक प्रतिकूल रहलैथ, ततय सम्पादकीय दृष्टि आ संतुलन पर सेहो प्रश्नचिन्ह ठाढ़ केयलथि। सुविज्ञ पाठक अवलोकन कयने होयब जे ओ प्रायः २२ गोठ भाषामे सँ नऊ- नऊ, दस- दस गोठ उपन्यास केँ अपन अधिकतम ज्ञाने चयन कय एहि तरहें उल्लेख कयलाह; जेना -ः अंग्रेजीक पोथीमे अछूत (मुल्कराज आनंद), द गाइड (आर के नारायण), ट्रेन टू पाकिस्तान (खुशवंत सिंह), ब्लू अम्ब्रेला (रस्किन यॉन्ड), मिड नाईट चिल्ड्रेन(सलमान रुश्दी), द गार्ड ऑफ स्मालथिंग्स (अरुंधति रॉय), ए सुटेबल यॉय (बिक्रम सेठ), द हंग्री टाइड (अमिताव घोष), द हार्ट टाइगर (अरविंद अडिगा), इन कस्टडी (अनिता देसाई),नारको पॉलिस (जीत लागल)।

२. उर्दू -ः उमराव जान अदा(मिर्जा हादी रुसवा), आजाद कथा (रतननाथ सरशार) , स्वर्ग यात्रा (मौलाना अब्दुल हलीम सरर), आग का दरिया (कुर्रतुल -ऐन-हैदर), बहुत

देर कर दी(अलीम मसरूर), लहू के फूल (हया तुल्ला अंसारी), टेढ़ी लकीर (इस्मत चुगताई), एवाने गेल(जीलानी बानो), फायर एरिया (इलियास अहमद गद्दी), कई चाँद थे सरे आसमां (शम्सु र्हमान फारुकी)।

३. मराठी - : ध्यान कौन देता है (हरि नारायण आप्टे), यात्री(नारायण सीताराम फड़के), ययाति (विष्णु सखाराम खांडेकर), बलि (मालती वेडेकर), रणागन(विश्राम वेडेकर), रथचक्र (श्रीपातु नारायण पेंडसे), मृत्युंजय (शिवाजी सावंत), वारोमास (सदानंद देशमुख), कोसला (भालचंद्र नेमाडे), पानीपत (विश्वास पाटिल) ।

एहि तरहँ पंजाबीके १०, ओड़ियाके ९, बांग्लाके १५, कन्नड़के १९, कश्मिरीके १०, गुजरातीके १५, डोगरीके १०, तमिलके १५, तेलगु के १५, नेपाली के ९, मलियालमके ९ , राजस्थानी के १०, सिंधिके १०, संताली के १०, संस्कृत के १५, हिन्दीके १५ असमिया के १० आदि । मैथिली लेखकीय समाज वर्तमानमे दू हजार लोक सक्रिय छथि। आओर मैथिली सेवी लोकनि,अभियानी लोकनि जे संस्था - समिति गठन कय मातृभाषा मैथिली लेल अहर्निश सेवामे लागल छथि आ पुरस्कार सेहो तैमेसँ किछु लोक पाबि गेल छथि,हुनका लोकनिके मनोदशा सेहो ऐ तरहक उपेक्षा सँ आक्रान्त भ' उठल छन्हि। एतेक निशन्न,

एतेक पुरान मैथिली भाषा केँ जे संविधानके अष्टम अनुसूचिमे मिजहर छैक ,आ साहित्य अकादमी कतेको मैथिलीक उपन्यास केँ सालभरि पर पुरस्कृत कयने छैक ; तकर वादो सम्पादक महोदय हीनभावना रखैत घोर उपेक्षा कयलाह से कतेक उचित?

(नोट- अंक आ अक्षर हिन्दी -अंग्रेजीमे व्यवहारिक रूप सँ चलैछ।आब देवनागरी लिपि चलैनेमे आबि गेल अछि,जखनकि मिथिलाक्षर बा तिरहुती अंक आ वर्णकेँ अपन स्वतंत्र अस्तित्व छैक)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@zohomail.in पर पठाउ।

१.५. प्रणव कुमार झा- प्लास्टिकक बढ़ैत उपयोग, कचरा प्रबंधनक संकट आ विकल्पक खोज



प्रणव कुमार झा

प्लास्टिकक बढ़ैत उपयोग, कचरा प्रबंधनक संकट आ विकल्पक खोज

[प्रणव कुमार झा, राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड, नई दिल्ली]

करीब पच्चीस बरख पुरान गप्प हेतैक। हम अपन एकटा परिचित संजीव कक्का संगे नानी गाम सँ वापस घुरैत रही। भोरुक समय छल, लगभग पाँच-छः बजे के। ओहि समय नानी गाम धरि आबय-जाय लेल कोनो नियमित सार्वजनिक यातायातक सुविधा नहि छल। नानी गाम से आन जान के दु टा बाट छल। एकटा फरदहा-सकरी चीनी मील रूट जकरा लेल भठौखैर पर ट्रेकर पकड़बा के होई छल आ एकटा छल सकरी-धरौरा रूट, जकरा लेल पाकड़ी गाछ तर तक पैदल जाय के होई छल। हम सब पाकड़ी गाछ तर पैरे जा रहल छलहु।

ओहि भोर हम दुनू पाकड़ी गाछ दिस पैरे-पैरे बढ़ि रहल छलहु। बाटमे गामक एकटा धनाढ्य परिवार, बासो नानाक घर पड़ैत छल। बड़का घर, ओतबे बड़का दलान, विशाल खलिहान, चारू कात छहरदिवारी आ सामने एकटा बड़का फाटक। पिछला राति हुनकर घरमे कोनो लगन छल।

भीतर जे दृश्य देखलहुँ, तऽ कनी अचम्भित भऽ गेलहुँ। आँगन-खलिहानमे उज्जर-उज्जर कप, प्लेट, गिलास, चम्मच जेकाँ देखाइ पड़ैत असंख्य चीज पसड़ल छल। हमरा लेल ई दृश्य अनजान छल। उत्सुकता बढ़ल तऽ संजीव कक्का बुझेलनि - “ई सभ रेडीमेड

बर्तन छैक। बड़का लोक सभ लगन-बियाहमे एकर उपयोग करैत छथि। उपयोग करू आ फेकि दिअ। नै ककरो घर सँ बर्तन माँगय पड़त, नै फेर वापस करय पड़त।”

कक्काक बात सुनि हमरा मोनमे एकाएक किछु वर्ष पहिनेक बुच्ची मौसीक बियाहक दृश्य उभरि आयल। ओहि बियाहमे कतेको घर सँ कप, गिलास, प्लेट, चम्मच आदि माँगि-माँगि कऽ जुटाओल गेल छल। ककरो घर सँ चारि टा प्लेट, ककरो सँ पाँच गिलास, ककरो सँ कप आ एहि तरहें पूरा बियाहक व्यवस्था चलल छल। ओहि समय हमरा मोनमे एकटा सहज विचार आयल छल **“कतेक बढ़िया सुविधा छैक बड़का लोकक लगनमे! बर्तनक झंझट नहि, माँगय-पाछयक जरूरत नहि; उपयोग करू आ फेकि दिअ।”**

तखन ई सुविधा हमरा बड्ड निक सुविधा जेकाँ लगल छल। नहि बुझल छल जे “उपयोग करू आ फेकि दिअ” वाला ई छोट संस्कृति एक दिन हमर सभक लेल कतेक पैघ पर्यावरणीय प्रश्न बनि जाएत।

समय बीतैत गेल। ओहि भोरक घटना सेहो स्मृतिक कोनो कोनमे दबि गेल। मुदा बादमे जीवनमे किछु एहन दृश्य देखय लेल भेटल, जे ओ पुरान दृश्यकेँ एकदम नव अर्थ दऽ गेल। धीरे-धीरे बुझना गेल जे जकरा हम सुविधा बुझने रही, से वास्तवमे समस्या के जन्म देबाक एकटा तरीका सेहो भऽ सकैत अछि। जे वस्तु हमरा लेल उपयोगक बाद समाप्त भऽ जाइत अछि, प्रकृतिक लेल ओकर जीवन तखनहि शुरू होइत अछि।

एहि बातक कटु अनुभव हमरा अंडमानक शहीद द्वीपमे भेल। प्राकृतिक सौन्दर्य लेल नेचुरल ब्रिज बीच पर जखन दोबारा गेल रही। एहि बेर एकटा मछुआराक संग कनी हिम्मत कऽ समुद्रक कात सँ आगाँ दिस बढ़ि गेलहुँ। जते-जते आगाँ बढ़ैत गेलहुँ, प्रकृतिक एकटा दोसर चेहरा सामने अबैत गेल। मेङ्गुवक झाड़ि बीच मारिते रास खाली प्लास्टिकक बोतल फँसल छल। समुद्रक लहरि जे सामग्री अपन संग बहा कऽ अनने छल, से ओहि झाड़ि सभमे अटक गेल छल।

किछु क्षण धरि हम चुपचाप ओहि दृश्यकेँ देखैत रहलहुँ। सामने समुद्र छल, मेङ्गुव छल, प्रकृतिक अद्भुत सौन्दर्य छल आ ओहि सौन्दर्यक बीच मानवक फेंकल प्लास्टिकक

बोतल सभ अपन उपस्थिति दर्ज करा रहल छल। मनमे एकटा टीस उठल जे **भगवानक** देल एतेक मनोरम प्राकृतिक स्थानकेँ सेहो हम सभ नहि छोड़लहुँ!



ओहि क्षण पच्चीस बरख पहिने देखल बासो नानाक घरक ओहि “उपयोग करू आ फेकि दिअ” वाला दृश्य फेर आँखिक सामने आबि गेल। फरक मात्र एतबे छल जे तखन हम आँगनमे फेंकल गेल उज्जर कप-प्लेटकेँ सुविधा बुझने रही, आ आब समुद्रक मेङ्गुवमे फँसल प्लास्टिकक बोतलकेँ ओकर परिणामक रूपमे देख रहल छलहु।

मनमे एकटा आरो भयावह प्रश्न उठल **की पता, किछु वर्ष बाद ई मनोरम समुद्रतट सभ सेहो महानगरक कूड़ाघर जेकाँ प्लास्टिकक बोतल, पैकेट आ कचड़ासँ भरि जाए?** की हमर अगिला पीढ़ी प्राकृतिक सौन्दर्य देखय लेल समुद्रक कात जाएत, वा मनुष्य द्वारा छोड़ल कचराक ढेर?

ओहि दिन बुझना गेल जे प्लास्टिकक प्रश्न केवल प्लास्टिकक प्रश्न नहि अछि। ई हमर जीवन-शैलीक प्रश्न अछि। ई हमर “उपयोग करू आ फेकि दिअ” वाली मानसिकताक प्रश्न अछि। हम अपन घरक कचरा डिब्बामे फेकि कऽ निश्चिन्त भऽ जाइत छी। मुदा ओ डिब्बासँ बाहर निकलल वस्तु कहाँ जाइत अछि? ककरा जिम्मेदारी अछि? जे प्लास्टिक हम पाँच मिनट लेल उपयोग करैत छी, ओकर पर्यावरणीय जीवन कतेक लम्बा अछि? शहरक नालासँ नदी धरि, नदीसँ समुद्र धरि, खेतसँ माटि धरि आ भोजन श्रृंखलासँ मानव शरीर धरि! एहि प्रश्नसभक उत्तर खोजैत-खोजैत ई लेख जन्म लेने अछि। ई प्रयास अछि बुझबाक जे पछिला किछु दशकमे हमर उपभोगक आदत कतय बदलल, प्लास्टिकक उपयोग किएक बढ़ल, कचरा प्रबंधनक व्यवस्था कहाँ धरि सफल भेल, शहर आ गाँव पर एकर की प्रभाव पड़ि रहल अछि, कृषि आ पर्यावरणक समक्ष कोन नव चुनौती अछि, एकल-उपयोग प्लास्टिक पर प्रतिबंधक बाद जमीन पर की बदलल आ सभसँ महत्वपूर्ण जे **की हम सभक लग एहन व्यवहारिक विकल्प अछि, जे सुविधा आ पर्यावरण दुनूकें संग लऽ कऽ चलि सकय?**

आधुनिक जीवनमे प्लास्टिक एहन सामग्री बनि गेल अछि, जाहिसँ पूर्ण रूप सँ अलग भऽ कऽ दैनिक जीवनक कल्पना करब कठिन बुझाईत अछि। घरक रसोईसँ लऽ कऽ अस्पताल, विद्यालय, बाजार, उद्योग, कृषि, परिवहन आ व्यापार धरि, लगभग प्रत्येक क्षेत्रमे प्लास्टिकक कोनो-ने-कोनो रूपमे उपयोग होइत अछि। एकर हलुक वजन, टिकाउपन, कम लागत, जलरोधक क्षमता आ आसानीसँ आकार देबाक सुविधा एकरा औद्योगिक अर्थव्यवस्थाक प्रिय सामग्री बना देलक। मुदा जे वस्तु मानव जीवनकें सुविधाजनक बनबैत अछि, ओहि वस्तुक जीवन समाप्त भेलाक बाद ओकर प्रबंधन नहि होय तँ ओहि सुविधा कचरा संकटमे बदलि जाइत अछि।

प्लास्टिकक असली समस्या ओकर अस्तित्व मात्र नहि अछि। समस्या अछि एकल उपयोगक बढ़ैत संस्कृति, अत्यधिक पैकेजिंग, स्रोत पर कचरा पृथक्करणक कमी, अपर्याप्त संग्रहण, पुनर्चक्रणक असमान क्षमता आ खुलामे फेंकल गेल प्लास्टिकक पर्यावरणमे पहुँचि जाएनाइ। भारतमे एहि चुनौतीकें सामना करबाक लेल खाली “प्लास्टिक बन्द करू” कैम्पेन पर्याप्त नहि अछि। चिकित्सा, खाद्य-सुरक्षा, उद्योग आ

अनेक तकनीकी क्षेत्रमे प्लास्टिकक उपयोगक वास्तविक आवश्यकता सेहो अछि। तँ प्रश्न ई होबाक चाही जे कोन प्लास्टिक आवश्यक अछि, कोन उपयोग अनावश्यक अछि, कतय पुनः उपयोग सम्भव अछि, कतय सुरक्षित विकल्प उपलब्ध अछि आ जे प्लास्टिक उपयोगमे अबैत अछि ओकर संग्रहण तथा पुनर्चक्रणक जिम्मेदारी के उठाओत।

पिछला दु दशकमे भारतमे उपभोगक स्वरूपमे उल्लेखनीय परिवर्तन भेल अछि। संगठित खुदरा बाजार, छोट-छोट पैकेजमे बिकैत वस्तु, घर धरि सामान पहुँचेनिहार व्यवस्था, तैयार भोजन आ ऑनलाइन खरीदारीक विस्तारसँ पैकेजिंगक मात्रा सेहो बढ़ल अछि। एकटा सामान्य परिवारक दैनिक कचरामे दूधक पैकेट, खाद्य पदार्थक आवरण, बोतल, किराना सामानक थैला, घरेलू वस्तुक पैकेजिंग आ भोजन वितरणक डब्बासभ एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनि सकैत अछि। समस्या तखन गम्भीर होइत अछि जखन उपभोक्ताक हाथसँ निकलल एहि वस्तुसभक अगिला यात्रा अस्पष्ट भऽ जाइत अछि।

हम प्रायः कचरा डिब्बामे डालि देलाक बाद मानि लैत छी जे समस्या समाप्त भऽ गेल। मुदा कचरा डिब्बामे पड़लाक बाद वास्तवमे ओकर यात्रा शुरू होइत अछि। यदि घर, दुकान अथवा संस्थानमे गील आ सूखा कचरा अलग नहि होइत अछि तँ पुनर्चक्रण योग्य कागज, धातु, काँच आ प्लास्टिक गील कचरासँ दूषित भऽ जाइत अछि। एहि सँ संसाधन पुनर्प्राप्ति कठिन होइत अछि आ अन्ततः मिश्रित कचराक एक पैघ हिस्सा डम्पिंग स्थल अथवा लैंडफिलमे फेंक देल जाय अछि।

भारतक कचरा प्रबंधनक नीतिमे आब एहि बिन्दु पर महत्वपूर्ण परिवर्तन देखाइत अछि। एक अप्रैल 2026 सँ ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2026 प्रभावी भेल अछि, जे 2016 केर नियमकेँ प्रतिस्थापित करैत अछि। नव नियममे स्रोत पर कचरा पृथक्करणकेँ अधिक स्पष्ट बनबैत चारि वर्ग मे कचरा अलग करबाक व्यवस्था कएल गेल अछि - गीला कचरा, सूखा कचरा, स्वच्छता-संबंधी कचरा आ विशेष सावधानी वाला कचरा। एहि ढाँचाक उद्देश्य कचरा उत्पन्न भेलाक बाद खाली ओकरा उठेनाइ

नहि, बल्कि ओकरा संसाधनमे बदलबाक आ अनावश्यक रूपसँ लैंडफिलमे जाए सँ रोकबाक अछि।

शहरमे प्लास्टिक प्रदूषणक एकटा प्रत्यक्ष प्रभाव जलनिकासी व्यवस्थामे देखाइत अछि। हलुक प्लास्टिक थैला, खाद्य पैकेट, बोतल, कप आ अन्य सामग्री वर्षाक पानीक संग नाला धरि पहुँचि जाइत अछि। नाला जाम होयब खाली सफाईक समस्या नहि अछि; भारी वर्षाक समय ई जलजमावकें बढ़ा दै अछि, जाहिसँ यातायात, व्यापार, आवासीय क्षेत्र आ सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रभावित होइत अछि। नदी, पोखैर अथवा अन्य जलस्रोतमे पहुँचल प्लास्टिक जलचर जीव लेल सेहो खतरा बनि जाय अछि। समयक संग प्लास्टिक छोट कणमे टूटि माइक्रोप्लास्टिकक रूप धारण करैत अछि, जे जल, माटि आ खाद्य श्रृंखलासँ जुड़ल नव पर्यावरणीय चिंता उत्पन्न करैत अछि।

प्लास्टिक संकट खाली महानगरक समस्या नहि अछि। ग्रामीण भारतमे सेहो बाजारक विस्तार आ पैकेज्ड वस्तुक पहुँचसँ प्लास्टिकक उपयोग बढ़ल अछि। खाद्य पदार्थक छोट पैकेट, कृषि-सामग्रीक पैकेजिंग, बोतल, घरेलू उपभोगक सामग्री आ विभिन्न प्रकारक थैला गाँव धरि पहुँचि चुकल अछि। कृषि क्षेत्रमे खेतमे फेंकल गेल प्लास्टिक विशेष चिन्ताक विषय अछि, कारण ओकर संग्रहण शहरक तुलनामे कठिन भऽ सकैत अछि। कृषि-संबन्धी प्लास्टिक, पैकेजिंग अथवा अन्य अवशिष्टक उचित संग्रहण नहि भेल तँ ओकर पर्यावरणीय प्रभाव दीर्घकाल धरि रहि सकैत अछि। तँ ग्रामीण क्षेत्रमे प्लास्टिक प्रबंधनक समाधान खाली किसान अथवा ग्रामीण उपभोक्ताकें जिम्मेदार ठहराबय सँ नहि, बल्कि उत्पादक, बाजार, स्थानीय निकाय आ संग्रहण व्यवस्था सभकें जोड़िकऽ खोजबाक आवश्यकता अछि।

एकल उपयोग प्लास्टिक एहि संकटमे सर्वाधिक दृश्यमान प्रतीक अछि। जे वस्तु कुछ मिनेट अथवा कुछ घण्टा के लेल उपयोग भऽ कऽ सालो साल धरि पर्यावरणमे प्रदूषण रूप मे रहय अछि, ओकरा पर विशेष ध्यान देनाइ अति आवश्यक अछि। भारत सरकारक 2021 केर संशोधन नियमक आधार पर एक जुलाई 2022 सँ अनेक पहिचानल एकल उपयोग प्लास्टिक वस्तुक निर्माण, आयात, भंडारण, वितरण, बिक्री आ उपयोग पर प्रतिबंध लागू केलक। एहि सूचीमे प्लास्टिक डंडी वाला कान सफाईक

डंडी, गुब्बाराक डंडी, प्लास्टिक झंडा, मिठाई आ आइसक्रीमक डंडी, सजावटी पॉलीस्टाइरीन, प्लेट, कप, गिलास, काँटा, चम्मच, चाकू, स्ट्रॉ, ट्रे आदि शामिल छल। इकतीस दिसम्बर 2022 सँ एक सौ बीस माइक्रोनसँ कम मोटाई वाला प्लास्टिक कैरी-बैग पर सेहो प्रतिबंध लागू भेल।

मुदा कानून बनि जएनाइ आ व्यवहार बदलि जएनाइ दू अलग बात अछि। यदि बाजारमे सस्ता आ आसानीसँ उपलब्ध विकल्प नहि अछि, तँ प्रतिबंधित वस्तुक बदला दोसर अनियमित सामग्री बाजारमे आबि सकैत अछि। स्वाइत ई प्रतिबंध के बावजूद बाजार मे एहि सभ सामग्री बंद नहि भेल। तँ एकल उपयोग प्लास्टिकक विरुद्ध नीति संगहि वैकल्पिक सामग्रीक उत्पादन, आपूर्ति, गुणवत्ता आ मूल्यक प्रश्नकेँ सेहो समान महत्त्व देबाक आवश्यकता अछि।

उत्तर भारतक शहर आ कस्बामे भोजनक होम डिलेवरीक बढ़ैत संस्कृति एहि समस्याकेँ नव आयाम देलक अछि। एकटा भोजनक आदेशक संग भोजनक डब्बा, ढक्कन, चटनीक छोट पन्नी, चम्मच, काँटा, सॉसक पैकेट, टिश्यू आ बाहरी थैला सेहो आबय अछि। एहि सभमे सँ प्रत्येक वस्तु अनिवार्य नहि होइत अछि। खाद्य सुरक्षा लेल उचित पैकेजिंग जरूरी अछि, मुदा अनावश्यक पैकेजिंगक कमी करब सम्भव अछि। ग्राहककेँ अतिरिक्त चम्मच अथवा अन्य सामग्री नहि लेबाक विकल्प देनाइ, पुनः उपयोग योग्य भोजन-पात्रक जमा-वापसी व्यवस्था विकसित करनाइ आ आवश्यक पैकेजिंगकेँ पुनर्चक्रण योग्य सामग्रीमे बदलनाइ एहि समस्याक व्यवहारिक दिशा भऽ सकैत अछि। प्लास्टिकक विकल्पक चर्चा करैत समय भारतक जूट उद्योग विशेष महत्त्व रखैत अछि। सिंथेटिक आ प्लास्टिक पैकेजिंग समयक संग पारंपरिक जूट पैकेजिंगसँ लागत, वजन, सुविधा आ आपूर्तिक दृष्टिसँ प्रतिस्पर्धा करैत गेल आ उपयोगमे जूट घटल। भारत सरकार जूट पैकेजिंगक उपयोगकेँ संस्थागत बाजार उपलब्ध कराबय लेल कानूनक माध्यमसँ समर्थन दैत रहल अछि। 2024–25 मौसम लेल खाद्यान्नक एक सय प्रतिशत आ चीनीक बीस प्रतिशत पैकेजिंग लेल जूटक अनिवार्य उपयोग निर्धारित कएल गेल छल। एहि उदाहरणसँ स्पष्ट होइत अछि जे सरकार यदि कोनो वैकल्पिक सामग्री लेल निश्चित बाजारक माँग सुनिश्चित करैत अछि तँ पारंपरिक उद्योगकेँ नव

जीवन भेटि सकैत अछि। मुदा जूटक पुनरुत्थान खाली भावनात्मक आग्रहसँ सम्भव नहि अछि। जूटक थैला यदि प्लास्टिकसँ बहुत महँग, भारी अथवा कम उपलब्ध रहत तँ सामान्य उपभोक्ता स्वतः ओकरा नहि अपनायत। तँ जूट उद्योग लेल लक्षित आर्थिक सहायता, आधुनिक मशीन, डिजाइन सुधार, उत्पाद विविधीकरण आ निश्चित संस्थागत बाजार आवश्यक अछि। सब्सिडी सेहो स्थायी निर्भरता बनाबय वाला नहि, बल्कि उद्योगकें तकनीकी रूप सँ मजबूत करय, लागत घटाबय आ बाजारमे प्रतिस्पर्धी बनाबय वाला होबाक चाही। जूटकें खाली खाद्यान्नक बोरा धरि सीमित रखबाक बदला आधुनिक खरीदारी थैला, किराना बैग, औद्योगिक पैकेजिंग, घरेलू उपयोग, हस्तशिल्प, सजावटी सामग्री आ अन्य उपयोगमे विस्तार देल जा सकैत अछि। राष्ट्रीय जूट विकास कार्यक्रममे उत्पाद विविधीकरण, उत्पादकता, किसान आय आ जूटकें प्लास्टिकक विकल्पक रूपमे बढ़ावा देबाक दिशा पहिनेसँ शामिल रहल अछि। यदि एहि प्रयासकें आधुनिक डिजाइन, ई-वाणिज्य बाजार, सरकारी खरीद आ ग्रामीण उद्यमसँ जोड़ल जाए तँ जूट एकटा हरित उद्योगक रूपमे नव पहचान बना सकैत अछि।

भारतक पारंपरिक पत्तल आ दोना सेहो एहि परिवर्तनक महत्त्वपूर्ण हिस्सा भऽ सकैत अछि। साल, सियाली, बाँस, केला आ अन्य वनस्पति आधारित सामग्रीसँ बनल पत्तल-दोना भारतक ग्रामीण आ सांस्कृतिक जीवनमे बहुत पुरान स्थान रखैत अछि। आधुनिक अर्थव्यवस्थामे एहि परंपराकें लघु उद्योग, महिला स्वयं सहायता समूह आ स्थानीय उद्यमसँ जोड़ल जा सकैत अछि। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषदक मिजोरममे कएल अध्ययनमे सुपारीक झड़ल पातक आवरणसँ प्लेट निर्माणक तकनीक तथा महिला समूहक माध्यमसँ आय सृजनक संभावना देखाओल गेल अछि।

एहि प्रकारक विकल्पक एकटा विशेष लाभ ई अछि जे कच्चा माल स्थानीय स्तर पर उपलब्ध भऽ सकैत अछि आ ओकर मूल्यवर्धन गाँवमे कएल जा सकैत अछि। मुदा प्राकृतिक सामग्रीक उपयोग सेहो टिकाऊ ढंगसँ होबाक चाही। झड़ल पात अथवा टिकाऊ ढंगसँ संग्रहित सामग्रीक उपयोग प्राथमिकता पाबय; गाछक अनावश्यक कटाई अथवा अत्यधिक संग्रहण पर्यावरण-अनुकूल विकल्पक मूल भावना कें कमजोर कऽ सकैत अछि।

कागजक कप आ प्लेटकें सेहो सावधानीपूर्वक देखबाक आवश्यकता अछि। बाजारमे उपलब्ध प्रत्येक “कागजक” कप वास्तवमे प्लास्टिक-मुक्त नहि होइत अछि। किछु कागजी कपमे बहुलक आधारित परत रहैत अछि, जाहिसँ ओकर पुनर्चक्रण कठिन भऽ सकैत अछि। तँ खाली सामग्रीक नाम देखिकऽ ओकरा पर्यावरण-अनुकूल घोषित करब उचित नहि अछि। भविष्यक विकल्पमे बिना प्लास्टिक परतक कागज, मोल्डेड फाइबर, कृषि-अवशेष आधारित रेशेदार सामग्री, बाँस, कुसियारक खोइया आ अन्य प्रमाणित जैव-आधारित सामग्री पर वैज्ञानिक शोध आ औद्योगिक उत्पादन बढ़ेनाइ अधिक उपयोगी रहत।

प्लास्टिकक बोतल घटेबाक एकटा व्यवहारिक उपाय सुरक्षित सार्वजनिक वाटर डिस्पेंसिंग केन्द्रक विस्तार अछि। “बोतलबंद पानी बन्द करू” कहब तखनहि व्यावहारिक अछि जखन यात्रियों आ नागरिककें सुरक्षित विकल्प उपलब्ध होय। भारतीय रेल पहिनेसँ जल-वेंडिंग मशीनक माध्यमसँ सुलभ पेयजल उपलब्ध कराबयक प्रयास कऽ चुकल अछि। मुदा ओ एखन समुचित रूप से प्रभावी नै बनल अछि। एहि दिशा मे आरो बेसी ठोस कदम आ जागरूकता अपेक्षित अछि।

एहि अनुभवकें रेलवे स्टेशनक बाहर सेहो विस्तार देल जा सकैत अछि। बस अड्डा, विद्यालय, विश्वविद्यालय, सरकारी कार्यालय, अस्पताल, बाजार, मॉल, पार्क, पर्यटन स्थल आ पैघ भोजनालयमे सुरक्षित वाटर डिस्पेंसिंग मशीन स्थापित कएल जा सकैत अछि। मुदा एहि व्यवस्थाक सफलता लेल खाली मशीन लगैनाइ पर्याप्त नहि अछि। पानीक नियमित गुणवत्ता परीक्षण, फिल्टरक समय पर परिवर्तन, मशीनक सफाई आ स्पष्ट जवाबदेही आवश्यक अछि।

सरकारी कार्यालय आ संस्थानमे प्लास्टिक कम करबाक सम्भावना ताहूसँ बेसी अछि। कार्यालय, विद्यालय, विश्वविद्यालय, अस्पताल, प्रशिक्षण संस्थान आ सरकारी कार्यक्रममे रोजाना जे कप, गिलास, प्लेट आ पानीक बोतल उपयोग होइत अछि, ओकर एकटा पैघ हिस्सा पुनः उपयोग योग्य सामग्रीसँ बदलल जा सकैत अछि। भीतर भोजन करनिहार लेल स्टील अथवा काँच वा चीनी मिट्टी क बर्तन अधिक उपयुक्त भऽ

सकैत अछि। आयोजन अथवा बाहरी उपयोगमे पत्तल, सुपारी पात अथवा मोल्डेड फाइबर जेकाँ विकल्प अपनाओल जा सकैत अछि।

प्लास्टिक संकटसँ निपटबाक एकटा कम चर्चित मुदा अत्यन्त प्रभावी माध्यम अछि सरकारी खरीद नीति। सरकार आ सार्वजनिक संस्थान बहुत पैघ खरीददार छथि। यदि सरकारी कार्यालय, अस्पताल, विद्यालय, रेलवे, विश्वविद्यालय आ सार्वजनिक कार्यक्रममे खरीद नीति बदलैत अछि तँ बाजारमे उत्पादनक दिशा सेहो बदलि सकैत अछि। खाली सबसे सस्ता सामान खरीदबाक बदला निविदामे पुनः उपयोग, पुनर्चक्रण, टिकाऊपन, जीवन-चक्र लागत आ पर्यावरणीय प्रभाव जेकाँ मानदंड जोड़ल जा सकैत अछि।

प्लास्टिकक विकल्पक चर्चा करैत समय ई सेहो बुझब जरूरी अछि जे एकटा सामग्री प्रत्येक उपयोगक लेल उपयुक्त नहि होइत अछि। स्टील, काँच, जूट, कपड़ा, बाँस, पत्तल, सुपारी पात, मोल्डेड फाइबर, कागज आ पुनर्चक्रित सामग्रीक अपन-अपन उपयोग क्षेत्र अछि। कार्यालयमे स्टीलक गिलास बेहतर विकल्प भऽ सकैत अछि, किराना खरीदमे जूट अथवा कपड़ाक थैला, ग्रामीण आयोजनमे पत्तल, बाहरी भोजनमे मोल्डेड फाइबर अथवा पुनः उपयोग योग्य पात्र, आ औद्योगिक क्षेत्रमे आवश्यकतानुसार जूट अथवा पुनर्चक्रित पैकेजिंग। भविष्यक नीति “एकटा सामग्री बनाम दोसर सामग्री”क विवादसँ आगाँ बढ़ि “सही उपयोग लेल सही सामग्री” पर आधारित होबाक चाही।

एहिमे मूल्य एकटा निर्णायक कारक छैक। यदि प्लास्टिकक थैला सस्ता अछि आ जूटक थैला पाँच गुना महँग, तँ खाली पर्यावरणीय चेतना गरीब अथवा निम्न-मध्यम आय वर्गक व्यवहार नहि बदलि सकत। तँ वैकल्पिक उद्योगक प्रारम्भिक लागत घटेनाइ आवश्यक अछि। जूटक मशीन, पत्तल निर्माणक उपकरण, रेशेदार पैकेजिंग, पुनः उपयोग योग्य भोजन-पात्र, धुलाई व्यवस्था आ वाटर डिस्पेंसिंग मशीन लेल प्रभावी रुप्स से लक्षित पूँजी सहायता देनाइ आवश्यक अछि। उद्देश्य अनन्त काल धरि सब्सिडी देनाइ नहि, बल्कि विकल्पकेँ एतेक मजबूत बनेनाइ होबाक चाही जे समयक संग ओ सामान्य बाजारमे प्रतिस्पर्धा कऽ सकय।

एहि सन्दर्भमे ग्रामीण महिला स्वयं सहायता समूहक भूमिका विशेष रूप सँ महत्त्वपूर्ण भऽ सकैत अछि। जूटक थैला, पत्तल-दोना, सुपारी पातक प्लेट, बाँसक उत्पाद, कपड़ाक थैला आ कृषि-अवशेष आधारित सामग्रीक निर्माण स्थानीय स्तर पर रोजगार उत्पन्न कऽ सकैत अछि। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषदक सुपारी पात प्लेट संबंधी अध्ययनमे समुदाय आधारित उत्पादन आ महिला समूहक आर्थिक सशक्तिकरणक संभावना देखाओल गेल अछि। एहि मॉडलकेँ स्थानीय संसाधनक आधार पर देशक विभिन्न क्षेत्रमे विकसित कएल जा सकैत अछि।

कचरा प्रबंधनक श्रृंखलामे कचरा बीननिहार श्रमिकक भूमिका सेहो अनदेखा नहि कएल जा सकैत अछि। भारतक अनेक शहरमे अनौपचारिक क्षेत्रक श्रमिक प्लास्टिक, कागज, धातु आ काँच जेकाँ मूल्यवान सामग्रीकेँ संग्रहित करैत छथि। यदि नवीकरणीय कचरा प्रबंधन व्यवस्था बनैत अछि तँ हुनकर भूमिका समाप्त करबाक बदला औपचारिक संग्रहण आ सामग्री पुनर्प्राप्ति व्यवस्थामे हुनकर सम्मानजनक भागीदारी सुनिश्चित करबाक आवश्यकता सेहो अछि। सुरक्षा उपकरण, पहचान, प्रशिक्षण आ सामाजिक सुरक्षा जेकाँ पहल हुनकर कार्यस्थितिमे सुधार आन सकैत अछि।

प्लास्टिकक समस्या मे उत्पादकक जिम्मेदारीसँ सेहो जुड़ल अछि। जे कम्पनी पैकेजिंग बाजारमे भेजैत अछि, ओकर जिम्मेदारी खाली वस्तु बेचि देलाक संग समाप्त नहि होबाक चाही। विस्तारित उत्पादक जिम्मेदारीक व्यवस्था एहि सिद्धांत पर आधारित अछि जे उत्पादक, आयातक आ ब्रांड-मालिक अपन पैकेजिंगक जीवन-चक्र समाप्त भेलाक बाद ओकर संग्रहण आ पुनर्चक्रणक व्यवस्था लेल जिम्मेदार होथि।

भारतक लेल चुनौती प्लास्टिकक सस्ता विकल्प मात्र खोजब नहि, बल्कि ओकरा सस्ता, टिकाऊ, सुरक्षित, सहज उपलब्ध आ रोजगार सृजनकारी बनाएब अछि। यदि विकल्प महँग, दुर्लभ वा खराब गुणवत्ताक हैतैक, तँ उपभोक्ता ओकरा नहि अपनायत आर कानूनक प्रभाव सेहो सीमित रहि जेतैक। एहि लेल तकनीक, बजार, नीति आ व्यवहार चारूदिसा एकसंग काज करै पडत

विद्यालय एहि परिवर्तनक एकटा महत्त्वपूर्ण केन्द्र भऽ सकैत अछि। बच्चासभकेँ खाली “प्लास्टिक खराब अछि” कहब पर्याप्त नहि। हुनका ई बुझेनाइ जरूरी अछि जे कचरा

उत्पन्न करबाक बाद ओकर जिम्मेदारी समाप्त नहि होइत अछि। यदि विद्यालय परिसरमे पुनः उपयोग योग्य पानीक बोतल, अलग-अलग कचरा डिब्बा, कम्पोस्टिंग, पुनर्चक्रित कागज, जूट अथवा कपड़ाक थैला आ एकल-उपयोग प्लास्टिक पर नियंत्रणक व्यवस्था रहत तँ बच्चा स्वयं व्यवहारिक उदाहरण देखत। घरमे सेहो ओ एहि व्यवहारकें लऽ जा सकत।

नगर निकायसभ लेल एकटा उपयोगी पहल ई भऽ सकैत अछि जे प्रत्येक नगर अपन “प्लास्टिक प्रवाह मानचित्र” तैयार करय। कोन बाजारसँ कतेक प्लास्टिक निकलैत अछि, भोजनालयक हिस्सा कतेक अछि, पैकेजिंग उद्योगक हिस्सा कतेक अछि, कतेक प्लास्टिक पुनर्चक्रण योग्य अछि, कतेक नालामे पहुँचैत अछि आ कतेक सामग्री अनौपचारिक श्रमिक संग्रहित करैत छथि, एहि आँकड़ाक आधार पर स्थानीय नीति बनाओल जा सकैत अछि। एकर फलस्वरूप “सभ शहर लेल एकहि समाधान”क बदला स्थानीय आवश्यकता अनुसार योजना बनत।

अंततः प्लास्टिक संकट खाली प्लास्टिकक कहानी नहि अछि। ई हमर उत्पादनक तरीका, उपभोगक संस्कृति, बाजारक प्राथमिकता, सार्वजनिक व्यवस्थाक क्षमता आ सामुदायिक जिम्मेदारीक कहानी अछि। यदि हम खाली प्रतिबंध लगाबी मुदा विकल्प उपलब्ध नहि कराबी तँ समस्या के समाधान नै भेटत। यदि हम खाली कचरा उठाबी मुदा स्रोत पर कचरा कम नहि कराबी तँ खर्च बढ़ैत रहत। यदि हम खाली पुनर्चक्रण पर निर्भर रहब मुदा अनावश्यक एकल उपयोग वस्तुक उत्पादन निरन्तर बढ़ैत रहत तँ समस्या बनल रहत।

परिवर्तनक शुरुआत बहुत पैघ घोषणा सँ नहि, बल्कि छोट-छोट व्यवहारिक निर्णयसँ भऽ सकैत अछि। एकटा प्लास्टिक थैला कम उपयोग करब, एकटा पुनः उपयोग योग्य थैला अपनाएब, कार्यालयमे डिस्पोजेबल कपक बदला स्टीलक/काँच गिलास रखनाइ, सार्वजनिक स्थान पर सुरक्षित जल-भराईक व्यवस्था करनाइ, भोजन वितरणमे अनावश्यक चम्मच अथवा पैकेजिंग नहि देनाइ आ घरसँहि कचरा अलग करनाइ ई सभ छोट कदम मिलि कऽ पैघ परिवर्तनक आधार बनि सकैत अछि।

प्लास्टिकक भविष्य खाली एहि बात पर निर्भर नहि करत जे हम कतेक प्लास्टिक बन्द करैत छी। भविष्य एहि बात पर निर्भर करत जे हम कतेक बुद्धिमानीसँ उत्पादन करैत छी, कतेक जिम्मेदारीसँ उपभोग करैत छी आ उपयोग समाप्त भेलाक बाद सामग्रीकेँ कतेक सफलतासँ अर्थव्यवस्थामे वापस आनैत छी।

भारतकेँ प्लास्टिक विरोधी समाजसँ बेसी कचरा-सचेत, संसाधन-संरक्षक आ विकल्प-समर्थ अर्थव्यवस्था बनेबाक आवश्यकता अछि। जखन जूटक थैला प्लास्टिकसँ प्रतिस्पर्धी होयत, जखन पत्तल आ रेशेदार प्लेट सहज उपलब्ध होयत, जखन कार्यालयमे पुनः उपयोग सामान्य व्यवहार होयत, जखन सार्वजनिक स्थान पर सुरक्षित जल सहज उपलब्ध होयत आ जखन कचरा घरसँहि अलग होयत तखन प्लास्टिक संकटसँ निपटबाक लड़ाई कानूनक पन्नासँ निकलि कऽ समाजक व्यवहारमे प्रवेश करत।

आ शायद वास्तविक समाधान सेहो एतहि अछि। प्लास्टिककेँ खाली हटेनाइ नहि, बल्कि एहन व्यवस्था बनबेनाइ जाहिमे प्लास्टिकक अनावश्यक उपयोगक जरूरतहि नहि पड़य।

-प्रणव कुमार झा, ग्राम गोरपुर जिला बेगूसराय / संप्रति: एनबीईएमएस, नई दिल्ली

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@zohomail.in पर पठाउ।

१.६. आचार्य रामानंद मंडल-गोस्वामी बनाम ब्राह्मण/ मिथक बनाम चमत्कार



आचार्य रामानंद मंडल

गोस्वामी बनाम ब्राह्मण/ मिथक बनाम चमत्कार

१

गोस्वामी बनाम ब्राह्मण

हालै मे ब्राह्मण युवती रिया गोस्वामी एगो दलित युवक मिलन पासवान से प्रेम विवाह क लेलक। त ब्राह्मण समाज के कुछ लोग कहलन कि ब्राह्मण समाज के लोग बदनाम क रहल छतन। कारण कि गोस्वामी समाज ब्राह्मण न छतन। वो ईडब्ल्यूएस कोटि मे न छतन। वो पिछड़ा वर्ग सूची -२ मे छतन। संविधान में सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़ा वर्ग के आरक्षण के प्रावधान हय। आब ब्राह्मण (झा, मिश्र, पाठक, पाण्डेय, उपाध्याय आदि) वर्ग यजमानी व्यवस्था मे छतन। हिंदू कर्मकांड करबैत छतन। समाज मे उच्च वर्ग अर्थात् अगड़ा वर्ग में अबैत छतन। परंच गोस्वामी, समाज से कटल लगैत छतन। हालांकि वो शैव पंथ में छतन। आ ज्यादातर महादेव मठ के महंत वा पुजारी रहैत छतन। ब्राह्मण समाज द्वारा ब्राह्मण समाज द्वारा नकारला के बाद दूटा गोस्वामी युवक शोशल मिडिया पर अपन समाज के विस्तृत जानकारी देलन।

वो बतैलन कि जौ आदि शंकराचार्य सनातन धर्म के समर्थन में बौद्ध धर्म के नष्ट करे के अभियान चलैलन त हम गौड़ ब्राह्मण शाखा शंकराचार्य के साथ संन्यास ग्रहण कर बौद्ध धर्म के नष्ट करय मे संग देली। शंकराचार्य चार पीठ के स्थापना कैलन। आर चार मठ के हमर समाज के शंकराचार्य बनलय। परंतु कालांतर में अन्य ब्राह्मण शाखा सेहो शंकराचार्य बनै छैय। परंतु उपाधि हमरे दसनामी शाखा के देल जाए छै। यथा -गिरि, गोस्वामी, सरस्वती आदि। देखल जाय त अड़ के देखैत अन्य ब्राह्मण संत गोस्वामी वा गुसाई के रूप मे जानल जाइत हय। जेना संत गोस्वामी तुलसीदास वा संत तुलसीदास गुसाई आ संत लक्ष्मीनाथ गुसाई। वोना मिथिला में घर के देवता गोसाई वा गुसाई कहल जाइ छै।

अंततः गोस्वामी समाज ब्राह्मण समाजे हय। भले वो पिछड़ा वर्ग मे होय। हालांकि सरकारी दस्तावेज में टाइटल गोस्वामी आ जाति दशनामी वा गौड़ ब्राह्मण रहला पर जाति प्रमाण पत्र बनवाने आ आरक्षण प्राप्त करे मे कठिनाई के सामना करे के पड़य छै वा कबो काल बंचित सेहो होइत हय। अंततः बौद्ध सनातन धर्म के संरक्षक ब्राह्मण गोस्वामी के ब्राह्मण से बंचित न कैल जाय, चाहे पिछड़ा आरक्षण से बंचित भले क देल जाए।

२

मिथक बनाम चमत्कार

मिथक से कोनो व्यक्ति वा पात्र के चमत्कारिक बनायल जाइत हय। मिथक के प्रोपगेंडा वा अफवाह सेहो मानल जा सकय हय।

एगो कहावत हय एके झूठ के सौ बार बोलल जाइ छै त वो सत्य मानल जाइ छै। माने कि सौ व्यक्ति ओइ झूठ के बोले। लोग कहत हय कि एक व्यक्ति झूठ बोल सकय छै। निनानबै व्यक्ति कैला झूठ बोलतय ।

जेना संत तुलसीदास के एगो भूत, हनुमान जी के बारे में बतैलक। आ बाद में संत तुलसीदास के हनुमान से भेट भेलैन। आब हनुमानजी, संत तुलसीदास के राम लक्ष्मण के बारे मे बतैलक।

संत तुलसीदास लिखैत छतन -चित्रकूट के घाट पर भैइ संतन के भीड़, तुलसीदास चंदन घिसे, तिलक करे लखन रघुवीर।

एहन एहन मिथक वा दंत कथा से शास्त्र पुराण भरल पड़ल हय।

जै पर सहसा विश्वास न होइ छै। परंतु भवानी शंकरौ श्रद्धा विश्वास रूपिणौ अलग बात छै। इ घटना कलयुग के हय आ अकबर कालिन हय।

आब मुगलकालीन एगो आउर महाकवि विद्यापति के चर्चा हय। महाकवि विद्यापति, मिथिला राज के राजा शिवसिंह के दरबारी कवि रहलन। शृंगारिक रचना रचैत रहलन। बुढारी मे भगवान शिव उगना बनके खबासी करै लगलन। वोइ उगना के महाकवि विद्यापति के छोड़ के कोनो देखलन।

हालांकि इ मिथक उज्जैनवासी कवि के मिथक रहय। वो महाकवि विद्यापति संग जोड़ देल गेल। ज्ञातव्य कि महाकवि विद्यापति, संत तुलसीदास से पहिले भेल रहतन।

मुगलकालीन समय मे मिथिला मे एगो संत भेलन लक्ष्मीनाथ गुसाईं जी। जिनकर धोती आकाश मे सुखैय।

आब अंग्रेज काल के एगो घटना गांधी जी के बारे मे प्रचलित हय। जौं गांधी जी जेल में बंद रहलन। आ हुनका कहीं भाषण देइत देखल गेल। जेना बालपन मे राम जी कहीं खेलत रहय। परंतु वो पलना मे सुतैत देखल गेल। अर्थात् मानुष अवतार में सेहो देवीय शक्ति देखल गेल।

मिथक कोनो कथा वा पात्र के चमत्कारिक बनबैत हय। आ वो दीर्घकालिक छाप छोड़य छैय कारण वो धार्मिक आवरण धारण क लेइ छै। वो आस्था आ विश्वास के पात्र बन जाइ छै।

-आचार्य रामानंद मंडल पश्चिमी मैथिली बज्जिका साहित्यकार सीतामढ़ी।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@zohomail.in पर पठाउ।

१.७. गजेन्द्र ठाकुर — ८२ टा चयनित कथा : आधुनिक साहित्यिक समीक्षा

VIDEHA 451 • VIDEHA451 / PROSE 07 • सम्पूर्ण मूल पाठ

स्रोतक मूल शीर्षक, प्रकाशन-विवरण, विषय-सूची, अध्याय, तालिका, अन्तिम टिप्पणि आ सन्दर्भ पूर्ण रूपेँ समाविष्ट। मूल स्रोतमे छपल आन्तरिक पृष्ठाङ्क स्रोत-संस्करणक अछि।

गजेन्द्र ठाकुरक

८२ टा चयनित कथा

आधुनिक साहित्यिक समीक्षा

आ पाठाधारित तुलनात्मक अध्ययन

कथाभूमि • शिल्प • सामाजिक संस्था • स्मृति • अभिलेख

मूल कथाकार : गजेन्द्र ठाकुर

मूल कथा-संग्रहक चयन आ सम्पादन : आशीष अनचिन्हार

आधार-पाठ : विदेह संस्करण, २०२६

मैथिली साहित्यिक आलोचना

अध्ययनक आधार

एहि शोधग्रन्थक मूल पाठ गजेन्द्र ठाकुरक ८२ टा चयनित कथाक संलग्न विदेह संस्करण अछि। मूल कथाकार आ चयन-सम्पादकक श्रेय मूल प्रकाशकीय अनुसार राखल गेल अछि। समीक्षा मूल कथाक पुनर्लेखन नहि; ई कथावस्तु, संरचना, कथकक दृष्टि, पात्रक विकल्प, भाषा आ सामाजिक अर्थक स्वतन्त्र विवेचन अछि।

सन्दर्भक केन्द्र कथाक क्रमाङ्क आ शीर्षक अछि। बाहरी आलोचनात्मक सिद्धान्तकें मूल कथासभ पर विचार करबाक औजारक रूपमे प्रयोग कएल गेल अछि, मूल कथाक प्रमाणक विकल्पक रूपमे नहि। मुख्य सन्दर्भ-पोथीक विवरण अन्तमे देल गेल अछि।

अनुक्रमणिका

प्रथम भाग — पाठक परिधि आ आलोचनाक अवधारणा

दोसर भाग — दस स्रोत-खण्डक कथा-दर-कथा अध्ययन

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

स्मृतिक दोसर दिस

इजोत — जनम-जनमक कथा

कथा-शतत्रयी खण्ड-१

कथा-शतत्रयी खण्ड-२

कथा-शतत्रयी खण्ड-३

कथा-त्रिधारा खण्ड-१

कथा-त्रिधारा खण्ड-२

कथा-त्रिधारा खण्ड-३

नव पाँखि

तेसर भाग — गाम, जाति, धर्म आ सार्वजनिक प्रतिष्ठा

चारिम भाग — स्मृति, अभिलेख आ सत्यक प्रश्न

पाँचम भाग — पाँजि, राज्य, श्रम, शिक्षा आ पर्यावरण

छठम भाग — स्वर, मौन, कथाविधान आ तुलनात्मक मूल्याङ्कन

सातम भाग — समग्र निष्कर्ष आ सन्दर्भ-पोथी

परिशिष्ट — बयासी कथाक समीक्षा-अनुक्रम

प्रथम भाग : अध्ययनक पद्धति

पाठ, चयन आ आलोचनाक परिधि

गजेन्द्र ठाकुरक ‘८२ टा चयनित कथा’ एक लेखकक कथा-जगतक एकरूप प्रतिरूप नहि, दस मूल पोथी अथवा खण्डसँ चुनल रचनासभक एक सघन संवाद अछि। चयन-संपादनक श्रेय पोथीमे आशीष अनचिन्हारकें देल गेल अछि। पाँच कथा ‘पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल’सँ, दस ‘स्मृतिक दोसर दिस’सँ, पाँच ‘इजोत — जनम-जनमक कथा’सँ, तीस ‘कथा-शतत्रयी’क तीन खण्डसँ, तीस ‘कथा-त्रिधारा’क तीन खण्डसँ आ दू कथा ‘नव पाँखि’सँ आयल अछि। ई विभाजन मात्र ग्रन्थ-सूची नहि; प्रत्येक स्रोतक कथात्मक लय, विस्तार आ विषय-निर्णय पृथक् अछि। आलोचनाक पहिल दायित्व ई भेद बचाएब अछि।

एहि संग्रहक कथा संसारमे घरक ओसारा, मन्दिरक छत, पोखरि, खेतक मेड़, छात्रावासक जूता, लिपिकक मेज, बाढ़ि-सहायताक कागज, छापाखानाक सीढ़ी, कार्यालयक मोहर, चाहक कप आ पुस्तकालयक खाली पन्ना बारम्बार अर्थ रचैत अछि। ई वस्तुसभ केवल दृश्यसज्जा नहि: एकर उपयोग, स्थिति आ नाम बदलिते पात्रक अधिकारक परिभाषा बदलैत अछि। अही रूपात्मक गुणकें एहि अध्ययनमे कथा-जगतक एक प्रमुख सूत्र मानल गेल अछि; मुदा एहि सूत्रक आधारपर प्रत्येक कथाकें एके निस्सार निष्कर्षमे समेटबाक प्रयास नहि कएल गेल अछि।

कथाक भीतर पात्र जे इतिहास, शास्त्र, विज्ञान वा सामाजिक परम्पराक विषयमे कहैत छथि, ओ साहित्यिक पात्रक कथन अछि। ओकरा स्वतः स्वतन्त्र ऐतिहासिक प्रमाण नहि मानल जाएबाक चाही। विशेषतः ‘डोमा, बुधन आ...’ आ ‘शब्दशास्त्रम्’ सन विचारप्रधान आख्यानमे पात्र-वक्तव्य, कथकक दृष्टि आ बाह्य इतिहासलेखनक अन्तर आवश्यक अछि। एहने प्रकारें ‘सीमाक गोली’ आ ‘अदालत’मे एक प्रमाणसँ सभ प्रमाणक समानता अथवा असमानता सिद्ध नहि होइत। एहि शोधक निष्कर्ष कथा-पाठक आन्तरिक कार्यप्रणाली पर आधारित अछि।

एहि आलोचनाक पाठ-साक्ष्य लेल कथाक शीर्षकक संग संग्रहक क्रमाङ्क देल गेल अछि। अलग-अलग मुद्रण-विन्यासमे पृष्ठ-संख्या बदलि सकैत अछि; तँ शीर्षक आ कथा-क्रमक आधारसँ सन्दर्भ निर्धारित कएल गेल अछि। शीर्षकक एकरूप पुनरावृत्ति सेहो ध्यान राखल गेल

अछि: क्रमाङ्क ६७ आ ७८ दुनूक नाम 'ओसाराक बल्ब' अछि, किन्तु कथासभ एक नहि छथि। एहन अन्तरक चिन्हांकन महत्त्वहीन सम्पादकीय सूक्ष्मता नहि, पाठ-पहिचानक आधार अछि।

आलोचनाक अवधारणा : पाठक आवाज, ध्वनि आ उत्तरदायित्व

भारतीय काव्यचिन्तनमे आनन्दवर्धनक ध्वनिविचार आ कुन्तकक वक्रोक्तिचिन्तन ई बुझबाक सैद्धान्तिक सहारा दैत अछि जे साहित्यिक अर्थ अभिधात्मक कथनसँ आगाँ उत्पन्न होइत अछि। 'दू अक्षर'क सन्देश, 'एक कप चाय कम'क उल्टा कप आ 'मौन गवाही'क सामान्य भोजन-इच्छा घोषणाक बदला संकेतक रूपमे अर्थ उत्पन्न करैत अछि। मुदा ध्वनिको एकटा तैयार समीकरण बना देब अनुचित अछि। पाठक अनुभव विभिन्न पात्रक व्यवहार आ सामाजिक प्रसंगसँ बनैत अछि, केवल प्रतीक पहिचानलासँ नहि।

जेरार जेनेतक कथाविधान-विषयक विवेचन कथकक स्थिति, समयक क्रम आ कथित घटनाक दूरी पढ़बाक लेल उपयोगी अछि। 'सूखल कमला'मे मृत गोपीकें सम्बोधन वर्तमानक भीतर अतीतक निरन्तर प्रवेश अछि; 'अदालत'मे प्रश्न-उत्तर कालानुक्रमक बदला प्रमाणानुक्रम रचैत अछि; 'सात सीढ़ी'मे प्रथम-पुरुषक स्मृति शारीरिक प्रतिक्रियाकें कथानक बनबैत अछि। एहिमे कथा-समय आ पात्रक अनुभूत समय समान नहि रहैत।

मिखाइल बाखिनक बहुवचनात्मक भाषा-दृष्टिसँ एहन कथा पढ़ल जा सकैत अछि जाहिमे विभिन्न सामाजिक बोलिआ शैली एक मंचपर भेटैत अछि। 'सिद्ध महावीर'मे आस्था, चिकित्सकीय विवेचन आ सामुदायिक अफवाह अलग आवाज छथि; 'सीमाक गोली'मे सैन्य प्रक्रियाक भाषा आ गामक स्मृति परस्पर विवादरत छथि; 'बरगदक नीचाँ रजिस्टर'मे सरकारी पाँजि आ लोक-पाँजि दू भिन्न प्रशासनिक व्याकरण छथि। तथापि कथामे अनेक पात्रक उपस्थिति मात्र बहुवचनात्मकता सिद्ध नहि करैत; असल प्रश्न ई जे केकरो दृष्टिकें अन्तिम सत्य बनबाक सुविधा भेटैत अछि कि नहि।

वेन सी. बूथक कथात्मक विश्वसनीयता-विचारकें स्मरण करैत ई संग्रह कथकक जानकारीक सीमा पर विशेष ध्यान माँगैत अछि। 'प्रतिलिपिकार' मूलक रिक्तता जसक तस राखैत अछि; 'अन्तिम पाठक' पुनर्निर्मित स्मृतिकें मूलक प्रतिरूप नहि घोषित करैत; 'मिथिलाक पुस्तकालय'

स्रोत-विरोधक पृष्ठ जोड़ैत अछि। एहि कथासभक प्रामाणिकता सर्वज्ञ कथनसँ नहि, “हम एतबे जनैत छी” स्वीकार करबाक नैतिकतासँ बनैत अछि।

विक्तर श्वलोव्स्कीक अपरिचयीकरणक अवधारणा रोजक वस्तु नब दृष्टिसँ देखबाक क्रिया बुझबामे मदति करैत अछि। एकतीसम खाट, शून्य कुर्सी, खाली कॉपी वा बिगड़ल घंटी एही प्रक्रिया सँ सामान्य उपयोगसँ हटि प्रश्न बनैत अछि। मुदा एहि संग्रहमे वस्तुक अपरिचयीकरण शुद्ध कलात्मक खेल नहि; अक्सर अधिकारक व्यावहारिक स्थिति ओकरा उत्पन्न करैत अछि। वस्तु देखबाक नब ढंग सामाजिक व्यवहारक नब मापक बनि उठैत अछि।

दोसर भाग : कथा-दर-कथा पाठालोचना

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

प्रथम खण्डमे पाँच कथाक अन्तर असाधारण अछि। विस्तृत सांस्कृतिक आख्यान, शास्त्र-विचार आ एक अत्यल्प संवादक मूल्याङ्कन लेल पृथक् शिल्पगत मापदण्ड आवश्यक अछि।

१. सिद्ध महावीर

‘सिद्ध महावीर’मे अनमना दीदीक विधवापन, मन्दिरक निर्माण आ घरारीक स्वामित्व एकहि सामाजिक यथार्थक तीन परत बनैत अछि। भातिजक प्रस्ताव आर्थिक मदति बुझाइत अछि, मुदा रजिस्ट्रीक बाद बाट आ जमीनक सम्बन्ध बदलि जाइत अछि। एहि ठाम धार्मिक विश्वासक विफलता सँ बेसी महत्वपूर्ण अछि कागजक भाषामे सामर्थ्यहीन स्त्रीक विस्थापन। भातिजक मृत्युकें गामक लोक श्रापक फल मानैत अछि; दीदी ओकरा हृदयाघात आ उपचारक अभावसँ जोड़ैत छथि। अन्तिम कीर्तनमे वैज्ञानिक आ चमत्कारी दुनू व्याख्या एक संग बचल रहैत अछि। कथा निर्णय थोपबाक बदला सामुदायिक विश्वासक निर्माण-प्रक्रिया देखबैत अछि; आरम्भक ‘दीदी’क ‘बाबा’मे बदलैत सामाजिक नामकरण सेहो अर्थपूर्ण अछि।

२. डोमा, बुधन आ...

बुधन अपन छोट भाय डोमाक पढ़ाइ लेल हरवाही छोड़ि चण्डीगढ़मे रिक्शा चलबैत छथि; ई क्रिया शिक्षाक सामाजिक लागत कें श्रमक देहपर लिखैत अछि। कथाक उत्तरार्धमे स्मृतिक्षय सँ जूझैत कथक आ बुधनक बेटाक भेट एक पीढ़ीक अनुभवकें दोसर पीढ़ीक प्रश्नसँ भिड़बैत

अछि। आरक्षण, जाति आ जाति-व्यवस्थाक भेद, वैदिक पाठक व्याख्या आ विश्व-दृष्टि पर लम्बा विचार-विनिमय कथा केँ प्रबन्धात्मक विस्तार दैत अछि। एकर सामर्थ्य इतिहास आ निजी स्मृतिक सतत टकराव अछि; शिल्पगत जोखिम ई जे विचारक प्रवाह किछु ठाम पात्रक जीवन-स्थितिसँ बेसी फैलि जाइत अछि। ‘डोमा’ नाम स्वयं सामाजिक अपमान आ जीवनरक्षाक लोक-विश्वासक अस्थिर सम्बन्ध खोलैत अछि।

३. शब्दशास्त्रम्

‘शब्दशास्त्रम्’ तालपत्रक परिरक्षणसँ आरम्भ होइत अछि: शब्दक इतिहास एतय पोथीक जिल्द वा विद्वत्ताक घोषणामे नहि, रौदमे पसारल नाजुक पदार्थमे सुरक्षित अछि। मितू, आनन्दा आ शास्त्रीय प्रतिष्ठासँ जुड़ल प्रसंग ज्ञानक अधिकार, प्रेम आ सामाजिक निर्णय बीच संघर्ष रचैत अछि। सिंह राशिक मौसम, विवाहक शुभकाल आ मीमांसकक प्रभाव साहित्यिक समयकेँ अनुष्ठानिक समयसँ भिड़बैत अछि। ई कथा अपन आख्यानक भीतर विद्वत्ता केँ स्वतः नैतिकता मानि लेबाक विरुद्ध प्रश्न रखैत अछि। अन्तमे आनन्दाक गीतक उपस्थितिसँ बुझाइत अछि जे मनुष्यक जीवित कण्ठ ज्ञानक कठोर संस्थागत सीमासँ बाहर अपन अर्थ सुरक्षित रखि सकैत अछि।

४. महिसबार ब्राह्मणक गाम

‘महिसबार ब्राह्मणक गाम’क विस्तार पारम्परिक एकरेखीय घटनाक्रम नहि, गामक सांस्कृतिक नृवृत्त जकाँ पढ़ल जाएबाक चाही। पोखरि, जातिगत टोला, पेशा, मेले आ नाच-गानक सूची सँ सामाजिक स्थानक जटिल नक्शा बनैत अछि। कथकक बेराबेरी विषयान्तर पाठक केँ स्मरण करबैत अछि जे गामक ‘एक’ कथा कहनाइ असम्भव प्रायः अछि। जाति केवल विचार नहि, आवास, श्रम-विभाजन आ आयोजनक ठोस व्यवस्था अछि; लोकनाट्यक विस्तृत उपस्थिति एहि व्यवस्था भीतर विविध कला-स्मृति सुरक्षित करैत अछि। एकर दस्तावेजी समृद्धि उल्लेखनीय अछि, यद्यपि घना सूचीसभ कथात्मक तनावकेँ जानि-बुझि धीमा करैत अछि। एहने धीमापन एहि आख्यानक रूपात्मक चुनाव अछि।

५. जाति-पाति

‘जाति-पाति’ अत्यल्प आकारमे सामाजिक प्रतिष्ठाक असमान व्याकरण उधारैत अछि। दू प्रशिक्षित पुलिस अधिकारीक बराबर पद, एक्के समारोह आ मद्यपानक साझा स्थिति देखल जाए तँ सामाजिक दूरी नष्ट होबाक चाही; मुदा “राजपूतक छाती” गर्वसँ कहबाक सुविधा आ “हम डोम छी” कहबाक असुविधा बराबरीक सीमाकेँ उजागर करैत अछि। कथाक प्रभाव व्याख्यामे नहि, दोसर पात्रक एक प्रश्नमे अछि। एतय संक्षिप्तता शिल्पगत बाध्यता नहि, सामाजिक विडम्बनाक मापक बनैत अछि। ओकरा विस्तारित कथानकक मानदण्डपर कमतर ठहराएब अनुचित होयत।

स्मृतिक दोसर दिस

एहि खण्डक दस कथा स्मृति आ प्रमाणक बीच असहमतिकेँ विविध जीवन-स्थितिमे परखैत अछि। रिक्त दस्तावेज, गवाही, घरक खिड़की आ ज्ञानक अपूर्णता एतय कथात्मक बुनियाद बनैत अछि।

६. प्रतिलिपिकार

सुधीन्द्र दासक प्रतिलिपि बनएबाक कौशल ‘प्रतिलिपिकार’मे नैतिक निर्णयक विषय बनि जाइत अछि। रामदुलारी देवीक मूल लेखनक एक रिक्त स्थान भरब ओकर लेल प्राविधिक रूपसँ सहज अछि, मुदा ओ खाली कोष्ठक जसक तस राखैत अछि। एहि निर्णयमे नकल करबाक निष्क्रियता नहि, मूल पाठक अनिश्चितता सुरक्षित रखबाक सक्रिय अनुशासन अछि। भवानीबाबूसँ संवाद आ कागजक संरक्षणक परिवेश ई प्रश्न उठबैत अछि जे सम्पादन कखन मूलक अधिकार पर अतिक्रमण करैत अछि। कथाक अन्हारमे अदृश्य रहैत रिक्त स्थान स्मृतिक अनुपस्थितिक दृश्यरूप बनैत अछि। एही कारण ई कथा संग्रहक पाठ-नीतिक सेहो एक समुचित रूपक अछि।

७. अन्तिम पाठक

आगिसँ नष्ट जनवाचनालयक पुस्तकसभ ‘अन्तिम पाठक’मे केवल जरेबाक वस्तु नहि, अपूर्ण स्मृतिक रूपमे पुनः प्रकट होइत अछि। रघुपति पहिने हेरायल पाठ अपन अनुमानसँ भरय चाहैत

छथि; पछाति ओ रिक्त ठाम अलग चिन्हित करबाक अनुशासन सीखैत छथि। नेहाक नाटक आ फेर वाचनालयक नव आरम्भ “अन्तिम” शब्दक निर्णायकताकें निरस्त करैत अछि। कथा स्मरण आ कल्पनाक अधिकारमय दूरी जाँचैत अछि: पुनर्निर्माण सम्भव अछि, मुदा ओकरा मूलक पुनर्प्राप्ति कहल नहि जा सकैत। जखन आगिक बादक पहिल पुस्तक सुरक्षित होइत अछि, साहित्यिक भविष्य नष्ट अतीतक निर्विवाद प्रतिलिपि बनि नहि अबैत।

८. सीमाक गोली

‘सीमाक गोली’मे नाला, पुरान सीमा-पत्थर आ नकाशाक भिन्न स्थितिसँ गोली चलबाक घटनाक सत्य सेहो विवादित भऽ जाइत अछि। पाइपकें तत्काल हथियार बुझबाक सम्भावना, जवानक खतरा-बोध आ प्रत्यक्षदर्शीक अवस्थिति अलग-अलग कथन रचैत अछि। अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भेद ई अछि जे ‘हम नहि सुनलहुँ’ सँ ‘ओ नहि बाजल’ निष्कर्ष नहि निकालल जा सकैत। घटनाक पुनर्निर्माणमे प्रक्रियागत भाषा प्रायः अनुभवक अनिश्चितताकें मिटबैत अछि; कथा ओकर विरोध करैत अछि। अन्तिम वाक्यमे गोलीक क्षणिक ध्वनि आ अर्थक दीर्घ अवधि बीच अनुपातहीनता नैतिक आ कथात्मक दुनू स्तरपर सफल अछि।

९. राजमिस्त्रीक गिरावट

‘राजमिस्त्रीक गिरावट’मे “सुरक्षा पहिने” लिखल फाटकक नीचाँ असुरक्षित श्रमिक-बाट अछि। ई दृश्य सरकारी वा निजी सुरक्षा-वचन आ वास्तविक निर्माणस्थलक बीच विडम्बना स्थापित करैत अछि। बुधनक गिरावट कें एकटा बाँसक चूक अथवा मजदूरक निजी गलती बुझला पर निर्णय सरल भऽ जाइत; मुदा रस्सी, पटरा, पुरान जोड़ आ पूर्व शिकायत अनेक उत्तरदायित्व खोलैत अछि। मञ्जूक लग बचल नोटबुकमे “ऊपर रस्सी बदलय कहने” ई बातक पाठ-प्रमाण अछि जे श्रमिक दुर्घटना सँ पहिनहि जोखिम चिन्हि सकैत छल। कथा दोष कें विलीन करबाक सामूहिक भाषाक प्रतिकार करैत अछि।

१०. काजर

‘काजर’मे शारदा देवीक पुरान अधूर प्रशिक्षण आ ईराक नव आरम्भ एक दिनक छोट घरेलू अनुष्ठानमे मिलैत अछि। आँखिक काजर पीढ़ीगत सौन्दर्य-मानक नहि, निजी निर्णयक अभ्यास बनि जाइत अछि। शारदाक टेढ़ रेखाकें नहि पोछबाक निर्णय हुनक वर्तमान शरीरकें स्वीकार

करबाक क्रिया अछि; ई कथाक वास्तविक परिणति थिक। संस्मरणक दबाव रहितो रचना नानीक अधूर सपनाकेँ नातिनक उपलब्धिमे कृत्रिम रूपसँ पूरा नहि करैत। साधारण दरपन आ परदा खोलबाक घटना सँ स्त्रीक समयक स्वायत्तता व्यक्त होइत अछि।

११. सूखल कमला

सूखल कमलाक कात मृत गोपीसँ एकतर्फा सम्बोधन पूरा कथाक अन्तरंग लय बनबैत अछि। नदीक पुरान धारा आ स्मृतिक दिशा एक-दोसरसँ मेल नहि खाइत; भूगोल आ शोक दुनू बदलल अछि। कथक परालीक धुआँ देखिकऽ चिताक स्मृति लबैत अछि, फेर स्वयंकेँ सुधारैत अछि—सभ धुआँ मृत्यु नहि। एही आत्मसंशोधनसँ स्मृतिपर भावनात्मक अधिकारक सीमा निर्धारित होइत अछि। अन्तमे मृत संग चलबाक कल्पना रहैत अछि, मुदा पएर जीवितकेँ उठेबाक पड़ैत अछि। शोककेँ विस्मरण नहि, वर्तमानमे चलबाक कठिन अनुशासन रूपेँ लिखल गेल अछि।

१२. माटिक गन्ध

‘माटिक गन्ध’मे पहिल वर्षाक गन्ध सुधांशुक स्मरण खोलैत अछि, मुदा कथा गन्ध आ स्मृतिक अनिवार्य सम्बन्ध स्थापित कऽ बन्द नहि भऽ जाइत। मायक अनेक क्षण बिना कोनो गन्धक सेहो घुरि अबैत अछि। पाठक पहिने एक परिचित इन्द्रिय-रूपकक अपेक्षा करैत अछि; अन्तिम बिन्दुपर स्मृति ओहि रूपकसँ स्वतन्त्र होइत अछि। कथाक खण्डित, कखनो लघु अनुच्छेद स्मरणक अचानक आवागमनक अनुरूप अछि। सहजबोधक भावुकता सँ बचब एहि रचनाक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि।

१३. बहिनसभ

मृदुला आ नीराक पुरान झगड़ा लोक-शिल्पक कपड़ापर बनल रेखासभमे नव अर्थ पबैत अछि। “ई रेखा के बनौलक” प्रश्न सृजनक व्यक्तिगत दावासँ अधिक परम्पराक सामूहिक इतिहासक प्रश्न बनि जाइत अछि। चालीस बरखक दूरी बहिनसभक असहमतिमे स्वतः समाधान नहि दैत; दुनू बुझैत छथि जे पहिनुक रेखा ओकरा सभसँ पुरान छल, मुदा दुनूक हाथ ओकर दिशा बदलने अछि। अन्तिम खाली ठाम ‘सुलह’क सस्तो प्रतीक नहि, सम्बन्धक अपूर्णताकेँ स्वीकार करबाक रचनात्मक निर्णय अछि।

१४. घर नम्बर पाँच

‘घर नम्बर पाँच’ एक घरक भीतर बदलैत स्त्री-जीवनक इतिहास रचैत अछि। उत्तर देवालक खिड़की, ओहि ठामक पुरान उपयोग आ अगिला पीढ़ीक नव जरूरत पाँचक स्थिर घर-संख्याक विपरीत बदलैत अर्थ दैत अछि। कियो सम्पूर्ण इतिहास नहि जानैत, मुदा एक स्त्रीक निर्णय दोसर स्त्रीक दैनिक सुविधामे जीवित रहि सकैत अछि। एहि कारण कथा स्मारकक बदला उपयोग, स्मृतिक बदला अनजान उत्तराधिकार आ निजी स्वामित्वक बदला दीर्घ सामूहिक प्रभाव पर ध्यान दैत अछि। अन्तमे खिड़की खुलल रहब अनिर्णीत किन्तु सार्थक खुलापन अछि।

१५. संगीत शिक्षक

महिला कौशल केन्द्रक परीक्षणमे समान नियमक आग्रह आ विशेष परिस्थिति लेल आवश्यक काठक पाटीक व्यवस्था—‘संगीत शिक्षक’क केन्द्रीय विवाद अछि। नलिनी झा पहिने निष्पक्षता केँ एकरूपता मानैत छथि। शबनमक एड़ी आ प्रशिक्षणक वास्तविक बाधा देखलाक बाद हुनका पुरान शिक्षिकाक हारमोनियमक पट्टी बदलबाक स्मृति अबैत अछि। दुनू घटना समान नहि, मुदा शिक्षणक न्यायबोधमे गहिर सम्बन्ध अछि। रचना दया आ अधिकारक भेद पर सूक्ष्म ढंगसँ विचार करैत अछि: व्यवस्था सभकेँ एके जकाँ राखि कऽ न्यायसंगत नहि भऽ सकैत।

इजोत — जनम-जनमक कथा

ई पाँच कथा वंश, संगीत, न्याय, बाढ़ि आ साहित्यिक संस्था बीच संवाद रचैत अछि। एक खण्डक अन्तर्गत रहितो प्रत्येकक कथन-रूप आ काल-आकार स्वतंत्र अछि।

१६. मातृवंश

‘मातृवंश’मे जेठ बेटीक उत्तराधिकार प्रथाक पाछाँ पुरखा-स्त्रीक घर सम्हारबाक वास्तविक काज रहैत अछि। ईशानी जखन परम्पराक मूल कारण सुनैत अछि तऽ बुझैत अछि जे जिम्मेदारी पर आधारित पुरान निर्णय कालान्तरमे जन्मक्रमक कठोर आदेश बनि गेल। कथा स्त्री-वंशकेँ स्वतः मुक्तिकारी मानि लेनेसँ बचैत अछि। घरक चाभी, ओकर नकल आ आगाँक आवागमन स्वामित्वसँ अधिक सामूहिक देखरेखक प्रस्ताव बनैत अछि। अन्तिम दीपक इजोत कोनो वंशादेश नहि, एक-दोसराकेँ देखबाक सम्भावनाक रूपमे उद्घाटित अछि।

१७. राग

‘राग’मे पिप्राक घाट, छठक बादक रिक्तता, हरिहरक स्वराभ्यास आ मुन्नीक गान परम्पराक जीवित संवाद बनैत अछि। कथा शुद्धता बनाम नवाचारक आसान द्वन्द्व नहि रहैत; हरिहरक कथन अनुसार प्रत्येक फरक चूक नहि, मुदा प्रत्येक फरक नब बाटो नहि। गाबि-सुनि-फेर गाबबाक अभ्यास संप्रेषण, आत्मसंशोधन आ स्वरक सामुदायिक उत्तरदायित्वक प्रक्रिया अछि। नदीक कात काँपैत इजोत एहि अपूर्ण सीखक अनुरूप अछि—संगीतक यात्रा पूर्ण प्रकाशक प्रतीक्षा नहि करैत।

१८. अदालत

‘अदालत’ अनुच्छेदक पारम्परिक आख्यानक बदला प्रश्न-उत्तर आ गवाहक कथनसँ गठित अछि। घाटक विवादित पट्टीक बारेमे पुरान नकाशा, बदलैत नदी, फोटो आ स्मृति परस्पर एक मत नहि छथि। खास बात ई अछि जे निरीक्षणक एक दृश्य स्वामित्व-विवादसँ प्रत्यक्षतः असम्बद्ध होइतो मानवीय अर्थ रखैत अछि। प्रमाणक सीमा स्वीकार करैत कथा अदालतक निर्णायक भाषाकेँ जटिल बनबैत अछि। एतय बहु-कण्ठात्मकता केवल शैली नहि; निष्कर्षक नैतिक संयम अछि।

१९. डूम

‘डूम’मे बाढ़ि पहिने समाचार, फेर ध्वनि, फेर गन्ध आ अन्ततः घरक भीतर पहुँचैत अछि। एहि क्रमसँ विपत्ति प्राविधिक सूचना नहि, क्रमशः देहगत अनुभव बनैत अछि। सुमित्राक घरेलू काज, घाटक गाद हटेबाक श्रम आ लालटेनक सीमित इजोत एके सामाजिक संसारक अंग छथि। कथा नायकत्वक ऊँच स्वर सँ बचैत अछि; नालीमे अटकल पात निकालि पानिक प्रवाह पुनः चालू करब छोटे स्तर पर पुनर्निर्माणक ठोस संकेत अछि। बाढ़िक बाद स्मृतियो केवल महाविपत्तिक चिन्ह नहि, दैनिक श्रमक सतत विस्तार बनैत अछि।

२०. विदेह

‘विदेह’मे घरक पुरान संदूक सँ निकलल कागज निजी स्मृतिक सीमासँ आगाँ सामूहिक प्रकाशन-प्रक्रियाक विषय बनैत अछि। नैना, जगदम्बा देवी, चम्पाक घाट-हिसाब आ आन सहयोगीक योगदानक संग साहित्यिक संस्था अपन व्यावहारिक अर्थ पबैत अछि। नकल, सुधार,

अंशदान आ अगिला अङ्कक सम्पादन कथा भीतर कथा निर्माणक इतिहास अछि। अन्तिम खाली पन्ना पर सम्पादकीय स्वामित्वक घोषणा नहि लिखब अधिक अर्थपूर्ण अछि: आगामी लिखनिहार लेल अवसर छूटैत अछि। जलमे टूटि-जुड़ैत दीपक प्रतिबिम्ब एकमात्र सत्य-रेखाक बदला बहुविध आवाजक रूपक बनैत अछि।

कथा-शतत्रयी खण्ड-१

पहिल दस चयनमे निजी स्मृति आ सार्वजनिक संस्था बारम्बार एक-दोसराक मापक बनैत अछि। रोजक वस्तुक स्थान आ नाम सामाजिक व्यवहारक अदृश्य नियम खोलैत अछि।

२१. दू अक्षर

‘दू अक्षर’मे केवाड़ीक पाछाँ टाँगल धूसर छाता छओ बरखक पारिवारिक मौनक वाहक बनैत अछि। छाता ककर अछि, एहि तथ्य सँ अधिक निर्णायक अछि जे सुधांशु बाबू ककरासँ बात करबाक टारि रहल छथि। अन्तमे ओ फोन करबाक बदला अमितकेँ शारदा भाभीक कुशल पूछैत छोट सन्देश पठबैत छथि। कथा पुनर्मिलनक नाटकीय दृश्य नहि देत; सम्बन्धक नव सम्भावना एक साधारण सामाजिक प्रश्नसँ खुलैत अछि। छाताक छोट छेदसँ खसैत पीयर इजोत संकोच आ सम्पर्कक बीचक दू अक्षरक जकाँ छोट दूरीकेँ मूर्त करैत अछि।

२२. फोटो स्टूडियो

पुरान फोटो स्टूडियोक काँचमे अनुशासित ‘परिचयपत्रवला चेहरा’ आ वास्तविक जीवित चेहरा भिन्न होइत अछि। पंकज झाक कौशल व्यक्तिक छवि सुन्दर बनएबाक भ्रम तोड़ि, हुनका हुनक चश्मा आ माथक रेखासहित देखबाक आग्रह करैत अछि। अनिरुद्ध आ परिवारक चित्रणक बीच संबंधक बारीकी खुलैत अछि। ‘पहिने अलग-अलग’ फोटो खींचबाक निर्णय सामूहिक स्मृतिक पहिने व्यक्तिक अखण्ड पहिचानकेँ मान्यता दैत अछि। कथा कैमरा केँ पहिचानक मनमाना सुधारक औजार नहि, पारिवारिक दृष्टिक परीक्षण बनबैत अछि।

२३. एक जोड़ी जूता

‘एक जोड़ी जूता’क पुरान छात्रावास-जूता निजी स्वामित्वक साखी नहि, जरूरतक अदलाबदलीक सामाजिक वस्तु अछि। मधु झाक नव सूची व्यवस्था नाम आ मालिक ताकैत

अछि, मुदा विमला दीदीक अनुभव वस्तुक चलैत उपयोग देखैत अछि। रजिस्टरमे ‘छात्रावासक’ लिखल जा सकैत अछि, वास्तविक उत्तर ‘जकरा जरूरत अछि’ बनैत अछि। ई छोट अन्तर कल्याणकारी संस्थाक सामूहिकता केँ दस्तावेजक सीमासँ आगाँ लऽ जाइत अछि। कथाक विनम्र अन्त कुनै सजावटी त्यागक गाथा नहि रचैत।

२४. बॉटल छाँह

बस-पड़ावक रामसागर आ नसीमाक ठेलाक सर्वेक्षण-रेखा साझा छाँहक ठोस कठिनाई बनैत अछि। एक हरियर जालक उपयोगक प्रश्न पर नगरपालिका अलग-अलग पर्चीमे एक बेर सीमा पार मानैत अछि, दोसर बेर साझाक सत्यापन अस्वीकार करैत अछि। एहि औपचारिक विरोधाभासक बीच विक्रेता जीविकाक व्यावहारिक तर्कसँ जाल खसकबैत छथि। पोस्टरमे साझा हँसी प्रचारक छवि अछि, मुदा वास्तविक सहकार्य अनिश्चित आ परिस्थितिजन्य रहैत अछि। कथा सार्वजनिक नीतिक चित्र आ फुटपाथक जीवन बीच सूक्ष्म आलोचना रखैत अछि।

२५. दोसर दर

आरोग्य केन्द्रक मुख्य केवाड़ी आ निःशुल्क शिविरक ‘दोसर दर’ सामाजिक वर्गीकरणक स्थापत्य बनैत अछि। रोगी लेल सेवा एक कहल जाए, मुदा रङ्गीन पर्ची आ प्रवेशक अलग बाट सम्मानक अलग अनुभव रचैत अछि। समाचारपत्रक समूह-फोटोमे पर्चीक रंग अदृश्य रहैत अछि आ शीर्षक ‘समान सेवा’ घोषित करैत अछि; अगिला मासक सूची फेर ओही दोसर दरक व्यवस्था लिखैत अछि। कथाक अन्तिम विरोधाभास उद्धोषणा नहि, प्रशासनक पुनरावृत्त दिनचर्या अछि। एही पुनरावृत्तिसँ भेदभावक दीर्घ आयु बुझाइत अछि।

२६. सात मिनटक आवाज

सौरभक कापी पर बनल ‘सात मिनट’क सात गोल परदेसमे रहैत परिवारक समय-सारिणी अछि। प्रत्येक प्रश्न भोजन, पढ़ाई, दवाई, जूता वा मौसम सँ जुड़ल अछि; रिक्त सातम गोल संवादक अनपेक्षित विस्तार लेल ठाम छोड़ैत अछि। मोबाइलक निश्चित समय भीतर माय-बेटाक सम्बन्ध पूरा नहि समाइत। बसक हॉर्न, दूरक नानीक खाँसी आ साझा रातिक आकाश कथाक श्रव्य संरचना रचैत अछि। फोन कटितो सातम गोल नहि भरब अपूर्णताकेँ विफलता नहि, जीवित सम्बन्धक सम्भावना मानब अछि।

२७. अधूर नाटक

विद्यालयक 'अधूर नाटक'मे मूल लिखल पाठ आ मंचपर अभिनीत पाठक बीच भिन्नता विवाद उठबैत अछि। मालती झा 'मूल पाठ' आ 'मंच-अभ्यास' अलग-अलग लिखबाबैत छथि; तखन पात्रक अनकहल अगिला क्रियाक अनेक रूप सम्भव होइत अछि। नील कापीक रिक्त पृष्ठ चूकक चिन्ह नहि, सामूहिक कल्पनाक अनुशासन बनैत अछि। पाठक स्थिर अधिकार आ मंचीय व्याख्याक प्रश्न समकालीन सम्पादन-विवादसँ जुड़ैत अछि। कथा मूलक सम्मानक अर्थ ओकर प्रत्येक सम्भावना बन्द करब नहि मानैत।

२८. एकतीसम खाट

तीस खाटवला महिला रात्रि-आश्रयमे चम्पा देवीक काज आ विश्रामक अधिकार गणनाक बाहर अछि। आधिकारिक खाट-संख्या आ सफाईकर्मिक देहगत अनुभवक अन्तर एकतीसम मोड़ल खाटक माध्यमसँ उभरैत अछि। जाँचमे "खाट" आ "कर्मचारी" अलग पाँतिमे रहितो जीवित कार्यस्थितिक जटिल सम्बन्ध खुलैत अछि। अन्तमे वस्तु-पाँजिमे छुटल खाट दर्ज होइत अछि; मनुष्यक अधिकारक स्वीकृति केवल सामानक गणना सँ नहि, ओकर कारण बुझलासँ होइत अछि। कथा प्रशासनिक अंकक मानवीय अपूर्णता पर मार्मिक व्यंग्य अछि।

२९. ईटक निशान

ईट पर दू तिरछा निशान कौशल्याक परिवारक श्रमिक-पहिचान सँ आरम्भ भऽ पाँजिमे देनदारीक संकट बनि जाइत अछि। चिन्हक अर्थ मौसम, खेप, व्यक्ति आ तारीख बदललासँ बदलैत अछि; गलत सम्बन्ध मानला पर श्रमिकक जीवनपर अकारण कर्जा चढ़ि सकैत अछि। कौशल्याक "प्रश्न-चिन्ह मेटाउ" सँ पहिले प्रमाण माँगबाक जिद कथा केँ अन्वेषणक लय दैत अछि। माटिपर बनल रेखा कागजक कठोर सत्ता बनैत अछि, ई रूपान्तरण कथाक आलोचनात्मक केन्द्र अछि।

३०. गिनतीक बाहर

बाढ़ि-पछाति गणना करबाक काममे 'घर' आ 'परिवार' एक्के इकाई नहि छथि। देबालक ३७ आ पूरक सूचीमे व्यक्तिक उपस्थिति दू अलग सत्य मानैत 'गिनतीक बाहर' आपदाक आँकड़ाक मूल प्रश्न उठबैत अछि। मृणालिनी किरायेदार आ अलग रसोई करनिहारक उपस्थिति

दर्ज करबाक प्रयास करैत छथि। पानी देबाल पर क्षतिक चिन्ह छोड़ैत अछि; पाँजि लोकक अधिकारक निशान छोड़बामे पिछड़ैत अछि। कथाक शक्तिशाली पक्ष आँकड़ा-विरोध नहि, गणनाक इकाईक नैतिक चयन अछि।

कथा-शतत्रयी खण्ड-२

एहि दस कथा नदी, जमीन, बीया, श्रम आ समताक बीच छोट किन्तु निर्णायक परिस्थिति रचैत अछि। खेतक मेड़सँ न्यायक कोठली धरि व्यवहारक वास्तविक लागत मुख्य प्रश्न अछि।

३१. बाँधक ओहि पार

‘बाँधक ओहि पार’मे सरकारी नकाशाक ‘पुनर्वास खण्ड-३’ आ लोकक ‘नव बहुअरा’ नामक बीच स्मृतिक असमान भूगोल उपस्थित अछि। पुरान बारी जलाशयक ओहि पार रहि गेल, मुदा वर्तमान जीविका एतय बनल अछि। देवकलीक अन्तिम उत्तर पुरान ठामक अधिकार आ नब बारीक उपयोगकें अलग-अलग बुझैत अछि। पुनर्वास ई कथा अनुसार केवल घरक संख्या बदलनाइ नहि; लोकक स्थान-स्मृतिक अनेक तह कें एक संग रखनाइ अछि। कथाक संयत स्वर खोआइल स्थान लेल सरल शोकगीत नहि बनबैत।

३२. जमीनक आवाज

सदा टोलीक ‘बीचक बाट’क कोनो आधिकारिक नाम नहि, मुदा दूध, विद्यालय आ खेतक दैनिक आवाजाही ओकर सार्वजनिक अस्तित्वक प्रमाण अछि। भूमि-विवादक समय लेखाजोखा बाटकें वस्तु बनबैत अछि, जखनकि कुसुमीक लाठी आ पएरक क्रम ओकर उपयोगी जीवन-रेखा देखबैत अछि। अन्तमे बालकक प्रश्नक उत्तर “बाट” मात्र अछि; ई एक शब्द सरकारी परिभाषाक अपूर्णताकें दर्शबैत अछि। कथा भूमि-अधिकारकें केवल निजी टुकड़ाक हिसाब नहि, सामूहिक आवागमनक सुविधा मानैत अछि।

३३. सिलाइ मशीन

लीलाक सिलाइ मशीन घरेलू श्रमक उपकरण, आर्थिक बंधक आ पुनर्प्राप्त स्वायत्तताक प्रतीक तीनू बनैत अछि। पुरान मशीन सँ मोटर चलित मशीन धरि पहुँचबाक कथा श्रमक दक्षता कें बाहरी उपकारक विषय नहि बनबैत। जन्मदिनक लाल किनारीवला गमछा आ मोटरक तेलक

छोट बूँद सहजी हास्य निर्माण करैत अछि। एहि हास्यमे परिवारक प्रेम आ कामक भौतिक अनिवार्यता एक संग उपस्थित अछि। श्रम-मुक्तिक अति-भव्य निष्कर्षक बदला कथा यथार्थक सान क्षणपर समाप्त होइत अछि।

३४. दस किलो चाउर

‘दस किलो चाउर’मे सहायता-वितरणक प्रचारक फोटो आ वास्तविक अनाजक वितरणक बीच दूरी कथाक मूल युक्ति अछि। एके नील गाँठवला बोरा अनेक लाभार्थीक हाथमे फोटो लेल घूमैत अछि; दृश्य प्रमाण भोजनक प्रमाण नहि रहि जाइत। मालतीक “चाउर कतय अछि?” प्रश्न प्रशासनक आभासी सफलताकें भेदि दैत अछि। पात्रसभक विवरणक बीच सूचनाक छोट वस्तुगत अन्तर सँ धोखाक पूरा विधान खुलैत अछि। रचना राहतक दानभावना नहि, उत्तरदायित्व आ सत्यापनक प्रश्न केन्द्रित करैत अछि।

३५. अधूरा गीत

कौशल्याक अधूर रोपनी-गीत आ मृणालक नव संगीत-संरचना परम्पराक टूटन आ रूपान्तरणक कठोर प्रश्न बनबैत अछि। खेतीक श्रम-संरचना बदललासँ गीतक पूरा वाक्य हराइत अछि; केवल शब्द ताकि ओकर जीवित प्रसंग घुसा देब सम्भव नहि। अन्तमे नव पाँति गाओल नहि जाइत; पित्तारि थारीपर दू थाप सँ पुरान ठहरावक लयकें संगति भेटैत अछि। कथा पुनरुत्पादनक बदला सुनबाक उत्तरदायित्व सिखबैत अछि। अधूरापन एतय संग्रहणक कमी नहि, अनुभवक ऐतिहासिक तथ्य अछि।

३६. माटिक बाँसुरी

कुम्हारटोलीक नीलू छेद बेठीक पड़ल बाँसुरीमे हवा बदलि स्वर निकालैत अछि। विद्वान शिक्षक देवव्रत पहिने स्वरक पाठ दैत छथि, पछाति माटिक नमी, थाक आ चाकक गति सीखबाक लेल लौटैत छथि। ज्ञानक प्रवाह केवल विद्यालय सँ कारीगर दिस नहि, उल्टो होइत अछि। “पहिने माटि थाकि लेत” संगीतक शारीरिक आधार आ सृजनक धैर्य दुनू व्यक्त करैत अछि। कला परम्पराक अन्तःक्रिया कें कथा उपदेश नहि, स्पर्श आ अभ्यासक स्तर पर रखैत अछि।

३७. खुलल दरवाजा

‘खुलल दरवाजा’मे श्रम आ देहक अधिकार खोएने रेखाक घर वापसी साधारण उत्सव नहि अछि। फाटक खुलल रहितो बाहर निकलबाक निर्णय कठिन अछि; समाजक नजरि आ अपन हातक काम फेर सीखनाइ एकटा साथ चलैत अछि। मालती काकीक डलिया बनएबाक आमन्त्रण आ हाटमे लोकक मिश्रित प्रतिक्रिया रेखाक गति धीरे-धीरे बदलैत अछि। रचना पीड़िताकें केवल पीड़ाक पहिचानमे सीमित नहि करैत। “हाथ फेर सिखि रहल अछि” जीवनक पुनः अर्जित स्वायत्तताक सटीक कथन अछि।

३८. मौन गवाही

‘मौन गवाही’ न्यायालयक बन्द कार्यवाही, परिवारक भय आ कुसुमक कथनक अधिकार बीच सूक्ष्म संघर्ष रचैत अछि। मायक “गाममे की कहब?” प्रश्न सामाजिक दबावक उपस्थिति खोलैत अछि; कुसुमक उत्तर—जे बात ओकर अछि, ओ स्वयं कहत—प्रमाण आ निजता दुनूक मर्यादा स्थापित करैत अछि। न्यायिक प्रक्रियाक प्रत्येक प्रश्न स्त्रीक जीवनक सम्पूर्ण कथाक अधिकारी नहि बनि सकैत। अन्तमे नींबूक दू गिलासक चुनाव पीड़ासँ बाहर स्वतन्त्र, साधारण इच्छा व्यक्त करबाक सम्भावना लौटबैत अछि।

३९. कुर्थीक दालि

‘कुर्थीक दालि’मे छब्बीस सेर उपज कें बीया, भोजन आ बिक्रीक बीच बाँटनाइ कृषि-अर्थशास्त्रक घनिष्ठ नैतिक प्रश्न बनैत अछि। अनाजक हर दाना एक समयमे बाजारक वस्तु, अगिला ऋतुक सम्भावना आ आजुक भोजन अछि। चारि सेर बीया सँ पश्चिमक पट्टी खाली रहि जाइत अछि, जतय मडुआ बोएल जाइत अछि; निर्णयक लागत कथा छिपबैत नहि। जगमायक टूटा दानाकें भोजनक योग्य मानबाक विवेक उत्पादनक कठोर वर्गीकरणकें चुनौती दैत अछि। समाधान सम्पूर्ण नहि; मुदा उपलब्ध संसाधनक जटिल वास्तविकता विश्वसनीय अछि।

४०. एक बीघाक सपना

‘एक बीघाक सपना’मे शिवनाथक जमीन किनबाक चाहना रमा बेटीक पढ़ाई आ परिवारक ऋणक संग जुड़ैत अछि। रस्सीसँ खेत नापबाक प्रारम्भिक क्रिया स्वामित्वक इच्छा व्यक्त करैत अछि; अन्तमे ओही रस्सी नब मालिकक भूमि पर श्रमक नाप बनैत अछि। वस्तु समान

रहितो सामाजिक सम्बन्ध बदलि गेल अछि। रमा छात्रावास जाइत अछि—ई उपलब्धि परिवारक हार-जीतक एकाङ्गी कथा नहि बनैत। रचना कृषकक आकांक्षाकें संवेदनशीलतासँ जाँचैत, जमीनक अभिलाषा आ शिक्षा निवेशक परस्पर कीमत सामने रखैत अछि।

कथा-शतत्रयी खण्ड-३

तेसर खण्डक चयनमे खाली थैला, नाव, पोखरि, बाँसुरी, कुर्सी, बचत आ अनिश्चित स्टेशन अनुभवक विविध रूप बनैत अछि। यहाँ वस्तुक अर्थ परिवर्तित होयबाक प्रक्रिया विशेष महत्त्वपूर्ण अछि।

४१. खाली थैला

‘खाली थैला’मे गोपीनाथ साहक पुरान कपड़ाक थैला रोजक विनिमय, सहायता आ स्मृतिक धारी बनैत अछि। अन्तमे ओकर खाली होनाइ नष्ट हेबाक चिन्ह नहि; गाँठ नहि बाँधल जाएबाक कारण अगिला उपयोगक बाट खुलल अछि। कथाक गति स्थूल घटनासँ नहि, थैलाक भीतर राखल वस्तुसभक परिवर्तनसँ चलैत अछि। ई साधारण पात्र-वस्तु सम्बन्ध उपभोक्तावादी ‘नव वस्तु’क आकर्षणसँ अलग चलैत उपयोगक समयकें प्रमुख बनबैत अछि।

४२. नाव बान्हल रहल

‘नाव बान्हल रहल’ मेलेर उत्सवक चकाचौंध आ नदीक अस्थिर धार बीच नाविक रघुनाथ सहनीक जिम्मेदारीक कथा अछि। ओहि पारक ताली आ एहि पार डोरीक गाँठ दू भिन्न समय-लय रचैत अछि। नब आनन्दक लेल नाव खोलि देब सहज विकल्प देखाइत अछि, मुदा धारा आ खूँटाक भौतिक स्थिति काजक कठोर विवेक माँगैत अछि। अन्तक नाव बान्हल रहब ठहरावक विफलता नहि, जोखिमक समय उचित संयमक निर्णय अछि।

४३. पोखरिक रखबार

‘पोखरिक रखबार’मे वंशी महतोक बाँसक नाप आ बादमे सरकारी नाप-डाँड़ जलाशयक दू प्रकारक ज्ञान चिन्हित करैत अछि। पोखरिक गाद, नाला, बगुलाक पएर आ नव घेराक छाया पर्यावरणकें स्थिर सम्पत्ति मात्र नहि रहय दैत। वंशी अन्तमे बगुलाक निशान नापैत नहि, स्मृतिमे राखैत छथि; ई प्रकृतिक सभ संकेतकें भू-अभिलेखमे बदलबाक आग्रहक विरुद्ध सूक्ष्म उत्तर

अछि। सामुदायिक संरक्षणक कथा स्थानीय अनुभव आ बाहरी तकनीकी मापनक आवश्यक संवाद उघारैत अछि।

४४. डोमक बाँसुरी

ग्राम-उत्सवक कार्यक्रम-पाँजिमे ‘डोमक बाँसुरी’ लेल निर्धारित समय सामाजिक मंच पर आवाजक अधिकारक प्रश्न अछि। आरम्भक मद्धिम सुर लोकक बातचीतमे हराइत अछि; सुनबाक वास्तविक प्रक्रिया मंचक घोषणा मात्रसँ सम्पन्न नहि होइत। शिक्षिका जे नाम आ बजबाक समय पाँजिमे राखैत छथि, हुनकर क्रिया स्मरणक संस्थागत आकार बनबैत अछि। अन्तिम पातक सरसराहटक लेल कोनो चुप्पीक आदेश नहि अछि—एहि दृश्यसँ संगीतक सन्मान सुनबाक स्वतन्त्र सावधानी रूपेँ व्यक्त होइत अछि।

४५. बरगदक नीचाँ रजिस्टर

‘बरगदक नीचाँ रजिस्टर’क मुनिलालक पाँजि अनौपचारिक सामुदायिक अभिलेख अछि। जल-वितरणक सरकारी कागज केवल पानि छोड़ल जाएबाक समय गनैत अछि; स्थानीय पाँजि पानि खेत धरि पहुँचल कि नहि, से सेहो लिखैत अछि। दुनू सत्यक भेद अधिकारक नाप बदलि दैत अछि। सुधाक छायाप्रति बनएबाक कार्य पारम्परिक स्मृतिकेँ आधुनिक अभिलेखसँ जोड़ैत अछि। कथा राज्यक नकार नहि करैत, ओकर मापककेँ संशोधित करबाक प्रमाण-आधारित आग्रह रचैत अछि।

४६. जातिक कुर्सी

अट्टाइस नील कुर्सीक समान रंग बीचोबीच पुरान जातिगत बैठक-क्रमक असमानता छिपबैत अछि। ‘जातिक कुर्सी’मे भौतिक वस्तुक समानता सामाजिक स्थानक समानता नहि अछि। नीलू जेना कुर्सी फेर सँ राखैत अछि, ओ केवल सजावट नहि, सार्वजनिक स्थानक अदृश्य शासन बदलैत अछि। अन्तमे “स्थायी स्थान—कोनो नहि” लिखबाक क्रिया संस्थागत परिवर्तनक संकेत अछि। कथा प्रतीकात्मक दखलकेँ सान प्रत्यक्ष सुधारक रूपमे देखबैत अछि, पूर्ण सामाजिक मुक्ति घोषित नहि करैत।

४७. किरायेदार कन्या

‘किरायेदार कन्या’मे रातिक फाटक आ साँकल स्त्रीक कामक समयपर समाजक निगरानीक औजार अछि। अनामिकाक आवागमनपर उठल प्रश्न पछाति नीलिमाक रात्रि-पालीक सामान्य क्रियासँ नव सन्दर्भ पबैत अछि। कथा निषेधक घोषणा वा सनसनीखेज विद्रोह नहि करैत; रामप्यारी देवीक अन्तिम व्यवहारमे धीमा परिवर्तन देखबैत अछि। रातिक साँकलक दोहरायल ध्वनि शुरुआतमे आशङ्का जगबैत अछि, अन्तमे दैनिक जीवनक एक स्वीकृत आवाज भऽ जाइत अछि।

४८. गुप्त बचत

मालती देवीक ‘गुप्त बचत’ बक्सामे नहि, बाजारक अनेक छोट लेनदेनमे जमा होइत अछि। गोपाल साहुक पाँजि आ रेवतीक लाल कापी घरेलू स्त्रीक अनौपचारिक वित्तीय स्वायत्तताक ठोस साक्ष्य छथि। गुप्तताक कारण मात्र आशङ्का नहि, अपन निर्णय लेल बचल आर्थिक अवकाश अछि। लिफाफामे राखल आपात-राशि आ “हमर नामे लिखि दिअ”क पुनरावृत्ति बचतक निरन्तरताकेँ मात्र धनसंग्रहसँ अलग करैत अछि। कथाक सूक्ष्मता ई जे आर्थिक आत्मनिर्भरता बड़े-बड़े घोषणासँ नहि, किरानाक दैनिक हिसाब सँ प्रकट होइत अछि।

४९. स्टेशन जे नक्शामे नहि

‘स्टेशन जे नक्शामे नहि’मे प्रभाकरक समय-सारिणी आ अभिलेखागारी मानसिकता एक एहन स्टेशनसँ टकराइत अछि जकर उपस्थिति आधिकारिक नकाशाक भरोसा तोड़ैत अछि। चौथ खिड़कीक दृश्य, कदम्बबारी आ पीयर पट्टक पुनरावृत्ति यथार्थक अनिश्चितता क्रमशः बढ़बैत अछि। कथा अप्राकृतिक दृश्यकेँ तुरन्त भ्रम वा चमत्कार घोषित नहि करैत। जखन दृष्टिक स्थान बदलैत अछि, वास्तविकताक मानचित्र सेहो बदलैत अछि; एहि कारण ई कथा संग्रहक समकालीन विस्मयात्मक शिल्पक एक अलग उदाहरण अछि।

५०. अपरिचित अपन घर

‘अपरिचित अपन घर’मे विनयक घुसब परिचित वस्तुसभक बीच बदलल दैनिक व्यवस्थाक अनुभव अछि। ताला, चाभी आ ओसाराक बलब परिचित अछि, मुदा ककर जीवनक अनुसार घर चलैत अछि, से अनिश्चित। खाली कुर्सीकेँ एक औंठा आगाँ खिसकाएब अभ्यस्त स्थानक

पुनर्निर्माणक नाजुक क्रिया अछि। कथाक मौनक मूल्य घरक ‘असल मालिक’ तय करबासँ बचैत अछि। स्वामित्व आ अपनत्वक भेद वस्तु-सज्जासँ पैदा होइत अछि, कोनो औपचारिक वाद-विवादसँ नहि।

कथा-त्रिधारा खण्ड-१

एहि दस कथा घरेलू ध्वनि, पगडंडी, रिक्त कॉपी आ गलत शब्द सँ आरम्भ भऽ बाढ़ि, विद्यालय, नदीक नकाशा आ हस्ताक्षर धरि पहुँचैत अछि। सुनबाक आ पढ़बाक अधिकार केन्द्रमे अछि।

५१. आवाज नहि देनिहार घंटी

‘आवाज नहि देनिहार घंटी’मे लहेरियासरायक घरक धूसर पित्तरिक बटन दबौलापर कखनो नहि बजैत। तथापि ओकर निष्क्रियता बाल्यकालक स्मृतिसँ जुड़ल अछि। माधवीक घर छोड़बाक अवसरपर दुआर ठोकबाक तीन आवाज छोट उमेरक एक भीजल दृश्य घुरा दैत अछि। बिगड़ल उपकरणकें तुरन्त ठीक करब स्मृतिक अनपेक्षित मार्ग बन्द कऽ सकैत अछि—कथा एहि विरोधाभासकें संवेदनशील बनबैत अछि। एहि रचनामे ध्वनि तखन महत्त्वपूर्ण बनैत अछि जखन अपेक्षित यान्त्रिक ध्वनि अनुपस्थित अछि।

५२. उल्टा रास्ता

अर्चना झा सड़क नापबाक अधिकारी छथि, मुदा ‘उल्टा रास्ता’मे सोझ सड़क आ पाछाँक मेड़क उपयोगक बीच भिन्न भूगोल बनैत अछि। सरकारी नाप, नब सफेद पट्टी आ सहज गति एक प्रकारक सुविधा दर्शबैत अछि; स्थानीय पगडंडी दोसर अनुभव खोलैत अछि। अर्चनाक अन्तिम निर्णय कोन बाट चुनब, से मात्र यातायातक प्रश्न नहि रहैत। कथा ‘सीधापन’ कें प्रगतिक स्वतःसिद्ध प्रमाण मानबाक विरुद्ध अनुभवक बहुविध दिशाकें रखैत अछि।

५३. खाली कॉपी

सेवानिवृत्त शिक्षक गोविन्दकान्त खाली कॉपी देखिकऽ पहिने नाम, वर्ग, विषय आ अनुशासनक अभाव खोजैत छलाह। अपन लेल नब कॉपी आयला पर हुनका ‘रिक्तता’क अर्थ फेर समझबाक पड़ैत अछि। देवानन्दक संग भेंट पुरान मूल्याङ्कनक दृष्टिक सीमा देखबैत अछि: लिखल नहि गेल पन्ना निष्क्रिय जीवनक प्रमाण आवश्यक नहि। अन्तमे जिल्दपर नाम अछि,

विषय नहि; ई शून्य व्यक्तिगत समयकें निर्धारित पाठ्यक्रमसँ मुक्त करैत अछि। कथाक संवाद शिक्षा-संस्थाक पुरान आदतिक भीतरक सूक्ष्म पूर्वाग्रह खोलैत अछि।

५४. एक शब्द गलत

वसुधा अपन शल्यक्रिया-पछाति स्वस्थ होइत दीदी सरोजक मुँहसँ एक ‘गलत शब्द’ सुनैत छथि। प्रश्न शब्दकोशक शुद्धतासँ आगाँ दूनू बहिनक अलग समय, सम्बन्ध आ व्याख्याक अछि। वसुधाक दीर्घ आग्रह आ सरोजक प्रतिक्रिया पाठक कें अनुभवक अनुवादक असफलता बुझबैत अछि। अन्तिम फोन बजला पर वसुधा एहि बेर बोलनिहारक अनुमान नहि लगबैत छथि; पहिने “कहू” बजैत छथि। भाषा सम्बन्धक निश्चित स्वामित्व नहि, दोसराक कण्ठ सुनबाक निमन्त्रण बनैत अछि।

५५. दीप मिझेबाक पहिने

आँगनमे चूनासँ खींचल पातर उज्जर रेखा देबाल बनैत-बनैत कुसुमक घरेलू सम्बन्धक सीमा बनि जाइत अछि। ‘दीप मिझेबाक पहिने’मे भूमि-विभाजनक कागज आ साझा नालीक पानि एक-दोसरासँ असहमत छथि। मीनाक्षीक नाम मुखधरि आबि ठहरैत अछि; दैनन्दिन श्रमक अनकहल सम्बन्ध आधिकारिक रेखाक पार रहैत अछि। अन्तमे तीन ईटक रिक्त भागसँ पानि बहबाक ध्वनि विभाजनक सम्पूर्णता कें भङ्ग करैत अछि। कथा सीमा हटएबाक चमत्कारी समाधान नहि, ओकर भीतर उपयोगक छोट बाट सुरक्षित करबाक उपाय देखबैत अछि।

५६. रातिक नाव

‘रातिक नाव’क जगरनाथ मल्लाह लेल बाढ़िमे नाव चलौनाइ वीरताक दम्भ नहि, भार, रस्सी, दू हाथक कमी आ अन्हारक ठोस निर्णयक श्रृंखला अछि। दूरक दीप जानक संकेत छथि, मुदा प्रत्येक संकेत धरि पहुँचब तत्काल सम्भव नहि। नावमे बचल लाल सूतक टुकड़ी अन्तमे स्मृति-चिन्हक बदला अगिला बेर रस्सीक सिरा चिन्हबाक उपकरण बनैत अछि। ई रूपान्तरण कथा कें आपदाक भावुक स्मारकसँ कर्मशील ज्ञानक आख्यान बनबैत अछि।

५७. नाम भूलनिहार नेता नहि, शिक्षक

भीजल पुरान विद्यार्थी-पाँजि सँ नाम बचएबाक कार्यमे शिक्षक शिवनारायणक स्मृतिक सीमा सामने अबैत अछि। ‘नाम भूलनिहार नेता नहि, शिक्षक’ शीर्षक पाठकक अपेक्षासँ खेलैत अछि;

शिक्षक पात्र अपन विस्मरण लुकबैत नहि, नामक पुष्टि लेल सार्वजनिक पाँजिक सहारा लैत छथि। पुरान विद्यार्थी बीचक गणनाक ढंगसँ चिन्हाइत छथि। स्मरणक नैतिकता एतय सब नाम कण्ठस्थ रखब नहि, अनुमानक ठाम सत्यापन स्वीकार करब अछि। अन्तिम हलुक हास्य एहि गंभीर ज्ञान-नीतिकँ सहज बनबैत अछि।

५८. नदीक कागज

कमला नदीक धार बदललासँ गढ़िया टोलाक घर कागजक नकाशामे गायब छथि, मुदा जीवन सँ नहि। ‘नदीक कागज’मे बसोबासक प्रमाण आन-आन कार्यालयक अलग पर्ची सँ जुटैत अछि। चम्पाक “जतय कागज खाली अछि” सँ गणना शुरू करबाक सुझाव अनुपस्थितिक औपचारिक इतिहासक विरुद्ध नागरिक अस्तित्वक आग्रह अछि। कथा नकाशाक विरोधमे नहि, ओकर संशोधनक अधिकारक पक्षमे अछि। नदीक चलैत भूगोलक संग अभिलेखक स्थिरता कतेक अपर्याप्त अछि, से प्रत्यक्ष होइत अछि।

५९. बालू घाट

‘बालू घाट’मे रेतक उत्खनन, नदीक सतही धारा आ गामक इनारक जलस्तर एक-दोसरसँ जुड़ैत छथि। हरिप्रिया रस्सीक सातम आ आठम गाँठ, पानिक रंग आ कछेरक बदलाव देखैत अछि; ज्ञान ई सूक्ष्म दोहरायल निरीक्षण सँ बनैत अछि। कथा प्रकृतिक संसाधनकँ खाली बाजारक बालू नहि मानैत, भूमिगत जलक जीवित परिसंचरणक अंग देखबैत अछि। अन्तमे साफ बाल्टीक पानि आ रस्सीक अतिरिक्त गाँठ अलग रहि नहि सकैत। कथानकक प्रमाणमुखी बनावट पर्यावरणीय आलोचनाकँ विश्वसनीयता दैत अछि।

६०. हस्ताक्षरक शक्ति

अँजोर महिला बचत मंडलीमे सभ महिला अपन नाम लिखब सीखने छथि। मुदा चन्द्रकला देवी पूछैत छथि—नामक ऊपर जे लिखल अछि, से पढ़ब सीखल गेल कि नहि? ‘हस्ताक्षरक शक्ति’मे कर्जक अवधि, छप्पन दिनक दायित्व आ बारह मासक बन्धन दस्तावेजक भीतर लुकायल असमानता बनि जाइत अछि। नीलम हस्ताक्षर सँ पहिने कागज घुमा कऽ पढ़ैत छथि। ई सान क्रिया प्रतीकात्मक साक्षरताकँ वास्तविक निर्णयाधिकारमे बदलैत अछि। कथा अधिकारक सौन्दर्यशास्त्र नहि, विधिक भाषा बुझबाक ठोस अभ्यासक कथा अछि।

कथा-त्रिधारा खण्ड-२

मचान आ मोहर सँ अस्पतालक शून्य कुर्सी तथा प्रशासनिक दिनांक धरि सामाजिक लेखाक प्रश्न खुलैत अछि। संगहि चाहक कप आ बाँसक पुल मार्मिक दैनन्दिन अनुभव सुरक्षित रखैत अछि।

६१. मचानक राति

चारि खेतक संग बनल मचान साझा श्रमक चिन्ह अछि, मुदा रातिक रखवारी आ फसलक क्षति गिनबाक समय उत्तरदायित्व अलग-अलग करबाक पड़ैत अछि। ‘मचानक राति’मे पाँजि खाली राति दर्ज करैत अछि, जखनकि मेड़ आ भोरुक निरीक्षण घटना जाँचैत छथि। बुधनक प्रश्न अनौपचारिक स्मृतिक प्रमाणक्षमता उभारैत अछि। खेतक एक पसेरीक सम्भावित घाटा, रातिक पहर आ मचानक साझेदारी आधुनिक लेखाक प्रश्न बनैत अछि। आ अन्तमे हँसी विवादक मिटाओनाइ नहि, प्रमाणक आधारपर बातचीत चालू रखबाक साधन अछि।

६२. घुरैत मोहर

पंचायत कार्यालयक पुरान मोहरक आधा गोल दाग ‘घुरैत मोहर’मे अस्पष्ट निर्णयक सांकेतिक रूप बनैत अछि। हरिनाथक दीर्घ कार्यालय-अनुभव कागजकें भरोसेमन्द मानबाक अभ्यस्त दृष्टि दैत अछि; रचनाक प्रश्न आ भीजल मोहरक चिन्ह निर्णय कें पुनः जाँचबाक बाध्यता जगबैत अछि। ‘अधूर वृत्त’क रूपक एतय प्रभावकारी अछि: प्रशासनिक सत्य कतेको बेर पूरा देखाएबाक अभिनय करैत अछि, जखनकि शेष हिस्सा मनुष्यक जवाबदेहीसँ पूरा होइत अछि।

६३. प्रतीक्षालयक कुर्सी नम्बर शून्य

जिला अस्पतालक ‘शून्य’ अंकित पुरान कुर्सी प्रतीक्षालयक गणना आ रोगीक चिन्ताक केन्द्र बनैत अछि। नब भवनमे सभ कुर्सी एकरूप देखाइत अछि, मुदा शून्यक संकेतक सामाजिक अर्थ स्वतः बनि जाइत अछि। कुर्सी प्राथमिक जाँच लेल स्थानान्तरित होइत अछि; पाँजिमे ओकर अंक ४९ होइत अछि, पीठपर शून्य बचैत अछि। “नहि, जाँच लेल बैसू”मे अधिकांश लोक निषेध छोडि ‘जाँच’ सुनैत अछि। कथा आधिकारिक संख्याक बदलैत उपयोग आ लोक-व्याख्याक अस्थिरता जाँचैत अछि।

६४. दिनांकक खाली खाँचा

बाढ़ि-सहायताक अड़क-पटल एक क्षतिक लेल एकटा दिनांक माँगैत अछि; जानकी देवीक जीवनमे क्षति तीन दिनक क्रममे घटल। ‘दिनांकक खाली खाँचा’मे प्रपत्रक एक दिन आ रेनूक दिन-पाँजि बीच असहमति सत्यक अभाव नहि, तथ्यक बहुस्तरीयता अछि। पावती पर बारह अगस्त लिखित रहैत अछि, भीतर दस-एगारह-बारहक क्रम बचल अछि। कथा आकस्मिक आपदा केँ प्राविधिक-एककमे समायोजनक नैतिक कीमत सामने रखैत अछि।

६५. सुधार-पाँजिक मूल पृष्ठ

भूमि-अभिलेखक ‘मूल पृष्ठ’ अपरिवर्तनीय मानबाक नियम त्रुटिक स्थायित्व सेहो पैदा करैत अछि। ‘सुधार-पाँजिक मूल पृष्ठ’मे सीता देवीक नाम आ कृषि-ऋणक अलग समय-सन्दर्भ देखबैत अछि जे सचाइ केवल एक तारीखक निर्देश नहि। सुरेश बाबू आ नेहाक संवाद अभिलेखकेँ समयमे बनल अर्थ मानबाक आग्रह अछि। “पाँजि देरिसँ बुझलक” कथनमे प्रशासनक भूलक मानवीय लागत अछि। मूल आ सुधार दुनू इतिहास छथि, मुदा दुनूक वर्तमान प्रभाव समान नहि।

६६. तीनटा खाली कुर्सी

‘तीनटा खाली कुर्सी’मे भोजक व्यवस्था बीच सम्मानपूर्वक राखल आसनसभ अन्त धरि खाली रहैत अछि। जनार्दन मिश्र आ अभयक क्रियाक माध्यमसँ अनुपस्थितिक सामाजिक भार अनुभव होइत अछि। पएर नीचाँ राखल फाटल पाहुन-पाँजिक पन्ना एक अस्थिर वस्तु-स्मारक बनैत अछि। कथाक महत्त्व ई नहि जे अनुपस्थित तीन लोकक जीवनक पूरा रहस्य खुलि जाइत; अपितु प्रतीक्षाक विधि, सफाइक बादो सुरक्षित खालीपन आ अनकहल सम्बन्धक जटिलता एक दृश्यरूप पबैत अछि।

६७. ओसाराक बल्ब

पहिल ‘ओसाराक बल्ब’मे रामप्रसादक ओसाराक टिमटिमाइत बत्ती, नरेशक मरम्मत आ घरक अन्हार मध्यस्थ घरेलू सम्बन्धक भाषा बनैत अछि। मुख्य स्विच काटि देलापर पूबक रसोइ सेहो बुझि जाइत अछि—एक बिन्दुक सुधार आन ठामक जीवनकेँ अस्थायी रूपसँ प्रभावित करैत अछि। अन्तमे बत्ती बुझलाक बाद खिड़की आ दुआरक नीचाँ सँ अल्प उजास बचल अछि।

बीचक चौकी अन्हारेमे सेहो बीचमे रहैत अछि। ई शिल्प भौतिक व्यवस्था आ मनोवैज्ञानिक स्थिति बीच सावधान साम्य रचैत अछि।

६८. एक कप चाय कम

‘एक कप चाय कम’मे हरिनाथ साहक चाहक तीन कपसँ दू कप होनाइ पारिवारिक रिक्तता लेल एक अत्यल्प, किन्तु दीर्घगामी रूपक अछि। उल्टा राखल तेसर कप प्रतिदिनक समयसारिणीमे अनुपस्थित व्यक्तिक स्थान बचबैत अछि। पाँजिक नब खाँचामे सम्बन्धक आर्थिक अथवा व्यवहारिक व्यवस्था बदलैत अछि; मुदा कप तुरन्त सीधा नहि होइत। कथा शोक केँ अतिशय शब्दक बदला वस्तुक स्थितिसँ व्यक्त करैत अछि। शीर्षकक ‘कम’ संख्या दुःखक मापक नहि, उपस्थितिक बदलल तालिका अछि।

६९. बाँसक पुल

‘बाँसक पुल’मे भीजल बाँसक ढीला फाँक रामजतनक पुरान चोट कारण अलग जोखिम बनैत अछि। हरिप्रसाद आ रामजतन दुनू पुलक बीच धरि पहुँचि एके फाँक पर झुकैत छथि। कथा पुलक सुरक्षितता केँ केवल मिस्त्रीक नाप नहि, चलनिहारक देहगत विविधतासँ जाँचैत अछि। एक कात आ दोसर कातसँ एके बिन्दुपर पहुँचबाक दृश्य सामाजिक सहयोगक घोषणा नहि, सामूहिक मरम्मतक साक्षात क्रिया बनि जाइत अछि।

७०. उजड़ल मेड़

‘उजड़ल मेड़’मे देवनाथ आ रघुनाथक बीच बरखासँ बहल जमीनक सीमा विवादक कारण अछि। मुदा नब मेड़ बनबैत समय पानिक निकास लेल बीचमे ठाम छोड़बाक आवश्यकता स्पष्ट होइत अछि। निजी सीमा सुदृढ़ करब आ सामूहिक जलप्रवाह जोगायब एक-दोसराक विरोधी लक्ष्य नहि रहि जाइत। अन्तिम अलग बाट पकड़ैत पड़ोसी दू घण्टा पहिनुक विवादसँ भिन्न समझौता तक पहुँचैत छथि। एहि कथाक नैतिकता उपदेशमे नहि, मेड़क बीच बचल पानिक ठाममे लिखल अछि।

कथा-त्रिधारा खण्ड-३

अन्तिम दस कथा शिक्षा, पानि, मजदूरी, सीमा आ वंशावलीक अनेक रूप देखबैत अछि। समान शीर्षकवला ‘ओसाराक बल्ब’क एहि खण्डक कथा क्रमाङ्क ७८ अछि, जकर प्रसंग क्रमाङ्क ६७ सँ भिन्न अछि।

७१. विद्यालयक जूता

‘विद्यालयक जूता’मे मोती पासवानक बेटी सरिताक घिसल एड़ी आ नव जूताक लागतक संग खेतक बीया सुरक्षित राखबाक प्रश्न जुड़ैत अछि। ऊपर कड़ियामे बान्हल पाँच भुट्टा भोजनसँ अलग अगिला मौसमक बीया बनैत अछि। बालिका जे नव जूता पहिरि विद्यालय जाइत अछि, तकर पाछाँ परिवारक अनाज आ श्रमक विवेक अछि। कथा विद्यालयक पहुँच केँ केवल नामांकनक घटना मानब अस्वीकार करैत अछि। जूता आ बीया दुनू भविष्य लेल वर्तमानक हिस्से बचबाक प्रतीक छथि।

७२. पंचायतक नल

पंचायतक नल सार्वजनिक पानिक स्रोत अछि, मुदा फाटक आ निजी ओसाराक प्रवेश ओकर उपयोग सीमित करैत अछि। मालतीक “नल पंचायतक अछि” कथन अधिकारक स्पष्ट परिभाषा अछि। टाटक ओट बनलाक बाद पानि भरबाक बाट खुलैत अछि आ निजी आवासक गोपनीयता सेहो बचैत अछि। कहानी विवादकेँ केवल स्वामित्वक जीत-हार नहि, उपयोगक व्यवहारिक संरचना रूपेँ देखैत अछि। सामूहिक हक आ व्यक्तिगत मर्यादा बीच छोटे स्थापत्य-परिवर्तनसँ सम्भव समझौता एकर विशेष उपलब्धि अछि।

७३. मजदूरी

ईट-भट्ठाक ‘मजदूरी’मे रामफलक परिवारक निर्माण-संख्या आ मालिकक हिसाब बीच बाकी रकम अदृश्य होइत अछि। चन्दा पाठशालामे शून्य आ जोड़ब-घटएबाक अभ्यास अपन परिवारक वास्तविक श्रम-संख्यासँ करैत अछि। “शून्य नहि, बाकी बदलैत अछि” कथन शिक्षा केँ जीवनक आर्थिक न्यायसँ जोड़ैत अछि। कथा बालश्रमक स्थितिकेँ सुन्दर नहि बनबैत; लेखाक ज्ञानक महत्त्व स्पष्ट करैत अछि, संगहि मजदूरी कटबाक अवशिष्ट असमानता सुरक्षित राखैत अछि। गणितक परिणाम आ सामाजिक परिणाम अलग छथि।

७४. छोट मास्टर

बेरोजगार स्नातक उपेन्द्र साँझक छोट ओसारामे बच्चासभकेँ पढ़बैत छथि। नियुक्ति-परीक्षामे हुनकर नाम नहि अएलाक बाद गामक मान्यता आ हुनकर शिक्षणक वास्तविक काजक अन्तर स्पष्ट होइत अछि। अन्तमे विवाहक कोलाहल बीच तीन बच्चा अलग उत्तर लऽ हुनका लग पहुँचैत छथि। ओ तुरन्त उत्तर नहि दैत, पहिने पूछैत छथि—‘अहाँसभ की सोचलहुँ?’ शिक्षकक गरिमा सरकारी पदक सूचीसँ बाहर परिभाषित होइत अछि। कथा बेरोजगारीक वास्तविक पीड़ा नहि लुकबैत, मुदा पेशागत उपलब्धिक अन्य मापक सुझबैत अछि।

७५. सात सीढ़ी

‘सात सीढ़ी’क प्रथम-पुरुष कथक छापाखानाक तरहड़िमे सात पएरक बाद आठम “ठक” सुनैत अछि। मशीन, काठ, काँटी आ भारक भौतिक कारण अन्ततः स्पष्ट होइत अछि, किन्तु भयक देहगत स्मृति तुरन्त नहि मिटैत। वैज्ञानिक व्याख्या आ अनुभवक अवशिष्ट असरक भेद कथा केँ साधारण रहस्य-उद्घाटनसँ बेसी समृद्ध बनबैत अछि। अन्तमे सीढ़ी गिनब छोड़ल जाएब मानसिक स्वतन्त्रताक आरम्भ अछि, जखनकि देहक क्षणिक ठमक मनुष्यक स्मरण-प्रणालीक जटिलता देखबैत अछि।

७६. नस्तीक (संचिकाक) आत्मकथा

‘नस्तीक (संचिकाक) आत्मकथा’मे निवेदनक लाल गत्ताक संचिका स्वयं कथक अछि। टूटल साँध पर बाँस राखबाक छोट माँग अनेक मेज, टिप्पणी, मोहर आ “मार्गदर्शन अपेक्षित” सन वाक्य बीच घूमैत अछि। कथाक अप्रत्याशित कथावाचक प्रशासनिक विलम्ब केँ स्वतः दृश्यमान करैत अछि: कागज नहि, मनुष्य समय गमबैत अछि। अन्तमे अस्थायी संरचना निरीक्षणक बाद मूल समस्या पूर्ण रूपेँ हल नहि होइत। निर्जीव वस्तुक कथन-स्वर संस्थागत उत्तरदायित्वक आलोचना लेल असाधारण प्रभावी शिल्प अछि।

७७. सीमा

‘सीमा’मे खेतक मेड़ आ सरकारी आवाजाही-पर्चीक रेखा एक नहि अछि। सामान्य गतिविधिक सूचीमे दूध, विद्यालय, पशुधन आ पानि मानल जाइत अछि; बहिनक घर भोजमे जेबाक प्रश्न असमंजसमे रहि जाइत अछि। कथा नियमक भाषामे ‘सामान्य जीवन’क अर्थ निर्धारित करबाक

अधिकारक समस्या उठबैत अछि। पुरान रंगीन पर्ची घरक कीलपर बान्हल रहब नियंत्रणक अनुभवक स्मृति अछि। प्रशासकीय निअम शिथिल भेलो ओकर सामाजिक असर तुरन्त नष्ट नहि होइत।

७८. ओसाराक बल्ब

दोसर ‘ओसाराक बल्ब’ दरभंगाक अनिमाक सिलाइ-काज पर केन्द्रित अछि; एकर कथ्य पहिल ‘ओसाराक बल्ब’सँ स्पष्ट भिन्न अछि। बल्ब बुझला सँ रातिक कामक समयक असुविधा उजागर होइत अछि, मुदा नव बल्ब लगला सँ मात्र श्रमक मूल्य निर्धारित नहि होइत। अनिमा दोकानक पट्टीक बदला ‘काजक समय’क सार्वजनिक संकेत चाहैत छथि। पुरान बल्ब फेकि देबाक निर्णय बदलल श्रम-संबंधक संकेत अछि। घरक ओसारा निजी सेवा सँ पहिचानल पेशागत स्थान बनबाक दिशामे बढ़ैत अछि।

७९. अनन्त पञ्जी

‘अनन्त पञ्जी’मे वाचस्पति झा वंशावलीक पन्नासभ पढ़ैत छथि, मुदा नवजातक भविष्यकें पहिनेसँ लिखल सम्बन्धक भीतर पूर्ण रूपेँ बन्द नहि करैत। भीजल पञ्जीक पुरान अक्षर आ घरमे बच्चाक सम्भावित नामसभक बीच परम्परा आ अगिला जीवनक दूरी खुलैत अछि। ईशान नाम मनमे उठितो हुनकर “पहिने किछु दिन ओकरा देखू” उत्तर नव व्यक्तिक स्वायत्त अस्तित्वकें मान्यता दैत अछि। कथा वंशावलीक उपयोगक अस्वीकार नहि, ओकर अनन्त विस्तारक सीमा पर प्रश्न अछि।

८०. मिथिलाक पुस्तकालय

‘मिथिलाक पुस्तकालय’मे ईशान मिश्र अपन प्रस्तावित पोथीकें खोजैत अनलिखल, हरायल आ मौखिक परम्पराक सम्भावित संग्रहमे पहुँचैत अछि। पोखरि, घाट आ लोकस्मृतिक परस्पर विरोधी साक्ष्य मिलाबय लेल सरल आख्यान गढ़बाक प्रलोभन रहैत अछि। अन्तमे ओ पाण्डुलिपिमे ‘जहाँ स्रोत एक-दोसरसँ नहि मेल खाइत अछि’ शीर्षकसँ नव पन्ना जोड़ैत अछि। ई निर्णय अनुसन्धानक नैतिक केन्द्र अछि। पातर पोथी बनबाक सम्भावना भौतिक अपूर्णता होइतो तर्कक ईमानदारी बढ़बैत अछि। शोधक भाषा लेल ई कथा संग्रहक विशेष आत्मालोचनात्मक रचना अछि।

नव पाँखि

दू किशोर कथामे प्रवेश-परीक्षाक गरिमा आ बाढ़िमे पुस्तक-संरक्षण अनायास उपदेश बनि नहि रहि जाइत; बालकक दृष्टि आ सामूहिक क्रियासँ निर्णयक अर्थ बनैत अछि।

८१. बैसाखीपर जिनगी

‘बैसाखीपर जिनगी’मे अभियान्त्रिकी प्रवेश-परीक्षाक फाटक पर एक किशोरक बैसाखी अनेक लोकक नजरि आकर्षित करैत अछि। फूल अपन बेटाक गणित, मशीन खोलबाक कौशल आ जिज्ञासाक बात पहिने कहैत छथि; रतीशक अपेक्षा कठिनाइ सुनबाक छल। “बैसाखी ओकर परिचयक एक अंश अछि, पूरा परिचय नहि” कथाक केन्द्रीय पुनर्परिभाषा अछि। बालकक बिनु-शब्द मुस्की सामाजिक निरीक्षणक एक सहज, गैर-दयाभावी विकल्प अछि। दिव्याङ्गताकें समूची पहिचान बनएबाक विरुद्ध कथा गरिमामय दृष्टि प्रस्तुत करैत अछि।

८२. बाढ़िमे बचल पोथी

‘बाढ़िमे बचल पोथी’मे ईशान, नीरज, सोनाली आ अर्पिताक सहयोगसँ बाढ़िक बीच पोथी-बचाउ कार्य सम्पन्न होइत अछि। पुस्तकक रक्षा केवल सामग्री सूखल रखब नहि; पोथीबाबाक कथन अनुसार अर्थ बुझब आ जीवनमे उपयोग करब सेहो आवश्यक अछि। भीजल किनारक दाग हटाएल नहि जाइत—ओ क्षतिक संग स्मृतियो रखैत अछि। कथा किशोर साहसकें चमत्कारी उपलब्धि नहि, समन्वित श्रम आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्व रूपेँ प्रस्तुत करैत अछि। इएह कारण अन्तिम दाग नष्ट कएल जाएबाक वस्तु नहि, जीवित अनुभवक प्रमाण बनैत अछि।

तेसर भाग : समेकित आलोचनात्मक विवेचन

गाम, जाति, विश्वास आ सार्वजनिक प्रतिष्ठा

‘सिद्ध महावीर’ आ ‘जाति-पाति’कें एक संग पढ़लापर संग्रहक पहिल खण्डक रूप-वैविध्य उद्घाटित होइत अछि। पहिल कथा मे विहित दान, मन्दिर आ रजिस्ट्रीक बहुअध्यायी नाटक अछि; दोसरमे लगभग एक नोकदार संवाद। मुदा दुनू प्रश्न एक अछि: सार्वजनिक प्रतिष्ठा ककरा कतेक सहज उपलब्ध अछि? अनमना दीदीक श्रमक बावजूद पवित्र स्थलक कायिक अधिकार

छलपूर्ण दस्तावेजसँ हटि सकैत अछि। उधर पुलिस अकादमीक बराबर पद पर दू व्यक्तिक जातिनामक उच्चारणक सामाजिक मूल्य असमान अछि। धर्म आ जाति एतय केन्द्रीय विषय अवश्य छथि, मुदा कला ओकर सामाजिक व्यवहारक अन्तर्विरोध ठोस बनबैत अछि।

‘डोमा, बुधन आ...’ दीर्घ विचार-प्रवाहमे जातिक ऐतिहासिक अर्थपर विवाद उठबैत अछि। कथा ‘जाति’ आ ‘जाति-व्यवस्था’क भेद बुझेबाक प्रयास करैत अछि आ पाठकसँ ओहि तर्कक परीक्षण अपेक्षित रखैत अछि। एकर कथन-ऊर्जा बुधनक पीढ़ीगत त्यागसँ उठैत अछि; से यदि बिसरल जाए तँ पछिला दार्शनिक बहस असंबद्ध प्रबन्ध जकाँ देखि पड़ि सकैत अछि। एहि बिन्दुपर आलोचककँ कथा-शिल्पक सीमा सेहो स्वीकार करबाक चाही: विचारोत्तेजक सामग्री स्वतः सदा कसीन कथानक नहि बनबैत।

‘महिसबार ब्राह्मणक गाम’ लोकवाङ्मयक सूची, पोखरिक नाप-नाम, पेशाक विवरण आ जातिगत भौगोलिक समूहसँ एक विस्तृत सांस्कृतिक नक्शा बनबैत अछि। नाचक गाथा, कीर्तन, रोजी-रोटी आ धार्मिक श्रमक परस्पर निर्भरता एकल जातिक आत्मवर्णनसँ बहुतेक बड़ सामाजिक ढाँचा उघारैत अछि। एतय अनुसंधानक सही विधि ई होयत जे पाठमे वर्णित परम्पराक साहित्यिक रूप मानल जाए, तत्पश्चात् स्वतंत्र इतिहासक जाँच अलग कएल जाए। बिना बाह्य प्रमाणक प्रत्येक विवरणकँ मिथिलाक सम्पूर्ण समाजक निर्विवाद सामान्य इतिहास लिखब जोखिमपूर्ण होयत।

‘जातिक कुर्सी’ एहि दीर्घ सामाजिक इतिहासक एक लघुतर समकालीन रूप देखबैत अछि। वस्तु समान, रंग समान, दाम समान रहितो बैसबाक स्थान पुरान असमानता अनुवादित करैत अछि। एतय कथाकार खुल्लमखुल्ला नैतिक फैसला दऽ समाप्त नहि करैत; क्रम बदलबाक अभ्यास ठोस रूपसँ देखबैत अछि। परिणाम ई अछि जे समानता ‘सभ एके कुर्सी पर छथि’ नहि, ‘ककरो स्थायी पीछे ठाम नहि’ बनैत अछि।

स्मृति आ अभिलेख : जे लिखल अछि, जे नहि लिखल

स्मृतिक कथासभ एतय अतीतक शृङ्गारक बजाए पाठ-संशोधनक नैतिक समस्या पर केन्द्रित छथि। ‘प्रतिलिपिकार’क सुधीन्द्र मूलक रिक्तता स्वीकार करैत अछि। ‘अन्तिम पाठक’क रघुपति आगिक बाद हेरायल ग्रन्थ अपने लिखि देबाक प्रलोभनसँ पाछाँ हटैत छथि। ‘मिथिलाक

पुस्तकालय'क शोधकर्ता असहमत स्रोतक एक अलग पन्ना बनबैत अछि। तीनू कथामे सत्यक व्यावहारिक माप ई अछि जे जे नहि जनैत छी तकरा नहि जनबाक अवस्था मानेब। एहन स्वीकृति इतिहास-विमुखता नहि; इतिहासक नाम पर अनुमान लिखबाक विरुद्ध अनुशासन अछि।

‘सूखल कमला’, ‘माटिक गन्ध’ आ ‘एक शब्द गलत’मे ई प्रश्न कागजसँ हटि देह, गन्ध आ आपसी सम्बोधनमे प्रवेश करैत अछि। कमलाक सूखल धार पुरान दिशा सुरक्षित नहि रखैत; वर्षाक गन्धक स्मरण बादमे गन्धसँ स्वतंत्र होइत; एक गलत शब्द सम्बन्धक सही सुनबाक कठिनाई सामने रखैत अछि। पॉल रिकरक स्मृति आ विस्मरण विषयक दार्शनिक प्रश्न एहिठाम उपयोगी पृष्ठभूमि दैत अछि: अतीत केवल संग्रहीत चीज नहि, वर्तमानमे फेर घटैत व्याख्याक घटना अछि। मुदा प्रत्येक स्मृतिका प्रतीकात्मक रूपान्तरण समान नहि; किछु ठाम शोक, किछु ठाम घर-परिवारक अनिर्णीत विवाद, किछु ठाम समाजक दस्तावेजी हिंसा प्रभावी अछि।

‘घर नम्बर पाँच’क खुलल खिड़की, ‘बहिनसभ’क कढ़ाइक अनभरल रेखा आ ‘सात मिनटक आवाज’क खाली गोल स्मृतिक एक विशेष शिल्प देबैत अछि। कथा अन्तमे रिक्तता मिटाएबक बदला ओकर अर्थ बदलैत अछि। खाली पन्ना मूलक कमी नहि रहि जाए, यदि ओ अगिला लिखनिहार लेल स्थान हो। घरक पुरान निर्णयक सम्पूर्ण स्रोत नहि बुझल जाय, मुदा उपयोगक बोध बाँचल रहि सकैत अछि। ई रिक्तताक सौन्दर्यशास्त्र अछि; तथापि रिक्तता जँ प्रत्येक कथाक तयशुदा समाधान बनि जाय तकर पुनरावृत्तिसँ शिल्प एकरूप होयबाक सम्भावना सेहो अछि।

पाँजि, मोहर, खाँचा आ राज्यक दृष्टि

‘गिनतीक बाहर’, ‘एकतीसम खाट’, ‘दिनांकक खाली खाँचा’ आ ‘प्रतीक्षालयक कुर्सी नम्बर शून्य’ चारि भिन्न संस्थाक एक साझा प्रश्न उठबैत अछि: गिनतीक एकक ककरा कहल जाए? घरक संख्या परिवारक संख्या नहि, खाट सामानक संख्या कर्मचारिक आरामक माप नहि, एक दिनांक तीन दिनक क्षतिक अनुभव नहि, आ शून्य अंक कुर्सीक उपयोगक सरल निर्देश नहि। संख्याकेँ दोषी ठहराएब एतय अपर्याप्त अछि। असल समस्या संख्या बनबैत समय इस्तेमाल कएल गेल परिभाषा अछि।

‘सुधार-पाँजिक मूल पृष्ठ’ आर ‘बरगदक नीचाँ रजिस्टर’मे सरकारी अभिलेखक सत्य समयक संग परिवर्तनशील साबित होइत अछि। मूल पृष्ठक त्रुटि मेटाओल नहि जाइत, मुदा सुधारक प्रभाव वास्तविक जमीन आ ऋणक संसारमे प्रवेश करैत अछि। मुनिलालक स्थानीय पाँजि पानि छोड़ल जाएबाक समय सँ आगाँ पानि खेत धरि पहुँचबाक बात जोड़ैत अछि। एहि दुनू उदाहरणमे वैधता अलग प्रक्रिया सँ बनैत अछि। कथा अभिलेख-विरोधी नहि; सूक्ष्म, परिशुद्ध आ उत्तरदायी अभिलेखक पक्षधर अछि।

‘घुरैत मोहर’, ‘नस्तीक (संचिकाक) आत्मकथा’ आ ‘हस्ताक्षरक शक्ति’मे मोहर, संचिका आ हस्ताक्षर चलायमान अधिकार-संकेत छथि। संचिका मेजसँ मेज घूमैत अछि, मुदा टूटल साँघक समस्या ओतहि रहैत अछि। महिला बचत-मंडली अपन नाम लिखैत अछि, मुदा कागजक भाषा नहि पढ़लापर ऋणक अवधि ओकर विरुद्ध जा सकैत अछि। एही प्रकारँ मोहरक दाग निर्णयक आधा वृत्त बनि रहैत अछि। राज्य वा संस्था एतय अमूर्त खलनायक नहि; ओकर कार्य एक-एक वाक्य, पाँति, पावती, चूक आ विलम्बसँ पहिचानल जाइत अछि।

‘दस किलो चाउर’क फोटो-प्रमाण सभसँ तीक्ष्ण दृश्य-आलोचना अछि। एके बोरा फेर-फेर कैमरा सोझाँ पहुँचलाक बाद अनेक लाभार्थीक वितरणक छवि बनैत अछि। वास्तविक अनाजक अभाव आ तस्वीरक ‘पूरा’ दृश्यक द्वन्द्व मीडिया-साक्ष्यक सीमाक आलोचना करैत अछि। एहि कथा, ‘सीमाक गोली’क प्रत्यक्षदर्शी-विरोध आ ‘अदालत’क फोटो-फ्रेमकेँ संग पढ़लापर स्पष्ट होइत अछि जे दृश्य उपस्थितिक स्वतः सम्पूर्ण प्रमाण नहि अछि।

स्त्रीक श्रम, घरक उपस्थिति आ आत्मनिर्णय

संग्रहमे स्त्री-पात्रसभकेँ मात्र सहानुभूतिक पात्रक रूपमे पढ़ब ओकर सक्रिय ज्ञान केँ कम करब होयत। ‘काजर’क शारदा देवी अपन चेहराक वर्तमान स्वीकार करैत छथि। ‘खुलल दरवाजा’क रेखा सार्वजनिक नजरिक बीच फेर चलबाक निर्णय लैत अछि। ‘मौन गवाही’क कुसुम अपन अनुभवक कथनाधिकार स्पष्ट करैत अछि। ‘किरायेदार कन्या’मे रात्रिक समय पर स्त्रीक वैध आवागमन प्रश्न बनैत अछि। एहि कथासभक साझी रचना अछि जे स्त्रीक अधिकार ककरो महान वक्तव्यसँ नहि, अपन दैनिक क्रिया पर निर्णयक माध्यमसँ उपस्थित होइत अछि।

‘गुप्त बचत’मे मालती देवीक पैसा अलग तिजोरीमे नहि, बजारक अनौपचारिक भरोसा-जालमे सुरक्षित अछि। ‘सिलाइ मशीन’क लीला आ दोसर ‘ओसाराक बल्ब’क अनिमा अपन श्रमकेँ परिवारक अघोषित सेवा रहय नहि देबाक दिशा खोजैत छथि। एहिसँ घरेलू अर्थशास्त्रक भीतर पैसा, समय आ श्रमक नामकरणक समस्या उभरैत अछि। अधिकार केवल कानूनक प्रश्न नहि; “ई काजक समय अछि” सन कथनसँ निजी श्रमक सार्वजनिक मूल्य स्थिर होएबाक आरम्भ होइत अछि।

‘मातृवंश’ स्त्री-उत्तराधिकारक परम्पराक भीतर सेहो अन्याय सम्भव होयबाक प्रश्न उठबैत अछि। पुरान स्त्रीक देखरेख पर आधारित घर-हस्तान्तरण बादमे जेठ बेटीक जन्मसिद्ध आदेश बनि जाइत अछि। ‘बहिनसभ’मे श्रमक रेखा केकर हाथक, एहि विवादमे उत्पत्तिक एकल स्वामित्व जटिल होइत अछि। एही कारण एहि संग्रहमे स्त्री-स्वातन्त्र्यक अर्थ पुरुष-निर्मित व्यवस्था हटाकऽ स्त्रीक अपरिवर्तनीय अधिकार थोपब नहि, बराबरी, उत्तरदायित्व आ विवेकसँ व्यवस्था बदलब अछि।

नदी, मेड़, बीया : पर्यावरण आ जीविकाक नैतिकता

कमला नदी अनेक कथामे अछियै, मुदा सभ ठाम ओकर कार्य एक नहि। ‘सूखल कमला’मे ओ स्मृतिक दिशा अछि; ‘डूम’ आ ‘रातिक नाव’मे आपदा आ बचावक जीवन-परिस्थिति; ‘नदीक कागज’मे घरक वैधता हेराएबाक चलैत भूगोल; ‘बालू घाट’मे जलस्तर आ उत्खननक सम्बन्ध; ‘सीमाक गोली’मे नाला आ रेखाक प्रमाणगत असहमति। एक नदीक प्रतीक बनि जाएबाक प्रलोभन एहि भिन्न अर्थसभकेँ समेटि लेत। आलोचना केँ भूगोलक प्रत्येक रूपकक विशेष कार्य चिन्हबाक चाही।

‘कुर्थीक दालि’, ‘विद्यालयक जूता’ आ ‘एक बीघाक सपना’ अर्थव्यवस्थाक एक दुःसाध्य नैतिक गणना करैत अछि। आजुक भोजन, अगिला वर्षक बीया, बालिकाक शिक्षा आ जमीनक स्वामित्व सभ सीमित साधन माँगैत अछि। छोट निर्णयक लागत अलग-अलग रूपमे अएल अछि: कुर्थीक कम बीया, कड़ियामे बान्हल पाँच भुट्टा, शिवनाथक हाथमे ओही पुरान नाप-रस्सी। कथा एहन लागत केँ लुकाबैत नहि; फलतः आर्थिक आशावादमे वास्तविक संघर्ष सुरक्षित रहैत अछि।

‘बाँसक पुल’ आ ‘उजड़ल मेड़’मे समाधान निजी सीमा-नाश नहि, साझा जोखिमक सटीक मरम्मत अछि। पुलक ढीला फाँक चलनिहारक चोटग्रस्त पयरक अनुसार जाँचल जाइत अछि; मेड़ ठाढ़ रहैत अछि, मुदा बीचमे पानि जेबाक स्थान छोड़ल जाइत अछि। यएह “उपयोगक न्याय”क ठोस रूप थिक। ‘पोखरिक रखबार’क वंशी महतो बगुलाक पएरक निशान नापब छोड़ि स्मरण करैत छथि—प्रकृति पर अधिकारक प्रत्येक ज्ञान-सूत्र मापनसँ समाप्त नहि होइत।

स्वर, मौन आ रूपात्मक प्रयोग

गद्यक भीतर ध्वनि अनेक रूप लैत अछि। ‘राग’क गायन आ अभ्यास, ‘अधूरा गीत’क ठहराव, ‘डोमक बाँसुरी’क अनसुन्न सुर, ‘एक कप चाय कम’क मौन तथा ‘आवाज नहि देनिहार घंटी’क गैर-यान्त्रिक ठकठक अलग तरहक सामाजिक सुनब रचैत अछि। एहि कथासभमे निषेधात्मक क्रिया—नहि बाजब, नहि गाएब, नहि भरब—अर्थविहीन चुप्पी नहि, समुचित निर्णय भऽ सकैत अछि। मुदा ओकर कारण प्रसंगानुसार बदलैत अछि: निजता, शोक, प्रमाण, कला वा सामाजिक दर्जा।

‘अदालत’क गवाही-रूप, ‘नस्तीक (संचिकाक) आत्मकथा’क निर्जीव प्रथमपुरुष, ‘स्टेशन जे नक्शामे नहि’क विस्मयात्मक अनिश्चितता आ ‘सात सीढ़ी’क अनुभूत ध्वनि एहि चयनमे अलग कथाविधानक उदाहरण छथि। अन्यथा अनेक रचनामे तृतीय-पुरुषक निकटवर्ती दृष्टि, ठोस स्थानवर्णन, नाजुक संवाद आ अल्प-प्रकाशवला अन्त रहैत अछि। एतय कथाकार अनिर्णय केन्द्रीय शिल्प बनबैत छथि: अनेक बेर चाभी, पन्ना, चौकी, कप वा कुर्सी एक सीमित दृश्य बनि कथा समाप्त करैत अछि।

एहि तकनीकक उपयोग संग ओकर सीमा सेहो जाँचल जाएबाक चाही। वारंवार खाली पृष्ठ, अनकहल उत्तर, तिरछी रोशनी आ खुलल अन्त आबी तँ पाठक अगिला कथा मे सेहो एहेन आवर्तन अपेक्षित करैत अछि। अपेक्षा बनबाक बाद अपरिचयीकरणक ताजगी घटि सकैत अछि। तथापि रूपकक अलग-अलग सामाजिक कारण एही सम्भावित पुनरावृत्तिक जोखिम केँ कतेको ठाम सँभालैत अछि। सचेत सम्पादकीय पुनर्पाठ लेल रूपकक कार्य देखब अधिक उपयोगी अछि, केवल ओकर आवृत्ति गनब नहि।

दस स्रोत-खण्डक तुलनात्मक परख

‘पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल’क चयन शैलीगत रूपसँ सभसँ असमान अछि। ‘जाति-पाति’ अति संक्षिप्त, जखनकि ‘महिसबार ब्राह्मणक गाम’ विस्तृत सामाजिक संसार रचैत अछि। ‘शब्दशास्त्रम्’ ज्ञान आ संस्कृतिक विवाद पर दीर्घ संवाद रखैत अछि। एकर तुलना ‘कथा-शतत्रयी’क लघु, कसेल रोजमर्राक यथार्थसँ करैत समय आकारक भेदकेँ काव्यगत हीनता या श्रेष्ठताक सरल तराजूमे नहि रखल जाए। संग्रहक एक प्रारम्भिक उपलब्धि कथात्मक दीर्घता आ बीहनि-कथाक सहअस्तित्व अछि।

‘स्मृतिक दोसर दिस’क दस कथा स्मरण, लेखन आ प्रमाणक झगड़ा अधिक विस्तारसँ खोलैत अछि। ‘इजोत — जनम-जनमक कथा’क पाँच रचना परस्पर सम्बन्धित भूगोल आ बहुपीढ़ीक स्वरक माध्यमसँ एक विस्तृत नैतिक संसार रचैत अछि; एहि खण्डक अंतर्गत ‘अदालत’ विशेष रूपेँ दस्तावेजी कथनक प्रयोग करैत अछि। ‘कथा-शतत्रयी’क तीन खण्ड छोट वस्तु-सम्बन्ध आ दैनिक संस्थासभ सँ समाजक ढाँचा परखैत अछि। ‘कथा-त्रिधारा’क तीन खण्डमे गृहस्मृति, पारिवारिक सम्बोधन आ कार्यालयक विधिकरणक मध्यम मार्ग अछि। ‘नव पाँखि’क दू कथा किशोर अनुभवक दृष्टिसँ गरिमा आ सांस्कृतिक रक्षा उठबैत अछि।

संग्रहक परस्पर संवाद लेल तीन जोड़ा विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। पहिल ‘सिद्ध महावीर’ आ ‘सुधार-पाँजिक मूल पृष्ठ’—दुनूमे लिखल दस्तावेज मनुष्यक भूमि-अधिकार बदलैत अछि, मुदा पहिलमे छल आ दोसरमे संशोधन-प्रक्रिया मुख्य अछि। दोसर ‘काजर’ आ ‘अनन्त पञ्जी’—दुनूमे पीढ़ीक सम्बन्ध अछि, मुदा पहिलमे वर्तमानक देहक स्वीकृति आ दोसरमे भविष्यक अनिर्धारित पहचान प्रश्न अछि। तेसर ‘ओसाराक बल्ब’क दू अलग कथा—पहिलमे घरक साझा उजासक स्थान-व्यवस्था, दोसरमे स्त्रीक श्रमक समय आ व्यावसायिक पहिचानक प्रश्न। एहि भेदसभकेँ बचाएब चयनित संग्रहक आलोचनात्मक न्याय अछि।

उपलब्धि, अन्तर्विरोध आ मूल्याङ्कन

एहि चयनक सबसँ भरोसेमन्द उपलब्धि छोट सामाजिक वस्तुकेँ वैचारिक विवादक केन्द्र बनएबाक क्षमता अछि। कथा ‘अधिकार’ कहि छोड़ि नहि दैत; पूछैत अछि—कोन दरसँ भीतर

जाएत? केकर जूता पाँजिमे चढ़त? ककर नामक आगाँ गलती मेटायल? ककरा चाउर भेटल वा मात्र फोटो खिंचल? ककर जूताक लागत बीयासँ चुकाओल गेल? वस्तु-प्रसंगक एहि विशेषतासँ सामाजिक यथार्थ उपदेशात्मक परिभाषाक बदला अनुभूत दृश्य बनैत अछि।

दोसर उपलब्धि ज्ञानक मर्यादाक सामर्थ्य अछि। अनेक कथा निर्णायक वाक्य हटबैत छथि, प्रमाणक अन्तर बचबैत छथि, आ गवाही केँ पात्रक दृश्यस्थिति सँ जोड़ैत छथि। ई आलोचनात्मक चेतना ‘प्रतिलिपिकार’क रिक्त कोष्ठक सँ ‘मिथिलाक पुस्तकालय’क असहमत स्रोत धरि फैलल अछि। एहि अर्थमे संग्रह साहित्यक रूपमे पढ़ब आ सामाजिक दस्तावेजक रूपमे सावधानी सँ उपयोग करब दुनूक शिक्षा दैत अछि।

सीमा सेहो अछि। किछु कथा बहुत छोट समयमे सामाजिक प्रश्न स्पष्ट करबाक प्रयास करैत अछि, जाहिसँ पात्रक मनोवैज्ञानिक विस्तार कम रहि सकैत अछि। किछु विचारप्रधान आख्यानमे दार्शनिक तर्क चरित्रक तत्काल क्रियासँ अधिक स्थान लैत अछि। आ किछु अन्तमे वस्तु-संकेतक मिलैत-जुलैत युक्ति बारम्बार अयल अछि। एहि आधार पर समूच साहित्यिक प्रयत्नकेँ कमतर नहि मानल जाए; मुदा प्रत्येक कथा स्वयंसिद्ध उत्कृष्ट अछि एहन निष्कर्ष सेहो आलोचनात्मक नहि होयत।

चयनक सीमा सेहो स्पष्ट अछि: दस स्रोतसँ छाँटल ८२ कथा मूल लेखकक सम्पूर्ण रचनाधर्मिता नहि होइत। तसर्थ एहि पुस्तकसँ लेखकक समूच कालानुक्रमिक विकास, ऐतिहासिक प्रभाव, प्रत्यक्ष सामाजिक स्वीकृति अथवा मूल स्रोत-पोथीक प्रत्येक अध्यायपर निर्णायक मत देब अनुचित होयत। ई समीक्षा चयनक भीतर देखाएबवला रूप, सामाजिक बोध आ भाषिक कार्यप्रणालीक अध्ययन अछि।

निष्कर्ष : रिक्त स्थानक उत्तरदायित्व

गजेन्द्र ठाकुरक एहि बयासी चयनित कथामे सामाजिक यथार्थक एक महत्त्वपूर्ण सूत्र “जकर नाम लिखल नहि” ओकर निरर्थकता नहि, उल्टे ओकर हकक प्रश्न अछि। अज्ञात निवासी, मूलक रिक्त कोष्ठक, नाम-विहीन विद्यार्थी, बिना नम्बरक बाट, अधिक खाट, असंगत क्षति-दिनांक आ अनलिखल भविष्य एके न्यायविचारक अनेक पृथक रूप बनैत अछि। एहि कारण कथा-जगत मे साहित्यक निःशब्द भाग सेहो प्रतिवाद करैत अछि।

परन्तु रिक्तता अपने-आपमे न त महिमामण्डित अछि, न समाधान। कतहु ओकरा भरब जरूरी अछि—मजदूरीक हिसाब, बाढ़ि-पीड़ितक नाम, पानिक वास्तविक उपयोग; कतहु ओकरा बचाएब जरूरी अछि—मूल पाण्डुलिपिक अनिश्चितता, व्यक्तिगत कथनक निजता, आगामी लिखनिहारक अवसर। ई भेद करबाक विवेक संग्रहक अनेक सफल कथाकेँ एक सूत्रमे जोड़ैत अछि। ‘की भरब’क संग ‘की नहि भरब’ पूछब आधुनिक कथा-समीक्षाक नैतिक चुनौती अछि। संग्रहक दीर्घ अर्थ एहि कारण केवल सन्देश नहि, विचारक विधिमे अछि। कथा पाठककेँ ठोस दृश्य, विवादित प्रमाण, बदलैत वस्तु आ सीमित निर्णायक सामने रखैत अछि। जखन पाठक तुरन्त फैसला दैब छोड़ि पात्रक वास्तविक विकल्प आ ओकर कीमत पर ध्यान दैत अछि, तखने एहि चयनक आधुनिकता पूर्ण रूपेँ उभरैत अछि।

सन्दर्भ-पोथी

ठाकुर, गजेन्द्र। गजेन्द्र ठाकुरक ८२ टा चयनित कथा। चयन आ सम्पादन: आशीष अनचिन्हार। विदेह, २०२६। समीक्षित मूल पाठ।

आनन्दवर्धन। ध्वन्यालोक। संस्कृत काव्यशास्त्रक मूल ग्रन्थ।

कुन्तक। वक्रोक्तिजीवितम्। संस्कृत काव्यशास्त्रक मूल ग्रन्थ।

Booth, Wayne C. *The Rhetoric of Fiction*. University of Chicago Press, 1961; 2nd ed., 1983.

Genette, Gérard. *Narrative Discourse: An Essay in Method*. Translated by Jane E. Lewin. Cornell University Press, 1980.

Bakhtin, M. M. *The Dialogic Imagination: Four Essays*. Edited by Michael Holquist; translated by Caryl Emerson and Michael Holquist. University of Texas Press, 1981.

Ricoeur, Paul. *Memory, History, Forgetting*. Translated by Kathleen Blamey and David Pellauer. University of Chicago Press, 2004.

Lemon, Lee T., and Marion J. Reis, editors and translators. *Russian Formalist Criticism: Four Essays*. University of Nebraska Press, 1965.

परिशिष्ट : कथानुक्रम

मूल चयन-संग्रहमे कथा जे क्रममे अछि, एतय समीक्षा सेहो ओही क्रममे राखल गेल अछि।
समान शीर्षक दोहरल होय तँ क्रमाङ्क आ स्रोत-खण्ड देखल जाए।

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

१. सिद्ध महावीर

२. डोमा, बुधन आ...

३. शब्दशास्त्रम्

४. महिसबार ब्राह्मणक गाम

५. जाति-पाति

स्मृतिक दोसर दिस

६. प्रतिलिपिकार

७. अन्तिम पाठक

८. सीमाक गोली

९. राजमिस्त्रीक गिरावट

१०. काजर

११. सूखल कमला

१२. माटिक गन्ध

१३. बहिनसभ

१४. घर नम्बर पाँच

१५. संगीत शिक्षक

इजोत — जनम-जनमक कथा

१६. मातृवंश

१७. राग

१८. अदालत

१९. डूम

२०. विदेह

कथा-शतत्रयी खण्ड-१

२१. दू अक्षर

२२. फोटो स्टूडियो

२३. एक जोड़ी जूता

२४. बाँटल छाँह

२५. दोसर दर

२६. सात मिनटक आवाज

२७. अधूर नाटक

२८. एकतीसम खाट

२९. ईटक निशान

३०. गिनतीक बाहर

कथा-शतत्रयी खण्ड-२

३१. बाँधक ओहि पार

३२. जमीनक आवाज

३३. सिलाइ मशीन

३४. दस किलो चाउर

३५. अधूरा गीत

३६. माटिक बाँसुरी

३७. खुलल दरवाजा

३८. मौन गवाही

३९. कुर्थीक दालि

४०. एक बीघाक सपना

कथा-शतत्रयी खण्ड-३

४१. खाली थैला

४२. नाव बान्हल रहल

४३. पोखरिक रखबार

४४. डोमक बाँसुरी

४५. बरगदक नीचाँ रजिस्टर

४६. जातिक कुर्सी

४७. किरायेदार कन्या

४८. गुप्त बचत

४९. स्टेशन जे नक्शामे नहि

५०. अपरिचित अपन घर

कथा-त्रिधारा खण्ड-१

५१. आवाज नहि देनिहार घंटी

५२. उल्टा रास्ता

५३. खाली काँपी

५४. एक शब्द गलत

५५. दीप मिझेबाक पहिने

५६. रातिक नाव

५७. नाम भूलनिहार नेता नहि, शिक्षक

५८. नदीक कागज

५९. बालू घाट

६०. हस्ताक्षरक शक्ति

कथा-त्रिधारा खण्ड-२

६१. मचानक राति

६२. घुरैत मोहर

६३. प्रतीक्षालयक कुर्सी नम्बर शून्य

६४. दिनांकक खाली खाँचा

६५. सुधार-पाँजिक मूल पृष्ठ

६६. तीनटा खाली कुर्सी

६७. ओसाराक बल्ब

६८. एक कप चाय कम

६९. बाँसक पुल

७०. उजड़ल मेड़

कथा-त्रिधारा खण्ड-३

७१. विद्यालयक जूता

७२. पंचायतक नल

७३. मजदूरी

७४. छोट मास्टर

७५. सात सीढ़ी

७६. नस्तीक (संचिकाक) आत्मकथा

७७. सीमा

७८. ओसाराक बल्ब

७९. अनन्त पञ्जी

८०. मिथिलाक पुस्तकालय

नव पाँखि

८१. बैसाखीपर जिनगी

८२. बाढ़िमे बचल पोथी

१.८. गजेन्द्र ठाकुर — पाँच प्रतिशत अन्हार : विस्तृत आलोचनात्मक अध्ययन

VIDEHA 451 • VIDEHA451 / PROSE 08 • सम्पूर्ण मूल पाठ

स्रोतक मूल शीर्षक, प्रकाशन-विवरण, विषय-सूची, अध्याय, तालिका, अन्तिम टिप्पणि आ सन्दर्भ पूर्ण रूपेँ समाविष्ट। मूल स्रोतमे छपल आन्तरिक पृष्ठाङ्क स्रोत-संस्करणक अछि।

एक विस्तृत आलोचनात्मक अध्ययन

पाँच प्रतिशत अन्हार

अङ्क, साक्ष्य, सत्ता आ मनुष्यक बीच

गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यास पर

मूल पाठाधारित आधुनिक साहित्यिक समीक्षा

मूल कृति : 'पाँच प्रतिशत अन्हार'

प्रथम संस्करण २०२० • पुनरीक्षित संस्करण २०२६

विषय-सूची

अध्ययनक सार

१. कृतिक पाठ, समीक्षा-पद्धति आ परिसीमा
२. कथाबीज, विस्तार आ छह भागक स्थापत्य
३. पात्रक नैतिक संरचना आ सम्बन्धक विकास
४. कथन-शिल्प, काल-विधान आ रूपक
५. भारतीय काव्य-दृष्टि, नव्यन्याय आ आधुनिक पाठन
६. अपराध-सन्दर्भक यथार्थबोध आ कल्पनाक मर्यादा
७. शिल्पगत आपत्ति, पुनरावृत्ति आ सम्पादकीय सम्भावना
८. अध्यायक्रममे सूक्ष्म पाठ-परीक्षण : १२० अध्याय

९. समेकित मूल्याङ्कन : विधागत स्थान आ पाठकीय प्रभाव

१०. समीक्षाक अन्तिम निर्णय

पुस्तक-सन्दर्भ

अध्ययनक सार

‘पाँच प्रतिशत अन्हार’क आरम्भ दरभंगाक रेलवे पुलक नीचाँ रानी देवीक छोट दोकान आ हुनकर बेटा अमरेशक पाँच सय रुपैयाक जुआसँ होइत अछि; कथा आगाँ बढ़ैत वित्तीय अपराध, बैंक-खाताक वास्तविक नियन्त्रण, अन्तरदेशीय कम्पनी, मानव-शोषण, समाचारक विश्वसनीयता, सरकारी उत्तरदायित्व आ न्यायालयमे प्रमाणक परीक्षा धरि पहुँचैत अछि। १२० क्रमाङ्कित अध्याय छह भागमे व्यवस्थित अछि; साठिम अध्यायक बाद एकटा अलग ‘उपसंहार : अगिला नाम’ सेहो देल गेल अछि। उपन्यासक विस्तार भौगोलिक अछि, मुदा ओकर नैतिक केन्द्र छोट घरेलू जीवनमे बसल अछि।

एहि कृतिक महत्त्व केवल अपराध-रहस्य खोलब नहि, बल्कि अपराधक सम्बन्धमे ‘जे देखल गेल’, ‘जे सम्भव अछि’ आ ‘जे सिद्ध भेल’—एहि तीन अवस्थाक भेदपर कथात्मक आग्रह अछि। पाँच प्रतिशत कखनो कथित दलाली, कखनो सेवा-शुल्क, कखनो चुप्पीक मूल्य, आ अन्तमे शेष रहि गेल अस्पष्टताक रूपमे उभरैत अछि। एहि बहुअर्थी संकेतसँ शीर्षक मात्र अङ्कक नाम नहि रहि जाइत; ओ व्यवस्था, भय आ सत्यक अपूर्णताक कलात्मक रूपक बनैत अछि।

कृतिक सर्वाधिक सफल प्रसंगसभ ओ अछि जाहिमे आर्थिक विवरण लोकक जीवनसँ भिड़ैत अछि—रानीक दोकान, शिवशंकर मिश्रक बेटी लेल बचत, मिराक पासपोर्ट आ अपन घरक आकाङ्क्षा, विवेक सूदक अपराधबोध, तथा बचल धन घुरेबाक अधूरी प्रक्रिया। मुख्य सीमासभमे कतिपय संवादक अत्यधिक स्पष्टीकरणधर्मी स्वर, एक जकाँ शुरू होइत मौसम-आधारित अध्याय-प्रवेश, बहुत पैघ पात्र-संख्या, आ साठिम अध्यायक उपसंहारक बादो कथा पुनः खुलबाक संरचनात्मक असंगति प्रमुख अछि। एहि सीमाक स्वीकार कृतिक गम्भीर उपलब्धिकेँ घटबैत नहि; ओकर शिल्पक वास्तविक प्रकृति स्पष्ट करैत अछि।

१. कृतिक पाठ, समीक्षा-पद्धति आ परिसीमा

एहि अध्ययनक प्राथमिक आधार उपन्यासक संलग्न पुनरीक्षित मैथिली पाण्डुलिपि अछि। मूल अनुक्रमणिका, छहू भाग, अध्याय १ सँ १२०, बीचक अतिरिक्त उपसंहार आ अन्तिम दृश्यकेँ परस्पर जोड़ि पढ़ल गेल अछि। चरित्र अथवा घटनाक तथ्य जाहि अध्यायमे देखाइत अछि, तकरा पाठक तथ्यक रूपमे स्वीकार कएल गेल; जकर अन्तिम प्रमाण कथा स्वयं टारि दैत अछि, तकरा समीक्षामे सिद्ध घटना बनाओल नहि गेल। ई भेद एहि उपन्यासक आलोचना लेल विशेष आवश्यक अछि, किएक तँ कथा स्वयं अनुमानसँ प्रमाण धरि पहुँचबाक कठिनाइपर केन्द्रित अछि।

समीक्षाक पाँच परस्पर सम्बद्ध दृष्टि अछि। पहिल, कथावस्तु आ पात्रक अन्तर्विकास; दोसर, रस-ध्वनि आ अर्थक व्यञ्जना सम्बन्धी भारतीय काव्य-विचार; तेसर, कथाकाल, कथन-दृष्टि, बहुस्वर आ पाठकीय नैतिकता सम्बन्धी आधुनिक कथाशास्त्र; चारिम, नव्यन्यायक प्रमाण-विवेकसँ प्रेरित तर्क-परीक्षण; पाँचम, मिथिला केन्द्रित स्थानीय जीवनकेँ विश्वव्यापी धन-प्रवाह आ ऐतिहासिक संस्थागत सम्बन्धमे रखनिहार समानान्तर ऐतिहासिक पाठन। ई पद्धतिसभ कृतिक ऊपर आरोपित ‘प्रभाव’क घोषणा नहि, समीक्षाक विवेचनात्मक उपकरण अछि।

भारतीय काव्य-चिन्तनमे भरतक रस-संरचना आ आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्त ई बुझबाक बाट दैत अछि जे आर्थिक अपराधक कठोर विवरणो करुणा, भय, नैतिक वितृष्णा आ धैर्यक कलात्मक अनुभवमे कोना परिणत होइत अछि। पाश्चात्य कथाविश्लेषणमे जेरार जेनेतक कथाकाल आ सूचना-वितरण, मिखाइल बाख्तिनक बहुभाषिकता, वेन बूथक पाठकीय नैतिकता, आ पॉल रिकरक समय-आख्यान सम्बन्धी विचार विशेष उपयोगी अछि। नव्यन्यायक पक्ष, साध्य, हेतु, व्याप्ति, उपाधि आ अवच्छेदक सम्बन्धी विवेकक प्रयोग एतय उपमात्मक अछि; उपन्यासक पात्र वास्तविक दार्शनिक न्यायसूत्र लिखैत छथि, एहन दाबी नहि अछि।

कथाक कल्पित पात्र, संस्था आ विशिष्ट घटनाक्रमकेँ वास्तविक व्यक्ति अथवा संस्थाक विरुद्ध आरोप मानब अनुचित होएत। प्रकाशकीय विवरण स्वयं कथा-कल्पनाक एहि सीमाकेँ स्पष्ट करैत अछि। अपराध-विज्ञान सम्बन्धी बाह्य सन्दर्भ मात्र तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य प्रदान करैत अछि; ओ उपन्यासक भीतरक कल्पित लेनदेन अथवा व्यक्तिक ऐतिहासिक सत्यापन नहि करैत। पाठकीय मूल्याङ्कनमे असहज प्रश्न होएत तँ ओकरा प्रश्नक रूपमे रखब, उत्तरक रूपमे नहि।

२. कथाबीज, विस्तार आ छह भागक स्थापत्य

२.१ पाँच सयक साम्राज्य : अपराधक स्थानीय प्रवेश-द्वार

आरम्भमे पाँच सय रुपैया अमरेश लेल घुरेबाक आशा, रानी लेल अनाज आ बकाया दाम, नीलिमा लेल बैंकक असामान्य आवागमन, आ अनाम मध्यस्थ लेल सम्भावित कमाइ बनि जाइत अछि। एके राशिक ई चारि अर्थ उपन्यासक आर्थिक-नैतिक व्याकरण आरम्भहि मे स्थापित करैत अछि। रानीक दोकानक काँचक बरनी रेलक आवाजसँ काँपैत अछि; जीवनक ई छोट दृश्य अन्तमे घुरि अबैत अछि। एकर कारण कथा वैश्विक विस्तारक बादो अपन पहिल स्थानक स्मृति नहि हरबैत अछि।

पहिल बीस अध्यायमे जुआ-पृष्ठ ‘अम्बर-९’, बैंक-खाताक नाम आ वास्तविक संचालनक अन्तर, तथाकथित ‘डिजिटल गिरफ्तारी’क शिकार शिवशंकर मिश्र, विराज सहनीक सार्वजनिक जुआ-विरोधी छवि, पत्रकार रेवती कर्ण, विवेक सूदक संदिग्ध मृत्यु-प्रमाण, विज्ञापनक सांकेतिक खेल आ मिराक असुरक्षा—ई सभ समानान्तर रूपसँ प्रवेश करैत अछि। कथाकार आरम्भसँ अपराधी निश्चित करबाक आसान बाट छोड़ि साक्ष्यक आंशिकता देखबैत छथि। ई संयम कथावस्तुक नैतिक अनुशासन अछि, यद्यपि अनेक नव परिचयक कारण कतिपय पाठककें आरम्भमे पात्र-सम्बन्ध व्यवस्थित करब पड़ि सकैत अछि।

२.२ सात समुद्रक धन : स्थानान्तरित रकम, विस्थापित मनुष्य

एकैसमसँ चालिसम अध्याय धरि मकाउ, हांगकांग, माल्टा, ब्रुसेल्स, सूरत, बीजिंग आ अरीजोनाक प्रसंग खुलैत अछि। विदेशक स्थल केवल वैभव देखेबाक सजावट नहि; कम्पनी पञ्जीकरण, नियन्त्रणक असली केन्द्र, श्रमिकक कागज, प्रचार-सेवा आ कम्प्यूटरी अभिलेखक बीच परस्पर दूरीकें साकार करैत अछि। माल्टाक मुहर आ तीन तहक कम्पनी कथामे वैधानिक नाम तथा वास्तविक लाभार्थीक अलगावक रूपक होइत अछि।

एहि भागमे मिराक पासपोर्ट, समीरक सीमित प्रत्यक्ष जानकारी, मेघनाक गुप्त सहकर्मि तारा, लिन यूक गणनाक प्रश्न, लता देसाइक तकनीकी जाँच, आ एलिस वान्देरक दान-व्यय परीक्षण संगहि चलैत अछि। कृति अंतरदेशीय वित्तीय जालकें एकटा सर्वज्ञ षड्यन्त्रक रूपमे नहि, अलग-अलग अपूर्ण स्रोत सँ जोड़बाक संरचनामे प्रस्तुत करैत अछि। मुदा स्थान-बदलावक आवृत्ति नायकत्वकें वितरित करैत अछि; पाठककें स्थायी भावनात्मक केन्द्र खोजबाक प्रयत्न करय पड़ैत अछि।

२.३ चमकैत देह, कारी कारोबार : सार्वजनिक दृश्य आ निजी आघात

एकचालिसम अध्यायसँ पटना सम्बन्धी भीड़, भ्रामक दृश्य, मंच आ प्रकाशनक संघर्ष तीव्र होइत अछि। राजगीरक पुरान प्रशिक्षण केन्द्र विवेक सूदक कथाक्रमकें नव दिशा दैत अछि; जीवित गवाह, अज्ञात मृतकक पहिचान आ मूल लेखा-प्रतिलिपिक अन्तर आपसमे जुड़ैत अछि। गोदामक छापामारी आ कथित ‘दू हजार करोड़’क अर्थ प्रश्नांकित होइत अछि। एतय उपन्यासक प्रखर उपलब्धि ई अछि जे बड़ा समाचारक अङ्ककें स्वतः वास्तविक अपराध-लाभ नहि मानल जाइत। साठिम अध्याय ‘अन्हारक हिसाब’मे कथा प्रथम व्यापक मुकाम पर पहुँचैत अछि, आ ओकर बाद ‘उपसंहार : अगिला नाम’ अगिला विज्ञापनक जन्म सूचित करैत अछि। मुदा एकसठिम अध्यायसँ फेर मूल कथाक विस्तार शुरू होइत अछि। संरचनात्मक दृष्टिसँ ई उपसंहार असल समाप्तिसँ बेसी मध्यवर्ती विराम अछि। ओकरा ‘अन्तराल’ अथवा ‘पहिल चक्रक परिणति’ बनौने कथा-पाठक अपेक्षा बेसी सुस्पष्ट होइत—यद्यपि वर्तमान पाठक ‘उपसंहार’ शब्दक समयपूर्वता स्वयं अपराध-जालक अनवरत रूप बदलबाक संकेत बनि सकैत अछि।

२.४ झूठक निर्यात : वस्तु, नाम आ श्रमिकक गवाही

एकसठिमसँ अस्सिम अध्यायमे निर्यातक कागज, मुहर, गोदामक ताला, चारि दिनक समयान्तर, श्रमिकक सुरक्षा, संस्थाक मिलैत-जुलैत नाम, कृत्रिम विज्ञापनक आवाज, शवक पहिचान, नोकरीक छल आ साक्षीक धमकीक ताना-बाना अछि। कथाकार एतय आर्थिक अपराधक अनुसन्धाने श्रम-संसार आ मनुष्यक आवागमनमे प्रवेश करैत अछि, ई देखबैत छथि। मालक तौल आ देहक मूल्यक समीपता सामाजिक दृष्टिसँ कठिन प्रश्न उठबैत अछि।

‘परिवारक मूल्य’मे रानी-अमरेशक बातचीत आ ‘नोकरीक झूठ सपना’मे असुरक्षित रोजगारीक आकर्षण, दुनू घटना अपराधक पुरान तथा नवा प्रवेश-द्वारकें स्पष्ट करैत अछि। एहि भागक प्रभाव तखन अधिक होइत अछि जखन कोनो मजदूर, बहिन अथवा गवाह अपन अलग स्वर पबैत अछि; यदा-कदा दफ्तरक विवेचनात्मक भाषण हुनकर स्वरपर हावी भऽ जाइत अछि।

२.५ लोकतन्त्रक अन्हार : जाँचक संस्थागत परीक्षा

एकासीमसँ एकसयम अध्यायमे अधिकारियोंक बदली, हेरायल फाइल, सम्पादकीय मौन, चित्रपर हमला, विपरीत समाचार, मृत्युक अस्पष्ट कारण, ठेके पर देल आदेश, आरोपितक अधिकार,

अनुदानक स्रोत आ दस्तावेजक तेसर हस्ताक्षर कथाक केन्द्र बनैत अछि। एतय प्रश्न अपराधी पकड़बाक मात्र नहि, जाँच करनिहार राज्य, समाचारक संस्था आ सार्वजनिक मत स्वयं जाँचक योग्य अछि कि नहि—एहि पर केन्द्रित अछि।

‘आरोपितक अधिकार’ समूचा उपन्यासक नैतिक विश्वसनीयताक कसौटी अछि। जँ कृति केवल अभियोजनक अनुकूल प्रमाण रखैत, तँ ओकर पूर्वकथित विवेक खोखला बनि जाइत। आरोपित व्यक्तिक प्रतिवाद सुनेबाक अवसर देलासँ कथा अपराधक बचाव नहि करैत; ओ सत्य-निर्णयक शर्त स्पष्ट करैत अछि। ‘दू अखबारक दू सच’ आ ‘सम्पादकक मौन’ एहि शर्तकें जनसञ्चारक क्षेत्र धरि विस्तारित करैत अछि।

२.६ अन्तिम पाँच प्रतिशत : प्रतिपरीक्षा, राहत आ अपूर्ण इजोत

एकसय एकसँ एकसय बीसम अध्यायमे गवाहीक भाषा, मूल समय, कथित असली मालिक, फाइल पृष्ठ, बैंकक भीतरक विरोध, सात मेजपर साक्ष्य-विभाजन, सुधारल अभियोग, प्रतिपरीक्षा आ धनक सम्भावित वापसी क्रमशः सामने अबैत अछि। कथा धन-वसूलीकें सर्वसुलभ सुखान्त नहि बनबैत; शिवशंकरक पावती, रानीक सीमित बैंक-सुविधा, मिराक अपन घर आ अमरेशक सँभलल व्यवहारक बीच राहतक अलग-अलग आकार देखाइत अछि।

अन्तिम अध्याय रेल-पुल आ काँचक बरनीक कम्पनसँ आरम्भिक दृश्य फेर खोलैत अछि। आरम्भमे जे फोन दाँवक शिकार बनबैत छल, अन्तमे ओ सावधान जीवनक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत अछि। ‘अन्हार’ पूर्णतः समाप्त होइत नहि; ओकर नाम स्पष्ट करबाक क्षमता मात्र अर्जित होइत अछि। आधुनिक नैतिक उपन्यासक लेल ई अपूर्ण समाधान बड़का उपलब्धि अछि: सत्यक विजय सर्वज्ञता नहि, अपन ज्ञानक सीमाकें मानबाक सामर्थ्य अछि।

३. पात्रक नैतिक संरचना आ सम्बन्धक विकास

३.१ रानी देवी : नाममात्रक मालिकसँ बोलनिहार नागरिक धरि

रानीक चरित्र उपन्यासक सर्वाधिक विश्वसनीय केन्द्रसभमे एक अछि। पहिल परिचयमे हुनकर दोकानक साधारण व्यापार, बकाया राशिक चिन्ता आ अमरेशक खेलक प्रति असमर्थता अछि। पाँच हजार रुपैयाक बदला हस्ताक्षर कएलाक कथामे केवल नैतिक दोष-अदोष नहि, आर्थिक बाध्यता, अपर्याप्त जानकारी आ छलक संयोग देखाइत अछि। बैंकमे सुजाता ठाकुर लग हुनकर

प्रश्न—खाता हमर नामपर अछि तँ ओकर उपयोग ककर नियन्त्रणमे—कथाक प्रमुख राजनीतिक प्रश्नमे परिणत होइत अछि।

अन्तिम भागमे ‘रानीक पाँच रुपैया’ पहिल अध्यायक ‘पाँच सय’क सँग अर्थपूर्ण व्यत्यास बनबैत अछि। विशाल वित्तीय आँकड़ा लघुतम जीवन-राशिक अर्थकेँ लीलि नहि पबैत। ‘खाता रोकल अछि, रोटी नहि’ सम्बन्धी हुनकर कथन कृतिक आर्थिक तत्त्वज्ञानकेँ दू ठोस शब्दमे सीमित करैत अछि। रानीक परिवर्तन सर्वज्ञ वित्त-विशेषज्ञ बनब नहि; अपन कागज, आत्मसम्मान आ जिविकाक विषयमे प्रश्न करबाक साहस अछि।

३.२ अमरेश : लत, लज्जा आ जिम्मेदारी

अमरेशक पात्र बाल-उपभोक्ताक कमजोरीकेँ मात्र दण्डनीय वृत्ति नहि बनबैत। पहिल जीतक छवि, एक सयसँ अधिक हारक सन्देश, कर्जाक हिसाब छोड़ि देबाक प्रवृत्ति आ सहपाठीक प्रश्न—ई सभ ओकर निर्णयक मनोवैज्ञानिक यथार्थ रचैत अछि। डर ओकर जीवनमे केवल पैसा हेराएब नहि, सार्वजनिक अपमान आ ब्लैकमेलक खतरा सेहो अछि। मायसँ संवादक टूटल धागा धीरे-धीरे जुड़ैत अछि।

अन्तमे अमरेशक महत्त्व एतय नहि जे ओ कतेक रकम घुरेलक, बल्कि ई जे ओ स्क्रीनक लालच आ अपन वास्तविक जीवनक बीच अन्तर करबाक अभ्यास करैत अछि। ‘परिवारक मूल्य’ आ ‘रानीक पाँच रुपैया’ ओकर परिवर्तनकेँ विश्वसनीय बनबैत अछि। तथापि जुआ-लतक चिकित्सकीय वा सामुदायिक पुनर्वासक दीर्घकालिक कठिनाइ अपेक्षाकृत संक्षेपमे रहि गेल अछि; भविष्यक पाठमे एहि सामाजिक अनुभवक विस्तार सम्भव अछि।

३.३ नीलिमा झा आ अरुणिमा राव : ज्ञान आ अधिकारक अलग काज

नीलिमा वित्तीय लेखा, समय, कागजक स्रोत आ सम्भावित अर्थक स्तर पर सोचैत छलीह; अरुणिमा औपचारिक अनुसन्धान, स्थानीय सुरक्षा आ विधिक सीमाक परीक्षण करैत छलीह। दुनूकेँ एके अदम्य जासूसक रूपमे मिलाओल नहि गेल अछि। नीलिमाक विवेक सूदकेँ जीवित देखबाक निजी इच्छा स्वीकार करब अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि: जाँचक दृष्टि अपन पूर्वाग्रहकेँ सेहो पहचानैत अछि। अरुणिमा अमरेश, असमक छात्र, अन्य खाताधारी आ गवाहक बयान लेल स्पष्ट प्रक्रियाक आग्रह करैत छलीह।

एहि दूनू पात्रक बल सहमति मात्र नहि, पद्धतिक अन्तर अछि। तइयो अनेक प्रसंगमे लेखक हुनकर मुँहसँ समरूप सिद्धान्तात्मक वाक्य कहलाबैत छथि—‘स्रोत अलग’, ‘अनुमान प्रमाण नहि’, ‘पहिने सत्यापन’। वैचारिक रूपसँ उचित ई आग्रह पात्रक स्वतंत्र वाक्-लयकँ कखनो कम करैत अछि। दूनूक व्यक्तिगत इतिहास, निजी भय आ निर्णायक असफलता जतय कथामे अबैत अछि, ओतय उपन्यास बेसी जीवित होइत अछि।

३.४ रेवती कर्ण : पत्रकारिताक उत्तरदायित्व

रेवतीक संघर्ष कतेक जल्दी खबर छपायब, एतबे नहि; कोन बात छपेबाक अधिकार अछि, ई प्रश्न अछि। फोटो सार्वजनिक भेने स्रोतक नाम सार्वजनिक नहि होइत; कम्पनीक नाम एकहि पत्रमे भेटलाक कारण वास्तविक स्वामित्व सिद्ध नहि होइत; उत्तर नहि भेटलासँ आरोप स्वतः सत्य नहि भऽ जाइत—ई विचार हुनकर संवादसभमे सुस्पष्ट अछि। रेवतीक पत्रकारिता आर्थिक अपराधक कथामे एकटा समानान्तर साक्ष्य-परम्परा बनैत अछि।

‘प्रकाशनसँ पहिने’ आ ‘दू अखबारक दू सच’ देखबैत अछि जे छपल शब्दो छलक उपकरण बनि सकैत अछि। पत्रकारक नामसँ झूठ बनाओल, विज्ञापनक आड़मे भ्रमक प्रसार आ सम्पादकक दबाव व्यक्ति आ संस्था दुनूक परीक्षा करैत अछि। रेवतीक चरित्र सफल होइत अछि जखन ओकर सावधानीक दाम समय, सुरक्षा आ प्रकाशनक सम्भावना रूपमे चुकाबय पड़ैत अछि।

३.५ विवेक सूद : जीवित गवाह, अस्थिर अतीत

विवेकक कथित मृत्यु आ वास्तविक पहिचानक प्रश्न रहस्यात्मक तकनीक अछि; मुदा ‘जीबैत गवाहक अपराधबोध’ पात्रकँ चालाकीभरा मोड़सँ आगाँ लऽ जाइत अछि। गलत पहिचानल मृतदेहक अपन परिवार अछि, ई स्वीकार कथाक करुण सन्तुलन अछि। विवेकक बचल रहब कोनो सर्व-समाधान नहि; ओ अपन मौनक दाम आ पूर्व निर्णायक विफलता सँ मुक्ति नहि पबैत। ‘मूल लेखा आ प्रतिलिपि’मे हुनकर ज्ञान सेहो स्वतः प्रमाणित नहि मानल जाइत अछि।

३.६ मिरा आ आन स्त्री-पात्र : सुरक्षित गवाहीक अधिकार

मिराक पासपोर्ट, सहायता-गृह, सुजाताक खोज आ अन्ततः अपन घरक प्रसंग कृतिक मानवाधिकारपरक रेखाकँ प्राण दैत अछि। गवाही देब ओकरे जीवनक एकमात्र उद्देश्य नहि; ओ भविष्य, निजता आ अपन इच्छा लेल स्वतंत्र स्थान चाहैत अछि। स्त्रीकँ केवल निरीह पीड़ित

बनाकऽ रखने कथा बेसी सहज होइत; उपन्यास हुनका सीमित मुदा वास्तविक निर्णायक अधिकार देबैत अछि। सोफिया, मेघना, एलिस, लता, ईशा आ सारा अलग पेशागत स्थिति मे उपस्थित छथि; हुनकर प्रश्नसभसँ विश्वव्यापी आर्थिक जालक तसवीर बनैत अछि।

ई बहुस्त्री दृष्टि कृतिक बल अछि, मुदा बहुत पात्रक संक्षिप्त प्रवेश हुनकर आन्तरिक संसारकेँ पूरा विकसित नहि करय दैत। ‘दू स्त्रीक दूरी’ आ ‘साराक सत्य’ सन अध्याय एहि अभावकेँ किछु दूर धरि पूरा करैत अछि, कारण ओतय कार्यस्थलक कागजक बीच निजी सम्बन्धक भाषा उभरैत अछि।

३.७ विराज सहनी आ आरव मलकानी : निश्चित अपराधीक सहज आकृति सँ अस्वीकार

विराजक जुआ-विरोधी अभियान आ व्यावसायिक सम्पर्क संशय पैदा करैत अछि; मुदा उपन्यास ओकरा पहिनेसँ अपराधक एकमात्र स्वामी घोषित नहि करैत। ‘आरोपितक अधिकार’, ‘जाहि नामक आशा’ आ ‘सुधारल अभियोग’ हुनकर सम्बन्धमे प्रमाणक बदलैत स्थिति देखबैत अछि। आरवक भूमिकामे अनुमोदन, कार्यालयी दबाव, भाड़ा-सम्बन्धी सेवा आ जिम्मेदारीक प्रश्न अछि। कोनो हस्ताक्षर एके समय कई स्तरक अर्थ धारण कऽ सकैत अछि; ई जटिलता एहिसँ उपजैत अछि जे कथा दुनू व्यक्तिक भूमिका परीक्षणक अधीन रखैत अछि।

४. कथन-शिल्प, काल-विधान आ रूपक

४.१ अनेक देश, एक असमान समय

उपन्यासक कथाविन्यास स्थान-परिवर्तनक तेज गतिक ऊपर बनल अछि। दरभंगा, पटना, दिल्ली, सूरत, मुम्बई, कोलकाता, राजगीर सँ कथा हांगकांग, मकाउ, माल्टा, ब्रुसेल्स, बीजिंग आ अरीजोना धरि फैलैत अछि। एहि फैलावमे समयक दू रूप अछि: प्रत्यक्ष घटना घटबाक समय आ ओकर कागजी अभिलेख बनबाक समय। ‘चारि दिनक फरक’, ‘मूल समयक प्रतिमा’, ‘सतरह मिनट’क अन्तर आ ‘हस्ताक्षरक तेसर हाथ’ देखबैत अछि जे घटना आ प्रमाण एकहि घड़ीमे उपस्थित नहि होइत।

जेनेतक कथाकाल-विचारसँ देखल जाए तँ ई उपन्यास क्रमभङ्गक चमत्कारसँ बेसी पुनरावृत्ति आ अधूरा सूचनाक बादमे पूर्तिपर आश्रित अछि। पहिने देखल मुहरक दोसर अर्थ, पहिने सुनल व्यक्तिक दोसर परिचय, पहिने गनल राशिक दोसर गणना—ई सभ कथा-समयकेँ पीछे घुरि पुनः

पढ़बाक हेतु बनबैत अछि। ई पुनर्पाठ पाठकीय जागरूकता बढ़बैत अछि; मुदा प्रायः प्रत्येक अध्यायक अन्तमे अगिला 'प्रश्न' छोड़ि देबाक चलन कखनो रचनात्मक अपेक्षाक बदला यान्त्रिक सूत्र बनि जाइत अछि।

४.२ ज्ञानक सीमित दृष्टि

कथा तेसर पुरुषमे चलैत अछि, मुदा अधिकांश दृश्य कोनो विशिष्ट पात्रक सीमित जानकारीक संग जुड़ल अछि। नीलिमा बैंकक तालिका देखैत छलीह, रानी अपन दोकानक तिथि चिन्हैत छलीह, समीर होटलक गलियार जानैत छलाह, लिन कम्प्यूटरी गणनाक विचित्रता देखैत छलीह। कियो सभक भीतर आ बाहरक सत्य एक बेरमे नहि जनैत। एहि कारण रहस्य केवल अपराधीक नाम छिपेबाक तकनीक नहि, ज्ञानक असमान वितरणक फल अछि।

तथापि कथाकारक व्याख्यात्मक स्वर अनेक ठाम पात्रसभसँ ऊपर उठि सामान्य नैतिक सूत्र सुनबैत अछि। जखन दृश्य स्वयं बहुते किछु कहि रहल हो, तखन ओहि सूत्रक पुनरुक्ति ध्वन्यात्मक सम्भावना घटबैत अछि। उदाहरणतः रानीक बरनी, मिराक रसोइघरक गन्ध आ शिवशंकरक विवाह-खर्चक कापी अपनहि पर्याप्त अर्थ वहन करैत अछि; हर दृश्यकें तत्काल निष्कर्षसँ बन्द करब जरूरी नहि।

४.३ अङ्कक बहुवचन

'पाँच सय', 'पाँच हजार', 'पाँच प्रतिशत' आ 'दू हजार करोड़' संख्यासभ एकहि अर्थव्यवस्थाक भिन्न माप नहि मात्र, भिन्न नैतिक दूरियाँ अछि। पाँच सय घरक रसोइ आ छात्रक लतसँ जुड़ल; पाँच हजार हस्ताक्षर करबैत छल; पाँच प्रतिशतक अर्थ अनुबन्धक बदलैत सन्दर्भमे विवादित अछि; दू हजार करोड़ शीर्षकक आकर्षण, फेर गणना-पद्धतिक त्रुटिक सम्भावना खोलैत अछि। 'दू हजार करोड़क धुआँ'मे प्रचारित समग्र राशिक विरोधमे नव जमा, दाँव, निकासी आ फेर जमा कएल पाइक पृथक्करण विशिष्ट आलोचनात्मक उपलब्धि अछि।

एहि अंकशास्त्रक साहित्यिक पक्ष ई जे संख्या स्वयं मनुष्यक अनुभवक प्रतिनिधि नहि बनि सकैत। एकर मात्रा बढ़लासँ चोटक वास्तविकता अवश्य नहि बढ़ैत; रानीक पाँच रुपैया शिवशंकरक एक लाख तिरासी हजार जकाँ भिन्न जीवन-समयक अर्थ धारण करैत अछि। एतय अर्थशास्त्र नैतिक स्मृतिक अधीन अनल गेल अछि।

४.४ प्रकाश, काँच, केवाड़ी आ कागज

काँचक बरनी, होटलक शीशा, कार्यालयक खिड़की, उज्जर सभागार, बन्द केवाड़ी, सफेद लिफाफा, फाटल पृष्ठ आ मुहर—ई वस्तुसभ पुनः पुनः उभरैत अछि। काँचक सतह पारदर्शिता सुझबैत अछि, मुदा प्रतिबिम्ब असली चेहरा छिपाओ सेहो सकैत अछि। उज्जरपन पवित्रताक प्रमाण नहि; दान-पेटी आ सभागारक उज्जर रंगक नीचाँ खर्चक प्रश्न बचल रहैत अछि। फाटल पृष्ठ केवल हेरायल जानकारी नहि, साक्ष्यक अनिश्चित उत्तराधिकार अछि।

दरभंगाक रेल-पुल समूचा पाठक विशेष आवर्ती बिम्ब अछि। ओकर कम्पन पहिने अमरेशक घरक असुरक्षा चिन्हित करैत अछि; अन्तमे ओहि सामान्य कम्पनक बीच दुनूक जीवनक अनुभव बदलल भेटैत अछि। कथाक भूगोल विशाल भेनेहुँ वस्तु-प्रतिध्वनिक ई छोट वृत्त रचनाकें बाँधि रखैत अछि।

४.५ भाषा आ अनेक आवाज

रानीक बोलचाल, अरुणिमाक औपचारिक प्रश्न, आरवक बहीखाता, पत्रकारक प्रकाशन-भाषा, विदेशी वकील अथवा कर्मचारीक अनुबन्ध, आ अमरेशक छात्र-मनोविज्ञान—ई भिन्न सामाजिक भाषासभ बाखिनक बहुस्वर-सिद्धान्तक आलोकमे पढ़ल जा सकैत अछि। उपन्यासक एक विशेष गुण ई जे तकनीकी व्यवहार मैथिलीमे विचारयोग्य बनैत अछि; वित्तीय शब्दावली केवल विदेशी नामक भार नहि रहि जाइत।

मुदा भाषिक वैविध्यक संग पात्रगत स्वरक पृथक्करण सर्वत्र एक समान नहि। जखन लगभग प्रत्येक जाँचकर्ता एके सावधानीपूर्ण वाक्य-विन्यास दोहरबैत छथि, तखन पेशागत विश्वसनीयता पात्रक विशिष्ट बोलीपर भारी पड़ैत अछि। अधिक सफल दृश्यसभमे रानीक घरेलू उपमा, शिवशंकरक शिक्षकीय लज्जा, रेवतीक समय-दबाव आ मिराक निजी निर्णय अपन भाषासँ स्वतंत्र रंग भरैत अछि।

५. भारतीय काव्य-दृष्टि, नव्यन्याय आ आधुनिक पाठन

५.१ करुण आ भयानकक बीच आशाक सूक्ष्म स्वर

रानीक असहायता, शिवशंकरक अपमान, मिराक असुरक्षा आ अज्ञात मृतकक परिवार करुण अनुभव रचैत अछि। धमकी, बनावटी वर्दी, हेरायल व्यक्ति आ गुमनाम रकम भयक वातावरण बनबैत अछि। मुदा कृति भयकें केवल सनसनी बनाकऽ नहि छोड़ैत; पीड़ित जे दिन अपन कागज

सुरक्षित राखैत अछि अथवा गवाहीक सीमा निश्चित करैत अछि, ओहि दिन धैर्य आ आत्मसम्मानक सूक्ष्म भाव उभरैत अछि। भारतीय रसदृष्टिसँ ई सम्बन्ध स्थूल वीरता नहि, संकटमे मर्यादा बचेनिहार साहसक रूपमे पढ़ल जाएत।

५.२ ध्वनि : ‘पाँच प्रतिशत’क अनकहल अर्थ

आनन्दवर्धनक ध्वनि-विचारक आलोकमे कृतिक मुख्य सांकेतिक शक्ति शीर्षकमे अछि। ‘पाँच प्रतिशत’क प्राथमिक अर्थ धनक अनुपात अछि; कथामे ओ कथित दलाली, जिम्मेदारीक हिस्सा, मौनक दाम, आ जानल सत्यक बाहर बाँचल धुँधलापन सुझबैत अछि। अन्तिम वाक्य ‘अन्हार’कें नष्ट नहि, नामित करैत अछि। ताहि कारण उपन्यासक अन्त कथानकक विजय-घोषणासँ बेसी व्यञ्जना बनि उठैत अछि।

५.३ नव्यन्यायपरक प्रमाण-विवेक

कोनो पृष्ठपर नाम भेटब आ ओ नामक धारक अपराधी होएब—ई दूनू एकहि प्रतिज्ञा नहि। मुहर वास्तविक होइतो हस्ताक्षर नकली भऽ सकैत अछि; बैंकक खाता एक व्यक्तिक नामपर होइतो तकर संचालन अन्यक हाथमे रहि सकैत अछि। एहि भेदकें नव्यन्यायपरक दृष्टि सँ समझब उपयोगी अछि: पक्ष के अछि, साध्य की सिद्ध करबाक अछि, हेतु कथि आधारपर देल जा रहल अछि, आ ओकर सामान्य सम्बन्धमे किछु उपाधि अथवा सीमा तँ नहि? उपन्यास बारम्बार निर्णायक अवच्छेदक शर्त खोजबाक आग्रह करैत अछि।

कृतिक एकटा गम्भीर शक्ति ई अछि जे घटना, स्रोत, परिप्रेक्ष्य आ निष्कर्षक स्तर गडुमडु करब रोकैत अछि। मुदा साहित्य अपन आलोचकसँ एतबो प्रश्न चाहैत अछि जे प्रमाण-विवेक पात्रक निजी संकटमे कतय रूपान्तरित होइत अछि। जखन केवल सैद्धान्तिक सावधानी लिखल रहि जाइत अछि, तखन कथा अनुसन्धान-प्रक्रियाक उदाहरण जकाँ बनि सकैत अछि; जखन रानी अपन खाता वापस चाहैत छलीह, तखन वैह सावधानी जीवन्त नाटकीय संघर्ष बनि उठैत अछि।

५.४ समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टि

मिथिलाक घर-दोकानक आर्थिक इतिहास, भारतक बैंकिंग आ पत्रकारिताक सामाजिक व्यवस्था, तथा समुद्रपार कम्पनी-पञ्जीकरणक प्रक्रियाक कथा एक समयमे चलैत अछि। समानान्तर इतिहास पढ़बाक अर्थ एहि भिन्न स्थानसभकें एके केन्द्रक अधीन सपाट करब नहि; प्रत्येकक

अपन सामाजिक काल, श्रम, असमानता आ अभिलेख-संस्कृति देखब अछि। दरभंगाक स्त्रीक हस्ताक्षर, सूरतक श्रमिकक वजन-बही आ माल्टाक कम्पनीक मुहर एकहि वैश्विक जालमे भिन्न शक्ति-स्थिति राखैत अछि।

एहि आधारपर ‘पाँच प्रतिशत अन्हार’ उपन्यास मैथिली साहित्यक भौगोलिक परिधि फैलौने अछि; मुदा ओकर सार्थकता केवल विदेशक नगरसभक संख्या नहि। जे दिनक घरेलू सम्बन्धक संकटकेँ अन्तरदेशीय कागजक संग साक्षात् टकराव देल जाइत अछि, ताहि ठाम वैचारिक विस्तार साहित्य बनैत अछि।

६. अपराध-सन्दर्भक यथार्थबोध आ कल्पनाक मर्यादा

एकहि भुगतान-पथ पर जुआ, छल-कपट अथवा अन्य कारोबारी प्रविष्टि भेटब सामान्य वित्तीय विवेचनमे परस्पर सम्बन्ध जाँचबाक आधार होइत अछि; मुदा ई तथ्य मात्र एके अपराध-सङ्गठन प्रमाणित नहि करैत। उपन्यास एहि मूल विवेकक रक्षा करैत अछि। कम्पनीक कानूनी नाम आ वास्तविक लाभार्थीक अन्तर, भर्ती आ आवागमनक कागज, पीड़ितक खाता-वापसीक बाधा, तथा समाचारमे सकल लेनदेनकेँ शुद्ध आय समझि लेबाक खतरा—ई सभ समकालीन आर्थिक अपराध-विमर्शसँ तुलनीय विषय अछि।

एहि तुलनाक सीमा स्पष्ट रहबाक चाही। कृतिक ‘अम्बर-९’ अथवा आन संस्थाक भीतरक कार्यविधि साहित्यिक कल्पना अछि; ओकरा कोनो वास्तविक अन्तरराष्ट्रीय प्रतिवेदनक घटनासँ एक-एक कड़ी मिला कऽ ऐतिहासिक सत्य मानल नहि जा सकैत। कृति जखन कानूनी प्रक्रिया सम्बन्धी सावधानी लिखैत अछि, ओ कथाक नैतिक यथार्थवाद बनबैत अछि, पाठक लेल विधिक सलाह नहि। अपराधी, गवाह, आरोपी आ पीड़ितक पृथक् अधिकार देखेबाक संयम एकर मौलिक विशिष्टता अछि।

७. शिल्पगत आपत्ति, पुनरावृत्ति आ सम्पादकीय सम्भावना

कृतिक पहिल आलोचनात्मक समस्या अत्यधिक व्याख्यात्मक पुनरुक्ति अछि। अनेक प्रसंगमे पात्र लगभग समान निषेध-वाक्य प्रयोग करैत छथि: नाम मिलल, मुदा सम्बन्ध सिद्ध नहि; छवि भेटल, मुदा सत्यापन शेष; पत्र आयल, मुदा मूल स्रोत चाही। वैचारिक स्तरपर ई बड़ आवश्यक अछि, किन्तु लगातार स्पष्ट कहलासँ पाठक स्वयं अनुमान करबाक अवसर घटैत अछि। बेहतर

शिल्पमे किछु संवाद बिना निष्कर्ष राखि दृश्य, मुद्रा, वस्तु आ पात्रक अगिला काजपर अर्थक भार देल जा सकैत अछि।

दोसर सीमा अनेक अध्यायक वातावरण-प्रवेशक समानता अछि। क्रमाङ्कित १२० अध्यायक प्रारम्भिक सय अक्षरक सूचक-परीक्षणमे कम सँ कम ६७ अध्याय भोर, साँझ, राति, बरखा, घाम, उजास अथवा हवा सन समय-मौसमक संकेतसँ आरम्भ होइत अछि। ई आरम्भ सभ ठाम अशुद्ध नहि—किछु ठाम वातावरण कथानकक विरोधी अर्थ बनबैत अछि—मुदा घनघोर आवृत्तिसँ अध्यायक स्वतंत्र लय एक रूप होयबाक जोखिम अछि। कखनो सीधा संवाद, कखनो दस्तावेजक अन्तर, कखनो पात्रक निर्णयसँ अध्याय खोलनाइ गति-सन्तुलन बढ़ा सकैत अछि।

तेसर प्रश्न पात्र-विस्तार अछि। रानी, अमरेश, नीलिमा, अरुणिमा, रेवती, विवेक, मिरा, विराज, आरव, समीर, मेघना, सोफिया, एलिस, लता, लिन आ अन्य अनेक नाम अपने-अपने दृश्य लऽ अबैत छथि। वैश्विक कथा लेल ई विस्तार आवश्यक लगैत अछि; तथापि किछु गौण पात्र केवल एक सुरागक वाहक रहि जाइत छथि। कथाक भावनात्मक ताप तखन बढ़ैत अछि जखन हुनकर व्यक्तिगत परिस्थिति अपूर्ण जानकारीक संग जुड़ैत अछि।

चारिम समस्या मध्यवर्ती ‘उपसंहार’क नामकरण अछि। साठिम अध्यायक बाद समाप्ति-सूचक शीर्षक आ फेर एकसठिमसँ दीर्घ नव प्रसार पाठकीय करारमे अनिश्चितता आनैत अछि। पाँचम समस्या विज्ञापन, कागज आ धमकीक पुनरावर्ती अन्त्य-बिन्दु अछि; अध्यायान्तपर प्रश्न छोड़ब सर्वदा पर्याप्त कलात्मक परिवर्तन नहि। छठम, वास्तविक सम्पादनमे मूल अनुक्रमणिकाक मुद्रित पृष्ठ-सङ्केतकेँ नव विन्यासक अनुसार पुनः मिलान आवश्यक अछि; कथात्मक टिप्पणीसँ अलग ई प्रकाशन-सजगताक विषय अछि।

एहि आपत्तिसभक बावजूद उपन्यासक अन्तिम चयन उल्लेखनीय अछि। मृतकक गलत पहिचानकेँ केवल रहस्य-तोड़क उपकरण नहि बनाओल गेल; एकटा आन परिवारक हानि देखाओल गेल। आरोपितकेँ सुनबाक अधिकार देल गेल। राहत आ धन-वापसीकेँ प्रक्रियासँ जोड़ल गेल। एहि कारण कथा न्यायकेँ केवल प्रतिशोधक मनोवृत्तिसँ अलग करैत अछि।

८. अध्यायक्रममे सूक्ष्म पाठ-परीक्षण

एहि खण्डमे प्रत्येक क्रमाङ्कित अध्यायक स्वतंत्र आलोचनात्मक संकेत देल जा रहल अछि। एहि निरीक्षणसभक उद्देश्य कथासार फेर लिखब नहि; प्रत्येक अध्यायमे कथनक कोनो विशिष्ट विकल्प, नाटकीय तनाव अथवा अर्थ-परिवर्तनकेँ पहचानब अछि।

८.१ पहिल भाग : अध्याय १-२०

१. पाँच सयक राति

रेल-पुलक कम्पन, पाँच सयक लुभावन आ रानीक दोकानक सीमित कमाइ एकहि आरम्भिक दृश्यकेँ सामाजिक गहराइ दैत अछि। दिल्लीक नीलिमासँ जुड़िते पारिवारिक चिन्ता खाताक वास्तविक नियन्त्रणक प्रश्न बनैत अछि। छोट हानिसँ विराट जाल धरि पहुँचबाक कथा-बीज अत्यन्त प्रभावी अछि।

२. भारत लेल खुलल, सभ लेल बन्द

‘अम्बर-९’क भारतीय रुपैयावला प्रदर्शन आ दूसरे देशक सम्भावित निषेधकेँ कथाकार सिद्ध तथ्य नहि बनबैत। जुआ आ तथाकथित डिजिटल गिरफ्तारीक भुगतान-पथक समानता देखबैत अलग अपराध-पद्धतिक भेद सुरक्षित राखब उपन्यासक अनुसन्धानीय विवेकक पहिल कठोर परीक्षा अछि।

३. मृत लोकक हाजिरी

विवेक सूदक जलनक निशान आ मृत्यु-प्रमाणपत्रक अन्तर सघन रहस्य रचैत अछि। मुदा असल गहराइ एहि स्वीकारमे अछि जे गलत पहिचानल शवक सेहो अपन नाम आ परिवार होएत। अमरेशक धमकी आ शर्मक प्रसंग सनसनीकेँ मानवीय परिणाममे बदलैत अछि।

४. खाताक दोसर मालिक

रानीक बैंक-जात्रा सामाजिक वर्ग-भेदक सूक्ष्म दृश्य अछि: साफ फर्शपर अपन पयरक माटिक डर आर्थिक संस्थाक आन्तरिक दूरी उधारैत अछि। सुजातासँ बातचीत कानूनी नाम आ वास्तविक

अधिकारक अन्तर स्पष्ट करैत अछि। ई अध्याय एकटा गम्भीर नागरिक प्रश्नपर समाप्त होइत अछि।

५. झूठक अदालत

शिवशंकरक बेटी लेल बचतक कापी बनावटी न्यायालयक आतंकक प्रतिवाद अछि। रेवतीक विराज सहनी सम्बन्धी खोज कथामे सार्वजनिक सदाचारक मुखौटाक सम्भावना उठबैत अछि, मुदा आरोप स्थगित राखैत अछि। घरेलू लज्जा आ सार्वजनिक दृश्य दुनूक समानान्तरता शक्तिशाली अछि।

६. धनक पहिल नक्शा

चारि रङ्गक पेंसिल रहितो नक्शापर तुरन्त रङ्ग नहि भरब जाँचक सौन्दर्यशास्त्र अछि। पात्र पहले नाम नहि, लोकक वास्तविक स्थिति खोजय चाहैत अछि। ई दृश्य तथ्य आ रेखाचित्रक बीच सावधान दूरी बनबैत अछि, यद्यपि व्याख्या किछु बेसी प्रत्यक्ष होइत अछि।

७. अपरिचित हस्ताक्षर

सूरतक अदिति राणे जेना गोपनीय बिलक प्रतिलिपि तत्काल साझा नहि करैत छलीह, ताहिमे अधिकारक सीमा आ प्रमाणक संरक्षण दुनू उपस्थित अछि। अपरिचित हस्ताक्षर कागजक जीवन आ वास्तविक व्यक्तिक जीवनक भयावह दूरी देखबैत अछि।

८. अमरेशक हिसाब

अमरेशक फाड़ल गणितक पृष्ठ जुआक मनोविज्ञान लेल उत्कृष्ट दृश्य-बिम्ब अछि। जे छात्र अङ्क जोड़बाक शिक्षा पबैत अछि, ओ अपन हानिक हिसाब टारैत अछि। दबावक बीच विश्वासपात्र संवादक सम्भावना पात्रकें केवल गलतीक प्रतीक नहि रहय दैत।

९. आधारक दुरुपयोग

आधार-संबन्धी कागजक दुरुपयोगक आशङ्का बैंकक पाँति आ सामान्य नागरिकक अनुभवसँ जुड़ैत अछि। कर्मचारी अपन नामसँ बयान देबाक दिशा मे बढ़ैत अछि। एहि ठाम संस्था केवल भ्रष्ट संरचना नहि, विवेकशील व्यक्तिसभक विरोधाभासी कार्यक्षेत्र अछि।

१०. पाँच प्रतिशतक पहिल पत्र

पाँच प्रतिशतक पत्र सार्वजनिक अभियानक खर्चसँ सम्बद्ध प्रश्न पैदा करैत अछि। रेवतीक मनमे रानीक एकटा छोट आग्रह बचल रहब आर्थिक सूत्रकेँ मनुष्यक स्वरतक घुरबैत अछि। शीर्षकक राशि अपन पहिल स्पष्ट नैतिक बहुअर्थिता प्राप्त करैत अछि।

११. हांगकांगक खिड़की

हांगकांगक मेघना आ तारा लामाक प्रसंग स्थानीय बैंकक सीमा भाँगैत अछि। गलत दिनांकक सन्देश आ अनुत्तरित फोन 'हेरायल व्यक्ति'क कथा शुरू करैत अछि। शहरक उज्जर इमारत आ व्यक्तिक अदृश्यता एक-दोसराकेँ अर्थ दैत अछि।

१२. अन्तिम चाहक गिलास

आधा चाहक गिलास वस्तुगत उपस्थिति आ मानवीय अनुपस्थितिक असरदार बिम्ब अछि। मेघना ओकरा तुरन्त अपराधक निर्णायक सबूत नहि मानैत छलीह। हुनकर बेचैनी वस्तुक विवरणसँ उपजैत अछि, बिना अतिनाटकीय घोषणा कएने।

१३. कागजक दोसर भाषा

कागजक दोसर भाषा विदेशी अनुबन्ध आ स्थानीय विज्ञापनक शब्दार्थक अन्तर खोलैत अछि। संदर्भ-संख्या मिललासँ स्रोत समान भऽ जाएत, एहि भूलसँ कथा बचैत अछि। भाषाक अनुवाद एतय तकनीकी सेवा मात्र नहि, सत्य-निर्णयक गम्भीर शर्त बनैत अछि।

१४. समर्थनक मूल्य

‘समर्थनक मूल्य’ सार्वजनिक मंचपर व्यक्त नामसभ आ सम्भावित लाभक सम्बन्ध जाँचैत अछि। पुरान सूचीमे नवा तिथिक उपस्थिति सघन कथात्मक संकेत अछि। तथापि मंचक समाजसँ बेसी कागजक विवरणपर केन्द्रित दृष्टि किछु भावनात्मक विस्तार सीमित करैत अछि।

१५. चुप्पीक वेतन

चुप्पीक वेतन आर्थिक लाभ आ संस्थागत मौनक सम्बन्ध सुझबैत अछि। काटल पृष्ठक प्रश्न प्रारम्भिक विवेक-पोथीक फाटल अंशसँ प्रतिध्वनित होइत अछि। शीर्षकक नैतिक भास अछि: चुप्पी स्वतन्त्र अनुपस्थिति नहि, सम्भवतः मूल्य पाबि सकनिहार क्रिया बनैत अछि।

१६. सफेद लिफाफा

मुम्बईक आरवक सफेद लिफाफा वैध सेवाशुल्क आ अभिलेख नष्ट करबाक सन्दिग्ध आग्रहक भेद उभारैत अछि। अलग शहरक ध्रुव नामक व्यक्ति संग तुरन्त सम्बन्ध नबनाओल गेल अछि। ई स्थगन कहानीकेँ अधिक विश्वसनीय, यद्यपि धीम गतिवला, बनबैत अछि।

१७. वर्दीक नकली चेहरा

शिवशंकरक अनुभवमे नकली वर्दीक अधिकार-संकेत कतेक गहिर मनोवैज्ञानिक हिंसा करैत अछि, से उभरैत अछि। मोबाइल लग लिखल ‘पहिने अपन लोकसँ बात करू’ सन भावक कारण भयपर विजय चमत्कारी पुलिस-कार्रवाई नहि, पारिवारिक संवाद बनैत अछि।

१८. विज्ञापनक पाछाँ

विज्ञापन-नियन्त्रण आ प्रकाशनक दबाव कबीर आ प्रणयक निजी सम्बन्धसँ टकरबैत अछि। पेशागत अनुसन्धानक कारण कोनो व्यक्तिक निजी जीवन सार्वजनिक करबाक बाध्यता नहि, एहि प्रश्नक स्पष्ट नैतिक महत्त्व अछि। एतय उपन्यास अपराध-गाथासँ निजताक गम्भीर विमर्श धरि पहुँचैत अछि।

१९. विलासी विमानयात्राक चुप्पी

विलासी विमानयात्राक दृश्य खर्चक चमक आ साक्षीक असुरक्षाक विरोध तैयार करैत अछि। समीरक 'जे देखलहुँ, ओ कहब'क आग्रह साक्षी-विश्वसनीयताक मानवीय आधार अछि। परदेशक वैभव सजावटक बदला श्रमक असमान स्थान पहचानयमे सहायक होइत अछि।

२०. शीशाक भीतर चेहरा

होटलक ऊपरी विलास आ नीचाँक सेवा-द्वार समाजक दू स्तर दृष्टिगत करबैत अछि। 'अपन कागज घुराउ'क स्त्री-स्वर मिराक आगामी कथा लेल निर्णायक संकेत बनैत अछि। भागान्त मे प्रश्न रोमाञ्चसँ बेसी व्यक्तिक आवागमनक अधिकारक रूपमे उभरैत अछि।

८.२ दोसर भाग : अध्याय २१-४०

२१. मकाउक नाचघर

मकाउक नाचघरमे समीरक बयानक सीमा जाँचब कथा-तत्त्व अछि। नीलिमा प्रत्यक्ष देखल घटना आ सूचीमे जोड़ल चिह्नक स्रोत अलग राखैत छलीह। पर्यटनक चमक आ सेवाकक्षक श्रम-जीवनक बीच प्रतिकूल समानान्तरता गहराइ पबैत अछि।

२२. पासपोर्टक खाली खोल

मिराक सुरक्षित गृह आ पासपोर्टक खाली खोल पात्रक अस्मिता पर गम्भीर प्रश्न अछि। सुजाताक खोजसँ पूर्व निज सुरक्षाक प्राथमिकता निर्धारित करब हुनकर सक्रिय व्यक्तित्वक चिह्न अछि। अधिकारक भाषा एतय भावुक उद्धारक कहानीसँ अलग अपना स्थान बनबैत अछि।

२३. दू पुरुषक सम्बन्ध

दू पुरुषक सम्बन्ध सम्बन्धी चित्रकें जनमतक अटकलबाजी बनायबाक खतराक सामना करैत अछि। निजी सम्बन्ध आ कारोबारी कड़ीक बीच अन्तर बचाएब पात्रसभक गरिमाक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि। ब्रुसेल्सक प्रश्न भारतक घरेलू सुरक्षा धरि पहुँचैत अछि।

२४. दू स्त्रीक स्वीकृति

दू स्त्रीक स्वीकृति निजी सम्बन्ध, अलग घड़ी आ सहमतिक कथात्मक अनिश्चितता जोड़ैत अछि। अन्तक 'एखन सिद्ध नहि' आत्मविश्वासक विरोध नहि; जल्दबाजीसँ रक्षा अछि। किछु संवादमे सावधानीक भाषा अपेक्षाकृत सूक्तिपरक होइत अछि।

२५. माल्टाक मुहर

माल्टाक मुहर कागजी पञ्जीकरण आ सेवा चलबैत वास्तविक व्यक्तिक भेद चिन्हित करैत अछि। एक पतापर अनेक नाम भेटब अपने अपराधक सिद्धि नहि। सोफियाक खोज संस्थागत रूपक जटिलता उद्घाटित करैत अछि।

२६. तीन परतवला कम्पनी

'तीन परतवला कम्पनी'क तीन तह सूचना-गोपनक युक्ति हो सेहो सकैत अछि, वैध कारोबारी ढाँचा सेहो; उपन्यास निर्णय टारैत अछि। सूरतक गोदाम-पञ्जी आ रात्रिक पालीमे काम करनिहारक स्मृति जोड़िते अमूर्त कम्पनी श्रमिकक जीवनसँ भिड़ैत अछि।

२७. झूठक निर्यातक छाया

झूठक निर्यातक पहिल छाया वास्तविक माल, बिल आ अनुपस्थित पृष्ठक बीच झूलैत अछि। रमाकान्तक पारिवारिक दायित्वक स्मरण मात्र दया जुटाबय लेल नहि; आरोपक प्रभाव रोजगारीपर सेहो पड़ैत अछि, ई प्रश्न उत्पन्न करैत अछि।

२८. नील टिकट

नील टिकट वस्तुपर लगल चिह्नक बदलैत अर्थक कथा अछि। आरव पाछाँ घुरि अपन अनुमोदनक विश्वसनीयता जाँचैत अछि। पुरान बहीक अधूरा नील निशान बचल अपराध-बोध आ अविश्वसनीय स्मृतिक बीच एकटा प्रभावी सेतु अछि।

२९. बाजारक सीमारेखा

बाजारक सीमारेखा डिजिटल प्रचारक वास्तविक ग्राहक-क्षेत्र आ असमान लाभ-वितरण देखबैत अछि। फरहाक घरक दवाक लेल रुपैयाक छोट घटना विशाल कारोबारी विवेचनकेँ क्षणभरि मानवजीवनमे घुर्बैत अछि। आधा बयान पूरा सुनबाक आग्रह उचित अछि।

३०. बीजिंगक बन्द सूची

बीजिंगक लिन यू गणनाक त्रुटि अथवा दोहरावक सम्भावना देखैत छलीह; मुदा अनुज्ञापत्र आ सम्पूर्ण अभिलेख हुनका लग नहि। तकनीकी ज्ञानक ई मर्यादा कथाविन्यासमे महत्त्वपूर्ण, किएक तँ पाठक सेहो पूरा संख्या तत्काल नहि मानि सकैत।

३१. अड्कक भीतरे घर

कम्प्यूटरी अड्कक बीच रानी-अमरेशक घरेलू हिसाबक समावेश कथा भीतर पैमाना बदलैत अछि। अनुमति-संख्या आ बादमे कएल संशोधनक समयक अन्तर निर्णयक नवा प्रश्न उठबैत अछि। शीर्षक बोधगम्य रूपसँ दोसर जीवनक लेखा देखबैत अछि।

३२. संकेतक व्यापार

हांगकांगमे ताराक अनुपस्थितिक बीच संकेत-आधारित व्यापारक कागज मेघनाक खोजकेँ मार्ग दैत अछि। ‘नाम पूरा नहि; प्रश्न पूरा’ सन अन्त्य संरचनात्मक लय रचैत अछि। बारम्बार एही तरहँ प्रश्न-विराम आबि रहल होएबाक जोखिम सेहो देखाइत अछि।

३३. मरुभूमिक अनुबन्ध

मरुभूमिक अनुबन्धमे लता देसाइक घरेलू गाछ आ अनुबन्धक जोखिम एक-दोसराकेँ प्रतिबिम्बित करैत अछि। समयपर संरक्षणक परिणाम तुरन्त नहि देखाइत—ई बात पेशागत सुरक्षा आ जीवनक देखभाल दुनूक व्यञ्जना बनैत अछि।

३४. अरीजोनाक राति

अरीजोनाक राति तकनीकी अनुबन्धक स्वीकृति आ वास्तविक अधिकारीक पहिचानकेँ केन्द्रमे अनैत अछि। लताक सार्वजनिक उपस्थितिक पाछाँ अनुपस्थित पृष्ठक निजी चिन्ता पात्रक भीतरी द्वन्द्व बनबैत अछि।

३५. संगीतक पाछाँक डर

मकाउक सेवाकर्मी रेशमाक पञ्जीक सूचना संगीतक चमकक पाछाँक श्रम-संसार खोलैत अछि। कर्मचारीक स्मृति, लिखल तिथि आ बादमे जोड़ल कम्पनी-नामक अन्तर चिह्नित कएल गेल अछि। ई अध्याय गौण श्रमिकक आवाजकेँ अर्थपूर्ण स्थान दैत अछि।

३६. उज्जर दान-पेटी

ब्रुसेल्सक उज्जर दान-पेटी परोपकार आ खर्चक पारदर्शिताक अन्तर पर आलोचना अछि। एलिस अनुपस्थित सेवा-पुष्टिकेँ तुरन्त हिंसाक आर्थिक प्रमाण नहि कहैत छलीह। सहानुभूति आ उत्तरदायित्वक बीच आवश्यक सामंजस्य उभरैत अछि।

३७. जनचेतना मंच

पटनाक जनचेतना मंच शिक्षणक वास्तविक प्रयत्न आ राजनीतिक विज्ञापनक सम्भावित दुरुपयोगक बीच तनाव बनबैत अछि। प्राची झाक विद्यार्थी-संसारकेँ कथामे अधिक समय भेटित तँ मंचक सामाजिक द्वैध आ तीक्ष्ण होइत।

३८. ब्रुसेल्सक उज्जर सभागार

ब्रुसेल्सक सभागारक उज्जर मेजपोश आ नीचाँ अनुत्तरित खर्चक पाँति दृशात्मक विडम्बना अछि। विराजसँ सम्बन्धित सार्वजनिक कार्यक्रममे रेवतीक हस्तक्षेप कथाकेँ अन्तरदेशीय पत्रकारिताक संघर्ष बनबैत अछि; शोरक बादो कागजक उत्तर नहि भेटब सार्थक अछि।

३९. उजागर भेल पहिल झूठ

‘उजागर भेल पहिल झूठ’मे सार्वजनिक दृश्य पर सत्यापनक प्रभाव देखाइत अछि। विद्यार्थीक चेहरा सुरक्षित राखबाक निर्णय सूचना-पारदर्शिता आ निजताक सीमाक जटिलता खोलैत अछि। झूठक पहिल परत खुललाक बादो साक्षी भयभीत अछि।

४०. अग्निसँ पहिने

‘अग्निसँ पहिने’ सामूहिक भीड़ आ अपेक्षित सार्वजनिक घटनाक प्राक्कथन अछि। दरभंगाक दोकानक भोर घुमाकऽ आनब स्थानिक सूत्रकेँ बचबैत अछि। भागान्तक तनाव माइकक आवाज आ मौन स्रोत दुनूसँ उपजैत अछि।

८.३ तेसर भाग : अध्याय ४१–६० आ मध्यवर्ती उपसंहार

४१. भीड़क अपन चेहरा

भीड़ हजारो चेहराक समुदाय अछि, मुदा बदलल भिडियो ओकरा एकहि भयमे परिणत करबाक प्रयत्न करैत अछि। बीमार बच्चाक चिकित्सकीय तम्बू दिस जाएब सार्वजनिक दृश्यकेँ जीवित दायित्वक संग जोड़ैत अछि। भीड़ स्वयं कोनो अविवेकी पात्र नहि।

४२. पटनाक अग्निपरीक्षा

पटनाक सार्वजनिक संकटमे अरुणिमा विभिन्न सूचना-स्रोत अलग करैत छलीह। आयोजनक भुगतान-सूची आ प्रत्यक्ष घटनाक समयक अन्तर पृष्ठक तर्क बनैत अछि। राजगीरक नाम अगिला चरण खोलैत अछि, मुदा घटना-अध्याय किछु अधिक जाँच-प्रपत्रपर आश्रित अछि।

४३. मज्जक चेहरा

मज्जक चेहरा मीडिया आ सार्वजनिक छवि रचनाक बहुस्तरीयता देखबैत अछि। प्रणयक कलाकृति आ कबीरक सूचनापर संयम निजी सम्बन्धक अधिकारकेँ अपराध-जाँचसँ पृथक् राखैत अछि।

४४. प्रकाशनसँ पहिने

प्रकाशनसँ पहिने रेवतीक नामसँ झूठ छपेबाक प्रयास धमकीक नव प्रकार अछि। एतय पत्रकारक संकट सत्य खोजबाक संग अपन लेखकत्व बचेनाइ सेहो बनैत अछि। कथा प्रभावी रूपसँ कागजक नकलकें चरित्रपर आक्रमण बनबैत अछि।

४५. राजगीरक चुप्पी

राजगीरक बन्द फाटक कानूनसम्मत प्रवेशक सीमा याद करबैत अछि। विवेकक सम्भावित लिखावट सन सङ्केतपर विश्वास नहि कएल गेल अछि। दृश्य अपन भूगोल आ प्रतीक्षाक कारण सफल अछि, यद्यपि रहस्यक गति जानि-बुझि धीम राखल गेल।

४६. राजगीरक पुरान प्रशिक्षण केन्द्र

पुरान प्रशिक्षण केन्द्रमे विवेक सूदक जीवित उपस्थिति कथाक पैघ मोड़ अछि। किन्तु गलत मृत्युप्रमाणक पाछाँ जे वास्तविक मृतक छलाह, हुनकर पहिचान शेष राखि लेखक आसान चमत्कारी समाधानसँ बचैत छथि।

४७. जीबैत गवाहक अपराधबोध

जीबैत गवाहक अपराधबोध उपन्यासमे स्मृति आ दायित्वक एकटा सघन अध्याय अछि। विवेकक कथनमे अपन चुप्पी आ शैलेश सम्बन्धी अनिश्चितता जुड़ैत अछि। गवाही, पश्चात्ताप आ आत्मरक्षा तीनू एक नहि—ई भेद पात्रकें नैतिक जटिलता दैत अछि।

४८. मूल लेखा आ प्रतिलिपि

मूल पोथी, फोटोप्रति आ बैंकक प्रमाणित लेखा—तीनू वस्तुक बीच ‘मनुष्यक बयान’क खाली स्थान प्रभावी रूपक अछि। तिथिक एक दिनक अन्तरक अर्थ निश्चित नहि। कागजी विश्वसनीयता कथामे व्यक्तिक आवाजक प्रतिरूप नहि बनि पबैत।

४९. बचि निकलल आवाज

मिराक सुरक्षित आश्रयक भोर आ अदौरीक गन्ध ओकरा पीड़ितक संख्या सँ स्वतंत्र मनुष्य बनबैत अछि। ओ अपन घरक स्मृति आ भयक बीच जीबाक अधिकार चाहैत अछि। ई अध्याय तकनीकी वर्णनसँ राहत पबैत संवेदनशील विराम अछि।

५०. बेचायल नाम, बचल साक्ष्य

बेचायल नाम आ बचल साक्ष्यक शीर्षक स्वयं दोहरा विपर्यय अछि। रानीक ‘खाता रोकल अछि, रोटी नहि’ व्यापार आ बैंक-जाँचक विरोधकें प्राण दैत अछि। हुनकर छोट वाक्य अनेक सरकारी प्रस्तावसँ बेसी साहित्यिक असर छोड़ैत अछि।

५१. पाँच लोकक बैंक

पाँच लोकक बैंक आर्थिक नेटवर्कक गणनाक संग घरक दिनचर्याक निगरानीक खतरा खोलैत अछि। अमरेश द्वारा आन ग्राहकक विवरणक छवि नहि बनायब गोपनीयताक सिखल व्यवहार अछि। भय धनसँ आगाँ बढ़ि निजी दिनचर्या धरि पहुँचैत अछि।

५२. अज्ञात शवक नाम

अज्ञात शवक नाममे भुवनेश्वरी देवीक अपन बेटाक नाम माँगब कथाक न्यायिक-मानवीय शिखरसभमे अछि। विवेकक जीवित रहबक खुशीसँ आन परिवारक शोक मेटैत नहि। ई संतुलन रहस्य-लेखनकें करुण नैतिकतामे रूपान्तरित करैत अछि।

५३. संख्याक पाश

संख्याक पाशमे नीलिमा अङ्कक श्रेणीकरण नव दृष्टिसँ करैत छलीह; रानी अमरेशकें बिसरल सात सयक विषय पुछैत छलीह। उपचारक लेल राखल राशिक प्रचारमे प्रयोगक प्रश्न सामुदायिक भरोसाक संकट खोलैत अछि।

५४. दू हजार करोड़क धुआँ

‘दू हजार करोड़क धुआँ’ उपन्यासक वित्तीय विवेकक निर्णायक अध्याय अछि। समाचारक शीर्षक आ वास्तविक नव जमा, सकल दाँव, निकासी तथा दोहरायल रकममे अन्तरकेँ कृति स्पष्ट करैत अछि। अप्रमाणित आँकड़ा अलग लिखबाक कारण नाटकीय सनसनीक प्रतिरोध होइत अछि।

५५. समीकरणक साक्षी

आरवक बयान आ तीन प्रकारक पाँच प्रतिशत भुगतानक मिलान एके दरक अलग वैध-अवैध अर्थ उद्घाटित करैत अछि। ‘समीकरणक साक्षी’ शीर्षक ठीक तखने सिद्ध होइत अछि जखन संख्या अपन स्रोत आ निर्णायक संरचना माँगैत अछि।

५६. छापाक पहिल राति

छापाक पहिल राति प्रक्रियाक अनुमति, वस्तुक जप्ती आ मानवीय थकानकेँ एकसंग रखैत अछि। गोदामक धुँआ आ दोसर स्थानक अदृश्य आगिक तुलनाक कारण नाटकीय व्यापकताक अनुभव भेटैत अछि।

५७. पाँच प्रतिशतक मालिक

एकहि समय अनेक ठाम कार्रवाई भेलाक दृश्य अस्थायी कथात्मक शिखर अछि। मुदा जप्त कागज भेटलासँ पाँच प्रतिशतक अंतिम मालिक सिद्ध नहि। नव प्रचारक जन्म ई बुझबैत अछि जे अपराधक कारोबार प्रचार-रूप बदलि सकैत अछि।

५८. फेर नाम बदलल

फेर नाम बदललाक बाद अमरेशक फोन-संयम रानीक पावती पढ़ि देबाक सामान्य क्षमतासँ जुड़ैत अछि। कबीरक निजी जीवनक सुरक्षा आ पत्रकारिक अनुशासनक समरूपता चरित्र-विकासक अर्थपूर्ण प्रतिफल अछि।

५९. छओ मासक दूरी

छापामारीक बाद बैंकक पाँति घटबाक बदला बढब न्याय-प्रक्रियाक सामाजिक लागत देखबैत अछि। खाता रोकब, जिविका चलाबब आ साक्षी बचायबक समस्या एकसाथ रहैत अछि। एहि ठाम विजयक सरल घोषणा असम्भव बनि जाइत अछि।

६०. अन्हारक हिसाब

अदालतक बाहर कैमरा आ भीतर साक्ष्य-समीक्षा सार्वजनिक सफलताक दाबीक सीमा देखबैत अछि। रेवतीक समाचारसँ पहिने रानीक दोकानक कुशल पूछबाक निर्णय कृतिक मानवीय केन्द्र पुनः स्थापित करैत अछि।

‘उपसंहार : अगिला नाम’ साठिम अध्यायक पाछाँ नव साइटक विज्ञापन आ पहिल शिकायत-जागरूकताक दृश्य रखैत अछि। कथा एतय समाप्त नहि होइत, एक नव चक्र खोलैत अछि। ताहि कारण एकरा पाठकीय विसर्जनसँ बेसी संरचनात्मक अन्तराल मानब उचित अछि; प्रकाशित विन्यासमे एहि स्थानक स्पष्ट नामकरण उपयोगी होएत।

८.४ चारिम भाग : अध्याय ६१-८०

६१. अगिला नामक पहिल दिन

‘अगिला नामक पहिल दिन’ पहिने बनल जालक नव रूपक परीक्षण शुरू करैत अछि। पुरान कागज आ नव सन्देश एके चिह्न धारण करितो ओकर अर्थ तुरन्त समान नहि होइत। अदालतक बाहर रेवतीक पुनरागमन कथाक निरन्तरता बचबैत अछि।

६२. एकहि मुहरक दू अर्थ

सूरतक एके मुहरक दू अर्थ वस्तु-विक्रयक वास्तविकता आ कागजी अनुबन्धक सम्भावित विकृतिकेँ आमने-सामने अनैत अछि। गोदामक ताला पर नव उँगरीक चिह्न दृश्यकेँ जासूसी रोमाञ्च दैत अछि; स्रोतक सीमाक स्वीकार ओकर विश्वसनीयता बढबैत अछि।

६३. गोदामक बन्द केवाड़ी

गोदामक बन्द केवाड़ी आ फाटल पन्नाक टुकड़ा प्रत्यक्ष रूपसँ दस्तावेज-रहस्य रचैत अछि। मूल स्रोत मँगबाक पावती बनब देरी सन लागि सकैत अछि, मुदा यही देरी बादक गवाहीक आधार अछि।

६४. चारि दिनक फरक

‘चारि दिनक फरक’ मुम्बईक आरवक पूर्वज्ञानपर पुनः प्रश्न उठबैत अछि। जहाजक वास्तविक बिल आ लिखल वस्तु-विवरणक अन्तरमे अनुवाद निर्णायक होइत अछि। छोट समयान्तरकें अत्यधिक अर्थ देबाक जोखिम कथामे चिन्हित अछि।

६५. परिवारक मूल्य

रानी-अमरेशक संवादक दाम परस्पर विश्वासक कठिन पुनर्निर्माण अछि। ‘एखनो दाँवपर एको रुपैया नहि’ सन परिणाम किसी महान् घोषणासँ बेसी विश्वसनीय अछि। परिवारक मूल्य धनक जोड़-घटाव सँ बचल सम्बन्धमे अछि।

६६. स्वयंसेवाक मूल काम

प्राची झाक पुनर्वास-कक्ष वास्तविक समाजसेवा आ मिलैत-जुलैत संस्थागत नामक धोखाक सम्भावना एकसंग रखैत अछि। कृति लाभक स्रोत जाँचैत अछि, मुदा वास्तविक स्वयंसेवाक मानवीय कामकें स्वतः बदनाम नहि करैत।

६७. एकहि नामक दू व्यक्ति

एके नामक दू व्यक्ति सम्बन्धी भ्रम कानूनी अभिलेखक पहिचानक समस्या बनैत अछि। वास्तविक संस्थाक पहिल शिकायतक स्वीकृति कथित नकलक प्रश्न खोलैत अछि। यूट्यूबरक गोपनीय भुगतानक उल्लेख सार्वजनिक छवि-विन्यासक नव माध्यम परिचित करैत अछि।

६८. स्वरक विज्ञापन

स्वरक विज्ञापनमे ध्वनि-संपादन आ दृश्यक विश्वसनीयता प्रश्नवाचक बनैत अछि। मुम्बईक तात्कालिक प्रचारक पाछाँ असली आवाज ककर, ई खोज तकनीकीक संग नैतिक अछि। प्रचारक चमक आ निजी सम्बन्धक थकानक विरोध सफल अछि।

६९. दू स्त्रीक दूरी

ईशा आ साराक बीच निजी विश्वासक दूरी दस्तावेजी अनुसन्धानमे भावात्मक पीड़ा जोड़ैत अछि। कियो हुनकर सम्बन्ध तोड़ि जाँचक दिशा बदलय चाहैत अछि, ई सम्भावना कथात्मक रूपसँ उपजैत अछि; मुदा निश्चित दोषी बनाकऽ नहि प्रस्तुत होइत।

७०. विदेशी कम्पनीक रङ्ग

विदेशी कम्पनीक रंग आ बहुस्तरीय नामक बीच मेघना व्यक्तिक वास्तविक जीवनकेँ फेर जोड़बाक कठिनाई देखैत छलीह। एतय एकटा उल्लेखनीय रूपक अछि: व्यापारिक स्वामित्वसँ कठिन कखनो मनुष्यक गुम पहचान वापस आनब होइत अछि।

७१. दान आ सौदा

दान आ सौदा सार्वजनिक राहतक पावती, पुरान भुगतान-सूची आ अनुपस्थित प्राप्तकर्ताक विवरणक आधारपर आगे बढ़ैत अछि। मानवीय सहायताक वस्तुकेँ स्वतः दोषपूर्ण नहि मानब उपन्यासक सतर्क दृष्टि अछि।

७२. धूपमे भेटल शव

धूपमे भेटल शव सामाजिक अफवाह आ मृतकक परिवारक वास्तविक जानकारीक बीच दूरी खोलैत अछि। अनुपमा झाक आवाज मृत्युकेँ सनसनीक स्थल नहि बनय दैत। कथा पाठकसँ मृत्यु-कारण अनुमान करबाक अधीरता रोकबाक आग्रह करैत अछि।

७३. मृतकक अपूर्ण पत्र

मृतकक अपूर्ण पत्रमे अनुपमाक प्रश्न—जीवित रहिते कियो सुनलक किएक नहि—कार्यालयी चुप्पीक मूल आलोचना अछि। परितोषक अन्तिम दिनक बदला पहिनुक चारि दिन देखबाक आवश्यकता रहस्यक काल-विन्यासकें अर्थ दैत अछि।

७४. मालक तौल

मालक तौलसँ मनुष्यक आवागमन धरि पहुँचनिहार जाँच कृतिक सामाजिक क्षितिज विस्तार करैत अछि। मजदूरक प्रत्यक्ष अनुभव आ गोदामक वजन-बहीक अन्तर श्रमकें महज निर्यातक अङ्क नहि रहय दैत।

७५. देह आ दस्तावेज

देह आ दस्तावेजमे फरहीनक बयान व्यावसायिक नाम आ वास्तविक भेटल लोकक सम्बन्ध जाँचबाक आग्रह करैत अछि। अनुपस्थित नामपर तुरन्त जालसाजीक निष्कर्ष नहि कएने कथा व्यक्तिक जोखिमक सम्मान करैत अछि।

७६. नोकरीक झूठ सपना

नोकरीक झूठ सपनामे कोलकाताक सारा आ ओकर छोट भायक सावधान प्रश्न छलक अवसरकें रोकैत अछि। श्रम-बाजारक अनिश्चितता कथामे भर्ती-जालक पृष्ठभूमि अछि। स्वयं साक्षी बनबाक निर्णय ओकर सक्रियता बढ़बैत अछि।

७७. सीमारेखाक राति

सीमारेखाक राति नबीन पालक डर आ अनिश्चित हमलाक अभिलेख अलग राखैत अछि। बयानक सत्यापन शेष रहितो गवाहक सुरक्षा टारल नहि जा सकैत—ई अध्याय अपराध-प्रमाण आ संरक्षणक अलग मानदण्ड सुझबैत अछि।

७८. कागजक माफिया

कागजक माफिया कानूनसम्मत सीमित आदेश आ निर्दोष व्यक्तिक जीवनपर प्रक्रियाक प्रभावक प्रश्न उठबैत अछि। अनेक कागजक अस्तित्व अपने एक सङ्गठनक सिद्धि नहि। विवेकक नैतिक सावधानी प्रारम्भिक अपराधबोधक बाद अधिक अर्थपूर्ण होइत अछि।

७९. छाया बनल साक्षी

नबीनक बयान स्थगित होएब आ अधिकारीक बदलीक सम्भावना समान समयमे घटैत अछि। लेखक ओहि संयोगकेँ कारण-सम्बन्ध बनाबैत नहि; एहि संयमसँ राजनीतिक दाबक प्रसंग अधिक विश्वसनीय बनैत अछि।

८०. झूठक निर्यात

झूठक निर्यात मालक कटौती, श्रमिकक सहमति, गोदामक अभिलेख आ अधिकृत पावती एकत्र करैत अछि। महत्वपूर्ण परिणाम ई जे अधिकारी बदलबाक बादो सुरक्षित कागज प्रश्न करैत रहबाक चाही। भागान्त संस्थागत स्मृतिक आवश्यकता स्थापित करैत अछि।

८.५ पाँचम भाग : अध्याय ८१-१००

८१. बदलीक दिन

बदलीक आदेश अपराध-जाँचक निरन्तरतामे व्यवधानक सम्भावना उत्पन्न करैत अछि। अरुणिमाक पुरान काज आ नवा पदक सीमाक अलगाव राज्य-संस्थाक मानवीय जटिलता देखबैत अछि। बदली स्वयं षड्यन्त्र सिद्ध नहि।

८२. दफ्तरक खाली कुर्सी

दफ्तरक खाली कुर्सीकेँ सत्ता आ अनुपस्थित निर्णयक रूपक बनाओल गेल अछि। रघुक सफाई, निखिलक फाइल, नीलिमाक पावती—साधारण कार्यालय-क्रियाक भीतर असाधारण जिम्मेदारी अछि।

८३. हेरायल फाइलक प्रतिलिपि

हेरायल फाइलक प्रतिलिपि रंगभेद, सतरह मिनटक अन्तर आ सीलबन्द मूल सामग्री पर प्रश्न उठबैत अछि। ई समयक सूक्ष्म फरक कथानकक विस्तृत परिकल्पनामे निर्णायक सूत्र बनैत अछि; लेखक समाधान स्थगित राखैत छथि।

८४. सम्पादकक मौन

सम्पादकक मौनमे विद्या देशमुख आ रेवतीक मतभेद समाचारक उत्तरदायित्वपर केन्द्रित अछि। प्रकाशन-विलम्ब आ स्रोत-रक्षा दुनूक दाम अछि। मौन सदा षड्यन्त्र नहि, कखनो अपूर्ण साक्ष्यक बोझ सेहो अछि।

८५. प्रणयक चित्र

प्रणयक चित्रपर आक्रमण निजी कलाकृति आ सार्वजनिक अपराध-कथा बीच अन्तःप्रवेश अछि। चित्रक नकल आ अनजान युवकक दाबी छवि-स्वामित्वक प्रश्न खोलैत अछि। मात्र परिचयक आधारपर अपराधी निश्चित नहि कएल गेल।

८६. बचायल पत्र

बचायल पत्र प्रणयक स्वतन्त्र निर्णयकें केन्द्रमे रखैत अछि। ओकरा केवल कबीरक संग रहबाक कारण साक्षी-यन्त्र नहि बनाओल गेल। लिफाफाक वास्तविक संरक्षण आ प्राप्ति-कथन पात्रक निजता आ प्रमाणक मर्यादा जोड़ैत अछि।

८७. सभा आ सङ्कट

पटना सभाक दू परस्पर विरोधी पोस्टर सार्वजनिक मतक विभाजन देखबैत अछि। हिंसाक धमकी आ पुरान फोटो फैलाएबक सम्भावना जिम्मेदार पत्रकारिता लेल चुनौती अछि। भीड़क नाटकीयता विवेकसँ सन्तुलित होइत अछि।

८८. दू अखबारक दू सच

दू अखबारक अलग शीर्षकसँ एके घटना पर भिन्न राजनीतिक सत्य निर्मित होएबाक खतरा देखाइत अछि। रेवती 'साझा एजेन्सी कि साझा नकल?' प्रश्न छोड़ैत छलीह। सूचना-प्रवाहक स्रोत-सम्बन्ध स्वयं कथात्मक रहस्य बनैत अछि।

८९. रातिक चेतावनी

रातिक चेतावनीमे शिवशंकरक पुरान भय फेर जागैत अछि, मुदा आब हुनका 'जे सुनल' आ 'जे अनुमान'क भेद बुझेबाक साधन अछि। प्रारम्भक असहाय शिक्षक धीरे-धीरे सावधान साक्षी बनैत अछि।

९०. हत्या कि दुर्घटना

हत्या कि दुर्घटना शीर्षक स्वयं निर्णायक पूर्वनिष्कर्षसँ बचैत अछि। नरेशक मृत्यु, भुगतानक अनुरोध आ घटनाक समयक सम्बन्ध जाँचबाक आवश्यकता अछि; शोकक ताप आ कागजक शीतलता एक दृश्य-क्रममे भेटैत अछि।

९१. भाड़ाक आदेश

भाड़ाक आदेश निर्णायक दृश्य चेहरा आ वास्तविक वित्तीय भार देनिहारक भिन्नता खोलैत अछि। आरवक पूर्वकृत अनुमोदन आ बैंकक वास्तविक कटौती मिलानक अभाव आरोपक सरल रेखाकें जटिल करैत अछि।

९२. दू हजार करोड़क दुसर आँकड़ा

दू हजार करोड़क दुसर आँकड़ा पहिल सनसनीक पुनरीक्षण अछि। नव जमा, खेलक कुल दाँव, निकासी आ फेर जमा कएल रकम अलग करबाक दृश्य अङ्कक कथात्मक चरित्रकें समृद्ध करैत अछि। पुनरावृत्ति एतय विषयगत रूपसँ सार्थक अछि।

९३. धनक सुरागक अन्हार

हांगकांगक कारोबारी कागज आ इरेन लो सहित सम्बन्धक सम्भावित सूत्र धनक गुम ठेकानाक प्रश्न विकसित करैत अछि। विराजक वकील मूल सेवा-अनुबन्ध प्रस्तुत करबाक आवेदन करैत छथि—न्यायिक विरोधी स्वर कथामे प्रवेश पबैत अछि।

९४. आरोपितक अधिकार

आरोपितक अधिकार न्यायपरक रचनाक निर्णायक परीक्षा अछि। विराजक प्रतिवाद स्वयमे निर्दोषताक प्रमाण नहि, मुदा अभियोजनक पद्धतिकेँ कठोर प्रश्न पूछबाक वैध अवसर अछि। रेवतीक ‘फैसला’ शीर्षक नहि लिखबाक निर्णय पत्रकारिक सावधानीक चरम अछि।

९५. दोषक छोट गलती

दोषक छोट गलतीमे एकटा कागजक त्रुटि सुधारलासँ नवा अनुदान-सुराग भेटैत अछि। त्रुटि स्वीकार कएलासँ अनुसन्धान समाप्त नहि, अधिक यथार्थपूर्ण बनैत अछि। ई अध्याय प्रमाण-विवेकक सूक्ष्म फल देखबैत अछि।

९६. अनुदानक अनाम स्रोत

अनुदानक अनाम स्रोत राहत-कार्यक्रमक पावती आ भवनक पत्राचार-ठेकानाक समानता उठबैत अछि। वास्तविक वित्तीय प्राप्तकर्ताक नाम शेष रहबाक कारण कथा स्पष्टीकरणक अधिकारीक प्रतीक्षा करैत अछि।

९७. हस्ताक्षरक तेसर हाथ

हस्ताक्षरक तेसर हाथमे सोफियाक पञ्जीमे लगभग समान नामवला संस्थाक प्रविष्टि अछि। नामक छायाक संग अधिकार-सत्यापनक गम्भीर प्रश्न बनैत अछि। तेसर हस्ताक्षर सत्ता-सम्बन्धक छिपल स्तरक संकेत अछि, निष्कर्ष नहि।

९८. स्थानान्तरणक पाछाँ

स्थानान्तरणक पाछाँ पत्राचारक समय सिद्ध होइत अछि, मुदा कारण शेष रहैत अछि। अरुणिमाक दफ्तरी दूरीक बावजूद तर्क-शृंखलाक निरन्तरता पाठककें दिखाओल गेल अछि। ई सावधानी राज्यशक्तिपर सहज अविश्वासक बदला विवेचित समीक्षा प्रस्तुत करैत अछि।

९९. अन्तिम प्रचार

अन्तिम प्रचारमे कबीर आ प्रणयक सम्बन्ध सार्वजनिक हिंसाक भयक संग पुनः जुड़ैत अछि। निजी पत्रक उद्धरण लेल अनुमति जरूरी होएब कथाक नैतिक स्मृति अछि। पत्रकारक शरीर स्वयं दृश्य-सूचनाक जोखिममे प्रवेश करैत अछि।

१००. लोकतन्त्रक अन्हार

लोकतन्त्रक अन्हार नाम निजी पीड़ाक संग राज्यक संस्थागत जिम्मेदारी जोड़ैत अछि। शिवशंकरक ओसारासँ सरकारी आवेदन-समय धरि कथानक चलैत अछि। कथाक ई भाग दिखबैत अछि जे राजनीतिक अन्हार केवल भाषणमे नहि, निर्णयक दिनांक आ सूचना-व्यवस्थामे सेहो बसैत अछि।

८.६ छठम भाग : अध्याय १०१-१२०

१०१. आवाज फेर आयल

कबीरक अस्पताल-दृश्य मीडिया-हिंसाक शारीरिक मूल्य देखबैत अछि। प्रणय ओकरा तत्काल कागज नहि देखबैत—देखभाल आ अनुसन्धानक बीच उचित दूरी अछि। ‘पूर्वस्वीकृति’क सूक्ष्म पदसँ अगिला साक्ष्य-परीक्षा शुरू होइत अछि।

१०२. साराक सत्य

सारा आ ईशाक सम्बन्धमे मौनक गलत अर्थ समझबाक प्रसंग निजी जीवनक स्वतन्त्रता बचबैत अछि। स्वीकृति शब्दक अनुवाद आ सर्वर-अभिलेखक संरक्षण तकनीकी साक्ष्यकें मानवीय संवादक पृष्ठभूमि दैत अछि।

१०३. मूल समयक प्रतिमा

मूल समयक प्रतिमा डिजिटल अभिलेखक घड़ी आ निर्णय-अधिकारीक पहचानक भेद कड़ी बनबैत अछि। सही समय भेटलासँ असली स्वामी अनिवार्य रूपसँ भेटत, एहन सरल निष्कर्ष कथाकार नहि निकालैत छथि।

१०४. एतय नकली मालिक

एतय नकली मालिकमे चेनक नामक मुहर आ अस्वीकृत हस्ताक्षर गम्भीर मोड़ अछि। पहचानक दृश्य आ वास्तविक अनुमोदन एक नहि। मेघनाक जाँच कम्पनी-नामक परत पार व्यक्ति-दायित्व तकबाक प्रयास करैत अछि।

१०५. धनक हेरायल ठेकाना

धनक हेरायल ठेकानामे माल्टाक चकमक दृश्य आ अधूरी खाताबहीक पृष्ठ अलग धरातल पर रहैत अछि। सोफिया अनुपस्थितिक स्वतन्त्र प्रमाण मँगैत छलीह; कथित गवाहीकेँ बिना परीक्षा निर्णायक स्थान नहि भेटैत।

१०६. गवाहीक कीमत

गवाहीक कीमतमे विवेक द्वारा पूर्वकथित 'पूरा पृष्ठ'क एक कोन पहिनेसँ हटि गेल छल, ई स्वीकार पात्रक जटिलता बढ़बैत अछि। अपन गवाहीक भीतरक गलती स्वीकारब ओकर नैतिक यात्रा लेल महत्वपूर्ण अछि।

१०७. फाइल पृष्ठ

फाइल पृष्ठ सुरक्षित अभिलेख-कक्षमे पुनः भेटल सामग्रीक पाठन करैत अछि। परितोषक अपूर्ण पत्र आ बैंकक पहिनुक चेतावनीक सम्भावित सम्बन्ध जुड़ैत अछि; स्रोतक अनुपस्थित कर्मचारीक परिचय अद्याप शेष अछि।

१०८. बैंकक भीतरक विरोध

बैंकक भीतरक विरोध आरवक रोजगारीक व्यक्तिगत इतिहास आ संस्थागत गलत निर्णयक सम्भावनाक टकराहट अछि। अधिकृत जिम्मेदारीक अन्तरिक विभाजन जाँच जटिल बनबैत अछि। गवाहीक बहुभाषिक परीक्षा लेल कथा तैयार होइत अछि।

१०९. बहुभाषी साक्ष्य

बहुभाषी साक्ष्य अनुवादक एक शब्दसँ दायित्व बदलि जेबाक खतराकेँ ठोस रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। मूल भाषा, अनुवादकक पहिचान आ स्वतन्त्र प्रतिपुष्टिक आग्रह कथाक वैश्विक स्वभावक एकटा अनिवार्य नैतिक प्रश्न अछि।

११०. साक्ष्यक सात मेज

सात मेजपर साक्ष्यक भिन्न श्रेणी राखब कथाक बहुस्तरीय संरचनाक रूपक अछि। नीलिमा खाली स्थानसँ नहि डरैत छलीह। नवा पद-संकेत सातमे मेज बन्द नहि होय देबैत अछि—ज्ञान अपूर्ण रहबाक ई पाठ असरदार अछि।

१११. जाहि नामक आशा

जाहि नामक आशा विराजक सार्वजनिक ठाठ आ अदालतक साधारण बेंचक अन्तर खोलैत अछि। आर्थिक भुगतानक इच्छा एकरापर निर्णयक वास्तविक अधिकार सिद्ध नहि करैत। व्यक्तिक प्रतिरक्षा आ चोट खाएल अन्य व्यक्तिक सत्य साथ-साथ रहि सकैत अछि।

११२. सुधारल अभियोग

सुधारल अभियोगमे वास्तविक निर्यातक अंशक स्वीकार निर्णायक अछि। जाँच जँ किछु कारोबार वैध भेटैत अछि, तँ पूरा कथा ध्वस्त नहि होइत; आरोप अधिक सटीक होइत अछि। एहिमे संस्थागत आत्म-संशोधनक नैतिक बल अछि।

११३. मिराक अपना घर

मिराक अपना घर कृतिक मानवोन्मुख सफलता अछि। गवाहीक निर्णय बनल रहितहुँ ओकर जीवन अनुसन्धानक समाप्तिक प्रतीक्षामे स्थगित नहि। कोठली, काठक केवाड़ी आ भविष्यक योजना कानूनी उपस्थिति सँ अधिक व्यापक स्वतंत्रता सुझबैत अछि।

११४. रानीक पाँच रुपैया

रानीक पाँच रुपैया प्रारम्भक पाँच सयक गम्भीर प्रत्युत्तर अछि। सिक्काक छोट माप वास्तविक कमाइ, उपयोग आ स्वामित्वक प्रश्न पुनः खोलैत अछि। पूर्ण राहत नहि भेटल, मुदा अपन बाट चिन्हबाक क्षमता प्राप्त भेल अछि।

११५. खाताक अन्तिम मालिक

खाताक अन्तिम मालिकमे सोफिया आ मेघनाक पञ्जी-समीक्षा अनुराग बेदी नामक सम्भावित सूत्र तक पहुँचैत अछि। तीन पत्रक क्रम बदललासँ नवा रेखा देखाइत अछि; रेखाक अन्त अज्ञात राखब प्रमाणविवेकक संगत चुनाव अछि।

११६. छापाक दोसर भोर

दोसर छापाक भोर पहिल कार्रवाइक पुनरावृत्ति नहि मात्र; मानसीक अधिकार, स्रोत-संरक्षण आ कामक अधिक सुस्पष्ट विभाजन दृश्य बनबैत अछि। अनाम पत्रकें तुरन्त गवाही नहि मानब कथाक सिद्धान्तक स्वाभाविक विस्तार अछि।

११७. भागल लोकक पत्र

भागल लोकक पत्र अनाम लिफाफाक मूल आवरण आ विदेशी सम्पर्कक शृंखला रखैत अछि। कथाकार पत्रक कथ्यक स्वतन्त्र सत्यापन शेष रखैत छथि। सुनवाईमे प्रतिपरीक्षा आनेबाक पूर्व-संकेत कथाक तनाव कायम रखैत अछि।

११८. प्रतिपरीक्षाक दिन

प्रतिपरीक्षाक दिन उपन्यासक प्रमाण-नीतिक सार्वजनिक परीक्षा अछि। नीलिमा लेल सबसँ कठिन शब्द 'सिद्ध' अछि; बचाव पक्ष आ अभियोजन दुनूक दाबीक भार बदलैत अछि। दोषक प्रमाण आ पीड़ितक हानिक पृथक् सत्य आवश्यक कहब एहि कृतिक बौद्धिक केन्द्रीय सूत्र अछि।

११९. फेर भेटल धन

फेर भेटल धनमे शिवशंकरक बैंक-पावती आ रानीक सीमित सुविधा राहतक वास्तविक अवरोध दर्शबैत अछि। टेलीविजनक घोषणासँ रुपैया अपने-आप खातामे नहि घुर्तैत। राज्यक घोषणा आ नागरिकक प्राप्तिक बीचक दूरी मार्मिक अछि।

१२०. अन्तिम पाँच प्रतिशत

अन्तिम पाँच प्रतिशत आरम्भिक रेलवे-पुलक दृश्यकेँ फेर सँ पढ़बैत अछि। बरनीक कम्पन लगभग वैह अछि, मुदा अमरेशक जीवन-दृष्टि बदलल अछि। 'अन्हार' बचल रहब असफलता नहि, तकरा नाम देबाक नैतिक सामर्थ्य अन्तिम उपलब्धि अछि।

९. समेकित मूल्याङ्कन : विधागत स्थान आ पाठकीय प्रभाव

'पाँच प्रतिशत अन्हार'केँ मात्र जासूसी अथवा अपराध-रोमाञ्चक उपन्यास कहला पर ओकर महत्त्वक एकटा हिस्सा छूटि जाइत। ई वित्तीय संस्थासभक असमान पारदर्शिता, सार्वजनिक प्रचारक नैतिकता, राजकीय प्रक्रियाक उत्तरदायित्व, आर्थिक रूपसँ कमजोर नागरिकक असुरक्षा आ जटिल जानकारीक मर्यादा पर विचार करैत एकटा बहुकेन्द्रीय सामाजिक-नैतिक आख्यान अछि। कथामे रोमाञ्च अवश्य अछि, मुदा ओ अन्तिम अपराधीक मुखौटा खोलि दण्ड देबाक रेखापर मात्र अवलम्बित नहि।

मैथिली उपन्यासक परिप्रेक्ष्य मे ई कृति आर्थिक अपराधक समकालीन शब्दावलीकेँ घरेलू जीवनक ठोस भाषा संग मिलायबाक प्रयत्न करैत अछि। दरभंगा आ मिथिलाक सामाजिक आधार कथाक 'पिछड़ल' आरम्भ मात्र नहि; वही स्थान पाठक लेल अन्तिम मूल्य-निर्णायक केन्द्र रहैत अछि। वैश्विक बैंक, कम्पनी आ कार्यालयक तुलना मे रानीक दोकानक दैनिक लेखा अन्तिम माप बनैत अछि।

कलात्मक दृष्टिसें सर्वश्रेष्ठ प्रसंग सभमे वस्तु स्वयं बोलैत अछि: रेलक कम्पन, रानीक पावती, शिवशंकरक विवाहक कापी, मिराक घरक गन्ध, विवेकक अधूरा पृष्ठ, गोदामक तौल, अदालतक साधारण बेंच। विचारक गरिमा तखन किछु घटैत अछि जखन समान सत्यापनक सिद्धान्त नवा पात्रक मुँहसँ पुनः सुनाओल जाइत अछि। एहि दोहरा प्रवृत्तिकें पहिचानब सम्यक् आलोचनाक मूल शर्त अछि।

पाँच प्रतिशतक अन्तर कखनो आयक भाग नहि, चुप्पी आ औपचारिकताक बीचक शेष अन्धकार बनैत अछि। पाठ कहैत अछि जे सत्य परिपूर्ण नहियो हो तँ दायित्व समाप्त नहि। पूर्ण सर्वज्ञ विजयक बदला अधिक न्यायपूर्ण प्रश्न पूछबाक सामाजिक क्षमता बनब एहि कृतिक परिपक्व अन्त अछि। ताहि रूपमे उपन्यास अपन कमजोरियक बादो मैथिलीमे वैश्विक विषयपर नैतिक-समीक्षात्मक कथारचनाक एकटा उल्लेखनीय प्रयत्न अछि।

१०. समीक्षाक अन्तिम निर्णय

कृतिक प्रभावक मूल कारण कथानकक विशाल फैलाव नहि, विशालताकेँ लघुतम जीवनक बोधसँ मापबाक आग्रह अछि। ‘पाँच प्रतिशत अन्हार’ पाठककेँ बतबैत अछि जे अपराधक प्रसंगमे निर्दोषताक सम्भावना, पीड़ितक गरिमा, भिन्न अपराध-पद्धतिक पृथक्करण आ अपूर्ण साक्ष्यक सम्मान रखनाइ साहित्यिक कमजोरी नहि, नैतिक उपलब्धि भऽ सकैत अछि।

जँ पुनः साहित्यिक सम्पादन हो, तँ समान विवेचनात्मक वाक्यक संक्षेप, अध्याय-आरम्भक विविधीकरण, मध्यवर्ती उपसंहारक पुनर्नामकरण, गौण पात्रक भावनात्मक पृथक्करण आ असाधारण दृश्यसभमे अनकहल अर्थ लेल स्थान कृतिक प्रभाव बढ़ा सकैत अछि। मूल पात्रक निर्णायक नैतिक चुनाव, कथा-क्रम आ अन्तक अपूर्ण प्रकाशकेँ नबदलने ई सुधार सम्भव अछि।

समीक्षाक समग्र निष्कर्ष ई अछि: उपन्यास आर्थिक अपराधक ‘समाधान’सँ बेसी सत्यक सामाजिक उत्पादन-प्रक्रिया पर केन्द्रित अछि। रानीक दोकानसँ न्यायालय धरि पहुँचबाक यात्रा धनक मात्र नहि, आवाजक यात्रा अछि। आरम्भमे काँचक बरनी काँपैत अछि; अन्तमे सेहो काँपैत अछि। बदलल अछि मनुष्यक ओकरा देखबाक आ समझबाक दृष्टि।

पुस्तक-सन्दर्भ

१. ठाकुर, गजेन्द्र। ‘पाँच प्रतिशत अन्हार’। मौलिक मैथिली उपन्यास। प्रथम संस्करण २०२०; पुनरीक्षित संस्करण २०२६। प्रस्तुत पुनरीक्षित पाण्डुलिपि।

२. भरतमुनि। ‘नाट्यशास्त्र’। रस, भाव आ नाट्य-अनुभव सम्बन्धी मूल ग्रन्थ।

३. आनन्दवर्धन। ‘ध्वन्यालोक’। काव्य-व्यञ्जना सम्बन्धी मूल ग्रन्थ।

४. गङ्गेश उपाध्याय। ‘तत्त्वचिन्तामणि’। नव्यन्यायक ज्ञान आ प्रमाण-विवेचन सम्बन्धी मूल ग्रन्थ।

५. Genette, Gérard. Narrative Discourse: An Essay in Method. Translated by Jane E. Lewin. Cornell University Press, 1980.

६. Bakhtin, Mikhail M. The Dialogic Imagination: Four Essays. Edited by Michael Holquist; translated by Caryl Emerson and Michael Holquist. University of Texas Press, 1981.

७. Booth, Wayne C. The Rhetoric of Fiction. University of Chicago Press, 1961; second edition, 1983.

८. Ricoeur, Paul. Time and Narrative, Volume 1. Translated by Kathleen McLaughlin and David Pellauer. University of Chicago Press, 1984.

१.९. गजेन्द्र ठाकुर — नित नवल वृषेश चन्द्र लाल

VIDEHA 451 • VIDEHA451 / PROSE 09 • सम्पूर्ण मूल पाठ

स्रोतक मूल शीर्षक, प्रकाशन-विवरण, विषय-सूची, अध्याय, तालिका, अन्तिम टिप्पणि आ सन्दर्भ पूर्ण रूपेँ समाविष्ट। मूल स्रोतमे छपल आन्तरिक पृष्ठाङ्क स्रोत-संस्करणक अछि।

नित नवल वृषेश चन्द्र लाल

लेखक

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

www.videha.co.in

प्रकाशन-विवरण

नित नवल वृषेश चन्द्र लाल

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक: विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

वेबसाइट: www.videha.co.in

© गजेन्द्र ठाकुर/ प्रीति ठाकुर, २०२६

सर्वाधिकार सुरक्षित। लेखकक लिखित अनुमतिक बिना एहि पुस्तकक कोनो अंशक पुनर्मुद्रण वा व्यावसायिक पुनर्प्रकाशन नहि कएल जाए। उद्धरण आ शैक्षिक उपयोग प्रचलित सन्दर्भ-परम्पराक अनुसार कएल जा सकैत अछि।

एहि पुस्तकमे वृषेश चन्द्र लालक साहित्यिक कृतित्व, रूपान्तरण-कर्म आ वैचारिक-सामाजिक सरोकारपर केन्द्रित छह गोटा विस्तृत अध्ययन एकत्रित अछि।

विषय-सूची

क्र अध्ययन

म

१ आन्दोल

न

२ ढोलक

३ गोलबा

४ माल्हो

५ मोदिआ

इन

६ सुम्निमा

१. आन्दोलन

वृषेश चन्द्र लालक 'आन्दोलन' कविता संग्रह: समकालीन राजनीतिक चेतना, प्रतिगमन
आ लोकतान्त्रिक विमर्शक गहन साहित्यिक-ऐतिहासिक अनुशीलन

मूल पोथी आन्दोलन — मैथिली कविता संग्रह

रचनाकार / वृषेश चन्द्र लाल (वृषेश चन्द्र लाल)
कवि

विधा मैथिली कविता संग्रह

प्रकाशक सुदामा प्रकाशन, जनकपुरधाम

प्रकाशन- वि.सं. २०६१; नेपालक २००२-०४ राजनीतिक संकट आ प्रतिगमन-विरोधी

सन्दर्भ आन्दोलनक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मूल पोथी आन्दोलन — मैथिली कविता संग्रह

मूल्य ने.रु. १५ टाका / भा.रु. १० टाका

समर्पण शहीद तथा लोकहितलेल बलिदान करएवला महान आत्मासभकेँ

भूमिका डॉ. राजेन्द्र प्रसाद 'विमल' (देवीथान, जनकपुरधाम)

प्रस्तावना

साहित्य समाजक दर्पण मात्र नहि, अपितु युगक स्पन्दन, राजनीतिक उथलपुथल आ मानवीय संघर्षक सबसँ प्रामाणिक दस्तावेज होइत अछि। कोनो सेहो कालखण्डक इतिहासकेँ बुझबाक लेल जतय राजनीतिक आलेख, सरकारी दस्तावेज आ ऐतिहासिक तिथिक्रमक आवश्यकता होइत अछि, ओतहि जनमानसक वास्तविक पीड़ा, आक्रोश आ आशाकेँ अनुभूत करबाक लेल ओहि कालक साहित्यक अध्ययन अपरिहार्य अछि। मैथिली साहित्यक प्रखर समालोचक डा. राजेन्द्र प्रसाद 'विमल' क शब्दमे, "कविता किंवा साहित्यकेँ मूक इतिहासक मुखर सहोदर कहल गेल अछि"। एहि व्यापक सन्दर्भमे नेपालक समकालीन राजनीतिक इतिहास—विशेषतः प्रजातान्त्रिक संघर्ष, शाही प्रतिगमन आ जनआन्दोलनक पृष्ठभूमिमे रचित वरिष्ठ राजनेता तथा साहित्यकार वृषेश चन्द्र लालक 'आन्दोलन' नामक मैथिली कविता संग्रह एकटा ऐतिहासिक, वैचारिक आ साहित्यिक माइलखुट्टी (मील-स्तम्भ) मानल जाइत अछि।

सुदामा प्रकाशन, जनकपुरधामसँ प्रकाशित एहि कविता संग्रहक प्रकाशन-मूल्य अत्यन्त सांकेतिक (नेपाली १५ टाका आ भारतीय १० टाका) राखल गेल अछि, जे ई सिद्ध करैत अछि जे एहि पोथीक मुख्य उद्देश्य कोनो व्यावसायिक लाभ नहि, अपितु लोकतान्त्रिक चेतना आ प्रतिगमन-विरोधी सन्देशकेँ जन-जन धरि पहुँचाएब छल। पोथीक समर्पण-पत्र ओहि सम्पूर्ण ज्ञात-अज्ञात शहीद सभ आ महान आत्मा सभक प्रति समर्पित अछि, जे लोकहित आ प्रजातन्त्रक रक्षार्थ अपन प्राणक आहुति देबामे समर्थ भेलाह। ई समर्पण एहि पोथीक क्रान्तिकारी, जनपक्षीय आ बलिदानी चरित्रकेँ प्रारम्भमे उद्घाटित कऽ दैत अछि।

पोथीक शीर्षक 'आन्दोलन' अपनमे क्रिया, स्थिति आ इतिहास — तीनू अर्थ एक संग खेलैत अछि। ई केवल कोनो एक राजनीतिक कार्यक्रमक नाम नहि, बल्कि जड़ताक विरुद्ध गति, भयक विरुद्ध प्रतिरोध आ सत्ता-केंद्रित समाजक विरुद्ध जन-अधिकारक आग्रह बनि उठैत अछि। संग्रह

सुदामा प्रकाशन, जनकपुरधामसँ प्रकाशित अछि। विश्वविद्यालयीय ग्रन्थ-सूचीमे एकर प्रकाशन-वर्ष वि.सं. २०६१ देल अछि, जे २००४-०५ ई.क समयसँ मेल खाइत अछि। एहि समय नेपाल निर्वाचित संसदक विघटन, राजकीय हस्तक्षेप, माओवादी सशस्त्र संघर्ष आ लोकतान्त्रिक दलसभक प्रतिगमन-विरोधी आन्दोलनक बीच गम्भीर राजनीतिक संकटसँ गुजरि रहल छल। समर्पण-पृष्ठ पोथीक नैतिक स्वर पहिने सँ निश्चित क' दैत अछि: ई “लोकहितलेल बलिदानक पीड़ा” धारण करनिहार शहीद आ महान आत्मासभ केँ समर्पित अछि। एहि वाक्यक महत्त्व केवल भावुक श्रद्धांजलि धरि सीमित नहि। बादक कवितासभमे कवि बेर-बेर पूछैत छथि जे बलिदानक फल के भोगैत अछि, पीड़ा के झेलैत अछि, नेतृत्वक प्रतिष्ठा के कमबैत अछि, आ जनता कतय अछि। तँ समर्पण आ 'चलू आन्दोलनमे !'क व्यंग्य एक-दोसरक विरोध नहि, बल्कि एकहि नैतिक प्रश्नक दू छोर अछि: सच्चा बलिदान बनाम बलिदानक राजनीतिक कारोबार।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद 'विमल'क भूमिकामे कविता केँ “इतिहासक मुखर सहोदर” कहबाक विचार अछि, आ संग्रहक प्रत्येक कविता केँ तत्कालीन नेपालक “ओजस्वी दस्तावेज” मानल गेल अछि। मुदा एहि संग्रहक साहित्यिक मूल्य केवल दस्तावेजीकरणमे सीमित नहि अछि। समाचार समाप्त भ' जाइत अछि, राजनीतिक परिस्थिति बदलि जाइत अछि; कविता तखन टिकैत अछि जखन ओ घटना सँ ऊपर उठि सत्ता, भय, अवसरवाद, भीड़, नायक, जनाधिकार, राष्ट्र आ विकासक स्थायी प्रश्न बनि जाइ। 'आन्दोलन'क श्रेष्ठ कविता ई उन्नयन करैत अछि।

स्रष्टाक व्यक्तित्व, राजनीतिक पृष्ठभूमि एवं साहित्य-साधना

कवि वृषेश चन्द्र लालक जन्म २९ मार्च १९५५ ई. (२०११ साल चैत्र १६ गते) केँ भेल छल। हुनक सम्पूर्ण जीवन नेपालक लोकतान्त्रिक आन्दोलन, सामाजिक न्याय, आ मधेशक अधिकारक निरन्तर संघर्षमे समर्पित रहल अछि। ओ नेपालक लोकतान्त्रिक आन्दोलनक एकटा शीर्षस्थ राजनेता, पूर्व राष्ट्रिय सभा सदस्य (२०१७-२०१९), आ जनकपुर नगरपालिकाक पूर्व प्रमुख (मेयर) रहि चुकल छथि।

हुनक राजनीतिक यात्राक अध्ययन एहि कविता संग्रहकेँ बुझबाक लेल नितान्त आवश्यक अछि। प्रारम्भमे ओ नेपालक प्रथम जननिर्वाचित प्रधानमन्त्री एवं महान साहित्यकार विश्वेश्वरप्रसाद कोइराला (बी.पी.) क प्रतिबद्ध राजनीतिक अनुयायी छलाह आ लामो समय धरि

नेपाली कांग्रेसक राजनीतिमे सक्रिय रहलाह। बी.पी. कोइरालाक प्रजातान्त्रिक समाजवाद, राष्ट्रिय मेलमिलाप आ मानवीय स्वातन्त्र्यक सिद्धान्त वृषेश चन्द्र लालक वैचारिक चिन्तनक आधार-स्तम्भ रहल अछि। कालान्तरमे, मधेश आन्दोलनक भावनाकें सम्बोधन करबाक हेतु आ राज्यक केन्द्रीकृत मानसिकतासँ मोहभंग भेलाक कारणें, सन् २००७ मे महन्थ ठाकुरक संग नेपाली कांग्रेस परित्याग कऽ ओ तराई मधेश लोकतान्त्रिक पार्टी (तमलोपा) क स्थापनामे अग्रणी भूमिका निर्वाह केलनि। ओकर बाद लोकतान्त्रिक समाजवादी पार्टी (लोसपा) मे महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करैत, अध्यक्ष महन्थ ठाकुरक कार्यशैली आ मधेश आन्दोलनक मर्मक उपेक्षाक विरोधमे ओ पुनः तमलोपा ब्युँताएबक निर्णय केलनि। ई सम्पूर्ण राजनीतिक उतार-चढ़ाव ई प्रमाणित करैत अछि जे वृषेश चन्द्र लाल कोनो वातानुकूलित कक्षमे बैसि कऽ कल्पना करयबला कवि नहि छथि, अपितु सडक, आन्दोलन आ जनताक बीचसँ उठल यथार्थवादी स्रष्टा छथि। जनकपुरक प्रसिद्ध मिथिला नाट्य कला परिषद् (मिनाप) द्वारा महामूर्ख सम्मेलनमे हुनका २०१८ मे 'महामूर्ख' क उपाधिसँ सेहो सम्मानित कएल गेल छल, जे हुनक सामाजिक आ सांस्कृतिक स्वीकार्यताकें दर्शाबैत अछि।

राजनीतिक व्यस्तताक कारणें साहित्य-सृजनक लेल पर्याप्त समय नहि भेटलाक बादो, जतेक रचना ओ प्रस्तुत कएने छथि, से मैथिली साहित्यक लेल अमूल्य निधि अछि। विश्वेश्वरप्रसाद कोइरालाद्वारा लिखित विख्यात मनोवैज्ञानिक उपन्यास 'मोदिआइन'क मैथिली रूपान्तरण, मौलिक कथा संग्रह 'माल्हो', तथा 'संघीयताक सम्बन्धमे' जकाँ वैचारिक पुस्तक हुनक साहित्यिक आ बौद्धिक गहिराइकें प्रमाणित करैत अछि। डा. राजेन्द्र प्रसाद 'विमल' स्पष्ट करैत छथि जे लालक व्यक्तित्व बाल्यकालहिसँ अत्यन्त भावुक, संवेदनशील, चिन्तनशील, कालद्रष्टा आ प्रखर राजनैतिक चेतनासँ उद्भासित रहल अछि, यद्यपि जीवनक सम्पूर्ण ऊर्जा प्रजातन्त्रक स्थापनामे लगा देबाक कारणें साहित्यक क्षेत्रमे हुनक प्रतिभाक दान नगण्य रूपमे प्राप्त भेल अछि। तथापि, 'आन्दोलन' संग्रहमे विद्यमान भावनाक ज्वार, ओजस्विता, बिम्बात्मकता आ नग्न यथार्थ चित्रण हुनक अदृश्य काव्य-प्रतिभाक अकाट्य प्रमाण थिक।

वृषेश चन्द्र लालक जीवन

विवरण आ ऐतिहासिक महत्त्व

आ कृतित्वक मुख्य

आयाम

जन्म आ प्रारम्भिक प्रभाव २९ मार्च १९५५, बी.पी. कोइरालाक प्रजातान्त्रिक समाजवादसँ गहीर रूपेँ प्रभावित।

राजनीतिक पदचिह्न जनकपुरक पूर्व मेयर, राष्ट्रिय सभाक पूर्व सदस्य (२०१७-२०१९), तमलोपाक संस्थापक नेता।

वैचारिक रूपान्तरण नेपाली कांग्रेस (२००७ धरि), तदुपरान्त मधेशक अधिकार लेल तमलोपा, लोसपा, आ पुनः तमलोपाक नेतृत्व।

साहित्यिक योगदान 'आन्दोलन' (कविता संग्रह), 'माल्हो' (कथा संग्रह), 'मोदिआइन' (मैथिली अनुवाद), 'संघीयताक सम्बन्धमे' (अनुवाद/विमर्श)।

एहि कारण 'आन्दोलन'मे राजनीतिक शब्दावली सजावटी नहि लगैत अछि। 'सत्ता', 'जनता', 'राष्ट्रियता', 'गणतन्त्र', 'शान्ति', 'संघर्ष', 'बलिदान' — ई सभ अमूर्त संज्ञा होइतहुँ कवि ओकरा देह, भूख, लाठी, रक्त, सड़क, अन्हार, नगाड़ा, जाँता-सिलौट, कोठरी आ माटिसँ जोड़ि दैत छथि। राजनीतिक विचारक सफल काव्य-रूपान्तरण तखन होइत अछि जखन विचार दृश्य बनि जाए; लालक श्रेष्ठ पंक्तिसभमे ई गुण प्रबल अछि।

ऐतिहासिक आ राजनीतिक पृष्ठभूमि: शाही प्रतिगमन आ जनआन्दोलन

कोनो सेहो क्रान्तिकारी साहित्यक वास्तविक मूल्यांकन ओकर रचना-कालक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यक बिना असम्भव अछि। 'आन्दोलन' कविता संग्रहक सिर्जना-गर्भ नेपालक समकालीन इतिहासक सबसँ त्रासद, अस्थिर आ निर्णायक कालखण्ड (वि.सं. २०५९ सँ २०६३) सँ जुड़ल अछि। नेपालमे लोकतान्त्रिक संस्था सभकें योजनाबद्ध रूपसँ नष्ट करबाक जे खेल शुरू भेल, ओकर चरमोत्कर्ष राजा ज्ञानेन्द्रक शाही 'कू' (Coupe) छल। जेठ २०५९ (मई २००२) मे तत्कालीन प्रधानमन्त्रीद्वारा प्रतिनिधि सभाक विघटन, तदनन्तर असोज २०५९ (अक्टोबर २००२) मे

निर्वाचित प्रधानमन्त्रीकें अपदस्थ करब, आ अन्ततः १९ माघ २०६१ (१ फरवरी २००५) कें राजा ज्ञानेन्द्रद्वारा कएल गेल प्रत्यक्ष शाही तख्तापलट (प्रतिगमन) सँ नेपालक लोकतान्त्रिक प्रणाली पूर्णतः धराशायी भ' गेल छल।

वि.सं. २०६१क नेपाल बुझने बिना 'आन्दोलन'क काव्य-ताप पूर्णतः पकड़ल कठिन अछि। मई २००२ मे संसद भंग भेल; अक्टूबर २००२ मे राजा ज्ञानेन्द्र प्रधानमन्त्री शेरबहादुर देउबा कें हटाकए कार्यकारी सत्ता अपन हाथमे लेलनि, चुनाव स्थगित रहल, आ निर्वाचित प्रतिनिधित्वक प्रक्रिया अनिश्चित बनल। २००३-०४ धरि राजकीय नियुक्त सरकार, माओवादी हिंसा, सेना-केन्द्रित सुरक्षा-दृष्टि आ नागरिक स्वतन्त्रतापर दबावक मिश्रित संकट छल। अप्रैल २००४ मे पाँच राजनीतिक दलक प्रतिगमन-विरोधी प्रदर्शन पर व्यापक दमनक विवरण मानवाधिकार प्रतिवेदनसभमे भेटैत अछि। एहि राजनीतिक वातावरणक अनुगूँज संग्रहक अन्हार, भूत, बन्दूक, लाठी, ठग, आतंक, रक्त आ प्रतिकारक बिम्बसभमे स्पष्ट अछि।

एहि ऐतिहासिक तथ्यक कारण संग्रह कें बादक २००७ मधेश आन्दोलन वा २००८ गणतन्त्रक परिणामक रोशनीमे उल्टा पढ़ब उचित नहि। कवि बादमे मधेश राजनीति आ संघीयताक विमर्शमे महत्वपूर्ण सार्वजनिक भूमिका निभौलनि, मुदा 'आन्दोलन'क मूल क्षण मुख्यतः संसदीय लोकतन्त्रक संकट, राजकीय प्रतिगमन आ राजनीतिक दलसभक विश्वसनीयताक प्रश्नक क्षण अछि। ई काल-सीमा अत्यन्त जरूरी अछि; नहि तँ बादक राजनीतिक परिचय मूल कविताक अर्थपर आरोपित भ' सकैत अछि।

काल-निर्धारणक प्रसंगमे २०२०क प्रतिनिधिसभा-विघटनसँ एहि संग्रहक प्रत्यक्ष रचना-सन्दर्भ जोड़बाक एक मत सेहो भेटैत अछि; मुदा पोथीक प्रकाशन-वर्ष वि.सं. २०६१ देल रहबाक कारण ई मत संग्रहक प्रकाशन-सन्दर्भसँ मेल नहि खाइत अछि। तँ मूल ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य २००२-०४क संसदीय संकट, राजकीय हस्तक्षेप, माओवादी द्वन्द्व आ प्रतिगमन-विरोधी आन्दोलनक समय मानल अधिक संगत अछि।

एहि कालखण्डमे नेपाल एक दिस राज्यसत्ताक सैन्य दमन आ दोसर दिस माओवादी सशस्त्र द्वन्द्वक भयानक दुश्चक्रमे पिसि रहल छल। नागरिकक मौलिक अधिकार निलम्बित क' देल गेल छल, सञ्चार माध्यमपर कड़ा सेन्सरशिप लगाओल गेल छल, स्वतन्त्र विचार राख्यबला पत्रकार आ राजनीतिकर्मी सभकें कारागारमे बन्द कएल जा रहल छल, आ चारू दिस आतंक,

हत्या, आ भयक साम्राज्य व्याप्त छल। एहि निरंकुशता आ प्रतिगमनकारी षड्यन्त्रक विरुद्ध सात दलक गठबन्धन (संसदवादी दल), नागरिक समाज आ आम जनता सडकपर उतारि आन्दोलनक शंखनाद केलक, जे अन्ततः ऐतिहासिक दोसर जनआन्दोलन (२०६२/०६३) आ २४० वर्ष पुरान राजतन्त्रक अन्त्य क' नेपालमे लोकतान्त्रिक गणतन्त्रक स्थापनाक मार्ग प्रशस्त केलक।

वृषेश चन्द्र लालक ई कविता संग्रह एही सडकक हुंकार, आन्दोलनकारी चेतना, नागरिकक अदम्य साहस आ निरंकुशताक विरुद्ध एकटा बौद्धिक प्रतिकारक जीवन्त काव्यिक दस्तावेज थिक। जखन संसदवादी शक्तिसभ भाला-गराँस लए दौड़ल प्रतिगमनरूपी मरल गहुमनक सामना क' रहल छल, तखन लालक कलम ओहि संघर्षकें शब्द दैत छल।

डा. राजेन्द्र प्रसाद 'विमल' क भूमिकाक आलोचनात्मक महत्त्व

एहि पोथीकें आओर बेसी प्रामाणिक आ ऐतिहासिक बनाबैत अछि एकर भूमिका, जे मैथिली आ नेपाली साहित्यक मूर्धन्य समालोचक, भाषाविद् आ प्राध्यापक डा. राजेन्द्र प्रसाद 'विमल' द्वारा लिखल गेल अछि। विमल, जिनकर जन्म २००४ सालमे धनुषाक देवडिहा (खिरखिरिया) मे भेल छल आ जे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयसँ भाषा विज्ञानमे विद्यावारिधि कएने छथि, समग्र नेपालीय साहित्यमे एकटा गन्यमान्य हस्ताक्षर छथि। ओ नेपाली आ मैथिली दुनू भाषामे समान अधिकारसँ लिखैत छथि आ समाजक विसंगति, मानवीय संवेदना आ राष्ट्रियताक प्रश्नपर प्रखर विचार राखैत छथि।

डा. विमल 'आन्दोलनक आगिसँ बहराएल ई काव्य-कंचन...' शीर्षक सँ अत्यन्त मार्मिक टिप्पणी लिखने छथि। हुनक भूमिकाक किछु प्रमुख स्थापनासभ एहि प्रकार अछि: प्रथम, ओ साहित्यकें मूक इतिहासक मुखर सहोदर मानैत छथि। फूलक प्रत्येक पंखुरी जेना अपन माटि, जल आ प्रकाशक कथा कहैत अछि, तहिना कविता स्रष्टाद्वारा भोगल हास्य-रोदन, रोष आ विश्वोभकें प्रकट करैत अछि। द्वितीय, ओ दाबी करैत छथि जे नेपालीय मैथिली साहित्यमे पहिल बेर एहन कोनो कविता संग्रह आएल अछि जाहिमे प्रत्येक कविता विशुद्ध रूपे समसामयिक राजनीति आ लोकतान्त्रिक संघर्षसँ अभिप्रेरित अछि। ई दाबी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि, कारण मैथिली साहित्य पारम्परिक रूपसँ शृंगार, भक्ति, आ सामाजिक-सांस्कृतिक सुधार (जेना विद्यापतिक परम्परा वा बाल-विवाह विरोध) मे बेसी केन्द्रित रहल अछि। विशुद्ध राजनीतिक-प्रतिरोधी

कविताक एहन पूर्ण संगालो विरल छल। तृतीय, डा. विमल लालकें 'कालद्रष्टा' कहैत छथि। एकटा राजनेताक भितर नुकाएल जे सुकोमल मुदा आगो उगलबला कवि अछि, तकर प्रकटीकरण एहि पोथीमे भेल अछि।

भूमिकाकार तत्कालीन राजनीतिक परिदृश्यक वर्णन सेहो अत्यन्त आलंकारिक शैलीमे करैत छथि — संसदक विघटनक बाद 'प्रतिगमनवादी शक्ति फोंफिया रहल अछि — जेना मरल गहुमनमे फेर जान आबि गेल होइक आ फेंच काढ़ि नेने हुअए', आ 'संसदवादी शक्तिसभ भाला-गरांस लए दौड़ल अछि, गात्र-गात्रमे बेधैत छैक मुदा ओ डसबाक लेल बेर-बेर लपकैत छैक'। एहि जीवजन्तु-प्रतीकसभ (मरल सांप, गहुमन) क प्रयोगसँ राजनीतिक पुनरुत्थान आ प्रतिशोधक भावकें अत्यन्त जीवन्त रूपमे चित्रित कएल गेल अछि, जे स्वयं कविक कविता-शैलीसँ मेल खाइत अछि।

'आन्दोलन' संग्रहक कविता सभक विषयगत, दार्शनिक आ शिल्पगत विवेचना

संग्रहमे कुल १२ टा कालजयी राजनीतिक-वैचारिक कवितासभ संकलित अछि। एहि कविता सभकें मुख्य रूपसँ पाँचटा वृहद् विषयगत खण्डमे विभाजित क' एकर सूक्ष्म आ गहीर विश्लेषण कएल जा सकैत अछि।

१. प्रतिगमनक प्रतीकात्मक चित्रण आ वैचारिक नेतृत्वक आह्वान

संग्रहक पहिल कविता 'आबह न !' (पृ. ७) नेपालक तत्कालीन प्रतिगमनकारी सत्तापर एकटा प्रहारक संगहि अपन वैचारिक गुरु बी.पी. कोइरालाकें कएल गेल भावपूर्ण आह्वान अछि। कवि प्रतिगमनकें 'भूत'क रूपमे चित्रित करैत छथि। मिथिलाक लोककथा सभमे भूत प्रायः पाछाँ दिस घुमल पएबला आ रक्तपिपासु होइत अछि। कवि एहि लोक-बिम्बकें उत्कृष्ट राजनीतिक बिम्बमे परिणत करैत छथि:

"बी.पी. तोहर गाममे / भूतक प्रवेश भ' गेल छह / जे उनटे चलैत अछि ! / ओकर पएर कहाँदोन पाछाँ घुमल छैक / दाँतसभपर खून एखनो जमल छैक / आ मुहोकाँ छौं पानिमे मरलहेसन अबैत छैक / आँखि आ' कान पीठदिशि भेलासँ / ओ पछे देखैत अछि, पछे सोचैत अछि !!"।

एतय 'पाछाँ घुमल पएर' आ 'पछे सोचैत अछि' अग्रगामी समाजकें पाछाँ (निरंकुशता आ सामन्तवाद दिस) धकेलबाक राजतान्त्रिक प्रवृत्तिक अचूक प्रतीक थिक। 'दाँतपर खून' राज्य-

आतंक आ निर्दोष नागरिक हत्याक सूचक अछि। कवि चिन्तित छथि जे समाजकें एहि भूतसँ मुक्त करयबला 'भगत' (ओझा) सेहो कतै एहि भूतसँ नहि मिलि जाए, जे अवसरवादी नेता सभक सत्ताक प्रति समर्पण (दरबारसँ मिलि जएबाक प्रवृत्ति) कें व्यंग्य करैत अछि। तँ बी.पी. सन निष्ठावान क्रान्तिकारी दृष्टिक आवश्यकता अछि।

दोसर कविता 'कत्त छी, आउने !' (पृ. ८) मे सेहो एही अन्धकारमय समयमे एकटा सच्चा पथप्रदर्शकक खोज अछि।

"गल्ली-गल्लीमे हतियार नेने / टिकबासभ अछि घुमिरहल / रक्षाक नामपर ठगबासभ / सर्वस्व अछि लुटिरहल"।

राज्य जखन रक्षकसँ भक्षक बनि जाइत अछि आ 'टिकबा' (हतियारबन्द सुरक्षाकर्मी वा विद्रोही) लोककें त्रस्त करैत अछि, तखन समाज कोना दिग्भ्रमित होइत अछि, से एहिमे मार्मिक रूपें दर्शाओल गेल अछि। ई संकटकालमे नागरिक असुरक्षाक चरम यथार्थ अछि।

कविता बी.पी.क ऐतिहासिक व्यक्तित्व कें लगभग 'भगत'क भूमिकामे बोलबैत अछि — भूत भगाबय लेल। एहि ठाम भक्ति आ व्यंग्यक मिश्रण अछि। एक दिस कवि लोकतान्त्रिक आदर्शक नैतिक संरक्षक खोजैत छथि; दोसर दिस वर्तमान राजनीतिक नेतृत्वक अक्षमता स्वतः प्रकट होइत अछि: जँ मृत नेता कें वापस बोलाबय पड़ि रहल अछि तँ जीवित नेतृत्वक स्थिति की अछि? एहि प्रश्नक उत्तर कविता सीधे नहि दैत अछि, मुदा ओकर नाटकीय संरचना उत्तरसँ बेसी तीक्ष्ण प्रश्न छोड़ैत अछि।

दोसर कविता "कत्त छी, आउने !" लगभग एक छोट राजनीतिक एकालाप अछि। गल्ली-गल्ली हतियार लेने लोक, रक्षा नामपर लूट, मार्गदर्शकक अनुपस्थिति — ई सभ मिलि राज्यक असुरक्षा आ नैतिक अराजकताक दृश्य रचैत अछि। "कनेकके बाट देखाउने" पंक्ति संग्रहक एक मूल आकांक्षा खोलैत अछि: कविता स्वयं तैयार नक्शा नहि दैत, मुदा रास्ता देखाबयवाला सार्वजनिक विवेक खोजैत अछि। 'रोड-मैप'मे एहि 'बाट'क प्रश्न बादमे विडम्बनापूर्ण रूपें फेर आबैत अछि, जतय असली बाटक बदला नक्शा शासन करए लगैत अछि।

२. राज्य-आतंक, खोखला शान्ति आ निरंकुशतापर तीक्ष्ण व्यंग्य

शासक वर्ग जखन बन्दूकक बलपर जनताकें चुप कराबय चाहैत अछि, तखन ओ ओकरा 'शान्ति'क नाम दैत अछि। कविता 'शान्ति चाही मुदा फर्मा बमोजिम' (पृ. ९) मे कवि एहि थोपल गेल 'नेगेटिभ पिस' (Negative Peace) अर्थात श्मशानक शान्तिपर कटाक्ष करैत छथि: "हे हौ, शान्ति बनाबएबलासभ / फर्माबमोजिम शान्ति बनाबह / ई गोर्खालीसभक देश थीक ! / बिनु झगड़ा, रगड़ा आ' शोक / बिना हतियार, खुखुरी आ' नोंक / एहिठामक जीवनमे जीवन्तता नहि / एतय शान्तिमे हिंसा समटाएक चाही"।

एतय 'गोर्खालीसभक देश' शब्दावलीक माध्यमसँ कवि नेपालक सैन्यवादी आ एकल-जातीय अहङ्कार सँ ग्रसित राज्य-संरचनापर गहीर चोट करैत छथि। नेपालक केन्द्रीकृत सत्ता सधिखन शक्ति प्रदर्शनमे विश्वास कएलक अछि। शासकक शान्ति सेहो 'फर्मा बमोजिम' (पूर्वनिर्धारित साँचामे ढालल) होइत अछि, जाहिमे हिंसा अनिवार्य अछि। ई पंक्ति मधेशी आ सीमान्तकृत समुदायक ओहि विक्षोभकें सेहो स्वर दैत अछि, जकरा सत्ता सधिखन शंकाक दृष्टिसँ देखैत रहल अछि।

संग्रहक सर्वाधिक तीक्ष्ण, प्रखर आ व्यंग्यात्मक कविता 'दुर्रर बकलेल !' (पृ. १०-१२) थिक, जाहिमे शासकक सर्वग्रासी लोभ, पाखण्ड आ जनताक दमनक यथार्थ चारि खण्डमे चित्रित अछि। शासक वर्ग शान्ति, क्रान्ति, त्याग, नियम, स्वर्ग—सभ किछु चाहैत अछि, मुदा मात्र अपन लेल:

"श्रम चाही, संघर्ष चाही / त्याग आ' उत्सर्ग चाही / सभसँ नीक अर्थ चाही / पृथ्वीयोपर स्वर्ग चाही / की नै चाही ? सभ किछु चाही / तैं कि तोरा लेल ? / दुर्रर बकलेल ! / चाही तऽऽऽऽ / मुदा हमरालेल !!"।

एकर दोसर खण्डमे शासक जनताकें चुप रहबाक आदेश दैत अछि: "हम बजैत छी शान्त रह / खेल खेलैत छी शान्त रह / खूब पेलैत छी शान्त रह... / भूखल सुतैत छें शान्त रह / काहि कटैत शान्त रह / सोझै मरैत छें शान्त रह / यएह तँ असली शान्ति भेल"। ई सामन्ती व्यवस्थाक चरम अमानवीयताक पर्दाफाश करैत अछि जतय जनताक मृत्यु सेहो मौन रहबाक चाही जाहिसँ शासकक तथाकथित 'शान्ति' भङ्ग नहि हुअए।

तेसर खण्डमे शासकक दम्भ देखू: "राज्य छी हमहीं हमरे कहाबओ / सभ रैती अछि एम्हरे लाबओ"। ई फ्रान्सक सम्राट लुई चौदहवाँक 'L'état, c'est moi' (हमहीं राज्य छी) सन सामन्ती अहंकारक नग्न रूप अछि जे जनताकें नागरिक नहि, मात्र रैती (दास/रैयत) बुझैत अछि। ई कविता निरंकुशताक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण थिक।

“ई गोर्खालीसभक देश थीक” जेकाँ पंक्ति कें शाब्दिक जातीय निष्कर्षक रूपमे पढ़ब उचित नहि। सम्पूर्ण कविताक स्वर अतिशयोक्तिपूर्ण व्यंग्यक अछि: हिंसाक परम्परा कें स्वभाव मानि शान्तिमे सेहो हिंसा फिट करबाक तर्कक उपहास होइत अछि। कविता असलमे एहि मानसिकताक आलोचना करैत अछि जे जीवन्तता, उत्सव, वीरता वा राष्ट्रक नामपर हिंसा कें सामान्य आ आवश्यक मानि लैत अछि।

कविताक दोसर खण्डमे “हम बजैत छी शान्त रह”, “हम खाइत छी शान्त रह”, “भूखल सुतैत छैं शान्त रह” जेकाँ वाक्य अधिकारवादी शासनक संवादहीन आदेश कें पकड़ैत अछि। ई साधारण वाक्य शिल्पतः अत्यन्त प्रभावी अछि, कारण सत्ता अपन विचारधारा लम्बा भाषणमे नहि, दैनन्दिन आदेशमे प्रकट करैत अछि। तेसर खण्ड “हम सोची से जनता बाजओ” प्रतिनिधित्वक उल्टा रूप देखबैत अछि: जनता स्वयं नहि सोचत, शासक जे सोचत ओही कें जनता बाजत। एतय कवि लोकतन्त्रक नकली संस्करण — जनताक नामपर नेतृत्वक आत्म-प्रतिध्वनि — पर वार करैत छथि।

पाँचम खण्डमे कवि जातीय-साम्प्रदायिक राजनीतिकें लक्ष्य बनबैत छथि — ‘के छह हिन्दू चौर डोलाबह, जौं छह बौद्ध तँ सम्यक कराबह... जौं मुगुरालि त पगड़ी बढ़ाबह’ — जाहिमे धर्म-सम्प्रदायक नामपर वोट-बैंक राजनीतिपर तीखा टिप्पणी अछि। ई कविता समग्रतामे नेपाली राजनीतिक वर्गक अवसरवादपर एकटा सम्पूर्ण चित्रात्मक अभियोग-पत्र बनि जाइत अछि।

८. ‘ई आन्दोलन देखा देत’: इतिहासक दिशा आ प्रतिगमनक विरोध

एहि कवितामे आन्दोलन इतिहासक अग्रगामी बल अछि। “काल तँ आगाँ ने बढ़तैक यौ” पंक्ति कविक काल-दृष्टि स्पष्ट करैत अछि: समयक स्वाभाविक दिशा आगू अछि, प्रतिगमन काल-विरुद्ध चेष्टा अछि। “पछमुँडियाक” बिम्ब ओहि शक्तिक लेल अछि जे इतिहासक दिशा उलटब चाहैत अछि। आन्दोलन ओकरा “सोझे मेटा देत” — ई भाषा ललकारपूर्ण अछि, मुदा कविता

केवल दमनक प्रतिदमन नहि, भय-आतंक पर आधारित सत्ताक ऐतिहासिक अस्थायित्वक घोषणा करैत अछि।

एकर सीमा सेहो एतय देखाइत अछि। इतिहास सदा रेखीय रूपेँ आगाँ नहि बढ़ैत; लोकतान्त्रिक उपलब्धि उलटियो सकैत अछि। मुदा काव्यक राजनीतिक क्षणमे ई विश्वास रणनीतिक ऊर्जा बनैत अछि। आन्दोलनी कविता अक्सर तथ्यात्मक भविष्यवाणी नहि, सामूहिक साहसक निर्माण करैत अछि। एहि दृष्टि सँ “देखा देत” भविष्यकाल भाषिक प्रतिरोधक औजार अछि।

३. आन्दोलनक आह्वान आ नेतृत्वक अवसरवादितापर आत्मनिरीक्षण

कवि मात्र सत्ताक अन्ध-आलोचक नहि छथि, ओ आन्दोलनक भितरका अवसरवादिता, पाखण्ड आ नेतृत्वक विफलताकें सेहो सूक्ष्म दृष्टिसँ देखैत छथि। राजनीतिक दलक नेता होइबाक कारणेँ लालकें राजनीतिकर्मिक दोहरी चरित्रक गहीर ज्ञान अछि। 'चलू आन्दोलनमे !' (पृ. १४-१६) कवितामे ओ जनताकें आन्दोलनमे आबक आह्वान तँ करैत छथि, मुदा संगहि नेता सभक स्वार्थपर कड़ा आत्मनिरीक्षण सेहो करैत छथि:

"आहाँक त्याग अछि / हिनकर लगानी छन्हि / आहाँ बलिदानी छी / हिनकर फुटानी छन्हि /
आहाँक भिक्षाटन अछि / तऽ एतए कारदानी छन्हि / मारि आहाँ खएने हएब / मुदा हिनकामे
मर्दानी छन्हि"।

ई पद्य पंक्ति क्रान्तिक कटु सत्य थिक। आन्दोलनमे आम जनता, गरीब आ सीमान्तकृत वर्ग रक्त बहाबैत अछि, मुदा तकर लाभांश अवसरवादी नेता सभ 'लगानी'क रूपमे वसूल करैत छथि। जनता मरि कऽ सेहो किछु नहि पबैत अछि, आ नेता बिना किछु कएने 'मर्दानी' देखाबैत छथि। "रक्तबीजक जीन आ' लाज भेल लोप छन्हि" कहिकए कवि स्पष्ट करैत छथि जे एक निरंकुश शासककें हटेलाक बादो ओकरे सन प्रवृत्ति भेल दोसर शासक (रक्तबीज दानव जकाँ) जन्म लऽ लैत अछि। ई कविता वृषेश चन्द्र लालक अपन मोहभंगकें सेहो दर्शाबैत अछि, जे कालान्तरमे हुनका परम्परागत पार्टी (नेपाली कांग्रेस) छोड़ि नव विकल्प (तमलोपा) दिस प्रवृत्त केलक।

अत्याचारी सत्ताक प्रतिकार लेल 'देर छैक अन्हेर नहि !' (पृ. १७-१८) मे कवि 'बाघक छाल ओढ़ने गीदड़' (कायर मुदा क्रूर शासक) सँ नहि डराबक सन्देश दैत छथि। "बज्रसन मुठि अछि / बान्हि कसि प्रहार करु" कहिकए जनताक सुप्त शक्तिमे विश्वास जगाबैत छथि।

शीर्षक सुनिते पहिने ई सामान्य आह्वान लगैत अछि; ध्रुवपद "जिन्दाबाद मुर्दाबाद करए / चलू आन्दोलनमे !" आन्दोलनक परिचित ध्वनि जगबैत अछि। मुदा खण्ड दर खण्ड कविता नारा केँ उलटि ओकर भीतरक विडम्बना खोलैत अछि। वांछित केँ मँगाबय, अवांछित केँ भगाबय, पीड़ित केँ जगाबय आ पीड़क केँ हड़काबयक आदर्श आरम्भमे अछि; तुरन्त बाद बलिदान, शहीदी, स्वर्ग, मान-सम्मान आ नेतृत्वक प्रतिष्ठाक अर्थशास्त्र प्रश्न बनि उठैत अछि।

जाति, कँखचप्पी, अपराधीक समर्थन, रक्तबीज, नेतृत्व-लालसा — कविता आन्दोलनक भीतरक विकृति-सभ केँ बाहरक शत्रुसँ कम खतरनाक नहि मानैत अछि। अन्तिम खण्डमे "आन्दोलन बिनु आहाँ जी नहि सकब / हिनकर जीवने आन्दोलनमे छन्हि" पेशेवर आन्दोलनकारी नेतृत्व पर प्रहार अछि। जनता आगाँ, नेता पाछाँसँ ठेलैत; अन्ततः "फेरसँ नेते बनताह"। एहि व्यंग्यक कारण 'आन्दोलन' संग्रह आत्ममुग्ध प्रतिरोध-काव्य नहि रहैत, आत्म-परीक्षणक क्षमता अर्जित करैत अछि।

शीर्षक लोक-प्रचलित आश्वासनक पुनर्संयोजन अछि: देर हो सकैत अछि, न्याय पूर्णतः नष्ट नहि। कविता "वारपर प्रतिकार करू" कहैत अछि। एतय प्रश्न उठैत अछि — की ई हिंसक प्रतिहिंसाक समर्थन अछि? सम्पूर्ण संग्रह देखला पर उत्तर सरल 'हाँ' नहि। कविक भाषा प्रतिरोधक अछि, मुदा ओ शान्तिक नामपर हिंसा, बन्दूकक निर्दोष हत्या आ बलिदानक व्यापारक आलोचक सेहो छथि। "प्रतिकार" केँ एतय अधीनता छोड़ि अधिकार धारण करबाक राजनीतिक अर्थमे पढ़ब अधिक संगत अछि।

"सहस्र कण्ठ" आ "वज्रसन मुठ्ठी" जेकाँ बिम्ब सामूहिकता उत्पन्न करैत अछि। व्यक्तिगत वीर-नायकक बदला हजार कण्ठक आवाज़ महत्त्वपूर्ण अछि। एहि बिन्दुपर संग्रहक लोकतान्त्रिक संवेदना स्पष्ट अछि: परिवर्तनक नैतिक आधार जनसमूह अछि, एकल उद्धारक नहि — यद्यपि पहिल कविता बी.पी. केँ प्रतीकात्मक उद्धारकक रूपमे बोलबैत अछि। ई आन्तरिक तनाव संग्रह केँ रोचक बनबैत अछि।

त्याग करू बलिदान करू

ई आहाँक धर्म थिक

मानवक जीवनकेर

यएह तँ लक्ष्य आ मर्म थिक

४. खोखली राष्ट्रियता आ विदेशी हस्तक्षेपपर दार्शनिक विमर्श

राजनीतिक आन्दोलनक परिप्रेक्ष्यमे राष्ट्रियताक परिभाषा सधखन विवादित रहल अछि। मधेशक भूमिसँ उठल कवि वृषेश चन्द्र लाल, जे संघीयता आ मधेशी पहिचानक मुखर वकिल छथि, 'हाय, हमर राष्ट्रियता !' (पृ. १९-२१) कवितामे नेपालक कातर, भयभीत, कृत्रिम आ सङ्कीर्ण राष्ट्रियतापर दार्शनिक प्रश्न ठाढ़ करैत छथि।

"सात रङ्ग समेटिकए / चमकल ई सूर्य अछि / अनेक होइछ एक तखन / गमकैत अपूर्व अछि / तों मुदा एक छाड़ि / देखि दू खरा जाइत छह / फुला अनेरे मुह अपन / कन्दरामे नुका जाइत छह / तों कतए भसिया जाइत छह"।

ई कविता राज्यद्वारा थोपल गेल ओहि 'एकल-पहिचान' (महेन्द्रीय राष्ट्रवाद) बला राष्ट्रवादपर प्रहार अछि जे देशक भाषिक, सांस्कृतिक आ जातीय विविधतासँ डरा जाइत अछि। सन्तुलित राष्ट्रियता सात रङ्ग (इन्द्रेणी) सन अनेकतामे एकता सँ बनैत अछि, मुदा नेपालक पारम्परिक राष्ट्रियता विविधता देखिते कन्दरामे नुका जाइत अछि, आ "माटिमे लेढ़ा जाइत छह"। ई मधेश आन्दोलनक बौद्धिक बीजारोपण सेहो थिक।

तहिना, 'रोड-म्याप' (पृ. २२-२३) कवितामे विदेशी शक्तिक मध्यस्थता, महल-केन्द्रित कागजी शान्ति-प्रक्रिया आ एन.जी.ओ. मार्का समाधानक उपहास उड़ावल गेल अछि। विदेशी सभक बनाएल 'रोड-म्याप' मे देशक वास्तविक समस्याक लेल कोनो स्थान नहि अछि। कवि व्यंग्य करैत छथि जे एहि रोड-म्याप सँ देशक प्रगति तँ नहि हएत, मुदा "देशे रोडपर घुसकतैक / आब देशे रोडपर घुसकतैक !" अर्थात् देश स्वयं सडकपर आबि जएतैक, भिखमंगा वा घरबारविहीन भ' जएतैक।

चार खण्डक ई कविता संग्रहक वैचारिक रूपेँ सर्वाधिक परिपक्व रचनासभमे सँ एक अछि। कवि राष्ट्रियता केँ स्वतः पवित्र मूल्य मानि नहि चलैत छथि; ओ ओकर व्यवहार देखैत छथि। जड़

छोड़ि मूल खोजब, बात बिना तमसाब, अक्षर कोरला पर डरब, सभकेँ जोड़बाक बदला एकहि सँ लोटाब — एहि बिम्बसभमे असुरक्षित, भय-उत्पादक, एकरूपतावादी राष्ट्रियताक चित्र अछि। ई पंक्तिसभ राष्ट्रक बहुलतावादी सौन्दर्यशास्त्र रचैत अछि। सात रंग अलग रहिते इन्द्रधनुष बनैत अछि; एकरूपता रंगक विलोपन नहि, सह-अस्तित्वक संयोजन अछि। “तँ मुदा एक छाड़ि / देखि दू खरा जाइत छह” संकीर्ण राष्ट्रियताक बीमारी अछि — बहुलता देखिते ओकरा विभाजन नजरि पड़ैत अछि। एतय लालक काव्य राजनीतिक बहुलतावादक समर्थक बनि उठैत अछि। बादक संघीयता-विमर्शक आलोकमे ई पंक्ति रोचक लगि सकैत अछि, मुदा मूल कविता केँ ओकर २००४क प्रसंगमे पढ़ल अधिक ऐतिहासिक रूपेँ उचित अछि।

कविताक ध्रुवपद “सभ उड़ैछ अन्तरिक्षमे / तँ माटिमे लेढ़ा जाइत छह” आधुनिकता आ संकीर्णता बीच तीक्ष्ण विरोध रचैत अछि। दुनिया आगे बढ़ि रहल अछि, मुदा राष्ट्रियता माटिमे लोटि रहल अछि — माटि एतय मातृभूमिक पवित्रता नहि, जड़ता आ आत्म-संकुचनक बिम्ब बनि जाइत अछि। एकहि शब्दक अर्थ बदलि देबाक ई काव्य-कौशल उल्लेखनीय अछि।

‘रोड-मैप’ राजनीतिक-प्रशासनिक अंग्रेजी शब्दक मैथिली व्यंग्यात्मक पुनर्रचना अछि। गामक ‘बतहा’ एकटा नक्शा किनि आनैत अछि; कहैत अछि, एहिमे रोड जाल जकाँ बिछाएल अछि। धीरे-धीरे असली देश, लोक आ पीढ़ी नक्शाक अधीन भ’ जाइत अछि। ध्रुवपद — “देशमे नइ रहतैक रोड / देशे रोडपर घुसकतैक” — विकास-योजनाक उलटबाँसीक उत्कृष्ट उदाहरण अछि। साधन देशक सेवा करबाक बदला देश साधनक भीतर घुसि रहल अछि।

“विदेशीसभ बड़का-बड़का रोड बनओलक” आ ओकरासँ बड़का “मैप” चमकओलक — एहि कथनमे बाहरी सहायता, परियोजना, नीतिगत नक्सा आ सार्वभौमिकताक प्रश्न एक संग उठैत अछि। कविता विदेश-विरोधी सरल राष्ट्रवाद नहि रचैत; असली आलोचना नक्सा-निर्भर शासनक अछि, जतय स्थानीय जीवनक जटिलता कागजी मार्गक अधीन भ’ जाइत अछि। ‘बतहा’ पात्रक प्रयोग व्यंग्य केँ लोक-नाटकीय सहजता दैत अछि।

५. गणतन्त्रक उद्घोष आ क्रान्तिकारी आशावाद

संग्रहक वैचारिक उत्कर्ष 'हँ, हँ लोककै गणतन्त्र चाही !' (पृ. २४) में प्रकट होइत अछि। ई कविता केवल शासन-सुधारक वा मन्त्री बदलबाक मांग नहि, अपितु सम्पूर्ण सामन्ती ढाँचाकें उखाड़ि फेंकबाक आ गणतन्त्र (Republic) स्थापनाक प्रखर घोषणा अछि:

"हँ, हँ ई लड़ाई सत्ताके छैक / रोटी, देहरि आ' लत्ताके छैक / लोक नइ छैक बपौती ककरो / ठीके ई लड़ाई जनसत्ताके छैक... / नगाड़ा पिटि आब जोरसँ डड्का बजाओत जनता / हँ, हँ रावणक लड्का सुड्डाह क' जराओत जनता !!"।

एतय 'रावणक लंका' सामन्ती राजतन्त्रक प्रतीक थिक, जकरा आम जनता जराबए लेल तयार अछि। लोकतन्त्रमे देश ककरो बपौती (निजी सम्पत्ति) नहि होइत अछि, आ ई कविता ओही जनसत्ताक वकालत करैत अछि।

अन्ततः, 'काल मड़इइत छैक !' (पृ. २५) आ 'इजोतदिसि ससरत !' (पृ. २६) कविता सभमे अत्याचारी शासकक पतनक सुनिश्चितता आ लोकतन्त्रक भोरक आशावाद प्रतिध्वनित अछि। शासक "अपने जालमे फँसल अछि" आ "खूनल अपने खाधिमे खसि तमसाइत छैक"। जतेक बन्दूक गरजे, क्रान्तिक रंगकें नहि रोकि सकैत अछि:

"बन्दूक आइयो गर्जेत अछि / बन्दूक काल्हियो गर्जत / नहि जानि कतेक निरीह आ' निर्दोषपर / भोथहा कुरहरि बजरत / मुदा तैयो होरीमे रङ्ग बरिसते रहतैक / आ' उमङ्ग एकर आओरो पसरत / एखुनका जे अन्हार दिन अछि / अबस्से इजोतदिशि ससरत !"।

एहि कविता में संग्रहक राजनीतिक लक्ष्य सर्वाधिक स्पष्ट अछि: लड़ाई सत्ता लेल अछि, मुदा सत्ता केकर? उत्तर — जनसत्ता। “लोक नइ छैक बपौती ककरो” आधुनिक नागरिकताक मूल घोषणा अछि। जनता दया वा भीखक पात्र नहि; ओ अधिकारक धारक अछि। “लठैतक लाठी बहुत सहलक ई / अपन ठेङ्गे सही मुदा उठाओत जनता” पंक्ति निर्भरता छोड़ि आत्मबलक रूपक बनैत अछि।

दोसर खण्डमे “अपने यन्त्र”, “अपन पूरा स्वतन्त्र”, “ककरो रैती नइ बनत”, “समता मात्र समताक मन्त्र” — ई चार सूत्र गणतन्त्र केँ केवल राजतन्त्र-विरोध नहि, नागरिक स्वामित्व, स्वतन्त्रता, गैर-रैयतीकरण आ समताक कार्यक्रम बनबैत अछि। एहि कारण कविता ‘गणतन्त्र’ शब्दक संस्थागत अर्थसँ आगे सामाजिक लोकतन्त्रक अर्थ ग्रहण करैत अछि।

अन्तिम दू कविता संग्रहक भाव-यात्रा पूर्ण करैत अछि। “काल मड़ड़ाइत छैक”मे इतिहास लगभग आकाशमे घुमैत बाज जकाँ अछि; मुदा चारूभर जनताक झण्डा फहराइत अछि। शोषक अपने खोदल खाधिमे खसल, अपने जालमे फँसल — कर्मफल-सदृश राजनीतिक बिम्ब अछि। “नष्ट हएत समूल” घोषणा आन्दोलनी ओजक चरम रूप अछि।

मुदा अन्तिम कविता आशा केँ अधिक जटिल ढंगसँ रचैत अछि। “बन्दूक आइयो गर्जैत अछि / बन्दूक काल्हियो गर्जत” — कवि भविष्य केँ झूठी शान्तिसँ सजाबैत नहि छथि। निर्दोष पर प्रहार जारी रहत; तथापि होरीमे रंग बरिसत, उमंग पसरत, अन्हार दिन “इजोतदिसि ससरत”। ई बहुत महत्त्वपूर्ण अन्त अछि: आशा हिंसाक अनुपस्थिति नहि, हिंसाक बीच जीवनक अविरत पुनरुत्पादन अछि। एहि कारण अन्तिम स्वर नारा सँ अधिक मानवीय बनि उठैत अछि।

कविताक शीर्षक	मूल विषयवस्तु आ सन्देश	राजनीतिक सन्दर्भ
आबह न !	बी.पी. केँ आह्वान, प्रतिगमनरूपी भूतक चित्रण	शाही कू (२००२-२००५), राजतन्त्रक पुनरुत्थानक प्रयास
शान्ति चाही मुदा फर्मा बमोजिम	सैन्यवादी राज्यक खोखला शान्तिपर व्यंग्य	सैन्य परिचालन आ माओवादी द्वन्द्वक बीच पिसल जनता
दुर्रि बकलेल !	निरंकुश शासकक पाखण्ड आ जनताक दमन	वाक स्वतन्त्रतापर प्रतिबन्ध आ राजाक निरंकुश महत्वाकांक्षा
चलू आन्दोलनमे !	आन्दोलनक आह्वान संगहि अवसरवादी नेतापर प्रहार	क्रान्तिमे आम जनताक शहादत आ नेताक सत्तालोलुपता
हाय, हमर राष्ट्रीयता !	सङ्कीर्ण, डराएल आ विविधता-विरोधी राष्ट्रवादक खण्डन	मधेशी आ अन्य सीमान्तकृत समुदायकेँ अराष्ट्रिय मानबाक शासकीय मानसिकता
हँ, हँ लोककै गणतन्त्र चाही !	पूर्ण गणतन्त्र आ जनसत्ताक क्रान्तिकारी उद्घोष	राजतन्त्रक अन्त्य आ लोकतान्त्रिक गणतन्त्रक लेल जनआन्दोलन

काव्यगत शिल्प, बिम्बविधान आ भाषिक सौन्दर्य

वृषेश चन्द्र लालक 'आन्दोलन' कविता संग्रहक शिल्प-सौन्दर्य ओकर सरलता, तीक्ष्णता आ मैथिलीक मौलिक माटिक गन्धमे निहित अछि। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद 'विमल' एकर "आलंकारिता, विम्वत्माकता, प्रतीकात्मकता, नग्न यथार्थक चित्रण, आह्वान, आक्रोश आ' अद्भूत शिल्प-विच्छिति" कें रेखांकित कएने छथि।

पारम्परिक मैथिली कवितासभ प्रायः संस्कृतनिष्ठ शब्दावली (तत्सम शब्द) सँ बोझिल रहैत छल, जकरा आम जनताकें बुझबामे कठिनाई होइत छल। मुदा लालक कविताक भाषा पूर्णतः जनभाषा थिक।

ठेट / देशज शब्दावलीक प्रयोग: कवि मैथिलीक तद्भव आ देशज शब्दावलीक अत्यन्त सजीव प्रयोग कएने छथि। जेना—'पछमुड़िया' (पाछाँ घुमल), 'फर्मा' (साँचा), 'बकलेल' (मूर्ख), 'धहलेल', 'घोकचिकए' (संकुचित भ' क'), 'लेढ़ा जाइत' (खराब भ' रहल), 'सुझाह' (पूर्णतः जारब), 'रैती' (रैयत/प्रजा), 'भसियाकए', 'टिकबा', 'ठगबा'। ई शब्द लोकभाषाक शक्ति बनिक् पाठकक हृदयमे सीधा प्रहार करैत अछि आ क्रान्तिक विमर्शकें खेत-खलिहान धरि पहुँचाबैत अछि।

दृश्य एवं गतिज बिम्ब (Visual & Kinetic Imagery): संग्रहमे दृश्य आ गतिज बिम्बक अद्भुत संयोजन अछि। प्रतिगमनकें 'पाछाँ घुमल पएर' आ 'दाँतपर खून' जमल भूतक रूपमे, दमनकारी सत्ताकें 'बाघक छाल ओढ़ने गीदड़'क रूपमे, तथा अत्याचारीक सर्वनाशकें 'रावणक लङ्का सुझाह जराबैत' दृश्य बिम्बक रूपमे उपस्थित कएल गेल अछि। ई अमूर्त राजनीतिक विचार सभकें पाठकक मस्तिष्कमे चित्र जकाँ ठाढ़ कऽ दैत अछि।

रस एवं वक्रोक्ति (Irony & Satire): संग्रहमे प्रधान रूपे वीर, रौद्र एवं वीभत्स रसक संग हास्य-व्यंग्यक वक्रोक्ति विद्यमान अछि। 'दुर्र बकलेल !' आ 'शान्ति चाही मुदा फर्मा बमोजिम' राजनीतिक व्यंग्यक उत्कृष्ट प्रतिमान थिक। एहिमे शासकक अमानवीयताकें हास्यक माध्यमसँ उदाङ्ग कएल गेल अछि, जे पाठककें हँसबैत-हँसबैत गहीर पीड़ाक अनुभूति कराबैत अछि।

१५. भाषा: जनपदीय मैथिली, राजनीतिक मुहावरा आ वाचिक ऊर्जा

संग्रहक भाषा संस्कृतनिष्ठ गाम्भीर्यक प्रदर्शन नहि करैत। “हौ”, “तँ”, “आबह”, “कत्त छी”, “नइ”, “कनेक्के”, “बकलेल”, “ठेङ्गा”, “बतहा” जेकाँ लोक-प्रयोग कविता कें बोलैत आवाज़

दैत अछि। एहि वाचिकता कारण कविता मंच, सभा, जनसंवाद आ पाठ — सभठाम प्रभाव पैदा करबाक क्षमता रखैत अछि। वाक्य छोट अछि, पुनरावृत्ति प्रचुर अछि, ध्रुवपद बारम्बार लौटैत अछि। ई शैली राजनीतिक कविताक स्मरणीयता बढ़बैत अछि।

कवि अंग्रेजी-प्रशासनिक पद “रोड-मैप” केँ ज्योंक-त्यों अपनबैत छथि, मुदा ओकरा मैथिली लोकबोधक बीच राखि अर्थ उलटि दैत छथि। एही तरह ‘जिन्दाबाद-मुर्दाबाद’ राजनीतिक सार्वजनिक भाषाक तैयार सूत्र अछि, जकरा “चलू आन्दोलनमे !” व्यंग्यात्मक प्रतिध्वनि बना दैत अछि। लालक भाषा-रणनीति एहि अर्थमे उत्तर-औपनिवेशिक सेहो कहल जा सकैत अछि जे बाहरसँ आएल राजकीय/विकासात्मक शब्दावली केँ स्थानीय भाषिक विवेकक अदालतमे खड़ा करैत अछि।

१६. शिल्प: पुनरावृत्ति, सम्बोधन, विडम्बना, प्रतीक आ दृश्यात्मकता

१६.१ पुनरावृत्ति आ ध्रुवपद

लगभग प्रत्येक प्रमुख कविता अपन एक ध्वनि-वाक्य बारम्बार दोहरबैत अछि — “ई आन्दोलन देखा देत”, “चलू आन्दोलनमे”, “देर छैक अन्हरे नहि”, “हाय, हमर राष्ट्रियता”, “देशे रोडपर घुसकतैक”, “काल मड़ड़ाइत छैक”। पुनरावृत्ति यहाँ केवल संगीत नहि; प्रत्येक वापसीक बाद अर्थ बदलैत अछि। उदाहरणत: “चलू आन्दोलनमे” पहिने उत्साह, बादमे शंका, अन्ततः व्यंग्यक स्वर ग्रहण करैत अछि।

१६.२ नाटकीय सम्बोधन

बी.पी., अनुपस्थित मार्गदर्शक, शान्तिक व्यापारी, राष्ट्रियता, जनता — कवि निर्जीव अमूर्त विचार केँ प्रत्यक्ष सम्बोधित करैत छथि। एहि काव्य-उपायसँ विचार संवाद बनैत अछि। पाठक केवल तर्क नहि सुनैत, मानो सभामे आवाज़ सुनैत अछि।

१६.३ व्यंग्य आ उलटबाँसी

“शान्तिमे हिंसा समटाएक चाही”, “आहाँक त्याग अछि / हिनकर लगानी”, “देशमे नइ रहतैक रोड / देशे रोडपर घुसकतैक” — ई उलटबाँसी संग्रहक सर्वश्रेष्ठ काव्य-प्रविधि अछि। कवि विरोधाभास केँ समझबैत नहि छथि; वाक्यक भीतर टकरा दैत छथि। पाठक स्वयं विसंगति अनुभव करैत अछि।

१६.४ प्रतीक-परिवार

अन्हार—इजोत, भूत—जीवन, रक्त—झण्डा, माटि—अन्तरिक्ष, रोड—मैप, लाठी—ठेङ्गा, बन्दूक—होरीक रंग — ई द्वन्द्वात्मक प्रतीक संग्रहक संरचना बाँधैत अछि। विशेषतः अन्हारसँ इजोत धरि यात्रा आरम्भिक संकट आ अन्तिम आशा बीच आन्तरिक वास्तु बनबैत अछि।

१७. दक्षिण एशियाई प्रतिरोध-काव्यक प्रसंगमे स्थान

राजनीतिक व्यंग्य, लोकभाषा, जनपक्षधरता आ सत्ता पर सीधा प्रहार भारतीय उपमहाद्वीपक अनेक प्रतिरोध-काव्य परम्परामे भेटैत अछि। मैथिली-हिन्दी दुनू साहित्यक व्यापक परिप्रेक्ष्य मे नागार्जुनक जनभाषिक राजनीतिक व्यंग्यक स्मृति स्वतः जागि सकैत अछि; हिन्दीमे धूमिलक सत्ता-सन्देह, लोकतान्त्रिक शब्दावलीक विखण्डन आ नागरिक आक्रोश सेहो तुलनात्मक दृष्टि देइत अछि। मुदा लालक काव्यक विशिष्टता नेपालक लोकतान्त्रिक संकट, बी.पी. कोइरालाक प्रतीकात्मक उपस्थिति, गोर्खाली राज्य-रूपक, जनकपुरक भाषिक-सांस्कृतिक धरातल आ नेपाली मैथिली राजनीतिक अनुभवक संयोगमे अछि।

तुलना करैत समय सावधानी जरूरी अछि: 'आन्दोलन'क कविता भाषिक प्रयोगवाद वा गहन आत्म-मनःसंघर्षक काव्य नहि; ई सार्वजनिक काव्य अछि। एकर मूल मंच व्यक्ति-मन नहि, नागरिक चौक अछि। एही कारण एकरा ओहि मानदण्डसँ मापब उचित नहि जे पूर्णतः निजी, रूपवादी वा रहस्यात्मक कविता लेल बनल हो। एकर सफलता जनभाषिक संप्रेषण, व्यंग्यक मार, ऐतिहासिक तत्परता आ नैतिक स्पष्टतामे अछि।

वृषेश चन्द्र लालक कृतित्वमे 'आन्दोलन'क स्थान

'आन्दोलन'कऽ कवि वृषेश चन्द्र लालक व्यापक साहित्यिक-राजनीतिक कृतित्वक सन्दर्भमे राखि देखबऽ आवश्यक अछि। पोथीक अन्तमे देल परिचयक अनुसार, कवि (जन्म १९५५ ई., चैत्र १६, २०११ सालमे) बी.पी. कोइरालाक प्रतिबद्ध राजनीतिक अनुयायी छथि, आ राष्ट्रिय दैनिकसभमे नेपाली राजनीतिपर नियमित लिखैत रहैत छथि। एहि संग्रहक अतिरिक्त हुनकर प्रकाशित कृतिसभमे बी.पी. कोइरालाक प्रसिद्ध लघु उपन्यास 'मोदिआइन'क मैथिली रूपान्तरण, कथा-संग्रह 'माल्हो', आ अनुवाद 'संघीयताक सम्बन्धमे' शामिल छथि।

ई तथ्य विशेष महत्वपूर्ण अछि जे 'आन्दोलन', बी.पी. कोइरालाक 'सुम्निमा'क मैथिली अनुवाद, आ पछाति प्रकाशित कविता-संग्रह 'ढोलक' — एहि कृतिसभकेँ एकसंग देखलापर कवि-अनुवादक वृषेश चन्द्र लालक साहित्यिक-राजनीतिक परियोजनाक एकटा रूपरेखा उभरैत अछि। एहि त्रयीकेँ एकसंग देखलापर कवि-अनुवादक वृषेश चन्द्र लालक साहित्यिक-राजनीतिक परियोजनाक एकटा स्पष्ट रूपरेखा उभरैत अछि — बी.पी. कोइरालाक लोकतान्त्रिक-समाजवादी विचारधाराक मैथिली भाषामे सतत् प्रसार (अनुवादक माध्यमे), आ समकालीन नेपाली राजनीतिक संकटपर मौलिक काव्यक माध्यमसँ प्रत्यक्ष हस्तक्षेप ('आन्दोलन' आ 'ढोलक'क माध्यमसँ)। 'आन्दोलन' एहि त्रयीमे सभसँ बेसी तात्कालिक आ नारात्मक स्वरवाला कृति थिक — जतय 'ढोलक'मे सामाजिक न्याय (दलित-चेतना, स्त्री-विमर्श) क विस्तृत आयाम भेटैत अछि, ओतय 'आन्दोलन' विशुद्ध रूपे एकटा तात्कालिक राजनीतिक संकट (संसद-विघटन) क प्रत्यक्ष काव्यात्मक प्रतिक्रिया थिक।

'आन्दोलन'क वि.सं. २०६१ प्रकाशन-सन्दर्भक कारण एकरा २०२१–२०२२ ई.क निकट प्रकाशनकालमे राखबाक मत कालक्रमसँ मेल नहि खाइत अछि; तथापि 'सुम्निमा', 'ढोलक' आ 'आन्दोलन'केँ वैचारिक-कृतित्वगत सम्बन्धमे एकसंग पढ़बाक प्रस्ताव अपन आलोचनात्मक महत्त्व राखैत अछि।

नेपालीय मैथिली साहित्यमे पोथीक ऐतिहासिक स्थान

नेपालीय मैथिली साहित्यक एकटा विशाल परम्परा रहल अछि, जकरामे विद्यापतिक शृंगार आ भक्तिसँ ल' क' आधुनिक कालक सामाजिक यथार्थवाद धरि शामिल अछि। रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर', राजेन्द्र विमल, धीरेन्द्र प्रेमर्षि आदि स्रष्टा सभ नेपालीय मैथिलीकेँ समृद्ध कएने छथि। मुदा, राजनीतिक कविताक धारा मैथिलीमे उपस्थित रहितो, एकटा पूर्ण कविता संग्रह जे विशुद्ध रूपेँ समसामयिक राजनीति, सत्ताक क्रूरता, राज्य-दमन, आ जनआन्दोलनक हुंकारपर केन्द्रित हुअए, से विरल छल।

डा. विमलक दाबी सत्य अछि जे "नेपालीय मैथिली साहित्यमे पहिल बेर एहन कोनो कविता संग्रह आएल जाहिमे प्रत्येक कविता समसामयिक राजनीतिसँ प्रेरित अछि"। वृषेश चन्द्र लालक ई प्रयास एक दिस मैथिली कविताकेँ कोठलीक बिलास आ आदर्शवादी प्रवचनसँ बहार निकलि सडकक क्रान्तिकारी मोर्चापर ठाढ़ करैत अछि, तँ दोसर दिस लोकतान्त्रिक कार्यकर्ता सभकेँ

एकटा वैचारिक हतियार प्रदान करैत अछि। बी.पी. कोइरालाक समाजवाद, मधेशक सीमान्तकृत चेतना, आ लोकतन्त्रक सार्वभौम मूल्य—एहि तीनू धाराक त्रिवेणी एहि 'आन्दोलन' संग्रहमे प्रवाहित भेल अछि।

१८. काव्य-संग्रहक मुख्य उपलब्धि

राजनीतिक कविता केँ दलगत प्रचार बनबाक खतरा सँ बचबैत, सत्ता आ आन्दोलन — दुनू पर आलोचनात्मक दृष्टि राखब।

समकालीन इतिहासक जटिल प्रश्न केँ लोकभाषिक, स्मरणीय आ दृश्यात्मक बिम्बमे रूपान्तरित करब।

राष्ट्रियता केँ बहुलता, नागरिक साहस आ समताक कसौटी पर जाँचब।

शान्ति, विकास, बलिदान आ नेतृत्व जेकाँ सकारात्मक शब्दक भीतर छिपल स्वार्थी राजनीति खोलब।

जनता केँ करुण पात्रक रूपमे नहि, राजनीतिक कर्ता आ जनसत्ताक स्रोतक रूपमे उपस्थित करब।

अन्तिम आशा केँ सरलीकृत विजय-घोषणा नहि, चलैत हिंसा बीच जीवनक जिजीविषाक रूपमे रचब।

१९. सीमासभ आ आलोचनात्मक प्रश्न

गम्भीर साहित्यिक मूल्यांकन प्रशंसामात्र नहि होइत अछि। 'आन्दोलन'क शक्ति जतेक स्पष्ट अछि, किछु सीमा सेहो ओतबे देखाइत अछि। पहिल, अनेक कविता तत्कालीन राजनीतिक संकेत पर बहुत निर्भर अछि; बी.पी., प्रतिगमन, गोर्खाली सत्ता-मानस, आन्दोलनकारी नेतृत्वक विशेष प्रसंग नहि बुझनिहार भावी पाठक लेल किछु व्यंग्यक पूरा धार कम भ' सकैत अछि। एहि कारण आलोचनात्मक संस्करणमे ऐतिहासिक टिप्पणी लाभकारी होइत।

दोसर, नारा-जकाँ ध्रुवपद कतेको ठाम ऊर्जावान अछि, मुदा किछु खण्डमे पुनरावृत्ति काव्य-घनत्व घटबैत अछि। ओजस्विता कभी-कभी सूक्ष्मता पर भारी पड़ैत अछि। तेसर, संग्रहक केन्द्र राष्ट्रीय सत्ता-संकट अछि; स्त्री, श्रमक विशिष्ट अनुभव, दलित प्रश्न, वर्गक सूक्ष्म जीवन-दृश्य,

ग्रामीण अर्थनीति जेकाँ आयाम संकेत रूपेँ उपस्थित भ' सकैत अछि, मुदा स्वतन्त्र काव्य-विस्तार नहि पबैत अछि।

चारिम, इतिहासक “आगाँ बढबाक” विश्वास प्रेरक अछि, मुदा राजनीतिक इतिहासक टेढ़ापन, आन्दोलनक विफलता, जनताक आन्तरिक विभाजन आ लोकतान्त्रिक संस्थाक जटिलता किछु कम स्थान पबैत अछि। तथापि “चलू आन्दोलनमे !” आ “हाय, हमर राष्ट्रियता !” एहि सरल रेखीयताक भीतर जरूरी आत्म-संशय प्रवेश करबैत अछि; एहि दू कविता कारण संग्रह एकमुखी घोषणावादसँ बचि जाइत अछि।

निष्कर्ष आ समकालीन प्रासंगिकता

समग्रतः, वृषेश चन्द्र लाल रचित 'आन्दोलन' मैथिली कविता संग्रह केवल किछु पद्यक संगालो वा साहित्यिक आनन्दक पोथी मात्र नहि अछि, अपितु नेपालक ऐतिहासिक राजनीतिक संक्रमण-कालक एकटा जीवन्त, ज्वलन्त आ प्रामाणिक घोषणापत्र थिक। जखन देशमे निरंकुशताक कालो मेघ मड़रा रहल छल, जखन बन्दूकक संगीनकेँ 'शान्ति'क नाम देल जा रहल छल, आ जखन नागरिक अधिकारक चीरहरण भ' रहल छल, तखन एहि कविता सभहक जन्म भेल। कवि लाल अपन लामो राजनीतिक अनुभव, सामाजिक संवेदनशीलता, आ मैथिली भाषाक लोक-शक्तिक अद्भुत सामञ्जस्य कए ई काव्य-कंचन सृजन केलनि अछि।

एहि पोथीक दार्शनिक गहिराइ एहि बातमे अछि जे ई मात्र तत्कालीन राजाक निरंकुशताक विरोध नहि करैत अछि, अपितु आन्दोलनक नामपर जनताकेँ ठगयबला पाखण्डी नेता, विविधतासँ डरायबला खोखला राष्ट्रवादी, आ नव-उपनिवेशवादी विदेशी हस्तक्षेप (रोड-म्याप) सभपर सेहो समान रूपसँ निर्मम प्रहार करैत अछि। 'आन्दोलन' कविता संग्रह प्रमाणित करैत अछि जे जखन राजनीतिक प्रतिबद्धता आ साहित्यिक संवेदनशीलताक साँचो संगम होइत अछि, तखन साहित्य मात्र मनोरञ्जनक साधन नहि रहिकए समाज परिवर्तनक अमोघ अस्त्र बनि जाइत अछि। लोकतान्त्रिक चेतना, गणतन्त्रक स्थापना, संघीयताक बहस आ समकालीन राजनीतिक विमर्शक अध्ययनक लेल ई ग्रन्थ मैथिली साहित्यमे सधिखन एकटा अमूल्य धरोहर आ सन्दर्भ-सामग्रीक रूपमे प्रतिष्ठित रहत। ई पोथी एहि बातक साक्षी अछि जे राजनीति जखन पथभ्रष्ट होइत अछि, तखन साहित्य ओकरा बाट देखाबय लेल मशाल बनिकए आगाँ अबैत अछि।

२०. समग्र मूल्यांकन

‘आन्दोलन’ केँ नेपाली मैथिली राजनीतिक कविताक एक महत्वपूर्ण जनवादी दस्तावेज कहब उचित अछि, मुदा “दस्तावेज” शब्द अकेले पर्याप्त नहि। ई दस्तावेज तखन साहित्य बनैत अछि जखन “भूत” प्रतिगमनक प्रतीक बनैत अछि, “शान्तिक व्यापारी” नीति-भाषाक पाखण्ड खोलैत अछि, “त्याग” नेताक “लगानी” बनि जाइत अछि, “रोड-मैप” देश केँ निगलैत अछि, “राष्ट्रियता” अन्तरिक्षक युगमे माटिमे लोटैत अछि, आ बन्दूकक आवाज़ बीचोबीच इजोत दिस इतिहास सरकैत अछि।

कविक सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि ई अछि जे ओ लोकतन्त्र केँ केवल संसद वा राजतन्त्र-विरोधक प्रश्न नहि मानैत छथि। लोकतन्त्र हुनका लेल भाषा, विचार, बहुलता, आत्मसम्मान, जन-अधिकार, नेतृत्वक जवाबदेही आ सत्ता पर जनताक स्वामित्वक समुच्चय अछि। “लोक नइ छैक बपौती ककरो” एहि दर्शनक संक्षिप्ततम सूत्र अछि।

साहित्यिक दृष्टिसँ संग्रहक सर्वाधिक प्रभावी रचनासभ “शान्ति चाही मुदा फर्माबमोजिम”, “दुर बकलेल !”, “चलू आन्दोलनमे !”, “हाय, हमर राष्ट्रियता !” आ “रोड-मैप” अछि, कारण एहि सभमे तत्कालीन राजनीतिक संदर्भ सार्वकालिक विडम्बनामे रूपान्तरित भ’ जाइत अछि।

“आबह न !” आ “ई आन्दोलन देखा दैत” ऐतिहासिक ऊर्जा देइत अछि; “इजोतदिसि ससरत !” संग्रह केँ मानवीय आशाक खुला अन्त दैत अछि।

अन्ततः ‘आन्दोलन’क मूल्य एहि बातमे अछि जे ई पाठक केँ आन्दोलनक पक्ष चुनबाक मात्र आह्वान नहि करैत; ई पूछैत अछि — आन्दोलन केकर लेल? शान्ति केकर लेल? त्याग के करैत अछि, लाभ के लैत अछि? राष्ट्र की एक रंग अछि कि सात रंगक समवेत गमक? विकास देशक भीतर बनैत अछि कि देश कागजी ‘रोड-मैप’क भीतर घुसि जाइत अछि? जनता सत्ता केँ जन्म दैत अछि कि सत्ता जनता केँ अपन रैती मानैत अछि? एहि प्रश्नसभक कारण ई छोट पोथी अपन समय सँ बाहर निकलि लोकतान्त्रिक विवेकक दीर्घजीवी काव्य-पाठ बनैत अछि।

“लोक नइ छैक बपौती ककरो” — एहि एक पंक्तिमे ‘आन्दोलन’क लोकतान्त्रिक आत्मा संकुचित अछि।

ई संग्रह इतिहासक क्षणमे लिखल गेल, मुदा एकर श्रेष्ठ कविता इतिहासक क्षण केँ पार करैत सत्ता आ नागरिकताक स्थायी प्रश्न बनि जाइत अछि। एही ठाम 'आन्दोलन'क साहित्यिक विजय अछि।

ग्रन्थसूची

१. लाल, वृषेश चन्द्र। आन्दोलन। मैथिली कविता-संग्रह। सुदामा प्रकाशन, जनकपुरधाम, वि.सं. २०६१।
२. लाल, वृषेश चन्द्र। माल्हो। कथा-संग्रह।
३. कोइराला, विश्वेश्वरप्रसाद। मोदिआइन। मैथिली रूपान्तरण: वृषेश चन्द्र लाल।
४. लाल, वृषेश चन्द्र। संधीयताक सम्बन्धमे।
५. कोइराला, विश्वेश्वरप्रसाद। सुम्निमा। मैथिली अनुवाद: वृषेश चन्द्र लाल।
६. लाल, वृषेश चन्द्र। ढोलक। कविता-संग्रह।

2. ढोलक

आधार-पोथी: ढोलक (मैथिली कविता-संग्रह) / लेखक: वृषेश चन्द्र लाल / प्रकाशक: सुदामा प्रकाशन, जनकपुरधाम

१. प्रस्तावना आ सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि

मैथिली साहित्यक समकालीन परिदृश्यमे, विशेषतः नेपालीय मिथिलाक सन्दर्भमे, कविता मात्र सौन्दर्य-बोध वा भावात्मक उच्छवासक साधन नहि रहि गेल अछि। ई क्रान्ति, सामाजिक न्याय, सीमान्तीकृत जन-समुदायक क्रन्दन आ लोकतान्त्रिक चेतनाक एकटा सशक्त अस्त्र बनि चुकल अछि। एहि वैचारिक आ प्रायोगिक रूपान्तरणक अग्रिम पंक्तिमे ठाढ़ छथि सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञ, विचारक आ साहित्यकार वृषेश चन्द्र लाल। हुनक सद्यः प्रकाशित मैथिली कविता-संग्रह 'ढोलक' (२०७८ वि.सं.) एक दिस जतए साहित्यक सौन्दर्यशास्त्रीय प्रतिमानकेँ नव ऊँचाई दैत अछि, ततहि दोसर दिस समाजक पंकिल यथार्थ, राजनीतिक पाखण्ड, सीमान्तीकृत वर्गक

शोषण आ मानवीय जिजीविषाक अत्यन्त प्रामाणिक आ मर्मस्पर्शी दस्तावेज प्रस्तुत करैत अछि।

साहित्य आ समाजक जे अन्योन्याश्रित सम्बन्ध अछि, तकरा वृषेश चन्द्र लालक ई कृति सम्पूर्णतामे प्रमाणित करैत अछि। 'ढोलक' मात्र किछु कविताक सँगाल नहि थिक, अपितु ई एकटा युगक दस्तावेज थिक जतए क्रान्तिक आँच, मोहभंगक सन्त्रास आ नव-निर्माणक संकल्प एक संगे प्रवाहित होइत अछि।

सार-संक्षेप

“ढोलक” एहन कविता-संग्रह अछि जाहिमे काव्यक एकहि साँस बाल-मनोविज्ञान, लोकगीत, जनकपुर-मधेशक सार्वजनिक जीवन, राजनीतिक प्रतिरोध, श्रम, निर्धनता, लैङ्गिक प्रश्न, आत्म-संघर्ष, मृत्यु-बोध, उत्सव आ विडम्बना धरि पहुँचैत अछि। पोथीक संरचना स्वयं अर्थवान अछि — “बाल-खण्ड”, “ताल-खण्ड” आ “नाल-खण्ड”। विषय-सूची अनुसार पहिल खण्डमे २०, दोसरमे १४ आ तेसरमे ६२ रचना अछि; अर्थात् कुल ९६ कविता/गीत। ई क्रम बच्चाक सहज ध्वनिसँ तालबद्ध सामुदायिक गायन, आ ओतए सँ सामाजिक नस-नाड़ी (“नाल”) धरि कविक यात्रा सन बुझाइत अछि।

संग्रहक सर्वाधिक विशिष्ट गुण अछि ओकर ध्वन्यात्मकता। “फुर्र-फुर्र”, “धुम-धुम”, “धक-धक”, “चकके-चकदुम”, “भुकु-भुकु”, “जोगिरा” आदि ध्वनि मात्र सजावट नहि, बल्कि अर्थक वाहक बनैत अछि। ध्वनि एतए देह, उत्सव, भय, प्रतिरोध, बाल-क्रीड़ा आ लोक-स्मृति सभकेँ एक दोसरसँ जोड़ैत अछि। शीर्षक “ढोलक” सेहो एहि ध्वनि-राजनीतिक केन्द्रक रूपमे उपस्थित अछि—लोकजीवनमे ढोलकक उपयोग होइत अछि, फेर काज समाप्त भेला पर ओ फेर अन्हार कोनमे टाँगि देल जाइत अछि। एहि बिम्बमे कलाकार, श्रमिक, दलित-वंचित, राजनीतिक कार्यकर्ता अथवा साधारण नागरिक—सभक उपयोगितावादी सामाजिक नियति पढ़ल जा सकैत अछि।

काव्य-गुणवत्ता समस्त ९६ रचनामे समान नहि अछि। कतेको कविता बिम्ब, लय आ व्यंग्यक कारण दीर्घकालिक प्रभाव छोड़ैत अछि; कतेको ठाम कवि विचारकेँ कविता बनबाक पहिने घोषणात्मक पंक्तिमे कहि दैत छथि। मुदा ई असमानता संग्रहक ऐतिहासिक महत्व घटबैत नहि; उलटे ई कविक सार्वजनिक व्यक्तित्व आ नागरिक लेखनक प्रकृति स्पष्ट करैत अछि।

“ढोलक”क मूल मूल्य ओकर जन-संवादधर्मिता, बोलचालक ऊर्जा, लोक-लय, राजनीतिक निर्भीकता आ सामाजिक दृश्यावलोकनमे अछि।

मुख्य निष्कर्ष

संरचना	बाल २० + ताल १४ + नाल ६२ = कुल ९६ रचना; बाल-ध्वनिसँ सामाजिक-राजनीतिक चेतना धरि क्रमिक विस्तार।
केन्द्रीय काव्य-शक्ति	लोकलय, पुनरुक्ति, ध्वन्यात्मक शब्द, गीतात्मकता, सार्वजनिक वाचिकता।
मुख्य विषय	बाल-जगत, प्रकृति, उत्सव, प्रेम, गरीबी, श्रम, मधेश/जनकपुर, सत्ता-विरोध, नैतिक प्रश्न, अस्तित्व-बोध।
विशिष्ट प्रतीक	ढोलक—समाज द्वारा उपयोग कएल गेल मनुष्य/कला/श्रमक रूपक; बजलाक बाद फेर कोनमे टाँगि देबाक विडम्बना।
सीमा	अधिक घोषणात्मकता, पुनरावृत्ति, असमान छन्द-संयम, कतेको ठाम प्रत्यक्ष चित्रक कारण बिम्बक स्वतन्त्रता कम।
समग्र मूल्यांकन	लोकधर्मी आधुनिक मैथिली कविताक महत्त्वपूर्ण सामाजिक दस्तावेज; खास कऽ नेपालक मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रक दृष्टिसँ उल्लेखनीय।

२. कविक व्यक्तित्व, राजनीतिक पृष्ठभूमि आ कृतित्वक अन्तःसम्बन्ध

कोनो भी कालजयी साहित्यिक कृतिक गहिराईकेँ बुझबाक लेल ओकर स्रष्टाक जीवन-दर्शन आ संघर्षकेँ बुझब अनिवार्य होइत अछि। वृषेश चन्द्र लाल (जकर छठिहारक नाम विश्वेश्वर छन्हि) मात्र एकटा भावुक वा कल्पनाशील कवि नहि छथि, अपितु नेपालक लोकतान्त्रिक आन्दोलन आ मधेशक अधिकार-संघर्षक एकटा शीर्षस्थ योद्धा, विचारक आ जननेता छथि। हुनक जन्म २९ मार्च १९५५ ई. मे महोत्तरी जिलाक सुगा-भवानीपट्टी गाममे पिता स्व. उदितनारायण लाल आ माता श्रीमती भुवनेश्वरी देवक कोखिसँ भेल छल। नेपालमे लोकतन्त्रक स्थापना, पञ्चायती व्यवस्थाक अन्त आ नागरिक समताक लेल संघर्षक अनवरत क्रममे हुनक जीवन अत्यन्त कष्टसाध्य रहल अछि। एहि संघर्षक दौरान हुनक १७ बेर गिरफ्तारी भेलन्हि आ लगभग ८ वर्षक

कठोर जेल-जीवन व्यतीत भेलन्हि। ओ विश्वेश्वर प्रसाद कोइरालाक प्रतिबद्ध राजनीतिक अनुयायी छथि आ तराई-मधेश लोकतान्त्रिक पार्टी (तमलोपा) क राष्ट्रिय उपाध्यक्ष, जनकपुरधामक पूर्व नगर प्रमुख (मेयर) तथा नेपालक संघीय संसदक राष्ट्रियसभा सदस्य (२०१७-२०१९) जकाँ गरिमामय पदपर रहि चुकल छथि।

साहित्यक क्षेत्रमे हिनकर योगदान मात्र 'ढोलक' धरि सीमित नहि अछि। हिनकर 'आन्दोलन' नामक कविता संग्रह पूर्वहि प्रकाशित अछि जे प्रतिगमन कालमे जनताकें जाग्रत करबाक काज कएने छल। एकर अतिरिक्त, वी.पी. कोइरालाक प्रसिद्ध लघु उपन्यास 'सुम्निमा' आ 'मोदिआइन' कें मैथिलीमे रूपान्तरण क' हिनका द्वारा मैथिली साहित्यक भण्डारकें अत्यधिक समृद्ध कएल गेल अछि। 'सुम्निमा' क अनुवादक लेल हुन्का 'नेपाल विद्यापति मैथिली अनुवाद पुरस्कार' सँ सेहो सम्मानित कएल गेल अछि, जे हुनक भाषिक अधिकार आ प्राञ्जल मैथिलीक प्रमाण थिक। मैथिली आन्दोलन आ विद्यापति स्मृति दिवस जकाँ आयोजनसभमे हुनक सक्रियता ई प्रमाणित करैत अछि जे ओ भाषाकें केवल संवादक माध्यम नहि, बल्कि क्षेत्रीय अस्मिता आ पहिचानक अस्त्र मानैत छथि। वर्ष २०७४ मे मिथिला नाट्य कला परिषद् (मिनाप) द्वारा हिनका 'महामूर्ख' सन सुप्रसिद्ध व्यंग्यात्मक उपाधिसँ सेहो विभूषित कएल गेल छल, जे मिथिलाक बौद्धिक आ सामाजिक क्षेत्रमे हुनक उच्च स्वीकार्यताक द्योतक अछि। साहित्यक प्रति हुनक समर्पण एतबे नहि अछि, ओ अपन माता-पिताक नामपर एकटा अक्षय कोषक स्थापना क' मैथिली साहित्यकार लोकनिकें पुरस्कृत करबाक परिपाटी सेहो प्रारम्भ कएने छथि।

कविक ई दीर्घ राजनीतिक संघर्ष, क्रान्तिकारी अनुभव, कारागारक यातना आ जन-सरोकार हुनक कवितामे कोनो खोखला दलीय नारा वा शुष्क वक्तव्य बनि क' नहि आयल अछि। एकर विपरीत, समाजक अन्तिम पायदानपर बैसल शोषित-दलित जनताक रक्ताक्त यथार्थ, अश्रु, पसीना आ जिजीविषा बनि क' मुखरित भेल अछि। कारागारक अन्धकार, जन-आन्दोलनक कोलाहल, समाजक उपेक्षित वर्गक वेदना आ सत्ता-शिखरक विद्रूपता—ई सभटा वृषेश चन्द्र लालक काव्य-संसारक कच्चा माल थिक। राजनीति आ साहित्यक एहन दुर्लभ समन्वय हिनक रचनाकें एकटा विलक्षण धार प्रदान करैत अछि, जाहिमे ओ यथार्थसँ पलायन नहि करैत छथि, बल्कि संघर्षक बीच ठाढ़ भ' नव निर्माणक शंखनाद करैत छथि। डा. शेफालिका वर्मा जकाँ

वरिष्ठ साहित्यकार सेहो ई स्वीकार करैत छथि जे राजनीतिमे रहितो आ व्यस्त जीवन जीबितो वृषेशजी साहित्यक लेल जे समय निकालि लैत छथि, ओ मैथिली मायक भण्डारकें निरन्तर श्रीवृद्धि क' रहल अछि।

पोथी, कवि आ साहित्यिक प्रसंग

वृषेश चन्द्र लालक साहित्यिक व्यक्तित्वकें केवल राजनीतिक जीवनक परिशिष्ट मानब भूल होयत। उपलब्ध जीवनी-स्रोत हुनकर जन्म महोत्तरी जिलाक सुगा-भवानीपट्टीमे बतबैत अछि; अर्थशास्त्रमे स्नातकोत्तर अध्ययन, श्रम-अध्ययनक प्रशिक्षण, सार्वजनिक-राजनीतिक जीवन, कथा-कविता-लेखन आ अनुवाद—ई सभ हुनकर अनुभव-क्षेत्रकें बहुस्तरीय बनबैत अछि। बी.पी. कोइरालाक “मोदिआइन” आ “सुम्निमा”क मैथिली रूपान्तरण हुनकर अनुवादक रूपकें स्थापित करैत अछि; २०७७ वि.सं.क नेपाल विद्यापति मैथिली अनुवाद पुरस्कार सेहो एहि काजक संस्थागत मान्यता अछि। एहि पृष्ठभूमिमे “ढोलक” पढ़ला पर बुझाईत अछि जे कवि केवल मंचीय राजनीतिक भाषणकें पद्य नहि बनबैत छथि; ओ घर, बालक, पोखरि, पक्षी, प्रेम, नगर, दरिद्रता, धार्मिक प्रतीक, भूख, युद्ध-सदृश हिंसा, उत्सव आ व्यक्तिगत अकेलापन सभकें एकहि काव्य-क्षेत्रमे आनैत छथि।

आधुनिक मैथिली साहित्यक इतिहास लिखनिहार जयकान्त मिश्र आ देवकान्त झा दुनू आधुनिक काव्यमे सामाजिक यथार्थ, प्रयोग, गीतात्मकता, व्यंग्य आ नागरिक चेतनाक विस्तारकें महत्त्वपूर्ण प्रवृत्तिक रूपमे देखबैत छथि। “ढोलक” एहि दीर्घ परम्पराक नेपाल-मधेशीय अवतार सन अछि। एक दिस विद्यापतिक गीत-परम्परा आ लोकध्वनिक सांस्कृतिक स्मृति अछि, दोसर दिस आधुनिक लोकतान्त्रिक असन्तोष, नगरीय संकट, श्रम-वंचना आ वैश्विक आशंका।

पोथीक आरम्भमे देल राजेन्द्र विमल आ परमेश्वर कापड़िक समीक्षात्मक आलेख संग्रहक सामाजिक सरोकार, पर्यावरण-चेतना, राजनीतिक अधिकार, वर्ग-विषमता, लोकलय आ मानवीय करुणा दिस संकेत करैत अछि।

भूमिका : कवि आ कृतिक पृष्ठभूमि

वृषेश चन्द्र लाल केवल कवि नहि, अपितु सक्रिय राजनीतिकर्मी सेहो छथि। ओ जनकपुरधामक नगर-प्रमुख रहि चुकल छथि आ नेपालक संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्रक प्रथम राष्ट्रियसभाक सम्मानित सदस्य सेहो रहि चुकल छथि। ई जीवनी-पृष्ठभूमि एहि काव्य-संग्रह ‘ढोलक’ बुझबाक लेल अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि, किएक तँ डा. राजेन्द्र ‘विमल’क भूमिकाक अनुसार एहि काव्य-सृष्टिक मूल विशेषता ईहो अछि जे एकर रचना कोनो राजनेताद्वारा कारागारक अवकाश-कालमे नहि भेल अछि, अपितु नेपालमे अनवरत् चलि रहल विभेद-अन्तक युद्धक मैदानमे युद्धरत् कविहृदय सेनानीद्वारा भेल अछि। भूमिकाकारक भाषामे — लगैछ जेना श्रीकृष्ण कुरुक्षेत्रक बीचमे ठाढ़ भ’ गीता सुना रहल होथि — ई स्थापना स्वयं एहि संग्रहक पाठकीय स्वरकें निर्धारित करैत अछि।

दोसर भूमिका-लेखक परमेश्वर कापड़िक अनुसार, वृषेश चन्द्र लाल पहुंचल राजनीतिकर्मी, आइकालहुक राजनीतिक हाक-वाकसँ परिचित परन्तु एहि सभसँ अलग — सूक्ष्म निरीक्षण-प्रामाणिकाइसँ अनुभवसिद्ध कवि थिका, जे जीवन-जगत्क अवलोकन सूक्ष्मताक संग करैत छथि। ई दोहरी पहचान — कवि आ राजनीतिकर्मी — संग्रहमे सभसँ बेसी स्पष्ट रूपे देखाइ परैत अछि: ई मात्र सुन्दर शब्दक चयन नहि, अपितु समाज-राजनीतिमे सीधा हस्तक्षेप करैत मोर्चा थिक।

रचना आ रचनाकारक परस्पर-सम्बन्ध

एहि संग्रहकें पढ़ला बाद ई तथ्य बिसरल नहि जाए बला जे रचनाकार मात्र साहित्यकार नहि, अपितु मैथिलीभूमिक संघर्ष — नगर-नेतृत्व, राष्ट्रियसभा-सदस्यता, आन्दोलन-पर्व — मे रहल राजनीतिकर्मी सेहो छथि। एहिसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे ‘ढोलक’कार स्वयं ओहि घटना-स्थलकें प्रत्यक्ष रूपे भोगल थिक। एहि कारणे भूमिका-लेखक डा. राजेन्द्र विमलक ई तुलना सार्थक बुझाइत अछि: जेना श्रीकृष्ण कुरुक्षेत्रक बीचमे ठाढ़ भ’ गीता सुना रहल होथि, ओहिना ई कवि संघर्षक मैदानमे ठाढ़ भ’ काव्य-सृजन करैत छथि।

३. पोथीक बाह्य आ आन्तरिक विन्यास (Metadata & Structural Profile)

कोनो पोथीक प्राज्ञिक मूल्यांकनक प्रारम्भ ओकर आधारभूत संरचना आ प्रकाशन विवरणसँ होइत अछि, जे कृति आ पाठकक बीच एकटा प्रारम्भिक सेतु निर्माण करैत अछि। ‘ढोलक’

संग्रहक प्रकाशन आ विन्यास सम्बन्धी तथ्यपूर्ण विवरण निम्न तालिकाक माध्यमे प्रस्तुत कएल जा रहल अछि:

विवरण घटक	तथ्य / विवरण
पोथीक नाम	ढोलक (मैथिली कविता संग्रह)
स्रष्टा / रचनाकार	वृषेश चन्द्र लाल
प्रकाशक	सुदामा प्रकाशन, जनकपुरधाम-२, किशोरीनगर (नेपाल)
मुद्रण	युनियन अफसेट प्रेस, जनकपुरधाम
प्रकाशन काल / संस्करण	पहिल संस्करण : २०७८ माघ (जनवरी २०२२)
मुद्रित प्रति	१०००
मूल्य	२०० टका / रुपैयाँ
आवरण चित्र	मनोज कुमार यादव
समर्पण (अर्पण)	मातृ-पितृ, गुरुवर, पूज्य
भूमिका / प्राक्कथन	१. डा. राजेन्द्र विमल ('कवि लालक ढोलक पर बजैत सदाबहार ताल') / २. परमेश्वर कापड़ि ('कत्त'स' करू शुरू !')
संरचनात्मक विभाजन	तीन खण्ड: १. बाल-खण्ड (२० रचना) / २. ताल-खण्ड (१५ गीत) / ३. नाल-खण्ड (६२ कविता)

रचनाकार	वृषेश चन्द्र लाल
विधा	मैथिली कविता संग्रह (तिरहुता लिपिमे सेहो मुद्रित)
प्रकाशक	सुदामा प्रकाशन, जनकपुरधाम-२, किशोरीनगर

रचनाकार	वृषेश चन्द्र लाल
संस्करण	पहिल संस्करण, माघ २०७८ वि.सं.
आवरण-अंकन	मनोज कुमार यादव
मूल्य	२०० टाका
पृष्ठ संख्या	१६०
संरचना	तीन खण्ड — बाल-खण्ड, ताल-खण्ड, नाल-खण्ड (कुल ६२ कविता)

पोथीक प्रारम्भमे कवि द्वारा 'शुभकामना' आ 'विनय' शीर्षक अन्तर्गत अपन मन्तव्य राखल गेल अछि, जतए ओ स्पष्ट करैत छथि जे हुनका द्वारा अनायास जे 'आडुरसभ नालपर ठोका जाइत छैक' सैह ई कविता संग्रह थिक। 'तस्मै श्री गुरुवे नमः' सँ प्रारम्भ भेल ई पोथी अपन सांस्कृतिक आ आध्यात्मिक जड़िकें सेहो सुरक्षित रखैत अछि।

४. 'ढोलक'क त्रि-आयामी संरचनाक दार्शनिक आधार

'ढोलक' संग्रहक समग्र रचना-संसार तीनटा सुव्यवस्थित खण्डमे विभक्त अछि: बाल-खण्ड, ताल-खण्ड आ नाल-खण्ड। ई त्रि-खण्ड वस्तुतः मानव जीवन आ समाजक त्रि-आयामी विकास-क्रमक प्रतीक थिक, जकरा कवि एकटा वाद्ययन्त्र 'ढोलक' क रूपककें आधार बना क' विनिर्मित कएने छथि। ई खण्ड-विभाजन कोनो यादृच्छिक (Random) संकलन नहि थिक, बल्कि एकर पछाति एकटा गम्भीर दार्शनिक आ मनोवैज्ञानिक योजना काज क' रहल अछि।

पहिल खण्ड 'बाल-खण्ड' मानव जीवनक शैशव, निश्छलता आ प्राथमिक सामाजीकरणक प्रतीक थिक। एतए कवि बाल-मनोविज्ञानक माध्यमसँ नीतिक शिक्षा, सामाजिक विडम्बना आ लोक-क्रीड़ाक चित्रण करैत छथि। दोसर खण्ड 'ताल-खण्ड' समाजक सांस्कृतिक, सांगीतिक आ भावनात्मक यौवनक द्योतक थिक। एहिमे मिथिलाक परम्परागत मांगलिकता, श्रृंगार, प्रेम, विरह आ नव-युगीन व्यंग्यक ताल बजैत अछि। तेसर आ अन्तिम खण्ड 'नाल-खण्ड' प्रौढ़ सामाजिक संघर्ष, क्रान्ति, दार्शनिक गम्भीरता आ व्यवस्था-विरोधक हुंकार थिक। नाल अर्थात् ढोलकक बायाँ गम्भीर भाग, जाहिसँ गम्भीर गर्जना निकलैत अछि, एहि खण्डक गाम्भीर्य आ क्रान्तिकारी चेतनाकें सार्थकता प्रदान करैत अछि।

“बाल-ताल-नाल”: नामकरणक भीतरक काव्य-दर्शन

तीनू खण्डक नाम पहिल दृष्टिमे खेल-खेलौना सन लगैत अछि, मुदा ई पोथीक सबसे सशक्त सम्पादकीय-काव्यात्मक निर्णयमे सँ एक अछि। “बाल” अर्थात बालक, आरम्भ, कोमलता, स्वाभाविक ध्वनि; “ताल” अर्थात लय, सामुदायिक गायन, देहक गति, उत्सव; “नाल” अर्थात जीवनकेँ जोड़निहार जैविक सूत्र, भीतरक नस-नाड़ी, स्रोत-संबंध। एहिना पोथी “फुर्र-फुर्र सुगा”क बाल-आश्चर्यसँ “जागरण गीत”क सामूहिक उच्चारण, आ तकर बाद “मनुखभमरा”, “समय”, “ढोलक!”, “खोजि रहल छी...”, “चुप्पी”, “खून त खून छैक!”, “नारी”, “मुसहरकेँ हम बच्चा छी!”, “पेट” आ “हे भगवान!” सन रचनासभ धरि पहुँचैत अछि।

ई क्रम विकासात्मक सेहो अछि। बाल-खण्डमे वस्तु बाहरी अछि—पक्षी, फल, चान, पतंग, फोन, दही-किताब, दीप, पोखरि। ताल-खण्डमे बाहरी संसार सामूहिक आवाज बनैत अछि—शुभकामना, जागरण, होरी, प्रेम, नृत्य, पायल। नाल-खण्डमे कवि भीतर आ बाहरक तनावकेँ सीधा भिड़बैत छथि—गरीबी, शहर, लोकतन्त्र, रक्त, भूख, सत्ता, अकेलापन, स्त्री, धर्म, युद्ध, नैतिक प्रश्न। एतए “नाल” व्यक्तिगत जीवन आ सामाजिक शरीरक बीच जोड़नि बनि जाइत अछि।

त्रिखण्डात्मक संरचना

५. बाल-खण्ड : बाल-मनोविज्ञान, लोक-क्रीड़ा आ नव-चेतनाक बीजारोपण

बाल-साहित्य लेखन कोनो भी भाषाक साहित्यक एकटा जटिल विधा मानल जाइत अछि। एकटा प्रौढ़ आ अनुभवी रचनाकारकेँ अपन ज्ञान आ पाण्डित्यकेँ बिसरि पूर्णतः शिशु-सुलभ कोमलता, तुकांत-गेयता आ बाल-मनक क्रीड़ा-भावमे लीन होमए पड़ैत अछि। वृषेश चन्द्र लाल एहि सन्दर्भमे अत्यन्त सफल सिद्ध भेल छथि। बाल-खण्डमे कुल २० टा बाल-कविता आ गीत संगृहीत अछि। एहि खण्डक विशेषता ई अछि जे बाल-संसारक भीतर गम्भीर सामाजिक-सांस्कृतिक सन्देश, राजनीतिक व्यंग्य आ नीतिक बीआ बोअल गेल अछि। ई बाल-कवितासभ केवल रञ्जनक लेल नहि, अपितु भावी पुस्ताकेँ सामाजिक यथार्थसँ परिचित कराबक लेल रचित अछि।

५.१ राजनीतिक व्यंग्य आ पञ्चतन्त्रीय नव-कथा

बाल-कवितालेँ सदियन पशु-पक्षी आ प्रकृतिक प्रतीकक उपयोग कएल जाइत अछि। वृषेशजी सेहो खंजन चिड़ैया, सुगा, कौआ, मूस आदिक माध्यमसँ नव पञ्चतन्त्रक रचना कएने छथि, मुदा एहिमे आधुनिक राजनीतिक आ सामाजिक चेतनाक तीव्र पुट अछि। 'दुम-दुम बौआ' कवितामे कौआक (कागा) प्रतीक द्वारा बालककेँ चालाक आ अवसरवादी लोक (विशेषतः भ्रष्ट नेता वा अवसरवादी मित्र) सँ सावधान रहबाक शिक्षा देल गेल अछि। कवि बाल-मस्तिष्कमे ई बात स्थापित करबए चाहैत छथि जे समाजमे एहन लोक भरल अछि जे अपन स्वार्थ सिद्ध करबाक लेल अहाँक समक्ष नतमस्तक रहत, मुदा काज निकलितहि फुर्र भ' जाएत। कागाक चरित्र-चित्रण एहि यथार्थकेँ उजागर करैत अछि जे ई अवसरवादी तत्त्व ससरि क' लग अबैत अछि आ मौका भेटितहि लोल मारि क' भागि जाइत अछि। ई पंक्तिसभ नेपालक वर्तमान राजनीतिकर्मीक चरित्रपर कतेक गंभीर व्यंग्य कएल गेल अछि, से डा. राजेन्द्र विमल अपन भूमिकामे स्पष्ट कएने छथि। अवसरवादक ई सजीव चित्रण बाल-गीतक आवरणमे एकटा प्रौढ़ राजनीतिक सत्यकेँ उद्घाटित करैत अछि।

तहिना, सामन्ती शोषण आ भ्रष्टाचारक विरुद्ध बाल-प्रतीक 'मुसरी बड्ड पेड़इअ' कवितामे मूस (चूहा) क माध्यमसँ समाजक ओहि शोषक वर्गपर प्रहार अछि जे बिना श्रम कएने अनकर अन्न हड़पैत अछि। एतए 'मुसरी' ओहि परजीवी वर्गक प्रतिनिधि अछि जे समाजक सम्पदाकेँ चुप्पे-चापे भीतर-भीतर खोखला क' रहल अछि आ बिना नेओतने लोकक घरमे पसि क' डकार लैत अछि। ई कविता बाल-मानसिकतामे मेहनत आ ईमानदारीक मूल्य स्थापित करबाक संगे-संग शोषक प्रवृत्तिप्रति वितृष्णा पैदा करैत अछि।

स्वतन्त्रताक महत्ताकेँ प्रतिपादित करैत 'फर्र-फर्र सुगा' कवितामे कवि पिंजरामे बन्द सुगाक विडम्बनाकेँ दर्शावैत छथि। पिंजरामे बन्द सुगा जकरा 'राम-राम' रटबाक लेल बाध्य कएल जाइत अछि, ओकर मन वस्तुतः अपन परतन्त्रतासँ कारी भ' गेल अछि। ई कविता कविक अपन राजनीतिक बन्दी-जीवनक अनुभूतिकेँ सेहो प्रतिध्वनित करैत अछि। कवि बालककेँ ई सन्देश दैत छथि जे स्वतन्त्रताक लेल संघर्ष आवश्यक अछि। जखन धरि बान्ह (पिंजरा) नहि कटत, तखन धरि कतबो शीश झुकायलासँ मुक्ति नहि भेटत। ई पंक्तिसभ बालककेँ सम्प्रभुता आ स्वतन्त्रताक मूल्य सिखवैत अछि—जे स्वतन्त्रता याचनासँ नहि, अपितु संघर्षसँ प्राप्त होइत अछि।

५.२ नारी-विमर्श आ बालिका-शिक्षाक क्रान्ति

मैथिल समाज आ समग्र रूपेँ दक्षिण एसियाली समाजमे विद्यमान लैंगिक असमानतापर कवि अत्यन्त मार्मिक प्रहार कएने छथि। 'गे दैया हमरो दही किताब' शीर्षक कविता बालिका-शिक्षाक लेल एकटा क्रान्तिकारी गोहार थिक। एहि कवितामे कवि पितृसत्तात्मक समाजक ओहि दोहरो मापदण्डपर सीधा चोट करैत छथि जतए बेटाकेँ स्कूल पठाओल जाइत अछि आ बेटीकेँ घास काटय लेल बाध्य कएल जाइत अछि। जखन ओ बालिका अपन भाइसभकेँ स्कूल जाइत देखैत अछि, तँ ओकर भीतरक ज्ञान-पिपासा जागि उठैत अछि आ ओ अपन मायसँ किताबक माँग करैत अछि।

आगू कवि समाजक ओहि भरमक जालकेँ तोड़बाक आह्वान करैत छथि जाहिमे बेटाकेँ वंशक उद्धारक मानि क' पोसल जाइत अछि आ बेटीकेँ उपेक्षित कएल जाइत अछि। कविक स्पष्ट मानना अछि जे एहि भेदभावक कारणेँ समाज क्रमिक रूपसँ कंकाल बनि रहल अछि, कारण समाजक आधा अंगकेँ अशिक्षित राखि क' कोनो भी राष्ट्र वा समाज प्रगति नहि क' सकैत अछि। बालिका सशक्तीकरणक ई यथार्थवादी आ हृदयविदारक चित्रण कविकेँ एकटा प्रगतिशील समाज-सुधारकक रूपमे स्थापित करैत अछि आ बाल-साहित्यमे जेन्डर-सेंसिटिविटी (Gender Sensitivity) क उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि।

५.३ बाल-मनोविज्ञान आ आधुनिक पारिवारिक विडम्बना

शहरीकरण, पूँजीवादी विकास आ एकल परिवार (Nuclear Family) क कारणेँ आधुनिक बालक सभक जे एकाकीपन अछि, तकर मनोवैज्ञानिक चित्रण 'फोन करैअ नानाजी' कवितामे भेल अछि। माता-पिताक कामकाजी जीवन आ बालकक यन्त्रवत् दिनचर्यामे नाना-नानीक प्रेम, कथा आ गीतक जे अभाव भ' गेल अछि, ओकरा कवि सहज बाल-सुलभ भाषामे अभिव्यक्त कएने छथि। पापा आ मम्मी दुनू गोटे अफिस दौड़ि रहल छथि आ बच्चाक हाथमे केवल टिफिनमे बन्द खाना अछि। एहन स्थितिमे बच्चाक भावनात्मक रिक्तताकेँ भरबाक लेल नानाजीक फोन अबैत अछि, जकरासँ बच्चा एकटा गीत सुनबाक आग्रह करैत अछि। ई कविता आधुनिक जीवन-शैलीक ओहि त्रासदीकेँ रेखांकित करैत अछि जतए भौतिक सुख-सुविधा तँ अछि, मुदा पारम्परिक पारिवारिक उष्मा आ ओरल ट्रेडिशन (Oral Tradition) विलुप्त भ' रहल अछि।

'गुड्डी उड़ए आकाशमे' कवितामे कवि पतंगक माध्यमसँ जीवनक उडान आ ताहिमे निहित प्रतिस्पर्धाक चित्रण करैत छथि, जतए धागा तानिते पतंग ऊँच होइत अछि आ संगीक पतंग काटबाक होइ लागल रहैत अछि। ई बाल-क्रीड़ा जीवनक संघर्षक एकटा सुन्दर रूपक थिक।

५.४ सांस्कृतिक धरोहरि आ प्रकृति-चित्रण

मिथिलाक लोक-पर्व, ऋतु-परिवर्तन आ प्राकृतिक सौन्दर्यक अद्भुत चित्र बाल-खण्डक अन्य कवितासभमे भेटैत अछि। ई कवितासभ नव पुस्ताकें अपन माटि, खान-पान आ परम्परासँ जोड़बाक महत्त्वपूर्ण काज करैत अछि। 'चौरचन चौरचन उगल चान' मे भादव मासक चौरचन (चन्द्र दर्शन) पर्वक उत्थास चित्रित अछि, जतए बालक पूरी, दही, पिरुकिआ, खोआ-खीर, तरुआ, तिलकोर आ नरिअलक लेल लालायित अछि। 'मज्जर' कवितामे आमक गाछमे मज्जर (मज्जरी) अबबाक सुगन्ध आ भँवराक गुञ्जनक संगे-संग अमोट आ अमरासा बनबाक आशाक चित्रण अछि।

'होरी अएलै हुर्रर्र !' मे फागुनक रंगीनीक वर्णन अछि, जतए मालपू बड़ी आ तरुआ छना रहल अछि, तासा-ढोल बाजि रहल अछि, आ पिचकारीसँ रङ्ग उगलल जा रहल अछि। 'चकैके चकदुम' आ 'ता ता थैया करू बौआ' जकाँ कवितासभमे दादा-दादी आ नाना-नानीक कोरामे खेलैत बालकक निश्छल आनन्द अभिव्यक्त भेल अछि। 'पोखरिक कात', 'सोन चिड़ैया' आ 'आ आ रे खंजन चिड़ैया' जकाँ गीत बाल-मनकें प्रकृतिक समीप ल' जाइत अछि आ पशुपक्षीसँ तादात्म्य स्थापित करैत अछि।

बाल-खण्ड: ध्वनि, दृश्य आ बाल-मनोविज्ञान

बाल-कविता लिखब आसान बुझाइत अछि, मुदा सफल बाल-कविता लेल भाषा कें छोट करब पर्याप्त नहि। ओकरा आश्चर्य, आवृत्ति, खेल, ध्वनि, दृश्य आ स्मरणीय गति चाही। “ढोलक”क बाल-खण्ड एहि कसौटीपर कतेको ठाम सफल अछि। “फुर्र-फुर्र सुगा”, “गुड्डी उड़य आकाशमे”, “धुम-धुम कौआ”, “फुर्र-फुर्र बगड़ा”, “फोन करैअ नानाजी”, “ता ता थैया कर कौआ”, “होरी अयलै हुर्रर्र!”, “चकके चकदुम”, “सोन चिड़ैया”, “चमक-चमक दीयाबाती”, “मुसरी बहु पेड़इअ” आदि शीर्षक मात्रे ध्वनि आ गति पैदा करैत अछि।

बाल-खण्डक कविता सभमे अनुकरणात्मक ध्वनि अर्थक पहिल द्वार अछि। बच्चा पहिने “कौआ” वा “सुगा”क जैविक परिचय नहि लैत अछि; ओ “फर्र”, “धुम”, “चक”, “ता-ता थैया” सन ध्वनिसँ संसारक अनुभव करैत अछि। कवि एहि मनोवैज्ञानिक सत्यकेँ सहज रूपमे ग्रहण करैत छथि। पुनरुक्ति पंक्तिक संगीत बनबैत अछि, संगहि बच्चाक स्मृति-संरचना अनुरूप भाषाकेँ चक्राकार करैत अछि।

चित्रक उपयोग एहि खण्डमे सामान्यतः सहायक अछि। पक्षी, पतंग, दीप, फल, बच्चा—सभक प्रत्यक्ष चित्र बाल-पाठककेँ तात्कालिक प्रवेश दैत अछि। तथापि साहित्यिक दृष्टिसँ एक सीमा सेहो अछि: जखन चित्र बहुत प्रत्यक्ष होइत अछि, तखन कविता सँ उपजल कल्पना-पटचित्रक स्वतंत्रता घटि सकैत अछि। भविष्यमे एहन संस्करणमे मिथिला-चित्रकला वा एकरूप मौलिक रेखांकनक प्रयोग संग्रहक दृश्य-व्यक्तित्वकेँ बेसी विशिष्ट बना सकैत अछि।

बाल-खण्डक दोसर महत्वपूर्ण पक्ष पारिवारिक आत्मीयता अछि। “फोन करैअ नानाजी”, “गे दैया हमरो दही किताब”, “सोन चिड़ैया” आदि कवितामे परिवार आ घरेलू संबोधन कविता केँ लोकबोलीक उष्मा दैत अछि। ई बाल-साहित्यकेँ नैतिक उपदेश बनबाक सँ बचबैत अछि, यद्यपि कतेको रचनामे संदेश स्पष्ट अछि।

बाल-खण्ड (२० कविता)

बाल-खण्डमे संकलित कविता सभ देखबामे शुद्ध बाल-साहित्य छथि — चिड़ैया-चोर-पंछी, पर्व-त्योहार, खेलकूद आ पारिवारिक स्नेह-सम्बन्धक लेल सरल-सहज तुकबन्दी छन्दमे, जेना ‘फर्र-फर्र सुगा’, ‘ता ता थैया कर बौआ’, ‘आ आ रे खंजन चिड़ैया’। मुदा डूबल नजरिसँ देखल जाए त एहि खण्डमे सेहो कविक सामाजिक चेतना केओ ने केओ ठाम डोली मारैत अछि। ‘फर्र-फर्र सुगा’ कवितामे मिरचाइ खाइत सुगाकेँ पिंजरामे बन्न कएल गेल कष्टक वर्णन अछि, आ अन्तमे ‘बिनु कटने ने छूटत बान्ह, कतबो भुकाएब शीश आ कान्ह’ जेना पंक्तिमे स्वतन्त्रता-चेतनाकेँ समेटि देल गेल छैक। एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे कवि लालक लेल बाल-साहित्य सेहो केवल मनोरंजनक साधन नहि, अपितु मूल्य-संस्कारक माध्यम सेहो थिक।

एकटा रसप्रद शाब्दिक खेल सेहो देखबामे अबैत अछि कविता ‘करोना’मे — शीर्षक पढ़ितहि संसारमारी महामारीक स्मरण होएब स्वाभाविक अछि, मुदा वास्तवमे ई कारोंदा/करोँदा नामक मिथिलांचलक फरक आधारित एकटा सरल बाल-कविता थिक, जाहिमे लरिका सभ फर तोड़ि-

तोड़ि चुनि अचार बनबैत छथि आ चट-चट बाजसँ भालु भगा कए भजैत छथि। एहि प्रकारक शाब्दिक संयोग कविक भाषिक चंचलताकें सेहो दर्शबैत अछि।

६. ताल-खण्ड : पारम्परिक मांगलिकता, श्रृंगार, विरह आ आधुनिकताक द्वन्द्व

'ढोलक' संग्रहक दोसर खण्ड 'ताल-खण्ड' अछि, जाहिमे १५ टा गीत संगृहीत अछि। ई खण्ड मिथिलाक शास्त्रीय आ लोक-संगीतक ताल (लहरी, सम, मात्रा) पर आधारित रचनासभक समुच्चय थिक। एहिमे प्राचीन परम्परासँ 'ल' 'क' आधुनिक विसंगतिधरि कें सांगीतिक रूपमे उकेरल गेल अछि। कवि एहि खण्डमे अपन लोक-संस्कृतिक गहिर समझ आ सांगीतिक बोधक परिचय दैत छथि।

६.१ नव-सामवेद आ मांगलिक गान

वरिष्ठ समालोचक परमेश्वर कापड़ि अपन भूमिकामे 'शुभे हो शुभे !' गीतकें 'नव लोक-सामवेद गान' कहने छथि। मिथिलाक परम्परागत अनुष्ठानिक चुमाओनक मन्त्र 'शुभे हे शुभे' जे प्रायः रूढ़िगत 'भ' गेल छल, तकरा कवि नव युगीन राष्ट्रिय-सामाजिक मंगल-कामनाक रूपमे ढालने छथि। एहि नव-मन्त्रमे कवि केवल वैयक्तिक मंगलक कामना नहि करैत छथि, बल्कि सम्पूर्ण समाजक गौरव, स्वास्थ्य, सेवा, समृद्धि आ सद्गुणक कामना करैत छथि। ई गीत अङ्गनमे शक्तिक वास, घरमे सुखक मचान, सभ घरमे धान आ सोना सन सन्तानक प्रार्थना करैत अछि। ई लोक-गीत मात्र पूजा-पाठक मन्त्र नहि, अपितु एकटा समृद्ध, स्वस्थ आ शान्तिपूर्ण समाजक लेल सामूहिक आ सेक्युलर (Secular) प्रार्थना बनि गेल अछि।

६.२ सांस्कृतिक गौरव आ जागरण-स्वर

'सियाजीक छन्हि आइ बिआह, जनकपुरमे' गीतमे जानकी परिणयक पारम्परिक उल्लासक सजीव झाँकी प्रस्तुत कएल गेल अछि। मिथिलाक लोक-कण्ठमे सीता-विवाहक जे सांस्कृतिक महत्ता अछि, तकरा कवि अवधकिशोरक धनुष भंग, वरमालक दृश्य, मिथिलाक मोरक नाचनाइ, कोबर आ बाँसक लिखाइ, आ राम-लखनक परिछनक माध्यमसँ चित्रित कएने छथि। ई गीत मिथिलाक सांस्कृतिक अस्मिता आ ऐतिहासिक गौरव गान थिक।

ओतहि, 'जागरण गीत' मे कवि लोकतान्त्रिक आन्दोलनक सिपाहीक रूपमे जनताकें जगाबक आह्वान करैत छथि। क्रान्ति पवन बहि रहल अछि, तम (अन्धकार) भागि रहल अछि, आ मशाल

बनि क' आगू बढबाक समय आबि गेल अछि। कवि यथास्थितिवादपर प्रहार करैत पुछैत छथि जे लोक कखन धरि अधिकार छोड़ि क' सूतल रहत आ प्रतिकारक समयमे डेराए क' भागल फिरत। मुद्दी किसि क' न्याय लेल लड़बाक ई आह्वान समाजक सुप्त चेतनाकें झकझोरैत अछि।

६.३ विद्यापति परम्पराक शृंगार आ विरह-वेदना

मैथिली साहित्यमे महाकवि विद्यापतिक शृंगार आ विरह वर्णनक जे समृद्ध परम्परा अछि, तकरा वृषेश चन्द्र लाल अपन गीतसभमे नव भाषा आ बिम्बक संग जीवन्त कएने छथि। 'गोरकी नजरि मोर', 'धक् धक् करय करेज मोर', 'नइ आउ एना मोनमे', 'प्रीतक गीतमे', आ 'झुनुक झुन झुनझुन पायल बाजए' जकाँ गीतसभमे रसमय शृंगार, रूप-सौन्दर्य आ विरहक गम्भीर टीस अभिव्यक्त भेल अछि।

'गोरकी नजरि मोर' मे नायिकाक सौन्दर्यक मादक चित्रण अछि, जतए ओकर एक झलक सजन-मनकें हरि लैत अछि। नायिकाक गालक लालीमे चानक मुस्कान आ खोपाक गुलाबक लजाएब, संगे-संग पाजेबक झुन-झुन सँ धड़कनक बढब—ई सभटा विद्यापतिक सौन्दर्य-बोधक स्मरण करावैत अछि।

विरहक चित्रणमे प्रकृतिक मानवीकरण सेहो अद्भुत अछि। 'धक् धक् करय करेज मोर' मे साओनक मेघसँ भरल आकाश, नुकभुक करैत चान आ कू-कू करैत कोइली वियोगिनीक प्रेम-पिपासाकें बढा रहल अछि। 'झुनुक झुन झुनझुन पायल बाजए' मे विरहक राति युग-युग सन अनन्त लागैत अछि आ पियसंग बीतल क्षण अत्यन्त छोट। ई गीतसभ प्रमाणित करैत अछि जे राजनीतिक कोलाहलक बीच सेहो कविक हृदयमे एकटा निश्छल आ कोमल भाव-संसार सुरक्षित अछि।

६.४ आधुनिकताक विद्रूपता आ पप-व्यंग्य

एहि खण्डक सभसँ विशिष्ट रचना थिक 'कतसँ करू शुरू'। परमेश्वर कापड़िजीक अनुसार ई मैथिलीक पहिल 'पप-गीत' (Pop Song) थिक, जकरा कवि १९८६ मे रचने छलाह आ ई पछाति मैथिलीक पहिल टेलीफिल्म 'दहेज' मे अत्यधिक लोकप्रिय भेल छल। ई गीत तत्कालीन आ वर्तमान राजनीतिक-सामाजिक भ्रष्टाचारपर एकटा तीक्ष्ण आ निर्मम व्यंग्य थिक। पश्चिमी

डिस्को-डांसक लयपर रचित ई गीत समाजक मूल्य-हास आ अर्थ-प्रधान (Money-centric) मानसिकताकें पूर्ण रूपेँ नग्न क' दैत अछि।

कवि आधुनिक पुस्ताक दिशाहीनताक चित्रण करैत कहैत छथि जे कारी अक्षर भैंस बराबर अछि, मुदा हेमा मालिनी आ धर्मेन्द्रक सिनेमा सभ देखल अछि। पढ़ाई-लिखाई बेकार अछि, कारण कुर्सीपर बैसल लोक घूस खाइत अछि, मौज करैत अछि आ कारपर चढ़ैत अछि, जखन कि बुद्धिमान लोक लाचार अछि। समाजक ई यथार्थ जे बिना रुपैयाक नहि बाप अछि नहि माय, ओकरा कवि अत्यन्त सटिक रूपेँ प्रस्तुत कएने छथि। ई गीत व्यंग्यात्मक लहजामे स्मगलिंग शुरू करबाक जे आह्वान करैत अछि, ओ वस्तुतः भ्रष्ट व्यवस्थापर एकटा जोरदार तमाचा थिक। ताल-खण्ड: गीत, उत्सव आ सामूहिक देह

ताल-खण्ड संग्रहक मध्य-प्रदेश अछि। एतए कविता पढ़बाक अपेक्षा गाबय, दोहराबय, मंचपर उच्चारण करय वा सामूहिक रूपमे अनुभूत करबाक आग्रह बेसी अछि। “शुभकामना गीत”, “जागरण गीत”, “हँ रे सुगना”, “धक-धक करय करेज मोर”, “होरीक गीत”, “प्रीतक गीतमे”, “भुकु-भुकु कुन कुनुकुन पायल बाजए”, “एकटा सुगन गीत”, “आश बाँचिते रहत”, “गोरकी नजरि मोर” आदि रचनामे आवर्त-पंक्ति, संबोधन, लयात्मक पुनरुक्ति आ लोकगायनक संरचना स्पष्ट अछि।

“शुभकामना गीत”मे मंगल, जीवन, स्वास्थ्य, सम्मान आदिक पुनरावृत्ति गीतकें अनुष्ठानिक स्वर दैत अछि। “जागरण गीत” राजनीतिक-सामाजिक चेतना कें गीतक तालमे बदलैत अछि। “होरीक गीत”मे रंग, देह, हास्य, प्रेम आ समुदाय एक संग चलैत अछि। एहि रचनासभक मूल्य केवल लिखित पाठमे नहि; ओकर पूरा जीवन सम्भवतः मंच, जुलूस, उत्सव वा गोष्ठीमे खुलैत अछि। एहि कारण “ढोलक”कें केवल मुद्रित कविता-संग्रह मानब पर्याप्त नहि—ई वाचिक-प्रदर्शनकारी काव्यक दस्तावेज सेहो अछि।

ताल-खण्डक भाषा प्रायः छोट पंक्ति, ध्वनि-आधारित यति आ प्रत्यावर्तनपर टिकल अछि। पारम्परिक मात्रिक अनुशासन प्रत्येक रचनामे कठोर नहि, मुदा श्रव्य-ताल लगातार सक्रिय अछि। एहि भेदकें बुझब आवश्यक: लिखित छन्दक असमानता हरदम लयहीनता नहि होइत अछि। कतेको कविता लोक-गायनक साँस पर चलैत अछि, व्याकरणिक पंक्ति-लम्बाइपर नहि।

ताल-खण्ड (१५ कविता)

ताल-खण्डमे गीत/गीतिका शैलीक रचना सभ संकलित छथि — प्रेम, विरह, मिलन आ पर्व-संस्कारगत प्रसंग। ‘सियाजीक छन्हि आइ बिआह, जनकपुरमे’ सन गीतमे जनकपुरधामक सांस्कृतिक पहचान — सीता-राम विवाहक प्रसंग — केन्द्रमे राखि कवि अपन बोलीक रचनाकें आगन्तुक भूमिसँ जोड़ैत छथि। ‘हँ रे सुगबा’, ‘धक्-धक् करय करेज मोर’ बेरा कवितामे लोकगीतक लय-संरचना आ आलंकारिकता दुनू देखाइ परैत अछि। एहि खण्डकें समाप्त करएबला कविता ‘कत्तसँ शुरू’ भ्रष्टाचारपर एकटा व्यंग्यगर्भ रचना थिक, जे भूमिकाकार दुनू विद्वान्सक अनुसार पहिल मैथिली टेलीफिल्म ‘दहेजमे आएल छी’मे सेहो प्रयुक्त भेल रहल अछि।

७. नाल-खण्ड : समाजशास्त्रीय यथार्थ, क्रान्ति आ दार्शनिक विमर्श

संग्रहक तेसर आ सभसँ गम्भीर खण्ड थिक ‘नाल-खण्ड’, जाहिमे ६२ टा कविता संगृहीत अछि। नाल अर्थात् ढोलकक बायाँ गम्भीर स्वर। एहि खण्डमे कवि जीवनक नग्न, उबड़-खाबड़ आ विज्ञानसम्मत जमीनपर ठाढ़ भए मानवीय मूल्य आ युग-मूल्यक संधान करैत छथि। ई खण्ड कविक राजनीतिक अनुभव, दार्शनिक चिन्तन आ समाजशास्त्रीय दृष्टिक सर्वोत्कृष्ट प्रतिफलन थिक।

७.१ ‘ढोलक’क रूपक : सीमान्तीकृत वर्गक क्रन्दन आ शोषणक यथार्थ

पोथीक शीर्षक-कविता ‘ढोलक !’ वस्तुतः समाजक उपेक्षित, शोषित आ सर्वहारा वर्गक जीवन्त आ मर्मस्पर्शी प्रतीक थिक। ढोलकक भौतिक नियति आ सीमान्तीकृत जन-समुदायक सामाजिक नियतिमे कवि अभूतपूर्व समानता देखैत छथि। कवि चित्रण करैत छथि जे ढोलककें टाटक कोन्हमे लटका क’ राखल जाइत अछि, मुदा जखन कोनो उत्सव, भजन-कीर्तन, जन्म वा मरणक अवसर अबैत अछि, तखन ओकरा उतारि क’ ओकर उपयोग कएल जाइत अछि।

ओकरा ‘जाँघतर दबा क’ पीटल जाइत अछि’—ई पंक्ति श्रमजीवी वर्गक चरम शारीरिक आ मानसिक शोषणक सटीक रूपक थिक। समाजक अभिजात वर्ग (Elite class) वा राजनीतिक सत्ता सर्वहारा (मजदूर, दलित, उत्पीडित) वर्गक उपयोग मात्र अपन ‘उत्सव’ (चुनाव, विकास निर्माण, आन्दोलन) क लेल करैत अछि। मुदा जखन काज खतम भ’ जाइत अछि, तखन ओकरा

फेर समाजक 'अन्हार कोन्हमे' गुमनामीक जिन्नगी जीबय लेल, फटलाहा गुमसल बोरा ओढ़ा क' लटका देल जाइत अछि। मार्क्सवादी आ सबाल्टर्न (Subaltern) विमर्शक ई एकटा उत्कृष्ट उदाहरण थिक, जतए कवि विरक्ति आ विद्रोहक सम्मिलित स्वर प्रस्तुत करैत छथि।

शीर्षक 'ढोलक'क प्रतीकात्मक अर्थ

संग्रहक शीर्षक-कविता 'ढोलक !' (पृ. ५४) पोथीक वैचारिक केन्द्र थिक। एकर मूल पंक्ति स्पष्ट अछि — ढोलक भरि उत्सव, भजन-कीर्तन, जन्म-मरण, रिआज-रिवाज — सभकेँ एकरसाँ एहेन जोगारसँ बजैत अछि, मुदा अन्ततः प्रयोगक बाद फेरो — ओही खुट्टीपर, ओही कोन्हमे, अन्हारमे लटका देल जाइत छैक।

ढोलक ! लटकल छैक टाडल छैक

टाटक कोन्हमे ठोकल खुट्टीसँ बान्हल छैक !

...

अन्हारमे लटका दैत छैक !!

एहि रचनामे ढोलक सर्वहारा-श्रमिक जीवनक प्रतीक बनि जाइत अछि — जे सदिखन आनक तुष्टि लेल बजैत अछि, अपन संतुष्टि लेल कहियो नहि। कवि स्वयं 'विनय' शीर्षक कवितामे अपन लेखनकेँ सेहो एहि रूपकसँ जोड़ैत छथि —

ढोलक घोलमे ईहो आ एहनो बोल, बेताले सही धुना जाइत छैक।

मतसुन्नक 'मत' आ 'मखौल', अपने अनजाने बुना बुना जाइत छैक !!

एहिसँ स्पष्ट बूझा जाइत अछि जे 'ढोलक' शीर्षक मात्र ग्राम्य-सांस्कृतिक वाद्यकेँ इंगित नहि करैत अछि, अपितु स्वयं कविक सृजन-कर्मकेँ ओहि रूपक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि —

मतसुन्नक मत आ मखौलकेँ लय देबाक साधन, जेकर आघातसँ कखनो-कखनो बेताल स्वर सेहो धुनि उठैत छैक। आन्तरिक साक्ष्यक रूपमे एहि संग्रहक संरचना सेहो एकरा पुष्टि करैत अछि: खण्डक नाम 'ताल-खण्ड' आ 'नाल-खण्ड' सेहो ढोलककेँ संरचनागत रूपक दैत अछि — ताल (स्वर-लय) आ नाल (आन्तरिक धड़कन, नाड़ी-स्पन्दन)।

७.२ 'मनुखमारा' : गैर-सरकारी संस्था आ बौद्धिक पाखण्डपर निर्मम प्रहार

वर्तमान विकास-उद्योग (Development Industry) आ एनजीओ (NGO) संस्कृतिक पाखण्डपर 'मनुखमारा' कविताक प्रहार साहित्यक इतिहासमे स्मरणीय रहत। दलित आ मुसहर समुदायक गरिबी आ विपन्नता कोना बुद्धिजीवी, शोधकर्ता आ नेता लोकनिक लेल 'कमाईक धन्धा' वा 'प्रोजेक्ट' बनि गेल अछि, तकर नग्न यथार्थ एहिमे अछि। कवि व्यंग्य करैत छथि जे मुसहरकें मुसहरे राखब आवश्यक अछि, तखने तँ ओकरा निहारि क' फोटो खींचल जाएतैक, माडि-चाडि क' भीख देल जाएतैक आ जमओरा झारल जाएतैक।

सभ्य कहबैका वर्गक कोठीमे पारम्परिक विविधताक बखान करबाक लेल एकटा जिन्दा गरिबक आवश्यकता होइत अछि। मुसहर वर्ग जाँ शिक्षित आ समृद्ध भ' जएताह तँ समाजशास्त्रक 'विषय' समाप्त भ' जाएतैक, विदेशी फण्ड बन्द भ' जाएतैक, आ पर्यटक घटि जएताह। तँ ओकरा गरिबे राखब आवश्यक अछि, जाहिसँ मुसहरक नामपर नारा लगा क' चारा खायल जा सकए। कवि अन्तिम पंक्तिमे अत्यन्त मार्मिक प्रश्न करैत छथि जे ओ गरिब तँ पेट भरबाक लेल केवल मूस मारैत अछि, मुदा ई विकासक ठेकेदार सभ जे ओकर जीवन आ भविष्य मारि रहल छथि, ओ सभ साक्षात् 'मनुखमारा' छथि। ई कविता दलित-विमर्शक ओहि ढोंगकें पर्दाफाश करैत अछि जतए सहानुभूति एकटा मुनाफेदार व्यवसाय बनि चुकल अछि।

७.३ शहादतक राजनीतिकरण आ व्यवस्थाक छलावा

नेपालमे भेल विभिन्न आन्दोलन (जन-आन्दोलन, मधेश आन्दोलन) मे जनता जे शहादत देलक, तकर राजनीतिकरण कोना भेल, से 'ल' अग्निशिखा रेड्मे' कवितामे स्पष्ट अछि। शहीदक ठन्ढाएल खून आ मायक थुनक दुहाई द' क' जे बेइमान नेता सभ सत्तामे पहुँचल छथि, हुनक नग्न चरित्रक चित्रण एतए भेल अछि। शहीदक खूनक ठोप लगा क', कीनल फूल चढ़ा क' आ घर-परिवारकें किछु मालपानी वा नोकरी द' क' ई नेता सभ शहादतकें चुनावमे 'सूदि संग' (ब्याज सहित) भजा लैत छथि।

ई कविता क्रान्तिक मोहभंग (Disillusionment) क कविता थिक, मुदा ई पूर्णतः निराशावादी नहि अछि। कवि चेतावनी दैत छथि जे क्रान्तिक ई ज्वाला एखन भलेहि सुसुमे (सुसुप्त) होउक, मुदा भीतरसँ सभ गरमा रहल अछि। ई शहादत 'रक्तबीज' बनि गेल अछि आ जखन कालक्रममे ज्वार उठत, तखन ई श्वेत-खोल ओढ़ने नेता सभक चिथड़ी उडि जाएतैक आ गन्धकीक (भ्रष्टाचारक) सड़ल ढेरमे आगि लागि जाएतैक।

७.४ शहरीकरणक सन्त्रास आ सम्बन्धक यान्त्रिकीकरण

आधुनिक शहरी जीवनक दिशाहीनता, यान्त्रिकता आ संवेदनहीनताक यथार्थवादी चित्रण 'हमर शहर बहुराएल अछि' मे भेल अछि। शहरक कोलाहलमे मनुख कोना बेहोश आ अहुँराएल अछि, तकर शब्द-चित्र कवि 'बेगिन्ती बेहाल बेकल, बेढंगी बेजान बेचल' जकाँ अनुप्रासयुक्त पदावलीसँ खीचने छथि। भोरेसँ कारी अन्हार, आलसक पथार आ दोसरेपर दारोमदार—ई सभटा शहरक सठिआएल आ बकझाएल स्थितिकेँ देखावैत अछि, जतए उठैत हुंकार सभ बोझक भार सँ दबाएल अछि।

तहिना, सम्बन्धक व्यापारीकरण आ पाश्चात्य संस्कृतिक अन्धानुकरणपर 'फादर्स डे' जकाँ कवितामे तीक्ष्ण प्रहार अछि। माता-पिता आब आदरक पात्र नहि, अपितु 'म्यूजियम आइटम' बनि गेल छथि, जकरा बरस दिनमे एक बेर पोछि क' धोअल जाइत अछि। फेसबुकपर गोर लागि क' आ 'फादर्स डे' तथा 'मदर्स डे' मे मिठाइ खुवा क' वर्ष भरिक लेल कर्तव्यक इतिश्री क' लेल जाइत अछि। भ' सकैत अछि जे सन्तान कहियो नहि भेटए आ कुरियरसँ प्रणाम पठा दए। सम्बन्धसभक ई भर्चुअल (Virtual) आ कुरियर-आधारित सत्य नव पुस्ताक खोखलापन आ परम्परागत पारिवारिक मूल्यक पतनकेँ उजागर करैत अछि।

७.५ दार्शनिक आयाम : समय, अस्तित्व आ जिजीविषा

वृषेश चन्द्र लालक कवितामे क्रान्तिक संगे-संग एकटा गम्भीर दार्शनिक (Philosophical) चिन्तन सेहो प्रवाहित अछि। 'समय' कवितामे ओ काल-तत्त्वक सर्वशक्तिमत्ता आ निरपेक्षताक वर्णन करैत छथि। समयक कोनो भूत वा भविष्य नहि होइत अछि, ओ सदैव एकटा सिद्ध वर्तमान अछि। समयक कोनो धर्म, अधर्म, राग, वा द्वेष नहि अछि; ओ निराकार आ सर्वशक्तिमान अछि, जे सृष्टिक आरम्भसँ ल' क' प्रलय धरि समान गतिसँ चलि रहल अछि।

'जखन तक ई जिनगी' मे शून्यवाद (Nihilism) आ अस्तित्ववाद (Existentialism) क सुन्दर समन्वय भेटैत अछि। कवि मानैत छथि जे जेना अन्हार शून्य अछि, प्रकाश सेहो शून्य अछि। अस्तित्वक आधार शून्य थिक। मुदा एहि शून्यताक बोधक बावजूद, ओ कर्मसँ पलायन नहि करैत छथि। ओ घोषणा करैत छथि जे जखन धरि जीवन अछि, ओ मशाल जरा रहत आ शून्येसँ ल' क' शंख बजा रहत। ई सार्त्र (Jean-Paul Sartre) क अस्तित्ववादक समतुल्य अछि, जतए मनुख निरर्थकताक बीच अपन कर्मसँ अर्थक निर्माण करैत अछि।

'ई सुरुज देखू अस्ताइत' मे अस्ताचलगामी सूर्य सेहो मृत्युलोकमे नव सृजनक (काल्हि हैतैक निश्चित भोर) सन्देश ल' क' अबैत अछि। ई कविता कालक चक्रीयता आ प्रकृतिक शाश्वत आशावादक प्रतीक थिक। 'खोजि रहल छी...' मे कवि अपन हेराएल धरती, अपन मूल पहिचान आ अपन अखण्ड संस्कृतिक अन्वेषण क' रहल छथि जे आब खण्डित आ दूषित भ' गेल अछि।

७.६ प्रतिरोधक मनोविज्ञान आ न्याय-अन्यायक द्वन्द्व

'धैर्यवान लोक !' कवितामे कवि ओहि आम नागरिकक मानसिकतापर व्यंग्य करैत छथि जे अन्याय सहि क' सेहो चुप रहैत अछि। गामक आ समाजक लोक सहनशील आ शान्तिप्रिय अछि, मुदा ई सहनशीलता वस्तुतः कायरताक दोसर नाम अछि, जतए लोक सोचैत अछि जे 'किछु नहि होइत छैक' आ 'किछु हएबो नहि करत'। ई कविता एहि निष्क्रियताकें तोड़बाक आह्वान अछि।

मुदा, 'चुप्पी' कवितामे कवि मौनकें एकटा रणनीतिक हतियार मानैत छथि, जे निर्लज्जक सामना करैत अछि आ उर्जा उगलैत अछि। 'आह !' कवितामे ओहि पलायनवादी मानसिकतापर चोट अछि जे बिना कोनो दर्द सहने, बिना लड़ले-भिड़ले सुन्दर भविष्य आ विकासक कामना करैत अछि।

'के कएलह ई खून ?' आ 'खून त खून छैक !' कवितासभमे हिंसा, हत्या आ राजनीतिक अपराधपर कठोर प्रहार अछि। हत्यारा कतबो छली आ स्वार्थी होउक, कतबो कायरतापूर्ण ढंगसँ नुकौने होउक, मुदा खूनक यथार्थ मेटैत नहि अछि। न्याय आ अन्यायक ई द्वन्द्व यमलोकक खाताधरि पहुँचैत अछि, जतए खुनियाँक हिसाब निश्चित रूपेँ होइत अछि। ई कवितासभ समाजमे व्याप्त दण्डहीनता (Impunity) क विरुद्ध एकटा नैतिक आवाज थिक।

अन्ततः, 'अपनेसँ करक अछि बात' कवितामे कवि अपन आन्तरिक द्वन्द्व, एकाकीपन आ दबल भावनासभकें ओरिआबक (संयोजित करबाक) आ फेर बाकसमे बन्द क' देबाक जे मार्मिक चित्र खींचैत छथि, ओ कविक संवेदनशीलताक चरम बिन्दु थिक।

नाल-खण्ड: सार्वजनिक जीवनक नस-नाड़ी

६२ रचनाक नाल-खण्ड पोथीक मुख्य देह अछि। एतए कवि घरेलू आ उत्सवी संसारसँ बाहर निकलि नगर, राजनीति, वर्ग, धर्म, गरीबी, लोकतन्त्र, हिंसा, स्त्री, श्रम, बाजार, समय, मृत्यु, युद्ध

आ आत्म-संशय धरि जाइत छथि। “हमर शहर बहुहाल अछि...”, “मनुखभमरा”, “समय”, “ढोलक!”, “जखन तक ई जिनगी”, “ई सूरज देखू अस्ताइत”, “खोजि रहल छी...”, “तप?!””, “बेथान लोक!”, “चुप्पी”, “के कटलक ई खून?!””, “खून त खून छैक!”, “अपनेकें करक अछि बात”, “पिंजरा”, “शाकल सुनल उठह गे बाबल”, “अर्थिक”, “‘मुसहर’के हम बच्चा छी!”, “बीआ संघर्षके”, “नारी”, “जीवन सपना”, “चुप्प छी”, “महान छी?”, “सहमति”, “बात त सहज छैक”, “आह, रुपैया!”, “हिमपात”, “धर धर रे!”, “हमर शहर”, “की तोरा लेल?!””, “लोक”, “अजीब अछि!”, “विस्फोट”, “जोगिरा!”, “पेट”, “चुनरीमे दाग”, “हे भगवान!”—ई शीर्षकसभ स्वयं संग्रहक विशाल सामाजिक भूगोल बता दैत अछि।

एहि खण्डमे कविक सबलता अवलोकन अछि। ओ महान काव्य-विषय खोजय लेल मिथकीय दूरी पर नहि जाइत छथि; सड़क, शहर, भिखारी, मजदूर, जुलूस, मोबाइल, रुपैया, पेट, खून, कुर्सी, योजना, मतदान, धर्म, फोटो, आगि—ई सभ हुनकर काव्य-सामग्री अछि। आधुनिकताक वस्तु-संसार एतए प्रत्यक्ष प्रवेश करैत अछि। ई जनवादी सौन्दर्यशास्त्रक एक रूप अछि: कविताक योग्य विषय केवल “सुन्दर” नहि, बल्कि जे सामाजिक जीवनमे दबाव पैदा करैत अछि से सभ अछि।

शीर्षक कविता “ढोलक!”: पोथीक केन्द्रीय रूपक

शीर्षक कविता संग्रह बुझबाक कुंजी अछि। कविता एकटा ढोलकक दृश्यसँ शुरू होइत अछि—माटिक घरक कोनमे टाँगल/लटकल वाद्य। अवसर पड़ला पर ओकरा उतारल जाइत अछि; पूजा, संस्कार, उत्सव, अभ्यास, लोकरीति, आनक प्रसन्नता वा अपन आवश्यकताक अनुसार ओकर डोरी कसि ध्वनि ठीक कएल जाइत अछि; काम समाप्त भेला पर फेर ओही कोनमे टाँगि देल जाइत अछि, फाटल-पुरान आवरणमे, अन्हारमे, अनिश्चित समय धरि।

एहि कथा-जेकाँ सरल दृश्यक भीतर तीक्ष्ण सामाजिक रूपक अछि। समाज अक्सर कलाकार, श्रमिक, स्त्री, दलित, कार्यकर्ता, बुद्धिजीवी वा साधारण नागरिककें तखन स्मरण करैत अछि जखन ओकर उपयोग हो। “ध्वनि” चाही त ढोलक उतारू; ध्वनि समाप्त त फेर टाँगि दिअ। वस्तुकरणक ई संरचना आधुनिक श्रम-संबंधसँ राजनीतिक उपयोगितावाद धरि लागू होइत अछि। कविता ई अर्थ स्पष्ट शब्दमे नहि कहैत अछि—आ सैह ओकर श्रेष्ठता अछि। संग्रहक

कतेको अन्य कविता जतए निष्कर्ष सीधा कहि दैत अछि, “ढोलक!” रूपककें पाठकक भीतर खुलबाक जगह दैत अछि।

आयोध्यानाथ चौधरीद्वारा सम्पादित अंग्रेजी प्रतिनिधि संकलन “Varied Verses”मे एहि कविताक “The Musical Drum” शीर्षक अनुवाद सम्मिलित होयब उल्लेखनीय अछि। एहि चयनसँ स्पष्ट होइत अछि जे “ढोलक” केवल पोथीक शीर्षक रचना नहि, समकालीन मैथिली कविता कें बाहरी पाठकधरि लए जाए योग्य प्रतिनिधि कविता सेहो मानल गेल। अंग्रेजी रूपान्तरणमे मूल दृश्य—खूँटा, घरक कोन, डोरी कसि सुर मिलाएब, हथेलीक थाप आ फेर अन्हार कोनमे टाँगि देबाक दृश्य—यथासम्भव सुरक्षित अछि; एहि कारण रूपक भाषान्तरक बादो प्रभावी रहैत अछि।

सामाजिक न्याय: गरीबी, भूख आ श्रम

संग्रहक नैतिक केन्द्र वंचित मनुष्य अछि। “‘मुसहर’के हम बच्चा छी!” जकाँ कविता जाति-आर्थिक हाशियाकें प्रथम पुरुषमे स्वर देबाक प्रयास करैत अछि। “बेथान लोक!”, “पिंजरा”, “अर्थिक”, “पेट”, “मनुखभमरा” आ शहर-विषयक रचनासभ सामाजिक असमानता, अभाव आ मनुष्यक वस्तुकरणकें देखैत अछि। कविक राजनीति एहि ठाम सर्वाधिक विश्वसनीय होइत अछि जखन ओ नारा नहि, दृश्य दैत छथि—भूखल देह, कामक तलाश, नगरक अव्यवस्था, असहाय लोक, उपयोगक बाद फेंकल जीवन।

“पेट” शीर्षकक चयन स्वयं महत्वपूर्ण अछि। पेट साहित्यिक रूपमे तुच्छ वस्तु नहि; एतए अस्तित्वक मूल आर्थिक सत्य अछि। पेट भूख, श्रम, बाजार, भ्रष्टाचार, सामाजिक असमानता आ नैतिक समझौता सभकें एक सूत्रमे जोड़ैत अछि। कविता यदि सभ दार्शनिक आवरण हटाकऽ देहक भूख धरि पहुँचैत अछि, तखन आधुनिक समाजक क्रूरता अधिक स्पष्ट होइत अछि।

तथापि वंचित समुदायपर लिखैत समय प्रतिनिधित्वक नैतिक प्रश्न उठैत अछि। “मुसहर” जकाँ समुदायकें केवल दुःखक प्रतीक बना देब पर्याप्त नहि; ओकर अपन निर्णायकारी स्वर, संस्कृति, श्रम-कौशल, प्रतिरोध आ आत्मभाषा सेहो जरूरी अछि। “ढोलक” एहि दिशा मे सहानुभूतिपूर्ण कदम उठबैत अछि, मुदा भविष्यक कवितामे हाशियाक पात्रकें बेसी बहुआयामी जीवन देल जा सकैत अछि।

राजनीति आ प्रतिरोध: नारा सँ कविता धरि

वृषेश चन्द्र लाल स्वयं दीर्घ सार्वजनिक-राजनीतिक जीवनसँ आएल छथि; तें संग्रहमे सत्ता, अधिकार, लोकतन्त्र, दमन, जनसंघर्ष आ नागरिक जिम्मेवारी बारम्बार अबैत अछि। “जागरण गीत”, “बीआ संघर्षके”, “धर धर रे!”, “हमर शहर”, “की तोरा लेल?!” , “लोक”, “अजीब अछि!”, “विस्फोट” आदि रचनामे राजनीतिक चेतना प्रत्यक्ष अछि।

राजनीतिक कविता दू खतरासँ घेरल रहैत अछि—एक, समाचारक तात्कालिकता; दोसर, नारा। “ढोलक” एहि दुनूमे कतेको ठाम फँसैत सेहो अछि, निकलैत सेहो। जतए कवि “खून”, “पिंजरा”, “ढोलक”, “शहर”, “रुपैया”, “पेट”, “चुप्पी” सन बहुअर्थी प्रतीक बनबैत छथि, कविता समयातीत होइत अछि। जतए ओ नीति-सूत्र वा सीधा निष्कर्ष दैत छथि, रचना तत्कालीन भाषणक नजदीक पहुँचैत अछि।

एहि संग्रहक राजनीतिक महत्त्व तैओ गम्भीर अछि, कारण ई नेपालक मैथिली भाषी सार्वजनिक क्षेत्रक भीतरक आवाज लिखित रूपमे सुरक्षित करैत अछि। राष्ट्र, मधेश, जनकपुर, भाषा, लोकतन्त्र, असमानता—ई सभ एतए अमूर्त विषय नहि, रोजमर्रा जीवनक अनुभव अछि। साहित्यिक इतिहास लेल एहन संग्रह भविष्यक सामाजिक अभिलेख सेहो बनैत अछि।

शहर, आधुनिकता आ विडम्बना

“हमर शहर बहुहाल अछि...” आ बादक “हमर शहर” सन रचनासभ शहरी आधुनिकताक प्रति मोहभंग व्यक्त करैत अछि। शहर विकासक पर्याय नहि; अव्यवस्था, धूल, गरीबी, सत्ता, सार्वजनिक असुविधा, भीड़ आ नैतिक अकेलापनक स्थल सेहो अछि। “आह, रुपैया!” बाजारक मूल्य-व्यवस्था पर व्यंग्य अछि; “स्टेपनी” जकाँ वस्तु शीर्षक आधुनिक उपभोक्ता जीवनकेँ रूपकमे बदलैत अछि; “अपनेकेँ करक अछि बात” सामाजिक आत्ममुग्धता पर चोट करैत अछि।

कवि आधुनिक वस्तुसभकेँ कविता-योग्य मानैत छथि—ई महत्त्वपूर्ण आधुनिकतावादी संकेत अछि। किन्तु कतेको ठाम वस्तुक उल्लेख मात्रे आधुनिकता नहि बनैत अछि; ओकर सामाजिक सम्बन्ध खोलब आवश्यक अछि। “ढोलक”क श्रेष्ठ आधुनिक कविता ओहि ठाम अछि जतए वस्तु मनुष्यक सम्बन्धक रूपक बनैत अछि।

प्रेम, स्त्री आ लैङ्गिक दृष्टि

ताल-खण्डक प्रेमगीत आ नाल-खण्डक “नारी” जकाँ कविता संग्रहमे स्त्री-अनुभवक उपस्थिति देखबैत अछि। प्रेमक रचनासभमे नजरि, पायल, रंग, देहक गति, विरह आ आकर्षण अछि।

“नारी”मे स्त्रीक शक्ति, जननीत्व, श्रम आ मानवीय गरिमाकेँ मान्यता देबाक भाव अछि।

मुदा आधुनिक स्त्री-विमर्शक कसौटीपर किछु प्रश्न बचैत अछि। स्त्रीकेँ “माय”, “शक्ति”, “सुन्दरता” अथवा प्रेमिका मात्रक प्रतीक बनबैत रहब ओकर वास्तविक सामाजिक व्यक्तित्वकेँ सीमित करि सकैत अछि। काज, सम्पत्ति, शिक्षा, निर्णय, हिंसा, देहपर अधिकार, सार्वजनिक नेतृत्व, घरक अदृश्य श्रम—ई सभ आयाम आर गहिर रूपमे आबि सकैत छल। तें संग्रह स्त्री-गरिमाक पक्षधर तऽ अछि, मुदा स्त्री-अनुभवक भीतरसँ लिखल बहुस्वरता सीमित अछि। ई आलोचना संग्रहक मूल्य घटबैत नहि; ओकर आगामी सम्भावना रेखांकित करैत अछि।

अस्तित्व-बोध: समय, चुप्पी, खोज आ मृत्यु

कविक सार्वजनिक आवाजक पाछाँ एकटा अकेला, प्रश्नाकुल व्यक्ति सेहो अछि। “समय”, “जखन तक ई जिनगी”, “ई सूरज देखू अस्ताइत”, “खोजि रहल छी...”, “तप?!” , “चुप्पी”, “आह!”, “चलू राति बिती गेल!”, “ई जिनगी”, “जीवन सपना”, “चुप्प छी”, “हे भगवान!” आदि रचना जीवनक अनिश्चितता आ अर्थ-खोजक दिशा खोलैत अछि।

“समय”मे समय स्थिर नहि, सर्वगतिशील सत्ता अछि; मनुष्य ओकर भीतर क्षणिक अछि। “चुप्पी” केवल मौन नहि—सामाजिक भय, आत्म-संयम अथवा मानसिक एकान्तक संकेत बनि सकैत अछि। “खोजि रहल छी...” आत्म-पहिचानक प्रक्रिया अछि; “तप?!” धार्मिक-अध्यात्मिक प्रश्नकेँ जीवनक व्यावहारिक द्वन्द्वसँ भिड़बैत अछि। एहि रचनासभमे कवि जखन उपदेश कम करैत छथि, तखन काव्य अधिक गहिर होइत अछि।

धर्म, मिथक आ नैतिक प्रश्न

“हा! शिव!”, “हे भगवान!”, शुभकामना, जागरण, संस्कार-संबद्ध गीत आदि संग्रहक धार्मिक-सांस्कृतिक धरातल बतबैत अछि। कवि धर्मकेँ केवल आस्था रूपमे नहि, नैतिक प्रश्न पूछबाक भाषा रूपमे सेहो लैत छथि। ई लोकधर्मी आधुनिकताक लक्षण अछि—धर्म आ आधुनिक सामाजिक प्रश्न एक-दोसराक विरोधी रूपमे नहि, संवादक क्षेत्रमे उपस्थित होइत अछि।

मुदा धर्म-संबंधी कविता जखन नैतिक सत्यकेँ पूर्वनिर्धारित उत्तरमे बदलि दैत अछि, तखन प्रश्नक काव्यात्मक तनाव कम होइत अछि। “हा! शिव!!” सन पुकार सफल तखन अछि जखन ओ विस्मय, पीड़ा आ असमर्थता खुला छोड़ैत अछि।

नाल-खण्ड (२७ कविता) — संग्रहक हृदय

नाल-खण्ड एहि संग्रहक सभसँ बेसी आ सभसँ तीखा खण्ड थिक। बाल आ ताल खण्डक कोमलता एतए आबि गम्भीर, तीख आ सीधा राजनीतिक-सामाजिक स्वरमे बदलि जाइत छैक। एहिमे चारि-पाँच प्रमुख स्वर-धारा देखाइ परैत अछि, जाहिपर अलग-अलग चर्चा आवश्यक छैक।

(क) दलित-मुसहर चेतना आ सामाजिक न्याय

संग्रहक सभसँ तीख स्वर मुसहर (महादलित) समुदायक लेल लिखल कविता सभमे भेटैत अछि: ‘मनुखमारा’, ‘मुसहर’के हम बच्चा छी’, ‘बेतरासल हीरा’ आ ‘बकए बएल बुफ्फह रे बहुरा’। ‘मनुखमारा’ कवितामे एनजीओ/शोधकर्ताजगत्क ‘डेवलपमेण्ट’ संस्कृतिपर तीख व्यंग्य अछि, जतय मुसहर समुदायकेँ केवल फोटो खिचबाक, लेख आ शोध-पत्रक लेल विषय बनाओल जाइत अछि, मुदा ओहि समुदायक वास्तविक जीवन-स्तरमे कोनो परिवर्तन नहि अबैत अछि।

मुसहरकेँ मुसहरे राखह, देखह खून निहारि !

लिखह, फोटो खिचह, माँचिचाड़ि क’ भीखो दहक आ करह जमोरा फाड़ि !

एहन सीधा आ निर्भीक व्यंग्य-शैली मैथिली साहित्यमे कम भेटैत अछि। तहिना “‘मुसहर’के हम बच्चा छी !” कविता मार्मिक महत्वक राखैत अछि: ‘दलित’ शब्दकेँ ‘स्खलित’सँ तुकबन्दी क’ समाजक कलंकित दृष्टिकोणकेँ आँकि, कवि ‘मुसहर’ पहचानकेँ श्रम आ सत्यपर आधारित गौरवक रूपमे पुनर्स्थापित करैत छथि।

(ख) स्त्री-विमर्श आ ‘सीताके भूमि’क विडम्बना

संग्रहक सभसँ मार्मिक रचना सभमे एकटा ‘सीताके भूमिमे...आह !’ थिक (पृ. १२६)।

जनकपुरधाम — सीताक जन्मभूमि — मे आइयो बेटी-बच्चीकेँ परित्यक्त कएल जाइत अछि, फेंकि देल जाइत अछि, एहि विडम्बनापर कवि गहींगहीर आघात पहुंचबैत छथि। रामायणक

सीता-परित्यागकें समकालीन बालिका-विभेदक रूपकमे पुनर्व्याख्यायित करब कविक एहि कविताकें संग्रहक सभसँ साहसिक सर्जनात्मक उपमानसभमे एक बनबैत अछि।

सीताके भूमिमे फेक देलजाइत अछि सीता !

जनमिते जाढ़मे ठिठुरए लेल ... कात-करोट भार-फाँखरमे

भोंकि देल जाइत अछि सीता !

एहि कविताकें स्त्री-भ्रूणहत्या/कन्या-उपेक्षापर एकटा मार्मिक टीका-टिप्पणीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। कविताक अन्तमे ‘शिव धनुषपर मनुखक भेषमे चोंगामे नुकाएल छीपल दैतपर’ जेना पंक्तिसँ कवि समाजमे व्याप्त पाखण्ड आ दोहरापनपर करारा प्रहार करैत छथि।

(ग) न्याय, हिंसा आ जवाबदेहिताक सवाल

‘खून त खून छैक !!!’ आ ‘के कएलए ई खून ?!’ दुनू कविता हिंसा, न्याय आ राजनीतिक आश्रयक प्रश्नकें लेल एकटा दार्शनिक जोड़ी बनबैत छथि।

एहि लोकक लोक त नहि देखैत अछि, मुदा जे कसाइत अछि सत्ते देखैत हएतैक।

न्याय आ अन्यायक लेखा लेल ओतए फरियाद फेकैत हएतैक।

आखिर खून त खून छैक !!!

एहि कवितामे यमलोकक हिसाब-किताबपर आधारित एकटा अलौकिक न्यायक कल्पना — जतए ‘खुनियाँक खाता’मे हिसाब जोड़ल जाइत अछि — काव्यात्मक साहसक परिचायक थिक। सरल लय-बद्ध भाषामे एहि प्रकारक दार्शनिक गहराइ एहि खण्डक एकटा विशेष बल थिक।

(घ) समकालीन उपभोगवाद आ सामाजिक पाखण्डपर व्यंग्य

आधुनिक समाजक डिजिटल/बजारवादी आडम्बरकें सेहो कवि नहि छोड़ैत छथि। ‘फादर्स डे’ शीर्षक रचना, जे भूमिकामे सेहो उद्धृत भेल छैक, फेसबुक संस्कृतिमे वार्षिक फादर-डे/मदर-डे परफोर्मेन्स बना देल जाएब, जते वास्तविक सम्बन्ध बरसभर उपेक्षित रहैत अछि, तेकरापर व्यंग्यमय रूपे प्रहार करैत छथि। ‘आह, रुपैया !’, ‘महान छी ?’, ‘स्टेपनी’ आदि कविता सेहो भ्रष्टाचार, बेरोजगारी आ बिचौलिया राजनीतिपर चोट करैत छथि।

(ड) संघर्ष आ जागरणक आह्वान

संग्रहमे मात्र व्यथाक प्रदर्शन नहि, अपितु संघर्षक आह्वान सेहो बजाओल गेल अछि। ‘बीआ संघर्षके’ कविता चारि खण्डमे विभाजित — समस्याक चिन्हारीसँ लऽ कऽ संघर्षक निर्णय धरि — आगू बढ़ैत अछि।

आ की – ?!

उठि ठाढ़ भ’ तानब !

बीआ संघर्षके

छिटएके ठानब !!

एहि प्रकारक कविता — जेना ‘धैर्यवान लोक !’, ‘चलु, राति बिति गेल !’, ‘थाकल सुतल उठह ने बाबल’ — सीधा राजनीतिक नारा नहि दैत, अपितु जनसामान्यक जड़तापर चोट करैत छथि, जाहिमे नेपालक लोकतान्त्रिक आन्दोलनक ऐतिहासिक स्मृति सेहो गूँजैत अछि।

८. शिल्प-विधान आ काव्यशास्त्रीय मूल्यांकन

कोनो भी काव्य-कृतिक सफलता मात्र ओकर विचारमे नहि, अपितु ओकर प्रस्तुतिकरण, शिल्प, भाषा आ बिम्ब-विधानमे निहित होइत अछि। ‘ढोलक’ एहि दृष्टिँ एकटा परिपक्व कृति थिक, जतए भावाभिव्यक्ति आ शिल्प-सौष्ठवक अद्भुत सामञ्जस्य भेटैत अछि।

८.१ भाषा-शैली आ ठेट मैथिलीक प्रयोग

वृषेश चन्द्र लालक भाषा कृत्रिम वा संस्कृतनिष्ठ बोझसँ सर्वथा मुक्त अछि। हिनकर मैथिली मिथिलाक माटि, पानि आ ग्रामीण लोक-संस्कृतिक सौँध गन्धसँ सुवासित अछि। ओ अपन भावकें अभिव्यक्त करबामे अकृत्रिम, ठेट आ जीवन्त शब्दावलीक प्रयोग कएने छथि। ई शब्दावली नहि केवल गाउँ-देहातक स्मृति ताज़ा करैत अछि, अपितु कविताकें सम्प्रेषणीय (Communicable) आ लोक-हृदयक समीप ल’ जाइत अछि।

हिनक रचनामे प्रयुक्त ठेट शब्दावलीक किछु उदाहरण द्रष्टव्य अछि: बतंगर (बात केर बतंगर), मन्हुआएल, बिधुआएल, लुलुआएल, खौरछाह, औगताह, पकठोस, अकिलगर, कनोजर, चिनवार, गहवर, ढकड़इ, निहटि, झपस्सा, हुड़का, छनकी, बकए बएल, अमरासा, अमोट, तिलकोर, तरूआ,

पिरुकिआ आदि। ई शब्दावली भाषाक मौलिकताकेँ अक्षुण्ण रखैत अछि आ भाव-सम्प्रेषणमे तीक्ष्णता लावैत अछि।

८.२ बिम्ब आ प्रतीक-विधान (Imagery & Symbolism)

कविद्वारा प्रयुक्त दृश्य, श्रव्य आ स्पर्श बिम्ब अत्यन्त सजीव आ प्रभावशाली छथि। श्रव्य बिम्ब (Auditory Imagery) क सन्दर्भमे ढोलकक 'गुम-गुम गुमकाब', हिड़लाक 'हिर्रर्र हिलब', कागाक 'लोल मारि भागब', झिल्लीक 'कड़-कड़ बोलब', आ पाजेबक 'भुनुक भुन भुनभुन पायल बाजए' जकाँ ध्वन्यात्मक शब्द कवितामे सांगीतिक लय (Onomatopoeia) उत्पन्न करैत अछि। दृश्य बिम्ब (Visual Imagery) क दृष्टान्त 'गोरकी नजरि' मे गालक लालीमे चान मुस्काएब आ 'ल' अग्निशिखा रेड़मे' मे खूनक तरतराएब सन चित्र प्रस्तुत करैत अछि।

प्रतीक-विधानक दृष्टिसँ ई पोथी अत्यन्त समृद्ध अछि। ढोलक (शोषित आ सीमान्तीकृत वर्ग), मूस (सामन्त आ शोषक एनजीओ), कौआ (अवसरवादी नेता), चिनवारक आगि (क्रान्ति), शून्य (परम सत्य आ अस्तित्व) आदिक प्रयोग प्रतीकात्मक अछि जे कविताकेँ बहुआयामी अर्थ प्रदान करैत अछि।

८.३ छन्द, लय आ सांगीतिकता

बाल-खण्ड आ ताल-खण्डक कवितासभ पूर्णतः मात्रिक छन्द आ लोक-लयपर आधारित अछि, जाहिमे गेयता (Lyricism) क प्रधानता अछि। ई गीतसभ मिथिलाक पारम्परिक धुनिमे गाओल जा सकैत अछि। मुदा नाल-खण्डमे मुक्तक छन्द (Free Verse) क प्रयोग भेल अछि, जाहिमे लय शब्दक अन्त्यानुप्रासमे नहि, बल्कि विचार प्रवाहक आरोह-अवरोहमे अछि। 'बेगिन्ती बेहाल बेकल, बेढंगी बेजान बेचल' जकाँ पंक्तिमे अनुप्रास अलंकारक छटा दर्शनीय अछि, जे भावक तीव्रताकेँ द्विगुणित करैत अछि।

लोकध्वनि आ ध्वन्यात्मक काव्य-शिल्प

“ढोलक”क काव्यशास्त्र ध्वनिपर आधारित अछि। ध्वनि तीन स्तरपर काम करैत अछि। पहिल, अनुरणनात्मक ध्वनि—फुर्, धुम, धक, चकदुम, भुकु, झम-झम, जोगिरा। दोसर, लयात्मक पुनरुक्ति—एकहि वाक्यांशक बारम्बार आगमन, जाहिसँ गीतात्मक वृत्त बनैत अछि। तेसर,

सार्वजनिक संबोधन—“हे भगवान!”, “हा! शिव!!”, “धर धर रे!”, “जागू”, “उठह”—जे कविताकें पाठ नहि, पुकार बनबैत अछि।

ई पुकारक परम्परा मिथिलाक लोकगीत, ऋतुगीत, होरी, विवाह-संस्कार, जागरण आ सार्वजनिक मंचीय काव्यसँ जुड़ैत अछि। कवि आधुनिक विषय लेल पारम्परिक वाचिक उपकरण उपयोग करैत छथि। फलतः राजनीति सेहो गीत बनि सकैत अछि, आ बाल-खेल सेहो काव्य-लयक पाठशाला।

मुदा पुनरुक्ति हर ठाम समान प्रभावकारी नहि। जतए पुनरुक्ति ध्वनि आ अर्थक तनाव बढ़बैत अछि, ओतए कविता स्मरणीय बनैत अछि; जतए केवल पंक्ति भरबाक रीति सन दोहराइत अछि, ओतए गति मंद पड़ैत अछि। संग्रहक सम्पादित नव संस्करणमे पुनरुक्तिक काव्यात्मक औचित्य अनुसार चयनित संक्षेप कएल जाए तँ कतेको कविता आर तीक्ष्ण भऽ सकैत अछि।

भाषा: नेपालक मैथिली, लोकबोली आ शुद्धताक प्रश्न

“ढोलक”क भाषा पुस्तकालयी मानक मैथिली मात्र नहि; एतए जनकपुर-मधेशक बोलचाल, लोकप्रयोग, संस्कृतनिष्ठ शब्द, हिन्दी/नेपाली सम्पर्कसँ आएल रूप, आधुनिक प्रशासनिक शब्दावली आ कतेको अंग्रेजी मूलक वस्तु-शब्द सहअस्तित्वमे अछि। एहि मिश्रणकें केवल “अशुद्धि” कहि छोड़ब साहित्यिक दृष्टिसँ उचित नहि, कारण ई क्षेत्रक वास्तविक भाषिक समाजक दस्तावेज सेहो अछि।

तथापि प्रकाशनक स्तरपर वर्तनी-संगति, विरामचिह्न, रूप-एकरूपता आ टंकण-शुद्धि आर कठोर होयबाक चाही। कतेको पृष्ठपर शब्द-रूप, मात्राक प्रयोग, प्रश्न/विस्मय चिह्नक अधिकता, अक्षर-संयोजन वा शीर्षक-लेखनमे असंगति देखाइत अछि। कविता जँ वाचिकता सँ लिखित साहित्यक स्थायी रूपमे प्रवेश करैत अछि तँ सम्पादकीय शुद्धि आवश्यक अछि। शुद्धि करैत समय स्थानीय मैथिली स्वरकें मेटायब नहि, बल्कि वर्तनीक स्पष्टता आ पाठसुलभता बढ़ायब लक्ष्य होयबाक चाही।

भाषाक सबसँ जीवित भाग संबोधन आ क्रियात्मकता अछि। छोट वाक्य, प्रश्न, हाँक, विस्मय, देहगत क्रिया—ई सभ कविता कें बोलैत भाषा बनबैत अछि। एतए कविक राजनीतिक वक्तृत्व-कौशल कतेको ठाम लाभकारी अछि; पंक्ति मंचपर तुरन्त पकड़ बनबैत अछि।

चित्र आ कविता: दृश्य-पाठक सम्भावना

पोथीक लगभग प्रत्येक कविता संग चित्र देबाक प्रवृत्ति एकरा साधारण कविता-संग्रहसँ अलग दृश्य-पुस्तक बनबैत अछि। बाल-खण्डमे ई विशेष सफल, कारण बच्चाक पाठ-अनुभव दृश्य आ शब्द दुनू पर चलैत अछि। नाल-खण्डमे रक्त, गरीबी, शहर, स्त्री, भूख, अकेलापन, हिमपात, विस्फोट आदि शीर्षकसँ जुड़ल चित्र तात्कालिक प्रसंग दैत अछि।

मुदा आलोचनात्मक दृष्टिसँ चित्रक दू सीमा अछि। पहिल, बहुधा चित्र कविता के अर्थ पहिने सँ बता दैत अछि; पाठकक स्वतन्त्र कल्पना कम होइत अछि। दोसर, चित्र-शैली एकरूप नहि; छायाचित्र, रेखाचित्र, व्यंग्यचित्र आ संगणकीय चित्र अलग-अलग दृश्य-भाषा बनबैत अछि। यदि आगामी संस्करणमे एकहि कलाकार वा एकरूप मिथिला-आधारित दृश्य-व्याकरण अपनाओल जाए, तऽ पोथीक कलात्मक एकता बहुत बढ़त।

काव्य-शिल्पक सबल पक्ष

- ध्वन्यात्मकता: “फुर्र-फुर्र”, “धुम-धुम”, “धक-धक”, “चकदुम”, “भुकु-भुकु” जकाँ शब्द कविता केँ देहगत श्रव्य अनुभव बनबैत अछि।
- लोक-लय: होरी, जागरण, शुभकामना, पायल, पक्षी-ध्वनि, ढोलक—ई सभ लोक-संगीतक स्मृति सक्रिय रखैत अछि।
- प्रत्यक्षता: कठिन दार्शनिक शब्दावलीक बदला कवि दृश्य, वस्तु, सवाल आ संबोधन चुनैत छथि; तँ कविता व्यापक पाठक धरि पहुँचैत अछि।
- विषय-विस्तार: बच्चासँ राजनीति, प्रेमसँ भूख, शहरसँ अध्यात्म—एकहि संग्रहमे असाधारण विस्तार।
- सार्वजनिक वाचिकता: मंचीय पाठ, सामूहिक गायन, जुलूस वा गोष्ठीमे जीवित रहबाक क्षमता।
- व्यंग्य: रुपैया, नेता, योजना, लोक, शहर, सामाजिक ढोंग आदिपर छोट तीक्ष्ण वाक्य आ प्रश्न।
- रूपक: “ढोलक”, “पिंजरा”, “खून”, “पेट”, “चुप्पी”, “स्टेपनी” जकाँ वस्तु सामाजिक अर्थक द्वार बनैत अछि।

काव्यगत सीमा आ सुधारक सम्भावना

गम्भीर समीक्षा केवल प्रशंसा नहि। “ढोलक”क महत्त्व स्वीकार करैत ओकर सीमासभ सेहो स्पष्ट करब आवश्यक अछि।

क. घोषणात्मकता

कतेको राजनीतिक/नैतिक कविता विचारकेँ बिम्ब वा प्रसंगमे विकसित करबाक पूर्वे निष्कर्ष कहि दैत अछि। फलतः कविता घोषणापत्रक समीप चलि जाइत अछि। रूपक, दृश्य आ चरित्रक माध्यमसँ विचारकेँ स्वयं खुल्य देल जाए तऽ काव्य-गहिराइ बढ़त।

ख. पुनरावृत्तिक असमान उपयोग

गीतमे पुनरावृत्ति शक्ति अछि, मुदा प्रत्येक कविता मे अत्यधिक आवर्त-पंक्ति प्रभाव घटा सकैत अछि। श्रव्य पाठमे जे पुनरावृत्ति रसदायक, मुद्रित पृष्ठपर ओ कतेको बेर लम्बा बुझा सकैत अछि। चयनात्मक सम्पादन उपयोगी होयत।

ग. छन्द आ पंक्ति-संयम

कवि लोकलयपर भरोसा करैत छथि; ई सबलता अछि। तथापि कतेको ठाम पंक्तिक लम्बाइ, यति आ ध्वनि-भार एकरूप नहि रहैत अछि। यदि गीत रूपमे अभिप्रेत रचनासभक स्वरलिपि/ताल-संकेत वा स्पष्ट आवर्त-पंक्ति विन्यास देल जाए, पाठक लय बेहतर पकड़ि सकत।

घ. दृश्य-सामग्रीक एकरूपता

चित्र बहु उपयोगी, मुदा कलात्मक शैलीक असमानता पुस्तकक समेकित दृश्य-परिचय कमजोर करैत अछि। मौलिक मिथिला-चित्रांकन वा एकरूप कृष्ण-श्वेत रेखांकनक नवीकरणीय सम्भावना अछि।

ड. टंकण आ वर्तनी

पुस्तकमे संपादकीय प्रूफ-पठनक आर एक चक्र आवश्यक बुझाइत अछि। खास कऽ मात्रा, संयुक्ताक्षर, विस्मय/प्रश्नचिह्न, शब्द-विराम, शीर्षक-रूप, अंकीय संकेत आदि एकरूप कएल जाए।

च. सामाजिक विषयक बहुस्वरता

वंचित, स्त्री, मजदूर, गरीब आदिक पक्षधरता स्पष्ट अछि; अगिला चरणमे एहि पात्रसभकेँ कविक दया वा आक्रोशक विषय नहि, अपन स्वतंत्र आवाज, स्मृति, हास्य, इच्छा आ विरोध सहित बहुआयामी व्यक्ति बनाओल जा सकैत अछि।

भाषा-शैली आ शिल्प-विधान

वृषेश चन्द्र लालक भाषा लोकमूलक, मुहावरात्मक आ सीधा-सादा छथि। संस्कृतनिष्ठ शब्दाडम्बरकेँ स्थान नहि देत, ओ लोकोक्ति, मुहावरा, सरल छन्द-स्थापना आ पुनरुक्ति (repetition/refrain)क प्रभावकेँ आधार बनबैत छथि, जेना लोकगीत, होरी-जोगिरा आ मंगल-गीतक परम्परासँ चलि आएल अछि। भूमिकामे सेहो एहि बातक पुष्टि भेटैत अछि, जे पहिल मैथिली टेलीफिल्ममे प्रयुक्त गीत ‘कतसँ शुरू हम करू’ जेना भ्रष्टाचार-विरोधी रचनासँ कवि पहिनहिसँ संबद्ध रहलाह।

दोसर विशेषता थिक स्थानीय प्रतीकक बहुल प्रयोग — सीता, दुर्गा, महिषासुर, शिव आदिकेँ आधुनिक सामाजिक यथार्थ बुझाएबाक लेल प्रतीकक रूपमे ग्रहण कएल गेल अछि। भूमिकाकार परमेश्वर कापड़िक शब्दमे, कविक रचनासंसारक आयाम बहुत विस्तृत अछि आ एकर परिधि, परिदृश्य बहुत व्यापक अछि।

डा. राजेन्द्र विमलक भाषामे कहल जाए त, संग्रहक भाषिक विशेषता एहि बातमे अछि जे ई रचना नेपालमे अनवरत् चलि रहल विभेद-अन्तक युद्धक मैदानमे युद्धरत् कविहृदय सेनानी-स्रष्टाद्वारा भेल अछि — एहि लेल इमहर पाठक जेना श्रीकृष्ण कुरुक्षेत्रक बीचमे ठाढ़ भ’ गीता सुना रहल होथि तहिना अनुभव करैत छथि।

प्रतीक-विधान : प्राचीन आ आधुनिकक संगम

एहि संग्रहक एकटा उल्लेख्य लक्षण थिक वैदिक/पौराणिक प्रतीकक समकालीन पुनर्व्याख्यान। भूमिकामे सेहो ऋग्वेद (१०/१२९/५) आ मुण्डकोपनिषद्क उद्धृति ‘प्रथमः संबभूव विश्वस्य कर्ता भुवनस्य गोप्ता’ उद्धृत क’ ‘शुभे हो शुभे’ शीर्षक मंगल-गानमे नव समाजवादी-रूपान्तरणकारी अर्थ भरल गेल अछि। एहि प्रकारे, कवि परम्पराकेँ अस्वीकार नहि करैत छथि, अपितु ओकरा

नव-राजनीतिक-सामाजिक चेतनासँ पुनःसंयोजित करैत छथि — जे मैथिली साहित्यक एकटा सशक्त परम्परा (लोकगीत आ भक्ति-काव्यक पुनर्व्याख्या)क विस्तार सेहो थिक।

समालोचनात्मक मूल्यांकन

शक्ति

- प्रत्यक्ष अनुभवसिद्धता : रचना राजनीतिक खोखलापनमे नहि बैसल अछि, बल्कि संघर्षक मैदानमे बनल थिक, एहि लेल स्वरमे एकटा एहन सीधापन अछि जे नकली साहित्यमे दुर्लभ अछि।
- बहुआयामी विस्तार : बाल-साहित्यसँ लऽ कऽ राजनीतिक व्यंग्य, लोकगीतसँ लऽ कऽ प्रेम-गीत, दार्शनिक स्फुटनसँ लऽ कऽ सामाजिक यथार्थवाद — एकहि संग्रहमे विधागत विविध रंग देखाइ परैत अछि।
- सामाजिक सरोकार : मुसहर समुदाय, नारी उत्पीड़न, गरीबी आदिपर लिखल कवितामे सहानुभूतिपरक प्रामाणिकता भेटैत अछि, जे बाह्य-दृष्टान्त नहि, बल्कि भीतरसँ जानल यथार्थ लागैत अछि।

सीमा

- स्थान-स्थानपर कथ्यक सीधापन एतेक स्पष्टवादी अछि जे कतोक ठाम प्रतीकात्मकताक सूक्ष्म बुनावट कम बैसि सीधा उद्घोषणा बनि जाइत छैक; मुदा ई कमजोरी अनचोके नहि छैक, बल्कि सचेत आन्दोलनकारी शैलीक मांग थिक।
- तीन खण्ड आ बहुत रास उप-विषयक कारणे संग्रहमे स्वर बेरा-बेर बदलैत अछि — बाल्यसुलभ कोमलतासँ राजनीतिक तीखापन धरि — जे एकसंग पढ़लापर कखनो-कखनो अचानक लागैत अछि।

९. समालोचक लोकनिक दृष्टिक विवेचन

पोथीक प्रारम्भमे देल गेल विद्वान् भूमिकाकार लोकनिक मन्तव्य कविक काव्य-संसारक कुञ्जी प्रदान करैत अछि, जाहिसँ कविक वैचारिक धरातलकेँ बुझबामे सहायता भेटैत अछि।

वरिष्ठ समालोचक डा. राजेन्द्र विमल कविक काव्य-चेतनाकेँ 'मानवकेन्द्रित दर्शन'

(Anthropocentric philosophy) क संज्ञा दैत लिखने छथि जे कवि वृषेश चन्द्र लाल अपन

मैथिली कवितासभमे नेपालीय मिथिलाभूमिक संघर्ष, सफलता-असफलता, वेदना आ उल्लासक सूक्ष्मातिसूक्ष्म चित्र नव-नव बिम्ब आ प्रतीकक माध्यमे प्रस्तुत करैत छथि। ई जीवनके ओकर सम्पूर्णतामे देखैत छथि आ अशिव-तत्त्वकँ शिव-तत्त्वमे परिवर्तित करबाक मार्गचित्र सेहो दैत छथि। डा. विमलक अनुसार, हिनक कवितासभमे कुण्ठाग्रस्तताक स्थानपर धरातलीय यथार्थक उद्दाम अभिव्यक्ति अछि, जेना श्रीकृष्ण कुरुक्षेत्रक बीचमे ठाढ़ भ' गीता सुना रहल होथि।

दोसर दिस, वरिष्ठ साहित्यकार परमेश्वर कापड़ि वृषेशजीक दर्शनक व्याख्या करैत लिखैत छथि जे वैदिक उद्धोष अछि 'ब्रह्म सत्य, जगत् मिथ्या'; मुदा वृषेशीय हुमचल आवाज अछि- 'जगत् सत्य, लोक-ब्रह्म !' कापड़िजीक अनुसार वृषेशजीक रचनागत आवाज नव-संरचनावादी, लोक-संवेगित आ रूपान्तरणकारी आन्दोलनक पक्षधर अछि। ओ हिनका बाल-गीत आ पप-गीतक ऐतिहासिकताक सेहो बखान करैत छथि। ई दुनू मन्तव्य सिद्ध करैत अछि जे वृषेश चन्द्र लालक कविता यथास्थितिवाद (Status quo) क समर्थक नहि, अपितु प्रगतिशील क्रान्तिक संवाहक थिक।

“ढोलक” आ समकालीन मैथिली काव्यपरम्परा

मैथिली कविता दीर्घकाल धरि गीत, पद, लोकधुन, भक्ति, प्रेम, ऋतु आ सामाजिक जीवनसँ पोषित रहल अछि। आधुनिक कालमे मुक्तछन्द, सामाजिक यथार्थ, राजनीतिक प्रतिरोध, व्यंग्य, शहरी अनुभव, दलित-वंचित प्रश्न, नारी-विमर्श आ व्यक्तिगत अस्तित्व-बोधक विस्तार भेल। “ढोलक” एहि दुनू धाराकँ जोड़ैत अछि: ओकर काव्य-देह लोकलयक अछि, मुदा विषय आधुनिक नागरिक जीवनक।

देवकान्त झाक आधुनिक मैथिली साहित्यक इतिहास आधुनिक कविता मे सामाजिक चेतना, यथार्थ, प्रयोग आ मानवीय संघर्षक बढ़ैत उपस्थिति दिस संकेत करैत अछि। “ढोलक” एहि प्रवृत्तिक एक महत्त्वपूर्ण नेपाल-केन्द्रित उदाहरण अछि। संग्रहक भाषा आ राजनीतिक भूगोल भारतीय मिथिलाक केन्द्रसभसँ अलग अनुभव आनैत अछि; तँ एकरा समकालीन मैथिली साहित्यक सीमा-पार चरित्रक साक्ष्यक रूपमे सेहो पढ़बाक चाही।

अंग्रेजी “Varied Verses” मे “The Musical Drum” क समावेश “ढोलक” क अन्तरभाषिक सम्भावना देखबैत अछि। मैथिली कविता जँ वैश्विक पाठक धरि पहुँचे चाहैत अछि तँ एहन सरल, सांस्कृतिक रूपेँ विशिष्ट मुदा सार्वभौमिक रूपकवाली कविता अत्यन्त उपयुक्त अछि।

१०. निष्कर्ष

समग्र रूपेँ, वृषेश चन्द्र लालक कविता-संग्रह ‘ढोलक’ समकालीन मैथिली काव्य-साहित्यक एकटा युगप्रवर्तक आ कालजयी कृति थिक। ई पोथी एहि बातक अकाट्य प्रमाण थिक जे राजनीति आ साहित्य जखन एकहि प्रखर हृदयमे समन्वित होइत अछि, तखन ओतए कोनो दलगत संकीर्णता नहि, अपितु समाजक अन्तिम जन (Subaltern) प्रति अगाध करुणा, मानवीय मूल्यक अन्वेषण आ न्यायप्रियताक जन्म होइत अछि। कविक राजनीतिक बन्दी-जीवन, लोकतान्त्रिक संघर्ष आ मिथिला-मधेशक अधिकारक लेल कएल गेल हुनक त्याग एहि पोथीक प्रत्येक शब्दमे ऊर्जा बनि क’ धड़कि रहल अछि।

‘ढोलक’ क बाल-गीत जतए शिशु-मनकेँ नव युगक चुनौतीसभसँ संस्कारित करैत अछि आ ओकरा भीतर स्वतन्त्रता आ समताक बीआ बोवैत अछि, ताल-गीत लोक-हृदयकेँ अपन माटिक सांस्कृतिक सुगन्ध, विद्यापति परम्पराक शृंगार आ नव-युगीन व्यंग्यसँ आह्लादित करैत अछि। ततहीं, नाल-खण्डक गम्भीर कवितासभ शोषक सत्ता, पाखण्डी बौद्धिक वर्ग, एनजीओ संस्कृति आ दिशाहीन आधुनिकताकेँ थरथरा दैत अछि। कविक भाषाक अकृत्रिमता, ठेट मैथिली शब्दावलीक सुमधुर प्रयोग, आ बिम्ब-विधानक सजीवता एहि पोथीकेँ साहित्यिक दृष्टि अत्यन्त समृद्ध आ जनमुखी बनावैत अछि।

नेपालक मधेश आन्दोलन, लोकतान्त्रिक चेतना आ सीमान्तीकृत वर्गक मुक्तिक जे वैचारिक पदचाप कविक राजनीतिक जीवनमे अछि, वैह पदचाप हिनकर कवितासभमे ‘ढोलक’ क थाप बनि क’ गूँजि रहल अछि। आधुनिक मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धिमे ‘ढोलक’ निश्चित रूपसँ एकटा अमूल्य धरोहर आ मील-क-पाथर (Milestone) सिद्ध हएत। ई मात्र कविता-संग्रह नहि, अपितु वर्तमान युगक करेजक स्पन्दनक एकटा इमानदार, साहसिक आ ऐतिहासिक दस्तावेज थिक। एहि पोथीक पठन-पाठन आ शोध नहि केवल साहित्यक विद्यार्थीक लेल, अपितु समाजशास्त्र आ राजनीतिका अध्येताक लेल सेहो समान रूपेँ उपादेय सिद्ध हएत।

समग्र मूल्यांकन

“ढोलक”क मूल्यांकन केवल “सुन्दर कविता” वा “राजनीतिक कविता”क द्वैतमे नहि हो सकैत अछि। ई एकटा नागरिक-कवि द्वारा रचल बहुस्तरीय सार्वजनिक काव्य-पुस्तक अछि। बालकक खेल-ध्वनि, लोकगीतक ताल, मधेशक संघर्ष, जनकपुरक शहर, गरीबक पेट, स्त्रीक गरिमा, रक्तक प्रश्न, रुपैयाक व्यंग्य, आत्माक चुप्पी आ भगवानक सामने मनुष्यक असहायता—ई सभ एकहि ढोलकक अलग-अलग थाप अछि।

संग्रहक श्रेष्ठ उपलब्धि ई अछि जे ओ मैथिली कविता केँ उच्च साहित्यिक कक्षाक सीमामे बन्द नहि करैत अछि। कविता एतए गली, घर, खेत, पोखरि, स्कूल, उत्सव, सभा, आन्दोलन, अस्पताल, बाजार आ मनक अन्हार कोन धरि जाइत अछि। एहि लोकतान्त्रिक विस्तारमे कतेको रचना काव्यात्मक रूपेँ कच्चा रहि जाइत अछि, मुदा समूचा पुस्तक जीवनक ध्वनिसँ भरल अछि।

यदि एकटा चयनित “श्रेष्ठ ढोलक” संस्करण बनाओल जाए—जाहिमे लगभग ४०-५० सर्वाधिक सघन कविता, शुद्ध पाठ, एकरूप चित्रांकन, रचनाकाल/प्रसंग, शब्द-सूची, गीतक ताल-संकेत, अंग्रेजी/नेपाली अनुवाद आ आलोचनात्मक भूमिका हो—तऽ ई पुस्तक मैथिली साहित्यक सीमा-पार अध्यापन आ अनुवाद दुनू लेल अधिक प्रभावी बनि सकैत अछि। तथापि मूल ९६-रचनाक संस्करणक दस्तावेजी महत्व अलग अछि; ओकरा संक्षिप्त संस्करणसँ प्रतिस्थापित नहि, संग-संग सुरक्षित राखब उचित होयत।

निष्कर्ष

“ढोलक”क केन्द्रीय प्रश्न अछि—समाज ध्वनि केकर सुनैत अछि, कखन सुनैत अछि, आ काज समाप्त भेलापर ओकरा कोनमे किएक टाँगि दैत अछि? बाल-खण्ड एहि प्रश्नक पूर्वकथा अछि: मनुष्य जन्मतः ध्वनि, खेल आ आश्चर्यसँ भरल अछि। ताल-खण्ड बतबैत अछि जे ओ ध्वनि समुदायमे लय बनैत अछि। नाल-खण्ड देखबैत अछि जे ओहि समुदायमे असमानता, रक्त, भूख, सत्ता, प्रेम, धर्म, बाजार आ मृत्यु सभ एकहि जीवन-नालसँ जुड़ल अछि।

एहि दृष्टिसँ “ढोलक” नाम अत्यन्त सार्थक अछि। ढोलक लोकवाद्य मात्र नहि; ई समाजक देह, कविक कंठ, नागरिकक प्रतिरोध, श्रमिकक उपयोगिताक पीड़ा आ सामूहिक स्मृतिक धड़कन अछि। पोथीक काव्य-गुणवत्ता असमान रहितो ओकर सांस्कृतिक ऊर्जा प्रबल अछि।

समकालीन मैथिली कविता विशेषतः नेपालक मैथिली रचनाशीलताक अध्ययनमे एहि संग्रहकें गम्भीरतासँ स्थान देबाक चाही।

‘ढोलक’ मात्र एकटा मैथिली कविता-संग्रह नहि, अपितु एकटा पूरा युगक ध्वनि-चित्र थिक — जाहिमे बाल्यकालक निर्दोष खेल, प्रेम-मिलनक कोमलता, आ समाजक सभसँ दबल-कुचल — मुसहर, दलित, नारी — क आर्तनाद एकसंगे गूँजैत अछि। शीर्षकमे निहित रूपकक सार्थकता — आनक लेल बाजब, अपन खुदक लेल मूक रहब, प्रयोगक बाद फेर कोन्हामे बान्हल रहब — सम्पूर्ण संग्रहकें एकटा सार्थक रूपक प्रदान करैत अछि।

कविक स्वयं राजनीतिक आ सामाजिक संघर्षमे भोगल जीवन एहि संग्रहकें केवल एकटा साहित्यिक रचना नहि, अपितु एकटा सामाजिक-राजनीतिक दस्तावेज सेहो बना दैत अछि, जे मैथिली साहित्यमे प्रतिबद्ध/जन-कविताक परम्पराकें एकटा नवीन आ समकालीन कड़ी प्रदान करैत अछि। सामाजिक न्याय, दलित-चेतना, स्त्री-विमर्श आ भ्रष्टाचारपर राजनीतिक टीका-टिप्पणी — सभ आइक मैथिली-मिथिलांचल समाजक लेल एकरसाँ प्रासंगिक सेहो छथि।

सम्पूर्णतामे, ‘ढोलक’ मैथिली कविता-परिदृश्यमे एकटा एहन कण्ठ थिक जे उत्सवक ढोल-नाद आ संघर्षक चेतावनी-घोष दुनू एकही चामसँ बजबैत अछि — तखने चुप होइत अछि, जखन कोन्हामे बान्हल जाइत अछि, आ फेर सँ बाजबाक लेल तैयार रहैत अछि।

ग्रन्थसूची

- लाल, वृषेश चन्द्र। ढोलक (मैथिली कविता-संग्रह)। सुदामा प्रकाशन, जनकपुरधाम।
- मिश्र, जयकान्त। History of Maithili Literature। साहित्य अकादेमी, १९७६।
- झा, देवकान्त। A History of Modern Maithili Literature: Post-Independence Period। साहित्य अकादेमी, २००४।
- चौधरी, आयोध्यानाथ (सम्पा./अनु.)। Varied Verses: Representative Anthology of Contemporary Maithili Poetry।

3. गोलबा

रचनाकार वृषेश चन्द्र लाल (वृषेश चन्द्र लाल)

विधा मैथिली कथा संग्रह

संकलित कथा गोलबा, डीप डिप्रेसन, चौकपरक मौगी (तीन दीर्घ कथा)

केन्द्रीय विषय निरीहताक शोषण, सामाजिक मौनताक अपराध, मानवीय-अमानवीय द्वन्द्व

१. साहित्यिक सन्दर्भ, लेखकक वैचारिक पृष्ठभूमि आ कृतिक महत्त्व

मैथिली कथा-साहित्यक विकास-क्रममे समकालीन समय विविध वैचारिक, मनोवैज्ञानिक आ शिल्पगत प्रयोगक साक्षी रहल अछि। राजकमल चौधरीक मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद, ललितक आञ्चलिकता, आ सुधांशु शेखर चौधरीक सामाजिक चेतनाक परम्परासँ आगाँ बढ़ैत समकालीन कथाकारसभ नव-नव विषयवस्तु, महानगरीय संत्रास आ बदलि रहल गामक समाजशास्त्रीय विखण्डनकें कथाक मुख्य विषय बनेलन्हि अछि। एहि ऐतिहासिक विकास-क्रममे नेपालक लोकतान्त्रिक आन्दोलनक शीर्षस्थ चिन्तक, प्रखर राजनीतिकर्मी आ विशिष्ट साहित्यकार वृषेश चन्द्र लालक कथा संग्रह 'गोलबा' एकटा युगान्तकारी आ गम्भीर साहित्यिक हस्तक्षेप थिक।

वृषेश चन्द्र लालक जन्म २९ मार्च १९५५ ई. कें नेपालक महोत्तरी जिलाक सुगा-भवानीपट्टी गाममे भेलन्हि। हिनकर मूल परिचय एकटा सिद्धान्तनिष्ठ राजनीतिक योद्धाक रहल अछि, मुदा हिनकर राजनीतिक दर्शन आ साहित्यिक चेतना एक दोसरसँ अभिन्न रूपें जुड़ल अछि। नेपालमे लोकतन्त्रक स्थापनाक लेल निरन्तर संघर्ष करैत ओ १७ बेर गिरफ्तार भेलाह आ लगभग ८ वर्षक कठोर जेल जीवन व्यतीत कएलन्हि। तराई-मधेश लोकतान्त्रिक पार्टीक संस्थापक आ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रहबाक सँग-सँगे ओ राष्ट्रीय सभाक सदस्य (२०१७-२०१९) आ जनकपुरक मेयरक रूपमे सेहो अपन सेवा देलन्हि। हिनकर एहि प्रखर आ संघर्षशील राजनीतिक व्यक्तित्वक पाछाँ एकटा अत्यन्त संवेदनशील, मानवीय आ दार्शनिक साहित्यकारक हृदय नुकाएल अछि, जे समाजक शोषित, उपेक्षित आ मूक प्राणीक क्रन्दनकें शब्द देबामे पूर्णतः सक्षम अछि। विश्वेश्वर प्रसाद कोइरालाक विश्वप्रसिद्ध नेपाली लघु उपन्यास 'सुम्निमा' आ 'मोदिआइन'क मैथिली रूपान्तरण कऽ हिनका द्वारा जे भाषायी प्राञ्जलता, ऐतिहासिक अन्तर्दृष्टि आ दार्शनिक गाम्भीर्य प्रस्तुत कएल गेल, तकर स्पष्ट छाप हिनकर मौलिक कथासभमे सेहो दृष्टिगोचर होइत अछि।

‘गोलबा’, ‘डीप डिप्रेशन’ आ ‘चौकपरक मौगी’ मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय, अस्तित्ववादी आ शिल्पगत स्तरपर परस्पर सम्बद्ध कथा छथि। लेखकक गद्यमे एकटा निस्पृह दार्शनिकता छैक; ओ घटनाकें मात्र वर्णित नहि करैत छथि, बल्कि ओकर भीतर नुकाएल मनोवैज्ञानिक ग्रन्थि, शक्ति-संरचना आ समाजशास्त्रीय यथार्थपरक सूक्ष्म शल्यक्रिया करैत छथि।

‘गोलबा’ आकारमे छोट, मुदा अर्थ-संभावनामे बहुपरत कथा-संग्रह अछि। पहिल कथा ‘गोलबा’ पशु-शिशुक दृष्टि सँ परिवार, स्नेह आ बलिक हिंसा देखबैत अछि; दोसर कथा ‘डीप डिप्रेशन’ एक अनाम पुरुषक भीतर चलैत भय, सन्देह, आत्म-निगरानी आ न कहल जा सकैत सत्यक चक्र रचैत अछि; तेसर कथा ‘चौकपरक मौगी’ तीव्र शहरीकरण, नवधनाढ्यता, भाषिक हीनताबोध, सामाजिक उदासीनता आ स्त्रीक असुरक्षित सार्वजनिक अस्तित्वक कथा बनैत अछि। बाहरी विषय तीनू मे भिन्न अछि, मुदा गहिर स्तरपर संग्रह एके प्रश्न पुछैत अछि—जखन कोनो जीव अथवा मनुष्य पीड़ामे अछि, तखन ओकर पीड़ाकें देखनिहारक नैतिक कर्तव्य की अछि?

एहि कारणें संग्रहक केन्द्रीय शब्द ‘करुणा’ मात्र नहि, ‘उत्तरदायित्व’ सेहो अछि। पहिल कथा मे परिवार गोलबाकें सन्तान जकाँ पोसैत अछि, मुदा अन्ततः ओकर देहक उपयोग संस्कारिक भोज्य वस्तु जकाँ करैत अछि। दोसर कथा मे पात्र अपन पीड़ाकें स्वयं बुझैत अछि, डॉक्टर सेहो संकेत पकड़ैत अछि, मुदा सत्यक उद्घाटन नहि होइत अछि। तेसर कथा मे पूरा चौक एक स्त्रीकें देखैत अछि, पुलिस, स्थानीय प्रभावशाली युवक, कथावाचक आ मित्र सभ ओकर उपस्थिति सँ परिचित अछि, तथापि सक्रिय हस्तक्षेप नहि होइत अछि। एहि त्रयीमे ‘देखब’ आ ‘करब’क बीच दूरी साहित्यिक आ नैतिक तनावक मुख्य स्रोत अछि।

कथाशास्त्रीय दृष्टि सँ संग्रह विशेष रूपेँ दृष्टिकोणक प्रयोगक कारण उल्लेखनीय अछि। जेरा र जेनेट कथात्मक ‘फोकलाइजेशन’ द्वारा ई भेद स्पष्ट करैत छथि जे कथा के बजैत अछि आ अनुभव के दृष्टिसँ देखाओल जाइत अछि—ई दुनू एक नहि। ‘गोलबा’ मे कथावाचक मनुष्यक भाषा मे कथा कहैत छथि, मुदा अनुभवक केन्द्र पशु अछि; ‘डीप डिप्रेशन’ मे कथन तेसर पुरुषमे अछि, मुदा पाठ लगभग पूरा पात्रक मनक भीतर बन्हल रहैत अछि; ‘चौकपरक मौगी’ मे पहिल पुरुषक कथावाचक स्वयं देखनिहार, निर्णय स्थगित करनिहार आ अन्ततः अपराध-बोध सँ

भरल सहभागी बनि जाइत अछि। एतए दृष्टि कथानकक मात्र तकनीक नहि, नैतिक परीक्षा अछि।

2. पोथीक संरचना आ एकसूत्रता

संग्रहक तीनू कथा क्रमशः पशु, मन आ समाज पर केन्द्रित अछि। ई क्रम संयोग मात्र नहि बुझाइत अछि। ‘गोलबा’ देहक बाह्य हिंसा देखबैत अछि; ‘डीप डिप्रेशन’ मनक आन्तरिक क्षरण; ‘चौकपरक मौगी’ सामाजिक संरचना द्वारा उत्पन्न उपेक्षा आ हिंसा। एहि तरहें कथा-संग्रह हिंसाक तीन रूप प्रस्तुत करैत अछि—संस्कारिक हिंसा, मानसिक हिंसा आ सामाजिक/लैंगिक हिंसा।

एहि त्रयीकेँ एक दोसर सूत्र सेहो जोड़ैत अछि—मौन। गोलबा मनुष्यक सहज भाषा नहि बजि सकैत अछि; ओकर असहमति, घुँघरू सँ असुविधा, भय अथवा जीवित रहबाक चाह केवल देहक संकेतमे व्यक्त होइत अछि। ‘डीप डिप्रेशन’क पात्र बोलि सकैत अछि, मुदा निर्णायक बात नुका लैत अछि; ओकर मौन स्वयं निर्मित कारागार बनैत अछि। ‘चौकपरक मौगी’ प्रायः कथा भरि चुप अछि; अन्त मे ओकर चीख पहिल वास्तविक सार्वजनिक वक्तव्य बनैत अछि। एहि क्रममे मौन जैविक सीमा सँ मनोवैज्ञानिक दमन आ सामाजिक अदृश्यताधरि बढ़ैत अछि।

तेसर साझा सूत्र ‘दृष्टि’ अछि। गोलबा मानवीय क्रिया देखैत अछि, मुदा ओकर अर्थ नहि बुझि पबैत अछि; अवसादग्रस्त पुरुष हर संकेत—गन्ध, बन्द खिड़की, छोड़ा गेल चाय, कौआक लोल—केँ अर्थ देबाक विवशता मे फँसैत अछि; ‘चौकपरक मौगी’क कथावाचक प्रतिदिन स्त्रीकेँ देखैत अछि, परन्तु ‘लोक की कहत’क भय सँ दृष्टि के क्रियामे नहि बदलि पबैत अछि। एहि कारण संग्रहक गहिर संरचना ज्ञानमीमांसक सेहो अछि—हम जे देखैत छी, से कतेक बुझैत छी? आ जँ पूर्ण ज्ञान नहि अछि, तखन नैतिक हस्तक्षेप स्थगित क’ देब उचित अछि की नहि?

‘गोलबा’ वृषेश चन्द्र लालक कथा-संग्रह थिक, जाहिमे तीन गोट दीर्घ कथा संकलित छथि — ‘गोलबा’, ‘डीप डिप्रेशन’ आ ‘चौकपरक मौगी’। पहिल दृष्टिमे ई तीनू कथा भिन्न-भिन्न विषय आ पात्रपर आधारित बुझना जाइत अछि — एकटा बकरीक जीवन-कथा, एकटा मानसिक स्वास्थ्य-संकटमे फँसल पुरुषक अन्तर्द्वन्द्व, आ एकटा सड़क-किनारे बैसल रहस्यमयी स्त्रीक करुण गाथा। मुदा गहीँरसँ पढ़लापर स्पष्ट होइत अछि जे तीनू कथा एकटा साझा वैचारिक सूत्रसँ बान्हल छथि — निरीह, वाणीहीन वा अवहेलित प्राणी/व्यक्तिपर समाज (परिवार सहित)

द्वारा कएल गेल अन्याय, आ ओहि अन्यायमे मौन दर्शक बनल रहनिहार सभक सामूहिक दोष। एहि अर्थमे ‘गोलबा’ एकटा एकसूत्रीय (thematically unified) कथा-संग्रह थिक, जतय प्रत्येक कथा एकटा भिन्न रूपमे एहि प्रश्नकेँ उठबैत अछि — निरीहताक सोझाँ मनुख कोन आचरण करैत अछि ?

संग्रहक तीनू कथा—‘गोलबा’, ‘डीप डिप्रेशन’ आ ‘चौकपरक मौगी’—अलग-अलग कथानक रहितो एकटा साझा नैतिक संरचनाक तीन रूप छथि। पहिल कथामे भाषा-विहीन पशु-देह मानवीय स्नेह आ धार्मिक हिंसाक बीच फँसल अछि; दोसरमे बोलबाक क्षमता रहितो पात्र अपन गहिर सन्देह आ मानसिक पीड़ा नहि कहि पबैत अछि; तेसरमे एक स्त्री सार्वजनिक स्थानपर सभक दृष्टिक समक्ष रहितो सामाजिक अर्थमे ‘अनसुनी’ रहैत अछि। एहि त्रयीमे देह, मौन, दृष्टि, सन्देह, हिंसा, करुणा आ उत्तरदायित्व बारम्बार लौटैत अछि। भारतीय रस-ध्वनि परम्परा, कथाशास्त्र, पशु-अध्ययन, नैतिक आलोचना, महानगरीय समाजशास्त्र आ दर्शक-निष्क्रियताक मनोविज्ञानक आलोकमे एहि संरचनाक कलात्मक उपलब्धि आ सीमा स्पष्ट होइत अछि।

२. ‘गोलबा’: पशु-दृष्टि, निर्दोषता, स्नेह आ बलिदान

संग्रहक शीर्षक कथा ‘गोलबा’ मैथिली कथा-साहित्यमे मानवेतर दृष्टिकोण (Anthropomorphic Perspective) आ ब्रूनो बेटेलहाइमक पशु-प्रतीक (Animal Symbolism) क सिद्धान्तक एकटा अत्यन्त मौलिक आ दुर्लभ प्रयोग अछि। कथाक केन्द्रबिन्दु एकटा खस्सी (बोका) अछि जकर नाम ‘गोलबा’ थिक। लेखक एहि कथाक माध्यमसँ पशु आ मनुष्यक सम्बन्धक छद्म, मानवीय स्वार्थ, आ धार्मिक अनुष्ठानक नामपर होइबला क्रूरताकेँ अत्यन्त मार्मिक आ विडम्बनापूर्ण ढङ्ग सँ अनावृत कएने छथि।

कथाक प्रारम्भ गोलबाक जन्मसँ होइत अछि, जतए लेखक तत्काल एकटा भ्रमजाल (Illusion) क निर्माण करैत छथि। गोलबाक माय चितकबरी अछि, मुदा घरक मालकिन ‘बड़कीमाइ’ ओकरा जनमते धरतीपर खसऽ नहि दैत छथि आ कोरामे उठा लैत छथि। पशु जाति गन्धसँ लोककेँ चिन्हैत अछि, आ गोलबा अपनाकेँ बड़कीमाइक सन्तान—सोनी, मोनी आ बबूक भाई—बुझए लगैत अछि। बड़कीमाइ ओकरा साड़ीक कोंचामे नुकाबैत छथि, सोनी-मोनी ओकरा लेल ओछाओन आ मिरजईक प्रबन्ध करैत छथि, आ गेरुका मेलासँ लाल, हरियर आ कारी

फुदना आनि कऽ ओकर गरमे बान्हि दैत छथि जाहिसँ ओकरा ककरो नजरि नहि लगै। ई फुदनाक रङ्ग सेहो प्रतीकात्मक अछि—लाल शक्तिलेल, हरियर तन्दुरुस्तीलेल, आ कारी कुदृष्टिसँ बचाबक लेल।

एहि ठाम लेखक एकटा गम्भीर मनोवैज्ञानिक विडम्बना सृजित करैत छथि। गोलबाकें कहियो ई बुझल नहि भेलैक जे ओ एकटा पशु अछि आ ओकर नियति भानसघरक कड़ाहीमे वा भगवतीक वेदीपर समाप्त होमएबला अछि। ओ मनुष्यक भाषा नहि बुझि सकैत अछि, मुदा प्रेम आ चोटक स्पर्श बुझैत अछि। बड़कीमाइ ओकरा लेल "ममताक समुद्र" जकाँ लागैत छथि। ई भ्रान्ति मात्र एकटा पशुक नहि अछि, ई सम्पूर्ण शोषित वर्गक वैचारिक भ्रान्ति (False Consciousness) अछि जे शासक वर्गक द्वारा थोपल गेल सनेह आ संरक्षणकें अपन रक्षा-कवच मानि लैत अछि।

जेना-जेना गोलबा पैघ होइत अछि, बब्बू ओकर रक्षकसँ ओकर शोषक आ प्रशिक्षक बनि जाइत अछि। बब्बू ओकर गरमे घुंघरूबला पट्टा बान्हि दैत अछि जकर कर्कश आवाज गोलबाकें नीक नहि लगैत छैक, मुदा ओ विवश अछि आ मुड़ी हिलाकऽ पट्टा निकालक प्रयत्न कएलक मुदा ओ निकालि नहि सकल। बब्बू ओकरा लड़ाका बोका बना दैत अछि आ गाछीमे दोसर बोकासभ सँग लड़ाबैत अछि। ई शक्ति-संरचनाक प्रतीक थिक जतए शोषित वर्गकें आपसमे लड़ाओल जाइत अछि जाहिसँ शासक वर्ग (बब्बू) मनोरञ्जन कऽ सकए आ अपन वर्चस्व स्थापित राखि सकए।

अन्ततः ओ त्रासद दिन अबैत अछि जकर प्रतीक्षा सम्पूर्ण परिवार (गोलबाकें छोड़ि) कऽ रहल छल। घरमे पण्डितजी अबैत छथि, दर-देआदसभक जमघट होइत अछि, ढोल-पिपही बजैत छैक, आ गोलबाकें माघ महीनाक ठढ़ल पोखरिमे नहबा कऽ गोसाउनि-घर अनल जाइत अछि। जाड़ें थरथराइत गोलबा एखनो बब्बूक स्मरण करैत अछि जे "एखन बब्बू रहितैक तँ एना होइतैक ?!"। ई विश्वासघातक चरम बिन्दु थिक, जतए एकटा मूक प्राणीक अगाध विश्वासकें धर्मक आवरणमे हत्या कएल जा रहल अछि।

कथाक चरमोत्कर्ष अत्यन्त मार्मिक आ बीभत्स रससँ भरल अछि। जखन पण्डितजी मन्त्र पढ़ैत "जय भगवती ! जय माते !!" चिचिआइत छथि आ खड्ग चलैत अछि—"छपाक !"—तखन कथाक धरातल भौतिक यथार्थसँ उठि कऽ पूर्णतः आध्यात्मिक, अतियथार्थवादी (Surreal) आ

दार्शनिक भऽ जाइत अछि। गोलबाक मुड़ी धड़सँ अलग भऽ जाइत अछि। एहि ठाम लेखक एकटा "आउट-अफ-बडी एक्सपेरियन्स" (Out-of-Body Experience) वा विदेह-दर्शनक सृजन करैत छथि। गोलबा अपन अलग भेल मुड़ीक मुआयना करैत अछि जतए असह्य पीड़ाक प्रतिविम्ब छैक, उनटल आँखि आ दाँत तर दने निकलक जीभ अछि जाहिसँ आधा जीभ कटाइए गेल छैक।

गोलबाक चेतना अन्तरिक्षमे उधियाइत अछि आ नीचाँ अपन शरीरकें भोजलेल तैयार होइत देखैत अछि। सोनी-मोनी पानि गरम कऽ रहलि छथि, छौंड़ासभ धर छोलबाक प्रबन्ध कऽ रहल अछि, बड़कीमाइ मसल्ला ओरिआ रहलि छथि, आ जे बब्बू ओकर सभसँ प्रिय छल, ओ हँसि-हँसि कऽ लोकसभ सँग बतिआ रहल अछि। ओकर असली माय चितकबरी असहाय भावें नोर खसाबैत टुकुर-टुकुर ताकि रहलि अछि। लेखक कथाक अन्त एकटा अनुत्तरित प्रश्नसँ करैत छथि—"आब ओ गोलबा कहाँ अछि ?!"। ई प्रश्न केवल एकटा पशु जीवक मृत्युसँ सम्बन्धित नहि अछि, बल्कि ई सम्पूर्ण मानव जातिक पाखण्ड, धर्मक नामपर होइबला क्रूरता, आ प्रेम-ममताक आवरणमे नुकाएल स्वार्थक पर्दाफाश करैत अछि।

नीचाँ देल गेल तालिका 'गोलबा' कथाक प्रमुख चरित्रसभक मनोवैज्ञानिक आ प्रतीकात्मक भूमिकामे निहित अन्तर्विरोधकें स्पष्ट करैत अछि।

कथा गोलबाक जन्म सँ आरम्भ होइत अछि। बड़कीमाइ ओकरा धरती पर नहि खसबैत छथि; सोनी-मोनी नामकरण करैत अछि; बब्बू ओकर मित्र बनैत अछि; ओकरा दूध, ओछाओन, मिरजई, विशेष भोजन, फुदना आ घुँघरू भेटैत अछि। गोलबा अपनाकें पशु नहि, परिवारक सन्तान बुझैत अछि। कथाक आरम्भिक अंश मे एतेक आत्मीयता रचल गेल अछि जे पाठक गोलबाकें 'पालल पशु' नहि, पारिवारिक जीवित सदस्यक रूपमे ग्रहण करए लगैत अछि। एहि आत्मीयता बिना अन्तक बलि मात्र घटना रहि जाइत; लेखक पहिने स्नेहक पूंजी रचैत छथि, तखन ओकर नैतिक विडम्बना खोलैत छथि।

गोलबाक देहक प्रति परिवारक अत्यधिक लाड़ दू अर्थ एकसाथ धारण करैत अछि। एक दिस ओ प्रेमक चिह्न अछि; दोसर दिस कथाक अन्त जानलाक बाद ई 'देह तैयार करबाक' प्रक्रिया जकाँ भयावह पुनर्पाठ आमन्त्रित करैत अछि। जे भोजन गोलबाकें 'मोट आ कसगर' बनेबाक लेल देल जाइत अछि, जे सजावट ओकरा प्यारा बनबैत अछि, से सभ बाद मे एक निर्दोष जीवक

वस्तुकरणक प्रस्तावना जकाँ देखाइत अछि। एहि दोहरे अर्थमे कथा अपन सबल ध्वनि रचैत अछि।

3.2 फोकलाइजेशन: पाठककें पशु-मनक भीतर राखब

‘गोलबा’क सभसँ पैघ कलात्मक उपलब्धि अछि—पशुकें मानवीय नकल बना देने बिना ओकर अनुभवक केन्द्र बनायब। कथाकार गोलबाकें जटिल दार्शनिक भाषामे नहि बजबैत छथि; ओकर दुनिया गन्ध, स्पर्श, भूख, दौड़, स्नेह, डर, देहक असुविधा आ परिचित मनुष्यक निकटता सँ बनैत अछि। घुँघरू बान्हल गेलापर ओकर असहजता, माथ पर सींग फूटबाक अनुभूति, पोखरिमे जबर्दस्ती नहाओल जायबाक भय—ई सभ संवेदना कथा के देहधर्मी विश्वसनीयता दैत अछि।

जाक देरिदा मानव-पशु सीमा पर विचार करैत मानव द्वारा ‘पशु’ नामक एक विशाल समरूप श्रेणी बनायब पर प्रश्न उठबैत छथि। ‘गोलबा’ सैद्धान्तिक भाषामे ई तर्क नहि करैत अछि, मुदा कथा-पद्धति द्वारा ओहि सीमा के अस्थिर करैत अछि। गोलबा स्मरण करैत अछि, स्नेह पहचानैत अछि, आदेश मानैत अछि, असुविधा अनुभव करैत अछि, भयभीत होइत अछि आ बब्बूक उपस्थिति मे सुरक्षा पबैत अछि। तखन प्रश्न उठैत अछि—जँ भावानुभूतिक एतेक निरन्तरता अछि, तँ केवल प्रजातिगत भेद हिंसाकें नैतिक रूपेँ स्वीकृत कोना बना दैत अछि?

3.3 बलि-दृश्य: करुण, भयानक आ बीभत्सक संधि

माघक जाड़मे गोलबाकें पोखरिमे नहा देब, पूजा-स्थल पर आनब, अक्षत-फूल माथ पर देब आ तत्पश्चात् अचानक गरदनि काटि देब—एहि क्रममे संस्कारक उल्लास आ जीवक भय एके फ्रेम मे रखल गेल अछि। पाठक पहिने बब्बूक समारोहक रमनगर वातावरण देखैत अछि; गोलबा सेहो एहि आयोजनकें बब्बूक प्रसन्नता सँ जोड़ि क’ देखैत अछि। तँ ‘छपाक’क क्षण केवल वध नहि, भरोसाक विघटन सेहो अछि।

भारतीय रस-दृष्टि सँ एहि दृश्यक स्थायी भाव करुण अछि, मुदा ओकरा भयानक आ बीभत्स रसक संस्पर्श तीक्ष्ण बनबैत अछि। गोलबाक कटि गेल मुड़ी द्वारा अपन देहक मुआयना करब एक प्रकारक विलक्षण दृश्य-रचना अछि। ई यथार्थवादी नहि, भावानुभूतिक अतियथार्थ अछि—मृत्युकें बाहर सँ नहि, ‘अभी-अभी जीवित छल’ एहन चेतना सँ देखाओल गेल अछि। एहि बिन्दुपर कथा पाठककें आरामदायक दूरी नहि दैत अछि।

3.4 मृत्योत्तर दार्शनिकता: शक्ति आ सीमा

वधक बाद गोलबाक 'अनन्त अन्तरिक्षक यात्रा'क कल्पना कथाकेँ क्षणिक आध्यात्मिक विस्तार दैत अछि। एक अर्थमे ई देहगत पीड़ाकेँ व्यापक जीवन-चक्रक भीतर रखैत अछि; दोसर अर्थमे ई कटु दृश्यक नैतिक चोटकेँ कनेक नरम सेहो करैत अछि। कथा जँ 'आब ओ गोलबा कहाँ अछि?' पर समापित होइत अछि तँ ई प्रश्न शोक, अनित्यता आ पहचान तीनू पर खुलल रहैत अछि। तथापि आलोचनात्मक दृष्टि सँ कहल जा सकैत अछि जे मृत्योत्तर व्याख्याक किछु वाक्य पाठकक स्वतन्त्र व्याख्या पर लेखकक दार्शनिक कथन थोपी दैत अछि। करुणा जे ठाम अपने बोलि रहल अछि, ओतए कनेक अधिक मौन कथाकेँ आरो तीक्ष्ण बना सकैत छल।

शीर्षक-कथा 'गोलबा' एकटा बकरीक जीवन-कथा थिक, जकरा बड़कीमाइ (घरक बूढ़ी माताजी) आ बच्चासभ (सोनी, मोनी, बब्बू) पोसने छथि। कथाक कथन-शैली अत्यन्त सूक्ष्म आ सशक्त थिक — कथाकार गोलबाक चेतना आ अनुभवकेँ केन्द्रमे राखि कथा कहैत छथि, जाहिसँ पाठक धीरे-धीरे गोलबाक संगे भावनात्मक रूपे जुड़ि जाइत छथि। गोलबाकेँ अपनाकेँ पशु होएबाक बोध सेहो नहि छैक — 'ओकरा कहियो नहि बुझएलैक जे ओ पशु अछि। ओ अपनाकेँ सोनी, मोनी आ बब्बू जेकाँ बड़कीमाइक सन्तान बुझैत रहल।' एहि निर्दोष आत्म-भ्रमपर सम्पूर्ण कथाक त्रासदी टिकल अछि।

कथाकार अत्यन्त धैर्यपूर्वक गोलबाक बाल्यकाल, बड़कीमाइक स्नेह, बब्बूसंगक कुश्ती-अभ्यास, सोनी-मोनीक देखभाल — सभटा विस्तारसँ चित्रित करैत छथि, जाहिसँ पाठकक मोनमे गोलबाक प्रति ममता आ आत्मीयता गहीर होइत जाइत अछि। एहि दीर्घ, स्नेहसिक्त विवरणक बाद अचानक घरमे 'भीड़-भाड़', पुरोहितक आगमन, ढोल-पिपही — ई सभ संकेत पाठककेँ किछु आशंकित त करैत अछि, मुदा गोलबाकेँ (आ कतेको भोर पाठककेँ सेहो) एकर वास्तविक अर्थ बुझबामे नहि अबैत। ई नाटकीय विडम्बना (dramatic irony) कथाक सभसँ शक्तिशाली शिल्पगत उपकरण थिक — पाठक जनैत अछि (वा जल्दिये बुझि जाइत अछि) जे की होयबला अछि, मुदा गोलबा स्वयं एकरा एकटा उत्सव, एकटा सम्मान बुझैत अछि — 'बुझएलैक, ओकरो एहि समारोहमे सहभागी बनाओल जा रहल छैक।'।

बलिक दृश्य कथाक चरम बिन्दु थिक, जकरा कथाकार अत्यन्त साहसिक शैलीमे लिखने छथि — मृत्युक क्षणकें गोलबाकके चेतनासँ, ओकर शरीर आ आत्माक विभाजनक रूपमे वर्णित कएल गेल अछि —

आहिरो ! ई की भेलैक ?! ओ तँ अपन धरसँ अलग भ’ गेल अछि !!!

अनन्त अन्तरिक्षक यात्राक हड़बड़ी भ’ गेल छैक

एहि अनन्त यात्राक कतहु कोनो पड़ावपर ओकरा दोसर शरीर धारण करक छैक।

एहि आध्यात्मिक-दार्शनिक वर्णनक ठीक बाद कथाकार तुरन्ते कथाकें अत्यन्त शीत, व्यावहारिक विवरणमे मोड़ि दैत छथि — सोनी-मोनी पानि गरम कऽ रहल छथि, छौंड़ासभ खाल छोलबाक लेल ओजार तेज कऽ रहल छथि, भन्सियासभ कराही-भट्ठीक प्रबन्ध कऽ रहल छथि, बब्बू अपन दोस्तसभसँ हाँसि-हाँसि गप्प कऽ रहल अछि। एहि दूनू दृश्यक (गोलबाक आध्यात्मिक यात्रा आ परिवारक भोज-तैयारी) संगहि प्रस्तुतिसँ जे विडम्बनात्मक तीव्रता उत्पन्न होइत अछि, से एहि कथाक सभसँ बड़का साहित्यिक उपलब्धि थिक। कथाक अन्तिम पंक्ति — ‘आब ओ गोलबा कहाँ अछि ?!’ — एकटा प्रश्नक रूपमे समाप्त होइत, पाठककें स्वयं उत्तर खोजबाक लेल छोड़ि दैत अछि।

चरित्रक नाम	दृश्यमान व्यवहार (Surface Behavior)	अन्तर्निहित यथार्थ/प्रतीक (Underlying Reality/Symbolism)
गोलबा	परिवारक सदस्य, अनुशासित आ विश्वासी	शोषित वर्ग, अज्ञानता, बलि-पशु, मिथ्या चेतना (False Consciousness)
बड़कीमा इ	"ममताक समुद्र", संरक्षण देनिहारि	परम्पराक निर्वाहक, स्वार्थप्रेरित वात्सल्य, अनुष्ठानिक हत्याक प्रबन्धक
बब्बू	मित्र, रक्षक आ खेलक साथी	शोषक, नियन्त्रक, शक्ति-संरचनाक उपयोगकर्ता, विश्वासघातक प्रतिनिधि
सोनी-मोनी	बहिन जकाँ सनेह देनिहारि, वस्त्र पहिरौनिहारि	उपयोगितावादी प्रेम, गोलबाक मृत्युक पश्चात मासु लेल पानि गरम करौनिहारि

चरित्रक नाम	दृश्यमान व्यवहार (Surface Behavior)	अन्तर्निहित यथार्थ/प्रतीक (Underlying Reality/Symbolism)
चितकबरी	गोलबाक जैविक माय	असहाय आ मूक मातृत्व, समाजमे शक्तिहीन वर्गक दर्शक

३. 'डीप डिप्रेशन': सन्देह, मौन आ मनक कारागार

सभ्य समाजमे मनुष्य जेना-जेना भौतिक सम्पन्नता दिस बढ़ि रहल अछि, ओकर आन्तरिक जीवन ओतबे खोखला, छद्म आ अवसादग्रस्त होइत जा रहल अछि। कथा 'डीप डिप्रेशन' आधुनिक दाम्पत्य जीवनक अविश्वास, मौन घुटन, आ पुरुष-मनोविज्ञानक एकटा सूक्ष्म चीरफाड़ थिक। एहि कथाक माध्यमसँ वृषेश चन्द्र लाल मानसिक स्वास्थ्य जेहन गम्भीर विषयकें समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्यमे प्रस्तुत कएने छथि।

कथाक प्रारम्भ एकटा डाक्टरक क्लिनिकसँ होइत अछि। कथानायक बाहरसँ एकटा निडर, साहसी आ जुझारू पुरुष अछि, जकरा समाज मजबूत हृदयक मानैत अछि आ ओ कहियो ककरोसँ डेराएल नहि अछि। मुदा भीतरसँ ओ भयानक प्यानिक अट्याक (Panic Attack) आ एन्जायटी (Anxiety) सँ ग्रस्त अछि। ओकर छाती घड़फड़ाइत छैक, साँस फूलि जाइत छैक, छाती कुहरए लगैत छैक, आ ओ कहियो-काल बीसो मिनट धरि टकटकी लगौने गतिहीन बनि जाइत अछि। डाक्टर ओकरा "डीप डिप्रेशन" (Deep Depression) क रोगी बताबैत अछि आ एकरा "आधुनिकताक देन" आ "विकासक संगी" कहैत अछि।

मुदा नायककें डाक्टरक डाइग्नोसिसपर विश्वास नहि छैक। ओ जनैत अछि जे ओकर रोग कोनो सामान्य शारीरिक वा आधुनिकताक तनाब नहि अछि; एकर जड़ि कतहुँ आओर अछि। ओ अवसादक मूल कारण अपना पत्नीक वैवाहिक निष्ठापर जागल शंका आ अविश्वासकें मानैत अछि। कथानायकक स्मृतिमे एकटा घटना बार-बार अबैत अछि। एक दिन आफिससँ अचानक सबेरे अएलापर ओ अपन पत्नीकें ओकर कलेज सहपाठी सँग भेटैत अछि। ओ पुरुष बहुत जल्दीमे रहैत अछि आ जाइत-जाइत तुलसीक पुड़िया खैत अछि जाहिसँ ओकर मुँहसँ 'तुलसी खैनी पत्ती' क गन्ध अबैत रहैत छैक। जखन नायक घरक भीतर जाइत अछि तँ देखैत अछि जे

खिड़कीसभ बन्द छैक आ पर्दा लागल अछि। रातिमे जखन ओ ओछानपर सुतए जाइत अछि, तँ ओकरा बिछौनापर सेहो ओएह तुलसी खैनीक गन्ध महसूस होइत अछि।

ई एकटा घटना नायकक मानसपटलपर स्वचालित सिनेमाक रील जकाँ घुमैत रहैत अछि। 'तुलसी खैनीक गन्ध' एहि ठाम एकटा अत्यन्त शक्तिशाली मनोवैज्ञानिक बिम्ब (Olfactory Motif) थिक जे नायककें बार-बार आघात पहुँचाबैत अछि। ई गन्ध ओकर घरक पवित्रतामे एकटा बाह्य पुरुषक अतिक्रमणक मौन साक्ष्य बनि जाइत अछि। ओ कौआकें गाछपर बैसल देखैत अछि तँ ओकरा लगैत छैक जे कौआ सेहो किछु नुका रहल अछि, जे ओकर चरम प्यारानोइया (Paranoia) क स्थिति अछि।

कथाक सभसँ सशक्त आ त्रासद पक्ष ई अछि जे नायक अपन शंका ककरो सँग साझा नहि कऽ सकैत अछि। डाक्टर ओकरा स्पष्ट कहैत छैक जे "डाक्टर आ वकीलसँ झूठ नहि बाजी" आ आग्रह करैत छैक जे कोनो भितरिया बात अछि तँ बताउ। मुदा नायक मौन रहैत अछि। ओ सोचैत अछि जे जँ ओ सत्य बाजि देत तँ ओकर परिवार बिखरि जएतैक, पत्नीपर लांछन लगतैक, आ ओकर सामाजिक इज्जत धूलमे मिलि जएतैक।

एहि ठाम वृषेश चन्द्र लाल मध्यवर्गीय नैतिकता आ पितृसत्तात्मक समाजमे पुरुषकें होमएबला घुटनक यथार्थपरक चित्रण करैत छथि। समाज पुरुषकें सदिखन साहसी आ नियन्त्रक मानैत अछि, जाहि कारणें पुरुष अपन भावात्मक कमजोरी वा मानसिक पीड़ा ककरो देखा नहि सकैत अछि। नायक अपन सर्वस्व गला कऽ, भीतर-भीतर मरि कऽ सेहो चुप्पी साधि लैत अछि। डाक्टरक कोठरीक केबार जखन "ढप्प द' बन्द भ' गेलैक" आ कानमे "डीप डिप्रेसन" शब्द गूँजलैक, तँ ई केवल क्लिनिकक केबार बन्द होमएबला नहि, बल्कि नायककें जीवन-भरिक लेल मानसिक काल-कोठरीमे बन्द करबाक प्रतीक थिक।

दोसर कथा आरम्भहि डॉक्टरक 'डीप डिप्रेसन' शब्द सँ होइत अछि। पात्र तुरन्त एहि निदानकें नकारैत अछि—ओ अपनाकें साहसी, जुझारू आ संकटमे धैर्यवान मानैत आएल अछि। एतए शीर्षक मात्र रोगनाम नहि, 'स्व-छवि' आ 'भीतरी अनुभव'क टकरावक चिह्न अछि। पात्रक मूल समस्या ई नहि जे ओकरा किछु महसूस नहि होइत अछि; उलटे ओ अत्यधिक महसूस करैत अछि, मुदा अपन अनुभूतिक नाम स्वीकारए सँ डरैत अछि।

कथा मानसिक रोगक चिकित्सकीय दस्तावेज नहि अछि, तें एकरा नैदानिक मानदण्ड सँ परखब सीमित होयत। तथापि साहित्यिक दृष्टि सँ महत्त्वपूर्ण ई अछि जे देह आ मनक बीच तनाव कथा-रूप बनि जाइत अछि। छाती धड़कब, घाम, साँसक बेचैनी, नाड़ी जाँचब, रक्तचाप देखबाक इच्छा, बारम्बार छाती पकड़ब—पात्रक अव्यक्त मानसिक असुरक्षा देहक भाषामे बजैत अछि। एलेन स्कैरी पीड़ाक कठिन अभिव्यक्तिसम्बन्धी जे प्रश्न उठबैत छथि, तकर साहित्यिक समान्तर एतए देखल जा सकैत अछि: जे बात मुँह नहि कहि पबैत अछि, देह ओकर संकेत देइत अछि।

4.2 पुनरावृत्तिशील विचारक औपचारिक अनुकरण

एहि कथाक संरचना रैखिक घटनाक्रम सँ अधिक ‘रुमिनेशन’ अर्थात् बारम्बार लौटैत विचार पर आधारित अछि। पात्र स्वयं निश्चय करैत अछि जे आब नहि सोचत, मुदा छोट संकेतहि सँ पूरा स्मृति ‘सिनेमाक रील’ जकाँ घूमए लगैत अछि। पाठक सेहो ओही चक्र मे घुमाओल जाइत अछि—धड़कन, आत्म-समझाइश, झूठक स्मृति, सन्देह, भय, आध्यात्मिक तर्क, फेर देहक लक्षण। एहि पुनरावृत्तिक कारण कथा कखनो धीमी बुझा सकैत अछि, मुदा ई धीमापन विषयक रूपात्मक समकक्ष सेहो अछि: मन जखन फँसल अछि, कथा सेहो आगाँ नहि बढ़ि पबैत अछि। कथाकार संकेतसभक जाल रचैत छथि—अचानक घर घुरब, पत्नी/घरमे एक पुरान परिचितक भेट, न पिअल चाय, तुलसी-खैनीक गन्ध, बन्द खिड़की-पर्दा, राति मे फेर गन्धक अनुभव। ई सभ प्रमाण नहि, संकेत अछि। पात्र सेहो एहि भेदकें जानैत अछि; तें ओ आरोप नहि लगबैत अछि। एहि नैतिक संकोच मे ओकर मानवीय गरिमा अछि, मुदा एही संकोचकें वहन करैत-करैत ओकर मन विघटित होइत अछि। कथा सन्देहकें सत्य घोषित नहि करैत; सैह ओकर साहित्यिक ईमानदारी अछि।

4.3 मौनक नैतिकता: आरोप नहि लगाब, मुदा सत्यो नहि कहब

डॉक्टर जखन आग्रह करैत अछि जे इलाज लेल ‘सभ बात’ कहू, पात्रक दुविधा गहिर होइत अछि। ओकर भय केवल निजी अपमानक नहि, परिवार बिखरबाक, निराधार लांछन लगबाक, दोसरक जीवन उजड़बाक सेहो अछि। एहि कारण ओकर मौन केवल कायरता नहि; ओ न्याय-चेतना आ भयक मिश्रण अछि। मुदा कथाक त्रासदी ई जे नैतिक सावधानी आत्म-विनाशक

गोपनीयता बनि जाइत अछि। एतए संग्रहक एक केंद्रीय सूत्र पुनः उपस्थित अछि—अन्याय न करबाक इच्छा कखनो-कखनो सहायता माँगबाक सामर्थ्य सेहो छीनि लैत अछि।

वेयन सी. बूथक नैतिक आलोचना प्रश्न करैत अछि जे कथा पढ़ैत काल पाठक केहन प्रकारक व्यक्ति बनबाक आमन्त्रण पबैत अछि। ‘डीप डिप्रेशन’ पाठककेँ ‘ककर गलती?’क त्वरित निर्णय नहि दैत; उलटे सन्देह, प्रमाण, गरिमा, परिवार, चिकित्सा आ आत्म-सुरक्षाक बीच कठिन संतुलन मे राखैत अछि। एहि कारण कथा नैतिक रूपेँ उपयोगी अछि—ई समाधान नहि, निर्णयक जटिलता अनुभव करबैत अछि।

4.4 गुरुजीक दार्शनिक प्रसंग: मनोवैज्ञानिक कथा मे आध्यात्मिक प्रतिपक्ष

गुरुजी द्वारा जीवनकेँ अनुभूतिक यात्रा, आत्मा-परिष्कार आ मनकेँ असली गुरु मानबाक प्रसंग कथा के स्थानीय दार्शनिक आधार दैत अछि। पात्र आधुनिक चिकित्सकीय शब्दावली आ पारम्परिक आध्यात्मिक व्याख्या दुनू मे अर्थ खोजैत अछि। एहि द्वैत सँ कथा समकालीन मिथिलाक मानसिक संसारक बहुलता पकड़ैत अछि—डॉक्टर, रक्तचाप, दवा, ‘डिप्रेशन’ एक दिस; गुरुजी, आत्मा, परायात्रा, पितरक संरक्षण दोसर दिस।

मुदा शिल्पगत सीमा सेहो एतए प्रकट होइत अछि। किछु दार्शनिक अनुच्छेद पात्रक बेचैनीक तात्कालिकता सँ दीर्घ विचलन करैत अछि। जँ ई अंश कनेक संक्षिप्त रहित तँ कथाक मनोवैज्ञानिक दबाव निरन्तर अधिक तीव्र रहैत। तथापि ई अंश पूर्णतः बाहरी नहि, कारण पात्र स्वयं अनिश्चितता सँ लड़बाक लेल उपलब्ध सांस्कृतिक भाषा खोजि रहल अछि।

दोसर कथा ‘डीप डिप्रेशन’ पूर्णतः भिन्न शैली आ विषयक्षेत्रमे प्रवेश करैत अछि — ई एकटा गहीर मनोवैज्ञानिक आख्यान थिक, जे एकटा एहन पुरुष पात्रक अन्तर्जगत्केँ उद्घाटित करैत अछि, जे डाक्टरद्वारा ‘डिप्रेशन’ निदान कएल जेबाक बावजूद अपन बिमारीकेँ स्वीकार करबासँ इनकार करैत अछि। कथाक कथन-शैली सतत् आन्तरिक एकालाप (interior monologue) क रूपमे आगू बढ़ैत अछि, जाहिमे पात्रक तर्क, आत्म-प्रवचन आ बेचैनी क्रमशः उजागर होइत जाइत अछि।

कथाक केन्द्रीय द्वन्द्व अछि — पात्रकेँ अपन पत्नीक प्रति सन्देह अछि (शायद विश्वासघातक), मुदा ओ एहि सन्देहकेँ न त डाक्टरकेँ बता सकैत अछि, न स्वयं अपनासँ खुलिकऽ स्वीकार कऽ

सकैत अछि। तुलसीक गन्ध, एकटा अपरिचित व्यक्तिक भैंट, पत्नीक असामान्य व्यवहार — ई सभ संकेत ओकरा तंग करैत रहैत छैक, मुदा कथाकार कहियो सेहो स्पष्ट नहि करैत छथि जे संदेह सत्य अछि वा मात्र पात्रक कल्पना — ई अनिश्चितता स्वयं कथाक मनोवैज्ञानिक यथार्थताक प्रमाण थिक। कथाक केन्द्रीय विडम्बना अछि ‘लोक की कहत ?’ वाला सामाजिक भयक मानसिकता, जे पात्रकें आफ्नो जीवनसंगिनीसँ, आफ्नो डाक्टरसँ, आ अन्ततः आफ्नोसँ सेहो सत्य बोलबासँ रोकैत छैक —

ककरो नहि कितै । कहिओ क’ करतैक की ? आ कहबो की करौक ? ओ नियतिकें स्वीकारि नेने रहए।

कथाक अन्त अत्यन्त संक्षिप्त, मुदा प्रहारकारी अछि — डाक्टरक अन्तिम शब्द ‘डीप डिप्रेशन !’ दरवज्जाक बन्द होएबाक ध्वनिक संगहि गूँजैत अछि, जे रोगक निदान त कऽ दैत अछि, मुदा रोगक वास्तविक कारण (सामाजिक लाज-भय आ संवादहीनताक संस्कृति) पर कोनो प्रकाश नहि दैत। एहि अर्थमे ई कथा पुरुष-मानसिकतामे व्याप्त भावनात्मक अभिव्यक्तिहीनताक एकटा तीखा आलोचना थिक — जतय ‘सहनशीलता’ आ ‘साहस’ केर सामाजिक अपेक्षा वास्तविक पीड़ाकें स्वीकार करबामे सभसँ पैग बाधा बनि जाइत अछि।

४. ‘चौकपरक मौगी’: शहरीकरण, सामूहिक मौनता आ स्त्री-अस्मिता

‘चौकपरक मौगी’ कथा समकालीन विकासक अन्हार यथार्थ, भाषा-संस्कृतिक ह्रास, आ एकटा असहाय, विक्षिप्त स्त्रीक प्रति समाजक चरम संवेदनहीनताक रोंगटे ठाढ़ कऽ देनिहार दस्तावेज अछि। ई कथा नव-पूँजीवादी विकास आ पितृसत्ताक क्रूर गठबन्धनकें उघाड़ैत अछि।

कथाक प्रारम्भ महानगरीय विस्तार आ ‘मेगा चौक’ क निर्माणसँ होइत अछि। लेखक एकर माध्यमसँ तीव्र शहरीकरणक सांस्कृतिक आ सामाजिक प्रभावकें अनावृत करैत छथि। बाध आ चओर जे काल्हि धरि धान-गहूमक खेतीसँ लहलहाइत छल, ततए आब कंकरीटक महल, बंगला, आ शपिङ्ग कम्प्लेक्स ठाढ़ भऽ गेल अछि। पुरान खेतिहरसभ जमीन बेचि कऽ रातो-राति नव-धनाढ्य बनि गेलाह अछि। ओकर सन्तान (नवतुरिया पीढ़ि) कानमे कुण्डल पहिरि, फुटानीमे बर्बाद भऽ चिया-दुकानपर दादागिरी करैत अछि। ई युवा पीढ़ि समाजक सुरक्षाक ठेकेदार बनल अछि, मुदा वास्तविकता ई अछि जे ओ सभ भाइ-भतिजावाद आ गुन्डागर्दीक प्रतिरूप थिक।

लेखक भाषा आ संस्कृतिक ह्रासपर सेहो तीक्ष्ण व्यंग्य करैत छथि। लोक अपनाकें विदेशी देखाबक लेल केश रंगि लैत अछि जकरा गामघरमे लोक "भटरंगा" कहैत छैक। अङ्ग्रेजी आ लैटिन शब्दक कृत्रिम प्रयोगसँ लोक अपन मातृभाषाप्रति हीनताबोधक शिकार अछि। ई 'मेगा चौक' केवल एकटा भौगोलिक स्थान नहि, बल्कि एकटा एहन उपभोक्तावादी समाजक प्रतीक अछि जतए संवेदना, नैतिकता आ मानवताक मृत्यु भऽ चुकल अछि। कथावाचक अतीतकें मोन पाड़ैत बाटा कम्पनीक 'एम्बेसडर साहुजी' क चर्चा करैत छथि, जे परदेसमे मिथिलाक लोककें अपन डेरामे ठौर दैत छलाह, मुदा आब ओ परोपकारी युग समाप्त भऽ चुकल अछि।

एहि चकाचौंध आ भौतिक विकासक बीच एकटा खाली घराड़ीक कम्पाउण्डवालपर एकटा अज्ञात स्त्री भोरेसँ रातिधरि बैसि रहैत अछि। ओ अत्यन्त सुन्दरि अछि, मुदा ओकर कपड़ा मैल-झेल अछि, केश जटाएल अछि, आ माडमे गाढ़ सिन्दूर थोपने अछि। ई स्त्री एहि कथाक मूक केन्द्र थिक। ओ ककरोसँ किछु बजैत नहि अछि। कथावाचक (जे वन विभागक कर्मचारी छथि) ओकरा देखि विचलित होइत छथि। हुनका भीतर मानवीय संवेदना जागैत छन्हि आ ओ ओकरा मदति करए चाहैत छथि, मुदा हुनकर मित्र राजेशजी हुनका "भावनामे बहि जाइत छी" कहि कऽ रोकैत छथिन्ह। "कहुँ खराब मौगी हएति तँ लोक की कहत ?"—ई सामाजिक भय कथावाचककें अपन डेग पाछाँ घीचबापर विवश कऽ दैत अछि।

पुलिसक सब-इन्स्पेक्टर राम दयाल यादव आ चौकक दादा 'रबी' सेहो ओहि स्त्रीकें केवल एकटा मानसिक विक्षिप्त ('पागल') मानि कऽ अपन दायित्वसँ पल्ला झाड़ि लैत छथि। समाजक ई तटस्थता आ उपेक्षा (Bystander Effect) वस्तुतः एकटा गम्भीर अपराधक पूर्वपीठिका थिक।

कथाक अन्त अत्यन्त कारुणिक आ झकझोरि देनिहार अछि। किछु महीना बाद एक दिन चौकपर भारी भीड़ लागल अछि। ओ स्त्री घाम-पसीनामे लथपथ, अपन कपड़ा-केश नोचैत, आर्तनाद कऽ रहल अछि। ओकरा सँग सामूहिक दुराचारक स्पष्ट संकेत कथा मे अछि। ओकर चीत्कार मैथिली साहित्यक एकटा अत्यन्त शक्तिशाली स्त्री-विमर्शक (Feminist Discourse) प्रकटीकरण थिक, जतए ओ पुरुषत्वक अहङ्कारपर सोझे प्रहार करैत अछि:

"हूँ, हम चौकपरक मौगी छी !... अही योग्य !!... सभ भोगू !... तागत देखाऊ !! चौकपरक मौगीपर... जे निरीह अछि... आ ने जकर केओ रक्षक छैक... तकरापर जोरजुलुम करू, पुरुषत्व देखाऊ ! बाप रे ! हम आब चौकपर मौगी छी !!"

ई केवल एकटा विक्षिप्त स्त्रीक प्रलाप नहि अछि; ई सम्पूर्ण सभ्य, नव-धनाढ्य आ पितृसत्तात्मक समाजक मुँहपर एकटा करारा तमाचा अछि। ओ समाज जे कमजोर आ असहायक रक्षा करबाक बदला ओकरा अपन वासनाक शिकार बनबैत अछि। जखन कोनो स्त्री असहाय, विक्षिप्त वा बेसहारा भऽ चौकपर आबि जाइत अछि, तँ तथाकथित सभ्य समाज ओकर रक्षक बनबाक बदला ओकरा 'भोग्य वस्तु' आ 'चौकपरक मौगी' बना दैत अछि। कथावाचककें तीव्र आत्मग्लानि होइत छैक। ओ आफिस नहि जा सकैत छथि आ घर आबि ओछाओनपर पसरि जाइत छथि। हुनका आत्मबोध होइत छन्हि जे ओ स्वयं, ओकर मित्र राजेश, पुलिस अधिकारी यादव आ सम्पूर्ण समाज एहि जघन्य अपराधक दोषी अछि। "लोक की कहत" क कायरताक कारणें जे अकर्मण्यता ओ अपनेलन्हि, सह एहि अनर्थक मूल कारण बनल।

तालिकाक माध्यमसँ 'चौकपरक मौगी' कथाक पात्रसभक सामाजिक दृष्टिक तुलनात्मक विश्लेषण कएल जा सकैत अछि:

तेसर कथा स्त्री सँ तुरन्त आरम्भ नहि होइत अछि; पहिने पूरा चौकक सामाजिक भूगोल रचल जाइत अछि। 'मेगा चौक'क अडरेजिया नाम, भाषामे अंग्रेजी शब्दक चढ़ाड़, खेतीक हरित क्षेत्र पर घर-बंगला-शॉपिंग अट्रालिका, जमीनक महँगाई सँ अचानक धन, युवकसभक फुहड़ धन-प्रदर्शन, बाजार, कॉस्मेटिक दुकान, रॉक संगीत आ इलेक्ट्रॉनिक इशतहार—ई सभ मिलि क' विकासक दृश्य बनबैत अछि।

जॉर्ज सिमेल महानगरीय जीवनमे तीव्र उत्तेजना, धन-आधारित गणना आ आत्म-सुरक्षार्थ विकसित उदासीन/संरक्षित मनोवृत्तिक चर्चा करैत छथि। 'चौकपरक मौगी'क नगर पूर्ण महानगर नहियो हो, मुदा तीव्र शहरीकरणक संक्रमण-क्षेत्र अवश्य अछि। कथा खास बात पकड़ैत अछि—भौतिक परिवर्तन तीव्र अछि, नैतिक संस्थानक परिवर्तन असमान। पुल, सड़क, दुकान, मोबाइल, पुलिस-नेटवर्क आ स्थानीय शक्ति उपस्थित अछि; तैओ एक असहाय स्त्रीक स्थायी उपस्थिति सामाजिक प्रश्न नहि बनैत अछि।

5.2 नामहीन स्त्री आ 'चौक' द्वारा पहचान

कथाक शीर्षक स्वयं आलोचना अछि। स्त्रीक नाम नहि—ओ 'चौकपरक मौगी' अछि, अर्थात् ओकर पहचान ओकर जन्म, काम, इच्छा, इतिहास वा सम्बन्ध सँ नहि, सार्वजनिक ठामपर ओकर बैठल देह सँ बनैत अछि। भाषिक रूपेँ 'मौगी'क रोजमर्रा प्रयोग कथाक स्थानीयता दैत अछि, मुदा शीर्षक मे ओकर पुनरावृत्ति स्त्रीक वस्तुकरणक कटुता सेहो उजागर करैत अछि। समाज ओकरा व्यक्ति नहि, दृश्य मानि रहल अछि।

कथावाचक ओकर सौन्दर्य, वक्ष, वर्ण, केस, सिन्दूर, कपड़ा आदि पर सूक्ष्म दृष्टि राखैत अछि। ई वर्णन एक ओर करुण दृश्यता रचैत अछि; दोसर ओर पुरुष-दृष्टिक समस्या पुनरुत्पन्न करैत अछि। कथाक उपलब्धि ई जे स्वयं कथावाचक निर्दोष नैतिक नायक नहि बनैत। ओकर मन मे 'खराब मौगी' होयबाक डर, लोकक कहबाक चिन्ता, पत्नी की सोचतीह, स्त्रीप्रति आकर्षणक सम्भावना—ई सभ पूर्वग्रह सक्रिय अछि। अन्तक अपराध-बोध एहि आरम्भिक दृष्टिक पुनर्मूल्यांकन करबैत अछि।

5.3 दर्शक-निष्क्रियता: 'सभ देखलक, केओ नहि कएलक'

कथावाचक बारम्बार सोचैत अछि जे स्त्री सँ पूछी; मित्र राजेश कहैत छथि—'एहन बहुत छैक', 'पहिने अपन समस्या देखू'; पुलिसक सब-इन्स्पेक्टर ओकरा मानसिक रूपेँ बीमार मानि छोड़ि दैत छथि; स्थानीय 'दादा' रबी सेहो पहिने पूछने रहैत अछि, उत्तर नहि भेटलापर हटि जाइत अछि। एतए जिम्मेदारी एक व्यक्ति सँ दोसर व्यक्ति दिस सरकैत रहैत अछि। बिब लाताने आ जॉन डार्लीक 'दर्शक प्रभाव' तथा 'उत्तरदायित्वक प्रसरण'क अवधारणा एहि कथा पर विशेष रूपेँ लागू होइत अछि—जतेक अधिक संभावित सहायक, ओतेक व्यक्ति अपन कर्तव्य कम निजी बुझि सकैत अछि।

मुदा कथा सामाजिक मनोविज्ञानक उदाहरण बनि क' सीमित नहि रहैत। लेखक स्थानीय कारण जोड़ैत छथि—'लोक की कहत', स्त्रीक चरित्र पर संशय, अनावश्यक कानूनी झंझट, पुरुष-स्त्री सम्बन्धक सामाजिक निगरानी, पुलिसक रूटीन उदासीनता, स्थानीय शक्तिक सीमित पितृसत्तात्मक न्याय। एहि कारण निष्क्रियता केवल भीड़क संख्या सँ नहि, प्रतिष्ठा-भय आ लैंगिक पूर्वग्रह सँ सेहो बनैत अछि।

5.4 अन्तिम चीख: मौन स्त्रीक भाषिक विस्फोट

कथा भरि जे स्त्री लगभग नहि बजैत अछि, अन्तमे ओकर भाषा 'नीक' आ स्पष्ट निकलैत अछि। ओ चिचियाकए अपनाकेँ 'चौकपरक मौगी' कहैत अछि आ पुरुषत्वक हिंसक प्रदर्शन पर कटाक्ष करैत अछि। कथा स्पष्ट घटनावृत्तान्त नहि दैत—ओकर संग ठीक की भेल, के कएलक, कखन कएलक—ई सब अनकहल रहैत अछि। एहि रिक्ति सँ कथा कखनो अपूर्ण रहस्य जकाँ नहि, बल्कि सामाजिक आरोप जकाँ काम करैत अछि: प्रश्न अपराधीक नाम मात्र नहि, ओहि सम्पूर्ण वातावरणक अछि जतए निरक्षरित, असहाय, निरुपाय स्त्रीकेँ सभ देखैत रहल।

अन्त मे कथावाचकक स्वीकार—'हम अपराधी छी'—कथा के नैतिक उपदेश सँ आत्म-आरोप दिस मोड़ि दैत अछि। ई महत्त्वपूर्ण शिल्पात्मक निर्णय अछि। जँ कथा केवल पुलिस, गुंडा वा 'समाज'केँ दोष द' समाप्त होइत, तँ पाठक बाहर ठाढ़ रहि सकैत छल। कथावाचक स्वयं दोष मे सम्मिलित होइत अछि, फलतः पाठको स्वतः पुछैत अछि—हम कतेक बेर केवल देखलहुँ, चिन्ता कएलहुँ, चर्चा कएलहुँ, मुदा कएलहुँ किछु नहि? मार्था नुसबाम साहित्यिक कल्पनाशक्तिक सम्बन्ध सहानुभूति आ सार्वजनिक न्याय सँ जोड़ैत छथि; एहि अर्थमे कथा पाठकक सहानुभूति के निष्क्रिय भावना सँ सक्रिय नैतिक प्रश्नमे बदलए चाहैत अछि।

तेसर आ संग्रहक सभसँ राजनीतिक-सामाजिक रूपे प्रहारकारी कथा 'चौकपरक मौगी' एकटा शहरीकरणरत गामक पृष्ठभूमिमे आरम्भ होइत अछि — जतय परम्परागत हाट-बजार अब 'मेगा चौक' जेहन आधुनिक नामसँ पुनर्नामित भऽ गेल अछि, आ पुरान कृषक परिवारसभ धरतीक मोलक कारणे अकस्मात् धनाढ्य भऽ गेल छथि। एहि परिवर्तनशील परिवेशक वर्णनमे कथाकार शहरीकरणक सांस्कृतिक क्षतिपर सूक्ष्म टिप्पणी सेहो करैत छथि — भाषाक अंग्रेजीकरण, परम्पराक क्षरण आ नव-धनाढ्यताक चकाचौंधपर।

एहि चौकपर कथाक कथावाचक (प्रथम-पुरुष कथावाचक) रोज एकटा मौन, अस्तव्यस्त मुदा स्पष्टतः सुशिक्षित बुझाइत स्त्रीकेँ बैसल देखैत छथि — सिन्दूरधारी, अकेली, भोकासीयुक्त, केओसँ नहि बजैत। कथावाचकक मोनमे ओकरा प्रति करुणा जगैत अछि, मुदा जखनहि ओ ओकरासँ बात करबाक विचार करैत छथि, तखनहि हुनकर मित्र राजेशजी हुनका सचेत करैत छथिन्ह —

छोड़ू ! कहूँ कोनो एहन-तेहन बात हएत तँ अनावश्यक फँसि जाएब।

आ कहूँ खराब मौगी हएछत तँ लोक की कहत ?

ई 'लोक की कहत' वाला सूत्र — जे 'डीप डिप्रेशन'मे सेहो केन्द्रीय भूमिकामे छल — एतय आरो व्यापक सामाजिक स्तरपर संचालित होइत अछि। कथावाचक पुलिस उप-निरीक्षक (राम दयाल यादव) आ स्थानीय 'दादा' रबीसँ सेहो ओहि स्त्रीक बारेमे पुछताछ करैत छथि, मुदा दुनू संस्था (पुलिस आ अनौपचारिक स्थानीय सत्ता) ओकरा 'मानसिक रूपे बीमार' करार दऽ अपन जिम्मेदारीसँ पल्ला झाड़ि लैत छथि। एहि प्रकारे कथाकार संस्थागत उदासीनताक बहुस्तरीय चित्रण प्रस्तुत करैत छथि — परिवार, मित्र-मण्डली, पुलिस, आ स्थानीय समाज — सभ अपन-अपन तर्कसँ हस्तक्षेप नहि करबाक औचित्य ठहरबैत छथि।

कथाक चरम क्षणमे ओ स्त्री, जकरा सभ 'पागल' बुझैत रहल छथि, अत्यन्त स्पष्ट, तार्किक आ करुण भाषामे अपन यथार्थ चिकड़िकऽ उजागर करैत छथि —

हँ, हम चौकपरक मौगी छी ! ... अही योग्य !! ... सभ भोगू ! ... तागत देखाऊ !!

चौकपरक मौगीपर ... जे निरीह अछि ... आ ने जकर केओ रक्षक छैक ...

तकरापर जोरजुलुम करू, पुरुषत्व देखाऊ ! ... बाप रे ! ... हम आब चौकपर मौगी छी !!

एहि विस्फोटक स्वीकारोक्तिसँ स्पष्ट होइत अछि जे ओ स्त्री कहियो 'पागल' नहि छलीह — ओ बेर-बेर यौन-शोषणक शिकार बनैत रहलीह, आ ओकर आघात-जनित मौनता आ असामान्य व्यवहारकें समाज 'पागलपन' बुझि, ओकर वास्तविक पीड़ाकें अनदेखी करैत रहल। कथा एकटा अत्यन्त प्रत्यक्ष नैतिक निर्णयसँ समाप्त होइत अछि, जे कथावाचक स्वयंपर आ पाठकपर सेहो लागू होइत अछि —

हम अपराधी छी ! चारूभरक लोक अपराधी अछि !!

ई अन्त कथाकें केवल एकटा करुण-कथासँ आगू बढ़ाकऽ एकटा नैतिक अभियोग-पत्र बना दैत अछि — पाठक स्वयं सेहो एहि 'चारूभरक लोक'मे शामिल होएबाक अपराध-बोधसँ बाँचि नहि सकैत छथि।

पात्रक नाम	सामाजिक भूमिका आ स्थिति	मौगीक प्रति दृष्टिकोण (Attitude towards the Woman)
कथावाचक	शिक्षित, संवेदशील मध्यमवर्गीय व्यक्ति	सहानुभूति मुदा सामाजिक प्रतिष्ठाक भयसँ अकर्मण्य (Bystander)
राजेशजी	कथावाचकक मित्र, यथार्थवादी	पूर्णतः तटस्थ, शंकालु, परोपकारकें जोखिम माननिहार
राम दयाल यादव	पुलिस सब-इन्सपेक्टर (कानून व्यवस्था)	दायित्व-विहीन, स्त्रीकें पागल मानि बेवास्ता करनिहार, सतही जाँच
रबी	चौकक दादा (अनौपचारिक सत्ता)	स्त्रीकें असम्बन्धित माननिहार, अपन प्रभाव क्षेत्रसँ बाहरक विषय
चौकपरक मौगी	असहाय, मानसिक विक्षिप्त, बेसहारा स्त्री	समाजक वासना आ क्रूरताक शिकार, पितृसत्ताक अमानवीयताक शिकार

५. तीनू कथाक साझा सूत्र: देह, मौन, दृष्टि आ उत्तरदायित्व

तीनू कथामे देह कथा-अर्थक प्रमुख स्थल अछि। ‘गोलबा’ मे देहकें पहिने चुमल, सहलाओल, सजाओल, खिलाओल जाइत अछि; अन्ततः ओही देह काटल, छोलल आ पकाओल जायबाक वस्तु बनैत अछि। ‘डीप डिप्रेसन’ मे मनक अनकहल पीड़ा छाती, नाड़ी, घाम, साँस, रक्तचाप आ स्तब्धताक रूपमे देह पर लिखाइत अछि। ‘चौकपरक मौगी’ मे स्त्रीक देह समाजक निगाह, सौन्दर्य-वर्णन, असुरक्षा आ सम्भावित हिंसाक केन्द्र अछि।

एहि क्रमकें ‘देह पर अधिकार’क त्रयी कहल जा सकैत अछि। गोलबाक देह पर परिवारक स्वामित्व अछि; अवसादग्रस्त पात्र अपन देह पर नियंत्रण चाहैत अछि, मुदा मनक भय देहकें काबू करैत अछि; चौकपरक स्त्रीक देह पर समाजक दृष्टि आ पुरुष-शक्ति आक्रमणकारी अधिकार जतबैत अछि। कथा-संग्रह एतए एक सार्वभौमिक प्रश्न तक पहुँचैत अछि—जीवित देह केकर? प्रेम, परिवार, परम्परा, विवाह, समाज, राज्य, पुलिस, बाजार—ई सभ संस्था देह पर दावा करैत अछि; व्यक्ति वा जीवक स्वत्व कतए अछि?

7. मौन, भाषा आ सत्य

संग्रहक अर्को महत्त्वपूर्ण पक्ष भाषा आ मौनक द्वन्द्व अछि। ‘गोलबा’ मनुष्यक भाषा नहि बजि सकैत अछि, तें ओकर असहमति मनुष्यक सुविधा अनुसार अनुवादित होइत रहैत अछि। ‘डीप डिप्रेसन’क पात्र भाषा रहितो सत्य नहि कहैत; शब्द उपलब्ध अछि, साहस आ प्रमाण अनुपलब्ध। ‘चौकपरक मौगी’ सामाजिक संवाद सँ बाहर अछि; अन्तिम चीख साबित करैत अछि जे समस्या भाषिक अक्षमता नहि, ओकर आवाज सुनबाक सामाजिक इच्छा नहि छल। एहि दृष्टि सँ तीनू कथा ‘कथनक नैतिकता’ पर विचार करैत अछि। कोन पीड़ा के कहल जाय? केकर शब्द विश्वसनीय मानल जाय? जखन पीड़ित नहि बजैत अछि, तखन दर्शकक जिम्मेदारी समाप्त भ’ जाइत अछि की अधिक बढ़ैत अछि? कथाकार बारम्बार पाठककेँ अधूरा संकेत दैत छथि आ पूर्ण प्रमाणक सुविधा नहि दैत छथि। ई ध्वनि-सिद्धान्तक आधुनिक कथात्मक रूप जकाँ बुझल जा सकैत अछि—मुख्य अर्थ अक्सर ओहि ठाम अछि जतए कथा साफ-साफ नहि कहैत।

(क) निरीहताक शोषण

तीनू कथाक केन्द्रीय पात्र — गोलबा (बकरी), डिप्रेसनग्रस्त पुरुष, आ चौकपरक मौगी — तीनू भिन्न-भिन्न प्रकारेँ ‘वाणीहीन’ वा ‘अश्रुतवाणी’ छथि। गोलबाकेँ मनुष्यक भाषा नहि अबैत छैक, डिप्रेसनग्रस्त पुरुष सामाजिक लाजक कारणे अपन सत्य बजबासँ इनकार करैत छथि, आ चौकपरक मौगीक सत्य वाणी सभकेँ ‘पागलपन’ बुझि अनसुनल कएल जाइत छैक। तीनू स्थितिमे, पीड़ितक निजी ‘आवाज’ अस्तित्वमे रहितो समाजद्वारा या त सुनल नहि जाइत छैक, या सुनिकऽ अनसुनल कएल जाइत छैक।

(ख) ‘लोक की कहत’ — सामाजिक मौनताक तर्क

‘डीप डिप्रेसन’ आ ‘चौकपरक मौगी’ दुनूमे ‘लोक की कहत’ वाला भय बेर-बेर आबि, पात्रसभकेँ सही आचरण करबासँ रोकैत अछि। ई सामाजिक-मनोवैज्ञानिक सूत्र कथाकारक एकटा सचेत आलोचनात्मक अवलोकन थिक — समाजमे व्याप्त भय-आधारित शालीनताक संस्कृति, जे वास्तविक करुणा आ न्यायसँ बेसी ‘इज्जत’ आ ‘प्रतिष्ठा’क रक्षाकेँ प्राथमिकता दैत अछि।

(ग) आख्यानात्मक विडम्बना (Dramatic Irony)क कुशल प्रयोग

तीनू कथामे कथाकार विडम्बनाक प्रविधिकेँ भिन्न-भिन्न रूपमे प्रयोग करैत छथि। 'गोलबा'मे पाठक आ चरित्रक ज्ञानक बीचक अन्तर त्रासदीकेँ तीव्र करैत अछि। 'डीप डिप्रेशन'मे पाठककेँ धीरे-धीरे बुझना जाइत अछि जे पात्रक 'सामान्य' होएबाक दाबी स्वयं ओकर बिमारीक लक्षण थिक। 'चौकपरक मौगी'मे 'पागल' समझल गेल स्त्री वास्तवमे सभसँ बेसी स्पष्टवादी आ सचेत निकलैत छथि। एहि त्रिविध विडम्बना-प्रयोगसँ स्पष्ट होइत अछि जे कथाकारक कथा-शिल्पपर गहीर पकड़ अछि।

एहि संग्रहक गहिरतम एकता विषयमे नहि, नैतिक संरचनामे अछि—एक जीव/मनुष्य पीड़ित अछि; अनेक संकेत उपस्थित अछि; देखनिहार उपस्थित अछि; मुदा भाषा, भय, परम्परा, सन्देह वा सामाजिक उदासीनता सहायता रोकैत अछि। ई संरचना 'गोलबा'केँ मात्र कथा-संग्रह नहि, 'उत्तरदायित्वक त्रयी' बनबैत अछि।

६. कथा-शिल्प, बिम्ब-विधान आ भाषा-शैली

वृषेश चन्द्र लालक साहित्यिक शिल्पमे एकटा परिपक्व गाम्भीर्य आ बहुआयामी दृष्टिकोण अछि। ओ विषयवस्तुक अनुकूल कथा-शिल्प (Narrative Techniques) क चयन करबामे सिद्धहस्त छथि, जे हुनकर रचनासभकेँ समकालीन साहित्यमे विशिष्ट स्थान दियबैत अछि।

'गोलबा' मे लेखक मानवेतर दृष्टिकोण (Anthropomorphic Perspective) अपनाबैत छथि, जाहिमे कथाक प्रवाह पशु-इन्द्रियक अनुभूतिक संग आगाँ बढ़ैत अछि आ अन्तमे विदेह-दर्शनमे विलीन भऽ जाइत अछि। ई शिल्प यथार्थकेँ एकटा भिन्न आ धारदार कोणसँ प्रस्तुत करैत अछि, जतए मनुष्यक क्रूरताकेँ एकटा अबोध पशुक दृष्टिसँ देखल जाइत अछि।

'डीप डिप्रेशन' मे चेतना-प्रवाह (Stream of Consciousness) आ आन्तरिक एकालाप (Interior Monologue) क उत्कृष्ट प्रयोग अछि। कथाक भीतर कोनो पैघ बाह्य घटना नहि घटैत अछि, मुदा नायकक अवचेतन मनक शंका आ तनाव सिनेमाक रील जकाँ घुमैत अछि, जे पाठककेँ मानसिक घुटनक साक्षात् अनुभव करबैत अछि।

‘चौकपरक मौगी’ मे सामाजिक वृत्तचित्र शैली (Social Realism Documentary Style) क सँग प्रथम-पुरुष दृष्टिकोणीय आत्मस्वीकारोक्ति (First-Person Confessional Narrative) अछि जे पाठककें झकझोरि कऽ रखि दैत अछि। कथावाचक एकटा क्यामराक जेना चौकक परिवर्तन, लोकक मानसिकता आ अन्तिम त्रासदीकें रेकर्ड करैत अछि।

भाषा आ बिम्ब-विधानक दृष्टिसँ, वृषेश चन्द्र लालक भाषा ठेठ मैथिलीक रस, लोकोक्ति आ मुहावरासँ समृद्ध अछि। हिनकर भाषामे मिथिलाक माटिक सोंधार्ई छैक तँ आधुनिक संत्रासकें व्यक्त करबाक लेल धारदार व्यंग्य सेहो। ठेठ मैथिली मुहावरेदार प्रयोग, जेना “कहाँ दोन” (कथाहिक), “चभकि-चभकि कऽ”, “ओरिआओन”, “कोरिअइनी”, “भटरंगा”, “चोकटल मुँह-कान”, “घेओना पसारए”, आ “भाथी जकाँ” कथाकें अतीव जीवन्त आ प्रामाणिक बनाबैत अछि।

बिम्ब-विधान (Imagery) क प्रयोग एहि कथासभक प्राण थिक। ‘गोलबा’ मे रक्ताभ खड्ग, छटपटाइत धड़, आ अन्तरिक्षमे उधियाइत आत्माक बिम्ब क्रूरता आ निस्पृहताक कन्ट्रास्ट (Contrast) प्रस्तुत करैत अछि। ‘डीप डिप्रेसन’ मे खिड़की-पर्दा बन्द कोठरी आ ‘तुलसी खैनीक गन्ध’ एकटा मनोवैज्ञानिक आघात (Trauma Triggers) क सघन बिम्ब थिक जे नायककें विक्षिप्त करैत अछि। ‘चौकपरक मौगी’ मे कंक्रीट महल आ कम्पाउण्डवालपर मैल-झेल वस्त्रमे मोटगर सिन्दूर थोपने स्त्री—ई भौतिक विकास बनाम मानवीय पतनक एकटा सशक्त विषमतावादी बिम्ब थिक जे समाजक अन्तर्विरोधकें मूर्त रूप दैत अछि।

जेनेट द्वारा प्रतिपादित दृष्टि-नियमनक अवधारणा एहि संग्रहक शिल्प बुझबाक लेल खास उपयोगी अछि। ‘गोलबा’ मे आन्तरिक फोकलाइजेशन पशु अनुभवक अनोखा माध्यम बनैत अछि। ‘डीप डिप्रेसन’ मे तेसर पुरुषक कथन लगभग मुक्त अप्रत्यक्ष शैलीक निकट पहुँचैत अछि—कथावाचक आ पात्रक विचारक सीमा बारम्बार धुँधला जाइत अछि। ‘चौकपरक मौगी’ मे पहिल पुरुषक कथावाचक एक साथ दर्शक, व्याख्याकार आ नैतिक अभियुक्त अछि।

समय-व्यवस्था सेहो भिन्न अछि। ‘गोलबा’ जन्म सँ वधधरि अपेक्षाकृत रैखिक गति राखैत अछि। ‘डीप डिप्रेसन’ स्मृतिमूलक वृत्ताकार समयमे अछि—वर्तमानक छोट संकेत अतीतक सन्देहकें पुनः सक्रिय करैत अछि। ‘चौकपरक मौगी’ दैनिक दिनचर्याक पुनरावृत्ति—आफिस

जाइकाल देखब, घुरतिकाल देखब—द्वारा स्त्रीक स्थायित्व आ समाजक निष्क्रियता स्थापित करैत अछि; अन्तिम दिन एहि दिनचर्या के तोड़ि दैत अछि।

रीता फेल्लस्की साहित्यक चार उपयोग—पहचान, मोहितता, ज्ञान आ आघात—पर बल दैत छथि। ‘गोलबा’ पाठककेँ पशु-स्नेहमे पहचान आ अन्तमे आघात दैत अछि; ‘डीप डिप्रेशन’ मनक अस्थिरताक ज्ञान/पहचान दैत अछि; ‘चौकपरक मौगी’ सामाजिक निष्क्रियता पर ज्ञानक संग आत्म-आघात उत्पन्न करैत अछि। एहि दृष्टि सँ संग्रहक प्रभाव केवल ‘कथा नीक लगल’ नहि, आत्म-परीक्षण अछि।

10. भाषा आ शैली

10.1 बोलचालक मैथिली आ स्थानीय संवेदना

संग्रहक भाषा मूलतः बोलचाल-आधारित मैथिली अछि। ‘गोलबा’ मे घरेलू शब्दावली—बड़कीमाइ, सोनी-मोनी, बब्बू, घास-कोराइ, दूबि, ओछाओन, फुदना, पोखरि, गोसाउनि-घर—कथा के सांस्कृतिक देह दैत अछि। ‘डीप डिप्रेशन’ मे डॉक्टरक बातचीत, आत्म-संवाद आ घरेलू शंका मिलि क’ मिश्रित मनोवैज्ञानिक रजिस्टर बनबैत अछि। ‘चौकपरक मौगी’ मे चौक, बाजार, पुलिस, दादा, मोबाइल, शॉपिंग आ आधुनिक उपभोक्ता-संस्कृति सँ जुड़ल शब्द रजिस्टर बदलि दैत अछि।

एहि बहु-रजिस्टरक लाभ ई जे तीनू कथा एके भाषिक सांचे मे नहि ढलैत। गाम-घरक संवेदना, शिक्षित मध्यवर्गक चिकित्सा-शब्दावली आ नवशहरी बाजारक मिश्र भाषा अलग-अलग सामाजिक संसार रचैत अछि। विशेषकर ‘चौकपरक मौगी’ मे अंग्रेजी-प्रभाव पर कथावाचक स्वयं व्यंग्य करैत अछि; कथा जखन बाद मे ‘शॉपिंग’, ‘कॉस्मेटिक’, ‘स्टाइलिश’, ‘रॉक’, ‘इलेक्ट्रॉनिक’ आदि शब्दक संसार देखबैत अछि, तँ भाषिक मिश्रण स्वयं विषय बनि जाइत अछि।

10.2 व्यंग्य, विस्मयादिबोधकता आ आत्म-व्यंजना

लेखक विस्मयादिबोधक चिह्न, प्रश्न, स्वतःसंवाद, स्थानीय मुहावरा आ कथावाचकीय टिप्पणीक खूब उपयोग करैत छथि। एहि सँ भाषा जीवित आ मुखर बनैत अछि, मुदा किछु ठाम अत्यधिक

विस्मयादिबोधकता भावकें पाठक पर जोर सँ थोपबाक जोखिम लैत अछि। खासकर जखन घटना अपने पर्याप्त तीव्र अछि, शिल्पक संयम प्रभाव बढ़ा सकैत अछि।

व्यंग्य विशेष रूपें तेसर कथा मे सफल अछि। 'मेगा चौक'क नाम, विदेशीपनक आकर्षण, राताराती जमीन-संपन्नता, नवधनाढ्य व्यवहार, स्थानीय दादागिरी आ 'आधुनिक' बाजारक चमक—ई सभ पर कथावाचकक टिप्पणी मात्र हास्य नहि; विकासक असंतुलित नैतिक अर्थ पर आलोचना अछि।

वृषेश चन्द्र लालक गद्य-शैली विवरणात्मक विस्तार आ मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मताक अद्भुत सन्तुलन प्रस्तुत करैत अछि। 'गोलबा'मे ग्राम्य-पारिवारिक जीवनक बारीक विवरण (भोजन, खेल, पर्व-त्योहार) एकटा समृद्ध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि बनबैत अछि, जाहिसँ कथाक अन्तिम त्रासदी आरो प्रभावकारी बनि जाइत अछि। 'डीप डिप्रेशन'मे कथाकार आन्तरिक एकालापक तकनीकक प्रयोगसँ पाठककें सीधा पात्रक मानसिक उथल-पुथलमे प्रवेश करबैत छथि, जाहिमे प्रश्नवाचक वाक्यसभक बहुल प्रयोग ('तँ कोना ओकरा भ' जएतैक डिप्रेशन?', 'एकर डाइग्नोसिस ठीक नहि छैक?') पात्रक आत्म-सन्देह आ आत्म-प्रवंचनाकें जीवन्त बनबैत अछि। 'चौकपरक मौगी'मे संवाद-प्रधान शैली (राजेशजीसँ बातचीत, पुलिससँ, दादासँ) कथाकें एकटा सामाजिक-अन्वेषणात्मक (investigative) चरित्र दैत अछि, जे धीरे-धीरे सत्यक उद्घाटन दिस बढ़ैत अछि।

भाषिक स्तरपर, तीनू कथामे ठेठ मैथिली मुहावरा आ लोकोक्तिक स्वाभाविक प्रयोग भेटैत अछि, जे कथासभकें प्रामाणिक सांस्कृतिक जमीनपर स्थापित करैत अछि। संवादसभ पात्रानुकूल आ यथार्थवादी छथि — 'चौकपरक मौगी'क अन्तिम विस्फोटक संवाद विशेष रूपे नाटकीय तीव्रतासँ भरल अछि, जे पङ्क्तिगत पाठकक हृदय हलचला दैत अछि।

७. भारतीय काव्यशास्त्र आ आधुनिक कथाशास्त्रक आलोक

एहि कथासभमे भारतीय काव्यशास्त्रक विविध रसक अनुपम परिपाक देखल जा सकैत अछि। 'गोलबा'क बाल्यकालमे बड़कीमाइक ममता आ सोनी-मोनीक दुलारमे वात्सल्य रसक प्रस्फुटन होइत अछि। गोलबाक बलिक समय आ 'चौकपरक मौगी'क अन्तिम चीत्कारमे करुण आ भयानक रसक चरम परिणति अछि। मुड़ी कटलाक बाद जीभ कटब, धरक फड़फड़ाबब आ चौकपर मौगी संग भेल पाशविक दुराचारक संकेत वीभत्स आ रौद्र रसकें उद्घाटित करैत अछि।

आ अन्ततः, गोलबाक आत्माक अन्तरिक्षमे निस्पृह भावें उधियाएब शान्त रस आ दार्शनिक उच्चताक द्योतक अछि।

भरतमुनिक रस-विचारक आधुनिक कथा पर यांत्रिक अनुप्रयोग उचित नहि, तथापि भाव-संरचनाक अध्ययन लेल रस-दृष्टि उपयोगी अछि। तीनू कथाक केन्द्र करुणा अछि। ‘गोलबा’ मे असहाय जीवक वध, ‘डीप डिप्रेशन’ मे आत्म-सन्देह सँ विघटित मन, ‘चौकपरक मौगी’ मे सार्वजनिक उपेक्षा आ हिंसा—तीनू पाठकमे शोक, दया आ नैतिक बेचैनी उत्पन्न करैत अछि। मुदा ई भावुकतामात्र नहि; प्रत्येक कथामे करुणक संग भयानक, बीभत्स, रौद्र वा शान्त भावक मिश्रण अछि।

‘गोलबा’क अन्त मे भयानक-बीभत्स सँ शान्त/अतीन्द्रिय स्वर दिस गति अछि। ‘डीप डिप्रेशन’ मे भय आ करुणा एक-दोसरमे घुलल अछि—पात्र बाह्य शत्रु सँ नहि, सम्भावित सत्य सँ डेराइत अछि। ‘चौकपरक मौगी’क अन्तिम चीख करुण सँ रौद्र दिस परिवर्तन अछि; मौन पीड़िता क्षणभर लेल आरोपकर्त्री बनैत अछि। एहि रस-परिवर्तनक कारण संग्रह एकरस करुण कहानी नहि बनैत।

8.2 ध्वनि आ अनकहल अर्थ

आनन्दवर्धनक ध्वनि-विचार अनुसार काव्यक महत्त्वपूर्ण अर्थ प्रायः प्रत्यक्ष कथनक पार्श्वमे प्रकट होइत अछि। एहि संग्रह मे तीन प्रमुख ध्वनि-क्षेत्र अछि। पहिल, गोलबाकें असाधारण प्रेम सँ पोसब अन्ततः बलिक तैयारी सेहो भ’ सकैत अछि—कथा आरम्भ मे ई नहि कहैत। दोसर, ‘डीप डिप्रेशन’क सन्देह सत्य अछि की नहि, लेखक निर्णायक उत्तर नहि दैत; तें कथा ईर्ष्या वा व्यभिचार पर नहि, सन्देहक अनुभव पर केन्द्रित रहैत अछि। तेसर, चौकपरक स्त्रीक जीवनक पूरा इतिहास अनुपस्थित अछि; ओकर मौन आ अन्तिम भाषिक विस्फोट पाठक सँ रिक्ति भरबाक नैतिक श्रम माँगैत अछि।

8.3 औचित्यक प्रश्न

मम्मटक औचित्य-विचारक व्यापक अर्थ ल’ कहब तँ कथाक प्रत्येक अंशक विषय, पात्र आ भावक संग उचित अनुपात महत्त्वपूर्ण अछि। ‘गोलबा’क आरम्भिक लाड़-प्यार अन्तक हिंसाकें आवश्यक गहराई दैत अछि—अतएव विस्तार औचित्यपूर्ण अछि। ‘चौकपरक मौगी’ मे चौकक

सामाजिक रूपान्तरणक दीर्घ वर्णन सेहो अन्तक उदासीन समाज बुझबाक जमीन बनबैत अछि, यद्यपि संपादकीय कसावट सँ किछु अंश संक्षिप्त भ' सकैत छल। 'डीप डिप्रेसन' मे गुरुजीक दार्शनिक प्रवचन कथा-वातावरणक अंग तँ अछि, मुदा किछु ठाम मनोवैज्ञानिक तात्कालिकता पर भारी पड़ैत अछि।

जेनेट द्वारा प्रतिपादित दृष्टि-नियमनक अवधारणा एहि संग्रहक शिल्प बुझबाक लेल खास उपयोगी अछि। 'गोलबा' मे आन्तरिक फोकलाइजेशन पशु अनुभवक अनोखा माध्यम बनैत अछि। 'डीप डिप्रेसन' मे तेसर पुरुषक कथन लगभग मुक्त अप्रत्यक्ष शैलीक निकट पहुँचैत अछि—कथावाचक आ पात्रक विचारक सीमा बारम्बार धुँधला जाइत अछि। 'चौकपरक मौगी' मे पहिल पुरुषक कथावाचक एक साथ दर्शक, व्याख्याकार आ नैतिक अभियुक्त अछि।

समय-व्यवस्था सेहो भिन्न अछि। 'गोलबा' जन्म सँ वधधरि अपेक्षाकृत रैखिक गति राखैत अछि। 'डीप डिप्रेसन' स्मृतिमूलक वृत्ताकार समयमे अछि—वर्तमानक छोट संकेत अतीतक सन्देहकें पुनः सक्रिय करैत अछि। 'चौकपरक मौगी' दैनिक दिनचर्याक पुनरावृत्ति—आफिस जाइकाल देखब, घुरतिकाल देखब—द्वारा स्त्रीक स्थायित्व आ समाजक निष्क्रियता स्थापित करैत अछि; अन्तिम दिन एहि दिनचर्या के तोड़ि दैत अछि।

रीता फेल्स्की साहित्यक चार उपयोग—पहचान, मोहितता, ज्ञान आ आघात—पर बल दैत छथि। 'गोलबा' पाठककें पशु-स्नेहमे पहचान आ अन्तमे आघात दैत अछि; 'डीप डिप्रेसन' मनक अस्थिरताक ज्ञान/पहचान दैत अछि; 'चौकपरक मौगी' सामाजिक निष्क्रियता पर ज्ञानक संग आत्म-आघात उत्पन्न करैत अछि। एहि दृष्टि सँ संग्रहक प्रभाव केवल 'कथा नीक लगल' नहि, आत्म-परीक्षण अछि।

८. आवरणक परिपाठ

पोथीक आवरण पर आकाश/बादल, परिदृश्य आ अग्रभागमे एक बकरा/पशु-आकृति प्रमुख अछि; शीर्षक 'गोलबा' तथा 'कथा संग्रह' स्पष्ट लिखल अछि। आवरण संग्रहक पहिल आ शीर्षक-कथा के दृश्य रूपें केन्द्रित करैत अछि। परिपाठक दृष्टि सँ ई पाठककें पशु-कथा पढ़बाक अपेक्षा दैत अछि, जखन कि संग्रहक दोसर दू कथा मनोवैज्ञानिक आ शहरी-सामाजिक विषय पर अछि। ई असमानता एक ओर शीर्षक-कथाक प्रतीकात्मक प्रधानता स्थापित करैत अछि; दोसर ओर समूचा संग्रहक विस्तृत विषय-विस्तार आवरण सँ तुरन्त अनुमानित नहि होइत।

९. साहित्यिक उपलब्धि आ सीमा

पशु-अनुभूतिक विश्वसनीय आ करुण फोकलाइजेशन: 'गोलबा' पाठककें मनुष्यक सुविधा-केन्द्रित दृष्टि सँ बाहर ल' जाइत अछि।

मनोवैज्ञानिक पुनरावृत्तिक रूपात्मक प्रस्तुति: 'डीप डिप्रेसन' मे विचारक चक्र कथा-रूप बनि जाइत अछि।

तीव्र शहरीकरणक सामाजिक भूगोल: 'चौकपरक मौगी' जमीन, बाजार, भाषा, पुलिस, स्थानीय शक्ति आ स्त्री-सुरक्षाकें एके कथा-क्षेत्रमे जोड़ैत अछि।

नैतिक अनिश्चितता: लेखक कई निर्णायक तथ्य स्पष्ट नहि करैत छथि; पाठककें निर्णायक जोखिम उठाबए पड़ैत अछि।

मौनक बहुस्तरीय रूप: पशु-वाणीहीनता, मनुष्यक आत्म-गोपन आ स्त्रीक सामाजिक अनसुनेपन तीनू कथा जोड़ैत अछि।

देहक पुनरावृत्त प्रतीक: पोसल/काटल देह, चिन्तासँ काँपैत देह, सार्वजनिक दृष्टि आ हिंसाक अधीन स्त्री-देह—ई संग्रहक गहनतम विषयगत एकता अछि।

अन्तक स्मरणीयता: तीनू कथा अन्तमे पाठकक पूर्ववर्ती पाठ बदलि दैत अछि—बलि, निदान, चीख/अपराध-बोध।

13. आलोचनात्मक सीमा आ सुधारक सम्भावना

एहि संग्रहक किछु सीमा ओकर महत्त्व कम नहि करैत, बल्कि शिल्पक अगिला सम्भावना स्पष्ट करैत अछि।

किछु ठाम कथावाचकीय व्याख्या दृश्य सँ अधिक बोलए लगैत अछि। विशेषकर 'गोलबा'क मृत्योत्तर दर्शन आ 'डीप डिप्रेसन'क गुरुजी-प्रसंग मे संक्षेप कथाक ध्वन्यात्मक शक्ति बढ़ा सकैत छल।

'डीप डिप्रेसन' शीर्षक चिकित्सकीय शब्दक निश्चितता दैत अछि, जखन कथा मे प्रस्तुत अनुभव चिन्ता, भय, सन्देह, पुनरावृत्त विचार आ शारीरिक घबराहटसँ मिश्रित अछि। साहित्यिक अस्पष्टता शक्ति अछि, मुदा शीर्षकक नैदानिक कठोरता पाठककें एक दिशा मे सीमित करैत अछि।

‘चौकपरक मौगी’ मे स्त्रीक प्रारम्भिक सौन्दर्य-वर्णन लम्बा अछि। जँ लेखकक उद्देश्य पुरुष-दृष्टिक आलोचना अछि तँ अन्त मे ओकर आत्म-आरोप एहि वर्णनकें पुनर्पाठ करबैत अछि; तथापि किछु पाठक लेल ई वस्तुकरणक पुनरुत्पादन जकाँ लगि सकैत अछि।

तेसर कथाक नगर-वर्णन अत्यन्त समृद्ध अछि, मुदा कथा-कसावट लेल चुनल अंशमे कतर-ब्योंत सम्भव छल। फेरो ई विस्तारक उपयोग ई अछि जे अन्तिम घटना ‘अचानक अपराध’ नहि, समूचा सामाजिक वातावरणक फल बुझाइत अछि।

विराम-चिह्न आ विस्मयादिबोधक चिह्नक अधिकता किछु ठाम भावनात्मक संकेत स्पष्ट करैत अछि, मुदा सूक्ष्मता घटा सकैत अछि।

तीनू कथा मे स्त्री पात्रक आत्म-वाणी सीमित अछि—तेसर कथा मे ई जानबूझि क’ मौनक विषय बनैत अछि, मुदा भविष्यक लेखनमे पीड़ित स्त्रीक आन्तरिक दृष्टि सेहो कथा-जगतक महत्त्वपूर्ण विस्तार भ’ सकैत अछि।

• विषयगत साहस : तीनू कथा एहन विषयपर लिखल गेल छथि, जकरा मैथिली कथा-साहित्यमे बहुत कम स्पर्श कएल गेल छैक — पशु-बलिक नैतिकता, पुरुष मानसिक स्वास्थ्य, आ यौन-हिंसाक सामाजिक अनदेखी। ई विषय-चयन स्वयं एकटा साहित्यिक साहसक परिचायक थिक।

• दृष्टिकोणक विविधता : पशु-चेतना (गोलबा), पुरुष-अन्तर्द्वन्द्व (डीप डिप्रेशन), आ सामाजिक-अन्वेषण (चौकपरक मौगी) — तीनू भिन्न कथन-कोणक कुशल प्रयोगसँ संग्रहमे शिल्पगत विविधता भेटैत अछि।

• नैतिक स्पष्टता बिनु उपदेशात्मकता : तीनू कथा पाठकमे गहीर नैतिक प्रश्न उठबैत छथि, मुदा कतहु सीधा उपदेश नहि दैत — ई कार्य कथाक संरचना आ विडम्बनाद्वारा स्वयं भऽ जाइत अछि, जे परिपक्व कथा-लेखनक प्रमाण थिक।

सीमा

• ‘डीप डिप्रेशन’मे पत्नीक कथित विश्वासघातक आरोप कहियो प्रत्यक्ष रूपे पुष्ट वा खण्डित नहि होइत अछि, जे यद्यपि जानबूझिकऽ अस्पष्ट राखल गेल बुझना जाइत अछि (कथाक मूल विषय पुरुषक मानसिक स्थिति थिक, पत्नीक अपराध वा निर्दोषिता नहि), तथापि एहि अस्पष्टतासँ पत्नी-पात्र स्वयं एकटा बिनु आवाजक संदिग्ध वस्तु बनिऽ रहि जाइत छथि, जे

कथाक अपन केन्द्रीय विषय (आवाजहीनताक आलोचना) सँ किछु विरोधाभासी बुझा सकैत अछि।

• 'गोलबा'क अन्त्येष्टि-वर्णनक तीव्रता तुलनामे कथाक आरम्भिक भाग बेसी विस्तृत अछि, जाहिसँ किछु पाठकलेल कथाक गति (pacing) असन्तुलित बुझा सकैत अछि — यद्यपि ई दीर्घ आरम्भ स्वयं कथाक भावनात्मक निवेशकें पुष्ट करबाक सचेत रणनीति सेहो भऽ सकैत अछि।

१०. समकालीन मैथिली कथा-सन्दर्भमे महत्त्व

एहि संग्रहक महत्त्वक दावा व्यापक इतिहासक प्रतिनिधित्वक आधार पर नहि, ओकर विशिष्ट कथात्मक साहस पर कएल जा सकैत अछि। ई घरेलू पशु, मानसिक स्वास्थ्य आ सार्वजनिक स्त्री-सुरक्षा—तीन एहन विषयकें कथा मे लैत अछि जाहि पर नैतिक संवेदना अक्सर रूढ़ सामाजिक भाषा सँ ढँक जाइत अछि। कथा-संग्रह पाठककें सीधे सुधारवादी भाषण नहि दैत; ओ पहिने स्नेह करबैत अछि, चिन्ता करबैत अछि, देखबैत अछि, अनिश्चित करैत अछि, तखन अपराध-बोध वा प्रश्नक ठाम छोड़ैत अछि।

मैथिली कथा-लेखनक एक प्रमुख शक्ति सदैव स्थानीय जीवनक सूक्ष्म स्पर्श रहल अछि; एहि संग्रह मे स्थानीयता केवल परिवेश नहि, विचारक माध्यम बनैत अछि। बड़कीमाइक साड़ी, पोखरिक जाड़, गोसाउनि-घर, डॉक्टरक क्लिनिक, तुलसी-खैनीक गन्ध, नव बनल चौक, मकै ओरहा, स्थानीय दादा, पुलिस चौकी—ई सभ वस्तु/स्थान कथा के अवतारी बनबैत अछि। आधुनिक प्रश्न विदेशी शब्दावली सँ नहि, स्थानीय अनुभव सँ उठैत अछि।

११. निष्कर्ष

वृषेश चन्द्र लालक साहित्यिक चिन्तनमे एकटा एहन लोकतान्त्रिक चेतना अछि जे समाजक अन्तिम पाँतीमे ठाढ़ व्यक्ति (वा पशु) क पीड़ाकें आत्मसात करैत अछि। हिनकर राजनीतिक जीवन जतए प्रत्यक्षतः सत्ता आ व्यवस्थामे लोकतान्त्रिक सुधारक लेल समर्पित रहल अछि, ओतए हिनकर साहित्य सामाजिक आ मनोवैज्ञानिक लोकतन्त्रक वकालत करैत अछि। हिनका द्वारा अनुदित नेपाली उपन्यास 'सुम्निमा' आ 'मोदिआइन' जतए ऐतिहासिक आ पौराणिक आख्यानक माध्यमसँ मानव स्वभावक विश्लेषण करैत अछि, ओतए हिनकर मौलिक कथा संग्रह 'गोलबा' पूर्णतः समकालीन यथार्थक धरातलपर ठाढ़ अछि।

समग्र रूपें कहल जाए तँ वृषेश चन्द्र लाल रचित कथा संग्रह 'गोलबा' मैथिली गद्य-साहित्यक आधुनिक कालखण्डक एकटा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण, वैचारिक रूपें प्रखर आ कालजयी उपलब्धि अछि। ई पोथी केवल मनोरञ्जनक साधन नहि अछि, बल्कि ई पाठकक संवेदनाकें झकझोरि कऽ ओकरा आत्ममंथन लेल विवश करनिहार एकटा मनोवैज्ञानिक आ समाजशास्त्रीय दस्तावेज अछि।

जहाँ 'गोलबा' कथा मानवीय स्वार्थ, प्रेम छद्म, आ धर्मक नामपर होइबला अमानवीय हिंसापर कठोर प्रहार करैत अछि, ओतए 'डीप डिप्रेशन' आधुनिक जीवनक अन्हार कोनामे पसरल अवसाद, वैवाहिक रिक्तता आ पुरुष-मनोविज्ञानक घुटनकें स्वर दैत अछि। 'चौकपरक मौगी' कथा हमरासभक तथाकथित सभ्य, शहरीकृत आ आधुनिक समाजक ओहि अमानवीय अनुहारकें बेनकाब करैत अछि, जतए मानवीय संवेदना कंकरीटक मल तरें दबिकऽ मरि चुकल अछि आ असहाय स्त्री-अस्मिता पुरुषत्वक अहङ्कारक शिकार बनि रहल अछि।

हिनकर कथासभ कोनो आदर्शवादी समाधान वा उपदेश नहि दैत अछि। ओ केवल यथार्थपरक शल्यक्रिया कऽ समाजक घावकें उघाड़ि कऽ पाठकक समक्ष राखि दैत छथि, जाहिसँ पाठक स्वयं चिन्तन करबाक लेल विवश हुआए। ई शैली विश्व साहित्यक महान मनोवैज्ञानिक यथार्थवादी रचनाकारसभक सम्मुख हुनका स्थापित करैत अछि। भाषायी प्राञ्जलता, सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, अस्तित्ववादी दर्शन आ सामाजिक यथार्थवादक जे दुर्लभ समन्वय एहि कथासभमे भेटैत अछि, तकर लेल वृषेश चन्द्र लालक ई पोथी मैथिली साहित्यक इतिहासमे सदैव उच्च आदरक संग स्मरण कएल जाएत। समकालीन समाजक विखण्डन, स्त्री-विमर्श, नव-पूँजीवादी शहरीकरणक त्रासदी, आ नव-मनोविज्ञानक अध्येतासभक लेल 'गोलबा' एकटा अनिवार्य आ महत्त्वपूर्ण सन्दर्भ ग्रन्थक रूपमे स्थापित होमएबाक पूर्ण योग्यता रखैत अछि।

'गोलबा'क तीनू कथा पढ़लाक बाद सबसे स्थायी अनुभूति ई रहैत अछि जे पीड़ा प्रायः सभक सामने होइत अछि, मुदा ओकर अर्थ बुझब आ ओकर प्रति उत्तरदायी बनब कठिन अछि। गोलबाक प्रति प्रेम छल, तथापि ओकर जीवन पर ओकर अधिकार नहि छल। 'डीप डिप्रेशन'क पात्रक परिवार आ डॉक्टर उपस्थित छथि, तथापि निर्णायक सत्य अनकहल अछि। चौकपरक स्त्री रोज सभक आँखिक सामने अछि, तथापि ओकर स्थिति निजी/सामाजिक जिम्मेदारीक बीच छूटैत रहैत अछि।

संग्रह एहि नैतिक विरोधाभासकें तीन स्तरपर खोलैत अछि: प्रेम हिंसाकें हमेशा रोकैत नहि; ज्ञान प्रमाणक अभावमे पक्षाघात बनि सकैत अछि; सहानुभूति क्रिया बिना आत्म-सन्तोष बनि सकैत अछि। एहि कारण ‘गोलबा’ केवल तीन करुण कथा नहि, करुणाक परीक्षा अछि। पाठककें पुछल जाइत अछि—हम जकरा प्रेम करैत छी, तकर स्वतन्त्रता मानैत छी की केवल अपन स्नेहक वस्तु बनबैत छी? हम जखन सन्देह/पीड़ा मे छी, सत्य कहबाक नैतिक साहस कतेक रखैत छी? आ हम जखन दोसरक दुःख देखैत छी, ‘लोक की कहत’क भय सँ कतेक देर धरि चुप रहैत छी?

कला-दृष्टि सँ संग्रहक सर्वोत्तम क्षण ओहि ठाम अछि जतए लेखक उत्तर नहि दैत छथि—गोलबाक अन्तिम अस्तित्वक प्रश्न, ‘डीप डिप्रेशन’क सन्देहक अनिश्चित सत्य, आ चौकपरक स्त्रीक अनकहल जीवनक इतिहास। एहि रिक्तिसभमे पाठकक विवेक सक्रिय होइत अछि। जँ किछु ठाम व्याख्या कम आ मौन अधिक रहित, तखन संग्रह आरो तीक्ष्ण बनैत; मुदा वर्तमान रूपमे सेहो ई कथा-संग्रह संवेदना, मनोविज्ञान आ सामाजिक नैतिकताक उल्लेखनीय संगम प्रस्तुत करैत अछि।

‘गोलबा’ मैथिली कथा-साहित्यमे एकटा उल्लेखनीय योगदान थिक, जे तीन भिन्न-भिन्न आख्यानिक कोणसँ एकहि मौलिक नैतिक प्रश्नकें बेर-बेर उठबैत अछि — निरीह, वाणीहीन प्राणी वा व्यक्तिक प्रति समाजक कर्तव्य की थिक, आ ओहि कर्तव्यक उल्लंघनमे ‘मौन दर्शक’ केर भूमिका केहन अपराधपूर्ण होइत अछि। बकरी गोलबाक विश्वासघाती बलिदानसँ लऽ कऽ, डिप्रेशनग्रस्त पुरुषक सामाजिक-लज्जाजनित मौनता धरि, आ चौकपरक मौगीक अनसुनल चीत्कार धरि — तीनू कथा एकटा साझा सत्यक उद्घाटन करैत छथि : निरीहताक शोषण तखने सम्भव होइत अछि, जखन आसपासक लोक चुप रहबाक चयन करैत अछि।

वृषेश चन्द्र लालक कवितासभमे (जेना ‘ढोलक’ आ ‘आन्दोलन’मे) जे सामाजिक न्यायक प्रत्यक्ष, नारात्मक स्वर भेटैत अछि, ‘गोलबा’क कथासभमे ओहि स्वरक एकटा बेसी सूक्ष्म, संरचनात्मक रूप देखबामे अबैत अछि — जतय नैतिक आक्रोश सीधा उद्घोषणाक बदला कथाक शिल्प आ विडम्बनाद्वारा व्यक्त होइत अछि। एहि दृष्टिसँ, ‘गोलबा’ कथाकारक साहित्यिक व्यक्तित्वक एकटा आरो परिपक्व, आरो बहुआयामी पक्ष उजागर करैत अछि, जतय

राजनीतिक-सामाजिक प्रतिबद्धता आ कथा-कलाक सूक्ष्म शिल्प एक-दोसरकेँ प्रभावी ढंगे पूरा करैत छथि।

१२. कथानुसार मुख्य आलोचनात्मक संकेत

कथा	प्रधान अनुभव	मुख्य शिल्प	नैतिक प्रश्न
गोलबा	स्नेह, भय, बलि, मृत्यु	पशु-केंद्रित आन्तरिक दृष्टि; अन्तिम आघात	प्रेम जँ स्वत्व नहि मानए तँ की ओ हिंसा रोकि सकैत अछि?
डीप डिप्रेशन	सन्देह, घबराहट, मौन, आत्म-निगरानी	मुक्त अप्रत्यक्ष कथन; पुनरावृत्त विचार; संकेत-आधारित स्मृति	सत्यक प्रमाण नहि हो तखन मन, परिवार आ न्यायक बीच संतुलन कोना राखल जाय?
चौकपर क मौगी	शहरीकरण, उदासीनता, स्त्री-असुरक्षा, अपराध-बोध	पहिल पुरुष; सामाजिक भूगोल; दैनिक पुनरावृत्ति; अन्तिम चीख	पीड़ा देखनिहार दर्शक कखन सहायक बनबाक जिम्मेदारी स्वीकारत?

१३. ग्रन्थसूची

लाल, वृजेश चन्द्र. गोलबा: कथा संग्रह.

भरतमुनि. नाट्यशास्त्र. विभिन्न मानक संस्करण.

आनन्दवर्धन. ध्वन्यालोक. विभिन्न मानक संस्करण.

मम्मट. काव्यप्रकाश. विभिन्न मानक संस्करण.

Genette, Gérard. Narrative Discourse: An Essay in Method. Cornell University Press, 1980.

Derrida, Jacques. The Animal That Therefore I Am. Fordham University Press, 2008.

Booth, Wayne C. The Company We Keep: An Ethics of Fiction. University of California Press, 1988.

Nussbaum, Martha C. Poetic Justice: The Literary Imagination and Public Life. Beacon Press, 1995/1997 editions.

Felski, Rita. Uses of Literature. Blackwell, 2008.

Scarry, Elaine. The Body in Pain: The Making and Unmaking of the World. Oxford University Press, 1985.

Latané, Bibb and John M. Darley. The Unresponsive Bystander: Why Doesn't He Help? Appleton-Century-Crofts, 1970.

Williams, Raymond. The Country and the City. Chatto & Windus, 1973.

4. माल्हो

नारी-विमर्श • दलित-अधस्तन दृष्टि • राजनीतिक-नैतिक पाठ • स्मृति-अध्ययन •
आख्यानशास्त्रीय विवेचन

१. प्रस्तावना : मुख्य प्रतिपाद्य आ साहित्यिक महत्त्व

‘माल्हो’ केँ केवल सामाजिक यथार्थपर लिखल नौ गोट कथाक संग्रह बुझब त ओकर साहित्यिक अर्थक एकटा पैघ भाग छूटि जाएत। ई संग्रह ग्राम्य स्मृति, नारीक मौन पीड़ा, जातिगत अपमान, लोकतान्त्रिक संघर्ष, दल-बदल, राज्य-हिंसा, युद्ध, प्रेम, मातृत्व, शिक्षा, इतिहास आ सार्वजनिक नैतिकताक एहन अन्तःसम्बद्ध संसार रचैत अछि जतय सत्ता प्रायः सभ रूपमे उपस्थित अछि—घरक भीतर पतिक वचनक सत्ता, जातिक सत्ता, पुलिसक सत्ता, दलक सत्ता, राज्यक सत्ता, परम्पराक सत्ता आ पुरुष-दृष्टिक सत्ता। एहि सभक सम्मुख लेखक बारम्बार एके प्रश्न ठाढ़ करैत छथि : मनुष्यक गरिमा कतय अछि, आ ओकर रक्षण के करत?

संग्रहक विशेषता ई अछि जे लेखक सिद्धान्तक नारा मात्र नहि लिखैत छथि। हुनक कथा अपन चरित्रसभक देह, प्रतीक्षा, लाज, भूख, अपमान, नोर, स्मृति आ छोट-छोट घरेलू क्रियाक भीतर सामाजिक संरचनाक असर देखबैत अछि। देपुरवाली काकीक जीवनभरि प्रतीक्षा, माल्होक कुमुदिनी, सिकन्दर डोमक बच्चाक विद्यालयी अपमान, फुलियाक लाल वैवाहिक साड़ी, आ इन्द्रकुमारीक एकदन्त हाथी-नौलखा हार—ई सभ सामान्य वस्तु नहि रहि जाइत अछि; ई मानवीय अस्मिता आ ऐतिहासिक हिंसाक प्रतीक बनि उठैत अछि।

फणीश्वरनाथ रेणु, राजकमल चौधरी, लिली रे आ गंगेश गुंजन जकाँ सिद्धहस्त कथाकारसभक परम्पराकेँ आगाँ बढबैत लालजी मिथिला-मधेशक माटि, संघर्ष आ राजनीतिक चेतनाकेँ यथार्थवादी ढङ्गसँ प्रस्तुत करैत छथि। आधुनिक साहित्यमे जतय रोमानियत आ अमूर्तताक

प्रभाव बढ़ल, ओतय ‘माल्हो’ यथार्थवादक कठोर धरातलपर समाजक असुविधाजनक सत्य खोलैत अछि।

एक आलोचनात्मक दृष्टि ई सेहो रेखांकित करैत अछि जे अङ्ग्रेजी आ अन्य पाश्चात्य भाषाक प्रभावक बीच लालजीक ठेठ, प्राञ्जल मैथिली भाषाकेँ नव ऊर्जा दैत अछि; दोसर दिस संग्रहक वास्तविक भाषिक बनावट सीमा-प्रदेशक बहुभाषिक जीवनकेँ सेहो आत्मसात् करैत अछि।

वृषेश चन्द्र लालक कथा-संग्रह “माल्हो” मैथिली कथा-साहित्यक ओहि धारक प्रतिनिधित्व करैत अछि जे नेपालक मधेश-तराई क्षेत्रक सामाजिक-राजनीतिक यथार्थकेँ मैथिली भाषाक माध्यमसँ अभिव्यक्ति दैत अछि। नअटा कथाक ई संग्रह विषयवस्तुक दृष्टिँ बड़ विस्तृत अछि — एकटा दिस गामक आङ्गन-दलानक पारिवारिक आत्मीयता आ बाल्यकालीन प्रेमक कोमल स्मृति अछि, त दोसर दिस पञ्चायती व्यवस्था, प्रजातन्त्र आन्दोलन, दलबदल, जातिगत भेदभाव, नक्सलवादी/जनयुद्धक हिंसा आ ऐतिहासिक सेन-वंशीय गाथा धरिक विस्तृत फलक अछि। एहि दृष्टिँ ई संग्रह मात्र कथा-संग्रह नहि, बल्कि नेपाली मधेशक विगत पचास-साठि वर्षक सामाजिक-राजनीतिक संक्रमणकाल — राणा-पञ्चायत सँ प्रजातन्त्र, प्रजातन्त्रसँ जनआन्दोलन आ जनआन्दोलनसँ सशस्त्र द्वन्द्वधरिक — एकटा साहित्यिक दस्तावेज सेहो बनि गेल अछि।

शीर्षक-कथा “माल्हो” केर चयन अपने-आपमे अर्थपूर्ण अछि। माल्हो एकटा साधारण, हाशियाकृत वर्गक ग्रामीण किशोरीक नाम थिक जे बाल्यकालीन सहज प्रेमक प्रतीक बनि कथाकारक स्मृतिपटलपर सदिखनलेल अंकित भऽ जाइत छथि। एहि नामकेँ शीर्षक बनेनाइ लेखकक ओहि सम्वेदनाक संकेत करैत अछि जे संग्रहक भीतर सभठाम प्रवाहित अछि — सामान्य, उपेक्षित, हाशियापर पड़ल पात्र-पात्रीक भीतरी संसारकेँ केन्द्रमे राखब।

‘माल्हो’ सुदामा प्रकाशन, जनकपुरधामसँ प्रकाशित कथा-संग्रह अछि।

संग्रहक केन्द्र-बिन्दु एक वाक्यमे कहब त ई अछि—व्यक्ति जखन परम्परा, जाति, दल, राज्य वा पुरुष-अहंकारक नामपर दोसर मनुष्यक गरिमा केँ कुचलैत अछि, तखन इतिहासक असली मूल्यांकन पीड़ितक अनुभवसँ शुरू होइत अछि।

२. सर्जकक वैचारिक धरातल, साहित्यिक यात्रा आ कथा-परिवेश

कोनो सेहो साहित्यकारक कृतिम ओकर निज जीवनक संघर्ष आ ओकर वैचारिक धरातलक प्रतिच्छाया अवश्य रहैत छैक। वृषेश चन्द्र लालक जन्म २९ मार्च १९५५ ई. मे भेलन्हि। हिनकर पिता स्व. उदितनारायण लाल आ माता श्रीमती भुवनेश्वरी देवी छलीह। हिनकर छठिहारक नाम विश्वेश्वर छलन्हि। हिनकर पारिवारिक आ वैचारिक पृष्ठभूमि नेपालक प्रजातान्त्रिक आन्दोलन, बी.पी. कोइराला (विश्वेश्वर प्रसाद कोइराला) क लोकतान्त्रिक समाजवाद, नेपालक पञ्चायत-विरोधी जनआन्दोलन, आ मधेसक स्वाभिमान-आन्दोलनसँ गहिरगर रूपेँ सम्बद्ध रहल अछि। ओ एकटा वरिष्ठ राजनीतिज्ञ, पूर्व राष्ट्रिय सभा सदस्य आ नेपालक प्रजातान्त्रिक आन्दोलनक सक्रिय योद्धा छथि, जे अपन वैचारिक स्पष्टताक लेल जानल जाइत छथि। राष्ट्रिय राजनीतिमे ओ तराई-मधेश लोकतान्त्रिक पार्टी (तमलोपा) आ जनता समाजवादी पार्टी (जसपा) सँ जुड़ल रहलाह अछि।

साहित्यिक क्षेत्रमे हिनकर योगदान आख्यान धरि सीमित नहि अछि। बी.पी. कोइरालाक ‘मोदिआइन’ आ ‘सुम्निमा’क मैथिली रूपान्तरण, मौलिक कविता-संग्रह ‘आन्दोलन’, बाल-कविता-संग्रह ‘ढोलक’, आ कथा-संग्रह ‘माल्हो’ तथा ‘गोलबा’ हुनकर बहुविध साहित्यिक व्यक्तित्वक संकेत दैत अछि।

कृतिक नाम	विधा	भाषा	प्रकाशन / सम्बन्धित विवरण
माल्हो	कथा संग्रह	मैथिली	सुदामा प्रकाशन, जनकपुरधाम
आन्दोलन	कविता संग्रह	मैथिली	विदेह ई-जर्नल / स्वतन्त्र प्रकाशन
ढोलक	बाल कविता संग्रह	मैथिली	विदेह ई-जर्नल आर्काइभ
मोदिआइन	अनूदित उपन्यास	मैथिली	बी.पी. कोइरालाक कृतिक रूपान्तरण

कृतिक नाम	विधा	भाषा	प्रकाशन / सम्बन्धित विवरण
सुम्निमा	अनूदित उपन्यास	मैथि ली	बी.पी. कोइरालाक कृतिक रूपान्तरण
संघीय शासनतिर	वैचारिक / राजनीतिक	नेपा ली	नेपालक राजनीतिक रूपान्तरणपर आधारित

वृषेश चन्द्र लाल जनकपुरक पूर्व नगरप्रमुख आ मधेश-आधारित राजनीतिक नेतृत्वक महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व सेहो रहल छथि। ई पृष्ठभूमि ‘बलिदानी’, ‘पाथरसनक लोक!’ आ ‘ढहलेल दलबदलू!’क राजनीतिक संसार केँ अनुभवजन्य विश्वसनीयता दैत अछि; मुदा जीवनी कथा-कथ्यक कुंजी भऽ सकैत अछि, कथा केँ जीवनीक प्रतिलिपि नहि मानल जा सकैत अछि।

कवितासँ कथा, बाल-साहित्यसँ अनुवाद, आ राजनीतिसँ साहित्य धरि बहुविध अनुभव संग्रहमे शिल्पगत रूपेँ सेहो देखाइत अछि—राजनीतिक कथा भाषण, स्मरण आ आत्मसंवादक सहारा लैत अछि, जखन कि ‘माल्हो’ वा ‘देपुरवाली काकी’ सूक्ष्म संकेत, देह-भाषा, घरेलू स्मृति आ मौनक माध्यमसँ अर्थ खोलैत अछि।

लेखकक जनकपुर-मधेश केन्द्रित अनुभव संग्रहक स्थानिक संवेदनाकेँ महत्त्वपूर्ण बनबैत अछि। नेपालक २०४६ सालक जनआन्दोलन, पंचायती व्यवस्था, लोकतन्त्रक बादक दलगत अवसरवाद, मधेशीय ग्राम-समाज, जाति-संरचना, सीमा-पार भारतक तुलना, राज्यक दमन, आ माओवादी ‘जनयुद्ध’क छाया—ई सभ कथा-परिस्थिति केवल पृष्ठभूमि नहि, चरित्रक नैतिक निर्णयक निर्णायक अंश अछि।

लालजी अपन प्रत्यक्ष भोगायल यथार्थ, जेल-यातना, भूमिगत आन्दोलन, सत्ता-लोलुपताक पाखण्ड आ ग्रामीण तराई-मधेशक सीमान्तकृत जीवन-सङ्घर्षकेँ काल्पनिक रोमानियतसँ दूर राखैत छथि। कथा-भूमि जनकपुरधामक गल्ली, मिथिलाक चौड़ी-चाँचर, सिन्धुली-जलेश्वरक जेलक कालकोठरी, काठमाण्डूक सत्ता-गलियारा आ अन्तर्राष्ट्रिय गोष्ठीसभधरि विस्तृत अछि।

३. संग्रहक संरचना आ विषयगत यात्रा

ई क्रम अपनेमे अर्थपूर्ण अछि। आरम्भक ‘देपुरवाली काकी’ निजी-स्मृति आ घरेलू अन्यायसँ प्रवेश करैत अछि; बीचमे राजनीतिक कथा व्यक्तिगत अनुभव केँ राज्य, दल आ लोकतन्त्रक

विस्तृत धरातलपर लऽ जाइत अछि; ‘सिकन्दर डोम’ आ ‘आ ओ मारलि गेलि !’ समाजक सीमान्तक आवाज केँ केन्द्रमे अनैत अछि; अन्तिम कथा इतिहासक एक प्रसंग केँ वर्तमान नारी-चेतनाक भीतर पुनःरचैत अछि। एहि तरहें संग्रह घरक ओसारा सँ आरम्भ भऽ राज्य, युद्ध आ इतिहास धरि फैलैत अछि, मुदा हर जगह ‘मनुष्य’ ओकर मूल इकाई रहैत अछि।

संग्रहमे कुल नअटा कथा सङ्कलित अछि — देपुराबाली काकी, बलिदानी बलिदानी, पाथरसनक लोक, माल्हो, ढहलेल दलबदलू, करी कोबहाम, सिकन्दर डोम, आ ओ मारलि गेलि, आ एकदन्त हाथी आ नौलखा हार। एहि क्रमकेँ ध्यानसँ देखलासँ बुझना जाइत अछि जे लेखक जानिबूझिकय एकटा वृत्ताकार संरचना रचने छथि — संग्रहक आरम्भ आ अन्त दुनू ठाम स्त्री-चरित्रक त्याग आ मौन संघर्षकेँ केन्द्रमे राखल गेल अछि (देपुराबाली काकी आ इन्द्रकुमारी), बीचमे राजनीतिक-सामाजिक कथासभक त्रयी अछि, आ बीचोबीच शीर्षक-कथा “माल्हो” कोमल, वैयक्तिक स्मृतिक रूपमे ठाढ़ अछि। एहि संरचनात्मक सन्तुलनसँ संग्रह मात्र प्रकीर्ण कथासभक संकलन नहि बुझाइत अछि, बल्कि एकटा सोचल-समझल विषयगत यात्रा बुझना जाइत अछि।

क्रम	कथा	पृष्ठ	मुख्य कथ्य
१	देपुरवाली काकी	२-८	स्मृति, पितृसत्ता, वैवाहिक अन्याय, प्रतीक्षा
२	बलिदानी	९-१२	लोकतन्त्र, शहादत, राजनीतिक स्मृति
३	पाथरसनक लोक !	१३-१६	पुलिस हिंसा, राजनीति, पीढ़ीगत भय
४	माल्हो	१७-२४	प्रेम, वर्ग-दूरी, स्त्री-गरिमा, मातृत्व
५	ढहलेल दलबदलू !	२५-३१	दल-बदल, संरक्षणवाद, प्रजातन्त्र
६	करी कोबहाम	३२-३४	देह-दृष्टि, आयु, विवाह, मातृत्व
७	सिकन्दर डोम	३५-३७	जाति, अस्पृश्यता, शिक्षा
८	आ ओ मारलि गेलि !	३८-४२	युद्ध, प्रेम, राज्य-हिंसा, मीडिया

क्रम	कथा	पृष्ठ	मुख्य कथ्य
९	एकदन्त हाथी आ नौलखा हार	४३-४५	इतिहास, दहेज, नारी-अस्मिता, धरोहर

४. कथा-दर-कथा गहन पाठ

४.१ ‘देपुरवाली काकी’ : स्मृतिक पर्दापर पितृसत्ताक दीर्घ छाया

संग्रहक पहिल कथा एकदम आधुनिक दृश्यसँ शुरू होइत अछि—टेलिभिजन, फिल्म ‘तीसरी कसम’, वहीदा रहमानक छवि, कम्प्यूटर आ फोटो-संशोधन। ई आधुनिक तकनीकी संसार अचानक कथावाचक केँ ग्राम्य अतीतक एक स्त्रीक चेहरा लग पहुँचा दैत अछि। एहि शिल्पगत युक्तिसँ लेखक देखबैत छथि जे स्मृति रेखीय नहि होइत अछि; कोनो छवि, गन्ध, स्वर वा चेहराक समानता वर्तमानक पर्दा फाड़ि अतीत केँ सजीव कऽ सकैत अछि।

देपुरवाली काकी कथावाचकक बाल्यकालमे दुलार, सेवा आ सुरक्षा देनिहार स्त्री छथि। हुनक सौन्दर्यक चर्चा अछि, मुदा कथा धीरे-धीरे बाह्य सौन्दर्यसँ हटि हुनक निःशब्द जीवन-यातनाक भीतर जाइत अछि। मिसरी काका, रीगावाली आ बाल-विवाहक प्रसंग खुलैत गेलापर स्पष्ट होइत अछि जे काकीक त्रासदी कोनो दैविक ‘पूर्वजन्मक पाप’ नहि, पुरुषक अहंकार, असंगत प्रतिज्ञा आ परिवार-समाजक मौन स्वीकृतिक परिणाम अछि। ई महत्त्वपूर्ण नैतिक उलटफेर अछि : कथा लोकविश्वासक ‘भाग्य’ व्याख्या केँ प्रस्तुत करैत अछि, फेर घरक स्त्री-स्वरक माध्यमसँ ओकर प्रतिवाद करैत अछि।

मधुक आक्रोश कथा भीतर आलोचकक काज करैत अछि। ओ पुरुषक ओहि प्रवृत्तिपर चोट करैत अछि जाहिमे एक स्त्रीक कारण दोसर स्त्रीपर जीवनभरि अन्याय कएल जाइत अछि, आ ‘वचन’ पुरुषक नैतिकता बनि जाइत अछि जबकि ओकर दाम स्त्री चुकबैत अछि। एहि कारण ‘देपुरवाली काकी’ मात्र करुण कथा नहि, पितृसत्ताक नैतिक शब्दावली—धर्म, वचन, सहनशीलता, पतिव्रत—क पुनर्परीक्षण अछि।

कथाक चरम विडम्बना अत्यन्त प्रभावकारी अछि। मिसरी काका पछताइत घर नहि छोड़बाक प्रतिज्ञा करैत छथि; काकी प्रतीक्षित क्षण पाबि उन्मत्त आनन्दमे समस्त गामक संग खुशी बाँटैत छथि; मुदा ओहि राति हुनक मृत्यु भऽ जाइत अछि। जिनगीभरि प्रतीक्षा कएल मिलनकेँ समय

मात्र किछु घण्टा दैत अछि। ई पितृसत्ताक विलम्बित पश्चात्तापक नैतिक निष्फलता देखबैत अछि—क्षमा आवश्यक होइतहुँ नष्ट समय लौटा नहि सकैत अछि।

शिल्पगत उपलब्धि

फोटो-स्मृतिसँ शुरू भऽ पारिवारिक मौखिक कथा आ बाल-स्मृतिमे उतरनाइ, फेर वर्तमानमे भावात्मक प्रतिक्रिया—ई बहुस्तरीय आख्यान कथा केँ सामान्य पारिवारिक संस्मरणसँ ऊपर उठबैत अछि। काकीक मौन, आँगन-दलान, भोजन, पंखा झोंकब, द्वारपर बाट ताकब—छोट घरेलू बिम्ब स्त्रीक अदृश्य श्रम आ दमनक बड़ा इतिहास लिखैत अछि।

मिसरी काकाक ‘रीगाबाली’ नामक दोसर महिलासँ सम्पर्कक चर्चा फैललापर पारिवारिक कलह होइत अछि। अपन गलती सुधारबाक बदला ओ प्रतिज्ञा लैत छथि जे जीवनभरि देपुरवाली काकीसँ नहि बतियाओताह आ घरमे नहि सुतताह; रामननक दलान हुनकर स्थायी शयन-ठाम बनि जाइत अछि।

काकी बिना उजुर-शिकायत पतिक वस्त्र धोवन, भोजन आ सेवा-सुश्रूषा करैत रहैत छथि। बहुत बाद मिसरी काका भोकासी पाड़ि कानैत क्षमा माँगैत छथि; काकी प्रतीक्षित मिलनक आनन्दमे गामभरि खुशी बाँटैत छथि, मुदा ओही राति हृदयघातसँ मरि जाइत छथि। दू मासक बाद मिसरी काका सेहो प्रायश्चित्तक आगिमे जरैत प्राण त्यागि दैत छथि।

“भीष्म जकाँ अधलाह प्रतिज्ञा”क बिम्ब पुरुष-अहंकारक निरर्थक कठोरता खोलैत अछि। वहीदा रहमानक बाह्य फिल्मी सौन्दर्यक विपरीत देपुरवाली काकीक आन्तरिक, त्रासद सौन्दर्य कथा केँ अलग गाम्भीर्य दैत अछि।

कथाक अन्तमे दुइये पीढ़ी बाद काकीक नाम आ पहचान बिसरा जयबाक चित्रण—“कोन देपुराबाली काकी?”—समयक निर्ममताकेँ आरो तीक्ष्ण करैत अछि।

४.२ ‘बलिदानी’ : शहादतक स्मृति केकर सम्पत्ति?

‘बलिदानी’ लोकतन्त्र प्राप्तिक बाद राजनीति द्वारा आन्दोलनक स्मृतिक हरणक कथा अछि। कार्यक्रमक समयपालन, मंचीय व्यवहार, आयोजनक दिखावा, आ आन्दोलनक स्वघोषित नायकसभक उपस्थिति—आरम्भे लेखक सार्वजनिक राजनीतिक संस्कृतिक सूक्ष्म व्यंग्यचित्र

बनबैत छथि। २०४६ सालक जनआन्दोलनक सन्दर्भ कथा केँ ठोस इतिहासक भूमि दैत अछि, मुदा प्रश्न व्यापक अछि : क्रान्तिक सफलता बाद ओकर स्मृति पर अधिकार केकर होइत अछि? कथाक केन्द्रीय व्यक्ति ओहि पीढ़ीक प्रतिनिधि अछि जे दमन, जेल, चोट आ व्यक्तिगत क्षति भोगलक, मुदा लोकतन्त्रक बाद सत्ता-व्यवस्थामे किनार कऽ देल गेल। पीड़ित-सहायता, राजनीतिक कैदीक सूची, सिफारिश आ सम्मानक प्रक्रियामे अवसरवादी, जातीय गुट वा अपराधी घुसि जाइत छथि। एहि बिन्दुपर कथा संस्थागत स्मृतिक राजनीति खोलैत अछि : अभिलेख जेकर हाथमे, इतिहासो ओकरे हाथमे।

तथापि कथा निराशावादी निष्कर्षपर नहि रुकैत अछि। नायक वर्तमान लोकतन्त्रक विकृति देखि क्षुब्ध अछि, मुदा पंचायती दमनक स्मृति ओकरा प्रतिगमनक विरुद्ध ठाढ़ करैत अछि। लेखक लोकतन्त्र केँ देवत्व नहि दैत छथि; ओकरे भीतर भ्रष्टाचार आ स्मृति-हरण देखबैत छथि, परन्तु तानाशाहीक तुलनामे सुधारयोग्य लोकतान्त्रिक क्षेत्रक नैतिक महत्त्व स्वीकारैत छथि। ई राजनीतिक परिपक्वता कथाकेँ दलगत प्रचारसँ बचबैत अछि।

कथाक सर्वाधिक मौलिक हस्तक्षेप ई अछि जे शहीदक विधवा आ सन्तान केँ सेहो ‘बलिदानी’ मानल जाइत अछि—कारण ओसभ जीवनक स्वर्णिम समय, स्नेह, सुरक्षा आ संग-साथ गमौने छथि।

‘बलिदानी’, पृ. ९-१२

एहि पुनर्परिभाषासँ शहादत पुरुष-वीरक एकल गाथा नहि रहैत अछि; परिवार, विशेषतः स्त्री आ बच्चाक दीर्घकालीन दुःख राजनीतिक स्मृतिक केन्द्रमे आबैत अछि। सार्वजनिक मंचपर माल्यार्पण आ नारा एक क्षणक क्रिया अछि, किन्तु विधवाक एकाकी जीवन दीर्घ बलिदान। कथा राष्ट्रवादी वीरगाथाक अदृश्य घरेलू मूल्य केँ उजागर करैत अछि।

कथाक स्मृति-सभा दुर्गानन्द झाक शहादतसँ जुड़ल अछि—ओ पञ्चायत कालमे जनकपुरमे राजा महेन्द्रपर बम प्रहारक बाद फाँसी चुमने छलाह। ‘चैते’ शब्द प्रजातन्त्र अलाक बाद अचानक क्रान्तिकारी बनि पार्टीमे पद आ लाभ बटोरयवला अवसरवादी प्रवृत्तिक व्यंग्यात्मक नाम बनैत अछि।

मञ्चपर शहीदक अन्तिम समयक गीता-रामायण पाठक कथा सुनाओल जा रहल अछि, मुदा मुख्य पात्रक मनमे प्रश्न उठैत अछि जे वास्तविक “बलिदानी” शहीदसँ बेसी हुनक नवयौवना विधवा पत्नी, वृद्धा माय आ परिवार नहि छथि, जे जीवनभरि नोर, अभाव आ संत्रासमे तिल-तिल कऽ जरैत रहल?

कथा लोकतन्त्रक विकृतिसँ मोहभङ्ग व्यक्त करैतहुँ प्रतिगमनक समर्थन नहि करैत; “पञ्चायतसँ तँ बूढ़बकहो प्रजातन्त्र हजार गुणा नीक” वाली भावना प्रतिकारक स्वतन्त्रताकें मूल नैतिक कसौटी बनबैत अछि।

४.३ ‘पाथरसनक लोक !’ : नैतिक साहस, आदर्शवाद आ अभिभावकीय भय

ई कथा राजनीति-विमुख होमय चाहैत परिवारक भीतर राजनीति फेर कोना प्रवेश करैत अछि, तकर मार्मिक आख्यान अछि। पिता स्वयं पुरान राजनीतिक संघर्षक यातना भोगने छथि; पत्नी मधु परिवारकें राजनीति सँ बचा कऽ राखय चाहैत छथि; मुदा बेटा पुलिस द्वारा पीटल एक विद्यालयी बच्चाकें बचाबय जाइत अछि आ स्वयं लाठी खाइत अछि। प्रश्न ई नहि रहि जाइत जे ‘राजनीतिमे जएबाक’ निर्णय के लेलक; प्रश्न बनैत अछि—अन्याय आँखिक आगा हो त मौन रहब की राजनीतिक क्रिया नहि थिक?

पिताक अन्तर्द्वन्द्व कथाक प्राण अछि। एक दिस ओ बेटाक साहसपर गर्वित छथि, दोसर दिस अपन अनुभवक कारण राजनीति सँ दूर रहबाक उपदेश दैत छथि। एहि विरोधाभासमे लेखक एक पीढ़ीक ऐतिहासिक थकान पकड़ैत छथि। आदर्शक लागि जेल-लाठी खएने लोक लोकतन्त्र बाद जे अवसरवाद, जातीयता आ धनबल देखैत अछि, से अपन सन्तान कें ओहि चक्रसँ बचाबय चाहैत अछि; मुदा ओहिना नैतिक संवेदना सन्तानमे देल गेल अछि जे ओकरा अन्याय देखिते हस्तक्षेप करबैत अछि।

शीर्षक ‘पाथरसनक लोक !’ केवल पुलिस वा राज्यक कठोरताक व्यंजना नहि, सामाजिक संवेदनहीनताक प्रश्नोत्तर सेहो अछि। बालकक पिटाई देखिकय दर्शक ठाढ़ रहि सकैत छथि; व्यवस्था ‘नियम’क नामपर हिंसा करैत अछि; राजनीतिक दल पीड़ा कें अवसरमे बदलैत अछि। एहन संसारमे जँ कोनो युवक दौड़ि कऽ पीड़ित कें बचबैत अछि, त ओकरे असावधान कहब स्वयं पाथरपनक संकेत भऽ जाइत अछि।

मधु अपन पतिक राजनीति-साधनाक पारिवारिक मूल्यक कठोर हिसाब करैत कहैत छथि जे राजनीति या तँ “शमशेरे सनक धनवान”क विषय थिक वा “भट्टराईये सनक फकीर”क। बेटामे पतिके देखैत ओ “पाथरसनक लोक” कहैत छथि—एहन निस्वार्थ लोक, जकर बलिदान समाज कतेको बेर “बकलेलपन” बुझि उपहास करैत अछि।

४.४ ‘माल्हो’ : कुमुदिनी, असमान प्रेम, वर्ग-दूरी आ स्त्री-गरिमा

शीर्षक कथा ‘माल्हो’ संग्रहक सौन्दर्यात्मक केन्द्र अछि। आरम्भमे कथावाचक गाम लौटैत अछि आ मायकेँ दुरखापर बाट तकैत देखैत अछि; ई दृश्य ओकरा दाइ, पुरान गाम, साइकिल, कच्चा बाट, रेडियो-दहेज, खेत आ बचपनक संसारमे लौटा दैत अछि। समयक परिवर्तन—कच्चा बाटसँ मोटरगाड़ी धरि—कथा भीतर केवल दृश्यपरिवर्तन नहि; ई स्मृति आ सामाजिक दूरीक विस्तार अछि। कथावाचक आब प्रतिष्ठित, शहरिया आ प्रशासनिक-सार्वजनिक मान-सम्मानसँ घेरल व्यक्ति अछि, जबकि माल्हो अपन संघर्षक कठोर धरातल पर रहि गेलि अछि।

युवा माल्हो आ कथावाचकक सम्बन्ध केँ लेखक स्पष्ट प्रेम-घोषणा द्वारा नहि, कुमुदिनी, कनखिआनाइ, सकुचायल मुस्की, खेत आ डबरा किनारक छोट घटनासँ रचैत छथि। माल्हो पानिमे पैसि कुमुदिनीक फूल तोड़ि ‘ई अहाँक लेल’ कहैत अछि। विवाहक पहिने अन्तिम भेटमे फेर ओ फूल दैत ‘लोकधर्मक पालन’ करबाक बात कहैत अछि। कुमुदिनी एहि कथा मे प्रेमक चिन्ह मात्र नहि; ओ एहन सौन्दर्य अछि जे कीचड़-पानि बीच खिलैत अछि, छूअय कठिन अछि, आ तोड़ल गेलापर क्षणभंगुर भऽ जाइत अछि।

कथा बीस-पच्चीस वर्ष बाद माल्होक बेटा सुन्दर सहनीक रूपमे अतीतक नैतिक ऋण केँ वर्तमानमे अनैत अछि। बेटा एसएलसी पास कएने अछि। कथावाचक ओकरा पढ़बाक सलाह दैत अछि, पर माल्होक सरल प्रश्न—‘आओर पढ़ओतैक के?’—ओकर आत्मविश्वासकेँ तुरन्त असुविधामे बदलि दैत अछि। राति ओकरा भय होइत अछि जे माल्हो किछु एहन ने माँगि बैठत जाहिसँ ओकर प्रतिष्ठा, सामाजिक पद वा प्रशासनिक छवि संकटमे पड़ि जाय। लेखक एतय पुरुष-मनक वर्गीय आत्मरक्षा केँ सूक्ष्मता सँ खोलैत छथि।

माल्हो मुदा धन, नौकरी वा निजी अधिकारक माँग नहि करैत अछि। अपन पति द्वारा छोड़ल/निकालल गेलाक बाद ओ श्रम करैत अपन बेटाकेँ पोसैत आ पढ़बैत अछि। अन्ततः ओकर आग्रह बेटाक शिक्षा भरि रहि जाइत अछि। एहि क्षण माल्होक नैतिक कद कथावाचकक

सामाजिक कदसँ पैघ देखाइत अछि। ओ अपन पुरान प्रेमक बदला नहि माँगैत अछि; न दया। ओ भविष्यक एक अवसर माँगैत अछि—अपन बेटाकेँ पढ़बाक।

अन्तिम दृश्य फेर कुमुदिनीपर लौटैत अछि। माल्हो कथावाचककेँ फूल दैत दूर चलि जाइत अछि; ‘ई अहाँक लेल’ कानमे गूँजैत रहैत अछि। ई वृत्ताकार संरचना कथाक अतीत आ वर्तमान केँ एक प्रतीकमे बाँधि दैत अछि। फूल एक्के बेर प्रेम, क्षमा, दूरी, स्मृति आ असम्भव मिलनक संकेत बनैत अछि। ‘माल्हो’क उपलब्धि ई अछि जे ओ प्रेमक अधूरापन केँ भावुक प्रणय-विलाप नहि बनबैत; ओकर भीतर वर्ग, लिंग, विवाह-व्यवस्था, लोकधर्म आ पुरुषक आत्मदोषबोधक जटिलता राखैत अछि।

एक आलोचनात्मक प्रश्न

कथावाचकक दृष्टि माल्होक देह आ सौन्दर्यपर बारम्बार लौटैत अछि। समकालीन स्त्रीवादी पाठ एहि ‘पुरुष-दृष्टि’ पर प्रश्न उठा सकैत अछि। मुदा कथा अपन भीतर एहि दृष्टिक आलोचनाक साधन सेहो बनबैत अछि : कथावाचक जतेक अपन प्रतिष्ठा आ इच्छा केँ केन्द्रमे राखैत अछि, माल्हो ओतेक अपन निर्णय, श्रम, मातृत्व आ आत्मसंयम द्वारा स्वतंत्र नैतिक व्यक्तित्व बनि उठैत अछि। एहि तनावक कारण कथा अधिक जटिल आ आधुनिक बनैत अछि।

माल्हो मल्लाह जातिक गरीब लड़की अछि; अपन पति द्वारा छोड़ल गेलाक बाद ओ एसगरे मजदूरी कऽ बेटा सुन्दर सहनीकेँ पढ़बैत अछि, जे द्वितीय श्रेणीमे एस.एल.सी. उत्तीर्ण करैत अछि। एहि तथ्यसँ प्रेमक कथा वर्गीय आ जातीय दूरीक ठोस धरातल पबैत अछि।

वर्षौं बाद रातिक अन्हारमे भेटक समय कथावाचक पुरान अधिकार-बोधमे ओकर हाथ पकड़य चाहैत अछि; माल्हो ओकरा रोकैत अपन संघर्षक केन्द्र बेटाक भविष्य कहैत अछि। कुमुदिनीक फूल फेर दऽ ओ कामुक अधिकार-बोधकेँ नैतिक धरातलपर पराजित करैत अछि।

एहि वर्गीय अवरोधक मार्मिक अभिव्यक्ति “हम जानकी नहि भऽ सकब” वाक्यमे भेटैत अछि; एहिमे अनुत्तरित प्रेमक करुणता, आत्मत्याग आ सामाजिक दूरी एक्केसाथ उभरैत अछि।

४.५ ‘ढहलेल दलबदलू !’ : दल-बदलसँ बेसी, नैतिक विवशताक व्यंग्य

शीर्षक पहिल दृष्टिमे राजनीतिक व्यंग्यक संकेत दैत अछि, मुदा चन्दरक कथा पढ़लापर बुझाईत अछि जे लेखक ‘दलबदलू’ शब्दक जनप्रिय अर्थकेँ उलटि दैत छथि। चन्दरक बाउ राणा-पश्चात्

लोकतान्त्रिक परिवर्तनक समर्थक छथि; पहाड़ी सामन्तक गोठ सस्तामे भेटबाक निजी लाभ होइतहुँ हुनक लोकतन्त्र-समर्थन केवल स्वार्थ नहि, बैठ-बेगारी आ सामन्ती भय सँ मुक्तिक अनुभवसँ जुड़ल अछि। चन्दर एहि नैतिक उत्तराधिकार केँ अपन विश्वास बनबैत अछि।

२०४६ सालक बाद पुरान संघर्षकारी नेतासभ सत्ता-गौरवमे दूर भऽ जाइत छथि। चन्दर सात-आठ वर्ष पार्टीक सक्रियता छोड़ि केवल मत देबाक निर्णय लेत अछि। मुदा छोट भाइ ललचनमा एक भूखल बच्चाकेँ सहारा दैत अछि, आ स्थानीय ‘चैतहा’ नेता ओकरा अपहरणक झूठ मुद्दामे फँसा दैत अछि। पुलिस यातना आ राजनीतिक षड्यन्त्रक सम्मुख चन्दर राजधानीमे पुरान नेता-मन्त्रीलग न्याय माँग्य जाइत अछि; ओतय ओकर अपमान होइत अछि। ई दृश्य लोकतन्त्रक बाद सत्ता द्वारा जनस्मृतिक विस्मरणक कटु चित्र अछि।

विडम्बना गाढ़ होइत अछि : भाइकेँ छुड़ाबय ओ पुराने पंच-परिवारक प्रभावशाली डॉक्टर रामप्रसादक सहायता लैत अछि, जे सहायता बदला अपन पार्टीमे आबयक शर्त रखैत अछि। चन्दर भाईक जीवनक खातिर स्वीकार करैत अछि। समाज तत्काल ओकरा ‘दलबदलू’ कहैत अछि। लेखक पाठक केँ पूछबैत छथि—जखन न्याय संस्था द्वारा नहि, सम्पर्क आ दलगत संरक्षण द्वारा भेटैत हो, त दोष केवल सहायता माँगनिहारक अछि कि सम्पूर्ण संरचनाक?

पछिला मोड़मे राजतन्त्र फेर लोकतन्त्रकेँ दबबैत अछि। चन्दरक भीतर बाउक सीख आ अपन समझौताक पश्चात्ताप जागैत अछि; ओ प्रजातन्त्रक पक्षक जुलूसमे कूदि पड़ैत अछि। गाम फेर ओकरा ‘दलबदलू’ कहैत अछि—ई बेर उल्टा कारणेँ। शीर्षकक ‘ढहलेल’ शब्द व्यंग्यात्मक अछि : लोकक दृष्टिमे चन्दर राजनीतिक गणित बुझयमे ढहलेल अछि, कारण सत्ता जता, ओ ताहिसँ उलट नैतिक दिशा पकड़ैत अछि। अन्तमे ओकर ‘प्रजातन्त्र जिन्दाबाद’ व्यक्तिगत प्रतिष्ठा पर सार्वजनिक मूल्यक विजय अछि।

कथाक सबसँ पैघ शक्ति संस्थागत आलोचना अछि—दल, पुलिस, मन्त्री, सिफारिश, राजनीतिक संरक्षण, ग्राम्य अफवाह, सभ एकटा जाल बनैत अछि। सीमा ई जे किछु भागमे राजनीतिक पृष्ठभूमिक व्याख्या कथात्मक गतिसँ बेसी निबन्धात्मक भऽ जाइत अछि; मुदा चन्दरक व्यक्तिगत संकट एहि विचारात्मक विस्तारकेँ भावात्मक धरातल दैत रहैत अछि।

चन्दरक गोठ पञ्चायत कालमे भूमिगत प्रजातान्त्रिक सेनानीसभक गुप्त शरणस्थली रहल छल—एहि स्मृतिक कारण काठमाण्डूक मन्त्रीक उपेक्षा आरो कटु बनैत अछि। भाईक मुक्तिक

लेल प्रभावशाली डा. रामप्रसादक सहारा लेबाक विवशता निजी चरित्रदोषसँ बेसी संस्थागत न्याय-विफलताक परिणाम देखाइत अछि।

एक आलोचनात्मक पाठ एहि कथाकेँ मार्क्सवादी यथार्थवादक निकट देखैत अछि, कारण राज्य-तन्त्र आ संरक्षणवादी राजनीति सामान्य जनकेँ एहन समझौतामे धकेलैत अछि जाहिक नैतिक दोष अन्ततः पीड़ित व्यक्तिक माथे मढ़ल जाइत अछि।

४.६ ‘करी कोबहाम’ : देह-दृष्टिसँ महीन पीड़ा आ अस्तित्वगत संकट धरि

‘करी कोबहाम’ संग्रहक भौगोलिक परिधि अचानक विस्तृत कऽ दैत अछि। अन्तरराष्ट्रीय कार्यशाला, अफ्रीकी मूलक करी महिला सहजकर्ता, प्रशिक्षण, नृत्य, पार्टी आ बहुसांस्कृतिक संवाद—ई परिवेश ग्राम-मिथिला केन्द्रित कथा-संसारमे नया हवा अनैत अछि। आरम्भमे कथावाचक करीक देहक आकार, रंग, केश-सज्जा आ सौन्दर्यक मानदण्डपर विशेष दृष्टि दैत अछि। आधुनिक आलोचना एतय देह-दृष्टि आ पुरुष-दृष्टिक पूर्वग्रह देखत।

कथा स्वयं एहि पूर्वग्रहकेँ स्थिर नहि रहने दैत अछि। किछुए क्षणमे करीक जीवंतता, बुद्धि, प्रशिक्षण-कौशल आ हास्य ओकर देहसम्बन्धी पहिल निर्णय केँ पछाड़ि दैत अछि। कथावाचक हुनक शैली अपनाबय चाहैत अछि। अर्थात् चरित्र शरीरक वस्तु नहि, प्रभावकारी पेशेवर व्यक्तित्व बनि उठैत अछि। तैयो विवाहक चर्चा आबिते कथावाचक फेर सांस्कृतिक सामान्यीकरण करैत अछि—विवाह ‘पूर्णता’क शर्त मानैत अछि।

करीक उत्तर कथा केँ असहज गहराइ दैत अछि। ओ अपन उम्र, मातृत्वक जैविक सीमा आ जीवनसाथी खोजबक कठिनाई सँ जुड़ल पीड़ा बतबैत अछि। कथावाचक समाधान देबय चाहैत रहि जाइत अछि, मुदा अन्तमे ‘महीन पीड़ा’मे धकेलल जाइत अछि—अर्थात् ओ पहिल बेर उत्तर देनिहार नहि, सुननिहार बनैत अछि। कथा एही परिवर्तनक कारण सार्थक अछि।

समकालीन आलोचनाक आरक्षण

करी स्वयं मातृत्व नहि भेटला पर विवाहक अर्थपर प्रश्न करैत अछि; ई ओकर अनुभवक स्वर अछि। समीक्षा एहि कथन केँ सार्वभौम सत्य नहि मानि सकैत। नारीक पूर्णता केँ विवाह वा मातृत्वसँ बाँधब आजुक स्त्रीवादी दृष्टिसँ विवादास्पद अछि। कथा मूल्यवान तँ अछि जे एहि

विवादास्पद मान्यतासभकेँ संवादक रूपमे सामने अनैत अछि, आ कथावाचकक सुनिश्चित उत्तर धीरे-धीरे विघटित करैत अछि।

करीक देह-वर्णनमे लगभग ११० किलो वजनक बावजूद अत्यन्त ऊर्जावान व्यक्तित्व उभरैत अछि। ४०-४५ वर्षक उमेरक आसपास मातृत्वक जैविक सीमासँ जुड़ल करीक पीड़ा कथा केँ आधुनिक करियर आ बाह्य उल्लासक पाछाँ नुकायल अस्तित्वगत एकाकीपनक प्रश्न धरि लऽ जाइत अछि।

एहि जैविक अनुभवकेँ कथा व्यक्तिगत पीड़ा रूपमे रखैत अछि; एकरा सार्वभौम स्त्री-सत्य मानब उचित नहि, मुदा देह, आयु, विवाह, मातृत्व आ स्वावलम्बनक बीचक जटिल तनावक कारण कथा मिथिलाक आज्वलिकता सँ बाहर वैश्विक नारी-संवेदनाक क्षेत्रमे प्रवेश करैत अछि।

४.७ ‘सिकन्दर डोम’ : शिक्षा, अस्पृश्यता आ सुधारवादक कठोर परीक्षा

‘सिकन्दर डोम’ संग्रहक सर्वाधिक स्पष्ट जाति-विमर्शक कथा अछि। वर्माजी प्रगतिशील शिक्षक छथि, जे सिकन्दर केँ घरमे प्रवेश दऽ सामाजिक बहिष्कार सहने छथि। सिकन्दर पढ़ल-लिखल अछि, वर्माजीक प्रयासक जीवित प्रमाण जकाँ प्रस्तुत होइत अछि। आरम्भे पाठक केँ लगैत अछि जे कथा शिक्षा आ प्रगतिशील शिक्षकक सफलता-गाथा बनत; मुदा लेखक शीघ्र एहि आत्मसन्तोष केँ तोड़ि दैत छथि।

सिकन्दरक अनुभव बतबैत अछि जे अक्षरज्ञान जातिक संरचना अपने नहि मिटा दैत अछि। विद्यालयमे डोम बच्चा अलग बैसैत अछि, छूअनाइ वर्जित, काँपी देबाक ढंग अलग, दण्डक व्यवहार अलग; अपमानक दीर्घ अनुभव पढ़ाई केँ मुक्ति नहि, पीड़ा बनबैत अछि। सिकन्दर स्वयं शिक्षा पाबि रोजगारमे भेदभाव झेलैत अछि—पानी छूअक प्रश्न शिक्षक वा चपरासी जेहन साधारण नौकरीक मार्ग रोकि दैत अछि। एहि तरहें कथा ‘शिक्षा अपने सामाजिक उन्नति दैत’ वाली सरल प्रगतिशील धारणा पर ठोस प्रश्न उठबैत अछि।

बाल-विवाह, कन्या-मूल्य, जातिगत भोज आ ‘डोमक घरक अन्न’ न खएबाक प्रसंग सामाजिक उत्पीड़नक बहुस्तरीयता खोलैत अछि। सिकन्दरक प्रश्न—डोम जाति कतय साफ आ पवित्र होएत?—धार्मिक शुद्धता-अशुद्धताक तर्ककेँ उलटि दैत अछि। अशुद्ध शरीर नहि, समाजक दृष्टि अछि।

अन्तमे सिकन्दर समाज धीरे-धीरे बदलत कहैत अछि आ वर्माजीक पत्नी औषधिक खोराकवला उपमा दैत छथि—एक्के बेर पूरा खुराक विष भऽ सकैत अछि। ई अन्त जानबूझि असुविधाजनक अछि। एक दृष्टिसँ ई सामाजिक परिवर्तनक व्यवहारिक गति स्वीकारैत अछि; दोसर दृष्टिसँ ई प्रश्न छोड़ैत अछि जे जाहि हिंसा रोज घटैत अछि, ओकर शिकारक लेल ‘धीरे-धीरे’ कतेक न्यायसंगत उत्तर अछि? कथा एहने खुलल नैतिक बेचैनीक कारण प्रभावशाली बनैत अछि।

सिकन्दर डोम जातिक पहिल एस.एल.सी. उत्तीर्ण युवक रूपमे प्रस्तुत अछि, मुदा समाज ओकरा पिउनक नोकरियो नहि दैत—प्रश्न ई जे “हुनक हाथक पानि के पिबि सकैत छल?” अन्ततः ओ रात्रिकालीन चौकीदार बनि जीवन काटैत अछि।

अपन बेटाक विवाहमे उच्चजातीय शिक्षकसभकेँ भोजन कराबय लेल सिकन्दर अपन घरक बदला “कुम्हारक कुटी”मे हलुवाईसँ भोजन बनबैत अछि, जाहिसँ ब्राह्मण-राजपूत अतिथि खा सकथि। ई दृश्य अस्पृश्यताक संरचनात्मक गहराईक अत्यन्त तीक्ष्ण प्रमाण बनैत अछि।

४.८ ‘आ ओ मारलि गेलि !’ : युद्धक बीच स्त्री-देह, प्रेम, राज्य-हिंसा आ सत्यक हत्या फुलियाक कथा संग्रहक सर्वाधिक तीव्र आ हिंसक आख्यान अछि। ‘जनयुद्ध’क छाया, छापामार प्रेमी पूर्ण, पुलिस, चिया-दोकान, ग्राम्य गरीबी, स्त्रीक अशिक्षा आ विवाहक दबाव—सभ एकत्र होइत अछि। फुलिया प्रेमक प्रतीक्षामे घर छोड़ैत अछि, मुदा ओ राजनीतिक योद्धा नहि। ओ हिंसक संघर्षक बीच फँसल एहन स्त्री अछि जकर निजी जीवन युद्ध द्वारा लगातार अधिगृहीत होइत अछि।

पूर्णेक चरित्र सेहो एकरेखीय क्रान्तिकारी नहि। ओ धीरे-धीरे हिंसक ‘मुक्ति’क सीमा पर प्रश्न करैत अछि—हत्या आ भयद्वारा समाज मुक्त होएत कि शिक्षा, संवाद आ जनसहमति द्वारा? ई आत्मसन्देह कथा केँ विद्रोही बनाम राज्यक सरल द्वैतसँ बचबैत अछि। फुलियाक अपना अशिक्षित रहि गेलाक कारणेँ जीवनक सीमित विकल्पक पीड़ा—माय-बाप द्वारा ‘बेटी पढ़िकय की करत’ वाली धारणा—युद्धक समानान्तर सामाजिक हिंसा देखबैत अछि।

पूर्णेक मृत्यु बाद लाल वैवाहिक साड़ी अत्यन्त शक्तिशाली प्रतीक बनैत अछि। जे साड़ी सम्भावित विवाह, घर, मिलन आ भविष्यक संकेत छल, सहए पुलिस हवलदार भूलोटनक हाथमे

भयादोहनक साधन बनैत अछि। ओ फुलियाकें बचबाक सूचना बदला देह माँगैत अछि। राज्यक प्रतिनिधि एतय कानूनक रक्षक नहि, स्त्रीक असुरक्षा कें भोगबक अवसर खोजैत शिकारी बनैत अछि।

फुलियाक प्रतिरोध—छुरी उठाकय भूलोटनपर वार—एक असहाय स्त्रीक कर्तृत्वक चरम क्षण अछि, मुदा ओकरा तत्काल गोली भेटैत अछि। दोसर दिन समाचारपत्र घटनाकें दू विरोधी राजनीतिक आख्यानमे बदलि दैत अछि : कतहु फुलिया ‘छापामार वीरांगना’, कतहु हवलदार ‘शहीद’। वास्तविक कथा—प्रेम, यौन दबाव, भय, आत्मरक्षा, निजी इतिहास—समाचारक राजनीतिक भाषामे गायब भऽ जाइत अछि। शीर्षक ‘आ ओ मारलि गेलि !’ एहि दोहरी हत्या पर लागू होइत अछि : फुलियाक देह मारल जाइत अछि, आ ओकर सत्यो।

एहि कथा मे लेखकक सर्वश्रेष्ठ राजनीतिक कला देखाइत अछि। ओ पाठक कें कोनो दलक घोषणा-पत्र नहि दैत छथि; ओ दिखबैत छथि जे युद्धक आधिकारिक भाषा व्यक्तिगत दुःख कें कोना निगलि जाइत अछि। स्त्रीवादी, युद्ध-विरोधी आ मीडिया-आलोचनात्मक तीनू पाठ एक्केसाथ सम्भव होइत अछि।

फुलियाक पारिवारिक पृष्ठभूमिमे पहड़िया कार्की सामन्तक षड्यन्त्रसँ परिवारक बेघर-दरिद्र होयब, बापक शराबक लतमे मृत्यु, आ प्रेमी पूर्ण मगरक माओवादी आन्दोलनमे प्रवेश शामिल अछि। बादमे पूर्ण हिंसक क्रान्तिसँ मोहभङ्ग अनुभव करैत भाग्य चाहैत अछि, मुदा पुलिसक हाथे मारल जाइत अछि।

हवलदार भूलोटन पूर्णक लाशपर भेटल बिआहक लाल साड़ी देखबैत फुलियासँ “हमरा भोगए देबए पडतौक!” कहि शीलभङ्गक प्रयास करैत अछि। फुलिया छुरीसँ प्रतिकार करैत अछि; भूलोटन गोली चलबैत अछि, आ दुनू मरि जाइत अछि। एहि निजी सत्यकें दोसर दिनक राजनीतिक समाचार अपन-अपन पक्षक आख्यानमे बदलि दैत अछि।

४.९ ‘एकदन्त हाथी आ नौलखा हार’ : इतिहासक स्त्रीवादी पुनर्पाठ

अन्तिम कथा समकालीन मणिक बेचैनीसँ खुलैत अछि। मकवानपुर सेनगढ़ी देखलाक बाद चौदह वर्षीया राजकुमारी इन्द्रकुमारी ओकर मानसपटलपर छा जाइत अछि। रातिक सपना आ कल्पना भीतर कथा दरबारी नाट्यरूप धारण करैत अछि। एहि फ्रेम-संरचनासँ लेखक स्पष्ट

करैत छथि जे इतिहास सीधे पुनरुत्पादित नहि भऽ रहल, वर्तमान चेतना ओकर पुनःकल्पना कऽ रहल अछि। तँ कथा केँ दस्तावेजी इतिहासक स्थानपर साहित्यिक-ऐतिहासिक पुनर्पाठ रूपमे पढ़ब अधिक उचित अछि।

एकदन्त हाथी आ नौलखा हार दहेजक वस्तु मात्र नहि; इन्द्रकुमारी ओकरा राज्यक सम्पत्ति आ जनताक धरोहर कहैत अछि। एहि तर्कमे निजी विवाह आ सार्वजनिक सम्पत्तिक सीमा स्पष्ट होइत अछि। राजा अपन बेटी-विवाहक प्रतिष्ठाक खातिर जनताक धरोहर दऽ सकैत छथि कि नहि? कथा सामन्ती राजकीय व्यवस्थाक भीतर आधुनिक सार्वजनिक नैतिकता प्रवेश करबैत अछि।

इन्द्रकुमारीक कथन—‘नारी चीज नहि, सृष्टिक बीज अछि’—कथाक घोष-वाक्य बनैत अछि। दहेजक वस्तु बनाओल जा रहल किशोरी स्वयं राज्य, संस्कृति आ स्वाभिमानक व्याख्याता बनि उठैत अछि।

‘एकदन्त हाथी आ नौलखा हार’, पृ. ४३-४५

इन्द्रकुमारी गोरखाक माँग केँ केवल वैवाहिक अनबन नहि, सम्भावित सांस्कृतिक-राजनीतिक विस्तारक संकेत रूपमे पढ़ैत अछि। ओ भाय दिगबन्धन केँ भावना सँ ऊपर मातृभूमिक कर्तव्य देखबाक आग्रह करैत अछि। अन्ततः भाय हुनक तर्क स्वीकारैत अछि। सपना टूटैत अछि; मणिक मुठि कसले अछि, मुदा घरक भौजी ओकर तनबाक कारण दैहिक पीड़ा बुझैत छथि। एहि अन्तिम विडम्बनामे वर्तमान समाज सेहो नारीक राजनीतिक-ऐतिहासिक बेचैनी केँ देहमे अनुवाद करि दैत अछि।

आलोचनात्मक सावधानी

इन्द्रकुमारीक संवादमे ‘पवित्रता’, ‘नारीत्व’ आ ‘त्याग’क परम्परागत शब्दावली बलपूर्वक उपस्थित अछि। स्त्रीवादी दृष्टि एहि शब्दसभपर प्रश्न उठा सकैत अछि, कारण नारी-अस्मिता केवल यौन-पवित्रता वा त्यागमे सीमित नहि। तथापि कथा एहि परम्परागत शब्दावलीक भीतर सँ स्त्रीकेँ वस्तु नहि, निर्णायकारी राजनीतिक व्यक्ति बनाबयक प्रयत्न करैत अछि। एही द्वंद्वकेँ पहचानब कथा प्रति न्यायपूर्ण आलोचना हएत।

ऐतिहासिक प्रसंग मकवानपुरक सेन राजा हेमकर्ण सेनक चौदह वर्षीया पुत्री इन्द्रकुमारी आ गोरखा नरेश पृथ्वीनारायण शाहक विवाहसँ जुड़ल अछि। द्विरागमन/गौना लेल “एकदन्त हाथी” आ “नौलखा हार” देहेजमे माँगबाक प्रसंग निजी विवाह, जनधरोहर आ राज्य-सम्मानक टकराव रचैत अछि।

इन्द्रकुमारीक घोष—“नारी चीज नहि, सृष्टिक बीज अछि। मानक माथ आ त्यागक शिर्ष अछि”—सामन्ती देहेज-लोलुपता आ विस्तारवादी दबावक विरुद्ध स्त्रीक राजनीतिक आवाज बनैत अछि। इतिहास प्रायः विजेताकें केन्द्रमे रखैत अछि; कथा पराजित राज्यक किशोरी राजकुमारीक नैतिक साहसकें केन्द्रमे आनैत इतिहासक वैकल्पिक पुनर्पाठ रचैत अछि।

कथाक नाम	मुख्य पात्र	मूल विषयवस्तु / विमर्श	सन्देश / प्रतीक
देपुराबाली काकी	काकी, मिसरी काका	पितृसत्ता, मौन स्त्री- शोषण	‘भीष्म प्रतिज्ञा’ आ पुरुष- अहं
बलिदानी	मुख्य पात्र, दुर्गा नन्द	प्रजातान्त्रिक मोहभङ्ग	शहादतक अवमूल्यन, चैते अवसरवाद
पाथरसनक लोक	मधु, बौआ, पति	राजनीतिक आदर्श बनाम परिवार	‘पाथर’ (निस्वार्थ सेनानीक प्रतीक)
माल्हो	माल्हो, गिरहत, सुन्दर	वर्गीय चेतना, उदात्त मातृत्व	‘कुमुदिनीक फूल’ (निष्पाप प्रेम)
ढहलेल दलबदलू	चन्दर, ललचनमा	लोकतान्त्रिक निष्ठा, व्यवस्था-दोष	दलबदल एकटा विवशता
करी कोबहाम	करी कोबहाम	जैविक विडम्बना, अस्तित्ववाद	वैश्विक नारी-त्रासदी

कथाक नाम	मुख्य पात्र	मूल विषयवस्तु / विमर्श	सन्देश / प्रतीक
सिकन्दर डोम	सिकन्दर, वर्माजी	दलित विमर्श, अस्पृश्यता	सामाजिक पाखण्ड आ शिक्षा
आ ओ मारलि गेलि	फुलिया, भूलोटन	राज्य आतङ्क, सीमान्त शोषण	यौन-हिंसाक विरुद्ध प्रतिकार
एकदन्त हाथी...	इन्द्रकुमारी, मणि	ऐतिहासिक पुनर्पाठ, नारीवाद	दहेज-प्रथा आ राज्यक स्वाभिमान

५. समाजशास्त्रीय, दार्शनिक आ राजनीतिक अन्तर्दृष्टि

५.१ नारी : सहनशील प्रतिमा नहि, नैतिक केन्द्र

संग्रहमे स्त्रीसभ प्रायः पीड़ा भोगैत छथि, मुदा ओसभ मात्र पीड़िता नहि। देपुरवाली काकीक मौन कथा पुरुष-अहंकारक अपराधकें उजागर करैत अछि; मधु प्रत्यक्ष प्रतिवाद करैत अछि; माल्हो पुरान प्रेमक बावजूद आत्मसम्मान आ बेटाक भविष्यकें प्राथमिकता दैत अछि; करी पुरुष-दृष्टिक सहज निर्णय कें महीन पीड़ाक सामना करबैत अछि; फुलिया यौन शोषणक धमकीक प्रतिरोधमे हथियार उठबैत अछि; इन्द्रकुमारी राज्य-धरोहर आ नारी-अस्मिताक राजनीतिक भाषा रचैत अछि। एहि विविध स्त्री-चरित्रक कारण संग्रह नारीक त्यागक एकरूप महिमा-मण्डन नहि रहि जाइत।

तैयो संग्रहक स्त्री-प्रतिनिधित्वमे परम्परागत मूल्यक छाया अछि—सौन्दर्य-वर्णन, मातृत्व, पतिव्रत, पवित्रता, त्याग। एहि द्वैतकें दोष वा गुण कहिकय सरल निर्णय देनाइ उचित नहि। साहित्यिक महत्त्व ई अछि जे रचना संक्रमणशील समाजक वैचारिक संघर्षकें अपने भीतर वहन करैत अछि : पुरान नारी-आदर्शक भाषा उपस्थित अछि, आ तकर भीतर सँ प्रतिरोधक नया स्वर सेहो जन्म लैत अछि।

५.२ लोकतन्त्र : उत्सव नहि, सतत नैतिक अभ्यास

‘बलिदानी’, ‘पाथरसनक लोक!’ आ ‘ढहलेल दलबदलू!’ तीनू मिलिकय लोकतन्त्रक त्रयी जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि। पहिल कथा आन्दोलनक स्मृति आ शहादतक हरण देखबैत अछि; दोसर पुलिस हिंसा आ दलगत पतनक कारण पुरान कार्यकर्ताक पीढ़ीगत थकान; तेसर न्यायक संस्थागत विफलता आ राजतान्त्रिक प्रतिगमनक विरुद्ध नैतिक पुनरागमन। लेखक लोकतन्त्रक आलोचना लोकतन्त्र-विरोधसँ नहि, ओकर मूल मूल्यक पक्षसँ करैत छथि।

एहि कथासभमे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तत्व अनुभवक स्मृति अछि। जे जेल, लाठी, भय आ निरंकुशता देखलक, से लोकतन्त्रक भ्रष्ट रूपसँ क्षुब्ध होइतहुँ प्रतिगमन केँ सहज स्वीकार नहि करैत। राजनीतिक विचार एतय पुस्तकक सिद्धान्त नहि, देहपर पड़ल चोटक स्मृति अछि। एहि कारण पात्रसभक नैतिक निर्णय विश्वसनीय लगैत अछि।

५.३ जाति आ अधस्तन अनुभव

‘सिकन्दर डोम’ प्रत्यक्ष जाति-कथा अछि, मुदा अधस्तन अनुभव ‘माल्हो’ आ ‘आ ओ मारलि गेलि!’ मे सेहो गहीर अछि। माल्हो आर्थिक-सामाजिक दूरीक बीच अपन स्वाभिमान बचबैत अछि; फुलिया शिक्षा, वर्ग, लिंग आ युद्धक अनेक वंचनासँ एक्केसाथ घेरल अछि। संग्रहक दृष्टि बारम्बार ओहि लोकदिस फिरैत अछि जकर नाम आधिकारिक इतिहासमे कम लिखल जाइत अछि—विधवा, बच्चा, डोम, त्यक्त स्त्री, पुलिसक झूठ मुद्दामे फँसल गरीब, युद्धक बीचक प्रेमिका।

‘सिकन्दर डोम’ विशेष रूपसँ देखबैत अछि जे उदार व्यक्तिक सदिच्छा संरचनात्मक जातिवाद हटाबक लेल पर्याप्त नहि। वर्माजी महत्त्वपूर्ण छथि, मुदा कथा हुनक आत्मगौरवक सीमासँ आगे जाइत अछि। अधस्तन व्यक्तिक अनुभव ज्ञानक मूल स्रोत बनैत अछि—सुधारक गुरुसँ शिष्य सिकन्दर अधिक कठोर सामाजिक सत्य कहि सकैत अछि।

५.४ स्मृति : निजी कथा सँ सामाजिक इतिहास धरि

‘देपुरवाली काकी’ आ ‘माल्हो’ मे स्मृति कथा-यन्त्रक आधार अछि। वर्तमानक एक दृश्य—फिल्मी फोटो, दुखापर बाट तकैत माय—अतीत खोलैत अछि। स्मृति एतय केवल अतीत-मोह नहि। कथावाचक जखन अतीत याद करैत अछि त अपन वर्तमान नैतिक स्थितिक सेहो परीक्षा

करैत अछि। माल्होकेँ याद करब पुरान प्रेम याद करब मात्र नहि; अपन सामाजिक चढ़ान, दूरी आ दायित्वक हिसाब करब अछि।

एही प्रकार 'बलिदानी' आ 'ढहलेल दलबदलू !' राजनीतिक स्मृतिपर आधारित अछि। यदि आन्दोलनक असली स्मृति मिटि जाए, त अवसरवादी इतिहास लिखत। तँ संग्रहमे स्मृति प्रतिरोधक साधन अछि। निजी कथा इतिहासक सीमान्तपर लिखल वैकल्पिक अभिलेख बनैत अछि।

५.५ शिक्षा : मुक्ति, अवसर आ असफल वादा

शिक्षा अनेक कथामे दोहराइत अछि। माल्हो अपन बेटा सुन्दरकेँ पढ़बय चाहैत अछि; सिकन्दरक जीवन शिक्षा आ जातिक टकरावक परीक्षा अछि; फुलिया अपन अशिक्षित रहि गेलाक कारणेँ जीवनक सीमित विकल्पक पीड़ा अनुभव करैत अछि। ई पुनरावृत्ति संग्रहक सामाजिक दृष्टिमे शिक्षा केँ महत्त्वपूर्ण मुक्ति-साधन बनबैत अछि, मुदा लेखक भोला आशावाद नहि रखैत छथि। संस्थागत भेदभाव रहत त विद्यालय सेहो अपमानक स्थान बनि सकैत अछि।

५.६ हिंसा : घर, जाति, पुलिस, युद्ध आ भाषा

संग्रहमे हिंसा केवल गोली वा लाठी नहि। देपुरवाली काकीक जीवनभरि मौन दाम्पत्य मानसिक हिंसा अछि; सिकन्दरक बच्चाक अलग बैसाओन जातीय हिंसा; ललचनमाक झूठ गिरफ्तारी राज्य-हिंसा; फुलियापर यौन दबाव लैंगिक-राजकीय हिंसा; मीडिया द्वारा ओकर निजी सत्यक राजनीतिक लेबलिंग भाषिक हिंसा। लेखक हिंसाक एतबा रूप देखबैत छथि जे शान्त देखाइत समाजक भीतर सेहो अत्याचारक निरन्तरता स्पष्ट भऽ जाइत अछि।

५.७ पारिवारिक सम्बन्धक सूक्ष्म राजनीति आ वृहत् सत्ता-संरचना

पारिवारिक सम्बन्धपरक सूक्ष्म राजनीति (Micro-Politics of Relationships): लालजीक कथासभ ई प्रमाणित करैत अछि जे समाजक वृहत् राजनीति (Macro-politics) आ परिवारक सूक्ष्म राजनीति अन्तरसम्बन्धित अछि। 'देपुरावाली काकी' मे काकाक 'भीष्म-प्रतिज्ञा' वस्तुतः ओही सामन्ती अहङ्कारक पारिवारिक रूप थिक जेकरा विरुद्ध 'बलिदानी' वा 'पाथरसनक लोक' क पात्र सड़कपर लड़ि रहल छथि। सत्ताक केन्द्रीकरण जेना देशमे होइत अछि, तहिना परिवारमे पुरुष-अहङ्कारक रूपमे होइत अछि।

५.८ लोकतन्त्रक विडम्बना आ व्यवस्थागत हिंसा

लोकतन्त्रक विडम्बना आ व्यवस्थागत हिंसा (Irony of Democracy and Systemic Violence): 'ढहलेल दलबदलू' आ 'सिकन्दर डोम' स्पष्ट रूपेँ ई सन्देश दैत अछि जे लोकतन्त्र वा शिक्षाक प्रसार सँ मात्र समाजक संरचनात्मक हिंसा (Structural Violence) समाप्त नहि भऽ जाइत छैक। जतय व्यवस्था विमुख भऽ जाइत अछि, ओतय 'चन्दर' जकाँ सामान्य मानुखकें भ्रष्ट व्यवस्थाक संगे सम्झौता करय पड़ैत छैक। व्यवस्थाक विफलता व्यक्तिगत नैतिक पतनक कारण बनैत अछि।

५.९ सशस्त्र क्रान्तिक मोहभङ्ग

सशस्त्र क्रान्तिक मोहभङ्ग (Disillusionment with Armed Revolution): 'आ ओ मारलि गेलि!' मे 'पूर्णे' क मोहभङ्ग आ 'बलिदानी' मे 'चैते' अवसरवादक उदय ई देखाबैत अछि जे क्रान्ति जखन संस्थागत भऽ जाइत अछि, तखन ओ अपन मूल आदर्शसँ भटकैत सीमान्तकृत वर्गकें आओर बेसी शोषित करैत अछि।

५.१० नारी-शरीर आ राज्य-सत्ताक समानान्तर शोषण

नारी-शरीर आ राज्य-सत्ताक समानान्तर शोषण: लालजीक कथासभमे नारी-शरीर युद्ध-क्षेत्र बनि जाइत अछि। हवलदार भूलोटन द्वारा फुलियाकें 'भोगय' चाहब ('आ ओ मारलि गेलि') आ पृथ्वीनारायण शाह द्वारा इन्द्रकुमारीकें दहेजक सौदामे प्राप्त करय चाहब ('एकदन्त हाथी...') — दुनू घटना स्थापित करैत अछि जे राज्य-सत्ता आ पितृ-सत्ता दुनू नारीकें विजित प्रदेशक रूपमे देखैत अछि। एकर प्रतिरोध फुलियाक छुरी आ इन्द्रकुमारीक ओजस्वी वाणीसँ होइत अछि।

६. आख्यान-शिल्प, भाषा, प्रतीक आ चरित्र-संरचना

६.१ प्रथम-पुरुष कथावाचकक नैतिक अस्थिरता

कतेको कथामे 'हम' कथावाचक अछि, मुदा लेखक ओकरा सर्वज्ञ, सर्वथा सही व्यक्ति नहि बनबैत छथि। 'माल्हो'मे ओ अपन प्रतिष्ठाक चिन्ता करैत अछि; 'करी कोबहाम'मे देह आ विवाहक बारेमे पूर्वग्रह राखैत अछि; राजनीतिक कथामे पात्र अपन निर्णय पर पछताइत अछि। ई अपूर्णता साहित्यिक रूपसँ महत्वपूर्ण अछि, कारण पाठक केँ कथावाचकक शब्द मात्र स्वीकार नहि, ओकर सीमा सेहो देखबाक अवसर भेटैत अछि।

६.२ संवाद : विचार केँ जीवित बनाबयक साधन

वृषेश चन्द्र लालक कथा-शक्ति संवादमे खूब स्पष्ट अछि। माय-चाची-मधुक घरेलू गप्प, माल्हो-कथावाचकक संकोची संवाद, मन्त्रीक अपमानजनक भाषा, सिकन्दर-वर्माजीक गुरु-शिष्य वार्ता, करी-कथावाचकक सांस्कृतिक संवाद, इन्द्रकुमारी-दिगबन्धनक नाटकीय वाद—सभ ठाम विचार पात्रक आवाजमे अबैत अछि। एतय लेखकक निबन्धात्मक आग्रह सेहो अछि, मुदा सफल क्षणमे संवाद विचारकेँ देह, लय आ परिस्थिति दैत अछि।

६.३ मौन, विराम आ अधकहल बात

संग्रहक अनेक श्रेष्ठ क्षण ओ छथि जतय पात्र पूरा नहि बजैत। माल्हो कनखिआइत अछि, फूल दैत अछि, दूर चलि जाइत अछि; देपुरवाली काकी जिनगीभरि बहुत कम बोलैत छथि; चन्द्र अपमान निगलि चुप्पे मन्त्रीक घरसँ निकलैत अछि; वर्माजी अन्तमे केवल माथ डोलबैत छथि। ई मौन पाठकक व्याख्याक जगह खोलैत अछि। मैथिली ग्राम्य जीवनक मौखिकता आ मौन—दुनू मिलिकय कथा केँ विशेष लय दैत अछि।

६.४ प्रतीक-संरचना

कुमुदिनी — प्रेम, दूरी, कीचड़-पानिमे खिलल गरिमा, अधूरा मिलन।

पुरान फोटो/फिल्मी चेहरा — स्मृति खोलक द्वार, स्त्री-छविक पुनर्पहिचान।

लाल वैवाहिक साड़ी — अपूर्ण विवाह, प्रेमक भविष्य, यौन शोषणक धमकी, रक्त।

एकदन्त हाथी आ नौलखा हार — जनधरोहर बनाम देहेज, राज्य आ निजी सत्ता।

दुरखा/द्वारपर प्रतीक्षा — प्रेम, परिवार, लौटबाक आशा, समय।

ई प्रतीक कथा केँ सन्देश मात्र होमयसँ बचबैत अछि। विशेषतः कुमुदिनी आ लाल साड़ी पाठकक मानसपटलपर कथा समाप्त भेलाक बादो रहि जाइत अछि। साहित्यिक स्थायित्व प्रायः एही दृश्य-चिन्हसँ बनैत अछि।

६.५ भाषा : ग्राम्य सहजता आ आधुनिक बहुभाषिक संसार

मूल पाठक भाषा मैथिली ग्राम्य बोलचाल, नेपाली राजनीतिक शब्दावली आ आधुनिक अंग्रेजी-मूलक शब्दसभक संयोगसँ बनल अछि। टी-टाइम, वर्कशप, एसपी, मन्त्री क्वार्टर, डिविजन,

कम्प्यूटर जेहन शब्द कथाक आधुनिक जीवन-क्षेत्रक स्वाभाविक अंश छथि। दोसर दिस दुरखा, गोठ, बनिहार, नुआँ, डबरा, कुमुदिनी, भन्सिआ, दाइ, गिरहत जेहन शब्द कथाकैँ स्थानिक देह दैत अछि। एहि बहुभाषिकता कैँ अशुद्धि कहब उचित नहि; ई सीमा-प्रदेश, राजनीति, प्रशासन, शिक्षा आ अन्तरराष्ट्रीय संपर्कसँ जुड़ल समाजक वास्तविक भाषिक बनावट अछि।

लेखक पात्रानुकूल भाषा बदलैत छथि। मन्त्रीक भाषा सत्ता-अहंकारक कटु मिश्रण, सिकन्दरक भाषा विनम्र लेकिन भीतरसँ तिक्त, करीक संवाद अन्तरराष्ट्रीय प्रशिक्षण-संस्कृतिक, इन्द्रकुमारीक भाषा नाटकीय आ संस्कृतनिष्ठ, माल्होक भाषा संक्षिप्त आ संकेतप्रधान अछि। एहि भाषिक-स्तर परिवर्तनसँ चरित्रसभ एके लेखकक मुखपात्र बनि जायसँ बचैत छथि, यद्यपि किछु राजनीतिक प्रसंगमे लेखकक विचारधारा प्रत्यक्ष सुनाइ पड़ैत अछि।

६.६ स्मृति-फ्रेम, फ्लैशबैक आ चेतना-प्रवाह

‘देपुरवाली काकी’, ‘माल्हो’ आ ‘एकदन्त हाथी आ नौलखा हार’मे वर्तमानक साधारण घटना—फिल्मी फोटो, गाम पहुँचब, स्वप्न—अतीतक विस्तृत आख्यान खोलैत अछि। एहि स्मृति-फ्रेमक संग किछु कथा चेतना-प्रवाहक निकट जाइत अछि, जतय बाहरी घटना पात्रक भीतर स्मृति आ आत्मसंवादक श्रृंखला शुरू करैत अछि।

६.७ बिम्ब आ प्रतीक-विधानक विस्तार

कुमुदिनीक फूल, पुरान फोटो/टीवी-कम्प्यूटरक द्वैत, लाल वैवाहिक साड़ी, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार—ई सभ बिम्ब कथाक भावनात्मक आ वैचारिक संरचनाकैँ बाँधैत अछि। ‘पाथरसनक लोक’क “पाथर” केवल कठोरता नहि, सिद्धान्तक प्रति अडिगता आ वैराग्यक संकेत सेहो बनैत अछि।

६.८ भाषिक वैविध्य, ठेठ शब्दावली आ पात्रानुकूल रजिस्टर

लालजीक भाषा “शुद्ध, प्राञ्जल, ठेठ आ मुहावरेदार” स्वरूपमे दुरखा, असोरा, भानस, झोंटी, खोंछा, डगहर, गोठ, कतिया देब, ठकमुड़िया, ममोड़ि, औनायब, ढहलेल, चैते, फुसियेक प्रण, भाङ्गठ आ सनेस जकाँ स्थानीय शब्दक समृद्ध संसार रचैत अछि। एहि ठेठ स्थानीय आधारक संग नेपाली प्रशासनिक शब्दावली आ आधुनिक अङ्ग्रेजी-मूलक शब्दक सहज सहअस्तित्व

सीमा-प्रदेशक वास्तविक बहुभाषिकता प्रकट करैत अछि। भाषा-संसारक एहि द्वि-स्वरूपमे माटिसँ जुड़ल स्थानीयता आ आधुनिक सम्पर्कक बहुभाषिकता एक्केसाथ उपस्थित अछि। संवाद-लेखनमे लेखक पात्रानुकूल भाषा-प्रयोगमे विशेष सजगता देखबैत छथि — गामक स्त्रीगणक बोलचाल, राजनीतिक कार्यकर्ताक नारा-प्रधान भाषा, अङ्ग्रेजी-मिश्रित अन्तर्राष्ट्रीय परिवेशक संवाद (करी कोब्हाम मे), आ ऐतिहासिक नाट्य-संवादक गरिमामय शैली — सभटा भिन्न-भिन्न रजिस्टरमे सफलतापूर्वक रचल गेल अछि। एहिसँ लेखकक भाषिक विविधताक क्षमता प्रमाणित होइत अछि।

मूल पुस्तकमे गोठ, खोपी, भारदार, एस.एल.सी. जकाँ विशिष्ट सांस्कृतिक वा प्रशासनिक शब्दक तळटीका द्वारा व्याख्या पाठकीय सुविधा बढ़बैत अछि।

६.९ चरित्र-चित्रण आ स्त्री-दृष्टि

स्त्री-चरित्रक विविधताक संग पुरुष-चरित्रसभ सेहो एकरूप नहि छथि। मिसरी काकाक अन्तिम पश्चाताप, चन्दरक वैचारिक द्वन्द्व, सिकन्दरक धैर्यवान संघर्ष आ दिगबन्धनक कर्तव्य-बोध — सभमे मनोवैज्ञानिक जटिलता अछि, जे पात्रसभकेँ श्वेत-श्याम प्रतिमा बनयसँ बचबैत अछि।

७. कृतित्वक उपलब्धि आ आलोचनात्मक सीमासभ

७.१ मुख्य उपलब्धि

पहिल उपलब्धि—मानवीय अनुभवक विश्वसनीयता। लेखकक पात्र यन्त्रवत् आदर्श नहि; ओसभ झिझकैत, डरैत, चूकैत, पछताइत, प्रेम करैत, अपमान सहैत आ निर्णय बदलैत छथि। ई नैतिक जटिलता राजनीतिक विषयक कथासभकेँ प्रचार-पत्र होमयसँ बचबैत अछि।

दोसर—स्त्री आ सीमान्तक लोककेँ इतिहासक केन्द्रमे आनब। विधवा आ बच्चाकेँ ‘बलिदानी’ कहब, माल्होकेँ संग्रहक शीर्षक बनाब, डोम चरित्रकेँ सुधारक शिक्षकक आत्मसन्तोषक परीक्षक बनाब, फुलियाक निजी सत्यकेँ आधिकारिक समाचारसँ श्रेष्ठ ठहराब—ई चयन अपनेमे साहित्यिक राजनीति अछि।

तेसर—व्यक्तिगत स्मृति आ सार्वजनिक इतिहासक संधान। घरक ओसारा, खेत, डबरा, चिया-दोकान, पुलिस कोठरी, राजनीतिक मंच, दरबार—स्थान अलग-अलग छैक, मुदा सभमें मनुष्यक

गरिमा मूल कसौटी रहैत अछि। एहि एकात्म दृष्टिक कारण संग्रह विविध कथ्यक बावजूद विखण्डित नहि लगैत अछि।

चारिम—विडम्बना आ प्रतीकक सक्षम उपयोग। घर नहि छोड़बाक प्रतिज्ञा पूरा होइत-होइत काकीक मृत्यु, न्याय लेल पुरान लोकतान्त्रिक मन्त्रीक द्वार पर अपमान, चन्द्रकेँ दुनू पक्षसँ दलबदलू कहल जाएब, फुलियाक लाल साड़ी, मणिक कस्सल मुठि—ई सभ कथाक स्मरणीय बिम्ब बनैत अछि।

७.२ आलोचनात्मक सीमासभ

किछु कथामे विचारक बोझ कथात्मक गति पर भारी पड़ैत अछि। विशेषतः राजनीतिक पृष्ठभूमि समझाबय काल दीर्घ व्याख्या वा भाषण कथा केँ निबन्धक निकट लऽ जाइत अछि। जँ एहि अंशसभमे किछु संक्षेप, दृश्यात्मकता आ संवादक सहारा बढ़ल रहित त कलात्मक घनत्व आरो बढ़ि सकैत छल।

दोसर, स्त्री-चरित्रक शक्तिशाली उपस्थिति होइतहुँ सौन्दर्य, मातृत्व, पवित्रता, सेवा आ त्यागक परम्परागत रूपक बारम्बार अबैत अछि। कथा स्वयं कतेको ठाम एहि रूपकक सीमा पार करैत अछि—फुलिया, करी, माल्हो, इन्द्रकुमारी—तैयो आधुनिक पाठक एहि तनावकेँ चिन्हत। ई संग्रहक असफलता भरि नहि; संक्रमणशील सामाजिक चेतनाक निशान सेहो अछि।

तेसर, 'सिकन्दर डोम'क अन्तक क्रमिक सुधारवाद असहज प्रश्न छोड़ैत अछि। औषधिक छोट खोराक समाजशास्त्रीय व्यवहारिकता हो सकैत अछि, मुदा अस्पृश्यताक प्रतिदिनक अपमान झेलैत बच्चाक दृष्टिसँ ई विलम्ब अपनेमे हिंसाक विस्तार बनि सकैत अछि। कथा एहि विरोधाभासकेँ पूर्णतः हल नहि करैत—आ शायद ओकर साहित्यिक ताकत एही अनहल प्रश्नमे अछि।

चारिम, इतिहासक पुनर्रचना करैत अन्तिम कथा मे राष्ट्र, पवित्रता आ नारीत्वक आदर्शीकरण अछि। एकरा इतिहासक प्रमाणित पुनर्निर्माण मानब गलत हएत; एकरा वर्तमान नारी-राष्ट्रीय चेतनाक कल्पनात्मक संवाद मानल जाए त ओकर साहित्यिक अर्थ अधिक स्वच्छ देखाइत अछि।

समालोचनात्मक दृष्टिँ ई सेहो विचारणीय अछि जे किछु कथामे “देखाबय”क बदला “कहबय”क प्रवृत्ति बढ़ि जाइत अछि। ‘एकदन्त हाथी आ नौलखा हार’मे फ्रेम-कथा आ भीतरी नाट्यकथाक सम्बन्ध आरो विकसित भऽ सकैत छल, आ ‘करी कोबहाम’क अन्त कनेक अकस्मात् बुझना जाइत अछि। ई सीमासभ रचनाक समग्र प्रभावकें नष्ट नहि करैत, मुदा कलात्मक संरचनाक स्तरपर विचारक अवसर दैत अछि।

८. मैथिली कथा-साहित्यक परिप्रेक्ष्यमे ‘माल्हो’

‘माल्हो’क महत्त्व ओकर विषय-सूची मात्रमे नहि, नेपाल-मिथिला अनुभवक विशिष्ट संगममे अछि। मैथिली कथा-परम्पराक ग्राम-जीवन, पारिवारिक सम्बन्ध, जाति, विवाह आ स्त्रीजीवनक परिचित धरातल एतय नेपालक लोकतान्त्रिक आन्दोलन, राजतन्त्र, मधेशीय राजनीतिक अनुभव, माओवादी हिंसा आ अन्तरराष्ट्रीय प्रशिक्षण-संस्कृति तक विस्तृत भऽ जाइत अछि। एहि कारण संग्रहक स्थानीयता संकुचित नहि, विश्वसनीय आधार बनैत अछि जाहिपर आधुनिक राजनीतिक प्रश्न ठाढ़ होइत अछि।

संग्रहक श्रेष्ठ कथा—विशेषतः ‘माल्हो’, ‘देपुरवाली काकी’, ‘आ ओ मारलि गेलि !’, ‘सिकन्दर डोम’ आ ‘बलिदानी’—एहन बिन्दुपर सफल होइत अछि जतय विचार दृश्य आ चरित्रक भीतर विलीन भऽ जाइत अछि। ‘माल्हो’क फूल, काकीक प्रतीक्षा, सिकन्दरक बच्चाक विद्यालय, फुलियाक साड़ी वा शहीदक विधवाक मौन—एहि ठाम पाठक पहले मनुष्यकें अनुभव करैत अछि, तकर बाद विचार स्वतः खुलैत अछि।

राजनीतिक कथा-साहित्यक चुनौती प्रायः ई रहैत अछि जे पात्र विचारक कठपुतली भऽ जाए। वृषेश चन्द्र लाल एहि जोखिमसँ पूर्णतः मुक्त नहि, मुदा हुनक निजी-सामाजिक अनुभव, संवादक पकड़ आ नैतिक आत्मसंशयक कारण प्रमुख पात्र अनेक ठाम जीवित मनुष्य बनल रहैत छथि। विशेषतः चन्द्र, जे पार्टी बदलैतहुँ अन्तमे सिद्धान्तक प्रति लौटैत अछि, राजनीतिक पहचान आ नैतिक निष्ठाक फर्क बुझाबयवला यादगार चरित्र अछि।

९. समग्र निष्कर्ष

‘माल्हो’क मूल साहित्यिक उपलब्धि ई अछि जे ओ बड़ इतिहासकें छोट जीवनक भीतर पढ़ैत अछि। लोकतन्त्रक अर्थ शहीदक फोटोमे नहि, ओकर विधवाक वर्षाक एकाकीपनमे देखाइत

अछि; जाति-उन्मूलनक दावा सुधारक भाषणमे नहि, डोम बच्चाक स्कूलमे बैसबाक स्थानमे परखल जाइत अछि; क्रान्तिक सत्य समाचारपत्रक शीर्षकमे नहि, फुलियाक लाल साड़ी आ आत्मरक्षाक छुरीमे; प्रेमक सत्य घोषणा-पत्रमे नहि, कुमुदिनीक एक फूलमे।

संग्रह बारम्बार देखबैत अछि जे सत्ता अपन कथन गढ़ैत अछि—पति वचनक, दल इतिहासक, पुलिस कानूनक, मीडिया समाचारक, दरबार मर्यादाक। लेखक एहि कथनसभक सामने पीड़ित मनुष्यक अनुभव रखैत छथि। साहित्यक न्यायालयमे एहि अनुभवक गवाही अधिक विश्वसनीय ठहरैत अछि। एहि दृष्टिसँ ‘माल्हो’ मानवीय गरिमाक कथा-संग्रह अछि।

शीर्षक पात्र माल्हो एहि सम्पूर्ण संग्रहक उपयुक्त प्रतीक छथि। ओ इतिहासक महान नायिका नहि, ग्राम्य समाजक साधारण श्रमिक स्त्री छथि; तथापि हुनक मौन प्रेम, श्रम, आत्मसम्मान आ बेटाक शिक्षा लेल आग्रह कथावाचकक प्रतिष्ठा, समय आ सामाजिक दूरीसँ पैघ भऽ जाइत अछि। कुमुदिनीक फूल जकाँ ओ कीचड़-पानिक वास्तविकतामे खिलैत छथि, अपन सुगन्ध छोड़ैत छथि, मुदा स्वामित्व स्वीकार नहि करैत। संग्रहक बहुते चरित्र—देपुरवाली काकी, शहीदक विधवा, सिकन्दर, फुलिया, इन्द्रकुमारी—अलग-अलग रूपमे एही गरिमाक विस्तार छथि।

साहित्यक सामाजिक भूमिका एतय “तीक्ष्ण शल्य-चिकित्सक”क औजार जकाँ देखाइत अछि—एहन औजार जे राजनीतिक पाखण्ड, सीमान्तकृतक क्रन्दन आ मानवीय सम्बन्धक सूक्ष्म त्रासदीक चीरफाड़ करैत अछि। एहि अर्थमे सबाल्टर्न परिप्रेक्ष्य, नारीवादी विमर्श आ लोकतान्त्रिक चेतनाक त्रिवेणी संग्रहक आलोचनात्मक ऊर्जा बनैत अछि।

शुद्ध-ठेठ स्थानीय शब्द-संसार आ बहुभाषिक आधुनिक जीवनक संगम, निजी स्मृति आ सार्वजनिक इतिहासक संधान, तथा ‘माल्हो’, ‘देपुरवाली काकी’, फुलिया, सिकन्दर आ चन्दर जकाँ पात्रक मानवीय जटिलता एहि कथा-संग्रहकें दीर्घ अध्ययन योग्य कृति बनबैत अछि।

अन्तिम मूल्यांकन : ‘माल्हो’ सामाजिक यथार्थ, राजनीतिक स्मृति आ स्त्री-अनुभवक संगमपर ठाढ़ एहन कथा-संग्रह अछि जकर श्रेष्ठता नारा देबामे नहि, पीड़ाक भीतर मानवीय गरिमाक सूक्ष्म चिन्ह खोजबामे अछि।

१०. ग्रन्थसूची

लाल, वृषेश चन्द्र। माल्हो। जनकपुरधाम : सुदामा प्रकाशन।

5. मोदिआइन

मानवता, मिथक, स्मृति आ अनुवाद-सौन्दर्य

गहन अनुसन्धानपरक साहित्यिक समीक्षा — अनुवाद सिद्धान्त सहित

बी. पी. कोइराला कृत

मैथिली रूपान्तरण : वृषेश चन्द्र लाल

सुदामा प्रकाशन, जनकपुरधाम • २०६१ साल



बीज-शब्द

मोदिआइन; बी. पी. कोइराला; वृषेश चन्द्र लाल; मैथिली रूपान्तरण; मानवतावाद; महाभारत; गीता; युद्धविरोध; स्त्री-अनुभव; स्मृति; मिथक; मौखिक आख्यान; अनुवाद सिद्धान्त; सांस्कृतिक पुनर्स्थापन।

१. कृति, संस्करण, ऐतिहासिक-राजनीतिक पृष्ठभूमि आ कृतिकार-रूपान्तरकार परिचय
नेपाली तथा मैथिली आख्यान साहित्यक इतिहासमे 'मोदिआइन' एकटा कालजयी, विचारोत्तेजक, दार्शनिक आ मानवतावादी उपन्यासिकाक रूपमे प्रतिष्ठित अछि। मूल रूपसँ ई कृति नेपाली भाषामे नेपालक प्रथम जननिर्वाचित प्रधानमन्त्री, प्रजातान्त्रिक आन्दोलनक पुरोधा एवं मूर्धन्य साहित्यकार विश्वेश्वर प्रसाद कोइराला (बी. पी. कोइराला) द्वारा रचल गेल छल। साहित्य आ राजनीतिक दुनू कातसँ सन्तुलित करैत, कोइराला एहि उपन्यासिकामे अपन राजनीतिक दर्शन, युद्धक निरर्थकता आ मानवीय संवेदनाकेँ एकटा मिथकीय आवरणमे प्रस्तुत कएने छथि।

ऐतिहासिक सन्दर्भकेँ देखल जाए तँ नेपालमे २०१७ साल पुष १ गते (दिसम्बर १९६०) राजा महेन्द्र द्वारा लोकतान्त्रिक सरकार आ संसदक विघटन क' जननायक बी. पी. कोइराला सहित

शीर्ष लोकतान्त्रिक नेतालोकनिकै बन्दी बना लेल गेल छल। काठमाण्डूक 'सुन्दरीजल बन्दीगृह'क कठिन कारावास, राजनीतिक निराशा, एकांतवास आ दार्शनिक उद्वेलनक बीच बी. पी. कोइराला अपन अंतःप्रेरणासँ साहित्य सृजनमे प्रवृत्त भेलाह। एहि कारागारमे बी. पी. कोइरालाक अंतर्मनमे एकटा भीषण आत्मसंघर्ष चलि रहल छल— नेपालमे प्रजातन्त्रक पुनर्स्थापना लेल रक्तक्रान्ति एवं सशस्त्र विद्रोहक मार्ग चुनल जाए अथवा अहिंसक मेलमिलाप, करुणा आ शान्तिपूर्ण सत्याग्रहक मार्ग। एहि वैचारिक अन्तर्द्वन्द्वक दार्शनिक निष्पत्ति 'मोदिआइन' उपन्यासिकामे प्रतिबिम्बित भेल अछि, जेकर रचना मात्र तीन दिनक बन्दी जीवनमे (२८, २९ आ ३० जनवरी १९६४ / माघ १५, १६, १७, २०२० वि.सं.) सम्पन्न भेल आ कालान्तरमे वि.सं. २०३६ (सन् १९८०) मे साझा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित भेल। ई हुनक सभसँ लघु उपन्यास छन्हि मुदा वैचारिक दृष्टिसँ ई अत्यन्त बृहत् आ गम्भीर अछि।

प्रस्तुत कृतिक मैथिली रूपान्तरण नेपालक प्रजातान्त्रिक आन्दोलनक वरिष्ठ नेता, विचारक एवं बौद्धिक व्यक्तित्व वृषेश चन्द्र लाल द्वारा कएल गेल, जकर प्रकाशन सुदामा प्रकाशन, जनकपुरधामद्वारा वि.सं. २०६१ (सन् २००४) मे भेल। एहि मैथिली संस्करणमे स्व. सुशील कोइराला (नेपालक पूर्व प्रधानमन्त्री) क 'दुई शब्द', रूपान्तरकार वृषेश चन्द्र लालक 'कृतज्ञता', आचार्य सोमदेवक 'मोदिआइनक डीहपरसँ' आ डा. राजेन्द्र प्रसाद 'विमल'क 'मोदिआइनक देहरिसँ' शीर्षक विद्वतापूर्ण आमुख सम्मिलित अछि जे एहि पोथीक गाम्भीर्य आ ऐतिहासिक महत्त्वकें प्रमाणित करैत अछि। बी. पी. कोइराला स्वयं कहैत छलाह जे राजनीतिमे ओ एकटा अन्तर्प्रेरणासँ लगलाह आ साहित्यमे ओकर ठीक विपरीत, कलाकें स्वतन्त्रता चाही आ ई भौतिक तृप्ति नहि अपितु दैवी असन्तोष अपनाबैत अछि।

विश्वेश्वरप्रसाद कोइरालाक जन्म ८ सितम्बर १९१४ (भाद्र २४, वि.सं. १९७२) कें काशीमे भेल छल, जतय हुनक परिवार शरणार्थीक रूपमे रहैत छल। ओ नेपालक प्रजातान्त्रिक आन्दोलनक अग्रणी नेता आ नेपालक पहिल निर्वाचित प्रधानमन्त्री रहलाह, आ संगहि सिङ्गुण्ड फ्रायडक मनोविश्लेषणात्मक दृष्टिकोणसँ प्रभावित नेपाली कथा-साहित्यक युगप्रवर्तक मानल जाइत छथि। हिनक उपन्याससभमे तीनघुम्ती, नरेन्द्र दाइ, सुम्निमा, मोदिआइन, हिटलर र यहूदी, बाबु आमा र छोरा आदि प्रमुख छथि।

वृषेश चन्द्र लालक जन्म २९ मार्च १९५५ ई.मे भेल छल। ओ स्वयं बी.पी. कोइरालाक प्रतिबद्ध राजनीतिक अनुयायी आ नेपालक प्रजातान्त्रिक आन्दोलनक सक्रिय योद्धा छथि, जे नेपालक राजनीतिपर निरन्तर लिखैत रहैत छथि। प्रस्तुत रूपान्तरणक अतिरिक्त हिनक मैथिलीमे ‘आन्दोलन’ (कविता-संग्रह), ‘माल्हो’ (कथा-संग्रह), आ ‘संघीयताक सम्बन्धमे’ (अनुवाद) सेहो प्रकाशित छन्हि। एतय ई लक्ष्य करबाक जोग बात अछि जे अनुवादक स्वयं मूल लेखकक राजनीतिक-वैचारिक परम्पराक वाहक छथि — जे अनुवाद-कर्ममे एकटा सैद्धान्तिक आ भावनात्मक निकटता (‘शेयर्ड आइडियोलॉजी’) उत्पन्न करैत अछि, आ जकर प्रभाव पाठक भूमिका-लेखसभमे (आचार्य सोमदेव, डा. राजेन्द्र प्रसाद ‘विमल’ आदिक आमुखमे) स्पष्ट रूपेँ पाओल जाइत अछि।

ई सेहो उल्लेखनीय अछि जे ‘मोदिआइन’क ई एकमात्र मैथिली रूपान्तरण नहि थिक — डा. रामदयाल राकेश द्वारा सेहो एकर एकटा मैथिली रूपान्तरण (सोही शीर्षकसँ, वि.सं. २०५४, सफारी नेपाली प्रकाशन) आएल छल, आ हिन्दीमे रञ्जना शर्मा द्वारा ‘मोही’ शीर्षकसँ अनूदित संस्करण सेहो अछि। एहि बहु-अनूदित परम्पराक बीच वृषेश चन्द्र लालक रूपान्तरण अपन मौलिक भाषिक प्रवाह आ आञ्चलिक (दरभंगा-केन्द्रित) पुनर्रचनाक कारणेँ अलग स्थान राखैत अछि, जकर विस्तृत चर्चा आगाँ अनुवाद-सिद्धान्तक खण्डमे कएल जाएत।

मैथिली संस्करणमे नेपाली मूलपाठ साथ-साथ नहि देल गेल अछि। तँ कोनो खास वाक्य मूलसँ कतेक अक्षरशः मेल खाइत अछि, कतय किछु घटाओल-बढाओल गेल, वा कोन शब्दक प्रतिशब्द मूलतः की छल—एहि सभ पर निर्णायक दावा नहि कएल जा सकैत अछि। मुदा लक्ष्यपाठक स्वाभाविकता, शैलीगत सुसंगति, सांस्कृतिक अनुकूलन आ परिपाठीय उद्देश्यक विश्लेषण पूर्ण रूपेँ सम्भव अछि।

२. कथाक भीतर कथा : स्मृति, कल्पना आ बहुस्तरीय विन्यास

कृतिक पहिल महत्त्वपूर्ण कलात्मक निर्णय ई अछि जे लेखक स्मृति आ कल्पनाक सम्बन्ध सीधे स्वीकारैत छथि। बाल्यकालक घटना चालीस वर्ष बाद ‘स्मृतिक दूरबीन’ सँ देखल जा रहल अछि; अधूरा अतीत कल्पनाक सहायतासँ क्रम आ अर्थ पबैत अछि। फलतः आरम्भे पाठक केँ बता देल जाइत अछि जे ई शुद्ध दस्तावेज नहि, नितान्त मनगढ़न्त कथा सेहो नहि—ई स्मृति,

अनुभूति आ वर्तमान चेतनाक संयुक्त पुनर्निर्माण थिक। एहि आत्मस्वीकृत अनिश्चिततासँ कृतिक बादक स्वप्निल-मिथकीय विस्तार विश्वसनीय बनैत अछि।

‘स्मृतिक आधारपर कोनो पहिलुका घटनाकें क्रमबद्ध तथा अर्थयुक्त बनाबएहेतु कल्पनाक सहयोग आवश्यक भऽ जाइत छैक।’

‘मोदिआइन’ उपन्यासक कथा-संरचना ‘कथाक भीतर कथा’ (Frame Narrative) प्रविधिक एकटा अत्यन्त उत्कृष्ट आ मनोवैज्ञानिक उदाहरण थिक। एकर बाह्य कथा-आवरणमे लेखक अपन बाल्यकालक (प्रायः १९२०-३० क दशकक) एकटा संस्मरण प्रस्तुत करैत छथि, जतय ओ एकटा नौ-दश वर्षक जिज्ञासु बालकक रूपमे अपन परिवारक हितैषी गुमास्ता ‘मिसरजी’क सङ्ग नेपालक सीमावर्ती क्षेत्रसँ रेलगाड़ी द्वारा दड़िभङ्गा (दरभंगा) नगर दर्शन लेल अबैत छथि। स्टेशन, कुल्ली, रेल, राजदरबार, एक्का, धूलि, हलुवाइक दोकान, चूड़ा-दही, फूसक मोदी-दोकान, हड़ाहा पोखरि—ई सभ विवरण ‘स्थान’ केँ मात्र पृष्ठभूमि नहि रहने दैत, ओकरा जीवित पात्र बना दैत अछि। दुपहरियाक चमक, साँझक अन्हार, पोखरिक बदलैत रंग, लालटेन, डिबियाक काँपैत लौ, किड़ा-पतंगक ध्वनि—दृश्य आ ध्वनि मिलि एकटा मनोवैज्ञानिक रंगभूमि रचैत अछि जतय सामान्य यथार्थ धीरे-धीरे लोकविश्वास आ स्वप्नमे प्रवेश करैत अछि।

मोदिआइन पहिने एकटा स्नेहमयी दोकानदार स्त्रीक रूपमे अबैत छथि। बच्चाक भूख, थकान आ डर तुरन्त बूझि लेबाक हुनकर क्षमता मातृसुलभ अछि। ओहि घरेलू स्नेहक भीतर हड़ाहा पोखरिक रहस्य खुलैत अछि। पहिने माछ बेचयवाली पुरातन मलाहिनक कथा, फेर रातिमे महाभारतक आख्यान, आ अन्ततः मोदिआइनक स्वरक ‘नारी’ नामक महाभारतकालीन स्त्रीमे गलि-पघिल जाना—एहि क्रमसँ कथा फ्रेम-दर-फ्रेम भीतर उतरैत अछि।

२.१ कथा-स्तरक बहुस्तरीय विन्यास

कथा-स्तर	समय/स्थान	मुख्य कथिक/दृष्टि	मूल अर्थ
स्मृति-फ्रेम	वयस्क कथावाचकक वर्तमान	‘हम’—बाल्यकालक पुनर्स्मरण	स्मृति आ कल्पनाक सहजीवन

कथा-स्तर	समय/स्थान	मुख्य कथिक/दृष्टि	मूल अर्थ
दरभंगा-फ्रेम	बाल्यकालक एक दिन-राति	बालक + मिसिरजी + मोदिआइन	स्थानीय यथार्थ, जिज्ञासा, संस्कार
हड़ाहा-लोककथा	अनिश्चित पुरातन समय	मोदिआइनक वाणी	भूगोलक भीतर दबिल हिंसक इतिहास
महाभारत-फ्रेम	इन्द्रप्रस्थ-हस्तिनापुर-कुरुक्षेत्र	‘नारी’—सामान्य स्त्री	महाकाव्यक सामान्य जनपर लागत मूल्य
फेर-वापसी	भिनसर/रेल/जयनगर	बालकक चेतना	‘वीर’ नहि, ‘नीक लोक’ बनबाक नैतिक निष्कर्ष

३. वृत्ताकार संरचना : “बड़का” सँ “नीक” धरि

कृतिक नैतिक सूत्र बहुत पहिने, भोजनक समय, एकदम सहज बातचीतमे देल जाइत अछि। बालक कहैत अछि जे पढ़ि-लिखि ‘बड़का आदमी’ बनत। मोदिआइन पूछैत छथि—बड़का आदमी केहन? बालक निस्तब्ध। तखन मोदिआइनक उत्तर कृतिक पूरा दर्शनक बीज बनि जाइत अछि: बड़का लोक अनेक प्रकारक भ’ सकैत अछि, मुदा नीक लोक सभठाम मूलतः एके प्रकारक; तँ बड़का नहि, नीक बनबाक कोशिश करू।

अन्तिम रेल-यात्रामे ई बीज फेर प्रतिध्वनित होइत अछि—बड़का वा वीर बनबाक आकांक्षा छोड़ि नीक लोक बनू। आरम्भक बाल-आकांक्षा आ अन्तक स्वप्न-स्वर एक-दोसराक उत्तर बनैत अछि। बीचक पूरा महाभारत-प्रसंग मानो एहि एक पंक्तिक विशाल नैतिक उदाहरण थिक: ‘वीरता’ जे नरसंहार करैत अछि, ‘महत्ता’ जे सत्ता, प्रतिशोध वा धर्मयुद्धक नामपर मनुष्यकें यन्त्र बना दैत अछि, ओ नैतिक श्रेष्ठता नहि। एहि वृत्ताकार रचनाक कारण लघु उपन्यासक ढाँचा अत्यन्त कसगर बनैत अछि।

एतय ‘नीक’ कोनो दार्शनिक परिभाषाक अमूर्त शब्द नहि; ओकर अर्थ प्रेम, करुणा, पारिवारिक निकटता, दया, अहिंसा, जीवित मनुष्यक दुखक प्रति संवेदनशीलता आ अपन महत्वाकांक्षा सँ आनक जीवनकें कम मूल्यवान नहि बुझनाइ अछि। ई नैतिकता कृतिक तर्कपूर्ण दार्शनिक

खण्डसभसँ बेसी दीर्घजीवी एहि कारण बनैत अछि जे ओ घरेलू बोलीमे, एक स्त्रीक स्नेहपूर्ण उपदेशक रूपमे देल गेल अछि।

४. मिथकीय पुनराख्यान, पुनर्जन्म आ अस्तित्ववाद

‘मोदिआइन’ महाभारतक पुनर्कथन अवश्य अछि, मुदा ओकर मौलिकता ‘की भेल’ कहबामे नहि, ‘ककरा पर की बीतल’ पूछबामे अछि। महाकाव्यक केन्द्रमे धर्म, राज्य, न्याय, प्रतिज्ञा, वीरता, कुल, देव-अवतार आ विजय रहैत अछि। कोइराला एहि केन्द्रक चारू कात जे असंख्य अनाम जीवन अछि—खेतिहर, विस्थापित, सैनिकक पत्नी, माय, बहिन, बच्चा—तकरा कथा-केन्द्र बनबैत छथि। नारी नामक पात्र स्वयं महाभारतक प्रामाणिक पात्र नहि; ओकर अनामता ओकर शक्ति थिक। ओ एक व्यक्ति सेहो अछि आ युद्धमे उजड़ल लाखों सामान्य स्त्रीक प्रतिनिधि सेहो।

एहि उपन्यासक मिथकीय प्रयोगकें ‘प्रतिमिथक’ कहब पूर्णतः उचित तखने हएत जँ हम ई बूझी जे कृति महाभारतकें नष्ट नहि करैत, बल्कि ओकर भीतर दबिल दोसर आवाज निकालैत अछि। महाकाव्यक धर्मयुद्धक अर्थ सामान्य स्त्रीक शोकमे बदलि जाइत अछि। मिथक यथास्थिति कें पवित्र करबाक औजार नहि, वर्तमान नैतिक प्रश्न पूछबाक प्रयोगशाला बनैत अछि।

साहित्यिक अनुशीलनक दृष्टिसँ ‘मोदिआइन’ पारम्परिक रूपसँ महिमामण्डित महाभारत युद्धक इतिहासकें एकटा नव, अप्रत्याशित आ मनोवैज्ञानिक धरातलपर स्थापित करैत अछि, जाहिमे पुनर्जन्म आ आत्माक अमरताक सिद्धान्तकें एकटा भिन्न अस्तित्ववादी दृष्टिकोणसँ व्याख्यायित कएल गेल अछि। बी. पी. कोइरालाक अन्य उपन्यास जेना ‘सुम्निमा’मे देहवाद आ आत्मवादक बीचक द्वन्द्वकें केन्द्रबिन्दु बनाएल गेल अछि, तहिना ‘मोदिआइन’मे एकहि आत्माक तीनटा जन्मक कथा समेटल गेल अछि।

उपन्यासमे ई स्पष्ट रूपेँ ध्वनित होइत अछि जे आत्माक ई अनवरत यात्रा कोनो मोक्ष वा आध्यात्मिक प्राप्तिक लेल नहि, अपितु एकटा अपूर्ण मानवीय आकाङ्क्षा आ मानसिक आघात (Trauma) क कारणेँ अछि। महाभारत कालक ओहि अज्ञात ‘नारी’क आत्मा, जेकर पति कुरुक्षेत्रक नरसंहारमे मारल गेल छल, शान्ति नहि पाबि सकल। ओहि नारीक आत्मा कालान्तरमे एकटा ‘मलाहिन’ (मछुवारिन) क रूपमे अवतरित भेल जे हड़ाहा खधियाक कातमे माछ बेचैत छल आ जकर भेंट दड़िभङ्गा महाराजक तान्त्रिकसँ भेल छल। तान्त्रिककें

मलाहिन महाभारत कालक विशालकाय योद्धासभक वर्णन करैत अछि आ चील द्वारा खसाएल गेल लाशक कथा सुनबैत अछि। तदुपरान्त, ओही आत्मा वर्तमान कालमे 'मोदिआइन'क रूपमे अवतरित अछि जे अपन पतिक (जेकर साङ्केतिक उपस्थिति खोंखैत रोगी मोदीक रूपमे अछि मुदा वास्तविक प्रेम महाभारतक ओहि सैनिक पतिक प्रति अछि) बाट जोहि रहल अछि।

ई आत्मिक निरन्तरता प्रमाणित करैत अछि जे जखन धरि मानवीय न्याय आ पूर्णता प्राप्त नहि होइत अछि, आत्मा युग-युगान्तर धरि मृत्युलोकमे भटकैत रहैत अछि। मोदिआइन बालककें कहैत छथि जे कोनो न कोनो पिआस, कोनो अपूर्ण कामना आत्मकें मृत्युलोकमे बाँधि क' राखैत अछि। ई कोइरालाक नियतिवादी आ अस्तित्ववादी विमर्शक एकटा गम्भीर पक्ष थिक जतय मनुष्यक अदम्य आकाङ्क्षा आ प्रेम, मृत्युकें सेहो पराजित क' दैत अछि।

४.१ मलाहिन-मोदिआइन : लोकमिथक आ पौराणिक-सामाजिक द्वैत

कथाक दोसर स्तम्भ थिक मलाहिन-प्रसंग — जतय एकटा माछ बेचनिहारि नारी तान्त्रिककें अपन हाँसीक रहस्यमय व्याख्या दैत, चील द्वारा माछ लऽ जाएब आ महाभारतकालीन योद्धाक शव खण्डवप्रस्थ धरि घीचिकऽ आनब — दूनू घटनाकें जोड़ि एकटा लोकमिथक रचैत छथि। ई मिथक-निर्माणक प्रक्रिया स्वयं साहित्यिक-मानवशास्त्रीय दृष्टिँ महत्त्वपूर्ण अछि: कोना एकटा स्थानीय जल-स्रोत (हड़ाहा पोखरि)क नामकरण महाभारत जकाँ विराट अखिल-भारतीय आख्यानसँ साँठ-गाँठ बनाकऽ आपन 'पवित्रता' आ 'भयावहता' अर्जित करैत अछि। मलाहिनक चरित्र आ मोदिआइन-नारीक चरित्र दूनू संरचनात्मक रूपें समान्तर छथि — दूनू 'असामान्य' ज्ञान राखनिहारि, समाजक हाशियापर स्थित, आ पुरुष-सत्ताक (तान्त्रिक/कृष्ण जकाँ) प्रश्नक समक्ष अबूझ रहस्यमय उत्तर दैनिहारि नारी छथि।

५. भुइँमानुष, विस्थापन आ स्त्री-दृष्टि

इतिहास सदैव विजेता, सत्ताधारी वर्ग आ पुरुषसत्ता द्वारा लिखल जाइत अछि, जतय सीमान्तकृत वर्ग आ स्त्रीक स्वर (आवाज) दबैल जाइत अछि। पारम्परिक महाभारतमे चक्रवर्ती राजा, महारथी, देवपुत्र, ब्राह्मण आ सामन्ती सत्ताक दृष्टिकोण मुख्य रहैत अछि। मुदा बी. पी. कोइराला एहि युद्धक विभीषिकाकें एकटा सर्वथा साधारण, अशिक्षित मुदा संवेदनशील महिला 'मोदिआइन' आ ओकर अंतरात्मामे अनुस्यूत महाभारत कालीन कुरुक्षेत्रक सामान्य क्षत्रिय युवती 'नारी'क दृष्टिसँ पुनर्व्याख्यायित करैत छथि।

बी. पी. कोइरालाक सम्पूर्ण आख्यान साहित्यमे स्त्री-पात्रसभ अत्यन्त सशक्त आ क्रान्तिकारी रूपमे उपस्थित भेल छथि। जेना 'तीन घुम्ती' मे इन्द्रमाया, 'सुम्निमा' मे सुम्निमा, 'बाबु आमा र छोरा' मे उमा, 'नरेन्द्र दाइ' मे गौरी आ मुनरिया, ठीक तहिना 'मोदिआइन' मे ई अज्ञात नारी सम्पूर्ण कथानकक केन्द्रबिन्दु थिक। ई सभ स्त्री पात्र पितृसत्तात्मक बन्धनकें तोड़ैत अपन स्वतन्त्र अस्तित्वक निर्माण करैत छथि।

कथामे वर्णित 'नारी' इन्द्रप्रस्थक स्थापनाक क्रममे विस्थापित भेल एकटा सामान्य कृषक-क्षत्रिय परिवारक कन्या थिक। खाण्डवप्रस्थक जङ्गल फाड़ि क' इन्द्रप्रस्थक स्थापना भेलासँ स्थानीय कृषक आ वनवासी परिवार विस्थापित आ दरिद्र भ' गेलाह। ई शहरीकरण आ साम्राज्यवादी विस्तारक कारणें विस्थापित भेल सर्वहारा वर्गक यथार्थ थिक। द्यूतक्रीडामे युधिष्ठिर द्वारा द्रौपदीक दावपर लगाओल जाएब आ चीरहरणक घटनाकें ई सीमान्तकृत नारी एकटा भिन्न दृष्टिसँ देखैत छथि। ओ कहैत छथि, “द्रौपदीक चीरहरण एकगोट नारीक अपमानेटा नहि अछि, ई बड़का अपरिहार्य अनिष्टक सूचक अछि!”। एतय नारीक मर्म द्रौपदीक राजकीय अपमानसँ बेसी ओहि आसन्न युद्धक त्रासदीक पूर्वाभाससँ त्रस्त अछि जे समस्त सामान्य जनजीवनकें भस्म क' देत।

नारी स्पष्ट करैत छथि जे पुरुषसभक राजनीतिक अहङ्कार (दुर्योधनक हठ आ भीम/द्रौपदीक प्रतिशोध) क लेल साधारण स्त्रीसभक जीवन आ हुनकर सिन्दूरकें दावपर लगाएल गेल। महिला शरीर युद्धमे सङ्घर्ष आ शोकक मुख्य केन्द्र (Site of violence and grief) बनि जाइत अछि। कुरुक्षेत्रक युद्धक समाप्तिपर जे चित्र उपस्थित होइत अछि, ओ नारी-त्रासदीक चरम बिन्दु थिक— “पृथ्वीपरसँ पुरुष शून्य भ' गेल। बस खाली विधवा नारीसभ अहि लोकमे बाँचएलेल रहि गेलि सनकलि... अपन छातीसँ असहाय अपन-अपन बाल सन्तानसभकें सटओने”। ई पितृसत्तात्मक युद्धक विरुद्ध मातृसत्ताक करुण आ मार्मिक विद्रोह थिक।

एहि अर्थमे 'मोदिआइन'कें एकटा प्रोटो-फेमिनिस्ट (नारीवादी-पूर्व) पाठक रूपमे सेहो पढ़ल जा सकैत अछि, जतय कोइरालाजी फ्रायडीय मनोविश्लेषणसँ प्रभावित अपन सामान्य शैलीसँ आगू बढ़िकऽ सामूहिक स्त्री-वेदनाक आवाज देबाक प्रयास करैत छथि।

५.१ पारम्परिक महाभारत आ 'मोदिआइन'क दृष्टिक तुलनात्मक विन्यास

पारम्परिक महाभारतक दृष्टिकोण	'मोदिआइन'क सबाल्टर्न/नारीवादी दृष्टिकोण
केन्द्रिय पात्र: कृष्ण, अर्जुन, युधिष्ठिर, दुर्योधन, भीष्म	केन्द्रिय पात्र: मोदिआइन, अज्ञात 'नारी', साधारण सैनिक
मूल्याङ्कन: युद्ध धर्मक रक्षाक लेल आवश्यक (धर्मयुद्ध)	मूल्याङ्कन: युद्ध केवल विनाश आ निरर्थक नरसंहार (Holocaust)
नारीक चित्रण: राज्यक सम्मानक प्रतीक, प्रतिशोधक कारण	नारीक चित्रण: युद्धक वास्तविक भुक्तभोगी, विधवा, प्रेतात्मा
गीताक उपदेश: निष्काम कर्मयोग, आत्माक अमरता	गीताक खण्डन: मानवताक संहार, भावनाहीन दैवत्वक आरोपण
अन्तिम प्राप्ति: न्याय, राज्य प्राप्ति, स्वर्ग	अन्तिम प्राप्ति: लाशक पहाड़, श्मशानक शान्ति, अनन्त प्रतीक्षा

५.२ स्त्री-पक्षधरता भीतरक अन्तर्विरोध

मुदा एहि स्त्री-पक्षधरता भीतर एकटा महत्वपूर्ण तनाव सेहो अछि। नारी आ ओकर सखीसखी द्रौपदीक प्रतिशोध-कामना केँ 'स्वाभाविक नारित्व' सँ विचलन जकाँ देखैत छथि। एतय करुणा-केन्द्रित नैतिकता स्त्रीक एक विशिष्ट 'कोमल' स्वरूपकेँ स्वाभाविक मानि लेबाक जोखिम लैत अछि। द्रौपदीक अपमान, न्याय-अधिकार आ राजनीतिक क्रोधकेँ यदि केवल युद्ध-उत्तेजना कहि अस्वीकार कएल जाए तँ स्त्रीक एजेंसीक दोसर रूप दबि सकैत अछि। अतः उपन्यास स्त्रीक पीड़ा केँ असाधारण केन्द्र देता अछि, मुदा स्त्रीत्वक परिभाषामे पारम्परिक मर्यादा-कल्पना सँ पूर्ण मुक्त नहि। ई अन्तर्विरोध कृतिक कमजोरी मात्र नहि; ओकर समय, नैतिक आग्रह आ लैङ्गिक कल्पनाक जटिलता बुझबाक अवसर अछि।

'मोदिआइन'मे स्त्रीक आवश्यकता, दमन, अस्तित्व-रक्षा, समानता आ सशक्तीकरणक प्रश्न उपस्थित अछि। कृतिक स्त्रीवाद आधुनिक अधिकार-विमर्शक समरूप नहि; ई मुख्यतः अहिंसा, प्रेम, गृहस्थ जीवन आ मानवीय अस्तित्वक सम्मानसँ उपजैत स्त्री-दृष्टि अछि। तँ ओकर प्रगतिशीलता आ सीमाकेँ एक्के संग पढ़ब अधिक न्यायपूर्ण होएत।

६. गीता, अर्जुन आ “मानवता बनाम देवत्व”क तनाव

‘मोदिआइन’ उपन्यासक सर्वाधिक क्रान्तिकारी, दार्शनिक आ वैचारिक पक्ष थिक श्रीमद्भगवद्गीताक पारम्परिक कर्मयोग-दर्शनक मानवीय धरातलपर विखण्डन (Deconstruction)। भारतीय वाङ्मयमे गीताकेँ सर्वोच्च आध्यात्मिक उपदेशक रूपमे पूजल जाइत अछि, मुदा कोइराला एकरा नितान्त भिन्न, मानवतावादी चश्मासँ देखैत छथि। ई दृष्टिकोण गान्धीवादी शान्तिवाद आ अम्बेडकरक सामाजिक न्याय सँ सेहो मेल खाइत अछि जतय पारम्परिक ग्रन्थसभक पुनर्मूल्याङ्कनक आवश्यकतापर बल देल गेल अछि।

कुरुक्षेत्रक मध्यमे जखन अर्जुन अपन सगा-सम्बन्धी, गुरुजन आ भ्रातागणकेँ देखि विषादग्रस्त भ’ गाण्डीव त्यागि दैत छथि, तखन उपन्यासकार ओहि विषादकेँ अर्जुनक दुर्बलता नहि, अपितु मानवताक सर्वोच्च शिखर मानैत छथि। अर्जुन करुणा, सहृदयता, स्वजन-स्नेह, मैत्री, वात्सल्य आ दया रूपी उदात्त मानवीय गुणक जीवन्त विग्रह छलाह। हुनक मुहसँ निकलल आर्तवाणी —“नहि, हम अपन कुटुम्बलोकनिक हत्या अपनहिं हाथें किन्नुहु ने करब! हमरा राज्य नहि चाही”—वास्तविक मानव-हृदयक शाश्वत धर्म छल।

मुदा श्रीकृष्ण अपन सोरह-अध्यायी प्रखर, ओजस्वी आ दार्शनिक वाग्जाल (गीता) द्वारा अर्जुनक ओहि सहज मानवीय करुणाकेँ निर्ममतापूर्वक कुचलि दैत छथि। श्रीकृष्णक तर्क—देह पुरान वस्त्र अछि, आत्मा अमर अछि, निष्काम भावसँ बध करब धर्म थिक, जे देखाइत अछि से माया आ मिथ्या थिक—केँ ‘नारी/मोदिआइन’ कठोर चुनौती दैत छथि। उपन्यासक ई गद्यांश मानव-अस्तित्वक मार्मिक उद्घोष थिक जतय नारी कृष्णसँ प्रश्न करैत छथि जे की हुनक पतिक उष्म आलिङ्गन, हुनक मातृत्वक लालसा आ हुनक दुःख मिथ्या थिक? ओ कहैत छथि जे स्वर्गक उच्चतामे बैसल देवताक लेल मृत्युलोकक जीवन कीड़ा-मकोड़ाक समान अर्थहीन (मिथ्या) भ’ सकैत अछि, मुदा एकटा मानव (स्त्री) क लेल ओकर जीवन आ प्रेम कोनो भी स्थितिमे अप्रासङ्गिक वा मिथ्या नहि भ’ सकैत अछि।

उपन्यासकार स्पष्ट करैत छथि जे दैवत्व (Divinity) आ अति-विचारधारा (Hyper-ideology) मनुष्यकेँ भावनाहीन यन्त्र बना दैत अछि। गीता सुनलाक बाद अर्जुन “अर्जुन नहि रहि गेलाह, ईश्वरारूढ यन्त्र बनि गेलाह”। हुनक सम्पूर्ण मानवीय संवेदना मृत भ’ गेल आ ओ युद्धोन्मादमे

रत भ' गेलाह। परिणामतः लाखो नारी विधवा भेलि, गिद्ध-श्वान लाश नोचए लागल आ सम्पूर्ण मानवता पराजित भ' गेल।

“हे कृष्ण ई केहन कर्तव्यक प्रेरणा अछि अहाँक... कि मानवजीवन मृत्युकेर दुर्दमनीय साँध-सिमानसँ ओहिना घेराएल संकुचित नहि अछि?”

ई अंश आधुनिक अस्तित्ववादी (existentialist) चिन्तनक निकट अछि — जतय मनुष्यक परिमित, नश्वर अस्तित्वकेँ केन्द्रमे राखिकऽ किनको दैवी उदासीनताक विरुद्ध खड़ा कएल गेल अछि। भूमिका-लेखक आचार्य सोमदेवो एहि द्वन्द्वकेँ रेखांकित करैत लिखने छथि जे उपन्यासमे कोइरालाजीक ‘राजनीतिक व्यक्तित्व मानवतावादक नाउँमे रूपान्तरण भेल’ जकाँ प्रतीत होइत अछि — ई टिप्पणी सेहो उल्लेखनीय अछि जे राजनीतिक कैदी लेखकक व्यक्तिगत अनुभव (सत्याग्रह विरुद्ध सशस्त्र क्रान्ति, हिंसा विरुद्ध अहिंसा) कथाक दार्शनिक तानाबानामे कतेक गहराइसँ बुनल गेल अछि।

तथापि समालोचनात्मक न्याय लेल एकटा सूक्ष्म भेद जरूरी अछि। ‘मोदिआइन’ गीता-दर्शनक सम्पूर्ण दार्शनिक खण्डन नहि; ई एक साहित्यिक प्रतिवाद अछि। उपन्यास कृष्णक वाणीकेँ नारीक शोक आ मृत्यु-बोधक कसौटीपर जाँचैत अछि। अतः कृतिक सामर्थ्य ‘गीता गलत अछि’ सिद्ध करबामे नहि, बल्कि पाठककेँ एहि असुविधाजनक प्रश्नसँ जूझय देबामे अछि जे न्याय, धर्म वा कर्तव्यक नामपर मनुष्यक करुणा कतेक दूर स्थगित कएल जा सकैत अछि।

७. युद्ध-विरोध : रणभूमि नहि, घर-घरक प्रलय

महाभारतक युद्ध ‘मोदिआइन’मे वीरगाथा नहि, मृत्यु-यन्त्र अछि। अठारह दिनक नरसंहारक वर्णनमे ‘कच...कच...’ ध्वनि बारम्बार लौटैत अछि। ई अनुकरणात्मक ध्वनि तलवारक महिमा नहि, गर्दनि-कटबाक यान्त्रिक भय पैदा करैत अछि। शवक पहाड़, रक्तक धार, गिद्ध, शृगाल, कुकुर, सड़ल देह आ अनगिनत विधवा—एहि बिम्बसँ युद्धक अलंकारिक तेज उतारि ओकर जैविक, दुर्गन्धमय यथार्थ सामने आनल गेल अछि।

सबसे मार्मिक तर्क सैन्य गणनासँ नहि, सम्बन्धक उलझनसँ अबैत अछि: नारीक पति आ देओर कौरव-दलमे, बाबू आ भाइ पाण्डव-दलमे। एतय जीत-हारक अर्थ भंग भ' जाइत अछि। जँ

अपना कुटुम्बक अलग-अलग पुरुष विपरीत सेनामे छथि, 'विजय' ककर? एहि प्रश्नसँ युद्धक सामूहिक पहचान—कौरव/पाण्डव—टुटि व्यक्ति-संबंधक नैतिकता सामने अबैत अछि। युद्धोत्तर अंशमे नारी कहैत अछि जे पतिक मृत्युकें संग एक मृत्यु ओकर सेहो भ' गेल, आ देहक मृत्यु बादो असंख्य विधवा-आत्मा अपन प्रियकें खोजैत बौआइत छथि। ई प्रेत-विम्ब केवल अलौकिकता नहि; ई अभिघातक रूपक अछि। युद्ध समाप्त भ' सकैत अछि, मुदा शोकक समय समाप्त नहि होइत। एहि अर्थमे हड़ाहा पोखरि सामूहिक स्मृति-स्थल थिक—पानीक तलमे हड्डी, इतिहास, शोक आ अनुत्तरित प्रतीक्षा दबिल अछि। लैङ्गिक अभिघातपर भेल शोधक संग ई पाठ गहिर संवाद करैत अछि, कारण हिंसा रणभूमि पर पुरुष-देहकें मात्र नहि, परिवारक भावनात्मक संरचनाकें पीढ़ी-दर-पीढ़ी घायल करैत अछि।

८. फ्रायडवादी मनोविज्ञान : इरोस बनाम थानाटोस

बी. पी. कोइराला नेपाली साहित्यमे मनोवैज्ञानिक यथार्थवादक प्रवर्तक छथि आ फ्रायडक मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्तसँ गहिरा रूपेँ प्रभावित छलाह। फ्रायडक सिद्धान्तमे मनुष्यक दूटा मूल प्रवृत्ति होइत अछि: 'इरोस' (Eros - जीवन, प्रेम, काम-ऊर्जा) आ 'थानाटोस' (Thanatos - मृत्यु-प्रवृत्ति, विनाश)। कोइराला स्वयं स्वीकार कएने छथि जे ओ फ्रायडक सिद्धान्तकें मानैत छथि मुदा सङ्गहि नैतिकता (Moralism) कें सेहो प्रश्रय दैत छथि।

'मोदिआइन'मे एहि दुनू प्रवृत्तिक भीषण सङ्घर्ष आ ओकर परिणामक सूक्ष्मतासँ अङ्कन भेल अछि। उपन्यासमे 'नारी'क शारीरिक सौन्दर्य, यौवनक उन्माद, अरण्यमे एकटा सैनिकसँ दृष्टिसँ भेल प्रेम आ गान्धर्व विवाह, पतिक आलिंगनक सुसुम स्पर्श, मातृत्वक तीव्र लालसा—ई सभ 'इरोस' (Eros) क चरम अभिव्यक्ति थिक। नारी अपन नवविवाहित जीवनक अल्हड़ आनन्द आ सखी-मितिनसभक सङ्ग हास-परिहास (सूर्यकुण्डक कातमे स्नान आ क्रीड़ा) मे जीवनक चरम सार्थकता देखैत छलि।

दोसर दिस, युद्धक विनाश, राज्याधिकारक लेल सङ्घर्ष, कृष्णाक उद्धोधन, आ महाभारतक नरसंहार 'थानाटोस' (Thanatos) क भयावह ताण्डव थिक। युद्ध द्वारा ओहि काम-ऊर्जा आ जीवन-प्रवृत्तिक निर्दयतापूर्वक संहार देखायल गेल अछि। फ्रायडवादी दृष्टिसँ, गीताक उपदेश अर्जुनक 'इरोस' (कुटुम्ब-स्नेह, दया) कें दमित क' 'थानाटोस' (विनाशकारी शक्ति) कें जागृत करबाक एकटा तार्किक आवरण मात्र छल। नारीक ई विलाप जे ओ अपन पतिकें अखन धरि

विदाई नहि द' सकल अछि, वास्तवमे जीवन-प्रवृत्तिक ओहि मृत्यु-प्रवृत्तिसँ भेल असामयिक आ अप्राकृतिक पराजयक शोक-गीत थिक।

९. मानसिक आघात, स्पेक्ट्रोलॉजी आ प्रदर्शन-अध्ययन

मोदिआइनक रूपमे 'नारी'क आत्माक युग-युगान्तरसँ अपन पतिक प्रतीक्षा करब वस्तुतः युद्धोत्तर मानसिक आघात (Post-Traumatic Stress Disorder - PTSD) आ सामूहिक स्मृति (Collective Memory) क प्रतीकात्मक रूप थिक। ज्याक डेरिडा (Jacques Derrida) क 'स्पेक्ट्रोलॉजी' वा 'Hauntology' क सिद्धान्तक अनुरूप, जे वस्तु वा घटना इतिहासमे पूर्णतया समाप्त वा समाधान नहि भ' पाबैत अछि, ओ भूत वा प्रेत (Specter) बनि क' वर्तमानकेँ सताबैत (Haunt) रहैत अछि। कार्ल मार्क्स सेहो 'कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो' मे 'Specter of Communism' क चर्चा कएने छथि जे युरोपकेँ सता रहल छल। एतय मोदिआइनकेँ सताबैत अछि महाभारत युद्धक स्पेक्टर।

कुरुक्षेत्रक ओहि विधवा नारीक दुःख इतिहासक कालखण्डमे कहियो समाधान नहि भेल। ओ न्यायसँ वञ्चित रहि गेलि। ताहि लेल ओ 'प्रेतात्मा' (Revenant) बनि क' मोदिआइनक शरीरमे प्रवेश करैत अछि आ युग-युगान्तर धरि अपन पतिक प्रतीक्षा करैत अछि। ई 'स्पेक्ट्रोलॉजी'क सिद्धान्त प्रमाणित करैत अछि जे युद्धमे मारल गेल निर्दोष लोकक आत्मा इतिहास आ वर्तमानकेँ बेरि-बेरि झकझोरैत अछि जाधरि मानवता ओहि हिंसाक वास्तविक प्रायश्चित नहि क' लेत।

प्रदर्शन अध्ययन (Performance Studies) क परिप्रेक्ष्यसँ देखल जाए तँ मोदिआइन द्वारा ओहि न-दश वर्षक बालककेँ कथा सुनाएब एकटा 'परफॉर्मेन्स' थिक। ओहि परफॉर्मेन्सक माध्यमसँ मोदिआइन युद्धक विभीषिका, दर्द, अलगाव (estrangement) आ विधुरताक व्यथाकेँ नव पीढ़ि (बालक) क समक्ष सम्प्रेषित क' रहलि छथि। बालक एतय एकटा श्रोता आ दर्शक (Audience) अछि जे भविष्यक प्रतिनिधि थिक। जखन बालक निन्नमे जाइत अछि, तखन सेहो ओकर अवचेतनमे ई स्पेक्टर प्रवेश क' जाइत अछि जतय ओ सपनामे "कच... कच... कच" मुण्ड कटैत देखैत अछि आ आकाशसँ एकटा ध्वनि सुनैत अछि जे ओकरा वीर नहि, नीक बनबाक प्रेरणा दैत अछि। ई पीढ़ि-दर-पीढ़ि (Intergenerational) ट्रमाक हस्तान्तरण आ निवारणक एकटा अद्भुत साहित्यिक प्रदर्शन थिक।

१०. बाल-दृष्टि, मौखिकता आ मनोवैज्ञानिक विश्वसनीयता

बालक कथावाचक कृतिक दार्शनिक भारकें हल्का नहि, बल्कि विश्वसनीय बनबैत अछि। बच्चा पहिने दरभंगा देखबाक कौतुकमे अछि; स्टेशनक भीड़, दरबारक लागत, कुल्ली, मिठाइ, पोखरि सभ ओकर आँखिमे विस्मयक वस्तु अछि। राति जखन अन्हार, डिबियाक लौ आ जलक ‘छपाक’ ओकर डर बढ़बैत अछि, तखन मोदिआइनक कथा सुननाइ मायसँ खिस्सा सुनैत-सुनैत सुतबाक घरेलू अनुभव जकाँ भ’ जाइत अछि। मिथक एहि कारण व्याख्यान नहि रहि स्वप्नक चलचित्त बनैत अछि।

मौखिक कथनक एकसुर लय, ‘बौआ’ सम्बोधन, प्रश्नोत्तर, कथा बीच ठहराव, नींदक आवागमन आ दृश्यसभक एक-दोसरामे विलयन—ई सभ तकनीक ‘विश्वसनीय अविश्वसनीयता’ रचैत अछि। पाठक निश्चित नहि करि सकैत अछि जे मोदिआइन वास्तवमे नारीक प्रेतरूप छथि, बच्चाक अर्द्धनिद्रा कल्पना अछि, वा स्मृति चालीस वर्ष बाद एहि रूपमे कथा बना रहल अछि। कृति एहि अस्पष्टताकें सुलझबैत नहि; तकरा सौन्दर्य-तत्त्व बनबैत अछि।

इएह कारण अछि जे अन्तमे परिवार पूछैत अछि—दरभंगामे की देखलह? उत्तर केवल ‘मोदिआइन’। राजदरबार, शहर, स्टेशन, सवारी सभ गौण भ’ गेल; एक स्त्रीक आवाज बच्चाक नैतिक चेतनामे स्थायी छाप छोड़ि गेल। बाल-दृष्टिक यात्रा बाहरी ‘देखबाक’ सँ भीतरी ‘बूझबाक’ यात्रा बनि जाइत अछि।

मूल पाठमे बेर-बेर ‘एकसुर’, ‘सम्मोहन’, ‘टपटप पड़ैत’ जकाँ शब्दावलीक प्रयोगसँ लेखक स्वयं अपन कथन-शैलीक स्वभावकें रेखांकित करैत छथि — मोदिआइनक कथा-वाचन एकटा लोरी वा मौखिक परम्पराक कथा-कथनक शैलीमे प्रस्तुत अछि, जे सुननिहार बालककें स्वप्न आ यथार्थक सीमारेखापर लऽ जाइत अछि। ई शैली-चयन जानि-बूझिकऽ कएल गेल अछि, कारण एहिसँ पाठक (आ श्रोता-बालक) सेहो ओहि ‘देवत्व बनाम मानवता’क सम्मोहनकें प्रत्यक्ष अनुभव करैत छथि जकरा कथा वर्णन करैत अछि — अर्जुन कृष्णक वाणीक सम्मोहनमे पड़ैत छथि, बालक मोदिआइनक वाणीक सम्मोहनमे।

११. स्थान-स्मृति, मिथिला-परिवेश आ भाषा-शैली

हड़ाहा पोखरि (आइयो दरभंगामे विद्यमान) कथाक केन्द्रीय ‘क्रोनोटोप’ (काल-स्थान) थिक। ई एकटा वास्तविक भौगोलिक स्थान अछि, मुदा कथामे ई ऐतिहासिक (कुरुक्षेत्रीय उत्खनन), मिथकीय (मलाहिन-तान्त्रिक प्रसंग), आ व्यक्तिगत (बालकक भयातुर रात्रि-अनुभव) — तिनू स्तरक स्मृति केँ आत्मसात् करैत एकटा बहुअर्थी प्रतीकमे बदलि जाइत अछि। दरभंगाक भौतिक विवरण (नौलखा दरबार, स्टेशनक हलचल, कुली-हुलिक अफरातफरी, मोदीक दोकानसभ) यथार्थवादी बारीकीसँ अंकित अछि, जे कथाक मिथकीय-दार्शनिक उड़ान केँ ‘जमीनी’ आधार दैत अछि — ई कोइरालाजीक विशिष्ट शैली-विशेषता थिक, जतय स्वच्छन्दतावाद (romanticism) आ यथार्थवाद (realism) एकाकार भऽ जाइत अछि।

दरभंगा एहि कृतिमे नक्शाक शहर नहि, स्मृति-नगर अछि। रेलस्टेशनक हल्ला, दरबारक लाल रंग, राजकीय फिटिन, हथि-सार, बजार, एक्का, फूसक दोकान, चूड़ा-दही-गुड़—ई सूक्ष्म दृश्य अतीत मिथिलाक सामाजिक बनावट बचा लैत अछि। रूपान्तरकार आ आमुखकार सभ एहि भूगोलक स्थानीय सम्बन्धपर विशेष बल दैत छथि; मैथिली पाठक लेल ई कथा ‘विदेशी नेपाली कृति’क अनुवाद मात्र नहि रहि अपन सांस्कृतिक भूगोलक पुनर्प्राप्ति बनि जाइत अछि।

हड़ाहा पोखरि कृतिक सर्वोत्तम प्रतीक अछि। दिनमे स्नान-स्थल, साँझमे अन्हार जल, रातिमे भयक केन्द्र, लोककथामे हड्डीक इतिहास, महाभारतक शोकक भूगर्भ, आ अन्तमे गीता-पाठक धार्मिक स्थल—एके पोखरि पर अनेक अर्थक तह चढ़ल अछि। ‘पानी’ एतय विस्मरण नहि, स्मृति संचित करैत अछि। जलक तल जे नदेखाइत अछि, कथा ओही दबल इतिहास केँ ऊपर आनैत अछि।

एहि अर्थमे कृति स्मारक-विरोधी स्मारक रचैत अछि। राजदरबार जकर लागत आ वैभव पर यात्री गौरव करैत छथि, समयक संग कथा मे गौण भ’ जाइत अछि; हड़ाहा पोखरि आ मोदिआइनक कण्ठ बचि रहैत अछि। सत्ता पाथरमे स्मारक बनबैत अछि; सामान्य लोक कथा आ स्मृतिमे। उपन्यास पछिला प्रकारक स्मृति केँ अधिक टिकाउ प्रमाणित करैत अछि।

११.१ आज्ञालिक परिवेश, भोजन, वेशभूषा आ शब्द-संसार

उपन्यासक एकटा विशिष्ट आकर्षण थिक मिथिलाक हृदयस्थली ‘दड़िभङ्गा’ (दरभंगा) क वि.सं. १९८०-९० (१९२०-३० ई.) दशकक सजीव आज्ञालिक चित्रण, जे फणीश्वरनाथ रेणु वा नागार्जुनक आज्ञालिकताक स्मरण करबैत अछि।

उपन्यासिकामे दड़िभङ्गा रेलवे स्टेशनक पुरान स्वरूपक चित्रात्मक वर्णन अछि—पातर अलकतरा बिछाएल बड़का प्लेटफार्म, कलकत्ता-मोडलक कड़काले पुल, लाल मगजी लागल बेंतक पंखा घिचनिहार कुल्ली आ पसिंजरसभक कोलाहल। तदुपरान्त, दड़िभङ्गा महाराजक ‘नौलखा दरबार’ (राजनगर एवं दरभंगाक लाल दरबार), हथिसार, घोड़सार, कचहरी, आ हड़ाहा/हड़ाही पोखरिक घाटक विस्तृत अंकन पाठककें तत्कालीन मिथिलाक जीवन्त इतिहासमे ल' जाइत अछि। ऐतिहासिक 'हड़ाही पोखरि'कें महाभारतक खधियासँ जोड़ि मिथक आ यथार्थकें एकाकार क' देल गेल अछि।

मैथिली अनुवादमे मिथिलाक पारम्परिक भोजन आ आतिथ्यक सुगन्ध व्याप्त अछि। मोदिआइनक दोकानमे पातर पितरिया थारीमे फुलाएल चूड़ा, छाँछिक दही, गुड़, पेंड़ा-लड्डू, दूध-भात, आ चुल्हिपर ताजा तड़ल 'भाँटाक तरुआ'क वर्णन अत्यन्त रसमय आ सांस्कृतिक यथार्थसँ परिपूर्ण अछि। मोदिआइनक शारीरिक सौन्दर्य आ वेशभूषाक वर्णन मिथिलाक ठेठ नारीक साक्षात रूप उपस्थित करैत अछि। ओकर पहिरन—ढोढ़ीसँ उपरेक बिना बटमबला बड़का गलाक 'छिटक बलाउज', एगारह हाथक 'नील साड़ी', कान-गड़-पएरमे 'चाकर-चाकर चानीक गहना', बाँहिमे 'बाजुबन्द' आ बेर-बेर फुजैत 'खोपा'—एहि उपन्यासकें एकटा दृश्य-काव्य जकाँ सजीव बना दैत अछि।

अनुवादक वृषेश चन्द्र लाल मैथिलीक अत्यन्त जीवन्त, प्रामाणिक आ समृद्ध देशज/ठेठ शब्दावलीक प्रयोग कएने छथि, जे अनुवादकें मौलिकता प्रदान करैत अछि। विशिष्ट शब्दावलीक प्रयोग जेना 'गहिंकी' (ग्राहक), 'असोराक ओरीयानी' (ओसाराक ओरी), 'भानस' (रसोई), 'कोंचिया' (धोतीक खोंछा), 'बौअइनी' (भ्रमण), 'सुरआएल' (लयबद्ध), 'डबड़ा' (छोट पोखरि), 'खधिया' (खाद्य/गढ़ा), 'कवन्ध' (बिना माथक धड़), 'कचरमबध' (नरसंहार), आ 'झपलाइत' (औंधानाय) एहि पोथीक साहित्यिक गरिमाकें आओर उच्च करैत अछि। भाषाक ई ठेठपन उपन्यासक ग्रामीण आ सीमान्तकृत परिवेशकें आओर बेसी प्रामाणिक बनबैत अछि।

११.२ ध्वनि-संरचना, दृश्यात्मकता आ वाक्य-लय

मैथिली रूपान्तरणक पाठ्य-सौन्दर्यक पहिल आधार बोलचालक सहजता अछि। 'बौआ', 'मोटरी', 'ठेही', 'कात', 'गाम', 'मितिन', 'खिस्सा', 'चूरा-दही', 'भोर', 'घुरि', 'बौआइत' सन शब्द मात्र स्थानीय रंग नहि देत; ई कथनक सामाजिक निकटता बनबैत अछि। बालक,

मिसिरजी, मोदिआइन आ ग्रामीण स्त्रीसभक भाषा पुस्तक-प्रसूत औपचारिकता सँ मुक्त अछि। तकर विपरीत कृष्ण-अर्जुनक प्रसंगमे धर्म, निष्काम कर्म, स्थितप्रज्ञ, परमब्रह्म, ईश्वर, कर्तव्य सन तत्सम पद घन होइत अछि। एहि शैलीगत द्विस्वरताकेँ संयोग मात्र नहि मानल जा सकैत अछि: घरेलू मानवीय वाणी आ शास्त्रीय देववाणी स्वयं भाषिक स्तरपर आमने-सामने ठाढ़ भ' जाइत अछि।

दृश्यात्मकता सेहो उल्लेखनीय अछि। रेलगाड़ी, स्टेशनक पुल, लाल दरबार, पोखरिक अन्हार, डिबियाक छाया, युद्धक चमकैत कवच, धूलि, रक्त, गिद्ध—लेखक कैमरा-जकाँ दूरी आ कोण बदलैत छथि। विशेषतः रात्रिक अंशमे प्रकाश-अन्हारक विरोध बच्चाक मनोस्थिति नियंत्रित करैत अछि। ध्वनि—‘छपाक’, शंख, नगाड़ा, खाँसी, रेल, ‘कच...कच...’—दृश्यकेँ देहधारी अनुभवमे बदलैत अछि।

वाक्य-विन्यासमे अनेक ठाम दीर्घ, आवेगपूर्ण, पुनरुक्तिपूर्ण प्रवाह अछि। युद्ध आ शोकक समय ई प्रवाह भावनात्मक अतिरेक रचैत अछि; बाल संवादमे वाक्य छोट आ द्रुत होइत अछि। शैली विषयानुरूप गति बदलैत अछि। कृतिक लघु आकार असून कथा-समय विशाल बनबाक मुख्य कारण इएह लय-विविधता थिक।

१२. अनुवाद-सिद्धान्तक आलोकमे वृषेश चन्द्र ललक रूपान्तरण

पोथी स्वयं ‘अनुवाद’क बदला ‘मैथिली रूपान्तरण’ शब्द प्रयोग करैत अछि। ‘रूपान्तरण’ संकेत करैत अछि जे लक्ष्य केवल मूल वाक्यक शब्दगत प्रतिरूप नहि, बल्कि मैथिलीमे कृतिक पुनर्जीवन अछि। उपलब्ध संस्करणक परिपाठमे रूपान्तरकार अपन प्रेरणाक केन्द्र बी. पी. क. गीता-दृष्टि, मानवत्व-देवत्वक भेद आ ‘नीक लोक’ बनबाक शिक्षा केँ मानैत छथि। तँ लक्ष्यपाठक कार्य नैतिक-सांस्कृतिक संप्रेषण सेहो अछि।

१२.१ भाषिक निकटता आ ‘भगिनी-भाषिक स्थानान्तरण’

नेपाली आ मैथिली दूनू भारोपीय भाषा-परिवारक इन्डो-आर्य शाखाक निकटवर्ती सदस्य छथि, आ नेपाल-भारतक सीमावर्ती (विशेषतः जनकपुर-दरभंगा) क्षेत्रमे शताब्दीयोसँ सांस्कृतिक-भाषिक आदान-प्रदान होइत रहल अछि — बी.पी. कोइराला स्वयं मिथिलाक्षेत्रसँ जुड़ल छथि आ हुनक बाल्यकालक स्मृति दरभंगा-जनकपुरक बीचक अछि, जे एहि पाठकेँ एकटा

स्वाभाविक ‘घर-वापसी’क अनुवाद बनबैत अछि। एहि भाषिक-सांस्कृतिक निकटताक कारणेँ ई अनुवाद ओहन ‘दूर-भाषिक अनुवाद’ (जेना अंग्रेजी-मैथिली) सन जटिल सांस्कृतिक-प्रतिस्थापनक समस्यासँ ग्रस्त नहि अछि, बल्कि एकटा ‘भगिनी-भाषिक स्थानान्तरण’ (sister-language transposition) क रूप लैत अछि — जतय कथावस्तु, प्रतीक, आ सांस्कृतिक कोड (महाभारत, गीता, हिन्दू कर्मकाण्ड, मिथिलाक्षेत्रीय भूगोल) दूनू भाषा-समुदायमे साझा छथि।

१२.२ देशीकरणक रणनीति आ अर्थ-केन्द्रित रूपान्तरण

भेनुतीक शब्दावलीमे कहल जाय तँ वृषेश चन्द्र लालक रूपान्तरण स्पष्ट रूपेँ ‘देशीकरण’क रणनीति अपनबैत अछि — अर्थात् स्रोत-पाठकेँ लक्ष्य-भाषाक पाठकक लेल एहन सहज बना देनाइ जे ओ अनूदित नहि, मौलिक कृति जकाँ प्रतीत होअय। भूमिका-लेखक डा. राजेन्द्र प्रसाद ‘विमल’ स्वयं एहि तथ्यक साक्षी दैत लिखने छथि: ‘मूल उपन्यास हम दूबैसार पढ़ने रही, ई अनुवाद एक्किह साँसमे पढ़ने बिना नहि रहल गेल। मैथिली भाषाक प्रकृति अनुकूल भाषाशैलीक प्रयोगक कारणेँ ई अनुवाद जकाँ नहि, मौलिक कृति जकाँ रसाप्लावित करैत अछि।’ एहि कथनसँ स्पष्ट होइत अछि जे अनुवादकक लक्ष्य पठनीयता (readability) आ भावात्मक तादात्म्य (emotional immediacy) रहल, नहि कि शब्दशः निष्ठा।

देशीकरणक ठोस प्रमाणसभ पाठमे यत्र-तत्र भेटैत अछि — जेना संवादसभमे विशुद्ध मैथिली सम्बोधन-शैली (‘बौआ’, ‘हे रौ’, ‘कहाँदोन’), मैथिली लोकोक्तिक प्रयोग (‘देखनमे छोटन लगए, घाव करए गंभीर’ जकाँ शैली), आ आज्ञालिक क्रिया-रूपसभ (‘छैक’, ‘अछि’, ‘रहए’, ‘कएलन्हि’ आदि क्रिया-विभक्ति) क सहज प्रयोग — ई सभ मूल नेपाली वाक्य-रचनाकेँ मैथिली वाक्य-विन्यास आ मुहावराक साँचामे पूर्णतः ढारि देल गेल अछि। एहि क्रममे अनुवादक शाब्दिक अनुवाद (word-for-word) नहि, अपितु अर्थ-केन्द्रित अनुवाद (sense-for-sense) — जे सिसेरो आ सेण्ट जेरोमक शास्त्रीय द्वैधसँ लऽ कऽ नाइडाक ‘गतिशील तुल्यता’ (dynamic equivalence) धरि अनुवाद-सिद्धान्तक मूल आधार रहल अछि — केँ अपनौने छथि।

१२.३ नाइडा : गतिशील/कार्यात्मक समतुल्यता

यूजीन नाइडा ‘औपचारिक’ समतुल्यता सँ अलग लक्ष्यपाठक पर स्वाभाविक, तुलनीय प्रभाव उत्पन्न करबाक ‘गतिशील’ वा पछिला शब्दावलीमे ‘कार्यात्मक’ समतुल्यता पर बल दैत छथि। मैथिली पाठक लेल ‘मोदिआइन’क संवाद अत्यन्त सहज सुनाइत अछि; कथावाचकक बाल-

बोली, स्त्रीसभक अपनापा, घरेलू भोजन, स्थानीय सम्बोधन आ ग्रामीण शब्द-संसार अनूदित वाक्यक काठिन्य नहि देत। डा. राजेन्द्र प्रसाद 'विमल' आमुखमे एकरा एहि हद तक स्वाभाविक मानैत छथि जे अनुवाद-जकाँ नहि, मौलिक कृति-जकाँ रस देत। ई ग्रहण-साक्ष्य लक्ष्यपाठक स्वाभाविकताक मजबूत प्रमाण अछि।

१२.३.१ पाठिय उदाहरण

नेपाली मूल (अनुमानित भाव)	मैथिली रूपान्तरण (वृषेश चन्द्र लाल)	अनुवादक विशेषता (Equivalence)
ठूला मानिस थरीथरीका हुन्छन्, असल मानिस भने एकथरीका मात्र हुन्छन्।	बड़का आदमीसभ नहि जानि कतेक किसिमक होइत अछि? मुदा नीक आदमी सभतरि एक्के प्रकारक भेटत।	गत्यात्मक समतुल्यता, मैथिलीक स्वाभाविक प्रवाहमयी संरचना।
जाडो/चिसो	सुसुम स्पर्श	सांस्कृतिक अनुकूलन (Contextual trans-creation)।
रुनु / क्रन्दन	वेदाअलि छटपटाइति बौआइति	संवेगात्मक तीव्रता (Intensification of emotion)।

१२.४ न्यूमार्क : अर्थप्रधान आ संप्रेषणप्रधान अनुवादक संतुलन

पीटर न्यूमार्कक 'semantic' आ 'communicative' अनुवादक भेद एहि पाठमे उपयोगी अछि। घरेलू संवाद, दृश्यवर्णन आ लोककथात्मक अंश संप्रेषणप्रधान प्रतीत होइत अछि—मैथिली वाक्य ओहि रूपमे बहैत अछि जेना कथा आरम्भसँ मैथिलीमे कहल गेल हो। मुदा गीता, दार्शनिक पदावली आ संस्कृत श्लोकक निकट पहुँचैत लक्ष्यपाठ स्रोत-संस्कृतिक गम्भीरता आ पारिभाषिकता बचबैत अछि। एहि दोहरा रणनीतिसँ भावनिक निकटता आ दार्शनिक स्मृति दुनू सुरक्षित रहैत अछि।

१२.५ वेन्यूटी : घरेलूकरण, परकीकरण आ सांस्कृतिक प्रत्यावर्तन

लॉरेन्स वेन्यूटी अनुवादमे ‘domestication’ आ ‘foreignization’क तनावक चर्चा करैत छथि। ‘मोदिआइन’क मैथिली मामला सामान्य उदाहरणसँ भिन्न अछि, कारण मूल रचनाक मुख्य वर्तमान-फ्रेम स्वयं दरभंगा-मिथिलामे अछि। अतः मैथिलीमे स्थानीय शब्द-संसारक सक्रियता केवल विदेशी पाठकें घरेलू बनौनाइ नहि; ई कथाकें ओकर भौगोलिक-सांस्कृतिक ध्वनि फेर देनाइ—एक प्रकारक पुनर्स्थापन वा घर-वापसी—अछि। दोसरे दिस संस्कृत गीता-श्लोक, दार्शनिक पद आ महाभारतीय नाम-रूप ज्यों-क-त्यों सांस्कृतिक दूरी/पवित्रता बचबैत अछि। तैं ई पाठ पूर्ण घरेलूकरण नहि, चयनात्मक घर-वापसी आ चयनात्मक परकीकरणक मिश्रित रूप थिक।

विशेष रूपें ध्यान देबाक जोग बात अछि जे मूल नेपाली कथाक भौगोलिक केन्द्र दरभंगा (भारतक मिथिलाक्षेत्र) मे स्थित अछि, अर्थात् मूल पाठ स्वयं मैथिली-भाषी क्षेत्रक विवरणसँ भरल अछि। एहन स्थितिमे अनुवादकक कार्य ‘विदेशी’ सांस्कृतिक तत्त्वकें आत्मसात् करब नहि, अपितु मूलतः मैथिली-सांस्कृतिक परिवेशमे नेपाली भाषामे लिखल एकटा वृत्तान्तकें पुनः ओकर ‘मूल भाषिक घर’ मे प्रत्यावर्तन (repatriation) कराएब छल। एहि दृष्टिँ ‘मोदिआइन’क मैथिली रूपान्तरण अनुवाद-सिद्धान्तक एकटा विशिष्ट आ विरल उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि — जकरा हम ‘सांस्कृतिक प्रत्यावर्तनात्मक अनुवाद’ (repatriative translation) क संज्ञा दऽ सकैत छी, जतय अनुवादक कार्य नव संस्कृतिक परिचय देनाइ नहि, अपितु मूलतः स्वदेशी सामग्रीकें ओकर सहज भाषिक अभिव्यक्ति वापस लौटाएब थिक।

संस्कृत गीता-श्लोक (‘नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि...’) कें अनुवादक ज्यों-का-त्यों (untranslated, foreignized) रूपमे राखि देनाइ सेहो एकटा सचेत सैद्धान्तिक निर्णय अछि — ई भेनुतीक ‘विदेशीकरण’क एकटा नमूना थिक, जतय स्रोत-भाषाक (एतय संस्कृतक) प्रामाणिकता आ पवित्रताकें अक्षुण्ण राखल गेल अछि, कारण गीता-श्लोक हिन्दू सांस्कृतिक चेतनामे एकटा ‘पवित्र मूल-पाठ’ (sacred original) क रूपमे स्थापित अछि जकर अनुवाद सांस्कृतिक रूपें अनुचित मानल जाइत। एहि प्रकारें अनुवादक एकहि कृतिमे देशीकरण (सामान्य आख्यान-भाग) आ विदेशीकरण (शास्त्रीय उद्धरण) दूनों रणनीतिकें सन्दर्भ-अनुसार व्यवहारमे आनि एकटा सन्तुलित (‘hybrid’) अनुवाद-नीति अपनौने छथि।

१२.६ टूरी : लक्ष्य-सांस्कृतिक मानदण्ड

गिडियन दूरीक वर्णनात्मक अनुवाद-अध्ययन लक्ष्य-संस्कृतिमे स्वीकार्यता पर ध्यान दैत अछि। मैथिली रूपान्तरण बोलचाल, सम्बोधन, क्रिया-रूप, खाद्य-संस्कृति आ मिथिलाक स्थानीकृत शब्दावलीक माध्यमसँ लक्ष्यभाषाक मानदण्डकेँ प्राथमिकता दैत देखाइत अछि। एहि कारण कथाक ‘वाणी’ अनूदित नहि, घरेलू लगैत अछि। लक्ष्य-संस्कृतिक स्वीकार्यता विशेष रूपेँ आवश्यक छल, कारण कथा स्वयं मौखिक स्मृति आ बालकक सुननाइ पर निर्भर अछि; कृत्रिम भाषा कथा-कौशलकेँ तुरन्त नष्ट क’ दैत।

१२.७ स्कोपोस : अनुवादक उद्देश्य

स्कोपोस सिद्धान्त अनुसार अनुवादक रणनीति ओकर उद्देश्यसँ जाँचल जाए। परिपाठमे रूपान्तरकारक उद्देश्य स्पष्ट अछि: मैथिलीभाषी समाजकेँ बी. पी.क चर्चित कृतिक रसास्वादन करौनाइ, मिथिलासँ जुड़ल कथा केँ मैथिलीमे उपलब्ध करौनाइ, आ ‘नीक’ मनुष्य बनबाक नैतिक शिक्षाकेँ पुनः संचारित करनाइ। एहि उद्देश्यक दृष्टि सँ स्थानीय, सहज, पाठ्य आ श्रव्य-संवेदनशील मैथिली चयन पूर्णतः युक्तिसंगत अछि।

१२.८ लेफेवेर आ पुनर्लेखन : अनुवादक संग परिपाठक शक्ति

आन्द्रे लेफेवेर अनुवादकेँ ‘rewriting’ अर्थात साहित्यिक प्रतिष्ठा, चयन, विचारधारा आ संरक्षक संस्थाक प्रभाव सँ जुड़ल पुनर्लेखन मानैत छथि। एहि संस्करणमे प्रकाशकीय मन्तव्य, आचार्य सोमदेव आ डा. ‘विमल’क आमुख, रूपान्तरकारक कृतज्ञता, लेखक/रूपान्तरकार परिचय—ई सभ पाठककेँ पहिनेसँ बतबैत अछि जे कृतिकेँ मानवतावादी, युद्धविरोधी, मिथिला-संबद्ध आ ऐतिहासिक उपलब्धि जकाँ पढ़ू। अनुवादक कृति मात्र नहि लबैत छथि; हुनका संग एकटा ग्रहण-परिसर सेहो रचैत छथि। ई परिपाठ मैथिली साहित्यिक प्रणालीमे बी. पी.क पुनःस्थापन करैत अछि।

१२.९ बहुप्रणाली : नेपाली सँ मैथिली साहित्यिक परिसंचरण

इतामार इवन-जोहरक बहुप्रणाली दृष्टि अनुसार अनूदित साहित्य लक्ष्य साहित्यक विकास, विधागत प्रयोग आ अन्तर्भाषिक परिसंचरणमे सक्रिय भूमिका निभा सकैत अछि। ‘मोदिआइन’क मैथिली रूपान्तरण भारत-नेपाल सीमा पार करैत नेपाली साहित्यक एक प्रसिद्ध कृतिकेँ मैथिली साहित्यिक क्षेत्रमे प्रवेश करबैत अछि; संगहि कथा-भूगोल मिथिलामे भेलाक

कारण ई एकतरफा 'आयात' नहि, बल्कि साझा सांस्कृतिक क्षेत्रक पुनः परिसंचरण थिक। एहि दृष्टिसँ अनुवाद मैथिली पाठककेँ नेपाली आधुनिकताक दार्शनिक प्रयोगसँ जोड़ैत अछि आ नेपाली पाठपर मैथिली भूगोलक स्वामित्व-बोध सेहो पुनर्स्थापित करैत अछि।

१२.१० अनुवादकक दृश्यता, वैचारिक निकटता आ पाठालोचनात्मक सम्भावना

आमुख-लेखसभमे (आचार्य सोमदेव, डा. विमल) एहि तथ्यपर बल देल गेल अछि जे वृषेश चन्द्र लाल राजनीतिक रूपेँ बी.पी. कोइरालाक विचारधाराक अनुयायी छथि — ई तथ्य अनुवाद-अध्ययनक 'अनुवादकक अदृश्यता बनाम दृश्यता' (invisibility vs. visibility) क बहसमे प्रासंगिक अछि। यद्यपि भाषिक स्तरपर अनुवादक अपनाकेँ 'अदृश्य' बनेबाक (अर्थात् पाठ मौलिक जकाँ लागय एहन) सफल प्रयास कएने छथि, तथापि वैचारिक स्तरपर हुनक चयन (कोन-कोन अंशकेँ बल देल गेल, आमुखमे कोन व्याख्या प्रस्तुत कएल गेल) स्पष्टतः एकटा 'दृश्य', वैचारिक रूपेँ संलग्न अनुवादकक उपस्थिति देखबैत अछि — जे अनुवादकेँ तटस्थ भाषिक स्थानान्तरणसँ आगू बढ़िकऽ एकटा वैचारिक पुनर्पाठ (ideological re-reading) बनबैत अछि।

डा. रामदयाल राकेशक स्वतन्त्र मैथिली रूपान्तरण, वृषेश चन्द्र लालक मैथिली रूपान्तरण आ रञ्जना शर्माक हिन्दी 'मोही'क समानान्तर पाठालोचना भाषा-विशेष आ अनुवादक-विशेषक सांस्कृतिक निर्णय—जेना संवाद-शैली, सम्बोधन आ गीता-श्लोकक व्यवहार—केँ तुलनात्मक रूपेँ स्पष्ट कऽ सकैत अछि।

१२.११ सिद्धान्तीय समेकन-सार

सिद्धान्त/ विचारक	एहि रूपान्तरणमे लागू पक्ष	समालोचनात्मक निष्कर्ष
नाइडा	लक्ष्यपाठक स्वाभाविकता, संवादक प्रभाव	कार्यात्मक समतुल्यताक प्रबल झुकाव
न्यूमार्क	लोक-भाषामे संप्रेषण, दर्शनमे अर्थ-संरक्षण	दूर रणनीतिक संतुलन

सिद्धान्त/ विचारक	एहि रूपान्तरणमे लागू पक्ष	समालोचनात्मक निष्कर्ष
वेन्यूटी	स्थानीय मैथिली स्वर + संस्कृत शास्त्रीय पद	चयनात्मक घरेलूकरण/परकीकरण; सांस्कृतिक घर-वापसी
टूरी	मैथिली भाषिक-सांस्कृतिक मानदण्ड	लक्ष्य-संस्कृतिमे उच्च स्वीकार्यता
स्कोपोस	मैथिली पाठक हेतु उपलब्धता आ नैतिक संप्रेषण	उद्देश्य-संगत भाषिक चयन
लेफेवेर	आमुख, कृतज्ञता, वैचारिक फ्रेम	अनुवाद संग साहित्यिक पुनर्लेखन
बहुप्रणाली	नेपाली-मैथिली परिसंचरण	सीमापार साहित्यिक प्रणालीक संवाद

१३. रूपान्तरणक प्रमुख उपलब्धि, सीमा आ पाठालोचनात्मक प्रश्न

- मैथिली बोलीक स्वाभाविक प्रवाह: संवाद पढ़ैत समय “अनुवादित” वाक्यक कठोरता बहुत कम अनुभूत होइत अछि।
- स्थानीय सांस्कृतिक पुनर्स्थापन: दरभंगा, हड़ाहा, चूड़ा-दही, एक्का, गाम-जीवन, सम्बोधन आ लोक-ध्वनि मैथिलीमे अपन स्वाभाविक गृह पबैत अछि।
- मौखिकता संरक्षित: मोदिआइनक कथा-कहबाक लय, बालकक प्रश्न, “बौआ” सम्बोधन, भय आ नींदक क्रम सुचारु अछि।
- दार्शनिक पदक गरिमा: गीता-संबंधी तत्सम पदावली आ संस्कृत श्लोककें अत्यधिक बोलचालमे घोइल नहि देल गेल अछि।
- भावनिक टोनक विस्तृत व्याप्ति: हास्य, कौतुक, घरेलू स्नेह, भय, प्रणय, शोक, दार्शनिक प्रतिवाद आ युद्धक वीभत्सता—सभकें अलग भाषिक रंग भेटैत अछि।

- लक्ष्य साहित्यिक संपदा-वृद्धि: नेपाली आधुनिक लघु-उपन्यासक एक विशिष्ट मिथकीय-मानवतावादी प्रयोग मैथिली पाठक लेल उपलब्ध भ' गेल।

पहिल सीमा तुलनात्मक अछि: नेपाली मूलपाठ बिना शब्दस्तरीय निष्ठा, वाक्य-विन्यासक बदलाब, रूपकक संरक्षण, विलोपन-परिवर्धन वा अर्थ-स्खलनक निर्णायक परीक्षण सम्भव नहि। अतः लक्ष्यपाठक सहजता केँ 'पूर्ण निष्ठा'क पर्याय मानब अनुचित होएत। एकरा सफल लक्ष्यपाठ जरूर कहल जा सकैत अछि; स्रोतपाठीय सूक्ष्म निष्ठाक निष्कर्ष लेल समांतर नेपाली पाठ आवश्यक अछि।

दोसर, अत्यधिक स्थानीय सहजता—जे एहि रूपान्तरणक शक्ति अछि—कखनो स्रोतक ऐतिहासिक वा भाषिक दूरी कम क' सकैत अछि। मुदा एहि कृतिक विशेष परिस्थिति मे ई जोखिम सीमित बुझाईत अछि, कारण कथाक वर्तमान-फ्रेम स्वयं मिथिलामे स्थित अछि। तेसर, परिपाठीय आमुख सभ कृतिक मानवतावादी/युद्धविरोधी अर्थ बहुत स्पष्ट रूपेँ पहिनेसँ घोषित करैत अछि। एहि सँ पाठक स्वतंत्र वैकल्पिक व्याख्याक पहिने एक प्रबल दिशा पबैत अछि। आलोचनात्मक संस्करणमे कृति आ परिपाठक बीच अधिक दूरी रखनाइ उपयोगी भ' सकैत छल।

मैथिली रूपान्तरणकेँ केवल मूल नेपाली रचनाक माध्यमिक प्रतिलिपि जकाँ नहि पढ़ल जाउ। एहि संस्करणमे भाषा स्वयं अर्थ पैदा करैत अछि। दरभंगा-मिथिला जे मूलक कथाभूमि अछि, मैथिलीमे आबि स्थानीय ध्वनि, सम्बोधन, खाद्य-संस्कृति आ मौखिक लय फेर सक्रिय करैत अछि। तँ अनुवादक भूमिका 'पुल' मात्र नहि, सांस्कृतिक पुनर्ग्रहणक भूमिका सेहो अछि। एहि बिन्दुपर अनुवाद-अध्ययन 'मोदिआइन'क साहित्यिक आलोचनामे एक नवा प्रवेशद्वार खोलैत अछि।

१५. कृतिक मुख्य प्रतीक आ ओकर अर्थ

1. हड़ाहा पोखरि — दबिल इतिहास, हड्डी, सामूहिक स्मृति, शोक आ मिथकक जलाशय।
2. अन्हार/डिबिया — बाल भय आ चेतन-अचेतनक सीमा; यथार्थ सँ स्वप्नक प्रवेशद्वार।

3. रेल — बाहरी यात्रा संग आन्तरिक नैतिक परिवर्तन; दरभंगा सँ जयनगर वापसी पर बदलल चेतना।
4. गिद्ध/शृगाल/कुकुर — युद्धक 'वीर' भाषाकेँ शवक जैविक यथार्थमे उतारनिहार प्रतिविम्ब।
5. गाण्डीव — व्यक्तिगत विवेक आ वैचारिक आज्ञापालनक बीच बदलैत स्थिति।
6. गीता-ध्वनि — धर्मग्रन्थक प्रतिष्ठा आ नारीक मानवीय प्रतिप्रश्नक सतत तनाव।
7. “नीक लोक” — कृतिक आरम्भ-अन्त बाँधनिहार नैतिक सूत्र; महत्ता/वीरताक विकल्प।

१६. शैलीगत कसौटी पर समग्र मूल्यांकन

कथासंयोजनक दृष्टि सँ ‘मोदिआइन’ अत्यन्त सफल अछि। स्मृति-फ्रेम, यात्रा, स्थानीय यथार्थ, लोककथा, स्वप्न, महाभारत आ वापसी अलग-अलग टुकड़ा नहि, क्रमशः गहिराइ दिस उतरैत वृत्त जकाँ रचल गेल अछि। पात्र-संख्या महाभारतीय खण्डमे विशाल अछि, मुदा भावनात्मक केन्द्र मोदिआइन/नारी आ बालक पर स्थिर रहबाक कारण कथा बिखरैत नहि।

दार्शनिक दृष्टि सँ कृति जानि-बूझि एकपक्षीय भाव-तीव्रता अपनबैत अछि। कृष्णक तर्कक विरुद्ध नारीक करुणा केँ अधिक नैतिक ऊँचाइ देल गेल अछि; एतय ‘निष्पक्ष दार्शनिक विमर्श’ नहि, कलात्मक नैतिक हस्तक्षेप अछि। साहित्यिक कृति लेल ई दोष अनिवार्य नहि; उलटे एहि पक्षधरता सँ प्रश्न तीखा होइत अछि। मुदा पाठककेँ बुझबाक चाही जे गीता-दर्शनक सम्पूर्ण बहस एहि लघु उपन्यासक लक्ष्य नहि।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि सँ बाल-स्मृति, भय, अर्द्धनिद्रा, आवाज आ दृश्य-विलयनक संयोजन उत्कृष्ट अछि। सामाजिक दृष्टि सँ इन्द्रप्रस्थ निर्माणक विस्थापन, बेरोजगारी, श्रम, स्त्री-जीवन आ युद्धक घरेलू लागत कृतिक आधुनिकता सिद्ध करैत अछि। लैङ्गिक दृष्टि सँ स्त्रीक अनुभवक केन्द्रीयकरण ऐतिहासिक महत्त्व रखैत अछि, यद्यपि ‘स्वाभाविक नारित्व’क धारणा पर समकालीन आलोचना जरूरी अछि।

मैथिली रूपान्तरणक दृष्टि सँ पाठकक सबसे बड़ा लाभ ई अछि जे कृति अपन भूगोलक बोली-संवेदना पबैत अछि। एहि अर्थमे वृषेश चन्द्र ललक काम साहित्यिक अनुवादक ओहि उच्च कसौटी पर ठाढ़ देखाइत अछि जतय लक्ष्यभाषा मूलक छाया नहि, अपन जीवित साहित्यिक

देह बनैत अछि। तथापि वैज्ञानिक स्रोत-लक्ष्य तुलना लेल नेपाली मूलक समांतर अध्ययन आगामी शोधक आवश्यक चरण रहत।

१७. निष्कर्ष एवं समकालीन सार्थकता

बी. पी. कोइराला कृत आ वृषेश चन्द्र लाल द्वारा मैथिलीमे अनूदित ‘मोदिआइन’ एकटा लघु कलेवरक (मात्र ४२ पृष्ठक) उपन्यासिका होइतो वैचारिक, दार्शनिक आ साहित्यिक दृष्टिसँ एकटा महाकाव्यात्मक गाम्भीर्य रखैत अछि। ई केवल एकटा पौराणिक कथाक पुनराख्यान नहि अछि, अपितु ई युद्धक विभीषिका, दैवत्वक नामपर मानवताक संहार आ सीमान्तकृत वर्ग (विशेषतः नारी) क त्रासदीक एकटा कठोर आ निर्मम मनोवैज्ञानिक दस्तावेजीकरण थिक।

‘मोदिआइन’क वास्तविक शक्ति ओकर वैचारिक साहसमे जतेक अछि, ततेक ओकर कथन-कौशलमे। जँ ई मात्र ‘युद्ध खराब अछि’ कहैत, त कृति उपदेश बनि जाइत। जँ ई मात्र गीता-विरोधी तर्क रखैत, त दार्शनिक पर्चा बनि जाइत। मुदा कोइराला एक बच्चा, एक स्नेहमयी स्त्री, एक अन्हार पोखरि, एक रात्रिक खिस्सा, एक विस्थापित परिवार, एक प्रेमपूर्ण विवाह, एक भयभीत स्त्रीसमूह आ अन्ततः शवसँ भरल कुरुक्षेत्रक माध्यमसँ अमूर्त प्रश्नकेँ देह, आवाज, गन्ध आ स्मृति दैत छथि। एहि कारण विचार कथा सँ अलग नहि रहैत; कथा स्वयं विचार बनि जाइत अछि।

कृति महाभारतकेँ छोट करैत नहि; ओ ओकरा दोसर कोणसँ विशाल बनबैत अछि। राजा आ देवताक इतिहासक बगलमे अनाम लोकक इतिहास जोड़ैत अछि। अर्जुनक करुणा, नारीक भय, विधवाक प्रतीक्षा आ बच्चाक नैतिक शिक्षा मिलि कहल जाइत अछि जे मानवता धर्म, वीरता वा महत्ताक विरोधी नहि, बल्कि हुनका सभक अंतिम कसौटी थिक। जँ कोनो ‘महान’ कर्म लाखों सामान्य जीवनकेँ अर्थहीन करैत अछि, त ओकर महत्ता पुनः जाँचल जाए—ई कृतिक सबसे कठिन प्रश्न अछि।

मैथिली रूपान्तरण एहि प्रश्नकेँ मिथिलाक पाठक-संसारमे अत्यन्त स्वाभाविक आवाज देत अछि। वृषेश चन्द्र लाल लक्ष्यभाषाक घनिष्ठता, बोलचालक लय, स्थानीय सांस्कृतिक पदार्थ आ दार्शनिक पदावलीक गरिमा केँ संतुलित करैत छथि। अनुवाद-सिद्धान्तक दृष्टि सँ ई कार्यात्मक समतुल्यता, संप्रेषणीयता, लक्ष्य-संस्कृतिक स्वीकार्यता, उद्देश्यपरकता आ साहित्यिक

पुनर्लेखनक सफल उदाहरण बनैत अछि; साथहि दरभंगा-कथाभूमिक कारण एकरा ‘सांस्कृतिक घर-वापसी’ कहब विशेष रूपेँ सार्थक अछि।

समकालीन विश्वमे जखन विभिन्न क्षेत्रमे युद्ध, जातिसंहार आ अहङ्कारसँ भरल संहारक विभीषिका पसिरल अछि, तखन ‘मोदिआइन’क मानवतावादी पुकार आओर बेसी प्रासंगिक भ’ उठैत अछि। वृषेश चन्द्र लालक ई मैथिली अनुवाद नेपाली आ मैथिलीक सांस्कृतिक-साहित्यिक सेतुकेँ सुदृढ़ करबाक सङ्ग-सङ्ग मैथिली आख्यान साहित्यक एकटा अमूल्य निधि सिद्ध भेल अछि, जे अपन गत्यात्मक समतुल्यता आ आज्जलिक भाषा-शैलीक लेल युग-युगान्तर धरि पढ़ल आ शोध कएल जाइत रहत।

उपन्यासक अन्तिम वाक्य—“बौआ, बड़का बनब, कहियो वीर बनक प्रयत्न नहि करब। नीकलोक बनब, नीक... बढ़ियाँ!”—सम्पूर्ण मानव जातिक लेल एकटा शाश्वत उपनिषदिक महावाक्य बनि जाइत अछि। ई गान्धीवादी शान्ति आ मानव कल्याणक मूल मन्त्र थिक।

ग्रन्थ-सूची

कोइराला, बी. पी. मोदिआइन। मैथिली रूपान्तरण: वृषेश चन्द्र लाल। जनकपुरधाम: सुदामा प्रकाशन, २०६१ साल।

नाइडा, यूजीन ए. Toward a Science of Translating. Leiden: E. J. Brill, 1964.

नाइडा, यूजीन ए., आ चार्ल्स आर. टेबर। The Theory and Practice of Translation. Leiden: E. J. Brill, 1969.

न्यूमार्क, पीटर। A Textbook of Translation. New York: Prentice Hall, 1988.

कैटफोर्ड, जे. सी. A Linguistic Theory of Translation. London: Oxford University Press, 1965.

बैसनेट, सुसान। Translation Studies. London/New York: Routledge, 1980; later editions.

टूरी, गिडियन। Descriptive Translation Studies and Beyond. Amsterdam/Philadelphia: John Benjamins, 1995.

वेन्यूटी, लॉरेन्स। The Translator’s Invisibility: A History of Translation. London/New York: Routledge, 1995.

लेफेवेर, आन्द्रे। Translation, Rewriting, and the Manipulation of Literary Fame.

London/New York: Routledge, 1992.

6. सुम्निमा

विश्वेश्वरप्रसाद कोइरालाक “सुम्निमा”क मैथिली रूपान्तरणक

गहन साहित्यिक आ अनुवाद-सैद्धान्तिक समीक्षा

मैथिली रूपान्तरण : वृषेश चन्द्र लाल

आलोचनात्मक अध्ययन : साहित्य · मनोविश्लेषण · संस्कृति · अनुवाद सिद्धान्त



शोधपरक समीक्षा

अगस्त २०२६

सारांश

ई समीक्षा विश्वेश्वरप्रसाद कोइरालाक ‘सुम्निमा’क वृषेश चन्द्र लाल कृत मैथिली रूपान्तरणकें साहित्यिक, मनोविश्लेषणात्मक, समाजशास्त्रीय, जातीय, नारीवादी, पारिस्थितिक आ अनुवाद-सैद्धान्तिक दृष्टिसँ पढ़ैत अछि। अध्ययन देखबैत अछि जे कृतिक केन्द्रीय तनाव देह बनाम आत्माक साधारण द्वैत नहि, बल्कि सांस्कृतिक शुद्धता बनाम मानवीय सहअस्तित्वक प्रश्न अछि। सोमदत्तक देह-दमन, सुम्निमाक अनुभवजन्य जीवनबोध, पुलोमाक दाम्पत्यगत पीड़ा आ अगिला पीढ़ीक मिश्रित सांस्कृतिक सम्बन्ध मिलि ‘शुद्ध’ पहचानक असम्भवताकें उद्घाटित करैत अछि। मैथिली रूपान्तरणक मूल्यांकन नाइडा, न्यूमार्क, वेनूटी, कैटफर्ड, बासनेट, टूरी आ स्कोपोसपरक दृष्टिसँ कएल गेल अछि। निष्कर्षतः ई रूपान्तरण भाव-संप्रेषण, पात्र-वाणी, लोक-लय आ सांस्कृतिक पंजीक स्तर पर अत्यन्त समर्थ अछि; संगहि भविष्यक आलोचनात्मक यूनिकोड संस्करण लेल शब्दकोश, स्रोत-संदर्भ आ अनुवादकीय टिप्पणी उपयोगी हएत।

कुँजी शब्द : सुम्निमा · बी. पी. कोइराला · वृषेश चन्द्र लाल · मैथिली अनुवाद · देह—आत्मा · आर्य—किरात · मनोविश्लेषण · पारिस्थितिक नारीवाद · जातीय चेतना · अनुवाद सिद्धान्त

शोध-आधार : उपलब्ध मैथिली संस्करणक सम्पूर्ण पाठ आ परिपाठ; भानुभक्त शर्मा कँडेल (जातीय चेतना), इन्दिरा आचार्य मिश्र (पारिस्थितिक नारीवाद), हरिप्रसाद सिलवाल (समाजशास्त्र), कमल प्रसाद फुयाल (देह/स्व), प्रकाशचन्द्र खत्री (मनोविश्लेषण) सहित प्रकाशित शोध; तथा नाइडा, न्यूमार्क, कैटफर्ड, वेनूटी, बासनेट, टूरी आ मन्डे द्वारा प्रतिपादित अनुवाद-अध्ययनक प्रमुख अवधारणा।

पोथीक आधारभूत परिचय

मूल कृति	सुम्निमा (नेपाली उपन्यास), लेखक — विश्वेश्वरप्रसाद कोइराला
मैथिली रूपान्तरण	वृषेश चन्द्र लाल
विधा	उपन्यास (मैथिली रूपान्तरण)
प्रकाशक	फिनिक्स बुक्स, बानेश्वर, काठमाण्डू, नेपाल
संस्करण	प्रथम, २०७८ असोज (सेप्टेम्बर २०२१)
ISBN	978-9937-705-59-2
आवरण-चित्र/कला	राजन काफ्ले (चित्र), सरस्वती चौधरी (कला)
भूमिका	प्रदीप गिरी आ डा. शेफालिका वर्मा
पृष्ठ संख्या	१५४

कृति	सुम्निमा
लेखक	विश्वेश्वरप्रसाद कोइराला
मैथिली रूपान्तरण	वृषेश चन्द्र लाल
प्रकाशक	फिनिक्स बुक्स, बानेश्वर, काठमाण्डू, नेपाल
संस्करण	प्रथम, २०७८ असोज (२०२१ ई.)

कृति

सुम्निमा

ISBN

978-9937-705-59-2

१. प्रस्तावना : प्रेमक कथा सँ बेसी, सभ्यता-बोधक परीक्षा

विश्वेश्वरप्रसाद कोइरालाक 'सुम्निमा'केँ केवल प्रेमकथा, यौन-मनोवैज्ञानिक आख्यान अथवा आर्य-किरात द्वन्द्वक रूपमे पढ़ब ओकर रचनात्मक विस्तारकेँ छोट कऽ देब हएत। ई उपन्यास देह आ आत्मा, प्रकृति आ संस्कृति, मातृकेन्द्रित आ पितृकेन्द्रित सामाजिक बोध, सहज आनन्द आ अनुशासित तप, व्यक्तिगत इच्छा आ सामुदायिक मर्यादा, जातीय स्मृति आ साझा भविष्य—एहि सभक बीच चलैत दीर्घ बहस अछि। मैथिली रूपान्तरणमे ई बहस केवल कथक स्तर पर नहि, भाषाक स्तर पर सेहो घटित होइत अछि। सोमदत्तक संस्कृतनिष्ठ, शास्त्रीय, अनुशासित वाणी आ सुम्निमाक सहज, लोकगन्धी, देहसँ लगल, प्रत्यक्ष वाणी दू भिन्न जीवन-दर्शनकेँ भाषिक शरीर दैत अछि।

एहि संस्करणक विशेषता ई अछि जे मैथिली अनुवाद स्वयं एक सांस्कृतिक घटना बनि जाइत अछि। नेपाली साहित्यक एक अत्यन्त चर्चित कृतिक मैथिली रूपान्तरण नेपालक बहुभाषिक साहित्यिक क्षेत्रमे केन्द्र आ परिधि, 'राष्ट्रभाषा' आ मातृभाषा, शास्त्रीयता आ लोकधर्मिता विषयक प्रश्नकेँ नव धरातल दैत अछि। प्रकाशकीय आ भूमिकासभमे एहि अनुवादकेँ भाषिक समानता, सांस्कृतिक बहुलता आ राष्ट्रीय सहअस्तित्वक परिप्रेक्ष्यसँ देखल गेल अछि। एहि कारण ई समीक्षा मूल आख्यानक साहित्यिक मूल्यक संगहि अनुवादक भाषिक-सांस्कृतिक रणनीतिको समान महत्त्व दैत अछि।

कृतिकारक साहित्यिक आ राजनीतिक पृष्ठभूमि

विश्वेश्वरप्रसाद कोइराला (वि.सं. १९७१-२०३९) एक दिस नेपालक प्रथम जननिर्वाचित प्रधानमन्त्री रहथि त दोसर दिस नेपाली साहित्यमे मनोविश्लेषणात्मक यथार्थवादक सूत्रपात करनिहार युगप्रवर्तक स्रष्टा सेहो छलाह। ओ राजनीतिमे समाजवादी आ साहित्यमे अराजकतावादी व्यक्तिक रूपमे अपन परिचय देबए रुचाबैत छलाह। हुनकर खुला जीवन मूलतः राजनीतिमे समर्पित देखाइत अछि, जखन कि हुनकर बन्दी जीवन साहित्य सिर्जनामे। दोसर विश्वयुद्धक समयमे बेलायती सरकारद्वारा जबरजस्ती सैनिकमे भर्ना कएल जेबाक अनुभवसँ ल'

क' वि.सं. २००३ मे नेपाली राष्ट्रिय काङ्ग्रेसक स्थापना आ वि.सं. २०१७ मे राजा महेन्द्रद्वारा अपदस्थ कएल जेबाक घटनाक्रम हुनकर चिन्तनकें गहिराई प्रदान कएलक।

साहित्यिक यात्राक प्रारम्भमे १९८७ मे 'हंस' पत्रिकामे 'वहाँ' नामक हिन्दी लघुकथा प्रकाशित कए कथायात्रा आरम्भ करनिहार कोइराला नेपाली आख्यानमे फ्रायड, जुङ्ग आ एडलर जकाँ मनोविश्लेषकसभक प्रभाव भित्रियाओलन्हि। तत्कालीन समयमे देशमे व्याप्त निरङ्कुश राजनीतिक व्यवस्थाक कारणें जे कठिनाइसभक सामना करए पड़लन्हि, ताहि कारणें ओ राजनीतिक तथा सामाजिक विषयवस्तुसँ हेत क' व्यक्तिमन आ मानव अवचेतनकें अपन साहित्यक मुख्य विषय बनौलन्हि। 'तीन घुम्ती', 'नरेन्द्र दाई', 'मोदिआइन', 'हिटलर र यहूदी', आ 'बाबु, आमा र छोरा' जकाँ कृतिसभमे ओ यौन मनोविज्ञान, गीता दर्शन, आ मानवतावादक वकालत कएलन्हि। मुदा, 'सुम्निमा' एहि सभसँ भिन्न प्रकृतिक अछि। जतए 'तीन घुम्ती' मे नारी जीवनक भवितव्यक व्याख्या अछि आ 'नरेन्द्र दाई' मे स्त्री-पुरुषक सम्बन्धक दुखान्तिका, ओतए 'सुम्निमा' मुख्यतः दू पृथक संस्कृतिक द्वन्द्वक पृष्ठभूमि पर ठाढ़ आख्यान अछि। सुन्दरीजल जेलमे गणेशमान सिंह, कृष्णप्रसाद भट्टराई, रामनारायण मिश्र आ देवान सिंह राईक सङ्गे बन्दी रहैत काल अध्यात्मवादी आ भौतिकवादी विचारसभक बीच होइत बहससँ प्रेरित भ' कोइराला ई कृति रचलन्हि।

हुनकर साहित्यिक सृजन—६ उपन्यास, २ कथा-संग्रह, आत्मकथा आ जेल-डायरी—हुनकर राजनीतिक जीवनसँ अभिन्न रूपे जुड़ल अछि। सुन्दरीजल कारागारक वैचारिक वातावरणमे देवान सिंह राई किराती भौतिकवादी दृष्टिक आ रामनारायण मिश्र धार्मिक-अध्यात्मवादी दृष्टिक प्रतिनिधि छलाह; हुनका दुनूक गरमागरम बहसक प्रभाव “सुम्निमा”क वैचारिक संरचनामे देखल जाइत अछि।

पद्धतिक दृष्टिसँ ई अध्ययन उपलब्ध मैथिली संस्करणक सम्पूर्ण पाठ, तकर प्रकाशकीय, अनुवादकीय निवेदन, प्रदीप गिरिक भूमिका, शेफालिका वर्माक टिप्पणी, आ ‘सुम्निमा’ पर प्रकाशित आधुनिक शोध—जातीय चेतना, समाजशास्त्र, देह-अध्ययन, मनोविश्लेषण आ पारिस्थितिक नारीवाद—कें एक संग पढ़ैत अछि। अनुवाद-सिद्धान्तक खण्डमे नाइडा, न्यूमार्क, कैटफर्ड, वेनूटी, बासनेट, टूरी आ स्कोपोस-केन्द्रित विचारसभक सहायतासँ लक्ष्य-पाठक परीक्षण कएल गेल अछि। एक सीमा स्पष्ट रहबाक चाही: एहि समीक्षा लेल मूल नेपाली पाठक

पंक्ति-दर-पंक्ति तुलनात्मक प्रति उपलब्ध नहि अछि; अतः 'स्रोत-सँग शाब्दिक समानता'क निर्णायक दावा नहि कएल गेल अछि। मूल्यांकन मैथिली लक्ष्य-पाठ, अनुवादकक घोषित नीति, कृतिक ज्ञात कथ्य-संरचना आ आलोचनात्मक शोधक आलोकमे कएल गेल अछि।

२. पोथीक पाठ-परिसर, रचनाकाल आ संस्करणक अर्थ

उपलब्ध संस्करणमे शीर्षक 'सुम्निमा', लेखक विश्वेश्वरप्रसाद कोइराला आ 'मैथिली रूपान्तरण—वृषेश चन्द्र लाल' रूपमे अंकित अछि। प्रकाशक फिनिक्स बुक्स, बानेश्वर, काठमाण्डू अछि; प्रथम संस्करण २०७८ असोज (ईसवी २०२१) तथा ISBN 978-9937-705-59-2 देल गेल अछि। पोथीक अन्तमे लेखक स्वयं रचनास्थल 'सुन्दरीजल, बन्दीगृह' आ आठ दिनक तिथि—२१ सँ २८ जून १९६४—दैत छथि। ई तथ्य रचनाक संक्षिप्त कालावधि आ ओकर आन्तरिक तीव्रता बुझबाक लेल महत्त्वपूर्ण अछि: उपन्यासमे कथात्मक विस्तार अपेक्षाकृत छोट अछि, मुदा वैचारिक तनाव अत्यन्त घन।

बन्दीगृहक सन्दर्भकेँ यान्त्रिक रूपेँ राजनीतिक रूपक बना देब उचित नहि, तथापि 'मुक्ति' आ 'बन्धन'क प्रश्न उपन्यासमे बारम्बार लौटैत अछि। सोमदत्त देहकेँ बन्धन मानि ओकरा दमन करैत अछि; पर अन्ततः ओ बुझैत अछि जे कठोर साधना सेहो एक दोसर बन्धन बनि सकैत अछि। सुम्निमा, जे सामाजिक रूपेँ तथाकथित 'अनार्य' अथवा परिधिक समुदायसँ अछि, देह आ प्रकृतिक सहज स्वीकृतिमे एक वैकल्पिक मुक्ति-बोध प्रस्तुत करैत अछि। एहि तरह लेखकक राजनीतिक कारावास आ पात्रक आध्यात्मिक आत्म-बन्धन एक-दोसरक प्रत्यक्ष समांतर नहि, मुदा 'स्वाधीनता'क प्रश्नकेँ गहीर प्रतिध्वनि अवश्य दैत अछि।

मैथिली संस्करणक परिपाठ सेहो अर्थवान अछि। प्रकाशकीय नेपालक बहुभाषिक यथार्थमे खस नेपालीक वर्चस्व आ अन्य मातृभाषासभक उपेक्षाक प्रश्न उठबैत अछि। प्रदीप गिरि राष्ट्रीयता, मिथिला, किरात, मधेश आ सांस्कृतिक बहुलताक सन्दर्भमे एहि अनुवादकेँ पढ़ैत छथि। एहि परिपाठसँ पाठक उपन्यासमे आर्य-किरात द्वन्द्वकेँ केवल प्राचीन मिथकीय प्रसंग नहि, आधुनिक बहुभाषिक राष्ट्र-निर्माणक प्रश्नक रूपमे सेहो देखए लगैत अछि। ई परिपाठ समृद्ध करैत अछि, मुदा संगहि एक सावधानी आवश्यक अछि: राजनीतिक प्रस्तावना उपन्यासक बहुअर्थी साहित्यिक संरचनाकेँ कोनो एक विचारधारात्मक निष्कर्षमे बन्द नहि करए। 'सुम्निमा'क श्रेष्ठता एतबे अछि जे ओ सभ पक्षक आत्मविश्वासकेँ प्रश्नक कटघरामे ठाढ़ करैत अछि।

कथाभूमिक पौराणिक-भौगोलिक आधार

उपन्यासक कथा एकटा उपकथा (प्रस्तावना)सँ आरम्भ होइत अछि, जाहिमे कौशिकी नदी आ वराहक्षेत्रक भौगोलिक-पौराणिक वर्णनक माध्यमे कथाभूमि तैआर कएल जाइत अछि — विश्वामित्रक आश्रम, राम-लक्ष्मणक शिक्षा, आ सीता-स्वयंवरक सन्दर्भसँ जोड़ल एहि स्थलक ऐतिहासिक-पौराणिक गरिमाक स्थापना कएल जाइत अछि। एहि पृष्ठभूमिपर मुख्य कथा ठाढ़ होइत अछि — ब्राह्मण-पुत्र सोमदत्त आ किराती बालिका सुम्निमाक बाल्यसंगसँ शुरू भेल एकटा सम्बन्ध, जे क्रमशः आकर्षण-विकर्षणक जटिल यात्रामे बदलि जाइत अछि।

कथाक केन्द्रमे अछि दू सभ्यताक मौलिक द्वन्द्व — ब्राह्मण-आर्य संस्कृति, जे गायकें माता आ अवध्य मानैत अछि, आत्माकें महत्व दैत अछि आ शरीरकें मात्र साधन बुझैत अछि; आ किरात-भिल संस्कृति, जे गायकें भोज्य मानैत अछि आ शरीरकें आदि आ अन्त दुनू बुझैत अछि। ई द्वन्द्व वस्तुतः वैदिक दर्शन आ चार्वाक/लोकायत दर्शनक शास्त्रीय बहसक कथात्मक रूपान्तरण थिक — शास्त्र शुष्क होइत अछि, आ ओतहि जीवन हरियरीसँ भरल रहैत अछि।

३. आख्यान-संरचना : भेट, निषेध, दमन, पुनरागमन आ उत्तराधिकार

उपन्यासक संरचना वृत्ताकार अछि। आरम्भमे कौशिकी नदीक कछेर, शमीक गाछ आ वनप्रदेशमे बालक सोमदत्त तथा बालिका सुम्निमाक भेट होइत अछि। अन्तमे अगिला पीढ़ीक प्रेम सेहो ओही प्राकृतिक परिसरमे विकसित होइत अछि। ई पुनरावृत्ति मात्र कथानक-कौशल नहि; ई लेखकक मूल तर्क अछि—सभ्यता नियम बनबैत अछि, स्मृति ओकरा कठोर करैत अछि, मुदा प्रकृति नित्य नव सम्बन्धक सम्भावना रचैत रहैत अछि। पुरान आश्रम ध्वस्त भऽ जङ्गलमे समा जाइत अछि, जबकि प्रेम आ रक्तक नवल मिश्रण अगिला पीढ़ीमे जारी रहैत अछि।

पहिल भाग बाल्यकालीन जिज्ञासा सँ आरम्भ होइत अछि। मातृत्व-पितृत्वक प्राथमिकता, गाय, मांस, धर्म, नग्नता, भाषा, देवता, मनुष्य—सभ विषय पर सुम्निमा आ सोमदत्तक संवाद दार्शनिक बहसक रूप धारण करैत अछि, मुदा लेखक ओकरा बालसुलभ कौतुकमे रखैत छथि। एहि कारण विचार ‘उपदेश’ नहि बनैत; ओ चरित्रक स्वभावसँ निकलैत अछि। जेना सुम्निमा प्रश्न करैत अछि जे जन्म देनिहारि मायकें पहिने चिन्हबाक चाही कि पिताकें, तकर उत्तर

सोमदत्त शास्त्रीय पितृवंशीय व्याख्यासँ दैत अछि। एहिमे पूरा उपन्यासक बीज अछि—अनुभव बनाम सिद्धान्त।

यौवनमे ई बहस देहक अनुभव बनि जाइत अछि। सोमदत्तक आकर्षण, भय आ दमन ओकर तपस्याकेँ उग्र बनबैत अछि। कृतिक छोट दोसर अध्याय, जाहिमे सोमदत्त आश्रम छोड़ैत अछि, आख्यानक दार्शनिक केन्द्र अछि। स्वयं भूमिकाकार सेहो एहि अध्यायकेँ ‘गुद्दी’ मानैत छथि। प्रश्न ई नहि जे तपस्या सत्य कि असत्य; प्रश्न ई जे जँ तपस्या अहंकारक सुरक्षाक साधन बनि जाए, तखन ओकर आध्यात्मिक मूल्य की बचैत अछि?

तेसर भागमे सोमदत्त कठोर तपसँ लौटि विवाह करैत अछि। पुलोमासँग विवाह, संतानोत्पत्तिक बाध्यता, देहकेँ केवल वंश-विस्तारक साधन बुझबाक मानसिकता आ सुम्निमाक मानस-प्रतिमा—ई सभ मिलि दाम्पत्यकेँ विषाक्त करैत अछि। शरीरक निषेध शरीरकेँ नष्ट नहि करैत; ओ रूप बदलि अवचेतनमे सक्रिय रहैत अछि। अन्ततः सोमदत्त आ पुलोमा दुनू अपन दाम्पत्यसँ बाहर मानसिक प्रतिरूपक सहायतासँ देह-सुखक अनुभव करैत छथि। एहिठाम उपन्यास मनोविश्लेषणात्मक गहनता प्राप्त करैत अछि।

उपसंहारमे पुलोमाक मृत्यु, सोमदत्तक अन्तिम पश्चात्ताप, सुम्निमाक मातृवत् अपनत्व, आ दुनू सन्तानक मिलन एक नवल सांस्कृतिक संश्लेषण रचैत अछि। मुदा ई सरल साधारण सुखान्त नहि। सुम्निमा स्वयं चिन्तित अछि जे बाभनक ‘हावाक’ प्रवृत्ति आ किराती ‘माटिक’ प्रवृत्तिक मेल कोना टिकत। ओकर आशीर्वादमे समन्वयक मूल शर्त देल अछि—दुनू एक-दोसरक बाट बुझथि, आवश्यकता पड़लापर अपन बाटमे परिवर्तन करथि। अतः उपन्यासक समाधान शुद्धता नहि, समायोजन अछि; विजेता कोनो एक संस्कृति नहि, संवादक्षम मिश्रित संस्कृति अछि।

४. सोमदत्त : तपस्वी, अहंकारी, पीड़ित आ अन्ततः अपूर्ण मनुष्य

सोमदत्तकेँ केवल ‘ब्राह्मणवादी खलनायक’ बनाकऽ पढ़ब उपन्यासक मनोवैज्ञानिक जटिलताकेँ नष्ट कऽ देत। ओ बाल्यकालसँ अनुशासन, यज्ञ, ब्रह्मचर्य, वेदपाठ, देह-दमन आ पितृवंशीय श्रेष्ठताक प्रशिक्षण पबैत अछि। तकर व्यक्तित्व स्वतन्त्र अनुभवक अपेक्षा उत्तराधिकारमे भेटल सिद्धान्तसभसँ निर्मित अछि। अतः ओकर कठोरता व्यक्तिगत दुष्टता मात्र नहि, सांस्कृतिक संस्कारक गहन आन्तरिकीकरण अछि। लेखक ओकरा दोषी बनबैत छथि, मुदा संगहि ओकर त्रासदीक कारणो देखबैत छथि।

सोमदत्तक भीतर मुख्य संघर्ष 'इच्छा बनाम कर्तव्य' नहि, 'इच्छाक अस्तित्वकेँ मानब बनाम ओकरा नकारब' अछि। जँ ओ आकर्षण स्वीकार कऽ कर्तव्यक सीमामे निर्णय लैत, त संघर्ष कम होइत। मुदा ओ इच्छाकेँ अपवित्र मानैत अछि, एहि कारण ओकर चेतना इच्छा-विरोधी युद्धभूमि बनि जाइत अछि। सुम्निमाक स्पर्श ओकरा लेल बाहरी प्रलोभनसँ बेसी आत्म-ज्ञानक आघात अछि—ओ पहिल बेर अनुभव करैत अछि जे शरीर ओकर सिद्धान्तक अधीन पूर्णतः नहि अछि। एहि पराजयकेँ ओ आत्म-संशोधन नहि, आत्म-दण्डमे बदलि दैत अछि।

मनोविश्लेषणात्मक पाठमे ई बिन्दु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। फ्रायडीय भाषामे कहि सकैत छी जे दमन कएल कामना समाप्त नहि होइत, प्रत्यावर्तन करैत अछि। आधुनिक शोधक प्रकाशचन्द्र खत्री 'सुम्निमा'केँ अवचेतन, यौन-आकांक्षा आ दमनक दृष्टिसँ पढ़ैत छथि। उपन्यासक घटनासभ एहि पाठकेँ पुष्ट करैत अछि: सोमदत्त कठोरतम तप करैत रहैत अछि, मुदा सुम्निमाक छवि मेटैत नहि; विवाहोपरान्त पुलोमासँग शारीरिक सम्बन्धमे मानसिक रूपेँ सुम्निमाकेँ उपस्थित करैत अछि; पुत्रकेँ देखितो 'मानस-गर्भ'क कल्पना सुम्निमासँ जोड़ैत अछि। देहक निषेध अन्ततः देहक सर्वव्यापक मानसिक छविमे परिणत होइत अछि।

सोमदत्तक त्रासदीक दोसर पक्ष अहं अछि। ओकर शास्त्रीय ज्ञान ओकरा विनय नहि, श्रेष्ठताबोध दैत अछि। सुम्निमाक समुदायकेँ 'असंस्कृत', 'बर्बर', 'पाशविक' बुझब ओकर ज्ञानक नैतिक विफलता अछि। कृतिक छोट दोसर अध्याय एहि बिन्दुपर स्वयं प्रश्न उठबैत अछि—की तपस्या ब्रह्मतेजक नामपर अहंकार अर्जित करबाक प्रक्रिया त नहि? एहि आत्म-प्रश्नशीलता कारण उपन्यास प्रचारक साहित्य नहि बनैत। लेखक अपन ब्राह्मण पात्रकेँ भीतरसँ विघटित करैत छथि।

तथापि सोमदत्तमे अन्ततः मानवीय करुणा अछि। पुत्रक प्रति ओकर स्नेह समय-समय पर फूटैत अछि; मृत्यु-शय्यापर ओ अपन जीवनकेँ मृगमरीचिकाक पाछाँ दौड़ मानैत अछि; सुम्निमाक स्वर ओकर अन्तिम चेतनामे सुखक अस्पष्ट लोक खोलैत अछि। ई पश्चात्ताप ओकर अपराध मेटबैत नहि, मुदा चरित्रकेँ जीवित मनुष्य बनबैत अछि। सोमदत्तक असफलता लेखकक तर्कक मूल प्रमाण अछि: मनुष्य जँ सिद्धान्तक रक्षा करबाक लेल मनुष्यत्वक मूल अनुभव—प्रेम, देह, स्नेह, सहचर्य—केँ नकारत, त अन्ततः सिद्धान्तो रिक्त भऽ जाएत।

सोमदत्तक चित्रणपर एक आलोचनात्मक प्रतिपक्ष

तुलनात्मक रूपे, भूमिकाकार स्वीकार करैत छथि जे कोइराला सोमदत्तक संग किछु अन्याय कएने छथि — ओकरा निरीह, अल्पशिक्षित आ दुराग्रही ब्राह्मण-पुत्रक रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि। सोमदत्तक जीवन शुष्क आ दुर्वह कर्तव्यबोधसँ भरल अछि; ओ निराश जीबैत अछि आ निराश मरैत अछि। ई असन्तुलन उपन्यासक एकटा सीमाक रूपमे सेहो देखल जा सकैत अछि, मुदा साथहि ई लेखकक वैचारिक पक्षधरताक (शास्त्रीय अध्यात्मवाद विरुद्ध प्राकृतिक जीवन-दृष्टि) स्पष्ट संकेत सेहो थिक।

५. सुम्निमा : प्रकृतिक प्रतिमा नहि, वैकल्पिक ज्ञान-परम्पराक वाहिका

सुम्निमाकेँ ‘प्रकृति’, ‘देह’, ‘स्त्री’ अथवा ‘किरात’क सरल प्रतीक मानल जाए त ओकर व्यक्तित्वक सक्रिय बुद्धिमत्ता छूटि जाइत अछि। ओ प्रश्न करैत अछि, तर्क करैत अछि, चोट खाइत अछि, अपन स्वाभिमान बचबैत अछि, विवाह करैत अछि, मातृत्व निभबैत अछि, अन्तमे अगिला पीढ़ीकेँ जीवन-दर्शन दैत अछि। ओकर ज्ञान पुस्तकजन्य नहि, अनुभवजन्य अछि; मुदा लेखक अनुभवजन्य ज्ञानकेँ अज्ञान नहि मानैत छथि। उलटे, सोमदत्तक ‘ज्ञान’ बारम्बार जीवनसँ हारैत अछि, जबकि सुम्निमाक सहज बुद्धि व्यवहारिक सत्य पकड़ैत अछि।

सुम्निमाक बाल्यकालीन प्रश्नसभ—माय-पिताक सम्बन्ध, मनुष्यकेँ मनुष्यक भाषा बजबाक आग्रह, धर्मक नामपर मनुष्यक विनाश नहि होय—ओकर वैचारिक परिपक्वताक बीज छथि। ई प्रश्नसभ आधुनिक उदारतावादी भाषामे नहि, लोक-बुद्धिक स्वाभाविक स्वरमे अबैत अछि। एहि कारण चरित्र विचारधाराक मुखपत्र नहि बनैत। ओ ‘देह’केँ अपराध नहि बुझैत, नग्नता ओकरा लेल लज्जाक विषय नहि, शरीर जीवनक स्वाभाविक अंश अछि।

कमल प्रसाद फुयालक ‘देह-वियोजन/पुनःदेहधारण’ अध्ययन एहि उपन्यासकेँ देह-विहीन आत्मबोध आ पुनः-देहधारणक संघर्षक रूपमे पढ़ैत अछि। ई दृष्टि सुम्निमाकेँ मात्र काम-प्रेरक नारी मानबाक प्रवृत्तिक प्रतिवाद करैत अछि। ओ सोमदत्तक ‘पुनःदेहधारण’क माध्यम बनैत अछि—अर्थात् ओकरा याद करबैत अछि जे आत्मा जँ मनुष्यक अनुभवसँ पूर्णतः कटि जाए त आध्यात्मिकता निर्जीव होइत अछि। तथापि सावधानी जरूरी अछि: सुम्निमाकेँ केवल पुरुषक आध्यात्मिक उपचारक उपकरण बनाओल जाए त ओकर स्वतंत्र अस्तित्व फेर हराएत। उपन्यासक अन्तिम भाग ओकरा मातृ, सामाजिक आ नैतिक व्यक्तित्व प्रदान कऽ एहि संकटकेँ बहुत हद तक टारैत अछि।

सुम्निमाक 'माटि'क रूपक महत्त्वपूर्ण अछि। अन्तमे ओ अपन बेटीकेँ कहैत अछि जे किराती माटिक प्राणी अछि; जीवनक भोग, आनन्द आ देह ओकर लेल मूल अछि। एहि कथनकेँ जैविक जातीय नियति मानि लेब संकटपूर्ण हएत। साहित्यिक रूपेँ ई प्रतीक 'धरतीसँ जुड़ल जीवनबोध' बनाम 'असीम शून्य दिस उड़ान'क द्वन्द्व रचैत अछि। स्वयं सुम्निमा मिश्रित विवाहक पक्षधर अछि, तँ ओकर कथन कठोर नस्ली सिद्धान्त नहि, सांस्कृतिक प्रवृत्तिक काव्यमय रूपक अधिक अछि।

ओकर सभसँ पैघ नैतिक विजय प्रतिशोध-विहीनता अछि। सोमदत्त ओकर प्रेम अस्वीकार करैत अछि, बादमे जीवनभरि ओकर छवि ढोइत अछि; तैओ सुम्निमा मृत्युशय्यापर ओकरा भेटए अबैत अछि, ओकर अनाथ पुत्रकेँ अपन घर लऽ जाइत अछि, अपन बेटी संग ओकर मिलन स्वीकार करैत अछि। करुणा एतए 'प्रकृति'क निष्क्रिय गुण नहि, इतिहासक हिंसाकेँ तोड़बाक सक्रिय नैतिकता अछि।

भूमिकाकारक दृष्टिमे सुम्निमा

भूमिकाकार प्रदीप गिरीक शब्दमे, सुम्निमा कोइरालाक सभ पात्रमे सभसँ स्वाभाविक, सहज आ जीवन्त पात्र थिकी — स्त्री-पुरुषक आदिम आ अनिवार्य आकर्षणक उत्फुल्ल उदाहरण। सुम्निमाक चंचलता, वाचालता आ मोहिनी रूपकेँ संस्कृत काव्यक प्रसिद्ध शुक्र-रम्भा संवादसँ तुलना कएल गेल अछि। ओ प्रकृति-संस्कृतिक प्रतिनिधि छथि — शास्त्रविहीन, मुदा जीवन-दृष्टिसम्पन्न। विवाहोपरान्त ओकर दाम्पत्य जीवन प्राकृतिक प्रेमक अभावमे विपरीत छैक, तथापि ओ अपन कर्तव्य-सम्पादनसँ सन्तोष प्राप्त करैत छथि — जे ओकर चरित्रकेँ त्रासद नहि, अपितु सहनशील आ जीवनोन्मुख बनबैत अछि।

६. पुलोमा : उपन्यासक सभसँ पीड़ादायक मौन आ स्त्री-अधिकारक प्रश्न

'सुम्निमा' पर चर्चा प्रायः सुम्निमा-सोमदत्त पर केन्द्रित रहैत अछि, मुदा पुलोमा बिना कृतिक मनोवैज्ञानिक आ नारीवादी पाठ अधूरा अछि। पुलोमा सोमदत्तक सांस्कृतिक समुदायसँ छथि, अर्थात् सिद्धान्ततः 'उपयुक्त' पत्नी; तैओ दाम्पत्य विफल अछि। एहि विफलतासँ स्पष्ट होइत अछि जे समस्या केवल अन्तरजातीय आकर्षण नहि, देह आ प्रेमप्रति सोमदत्तक मूल दृष्टिमे अछि।

विवाह सोमदत्त लेल पितृऋणसँ उक्लण होयबाक साधन अछि; पत्नी सहचरि नहि, संतानोत्पत्तिक 'क्षेत्र' बनि जाइत छथि। ई भाषा पितृसत्तात्मक देह-दृष्टिक क्रूर रूप उधारैत अछि। पुलोमाक कामना, भय, अपेक्षा, अपमान—सभकेँ धार्मिक कर्तव्यक पृष्ठभूमिमे छोट कएल जाइत अछि। जखन दम्पति संतान लेल संघर्ष करैत अछि त उनका दुनूक देह पर आध्यात्मिक अनुशासनक बोझ बढ़ैत अछि। फलतः कामना प्रेमक स्वाभाविक आदान-प्रदान नहि रहि मानसिक प्रतिरूप, अपराधबोध आ ईर्ष्याक क्षेत्र बनि जाइत अछि।

इन्दिरा आचार्य मिश्रक पारिस्थितिक-नारीवादी अध्ययन 'सुम्निमा'मे स्त्री/प्रकृति आ पुरुष/संस्कृति, देह/आत्मा, भोग/संयम सन द्वैतसभक पितृसत्तात्मक पदानुक्रम देखैत अछि। पुलोमाक जीवन एहि संरचनाक भीतरी हिंसा देखबैत अछि। सुम्निमा बाहरी 'अन्य' छथि, अतः प्रतिरोधक अवसर पबैत छथि; पुलोमा भीतरक 'अपन' छथि, अतः शास्त्रीय मर्यादाक नामपर अधिक बाँधल छथि। हुनकर दुःख एहि बातक प्रमाण अछि जे 'समान संस्कृति' स्वतः समानता नहि दैत।

पुलोमाक मनोवैज्ञानिक प्रसंग—मानसिक रूपेँ भिल्ल-पुरुषक छविसँ शारीरिक आनन्द पाबि गर्भधारण, फेर सोमदत्तक अपमान आ पारस्परिक घृणा—कृतिक सभसँ विवादास्पद आ साहसी अंश अछि। एकरा केवल सनसनी अथवा 'व्यभिचार' रूपमे पढ़ब अपर्याप्त अछि। लेखक देखबैत छथि जे दमनक संरचना अन्ततः कल्पनाक गुप्त क्षेत्र रचैत अछि, जतए व्यक्तित्व अपन निषिद्ध इच्छा पूरा करैत अछि। पुलोमाक मानसिक स्वायत्तता दाम्पत्यक विफलता पर कठोर टिप्पणी अछि।

तथापि कृतिक सीमा सेहो एतए देखाइत अछि। पुलोमाक आन्तरिक संसार सुम्निमाक अपेक्षा कम विस्तृत अछि; ओ कई बेर सोमदत्तक मनोवैज्ञानिक संकटकेँ तीव्र करबाक माध्यम बनि जाइत छथि। आधुनिक नारीवादी पाठ हुनकर स्वतंत्र कथा, प्रसवोत्तर उपेक्षा, श्रम, मानसिक स्वास्थ्य आ सामाजिक एकान्तकेँ अधिक विस्तारसँ देखबाक माँग करैत अछि। उपसंहारमे रोगी पुलोमाक धीरे-धीरे क्षीण होयब पितृसत्तात्मक दाम्पत्यक अवशेष सन बुझाइत अछि—जे स्त्रीक शरीरसँ वंश माँगैत अछि, मुदा ओकर देखभालक सामाजिक संरचना नहि बनबैत।

७. देह-आत्मा विमर्श : द्वैतक पराजय, संतुलनक खोज

उपन्यासक केन्द्रीय दार्शनिक प्रश्न 'देह श्रेष्ठ कि आत्मा?' नहि अछि। जँ लेखक केवल देहवादक विजय घोषित करैतथि त अन्तिम संश्लेषणक आवश्यकता नहि रहितैक। उपन्यासक वास्तविक प्रस्ताव ई अछि जे देह आ आत्मामे कोनो एककेँ पूर्ण सत्य मानलासँ मनुष्य अपूर्ण होइत अछि। सोमदत्त देहकेँ नकारि आत्मकेँ बचाबए चाहैत अछि; परिणाम—आत्मा अहंकार, दमन आ रिक्ततामे फँसैत अछि। सुम्निमा देह आ जीवनक सहजता स्वीकारैत अछि; मुदा अन्तमे ओ अपन बेटीकेँ सोमदत्तक पुत्रक 'उड़ान' बुझबाक उपदेश दैत अछि। अर्थात् सुम्निमा सेहो स्वीकारैत अछि जे मनुष्य केवल माटि नहि, आकांक्षा सेहो अछि।

फुयालक अध्ययन एहि संश्लेषणकेँ 'देह-वियोजन' आ 'पुनःदेहधारण'क बीचक 'मध्य-संतुलन' रूपमे चिन्हैत अछि। ई पाठ उपन्यासक अन्तिम दृश्यसभसँ मेल खाइत अछि। अगिला पीढ़ीक प्रेममे ब्राह्मण पुत्र किराती समाजमे पलैत अछि, पर आश्रमक भग्न अवशेष दिस आकृष्ट सेहो रहैत अछि। ओ पुरान संस्कृति नहि अपनबैत, पर स्मृति पूर्णतः मिटबैत सेहो नहि। ओकर व्यक्तित्व मिश्रित अछि—माटि पर पयर, आकाश दिस दृष्टि।

देहक भाषा उपन्यासमे बारम्बार ज्ञानक भाषा बनैत अछि। स्पर्श, नग्नता, पसीना, भूख, दूध, मांस, तपसँ क्षीण शरीर, गर्भ, प्रसव, रोग, आलिंगन—ई सभ मात्र शारीरिक विवरण नहि, विचारक प्रमाण अछि। सोमदत्तक शास्त्रीय वाक्य देहक प्रत्यक्ष अनुभवसँ टकराइत अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ ई अत्यन्त सफल पद्धति अछि, कारण लेखक अमूर्त दर्शनकेँ देहधारी दृश्य बनबैत छथि।

यही कारण 'सुम्निमा'क कामुकता अश्लीलता नहि, ज्ञानमीमांसा अछि। प्रश्न अछि—मनुष्य सत्य कोना जानैत अछि? पुस्तक, परम्परा, मन्त्र आ तर्कसँ? कि स्पर्श, पीड़ा, प्रेम, असफलता आ शरीरक सीमा-सँ सेहो? उपन्यास उत्तर दैत अछि: दूनूसँ; मुदा जँ पहिल दोसरकेँ निषिद्ध कऽ देत त ज्ञान अधूरा रहत।

फ्रायडीय इड-इगो-सुपरइगो, दमन आ “सम्भोगसँ समाधि” विमर्श

विश्वेश्वरप्रसाद कोइराला नेपाली साहित्यमे मनोविश्लेषणात्मक धारक प्रवर्द्धक मानल जाइत छथि। 'सुम्निमा' पूर्णतः फ्रायडीय मनोविज्ञानक नेओ पर ठाढ़ अछि जतए मानव मनक तीन गोटा प्रमुख भाग— इड (Id), इगो (Ego), आ सुपर-इगो (Super-ego) केँ पात्रसभक माध्यमसँ जीवन्त रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि।

सुम्निमा 'इड' क प्रतिनिधित्व करैति छथि। फ्रायडक अनुसार 'इड' मानव मनक ओ भाग थिक जे प्राकृतिक इच्छा, कामवासना (Libido), आ आनन्द सिद्धान्त (Pleasure Principle) पर आधारित होइत अछि। सुम्निमाक सम्पूर्ण जीवन दर्शन एही आनन्द सिद्धान्त पर आधारित अछि। ओ निर्वस्त्र भ' कोशीमे स्नान करैति छथि, प्रकृतिक आनन्द लैति छथि, आ यौनिकताकें कोनो पापक रूपमे नहि देखैति छथि। दोसर दिस, सोमदत्तक पिता सूर्यदत्त, पुलोमा, आ समग्र आर्य धर्मग्रन्थ 'सुपर-इगो' (नैतिकता आ सामाजिक नियम) क प्रतीक थिक, जे इन्द्रिय दमनक कठोर आदेश दैत अछि। सोमदत्त स्वयम् 'इगो' अछि, जे निरन्तर प्राकृतिक इच्छा (सुम्निमाक आकर्षण) आ आध्यात्मिक दायित्व (तपस्या) क बीच सङ्घर्षरत अछि।

सोमदत्त अपन कामवासनाकें जबरजस्ती दबाबक (Repression) प्रयास करैत अछि। फ्रायडीय सिद्धान्त स्पष्ट करैत अछि जे दमित इच्छा कहिओ समाप्त नहि होइत छैक, बरु ई अवचेतनमे सञ्चित भ' मानसिक विकृति (Neurosis) क रूपमे प्रकट होइत छैक। सोमदत्त जखन तपस्याक चरमोत्कर्ष पर रहैत अछि, तखनो सुम्निमाक नग्न, काञ्चन-प्रभा शरीर ओकर ध्यान भङ्ग क' दैत छैक। ओ कहैत अछि, "तोहर ई शरीर पापरूप छौक, विष छौक, मैल छौक। एहि नर्ककें हमरा आगाँसँ हटा!"। ई ओकर 'सुपर-इगो' क आवाज थिक जे ओकर भीतरक 'इड' सँ भयभीत अछि।

जखन सोमदत्त अपन पत्नी पुलोमासँ सन्तान प्राप्तिक लेल 'पुत्रेष्टि यज्ञ' करैत अछि, तखन ओ यौन सम्बन्धकें पूर्णतया यन्त्रवत् आ भावनाशून्य बना दैत अछि। ओ स्पष्ट निर्देश दैत अछि जे "शरीर तत्वक बोधसँ शारीरिक सुखक अनुभव हुअ लागल त समागमक कर्तव्य हेतु लोप भ' जाइत छैक"। ई प्रेमबिनाक जबरजस्ती यौन मिलन पुलोमा आ सोमदत्त दुनूकें कुण्ठित क' दैत छैक। डा. शेफालिका वर्मा एहि उपन्यासकें व्लादिमिर नाबोकोवक 'लोलिता' वा भगवती चरण वर्माक 'चित्रलेखा' सँ आगाँ राखैत आचार्य रजनीश (ओशो) क 'सम्भोगसँ समाधि' क सिद्धान्तसँ जोड़ैति छथि। ओशो मानैत छथि जे वासनाक दमन नहि, बरु ओकर अतिक्रमण (Transcendence) करब आवश्यक अछि। सोमदत्त वासनाकें दमन करैत अछि आ मानसिक रूपसँ रोगी भ' जाइत अछि, जखन कि सुम्निमाक 'मनुवादह' मे वासनाक प्राकृतिक रूपें स्वीकार करलाक बाद सोमदत्तकें जे अवर्णनीय सन्तोष आ पूर्णता भेटैत छैक, से ओकरा जिन्दगी भरि तपस्यासँ नहि भेटल छल।

आर्य आ किरात जीवन-दृष्टिक तुलनात्मक प्रतिमान

वैचारिक प्रतिमान	आर्य संस्कृति (सोमदत्त/पुलोमा)	किरात संस्कृति (सुम्निमा/बिजुवा)
ज्ञान मीमांसा (Epistemology)	वेद, उपनिषद्, शास्त्र, आ मोक्ष चिन्तन पर आधारित	प्रकृतिक सामीप्य, अनुभव, आ इहलौकिक जीवन दर्शन
शरीरप्रतिक दृष्टिकोण (Body Politics)	शरीर नश्वर, पापक खाधि, आ दमन योग्य यन्त्र	शरीर यथार्थ, उत्सव, आ आनन्दक मूल साधन
यौनिकता (Sexuality)	सन्तान प्राप्तिक लेल याज्ञिक अनुष्ठान (पुत्रेष्टि), वासनाशून्य	प्राकृतिक, निश्छल, प्रेमपूर्ण आ आनन्ददायक आवश्यकता
प्रकृतिसँ सम्बन्ध (Ecological Stance)	प्रकृतिकें वशमे करब आ आध्यात्मिक विजय पाएम	प्रकृतिक नियमकें आत्मसात करब आ अनुकूल जीवन जीअएब
धार्मिक अनुष्ठान (Rituals)	गायत्री जप, पञ्चाग्नि ताप, ब्रह्मचर्य, इन्द्रिय निग्रह	सहजता, बलि प्रथा, भौतिक तुष्टि, मातृशक्तिको सम्मान
भाषा आ सम्प्रेषण (Sociolinguistics)	संस्कृतनिष्ठ, कृत्रिम, देवभाषा, आ उच्च आदर्शवादी	मातृसुलभ, जनभाषा, भावनासँ भरल यथार्थ शब्दावली

८. जातीय चेतना, आर्य-किरात द्वन्द्व आ 'अन्य'कें देखबाक नैतिकता

भानुभक्त शर्मा कँडेल 'सुम्निमा'कें केवल फ्रायडीय आख्यान नहि, जातीय चेतना, सांस्कृतिक बहुलता, भाषा, भोजन, धर्म, लोकाचार आ अल्पसंख्यक अनुभवक महत्त्वपूर्ण पाठ मानैत छथि। ई दृष्टि उपन्यासक बाल्यकालीन संवादसभमे स्पष्ट अछि। गाय एक समुदाय लेल 'माता' आ अवध्य अछि, दोसर लेल आहार; मातृत्व-पितृत्वक वंशानुक्रम भिन्न; नग्नता आ वस्त्रक अर्थ भिन्न; धर्मक संस्था भिन्न; प्रकृति, देवता, आहार, यौनाचार—सभक सांस्कृतिक अर्थ भिन्न। लेखक एहि भिन्नताकें 'एक सही, दोसर गलत' रूपमे स्थिर नहि करैत छथि। सोमदत्त

शुरुआतमे अवश्य एकतरफा श्रेष्ठताबोध रखैत अछि, मुदा कथा ओकर निश्चितताकेँ क्रमशः भंग करैत अछि।

हरिप्रसाद सिलवालक समाजशास्त्रीय अध्ययन आर्य-अनार्य समाज, मूल्य आ पर्यावरणक सम-विषम संरचनासँ अन्ततः समन्वय उन्मुख युगचेतना देखैत अछि। उपसंहार एहि निष्कर्षक मुख्य आधार अछि। ब्राह्मणक आश्रम प्रकृतिमे लोप भऽ जाइत अछि, पर ब्राह्मण रक्त किराती समुदायमे मिलि जाइत अछि। प्रतीक स्पष्ट अछि: अलगाववादी शुद्धता टिकैत नहि; जीवित संस्कृति मिश्रण, विवाह, स्मृति आ विस्मृति द्वारा बदलैत रहैत अछि।

तथापि आधुनिक आलोचना एक असुविधाजनक प्रश्न उठबैत अछि: की उपन्यास स्वयं कतहु किराती समुदायकेँ 'प्रकृति', 'देह', 'माटि' आ ब्राह्मणकेँ 'आत्मा', 'शास्त्र', 'आकाश'क स्थिर रूपकमेसँ बाँधि त नहि दैत? ई आवश्यक आलोचनात्मक सावधानी अछि। सांस्कृतिक द्वैत साहित्यिक रूपेँ शक्तिशाली अछि, मुदा वास्तविक समुदायसभ एकरासँ बेसी विविध आ जटिल होइत अछि। यदि पाठक 'किराती = केवल देहवादी' अथवा 'ब्राह्मण = केवल आध्यात्मिक' मानि लेत त कृतिक सांस्कृतिक आलोचना फेर रूढ़िबद्धता बनि जाएत।

उपन्यास स्वयं एहि खतरा सँ आंशिक रूपेँ बाहर अबैत अछि। सुम्निमा नैतिक विवेक आ दूरदृष्टि रखैत अछि; सोमदत्त संवेदना-विहीन यन्त्र नहि; अगिला पीढ़ी जैविक/सांस्कृतिक मिश्रण अछि। अन्तिम आशीर्वादमे 'दुनू अपन-अपन बाट बुझू'क आग्रह सांस्कृतिक संवादक सिद्धान्त अछि। अतः कृतिक सर्वोत्तम पाठ जातीय सारतत्त्ववाद नहि, 'अन्य'केँ मनुष्य रूपमे देखबाक शिक्षा अछि।

सांस्कृतिक आधिपत्यक विनिर्माण

'सुम्निमा' क एकटा अत्यन्त महत्वपूर्ण आयाम सांस्कृतिक आधिपत्य (Cultural Hegemony) केँ भङ्ग करब अछि। एन्टोनियो ग्राम्सी (Antonio Gramsci) क अवधारणा अनुसार वर्चस्वशाली समूह (आर्य) अपन विश्वदृष्टिकोणकेँ सार्वभौमिक सत्यक रूपमे थोपैत अछि। तत्कालीन समाजमे आर्य-ब्राह्मण संस्कृति अपनाकेँ उत्कृष्ट आ किरात-भिल्ल संस्कृतिकेँ 'बर्बर' वा 'असंस्कृत' मानैत छल। सोमदत्त बारम्बार सुम्निमाकेँ "असंस्कृता बालिके" आ हुनकर संस्कृतिकेँ "पाशविक वृत्ति" कहि सम्बोधित करैत अछि। ओ ज्ञानक अहङ्कारमे मानैत अछि जे ओकर संस्कृति सर्वोच्च अछि।

मुदा, ज्याक डेरिडा (Jacques Derrida) क विनिर्माण (Deconstruction) सिद्धान्तिक आधार पर बी.पी. कोइराला एहि पदानुक्रम (Hierarchy) कें उल्टबैत छथि। उपन्यासक विकासक्रममे ई प्रमाणित होइत अछि जे सोमदत्तक 'श्रेष्ठ' ज्ञान आ कठोर तपस्या ओकरा मात्र विक्षिप्त, क्रोधी, आ असन्तुष्ट बना दैत छैक। जखन ओ किरात गामक बिजुवा लग जा क' सन्तान प्राप्तिक याचना करैत अछि, तखन बिजुवा ओकरा बुझबैत अछि: "तोहर मनुवा तमसा गेल छह! ओकरा तपस्यासँ मारक प्रयत्न कएलह!!... शरीर यन्त्र नहि, माध्यम नहि, साधन सेहो नहि। ई अपने साध्य अछि, लक्ष्य अछि।"।

अन्ततः, सोमदत्तकें अपन ब्रह्मचर्य सङ्कल्पसँ पराजित भ' मनुवादहमे सुम्निमाक शरणमे जेबाक पड़ैत अछि। एतए आर्य संस्कृतिक वर्चस्ववादी आवरण खसि पड़ैत अछि। बी.पी. कोइराला ई प्रमाणित करैत छथि जे कोनो संस्कृति मात्र एकटा निश्चित समूहद्वारा अभ्यास कएलासँ श्रेष्ठ नहि भ' जाइत अछि, बरु प्राकृतिक यथार्थ आ मानवीयता सर्वोच्च होइत छैक। उपन्यासक अन्त्यमे आर्य आ किरात रक्तक मिलन (सोमदत्तक बेटा आ सुम्निमाक बेटीक विवाह) एकटा एहन विनिर्माण थिक जतए वर्चस्वशाली संस्कृतिक वंशावली सिमान्तकृत संस्कृतिक वंशावलीमे विलीन भ' जाइत अछि।

किरात-विवाद आ सामाजिक आलोचना

यद्यपि 'सुम्निमा' नेपाली साहित्यक एकटा अद्वितीय मणि थिक, तथापि एकरा ल' क' किरात धर्मावलम्बीसभक बीच विवाद सेहो उत्पन्न भेल छल। किरात समुदायक कतिपय आलोचकसभक आरोप छन्हि जे सुम्निमा आ पारोहाङ्ग किरात धर्मक पूजनीय देवता छथि, आ बी.पी. कोइराला हुनकासभकें एकटा साधारण मानवीक रूपमे प्रस्तुत कए यौनिक सन्दर्भमे प्रयोग कए हुनकर अपमान कएने छथि।

मुदा, साहित्यिक समालोचना आ पाठ्य-विश्लेषणक (Textual Analysis) दृष्टिसँ बी.पी. कोइराला सुम्निमाकें कोनो दुर्बल, तुच्छ वा नकारात्मक पात्रक रूपमे चित्रित नहि कएने छथि। बरु सुम्निमा सम्पूर्ण उपन्यासमे आर्य पुरुष सोमदत्तसँ अधिक तार्किक, मानवीय, करुणाशील आ स्वाभाविक पात्रक रूपमे स्थापित छथि। सम्पूर्ण वैचारिक सङ्घर्षमे अन्ततः किरात संस्कृतिकें जीवनदायिनी आ यथार्थवादी प्रमाणित कएल गेल अछि।

उपन्यासक उपसंहारमे जखन आर्य सोमदत्तक बेटा आ किरात सुम्निमाक बेटीक बीच प्रेम होइत अछि आ दुनू गान्धर्व विवाह करैत अछि, तखन कोशी नदीक अनवरत प्रवाहक बीच आर्य आ किरात रक्तक मिलनसँ उदित भेल नव सन्तति नेपालक साँचो पहिचान (True Identity) थिक। ई सन्देश उपन्यासक विवादकें एकटा मानवीय आ समन्वयवादी समाधान (Assimilation and Cultural Synthesis) प्रदान करैत अछि। किरातीसभक जातिक रक्तक महासमुद्रमे आर्य रक्तक बून्नक विलय, वास्तवमे नेपालक विविधातापूर्ण जनसांख्यिकीक यथार्थवादी आ दूरदर्शी चित्रण थिक।

९. प्रकृति, नदी, वन आ पारिस्थितिक अर्थ

‘सुम्निमा’क तेसर मुख्य पात्र प्रकृति अछि। कौशिकी नदी केवल पृष्ठभूमि नहि; ओ समय, परिवर्तन, देह, स्मृति आ सभ्यताक अस्थिरताक प्रतीक अछि। पात्र जन्मैत छथि, प्रेम करैत छथि, तप करैत छथि, मरैत छथि; आश्रम बनैत आ मिटैत अछि; पर नदी बहैत रहैत अछि। अन्तिम वाक्यसभमे कोशीक अविरल प्रवाह आ विराट शान्ति मनुष्यक सांस्कृतिक दावाक सीमाकें उजागर करैत अछि।

वन सोमदत्त लेल शुरुआतमे तपोभूमि अछि—प्रकृतिपर अनुशासनक स्थान; सुम्निमा लेल वएह वन घर अछि—चलन, भोजन, शरीर, खेल, प्रेमक स्वाभाविक परिसर। एके प्रकृति दू संस्कृतिक दृष्टिसँ भिन्न अर्थ ग्रहण करैत अछि। धीरे-धीरे प्रकृति सोमदत्तक कठोर निर्माणकें पुनः अपना भीतर ले लैत अछि। आश्रमक खसि पड़ब, झाड़-झंखाड़सँ ढँकाएब, चिह्न मिटि जाएब—ई ‘प्रकृतिक विजय’क रोमानी दृश्य मात्र नहि; ई स्मृति आ सत्ता-दावाक नश्वरता अछि।

पारिस्थितिक नारीवादी पाठ स्त्री आ प्रकृतिक समांतर उपेक्षाकें देखैत अछि। सोमदत्तक पितृसत्तात्मक शास्त्रीय दृष्टि शरीर आ प्रकृति दुनूकें साधन बनबैत अछि; सुम्निमा शरीर/धरतीक आत्म-मूल्य पुनर्स्थापित करैत अछि। मुदा एहि पाठमे एक सीमा याद राखब जरूरी अछि: स्त्रीकें प्रकृतिक ‘स्वाभाविक प्रतिनिधि’ बनाबो पितृसत्तात्मक रूढ़ि भऽ सकैत अछि। उपन्यासक मूल्य ओतए बढ़ैत अछि जतए सुम्निमा केवल प्राकृतिक देह नहि, विचारशील निर्णयकर्ता बनैत अछि। नदीक लय मैथिली अनुवादक भाषामे सेहो प्रभावी अछि। वर्णनात्मक अंशसभमे दीर्घ वाक्य, ध्वन्यात्मक शब्द, हरिअरी, शमी, बालु, हवा, जल, कोशीक कलकल/गर्जन—ई सभ लक्ष्य-

पाठकें दृश्यात्मक आ श्रव्य बनबैत अछि। एहि अर्थमे प्रकृति कथ्यक संग शैलीक लय सेहो निर्धारित करैत अछि।

प्रकृतिक नियम, हिंसा आ स्त्री-प्रकृति सम्बन्धक अतिरिक्त प्रसंग

एहि उपन्यासमे सोमदत्त पितृसत्ता आ संस्कृतिक प्रतीक थिक। ओ प्रकृतिकें (सुम्निमाकें) अपन नियन्त्रणमे रखबाक, ओकरा 'पापक खाधि', 'नर्क', वा 'विष' कहि तिरस्कृत करबाक प्रयास करैत अछि। सोमदत्तक लेल प्रकृति एकटा एहन वस्तु थिक जकरा पर विजय प्राप्त करब आवश्यक अछि। दोसर दिस, सुम्निमा पूर्ण रूपसँ प्रकृतिक अंश थिक। ओ कौशिकी नदी, जङ्गलक चिड़ै-चुनमुन, लालीगुराँसक फूल, आ मनुवादहक जलसँ एकाकार अछि। जखन एकटा बाज परबा (परेवा) पर आक्रमण करैत अछि, त सोमदत्त ओकरा बचाबक यत्न करैत अहिंसाक वकालत करैत अछि, मुदा सुम्निमा ओकरा बुझबैत छथि जे बाजक अपन आहार लेबाक प्राकृतिक नियम अछि, आ प्रकृतिक ढाँचाकें धर्मक नाम पर खलबलाएब स्वयंमे पैघ हिंसा थिक।

पुलोमाक पात्र पारिस्थितिक नारीवादक एकटा त्रासद उदाहरण अछि। पितृसत्ताक अधीन रहि ओ अपन स्त्रीत्व आ प्राकृतिक इच्छाक दमन करैत छथि। जखन ओकरा सोमदत्तक खोखलापनक ज्ञान होइत छैक, तखन ओकर भीतरक विद्रोही स्त्री जाग्रत होइत अछि, आ ओ निर्वस्त्र भ' सोमदत्तकें चुनौती दैत छथि। कोइराला स्पष्ट करैत छथि जे प्रकृतिसँ कटि कए वा ओकरा दमन कए क' मनुख कहिओ पूर्ण नहि भ' सकैत अछि।

१०. कथन-शिल्प, मिथकीय समय आ प्रतीक-संरचना

कृतिक आरम्भ 'बहुत पहिने'क कथा रूपमे होइत अछि, जे वर्तमान पाठक लेल पुराणक प्रतिध्वनि सन लगैत अछि। ई मिथकीय दूरी लेखककें इतिहासक ठोस कालखण्डसँ मुक्त करैत अछि आ संस्कृतिक आदिरूपसभ—ब्राह्मण आश्रम, किराती बस्ती, नदी, वन, तपस्या—कें प्रतीकात्मक धरातल पर रखैत अछि। विश्वामित्रक स्मृति, आश्रमक टीला, वैदिक संस्कार, किराती जनश्रुति सभ मिलि इतिहास आ मिथकक सीमाकें जानबूझि धुँधला करैत अछि।

मिथकीय ढाँचा कथा कें सार्वकालिक बनबैत अछि, पर संगहि लेखक आधुनिक प्रश्न पुछैत छथि—जातीय श्रेष्ठता, राष्ट्र, शरीर, स्त्री, विवाह, सामाजिक मिश्रण। पुराकालीन आवरणमे

आधुनिकता एहि रचनाक महत्त्वपूर्ण शिल्पगत उपलब्धि अछि। पाठक एक 'प्राचीन कथा' पढ़ैत-पढ़ैत अपन वर्तमान समाजक कठोर सीमासभ पर प्रश्न करए लगैत अछि।

प्रमुख प्रतीकसभमे शमीक गाछ, आश्रम, नदी, हवा, माटि, लंगोट/जनऊ, नग्न देह आ रक्त उल्लेखनीय अछि। शमीक गाछ पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रेमक साक्षी बनैत अछि; आश्रम निर्मित संस्कृति आ अनुशासनक प्रतीक; नदी परिवर्तनक; हवा आत्मोर्ध्व आकांक्षा आ अस्थिरताक; माटि देहधारी जीवनक; जनऊ/कौपीन सांस्कृतिक पहचानक; नग्नता संस्कारपूर्व अथवा संस्कारातीत सहजताक; रक्त जैविक मिश्रण आ सांस्कृतिक शुद्धताक विघटनक प्रतीक बनैत अछि।

कथावाचक कई बेर प्रत्यक्ष दार्शनिक प्रश्न करैत अछि, विशेषतः दोसर अध्यायमे। आधुनिक 'कहबाक बदला दृश्य द्वारा देखाउ'क कठोर कसौटीसँ देखल जाए त ई निबन्धात्मक हस्तक्षेप लागि सकैत अछि। मुदा कृतिक प्रकृति 'दार्शनिक-मनोवैज्ञानिक उपन्यास'क अछि, तँ ई हस्तक्षेप संरचनागत उद्देश्य पूरा करैत अछि। कमजोरी केवल ओतए सम्भव अछि जतए प्रश्नसभ चरित्रक अनुभवसँ अलग होय; 'सुम्निमा'मे अधिकांश प्रश्न तत्क्षण घटित मनोवैज्ञानिक संकटसँ उपजैत अछि, एहि कारण ओकर प्रभाव टिकैत अछि।

११. मैथिली रूपान्तरणक भाषिक सौन्दर्य : लोक-लय, पंजी, वाक्य-संगीत

वृषेश चन्द्र लालक अनुवादक सभसँ स्पष्ट उपलब्धि लक्ष्य-भाषाक जीवित लय अछि। भूमिकाकार प्रदीप गिरि विशेष रूपेँ 'पतरसुट्टा', 'घोंघाउज', 'असगरे', 'चकुआइत', 'भोकासी पाड़ैत कनैत', 'तमसा कए', 'मुँहझप्पा', 'लत्ता' सन शब्दसभक उदाहरण दैत कहैत छथि जे ई शब्द अनुवादकें मौलिक मैथिली स्वाद दैत अछि। ई अवलोकन लक्ष्य-पाठ पढ़िते पुष्ट होइत अछि। संवाद पुस्तकिया नहि, पात्र-विशिष्ट अछि; विशेषतः सुम्निमाक बोलीमे चपलता, निकटता, स्थानीयता आ शारीरिक प्रत्यक्षता अछि।

भाषिक पंजीक विरोधाभास अनुवादकक महत्वपूर्ण औजार अछि। सोमदत्तक वाक्यसभमे 'उदात्त', 'दानमय सम्बन्ध', 'द्विज धर्म', 'ब्रह्मचर्य', 'तपस्या', 'कर्तव्य', 'आत्मा', 'क्षेत्रपति' सन संस्कृतनिष्ठ पद अधिक; सुम्निमाक भाषामे 'तौं', 'यावा', 'माय', 'बाप', 'लत्ता', 'माटि', 'हावा', 'छुअए' सन प्रत्यक्ष लोक-शब्द अधिक। एहि भिन्नतासँ पाठक बिना कथावाचकक टिप्पणीक पात्रक संस्कृतिक दूरी सुनि सकैत अछि। अनुवाद एतए 'अर्थ' मात्र नहि, सामाजिक आवाजक पुनर्सृजन करैत अछि।

वर्णनात्मक अंशसभमे मैथिली क्रियापदक प्रवाह—‘देखैत रहल’, ‘बिला गेलि’, ‘सटिआ गेल’, ‘निहारैत’, ‘बौआइत’, ‘पसरि जाइत’—दृश्यकें गतिशील करैत अछि। अनेक वाक्य मूलतः दीर्घ अछि, मुदा क्रियामालाक कारण लय बनल रहैत अछि। प्रकृति-वर्णनमे ध्वनि-अनुकरण आ संवेदनात्मक शब्दावली विशेष प्रभावी अछि।

एक उल्लेखनीय बात सम्बोधनक स्तर अछि। बाल्यकालीन सुम्निमा—सोमदत्त वार्तामे निकट/अनौपचारिक सर्वनाम सांस्कृतिक दूरीकें चुनौती दैत अछि; सोमदत्तक शास्त्रीयता आ सुम्निमाक ‘रे’/सीधा सम्बोधन सामाजिक औपचारिकताक भिन्न मानदण्ड दिखबैत अछि। मैथिलीमे सर्वनाम-सम्मानक विस्तृत तन्त्र अछि, अतः एहन चुनाव चरित्रनिर्माणमे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बनैत अछि।

तथापि किछु अंशमे अत्यधिक तत्सम पदावली पाठकक सहज प्रवाह रोकि सकैत अछि। ई प्रश्न अनुवादकक दोष मात्र नहि, स्रोत-पात्र सोमदत्तक शास्त्रीय पंजीक आवश्यकता सेहो हो सकैत अछि। लक्ष्य-पाठक दृष्टिसँ उत्तम संस्करणमे दुर्लभ वैदिक/दार्शनिक पदक छोट शब्दकोश देल जाए त पठनीयता बढ़त आ भाषिक भिन्नता नष्टो नहि हएत।

समाजभाषाविज्ञान आ पहिचान

उपन्यासमे भाषा मात्र संवादक माध्यम नहि अछि, बरु ई पात्रसभक सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक आ वैचारिक पहिचान (Identity Marker) स्पष्ट करैत अछि। अनुवादक वृषेश चन्द्र लालक मैथिली रूपान्तरण एहि भाषिक द्वन्द्वकें बहुत निकसँ संरक्षित कएने अछि।

उपन्यासक एकटा प्रतिनिधि दृश्यमे, जखन सोमदत्त अपन मायकें ‘देवभाषा’मे ‘माता’ कहैत छथि, सुम्निमा तीखा प्रश्न करैत छथिन्ह —

“हँ, त तूँ आदमी भ’ क’ आदमीक भाषामे किएक ने बजैत छैँ ? आदमी भ’ क’ देवताक चलन नहि करबाक चाही। आदमीकें आदमी रहक चाही, सोमदत्त !”

“हमरा तोहर कोनो बात बुझाएमे नहि अबैत अछि, सोमदत्त ! मुदा हमरा बुझाइत अछि, आदमीकें देवता बनक कोशिश करब निक नहि। आदमीक ई धर्म नहि छैक। आदमीकें अपने बानि-चालिमे रहबाक चाही। देवता बनि कए जखने केओ रहए चाहत, ओ आदमी नहि रहत।”

एहि संवादमे 'माता' (संस्कृतनिष्ठ, देवभाषाजनित, दूरी-सूचक) आ 'माय' (लोकभाषाजनित, सामीप्य-सूचक) शब्दद्वयक टकराव प्रतीकात्मक रूपे सम्पूर्ण उपन्यासक वैचारिक ढाँचाकेँ समेटि लैत अछि — कृत्रिम दैवीकरण विरुद्ध स्वाभाविक मानवीयता। एतय ई ध्यान देबऽ जोग अछि जे मैथिलीमे अनूदित करैत काल अनुवादकक सोझाँ स्वयं एहि भाषिक-सांस्कृतिक पदानुक्रम (देवभाषा बनाम लोकभाषा)केँ मैथिलीक अपने शब्द-भण्डारमे पुनःसृजित करबाक चुनौती छल — जकरा ओ सफलतापूर्वक निर्वाह कएने छथि।

सुम्निमाक जनभाषा यथार्थवादी, नग्न आ मानवीय उष्णतासँ भरल अछि; सोमदत्तक भाषा सैद्धान्तिक, शास्त्रीय आ यथार्थसँ पलायनशील रूप ग्रहण करैत अछि। समाजभाषाविज्ञानक दृष्टिसँ भाषा शक्ति आ पदानुक्रम निर्माणक साधन बनि सकैत अछि; एहि आख्यानमे जनभाषा आ देवभाषाक तनाव सामाजिक निकटता बनाम सांस्कृतिक दूरीक चिह्न बनैत अछि।

भाषिक विशेषताक तुलनात्मक सारिणी

भाषिक विशेषता	सोमदत्तक सम्प्रेषण शैली (आर्य)	सुम्निमाक सम्प्रेषण शैली (किरात)
शब्दावलीक स्वरूप	संस्कृतनिष्ठ, औपचारिक, आ पारलौकिक ('माता', 'कपिला माता', 'आत्महन्ता')	यथार्थवादी, ठेठ, आ मातृसुलभ ('माय', 'मनुवा', 'बाबु')
सम्बोधनक प्रकृति	आदर्शवादी आ दूरी बनाबएबला ("हे कनकवदनी बालिके!", "असंस्कृता बालिके")	आत्मीय, प्रत्यक्ष आ भावनात्मक ("रे पतरसुट्टा!", "सोमदत्त!")
भावनात्मक अभिव्यक्ति	दमित, ज्ञानक आवरणमे छिपल, नीरस	उन्मुक्त, चञ्चल, आ व्यंग्यात्मक ("बाभनसभ कतेक दिन तक पित्त पोसने रहैत छैक")

भाषिक विशेषता	सोमदत्तक सम्प्रेषण शैली (आर्य)	सुम्निमाक सम्प्रेषण शैली (किरात)
भाषाक	पदानुक्रम (Hierarchy) आ धार्मिक	समानता, प्राकृतिक यथार्थ आ
समाजशास्त्रीय	श्रेष्ठता स्थापित करबाक यत्न	मानवीयता स्थापित करबाक यत्न
कार्य		

१२. अनुवाद-सिद्धान्त : 'सुम्निमा'क मैथिली रूपान्तरणकेँ कोना पढ़ी

अनुवादक अपन निवेदनमे 'भावानुवाद'क महत्त्व आ संप्रेषणीय प्रवाहक आवश्यकता स्वीकारैत छथि। ई आत्मस्वीकृति अनुवाद-सिद्धान्तक दृष्टिसँ अत्यन्त उपयोगी अछि, कारण लक्ष्य-पाठमे देखाइत रणनीति ओकरा पुष्ट करैत अछि। निम्न सिद्धान्तसभक आलोकमे अनुवादक प्रकृति अधिक स्पष्ट होइत अछि।

साहित्यिक अनुवाद : सृजनात्मक कर्म

भूमिकाकार प्रदीप गिरी अनुवाद-सिद्धान्तपर एकटा महत्वपूर्ण स्थापना दैत छथि — साहित्यिक अनुवाद कतिपय दृष्टिसँ मौलिक लेखनसँ बेसी सृजनात्मक होइत छैक। ओ उदाहरणस्वरूप उमर खैयामक रुबाइयातक उल्लेख करैत छथि, जे विश्वप्रसिद्ध भेल, मुदा एडवर्ड फिट्जेराल्डक अनुवादक कारणे। एहिसँ अनुवाद-सिद्धान्तक एकटा केन्द्रीय प्रश्न उठैत अछि — अनुवाद की मूल कृतिक सेवक मात्र थिक, वा ओ स्वयं एकटा स्वतन्त्र सृजनात्मक कृति बनि सकैत अछि ? गिरीक स्थापना दोसर पक्षक समर्थन करैत अछि।

अनुवादकक दू आवश्यक योग्यता

गिरीक अनुसार, सफल अनुवादकलेल दू गोटा योग्यता अनिवार्य अछि — पहिल, मूल कृतिक मर्म (आशय, आत्मा) बुझबाक क्षमता; आ दोसर, लक्ष्य-भाषाक सौष्ठव आ सौन्दर्यक आत्मसात। वृषेश चन्द्र लालमे ई दुनू योग्यता विद्यमान अछि — ओ बीपी कोइरालाक राजनीतिक-वैचारिक विरासतक अनुयायी होएबाक कारणे मूल कृतिक मर्मसँ परिचित छथि, आ मैथिली हुनकर मातृभाषा ("मायक कोखिसँ सिखल") होएबाक कारणे लक्ष्य-भाषापर हुनकर अधिकार स्वाभाविक अछि। डा. शेफालिका वर्मा एहि गुणकेँ 'भावानुवाद' (सम्प्रेषणीयताक

अविरल धारवाला अर्थ-केन्द्रित अनुवाद) क रूपमे चिन्हैत छथि, जकरा ओ शब्दानुवादसँ स्पष्ट रूपे उत्तम मानैत छथि।

(क) नाइडा : औपचारिक बनाम गतिशील समतुल्यता। यूजीन नाइडा १९६४ मे औपचारिक अनुरूपता आ गतिशील समतुल्यताक भेद स्थापित करैत छथि। गतिशील समतुल्यता लक्ष्य-पाठक पर स्वाभाविक, तुल्य प्रभाव उत्पन्न करबाक प्रयास करैत अछि। ‘सुम्निमा’क मैथिली रूपान्तरण शब्द-से-शब्द कठोरता सँ बेसी लक्ष्य-भाषाक स्वाभाविकता अपनबैत देखाइत अछि। ‘पतरसुट्टा’ सन शब्द, मैथिली क्रियापद्धति, सम्बोधन आ लोक-मुहावरा एहि गतिशील समतुल्यताक प्रमाण बुझाएत। अनुवादक स्रोतक सांस्कृतिक कथा राखैत छथि, पर ओकर भाव-स्पन्दन मैथिली पाठकक कान लेल पुनर्गठित करैत छथि।

(ख) न्यूमार्क : अर्थनिष्ठ आ संप्रेषणनिष्ठ अनुवाद। पीटर न्यूमार्कक अर्थनिष्ठ अनुवाद स्रोत-पाठक सूक्ष्म अर्थ आ शैलीक नजदीक रहैत अछि, जखन संप्रेषणनिष्ठ अनुवाद लक्ष्य-पाठकक ग्रहणशीलता आ स्पष्टताकें प्राथमिकता दैत अछि। एहि अनुवादमे दूनूक संतुलन अछि। वैदिक पद, संस्कार, किरात नाम, आश्रम-संबंधी शब्द—अर्थनिष्ठ झुकाव; जबकि संवाद, गामघरक शब्द, भावनात्मक स्थितिक सहज मैथिली—संप्रेषणनिष्ठ झुकाव। एहन मिश्र रणनीति साहित्यिक अनुवाद लेल उपयुक्त अछि, कारण केवल संप्रेषण मूल कृतिक सांस्कृतिक अपरिचितता मिटा सकैत अछि आ केवल स्रोत-निष्ठता भाषा कें जड़ बना सकैत अछि।

(ग) वेनूटी : घरेलूकरण आ विदेशीपन-संरक्षण। लॉरेन्स वेनूटीक शब्दावलीमे अनुवादक एकसाथ ‘घरेलूकरण’ आ ‘विदेशीपन-संरक्षण’ करैत छथि। मैथिली मुहावरा, मधेशी लोक-शब्द, परिचित वाक्यलय घरेलूकरण अछि—पाठ मैथिली घरक बनैत अछि। मुदा ‘किराती’, ‘कौशिकी’, ‘यज्ञ’, ‘ब्रह्मचर्य’, ‘भिल्ल’, संस्कार, आ सांस्कृतिक संघर्षकें स्थानीय मैथिली समकक्षमे विलीन नहि कएल गेल—ई विदेशीपन-संरक्षक अवशेष अछि। एहि द्वैध रणनीतिक कारण पाठ न पूर्णतः ‘नेपालीपन’ गुमबैत अछि, न लक्ष्य-भाषामे पराया बनि रहैत अछि।

(घ) कैटफर्ड : अनुवादीय संरचना-परिवर्तन। नेपाली सँ मैथिली जेहन निकट सम्बन्धित, पर पृथक व्याकरणिक-सामाजिक व्यवस्था वाली भाषामे शब्दक्रम, सर्वनाम, विभक्ति, क्रियापद, सम्मान-सूचकता, मुहावरा आ पद-चयनमे अनिवार्य संरचना-परिवर्तन होइत अछि। लक्ष्य-पाठमे मैथिली क्रियाप्रयोग—‘कएलक’, ‘कहलक’, ‘भेलैक’, ‘रहल’, ‘छलि’—आ सम्बोधन प्रणाली

स्रोत-संरचनाकैँ लक्ष्य-व्याकरणमे ढालबाक उदाहरण अछि। पूर्ण स्रोत-पाठ बिना विशिष्ट संरचना-परिवर्तनक सूची निर्णायक रूपेँ नहि बनाओल जा सकैत अछि, मुदा लक्ष्य-पाठ स्पष्ट रूपेँ नेपालीक यान्त्रिक अनुवर्तन नहि, स्वतंत्र मैथिली व्याकरणिक रूप ग्रहण कएने अछि।

(ङ) स्कोपोस : अनुवादक उद्देश्य। प्रकाशकीयसँ स्पष्ट अछि जे उद्देश्य केवल एक उपन्यास उपलब्ध कराएब नहि, मैथिली पाठक समुदायमे बीपी कोइरालाक रचनाकैँ प्रतिष्ठित करब आ नेपाली बहुभाषिक साहित्यिक संवादकैँ सघन करब सेहो अछि। स्कोपोस सिद्धान्तक अनुसार अनुवादक रणनीति लक्ष्य-उद्देश्यसँ जुड़ल होइत अछि। एहि दृष्टिसँ मैथिलीकरण, लोकशब्दक उपयोग आ पठनीयता आकस्मिक नहि, अनुवादक सामाजिक उद्देश्यक हिस्सा अछि।

(च) बासनेट आ सांस्कृतिक मोड़। सुसान बासनेटक अनुवाद अध्ययन भाषा-समानतासँ आगे संस्कृति, सत्ता, इतिहास आ साहित्यिक व्यवस्था पर बल दैत अछि। 'सुम्निमा'क मैथिली अनुवादक महत्त्व एतए विशेष रूपेँ बढ़ैत अछि: ई एक प्रमुख नेपाली लेखककैँ नेपालक दोसर व्यापक मातृभाषिक संसारमे स्थानान्तरित करैत अछि। अतः अनुवाद सांस्कृतिक पुनर्वितरण अछि—कौन कृति कोन भाषामे उपलब्ध हो, के पाठक राष्ट्रीय साहित्यक साझीदार बनथि, ई सत्ता-संबंधित प्रश्न अछि।

(छ) दूरी : लक्ष्य-संस्कृतिक मानक। गिडियन दूरीक वर्णनात्मक दृष्टि अनुवादकैँ लक्ष्य-संस्कृतिक 'मानक'क भीतर घटित व्यवहार मानैत अछि। एहि पाठमे मैथिली साहित्यिक शिष्टता आ बोलचालक मधुरता दुनूकैँ स्थान देल गेल अछि। अनुवाद न अत्यधिक मानकीकृत शुष्क मैथिली अछि, न पूर्ण स्थानीय बोली; ई व्यापक मैथिली पाठक लेल साहित्यिक मध्य-पंजी बनबैत अछि।

एहि सभ सिद्धान्तकैँ एकठाम रखला पर निष्कर्ष निकलैत अछि जे वृषेश चन्द्र लालक रणनीति 'भाव-संप्रेषणमुखी, लक्ष्य-भाषा-सक्रिय, पर सांस्कृतिक अवशेष-संरक्षक' अछि। एहि कारण अनुवादक स्वर दृश्य होइत अछि, पर लेखकक कथा पर हावी नहि होइत।

शब्द-स्तरक सृजनात्मक रूपान्तरण

अनुवादक लालद्वारा एहि ठाम 'दुब्लो/पातलो' (Nepali) कें 'पतरसुट्टा' (Maithili) तथा 'रोएर' (Nepali) कें 'भोकासी पाड़ैत कनैत' (Maithili) मे रूपान्तरित करब अनुवादक उच्चकोटिको

सिर्जनात्मकता (Creativity in Translation) थिक। एकर अतिरिक्त, मैथिली व्याकरणक विशिष्ट क्रियापदसभ (जहिना: 'कहलकैक', 'छलैक', 'बाजलि', 'देल्खिन्ह') क सटीक प्रयोगसँ पात्रसभक मनोभाव आ लैङ्गिक भिन्नताकें मैथिलीमे जीवन्त कएल गेल अछि।

१३. 'भावानुवाद'क उपलब्धि आ ओकर सम्भावित जोखिम

भावानुवादक मुख्य लाभ ई जे पात्रक भाव लक्ष्य-भाषामे जीवित रहैत अछि। जँ सुम्निमाक चञ्चल वाणी स्रोत भाषाक वाक्य-ढाँचा जसक तस रखि देल जाइत, त मैथिली पाठमे कृत्रिमता आबि सकैत छल। अनुवादक लोक-शब्द आ संवादक स्वाभाविकता द्वारा एहि संकटकें टारैत छथि। प्रेम, लज्जा, राग, तामस, विह्वलता, मातृस्नेह आ व्यंग्य लक्ष्य-पाठमे सहज संप्रेषित होइत अछि।

दोसर लाभ सांस्कृतिक निकटता अछि। मिथिला आ नेपालक सांस्कृतिक क्षेत्र ऐतिहासिक रूपेँ परस्पर सम्पर्कित रहल अछि; वैदिक पदावली, नदी-वनक सांस्कृतिक अर्थ, पारिवारिक सम्बोधन आदि मैथिली पाठक लेल पूर्णतः अपरिचित नहि। अनुवाद एहि साझा सांस्कृतिक पूँजीक उपयोग करैत अछि।

मुदा भावानुवादक जोखिम 'अति-घरेलूकरण' अछि। जँ लक्ष्य-भाषाक अत्यधिक स्थानीय शब्द स्रोत-समुदायक विशिष्टता पर पर्दा डालि देत, त पाठक किरात संसारकें मिथिलाक गामक विस्तार मानि सकैत अछि। एहि संस्करणमे अधिकांश सांस्कृतिक नाम आ चिह्न सुरक्षित रहबाक कारण ई जोखिम नियन्त्रित अछि, मुदा आलोचनात्मक दृष्टिसँ ध्यान देब जरूरी अछि। विशेषतः 'मधेशी शब्द'क प्रशंसा करैत परिपाठ स्वयं बतबैत अछि जे लक्ष्य-संस्कृतिक स्वाद जानबूझि बढ़ाओल गेल अछि।

दोसर जोखिम दार्शनिक पदक पंजी-संतुलन अछि। सोमदत्तक संस्कृतनिष्ठ भाषा चरित्रोचित अछि, पर कतहु अतिशय तत्समता सुम्निमाक सहज जगतसँ दूरी एतेक बढ़ा सकैत अछि जे पाठ वैचारिक द्वैतकें भाषिक रूढ़ि बना दे। एक समर्थ सम्पादित संस्करण पंजीक भिन्नता राखैत दुर्लभ पदपर न्यूनतम टिप्पणी देत।

तेसर जोखिम अनुवादकक 'अदृश्य' होयबाक नहि, बल्कि परिपाठक अत्यधिक दृश्यता अछि। प्रकाशकीय आ भूमिकासभ राष्ट्रीयता, मधेश, भाषा-राजनीति आ समाजवादक विशिष्ट व्याख्या

पाठककै आरम्भहि सँ एक व्याख्यात्मक बाट पर लगा दैत अछि। ई सामग्री ऐतिहासिक रूपेँ मूल्यवान अछि, मुदा साहित्यिक पाठक लेल उत्तम होएत जे अगिला संस्करणमे ‘अनुवादकीय टिप्पणी’ आ ‘आलोचनात्मक भूमिका’ स्पष्ट पृथक खण्डमे देल जाए, जाहिसँ पाठक उपन्यासक बहुअर्थता स्वतंत्र रूपेँ ग्रहण कऽ सके।

अनुवादकक सामाजिक-राजनीतिक एजेन्सी आ सांस्कृतिक भूगोल

अनुवादक स्वयम् शून्यमे काम नहि करैत अछि; ओकर एकटा वैचारिक एजेन्सी होइत छैक। वृषेश चन्द्र लाल स्वयं एक गोट मधेशीमूलक राजनीतिज्ञ आ लोकतान्त्रिक समाजवादी विचारक छथि। नेपालमे लामो समयधरि राजा महेन्द्रक पंचायतकालीन "एक राजा एक देश, एक भाषा एक भेष" क नीति अन्तर्गत खस भाषाक वर्चस्व रहल अछि, जकरा कारणेँ अन्य भाषासभ उपेक्षित रहल।

‘सुनिम्ना’क अनुवाद-चयन स्वयंमे एकटा सांस्कृतिक-राजनीतिक वक्तव्य थिक। भूमिकाकार प्रदीप गिरी एहि तथ्यपर विशेष जोर दैत छथि जे राजा महेन्द्र, जे ‘एक राजा, एक देश, एक भाषा, एक भेष’क नारा दए नेपालक भाषिक विविधताकें दबेलन्हि, तिनकर शरीरमे सेहो मैथिल रक्तक अंश छल — मुदा पंचायत-कालमे मिथिला वा किरात संस्कृतिकें कहियो राजकीय सम्मान नहि भेटल। एहि सन्दर्भमे, मधेशी मूलक एकटा राजनीतिज्ञद्वारा बीपी कोइरालाक कृतिकें मैथिलीमे अनुवाद करब — जे स्वयं राष्ट्रियताक वैकल्पिक निर्माणक एकटा प्रयास थिक — गहीर अर्थ राखैत अछि।

भूमिकाकार ई सेहो स्मरण करबैत छथि जे बीपी कोइरालाक विभिन्न उपन्यासक पात्रसभ काठमान्डू, दरभंगा, बराहक्षेत्र आ भागलपुर धरि — नेपाल-मिथिला-बिहारक सम्पूर्ण सांस्कृतिक क्षेत्रमे विस्तारित छथि, जे कोइरालाक भौगोलिक-सांस्कृतिक दृष्टिक व्यापकताकें प्रमाणित करैत अछि। मिथिलाक पाण्डित्य-परम्परा (मण्डन मिश्र, वाचस्पति मिश्र, विद्यापति) आ शाहवंशोत्तर मिथिलाक राजनीतिक-सांस्कृतिक हासक ऐतिहासिक सन्दर्भमे, ई अनुवाद साहित्यक माध्यमसँ राष्ट्रिय-सांस्कृतिक ऐक्यबद्धता सिंचित करबाक एकटा सार्थक प्रयास बनि जाइत अछि।

भूमिकाकार प्रदीप गिरी राजा महेन्द्रक शरीरमे मैथिल रक्तक अंशक उल्लेख करैत भाषिक-सांस्कृतिक विडम्बना रेखांकित करैत छथि: रक्त-सम्मिश्रणक ऐतिहासिक यथार्थ रहितो

पंचायत-कालमे मिथिला वा किरात संस्कृतिकेँ अपेक्षित राजकीय सम्मान नहि भेटल। एहि सन्दर्भमे मैथिली अनुवाद स्वयं राष्ट्रीयता, भाषा आ सांस्कृतिक सहअस्तित्वक प्रश्नसँ जुड़ि जाइत अछि।

१४. कृतिक सीमा आ आलोचनात्मक आपत्ति

गहन समीक्षा केवल प्रशंसा नहि होइत। 'सुम्निमा'क रचनात्मक शक्ति अत्यन्त पैघ अछि, मुदा किछु प्रश्न आलोचना लेल खुलल अछि। पहिल—संस्कृति-द्वैतक सारतत्त्ववाद। ब्राह्मण = आत्मा/आकाश/शास्त्र आ किरात = देह/माटि/प्रकृतिक रूपक प्रभावी अछि, पर वास्तविक जातीय समुदायक आन्तरिक विविधताकेँ सरल बनबैत अछि। आधुनिक जातीय अध्ययन एहि द्वैतकेँ ऐतिहासिक सत्ता-संबंधक संग अधिक जटिल रूपमे देखबाक अपेक्षा करैत अछि।

दोसर—स्त्रीक प्रतीकीकरण। सुम्निमा प्रकृति आ देहक महान प्रतीक बनैत छथि, पुलोमा दमनक पीड़ा; पर पुरुष पात्रक आत्म-संकट कथाक केन्द्रीय दार्शनिक धुरी रहैत अछि। एहि कारण कखनो स्त्री पात्र पुरुषक आत्मज्ञानक माध्यम बनैत देखाइत छथि। उपन्यास एहि सीमा सँ पूर्णतः मुक्त नहि, यद्यपि सुम्निमाक सक्रिय नैतिक निर्णय आ अन्तिम सामाजिक भूमिका ओकर स्वतंत्रता मजबूत करैत अछि।

तेसर—मनोविश्लेषणक सांस्कृतिक अनुवाद। उपन्यासक यौन-मनोवैज्ञानिक संरचना अत्यन्त आधुनिक अछि, मुदा ओकरा वैदिक/किराती आदिरूपमे रखल गेल अछि। पाठक सावधान रहथि जे एहि मिथकीय कथा सँ वास्तविक ऐतिहासिक किरात अथवा वैदिक समाजक नृवंशशास्त्रीय तथ्य निष्कर्षित नहि कएल जाए। ई साहित्यिक रूपक अछि, इतिहास-पुस्तक नहि।

चारिम—कथावाचकक दार्शनिक हस्तक्षेप। छोट उपन्यासमे कतिपय ठाम प्रश्नाकुल निबन्धात्मकता कथा केँ क्षणभर रोकैत अछि। अनेक पाठक लेल ई गहनता अछि; किछु लेल प्रवाहक व्यवधान। ई शैलीगत चुनाव अछि, शुद्ध दोष नहि।

पाँचम—अनुवाद संस्करणक सम्पादकीय आवश्यकता। उपलब्ध पीडीएफमे पुरान फन्ट/कूटबद्धताक कारण डिजिटल पाठसुलभता घटैत अछि; भविष्यक यूनिकोड संस्करण, खोजयोग्य पाठ, शब्दकोश, व्यक्तिनाम-सूची, सांस्कृतिक टिप्पणी आ स्रोत-संस्करणक स्पष्ट विवरण बहुमूल्य हएत। ई साहित्यिक अनुवादक दीर्घजीविता आ शोधोपयोगिता दुनू बढ़ाओत।

१५. अनुवादक विशिष्ट उपलब्धि : पाँच कसौटी पर मूल्यांकन

1. १. पठनीयता — उच्च। मैथिली वाक्य स्वाभाविक रूपें बहैत अछि; संवाद विशेष रूपें जीवित अछि। पाठककें निरन्तर ई अनुभूति नहि होइत जे ओ 'अनुवाद' पढ़ि रहल अछि।
2. २. पात्र-वाणी — अत्यन्त सफल। सोमदत्त आ सुम्निमाक पंजीक स्पष्ट भिन्नता चरित्र आ दर्शन दुनू निर्मित करैत अछि। पुलोमाक वाणीमे दाम्पत्यक पीड़ा, आत्मसम्मान आ आक्रोशक स्वर सेहो प्रभावी अछि।
3. ३. सांस्कृतिक संप्रेषण — संतुलित। स्रोतक किरात/वैदिक संसार सुरक्षित अछि, मुदा भाषा मैथिली पाठक लेल घरेलू बनल अछि। लोक-शब्दक उपयोग लक्ष्य-सांस्कृतिक निकटता बढ़बैत अछि।
4. ४. सौन्दर्यात्मक पुनर्सृजन — सफल। प्रकृति-वर्णन, देह-संवेदना, भावनात्मक संवाद आ उपसंहारक लय मैथिलीमे साहित्यिक प्रभाव उत्पन्न करैत अछि। प्रदीप गिरिक एहि टिप्पणीमे सार अछि जे अनुवाद 'मौलिक सन' लगैत अछि—एहि अर्थमे जे ओकर भाषा स्वयं साहित्यिक जीवन पबैत अछि।
5. ५. शोधोपयोगिता — मध्यम सँ उच्च, पर सम्पादकीय सुधार अपेक्षित। पाठ, भूमिका आ प्रकाशकीय सामग्री बहुमूल्य अछि; भविष्यक यूनिकोड आलोचनात्मक संस्करण, शब्दार्थ, स्रोत-संदर्भ, अनुवादकीय टिप्पणी आ पृष्ठानुक्रमण शोधक लेल विशेष सहायक हएत।

१६. समग्र साहित्यिक निर्णय

विश्वेश्वरप्रसाद कोइराला रचित 'सुम्निमा' मात्र एकटा कथाक पुस्तक नहि, अपितु पूर्वीय आ पश्चिमी दर्शनक बीचक वैचारिक युद्धभूमि थिक। उपन्यासमे सोमदत्तक माध्यमसँ आध्यात्मिक पाखण्ड, सांस्कृतिक वर्चस्व, आ दमित यौनिक मनोवृत्तिक खोखलापनकें उजागर कएल गेल अछि, जखन कि सुम्निमाक माध्यमसँ प्रकृति, मानवीयता, आ जीवनक यथार्थ आनन्दकें सर्वोच्च सत्ताक रूपमे स्वीकार कएल गेल अछि।

‘सुम्निमा’क मूल शक्ति ओकर प्रश्नमे अछि, उत्तरमे नहि। ई पाठककें पूछैत अछि—की मनुष्यक उद्धार देहकें पराजित कऽ सम्भव अछि? की संस्कृति अपन शुद्धता बचबैत-बचबैत जीवनकें नष्ट करैत अछि? की प्रेम जातीय सीमा, धर्म, पितृवंश आ शास्त्रसँ बाहर अपन नैतिक सत्य राखैत अछि? की प्रकृति सभ्यताक विरोधी अछि, कि सभ्यता कें मानवीय बनबैत रहबाक मूल स्मृति? आ सभसँ पैघ—की ‘अन्य’कें सुधारबाक बदला ओकरासँ किछु सीखल जा सकैत अछि?

कृतिक उत्तर एकरेखीय नहि। सोमदत्तक पूर्ण पराजय आ किराती जीवनक पूर्ण विजय कहब सरल होएत, पर उपसंहार ई सरलता तोड़ि दैत अछि। सुम्निमा स्वयं अपन बेटीकें ब्राह्मण युवकक ‘उड़ान’ बुझबाक शिक्षा दैत अछि; ब्राह्मण युवक किराती घरमे पलेलो आश्रमक स्मृति दिस लौटैत अछि; दुनू प्रेम करैत छथि, पर अन्तर मिटैत नहि—समझौता, संवेदना आ परस्पर परिवर्तन द्वारा साथ जीबाक संभावना बनैत अछि। एहि बिन्दुपर उपन्यास बहुलतावादी मानवतावादक कृति बनैत अछि।

मैथिली रूपान्तरण एहि मानवतावादकें अतिरिक्त ऐतिहासिक अर्थ दैत अछि। जे कथा सांस्कृतिक श्रेष्ठताबोधक विघटन करैत अछि, ओकर नेपाली सँ मैथिलीमे आगमन स्वयं भाषिक केन्द्रवादक विरुद्ध एक साहित्यिक कृत्य बनि जाइत अछि। वृषेश चन्द्र लालक लक्ष्य-पाठक शक्ति एहिमे अछि जे ओ मैथिलीकें केवल माध्यम नहि, सह-रचनात्मक भाषा बनबैत छथि। मैथिली लोक-लय, संबोधन, क्रिया, मुहावरा आ संवेदनात्मक शब्दावलीक कारण सुम्निमा नव भाषिक देह पबैत अछि।

अनुवाद-सिद्धान्तक कसौटी पर ई रूपान्तरण गतिशील/प्रभाव-समतुल्यता, संप्रेषणीयता, चयनित घरेलूकरण आ सांस्कृतिक विदेशीपन-संरक्षणक सफल समन्वय देखबैत अछि। शाब्दिक निष्ठाक बजाय भाव, पात्र-वाणी आ सांस्कृतिक तनावक पुनर्सृजन प्राथमिक अछि। ई रणनीति अनुवादकक घोषित ‘भावानुवाद’ दृष्टिसँ मेल खाइत अछि। स्रोत-पाठक प्रत्यक्ष पंक्ति-दर-पंक्ति तुलना बिना पूर्ण निष्ठा-मूल्याङ्कन देब अकादमिक रूपेँ अनुचित हएत, मुदा लक्ष्य-पाठक साहित्यिक स्वायत्तता निर्विवाद रूपेँ उच्च अछि।

अन्ततः ‘सुम्निमा’ एहन कृति अछि जकरा एक बेर पढ़ि कथा बुझल जा सकैत अछि, मुदा बारम्बार पढ़ने ओकर प्रश्न खुलैत अछि। मनोविश्लेषण ओकर एक द्वार; जातीय अध्ययन

दोसर; नारीवाद तेसर; पर्यावरण चौठ; अनुवाद अध्ययन पाँचम। एहि सभ द्वारसँ प्रवेश केलापर जे केन्द्र देखाइत अछि से ‘मनुष्य’ अछि—एहन मनुष्य जे न शुद्ध आत्मा अछि, न केवल देह; न केवल परम्परा, न केवल प्रकृति; न केवल अपन जाति, न केवल व्यक्तिवादी इच्छा। ओ सम्बन्धमे बनैत अछि। एहि दृष्टिसँ ‘सुम्निमा’क स्थायी साहित्यिक मूल्य ओकर प्रेमकथासँ बेसी ओकर सम्बन्ध-दर्शनमे निहित अछि।

अन्तिम पंक्तिक प्रतीकात्मक संकेत

“किरातीसभक जातिक रक्त महासमुद्रमे एक टा बून्दक कोनो अस्तित्व नहि रहलैक। कोशिश अबाध गति प्रकृतिक विराट शान्तिकेँ चिरैत बहैत रहलैक।”

ई पंक्ति सम्मिश्रणक प्रतीक थिक—व्यक्तिगत आ जातीय शुद्धताक दावा विराट प्रकृतिक प्रवाहमे टिकैत नहि; जीवित इतिहास सम्बन्ध, मिश्रण आ परिवर्तनक बाटे आगाँ बढ़ैत अछि।

१७. भावी संस्करण लेल सम्पादकीय सुझाव

1. सम्पूर्ण यूनिकोड देवनागरी पाठ प्रकाशित हो, जाहिसँ खोज, उद्धरण, ई-पुस्तक आ डिजिटल अभिलेखन सहज हो।
2. दुर्लभ वैदिक, किराती आ क्षेत्रीय पदक २–४ पृष्ठक शब्दकोश जोड़ल जाए; मूल पाठक लय बाधित नहि कएल जाए।
3. अनुवादकीय टिप्पणीमे स्रोत संस्करण, पाठ-नीति, नाम/पदक रूपान्तरण, लोकशब्द चयन आ भावानुवादक सिद्धान्त संक्षेपमे स्पष्ट कएल जाए।
4. आलोचनात्मक भूमिका आ राजनीतिक-सांस्कृतिक परिपाठकें पृथक खण्डमे रखल जाए, जाहिसँ उपन्यासक स्वायत्त पाठ पहिले उपलब्ध हो।
5. शोधार्थी लेल अध्यायवार पृष्ठ-सूची, व्यक्तिनाम-सूची, प्रमुख प्रतीक-सूची आ चयनित द्वितीयक ग्रन्थसूची जोड़ल जाए।
6. भविष्यक तुलनात्मक संस्करणमे मूल नेपाली आ मैथिली पाठक चुनिंदा अंश आमने-सामने देल जाए; एहि सँ अनुवाद-अध्ययनक अकादमिक मूल्य बहुत बढ़त।

अन्तिम टिप्पणी

“सुम्निमा”क स्थायी उपलब्धि ई नहि जे ओ देहकेँ आत्मापर अथवा किरातकेँ ब्राह्मणपर विजयी घोषित करैत अछि; ओकर स्थायी उपलब्धि ई जे ओ शुद्धताक दम्भकेँ विघटित कऽ सम्बन्ध, मिश्रण, करुणा आ परस्पर परिवर्तनकेँ मनुष्यक भविष्य रूपमे स्थापित करैत अछि। मैथिली रूपान्तरण एहि विचारकेँ अपन लोक-लय आ जीवित भाषिक देह प्रदान करैत अछि।

ग्रन्थसूची — केवल पुस्तक

कोइराला, विश्वेश्वरप्रसाद। सुम्निमा। मैथिली रूपान्तरण: वृषेश चन्द्र लाल। काठमाण्डू: फिनिक्स बुक्स, प्रथम संस्करण २०७८ वि.सं. (२०२१ ई.)।

नाइडा, यूजीन ए. Toward a Science of Translating. लाइडन: ई. जे. ब्रिल, 1964।

कैटफर्ड, जे. सी. A Linguistic Theory of Translation: An Essay in Applied Linguistics. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1965।

न्यूमार्क, पीटर। A Textbook of Translation. न्यूयॉर्क: प्रेन्टिस-हॉल इन्टरनेशनल, 1988।

वेनूटी, लॉरेन्स। The Translator’s Invisibility: A History of Translation. दोसर संस्करण। राउटलेज, 2008 (प्रथम संस्करण 1995)।

बासनेट, सुसान। Translation Studies. चारिम संस्करण। लन्दन/न्यूयॉर्क: राउटलेज, 2014।

मन्डे, जेरेमी। Introducing Translation Studies: Theories and Applications. चारिम संस्करण। राउटलेज, 2016।

टूरी, गिडियन। Descriptive Translation Studies—and Beyond. संशोधित संस्करण। जॉन बेन्जामिन्स, 2012।

नाबोकोव, व्लादिमिर। Lolita।

वर्मा, भगवती चरण। चित्रलेखा।

रजनीश (ओशो)। सम्भोग से समाधि की ओर।

१.१०. गजेन्द्र ठाकुर — नित नवल कमला चौधरी

VIDEHA 451 • VIDEHA451 / PROSE 10 • सम्पूर्ण मूल पाठ

स्रोतक मूल शीर्षक, प्रकाशन-विवरण, विषय-सूची, अध्याय, तालिका, अन्तिम टिप्पणि आ सन्दर्भ पूर्ण रूपेँ समाविष्ट। मूल स्रोतमे छपल आन्तरिक पृष्ठाङ्क स्रोत-संस्करणक अछि।

नित नवल कमला चौधरी

कमला चौधरीक साहित्य : कथा, अनुवाद, भाषा आ संस्कृति

लेखक

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

२०२६

प्रकाशन-विवरण

नित नवल कमला चौधरी

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

प्रकाशकीय परिचय : www.videha.co.in

© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२६

सर्वाधिकार सुरक्षित। लेखकक लिखित अनुमतिक बिना एहि पुस्तकक कोनो अंशक पुनर्मुद्रण वा व्यावसायिक पुनर्प्रकाशन नहि कएल जाए। उद्धरण आ शैक्षिक उपयोग प्रचलित सन्दर्भ-परम्पराक अनुसार कएल जा सकैत अछि।

आमुख

‘नित नवल कमला चौधरी’ साहित्यक विविध विधाक भीतर एकहि सर्जनशील व्यक्तित्वक उपस्थिति देखबाक प्रयास अछि। कथा-साहित्य, अनुवाद आ सांस्कृतिक शब्दावली—तीनू क्षेत्रमे कमला चौधरीक रचनात्मक आ अनुसन्धानी अभिरुचिक अलग रूप देखाइत अछि। एकर अध्ययन करैत काल रचना, अनूदित कृति आ शब्दावली-ग्रन्थक विधागत अन्तर अक्षुण्ण राखब जरूरी अछि।

प्रथम अध्यायमे आशापूर्णा देवीक कथा ‘मोनक पौती’क कमला चौधरीक मैथिली अनुवादक पाठ, शशिताराक आत्मनिर्णय, पारिवारिक स्वत्व आ भाषिक रूपान्तरणक विस्तृत आलोचना अछि। दूनू अध्ययनक समेकनमे कथानकक बारह क्रमिक पाठ-खण्ड आ बंगला—मैथिली प्रसंगक पचहत्तर तुलनात्मक स्थल एकहि क्रममे समाविष्ट कएल गेल अछि। कथ्य-साम्यकें शब्दशः समानता मानल नहि गेल अछि; मूल बंगला शीर्षक सम्बन्धी प्रश्न सेहो सावधानीसँ विवेचित अछि।

द्वितीय अध्याय ‘समय-संकेत’क चौदहो कथाकें मूल कथा-क्रममे पढ़ैत अछि। तृतीय अध्याय ‘मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली’क बारह अध्याय, उपसंहार आ परिशिष्टसभक सांस्कृतिक आ भाषिक महत्त्वपर विचार करैत अछि। एहि तीनू खण्डक समीक्षामे व्यक्तित्व आ समाज, भाषा आ सांस्कृतिक स्मृति तथा साहित्य आ जीवनानुभवक अन्तःसम्बन्ध एक सूत्र बनैत अछि।

ग्रन्थक अन्तमे समेकित निष्कर्ष आ पुस्तकमुखी ग्रन्थसूची देल गेल अछि। जाहि प्राथमिक कृतिक प्रकाशक सम्बन्धी विवरण सुनिश्चित नहि अछि, ओतऽ अनिश्चितता स्पष्ट राखल गेल अछि; कोनो अनुमानित प्रकाशकीय सूचना प्रस्तुत नहि कएल गेल अछि।

अनुक्रमणिका

आमुख 3

अध्याय १ : मोनक पौती — अनुवाद, कथा आ तुलनात्मक आलोचना 6

कथा-संरचना आ विवेचनक पाठ-खण्ड 7

बारह पाठ-खण्डमे समग्र कथाक विवेचन 8

पात्र-संरचना आ नैतिक द्वन्द्व 14

स्त्री-अस्मिता, वैधव्य आ सम्पत्ति 15

अनुवाद-सिद्धान्तक प्रयोग 16

मैथिली भाषा, संवाद आ सांस्कृतिक शब्दावली 19

कथन-कौशल, समय आ प्रतीक 21

अनुवादक उपलब्धि एवं आलोचनात्मक प्रश्न 22

बंगला शीर्षक आ कथ्यगत सम्बन्ध 22

कथ्यक पाँच तुलनात्मक प्रसंग-खण्ड 23

पचहत्तर प्रसंग-कणिकाक विस्तृत मिलान 24

भाषा, संवाद आ सांस्कृतिक अर्थक निकट-पाठ 39

शीर्षकान्तर, स्वत्व आ घरक पुनर्निर्माण 44

मोनक पौती : समग्र निष्कर्ष 46

अध्याय २ : समय-संकेत — चौदहो कथाक समग्र विवेचन 48

चौदहो कथाक पृथक आलोचनात्मक अध्ययन 49

कथासभक तुलनात्मक विषय-विमर्श 59

कथा-शिल्प आ भाषिक विश्लेषण 61

अध्याय ३ : मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली 65

मूल ग्रन्थक बारह अध्यायक रूपरेखा 65

वेश-सम्बन्धी शब्दक निकट-पाठ 76

समेकित आलोचनात्मक निष्कर्ष 76

समेकित उपसंहार 78

ग्रन्थसूची 79

अध्याय १ : मोनक पौती — अनुवाद, कथा आ तुलनात्मक आलोचना

आधार-कृति : आशापूर्णा देवी, मोनक पौती; मैथिली अनुवाद : कमला चौधरी। पल्लवी प्रकाशन, बेरमा/निर्मली, २०२२। ISBN 978-93-93135-12-4।

कृतिक परिचय आ आलोचनात्मक आधार

‘मोनक पौती’ बंगला लेखिका आशापूर्णा देवीक ‘Moner Jhanpi’ नामक उपन्यासिकाक कमला चौधरी द्वारा कएल मैथिली अनुवाद अछि। ई अध्ययन सम्पूर्ण उपलब्ध मैथिली संस्करणकें आधार बनबैत, शशिताराक व्यक्तित्व, वैधव्यक सामाजिक नियमन, सम्पत्तिक अधिकार, परिवारक स्वार्थ-स्नेह, आ उत्तरवयसक आत्मीयताक प्रश्नकें पढ़ैत अछि। एकर केन्द्रीय स्थापना ई अछि जे अनूदित कथा केवल बंगला साहित्यक कथावस्तुकें मैथिलीमे नहि पहुँचेबैत अछि; ई लक्ष्यभाषाक सामाजिक लय, सम्बोधन, संवाद आ सांस्कृतिक अनुगूँजक भीतर स्त्रीक स्वतंत्र अस्तित्व पर फेरसँ विचार करबाक अवसर सेहो दैत अछि।

पद्धतिकें दू स्तर पर राखल गेल अछि। पहिल स्तरमे छपल मैथिली पाठक पृष्ठ-क्रम (७-८९) अनुसार कोनो हिस्सा छोड़ने बिना घटनाक्रम, पात्रक स्वर आ अर्थक विकास जाँचल गेल अछि। दोसर स्तरमे अनुवादशास्त्रक औजार—नाइडाक रूपगत एवं गत्यात्मक समतुल्यता, वेनूतीक घरेलूकरण आ परकीयकरण, वाक्य-संरचनागत रूपान्तरण, सांस्कृतिक शब्दक हस्तान्तरण, आ अनुवादक दृश्यता—कें पाठक उदाहरणपर लागू कएल गेल अछि।

मैथिली पुस्तकक प्रकाशकीय परिचयमे मूल बंगला शीर्षक ‘Moner Jhanpi’ उल्लेखित अछि। एकर कथानकसँ घनिष्ठ साम्य रखनिहार बंगला ‘জান্নাঝ কোঁঠো’ शीर्षकक पाठ सेहो भेटैत अछि। शीर्षकान्तरक ऐतिहासिक सम्बन्ध निश्चित करबाक लेल मुद्रित बंगला संस्करणक प्रकाशकीय विवरण महत्वपूर्ण रहत; एतय अनुमानकें प्रमाणक स्थान नहि देल गेल अछि। कथा-संरचना आ विवेचनक पाठ-खण्ड

एहि उपन्यासिकामे कथा निरन्तर रूपसँ आगाँ बढ़ैत अछि; मूल पुस्तकमे ७ सँ ८९ पृष्ठ धरि पृथक् अध्याय-संख्या अथवा नियत शीर्षकक विभाजन नहि अछि। अध्ययनक सुविधार्थ बारहटा व्याख्यात्मक ‘पाठ-खण्ड’ बनाओल गेल अछि। ई सम्पादकीय वर्गीकरण अछि, मूल पोथीक अध्याय नहि। हर खण्ड पृष्ठक्रमक लगातार हिस्सा समेटैत अछि; कोनो कथात्मक पृष्ठ खाली नहि छोड़ल गेल अछि।

अध्ययन-खण्ड	पृष्ठ	मुख्य पाठ-विषय
१	७-१३	शशिताराक स्थितिक परिचय; वैधव्य, परिवार आ स्मृति
२	१४-२०	घर, मान्यता, रोजमर्रा आ समाजक दृष्टि
३	२१-२७	धर्म, परोपकार, सेवा आ स्त्रीक आत्म-अधिकार
४	२८-३४	कथोपकथन, अजित आ सम्पत्तिक अंकुरित प्रश्न
५	३५-४१	बुढ़ापा, सम्बन्ध आ परम्परागत मानक
६	४२-४९	मन्दिर, भूमि, भतीज-परिवार, रमेश मास्टर
७	५०-५६	राजबालाक कथन; पारिवारिक स्वार्थक तीव्रता
८	५७-६३	रमेशक संवाद, नूतन सम्भावना आ सन्देह
९	६४-७०	भूमिक उपयोग, खरीद-बिक्री आ आत्मनिर्णय

अध्ययन-खण्ड	पृष्ठ	मुख्य पाठ-विषय
१०	७१-७७	जीवेशक प्रस्ताव, मोलभाव, नव-निर्माण
११	७८-८४	परिवर्तन, 'हमर'क अर्थ, अपनत्वक पुनर्विचार
१२	८५-८९	अन्तिम आत्मीयता, वयसक मानक आ खुलैत अन्त

बारह पाठ-खण्डमे समग्र कथाक विवेचन

पाठ-खण्ड १ : आरम्भमे व्यक्तित्व आ वैधव्य (पृ. ७-१३)

आरम्भक पृष्ठपर शशिताराक जीवनक परिचय सपाट परिचय-पत्रक रूपमे नहि, अपितु स्मृतिपरक आ प्रश्नमूलक कथनसँ खुलैत अछि। फूलपुर आ चट्टोपाध्याय परिवारक परिवेश, विवाहक अतीत, पतिक निधन आ नेहरसँ सम्बन्धित स्थिति मिलि एक एहन स्त्रीक जीवन बनबैत अछि जे सामाजिक दृष्टिसँ विधवा आ पारिवारिक दृष्टिसँ एकटा निरन्तर जिम्मेवारीक केन्द्र छथि। कथामे हुनक मूल्यांकन करबाक सामाजिक आदति आ हुनक अपन दृष्टि आरम्भेसँ भिड़ैत रहैत अछि।

घरक भीतर सेवा करैत, लोकक काजमे हाथ बँटबैत, अपन दुख हँसीक भीतर लुका लैत शशितारा केवल करुणाक पात्र नहि बनैत छथि। आसपासक लोक हुनका 'पीसी' अथवा सम्मानसूचक पारिवारिक सम्बोधनसँ बजबैत अछि; सम्बन्धक ई जाल एकातिर आसरा दैत अछि आ दोसरातिर निजी अधिकारक सीमारेखा खींचैत अछि। पृ. ८-९ मे वैवाहिक अतीतक विवरण आ पृ. १०-१३ मे दैनिक संवादक माध्यमसँ एकाकी जीवनक व्यथा धीरे-धीरे उजागर होइत अछि।

एहि खण्डक आलोचनात्मक महत्त्व ई अछि जे कथा आरम्भहि सँ 'विधवा'क स्थिर सामाजिक परिचयकेँ 'व्यक्ति'क बहुआयामी जीवनसँ चुनौती दैत अछि। पारिवारिक आ धार्मिक प्रतीक वियोगक संग मानवीय लगावक भूख सेहो जनबैत अछि। अनुवादक पहिल पृष्ठे घर-आँगनक भाषा, हास्यक हलुक झोंक आ छोट-छोट संवादसँ पाठककेँ पात्रसँ समीप आनैत छथि।

पाठ-खण्ड २ : घर-आँगन, लोकविचार आ सेवाभाव (पृ. १४-२०)

पृ. १४-१६ मे दैनन्दिन रहन-सहन, शशिताराक अपन निर्णयक प्रति सजगता आ परिवारक चिन्ता-कथन बढ़ैत अछि। एक दिस घरक मानमर्यादा अछि; दोसर दिस शशिताराक इच्छाशक्ति। सामाजिक लोकव्यवहारमे हुनक सेवा चाहल जाइत अछि, मुदा हुनक निजी मनक बात पूछबाक सजगता कम देखाइत अछि। एहि फरकक कारण पात्रक मौन सेहो अर्थवान होइत अछि।

पृ. १६-१८ मे फूल, पूजा, बच्चा आ पड़ोसक व्यवहार उल्लेखनीय अछि। शशितारापर परिवारक निर्भरता कथाक माध्यमसँ बिनु घोषणाक उधार होइत अछि। फूल तोड़बाक दृश्यकें मात्र घरक काज मानल जाए तँ अर्थ आधा रहि जायत; फूल निजी लगाव, पूजा आ प्राप्त-अप्राप्त स्नेहक सूचक बनैत अछि। पृ. १९-२० मे पड़ोस, परिजन आ शिक्षक-सम्बन्धी संवाद आगा कथा लेल सामाजिक मंच तैयार करैत अछि।

भाषामे प्रश्नोत्तरक क्रम ‘की?’, ‘किएक?’, ‘अहाँ?’ जैसन टटका उच्चारणक संग आबैत अछि। भाषिक सहजता एकटा नैतिक प्रतिरोध बनेबा योग्य अछि; एहि कथामे विशाल वैचारिक वक्तव्यसँ बेसी स्नेह, हँसी आ रोजमर्राक प्रश्न पाठकक सामने स्त्रीक अनुभूति उधारैत अछि।

पाठ-खण्ड ३ : धर्म, परोपकार आ स्वाधीनता (पृ. २१-२७)

पृ. २१-२३ मे विद्यालय, सेवा, लोकक पीड़ा, भोर-साँझक काज आ परिजनक आवश्यकता परक बातचीतसँ शशिताराक चरित्रक कर्मप्रधान पक्ष मजबूत होइत अछि। हुनक धार्मिक अथवा नैतिक प्रवृत्ति केवल कर्मकाण्ड नहि; ओ जीवित मनुक्खक दुःख-दर्दसँ जुड़ैत अछि। ताहि कारणेँ पूजाक फूल आ रोगीक सेवा एतय एक-दोसरक विरोध नहि, अलग-अलग मानवीय आवश्यकताक रूपमे देखाइत अछि।

पृ. २४-२५ मे स्वास्थ्यक चिन्ता आ साधनक प्रश्नक संग पात्रक स्वाभिमान प्रकट होइत अछि। जकर देखरेख ओ करैत छथि, से लोक हुनका केवल ममताक भण्डार बुझबाक अभ्यस्त अछि; मुदा शशिताराक लेल अपन इच्छा, अपन शरीर आ अपन समयक मूल्य सेहो अछि। पृ. २६-२७ मे पारिवारिक कथनक बीच स्नेह आ स्वार्थक भेद उधार होइत अछि।

एहि अंशमे कथा प्रेमकेँ कर्तव्यक अनिवार्य उत्तराधिकारी नहि मानैत अछि। सेवा करब मोनक सहमति होएबाक चाही, बाध्यकारी समाजक अधिकार नहि—ई विचार धीरे-धीरे निर्मित होइत अछि। अनुवादक एहि सूक्ष्म भावकेँ उपदेशक कठोर स्वरक बदला जीवित संवादक स्वरमे रखैत छथि।

पाठ-खण्ड ४ : उत्तराधिकारक प्रश्नक बीजारोपण (पृ. २८–३४)

पृ. २८–२९ मे मनुखक स्नेह, भरोसा आ भक्तिक भावक संग तर्कशील प्रश्नोत्तर अछि। पृ. ३०–३१ मे जीवनक अनुभव, सम्पत्तिक असुरक्षा आ सामाजिक उपयोगिताक बात उभरैत अछि। शशितारा केवल स्मृतिमे डूबल वृद्धा नहि; ओ कार्य, विचार आ वास्तविक परिस्थितिक संग संवाद करैत छथि।

पृ. ३२–३४ मे अजितक नाम, घरक विकास अथवा बदलैत आवश्यकता, आ जमीनक प्रश्न कथावस्तुमे क्रमशः महत्वपूर्ण बनैत अछि। कथानक एतहि सँ घरेलू भावनात्मक प्रसंगसँ आर्थिक आ कानूनी हितक दिशामे घूमैत अछि। अपन घरे घर नहि मानल जाएबाक विडम्बना, अपन अंशक बारेमे फैसला लेबाक सम्भावना—ई सभ बात स्त्रीक अधिकारक तात्पर्य प्रकट करैत अछि।

एहि खण्डकेँ स्त्री-विमर्शक दृष्टिसँ पढ़ल जाए तँ ‘सम्पत्ति’ मात्र धन नहि, निर्णय लेल स्वीकृत सामाजिक व्यक्तित्वक मापदण्ड अछि। शशिताराक आत्मीयता केकरो लेल आर्थिक आत्मसमर्पणक लिखित प्रतिज्ञा नहि अछि।

पाठ-खण्ड ५ : व्यक्तिगत बुढ़ापा बनाम सामाजिक बुढ़ापा (पृ. ३५–४१)

पृ. ३५–३७ मे परिवारक सदस्य आ परिचित लोकक संग शशिताराक बहस बारम्बार ई बात पर लौटैत अछि जे बूढ़ मनुखक इच्छा मरि नहि जाइत। घर-पड़ोसक पहचान, अतीतक सेवा, आ वर्तमानक निजी आकांक्षा सभ एकहि पात्रमे रहैत अछि। ‘बुढ़ापा’ एहि कथामे केवल देहक अवस्था नहि, समाज द्वारा पहिराओल गेल व्यवहारक नियम सेहो बनि जाइत अछि।

पृ. ३८–३९ मे आर्थिक-सामाजिक परिवर्तन, नवका घर, भूमि आ परिवारक हितक चर्चा आगा बढैत अछि। पृ. ४०–४१ मे शशिताराक आत्मपरक व्याख्या दोसरक व्यवहारक संग टकराइत

अछि। प्रश्न ई नहि रहि जाइत जे हुनका की चाही; प्रश्न ई बनैत अछि जे की समाज हुनक चाहैकेँ स्वीकार करबाक लेल तैयार अछि।

गद्यक शैली एहि अंशमे सूक्ष्म विडम्बनासँ भरल अछि। लोक ‘बड़ी पीसी’क सेवा आ त्यागक प्रशंसा करैत अछि, मुदा निर्णायक क्षणमे हुनक विचारकेँ शिशुक मन सम बुझबाक प्रवृत्ति राखैत अछि। एहिसँ चरित्रक भीतरक विरोध पाठकक लेल तर्कगम्य होइत अछि।

पाठ-खण्ड ६ : भूमि, मन्दिर आ रमेश मास्टरक प्रवेश (पृ. ४२-४९)

पृ. ४२-४४ मे शशिताराक नाति-नातिन, घर आ धार्मिक व्यवहारक संग जुड़ल बातचीत भूमि आ साधनक महत्त्व बढ़बैत अछि। मन्दिरक उल्लेख जीवनमे आस्था आ सामाजिक मान्यताक दोसर धरातल बनेबैत अछि। पृ. ४४-४५ मे भतीज-परिवारक अपेक्षा आ सासुरक हिस्साक बातसँ अगिला संघर्षक दिशासूचक परिस्थिति प्रकट होइत अछि।

रमेश मास्टरक उपस्थिति पृ. ४५ सँ बादक कथाभागमे निर्णायक अछि। ओ केवल ‘समाधान देनिहार पुरुष’क रूढ़ छवि नहि; हुनक संवाद शशिताराक संग मनुष्यता, भरोसा आ स्वतन्त्र जीवनक प्रश्न खड़ा करैत अछि। पृ. ४८-४९ मे बाह्य रंग-रूप, सुन्दरता आ वृद्धावस्थाक विषयपर विनोदपूर्ण वाक्य-विनिमयक बीच उदयमान आत्मीयता देखाइत अछि।

अनुवादक एहि अंशमे गुरुजनक सम्बोधन, छोट वाक्य, चुटकी आ तीक्ष्ण प्रश्नक प्रयोगसँ दू भिन्न सामाजिक पात्रक स्वर अलग राखैत छथि। कथा घरे-घर चलनिहार भाषा प्रयोग करैत बौद्धिक बात कहबाक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि।

पाठ-खण्ड ७ : राजबालाक प्रतिकार आ ‘हिस्सा’क नैतिकता (पृ. ५०-५६)

पृ. ५०-५२ मे राजबालाक कहब, रमेश मास्टरक बीच-बचाव आ सम्बन्धक तनाव कथानककेँ नव मोड़ दैत अछि। ‘हिस्सा’ केकर, ‘सेवा’ केकर, आ ‘कर्तव्य’ केकर—एहि बातक अलग-अलग हिसाब अछि। शशिताराक भीतरक आर्थिक चिन्ता आ मानवीय आकांक्षाक बीच अत्यधिक सरलीकरण नहि अछि।

पृ. ५३-५५ मे परिवारक भीतर ई प्रश्न उठैत अछि जे जमीन पूर्वजक धरोहर होय तँ ओकर उपयोग अथवा बिक्री पर केकर मत निर्णायक होएत। राजबालाक चिन्ता केवल खलपात्रक लोभ मानेब पर्याप्त नहि; परिवारक आर्थिक भविष्य, सामाजिक स्वामित्वक आदत आ स्त्रीक

नामपर सम्पत्तिक असामान्यता सेहो एतहि काम करैत अछि। मुदा एहि बुनोटक भीतर शशिताराक निजी स्वामित्वक अधिकार मेटाओल जा रहल अछि।

पृ. ५५-५६ मे रमेशक प्रश्न बिनु उग्रता एहि असमानताकेँ सामने अनैत अछि। सेवाक स्मरण कएला मात्रसँ केकरो निर्णयशक्ति समाप्त नहि होइत। कथाक नैतिक शक्ति एतहि अछि— स्नेह यदि स्वेच्छा पर नहि टिकल हो, तँ ओ स्वामित्वक सूक्ष्म रूप धारण कऽ सकैत अछि।

पाठ-खण्ड ८ : रमेशक मानवीय दृष्टि आ संकोच (पृ. ५७-६३)

पृ. ५७-६० मे रमेश मास्टरक बारम्बार उपस्थितिसँ शशिताराक अतीत आ वर्तमानक बीच गाढ़ संवाद होइत अछि। रजनी आदि सहायक पात्रक उल्लेख कथा-समाजक व्यापकता बनबैत अछि। शशिताराक सहज हँसी, मितभाषिता आ किछु प्रश्नपर मौन ई संकेत करैत अछि जे हुनक भीतर एखन धरि अनकहल अनुभवक अनेक तह अछि।

पृ. ६१-६३ मे परिवारक शंका, लोकक बाजब आ नव सम्बन्धक सम्भावना एकसंग प्रवाहित होइत अछि। रमेश शशिताराक संग कर्तव्यक भाषा मात्र नहि, मनक स्नेहक भाषा सेहो साझा करैत छथि। मुदा ओहि आत्मीयतापर समाजक निगरानी थिर रहैत अछि; विधवा स्त्री आ प्रौढ़ पुरुषक सहज सम्पर्कक सेहो मर्यादा-भंगक अर्थ निकालल जा सकैत अछि।

कथोपकथनक लय ओहि संकोचकेँ सजीव बनबैत अछि। प्रत्यक्ष प्रणय-घोषणा नहि होइतो सहयात्रा, सल्लाह, मौन, देखभाल, आ फेरसँ भेटबाक इच्छामे अर्थक विस्तार होइत अछि। एहि सूक्ष्मता कथाकेँ साधारण प्रेम-प्रसंगसँ अलग करैत अछि।

पाठ-खण्ड ९ : जमीनक निर्णय आ आत्मसम्मान (पृ. ६४-७०)

पृ. ६४-६६ मे अजित, जमीनक मोल, परिचितक अपेक्षा आ घर बनएबाक सोचक बीच संघर्ष अधिक स्पष्ट होइत अछि। पृ. ६६ मे शशितारा अपन हिस्साक विषयमे कहैत छथि; एहि कथनकेँ केवल क्रोध बुझब त्रुटिपूर्ण होएत। ई दीर्घ पराधीनताक पश्चात् आत्मसम्मानक प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति अछि।

पृ. ६७-६९ मे जमीन बेचब वा अपन उपयोगमे लेबाक अनेक सम्भावना उठैत अछि। शशितारा अपन आर्थिक निर्णयकेँ नैतिक अथवा सामाजिक उद्देश्यसँ जोड़ि देखैत छथि। परिवारक लोक एहि निर्णयमे अपन नोकसान अनुभव करैत अछि, ताहिसँ अन्तर्निहित स्वार्थ बेपर्दा होइत अछि।

पृ. ७० पर घटनाक आवृत्ति आ बहसक तनाव चरम दिशामे पहुँचैत अछि। अनुवादक कथा-भाषामे ‘हमर’, ‘हिस्सा’, ‘जमीन’, ‘मकान’ आदि ठोस शब्द राखैत छथि; एहि वस्तुगत शब्दावलीमे स्त्रीक अधिकार भावुक आग्रह नहि, वास्तविक नागरिक प्रश्न बनैत अछि।

पाठ-खण्ड १० : जीवेशक प्रश्न आ नव-निर्माण (पृ. ७१–७७)

पृ. ७१–७३ मे जीवेश आ सम्पत्तिसँ सम्बन्धित प्रसंगक कारण आर्थिक प्रस्ताव ठोस रूप लेबैत अछि। जमीन बेचबाक इच्छा, खरीददार, भाव, भविष्यक सुरक्षा आ पारिवारिक स्वार्थ—सभ एकहि समय उपस्थित अछि। शशिताराक पुरान घरक रंग-रूप बदलबाक विचार ओहि व्यापक विचारक मूर्त अभिव्यक्ति अछि जे जीवनक अन्तिम चरणमे सेहो नव आरम्भ सम्भव अछि।

पृ. ७४–७५ मे अजितक तर्क, शशिताराक दृढ़ता आ कथाक भीतरक सामाजिक विडम्बना एकसंग प्रकट होइत अछि। अजित जमीनक आर्थिक मूल्य देखैत अछि, शशितारा ओकर सहारे अपन अस्तित्व आ भविष्यक अर्थ निर्धारण करय चाहैत छथि। एहि टकरावमे केकरो पूर्ण सरल ‘सज्जन’ वा ‘दुर्जन’ घोषित नहि कएल जा सकैत; तथापि स्त्रीक स्वतंत्र सहमति नैतिक कसौटी बनल रहैत अछि।

पृ. ७६–७७ मे घर, काज, बाजार आ निर्माणक चित्र अदृश्य भावनाक भौतिक आधार तैयार करैत अछि। नवका मकान केवल देवाल नहि; ओहि ठाम शशिताराक इच्छाक स्वीकार्यता आ भविष्यक आवास-सुरक्षाक आकांक्षा समाहित अछि।

पाठ-खण्ड ११ : अपनत्वक नूतन अर्थ (पृ. ७८–८४)

पृ. ७८–७९ मे शशिताराक कार्य-व्यस्तता आ रमेश मास्टरक संग बढ़ैत विश्वास जीवनक नवी ऊर्जा देखबैत अछि। ‘हमर’ जैसन सामान्य सर्वनाम एतय गम्भीर बनि उठैत अछि। परिवार केवल रक्तक नातेसँ परिभाषित नहि; परस्पर सम्मान, स्नेह आ व्यवहारसँ सेहो बनैत अछि—एहि नैतिक प्रस्तावक बुनोट स्पष्ट देखाइत अछि।

पृ. ८०–८२ मे कथाक केन्द्रमे एकाकी वृद्धावस्था, भावनात्मक निकटता आ जीवनक सम्भावित परिवर्तन अछि। शशिताराक भीतर सामाजिक लज्जा, पुरान स्मृति आ नूतन उन्मुखता सह-अस्तित्वमे अछि। पाठककेँ महसूस होइत अछि जे स्वतन्त्र जीवन चाहब आ दोसरक स्नेह चाहब एक-दोसरक विरोधी नहि अछि।

पृ. ८३-८४ मे सामाजिक कटुता, दूसर घरक व्यवहार आ भतीज-परिवारक बुनोटकेँ नवी दृष्टिसँ देखल जाइत अछि। शशितारा बिनु एखनो निश्चित 'समाधान'क घोषणा किएने निजी स्वीकार आ अस्वीकारक अधिकार अपन भीतर सँ पुनः अर्जित करैत छथि।

पाठ-खण्ड १२ : अन्तिम निर्णायक पूर्वसन्ध्या आ खुलैत प्रेम (पृ. ८५-८९)

पृ. ८५-८६ मे पारिवारिक निमन्त्रण, वृद्धा स्त्रीक प्रति सम्मान, आ सम्बन्धक सम्भावनासँ कथा चरम बिन्दुक लग जाइत अछि। रमेश मास्टरक स्वरमे आकस्मिक अपनत्व छलकैत अछि, जखन कि शशिताराक भीतर लाज, विवेक, स्नेह आ आशंका घुलैत अछि। सामाजिक लोकाचार आ व्यक्तिगत सुखक दूरी पूरा कथाक तनावक अन्तिम रूप बनैत अछि।

पृ. ८७ मे घर, परिवार आ रक्तसम्बन्धक सीमाकेँ लांघि मनुष्यक अर्थ कोना बनैत अछि, से प्रश्न अत्यन्त सूक्ष्म अछि। पृ. ८८-८९ मे शशिताराक स्मृतिमे रमा गेल जीवनक वर्ष, मृत्यु-बोध आ नूतन स्नेह आमने-सामने आबैत अछि। अन्तिम पृष्ठपर रमेश मास्टर आ शशिताराक बीच छोट-छोट संवाद 'प्रेम'केँ वयसक गणितसँ अलग करैत अछि; एतय भावुक अतिशयोक्ति नहि, साझा जिम्मेवारी आ जीवनक नूतन अर्थक संकेत अछि।

समाप्तिकेँ केवल सामाजिक रूढ़िक पूर्ण पराजय अथवा वैवाहिक परिणति कहब पाठक सँ बेसी निष्कर्ष निकालब होएत। अधिक संगत पाठ ई अछि जे उपन्यासिका शशिताराक भीतर सँ बंद भऽ गेल स्नेहक दरबज्जा खोलैत अछि आ पाठककेँ एक अनिर्णीत किन्तु गरिमामय सम्भावना देइत अछि।

पात्र-संरचना आ नैतिक द्वन्द्व

शशितारा : सेवाभावक भीतर स्वतंत्र चित्त

शशितारा कथाक केन्द्र छथि। हुनक चरित्रक बनावट तीन परतमे देखाइत अछि: अतीतक वैधव्य आ पारिवारिक प्रतिष्ठा; वर्तमानक सेवा, श्रम आ सामाजिक सम्मान; आ भविष्यक अधिकार, स्नेह आ निर्णय। घरक काजमे निपुणता हुनक चेतनाक सम्पूर्णता नहि अछि। जखन जमीनक प्रश्न उठैत अछि तँ आर्थिक अधिकारक संग हुनक मनक स्वतंत्रता स्पष्ट भऽ उठैत अछि। एहि अर्थमे कथाक नायिका स्वतन्त्रताकेँ एकाकीपनक पर्याय नहि बुझैत छथि।

राजबाला : घरक व्यवहार आ स्वार्थक जटिलता

राजबालाक कथनमे कोनो समय स्नेह, कोनो समय अधिकारक आग्रह, आ कोनो समय परिजनक हानि होएबाक डर बोलैत अछि। हुनका एकरंग खलपात्र मानि देला सँ सामाजिक यथार्थ छूटि जाएत। परिवारक नामपर स्त्रीक सम्पत्तिक निर्णयकेँ सामूहिक नियंत्रणमे लएबाक प्रक्रिया हुनक व्यवहारमे देखाइत अछि। ताहिसँ पात्र सामाजिक व्यवस्था द्वारा सिखाओल गेल अपेक्षाक प्रतिनिधित्व सेहो करैत अछि।

रमेश मास्टर : सहानुभूति आ समकक्षताक परीक्षा

रमेश मास्टरक काज मात्र विवाद सुलझेबाक नहि अछि। ओ प्रश्न करैत, सुनैत, सुझाव दैत आ मानवीय सम्बन्धक सम्भावनाकेँ आदर दैत देखाइत छथि। तथापि आलोचनात्मक सावधानी ई आवश्यक अछि जे शशिताराक मुक्ति रमेशक कृपा मात्रसँ घटित नहि मानल जाए। कथा पहिनेसँ शशितारामे दृढ़ चित्त आ उद्यमशीलता दिखा चुकल अछि। रमेशक योगदान ओहि स्वीकृतिक सहयात्रा अछि, उद्गम नहि।

अजित, जीवेश आ सामाजिक परिजन

अजितक संग सम्पत्ति आ निवासक विषय अनेक बेर उठैत अछि; जीवेशक आर्थिक अथवा पारिवारिक सन्दर्भक संग भूमि-व्यवहार ठोस बनैत अछि। एहन पात्र कथाक ‘दूसर पक्ष’केँ स्वर दैत अछि। पड़ोसी, परिचित, शिष्य आ परिवारक आन लोक शशिताराक सार्वजनिक छवि बनबैत छथि; ओहि छविक दबाव आ व्यक्तिगत अनुभवक अन्तर कथावस्तुकेँ गति दैत अछि।

स्त्री-अस्मिता, वैधव्य आ सम्पत्ति

विधवाक शरीरक सामाजिक नियन्त्रण

कथाक आरम्भमे वैधव्य एकटा सामाजिक नियति जकाँ प्रस्तुत होइत अछि। विधवाक अर्थ केवल पति-वियोग नहि; वस्त्र, व्यवहार, यात्रा, हँसी, स्नेह आ भविष्यक इच्छाक ऊपर लगाओल सीमा सेहो अछि। शशितारा ओहि सीमाकेँ सीधे भाषणसँ कम, अपन व्यक्तित्वक निरन्तर प्रदर्शनसँ प्रश्नांकित करैत छथि। उत्तरवयसक स्त्रीक प्रेमयोग्यता पर समाजक सन्देह एहि पूर्वाग्रहक अधिक सूक्ष्म रूप अछि।

सेवाक राजनीति

घरमे लोक जकरा ‘पीसी’ कहि आदर करैत अछि, ओकर श्रम आ समयपर सहज दावा राखि दैत अछि। एहि कथाक आलोचनात्मक पाठ देखबैत अछि जे कृतज्ञताक भाषा सेहो कखनो सामाजिक नियंत्रणक साधन भऽ सकैत अछि। जँ सेवा स्वेच्छासँ हो तँ ओ मूल्यवान अछि; जँ सेवा स्त्रीक एकमात्र सामाजिक भूमिका बना देल जाए तँ ओकर मनुष्यत्वक अन्य पक्ष वंचित रहैत अछि।

सासुरक उत्तराधिकार-सम्बद्ध भूमि आ निर्णयक हक

भूमिक सवालक कारण परिवारक भीतर वास्तविक शक्ति-सन्तुलन प्रकट होइत अछि। एक स्त्रीक नामपर रहल अधिकारकें कुलक हितक नामपर सीमित करबाक प्रयास कथामे प्रश्नोत्तरक रूप लैत अछि। शशिताराक दलीलकें केवल लोभ वा जिद्दीपन कहल जाए तँ आर्थिक स्वायत्तताक मूल प्रश्न ओझराइत अछि। घरक भौतिक संरचना आ स्त्रीक मानसिक ‘घर’ एहि कथामे एक-दोसरकें अर्थ दैत अछि।

उत्तरवयसक प्रेम : निषेधसँ सहचर्य धरि

रमेश मास्टर आ शशिताराक बीच धीरे-धीरे बनैत आत्मीयतामे लोक-लज्जाक उपस्थिति सतत अछि। कथा चाहैत अछि जे पाठक देहक उमेर, वैवाहिक अतीत आ समाजक मान्यतासँ परे भावनात्मक सहयात्राक सम्भावना बुझय। ई निष्कर्ष पारम्परिक पारिवारिक जीवनक सरल अस्वीकृति नहि; प्रेमक नैतिक शर्त—सम्मान, परस्परता, स्वेच्छा—पर बल अछि।

परिजन बनबाक वैकल्पिक आधार

कथाक अन्त दिशामे ‘हमर’ शब्दक आवृत्ति अर्थपूर्ण भऽ उठैत अछि। लोकक अपन होयबाक आधार केवल रक्तसम्बन्ध नहि, एक-दोसरक दुःख-सुखमे सहभागी बनबाक स्वीकृति सेहो अछि। परिजनक परिभाषा विस्तृत करबाक ई आग्रह कथा-वस्तुक मानवीय उपलब्धि अछि।

अनुवाद-सिद्धान्तक प्रयोग

मैथिली रूपान्तरणक आलोचना करबाक समय एकटा भेद निरन्तर स्पष्ट राखब चाही: (क) अनूदित मैथिली पाठमे वस्तुतः की देखा पड़ैत अछि, आ (ख) बंगला मूलसँ ओकर भिन्नता की अछि। पहिल प्रश्नक उत्तर उपलब्ध पाठसँ भेटैत अछि; दोसर प्रश्नक प्रामाणिक उत्तरक लेल

बंगला मूलक पंक्ति-दर-पंक्ति मिलान आवश्यक अछि। नीचाँ सिद्धान्तक प्रयोग पहिल प्रश्नक क्षेत्रमे कएल गेल अछि।

नाइडाक रूपगत आ गत्यात्मक समतुल्यता

यूजीन नाइडा अनुवादमे मूल सन्देशक समीपवर्ती स्वाभाविक समतुल्य रूपकेँ महत्त्व देलनि। रूपगत समतुल्यतामे मूल रूप आ भाषिक संरचनाक निकटता प्रधान होइत अछि, जखन कि गत्यात्मक समतुल्यतामे पाठकपर अर्थक प्रभावक तुलनीयता अपेक्षित होइत अछि। ‘मोनक पौती’क कथोपकथन लक्ष्यभाषाक श्रोता-पाठककेँ स्वाभाविक लगे, एहि दृष्टिसँ ‘अहाँ’, ‘हमर’, ‘किएक’, ‘तँ’, ‘छिए’ आदि व्यवहार्य भाषारूपक उपस्थिति गत्यात्मक समतुल्यताक सम्भावित अनुकूलन देखबैत अछि। मुदा मूल बंगला पाँति नहि देखलाक कारण ई कहब अनुचित होएत जे अमुक वाक्य प्रमाणित रूपसँ गत्यात्मक शैलीमे अनूदित भेल अछि।

वेनूती : घरेलूकरण आ परकीयकरण

लॉरेन्स वेनूतीक दू रणनीतिकेँ ई पुस्तक एक संग बुझबाक निमित्त आमन्त्रण दैत अछि। पाठकसमक्ष ‘पीसी’, ‘भोजी’, ‘माय’, ‘बाबूजी’ जैसन सम्बोधन लक्ष्यभाषा-सुलभ आत्मीयता रचैत अछि—ई घरेलूकरणक पाठकीय प्रभाव अछि। आन दिस ‘चट्टोपाध्याय’, ‘बन्दोपाध्याय’ सन कुलनाम आ बंगालक स्थानिक सामाजिक वातावरणक चिह्न अलग सांस्कृतिक उत्पत्ति बनौने राखैत अछि—ई परकीय सांस्कृतिक चिह्नक संरक्षणक उदाहरण अछि। दूनू रणनीति एकहि पुस्तकमे सह-अस्तित्वमे रहि सकैत अछि; एकर मूल्यांकन केवल ‘शुद्ध’ बनाम ‘अशुद्ध’क द्वैतमे नहि कएल जाए।

कथ्य-निष्ठा आ भाव-निष्ठाक भिन्नता

असली अनुवाद-समस्या केवल कोशगत शब्दक समानार्थी खोजब नहि अछि। स्त्रीक मौन, दबी हास्य-रेखा, लोकक व्यंग्य, पारिवारिक अधिकारक हिंसा आ वृद्ध प्रेमक संकोच कहबाक ढंगमे बसैत अछि। एहन प्रसंगमे शब्दशः रूपान्तर पात्रक आवाज निस्सार कऽ सकैत अछि। मैथिली अनुवादमे संवाद-लय आ सामाजिक सम्बोधनक स्वाभाविक उपस्थिति भाव-निष्ठाक विश्लेषण लेल महत्त्वपूर्ण पाठ-साक्ष्य अछि।

संरचनागत रूपान्तरणक परीक्षण

बंगला आ मैथिली दूनू पूर्वी भारतीय भाषिक परिवेशक निकट भाषासमूहसँ सम्बन्धित अछि, तथापि कारक, क्रिया, आदरसूचकता आ वाक्य-समाप्ति समान नहि। उदाहरणार्थ मैथिलीमे सम्बन्ध-सूचक ‘क’, ‘सँ’, ‘मे’, ‘लेल’ आ क्रियाक ‘छथि/छलथि/होइत अछि’ रूप पात्रक सामाजिक दूरी सूचित करैत अछि। अनुवादमे वाक्य-विभाजन, प्रत्यक्ष कथनक चिह्न, क्रियाक आदरस्तर आ अव्ययक स्थान जाँचब आवश्यक अछि। उपलब्ध पाठमे कथात्मक अनुच्छेद आ छोट संवादक आवृत्ति अपन भाषा-स्वभावक अनुरूप देखाइत अछि; मूलसँ वास्तविक ‘शिफ्ट’क सूची बनएबाक लेल समांतर बंगला पाठ चाही।

स्कोपोस अथवा प्रयोजन-आधारित दृष्टि

प्रयोजन-आधारित सिद्धान्त प्रश्न करैत अछि: ई अनुवाद किनका लेल आ कोन सांस्कृतिक कार्य लेल? कमला चौधरीक आमुख (पृ. ५-६) बंगला सँ मैथिलीमे साहित्यिक कृति पहुँचेबाक महत्त्व रेखांकित करैत अछि। अतः सामान्य मैथिली पाठककेँ उपन्यासिकाक सौन्दर्य, भाव आ सामाजिक प्रश्न उपलब्ध कराएब एक उचित पाठकीय प्रयोजन ठहरैत अछि। ओहि प्रयोजनसँ दैनिक जीवित मैथिली, सुबोध कथन आ अर्थवत्ता उपयोगी अछि। तथापि पाठक-अनुकूलनक नामपर बंगला परिवेशक मूल छवि मेटा देब उचित नहि होएत।

अनुवादकक दृश्यता

अनुवादकक नाम मुखपृष्ठ, शीर्षक-पृष्ठ आ आमुखमे स्पष्ट देखाइत अछि। अनुवादकेँ निष्प्राण परिवहन नहि, एकटा रचनात्मक चयन मानबाक आधार एतहि उपलब्ध अछि। बोलचालक अभिव्यक्ति, सम्बन्धसूचकता, वाक्यक लय आ सांस्कृतिक परिचय लक्ष्यभाषाक रचनात्मक श्रमकेँ उजागर करैत अछि। एहि श्रमक आलोचनामे अनुवादकक उपलब्धिकेँ लेखिकाक मूल सर्जनासँ अलग मान्यता देब आवश्यक अछि।

मैथिली भाषा, संवाद आ सांस्कृतिक शब्दावली

भाषा-रूपक विशेषता

छपल पाठमे मैथिली सर्वनाम, सम्मानसूचक क्रिया, प्रश्नसूचक अव्यय, सम्बन्ध-प्रत्यय आ लोकप्रचलित संयुक्त पद प्रमुख अछि। ‘अहाँ’, ‘हम’, ‘हुनका’, ‘हमर’, ‘की’, ‘किएक’, ‘सँ’, ‘तँ’ सन रूप भाषाकेँ सामाजिक सान्दर्भिकता दैत अछि। अनेक स्थल पर कथावाचकक भाषा आ

संवादक भाषा बीच निकटता अछि, मुदा पात्रक परिस्थिति बदलैत शब्दक स्वर सेहो बदलैत अछि। ई एकर अनुवाद-सम्भावित महत्त्वपूर्ण गुण अछि।

सम्बोधनक सामाजिक व्याकरण

‘पीसी’, ‘बाबूजी’, ‘भोजी’, ‘मास्टर’, ‘माय’ केवल नाता सूचित करबाक शब्द नहि; ई सम्मान, आयु, अधिकार आ अपनत्वक सम्बन्ध रचैत अछि। एके पात्रकेँ सम्बोधन बदलैत घटनाक अर्थ बदलि सकैत अछि। पाठककेँ पात्रक सामाजिक स्थान बुझेबाक लेल अनुवादकक सम्बोधन-चयन कथाक मूल कथानक जतेक महत्त्वपूर्ण होइत अछि।

पाठ-आधारित भाषिक उदाहरण : व्याख्यात्मक सूची

शब्द/अभिव्यक्ति	सन्दर्भ-पृष्ठ	अनुवादालोचनात्मक कार्य
‘पीसी’	८-२१, ४१	आयु, पारिवारिक नाता आ सामाजिक अपेक्षा
‘अजिया’	८	स्नेहपूर्ण नाता-सम्बोधनक घरे-घरक अर्थ
‘फूल’ / ‘फूलपुर’	१६-१८, ७८-८९	पूजा, स्मृति, स्थानिकता आ मानवीय लगाव
‘भोजी’	२८, ४८-६३	सम्बन्धमे आत्मीयता एवं वयसगत सम्मान
‘मास्टर’	२०-२१, ४५-८९	पेशा-सूचक संज्ञा सँ व्यक्तिगत सम्बन्ध धरि
‘हिस्सा’	३३-३४, ५०-६९	सम्पत्ति आ स्वतन्त्र निर्णायक संघर्ष
‘जमीन’	३२-३४, ६४-७७	आर्थिक अधिकारक ठोस प्रतीक
‘मकान’	३३-३९, ६७, ७४-७९	रहबाक ठाम सँ आत्मनिर्माणक रूपक

शब्द/अभिव्यक्ति	सन्दर्भ-पृष्ठ	अनुवादालोचनात्मक कार्य
‘हमर’	६६-६९, ७८-८३	मालिकाना आ स्नेह दूनूक प्रश्न
‘रंग-रूप’	३७-४०, ४८-४९	बाह्य रूप आ व्यक्ति-मूल्यक अन्तर
‘मन्दिर’	१२-१३, ४४, ५५	धार्मिकता आ लोकहितक द्वन्द्व
‘बुढ़ापा’ / ‘वयस’	६०-६४, ८५-८९	मानवीय कामना पर सामाजिक नियमन

भाषिक शुद्धताक अर्थ

शुद्ध मैथिलीक अर्थ अन्य भाषासँ ऐतिहासिक सम्पर्कक प्रत्येक चिह्न मेटा देब नहि अछि। मूल उपन्यासिकाक बंगाली सांस्कृतिक सन्दर्भ बनौने राखि मैथिलीक व्यवहृत व्याकरण, सम्मानसूचकता, क्रियापद, रजिस्टर आ मुहावरा सजीव राखब वास्तविक भाषिक निष्ठा अछि। एतय पाठक भाषा अपन घरे-घरक कहन बुझैत अछि, आ बंगालक कथा अपन विशिष्ट परिवेश सेहो रखैत अछि। एहने संतुलनक आधारपर साहित्यिक अनुवादक गुण विवेचित होएबाक चाही।

संवादक दृश्यात्मकता

अनुवादमे संवाद बहुधा छोट, तीक्ष्ण आ प्रश्नोत्तरपर आधारित अछि। पात्रक वाक्यमे अर्धकथन, विनोद, कटाक्ष, अनिश्चितता आ मौनक अन्तर्गत अर्थ अछि। पृ. ५०-५५ मे हिस्सा-सम्बन्धी संवाद आ पृ. ८५-८९ मे स्नेह-सम्बन्धी संवाद तुलनात्मक रूपसँ पढ़ला पर स्पष्ट होइत अछि जे एकहि भाषामे आरोपक तीखापन आ अपनत्वक कोमलता दूनू व्यक्त करबाक सामर्थ्य अछि। ई कथात्मक लय अनुवादक पक्षमे एकटा ठोस उपलब्धि अछि।

कथन-कौशल, समय आ प्रतीक

स्मृतिक क्रम आ वर्तमानक गति

कथा विगतक स्मृति आ वर्तमानक कामक बीच चलैत अछि। शशिताराक पतिक मृत्युक अनुभव, घरक पुरान व्यवस्था आ पारिवारिक अपेक्षा विगतक बोझ रचैत अछि। एही बीच नवका जमीन, मकान, आर्थिक फैसला आ रमेशक निकटता वर्तमानकें गति दैत अछि। समयक ई टकराव पाठककें बोध करबैत अछि जे वृद्धा स्त्रीक जीवन केवल बचल इतिहास नहि, बनैत वर्तमान सेहो अछि।

फूलक प्रतीक

फूल घर, पूजा, स्नेह आ अल्पायुषी सौन्दर्यक बहुस्तरीय संकेत अछि। कथा-आरम्भमे फूलक दृश्य पारिवारिक श्रम आ धार्मिक व्यवहारसँ जुड़ैत अछि; अन्तमे भावनात्मक नवी अर्थक बोध सेहो सम्भव बनैत अछि। फूलकें प्रत्येक स्थलपर एकहि स्थिर अर्थ देब उचित नहि; ओकर अर्थ प्रसंगक संग बदलैत अछि।

मकान बनाम घर

‘मकान’ ईंट-पत्थरक भौतिक ठाम अछि, जखन कि ‘घर’ अपन मानल जाएबाक अनुभूति अछि। कथामे पुरान मकानक अधिकारक प्रश्न आ नव निर्माणक सपना परस्पर जुड़ल अछि। जकरा परिवारक ‘अपन’ मानल जाइत अछि, ओकरा निर्णायक हक छैक कि नहि—एहि सवालकें भूमि आ मकान दृश्यमान बनबैत अछि।

हास्य आ विडम्बनाक काम

शशिताराक हँसी आ निकट परिचितक हलुक चुटकी प्रायः गम्भीर अर्थ लुकौने रहैत अछि। हँसी दुख मेटा नहि दैत; जीवनक जटिलता वहन करबाक शक्ति बनैत अछि। एहि सूक्ष्म लयक कारण लेखकक सामाजिक आलोचना उग्र घोषणामे सीमित नहि रहैत।

खुलैत समाप्ति

अन्तिम दृश्यकें अन्तिम वैवाहिक निर्णायक प्रमाण बनएबाक बजाए नैतिक स्वीकृतिक दृष्टिसँ देखल जाए। रमेशक संवाद आ शशिताराक चित्त-परिवर्तन प्रेम आ जिम्मेदारीक उभरैत रूप देखबैत अछि। पाठककें जीवनक अन्तकालमे सेहो रूपान्तर सम्भव अछि—ई बोध हासिल होइत अछि।

अनुवादक उपलब्धि एवं आलोचनात्मक प्रश्न

प्राप्त पाठसँ देखाइत उपलब्धि

पहिल उपलब्धि, कथा मैथिली पाठक लेल जीवित घरेलू गद्यक रूप धारण करैत अछि; संवादक भीतर शब्द मात्र नहि, सामाजिक क्रिया सेहो होइत अछि। दोसर, बंगला पृष्ठभूमिक ठोस चिह्न कुलनाम आ परिवेशक संग बचल अछि; सम्पूर्ण स्थलांतरणक कृत्रिमता नहि देखाइत अछि। तेसर, स्त्रीक अधिकार आ निजी स्नेहक सूक्ष्म भावक प्रेषणमे भाषाक कोमलता आ तर्कक कठोरता एक-दोसरक पूरक बनैत अछि। चारिम, आमुखमे अनुवादक अपन साहित्यिक प्रयोजन स्पष्ट करबाक प्रयास करैत छथि।

आलोचनात्मक परीक्षणक चारि प्रश्न

१. समान पात्र द्वारा प्रयोग कएल सम्मानसूचक क्रियाक रूप सम्पूर्ण पाठमे स्थिर अछि कि परिस्थिति अनुसार बदलैत अछि?
२. बंगला सांस्कृतिक संकेतक स्थानपर मैथिली शब्द चुनलापर मूल स्थानिक अर्थ कतहु मन्द तँ नहि पड़ल?
३. संवेदनशील दृश्यसभमे कथावाचकक स्वर आ पात्रक आवाज स्पष्ट अलग पहिचानल जाइत अछि कि नहि?
४. जमीन, सम्पत्ति, परिवार आ उत्तराधिकारक कानूनी-सामाजिक पदसभ सुसंगत रूपसँ प्रयुक्त अछि कि नहि?

बंगला शीर्षक आ कथ्यगत सम्बन्ध

‘मोनक पौती’क प्रकाशकीय परिचयमे ‘Moner Jhanpi’ मूल बंगला शीर्षक बताओल गेल अछि। दोसर दिस, ‘জান্না কৌটো’ शीर्षकसँ जुड़ल शशितारा-कथाक घटना-क्रम एहि मैथिली अनुवादसँ घनिष्ठ मेल रखैत अछि—फूलपुरक चर्चा, बालवैधव्य, अजितक विधिक सलाह, वीरनगर, राजबाला, रमेश मास्टर, भूमि बेचि घरक जीर्णोद्धार आ नवजीवनक रूपक सभ एहि साम्यकेँ पुष्ट करैत अछि। शीर्षकभेदक प्रकाशन-इतिहास अलग ग्रन्थसूचनात्मक प्रश्न अछि। शीर्षकभेदक कम-सँ-कम दू सम्भावना अछि : एकर स्रोत कोनो भिन्न बंगला संस्करण हो, अथवा मैथिली शीर्षकक चयन भावात्मक पुनर्नामकरणक फल हो। प्रत्यक्ष प्रकाशकीय साक्ष्य बिना एको सम्भावनाकेँ निश्चित ऐतिहासिक निष्कर्ष मानब उचित नहि।

‘ज्ञानात्र (कौटो)’क कथाप्रवाहकें तुलनाक सुविधा लेल पाँच प्रसंग-खण्डमे पढ़ल जा सकैत अछि। मैथिली ‘मोनक पौती’क कथा पृष्ठ ७-८९ धरि अविरल अछि; एहि कारण पाँच खण्ड मूल लेखिकाक प्रमाणित अध्याय-विभाजन नहि, तुलनात्मक आलोचनाक व्यवस्था अछि।

शशिताराक विधवाधिकारकें सासुरक उत्तराधिकार-सम्बद्ध सम्पत्ति बनाम नेहरक स्मृतिक अन्तरमे देखब चाहिए। सम्पत्तिक प्रश्नकें केवल पैतृक भूमि कहब कथा-सन्दर्भक अवमूल्यन हएत। प्रेमक अन्तिम रूपकें सेहो मात्र रमेश मास्टरक संग व्यक्तिगत आकर्षणमे सीमित नहि कएल जा सकैत अछि।

कार्याधारित (स्कोपोस) आ स्त्रीवादी अनुवाद-आलोचना

मैथिली पाठक लेल अनुवादक प्रयोजन केवल बंगला सूचना पठेनाइ नहि; शशिताराक सत्ता, व्यथा, हास्य, कौटुम्बिक सम्बन्ध आ विवशता मैथिली अनुभवक धरातलपर जीवित करब सेहो अछि। स्त्रीवादी अनुवादपाठमे सावधानी रहबाक चाही जे विधवा-बौक अधिकारकें दानक रूपमे, आ पुरुषक अनुमोदनकें ओकर मुक्ति-कारणक रूपमे एकांगी प्रस्तुत नहि कएल जाय।

कथ्यक पाँच तुलनात्मक प्रसंग-खण्ड

बंगला प्रसंग-खण्ड	मैथिली मुद्रित पृष्ठ (सन्निकट)	कथ्यक प्रमुख स्थिति
१	७-२१/२२	फूलपुर, बचपन, वैधव्य, ग्राम-व्यवस्था, अनाथ मास्टर
२	२१/२२-३९	ग्रामक समाज-सेवा, अजितक सलाह, वीरनगरक आगमन, पुरान घर
७	३९-५४	राजबाला, रमेश, स्मृति, घरक इतिहास, “हमर” सम्बन्ध
४	५५-७३	मन्दिर, पारिवारिक तनाव, भूमि बेचब, जीर्णोद्धार, जीवेशक आपत्ति

बंगला प्रसंग-खण्ड	मैथिली मुद्रित पृष्ठ (सन्निकट)	कथ्यक प्रमुख स्थिति
५ (शशितारा-कथा मात्र)	७३-८९	अजितक प्रतिक्रिया, नब बसावट, फूलपुरक प्रतिक्रिया, अन्तिम प्रेम-रूपक

पचहत्तर प्रसंग-कणिकाक विस्तृत मिलान

आगाँक पचहत्तर प्रसंग-कणिका बंगला कथ्य आ मैथिली अनुवादक क्रमबद्ध तुलनात्मक विवेचन अछि। प्रत्येक स्थलपर बंगला प्रसंग, मैथिली पुस्तकक पृष्ठ आ आलोचनात्मक व्याख्या रखल गेल अछि। ई सम्पूर्ण कृतिक घटनाप्रवाहकें समेटैत अछि, मुदा शब्दशः दुभाषिक पाठान्तरक निर्णायक संस्करण नहि अछि।

तुलनात्मक खण्ड 1 : ग्रामजीवन, बालवैधव्य आ सामाजिक सत्ता

बंगला साक्ष्य: “जानार कोटो – 1”; मैथिली समतुल्य: नीचाँ अंकित छपल पृष्ठ।

01 | मैथिली पृ. ७ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : फूलपुरमे असामान्य खबरक कानाफूसी

मैथिली पाठ-संकेत : “खबरि अछि जोरदार”सँ कौतुहलपूर्ण आरम्भ

आलोचनात्मक टिप्पणी : सूत्र-निष्ठा संग बोलीक स्वाभाविक विस्मय; उद्घाटन-लय समान।

02 | मैथिली पृ. ७-८ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : बहुत दिनसँ उपेक्षित सासुर जयबाक आश्चर्य

मैथिली पाठ-संकेत : शशिताराक सासुरक यात्रा पर एक-पर-एक प्रश्न

आलोचनात्मक टिप्पणी : छोट प्रश्नक अनुक्रम आश्चर्यकें सामूहिक मनोविज्ञान बनबैत अछि।

03 | मैथिली पृ. ८ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : रूप, केश आ कठोर उपवाससँ परिवर्तित देह

मैथिली पाठ-संकेत : पुरान सुन्दर रूप आ वर्तमान कठोरता बीच वैषम्य

आलोचनात्मक टिप्पणी : रूपक वक्रोक्तिक धार सुरक्षित राखब मुख्य कसौटी।

04 | मैथिली पृ. ८-९ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : नौ वर्षमे विवाह आ वैधव्य

मैथिली पाठ-संकेत : बालविवाह आ विधवाक सामाजिक निर्माण

आलोचनात्मक टिप्पणी : जीवनक हिंसक व्यवस्था, मात्र व्यक्तिगत दुर्भाग्य नहि।

05 | मैथिली पृ. ९-१० | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : अघोर चटोपाध्यायक वंश-नियन्त्रण

मैथिली पाठ-संकेत : पितामहक प्रताप आ पुनर्विवाह-विरोध

आलोचनात्मक टिप्पणी : वंश/धर्मक शब्दसमूह राजनीतिक सत्ता सूचबैत अछि।

06 | मैथिली पृ. ९-१० | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : शशिताराक बाबूक पुनर्विवाहक इच्छा

मैथिली पाठ-संकेत : बाबू आ पितामहक विवाद

आलोचनात्मक टिप्पणी : स्त्रीजीवनक सम्भावित वैकल्पिक भविष्यक असफलता।

07 | मैथिली पृ. १०-११ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : बाँस पर चढ़ब, आम तोड़ब, बाल-विधवा बनब

मैथिली पाठ-संकेत : चंचल बालिकाक स्वभाव आ बुढ़ापक स्मृति

आलोचनात्मक टिप्पणी : व्यंग्य-करुणाक दुहरा भावकें समतुल्य राखब।

08 | मैथिली पृ. ११-१२ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : गामक सभ घर पर शशिताराक व्यवहारिक नियन्त्रण

मैथिली पाठ-संकेत : ग्राम-पालनहार आ घरक कर्ता

आलोचनात्मक टिप्पणी : नायिका केवल पीड़िता नहि; संरचना केन्द्रीय शक्ति सेहो।

09 | मैथिली पृ. १२-१३ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : ननीबालाक बीमारी-ग्रस्त नातिन आ आर्थिक सहायता

मैथिली पाठ-संकेत : रोगी परिवारक लेल रुपैया देबाक प्रसंग

आलोचनात्मक टिप्पणी : कठोर कथनक भीतर करुणा; शब्दशः सँ बेसी भाव-निष्ठा।

10 | मैथिली पृ. १३-१४ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : सत्यचरणक परिवारक विवाह-सहायता

मैथिली पाठ-संकेत : कन्याक आवश्यकता बुझि उपहार देब

आलोचनात्मक टिप्पणी : दान नहि, सामाजिक अन्तरनिर्भरताक लोक-नीति।

11 | मैथिली पृ. १४-१५ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : तेल-मन्त्र आ परिवारक विश्वास

मैथिली पाठ-संकेत : शोभाक माय आ तैलक औषधीय-लोकविश्वास

आलोचनात्मक टिप्पणी : लोकआस्थाक हास्य बनाम उपहासक भेद।

12 | मैथिली पृ. १५-१६ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : घरक भोजन, मौसम, पूजा, कोठी सब सँ निर्देश

मैथिली पाठ-संकेत : शशिताराक गृहव्यवस्था सम्बन्धी वचन

आलोचनात्मक टिप्पणी : सूचीमय वाक्य शशिताराक ऊर्जाक लय बनबैत अछि।

13 | मैथिली पृ. १६-१७ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : विवाहमे वरकें निहारबाक अवसर नहि

मैथिली पाठ-संकेत : नौ वर्षक कन्याक जिद्द सँ न देखल वर

आलोचनात्मक टिप्पणी : कथावाचकक विडम्बनात्मक कोमलता परखबाक स्थल।

14 | मैथिली पृ. १७-१८ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : विदाइपर फूलपुरक लोकक चिन्ता

मैथिली पाठ-संकेत : गामक सामुदायिक निर्भरता

आलोचनात्मक टिप्पणी : एकटा स्त्रीक श्रमसँ गाम चलैछ, ई पाठक अर्थ।

15 | मैथिली पृ. १८-२० | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : पौ फाटिते स्नान, फूल चुनब, बालककें डाँटब

मैथिली पाठ-संकेत : दैनिक कर्म आ शासक स्वर

आलोचनात्मक टिप्पणी : घरेलू कर्तव्य आ सार्वजनिक नैतिक पहराक द्वैत।

16 | मैथिली पृ. २०–२१ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : अनाथ मास्टरसँ रोजक संवाद

मैथिली पाठ-संकेत : विद्यालयक शिक्षक आ “पिसी” सम्बोधन

आलोचनात्मक टिप्पणी : लोक-सम्बोधन शब्दव्यवस्था बुझब, सरल संस्कृतकरण नहि।

तुलनात्मक खण्ड 2 : ग्रामसेवा, विधिक दावा आ वीरनगर

बंगला साक्ष्य: “जानात्र कौटो – 2”; मैथिली समतुल्य: नीचाँ अंकित छपल पृष्ठ।

17 | मैथिली पृ. २१–२२ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : अनाथक उम्र आ पुरान सम्बन्ध

मैथिली पाठ-संकेत : शशिताराकें पिसी कहल जाएब

आलोचनात्मक टिप्पणी : वंशसँ बाहर सामाजिक पिसी-सम्बन्ध ओझल नहि हो।

18 | मैथिली पृ. २२–२३ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : नारु बसुक घरमे काम आ पढ़ाइ

मैथिली पाठ-संकेत : बेरोजगारक परिवारक मदद

आलोचनात्मक टिप्पणी : उपकारक प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष नीति मूल विचार।

19 | मैथिली पृ. २३–२४ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : नारुक भार्याक सूक्ष्म घरेलू श्रम

मैथिली पाठ-संकेत : अन्न, बड़ी, आचार बनाए आर्थिक सहारा

आलोचनात्मक टिप्पणी : अनुवादमे श्रमक सम्मान आ वर्गीय भेदक बोध।

20 | मैथिली पृ. २४–२५ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : ‘छोट लोक’क नारी आ भद्र स्त्रीक श्रम-निषेध

मैथिली पाठ-संकेत : जाति-वर्ग अनुसार स्त्रीक श्रम पर दृष्टि

आलोचनात्मक टिप्पणी : शशिताराक कथनकेँ लेखकक अन्तिम मत नहि बनाबी।

21 | मैथिली पृ. २५–२६ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : बिपिन वैद्य, माता, दन्तौन, उपाय

मैथिली पाठ-संकेत : लोक चिकित्सा आ माँक सेवा

आलोचनात्मक टिप्पणी : कटाक्ष, चिकित्सकीय लोकसंस्कृति दूनू जोगाउ।

22 | मैथिली पृ. २६–२७ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : दीनक परिवारक खाद्य-सहायता

मैथिली पाठ-संकेत : भोजन-वितरणक अप्रत्यक्ष तरकीब

आलोचनात्मक टिप्पणी : दार्शनिक मानवता नहि, सूक्ष्म व्यावहारिक मदद।

23 | मैथिली पृ. २७–२९ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : धार्मिक भाषा आ जनहितक दाव

मैथिली पाठ-संकेत : उपदेशक बीच व्यंग्यात्मक लय

आलोचनात्मक टिप्पणी : विडम्बनाक दोहरापन पात्रक जटिलता बनबैत अछि।

24 | मैथिली पृ. २९–३० | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : समय-सारिणी, स्त्री-शरीर आ भोजन

मैथिली पाठ-संकेत : शशिताराक अनुशासन

आलोचनात्मक टिप्पणी : पुनरुक्तिक गति जखन काटल जाइत अछि तऽ स्वर हलुक पड़ैत अछि।

25 | मैथिली पृ. ३०–३२ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : अजितक मनमे सासुरक सम्पत्तिक खबर

मैथिली पाठ-संकेत : सम्पत्ति-अधिकारक आशा जागब

आलोचनात्मक टिप्पणी : शशिताराक सम्पत्तिक दावा सासुरक उत्तराधिकारसँ सम्बन्धित अछि;
ई प्रसंग स्त्रीक वैधानिक स्वत्व आ पारिवारिक न्यायक प्रश्न बनैत अछि।

26 | मैथिली पृ. ३२-३४ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : जेठ सासुक मृत्यु आ दावा-पक्ष

मैथिली पाठ-संकेत : बूढ़ी सासुक मृत्युपर उत्तराधिकार-संवाद

आलोचनात्मक टिप्पणी : मृत्युक समय आ कानूनी हक अलग कारण घटक।

27 | मैथिली पृ. ३४-३५ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : जमिनक हिस्सा आ कानूनी हिसाब

मैथिली पाठ-संकेत : बिघा, धनराशि आ वकीली व्याख्या

आलोचनात्मक टिप्पणी : आँकड़ा अनुक्रम स्वच्छ राखब; कानूनक अनुमान साबित नहि।

28 | मैथिली पृ. ३५-३६ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : अजितक संग वीरनगरक यात्रा

मैथिली पाठ-संकेत : जायब मात्र नहि, बसबाक तैयारी

आलोचनात्मक टिप्पणी : यात्राक क्रिया सामाजिक विद्रोहक नाटकीय मुद्रा।

29 | मैथिली पृ. ३६-३७ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : एकादशीक निर्बाह आ संसाधन साथ रखब

मैथिली पाठ-संकेत : खाए-पिए बिना घर पहुँचल विधवा

आलोचनात्मक टिप्पणी : व्रत स्त्रीक अनुशासन आ रणनीतिक सुविधा दुनू।

30 | मैथिली पृ. ३७-३८ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : राजबालाक संग पहिल भेंट आ नमन

मैथिली पाठ-संकेत : परिवारक अपरिचित दुलहीक आगमन

आलोचनात्मक टिप्पणी : 'बड़की बौ'क सामाजिक अधिकार पर विरोध।

31 | मैथिली पृ. ३८ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : अतिथिक अपन भोजन व्यवस्था

मैथिली पाठ-संकेत : आत्मनिर्भरता आ राजबालाक असहजता

आलोचनात्मक टिप्पणी : कथानक द्वन्द्व आतिथ्यक भाषासँ खुलैत अछि।

32 | मैथिली पृ. ३८–३९ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : जर्जर भवन देखिते बाल्यस्मृति जागब

मैथिली पाठ-संकेत : घरक दीवार-सीढ़ी परिचित लगब

आलोचनात्मक टिप्पणी : स्मृति आ स्वत्व अलग-अलग तह अछि।

तुलनात्मक खण्ड 3 : घर, स्मृति आ पारिवारिक संघर्ष

बंगला साक्ष्य: “जानार कोटो – 3”; मैथिली समतुल्य: नीचाँ अंकित छपल पृष्ठ।

33 | मैथिली पृ. ३९ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : नवीन शहरक भीतर अति पुरान घर

मैथिली पाठ-संकेत : वीरनगरक आधुनिकता आ भवनक जड़ता

आलोचनात्मक टिप्पणी : अतीत/वर्तमानक रूपक: पुरान घर पछिला जीवनक भंडार।

34 | मैथिली पृ. ३९–४० | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : सासुरक सम्पत्तिकेँ ‘हमर’ कहि उठब

मैथिली पाठ-संकेत : “हमर ससुर”क कथन

आलोचनात्मक टिप्पणी : सम्बोधन स्वयं कानूनी/भावात्मक दावा बनि जाइत अछि।

35 | मैथिली पृ. ४०–४१ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : राजबालाक भय—हिस्सा घटत

मैथिली पाठ-संकेत : घरक संकुचित स्वामित्व-बोध

आलोचनात्मक टिप्पणी : पर-स्त्रीविरोधक सामाजिक जड़ पहिचानू केवल खलनायिका नहि।

36 | मैथिली पृ. ४१–४३ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : देवरक परिवार, मन्दिरक चिन्ह

मैथिली पाठ-संकेत : देवीक मन्दिरसँ पुरान स्मृति

आलोचनात्मक टिप्पणी : धार्मिक स्थल आ विवाह-स्मृतिक संगति।

37 | मैथिली पृ. ४३-४४ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : पौखरिक घाट आ घरेलू उपेक्षा

मैथिली पाठ-संकेत : घरक ढाँचाक अभाव देखब

आलोचनात्मक टिप्पणी : स्थापत्य वर्णन भावात्मक आधार-निर्माण बनैत अछि।

38 | मैथिली पृ. ४४-४६ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : रमेशक प्रवेश आ भौजाइ सम्बोधन

मैथिली पाठ-संकेत : रमेश मास्टर आ शशिताराक भेंट

आलोचनात्मक टिप्पणी : सम्बन्ध रक्तसँ बेसी स्मृतिक द्वारा जीवित होइत अछि।

39 | मैथिली पृ. ४६-४७ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : विवाहक क्षण आ बालक रमेशक संस्मरण

मैथिली पाठ-संकेत : नववधू शशिताराक रूप याद पड़ब

आलोचनात्मक टिप्पणी : यादक दर्पणमे उम्रक एकाधिक काल साथ देखाइत अछि।

40 | मैथिली पृ. ४७-४८ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : नववधूकेँ परी/राजकन्याक रूपमे देखब

मैथिली पाठ-संकेत : 'परी-बौ' आ शशिताराक हँसी

आलोचनात्मक टिप्पणी : स्मृतिप्रभाव जँ कम पड़त तऽ कथा-चेतना प्रभावित।

41 | मैथिली पृ. ४८-४९ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : आँगनक अल्पना, सिंगार, गहना

मैथिली पाठ-संकेत : शशिताराक विस्मृत रूपक पुनःप्राप्ति

आलोचनात्मक टिप्पणी : शरीरक सामाजिक दमनक प्रत्युत्तर स्मृति देइत अछि।

42 | मैथिली पृ. ४९ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : बहुत कालक बाद ‘हमर’ घर कहल जाएब

मैथिली पाठ-संकेत : पारिवारिक भूमिकाक अनुभव

आलोचनात्मक टिप्पणी : नैतिक मिलन आ जायदादक दावा एकसंग नहि समानार्थी।

43 | मैथिली पृ. ५०–५१ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : राजबाला बेटी अन्नक संग संशय कहैत अछि

मैथिली पाठ-संकेत : शशितारा सँ वैमनस्य

आलोचनात्मक टिप्पणी : राजबालाक भयकेँ आर्थिक सुरक्षा सँ जोड़ि पढ़ू।

44 | मैथिली पृ. ५१–५२ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : नाति-नातिनक मिठाई आ जादू आरोप

मैथिली पाठ-संकेत : रमेशक मिठाई लएब

आलोचनात्मक टिप्पणी : एके वस्तु पर ‘दुलार’ बनाम ‘पक्षपात’क अर्थ।

45 | मैथिली पृ. ५२–५३ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : घरमे विधवा अन्नक बेचैनी

मैथिली पाठ-संकेत : बेटीक ताश-खेल आ घरबाहर जयब

आलोचनात्मक टिप्पणी : पात्रसँ कठोर स्वर राखब, मुदा कथनक प्रसंग न छोड़ू।

46 | मैथिली पृ. ५३–५४ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : रमेशक भीतर सहारेक अनुभूति

मैथिली पाठ-संकेत : शशिताराक उपस्थितिसँ मनोबल

आलोचनात्मक टिप्पणी : पुरुष पात्र सेहो पराधीनः शक्ति-केन्द्रक उलटफेर।

तुलनात्मक खण्ड 4 : सहकार आ घरक नवनिर्माण

बंगला साक्ष्यः “आनात्र कोटो – 4”; मैथिली समतुल्यः नीचाँ अंकित छपल पृष्ठ।

47 | मैथिली पृ. ५५ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : रमेश परिवारसँ अपेक्षित भरोसा नहि पाबैत

मैथिली पाठ-संकेत : राजबाला आ बाल-बच्चाक बीच संकोच

आलोचनात्मक टिप्पणी : पुरुषक असुरक्षा आ शशिताराक संरक्षक भूमिका।

48 | मैथिली पृ. ५५-५६ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : मन्दिरक आरती, मिठाई, शिष्टाचार

मैथिली पाठ-संकेत : रमेश शशिताराकेँ लेने मन्दिर गेलाह

आलोचनात्मक टिप्पणी : आदरक संस्कार द्वन्द्वक केन्द्र बनैत अछि।

49 | मैथिली पृ. ५६-५७ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : नवागन्तुक बड़की भौजाइकेँ सम्बोधन

मैथिली पाठ-संकेत : रमेशक “बड़की भौजी”क प्रतिष्ठा

आलोचनात्मक टिप्पणी : मैथिली सम्बोधनक अपनत्वक समतुल्यता।

50 | मैथिली पृ. ५७-५८ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : अन्नक वैधव्य आ ताशक प्रसंग

मैथिली पाठ-संकेत : बेटीक अनुशासन पर शशिताराक टोक

आलोचनात्मक टिप्पणी : स्त्रीवादी पाठमे पितृसत्ताक नैतिकता सेहो चिन्हित करू।

51 | मैथिली पृ. ५८-५९ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : रमेशक बढ़ैत आत्मविश्वास

मैथिली पाठ-संकेत : आँगनमे आबाज आ बातचीतक वृद्धि

आलोचनात्मक टिप्पणी : घरेलू संप्रेषणहीनता सँ संवादक रूपान्तरण।

52 | मैथिली पृ. ५९-६० | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : राजबालाक आशंका आ व्यंग्य

मैथिली पाठ-संकेत : घरक भीतर नब पक्षबन्दी

आलोचनात्मक टिप्पणी : कारो बातकेँ लेखकक समर्थन नहि मानल जाय।

53 | मैथिली पृ. ६०-६१ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : घरक मरम्मत लेल ठोस प्रस्ताव

मैथिली पाठ-संकेत : गृह-व्यवस्थाक जर्जरता पर उपाय

आलोचनात्मक टिप्पणी : भवन-निर्माण भावात्मक नवजन्मक ठोस रूप।

54 | मैथिली पृ. ६१-६३ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : रमेश नब उत्साहसँ घर बदलय चाहैत

मैथिली पाठ-संकेत : भीतरक डर कम होयब

आलोचनात्मक टिप्पणी : पुरुष-एजेंसी पुनःप्राप्ति शशिताराक सहयोगसँ।

55 | मैथिली पृ. ६३-६४ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : जमिन बेचबाक ग्राहक, हिस्साक शर्त

मैथिली पाठ-संकेत : अपन हिस्सा सँ खर्च करबाक निर्णय

आलोचनात्मक टिप्पणी : आर्थिक समझौता: अधिकार दान बनि नहि जाय।

56 | मैथिली पृ. ६४-६६ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : दस बिघा आ दस हजारक हिसाब

मैथिली पाठ-संकेत : जायदादक रुपया सासुरक घर-निर्माणमे

आलोचनात्मक टिप्पणी : अंकक सत्यापन हेतु दूनू स्थलकेँ पुनःपढ़बाक चाही।

57 | मैथिली पृ. ६६-६८ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : रमेशक संकोच आ घरमे रहबाक निमन्त्रण

मैथिली पाठ-संकेत : आश्रयक पारस्परिक वचन

आलोचनात्मक टिप्पणी : 'हम'क सम्बन्ध निर्माणाधीन, सतही रोमांस नहि।

58 | मैथिली पृ. ६८-७० | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : बहिरागैत लोकक संशय

मैथिली पाठ-संकेत : स्त्रीक प्रभाव पर आरोप

आलोचनात्मक टिप्पणी : लोकक निन्दा उपन्यासक नैतिक केन्द्र नहि।

59 | मैथिली पृ. ७०-७२ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : जीवेश द्वारा भूमि-बिक्री पर आपत्ति

मैथिली पाठ-संकेत : बेटाक प्रश्न आ बापक मौन

आलोचनात्मक टिप्पणी : पीढ़ीगत श्रम/हक/शासनक संघर्ष।

60 | मैथिली पृ. ७२-७३ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : शशितारा अपन अधिकारक खुलेआम प्रतिरक्षा करैत छथि

मैथिली पाठ-संकेत : विवादमे स्वयंकर निर्णायक घोषणा

आलोचनात्मक टिप्पणी : कानूनी अधिकार आ दयादृष्टिक भेद महत्त्वपूर्ण।

तुलनात्मक खण्ड 5 : नवजीवन, अपनत्व आ अन्तिम रूपक

बंगला साक्ष्य: “जोनार्न कोर्टो – 5”; मैथिली समतुल्य: नीचाँ अंकित छपल पृष्ठ।

61 | मैथिली पृ. ७३-७४ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : अजितक आक्षेप: जमीन बेचि लाभ कियैक न लेल

मैथिली पाठ-संकेत : उकिल भातिजक संग संवाद

आलोचनात्मक टिप्पणी : लाभक बजाय घरक उत्तरदायित्व चुनब।

62 | मैथिली पृ. ७४-७५ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : बूढ़ घरकेँ रोगी शरीरक उपमा

मैथिली पाठ-संकेत : मरम्मतक औषधीक-रूपक

आलोचनात्मक टिप्पणी : रूपकक चिकित्सा-छवि मूलक संवेदना तीव्र करैत अछि।

63 | मैथिली पृ. ७५-७७ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : कुँआ, पम्प, घरक नवीन योजना

मैथिली पाठ-संकेत : ट्यूबवेल आ निर्माणक चर्चा

आलोचनात्मक टिप्पणी : प्रगति केवळ शहर नहि: घरक साझा श्रम।

64 | मैथिली पृ. ७७-७९ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : बिजलीक आशा आ प्रकाशक चिन्तन

मैथिली पाठ-संकेत : घरमे नब आलोकक योजना

आलोचनात्मक टिप्पणी : भौतिक विद्युत् आ मानसिक उजियारक सह-प्रतीक।

65 | मैथिली पृ. ७९-८० | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : ‘आमार’ कहबाक सुख नव रूपैँ जागब

मैथिली पाठ-संकेत : अधिकारसँ बेसी अपनत्वक आभास

आलोचनात्मक टिप्पणी : साम्राज्ञी/सेविका सँ भागीदारक यात्रा।

66 | मैथिली पृ. ८०-८२ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : फूलपुरमे शशिताराक अनुपस्थिति पर प्रतिक्रिया

मैथिली पाठ-संकेत : पुरान घरमे खटकब

आलोचनात्मक टिप्पणी : ग्रामक निर्भरता सेहो स्वार्थ मिश्रित हो सकैत अछि।

67 | मैथिली पृ. ८२-८३ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : परिक विवाह आ घरे छोट समय लेल अाएब

मैथिली पाठ-संकेत : निमन्त्रणमे अल्पकाल बितायब

आलोचनात्मक टिप्पणी : पूर्व गामक उपयोगितामूलक सम्बन्ध मे प्रश्न।

68 | मैथिली पृ. ८३-८४ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : पुरनका नियंत्रणक आकर्षण कम भऽ गेल

मैथिली पाठ-संकेत : नव अनुभवसँ आत्म-आश्चर्य

आलोचनात्मक टिप्पणी : सक्रिय परिवर्तन, अचानक धर्मभ्रष्टता नहि।

69 | मैथिली पृ. ८४-८५ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : रमेश विवाह-निमन्त्रणमे आयल

मैथिली पाठ-संकेत : पुराना दुनियाक नजरमे नब संगति

आलोचनात्मक टिप्पणी : समाजक कानाफूसी काव्यात्मक विडम्बना।

70 | मैथिली पृ. ८५-८६ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : एक संग फेर वीरनगर जायब

मैथिली पाठ-संकेत : यात्राक उल्लास

आलोचनात्मक टिप्पणी : रेलयात्रा पहिने विस्थापन, अन्तमे मुक्ति।

71 | मैथिली पृ. ८६-८७ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : लोकनिन्दा आ नारीक निर्णय

मैथिली पाठ-संकेत : शशितारा अपवादसँ अनभिज्ञ/अडिग

आलोचनात्मक टिप्पणी : विधवा-स्त्रीक स्वतंत्र चलन पर सामाजिक पहरा।

72 | मैथिली पृ. ८७-८८ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : रमेशक सहयात्रामे नव गृहकार्यक चर्चा

मैथिली पाठ-संकेत : बिजलीक पत्र आ मजदूरक काम

आलोचनात्मक टिप्पणी : घरक नब जीवन दैनिक व्यवहारसँ सिद्ध।

73 | मैथिली पृ. ८८-८९ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : रमेश-सहवासक चर्चा प्रेम-रूपकमे बदलैत

मैथिली पाठ-संकेत : जीवनक पहिने अनजान स्वादक अनुभूति

आलोचनात्मक टिप्पणी : भावार्थ: जीवनप्रेम; एतबेँ शरीरिक प्रेमक घोषणा साबित नहि।

74 | मैथिली पृ. ८९ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : जिनगीक दबाएल आकांक्षा एक पौतीमे रहबाक रूपक

मैथिली पाठ-संकेत : मैथिली अन्तमे “मोनक पौती”क अर्थ-व्यंजना

आलोचनात्मक टिप्पणी : शीर्षकान्तरिक समान केन्द्र, मुदा सोनार/स्वर्ण रूपकक प्रसंग।

75 | मैथिली पृ. ८९ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : मैथिली कथाक समापन

मैथिली पाठ-संकेत : समापनक प्रेम-रूपकक संग शशिताराक कथाप्रवाह पूर्ण होइत अछि।

भाषा, संवाद आ सांस्कृतिक अर्थक निकट-पाठ

लघु बंगला-मैथिली प्रमाण: पाठमे देखल गेल ठोस स्थल

निम्न उदाहरणमे बंगला कथनक छोट अंश आ मैथिली रूपान्तरणक अर्थ-सम्बन्ध देखाओल गेल अछि। पाठभेदक निर्णय करैत काल कथ्य, स्वर, सम्भावित संस्करणान्तर आ अनुवादकक भाषिक चयनकेँ पृथक् रखब आवश्यक अछि।

बंगला खण्ड	मैथिली पृष्ठ	बंगला अल्पांश / संकेत	मैथिली स्वरूप आ व्याख्या
१	१-८	“थवरटो जवर वटे”	“खबरि अछि जोरदार”; संवादक विस्मय; बोलचाली शैलीक कार्यात्मक समानता।
१	१०	“शशीतारा शूनपुत्रेर रुदयल्ल”	शशिताराकेँ फूलपुरक केन्द्र/प्राण मानब; सामाजिक केन्द्रक रूपक; स्थानीय मुहावरा बदलितो चित्र सुरक्षित।
१	२१	“भ्रिजिमार भूषेय शरीर”	“पुण्यात्मा छी अहाँ, पीसी”; सम्मानक सामुदायिक व्याकरण आ धर्मिक रजिस्टर।

बंगला खण्ड	मैथिली पृष्ठ	बंगला अल्पांश / संकेत	मैथिली स्वरूप आ व्याख्या
२	३०-३५	“भांग”	हिस्साक अधिकारक चर्चा; भूमि-सम्बन्धी कानूनी अर्थ; “पैतृक” जोड़क अधिकार नहि। शशिताराक मनमे स्मृति जागब;
२	३९	“मनेर जगते”	मानसिक भूमिसँ ऐतिहासिक घर धरि रूपक-परिवर्तन।
३	३९	“आमादेर शंखर ठाकुरेर”	“हमर ससुर” कहबाक युक्ति; प्रथमपुरुष बहुवचन स्वत्वक रणनीतिक प्रयोग। पुरनका परी-जकाँ नववधूक स्मृति;
३	४७-४९	“अरीदो”	संवेग आ दृश्यात्मकता; अतीतक देहक पुनःप्राप्ति।

बंगला खण्ड	मैथिली पृष्ठ	बंगला अल्पांश / संकेत	मैथिली स्वरूप आ व्याख्या
४	६६-६८	“आमाँर श्शुअरैर डिटे”	सासुरक घर बनएबाक योजना; कथा-मूलक केन्द्र पैतृक गाम नहि, सासुरक भूखंड। शशिताराक घरेलू महत्वकें रूपक रूपमे
४	६१-६३	“एकटाँ जम्पडि”	देखब; व्यक्ति आ भूमि/संपत्तिक उपमाक विडम्बना।
५	७९-८०	“आमाँर”	अपन घरक सुख अनुभव करब; स्वत्वक शब्द ओकर स्वतन्त्र भावजगत खोलैत अछि। अन्तमे ‘मोनक पौती’क उपमान;
५	८८-८९	“सोनाँर कौटोय”	शीर्षकपर ठोस पुनर्सर्जन, बंगला सुनहरा/मूल्यवान पात्रक अर्थसँ मनक धरोहर धरि।

सम्बोधन, सम्बन्ध आ अनुवादक सामाजिक अर्थ

बंगला “भिजिमा”, “वड़वौ”, “ठाकूरपो”, “दाउर” केवल शब्दकोशीय सम्बन्धसूचक रूप नहि; वक्ता-श्रोता, सामाजिक दूरी, वयस आ घरक अधिकारक सूचना दैत अछि। मैथिलीमे ‘पीसी’, ‘बड़की भौजी’, ‘ठाकुरपो/देवर’ सन निकट रूप पाठक सहजता बढ़बैत अछि। मुदा जेना रमेशक शशिताराकेँ ‘बड़की भौजी’ कहब आ राजबालाक शशिताराक आगमन पर चिढ़ब—दूनूमे स्थानिक पदनामक राजनीति अछि। मात्र ‘भाभी’ कहि एकर भारतीय सामान्यीकरण कए देलासँ सम्बन्धक सटीक पदानुक्रम धुँधला हो सकैत अछि।

अन्तिम अपवाद-प्रसंगमे लोक “विधवा”क सार्वजनिक संचारपर नियंत्रण कियैक चाहैत अछि, एहि समाजधर्मी प्रश्नकेँ सेहो सम्बोधन आ लोक-नामक अनुवाद जोड़ैत अछि। “भौजी/देवर” आ प्रेम-अर्थक सहस्थिति एक जटिल नैतिक स्थान बनबैत अछि; पाठकेँ एकरेखीय रोमानी कथा मानलासँ मूलक विडम्बना घटत।

वाक्यगति आ कथावाचकक विनोद

कथाक आरम्भमे खबर फैलबाक धकधकी छोट वाक्य, प्रश्नवाचक अनुक्रम आ बोलचालक अतिशयोक्तिसँ बनैत अछि। मैथिली “खबरि अछि जोरदार”, “की?”, “कखन?”, “सासुर?” इत्यादि टुकड़ानुमा प्रश्न द्वारा वही सामाजिक ताल सृजित होइत अछि। प्रभाव-समानताक स्तरपर ई अनुवादक शक्ति अछि। एहि विधाकेँ औपचारिक गद्यक नामपर दीर्घ समासयुक्त वाक्य बना देब संवादक अटपटा जुगुप्साक नाश करत।

दैनिक सूचीबद्ध उपदेशमे मूलक हास्य एतबै नहि जे शशितारा बहुत बजैत छथि; हास्य एहि बातमे अछि जे ओ परिवार, आँगन, दलान, रसोई, फूलचोर आ ग्राम्यजन सभकेँ एकहि प्रशासनिक लयमे चलबैत छथि। अनुवादमे उपदेशक पुनरावृत्ति केवळ “दुहराइ” नहि—चरित्र-निर्माणक शैली अछि।

सांस्कृतिक शब्दक छोट कोश : अर्थ-कार्य-अनुवाद प्रश्न

बंगला पद/संकेत	सम्भावित मैथिली रूप	पाठमे सामाजिक/रूपक भूमिका
शुशुरवाड़ि	सासुर/सासुरक घर	विवाहजन्य सम्बन्ध, नव/पुरान स्वत्व

बंगला पद/संकेत	सम्भावित मैथिली रूप	पाठमे सामाजिक/रूपक भूमिका
वैश्वर्या	वैधव्य/विधवापन	उमेर आ सामाजिक दण्ड
पिसिमा	पीसी	सम्बोधन, उग्र, अधिकार
ठाकुरपो	देवर/ठाकुरपो	रमेशके सम्बोधन; आत्मीयता
बड़बौ	बड़की भौजी	घरक वरीय दुलहिन
दाउर	देवर	सम्बन्धक नैतिक मर्यादा
एकादशी	एकादशी	व्रत आ नारी शरीर
सिंश्वाहिनी	सिंहवाहिनी	स्थानिक देवी-पूजन
आलपना	अरिपन/अल्पना	विवाह आ स्मृति-दृश्य
टिपकल	चापाकल/ट्यूबवेल	नवीकरणक साक्ष्य
भिटे	घर-डीह/भिटा	पैतृक/सासुरक निवास-भूमि
बिद्या	बिद्या	भूमि माप; मापन-समानता
जमि भाग	जमिनक हिस्सा	विधवाक आर्थिक अधिकार
सतीन	सौत	बहुपत्नी परिवारक रिश्ता
पौत्री	पोती	वंशानुक्रम
तीर्थ	तीर्थ	आस्था आ यात्रा
प्रणाम	प्रणाम	पदानुक्रम आ शिष्टाचार
मोह	मोह/आसक्ति	व्यक्ति बनाम जीवनप्रेम
कौटो	डिबिया/पौती	भीतरक सुरक्षित चाह
सोना	सोना/सुनहर	बहुमूल्यक प्रतीक
आमार	हमर/अपन	अधिकार आ भावात्मक स्वत्व
आङिना	आँगन	गृह-स्मृति-समाज
मन्दिर	मन्दिर	स्मृति-संकेत

बंगला पद/संकेत	सम्भावित मैथिली रूप	पाठमे सामाजिक/रूपक भूमिका
शूनर्निर्माण	जीर्णोद्धार	नवजीवनक रूपक

शब्दावलीमे “सम्भावित मैथिली रूप” स्तम्भक अर्थ ई नहि जे सूचीबद्ध प्रत्येक रूप सचमुच अनुवादक लिखलनि; जे रूप छपल पृष्ठसँ प्रत्यक्ष उद्धृत नहि, ओ शब्दार्थ-सम्बन्धी परीक्षण-उपकरण अछि। विशेषतः “अरिपन/अल्पना”, “चापाकल/ट्यूबवेल” आ “डिबिया/पौती”क चयन आ ओझरा अलग सँ जाँचबाक चाही।

शीर्षकान्तर, स्वत्व आ घरक पुनर्निर्माण

“सोनार कौटो” सँ “मोनक पौती”: शीर्षकान्तरक सिद्धान्त

बंगला ‘सोनार कौटो’क सामान्य अर्थ सोनाक डिबिया अथवा बहुमूल्य लघु पात्र अछि। कथा अन्तमे शशिताराक जीवन-सुख एकटा गोपनीय बहुमूल्य पात्रमे पोसाएल रहबाक कल्पना भऽ सकैत अछि। मैथिली ‘मोनक पौती’ द्रव्यात्मक सोनाक स्थानपर मनक गुप्त आकांक्षाकें केन्द्रीय बनबैत अछि। एकरा अभिप्राय-केन्द्रित शीर्षकान्तरक सम्भावना मानल जा सकैत अछि, मुदा प्रकाशकीय परिचयमे ‘Moner Jhanpi’क उल्लेख रहबाक कारण मूल बंगला शीर्षकक इतिहासकें अनिर्णीत राखब समीचीन अछि।

मुख्य सावधानी: “सोनार कौटो” आ “मोनक पौती”क नामभेद देखिकय कथा अलग मानब त्रुटि; मुदा कथा समान देखिकय प्रकाशन-इतिहास निर्विवाद मानब सेहो त्रुटि। पाठ-मिलान आ ग्रन्थसूची-मिलान अनुसन्धानक दू भिन्न काम अछि।

पैतृक गाम बनाम सासुर: स्वत्वक नब नक्षा

शशिताराक जीवनक बहुलांश माय-बाबूक गाम फूलपुरमे बीतल अछि; तँए ओतुक्का श्रम, आचार, जनता आ पारिवारिक निर्भरता हुनका सार्वजनिक शक्ति दैत अछि। वीरनगर मे पति-पक्षीय घरक जीर्णवस्था, पुरान दाम्पत्य-स्मृति आ उत्तराधिकारक सम्भावना भेटैत अछि। भूमि-सम्बन्धी घटना मूल बंगला/मैथिली दूनूमे सासुरक घरकें पुनर्जीवित करबाक प्रश्न अछि। ई

मामूली शब्द-संशोधन नहि; स्त्रीक अपन घर चुनबाक अधिकार पर कथा-व्याख्याक पूरा दिशाक सुधार अछि।

रूप-देहक लोप आ अतीतक सौन्दर्यक प्रत्यावर्तन

नौ वर्षक बालिका, कच्चा सोना-जेकाँ रूप, तीर्थमे केश-त्याग, उपवाससँ बदलल देह आ वृद्धावस्थाक निर्भीक मुख—ई सभ प्रसंग मिलि शशिताराक शरीरपर समाजक इतिहास लिखैत अछि। रमेशक स्मृतिमे वही नन्हि दुलहिन परी-जेकाँ जीबि उठैत छथि। ई दृश्य शशिताराक आजीवन विधवापनक भीतर दबाएल व्यक्ति-सत्ता प्रगट करैत अछि। अनुवादमे रुक्ष वर्तमान आ अलौकिक स्मृतिक विरोध अवश्य रहबाक चाही।

घर-निर्माण: रुपैया, मिस्त्री, आँगन, चापाकल, बिजली

कथा-मध्यक जमीन-विवाद अन्ततः घरक माटि बदलबाक यत्नमे परिवर्तित होइत अछि। योजनामे ट्यूबवेल्, कुआँक सुधार, आँगनक समतलीकरण, रंग-रोगन, किवाड़, दीवार आ बिजलीक चर्चा अनिवार्य कथात्मक घटना अछि; एकरा केवल पार्श्व-प्रसंग मानलासँ शशिताराक जीवनप्रेम अस्थिर प्रतीक बनि जाएत। एहिमे रमेशक भय-निवारण आ आत्मसम्मान सेहो जुड़ल अछि।

प्रेमक बहुअर्थी अन्त

बंगला अन्तिम संकेतमे प्रेम जीवनक अनजाना स्वाद प्राप्त होयबाक अनुभूतिसँ जुड़ल अछि। मैथिली समाप्तिमे सेहो शशिताराक मनमे दबाएल चाह जनम लैइत अछि। रमेश मास्टरक संग साझे योजना, समानधर्मी संवाद आ सहयात्रा—ई भावक व्यावहारिक रूप अछि। लोकक आँखि एहिमे कलंक देखैत अछि; कथावाचक ओही कलंक-शब्दकेँ पलटि नब चेतनाक स्वीकृति बनबैत अछि। एहीलिएँ “रमेशसँ लौकिक विवाह-समान प्रेम” अथवा “केवल भवन-प्रेम”—दूनु एकांगी सारांश होएत।

राजबाला आ अन्न: प्रतिपक्षमे सेहो स्त्री-पीड़ा

राजबाला अपन जीवन सासुक प्रभुत्वमे बितबैत छथि; बुढ़ापामे घर चलाबाक स्वतंत्रता चाहैत छथि। शशिताराक आगमन हुनका फेर पुरान अधीनता आ भूमि-विभाजनक भय दैत अछि। अन्न स्वयं विधवा छथिन; हुनकर ताश-खेल, बहरायब आ दूसराक अनुशासन सँ जूझब सेहो

पितृसत्ताक मान्यताकें उजागर करैत अछि। शशितारा मुक्तिक प्रतीक थिकाइत छथि, मुदा हुनक कठोर उपदेश स्वयं कखनो स्त्री-अधिकारक विरोधी बनि उठैत अछि। एहि भीतरी विरोधक अनुवादक स्वर नष्ट नहि होएबाक चाही।

अनुवादक उपलब्धि आ आलोचनात्मक मूल्याङ्कन

भेटल पाठसँ पुष्ट उपलब्धि

- समाचारसँ आरम्भ करबाक जोरदार लय आ बहुवचन लोक-आवाज मैथिलीमे जीवित रहैत अछि।
- मैथिली स्थानीय सम्बोधन शशिताराकें औपचारिक इतिहासक पात्र नहि, जियत लोक-परिवारक स्वभाव बनबैत अछि।
- बाल-विधवा सँ वृद्ध वयस धरि भाव-स्मृति टूटैत नहि; कथाक कालक्रम पठनीय अछि।
- अजित, राजबाला, रमेश, अन्न आ जीवेशक बीच अधिकारक बहुस्तरीय द्वन्द्व सुरक्षित रहल बुझाईत अछि।
- घरक मरम्मत, भूमि-लेनदेन, देवालय आ रेलयात्रा सन मूर्त प्रसंग अन्तिम बिम्बकें सामाजिक धरातल दैत अछि।
- अन्तिम “मोनक पौती” रूपक मनोवैज्ञानिक केन्द्रीयताकें स्पष्ट करैत अछि; ई रचनात्मक शीर्षक विकल्पक समर्थ सम्भावना अछि।

आलोचनाक शर्त: कतय ‘छूटल’ नहि कहल जा सकैत

बंगला आ मैथिली पाठक किछु कथन शैलीत: भिन्न देखाइत अछि। मुदा भिन्न पाठ-संस्करणक सम्भावनाकें ध्यानमे राखि मात्र अर्थभेदसँ ‘अनुवादक मूल वाक्य काटि देलनि’ सन आरोप सिद्ध नहि होइत अछि। ताहि लेल एतय कथ्य-साम्य, रजिस्टर आ प्रतीकक मूल्याङ्कन कएल गेल अछि; निराधार विलोपन-सूची नहि बनाओल गेल अछि।

मोनक पौती : समग्र निष्कर्ष

‘मोनक पौती’ केवल वृद्ध विधवाक सदाशय प्रवासक कथा नहि, विवाह-संस्थाक वंचना, सामाजिक नियन्त्रण, घरेलू श्रमक अदृश्य मूल्य, विधवाक सम्पत्ति-हक आ नवजीवनक जटिल

आख्यान अछि। बंगला ‘जानात्र कोटो’क कथ्यसँ एकर आरम्भसँ अन्त धरि महत्त्वपूर्ण साम्य अछि। मैथिली संवादक बोलचाल, पारिवारिक सम्बोधन आ रूपकात्मक पुनर्सर्जन कृतिक सामाजिक ताप सुरक्षित रखैत अछि।

सभसँ महत्त्वपूर्ण उत्तरवर्ती परिवर्तन ई अछि जे अधिकारक कारण आरम्भमे जमीन/रुपैया होइत अछि, मुदा अन्ततः जमिनक मूल्य घरक पुनर्गठन आ व्यक्ति-सत्ता बनैत अछि। अजितक कानूनी तर्क, राजबालाक असुरक्षा, रमेशक दैन्यसँ उठान आ शशिताराक आविष्कृत ‘अपन’ संसार बिना पढ़ने अन्तिम प्रेम-रूपक अधूरा रहत। स्त्रीक आत्मनिर्णय एहि उपन्यासिकाक मेरुदण्ड अछि।

पचहत्तर प्रसंग-कणिकाक तुलनाक आधारपर कथा-प्रवाह, पात्र-सम्बन्ध आ विषयगत समतुल्यताक विस्तृत आकलन सम्भव अछि। शब्दशः समानता अथवा विशिष्ट विलोपनक दावा करबाक लेल दूनू कृतिक मुद्रित संस्करणक सम्पूर्ण पाठमे अधिक सूक्ष्म मिलान अपेक्षित अछि।

अध्याय २ : समय-संकेत — चौदहो कथाक समग्र विवेचन

आधार-कृति : कमला चौधरी, समय-संकेत, कथा-संग्रह, २०१०। मूल कथा-पृष्ठ १३-१०४।

कथा-क्रम आ विवेचनक योजना

‘समय-संकेत’क मूल कथा-क्रम अक्षुण्ण राखल गेल अछि। उल्लेखित पृष्ठाङ्क कथा-संग्रहक मुद्रित पृष्ठक अछि।

क्रम	कथाक नाम	मूल पृष्ठ
१	समय-संकेत	१३-१८
२	पैघ लोक	१९-२६
३	बदला	२७-३३
४	धूरी	३४-३८
५	गुलाब काकी	३९-४८
६	युद्ध	४९-५३

क्रम	कथाक नाम	मूल पृष्ठ
७	गुणनफल	५४-६३
८	आकांक्षा	६४-७१
९	अहिबातक हार	७२-७७
१०	काल-चक्र	७८-८१
११	दृष्टिकोण	८२-८८
१२	निर्णय	८९-९४
१३	बाटे बिलायल पानि	९५-९९
१४	अपराजिता	१००-१०४

‘समय-संकेत’क कथा-शीर्षक, कथा-क्रम, पात्र, घटनाक्रम आ पृष्ठ-संकेतकें केन्द्रमे राखि विवेचन कएल गेल अछि। संग्रहक ‘लेखकीय’ आ ‘नारी-विमर्शक नारी-लेखनी’ शीर्षक भूमिकाक वैचारिक सन्दर्भ सेहो समाविष्ट अछि। प्रत्येक कथाक कथावस्तु आ ओकर आलोचनात्मक अर्थमे भेद रखल गेल अछि।

लेखिकाक कथादृष्टि आ संग्रहक मूल स्वर

संग्रहक आरम्भमे प्रस्तुत ‘नारी-विमर्शक नारी-लेखनी’ शीर्षक भूमिका आ लेखिकाक ‘लेखकीय’ अलग-अलग पाठकीय द्वार खोलैत अछि। भूमिका संग्रहक स्त्रीकेन्द्रित पक्षपर बल दैत अछि। लेखिका अपन कथालेखनक सामाजिक आधार आ अनुभवसँ बनल स्त्रीपात्रक चर्चामे परिवार, परिस्थिति आ जीवनक बिसंगतिकें महत्त्व दैत छथि। आलोचनाक दृष्टिसँ भूमिका, लेखकक आत्मवक्तव्य आ कथा स्वयं—ई तीनू एकहि वस्तु नहि अछि; तीनूकें अलग पढ़बाक आवश्यकता अछि।

एहि संग्रहक समाज केवल स्त्री आ पुरुषक दू विरोधी पक्षमे विभक्त नहि अछि। एकर कथासभमे धनिक आ निर्धन, युवा आ वृद्ध, परिवारक आश्रित आ स्वावलम्बी, शारीरिक रूपेँ समर्थ आ असमर्थ, परम्परापर विश्वास करनिहार आ नवनिर्णय लेनिहार लोक सभ उपस्थित छथि। एहि विविधतामे स्त्रीक संघर्ष एकटा महत्त्वपूर्ण सूत्र बनैत अछि।

संग्रहक कथा-क्रम देखलासँ ‘समय-संकेत’ सामाजिक अधिकारक जागरणसँ शुरुआत करैत अछि आ ‘अपराजिता’ व्यक्ति-विशेषक आत्मबलपर समाप्त होइत अछि। बीचक कथासभ जीवनक अलग-अलग पड़ावमे मानवीय गरिमा केना सुरक्षित रहय, ई प्रश्न उठबैत अछि। एकरा संग्रहक सम्भावित समग्र स्वर मानल जा सकैत अछि; ई सम्पादकीय उद्देश्यक प्रमाणित वक्तव्य नहि, आलोचनात्मक पाठन थिक।

चौदहो कथाक पृथक आलोचनात्मक अध्ययन

समय-संकेत

मूल पृष्ठ : १३-१८ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : सुखना, बिलटी, राजा बाबू आ मास्टर साहेब
कथावस्तु आ परिवेश : गामक सामाजिक बनोट एहि कथाक आधार थिक। सुखना आ बिलटीक जीवन आर्थिक अभाव, श्रम आ अधिकारहीनताक दबाबमे चलैत अछि। राजा बाबूक प्रभुत्व एहन व्यवस्थाक प्रतिनिधित्व करैत अछि जाहिमे साधारण लोक अपन अधिकारक चर्चा करबामे सेहो सशङ्क रहैत अछि। कथाक आरम्भमे सुखनाक मनःस्थिति एहि निर्भरता आ असुरक्षाकें स्पष्ट करैत अछि।

संघर्षक विकास : मास्टर साहेबक उपस्थिति कथामे विचारक नव मोड़ अनैत अछि। अधिकार, गामक सार्वजनिक व्यवस्था आ अपन हिस्सेदारीक चर्चा सुखनाक सामने एहन प्रश्न रखैत अछि, जकर उत्तर केवल व्यक्तिगत लाभ नहि, सामूहिक सम्मानसँ जुड़ल अछि। सुखना पुरनका डर आ नव चेतनाक बीच ठाढ़ अछि। बिलटीक व्यावहारिक अनुभव सेहो एहि परिवर्तनक सन्दर्भकें घरक भीतरी जीवनसँ जोड़ैत अछि।

कथाक अन्त आ अर्थ : कथाक अन्तमे परिवर्तनक सम्भावना स्पष्ट होइत अछि। अधिकारक बोध जागलाक बादो सत्ता-सन्तुलन तुरन्त नहि बदलैत; मुदा सुखनाक सोच बदलैत अछि। एहि दृष्टिसँ शीर्षक ‘समय-संकेत’ समय बदलि रहल अछि, तकर सूचक थिक। नव परिस्थिति गामक लोककें अपन अधिकार समझबाक लेल प्रेरित करैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक मूल्याङ्कन : ग्रामीण बोली, संवाद आ छोट-छोट व्यवहारिक प्रसंग कथा अगाँ बढबैत अछि। एकटा पात्रक निजी अनुभवक भीतर सामाजिक बदलावक व्यापक प्रश्न समेटल गेल अछि। एकरा केवल राजा बाबू आ सुखनाक व्यक्तिगत विवाद मानलासँ

कथाक महत्त्व घटि जाइत; मूल प्रश्न सामाजिक अधिकार आ आत्मसम्मान थिक। कथाक उपलब्धि ई अछि जे विचार-परिवर्तनकेँ घटनाक्रमे विश्वसनीय रूप दैत अछि।

पैघ लोक

मूल पृष्ठ : १९-२६ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : प्रीता, नीलू आ मेमसाहेब

कथावस्तु आ परिस्थिति : प्रीताक अनुभवसँ कथा खुलैत अछि। जीवन-निर्वाहक आवश्यकता ओकरा एहन संसारसँ जोड़ैत अछि जतऽ साधनसम्पन्न लोक आ श्रमपर आश्रित लोकक बीच स्पष्ट अन्तर अछि। बेटी नीलूक प्रति ओकर स्नेह आ भविष्यक चिन्ता एहि आर्थिक प्रश्नकेँ मातृत्वक अनुभूतिसँ जोड़ैत अछि। मेमसाहेबक घर आ व्यवहारक माध्यमसँ बाहरी सम्पन्नताक एकटा दोसर रूप देखाइत अछि।

पात्र आ सम्बन्ध : मेमसाहेबक पद-प्रतिष्ठा आ हुनक व्यवहारक बीचक दूरी कथामे आलोचनात्मक तनाव उत्पन्न करैत अछि। प्रीता जे सम्मानक आशा करैत अछि, तकर पूर्ति धनाढ्य वातावरणमे अपने-आप नहि होइत अछि। नीलू प्रीताक भावनात्मक केन्द्र अछि; ओकर कल्याणक प्रश्न प्रीताक प्रत्येक निर्णयमे महत्त्व रखैत अछि।

शीर्षकक व्यञ्जना : ‘पैघ लोक’ कहलासँ सामान्यतः धन, हैसियत आ सामाजिक प्रभाव बुझल जाइत अछि। कथा एहि प्रचलित अर्थकेँ उलटि कऽ नैतिक प्रश्न बनबैत अछि—पैघपन मनुष्यक पदमे अछि अथवा ओकर हृदयमे? प्रीताक अनुभव पाठककेँ एहि अन्तरपर विचार करबाक बाध्य करैत अछि।

आलोचनात्मक अवलोकन : कथाक सामाजिक धरातल श्रमक गरिमा आ मनुष्यक सम्मान थिक। वर्गान्तर स्पष्ट रहितो कथा केवल वैभवक निन्दा नहि करैत; ओ व्यवहारक मानवीय मापदण्ड प्रस्तुत करैत अछि। अपन गामक प्रति प्रीताक दृष्टि परिवर्तित होइत अछि। एहि रूपेँ अपनत्व आ आत्मसम्मान समाजक बाहरी चमकसँ बेसी मूल्यवान ठहरैत अछि।

बदला

मूल पृष्ठ : २७-३३ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : रीता भाउड़ी, हरिचरण आ सतीश

कथावस्तु आ केन्द्रबिन्दु : एहि कथाक आधार मानवीय सम्बन्धक कटुता आ तकर बाद उत्पन्न नैतिक परीक्षा थिक। रीता भाउड़ी, हरिचरण आ सतीशक प्रसंगमे दाम्पत्य, रोग, सेवा आ पुरान

आघातक स्मृति जुड़ल अछि। परिस्थिति बदललापर जकरा प्रति रोष छल, ओकर दुःख आ निर्बलता नव तरहें देखाइत अछि।

प्रतिशोधसँ करुणा धरि : शीर्षक ‘बदला’ पाठकमे प्रतिशोधक अपेक्षा जगबैत अछि; मुदा घटनाक विकास एहि अपेक्षाकेँ जटिल बनबैत अछि। कटु व्यवहारक प्रत्युत्तर सदिखन कटुता नहि होइत अछि। मानवीय संवेदना एकटा वैकल्पिक नैतिक उत्तर बनि उठैत अछि। कथा एहि प्रश्नकेँ केन्द्रमे रखैत अछि जे दुर्बल क्षणमे दोसराक प्रति कर्तव्य केहन होयबाक चाही।

स्त्रीपात्रक स्थिति : रीता भाउड़ीक व्यवहारमे सहनशीलता आ आत्मिक दृढ़ता देखल जा सकैत अछि। तथापि ओकर सेवाभावकेँ बिना प्रश्न आदर्श मानि लेब पर्याप्त नहि। स्त्रीसँ सेवा-त्यागक एकतरफा अपेक्षा सामाजिक असमानताकेँ कायम राखि सकैत अछि। एहि कारण कथा स्त्रीक मानवीय ऊँचाइ देखबैत अछि, आ संगहि आलोचककेँ त्यागक मूल्यपर फेर विचार करबाक अवसर सेहो दैत अछि।

शिल्प आ मूल्याङ्कन : कथामे जीवनक परिस्थिति बदललापर सम्बन्धक अर्थ बदलैत अछि। बाहरी घटना आ भीतरी मानसिक परिवर्तन एकसंग चलैत अछि। शीर्षकक विरोधाभासी अर्थ कथाकेँ प्रभावशाली बनबैत अछि। एकरा क्षमाक साधारण उपदेश बुझबाक स्थानपर पीड़ा, दायित्व आ नैतिक निर्णयक जटिल कथाक रूपमे पढ़ब उचित होयत।

धूरी

मूल पृष्ठ : ३४-३८ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : शीला आ ओकर पारिवारिक परिवेश

कथावस्तु : शीलाक जीवन पारिवारिक आश्रय आ गृहस्थक सामान्य लयमे बढैत अछि। पति महोदयसँ जुड़ल दुर्घटना ओकरा एहन कठिन वास्तविकतासँ सामना करबैत अछि जतऽ भावनात्मक आ आर्थिक सुरक्षा एकसंग प्रश्नक घेरेमे आबि जाइत अछि। घटनाक परिणाम केवल शोक नहि, आगाँ जीवबाक उपाय खोजब सेहो अछि।

नारीक जीवनस्थिति : कथामे गृहस्थी चलौनिहार स्त्रीक श्रम महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा संकट अबिते स्पष्ट होइत अछि जे निर्भर जीवनमे निर्णयक सामर्थ्य सीमित रहि सकैत अछि। शीला अपन दायित्वसँ पाछाँ नहि हटैत अछि; ओकरा जीवनक नव परिस्थिति अनुसार अपन सामर्थ्यकेँ पहचानय पड़ैत अछि।

शीर्षक आ प्रतीक : ‘धूरी’ चक्रक केन्द्र बुझबैत अछि। एहि नाममे घर-परिवारक काज-काज, पारिवारिक व्यवस्था आ ओकरा टिकौने रखबाक अनदेखल श्रमक प्रतीकात्मक अर्थ निहित अछि। स्त्रीकेँ केवल परिधिपर देखबाक बदला ओकर केन्द्रस्थ भूमिका सामने अबैत अछि।

आलोचनात्मक मूल्याङ्कन : कथाक प्रमुख उपलब्धि संकटकेँ आत्मनिर्भरताक प्रश्नमे रूपान्तरित करब थिक। तथापि स्त्रीक क्षमता प्रमाणित करबाक लेल सदिखन विपत्तिक प्रतीक्षा किएक हो, ई प्रश्न सेहो एहि पाठसँ उठैत अछि। एहि अर्थमे ‘धूरी’ केवल दुःखक कथा नहि, स्त्रीक सामाजिक आ आर्थिक स्वावलम्बनक आवश्यकता पर बल दैत अछि।

गुलाब काकी

मूल पृष्ठ : ३९-४८ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : गुलाब काकी आ कथावाचिका

कथाक परिदृश्य : ‘गुलाब काकी’मे एक वृद्ध स्त्रीक उपेक्षित जीवन प्रमुख अछि। हुनक जीवनमे अभाव, एकाकीपन आ सामाजिक दूरीक अनुभव अछि। कथावाचिकाक माध्यमसँ पाठक धीरे-धीरे काकीक परिस्थिति जानैत अछि। सामान्य समाज जकरा सहजहि अनदेखा करि दैत अछि, कथा ओकर जीवनकेँ अपन केन्द्र बनबैत अछि।

आत्मीयताक निर्माण : एहि कथामे व्यक्तिक परिचय ओकर आर्थिक दशा वा समाजमे स्थानसँ नहि, ओकर जीवनानुभवसँ होइत अछि। काकीक प्रति कथावाचिकाक व्यवहार संवेदनाक एकटा मानवीय क्षेत्र तैयार करैत अछि। जीवनक सूक्ष्म प्रसंग वृद्धावस्थाक असुरक्षा आ अपनत्वक आवश्यकताकेँ उभारैत अछि।

नारी-विमर्शक विशेषता : कथा युवा स्त्रीक अधिकारक प्रश्नक अतिरिक्त वृद्ध स्त्रीक गरिमा सेहो सामने अनैत अछि। जखन घर, परिवार अथवा समाज बूढ़ लोककेँ अनुपयोगी बुझय लगैत अछि, तखन ओकर अनुभव आ भावनात्मक आवश्यकता ओझराइत अछि। गुलाब काकीक उपस्थिति एहि अमानवीय दृष्टिक विरुद्ध प्रश्न अछि।

भाषा आ शिल्प : स्मृति, आत्मीय सम्बोधन आ व्यवहारिक विवरण कथामे मार्मिकता अनैत अछि। शीर्षकमे व्यक्तिक नाम संग घरेलू सम्बोधन ‘काकी’ अपनापनक अर्थ दैत अछि। एहि कथा द्वारा लेखिका सामान्य लोकजीवनक एकटा विस्मृत पात्रकेँ साहित्यक केन्द्रमे स्थापित करैत छथि।

युद्ध

मूल पृष्ठ : ४९-५३ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : राजेश, चुन्नू आ पारिवारिक सदस्य

कथावस्तु : राजेश आ चुन्नूक संवाद आ व्यवहारसँ पीढ़ीक विचारभेद, जीविकाक चिन्ता आ पारिवारिक अपेक्षाक प्रश्न उभरैत अछि। एक पीढ़ी अपन अनुभवकेँ उचित मानैत अछि, तँ दोसर पीढ़ी बदलैत परिस्थितिक आधारपर निर्णय करय चाहैत अछि। एहि प्रकारेँ घरक साधारण प्रसंगो वैचारिक टकरावक स्थल बनि जाइत अछि।

‘युद्ध’क बहुविध अर्थ : कथाक युद्ध रणभूमिपर लड़ेबाक युद्ध नहि अछि। ई अपेक्षा, स्वार्थ, दायित्व, मूल्य आ आत्मसम्मानक बीच चलैत दैनिक संघर्षक रूपक थिक। बिना हथियारक संघर्ष सेहो मनुष्यक मनपर गहिर प्रभाव छोड़ैत अछि।

पात्रगत तनाव : पात्रसभक मतभिन्नतामे मात्र जिद नहि, सामाजिक परिवर्तनक दबाव सेहो अछि। नव पीढ़ीक आकांक्षा आ पुरान पीढ़ीक अनुभव दुनूकेँ एकसंग देखलासँ कथा अधिक अर्थवान होइत अछि। एकटा पक्षकेँ पूर्ण सही आ दोसराकेँ पूर्ण गलत मानलासँ एहि जटिलताक अर्थ घटि जाइत अछि।

आलोचनात्मक निष्कर्ष : एहि कथाक शक्ति दैनिक जीवनक घटना द्वारा व्यापक संघर्षबोध प्रस्तुत करबमे अछि। शीर्षक आ घटनाक बीचक दूरी पाठककेँ प्रतीकात्मक अर्थ खोजबाक लेल प्रेरित करैत अछि। पारिवारिक संवाद सामाजिक मूल्यक परिवर्तनक ग्रन्थ बनैत अछि।

गुणनफल

मूल पृष्ठ : ५४-६३ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : मीरा आ सुनील

कथासार : मीरा आ सुनीलक दाम्पत्यजीवनमे घर-गृहस्थी, आर्थिक आवश्यकता, समयक बँटवारा आ व्यक्तिगत रुचिक प्रश्न उठैत अछि। बाहरी दृष्टिसँ साधारण लगैत निर्णय दाम्पत्यक भीतर शक्ति आ अपेक्षाक अन्तरकेँ स्पष्ट करैत अछि। स्त्रीक श्रम आ इच्छाक मूल्याङ्कन एहि कथाक प्रमुख चिन्ता अछि।

मानवीय सम्बन्धक गणना : शीर्षक ‘गुणनफल’ गणितक परिचित शब्द थिक, मुदा कथामे एकर प्रयोग भावनात्मक आ सामाजिक अर्थ ग्रहण करैत अछि। सुविधा, उपयोगिता, धन आ प्रतिष्ठाक

गुणा-भागमे मनुष्यक स्वतन्त्र इच्छा कतऽ रहि जाइत अछि, से प्रश्न पाठकक सामने अबैत अछि।

मीरा चरित्रक अर्थ : मीरा केवल परिवारक आवश्यकता पूरा करनिहार पात्र नहि अछि। ओकर निजी सोच, इच्छा आ जीवनक अर्थबोध सेहो अछि। दाम्पत्यकें न्यायपूर्ण बनयबाक लेल दुनू व्यक्तिक श्रम आ आकांक्षाक समान मान्यता आवश्यक अछि। ई विचार कथा पढ़बाक एकटा महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक आधार थिक।

शिल्प आ निष्कर्ष : घरेलू घटना आ पात्रक परस्पर व्यवहारसँ कथा सामाजिक अर्थ प्राप्त करैत अछि। अमूर्त प्रश्नकें जीवनक ठोस हिसाब-किताबमे उतारल गेल अछि। एहि कारण ‘गुणनफल’ दाम्पत्यक भीतरक उपयोगितावादी दृष्टि आ व्यक्तित्वक गरिमाक बीचक तनाव देखबैत अछि।

आकांक्षा

मूल पृष्ठ : ६४-७१ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : छवि आ ओकर पालन-पोषणसँ जुड़ल परिवार कथाक मूल परिस्थिति : छविक जीवनक माध्यमसँ पालन-पोषण, स्नेह, संरक्षण आ व्यक्तिगत भविष्यमे निर्णय करबाक प्रश्न सामने अबैत अछि। परिवारक अपन अपेक्षा अछि; छविक अपन आकांक्षा। ई दुनू सदिखन एक-दोसरक अनुरूप नहि होइत अछि।

व्यक्ति आ परिवार : कथा ई स्पष्ट करैत अछि जे परिवारक स्नेह महत्त्वपूर्ण भेलो व्यक्तिक जीवनपर सम्पूर्ण अधिकारक पर्याय नहि थिक। परिवार जे उचित मानैत अछि, से युवतीक वास्तविक इच्छा होय, ई आवश्यक नहि। छविक अनुभव एहि जटिल अन्तरकें उद्घाटित करैत अछि।

स्त्रीक आत्मनिर्णय : नारी-विमर्शक दृष्टिसँ छविक व्यक्तित्वकें केन्द्रमे रखब आवश्यक अछि। विवाह वा अन्य जीवन-निर्णयमे ओकर इच्छा, डर, आशा आ समझकें उचित स्थान देबाक आवश्यकता अछि। आकांक्षा केवल स्वप्न नहि; ई अपन भविष्य स्वयं गढ़बाक मानवीय आग्रह थिक।

आलोचनात्मक विवेचन : कथाक भावनात्मक धरातल ओकर सामाजिक प्रश्नकें कमजोर नहि करैत; उलटे अधिक निकट लऽ अबैत अछि। शीर्षक व्यक्तिक भीतरक अपूर्ण इच्छाक संकेत

थिक। ई कथा परिवारक संरक्षण आ स्त्रीक स्वतन्त्रताक बीच न्यायपूर्ण सन्तुलन खोजय लेल प्रेरित करैत अछि।

अहिबातक हार

मूल पृष्ठ : ७२-७७ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : राम बाबू आ हुनक बेटी अमोला

कथाक घटना-भूमि : विवाहक सामाजिक अपेक्षा, दहेज आ परिवारक प्रतिष्ठाक चिन्ता एहि कथामे प्रमुख अछि। राम बाबूक दृष्टिमे बेटीक भविष्य परम्परागत व्यवस्था अनुसार सुरक्षित बनयबाक प्रश्न प्रमुख अछि। मुदा अमोलाक सोचमे अपन जीवनक निर्णय करबाक अधिकार सेहो अछि।

प्रतीकक अर्थ : ‘अहिबातक हार’ पारम्परिक वैवाहिक सौभाग्यसँ सम्बद्ध प्रतीकात्मक शीर्षक थिक। शीर्षकक माध्यमसँ लेखिका स्त्रीक सुख आ जीवनक सार्थकता सम्बन्धी स्वीकृत मान्यतापर प्रश्न उठबैत छथि। वैवाहिक चिह्न मात्रसँ स्त्रीक व्यक्तित्वक पूर्णता निर्धारित नहि कयल जा सकैत अछि।

दहेज आ निर्णय : दहेजक दबाव विवाहकें दू व्यक्तिक सम्बन्धक अपेक्षा सामाजिक लेन-देन आ प्रतिष्ठाक विषय बना दैत अछि। अमोलाक दृष्टि एहि दबावक समक्ष स्वतन्त्र विचारक सम्भावना प्रस्तुत करैत अछि। पिताक चिन्ता आ बेटीक निर्णयकें एकहि सामाजिक परिस्थिति भीतर बुझब आवश्यक अछि।

आलोचनात्मक मूल्याङ्कन : एहि कथामे स्त्रीक आत्मनिर्णय केवल व्यक्तिगत विद्रोह नहि, सामाजिक मान्यताक पुनर्विचारक माध्यम थिक। शीर्षकक सांस्कृतिक अर्थ कथाकें विशिष्ट मैथिल सामाजिक सन्दर्भ दैत अछि। एहि दृष्टिसँ कथा स्त्री-विमर्श आ दहेज-विमर्श दुनूक महत्त्वपूर्ण पाठ अछि।

काल-चक्र

मूल पृष्ठ : ७८-८१ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : प्राण काकी आ सुधा

समय आ पीढ़ीक सम्बन्ध : प्राण काकी आ सुधाक माध्यमसँ पुरान आ नव पीढ़ीक विचारक अन्तर उपस्थित अछि। शिक्षा, रोजगार, विवाह आ स्त्रीक भविष्य सम्बन्धी पुरानका धारणाक सामना बदलैत समाजक नव आवश्यकता करैत अछि।

परिवर्तनक गति : समय केवल घड़ीक गति नहि; समाजक सोच, अवसर आ व्यवहारमे परिवर्तनक नाम सेहो थिक। एक पीढ़ीक अनुभव दोसर पीढ़ीक लेल उपयोगी भऽ सकैत अछि, मुदा ओ हर परिस्थिति पर अपरिवर्तनीय नियम नहि बनि सकैत अछि।

स्त्री-विमर्श : नारीक जीवनपर पुरनका सामुदायिक अपेक्षा आ नवीन स्वावलम्बनक आग्रहक बीच अन्तर एहि कथामे देखाइत अछि। शिक्षा आ रोजगार स्त्रीकेँ नव सम्भावना दैत अछि। एहि परिवर्तनकेँ बुझबाक लेल पुरनका पीढ़ीक चिन्ताक पृष्ठभूमि सेहो देखबाक चाही।

शिल्प आ निष्कर्ष : छोट आकारमे कथा समयक विस्तृत सामाजिक अर्थ प्रस्तुत करैत अछि। ‘चक्र’ शब्द परिवर्तनक निरन्तरता सूचित करैत अछि। कथा सिखबैत अछि जे परम्परा आ नवीनताक सम्बन्ध जड़ विरोधक नहि, आलोचनात्मक संवादक विषय थिक।

दृष्टिकोण

मूल पृष्ठ : ८२-८८ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : रंजना आ राकेश

कथाक प्रमुख प्रश्न : रंजना आ राकेशक सम्बन्धक माध्यमसँ विवाह, प्रेम, सम्मान आ शारीरिक असमर्थताकेँ लऽ कऽ समाजमे व्याप्त पूर्वाग्रहक प्रश्न उठैत अछि। बाहरी मूल्याङ्कन आ व्यक्तिक वास्तविक गुणक बीच अन्तर कथाक प्रमुख तनाव थिक।

पात्रक निर्णय : रंजनाक सोच सामाजिक रूढ़िक यान्त्रिक अनुकरण नहि करैत अछि। राकेशक शारीरिक अवस्थाकेँ ओकर सम्पूर्ण व्यक्तित्वक पर्याय मानब अनुचित होयत, एहि मानवीय दृष्टिक सम्भावना कथामे विकसित होइत अछि।

असमर्थता आ गरिमा : कथाकेँ दया-भावक साधारण चित्रण मानब उचित नहि। शारीरिक असमर्थ व्यक्ति सेहो पूर्ण मानवीय गरिमा, प्रेम आ निर्णयक अधिकारी अछि। एहि दृष्टिसँ कथा सामाजिक पूर्वाग्रहक आलोचना करैत अछि। रंजना द्वारा सम्बन्धक चयनमे मानवीय मूल्यक प्रधानता देखाइत अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : ‘दृष्टिकोण’ शब्द स्वयं बतबैत अछि जे समस्या वस्तुमे मात्र नहि, ओकरा देखबाक नजरिमे सेहो रहैत अछि। लेखिका पात्रक माध्यमसँ बाहरी अपूर्णता आ भीतरी पूर्णताक सरल विभाजनसँ आगाँ बढ़ि सम्मानपूर्ण सम्बन्धक आधारपर विचार करबैत छथि।

निर्णय

मूल पृष्ठ : ८९-९४ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : रतन, मुना बहिन आ भौजी

पत्रात्मक संरचना : एहि कथाक उल्लेखनीय विशेषता एकर पत्रात्मक रूप थिक। रतन द्वारा मुना बहिनकेँ सम्बोधित पत्रक सहारे परिवारक परिस्थिति, दुर्घटना, भावनात्मक उत्तरदायित्व आ आगाँक निर्णयक आधार सामने अबैत अछि। कथावस्तु प्रत्यक्ष घटनासँ बेसी स्मरण आ आत्मकथनक रूपमे उघड़ैत अछि।

मुख्य सामाजिक प्रश्न : पारिवारिक संकटमे भौजीक भविष्य आ समाजक मान्यताक बीच टकराव उत्पन्न होइत अछि। रतनक निर्णय रूढ़ नैतिकताक समक्ष मानवीय जिम्मेवारीक प्रश्न रखैत अछि। एकर सामाजिक महत्त्व एहि बातमे अछि जे परिवारक सदस्यक जीवनकेँ केवल प्रथाक अधीन नहि राखल जा सकैत अछि।

कथनशैलीक प्रभाव : पत्रमे सम्बोधनक आत्मीयता, अनुभवक पुनर्स्मरण आ निजी तर्कक कारण पाठक रतनक अन्तर्द्वन्द्वक निकट पहुँचैत अछि। तथापि पत्रात्मक रचनामे एकहि पात्रक दृष्टि प्रधान होइत अछि; भौजीक स्वतन्त्र स्वर कतेक स्पष्ट अछि, ई अलग सँ आलोचनात्मक जाँचक विषय बनैत अछि।

मूल्याङ्कन : 'निर्णय'मे सामाजिक साहसक प्रश्न व्यक्ति-विशेषक दायित्वसँ जुड़ैत अछि। कथा परम्परागत सम्बन्धक निषेध मात्र नहि, बदलैत परिस्थिति भीतर मानवीय न्याय खोजबाक प्रयास थिक। पत्र-शिल्प एहि नैतिक द्वन्द्वकेँ प्रभावपूर्ण बनबैत अछि।

बाटे बिलायल पानि

मूल पृष्ठ : ९५-९९ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : देवकी बाबू, हुनक सन्तान आ मालती

कथावस्तु : देवकी बाबूक वृद्धावस्था आ पारिवारिक एकाकीपन एहि कथाक आधार अछि। सन्तान अपन-अपन जीवनमे व्यस्त भऽ गेलाक बाद हुनक भावनात्मक आवश्यकता उपेक्षित रहि जाइत अछि। मालतीक संग सम्बन्धक सम्भावना वृद्ध व्यक्तिक जीवनमे सहचर्यक प्रश्नकेँ केन्द्रमे अनेत अछि।

वृद्धावस्थाक मानवीय अधिकार : वृद्ध मनुष्यकेँ केवल आश्रय आ भरण-पोषणक वस्तु मानब पर्याप्त नहि। अपनत्व, संवाद, स्नेह आ स्वतन्त्र निर्णयक आवश्यकता जीवनक अन्तिम अवस्थाधरि बनल रहैत अछि। देवकी बाबूक परिस्थिति एहि सत्यकेँ उभारैत अछि।

सामाजिक दृष्टि : वृद्धावस्थामे नव सहचर्य वा पुनर्विवाहक कल्पनाकेँ समाज शङ्काक दृष्टिसँ देखैत अछि। कथा एहि पूर्वाग्रहसँ प्रश्न करैत अछि। मनुष्यक निजी सुख आ सामाजिक स्वीकृतिक बीचक द्वन्द्व एहिमे महत्त्वपूर्ण बनैत अछि।

शीर्षक आ आलोचनात्मक निष्कर्ष : ‘बाटे बिलायल पानि’ शीर्षकमे जीवनक प्रवाह आ क्रमशः बिखरैत आशाक व्यञ्जना देखल जा सकैत अछि। कथा एकटा व्यापक प्रश्न उठबैत अछि— परिवारक प्रति कर्तव्य निभा चुकल व्यक्तिक अपने जीवनक अधिकार कतय समाप्त होइत अछि? एहि कारण ई कथा वृद्धावस्था-विमर्शक महत्त्वपूर्ण पाठ बनैत अछि।

अपराजिता

मूल पृष्ठ : १००–१०४ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : यशोधरा आ ओकर पारिवारिक-सामाजिक परिवेश

कथावस्तु : यशोधराक जीवनमे प्रतियोगिता, कठिनाई, असफलता आ पुनः प्रयत्नक अनुभव एहि कथाक आधार अछि। बाधा उपस्थित होइत रहितो ओकर मन हार नहि मानैत अछि। अनेक प्रयत्नक क्रममे आत्मविश्वास विकसित होइत अछि।

शीर्षकक संकेत : ‘अपराजिता’क अर्थ केवल प्रतियोगितामे विजय प्राप्त करनिहार नहि, बल्कि विपत्तिक समक्ष आत्मविश्वास नहि हेरौनिहार व्यक्ति सेहो थिक। शीर्षक नायिकाक मनःस्थितिक गुणकेँ प्रतिष्ठित करैत अछि।

स्त्रीक आत्मबल : यशोधराक जीवनक संघर्ष दर्शबैत अछि जे आत्मनिर्भरता आ सम्मानक आकांक्षा व्यक्तिगत परिश्रमसँ जुड़ल अछि। ओकर प्रयत्नक महत्त्व समाजक स्वीकृतिसँ आगाँ ओकर अपन व्यक्तित्वक विकासमे अछि।

समापनक अर्थ : संग्रहक अन्तिम कथा होयबाक कारण ‘अपराजिता’ समग्र संग्रहकेँ आशावादी स्वर दैत अछि। एहिसँ पूर्वक कथासभमे जे सामाजिक अवरोध, पीड़ा आ निर्णायक समस्या देखाइत अछि, तकर समक्ष आत्मबलक एकटा सम्भावित उत्तर प्रस्तुत होइत अछि। तथापि प्रत्येक व्यक्तिक सफलता केवल परिश्रमपर निर्भर नहि करैत; सामाजिक अवसर आ संरचनाक भूमिका सेहो मान्य रहबाक चाही।

कथासभक तुलनात्मक विषय-विमर्श

वर्ग, श्रम आ सामाजिक प्रतिष्ठा

‘समय-संकेत’ आ ‘पैघ लोक’ एक-दोसरक संग पढ़लासँ सामाजिक प्रतिष्ठाक दूटा रूप स्पष्ट होइत अछि। पहिल कथामे सत्ता आ अधिकारक असमान वितरण अछि; दोसरामे श्रमक मूल्य आ मनुष्यक सम्मानक प्रश्न। सुखना राजकीय अथवा स्थानीय प्रभुत्वक समक्ष अपन हिस्सेदारीक अर्थ बुझैत अछि; प्रीता धनिक परिवेशक भीतर व्यवहारक वास्तविक पैघपनक मूल्याङ्कन करैत अछि। दुनू कथामे केन्द्रस्थ प्रश्न अछि—सामाजिक हैसियतसँ अलग मनुष्यक गरिमा केना सुरक्षित रहत?

विवाह, दाम्पत्य आ स्त्रीक इच्छा

‘गुणनफल’, ‘आकांक्षा’ आ ‘अहिबातक हार’मे वैवाहिक जीवन वा वैवाहिक भविष्यमे स्त्रीक इच्छा आ सामाजिक अपेक्षाक सम्बन्ध प्रमुख अछि। विवाहकेँ केवल समाजक स्वीकृत संस्था मानि लेलासँ स्त्रीक व्यक्तिगत व्यक्तित्वक प्रश्न दबि जाइत अछि। ‘अहिबातक हार’ एहि तनावकेँ सांस्कृतिक प्रतीकक सहायता सँ उभारैत अछि, तँ ‘गुणनफल’ दाम्पत्यक भीतरी व्यवहारमे उपयोगिता आ गरिमाक संघर्ष देखबैत अछि। ‘आकांक्षा’ संरक्षण आ स्वतन्त्रताक बीचक द्वन्द्व स्पष्ट करैत अछि।

स्वावलम्बन आ आत्मबल

‘धूरी’ आ ‘अपराजिता’केँ एकसंग पढ़लासँ विपत्तिक सामना करबाक स्त्री-शक्ति सामने अबैत अछि। शीलाक जीवनमे अचानक संकट आत्मनिर्भरताक आवश्यकता जगबैत अछि। यशोधराक संघर्ष निरन्तर प्रयत्न आ मनोबलक महत्त्व प्रतिष्ठित करैत अछि। एहि दुनू कथाक सकारात्मक मूल्य स्पष्ट अछि, मुदा आलोचनामे ई प्रश्न जोड़ब आवश्यक अछि जे व्यक्तिक प्रयत्नकेँ फलित होयबाक लेल सामाजिक सहयोग आ अवसर कतेक उपलब्ध अछि।

वृद्धावस्था, सेवा आ मानवीय सम्बन्ध

‘गुलाब काकी’ आ ‘बाटे बिलायल पानि’ वृद्धावस्थाक भिन्न परिस्थिति देखबैत अछि। पहिलमे वृद्ध स्त्रीक उपेक्षा आ अपनत्वक प्रश्न अछि; दोसरामे वृद्ध पुरुषक सहचर्य आ निजी सुखक अधिकार। ‘बदला’ सेवा आ करुणाक नैतिक समस्या प्रस्तुत करैत अछि। एहि कथासभकेँ एक

सूत्रमे जोड़निहार बात ई अछि जे परिवारक अस्तित्व अपने-आप संवेदनाक गारंटी नहि दैत; सम्बन्धकें मानवीय बनयबा लेल प्रत्येक व्यक्तिक अनुभूतिक सम्मान आवश्यक अछि।

बदलैत समय, मान्यता आ निर्णय

‘युद्ध’ आ ‘काल-चक्र’मे पीढ़ीक अनुभव आ नवी सोचक टकराव देखाइत अछि। ‘निर्णय’ एहि विमर्शकें सामाजिक रूढ़ि आ निजी नैतिक उत्तरदायित्वक स्तरपर लऽ जाइत अछि। ‘दृष्टिकोण’ मनुष्यक मूल्याङ्कनमे पूर्वाग्रहक भूमिका देखबैत अछि। एहि कथासभमे बदलैत समयक अर्थ केवल तकनीकी वा आर्थिक बदलाव नहि, सम्बन्धकें बुझबाक नव आधारक निर्माण सेहो थिक। कथा-शिल्प आ भाषिक विश्लेषण

कथानक आ रचनाक आकार

एहि संग्रहमे अनेक कथा घरेलू घटना अथवा गामक परिचित प्रसंगसँ शुरू होइत अछि आ धीरे-धीरे सामाजिक प्रश्न धरि पहुँचैत अछि। पात्रक अनुभवक माध्यमसँ मूल्यपरक निष्कर्ष उभरैत अछि। किछु कथा छोट प्रसंगमे केन्द्रित अछि, किछुमे सम्बन्धक अनेक तह भेटैत अछि। ‘निर्णय’क पत्रात्मक रूप संग्रहक शिल्पगत विविधताकें विशेष रूपसँ चिन्हित करैत अछि।

कथोपकथनक भूमिका

‘समय-संकेत’मे सुखना, बिलटी आ मास्टर साहेबक संवाद, ‘युद्ध’मे पीढ़ीक संवाद आ ‘काल-चक्र’मे दृष्टिभेदक संवाद अर्थनिर्माणमे सहायक अछि। गामक बोलचाल आ घरेलू सम्बोधन पात्रकें अपन समाजसँ जोड़ैत अछि। कथोपकथन केवल सूचना देबाक साधन नहि, सामाजिक दूरी, आत्मीयता आ मूल्यक टकराव स्पष्ट करबाक माध्यम सेहो बनैत अछि।

शीर्षक-विधान

शीर्षकसभमे वर्णनात्मक आ व्यञ्जनात्मक दुनू प्रकारक प्रयोग भेटैत अछि। ‘गुलाब काकी’ व्यक्तिक नाम द्वारा आत्मीयता जगबैत अछि, ‘पैघ लोक’ प्रचलित सामाजिक अर्थपर व्यङ्ग्य करैत अछि, ‘गुणनफल’ एकटा गणितीय पदकें सम्बन्धक प्रश्न बनबैत अछि, आ ‘युद्ध’, ‘धूरी’, ‘काल-चक्र’ तथा ‘समय-संकेत’ रूपकात्मक विस्तारक सम्भावना खोलैत अछि। ‘अहिबातक हार’क सांस्कृतिक पद विशेष मैथिल वैवाहिक परिप्रेक्ष्य स्मरण करबैत अछि।

मैथिली भाषाक स्थानीयता आ लेखकीय स्वर

मूल पोथीक भाषामे गाम-घरक व्यवहार, आत्मीय सम्बोधन, स्थानीय जीवनक शब्द आ संवादक प्राकृतिक प्रवाह भेटैत अछि। ‘पैघ’, ‘काकी’, ‘बिलटी’, ‘अहिबात’ सन पद केवल शब्दार्थ नहि, सांस्कृतिक परिस्थितिक संकेत दैत अछि। विश्लेषण लिखैत समय मूल कथाक नाम, पात्रक नाम आ सांस्कृतिक पद जथावत् राखल गेल अछि। शोधक गद्य स्वयं मानक लिखित मैथिलीमे राखबाक प्रयास कयल गेल अछि, जाहिसँ मूलक स्थानीय स्वर मेटायल नहि जाए।

कथन आ उपदेशक सम्बन्ध

किछु कथामे नैतिक सन्देश स्पष्ट रूपेँ उभरैत अछि। ई संग्रहक सामाजिक प्रतिबद्धताक विशेषता सेहो मानल जा सकैत अछि। मुदा साहित्यिक आलोचनाक दृष्टिसँ विचार स्पष्ट होयब आ कथा कलात्मक रूपेँ घटित होयब दू पृथक कसौटी अछि। एतय मूल्याङ्कनमे विचारक पक्षक संग घटनाक विश्वसनीयता, पात्रक जटिलता आ कथावस्तुक बहुअर्थी सम्भावनाकेँ सेहो महत्त्व देल गेल अछि।

नारी-विमर्श : उपलब्धि आ अन्तर्विरोध

संग्रहक प्रमुख उपलब्धि ई अछि जे स्त्रीपात्रसभकेँ केवल पारिवारिक भूमिकाक प्रतिनिधि नहि बनाओल गेल अछि। ओ लोकनि परिस्थिति बुझैत छथि, दुःख सहैत छथि, प्रश्न करैत छथि आ कतहु-कतहु अपन निर्णय स्वयं करैत छथि। प्रीता, शीला, मीरा, छवि, अमोला, रंजना आ यशोधराक प्रसंग विविध जीवनस्थितिमे स्त्रीक अपन जीवनक दिशा निर्धारित करबाक सामर्थ्य प्रस्तुत करैत अछि।

तथापि स्त्रीक सेवा, क्षमा आ सहनशीलताकेँ महत्त्व देबाक क्रममे एकटा प्रश्न निरन्तर उपस्थित रहैत अछि—की ई गुण पुरुषसँ सेहो समान रूपेँ अपेक्षित अछि? ‘बदला’क अध्ययनमे ई प्रश्न विशेष आवश्यक अछि। तहिना स्त्रीक स्वावलम्बनकेँ केवल संकट-पश्चात् उपलब्धि मानल जाए, तँ दैनिक अवसर, शिक्षा आ संसाधनक असमानता अस्पष्ट रहि जायत। ‘धूरी’ एहि अतिरिक्त विवेचनक अवसर दैत अछि।

नारी-विमर्शक आलोचनामे वृद्ध स्त्री, आर्थिक रूपेँ आश्रित स्त्री, युवती आ विवाहित स्त्रीक परिस्थिति एक समान नहि मानल जाए। ‘गुलाब काकी’क अनुभव ‘अहिबातक हार’क

अमोलाक अनुभवसँ भिन्न अछि। एहि भिन्नताक सम्मान करबासँ लेखिकाक कथाजगतक व्यापकता स्पष्ट होइत अछि।

एहि कारण संग्रहक नारी-विमर्शकें नारा अथवा एकरेखीय विरोधमे सीमित करब ठीक नहि। एहिमे परम्पराक आलोचना अछि, मुदा पारिवारिक आत्मीयताक महत्त्व सेहो अछि; स्त्रीक स्वतन्त्रताक आग्रह अछि, मुदा दायित्व आ सहानुभूतिक प्रश्न सेहो अछि। एकर वैचारिक जटिलता एहि द्वन्द्वसँ बनैत अछि।

निष्कर्ष : समयक संकेत आ अपराजेय जीवनबोध

‘समय-संकेत’क चौदहो कथा मैथिल सामाजिक जीवनक अनेक स्तर प्रस्तुत करैत अछि। गामक श्रमिक परिवार, सम्पन्न घरक व्यवहार, दाम्पत्यक भीतरी असन्तुलन, वृद्ध लोकक एकाकीपन, युवतीक विवाह-निर्णय, पीढ़ीक वैचारिक अन्तर आ विपत्तिक समक्ष आत्मबल—ई सभ एकहि संग्रहक अङ्ग अछि। एहि विविधताक केन्द्रमे मानवीय गरिमा आ सम्बन्धक न्यायपूर्ण पुनर्विचारक प्रश्न अछि।

कथा-क्रमक आरम्भमे सुखनाक अधिकारबोध आ अन्तमे यशोधराक आत्मविश्वासकें एकसंग देखलासँ सामूहिक आ व्यक्तिगत परिवर्तनक दू सूत्र भेटैत अछि। पहिल सामाजिक संरचना प्रश्नांकित करैत अछि; दोसर प्रतिकूलतामे आत्मबलक सम्भावना जगबैत अछि। दुनूक बीचक कथासभ जीवनक कठिन विकल्पक विवरण प्रस्तुत करैत अछि।

लेखिकाक महत्त्व एहि बातमे अछि जे ओ परिचित लोकजीवनमे छिपल असमानता आ संवेदनाकें कथा बनबैत छथि। मूल मैथिली भाषा, घरेलू संवाद आ सामाजिक प्रतीक एहि कथासभकें अपन क्षेत्रीय पहचान दैत अछि। एहि पहिचानकें सुरक्षित रखिते कथासभमे उपस्थित मानवीय प्रश्न व्यापक पाठकीय अर्थ प्राप्त करैत अछि।

अन्तिम आलोचनात्मक निष्कर्ष ई अछि जे संग्रह परिवर्तनक आकांक्षा आ सम्बन्धक पुनर्समीक्षाक साहित्यिक ग्रन्थ थिक। एकर पात्रसभ पूर्णतः आदर्श अथवा पूर्णतः दोषी नहि, बल्कि बदलैत सामाजिक परिस्थितिमे अर्थ खोजैत मनुष्य छथि। आलोचनाक समुचित दृष्टि एहि जटिलताकें मान्यता देब थिक।

अनुसन्धानक प्रमुख प्रतिपादन

१. चौदहो कथा अलग-अलग जीवनस्थिति चित्रित करितो मानवीय गरिमा आ सामाजिक परिवर्तनक प्रश्नसँ जुड़ल अछि।
२. स्त्रीक आत्मनिर्णय, शिक्षा, आर्थिक स्वावलम्बन आ विवाहसम्बन्धी अधिकार संग्रहक पुनरावृत्त विषय अछि।
३. सामाजिक प्रतिष्ठाक पारम्परिक मापदण्डक आलोचना 'समय-संकेत' आ 'पैघ लोक'मे विशेष स्पष्ट अछि।
४. वृद्धावस्था-विमर्श स्त्री आ पुरुष दुनू पात्रक माध्यमसँ विकसित होइत अछि; केवल पालन-पोषण नहि, स्नेह आ सहचर्य सेहो आवश्यक अछि।
५. कथासभक शीर्षक बहुधा घटनाक साधारण नाम नहि, व्यापक प्रतीक अथवा आलोचनात्मक प्रश्नक संकेत अछि।
६. पत्रात्मक 'निर्णय' संग्रहक कथन-रूपमे विविधता अनैत अछि।
७. कथाक नारी-विमर्शक मूल्याङ्कन करैत काल स्त्रीक त्यागक महिमा आ स्त्रीक स्वतन्त्रताक बीच सम्भावित तनाव सेहो देखबाक चाही।
८. मूल पोथीक भाषा आ सामाजिक सम्बोधन पात्रसभकेँ विशेष मैथिल जीवन-परिस्थितिसँ जोड़ैत अछि।

अध्याय ३ : मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली

आधार-कृति : डॉ. कमला चौधरी, मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली, २००८।

ग्रन्थक विषयक्षेत्र आ आलोचनात्मक दृष्टि

डॉ. कमला चौधरीक ई ग्रन्थ भाषा आ लोकसंस्कृतिक सहसम्बन्धक एक विशेष क्षेत्र—देहपर धारण कएल जाएबला वस्त्र, आभूषण आ श्रृंगार-सामग्रीसँ जुड़ल मैथिली शब्द—केँ केन्द्रमे अनैत अछि। शीर्षकमे “शब्दावली” शब्द महत्त्वपूर्ण अछि : लेखिका मात्र पहिरनक सूची नहि, अपितु नामकरण, अर्थपरिवर्तन, प्रयोगपरम्परा आ साहित्यिक उपस्थितिक व्याख्या दिस अग्रसर छथि।

विषय-सूचीक क्रम स्वयं एक तर्क प्रस्तुत करैत अछि : पहिने भारतीय परम्परा, तकर बाद मैथिल परम्परा, तदनन्तर ऐतिहासिक परिवर्तन; फेर प्राचीन, मध्यकालीन आ आधुनिक मैथिली साहित्यक आधार; अन्तमे कोशीय वर्गीकरण आ भाषावैज्ञानिक विचार। एहि संरचनामे सांस्कृतिक इतिहास आ भाषा-विज्ञान दूटा परस्पर पूरक आधार बनैत अछि।

मूल ग्रन्थक बारह अध्यायक रूपरेखा

अध्याय	विषय	मुद्रित पृष्ठारम्भ
1	वेशभूषा प्रसाधनक भारतीय परम्परा	१
2	वेशभूषा प्रसाधनक मैथिल परम्परा	३४
3	मैथिल परम्परापर प्रभाव आ तज्जन्य परिवर्तन	६१
4	प्राचीन मैथिली साहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन	६७
5	मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन	९४
6	आधुनिक मैथिली साहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन	१५३
7	वेशक शब्दावली	२७२
8	आभूषणक शब्दावली	२९२
9	प्रसाधनक शब्दावली	३०२
10	ध्वनि-विचार	३१०
11	शब्द-विचार	३१६
12	उपसर्ग आ प्रत्यय विचार	३२४

प्रथम अध्याय : वेशभूषा प्रसाधनक भारतीय परम्परा

मूल ग्रन्थमे एहि अध्यायक आरम्भ मुद्रित पृष्ठ १ पर आ अगिला अध्यायसँ पहिने अन्तिम पृष्ठ ३३ धरि अछि (विषय-सूचीक आधारपर)।

भारतीय परम्पराक चर्चा मैथिली शब्द-सम्पदाकेँ एक पैघ सभ्यतागत परिप्रेक्ष्यमे रखबाक प्रस्तावना अछि। वेश आ प्रसाधन केवल सौन्दर्यबोधक पदार्थ नहि, सामाजिक मर्यादा, ऋतु, अवसर, जातीय व्यवहार आ धार्मिक आचारसँ सम्बन्धित अर्थ-वाहक चिह्न होइत अछि। एहि पृष्ठभूमि बिना स्थानीय शब्दक समग्र अर्थ बुझब कठिन होइत।

भारतीय स्रोत आ मिथिलाक स्थानीय शब्दबीचक सम्बन्ध निर्धारित करबाक समय रूपक साम्य आ वास्तविक ऐतिहासिक सम्बन्धमे भेद आवश्यक अछि। संस्कृत वा प्राचीन ग्रन्थमे वस्त्रक नाम मिलब मात्रसँ मैथिलीमे ओहि शब्दक अखण्ड प्रयोग प्रमाणित नहि होइत अछि। बीचक काल, रूपान्तर, अर्थसरणि आ बोलचालक प्रमाण देखबाक आवश्यकता अछि।

आलोचनात्मक दृष्टिसँ एहि अध्यायक उपयोग तुलनात्मक आधार बनबामे अछि। तथापि समूचा भारतीय परिधानक रूप एकरूप नहि रहल; क्षेत्र, पदार्थ, निर्माण-प्रविधि आ सामाजिक वर्गक कारणेँ विविधता विद्यमान रहल। “भारतीय” सन्दर्भकेँ सार्वभौम नियम मानि स्थानीय विशिष्टता विलीन नहि करबाक चाही।

एहि अध्यायसँ निकलैत अनुसन्धान-प्रश्न अछि : कोन शब्दक मूल व्यापक भारतीय परम्परामे अछि, कोन रूप मैथिलीमे विशेष अर्थ ग्रहण करैत अछि, आ कोन वस्तु एक नामसँ भिन्न क्षेत्रमे अलग-अलग बुझल जाइत अछि? एहने प्रश्न शब्दावलीक ऐतिहासिक अध्ययनकेँ प्रमाणपरक बनबैत अछि।

द्वितीय अध्याय : वेशभूषा प्रसाधनक मैथिल परम्परा

मूल ग्रन्थमे एहि अध्यायक आरम्भ मुद्रित पृष्ठ ३४ पर आ अगिला अध्यायसँ पहिने अन्तिम पृष्ठ ६० धरि अछि (विषय-सूचीक आधारपर)।

एहि अध्यायमे अध्ययनक केन्द्र भारतीय सामान्यतासँ मैथिल लोकजीवनक विशेषता दिस सरकैत अछि। स्थानीय पहिरन, स्त्री-पुरुषक शृंगार-प्रवृत्ति, सामाजिक संस्कार, विवाहादि

अवसर, उपलब्ध सामग्री आ प्रचलित नाम—एहि सभक परस्पर सम्बन्ध शब्दावली बुझबाक कुंजी अछि।

मैथिल परम्पराक व्याख्यामे केवल “पुरान” आ “नव” केँ विपरीत श्रेणी मानब उचित नहि। परिधानक नामक निरन्तरता रहि सकैत अछि, मुदा ओकर बनावट, तन्तु, पहिरबाक शैली वा प्रयोगक प्रसंग बदलि सकैत अछि। विपरीततः नव पदार्थ पुरान स्थानीय शब्दकेँ नव अर्थ सेहो दऽ सकैत अछि।

लोकस्मृति आ लिखित प्रमाणक तौल अलग-अलग कएल जाएबाक चाही। वृद्ध वक्ताक स्मृतिमे सुरक्षित नाम अत्यन्त मूल्यवान् अछि, मुदा ओकर काल-निर्धारणकेँ अन्य साक्ष्यसँ मिलायब आवश्यक अछि। एहि सन्दर्भमे क्षेत्रीय भेद—उत्तर-दक्षिण, नगर-गाम, सीमावर्ती भाषिक सम्पर्क—केँ दर्ज करब शोधकेँ आर व्यापक करैत।

एहि अध्यायक प्रमुख उपलब्धि मिथिलाक देह-संस्कृतिक भाषा-अध्ययनक उपयुक्त विषय होयबाक स्थापना अछि। भाषाक इतिहास केवल साहित्यिक शैलीक इतिहास नहि; घरेलू क्रिया, कपड़ाक नाम आ अलंकरणक पद्धति सेहो एकर जीवित अभिलेख अछि।

तृतीय अध्याय : मैथिल परम्परापर प्रभाव आ तज्जन्य परिवर्तन

मूल ग्रन्थमे एहि अध्यायक आरम्भ मुद्रित पृष्ठ ६१ पर आ अगिला अध्यायसँ पहिने अन्तिम पृष्ठ ६६ धरि अछि (विषय-सूचीक आधारपर)।

एहि अध्यायक पृथक् स्थापना स्वयं महत्वपूर्ण अछि : परम्परा स्थिर वस्तु नहि, सम्पर्क, व्यापार, राजनीति, शिक्षा, यातायात आ उत्पादन-पद्धतिक परिवर्तनसँ प्रभावित सामाजिक प्रक्रिया अछि। शब्द-परिवर्तनकेँ एहि चलायमान सन्दर्भमे पढ़ब आवश्यक अछि।

कपड़ा आ आभूषणक नवानि वस्तुक संग नवानि नाम आबि सकैत अछि। कखनो बाहरी शब्द पूर्णतः स्वीकृत होइत अछि; कखनो ध्वनिगत स्थानीय रूप बनैत अछि; कखनो प्रचलित शब्द नव वस्तुकेँ सूचित करैत अछि। भाषा-विज्ञानमे ई ऋणशब्द, अर्थ-विस्तार आ पुनर्नामकरणक प्रक्रिया छी।

वेशभूषाक परिवर्तनकेँ केवल “परम्पराक क्षय” मानब विश्लेषणक सीमा अछि। सुविधा, लागत, लैंगिक श्रम-विभाजन, उपलब्धता आ रुचिक बदलावसँ सामाजिक कार्य बदलैत अछि। एकहि

समयमे विवाह-संस्कारमे पुरान पहिरन टिकि सकैत अछि आ दैनिक जीवनमे नव वस्त्र स्थान ग्रहण कऽ सकैत अछि।

समालोचनाक स्तरपर एहि अध्यायमे प्रभावक दिशा, अवधि आ माध्यमक अधिक व्यवस्थित वर्गीकरण सम्भव अछि : आन्तरिक मैथिल परिवर्तन, समीपवर्ती भाषासँ सम्पर्क आ दूरस्थ औद्योगिक वस्तुक प्रवेश—तीनू एक समान प्रक्रिया नहि अछि।

चतुर्थ अध्याय : प्राचीन मैथिली साहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन

मूल ग्रन्थमे एहि अध्यायक आरम्भ मुद्रित पृष्ठ ६७ पर आ अगिला अध्यायसँ पहिने अन्तिम पृष्ठ ९३ धरि अछि (विषय-सूचीक आधारपर)।

साहित्यिक साक्ष्यक उपयोग एहि ग्रन्थक पद्धतिगत महत्त्वक केन्द्र अछि। काव्य वा प्राचीन लिखित पाठमे प्रयुक्त वेश-सम्बन्धी पद ऐतिहासिक शब्द-रूप आ सांस्कृतिक कल्पनाकें देखबैत अछि। मुदा काव्यक शब्द वास्तविक दैनिक व्यवहारक प्रत्यक्ष सांख्यिकीय अभिलेख नहि होइत अछि।

शब्दक उल्लेख तीन प्रकारक प्रमाण दऽ सकैत अछि : वस्तुक नामक अस्तित्व, ओकर रूपक/अलंकारिक अर्थ, अथवा तत्कालीन मूल्यबोध। उदाहरणार्थ आभूषणक उल्लेख शारीरिक वस्तुसँ अधिक सौन्दर्य, स्थिति वा भावक प्रतीकक रूपमे भऽ सकैत अछि। सन्दर्भ पढ़ने बिना शब्दार्थ निश्चित कएल नहि जा सकैत।

एहि साहित्यिक अध्यायक पढ़ाइमे ग्रन्थक रचनाकाल, उपलब्ध पाठ-संस्करण, भाषारूप आ उद्धरणक शुद्धता निर्णायक अछि। उत्तरकालीन सम्पादनक वर्तनीकें मूलकालीन ध्वन्यात्मक प्रमाण मानब भ्रामक भऽ सकैत अछि। प्रत्येक शब्दसँ लगैत पूर्ण पंक्ति आ स्रोतसूची अनुसन्धानकें पुनःपरीक्षण योग्य बनबैत।

प्राचीन शब्दक वर्तमान भाषामे अवशेष खोजबाक आग्रह उपयोगी अछि, मुदा एकहने ध्वनि रहला मात्रै अर्थक निरन्तरता सिद्ध नहि होइत अछि। वस्तुक वास्तविक संरचना आ समकालीन अर्थक तुलना करब एहि अध्यायक सशक्त सम्भावित विस्तार अछि।

पञ्चम अध्याय : मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन

मूल ग्रन्थमे एहि अध्यायक आरम्भ मुद्रित पृष्ठ ९४ पर आ अगिला अध्यायसँ पहिने अन्तिम पृष्ठ १५२ धरि अछि (विषय-सूचीक आधारपर)।

मध्यकालीन साहित्यक विस्तृत स्थान ग्रन्थक ऐतिहासिक शब्दसाक्ष्य प्रति विशेष रुचि प्रकट करैत अछि। पद्य-पंक्तिमे वस्त्र, शृंगार, शारीरिक सज्जा आ अलंकारित रूपक सह-अस्तित्व देखबाक सम्भावना अछि। पदावलीक प्रसंग—नायिका-वर्णन, सामाजिक उपस्थिति, धार्मिक भाव—अर्थनिर्धारणमे अन्तर उत्पन्न करैत अछि।

एहि कालक कविताक अध्ययनमे प्रतीक-भाषा आ वास्तविक पोशाककें पृथक् रखब अनिवार्य अछि। काव्यमे आभूषण भक्ति वा प्रेमक भावद्योतक भऽ सकैत अछि; ताहि पंक्तिसेँ समाजक सभ स्त्री अथवा पुरुषक दैनिक परिधान निर्धारित नहि होइत।

मैथिली साहित्यक इतिहासमे पाठभेद, हस्तलिखित परम्परा आ सम्पादकीय मानकीकरणक प्रश्न प्रासंगिक अछि। यदि एक शब्द अनेक पाठमे अलग रूपमे अछि तँ प्रतिरूप, उच्चारण आ अर्थक सम्बन्धकें अनिश्चितता सहित रखबाक चाही।

एहि अध्यायक अनुसन्धान-मूल्य शब्दक कालगत उपस्थिति आ साहित्यिक व्यवहारक तुलनामे अछि। पद, रचना, काल, अर्थ, रूपभेद आ वर्तमान प्रयोगक आधारपर अध्ययनक एक सुसंगत क्रम बनैत अछि।

षष्ठ अध्याय : आधुनिक मैथिली साहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन

मूल ग्रन्थमे एहि अध्यायक आरम्भ मुद्रित पृष्ठ १५३ पर आ अगिला अध्यायसँ पहिने अन्तिम पृष्ठ २७१ धरि अछि (विषय-सूचीक आधारपर)।

आधुनिक साहित्यपर केन्द्रित अध्याय विषय-सूचीक अनुसार ग्रन्थक सर्वाधिक विस्तृत खण्डमेसँ एक अछि। ई विस्तार स्वयं बतबैत अछि जे आधुनिक कथा, कविता आ अन्य साहित्यिक विधामे लोक-परिधानक भाषा तुलनात्मक अध्ययनक लेल समृद्ध क्षेत्र बनैत अछि।

आधुनिक रचनानामे वस्त्र आ शृंगार-पद पात्रक आर्थिक स्थिति, जातीय प्रतिष्ठा, पीढ़ीक अन्तर, लैंगिक अपेक्षा, उत्सव अथवा विस्थापनक सांकेतिक सूचक भऽ सकैत अछि। साहित्यिक विवरण कखनो व्यंग्यात्मक, कखनो संस्मरणात्मक, आ कखनो यथार्थपरक होइत अछि। ताहि कारण पाठक-प्रसंगक बिना कोशीय अर्थ अपूर्ण रहैत अछि।

आधुनिक कालक उपभोक्ता-संस्कृति आ बदलैत उत्पादन-व्यवस्था शब्दसम्पदामे नव श्रेणी जोड़ि सकैत अछि। तथापि एहि व्यापक ऐतिहासिक कथनकेँ ग्रन्थक कोनो विशेष लेखक अथवा उद्धरणक प्रत्यक्ष निष्कर्ष नहियेँ मानल जा सकैत; प्रत्येक उदाहरण हेतु मूल उद्धरणक पुष्टि आवश्यक अछि।

एहि अध्यायक समालोचनामे साहित्यिक प्रतिनिधित्वक समस्या उठैत अछि : साहित्यक पात्र-संसार समग्र मिथिलाक गणनात्मक नमूना नहि होइत। नगर, ग्राम, वर्ग, लिंग आ कालक असमान उपस्थिति शब्द-संग्रहक आवृत्तिकेँ प्रभावित कऽ सकैत अछि।

एहि खण्डक महत्त्व ऐतिहासिक त्रिपदी पूर्ण करबामे अछि—प्राचीन, मध्यकालीन आ आधुनिक। एहि तीनू अध्यायक अन्तर्सम्बन्धक वैज्ञानिक परीक्षण लेल वस्तु-विशेषक “प्रथम देखल लिखित प्रयोग” आ “अन्तिम देखल प्रयोग” जकाँ साक्ष्य-आधारित चिह्न उपयोगी होयत।

सप्तम अध्याय : वेशक शब्दावली

मूल ग्रन्थमे एहि अध्यायक आरम्भ मुद्रित पृष्ठ २७२ पर आ अगिला अध्यायसँ पहिने अन्तिम पृष्ठ २९१ धरि अछि (विषय-सूचीक आधारपर)।

विषय-सूचीक अनुसार एहि अध्यायसँ पुस्तक वर्णनात्मक इतिहाससँ प्रत्यक्ष कोशरूप दिस अग्रसर होइत अछि। देखल गेल मुद्रित पृष्ठ २८६–२८७ मे वस्त्रक नाम, ओकर देहपर धारण करबाक पद्धति, आकार वा उपयोगसँ सम्बन्धित परिभाषात्मक विवरण अछि। ई अंश शब्दसूचीकेँ निर्जीव नाम-संग्रहसँ अलग करैत अछि।

मूल-पाठक एहि भागमे “पायजामा/पजामा”, “मोहरी”, “पेट”, “साड़ी”, “नुआ/लुगा”, “आँचर” सन शब्द एवं रूप आँखि पड़ैत अछि। एहि सभकेँ एतय मात्र प्रत्यक्ष देखल उदाहरणक रूपमे लेल गेल अछि; कोनो शब्दक सर्वत्र समान अर्थक दावा नहि कएल गेल अछि।

विशेषतः साड़ीक वर्णनमे वस्तुक खण्ड, ओकर शरीरपर स्थान आ स्थानीय नामकरणक अन्तर्सम्बन्ध दिस संकेत भेटैत अछि। “आँचर” सन शब्द वस्त्रक विशिष्ट अंशक नाम होइतो सामाजिक व्यवहारमे अनुषंगिक अर्थ अर्जित कऽ सकैत अछि। वस्तु-भागक नामक संग क्रिया आ सामाजिक प्रसंग जोड़ब कोशक गुणवत्ता बढ़बैत अछि।

एहि अध्यायक समीक्षामे वस्त्रक प्रकार्यगत वर्गीकरण—ऊपरी वस्त्र, निचला वस्त्र, आवरण, सिलाइदार वस्त्र, असिलाइदार वस्त्र, पुरुष/स्त्री/उभय प्रयोग आ विशेष अवसर—विश्लेषणक उपयोगी उपकरण अछि। ई श्रेणी अनुसन्धानकर्ताक प्रस्ताव छी; मूल ग्रन्थक वास्तविक सर्वप्रविष्टिक प्रमाणित अनुक्रम नहि।

अष्टम अध्याय : आभूषणक शब्दावली

मूल ग्रन्थमे एहि अध्यायक आरम्भ मुद्रित पृष्ठ २९२ पर आ अगिला अध्यायसँ पहिने अन्तिम पृष्ठ ३०१ धरि अछि (विषय-सूचीक आधारपर)।

आभूषणक शब्दावली वस्तुक भौतिक संरचना आ ओकर सामाजिक प्रतीकार्थ दुनूकँ एकत्र कऽ देखबाक अवसर दैत अछि। कर्ण, नाक, गरदनि, भुजा, हाथ, कमर आ पयर—देहक स्थान अनुसार वर्गीकरण बहुधा अर्थ-व्यवस्था स्पष्ट करैत अछि।

आभूषण-पदक अध्ययनमे धातु, मणि, बनावट, जोड़ी अथवा एकल प्रयोग, विवाह वा अन्य संस्कारसँ सम्बद्धता आ स्थानीय नामक भेद अलग-अलग नोट करब चाही। एकहि वस्तुक आकार वा पदार्थ बदललासँ नाम बदलि सकैत अछि, आ एकहि नाम अनेक आकारपर लागू भऽ सकैत अछि।

लैंगिक आ वैवाहिक संकेतक प्रश्न एहि अध्यायसँ सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक विमर्श अछि। मुदा कोनो आभूषणकँ मिथिलाक सभ समुदाय वा सभ कालमे एकहि अनिवार्य सामाजिक संकेत मानि लेब अनैतिहासिक सामान्यीकरण होयत।

शब्दकोशीय दृष्टिसँ आभूषणक चित्र, देहपर प्रयोगक स्थान, समानार्थी, क्षेत्रीय वैकल्पिक रूप आ प्रमाणित साहित्यिक उद्धरण जोड़लासँ ई अध्याय लोकसांस्कृतिक अभिलेखक रूपमे आओर प्रभावशाली भऽ सकैत अछि।

नवम अध्याय : प्रसाधनक शब्दावली

मूल ग्रन्थमे एहि अध्यायक आरम्भ मुद्रित पृष्ठ ३०२ पर आ अगिला अध्यायसँ पहिने अन्तिम पृष्ठ ३०९ धरि अछि (विषय-सूचीक आधारपर)।

प्रसाधनक क्षेत्र वस्त्र आ आभूषणसँ किंचित भिन्न अछि : एतय शरीरक सज्जा, लेपन, केश-विन्यास, सुगन्ध, अलंकरण आदि क्रिया आ सामग्री आपसमे जुड़ैत अछि। एकटा शब्द पदार्थक

नाम भऽ सकैत अछि तँ दोसर ओकर उपयोगक क्रिया अथवा उपयुक्त अवसर सूचित करैत अछि।

एहि तरहक शब्दमे भौतिक पदार्थ आ सामाजिक अर्थक सीमा प्रायः परस्पर प्रवेश करैत अछि। एक वस्तु दैनिक शारीरिक स्वच्छता, सौन्दर्य, अनुष्ठान अथवा स्वास्थ्यक प्रसंगमे भिन्न अर्थ लऽ सकैत अछि। अतः मात्र एक-पंक्तिक समानार्थ देब सदिखन पर्याप्त नहि होइत।

पुरान लोक-प्रसाधन आ बाजारसँ आबि रहल नव सामग्रीक सम्बन्ध भाषिक रूपान्तरणसँ जोड़ल जा सकैत अछि। मुदा विशिष्ट उत्पादक प्रवेश-काल प्रमाणित करबा लेल अन्य ऐतिहासिक स्रोत आवश्यक होयत; वर्तमान समीक्षा स्रोत-विहीन तिथि नहि जोड़ैत अछि।

एहि अध्यायक भावी अनुसन्धानमे शब्दक पदार्थ-वर्ग, बनबबाक विधि, प्रयोगकर्ताक समूह, अवसर, निषेध-नियम आ लोकगीतमे उपस्थितिक पृथक् विवरण उपयोगी अछि।

दशम अध्याय : ध्वनि-विचार

मूल ग्रन्थमे एहि अध्यायक आरम्भ मुद्रित पृष्ठ ३१० पर आ अगिला अध्यायसँ पहिने अन्तिम पृष्ठ ३१५ धरि अछि (विषय-सूचीक आधारपर)।

“ध्वनि-विचार” के समावेशसँ ई पोथी मात्र सांस्कृतिक शब्द-संग्रह नहि रहि भाषावैज्ञानिक अध्ययनक दाबी प्रस्तुत करैत अछि। वेश-प्रसाधनक शब्द समय आ क्षेत्र अनुसार उच्चारण-परिवर्तन अनुभव कऽ सकैत अछि।

भाषावैज्ञानिक परीक्षणमे मूलरूप, व्यवहृत उच्चारण, ध्वनि-स्थानान्तरण, स्वर-परिवर्तन, व्यञ्जनक सरलीकरण आ सम्पर्कजन्य रूपकें अलग करब अपेक्षित अछि। वर्तनीक भेद आ ध्वनिक भेद एक नहि : लिखित रूपक भिन्नताकें स्वतः उच्चारणक भिन्नता नहि मानबाक चाही।

शब्दक व्युत्पत्ति घोषित करबा लेल केवल रूप-साम्य पर्याप्त नहि। ऐतिहासिक मध्यवर्ती रूप, समान अर्थ आ स्पष्ट ध्वनि-नियम आवश्यक अछि। एहि कसौटीपर पुनः परीक्षण ग्रन्थक भाषावैज्ञानिक उपलब्धिक उपयोग बढ़ा सकैत अछि।

एहि अध्यायकें मूल्याङ्कन करबा समय उच्चारणक स्थान, वक्ताक पीढ़ी, सामाजिक परिवेश तथा लिखित साहित्यक रूढ़ वर्तनीक अलग-अलग अभिलेखन उपयोगी होयत।

एकादश अध्याय : शब्द-विचार

मूल ग्रन्थमे एहि अध्यायक आरम्भ मुद्रित पृष्ठ ३१६ पर आ अगिला अध्यायसँ पहिने अन्तिम पृष्ठ ३२३ धरि अछि (विषय-सूचीक आधारपर)।

शब्द-विचारक केन्द्र शब्दक निर्माण, रचना, वर्ग, अर्थ आ सम्बन्ध होइत अछि। एहि ग्रन्थक समग्र योजना देखलासँ एकटा विशेष प्रश्न उठैत अछि : कोन वस्तु-नाम स्थानीय मूलक अछि, कोन शब्द अन्य भाषिक परम्परासँ आबि बसल अछि, आ कोन शब्द बहुअर्थी बनल अछि?

एकहि वस्तु हेतु अनेक नाम, अथवा एकहि नामक अनेक वस्तु हेतु प्रयोग, शब्दावलीक व्यवहृत प्रकृतिक सूचक अछि। एहि परिस्थिति मे समानार्थकता, अर्थसङ्कोच, अर्थविस्तार आ संज्ञा-निर्माणक विश्लेषण मात्र शब्द-सामग्री बढ़ेबाक काज नहि, अर्थ-विज्ञानक अनुसन्धान सेहो अछि।

समालोचनात्मक रूपसँ प्रत्येक प्रविष्टिमे पद-परिचय, व्याकरणिक वर्ग, स्पष्ट अर्थ, उदाहरण, भेदक सीमा, वर्तमान प्रयोग आ स्रोत-समर्थन अनिवार्य न्यूनतम तत्त्व मानल जा सकैत अछि। ई प्रस्तावित कोशीय मानक अछि, मूल ग्रन्थक प्रत्येक प्रविष्टि एकर अनुपालन करैत अछि—एहन दावा नहि।

एहि अध्यायक प्रासंगिकता एकर क्षमता मे अछि जे लोकजीवनक वस्तुसभकेँ भाषाक अर्थतन्त्रसँ जोड़ि सकैत अछि। अन्य सामाजिक क्षेत्रक शब्दावलीसँ तुलना कएलापर मैथिली शब्दनिर्माणक सामान्य प्रवृत्ति स्पष्ट भऽ सकैत अछि।

द्वादश अध्याय : उपसर्ग आ प्रत्यय विचार

मूल ग्रन्थमे एहि अध्यायक आरम्भ मुद्रित पृष्ठ ३२४ पर आ अगिला अध्यायसँ पहिने अन्तिम पृष्ठ ३४० धरि अछि (विषय-सूचीक आधारपर)।

अन्तिम अध्याय शब्दनिर्माणक रूपात्मक साधनपर दृष्टि अनैत अछि। उपसर्ग आ प्रत्ययक सहारे नवानि शब्द बनबाक प्रक्रिया वेश-भूषा-सम्बन्धी पदक संरचनात्मक अध्ययनक उपयुक्त क्षेत्र अछि।

अर्थ-विश्लेषणमे देखबाक चाही जे कोनो रूप वास्तवमे उत्पादक प्रत्यय अछि कि पुरान शब्दक अभिन्न अंश। सम्पर्कभाषाक रूपकें मैथिली प्रत्यय मानबाक पूर्व स्वतंत्र उदाहरण, आवृत्ति आ ध्वनिगत अनुकूलनक प्रमाण चाही।

एहि अध्यायक मूल्यांकन लेल मूल शब्द, प्रत्यययुक्त रूप, पद-भेद, अर्थ-परिवर्तन आ प्रमाणित प्रयोगक समांतर प्रस्तुति लाभकारी अछि। एहि पद्धतिसँ केवल रूप-सूची नहि, बल्कि शब्द-निर्माणक सुसंगत सिद्धान्त उभरि सकैत अछि।

ग्रन्थक अनुक्रममे ध्वनि → शब्द → उपसर्ग-प्रत्ययक क्रम भाषा-विज्ञानक पाठकीय दृष्टिसँ अर्थवान अछि। एतय सांस्कृतिक कोश आ व्याकरणिक विवेचन एकहि अध्ययनमे प्रवेश करैत अछि।

उपसंहारक आलोचनात्मक अध्ययन (मुद्रित पृष्ठ ३४१ सँ)

मूल ग्रन्थमे “उपसंहार” पृथक् देल गेल अछि। सम्पूर्ण विषय-सूचीक क्रमकें ध्यानमे रखलासँ एहि शोधक बृहत्तर योगदान मैथिली साहित्य, लोकजीवनक वस्तु-संस्कृति आ भाषावैज्ञानिक शब्द-अध्ययनकें एक अनुसन्धान-क्षेत्रमे जोड़ब अछि।

एहि ग्रन्थकें केवल लुप्तप्राय नामक सूची मानब एकर सम्भावनाकें सीमित करब होयत। ई सांस्कृतिक सन्दर्भ सहित शब्दक परिभाषा, साहित्यसँ साक्ष्य-संग्रह आ रूप-विश्लेषण तीनू स्तरकें एकत्र करबाक प्रयत्नक रूपमे महत्त्वपूर्ण अछि। तदपि पाठ-सत्यापन, मानकीकृत उल्लेख-प्रणाली आ क्षेत्रवार उपयोगक चिह्नीकरण अलग विशद जाँचक विषय अछि।

परिशिष्टक अध्ययन

परिशिष्ट (क) : शब्द-सूची — मुद्रित पृष्ठ ३४५

विषय-सूचीक अनुसार मूल ग्रन्थक समापनमे ग्रन्थक समाप्तिक पश्चात् प्राप्त अतिरिक्त शब्दक सूची देल गेल अछि। ई तथ्य सम्पादकीय दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि : शब्द-संग्रह एक स्थिर पूर्णसूची नहि, शोध-समय आ क्षेत्रीय संवादक संग बढ़ैत रहबाक प्रक्रिया अछि। एहि शब्दसभक अन्तिम कोशमे पुनर्संयोजन हेतु रूप, अर्थ, प्रमाण आ उपयोग-क्षेत्र दर्ज करबाक चाही।

परिशिष्ट (ख) : सन्दर्भ ग्रन्थावली — मुद्रित पृष्ठ ३५१

सन्दर्भ-ग्रन्थावली ऐतिहासिक दावा, काव्य-उद्धरण, शब्दक व्युत्पत्ति आ समाज-सांस्कृतिक वर्णन जाँचबाक प्राथमिक साधन अछि। वर्तमान विवेचनमे मूल सूचीकेँ अक्षरशः उतारल नहि गेल अछि, तँ एतय कोनो अतिरिक्त ग्रन्थक नाम मूल लेखकपर आरोपित नहि कएल गेल अछि।

परिशिष्ट (ग) : अशुद्धि ग्रन्थक सूची — मुद्रित पृष्ठ ३५४

विषय-सूचीक तृतीय परिशिष्ट “अशुद्धि ग्रन्थक सूची” नामसँ अंकित अछि। ई शीर्षक मूल सूचीसँ पठित अछि; यथार्थ अभिप्राय वा प्रविष्टि-स्वरूपक विस्तारसँ पुष्टि बिनु एकरा सामान्य “शुद्धिपत्र” मानि बदलल नहि गेल अछि। एहि भेदक संरक्षण स्रोत-निष्ठ पाठसम्पादनक आवश्यक शर्त अछि।

वेश-सम्बन्धी शब्दक निकट-पाठ

वेशक शब्दावलीक एहि दू पृष्ठमे “पायजामा/पजामा” सन्दर्भमे ओकर निर्माण आ परिधानक विवरण, “मोहरी” रूपमे निचला भागक उल्लेख, तथा “साड़ी” आ “नुआ/लुगा” सम्बन्धी चर्चा देखाइत अछि। शब्दक रूपपर स्थानीय भाषिक प्रयोगक प्रभाव बुझबाक सम्भावना स्पष्ट होइत अछि।

“साड़ी”क प्रसंगमे वस्त्रक अगिला, पछिला, ऊपरक आ लम्बाइ-सम्बन्धी खण्डक विवेचन अछि। “आँचर” सेहो एहि सन्दर्भमे उपस्थित अछि। ई एक महत्त्वपूर्ण कोशीय पद्धति अछि : एकटा वस्तुक अन्तर्गत ओकर भाग-नाम, उपयोग-नाम आ सम्बन्धित क्रियाकेँ एक अर्थक्षेत्रमे पढ़ल जा सकैत अछि।

एहि पृष्ठक उदाहरणसँ भाषिक संरचनाक कम-सँ-कम चार स्तर स्पष्ट होइत अछि : (१) मुख्य वस्तुनाम, (२) वैकल्पिक स्थानीय रूप, (३) वस्तुक अंगक नाम, आ (४) धारण-विधिक क्रियात्मक वर्णन। एहि चार स्तरक पृथक् अनुक्रमणिका बनलासँ अध्ययनक खोज-योग्यता बढ़त।

समेकित आलोचनात्मक निष्कर्ष

1. ई पोथी मैथिल वस्त्र-संस्कृतिक अध्ययनकेँ शब्दसम्पदा आ साहित्यिक इतिहाससँ जोड़ैत अछि; एही कारण केवल नृवंशविज्ञान वा केवल शब्दकोशक संकीर्ण वर्गमे एकरा सीमित करब उचित नहि।

2. बारह अध्यायक क्रम व्यापक भारतीय पृष्ठभूमिसँ मैथिल विशिष्टता, ऐतिहासिक बदलाव, कालक्रमिक साहित्यिक प्रमाण, कोश-संग्रह आ भाषा-विश्लेषण धरि विस्तृत अछि।
3. वेश, आभूषण आ प्रसाधन तीनू समानार्थी क्षेत्र नहि अछि : वस्तुक उपयोग, शरीरसँ सम्बन्ध आ सामाजिक प्रतीकत्वक आधारपर स्पष्ट उपवर्ग जरूरी अछि।
4. मूल ग्रन्थक प्रत्यक्ष देखल शब्दसामग्रीमे स्थानीय रूपभेद आ वस्तु-अंगक नाम महत्त्वपूर्ण अछि; एहिसँ मैथिली कोश-लेखनक समृद्धि स्पष्ट होइत अछि।
5. काव्यक वस्त्र-वर्णनकेँ सामाजिक जनगणनाक निष्कर्षक रूपमे नहि पढ़बाक चाही। प्रत्येक साहित्यिक उदाहरणक विधा, प्रसंग आ पाठभेद जाँचल जाय।
6. ऐतिहासिक निरन्तरता, बाहरी प्रभाव, व्युत्पत्ति आ विशिष्ट समुदायमे उपयोग सन दावाक प्रमाण-मानक एकहि होयब जरूरी नहि; प्रत्येक प्रकारक दावाक अलग साक्ष्य-श्रेणी चाही।
7. आगाँक विद्वत् संस्करण लेल प्रत्येक प्रविष्टि संग मुद्रित पृष्ठ, उद्धरण, रूपान्तर, अर्थ, वस्तु-वर्ग, क्षेत्र, साहित्यिक काल आ स्रोत-सत्यापनक स्पष्ट चिह्न देल जाय।

समेकित उपसंहार

कमला चौधरीक साहित्यिक पाठ-विविधता एहि तीनू कृतिमे स्पष्ट होइत अछि। ‘मोनक पौती’मे परकाया-प्रवेश करैत अनुवादक भाषा आ अनुभवक बीच संवाद स्थापित करैत छथि; ‘समय-संकेत’मे कथाकारक दृष्टि समाजक असमानता, अन्तःसम्बन्ध आ निर्णायक नैतिकता पर केन्द्रित रहैत अछि; ‘मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली’मे सांस्कृतिक जीवनक वस्तुगत इतिहास शब्दक रूपमे सुरक्षित होइत अछि।

‘मोनक पौती’क शशितारा आ ‘समय-संकेत’क अनेक स्त्रीपात्र एकटा साझा प्रश्न उठबैत छथि —समाजक स्वीकृत भूमिका सँ बाहर व्यक्ति अपन इच्छा, अधिकार आ सम्मानकेँ केना सुरक्षित राखय? किन्तु पहिल कृति अनूदित उपन्यासिका अछि आ दोसर मौलिक कथा-संग्रह; दूनूक कथन-पद्धति आ लेखकीय अधिकारक अन्तरकेँ मिटाक समानान्तर रखब आलोचनात्मक भूल होयत।

वेश-भूषा-प्रसाधनक कोशीय अनुसन्धान एहिपर एक भिन्न दृष्टि खोलैत अछि। स्त्री-पुरुषक वस्त्र, आभूषण, श्रृंगार आ सामाजिक आचारक नाम केवल पदार्थक नाम नहि, इतिहास, हैसियत, अभिरुचि आ सम्बन्धक सूचक सेहो अछि। कथा आ अनुवादमे जे सांस्कृतिक शब्द सहज व्यवहारक रूपमे उपस्थित अछि, शब्दावली-ग्रन्थ ओहि शब्दक अर्थ-विकास आ परम्पराक अध्ययनक अवसर दैत अछि।

एहि तीनू दिशाकेँ जोड़ैत मैथिली भाषाक लोकजीवनसँ आत्मीयता, स्त्रीक व्यक्ति-सत्ता, सामाजिक व्यवहारक विविधता आ साहित्यिक शिल्पक सक्रियता कमला चौधरीक कृतित्वक प्रमुख विशेषता बनि उभरैत अछि। पाठक लेल ई ग्रन्थ अन्तिम फैसला सुनयबाक बदला विवेचनक एहन व्यवस्थित आधार प्रस्तुत करैत अछि, जतऽ कथा, अनुवाद आ भाषा-संस्कृतिक प्रश्न एक-दोसरकेँ आलोकित करैत अछि।

ग्रन्थसूची

क. प्राथमिक ग्रन्थ आ संस्करण

आशापूर्णा देवी। मोनक पौती। मूल बंगला कथाक मैथिली अनुवाद : कमला चौधरी।

बेरमा/निर्मली, बिहार : पल्लवी प्रकाशन, २०२२। ISBN 978-93-93135-12-4।

चौधरी, कमला। समय-संकेत। मैथिली कथा-संग्रह। २०१०। प्रकाशक : उपलब्ध ग्रन्थ-विवरणमे सुनिश्चित नहि।

चौधरी, कमला। मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली। २००८। प्रकाशक : उपलब्ध ग्रन्थ-विवरणमे सुनिश्चित नहि।

ख. अनुवाद-सिद्धान्त आ तुलनात्मक साहित्यक मुद्रित ग्रन्थ

Baker, Mona. In Other Words: A Coursebook on Translation. Second edition. London and New York: Routledge, 2011.

Bassnett, Susan. Translation Studies. Fourth edition. London and New York: Routledge, 2014.

Catford, J. C. A Linguistic Theory of Translation: An Essay in Applied Linguistics. London: Oxford University Press, 1965.

Munday, Jeremy. Introducing Translation Studies: Theories and Applications. Fourth edition. London and New York: Routledge, 2016.

Nida, Eugene A. *Toward a Science of Translating: With Special Reference to Principles and Procedures Involved in Bible Translating*. Leiden: E. J. Brill, 1964.

Nida, Eugene A., and Charles R. Taber. *The Theory and Practice of Translation*. Leiden: E. J. Brill, 1969.

Nord, Christiane. *Translating as a Purposeful Activity: Functionalist Approaches Explained*. Manchester: St. Jerome Publishing, 1997.

Toury, Gideon. *Descriptive Translation Studies and Beyond*. Amsterdam and Philadelphia: John Benjamins Publishing Company, 1995.

Venuti, Lawrence. *The Translator's Invisibility: A History of Translation*. London and New York: Routledge, 1995.

Niranjana, Tejaswini. *Siting Translation: History, Post-Structuralism, and the Colonial Context*. Berkeley: University of California Press, 1992.

Simon, Sherry. *Gender in Translation: Cultural Identity and the Politics of Transmission*. London and New York: Routledge, 1996.

ग. कथा-समालोचना आ कोश-विज्ञानक मुद्रित ग्रन्थ

Landau, Sidney I. *Dictionaries: The Art and Craft of Lexicography*. Second edition. Cambridge: Cambridge University Press, 2001.

Rimmon-Kenan, Shlomith. *Narrative Fiction: Contemporary Poetics*. Second edition. London: Routledge, 2002.

Zgusta, Ladislav. *Manual of Lexicography*. The Hague: Mouton, 1971.

घ. ग्रन्थसूचनात्मक टिप्पणी

‘मोनक पौती’क प्रकाशकीय परिचयमे उल्लिखित ‘Moner Jhanpi’ आ तुलनात्मक विवेचनमे आलेल ‘मोनार कौटो’ शीर्षकक मूल बंगला मुद्रित संस्करण, वर्ष आ प्रकाशकक परस्पर सम्बन्ध सुनिश्चित नहि अछि; ताहि लेल अपुष्ट बंगला संस्करणक पृथक् पुस्तक-प्रविष्टि बनाओल नहि गेल अछि। ‘समय-संकेत’ आ ‘मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली’क प्रकाशकक नाम पुष्टि बिना नहि जोड़ल गेल अछि।

१.११. गजेन्द्र ठाकुर — नित नवल ललिता झा

VIDEHA 451 • VIDEHA451 / PROSE 11 • सम्पूर्ण मूल पाठ

स्रोतक मूल शीर्षक, प्रकाशन-विवरण, विषय-सूची, अध्याय, तालिका, अन्तिम टिप्पणि आ सन्दर्भ पूर्ण रूपेँ समाविष्ट। मूल स्रोतमे छपल आन्तरिक पृष्ठाङ्क स्रोत-संस्करणक अछि।

मैथिली साहित्य / भाषिक-सांस्कृतिक समालोचना

नित नवल

ललिता झा

डॉ. ललिता झाक 'मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली'क

अध्यायवार समालोचनात्मक अनुशीलन

भोजनपरम्परा • साहित्य • शब्दार्थ • भाषाविज्ञान

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

२०२६

प्रकाशन-विवरण

नित नवल ललिता झा

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२६

सर्वाधिकार सुरक्षित। लेखकक लिखित अनुमतिक बिना एहि पुस्तकक कोनो अंशक पुनर्मुद्रण वा व्यावसायिक पुनर्प्रकाशन नहि कएल जाए। उद्धरण आ शैक्षिक उपयोग प्रचलित सन्दर्भ-परम्पराक अनुसार कएल जा सकैत अछि।

मुद्रण-विन्यास : ६ × ९ इञ्च

अध्ययनाधीन पोथी : डॉ. ललिता झा। मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली। प्रथम संस्करण, २०११।

कृतिक अध्ययन-सार

डॉ. ललिता झाक ‘मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली’ मैथिलीक भोजन-व्यवहारकें केवल व्यञ्जन वा पाक-विधिक सूची मानि नहि, भाषिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक आ ऐतिहासिक अध्ययनक पृथक क्षेत्र मानैत अछि। एकर प्रमुख अवदान ई अछि जे घरेलू व्यवहारमे जीवित अनेक शब्दक अर्थ मात्र नहि, ओकर वस्तु, आकार, प्रक्रिया, प्रयोग, प्रसङ्ग आ परिवर्तित रूपक व्याख्या देल गेल अछि। एहि कारण ई कृति शब्दकोष, लोकसंस्कृति-अध्ययन आ भाषा-विज्ञानक संगमपर अवस्थित अछि।

प्रस्तुत विवेचनमे पोथीक विषय-प्रवेश, बारहो अध्याय, उपसंहार आ दुनू परिशिष्ट अलग-अलग पढ़ि विचारल गेल अछि। पहिल तीन अध्याय भोजनक ऐतिहासिक-सामाजिक पृष्ठभूमि, चारिमसँ छठम अध्याय साहित्यिक साक्ष्य, सातमसँ नवम अध्याय वास्तविक लोक-शब्दसम्पदा आ अन्तिम तीन अध्याय ध्वनि, शब्दरचना तथा प्रत्यय-व्यवस्थाक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। ई विवेचन अध्यायवार प्रतिपाद्यक पुनर्संरचना करैत अछि; मूल पोथीक सम्पूर्ण शब्दसूचीक अनुलिपि नहि अछि।

ग्रन्थक सर्वाधिक मौलिक पक्ष उपकरण, आधार-सामग्री आ भोजनक कार्य-व्यापारक सूक्ष्म शब्दभेद अछि। ‘काँस/काँसा’, ‘पीढ़ी’, ‘सूप’, ‘अरबा/उसिना’, ‘खखरी’, ‘निरैठ’ आदि शब्दसँ स्पष्ट होइत अछि जे मैथिलीमे वस्तु, अवस्था, प्रयोजन आ क्रियाक आधारपर अर्थ-भेदक परम्परा बहुत सघन अछि। साहित्यिक अंशमे भोजनोपकरण, भोज्य-सामग्री, सामाजिक सम्बन्ध आ लोकोक्तिक इतिहासक सूत्र एकहि संग भेटैत अछि।

समालोचनात्मक निष्कर्ष ई अछि जे क्षेत्रीय खाद्य-शब्दावलीकें जीवित राखबाक लेल मूल उच्चारण, स्थानीय रूपान्तर, उपयोग-प्रसङ्ग, वक्ताक सामाजिक स्थिति आ वर्तमान प्रचलनक नूतन प्रमाण संकलित करब आवश्यक अछि। पोथीक महत्व एहि लेल सेहो अछि जे लेखिका

आधुनिकता आ औद्योगिकीकरणसँ अप्रचलित होइत घरेलू साधन एवं ओकर नामपर विशेष चिन्ता करैत छथि।

विवेचनक दृष्टि

कृतिक शब्दविवेचनकेँ तीन साक्ष्यक्षेत्रमे बुझल जा सकैत अछि—पुरातन आ आधुनिक साहित्य, प्रचलित घरेलू व्यवहार, आ ध्वनि—रूप—अर्थक भाषावैज्ञानिक सम्बन्ध। पुस्तकक अपन पृष्ठ-संकेत साहित्यिक उदाहरण आ शब्दक ऐतिहासिक सन्दर्भक संग पढ़बाक चाही। कोनो प्राचीन रचनामे खाद्य-पदार्थक नाम भेटब आ आधुनिक व्यञ्जनक ठीक ओहि रूपमे निरन्तरता सिद्ध होयब एक नहि अछि। एही कारण समालोचनामे ग्रन्थक प्रतिपादन, प्रमाणक सीमा आ आगाँक अनुसन्धानक सम्भावना अलग-अलग देखाओल गेल अछि।

कृतिक परिशिष्टसभक क्रमक सन्दर्भमे ध्यान देबाक तथ्य ई अछि जे रेखाचित्र परिशिष्ट—क (पृ. ३२७–३३१) मे आ अधीत ग्रन्थक सूची परिशिष्ट—ख (पृ. ३३२ सँ आगाँ) मे अछि; विषय-सूचीमे देखल क्रमभेदक अपेक्षा पुस्तकक वास्तविक अनुक्रम निर्णायक अछि।

विषय-प्रवेश: मूल अनुसन्धानक प्रश्न

विषय-प्रवेश (पृ. २७–३०) मे लेखिका शब्दकेँ भाषाक आधारभूत एकाइ मानि सामान्य व्यवहारक शब्द आ विशिष्ट-पारिभाषिक शब्दमे अन्तर करैत छथि। भोजनक विषयमे ‘विशिष्ट’ शब्दक अर्थ केवल बाह्य वैज्ञानिक शब्द नहि, गाम-घरमे प्रयोग होइत ओहन नाम अछि जकर अर्थ एक विशेष वस्तु, आकार, क्रिया, स्वाद वा अवसरक संग जुड़ल हो। एकै विषयक विविध शब्दप्रयोगक संकलन भाषिक समृद्धिक प्रमाण सेहो अछि आ सामाजिक जीवनक दस्तावेज सेहो।

एहि भूमिकामे शब्द-ग्रहण, अर्थ-परिवर्तन आ शब्द-लोपक प्रक्रिया प्रमुख प्रश्न अछि। जखन परिवर्तनशील सामाजिक जीवनमे नव उपकरण आ खाद्य-विन्यास प्रवेश करैत अछि, तखन पुरान नाम अप्रचलित भऽ सकैत अछि। एकर अर्थ ई नहि जे सभ नव रूप अनुचिते अछि; अनुसन्धेय तथ्य ई अछि जे कोन शब्द केहन सामाजिक-व्यवहारिक कारणसँ बदलल।

लेखिकाक आग्रह एही प्रक्रियाक बीच लोकभाषिक शब्दसँ प्राप्त सांस्कृतिक सूचना संचित करबाक अछि।

समालोचनात्मक दृष्टिसँ एहि प्रवेशक तीन मूल अनुसन्धान-प्रश्न उभरैत अछि: (१) कोन विशेष शब्दक कोन निश्चित प्रत्यक्ष सन्दर्भ अछि? (२) ओकर रूप, अर्थ आ प्रयोग कालान्तरमे कोना बदलैत अछि? (३) साहित्यिक प्रमाण आ वर्तमान लोकप्रयोगक बीच कतय साम्य आ कतय अन्तर अछि? एहि तीनू प्रश्नकेँ समस्त बारहो अध्यायपर लागू कएल जा सकैत अछि।

प्रथम अध्याय। भारतीय भोजनक पारम्परिक स्वरूप

पुस्तकमे सम्बद्ध पृष्ठ: ३१-३९।

पर्यावरण आ भोजनक आधार

लेखिका भौगोलिक पर्यावरणकेँ भारतीय भोजनक प्रथमतः निर्धारक तत्त्व मानैत छथि। वनस्पति, पशुधन, नदी-जलाशय, समतल खेत आ पठारी भूभागक अन्तर खाद्य-संसाधनमे विविधता अनैत अछि। मुदा भोजन केवल प्राकृतिक उपलब्धताक प्रश्न नहि; सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि सेहो 'खाद्य' आ 'अखाद्य'क वर्गीकरण बनबैत अछि। अतः एहि अध्यायक आरम्भसँ भौगोलिक कारण आ मानवीय मूल्यव्यवस्थाकेँ एकत्र पढ़ब आवश्यक अछि।

कालक्रमक स्रोत आ तकर अर्थ

सिन्धु सभ्यतासँ लऽ वैदिक साहित्य, महाकाव्य, पुराण, आयुर्वेद, संस्कृत काव्य-नाटक आ अनुवर्ती राजनीतिक-सांस्कृतिक सम्पर्क धरि लेखिका भोजन-पदार्थ, पान-व्यवहार आ विधि-निषेधक उल्लेख संकलित करैत छथि। पृ. ३२-३८ मे जौ, गहूँ, चाउर, तिल, मटर, दूध-दही, घृत, मधु, गुड़, मांस-माछ, फल, लवण आदिक चर्चा कालविशेषक साहित्यिक साक्ष्यसँ जोड़ल गेल अछि। भिन्न युगक साहित्यस्रोतकेँ एकरूपी भोजन-व्यवस्थाक प्रमाण मानि लेब उचित नहि; अध्यायक मूल्य कालक्रममे परिवर्तनक संकेत देबामे अछि।

नाम आ पदार्थक अन्तर

'करम्भ', 'अपूप', 'पुरोडाश', 'धान', 'तण्डुल' आदिक उल्लेख जखन पुरान ग्रन्थमे भेटैत अछि, तखन ओ नामक ऐतिहासिक उपस्थिति सिद्ध करैत अछि। मुदा ओही नामसँ आइ बननिहार

व्यञ्जन निश्चय एक्के सामग्री वा पद्धतिसँ बनैत छल, एकर अतिरिक्त प्रमाण चाही। एहि सावधानीक संग ई अध्याय मैथिल भोजनक व्यापक भारतीय पृष्ठभूमि तैयार करैत अछि।

विधि-निषेध आ शक्ति-संबन्ध

आहारक सन्दर्भमे शुद्ध-अशुद्ध, अनुमत-वर्जित, मांसाहार-निरामिषता, सामाजिक श्रेणी आ धार्मिक मान्यता सभ निरन्तर बदलबाक रूपमे प्रस्तुत अछि। एहि विवरणकें इतिहासक तत्कालीन दृष्टिकोण मानब; आधुनिक स्वास्थ्य-विज्ञान अथवा सामाजिक नैतिकताक शाश्वत नियम मानि नहि लयब।

पाठाधारित शब्द-साक्ष्य

मूल शब्द अथवा शब्दसमूह	अर्थ आ सन्दर्भ
जौ, चाउर, तिल, मटर	अनाज आ कृषि-आधारित आहारक ऐतिहासिक आधार (पृ. ३२)।
करम्भ, अपूप, पुरोडाश	वैदिक साहित्यिक भोजन-नामक साक्ष्य (पृ. ३२)।
तण्डुल, साठी धान	अन्नक रूप आ कालविशेषक उल्लेख (पृ. ३७)।

आलोचनात्मक परीक्षण

एहि अध्यायमे पुरान साहित्यसँ पदार्थक नाम ग्रहण करबाक पद्धति उपयोगी अछि, मुदा साहित्यिक पाठक सामाजिक प्रतिनिधित्व सीमित होइत अछि। उच्चवर्गीय ग्रन्थ, धर्मशास्त्र वा काव्यमे दर्ज खाद्य-व्यवहारकें सम्पूर्ण जनसमुदायक व्यावहारिक भोजन-सूची नहि मानल जा सकैछ। कालक्रमक निष्कर्ष लेल पुरातत्त्व, वनस्पति-अवशेष आ स्थानीय इतिहासक स्वतंत्र मिलान भविष्यक काज अछि।

द्वितीय अध्याय। मैथिल भोजनक परम्परा

पुस्तकमे सम्बद्ध पृष्ठ: ४०–५३।

धानप्रधान खाद्य-संरचना

मिथिलाक धानप्रधान कृषि आ स्थानीय जलवायुकेँ लेखिका भोजनक विशेषता संग जोड़ैत छथि। भात आ चूड़ाक व्यापक व्यवहार, चूड़ा-दहीक प्रतिष्ठा, राहड़िक दालि, उड़ीद-आधारित खिचड़ि, मडुआ-मकड़क रोटी आदि उदाहरणसँ भोजनक सामाजिक वितरण आ उपलब्धताक अन्तर स्पष्ट होइत अछि (पृ. ४०-४२)। ‘प्रधान’ कहबकेँ ‘एकमात्र’ नहि बुझबाक चाही; ग्रन्थमे अनेक अन्न, दलिहन, साग-सब्जी, माछ आ फल वर्णित अछि।

दैनिक भोजन आ सांस्कृतिक मूल्य

माँड़-भात, चूड़ा, भूजा, साग, अचार, दालि आ व्यञ्जन घरेलू रोजमर्राक भोजनक अङ्ग अछि। नदी, पोखरि आ जलसम्पदाक सन्दर्भमे माछक प्रसिद्धि सेहो देखाओल गेल अछि। भोजनकेँ केवल पदार्थक एकत्रीकरण मानलासँ ओकर सामाजिक अर्थ छूटि जाइत अछि; केकरा कोन अवसरपर परसल गेल, कोन खाद्य सम्मानक मानल गेल, आ केहेन घरमे कोन भोजन उपलब्ध छल, एतय सांस्कृतिक सूचना निहित अछि।

पावनि, व्रत, संस्कार आ सहभोज

लेखिका विवाह, श्राद्ध, उपनयन, अतिथिसत्कार आ सामूहिक भोजनक प्रसङ्गक संग भोजन-व्यवस्था देखबैत छथि। सतुआनि, जुड़शीतल, रवि-शनि, कोजागरा आदि पर्वमे विशिष्ट अन्न, बासी भात, सातु, बड़ी, दालिपूड़ी, मखान-पान आदिक सन्दर्भ भेटैत अछि (पृ. ४९-५२)। एकरा ‘अनुष्ठान-सूचक शब्दावली’क रूपमे पढ़लासँ भोजन-संबन्धी नामक सामाजिक कार्य स्पष्ट होइत अछि।

आचार आ सामाजिक वर्गीकरण

पृ. ४३-४९ मे धर्मग्रन्थीय खाद्य-वर्जना, भोज्य-स्पर्श, पात्र, परान्न, भोजनकाल, जाति-वर्ण सम्बन्धी नियमक विवेचन अछि। एहन नियम ग्रन्थीय परम्पराक ऐतिहासिक तथ्य अछि; वर्तमान समाजक लेल निर्देश नहि। एहि अन्तरकेँ स्पष्ट राखलासँ अध्यायक समाजशास्त्रीय उपयोगिता बढ़ैत अछि।

पाठाधारित शब्द-साक्ष्य

मूल शब्द अथवा शब्दसमूह	अर्थ आ सन्दर्भ
भात, चूड़ा, माँड़	धानक अनेक उपयोग; एक पदार्थसँ बहुविध नाम (पृ. ४०-४१)।
राहड़ि, उड़ीद, खेसारी	दलिहनक नाम आ भोजन-प्रयोगमे अन्तर (पृ. ४०)।
सतुआनि, जुड़शीतल	ऋतु-चक्र आ खाद्य-अनुष्ठानक सम्बन्ध (पृ. ५०)।
मखान, पान	सांस्कृतिक आदान-प्रदान आ कोजागराक प्रसङ्ग (पृ. ५२)।

आलोचनात्मक परीक्षण

ग्रन्थमे कतिपय खाद्यक ‘शुद्ध’, ‘अशुद्ध’ आ सामाजिक वर्ग-विशेषसँ सम्बन्धित मूल्याङ्कन परम्परागत मान्यताक रूपमे दर्ज अछि। एहन कथनकेँ लोकविश्वासक विवरण मानब उचित, वस्तुनिष्ठ पोषणात्मक वा नैतिक निर्णय नहि। समकालीन क्षेत्रीय सर्वेक्षणसँ कोन परम्परा एखन जीवित अछि से स्पष्ट होयत।

तृतीय अध्याय। मैथिल रुचिपर प्रभाव ओ तज्जन्य परिवर्तन

पुस्तकमे सम्बद्ध पृष्ठ: ५४-५८।

परिवर्तनक त्रिस्तरीय व्याख्या

अध्यायक केन्द्रबिन्दु उपकरण, आधार-सामग्री आ भोजन-व्यापार—ई तीन क्षेत्र अछि। लेखिकाक मतमे औद्योगिक विकास, सांस्कृतिक सम्पर्क आ यान्त्रिकीकरण पुरान भोजन-विन्यासकेँ रूपान्तरित करैत अछि। पृ. ५४ पर उक्खरि-मूसर, ढेकी-जाँत, माटिक कोहा, घैल आ पीढ़ीक बरक्स मिल, टीन-ड्रम, डेकची, प्रेशरकुकर, जग, प्लेट आ कुर्सी-टेबलक उल्लेख भेटैत अछि।

शब्द-प्रतिस्थापनक तन्त्र

वस्तुक प्रयोग घटला पर ओकर विशिष्ट नामो घटैत अछि। नव साधन प्रवेश कएलाक बाद नओ शब्द—कखनो आन भाषासँ उधार लेल—लोकभाषामे पैसैत अछि। एहि परिवर्तनकेँ

‘शब्दलोप’ मात्र मानब पर्याप्त नहि; सामग्री, निर्माण-कौशल, ईंधन, पाक-गति, घरेलू श्रम आ प्रतिष्ठाक बदलैत सम्बन्ध सेहो देखब चाही।

खाद्य-पदार्थ आ स्वादक पुनर्रचना

अध्यायमे भक्ष्य-अभक्ष्य विचारमे लचक, नव खाद्यक आगमन, नगर-जीवन आ रुचिगत बदलावक संकेत अछि। जखन परिवार, बाजार आ रोजगारक संरचना बदलैत अछि, भोजन-शब्दक सामाजिक प्रतिष्ठा सेहो बदलैत अछि। एहि रूपमे ई अध्याय सातमसँ नवम अध्यायक लोक-कोश निर्माणक ऐतिहासिक औचित्य प्रदान करैत अछि।

पाठाधारित शब्द-साक्ष्य

मूल शब्द अथवा शब्दसमूह	अर्थ आ सन्दर्भ
उक्खरि-मूसर → मिल	प्रक्रियाक यान्त्रिकीकरण आ पुरान क्रियाशब्दक संकट।
माटिक कोहा → डेकची	पात्रक पदार्थ आ नामक बदलाव।
पीढ़ी → कुर्सी-टेबल	भोजनकालक आसन-व्यवहारमे परिवर्तन।
चूल्हा → स्टोव/विद्युत् चूल्हा	ऊर्जा-साधन आ पाक-तकनीकक परिवर्तन।

आलोचनात्मक परीक्षण

परिवर्तनक एकमात्र दिशा पुरान सँ नओ नहि होइछ; अनेक ग्रामीण आ नगरीय घरमे पुरान आ नओ उपकरण संगहि रहैत अछि। एहि कारणेँ भावी अध्ययनमे प्रतिस्थापन, सहअस्तित्व आ पुनरुत्थान—तीनू स्थिति दर्ज करब अपेक्षित अछि। मूल ग्रन्थ २०११क काल-चित्र दैत अछि; ओकरा आजुक सर्वत्र लागू वर्णन नहि मानल जाए।

चतुर्थ अध्याय। प्राचीन मैथिली साहित्यमे वर्णित भोजन-विन्यास

पुस्तकमे सम्बद्ध पृष्ठ: ५९–७१।

भाषाक आरम्भिक साहित्यिक प्रमाण

अध्यायमे चर्यापद, सिद्धाचार्यक पद, प्राकृत-अपभ्रंश सामग्री आ ज्योतिरीश्वरक ‘वर्णरत्नाकर’ तथा ‘धूर्तसमागम’क उल्लेख अछि। पृ. ५९ पर माँड़, भात आ हाँड़ीक प्रसङ्ग द्वारा सिद्ध कएल गेल अछि जे भोजनोपयोगी शब्द केवल आधुनिक व्यवहारक नहि, प्रारम्भिक साहित्यिक स्रोतक सेहो अङ्ग रहल अछि। साहित्यिक भाषाक निर्धारण सम्बन्धी प्रश्न जटिल अछि; तथापि पदमे उल्लिखित सामग्री भाषिक इतिहासक उपयोगी संकेत दैत अछि।

वर्णरत्नाकरक कोशीय महत्त्व

‘वर्णरत्नाकर’क जेओनार-वर्णन भोजन-सामग्री, पकमान, पात्र आ भोजक व्यवस्थाक सघन पाठ प्रस्तुत करैत अछि (पृ. ६२–६७)। लेखिका अनेक दुर्लभ पदक अर्थ तत्कालीन पाठ आ आधुनिक मैथिली लोकप्रयोगक आधारपर बूझबाक प्रयत्न करैत छथि। एहि ठाम शब्दकोशकारिता आ पाठ-सम्पादनक परस्पर आश्रय देखल जा सकैत अछि।

अर्थसमीक्षा आ सावधानी

ककरो पुरान शब्दकेँ आधुनिक समानध्वनि शब्दसँ जोड़ब युक्तिसंगत परिकल्पना भऽ सकैत अछि, अनिवार्यतः प्रमाणित व्युत्पत्ति नहि। जेना ‘अमृतकुण्डी’ आ ‘अमिरती’क सम्भावित सम्बन्धक चर्चा पृ. ६६ मे अछि; एकरा सम्भावना रूपे राखब उचित। अर्थ-निर्णयमे पाठभेद, सन्दर्भ, वस्तुक प्रकृति आ बीचक ऐतिहासिक रूपक अपेक्षा बनैत अछि।

प्राचीन भोजनक सामाजिक दृश्य

माँड़, चूड़ा, दही, दुग्ध, मिष्ठान्न, पान, अतिथि-भोज आ भोजक सजावटसँ जुड़ल पद भाषा आ संस्कृति दुनूक इतिहास उजागर करैत अछि। भोजन-विन्यास एतऽ दृश्यात्मक साहित्यिक अलङ्कार सेहो अछि आ समाजक व्यवहारिक जानकारीक स्रोत सेहो।

पाठाधारित शब्द-साक्ष्य

मूल शब्द अथवा शब्दसमूह	अर्थ आ सन्दर्भ
माँड़, भात, हाँड़ी	सिद्ध-साहित्यिक आरम्भिक खाद्य-शब्द (पृ. ५९)।
वर्णरत्नाकरक जेओनार-वर्णन	एकसंग अनेक भोजनशब्दक साहित्यिक संग्रह (पृ. ६२–६७)।

मूल शब्द अथवा शब्दसमूह

अर्थ आ सन्दर्भ

अमृतकुण्डी/अमिरती

सम्भावित अर्थ-विकास आ व्युत्पत्ति-विवेचन (पृ. ६६)।

आलोचनात्मक परीक्षण

प्राचीन साहित्यक रूपक अथवा अतिशयोक्तिपूर्ण भोज-वर्णनकेँ यथार्थ सामाजिक औसतक प्रत्यक्ष प्रमाण नहि मानब। पद-साक्ष्यक प्रामाणिक संस्करण, पाण्डुलिपि-पाठ आ समकालीन स्रोतसँ मिलान कएलासँ अध्यायक ऐतिहासिक निष्कर्ष अधिक दृढ़ भऽ सकैत अछि।

पञ्चम अध्याय। मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे वर्णित भोजन-विन्यास

पुस्तकमे सम्बद्ध पृष्ठ: ७२–७९।

विद्यापति-परम्परा आ भोजन-शब्द

लेखिका मध्यकालक केन्द्रीय रचनाकार विद्यापति आ हुनक परम्परासँ भोजन-विषयक शब्दक अन्वेषण करैत छथि। ‘कीर्तिलता’, ‘कीर्तिपताका’ आ पदावलीमे भोजन केवल भूखक समाधान नहि, आतिथ्य, प्रतिष्ठा, स्नेह, विरह आ सामाजिक नीतिक प्रतिमान बनैत अछि (पृ. ७२–७७)। ‘सुभोअन’ जेकाँ पद प्रारम्भिक शब्दरूप आ अर्थक बीचक सम्बन्ध देखबैत अछि।

भोजनेतर प्रसङ्गमे भोजनक अर्थ

रूपक, कागकेँ खीर-खाँड देबाक कामना, अतिथिक भोजन, गोधनसँ उत्पादित दही-घृत आ कृषिजन्य अन्नक उल्लेखसँ भोजन-विन्यासक व्यापक साहित्यिक स्थान स्पष्ट होइत अछि। एहि उदाहरणमे ‘खीर’ वा ‘घृत’ पदार्थक नाम अछि, तँ भोजन देब अथवा अपमानसँ भोजन लेब सामाजिक सम्बन्धक सूचक।

साहित्यिक निरन्तरता आ स्थानीयता

विद्यापतिक भाषा मे तत्सम, तद्भव आ देशज स्वरक सहअस्तित्व देखल जा सकैत अछि। मध्यकालीन नामक आधुनिक लोकभाषिक रूपसँ मिलान समय-सीमाक भीतर सम्भव अछि, मुदा सभ रूपक सीधा उत्तराधिकार सिद्ध करबाक लेल बीचक साक्ष्य जरूरी अछि।

पाठाधारित शब्द-साक्ष्य

मूल शब्द अथवा शब्दसमूह	अर्थ आ सन्दर्भ
सुभोअन	मध्यकालीन साहित्यक भोजनवाची रूप (पृ. ७२)।
खीर-खाँड	मधुर भोजन आ भावात्मक प्रसङ्ग (पृ. ७५)।
दही-घृतक भार	आतिथ्य आ भेंट-विनिमयक संकेत (पृ. ७७)।
राहड़ि, मकड़	कृषिजन्य खाद्यक साहित्यिक परिप्रेक्ष्य (पृ. ७८)।

आलोचनात्मक परीक्षण

ई अध्याय साहित्यिक शब्दक प्रमाणक दृष्टिँ महत्त्वपूर्ण अछि; मुदा भिन्न हस्तलिखित पाठ, कवि-नामक प्रश्न आ भाषाक युगविभाजनसँ जुड़ल विद्वत् मतभेद स्वतन्त्र समीक्षाक विषय अछि। ग्रन्थक उद्धृत रूपकें यथार्थ पोथी-संस्करणसँ मिलान कएलासँ अधिक निष्ठावान निष्कर्ष भेटत।

षष्ठ अध्याय। आधुनिक मैथिली साहित्यमे वर्णित भोजन-विन्यास

पुस्तकमे सम्बद्ध पृष्ठ: ८०—१६४।

दीर्घतम अध्यायक विस्तार

ई ग्रन्थक सर्वाधिक विस्तृत साहित्यिक अध्याय अछि। लेखिका आधुनिक साहित्यक पाँच प्रमुख विधा—महाकाव्य, मुक्तक काव्य, कथा-उपन्यास, नाटक आ निबन्ध—मे भोजन-संबन्धी पद खोजैत छथि। एहि साहित्यिक विवेचनक संग लोकगीत, फकड़ा, पहेली आ लोकोक्तिक विशद संकलन सेहो जुड़ल अछि। लेखक-रचनाक पद्धतिगत विस्तारक कारणेँ एकरा केवल व्यञ्जन-वर्णनक संग्रह कहब अधूरा होयत।

महाकाव्य आ मुक्तक काव्य

पृ. ८० सँ महाकाव्यमे वर्णित भोजन-विन्यास प्रारम्भ होइत अछि; आधुनिक काव्य मे भोज, अतिथि, फल, माछ, दही, घृत, पान आ सामाजिक उत्सवक प्रसङ्ग खोजल गेल अछि। पृ. ९० सँ

मुक्तक-काव्यक विवेचनमे भोजन नैतिकता, अकाल, हास्य, लोकजीवन, ऋतु आ रूपकक संग प्रवेश करैत अछि। अलग-अलग कविताक खाद्य-पदकें साहित्यिक भावसँ काटि मात्र कोषीय प्रमाण मानलासँ काव्यक अर्थ संकुचित भऽ जाइत अछि।

कथा-उपन्यास, नाटक आ निबन्ध

पृ. १०६ सँ कथा-उपन्यासमे गृहस्थ-जीवन, अभाव, पाक-कौशल, अतिथिसत्कार, स्वाद आ पात्रक सामाजिक स्थिति भोजन-भाषाकें अर्थ दैत अछि। नाट्यक आरम्भिक प्रसङ्ग पृ. १३१क लगपास अछि; संवादक रूपमे भोजन-नामक जीवित उच्चारण आ रोजमर्राक शैलीक प्रमाण भेटैत अछि। निबन्ध-विवेचन पृ. १३८ सँ आगाँ माछ, आम, स्थानीय रुचि आ व्यञ्जन-स्मृतिसँ सांस्कृतिक चिन्तनक सम्बन्ध देखबैत अछि।

लोकसाहित्यक पृथक महत्त्व

पृ. १४१-१४९ धरि लोकगीत, बरहमासा, डहकन, भोजन-गीत, फकड़ा-पहेलीक प्रसङ्ग अछि। विवाह-भोजमे समधी, बरियाती आ भोजक आयोजकपर रचल डहकन भोजनक सामाजिक नाटकीयता देखबैत अछि। लोकगीतमे पीढ़ीपर बैसाकऽ भोजन परोसब, दालि-भात, दही-घृत, तरकारी आ पानक क्रम संस्कारपरक सामुदायिक व्यवहारक स्मृति राखैत अछि।

दू सयसँ अधिक लोकोक्ति

पृ. १५० सँ लोकोक्तिक क्रमबद्ध संकलन प्रारम्भ होइत अछि आ पृ. १५८ मे क्रमांक २०० सँ आगाँक सामग्री भेटैत अछि। ग्रन्थक प्रास्ताविक टिप्पणीमे सेहो दू सयसँ अधिक भोजन-संबन्धी लोकोक्तिक उल्लेख अछि। ई संग्रह भोजनक अर्थ 'खा-पि लेब' सँ आगाँ बुद्धि, लोभ, श्रम, अतिभोजन, निर्धनता, सामाजिक प्रतिष्ठा, मूल्याङ्कन आ व्यवहारक रूपक धरि विस्तार करैत अछि। लोकोक्तिमे भोजन-वाचक शब्द अनेक बेर अभिधासँ लक्षणा आ व्यञ्जना दिस बढैत अछि।

साहित्य आ लोकव्यवहारक मिलान

आधुनिक साहित्यिक प्रयोगक एतेक व्यापक संकलन देखबैत अछि जे घरेलू शब्द प्रादेशिक ज्ञानक वैध साहित्यिक साधन अछि। तथापि साहित्यक पाठ, पात्रक बोली आ वास्तविक

सामाजिक सर्वेक्षण स्वतन्त्र प्रमाण अछि। कृति एहि प्रमाणसभक संवादक मजबूत आरम्भिक सामग्री प्रस्तुत करैत अछि।

पाठाधारित शब्द-साक्ष्य

मूल शब्द अथवा शब्दसमूह	अर्थ आ सन्दर्भ
माछक विविध नाम	काव्यमे प्रादेशिक जल-जीवनक रूपांकन (पृ. १०)।
तीमन, नोन, तेल	घरेलू संवादक भोजनवाची अर्थ (पृ. १०६)।
डहकन	सामुदायिक भोजक गीतात्मक परम्परा (पृ. १४६)।
पीढ़ी, दालि-भात, पान	भोजन परोसबाक सांस्कृतिक क्रम (पृ. १४७–१४८)।
लोकोक्तिक क्रमांक २०० सँ आगाँ	सुविस्तृत लोकोक्ति-संग्रहक प्रमाण (पृ. १५८)।

आलोचनात्मक परीक्षण

आधुनिक साहित्यक एकेक कालखण्ड आ विधामे उद्धृत उदाहरणक संख्या बराबर नहि होयब सम्भव अछि। कोषीय निष्कर्ष लेल विद्या, लेखक, कृति, प्रकाशन-वर्ष आ पृष्ठ-सन्दर्भक इलेक्ट्रॉनिक निर्देशिका बनाओल जाय, जाहिसँ पुनरावृत्ति आ वास्तविक प्रयोग-आवृत्तिक परीक्षण सम्भव होय। लोकोक्तिक नूतन क्षेत्रीय सर्वेक्षण सँ अर्थ आ प्रयोगक वर्तमान स्थिति सेहो जाँचल जाए।

सप्तम अध्याय। आधुनिक मैथिली भाषामे भोजनक उपकरण सम्बन्धी शब्दावली

पुस्तकमे सम्बद्ध पृष्ठ: १६५–१९६।

वर्गीकरणक मूल सिद्धान्त

एहि अध्यायमे उपकरणकें ओकर मूल निर्माण-सामग्रीक आधारपर धातूपकरण, प्रस्तरपकरण, मृत्तिकोपकरण, काष्ठोपकरण, वंशोपकरण आ तृणोपकरण छह वर्गमे बाँटल गेल अछि (पृ. १६५)। एकर संग लेखिका साधनक आकार, अंश, उपयोग, सामग्री, बनावट आ स्थानीय नामक

भेद विस्तारसँ देइत छथि। एहि पद्धतिसँ शब्दार्थ परिभाषा वस्तुक प्रत्यक्ष व्यवहारसँ जुड़ैत अछि।

धातु आ मिश्रधातुक नाम

धातुक वर्गमे ताम/तामा, पित्तर/पित्तरि, काँस/काँसा आ कंसकूट आदि धातु-सम्बद्ध शब्द (पृ. १६५-१७४) केवल वस्तुक नहि, ओकर भौतिक गुण आ निर्माण-कौशलक परिचायक अछि। ‘बासन’ सामान्य वर्गवाची शब्द अछि, जखन विशेष उपकरण-नाम पात्रक आकार वा कार्य सूचित करैत अछि। एक वस्तुक अनेक नाम क्षेत्रीय, आकारगत अथवा कार्यगत भेद सेहो होयबाक सम्भावना रखैत अछि।

चूल्हा आ ईंधनक शब्दलोक

पृ. १७५-१७९क आसपास चूल्हा, ओकर रचना, जारन, आगिक स्थिति, राख, पाक-क्रिया आदि शब्दक सम्बन्ध वर्णित अछि। एहन पदकेँ एक-दोसरसँ अलग सूचीमे राखलासँ ओहि विशेष तकनीकक सम्पूर्ण रूप स्पष्ट नहि होइत; एकर जाल-रूप विश्लेषण चाही: ईंधन → चूल्हाक संरचना → आगि धराबब → ताप-नियन्त्रण → भोजन पकब → अवशेष।

माटि, काठ, बाँस आ तृण

माटिक कोहा, हाँड़ी, घैल, कठौत, काठक पीढ़ी, ढेकी, बेलन, बाँसक सूप-डगरा आ अन्य पात्रक व्याख्या अध्यायक अंतिम भागमे अछि। पृ. १८९ पर पीढ़ीक भिन्न उच्चारण आ आकारगत रूपभेदक परिचय महत्वपूर्ण अछि। पृ. १९२-१९५ मे बाँस एवं तृणसँ बनल पात्र, सूप, मउनी, संग्रहण-साधन आदि सांस्कृतिक कारीगरीक संकेत अछि।

शब्दार्थ-संकलनक मानक पद्धति

एहि अध्यायक एकेक शब्दक संग सामग्री, स्थानीय नाम, माप-आकृति, निर्माणकर्ता, उपयोग, क्रिया, अनुष्ठानिक अवसर आ वर्तमान प्रचलनक क्षेत्र दर्ज करब सम्भव अछि। एहन प्रविष्टि सामान्य पर्यायवाची-सूची सँ बेसी जीवित ‘एथ्नोग्राफिक शब्दकोश’क स्वरूप लेब।

पाठाधारित शब्द-साक्ष्य

मूल शब्द अथवा शब्दसमूह

अर्थ आ सन्दर्भ

ताम/तामा, पित्तर, काँस

धातु आ मिश्रधातुक स्थानीय शब्द (पृ. १६५)।

मूल शब्द अथवा शब्दसमूह	अर्थ आ सन्दर्भ
चूल्हा, जारन, राख/छाउर	ईंधन-व्यवहारक परस्पर सम्बद्ध शब्द (पृ. १७५-१७९)।
कोहा, घैल	मृत्तिकापात्रक रूप ओ उपयोग (पृ. १८१-१८३)।
पीढ़ी/पिरही/बैसकी	आसनक ध्वन्यात्मक आ प्रयोगगत भेद (पृ. १८९)।
सूप, डगरा, मउनी	बाँस/तृण-आधारित कारीगरी आ वस्तुनाम (पृ. १९१-१९५)।

आलोचनात्मक परीक्षण

एहि अध्यायक शब्दार्थ समझबाक लेल मूल पोथीक परिशिष्ट—क मे देल रेखाचित्र देखब उपयोगी अछि। तथापि रेखाचित्रक संख्या सीमित अछि। प्रत्येक उपकरणक उच्च-गुणवत्तायुक्त चित्र, स्थान-विशेषक नाम, मापन आ स्थानीय कारीगरक साक्षात्कार सहित डिजिटल अभिलेख बनेनाइ आगामी महत्त्वपूर्ण कार्य होयत।

अष्टम अध्याय। भोजनक आधार-सामग्री सम्बन्धी शब्दावली

पुस्तकमे सम्बद्ध पृष्ठ: १९७-२४६।

तीन व्यापक अर्थ-क्षेत्र

लेखिका भोजनक आधार-सामग्रीकेँ ‘मूल’, ‘आनुषंगिक’ आ ‘विशेष’ वर्गमे राखैत छथि (पृ. १९७)। मूलमे सामान्य खाद्यान्न आ स्थानीय रूपसँ बहुत प्रयुक्त कन्द-मूल सेहो, आनुषंगिकमे भोजनकेँ पूरा करनिहार व्यञ्जन-सामग्री, माछ-मांस, मसल्ला आदि, आ विशेष वर्गमे फल, दुग्ध, मधु, मिष्ठान्न, पान तथा अन्य अवसरविशेषक सामग्रीक चर्चा अछि। ई वर्गीकरण भोज्य पदार्थक रासायनिक अथवा पोषण-विज्ञानपर आधारित वर्ग नहि; लोकव्यवहारक उपयोगितापर आधारित वर्ग अछि।

अन्न, धान आ दलिहनक सूक्ष्म भेद

पृ. १९८–२०२क अन्नविषयक अंशमे फसील, बीहन, खैहन, धानक प्रभेद, मकड़क बालि, दाना, दलिहनक आकृति आ उपयोग आदि शब्द अछि। एक वस्तुक जीवनचक्रमे बीआ, गाछ, फसील, संग्रहित अन्न आ खाद्य-रूप अलग-अलग नाम ग्रहण करैत अछि। एहि कारण कोषकार लेल कृषि-चरण आ पाक-चरणकें जोड़ब जरूरी अछि।

कन्द-मूल, साग आ स्थानीय पारिस्थितिकी

ओल, अल्हुआ, सुथनी, सारुख, चिचोढ़ी आदि शब्द स्थानीय माटि, मौसम, अभावकाल आ घरेलू पाक-कौशलक जानकारी दैत अछि (पृ. २०२–२०८)। एहू प्रकारक साग ओ तरकारीक अनेक नाम भोजनक जैव-विविधता रक्षणक सन्दर्भमे महत्त्वपूर्ण अछि। एकहि प्रजातिक स्थानीय नामभेदक वैज्ञानिक वनस्पति-नामसँ मिलान एहि ग्रन्थमे सर्वत्र उपलब्ध नहि; ई भावी शोधक विषय अछि।

माछ-मांस आ जल-सम्पदा

पृ. २०९–२१९ मे माछक रूप, आकार, देहक अङ्ग, स्वाद, भिन्न जातिक नाम आदि विशेषरूपे समृद्ध रूपमे भेटैत अछि। माछक नाम केवल जीवविज्ञानक पद नहि, पकाएबाक उपयोग, ताजगी, गन्ध, उपलब्धताक मौसम आ लोक-रुचिक सूचना सेहो दैत अछि। मिथिलाक पोखरि, नदी आ जल-भूभागक पारिस्थितिकी एतय भाषामे प्रतिबिम्बित अछि।

तेल-मसल्ला, फल, मधु, पान आ अन्य सामग्री

पृ. २२० सँ तेल आ मसल्लाक सन्दर्भ, पृ. २२४ सँ आमक बिज्जू/सरही आ कलमी प्रभेद, आन अनेक फल, पृ. २४० पर मधु, आ अन्तिम भागमे पान तथा विशेष द्रव्यक शब्द भेटैत अछि। आम, नेबो, बैर, कुसियारक रस, मधु आदि शब्द स्थानीय स्वादक अत्यन्त सूक्ष्म विभाजन करैत अछि। पुस्तकमे दर्ज नशायुक्त पेय वा द्रव्यक वर्णन शब्दार्थ-अध्ययनक विषय अछि, सेवनक अनुशंसा नहि।

पाठाधारित शब्द-साक्ष्य

मूल शब्द अथवा शब्दसमूह

अर्थ आ सन्दर्भ

फसील, बीहन, खैहन

अन्नक उत्पादन आ प्रयोजनक अर्थभेद (पृ. १९८)।

मूल शब्द अथवा शब्दसमूह	अर्थ आ सन्दर्भ
राहड़ि, उड़ीद, कुर्थी	दलिहनक स्थानीय शब्दक्षेत्र (पृ. १९९-२००)।
चिचोढ़ी, ओल, अल्हुआ	कन्द-मूल आ लोकआहार (पृ. २०२-२०५)।
माछक अनेक प्रभेद	जलजीवक रूपात्मक-वर्गीय नाम (पृ. २१०-२१९)।
बिज्जू/सरही, कलमी	आमक उत्पत्तिगत भेद (पृ. २२४)।
मधु	विशेष भोज्य द्रव्यक शब्दार्थ (पृ. २४०)।

आलोचनात्मक परीक्षण

कोनो वनस्पतिक स्थानीय नामक सटीक वैज्ञानिक नाम नहुँ भेटला पर अनुमानसँ एकर पहचान घोषित नहि करब। एकहि शब्द अलग गाममे अलग पौधा लेल प्रयुक्त भऽ सकैत अछि; एहन स्थिति मे वाउचर नमूना, स्थानीय वक्ता आ वनस्पति-विशेषज्ञक संयुक्त मिलान चाही। सामाजिक स्तरपर ‘मुख्य’ आ ‘विशेष’ सामग्रीक वर्ग सेहो आय, ऋतु आ परिवार अनुसार बदलि सकैत अछि।

नवम अध्याय। भोजनक कार्य-व्यापार सम्बन्धी शब्दावली

पुस्तकमे सम्बद्ध पृष्ठ: २४७-२८१।

वस्तु नहि, प्रक्रियाक शब्दकोश

एहि अध्यायमे प्रकृतिसँ प्राप्त पदार्थकेँ भोजन बनयबाक आ तकर ग्रहण करबाक यावन्तो कामकेँ शब्दावलीक विषय मानल गेल अछि। लेखिका पाँच वर्ग राखैत छथि: (१) अन्नसँ सम्बद्ध, (२) व्यञ्जनसँ सम्बद्ध, (३) दूधसँ सम्बद्ध, (४) मिष्ठान्न-पकमानसँ सम्बद्ध, आ (५) भोजनग्रहणसँ सम्बद्ध शब्द (पृ. २४७)। एहि पद्धतिक विशेषता ई अछि जे समान क्रियासँ भिन्न परिणामक लेल पृथक नाम भेटैत अछि।

धानसँ भोजनधरि क्रियाक अनुक्रम

पृ. २४७-२५३ मे धान, भुस्सा, चाउर, खखरी/खखड़ा, अरबा, उसिना आदि शब्दक व्यवहार पदार्थक अवस्था आ प्रक्रिया दूनू स्पष्ट करैत अछि। धानक बाह्य आवरण हटायब, गरम पानिमे

सिझाय-सुखाय चाउर बनायब, चाउरक सफाइ आ भातक पाकसँ सम्बन्धित अनेक अवस्था-
नामक चर्चा अछि। ‘अधसिज्जू’ जेकाँ शब्द सिद्ध खाद्यक अधूरा पाक सूचित करैत अछि।

व्यञ्जन आ मिष्टान्नक क्रियापरक अर्थ

पृ. २५४-२७१ मे दालि, साग, तरकारी, बड़ी, पिडुकिया, जिलेबी आदि खाद्यक रचना-क्रम,
मिश्रण, आँच, आकार, घोल, पकनाइ आ मिष्टान्नक चासनी सम्बन्धी प्रक्रिया विस्तृत अछि। पृ.
२६६ पर जिलेबीक व्याख्या ‘तैयारीक कार्यविधि + आकृति + अन्तिम पाक’क रूपमे देल गेल
अछि; एहन परिभाषा कागजी पर्यायवाची मात्र सँ अधिक उपयोगी होइत अछि।

परसना, खयब, अन्नक अवस्था आ सामाजिक क्रिया

पृ. २७२-२७७ मे भोजन सानब, खयब, जूठ/ऐँठ, निरैठ, नोत-बिझो, भोजनी आदि नाम भोजनक
व्यावहारिक आ सामाजिक अर्थ जोडैत अछि। ‘ऐँठ’ आ ‘निरैठ’क अन्तर खाद्यक प्रयोग-अवस्था
आ सामाजिक शुद्धताक स्थानीय श्रेणी चिन्हैत अछि; एहन श्रेणीकेँ वर्णनात्मक सन्दर्भमे बुझब
चाही।

स्वाद, गन्ध आ अनुभूति

अन्तिम पृष्ठसभमे पदार्थक स्वाद, जरेबाक गन्ध, धातुपात्रक प्रभाव, मिरचाइक तीखापन आ
देहक प्रतिक्रिया जनबैत शब्द उपस्थित अछि (पृ. २७७-२८१)। ‘पितराइनि’, ‘सुसुआयब’ जेकाँ
उदाहरण अनुभवजन्य भाषिक परिशुद्धता देखबैत अछि। एहि अर्थक्षेत्रमे ध्वन्यनुकरण, संवेदना
आ क्रियाक रूप एक संग अध्ययन योग्य अछि।

पाठाधारित शब्द-साक्ष्य

मूल शब्द अथवा शब्दसमूह	अर्थ आ सन्दर्भ
अरबा, उसिना	धानसँ चाउर बनेबाक प्रक्रिया-भेद (पृ. २४७- २४८)।
भुस्सा, खखरी, खुद्दी	उत्पादनक अवशेष आ अन्नक अवस्था (पृ. २४७-२५०)।
अधसिज्जू	अपूर्ण पाकक अवस्था-विशेष (पृ. २५२)।
जिलेबी, चासनी	मिष्टान्नक क्रियापरक परिभाषा (पृ. २६६)।

मूल शब्द अथवा शब्दसमूह	अर्थ आ सन्दर्भ
ऐंठ, निरैठ	भोजनग्रहणोत्तर अवस्थाक भेद (पृ. २७३)।
सुसुआयब	तीख स्वादपर शारीरिक-ध्वन्यात्मक प्रतिक्रिया (पृ. २७९)।

आलोचनात्मक परीक्षण

आधुनिक भोजन-शब्दकोशमे ‘क्रिया-साधन-वस्तु-परिणाम’क सम्बन्ध एकै प्रविष्टिमे राखल जाए। जेना भात बनयबाक अनुक्रममे अवस्था-द्योतक संज्ञा, पाक-सूचक क्रिया आ स्वाद-वाचक विशेषण अलग-अलग सूचीमे राखलासँ वास्तविक अर्थ-सम्बन्ध छूटि जाइछ। एहि अध्यायक शब्दसम्पदाकेँ प्रक्रिया-मानचित्रमे बदलि सकब एक ठोस शोध-विस्तार होयत।

दशम अध्याय। मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक ध्वनि-विचार

पुस्तकमे सम्बद्ध पृष्ठ: २८२-२८९।

व्यवहारसँ ध्वनि-व्यवस्था दिस

शब्दावलीक सघन संकलनक पश्चात् लेखिका स्वर आ व्यञ्जनक व्यवस्था देखैत छथि।

भोजन-सम्बन्धी शब्दक उच्चारणमे ह्रस्व, दीर्घ, ह्रस्वतर, अनुनासिकता, स्वरसमूह आ व्यञ्जनगुच्छक उदाहरण पृ. २८२-२८६ मे संकलित अछि। ई अध्याय दर्शबैत अछि जे खाद्यशब्द भाषाक सामान्य ध्वनि-संरचनाकेँ परीक्षण करबाक समृद्ध आधार बनि सकैत अछि।

ध्वनि-रूपक विविधता

‘घैल-घैलची’, ‘कठौत-कठौतिया’ जेकाँ रूप उच्चारण, शब्दरचना आ अर्थभेदक सम्बन्ध देखबैत अछि। पृ. २८७-२८९ मे प्राकृत-संस्कृत आदिसँ आधुनिक रूपक ध्वनि-परिवर्तनक संभावित शृंखला प्रस्तुत अछि; यथा ‘अपूप’ सँ ‘पूआ/पू’ आ ‘सूर्प’ सँ ‘सूप’क रूपसम्बन्ध। ग्रन्थक उदाहरण भाषिक इतिहासक तर्कक सामग्री अछि, किन्तु प्रत्येक शृंखलाक स्वीकृति लेल ध्वनिनियम आ प्रमाणित मध्यवर्ती रूपक मिलान आवश्यक अछि।

वर्तनी आ वास्तविक उच्चारण

एकहि शब्दक लिखित रूप, क्षेत्रीय उच्चारण आ व्युत्पत्तिगत आदर्श रूप अलग होयबाक सम्भावना अधिक अछि। एहि कारण कण्ठस्थ लोकशब्दक सुनल उच्चारणकें अनिवार्यतः संस्कृतनिष्ठ वर्तनीमे बदलब शब्द-सम्पदा समझबाक मार्गमे बाधा होयत।

पाठाधारित शब्द-साक्ष्य

मूल शब्द अथवा शब्दसमूह	अर्थ आ सन्दर्भ
घैल/घैलची	आकार एवं शब्दरचनासँ जुड़ल ध्वनि-रूप (पृ. २८२)।
अपूप → पूआ/पू	सम्भावित ऐतिहासिक रूपविकासक विवेचन (पृ. २८७)।
सूर्प → सूप	व्यञ्जनसमूहक सरलनक उदाहरण (पृ. २८८)।
मृत्ति → माटि	इतिहास आ ध्वनि-परिवर्तनक सन्दर्भ (पृ. २८९)।

आलोचनात्मक परीक्षण

अध्यायमे ध्वन्यात्मक प्रतिलेखनक सुव्यवस्थित अन्तरराष्ट्रीय पद्धति सर्वत्र प्रयुक्त नहि अछि। भविष्यक अध्ययनमे उच्चारणक ध्वनि-रिकॉर्डिंग, IPA रूप, क्षेत्र, वक्ताक उमेर आ सामाजिक सन्दर्भक संग स्रोत दएल जाय, जाहिसँ ‘उच्चारण-भेद’ आ ‘अलग शब्द’क भेद स्पष्ट भऽ सकय।

एकादश अध्याय। शब्द-विचार

पुस्तकमे सम्बद्ध पृष्ठ: २९०–३०९।

रूढ़, यौगिक आ योगरूढ़

लेखिका व्युत्पत्तिक दृष्टिँ शब्दकें रूढ़, यौगिक आ योगरूढ़ कोटिमे बाँटैत छथि (पृ. २९० सँ)। ‘घी’, ‘जौ’, ‘दही’, ‘थारी’ जेकाँ शब्दक सामान्य अर्थ ओकर अवयव-विश्लेषणसँ नहि निकलैत अछि; ई रूढ़ वर्गक सन्दर्भक उदाहरण अछि। ‘दालि + पूड़ी → दलिपूड़ी’, ‘दालि + साग → दलिसग्गा’ आदि पारदर्शी यौगिक रचना देखबैत अछि। ‘भतखड़’ जेकाँ प्रयोगमे अवयवक सामान्य योगसँ अलग विशिष्ट परम्परागत अर्थ बनल रहि सकैत अछि।

शब्दक उत्पत्ति आ भाषिक सम्पर्क

पृ. २९८-३०१ मे परम्परागत, तत्सम, तद्भव, देशज आ गृहीत शब्दक चर्चा अछि। भोजनशब्द मैथिलीक स्वकीय ऐतिहासिक रूपक संग अन्य भाषासँ ग्रहण कएल शब्दकेँ सेहो समाहित करैत अछि। मुदा सुनबामे विदेशी लगनिहार शब्दकेँ स्रोत-भाषा निर्दिष्ट करब लेल प्रमाणित ऐतिहासिक शब्दकोश आ पुरान पाठक सहायता आवश्यक अछि।

शब्दभेद, लिङ्ग, वचन, रूपान्तर

पृ. ३०२-३०५ मे संज्ञा, विशेषण, क्रियापद, लघ्वर्थ-सूचक रूप, लिङ्गादिक सम्बन्धक उदाहरण बिखरल अछि। ‘थार-थारी’, ‘पोठा-पोठी’ जेकाँ रूप संग भाषिक संरचनाक विवेचन देखबैत अछि जे बहुतेक ग्रामीण शब्द परिवार-आधारित शब्दसाधनाक उत्पाद अछि।

क्षेत्रीय रूपान्तर, वर्तनी आ अर्थ-परिवर्तन

पृ. ३०५-३०८ मे समानार्थी, उच्चारण-भेद, लिप्यात्मक भेद आ अर्थ-संकोच/अर्थ-विस्तारक सम्भावना पर विचार अछि। ‘गुण्डा’क अर्थक विशेषीकरण तथा ‘मूड़ा’क माछक माथ अर्थमे उपयोग (पृ. ३०८) शब्दार्थ-परिवर्तनक उदाहरण अछि। अर्थ-परिवर्तनक अध्ययन कालनिर्दिष्ट प्रमाणसँ पुष्ट करब आवश्यक अछि।

पाठाधारित शब्द-साक्ष्य

मूल शब्द अथवा शब्दसमूह	अर्थ आ सन्दर्भ
घी, जौ, दही, थारी	रूढ़ शब्दक दृष्टान्त (पृ. २९०)।
दलिपूड़ी, दलिसग्गा	समास-जेकाँ यौगिक रचना (पृ. २९२)।
भतखड़	योगरूढ़ार्थक उदाहरण (पृ. २९६)।
थार-थारी, पोठा-पोठी	रूपगत सम्बन्ध आ अर्थभेद (पृ. ३०५)।
गुण्डा, मूड़ा	अर्थ-संकोचक उदाहरण (पृ. ३०८)।

आलोचनात्मक परीक्षण

शब्दक ‘एकाक्षर’, ‘द्व्यक्षर’ आदिक विश्लेषणमे अक्षर, वर्ण आ ध्वनि-संख्या एक्के नहि; एतय पद्धति स्पष्ट करब उपयोगी रहत। रूढ़-यौगिक-योगरूढ़ वर्गीकरणक सीमापर एकहि शब्दकेँ

क्षेत्रविशेषमे अलग व्यवहार भेटि सकैत अछि। एहि कारण शब्दप्रविष्टि संग प्रयोग-वाक्य आ क्षेत्रीय वक्ताक प्रमाण संकलन अनिवार्य अछि।

द्वादश अध्याय। उपसर्ग ओ प्रत्यय-विचार

पुस्तकमे सम्बद्ध पृष्ठ: ३१०–३२२।

उपसर्गक सीमित भूमिका

लेखिका भोजन-विषयक साधित शब्दमे उपसर्गक संख्या अपेक्षाकृत अल्प मानैत छथि। ‘कु-’ आ ‘सु-’क योगसँ ‘कुभोजन’, ‘सुभोजन’, ‘सुस्वादु’ आदि रूप उदाहरणरूपे देल गेल अछि; फारसी मूलक ‘बे-’क प्रयोगक प्रसङ्ग सेहो चर्चामे अछि (पृ. ३१०)। ‘निरैठ’ जेकाँ पदमे उपसर्ग आ स्थानीय मूलक युति विशेष ध्यान दैत अछि।

कृत् आ तद्धित प्रत्ययक समृद्धि

पृ. ३११–३१९ मे ‘-अनि’, ‘-इआ’, ‘-आ’, ‘-ई’, ‘-उआ’, ‘-आह’ आदि प्रत्ययक विविध संज्ञा, विशेषण आ कृदन्त रचना देखल जा सकैत अछि। प्रत्यय केवल बाहरी जोड़ नहि; कखनो ध्वनि-परिवर्तन, लघ्वर्थ, युक्तार्थ, स्थानवाचकता, सम्बन्धवाचकता अथवा विशेष गुणक भेद जनबैत अछि। ‘कुटिआ’, ‘कठौतिया’, ‘छाँछिया’, ‘भोराह’, ‘मटिआह’ जेकाँ उदाहरण रूपात्मक उत्पादकता दर्सबैत अछि।

आइन प्रत्यय आ गन्ध-स्वादक अर्थ

ग्रन्थक उपोद्धातमे डॉ. श्रीरामदेव झा विशेषतः ‘-आइन’ प्रत्ययक अर्थ-सम्भावनाक चर्चा करैत छथि (प्रारम्भिक पृ. १८–१९)। सामान्य भाषामे स्त्री-वाची ‘-आइन’ आ भोजन-संबन्धी स्वाद-गन्धवाची ‘बिसाइन’, ‘डढाइन’, ‘इछाइन’ जेकाँ शब्दक अर्थसम्बन्ध जटिल अछि। एकर ऐतिहासिक मूल आ अर्थ-विकासकेँ परिकल्पनाक रूपमे चिन्हित करब उचित।

प्रत्ययसमूहक जटिलता आ आत्मसीमा

पृ. ३२०–३२२ मे लेखिका प्रत्ययक मूल, क्रमिक योग, अर्थ-अनिश्चितता आ मानकीकरण समस्या खुला अनुसन्धान-विषय रूपमे स्वीकार करैत छथि। ‘अमिलगर’ जेकाँ क्रमिक

शब्दसाधन बतबैत अछि जे प्रत्यय-विधानक एकरूपी नियम सभ शब्दमे लागू नहि होइत। एहि आत्मसीमाक स्वीकार कृतिक गम्भीर शोधप्रवृत्ति अछि।

पाठाधारित शब्द-साक्ष्य

मूल शब्द अथवा शब्दसमूह	अर्थ आ सन्दर्भ
कु-, सु-	संस्कृतमूलक उपसर्गीय साधन (पृ. ३१०)।
निरैठ	स्थानीय मूल आ उपसर्ग-सदृश संरचना (पृ. ३१०)।
कुटिआ, छाँछिया	प्रत्ययद्वारा संज्ञात्मक रचना (पृ. ३११-३१३)।
भोराह, मटिआह	गुण/सम्बन्ध सूचक प्रत्यय (पृ. ३१६)।
बिसाइन, डढ़ाइन	गन्ध-वाचक शब्दकेँ लऽ प्रस्तावनाक बहस (पृ. १८-१९)।
अमिलगर	क्रमिक प्रत्यययोगक उदाहरण (पृ. ३२६)।

आलोचनात्मक परीक्षण

आकार-साम्य मात्रसँ शब्दान्त भागकेँ ‘प्रत्यय’ मानल नहि जा सकैछ। सही विश्लेषण लेल उत्पादकता, अनेक स्वतंत्र रूपमे प्रयोग, अर्थक स्थिरता, कालक्रम आ ध्वनिनियम सभकेँ जाँचब चाही। एहि दृष्टिँ ई अध्याय भावी रूपविज्ञान-अनुसन्धानक प्रश्नावली प्रदान करैत अछि।

उपसंहार : समालोचनात्मक पुनर्पाठ

मूल पोथीक उपसंहार (पृ. ३२३-३२६) मे लेखिका साहित्य आ बोलचालमे भोजन-सम्बन्धी शब्दावलीक अत्यन्त व्यापक क्षेत्र देखबैत छथि। भारतीय परम्पराक ऐतिहासिक सन्दर्भ, मैथिल भोजनक विशिष्ट स्थानीयता, पुरान आ आधुनिक उपकरणक टकराव, साहित्यिक शब्दक उपस्थिति, शब्दक ध्वन्यात्मक बदलैत रूप, देशज-गृहीत शब्दक सम्पर्क आ प्रत्यय-विधानक जटिलता एहि निष्कर्षमे फेर संगठित भेल अछि। ई उपसंहार पुस्तककेँ केवल ‘भोजनक सूची’ सँ उठाय भाषिक-सांस्कृतिक इतिहासक शोधग्रन्थक रूप देइत अछि।

एहि समालोचनाक प्रमुख निर्णय ई अछि जे ग्रन्थक मुख्य सामग्री ‘वस्तु-क्रिया-नाम-प्रयोग-प्रसङ्ग’क सम्बन्धमे निहित अछि। वस्तुक नामकेँ सांस्कृतिक प्रयोगसँ, आ शब्दक व्युत्पत्तिकेँ प्रामाणिक उच्चारणसँ पृथक नहि कएल जाए। एहि सिद्धान्तक कारण घरक दैनिक भोजन सेहो भाषा-विज्ञानक आवश्यक सामग्री बनैत अछि।

मूल ग्रन्थमे शब्दसंकलनक समृद्धि बहुत बेसी अछि, मुदा एकरा आधुनिक खोजयोग्य ‘लेक्सिकल डेटाबेस’ बनयबाक लेल प्रत्येक प्रविष्टिमे शब्दरूप, अर्थ, भौगोलिक क्षेत्र, वस्तुक चित्र, स्रोतपृष्ठ, प्रमाणवाक्य, उच्चारण, शब्दभेद, समानार्थी, अर्थ-सम्बन्ध आ वर्तमान स्थिति लिखब आवश्यक होयत। ई आलोचना कृतिक अवमूल्यन नहि; ओकर मूल अवदानकेँ शोधक नओ चरणमे विस्तार देबाक रूपरेखा अछि।

परिशिष्टसभक अध्ययन

परिशिष्ट-क: कतिपय उपकरणक रेखाचित्र (पृ. ३२७-३३१)

मूल पाठमे धातु, माटि, काठ आ बाँसक उपकरणक जतेक विस्तृत शब्दविवेचन अछि, तकरा दृश्यात्मक रूपमे बुझाबय लेल परिशिष्टमे उपकरणक रेखाचित्र देल गेल अछि। एहि चित्रसभक मूल्य ई अछि जे आकारसँ जुड़ल शब्दार्थकेँ पाठक प्रत्यक्ष रूपमे बुझि सकैत छथि। ई चित्र पूर्ण वस्तु-सूची नहि, चयनित सहायक सामग्री अछि। भविष्यक सचित्र शब्दकोशमे प्रत्येक उपकरणक अलग प्रविष्टि, चित्र, मापन आ नाम-भेद जोड़ल जाए।

परिशिष्ट-ख: अधीत ग्रन्थक सूची (पृ. ३३२ सँ आगाँ)

ग्रन्थक अन्तमे संस्कृत, प्राकृत, मैथिली, भाषावैज्ञानिक आ अन्य सन्दर्भग्रन्थक विस्तृत सूची अछि। एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे शब्दसंग्रह मात्र मौखिक अनुभवपर आधारित नहि; साहित्यिक-ऐतिहासिक प्रमाणसँ सेहो ओकर मिलान करबाक प्रयत्न भेल अछि। एहि सूचीकेँ शोधक लेल प्राथमिक सन्दर्भ-सूत्र मानब उचित अछि; किछु पुरान संस्करणक प्रकाशन-विवरण आधुनिक मानकसँ फेर जाँचबाक आवश्यकता रहि सकैत अछि।

भाषिक-सांस्कृतिक निष्कर्ष

१. भोजन-शब्दावली सामाजिक स्मृतिक अभिलेख अछि

‘सूप’, ‘जाँत’, ‘पीढ़ी’ जेकाँ वस्तु-नाम ओहि वस्तुक निर्माणकर्ता, व्यवहार आ घरेलू श्रमक इतिहास संग अनिवार्य रूपे जुड़ल अछि। कखनो साधन अप्रचलित होइत अछि तखन ओहि साधनक अंश-वाचक आ क्रियावाचक सूक्ष्म शब्द सर्वप्रथम विस्मरण दिस बढ़ि सकैत अछि।

२. खाद्य-परम्परा एकरूप नहि

धानप्रधान मिथिलाक भीतर विभिन्न अन्न, साग, दलहन, माछ, कन्द-मूल आ विशेष फल-फूलक परम्परा अछि। एकटा ‘मैथिल भोजन’ कहब उपयोगी सांस्कृतिक संकेत अछि, मुदा ओकर भीतर ऋतु, परिवार, आर्थिक स्थिति, पेशा, क्षेत्र आ अनुष्ठानक अन्तर पहचानब जरूरी अछि।

३. क्रिया-वाचक शब्द विशेष रूपे असुरक्षित

छाँटब, फटकब, पैचब, रान्हब, उलबब, आँटब, सानब जेकाँ क्रियापद पुरान तकनीकक संग बदलैत अछि। केवल सामग्रीक नाम संकलित करब भोजन-भाषाक आधा इतिहास मात्र होयत।

४. साहित्य अर्थक प्रमाण दैत अछि, व्यवहारक सम्पूर्ण आँकड़ा नहि

चारिमसँ छठम अध्यायमे प्राचीन, मध्यकालीन आ आधुनिक साहित्यक बहुस्तरीय उदाहरण अछि। ई कालक्रमक सूचक अछि; तथापि एक साहित्यिक उल्लेख पूरा समाजक भोजन-वितरणक समग्र प्रतिरूप नहि।

५. ध्वनि, शब्द आ प्रत्ययकें अलग नहि करब

घैल-घैलची, थार-थारी, कठौत-कठौतिया जेकाँ रूपमे ध्वनि, शब्दरूप, वस्तु-आकार आ अर्थ परस्पर आश्रित अछि। शब्द-प्रविष्टिमे ई चारू स्तर दर्ज हो।

६. मूल रूपकें बिना प्रमाण बदललासँ सूचना हानि

कोनो देशज शब्दकें ‘सुधारबाक’ नामपर संस्कृतनिष्ठ वर्तनीमे रूपान्तरित करब ओकर ऐतिहासिक ध्वनि आ क्षेत्रीय पहचान मेटा सकैत अछि। लेखिकाक भाषा-अनुकरण करब, मुदा स्पष्ट मुद्रणदोष आ अनिश्चित रूपकें आलोचनात्मक टिप्पणी सहित चिन्हित करब, एहि शोधक उपयुक्त रीति अछि।

प्रमुख शब्द-क्षेत्र : तुलनात्मक सारिणी

शब्द-क्षेत्र	मूल ग्रन्थक उदाहरण	शब्दार्थक सन्दर्भ
अन्न	धान, चाउर, अरबा, उसिना, खुद्दी, माँड़	उत्पादनसँ सेवन धरि अवस्थागत नाम
दलिहन	राहड़ि, उड़ीद, कुर्थी, मसुरी	उपयोग आ प्रादेशिक वर्गीकरण
कन्द-मूल	ओल, चिचोढ़ी, अल्हुआ, सुथनी	ऋतु, पारिस्थितिकी आ लोकआहार
धातु-पात्र	ताम, पित्तर, काँस, कंसकूट	सामग्री आ निर्माणक गुण
माटिक पात्र	कोहा, घैल, हाँड़ी	आकृति, संग्रहण आ पाक
बाँस-तृण	सूप, डगरा, मउनी	कारीगरी, छनाइ आ संग्रहण
भोजनग्रहण	सानब, खायब, ऐँठ, निरैठ	क्रिया, परिणाम आ आचार
स्वाद-गन्ध	खटमधुर, पितराइनि, डढ़ाइन	अनुभव-विशेषक अर्थरचना
शब्द-साधन	दलिपूड़ी, कठौतिया, मटिआह	समास, प्रत्यय आ शब्दभेद

भावी अनुसन्धानक दिशासभ

प्रथम चरण—मूल पाठमे देल शब्दक विश्वसनीय पुनर्लिप्यन्तरण: मूल मुद्रित पृष्ठ, शब्दक वास्तविक वर्तनी, वाक्य-सन्दर्भ, शब्दभेद आ पाठ-निश्चय अलग-अलग दर्ज करब। एक पृष्ठपर अनेक स्थानीय पर्याय आ अर्थभेद अछि; अतः शब्दकेँ अनिवार्यतः एक मानक रूपमे घटा देब उचित नहि।

द्वितीय चरण—मैदान-अध्ययन: दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, सीतामढ़ी, सहरसा, सुपौल आ नेपालक मैथिलीभाषी क्षेत्रक गाम-घरमे वस्तु देखाय आ पाक-व्यापारक प्रत्यक्ष अवलोकनक संग रेकर्डिंग कएल जाए। क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व नमूनाक आकार आ पद्धति पर निर्भर रहत। वक्ताक अनुमति सँ ध्वनि, चित्र, निर्माण-प्रक्रिया आ नामभेद संरक्षित कएल जाए।

तृतीय चरण—विषयगत नकाशा: ‘धान → भुस्सा हटायब → चाउर → भात → परोसब → जूठ/निरैठ’ अथवा ‘बाँस → फाड़ब → बत्ती → सूप/डगरा → अनाज फटकब’ जेकाँ प्रक्रिया-

सम्बन्धित चित्र आ डिजिटल अर्थजाल बनायब। एहि नकाशामे उपकरण, पदार्थ आ क्रियाक सम्बन्ध स्पष्ट होयत।

चतुर्थ चरण—साहित्यिक प्रमाणक पुनःमिलान: चर्यापद, वर्णरत्नाकर, विद्यापति, आधुनिक कथा-कविता, नाटक आ लोकगीतक उद्धरण मूल संस्करणसँ फेर मिलाओल जाए। कृति, सम्पादक, प्रकाशन-वर्ष आ पृष्ठ सहित सन्दर्भ अभिलेख बनाओल जाए।

पञ्चम चरण—अनिश्चित व्युत्पत्तिक पृथक्करण: प्रमाणित रूप-शृंखला, अनुमानित व्युत्पत्ति, जनश्रुति आ अर्थ-साम्यकेँ भिन्न संकेत देल जाए। एहि पद्धतिसँ अनुसन्धान पुनरीक्षण-योग्य बनत।

षष्ठ चरण—लोकप्रयोगक संरक्षण: वृद्ध वक्ता, घरेलू पाककला जाननिहार व्यक्ति आ स्थानीय कारीगरक मौखिक वर्णनक संग युवा पीढ़ीक वर्तमान शब्द-प्रयोग तुलना कएल जाए, जाहिसँ प्रचलित, अर्धप्रचलित आ विलुप्तप्राय शब्द चिन्हल जा सकय।

समग्र मूल्याङ्कन

‘मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली’क बारहो अध्याय एकटा संयुक्त तर्क प्रस्तुत करैत अछि। आरम्भक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि बतबैत अछि जे भोजन प्राकृतिक सम्पदा आ समाजक विचार-दुनूक परिणाम अछि; साहित्यिक अध्याय देखबैत अछि जे भोजनक शब्द मैथिलीक सम्पूर्ण साहित्यिक जीवनमे प्रवेश कयने अछि; लोक-कोशीय अध्याय ई प्रमाणित करैत अछि जे भोजनक उपकरण, सामग्री आ क्रियाक अत्यन्त सूक्ष्म शब्द-सम्पदा उपलब्ध रहल अछि; अन्तिम तीन अध्याय देखबैत अछि जे ई शब्द-सम्पदा ध्वनि-विज्ञान आ रूप-विज्ञानक अध्ययनक मूल सामग्री सेहो अछि।

अतः ग्रन्थक केन्द्रीय उपलब्धि ‘भोजन सम्बन्धी शब्दक संख्या’ नहि, वरन् भोजनकेँ एक व्यापक अर्थ-क्षेत्र मानि तकर भाषिक वर्गीकरण, सामाजिक प्रसङ्ग आ व्युत्पत्तिक जटिलताकेँ एक शोधरचनामे संगठित करब अछि। एहि पोथीक आधारपर तैयार भावी चित्रित, ध्वनि-सहित, क्षेत्र-चिह्नित डिजिटल कोश मैथिली लोकभाषिक धरोहरक संरक्षणक अत्यन्त उपयोगी साधन भऽ सकैत अछि।

अनुक्रमणिका

अध्ययनक अध्याय आ प्रमुख विषय

कृतिक अध्ययन-सार	3
विवेचनक दृष्टि	4
विषय-प्रवेश: मूल अनुसन्धानक प्रश्न	4
प्रथम अध्याय। भारतीय भोजनक पारम्परिक स्वरूप	6
द्वितीय अध्याय। मैथिल भोजनक परम्परा	8
तृतीय अध्याय। मैथिल रुचिपर प्रभाव ओ तज्जन्य परिवर्तन	10
चतुर्थ अध्याय। प्राचीन मैथिली साहित्यमे वर्णित भोजन-विन्यास	12
पञ्चम अध्याय। मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे वर्णित भोजन-विन्यास	14
षष्ठ अध्याय। आधुनिक मैथिली साहित्यमे वर्णित भोजन-विन्यास	16
सप्तम अध्याय। आधुनिक मैथिली भाषामे भोजनक उपकरण सम्बन्धी शब्दावली	19
अष्टम अध्याय। भोजनक आधार-सामग्री सम्बन्धी शब्दावली	22
नवम अध्याय। भोजनक कार्य-व्यापार सम्बन्धी शब्दावली	25
दशम अध्याय। मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक ध्वनि-विचार	28
एकादश अध्याय। शब्द-विचार	30
द्वादश अध्याय। उपसर्ग ओ प्रत्यय-विचार	32
उपसंहार : समालोचनात्मक पुनर्पाठ	34
परिशिष्टसभक अध्ययन	35
भाषिक-सांस्कृतिक निष्कर्ष	35
प्रमुख शब्द-क्षेत्र : तुलनात्मक सारिणी	37
भावी अनुसन्धानक दिशासभ	37
समग्र मूल्याङ्कन	38

शब्दानुक्रमणिका

चयनित शब्द, सामग्री आ साहित्यिक साक्ष्य : एहि अध्ययनक पृष्ठसङ्ख्यासहित

अमिलगर	33	जौ	6,7	मउनी	20,3 7
अमृतकुण्डी	12,1 3	डगरा	20,3 7	माटि	10,1 1
अपूप	6,7	ढेकी	10,2 0	मूसर	10,1 1
अरबा	3,25	तण्डुल	6,7	राहड़ि	8,9
उसिना	3,25	दालिपूड़ी	8,30	वर्णरत्नाकर	12,1 3
ऐंठ	26,3 7	धान	4,5	सतुआनि	8,9
ओल	4,8	निरैठ	3,26	सूप	3,20
कठौतिया	28,3 2	पिडुकिया	25	सुसुआयब	26
करम्भ	6,7	पीढ़ी	3,10	सुथनी	22,3 7
खखरी	3,25	पित्तर	19,2 0	थारी	30,3 1
खीर-खाँड	14,1 5	बिसाइन	32,3 3	जुड़शीतल	8,9
घैल	10,2 0	भतखड़	30,3 1	चूल्हा	11,1 9
चाउर	6,7	भात	8,9	चर्यापद	12,3 8
छाँछिया	32,3 3	माछ	6,8	विद्यापति	14,3 8
चिचोढ़ी	22,2 3	माँड़	8,9		
जिलेबी	25,2 6	मखान	8,9		

समग्र ग्रन्थसूची

अध्ययनाधीन कृति

झा, ललिता। मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली। प्रथम संस्करण, २०११। प्रकाशकक नाम उपलब्ध विवरणसँ पुष्ट नहि।

मैथिली भाषा, साहित्य आ लोकजीवन

ज्योतिरीश्वर कविशेखराचार्य। *Varna-ratnākara*। सम्पा. सुनीति कुमार चटर्जी आ बाबुआ मिश्र।

कलकत्ता : Royal Asiatic Society of Bengal, १९४०।

मिश्र, जयकान्त। *History of Maithili Literature*। नई दिल्ली : साहित्य अकादेमी, प्रथम

संस्करण, १९७६।

झा, देवकान्त। आधुनिक मैथिली साहित्यक इतिहास। नई दिल्ली : साहित्य अकादेमी, प्रथम

संस्करण, २०१७।

Grierson, George A. *An Introduction to the Maithilī Language of North Bihār*। कलकत्ता :

Asiatic Society of Bengal, १८८१-१८८२ (दू भाग)।

Grierson, George A. *Bihar Peasant Life*। कलकत्ता : Bengal Secretariat Press, प्रथम

संस्करण, १८८५।

Grierson, George A. *Linguistic Survey of India*, खण्ड ५, भाग २। कलकत्ता : Office of the

Superintendent of Government Printing, India, १९०३।

Yadav, Ramawatar. *A Reference Grammar of Maithili*। Berlin/New York : Mouton de

Gruyter, १९९६।

भोजनक इतिहास आ सांस्कृतिक अध्ययन

Achaya, K. T. *Indian Food: A Historical Companion*। दिल्ली : Oxford University Press,

१९९४।

Achaya, K. T. *A Historical Dictionary of Indian Food*। नई दिल्ली : Oxford University

Press, १९९८।

Goody, Jack. *Cooking, Cuisine and Class: A Study in Comparative Sociology*। Cambridge :

Cambridge University Press, १९८२।

Mintz, Sidney W. *Sweetness and Power: The Place of Sugar in Modern History*। New York :

Viking, १९८५।

Crooke, William. *The Popular Religion and Folk-Lore of Northern India*। संशोधित सचित्र संस्करण, दू खण्ड। London : Archibald Constable & Co., १८९६।

Basham, A. L., सम्पा. *A Cultural History of India*। Oxford : Clarendon Press, १९७५।

शब्दार्थ, रूपविज्ञान आ कोशविज्ञान

Cruse, D. A. *Lexical Semantics*। Cambridge : Cambridge University Press, १९८६।

Lyons, John. *Semantics*। दू खण्ड। Cambridge : Cambridge University Press, १९७७।

Matthews, P. H. *Morphology*। द्वितीय संस्करण। Cambridge : Cambridge University Press, १९९१।

Atkins, B. T. Sue, and Michael Rundell. *The Oxford Guide to Practical Lexicography*।

Oxford : Oxford University Press, २००८।

१.१२. गजेन्द्र ठाकुर — नित नवल वीरेन्द्र मल्लिक

VIDEHA 451 • VIDEHA451 / PROSE 12 • सम्पूर्ण मूल पाठ

स्रोतक मूल शीर्षक, प्रकाशन-विवरण, विषय-सूची, अध्याय, तालिका, अन्तिम टिप्पणि आ सन्दर्भ पूर्ण रूपेँ समाविष्ट। मूल स्रोतमे छपल आन्तरिक पृष्ठाङ्क स्रोत-संस्करणक अछि।

मैथिली साहित्य • आलोचना • अनुसन्धान

नित नवल

वीरेन्द्र मल्लिक

कविता, काव्यालोचना, रंगमंच आ विद्यापति-विमर्श

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादन : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

२०२६

प्रकाशन-विवरण

नित नवल वीरेन्द्र मल्लिक

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२६

सर्वाधिकार सुरक्षित। लेखकक लिखित अनुमतिक बिना एहि पुस्तकक कोनो अंशक पुनर्मुद्रण वा व्यावसायिक पुनर्प्रकाशन नहि कएल जाए। उद्धरण आ शैक्षिक उपयोग प्रचलित सन्दर्भ-परम्पराक अनुसार कएल जा सकैत अछि।

संस्करण : २०२६ • पुस्तकाकार आकार : ६ × ९ इंच

अनुक्रमणिका

विषयविन्यास आ अध्याय-आरम्भक पृष्ठ

भूमिका 4

१ अग्नि-शिखा : कविताक अग्नि आ जनप्रतिरोध 5

२ अथातो काव्य जिज्ञासा : कविता आ समकालीन समाज 39

३ प्रथम पुरुष : काव्यालोचनाक नूतन प्रतिमान 75

४ नाटक आ रंगमंच : प्रकृति आ प्रतिमान 88

५ प्रेम सौन्दर्य विधायक विद्यापति 123

समेकित उपसंहार 148

विस्तृत सन्दर्भ-ग्रन्थावली 149

भूमिका

वीरेन्द्र मल्लिकक साहित्यक एकटा मुख्य विशेषता ई अछि जे ओ मैथिलीक रचनात्मक भाषाकें जनजीवनक अस्थिरता, सामाजिक प्रश्न आ आलोचनात्मक विवेकसँ जोड़ैत छथि। हुनक कवितामे मिथिला स्मृतिक स्थिर भूगोल नहि, भूख, श्रम, भाषिक अधिकार, नगर-विस्थापन आ नागरिक असहमतिक जीवित परिवेश अछि। हुनक आलोचनात्मक गद्यमे परम्परा, आधुनिकता, सौन्दर्यशास्त्र आ साहित्यक सामाजिक दायित्वक प्रश्न पुनः-पुनः उभरैत अछि।

एहि पोथीक पहिल दू अध्याय ‘अग्नि-शिखा’ आ ‘अथातो काव्य जिज्ञासा’क कविताकें स्वतंत्र रूपसँ पढ़ैत अछि। पहिल संग्रहमे जन-संघर्ष आ भाषा-अस्मिताक उग्र स्वर देखल जाइत अछि, जखन कि दोसरमे पर्यावरण, विकासक विडम्बना, बजार, लोकतन्त्र आ काव्य-वस्तुकरणक बहुविध प्रश्न विस्तार पबैत अछि। कविता-पाठक विविधता बचबैत दुनू संग्रहक पारस्परिक सम्बन्ध बूझब एहि अध्ययनक आधारभूत उद्देश्य अछि।

तेसर अध्याय ‘प्रथम पुरुष’क माध्यमँ आलोचनाक आत्मपरीक्षण करैत अछि। रामकाव्य, बिम्ब-विधान, परम्परा-प्रयोग आ समकालीन कविताक विवेचनमे मल्लिक विचारक प्रमाण, भाषाक संवेदना आ रूपगत विवेककें महत्त्व दैत छथि। चारिम अध्याय ‘नाटक आ रंगमंच : प्रकृति आ

प्रतिमान'मे पाठ आ प्रदर्शन, लोककला आ रंगसंस्था, रंगभाषा आ सामाजिक स्मृतिक सम्बन्ध खोजैत अछि। पाँचम अध्याय विद्यापतिक प्रेम आ सौन्दर्यपर लिखल विस्तृत आलोचनात्मक कृतिक नौ अध्यायकेँ विषयवार एकत्र करैत अछि।

एहि पाँच ग्रन्थक सहअध्ययनसँ एकटा व्यापक सूत्र स्पष्ट होइत अछि : मल्लिकक साहित्य-चिन्तनमे रचनात्मक स्वतन्त्रता आ ऐतिहासिक उत्तरदायित्व एक-दोसरक विरोधी नहि। काव्यक ऊष्मा जखन लोकजीवनसँ जुड़ैत अछि, तखन ओकर रूप, वक्ता, प्रतीक, व्यंग्य आ काव्यभाषाक सूक्ष्म परीक्षण सेहो आवश्यक होइत अछि। एहिना आलोचनाक विश्वसनीयता ओहने ठाम दृढ़ होइत अछि जतय प्रशंसा आ प्रश्न, परम्परा आ नवता, सांस्कृतिक आत्मीयता आ तर्कसंगत असहमति संग-संग रहैत अछि।

अध्याय १ • वीरेन्द्र मल्लिकक साहित्य

अग्नि-शिखा

५५ कविताक क्रमबद्ध विवेचन • जनजीवन, भाषा-अस्मिता, शिल्प आ राजनीतिक व्यंग्य

‘अग्नि-शिखा’क कविता-क्रममे ५० प्रविष्टि अछि, मुदा पाँच संयुक्त प्रविष्टिमे दू-दू पृथक कविता अबैत अछि। एही कारण ५५ स्वतंत्र रचनाक विवेचन आवश्यक होइत अछि।

पद्धति चारि स्तरपर आधारित अछि : (क) मूल पाठक निकट-पठन, जाहिमे कथ्य, पात्र, बिम्ब, पुनरावृत्ति आ काव्य-वक्ता पर ध्यान अछि; (ख) राजनीतिक-आर्थिक आ सांस्कृतिक प्रसंगक आन्तरिक अध्ययन; (ग) लोकप्रयोग, मिथक, अंग्रेजी-हिन्दी मिश्रित शब्द आ कथन-शैलीक विश्लेषण; आ (घ) नैतिक-आलोचनात्मक परीक्षण, जाहिमे कविक जनपक्षधरता संग अतिरंजना, हिंसात्मक वाणी आ स्त्री-चित्रणक प्रश्न सेहो परखल गेल अछि।

कविताक ‘हम’, ‘अहाँ’, ‘ओ’ वा ऐतिहासिक व्यक्तिक उल्लेखकेँ हमेशा कविक आत्मकथा वा पुष्ट ऐतिहासिक तथ्य मानब त्रुटिपूर्ण होएत। कविता एकटा सृजनात्मक भाषिक दस्तावेज अछि। ओकर राजनीति, व्यंग्य आ अनुभवक महत्त्व बुझबाक लेल मूल कथन आ स्वतन्त्र इतिहास-सत्यापनक बीच भेद रखल गेल अछि।

२. सम्पूर्ण संग्रहक प्रमुख वैचारिक-विमर्श

२.१ अग्निक बहुअर्थी प्रतीक

‘अग्नि-शिखा’क नाम समूचा संग्रहकें प्रतीकात्मक एकता प्रदान करैत अछि। ‘शहरसँ गाम धरि’मे आगि प्रचण्ड विद्रोहक आकांक्षा अछि; ‘साँझ’मे ओहि आगिक रङ झीलमे प्रेम-पत्र लिखैत अछि; ‘नक्सलाइट’मे सूर्यक लाल प्रकाश संघर्षक चेतावनी अछि; शीर्षक-कवितामे अग्नि सामाजिक शल्य-चिकित्सा आ प्रकाशक ऊर्जा बनैत अछि। एकरे परिणामस्वरूप आगि केवल संहारक शक्ति नहि, स्मृति, पुनर्जागरण, परीक्षण आ सर्जनाक संभावना सेहो अछि। एहि प्रतीकक सन्निकट आओर एकटा श्रेणी अछि—धीपल लोह, लाल किरिन, जलैत चूल्हि, बम, बरूद, प्रक्षेपास्त्र आ विद्युत। कवि आधुनिक तकनीकक शब्दसँ पुरातन अग्नि-कल्पनाकें बदलैत छथि। फलस्वरूप जन-क्रांतिक दृश्य आ दैनिक रोटीक आगि लगातार एक-दोसरमे रूपान्तरित होइत अछि।

२.२ भाषा-अस्मिता : अधिकार आ आत्मालोचना

‘एक डिब्बा क्रांति’, ‘माइ डियर इन्दिरा’, ‘मैथिली आन्दोलन’, ‘नपुंसक नेताक नाम’ आ ‘चिट्ठीक उतारा’मे मैथिली अधिकारक प्रश्न बारम्बार अबैत अछि। मातृभाषाक शिक्षण, संवैधानिक पहचान, साहित्यिक प्रकाशन आ स्वनामक सम्मान—ई चारिटा समस्या एक दोसरसँ अलग नहि। कवि भाषा खातिर मात्र भावुक जयघोष स्वीकार नहि करैत छथि; ओ आन्दोलनक असफलता, नेतृत्वक सुविधाभोगिता आ अपन समाजक निष्क्रियतापर सेहो प्रहार करैत छथि।

‘माइ डियर इन्दिरा’ आ ‘एक डिब्बा क्रांति’मे अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीकें सम्मिलित करबाक माँग एकर रचनाकालीन राजनीतिक प्रसंग थिक। बाह्य संवैधानिक तथ्य अनुसार मैथिलीकें २००३क ९२म संविधान संशोधन द्वारा सम्मिलित कएल गेल, जकर प्रकाशन ८ जनवरी २००४क राजपत्रमे भेल छल। एहि प्रमाणसँ पुरान माँगक ऐतिहासिक सन्दर्भ स्पष्ट होइत अछि, मुदा एहि संग्रहक प्रत्येक कविताक रचनातिथि आपसँ समान छल, एहन निष्कर्ष नहि निकलैत।

२.३ भूख, श्रम आ आर्थिक असमानता

‘विद्युत-चाप’क कृषि-कर्ज, फीस आ मातृभाषाक पोथीक अभाव; ‘स्वाधीनताक आँगनमे’क मजदूर आ छात्र; ‘मुक्ति-संघर्ष’क दबायल जन; ‘समानधर्माक नाम’क सर्वहारा; आ ‘मुक्त भेल

बजार'क मजदूर आ बाजार—ई समूचा श्रम-यथार्थ संग्रहमे एक दृढ़ सूत्र अछि। कविक जनकवितामे वर्ग-संबन्ध केवल अमूर्त नारा नहि, राशन-पाँति, कागज-पेन्सिल, गहना बन्धक रखब, मटिया तेल आ खेतीक असफलताक दृश्यसँ बनैत अछि।

आर्थिक शोषणक समांतर सांस्कृतिक शोषण चलैत अछि। जे जनभाषा बोलैत अछि, ओकरा शिक्षा, सम्मान आ प्रकाशन नहि भेटब; जे ग्रामीण श्रम करैत अछि, ओकर उत्पादन आ प्रतिफल मध्य दूरी रहब—ई दुनू विषमता संग्रहमे एके प्रकारक अन्याय मानल गेल अछि।

२.४ लोकतंत्रक विकृति आ राजनीतिक व्यंग्य

कविता-संग्रहमे कुरसी, नेता, मंत्री, मुखिया, पंचायत, पुलिस, अफसर, अदालत आ सांसदक चित्र असाधारण रूपेँ बारम्बार अबैत अछि। 'शून्य काल'मे फाइल आ फीता, 'यमराजक विदेश-यात्रा'मे यमपुरी, 'गिरगिट'मे बदलैत रङ, 'गिद्ध'मे मृतदेहभक्षी लोभ आ 'कैंसर'मे रोगग्रस्त सामाजिक देह—ई सभ सत्ताक भिन्न रूपक अछि। प्रशासन आ राजनीति नागरिकक सेवा करबाक बदला स्वतःरक्षणक यंत्र बनि जाए, से मुख्य चिन्ता अछि।

एहि राजनीतिक दृष्टिमे एकटा महत्वपूर्ण अन्तर्विरोध अछि : जनतांत्रिक अधिकारक माँग बहुधा संघर्षक सैन्य शब्दावलीमे व्यक्त भेल अछि। रचनाक मूल्यांकन करैत कविक शोषण-विरोधी अभिप्राय आ काव्यभाषाक उग्र प्रयोगकेँ अलग-अलग जाँचबाक आवश्यकता अछि।

२.५ मिथिला, नगर आ सामाजिक भूगोल

कवि मिथिलाकेँ एकटा बन्द सांस्कृतिक स्मारक नहि मानैत छथि। 'ओकर गाम : ओकर शहर'मे राँटी, मंगरौनी, पिलखवार, मधुबनी, दरभंगा, जनकपुर, पटना, कलकत्ता आ दोसर स्थलनामक उल्लेखसँ स्थानक व्यापक नेटवर्क बनैत अछि। 'अपन लोकवेदक नाम'मे माटि-पानिक सुगन्धि संग सामन्ती संरचना, गरीबी, लोक-जीविका आ लोकक पीड़ा जुड़ल अछि। मिथिला कविक दृष्टिमे गौरवक स्थिर वस्तु नहि, निरन्तर प्रश्नक अधीन सामाजिक धरातल अछि।

शहर-संबद्ध प्रतीक—ड्राम, बस-स्टॉप, होटल, जेल, कार्यालय, सिनेमा, मॉल—ग्रामीण शब्दसामग्री—पोखरि, रोहु-भाकुर, मडुआ, गाछी, खेत, बँसबिट्टी—क संग टकराइत अछि। ई टकराहट मैथिल आधुनिकताक अनुभवकेँ केवल आयातित रूप नहि रहने दैत अछि।

२.६ पुराण, धर्म आ सांस्कृतिक आत्मपरीक्षण

कवितामे रामायण-महाभारतक अनेक पात्र राजनीतिक रूपक बनैत छथि। सीता-सरस्वतीक बारम्बार अपमान, रावणक छद्म-राजनीति, सुरसाक बेरोजगारी, कुंभकर्णक निद्रा, द्रोणाचार्यक संस्थागत अन्याय, एकलव्यक संघर्ष, चक्रव्यूहक अवरोध आ यमराजक अनुपस्थिति—ई सभ पुराणक कथाकें समकालीन असमानताक भाषा बनबैत अछि।

धर्मपर कविक कटाक्ष प्रायः ताहि ठाम तीव्र अछि जतय अनुष्ठानकें सामाजिक दायित्वक विकल्प मानि लेल जाइत अछि। ‘कीर्तन’, ‘पूजा-गृह’ आ ‘चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः’मे धार्मिक शब्दक व्यंग्यात्मक प्रयोगक लक्ष्य आस्था स्वतः नहि, पाखण्ड आ स्वार्थसँ आच्छन्न सार्वजनिक आचरण अछि।

२.७ स्त्री-प्रतीक आ स्त्रीक अनुपस्थित स्वर

‘मैथिल ललना’मे परम्परा आ महानगरक दृश्य, ‘साँझ’मे प्रतीक्षा, ‘मिनि गर्ल’मे देहक नाप, ‘अग्नि-शिखा’मे माय-बहीन-पत्नी-प्रेयसीक चिन्ता, ‘छापामार युद्ध’मे नारीजागृति आ ‘गुजरातनामा’मे हिंसाग्रस्त स्त्री—एकरे प्रकारें स्त्री अनेक भूमिकामे प्रकट छथि। ई व्यापकता साहित्यिक दृष्टिँ ध्यानयोग्य अछि।

तथापि आलोचनाक प्रश्न अछि जे कतेक ठाम स्त्री अपन भाषा मे बजैत छथि आ कतेक ठाम कविक राजनीतिक तर्कक प्रतीक मात्र बनि जाइत छथि। ‘मिनि गर्ल’ आ ‘पूजा-गृह’क देह-विम्ब पाठककें आत्मालोचनक अवसर दैत अछि। संग्रहक जनपक्षधरता कें स्त्रीक स्वतन्त्र अनुभवक प्रश्नसँ जोड़ि पढ़ब जरूरी अछि।

२.८ रचनाकार, साहित्यिक संस्था आ प्रतिरोधक सौन्दर्य

संग्रहक विशिष्ट उपलब्धि ई अछि जे कवि राजनीति पर लिखबा संग स्वयं कवि, बुद्धिजीवी, आलोचक, पुरस्कार-समिति आ प्रकाशन-संस्थानक जाँच करैत छथि। ‘चारि लाख बानरक बीच’मे सांस्कृतिक आयोजन, ‘हे हमर अग्रज’मे पुरान नेतृत्व, ‘चिट्ठीक उतारा’मे पुस्तक-प्रकाशन आ ‘कवितायाः प्रतिवादम्’ तथा ‘कविताश्री पाटलिपुत्रम्’मे कविताक भूमिका पर सीधा विमर्श अछि।

एहि अर्थमे कविता केवल बाहरी व्यवस्था-विरोध नहि, साहित्यिक क्षेत्रक आत्मसमीक्षा सेहो अछि। कविक आग्रह स्पष्ट अछि—साहित्यकें जन-जीवनक दुःख आ संघर्षसँ सम्बन्ध बनौने

रहबाक चाही। मुदा साहित्यक राजनीतिक उपयोगिताक अतिरिक्त ओकर आन्तरिक सौन्दर्य, विरोधाभास आ बहुअर्थता बचेबाक आवश्यकता सेहो एहि पाठसँ स्पष्ट होइत अछि।

२.९ समयक विस्तार : आरम्भिक जनांदोलनसँ भूमण्डलीकरण धरि

पाठमे इन्दिरा-संबद्ध राजनीतिक भाषण, बंगलादेश, अष्टम अनुसूचीमे प्रवेशक माँग, नक्सलाइट, चारा-हवाला घोटाला, वैश्वीकरण, गुजरातक हिंसा आ ‘बिग बजार’—ई सभ अलग-अलग काल-संकेत अछि। ताहिसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे संग्रहक विषय-विस्तार अनेक ऐतिहासिक स्तरक बीच फैलल अछि। किताबक निश्चित प्रकाशनकाल वा हर कविताक वर्ष बिना प्रामाणिक प्रकाशन-जानकारी लिखब उचित नहि।

बाजारवादी युगक कविता सभ पुरान अन्यायकें समाप्त भेल नहि मानैत, अपितु परिवर्तनशील रूपमे पुनः उपस्थित देखैत अछि। ‘मुक्त भेल बजार’क अन्तिम प्रश्न संग्रहक आरम्भिक विद्रोहक ऊर्जा संग जुड़ि कऽ तर्काधारित संघर्षक नव सम्भावना खोलैत अछि।

३. भाषा, काव्यशिल्प आ सौन्दर्यबोध

३.१ लोकशब्द आ बहुभाषिक बनावट

संग्रहमे मैथिलीक लोकप्रयुक्त क्रिया-रूप, देसी वस्तुनाम, गारि, अपभ्रंश, मिथक, ग्रामीण श्रमक शब्दावली संग ट्राम, फ्रिज, प्रेस्टिज कुकर, लेटर बॉक्स, ब्लड बैंक, अल्ट्रा वायलेट रेज, प्रक्षेपास्त्र, हाईब्रिड, मॉल आदि आधुनिक पद संग-संग भेटैत अछि। ई मिश्रणक कारण सामाजिक जीवनक विविध स्तर एके भाषिक सतहपर आबि जाइत अछि। हिन्दी, अंग्रेजी आ संस्कृत-सूत्रक सीमित उपस्थितिकें मैथिली आवाजक भीतर काव्यात्मक रणनीति मानल जा सकैछ; ई शोध स्वयं मैथिली गद्यभाषामे प्रस्तुत अछि।

३.२ मुक्तछन्द, कोलाज आ नाटकीय वक्तव्य

बेसिभाग कविता मुक्तछन्दमे अछि; कतहु प्रश्नक झड़ी, कतहु लम्बा अनुच्छेद, कतहु मात्र दू-तीन पाँती, कतहु एक-एक शब्द अलग पाँतीमे। ‘विष्णुर्योनिम्’क दृश्यविन्यास, ‘कविताश्री पाटलिपुत्रम्’क पूर्णविराम-प्रयोग, ‘साँझ’क लयबद्ध लघुचित्र आ ‘चारि लाख बानरक बीच’क नाटकीयता एहि विविधताक दृष्टान्त अछि। छन्दबद्ध गानक अभावक अर्थ लयक अभाव नहि: सम्बोधन आ पुनरुक्ति संघर्षक अलग मौखिक लय रचैत अछि।

३.३ बिम्बक प्रमुख परिवार

आगि-प्रकाश, रोग-शरीर, जानवर-भीड़, घर-देवाल, खेत-भूख, युद्ध-अस्त्र, नगर-मंच आ धर्म-अनुष्ठान—ई आठ प्रतीकपरिवार लगभग पूरा संग्रहमे पुनः-पुनः सक्रिय होइत अछि। ‘गिद्ध’ आ ‘कैंसर’मे मृत्युक दाह; ‘नव घर उठे’ आ ‘घून लागल वटवृक्ष’मे संरचनाक क्षय; ‘साँझ’ आ ‘अग्नि-शिखा’मे प्रकाशक रूपान्तर—एहि सम्बन्धसभकेँ पढ़लासँ संग्रहक आन्तरिक संगठन अधिक स्पष्ट होइत अछि।

३.४ व्यंग्यक तीक्ष्णता आ अर्थक जोखिम

गदहा, कुकुर, बानर, सियार, साँप, गिरगिट, गिद्ध आदिक बिम्ब सत्ताधारी वर्गक विवेचनमे अत्यन्त कड़क अछि। एहन व्यंग्य लोकपाठक लेल त्वरित भावानुभूति दैत अछि, मुदा कखनहुँ मानवीय व्यवहारक जटिलताकेँ एक जानवर-प्रकारमे समेटि देबाक जोखिम सेहो अछि। रचनाक मौलिकता आ सीमा दूनूक सही समझ एहि द्वन्द्वसँ बनैत अछि।

४. कविता-वार विशद विवेचन : सभ ५५ स्वतंत्र पाठ

निम्नलिखित क्रम मूल पोथीक वास्तविक मुद्रित पृष्ठ-क्रमक अनुसरण करैत अछि। प्रत्येक टिप्पणीमे पहिने कथ्य आ सन्दर्भ, तकर बाद शिल्प, प्रतीक वा आलोचनात्मक अर्थक विचार देल गेल अछि। कोष्ठकक पृष्ठ मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ थिक।

१. शहरसँ गाम धरि (पृ. ९-११)

संग्रहक आरम्भमे कवि अपनाकेँ ‘बताह’ बनि नगरसँ गाम धरि पसरैत आगिक रूपमे कल्पना करैत छथि। ई पागलपन निष्क्रियताक प्रतिरोधक नाम थिक। शहरी लुटेरा, गामक सूदखोर महाजन, भ्रष्ट नेता, बैमान मुखिया आ शिक्षा-संस्थाक विफलता एके सामाजिक संकटमे जुटि जाइत अछि। सीता, सरस्वती, रावण, कोशी, कमला आ बलानक उल्लेखसँ मिथिलाक सांस्कृतिक भूगोल राजनीतिक भाषा बनैत अछि। कविक रोष कोनो एकटा व्यक्तिपर नहि, शोषणक समूचा जालपर केन्द्रित अछि।

प्रारम्भ आ अन्तमे आगि बनि पसरबाक कथनक पुनरावृत्ति कविताकेँ वृत्ताकार बनबैत अछि। नदीक पानि अन्तिम आशा आ अनियंत्रित प्रतिरोध दुनूक प्रतीक बनैत अछि। ‘जन-क्रांति’क

कामना स्पष्ट अछि, मुदा आगि-संबद्ध अतिशयोक्ति आ युद्धक बिम्बकें काव्यात्मक आह्वानक रूपमे बुझबाक चाही, ऐतिहासिक घटनाक शाब्दिक भविष्यवाणी मानि नहि।

२. एक बुट्टी मासु (पृ. १२-१३)

एहि कवितामे सरकारी आश्वासन, पदवी आ कुरसीकें ‘एक बुट्टी मासु’क प्रलोभन बना कऽ देखाओल गेल अछि। लोक आ संगठन एहि छोट लाभ पर टूटि पड़ैत अछि आ अपनहि वर्गसँ लड़बाक क्रममे सामूहिक अधिकार बिसरि जाइत अछि। विषधर साँप, कुकुर आ हड्डीक बिम्ब निर्बल जनसमुदाय आ सत्ताक असमान सम्बन्धकें उघारैत अछि। कविक तीख आक्षेप नेता, छात्र, बुद्धिजीवी आ राजनीतिक कार्यकर्ता सभक दिशि समान रूपेँ गेल अछि।

‘गीता’, ‘कामसूत्र’ आ ‘विद्यापति पदावली’क उल्लेख एतय ग्रन्थ-विरोध नहि, सन्दर्भसँ काटल आत्मतुष्ट पाठनपर व्यंग्य अछि। मातृभाषा आ मायकें स्वीकार नहि करबाक चित्र सांस्कृतिक आत्मविस्मृतिक चरम रूप अछि। प्रश्नवाचक आ अपमानबोधक वाक्य पाठककें आत्मालोचन दिस धकेलैत अछि।

३. एक डिब्बा क्रांति (पृ. १४-१५)

कवि शासनक बलप्रधान यथार्थकें उद्घाटित करैत कवि-लेखक, छात्र आ आम जनता सँ प्रश्न पुछैत छथि। अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीकें स्थान देबाक माँग, मातृभाषामे पढ़बाक अधिकार आ जातिक नामपर भोट दऽ कऽ अयोग्य प्रतिनिधि जितेबाक प्रवृत्ति कविता मध्य मुख्य विषय अछि। शब्द, कलम आ जनबलक बीच राजनीतिक प्रभावक सम्बन्धक पड़ताल कएल गेल अछि। ‘डिब्बा’ नाम राजनीतिक क्रांतिक पैकेटबद्ध, खोखल आ प्रदर्शनकारी स्वरूपपर सेहो संकेत करैत अछि।

पुनरावृत्त सूत्र ‘बल जकर लाठीमे’ आदि लोकप्रचलित कहावतक व्यंग्यात्मक परिवर्तन अछि। कठोर ललकारक अन्तर्गत कवि आन्दोलनक वास्तविक तैयारी आ आत्मसंयमक प्रश्न उठबैत छथि। आक्रोशक स्वरक संग भाषिक अधिकारक ठोस माँग एकर विशेषता अछि।

४. हे हमर अग्रज शान्त भऽ जाउ (पृ. १६-१७)

ई रचना पीढ़ीगत संघर्षक सीधा वक्तव्य अछि। कवि अपन ‘अग्रज’ पीढ़ीकें सुविधाभोगी, पदलोभी, आत्मसंतुष्ट आ मातृभाषाक प्रति उदासीन कहि संबोधित करैत छथि। डिबरी, तेल,

सलाइक काठी, क्लर्क, पीउन, सभा, ताश आ चौपड़क विवरण जीवनक तुच्छ दिनचर्या आ अपूर्ण सार्वजनिक उत्तरदायित्वकेँ सोझाँ अनैत अछि। मुख्य आग्रह अछि जे पुरान नेतृत्व नव पीढ़ीक मार्गमे अवरोध बनि नहि ठाढ़ होअए।

आदेशात्मक शीर्षकमे सतही विनय अछि, भीतर तीक्ष्ण व्यंग्य। ‘शान्त भऽ जाउ’ मृत्यु-कामना नहि, सार्वजनिक नेतृत्व छोड़ि नवतुरियाकेँ काम करबाक अवसर देबाक राजनीतिक आग्रह अछि। छोट-छोट लोकजीवनक उपमान आ प्रश्नवाचक आवेग कविताकेँ भाषणात्मक होइतहुँ जीवंत बनबैत अछि।

५. बंगाल बन्द (पृ. १८-१९)

‘बन्द’क अवसरपर कलकत्ताक शहरी जीवन भय, गोली, बम, गिरफ्तारी आ प्रशासनिक दमनक आच्छादनमे अछि। अलीपुर जेल, नक्सलाइटक नामपर युवा रक्तक उल्लेख आ पी.डी. एक्टक चर्चा एकटा विशेष राजनीतिक वातावरणक पाठ-संकेत अछि। एहि त्रासक बीच कलुआ चमार आ चतुरा चमाइनक घरेलू संवाद आम जनक जिएबाक व्यावहारिक चिन्ता उभारैत अछि। फलतः सार्वजनिक ‘बन्द’ आ निजी भूख-भयक बीच दूरी बनैत अछि।

सर्द लाश सन शहर आ दैनिक बोलचालक हिन्दी-मिश्रित संवाद एक-दोसरक विरोधी लय रचैत अछि। कवि केवल नारा नहि दैत छथि; लोकजीवनक हास्य, असहायता आ विरोधाभासकेँ एक दृश्य-कवितामे समेटैत छथि।

६. साँझ (पृ. २०)

ई लघुकविता संग्रहक तीक्ष्ण राजनीतिक स्वरक बीच एकटा सौन्दर्य-बिन्दु अछि। झीलक जलपर सूरजक लालिमा मानू आगिसँ लिखल कोनो नाम अछि, आ साँझ मानू लेटर-बॉक्समे राखल मिलनक चिट्ठी। एहि दृश्यमे प्रकृति आ शहरी संचारक वस्तु सहजहि एक भऽ जाइत अछि। प्रकाशक क्षयकेँ कवि वियोग नहि, पुनर्मिलनक प्रतीक्षा बना दैत छथि।

मात्र किछु पाँतीमे प्रतीक, दृश्यात्मकता आ मानवीकरणक संयमित प्रयोग भेल अछि। ‘आगि’ एतय विनाशक नहि, प्रेमिल आलोकक संकेत अछि; इएह शब्दक अर्थविस्तार बुझब संग्रहक समग्र पाठ लेल आवश्यक अछि।

७. मैथिल ललना (पृ. २०)

चौरंगीमे देखाओल मैथिल स्त्रीक काजर, सेनुर, ओरहुल-सन रंगल ठोर, ललका छोटक साड़ी आ चप्पल-विहीन पएर कविताक दृश्य रचैत अछि। महानगरक आधुनिक सड़क आ मिथिलाक पारम्परिक वस्त्र-विन्यासक भेंटमे पहचानक द्वन्द्व उपस्थित अछि। स्त्रीकें केवल 'पिछड़ल' वा 'आधुनिक' कोनो एक श्रेणीमे रखब एकर पाठकें संकीर्ण करब।

ई शब्दचित्र बहुते लघु अछि; वर्णनात्मक अन्तःदृष्टिक अतिरिक्त स्त्रीक अपन स्वर अनुपस्थित अछि। तें स्त्री-अध्ययनमे ई सीमा विचारणीय अछि। रंग आ भेषक संयोजन एकर संक्षिप्त दृश्यात्मक शक्ति अछि।

८. साँप (पृ. २१)

निर्जन, निस्तब्ध दिवसकें कवि सड़कपर पड़ल मृत साँपक रूपमे देखैत छथि। लोक निज घरक कारागारमे बंद अछि; शोर नहि, संग्राम नहि। बाह्य शान्तिक भीतर भय आ जीवित सामाजिक चेतनाक अभाव एहिमे व्यक्त भेल अछि। साँप साधारणतया संकट वा विषक प्रतीक मानल जाइत अछि, मुदा एतय ओकर मृत रूप सार्वजनिक निष्क्रियताक द्योतक बनैत अछि।

उपमानक उलट प्रयोग कविता कें तीक्ष्ण बनबैत अछि। स्तब्ध दिन, घर-कारागार आ अनमोन सड़कक तीन बिम्ब मिलि राजनीतिक कायरताक दृश्य रचैत अछि। एकर मौन, संग्रहक अनेक उग्र कविताक विपरीत, स्वयं एकटा प्रतिरोधी कथन बनैत अछि।

९. मास्टर साहेब (पृ. २१)

ई लघु व्यंग्य शिक्षकक बदलैत भाषा, परिधान आ घरे-घरे घूमबाक व्यवहारक आधारपर बनल अछि। मुँहमे पान, हाथमे घड़ी, कखन अंग्रेजी कखन हिन्दी, कखन पारम्परिक धोती कखन पैंट—एहि विवरणसँ पेशागत अस्थिरता आ बाह्य प्रदर्शन चित्रित अछि। शिक्षकक ज्ञानक चर्चा नहि, हुनक सामाजिक छविक अभिनय कविताक लक्ष्य अछि।

अन्तिम कुकुर-उपमा अपमानक मार्मिक तीक्ष्णता बढ़बैत अछि, मुदा एहन सामान्यीकरण सभ शिक्षकपर लागू करब उचित नहि। सामाजिक प्रकारक व्यंग्यक रूपमे पढ़ला पर कविता अधिक सार्थक अछि।

१०. मैथिली आन्दोलन (पृ. २२)

भाषा-अधिकारक आन्दोलनकेँ बच्चाक फुस्स भऽ गेल बम-पटाखासँ तुलना कएल गेल अछि। जनताक जागरणक अपेक्षामे बारम्बार प्रतीक्षा आ निष्क्रियता कविताक मुख्य व्यंग्य अछि। संघर्षक नामपर प्रतीकात्मक आयोजन तऽ होइत अछि, मुदा ओकर परिणाम नहि निकलैत—कवि एहि अन्तरकेँ प्रश्नांकित करैत छथि।

साधारण घरायसी पटाखाक बिम्ब राजनीतिक दावाक खोखलापन तत्काल देखबैत अछि। अतिलघु आकार व्यंग्यक तेज धार बढ़बैत अछि। संग्रहक आन आन्दोलनधर्मी कविताक संग पढ़ला पर ई रचना स्वपक्षीय आत्मालोचन सेहो थिक।

११. मिनि गर्ल (पृ. २२)

‘मिनि गर्ल’मे पारदर्शी कपड़ा, देह-यष्टि आ नाप-जोखक संख्याक माध्यमसँ शहरी फैशनक एकटा तीक्ष्ण दृश्य देल गेल अछि। स्त्रीक देहकेँ मापमे बदलि देबाक उपभोक्तावादी दृष्टि एतय स्पष्ट देखाइत अछि। मुदा कविताक कथन स्वयं एहन वस्तुकरणक आलोचना करैत अछि कि ओकर पुनरुत्पादन, से प्रश्न खुलल रहैत अछि।

सूची-जकाँ छोट पदावली, संख्यात्मक संकेत आ देह-संबन्धी विवरण एकर प्रयोगधर्मी विन्यास अछि। स्त्रीक व्यक्तित्वक अनुपस्थिति एकटा महत्वपूर्ण आलोचनात्मक सीमा मानल जाएबाक चाही।

१२. माइ डियर इन्दिरा (पृ. २३–२४)

शीर्षकमे अंग्रेजी संबोधनक संग भारतीय सत्ताकेँ प्रत्यक्ष पत्र-जकाँ पुकारल गेल अछि। भाषाकेँ अष्टम अनुसूचीमे स्थान देबाक माँग, आश्वासनक अस्वीकृति आ मैथिलीभाषी जनताक आत्मसम्मान कविता मध्य केन्द्रित अछि। कमला-बलान आ कोशीक गर्जना, मिथिलाक भौगोलिक विस्तारक नाम आ लव-कुशक स्मृति एक आन्दोलित सांस्कृतिक समुदायक चित्र बनबैत अछि।

‘आगि’, ‘दमकल’, ‘धीपल लोह’ आ ‘ललकार’क अनुक्रम भावनाक तीव्रता बढ़बैत अछि। शीर्षकक आत्मीयता आ कविताक कड़ा राजनैतिक स्वरक विरोधाभास महत्त्वपूर्ण अछि। कविता केँ तत्कालीन माँगक काव्यात्मक दस्तावेजक रूपमे पढ़ब, मुदा ओकर रचनातिथि बिना प्रमाण निश्चित नहि करब।

१३. स्वाधीनताक आँगनमे (पृ. २५-२६)

स्वाधीन देशक आँगनमे ठाढ़ छात्र, मजदूर आ किसान वास्तविक स्वतंत्रतासँ वंचित छथि। छात्र बेरोजगारी, परीक्षा-अव्यवस्था आ अश्रुगैस देखैत अछि; किसान रौदी-बाढ़, अनुदानक विडम्बना, राशनक पाँति आ भूखसँ जूझैत अछि। ‘जय जवान जय किसान’ सन सार्वजनिक नाराक सोझाँ जीवनक यथार्थ राखि कवि औपचारिक स्वाधीनता आ सामाजिक स्वराजक अन्तर उघारैत छथि।

एके वाक्यांशक पुनरावृत्ति विभिन्न सामाजिक पात्रकेँ जोड़ैत अछि। रामायणक सुरसा आ विकास-योजनाक ‘प्रयोगशाला’क संगति मिथक तथा आधुनिक राज्यभाषाक आलोचनात्मक सम्मिलन अछि। ई कविताक स्वर व्यक्तिगत रोषसँ बढ़ि वर्गीय साझा अनुभवधरि पहुँचैत अछि।

१४. कीर्तन (पृ. २७-२८)

कीर्तनक धार्मिक-सांस्कृतिक रूपकेँ कवि राज्य, सभा, कार्यालय आ नेताक सार्वजनिक प्रदर्शनक रूपक बना दैत छथि। हड़ताल, छुट्टी, बीयर, शरीरक बाजारू सजावट, अष्टयाम आ मंचक आयोजनक बीच प्रजातंत्रक वास्तविक दायित्व ओझराएल अछि। धार्मिक शब्दसामग्री एतय आस्था पर सार्वभौम आक्रमण नहि; पाखण्डी आयोजन द्वारा राजनीति आ समाजकेँ सुन्न बनएबाक विरोधी व्यंग्यक उपकरण अछि।

कोलाहल, दृश्य-परिवर्तन आ सूचीबद्ध उपमान कविताकेँ भीड़युक्त रंगमंच बना दैत अछि। अश्लीलता आ अनुष्ठानक टकराहटसँ सभ्यताक दिखावा प्रश्नांकित होइत अछि। अति-सघन बिम्बावली कतहु अर्थकेँ जटिल बनबैत अछि; तथापि ई जटिलता कविक विखण्डित समय-बोधसँ जुड़ल अछि।

१५. कैसर (पृ. २९-३०)

‘कैसर’ रोगकेँ सामाजिक देहक भीतर फैलैत निष्क्रियता, स्वार्थ आ संस्था-विघटनक रूपक बना दैत अछि। शिक्षक, डॉक्टर, राजनीतिज्ञ, मंत्री आ बुद्धिजीवी अपन-अपन दायित्वसँ हटि गेल छथि। कोर्ट-कचहरी, कुरसी, चुनाव, राशन, विदेशी ऋण आ मूल्यवृद्धि जनजीवनक अनेक रोग-जकाँ उपस्थित अछि। व्यक्तिक रोग नहि, कर्तव्यत्यागी समाजक कुप्रवृत्ति कविताक असली विषय अछि।

विरामहीन प्रश्नावली आ चिकित्सकीय शब्दसामग्री बहुस्तरीय संकटक अनुभूति उत्पन्न करैत अछि। ई कविता सामाजिक रोगक निदानक आवश्यकता पर बल दैत अछि, मुदा इलाजक स्पष्ट संस्थागत रूपरेखा नहि दैत अछि—ई ओकर घोषणात्मक शैलीक स्वाभाविक सीमा अछि।

१६. पूजा-गृह (पृ. ३१-३२)

पूजा-गृहमे भग्न मूर्ति, अगरबत्ती, अश्रुगैस, लाल फीता आ चुनावक सामान एके दृश्य-विधानमे उपस्थित अछि। धर्मस्थल आ प्रशासनिक दफ्तरक वस्तुसभकेँ एकत्र कए कवि बतबैत छथि जे मनुष्यता, चेतना आ न्याय कतेक खण्डित भऽ गेल अछि। शिल्पगत रूपेँ टूटल अङ्ग, सर्वनाम आ शारीरिक प्रतीक सामाजिक विघटनक दृश्यात्मक पाठ बनबैत अछि।

वस्तुसभक असामान्य संयोजन अतियथार्थवादी कोलाज-जकाँ प्रभाव उत्पन्न करैत अछि। स्त्री-देहक प्रतिमासभक उपस्थितिपर आलोचनात्मक दृष्टि आवश्यक अछि; एतय शक्तिसंरचनाक वस्तुकरण देखाओल गेल होइ, अथवा काव्यभाषा स्वयं ओकर पुनरावृत्ति करैत होइ—दुनू सम्भावना परखल जा सकैछ।

१७. चारि लाख बानरक बीच (पृ. ३३-३४)

सांस्कृतिक सभागारक भीतर चन्दा, स्वागत, भाषण, मंच-व्यवस्था, अभिनेताक प्रतीक्षा आ दर्शकक लिप्साकेँ कवि बानरक समूहक रूपमे चित्रित करैत छथि। सभागार साहित्यिक-सांस्कृतिक प्रतिष्ठानक उपहासपूर्ण प्रतिरूप बनि उठैत अछि। कार्यक्रमक मूल उद्देश्य बिसरि व्यवस्थापकक प्रदर्शन, हल्ला आ स्त्री-देहक उत्सुकतापूर्ण चर्चा प्रधान भऽ जाइत अछि।

‘बानर’, ‘हनुमान’, ‘टाइम बम’ आ ‘प्रेसर कुकर’क टकराव लोकउपमा तथा आधुनिक उपकरणक व्यंग्यकारी मेल अछि। संख्या अतिशयोक्तिक उपकरण अछि; एकरा तथ्यात्मक दर्शक-गणना मानब उचित नहि। एकर कटाक्ष साहित्यिक सभासभक आन्तरिक विडम्बनापर अछि।

१८. अपन लोकवेदक नाम (पृ. ३५-३९)

ई विस्तृत कविता संग्रहक आत्मालोचनात्मक केन्द्रसभमे एक अछि। कवि स्वयंकेँ ‘पापी’ कहि अपन माटि-पानि, लोकवेद, मजदूर, गरीब किसान, शहरी श्रमिक आ वंचित जनक दुख उजागर करबाक दायित्व स्वीकार करैत छथि। विद्यापतिक नाम, सीता, आयाची, मण्डन आदिक गौरवक

प्रतिमाक आड़मे आजुक अशिक्षा, मातृभाषाक अवहेलना आ सामाजिक असमानता नुकाएबाक प्रवृत्तिक विरोध करैत छथि। पुरान सांस्कृतिक स्मृति आ वर्तमान अभावक बीच स्थायी तनाव उपस्थित अछि।

बारम्बार अपनाकेँ दोषी कहब आत्मव्यंग्य आ नैतिक प्रतिरोधक दूहरी युक्ति अछि। ‘लोकवेद’ संग्रहमे मात्र लोकसंस्कृति नहि, जीबैत जनसमुदायक सामाजिक ज्ञान, श्रम आ अधिकारक व्यापक संज्ञा बनि उठैत अछि। एतय कविक लोकपक्षधरता सर्वाधिक प्रत्यक्ष अछि।

१९. नक्सलाइट (पृ. ४०-४१)

प्रातःक लाल सूर्य, मिसाइल, बम आ संघर्षक बिम्बसँ शुरू भऽ कविता पलायनवादी मनोदशा दिस घुरि जाइत अछि। काशीवास, घाट, पूजा आ शहरी शोषणक दृश्य केवल धार्मिक-नगरीक वर्णन नहि, चेतनासँ पलायन करैत मनुक्खक दृष्टान्त अछि। ‘नक्सलाइट’ शीर्षक सशस्त्र उथल-पुथल आ ओकर प्रति सामाजिक प्रतिक्रियाक कठिन प्रश्न उपस्थित करैत अछि।

स्वप्न, हिंसात्मक प्रतीक, शहरी देह-व्यापार आ आत्मविस्मृतिक टुकड़ा-टुकड़ा दृश्य पाठकेँ बेचैन बनबैत अछि। कवि हिंसाक समाचारक संग वर्गीय असमानता आ राजनीतिक निष्क्रियताक छिपल सम्बन्ध देखबैत छथि; एकरा सरल राजनीतिक घोषणा-मात्र बना देब उचित नहि।

२०. विद्युत-चाप (पृ. ४२-४४)

भूखक समुद्र, खेतीक संकट, कर्ज, स्कूलक फीस, मातृभाषाक पोथीक अभाव आ बेरोजगारी कविताक आधार अछि। समृद्ध खानपानक पारम्परिक स्मृतिक सोझाँ आजुक दरिद्र गृहस्थक कठोर जीवन राखल गेल अछि। ट्रैक्टर, पम्पिंग सेट, विटामिन, ब्लड बैंक आदि आधुनिक शब्द कृषि-सामाजिक यथार्थसँ जोड़ैत अछि। पूजा-पाठ मात्रसँ भूख, रोग आ आर्थिक संकट नहि मेटत—कवि कर्मशील परिवर्तनक आवश्यकता प्रतिपादित करैत छथि।

शीर्षकक ‘चाप’ दबाव, ऊर्जाक असन्तुलन आ अचानक झटकाक अर्थ उत्पन्न करैत अछि। लगातार ‘कहिया धरि’क प्रश्न व्यवस्था बदलबाक कालसापेक्ष माँग बनि उठैत अछि। एहि कवितामे श्रम, स्वास्थ्य, शिक्षा आ भाषा परस्पर जोड़ल जन-अधिकार अछि।

२१. छापामार युद्ध (पृ. ४५-४७)

ई कविता नवयुगक निर्माताकें सम्बोधित दीर्घ आह्वान अछि। बाढ़ि, रौदी, दरिद्रता, पीयर पड़ल धिया, बेरोजगार पुत्र आ वृद्ध माता-पिताक चित्रसँ व्यवस्था-विरोधक आधार बनैत अछि। नवताक चाहना संग स्त्रीक सार्वजनिक सक्रियता आ 'नारी जागृति'क प्रसंग अबैत अछि। कवि अन्याय सहन करबाक दीर्घ परम्पराकें बदलावक बाधा मानैत छथि, आ राजनीतिक संघर्षक भाषा अत्यन्त उग्र बना दैत छथि।

‘आउ’क लगातार पुनरावृत्ति गीतात्मक आवाहनक लय रचैत अछि। कवितामे शस्त्र, रण-नीति आ छापामार युद्धक पद काव्यिक राजनीतिक आग्रहक अंश अछि; आलोचनामे एहिसँ जुड़ल मानवीय क्षति, अहिंसात्मक लोकतांत्रिक सम्भावना आ भाषाक अतिशयोक्ति सेहो विचारणीय अछि। ई आक्रोशकें ऐतिहासिक सामाजिक दस्तावेजक रूपमे पढ़बाक चाही।

२२. शून्य काल (पृ. ४८—४९)

‘शून्य काल’ निर्णयहीन वर्तमानक कविता अछि। कवि कवि, इतिहासकार, बुद्धिजीवी, नेता आ मंत्री सभक निष्क्रियता वा अवसरवादसँ विचलित छथि। कार्यालयक फाइल, सरकारी फीता, घूस, चकबन्दी, मन्त्रीक शीशमहल आ लोकक बन्हकी राखल थारी एके व्यवस्थाक अनेक रूप अछि। लोकतंत्रक प्रक्रियामे सामान्य जनक दैनंदिन अपमान एहि समयकें ‘शून्य’ बनबैत अछि। अनेक प्रश्नवाचक संबोधनसँ कवि नेतृत्वक अभाव उजागर करैत छथि। कविता समस्या-सूची बनैत अछि, मुदा एही सूचीमे स्थानीय प्रशासनसँ राष्ट्रीय शासनधरि शोषणक तंत्र स्पष्ट होइत अछि। ‘शून्य’ समयक अर्थ निष्क्रिय निर्वात नहि, निर्णायक कार्यक प्रतीक्षा अछि।

२३. नव घर उठे : पुरान घर खसे (पृ. ५०—५६)

संग्रहक सभसँ विस्तृत आ घोषणात्मक रचनासभमे ई प्रमुख अछि। ‘घर’ केवल मकान नहि, सामाजिक व्यवस्था, जातीय संस्कार, परम्परागत सत्ता आ मानसिक जड़ताक रूपक अछि। पुरान संरचनाकें खसाएब आ नव आधारपर निर्माण करब—दूनू कर्म एक संग अपेक्षित अछि। मिथिलाक गौरव-गरिमा स्वीकार करैत कवि ओकर दरिद्रता, अशिक्षा, चापलूसी आ संस्थागत निर्बलताक निदान खोजैत छथि। पितृपुरुषक नामक मात्र उच्चारणक बदला वर्तमानक ठोस जिम्मेदारीपर बल अछि।

एकल शब्दक पाँती, अचानक विराम, प्रश्न, आदेश आ श्रेणीबद्ध उच्चारणसँ कविता आंदोलनकारी घोषणापत्रक रूप ग्रहण करैत अछि। ‘नव घर’क विचार रचनात्मक अछि, यद्यपि कतिपय पाँतीक रणप्रधान भाषाक लोकतांत्रिक अर्थ पर आलोचनात्मक प्रश्न उठैत अछि। कविताक मूल सामर्थ्य पुरातन प्रतिष्ठाक बजाय सामाजिक पुनर्निर्माणकें मूल्य मानब अछि।

२४. एक आओर नर्कमे धकेलल जाएबाक नाटक (पृ. ५७-५८)

सीढ़ी उतरैत रहितहुँ नर्कक अन्त नहि भेटब—ई आरम्भिक बिम्ब असफल परिवर्तनक चक्र देखबैत अछि। एकटा व्यक्ति वा दलक स्थानपर दोसर आबैत अछि, मुदा व्यवस्था सामान्य जनकें पुनः पीसैत अछि। कवि विजयोल्लासक बीच शोक, विष आ अन्धकारक प्रश्न पुछैत छथि। मातृभाषा आ मायकें मुक्त करबाक दायित्व व्यक्तिगत सुविधासँ बेसी महत्त्वपूर्ण मानल गेल अछि।

कविताक अन्तमे ‘ज्ञान नहि, नौकरी चाही’ आ ‘उपदेश नहि, काज चाही’क अभिमुखता अमूर्त विचारसँ ठोस आजीविका दिस घुर्दैत अछि। एहि कारण ई रचना नारा आ सामाजिक व्यवहारक बीचक अन्तर उजागर करैत अछि। ‘नर्क’क पुनरावृत्ति नियतिक नहि, बदलबाक योग्य व्यवस्थागत उत्पीड़नक अर्थ दैत अछि।

२५. किकिआइत कुकूरक प्रति बन्दूकसँ खेलाइत (पृ. ५९-६१)

कवि नवतुरिया रचनाकारकें यथास्थिति सँ भयभीत नहि होएबाक आग्रह करैत छथि। छलपूर्ण प्रशासक, अवसरवादी नेता, राजनीति आ ‘गरीबी हटएबाक’ खोखल घोषणा पर कटाक्ष अछि। ई कविता शब्द, भाषा आ रचनाकें संघर्षक साधन मानैत अछि; कविक दृष्टिमे प्रतिपक्षी शक्ति भेष बदलबाक कलामे पटु अछि, तें परिवर्तनकारीकें आत्मसतर्क रहबाक चाही।

‘सावधान’, ‘खबरदार’ आ ‘होशियार’ सन सम्बोधन राजनीतिक चेतावनीक लय रचैत अछि। गुलिवर आ पहाड़क आकारक बिम्ब अनुपातक उलटाव करैत अछि। एहि पाठक भाषिक ‘हथियार’कें प्रतिरोधी लेखनक रूपकक रूपमे ग्रहण केलासँ साहित्यिक दायित्व प्रमुख रूपें उभरैत अछि।

२६. विष्णुर्योनिम् (पृ. ६२)

ई लघु प्रयोगधर्मी कविता परम्परागत वाक्य-विन्याससँ हटि देह, वस्त्र, निःश्वास, स्पर्श आ संवेदनाक अलग-अलग शब्दक क्रम प्रस्तुत करैत अछि। एकटा संगठित कथा वा उपदेशक बदला इन्द्रियानुभवक विखण्डित शब्दचित्र उपस्थित अछि। संस्कृताभास शीर्षक आ लोकप्रयुक्त देह-शब्दक दूरी पाठककेँ रीतिगत पवित्रता तथा भौतिक अनुभूतिक सम्बन्धपर सोचबाक अवसर दैत अछि।

एक-एक पदक स्वतन्त्र पाँती, खाली स्थान आ अर्थक असम्पूर्णता एकर शिल्पक मूल तत्त्व अछि। यौनिक अनुभूतिकेँ एकटा निश्चित नैतिक निर्णयमे बन्द करब पाठक व्यापक सम्भावनाक हानि होएत। मुद्रित पृष्ठक दृश्यविन्यास पढ़ब एतय विशेष आवश्यक अछि।

२७. युद्ध (पृ. ६३)

दू-चारि पाँतीक एहि कवितामे कवि गहीर विभाजन आ अधिकारक प्रश्नकेँ ‘युद्ध’क प्रतिमा द्वारा देखैत छथि। हमरा-हुनका बीच पैघ अन्तर आ खाधि सामान्य समन्वयसँ भराएब कठिन होइत देखाओल गेल अछि। छोट आकारक कारण प्रत्येक पद राजनीतिक निर्णयक भार वहैत अछि। अधिकार, संघर्ष आ दूरीक रूपक अत्यन्त संक्षिप्त अछि। एतय ‘युद्ध’ सामाजिक टकरावक प्रतीक वा शाब्दिक संघर्ष—दूनू अर्थक सम्भावना रखैत अछि; आलोचनाक कार्य हिंसाक समर्थन मानि लेब नहि, वास्तविक असमानताक दाबकेँ विश्लेषित करब अछि।

२८. अपराजेय (पृ. ६३)

कवि भगवानकेँ सम्बोधित करैत अपन नझुकबाक संकल्प व्यक्त करैत छथि। आस्था, संशय आ आत्मसम्मानक टकराहट ई अल्पाक्षरी कविताक मूल विषय अछि। ईश्वरपर आश्रित होएबाक बदला वक्ता अपन निर्णय आ दृढ़ता पर भरोस करैत छथि।

दृढ़ देहभाषा—सीना तनल रहब—राजनीतिक संघर्षकेँ व्यक्तिगत नैतिक संकल्प बनबैत अछि। संग्रहक व्यापक विद्रोही शब्दावली एतय बहुत कम शब्दमे समाहित अछि।

२९. गतिशीलता (पृ. ६४)

ई छोट कविता अपन पहिचानक बदलैत प्रक्रियाकेँ स्वीकार करैत अछि। ‘आब हम ओ नहि रहलहुँ’क भाव जीवन, अनुभव आ विचारमे परिवर्तनक सूचक अछि। वक्ता अपन नव रूपक अंतिम निर्णय दोसर लोकपर छोड़ैत छथि।

आत्मपरिचयक अनिर्णीत अन्त पाठककें सक्रिय सहभागी बना दैत अछि। समूहक घोषणात्मक गीतसभक बीच ई आत्मनिरीक्षणक सूक्ष्म विराम अछि।

३०. वस्तुस्थिति (पृ. ६४)

मिथिलाक सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्यकें सिंह, बाघ, कुरुर आ बानरक रूपक द्वारा देखाओल गेल अछि। वास्तविक सामर्थ्य दुर्लभ, छलपूर्ण अनुकरण सर्वत्र; मुदा कवि आशा नहि छोड़ैत छथि जे समय आबिते मुखौटा खसत आ वास्तविक शक्ति फेरि जागत।

पशु-रूपक लोकव्यंग्यकें सहज बनबैत अछि। ‘वस्तुस्थिति’ शीर्षकक अर्थ यथार्थक कथन अछि, मुदा अन्त आशावादी भविष्यदृष्टि स्थापित करैत अछि। एकर राजनीतिक अभिप्राय पशुसभक गुण-दोषसँ जोड़ल सांकेतिक संरचनामे निहित अछि।

३१. नपुंसक नेताक नाम (पृ. ६५-६६)

ई शीर्षक नेतृत्वक आत्मसमर्पणपर तीक्ष्ण व्यंग्य अछि। कवि कहैत छथि जे मातृभाषाक लेल संघर्ष करैत शहादत देब वाला नेता अधिक सम्माननीय होइत, बजाय ओकर जे जातीय पहिचानकें निजी स्वार्थसँ बेचलनि। मर्दनसुमारीमे आन भाषाक नाम लिखाएब, गरीब लोकक पेटक मूल्यपर व्यक्तिगत लाभ उठाएब आ सांस्कृतिक अवमूल्यनक प्रसंग मुख्य आरोप छथि। ‘हम चाहैत छी’क आवर्तन वास्तविक मृत्यु-कामनाक बदला सार्वजनिक नैतिक जिम्मेदारीक चरम अतिशयोक्ति बनैत अछि। एहन आक्रामक वक्तव्यक शब्दार्थसँ अलग ओकर व्यंग्यार्थ पर विचार आवश्यक अछि। कविता नेता आ लोकक बीच उत्तरदायित्वक प्रश्न उठबैत अछि।

३२. आइ (पृ. ६७-६८)

अतीत बाकसमे बन्द, वर्तमान सड़कपर छिड़िआयल आ भविष्य कुहेसमे लाल किरिन-जकाँ भटकैत—ई कालक तीन बिम्ब कविता कें दिशा दैत अछि। शहरी आ ग्रामीण भूख, तिजोरीमे बन्द उजास, सरकारी नारा आ प्रशासनक चाटुकारिता समकालीन जीवनक द्वन्द्व बनैत अछि। लोक भोजनक बदला भाषण ‘खाइत’ अछि; मूल्यवृद्धि आ भ्रष्टाचार नागरिक अस्तित्वकें संकुचित करैत अछि।

मानवीकरण आ व्यंग्यात्मक रूपान्तरणक प्रयोग विशेष प्रभावी अछि। ‘आइ’ केवल कैलेंडरक दिन नहि, बीतल स्वाधीनता-स्वप्न आ अधूरा भविष्यक बीच अटकल पूरा समय अछि।

३३. अपराध (पृ. ६९-७०)

पुरान घर ढाहि नव सामाजिक मूल्यक स्थापना करब 'अपराध' कहल जाइत अछि—कवि एहि उलट न्यायकें चुनौती दैत छथि। परम्परागत आचार-संहिता, भाषिक प्रतिष्ठान आ स्वार्थी समीक्षक नव विचारकें दमन करैत अछि। नहि झुकबाक साहसक कारण कवि बारम्बार दण्डित होएबाक अनुभव करैत छथि, मुदा रक्तसँ नव बीज अंकुरित होएबाक बिम्ब परिवर्तनक अविनाशी सम्भावना रचैत अछि।

‘अपराध’ शीर्षक व्यंग्यात्मक उलटबाँसी अछि: वास्तविक अन्याय करनिहार प्रतिष्ठित आ ओकर आलोचक अभियुक्त। अलकतरासँ शब्द पोतब आ कएल गेल मृत्यु-दण्डक बिम्ब कलात्मक अभिव्यक्तिक दमनक रूपक अछि।

३४. गिद्ध (पृ. ७१-७२)

गिद्धक रूपक सत्ताक परजीवी स्वभावकें चित्रित करैत अछि। लोकक रक्त-मज्जाविहीन देहपर शोषकक भोजन, मूल्यवृद्धि, बाह्य सीमा-संकट आ भीतरी आतंक एके चित्रमे उपस्थित अछि। कवि व्यवस्था द्वारा लोकक गरदनि दबाएबाक परिणामस्वरूप शब्दक बारूद बनि उठबाक सम्भावना देखैत छथि।

पाँखि, मुँह, रक्त आ अस्थिक देहप्रधान बिम्ब सामाजिक अपमानकें शारीरिक बनबैत अछि। बांग्लादेशक सन्दर्भ व्यापक उपमहाद्वीपीय राजनीतिक स्मृतिक साक्षी अछि, मुदा कविताक प्रत्येक रूपककें कोनो एक ऐतिहासिक घटना सँ एकरेखीय रूपें जोड़ब उचित नहि।

३५. मुक्ति-संघर्ष (पृ. ७३-७४)

पूर्वजक बनाओल ढहनाय लागल देवालक नीचाँ पिचायल जनसमुदाय कविताक केन्द्रीय बिम्ब अछि। साझा दुःखक सम्बोधनसँ आरम्भ कऽ कवि राजनीतिक दलाल, समझौतापरस्त वर्ग, भूख आ मुँहक आहार छिनबाक अन्यायपर प्रहार करैत छथि। ‘हमर कविता’ आ ‘हमर शब्द’क उपस्थितिसँ साहित्य समाजक पीड़ाकें मात्र लिखैत नहि, ओकर सक्रिय प्रतिवाद करबाक दायित्व स्वीकार करैत अछि।

देवाल, कील, हड्डी, इस्पाती फार आ आगिक बिम्ब दुःखक देहगत तीव्रता बढ़बैत अछि। अन्तमे गरीबीक चर्चा 'फैशन' बनि जाएबाक आलोचना साहित्यिक-राजनीतिक पाखण्डकेँ एक संग पहचानैत अछि।

३६. अग्नि-शिखा (पृ. ७५-७६)

शीर्षक-कविता सम्पूर्ण संग्रहक काव्यदृष्टिक संगम अछि। असंख्य छोट-छोट उजासक बीच एकटा अग्नि-शिखा ज्ञानक दम्भ, ईर्ष्या, स्वार्थ आ कुशासनकेँ चीरबाक शक्ति मानल गेल अछि। आधुनिक विज्ञानक 'अल्ट्रा वायलेट रेज', शल्य-चिकित्सा आ 'ऑपरेशन-टेबल'क बिम्ब आगिक प्रचलित धार्मिक प्रतीककेँ नवा वैज्ञानिक रूप दैत अछि। पिता, माय, बहीन, प्रेयसी आ पत्नी सभक प्रतीक्षा संघर्षक घरेलू आ मानवीय मूल्य प्रकट करैत अछि।

सार्वजनिक मंच आ निजी शोकक पारस्परिक कटाव कविताक गहीर संवेदना अछि। अग्नि केवल विनाश नहि; रोगग्रस्त समाजक परीक्षण, मृतप्राय सम्बन्धक उष्मा आ आशाक किरण सेहो अछि। परिवारक आवाजसँ संघर्षकारी नायकक अमूर्त चित्र मानवीय बनैत अछि।

३७. ओकर गाम : ओकर शहर (पृ. ७७-७९)

ई कविता गामसँ शहरधरि भटकैत एक वंचित व्यक्तिक जीवनचरित रचैत अछि। मिथिलाक अनेक गाम, नगर आ महानगरक नाम क्रमसँ आबैत अछि; संगहि खेत, गाछी, पोखरि, पुस्तकालय, मोकदमा, छुआछूत, गरीबी, बेरोजगारी, शहरी शोषण आ पदलोलुपताक सूचि बनैत अछि। ई भूगोलक सूची केवल स्थानपरिचय नहि, श्रम आ अपमानक बिखरल अनुभवक नक्सा अछि।

लघु वाक्य आ विराम-बिन्दुक आवर्तन थाकल जीवनक छिन्नभिन्न गतिशीलता देखबैत अछि। गामकेँ निश्चल स्वर्ग वा शहरकेँ सम्पूर्ण नरक मानबाक बदला दुनू ठामक अलग-अलग कुरीति आ सम्भावना देखाओल गेल अछि। एहि कवितामे सामाजिक यथार्थ स्थान-नामक ठोस विवरणसँ प्रमाणिकता प्राप्त करैत अछि।

३८. समानधर्माक नाम (पृ. ८०-८२)

ई समान वैचारिक धरातलक लोककेँ सम्बोधित राजनीतिक आत्मपरीक्षण अछि। 'टाइगर ब्राण्ड'क खोल, भाषण दैत सियार, आश्वासनक चक्करमे पड़ल जनसमुदाय आ सेठक

तिजोरीसँ कवि सत्ताक छलावरण उधारैत छथि। लोकतंत्र, समाजवाद, न्याय आ गरीबी हटएबाक दावाक सोझाँ वास्तविक आर्थिक असमानता रखल गेल अछि। व्यक्ति 'भोट'मे सिमटि जाएब नागरिक मर्यादाक संकटक मुख्य संकेत अछि।

सीधा सम्बोधन, प्रहारात्मक उपमा आ आर्थिक शब्दसंग्रह एकर प्रधान शिल्प अछि। ई पाठ आयातित विचारक सर्वथा अस्वीकार नहि, स्थानीय यथार्थ सँ कटि गेल सिद्धान्तक असारता पर प्रश्न करैत अछि।

३९. यमराजक विदेश-यात्रा (पृ. ८३-८५)

यमराजक अनुपस्थितिमे राज्य स्वयं 'यमपुरी' बनि गेल अछि—ई व्यंग्यात्मक कथाबीज कविता केँ संचालित करैत अछि। राजधानीक भीड़, सरकारी अधिकारी, सेठक तिजोरी, अकाल, अन्धकार, आतंक, छात्रक क्रोध आ न्यायव्यवस्थाक विफलता सामाजिक मृत्युक दृश्य बनबैत अछि। मिथकीय यमराजक नाम आधुनिक शासनक क्रूरताकेँ चिह्नित करैत अछि; यमराज छथि बाहर, मुदा मृत्यु-तंत्र भीतर सक्रिय अछि।

मिथकक रूपान्तरण, वस्तुक विस्तृत विन्यास आ सरकारी हास्यास्पद आयोजनेक एकर व्यंग्यक प्रमुख स्रोत अछि। आधुनिक उपकरण, आर्थिक संसाधन आ प्राचीन कथा एकेसँग उपस्थित भऽ कऽ विचित्र राजनीतिक यथार्थ रचैत अछि।

४०. गिरगिट (पृ. ८६-८९)

कवि अवसरवादी नेताक रूप, झण्डा, दल, पोशाक आ कथन बदलबाक प्रवृत्तिकेँ गिरगिटक बदलैत रङसँ तुलना करैत छथि। बाह्य शालीनता आ भीतरक शोषणकारी प्रवृत्ति बीच तीक्ष्ण विरोध अछि। प्रशंसा, पुरस्कार, पद, जनसेवा आ विचारधाराक मुखौटासभसँ सार्वजनिक व्यक्ति अपन स्वार्थकेँ ढाँपैत अछि। एहिमे नेताक संग साहित्यिक प्रतिष्ठानक अवसरवाद पर सेहो प्रहार अछि।

परिवर्तित रंगक लम्बी शृंखला वस्तुतः चरित्रहीनताक बहुरूपिया नाट्य अछि। सौन्दर्यप्रसाधन, विदेशी वस्तु आ धार्मिक-राजनीतिक प्रतीकसभक मेल कविक क्रीड़ात्मक परन्तु कटु भाषा देखबैत अछि। एहि कविताक केन्द्र 'रूप बदलनाइ' नहि, मूल्य बदलि स्वार्थ बचेनाइ अछि।

४१. घून लागल वटवृक्ष (पृ. ९०-९४)

‘वटवृक्ष’ पुरान विशाल व्यवस्था, सांस्कृतिक संरक्षण आ सामूहिक आश्रयक परम्परागत प्रतीक अछि। कवि देखबैत छथि जे ओकर भीतर घून लागि गेल अछि: सुविधापरस्ती, रिश्तत, छद्म देशभक्ति, जाति-गोत्रक संरक्षण, पुरस्कारक सिफारिश आ जनक स्वरक उपेक्षा। कविता अनेक चिह्नित खण्डमे बढैत अछि; खण्डान्तरमे सार्वजनिक पाखण्डक अलग-अलग रूप उजागर होइत अछि। सामन्ती स्मृति आ आधुनिक संस्थागत भ्रष्टाचार परस्पर सहायक होइत देखाओल गेल अछि।

रोगग्रस्त वृक्षक रूपक दीर्घ कविता केँ एकसूत्रमे बान्हैत अछि। पुरस्कृत राजहंस, बाधक खोल, कंकालक जुलूस आ संसदक चित्र डर आ मान-प्रतिष्ठाक कृत्रिमताकेँ उघारैत अछि। ‘घून’ भीतरसँ चलैत क्षयक सूचक अछि—बाहरी भव्यतासँ जकरा नुकाएब सहज अछि।

४२. कलकत्ता आ राजकमल (पृ. ९५-१००)

राजकमल चौधरीकेँ केन्द्रमे राखि लिखल ई कविता संस्मरणात्मक श्रद्धाञ्जलि सँ आगाँ बढ़ि एक सर्जनशील विद्रोहीक व्यक्तित्वक पुनर्रचना करैत अछि। कवि राजकमलकेँ नवताक प्रवक्ता, व्यवस्थाक प्रतिपक्षी आ विश्वयुवा पीढ़ीक पक्षधर रूपमे देखैत छथि। कलकत्ताक ट्राम, कालीघाट, बेहाला, देहव्यापार, पूँजी आ शोषणक दृश्य हुनक संघर्षपूर्ण शहरी संसारक रूपमे अबैत अछि। मैथिली-हिन्दीक द्विभाषिक रचनाशीलता आ ‘कंकावती’क सन्दर्भ साहित्यिक अन्तरपाठ रचैत अछि।

कविताक राजकमल एक जीवनीक निर्विवाद तथ्यसमूह नहि, कविक मूल्यांकनसँ निर्मित रचनात्मक व्यक्तित्व अछि। एहि भेदकेँ ध्यानमे रखब शोधक लेल आवश्यक अछि। शहरी यथार्थ, काया आ आगिक घनीभूत भाषा स्वयं राजकमलक आधुनिकतावादी काव्य-जगतक संग संवाद करैत अछि।

४३. अहाँ सँ बहुत किछु कहबाक छल (पृ. १०१-१०२)

दिसम्बरक ठंढा साँझ, बस-स्टॉप, यात्रीक भीड़ आ ‘टू डाउन’क प्रतीक्षा पुरान परिचित मंजरी दासगुप्ताक स्मृति जगा दैत अछि। पूर्व-प्रेम, यौवनक समय, कार्यालयक फाइल, घरक दायित्व आ महँगाई एकेसँग वर्तमानमे समाहित अछि। प्रेमक भूतकाल केवल मधुर संस्मरण नहि: ओकर मध्यवर्ती जीवन आर्थिक आ पारिवारिक बाध्यतासँ घेरल अछि।

शहरी स्थानक सटीक संकेत आ एक व्यक्तिक प्रत्यक्ष सम्बोधन संग्रहक सामान्यतः समूहकेंद्रित स्वरमे निजी सूक्ष्मता जोड़ैत अछि। समयक प्रवाह, बदलैत रूप-रंग आ स्मृति-संबद्ध दृश्य कविता केँ आत्मकथात्मक स्वर दैत अछि, मुदा ‘हम’केँ कविक जीवनक प्रमाण मानब आवश्यक नहि।

४४. कवितायाः प्रतिवादम् (पृ. १०३-१०४)

एहि कवितामे काव्यसृजनक सामाजिक उत्तरदायित्व मूल प्रश्न अछि। साम्प्रदायिक दंगा, जातिवाद, राजनीतिक हत्या, भूख, शोषण आ आर्थिक असमानताक बीच केवल स्तवन, शोकगीत वा प्रेमपत्र लिखि संतोष पएबाक आग्रहपर कवि आपत्ति करैत छथि। कविता केँ विरोधक नैतिक शक्तिक रूपमे स्थापित कएल गेल अछि; साहित्यकारकेँ अपन पक्ष स्पष्ट करबाक माँग अछि।

संस्कृताभास शीर्षक आ सीधा ‘हे मीत’, ‘कॉमरेड’ सम्बोधन भाषिक स्तरपर द्वन्द्व रचैत अछि। अन्तक प्रश्न सभ—कविताक परिभाषा बदलय कि नहि, आत्मपरीक्षण करय कि नहि—एहि रचनाकेँ एकटा बन्द सिद्धान्त नहि, निरन्तर आलोचनात्मक संवाद बना दैत अछि।

४५. अस्ताचलगामी सूर्यकेँ प्रणाम (पृ. १०५-१०७)

डूबैत सूर्यक चित्र आ व्याप्त अन्हारक बीच कवि संघर्षरत उजासकेँ देखैत छथि। कालसमुद्रमे दीप-जकाँ चमकैत योद्धा, राति, गोली, बम, स्त्रीक आर्तनाद आ पुलिस-व्यवस्थाक निष्फलता समान दृश्यसमूह बनबैत अछि। सूर्य अस्त भऽ रहल अछि, तथापि संघर्ष समाप्त नहि; गाम, कसबा आ शहर भीतर आगि अझुओ धधकि रहल अछि।

प्रकृतिचित्रसँ राजनीतिक दृश्यक अचानक संक्रमण एकर मुख्य रचनाविधि अछि। प्रणाम समर्पणक नहि, निरन्तर संघर्षशील सूर्यक प्रति सम्मानक भाव अछि। कवि लोकक नायक-प्रतीक्षाक व्यर्थतापर प्रश्न करैत वर्तमानकेँ स्वयं जागबाक अवसर मानैत छथि।

४६. कविताश्री पाटलिपुत्रम् (पृ. १०८-१०९)

लोकतंत्रमे सरकारक विरोध करब अपराध घोषित होएबाक विडम्बना कविता केँ आरम्भ दैत अछि। कवि कविता आ विद्रोहक सम्बन्धकेँ तीक्ष्ण रूपेँ परखैत छथि: शब्द जखन जन-आन्दोलन, किसान-मजदूरक सक्रिय सहभागिता आ वास्तविक जीवनक संघर्षसँ कटि जाइत

अछि तखन ओ प्रतिष्ठानक सजावट बनि जाइत अछि। ‘विद्रोह’ आ ‘विद्रोहाभास’क भेद ई रचनाक सैद्धान्तिक केन्द्र अछि।

पूर्णविरामक असामान्य बहुलता गद्य, घोषणापत्र आ कविता बीच सीमाकेँ जानि-बूझि धुँधला दैत अछि। खून, हँसू, छूरा, नारा आ फाइलक सूची सामाजिक वर्ग आ राजनीतिक शक्तिक मानचित्र बनैत अछि। कवि साहित्यक राजनीतिक उपयोगितापर जोर दैत छथि, जकर संग कला-स्वायत्तताक प्रश्न सेहो आलोचनामे उठबाक चाही।

४७. चिट्ठीक उतारा (पृ. ११०–११२)

मोहन भारद्वाजकेँ सम्बोधित ई पत्रात्मक कविता साहित्यिक प्रकाशन आ संस्था-व्यवस्थाक आलोचना अछि। नव लेखकक पोथी छापबाक मार्गमे सम्बन्धवाद, गोत्रवाद, पदाधिकार, पुरान विद्वानक प्रभुत्व आ सिफारिशी तंत्र बाधा बनैत अछि। कर्ण, दधीचि, एकलव्य, द्रोणाचार्य, अभिमन्यु आ चक्रव्यूहक मिथकीय दृष्टान्त नव पीढ़ीक संस्थागत संघर्षकेँ उजागर करैत अछि।

‘प्रिय भाइ’क आत्मीय शुरुआत आ अन्तिम संग्रामक भाषा बीच विकसित तनाव विशेष उल्लेखनीय अछि। परम्परागत महाभारतक पात्र आधुनिक प्रकाशन-तंत्रक सत्ता-संबन्धक रूपक बनैत अछि। ई कविता संग्रहक साहित्य-संस्थान विषयक आत्मालोचनाकेँ ठोस रूप दैत अछि।

४८. लोक सुनय लागल अछि आब (पृ. ११३–११४)

लोक आब भाषणक भाषा, शासकक मुस्की आ समाजवादक खोखल दावाकेँ पहचानए लागल अछि—कविताक मुख्य कथन ई अछि। युवा-रक्त, भूखक भट्टी, शतरंजक चाल आ श्मशानक रूपक शासकवर्गक दमनकारी रूप दिखबैत अछि। अन्तमे कवि अपराधी आ शोषकक नियन्त्रणमे रहल देशकेँ अपन देश मानबाक असहमति प्रकट करैत छथि।

‘आब’क आवृत्ति जनचेतनाक बदलैत क्षणकेँ चिह्नित करैत अछि। पदचाप सुनबाक बिम्ब नव सूर्यक आगमनक आशा उत्पन्न करैत अछि। ई कवितामे जनसमुदाय केवल पीड़ित नहि, सत्ता केँ परखए लगल सक्रिय ऐतिहासिक कर्ता अछि।

४९. खबरदार (पृ. ११५)

वैश्वीकरण, भूमण्डलीकरण, विनाशकारी अस्त्र, आतंकवाद आ एकैसम शताब्दीक अस्थिरताक परिप्रेक्ष्यमे लिखल ई कविता सामूहिक सावधानीक आह्वान अछि। कथनक स्तरपर

राष्ट्र-सुरक्षा, जनशक्ति पर भरोसा आ भेष बदलल विध्वंसकारी प्रवृत्ति सँ रक्षा प्रमुख अछि। कविक नजरि आब मिथिलाक निकटवर्ती प्रश्नसँ निकलि विश्व-व्यवस्थाक संकट धरि पहुँचैत अछि।

विस्फोटक शब्दसमूह आ तीव्र चेतावनी एहि कविताक गतिकेँ संचालित करैत अछि। सुरक्षा-चिन्ताक संग लोकाधारित निर्णयक आग्रह ओकर लोकतांत्रिक सम्भावना अछि। भय पैदा करबाक शब्दावली आ विवेकपूर्ण सावधानीक बीच संतुलन आलोचनात्मक रूपेँ जाँचबाक विषय अछि।

५०. सावधान (पृ. ११६)

ई कविता यथास्थिति, जी-हजरी आ चापलूसीक विरुद्ध रचनाकारक संकल्प अछि। राजनीतिक डर वा सरकारी शक्तिक सोझाँ चुप रहने साहित्यक दायित्व पूरा नहि होइत। कवि रचनाकेँ प्रक्षेपास्त्र आ भाषाकेँ ब्रह्मास्त्र कहि शब्दक जाग्रतकारी सामर्थ्यक घोषणा करैत छथि।

‘नहि’क पुनरावृत्ति अस्वीकृतिक लय बनबैत अछि। वैचारिक रूपेँ ई पृष्ठ ५९क ‘किकिआइत कुकूरक प्रति बन्दूकसँ खेलाइत’सँ संवाद करैत अछि, मुदा शब्दशः ओकर पुनर्मुद्रण नहि: पछिला कवितामे बदलैत राजनीतिक सन्दर्भ आ ‘मानव-बम’क रूपक जुड़ैत अछि। एहि भेदकेँ पाठमे बचाएब आवश्यक अछि।

५१. होशियार (पृ. ११७)

अराजकता, घोटाला, आतंकी हिंसा, अपराधीकरण आ राज्यसत्ताक संरक्षणप्राप्त दुष्प्रवृत्ति एहि कविताक संकटसूची अछि। कवि देशक माटि-पानि आ लोकक अस्मिता दाँवपर लागल देखैत छथि। सुरक्षा केवल सीमापर नहि, राजनीति आ प्रशासनक नैतिक व्यवहारमे सेहो आवश्यक अछि।

शीर्षक स्वयं एकटा चेतावनीक शब्द। अन्तिम ‘सावधान, होशियार’क संयुक्त उच्चारण पछिला दू कविताकेँ लघु चेतावनी-त्रयी बनबैत अछि। एहि त्रयीमे प्रतिरोधी भाषा, सार्वजनिक सतर्कता आ नागरिक अधिकार परस्पर गुंफल अछि।

५२. देश-दर्शन : बीसम शताब्दीक सीमान्तपर (पृ. ११८–१२२)

ई दीर्घ कविता शताब्दी-अन्तक सामाजिक-राजनीतिक समग्र दृश्यक प्रयास अछि। चारा घोटाला, हवाला, सेंट किट्स, बाजारू माध्यम, उपभोक्तावादी अर्थनीति, इलेक्ट्रॉनिक विज्ञापन, जाति-धर्मक राजनीति आ पर्यावरण-संकट—एहि सभकेँ कवि एक व्यापक मूल्यविघटनक रूपमे जोड़ैत छथि। ‘एक मंचपर’ पश्चिमी लोकप्रिय संस्कृति आ भारतीय शास्त्रीय संगीतक उपस्थितिकेँ सांस्कृतिक मिश्रणक बिम्ब बनाओल गेल अछि।

समाचार-शैलीक विवरण, कथोपकथन आ आक्रोशपूर्ण उपमा रचनाकेँ समकालीन युग-आलेखक स्वर दैत अछि। सांस्कृतिक आदान-प्रदानकेँ केवल पतन मानबाक बजाय कविता जे आर्थिक असमानता, राजनीतिक अवसरवाद आ मीडियाक सम्मोहन देखबैत अछि ताहि कारणक पृथक विवेचन जरूरी अछि। ई बहुस्तरीय पाठक आलोचनात्मक मूल्यांकन अछि।

५३. गुजरातनामा (पृ. १२३-१२४)

‘गुजरातनामा’ साम्प्रदायिक हिंसाक विरुद्ध लिखल गहन प्रतिरोध-कविता अछि। कवि हिंसक भीड़क क्रूरता, स्त्री आ बच्चापर अत्याचार, प्रशासनिक निष्क्रियता आ राजनीतिक विजयोल्लासक अमानवीयता पर क्षोभ व्यक्त करैत छथि। ‘बड़ लाज लगैछ हमरा’क आत्मस्वीकृति पीड़ित लोकक संग समयपर नहि ठाढ़ भऽ सकबाक नैतिक अपराधबोध रूपमे अबैत अछि।

शीर्षक एकटा सार्वजनिक घटना-स्मृतिक काव्यात्मक साक्ष्य बनैत अछि; एहिमे वर्णित आरोपकेँ ऐतिहासिक निष्कर्षक रूपमे उद्धृत करबाक लेल स्वतंत्र दस्तावेजी सत्यापन जरूरी अछि। कविता केँ सर्वप्रथम मानवीय करुणा आ साम्प्रदायिक हिंसा-विरोधक प्रत्यक्ष वक्तव्यक रूपमे पढ़बाक चाही।

५४. चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः (पृ. १२५-१३१)

संस्कृतसूत्ररूप शीर्षक आ वर्तमान धर्म-जाति-सम्प्रदाय आधारित वोट-राजनीतिक चित्र बीच कविता गहीर विरोध रचैत अछि। अपहरण, फिरौती, अपराधीकरण, पुलिस-व्यवस्थाक असफलता, धनबल, जातीय विखण्डन आ बौद्धिक मौनक विस्तृत चित्र देखाओल गेल अछि। धर्मक नामपर चलैत प्रपंचक सोझाँ वास्तविक नैतिक न्यायक प्रश्न प्रमुख होइत अछि। ‘लोकतंत्र’ कहाएतहुँ सर्वहारा जनक निःशब्द होएब कविक मूल चिन्ता अछि।

लम्बा बयान, समाचार-जकाँ विवरण, आक्रोशपूर्ण विशेषण आ विरोधाभासी दृश्य एकर रचनात्मक उपकरण अछि। शीर्षकक शास्त्रीय भाषा आधुनिक सत्ता-व्यवहारक नैतिक शून्यताकें परखबाक माप बनैत अछि। उद्धृत संस्कृतसूत्रक दार्शनिक मूल-प्रसंग आ एहि कविताक व्यंग्यार्थकें एक नहि मानबाक चाही।

५५. मुक्त भेल बजार (पृ. १३२-१३५)

संग्रहक अन्तिम कविता आर्थिक उदारीकरण आ बाजारवादक सामाजिक प्रभाव पर केन्द्रित अछि। टेलीविजन, फ्रिज, मॉल, बिग बजार, बहुराष्ट्रीय कम्पनी, विज्ञापन आ विदेशी मालक आकर्षणक मध्य देशी उद्योगक संकट, मजदूरक दुरवस्था, वर्गीय विषमता आ मध्यमवर्गक आकांक्षाक चित्र अछि। बजार ‘मुक्त’ होइतहुँ जनजीवन मुक्त नहि—शीर्षकक मुख्य विडम्बना ई अछि।

कवि खरीद-बिक्री, उपभोक्ता-लालसा आ मीडियाक प्रभावक संग जातीय-साम्प्रदायिक विखण्डनक सम्बन्ध देखैत छथि। अन्तिम प्रश्नसभ बाजारवादी व्यवस्थाक विकल्प, सामाजिक संघर्षशीलता आ तर्काधारित परिवर्तनक दिशि पाठककें भेजैत अछि। एहन आलोचनाक संग बाजारसँ उत्पन्न नवा अवसरक प्रश्न सेहो शोधक समीक्षात्मक बहसक अंश भऽ सकैत अछि; मूल पाठक पक्ष स्पष्ट रूपेँ शोषित जनसँ जुड़ल अछि।

५. समेकित आलोचनात्मक मूल्यांकन

५.१ संग्रहक विशिष्ट उपलब्धि

‘अग्नि-शिखा’क मूल सफलता ई अछि जे साहित्यिक भाषा समाजक वंचित जनक प्रश्नकें केन्द्रमे रखैत अछि, आ कविता स्वयं अपन सांस्कृतिक समाजक पक्षपात, निष्क्रियता आ संस्थागत पाखण्डसँ मुठभेड़ करैत अछि। एहि संग्रहमे मैथिली भाषिक अधिकारक दस्तावेज, मिथिलाक भूगोलक जन-इतिहास, राजनीतिक व्यंग्यक प्रखर उदाहरण आ आधुनिक मुक्तछन्दक प्रयोगशाला—चारू रूपमे पढ़ल जा सकैछ।

५.२ अनुभव आ घोषणाक तनाव

कवितामे जखन रौदी, बाढ़ि, मडुआक रोटी, स्कूलक फीस, माँक प्रतीक्षा, बस-स्टॉप आ श्रमिकक देहक ठोस अनुभव उपस्थित अछि तखन पाठ विशेष घनत्व पबैत अछि। जखन एके

पाँतीमे अनेक राजनीतिक नारा, अपमानजनक विशेषण वा हिंसात्मक प्रतीक जमा भऽ जाइत अछि तखन कतहु कविता घोषणामुखी भऽ पड़ैत अछि। तथापि ई द्वन्द्व कविक समयबोधक अभिन्न अंश अछि; एकरा नकारि देब नहि, तकर कार्य-कारण समझबाक चाही।

५.३ लोकपक्षधरता आ प्रतिनिधित्वक सीमा

कवि श्रमिक, स्त्री, किसान, छात्र आ वंचित लोकक पक्षमे स्पष्ट उभैत छथि। मुदा सभ पात्र समान रूपेँ अपन स्वरमे नहि बजैत छथि। स्त्रीक देह वा जाति-नामक व्यंग्यात्मक प्रयोग पर आलोचनात्मक जाँच जरूरी अछि जे शोषण-विरोधी भाषा स्वयं कतहु पुरान अपमानक पदावलीक पुनरुत्पादन तऽ नहि करैत। जनवादी साहित्यक गहीर मूल्यांकनमे ई प्रश्न उपेक्षित नहि रहबाक चाही।

५.४ इतिहासक संग पाठक सम्बन्ध

इन्दिराक नाम, संवैधानिक भाषा-आन्दोलन, नक्सलाइट, गुजरातक हिंसा, राजनीतिक घोटाला आ उदारीकरणक प्रसंग संग्रहक ऐतिहासिक महत्त्व बढ़बैत अछि। मुदा कविता इतिहासक मौलिक अभिलेख नहि, इतिहासक अनुभवक कलात्मक पुनर्रचना अछि। घटनाक काल, विधिक स्थिति आ दावासभक सत्यापन लेल सरकारी अभिलेख, स्वतंत्र ऐतिहासिक दस्तावेज आ समकालीन समाचारक अलग अनुसंधान अपेक्षित होएत।

५.५ राजकमल-संवाद आ आधुनिक मैथिली कविता

‘कलकत्ता आ राजकमल’मे राजकमल चौधरीकेँ नवताक पक्षधर आ विद्रोहीक रूपमे प्रस्तुत करब साहित्यिक परम्पराक भीतर संवादक संकेत अछि। राजकमल पर बाह्य आधुनिकतावादी अध्ययन हुनकर बहुभाषिकता आ प्रयोगशीलताकेँ रेखांकित करैत अछि; मुदा ‘अग्नि-शिखा’क कविक राजकमल-विवेचनकेँ एहि अध्ययने स्वतः सिद्ध करैत अछि, एहन दावा नहि कएल जा सकैत अछि। प्राथमिक प्रमाण मल्लिकक अपन कविता थिक।

६. निष्कर्ष

‘अग्नि-शिखा’मे जनपक्षधर कविता मिथिलाक भाषा-आन्दोलन, राजनीतिक असंतोष, जाति-व्यवस्था, भूख, श्रम, स्त्री-अनुभव, सांस्कृतिक पाखण्ड आ बाजारवादी विषमताक एक व्यापक आलोचनात्मक प्रतिमान बनबैत अछि। कविक कविता निर्जीव प्रशंसा अथवा निष्क्रिय

सांस्कृतिक गौरवक विरोधमे अछि। ओ अपन लोकवेदक पक्षधर छथि, मुदा ओकर भीतरक यथास्थितिपर सेहो प्रश्न उठबैत छथि। ई द्वंद्व एकर प्रमुख जीवन्तता अछि।

सभ ५५ कविताक पाठसँ स्पष्ट अछि जे एहि संग्रहमे ‘आगि’क वास्तविक अर्थ सदिखन रक्तपात नहि, प्रायः चेतनाक ऊष्मा, आत्मालोचन, अन्यायसँ असहमति आ नवजीवनक संभावना अछि। कविता जतय उपदेशात्मक वा कठोर होइत अछि, ओतहु ओकर मूल चिन्ता जनक मानवीय गरिमा अछि। एहि कारण पुस्तककेँ केवल राजनीतिक नाराक संकलन नहि, आधुनिक मैथिली कवितामे भाषा, सत्ता आ लोकजीवनक संग्रामक बहुआयामी साहित्यिक दस्तावेज मानि पढ़ल जाएबाक चाही।

परिशिष्ट : सम्पूर्ण ५५ कविता, मूल पृष्ठ आ अनुक्रमणिकाक क्रम

मूल ‘कविता-क्रम’क ५० प्रविष्टिक अनुरूप क्रम देल गेल अछि। जाहि प्रविष्टिमे दू अलग कविता अछि, तकर संख्या एके मूल प्रविष्टि सँ जोड़ल गेल अछि। एतय अनुक्रमणिकाक संयुक्त शीर्षककेँ अलग-अलग कविता रूपमे देल गेल अछि।

मूल कविता-क्रमक प्रविष्टि ६ (साँझ/मैथिल ललना), ७ (साँप/मास्टर साहेब), ८ (मैथिली आन्दोलन/मिनि गर्ल), २४ (युद्ध/अपराजेय) आ २५ (गतिशीलता/वस्तुस्थिति)मे दू-दू स्वतंत्र कविता अछि।

कविता	मूल क्रम	नाम	पृष्ठ
1	1	शहरसँ गाम धरि	९-११
2	2	एक बुट्टी मासु	१२-१३
3	3	एक डिब्बा क्रांति	१४-१५
4	4	हे हमर अग्रज शान्त भऽ जाउ	१६-१७
5	5	बंगाल बन्द	१८-१९
6	6	साँझ	२०
7	6	मैथिल ललना	२०
8	7	साँप	२१

कविता	मूल क्रम	नाम	पृष्ठ
9	7	मास्टर साहेब	२१
10	8	मैथिली आन्दोलन	२२
11	8	मिनि गर्ल	२२
12	9	माइ डियर इन्दिरा	२३-२४
13	10	स्वाधीनताक आँगनमे	२५-२६
14	11	कीर्तन	२७-२८
15	12	कैंसर	२९-३०
16	13	पूजा-गृह	३१-३२
17	14	चारि लाख बानरक बीच	३३-३४
18	15	अपन लोकवेदक नाम	३५-३९
19	16	नक्सलाइट	४०-४१
20	17	विद्युत-चाप	४२-४४
21	18	छापामार युद्ध	४५-४७
22	19	शून्य काल	४८-४९
23	20	नव घर उठे : पुरान घर खसे	५०-५६
24	21	एक आओर नर्कमे धकेलल जएबाक नाटक	५७-५८
25	22	किकिआइत कुकूरक प्रति बन्दूकसँ खेलाइत	५९-६१
26	23	विष्णुर्योनिम्	६२
27	24	युद्ध	६३
28	24	अपराजेय	६३
29	25	गतिशीलता	६४
30	25	वस्तुस्थिति	६४
31	26	नपुंसक नेताक नाम	६५-६६
32	27	आइ	६७-६८

कविता	मूल क्रम	नाम	पृष्ठ
33	28	अपराध	६९-७०
34	29	गिद्ध	७१-७२
35	30	मुक्ति-संघर्ष	७३-७४
36	31	अग्नि-शिखा	७५-७६
37	32	ओकर गाम : ओकर शहर	७७-७९
38	33	समानधर्माक नाम	८०-८२
39	34	यमराजक विदेश-यात्रा	८३-८५
40	35	गिरगिट	८६-८९
41	36	घून लागल वटवृक्ष	९०-९४
42	37	कलकत्ता आ राजकमल	९५-१००
43	38	अहाँ सँ बहुत किछु कहबाक छल	१०१-१०२
44	39	कविताया: प्रतिवादम्	१०३-१०४
45	40	अस्ताचलगामी सूर्यकेँ प्रणाम	१०५-१०७
46	41	कविताश्री पाटलिपुत्रम्	१०८-१०९
47	42	चिट्ठीक उतारा	११०-११२
48	43	लोक सुनय लागल अछि आब	११३-११४
49	44	खबरदार	११५
50	45	सावधान	११६
51	46	होशियार	११७
52	47	देश-दर्शन : बीसम शताब्दीक सीमान्तपर	११८-१२२
53	48	गुजरातनामा	१२३-१२४
54	49	चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः	१२५-१३१
55	50	मुक्त भेल बजार	१३२-१३५

अध्याय २ • वीरेन्द्र मल्लिकक साहित्य

अथातो काव्य जिज्ञासा

४६ कविताक अध्ययन • प्रकृति, वैश्वीकरण, मातृभाषा आ कविताक आत्मविवेचन

मूल अनुक्रमणिकाक आधार पर पूर्ण कविता-सूची

क्र.	कविता	मूल पृष्ठ	प्रधान विषय
1	अशोक वृक्ष	11	प्रकृति, दृश्य
2	बबूर गाछ	12	प्रकृति, जिजीविषा
3	श्यामा सुन्दरी	13	रेलगति, प्रकृति
4	आदिवा सीक घर	14	आदिवासी, घर
5	पटना सँ आयल अछि संवाद	15-17	सत्ता, संवाद
6	बारूदक ढेरी पर कविता क संग	18-21	हिंसा, प्रतिरोध

क्र.	कविता	मूल पृष्ठ	प्रधान विषय
	खेलाइ त धन्य थिक		
7	ब्रह्माणी नदीक जल	22-26	नदी, पर्यावरण
8	एक टा छल गाम हमर	27-32	गाम, स्मृति
9	अबंड जकाँ बौआइ त	33-36	उत्सव, उपभोक्तावाद
10	मैथिली बरनी	37-39	क्षणचित्र, प्रकृति
11	महाना यकक अरण्य- यात्रा	40-43	राजनीति, पूँजी
12	शाइन इंडिया	44-46	विकासक व्यंग्य
13	शंकरा चार्य	47-48	धर्म, आचरण

क्र.	कविता	मूल पृष्ठ	प्रधान विषय
14	आहि रे बा! आहि रे बा!!	49-50	लोकव्यंग्य
15	कर्मकां ड	51-52	धर्म, कर्म
16	कालच क्र	53-54	समय, विवेक
17	अथातो काव्य जिज्ञा सा	55-57	कविता-दर्शन
18	हिसाब- किताब एलेक्श	58-60	विकास, जवाबदेही
19	न! एलेक्श न!	61-62	चुनाव, नारा
20	भाषा ठाढ़ बजार मे ओ	63-64	भाषा, बजार
21	करत मौज!	65-66	शासन, संसदीयता

क्र.	कविता	मूल पृष्ठ	प्रधान विषय
	ओ करत राज!!		
22	रेल! रेल!!	67-68	लोकतंत्र, प्रदर्शन
23	नेता- पुराण	69-70	व्यंग्य, नेता
24	कविता बिकबा लए तैयार	71-72	साहित्य, वस्तुकरण
25	एक पयर हो सदा माटि पर	73-74	माटि, आडम्बर
26	बीच सड़क पर	75	आम आदमी, भूख
27	डांस! डेमोक्रे सी डांस!	76	जनतंत्र, तमाशा
28	विकल्प नहि	77-78	राजनीतिक विकल्प

क्र.	कविता	मूल पृष्ठ	प्रधान विषय
	आर कोनो		
29	आइ- क्यू	79	शिक्षा, समाज
30	पार्टनर	80	साझेदारी, सत्ता
	अपन		
31	दुलरु आक नाम	81-82	वंशवाद, परिवार
32	इनटॉल रेंस	83-84	सहनशीलता, समाज
33	बुलेट बन्दूक	85	हिंसा, बंदूक
34	मातृभा षा	86	मातृभाषा, शिक्षा
	किराया		
35	क मकान	87	जीवन, अनित्यता
36	बजार	88	बाजार, पूँजी
37	वैश्वीकर ण	89-91	भूमण्डलीकरण
38	युग- संदेश	92	युगचेतना, संघर्ष
39	टा-टा! बाइ-	93-95	स्त्री, आधुनिकता

क्र.	कविता	मूल पृष्ठ	प्रधान विषय
	बाइ!!		
40	भोला बाबू	96-97	मैथिलीसेवा
41	कलम सिपाही : राजक मल	98	साहित्यिक स्मृति
42	वाक्- विमर्श	99-100	शब्द, साहित्य
43	अथ कविता उवाच	101-104	कविता, विश्व
44	घर- बाहर	105-107	घर-बाहर, राजनीति
45	जय हो मानव जातिक जय हो	108-109	मानवता, शान्ति
46	बन्न करू ड्रामा श्रीमान	110-111	नागरिक व्यंग्य

वीरेन्द्र मल्लिक एहि संग्रहमे ४६ कविता अछि। कविता-दर-कविता व्याख्याक संग प्रकृति, सामाजिक प्रतिरोध, भाषिक अधिकार आ समकालीन सभ्यताक प्रश्न पर विचार कएल गेल अछि।

समग्र काव्य-संसारक प्रमुख प्रश्न

कविता, जीवन आ नैतिक प्रतिबद्धता

संग्रहक शीर्षक कविता ‘अथातो काव्य जिज्ञासा’मे कविता केवल मनोरंजनक वस्तु वा अलंकारिक चमत्कार नहि, जीवनक लेल आवश्यक संवेदना अछि। खेत, मजदूर, न्याय, शब्द, भाषाक प्राण आ जनजीवनक अभाव कविता लेल वस्तु-क्षेत्र बनैत अछि। ‘कविता बिकबा लए तैयार’ एहि मूल्यबोधक उलट दृश्य अछि: कविता मालक रूपमे बिकबाक भय। ‘वाक्-विमर्श’ आ ‘अथ कविता उवाच’ लेखनक आत्मपरीक्षणक दोसर विस्तार अछि। एहि चारू रचनाकें संग पढ़लासँ कविक काव्य-दर्शन स्पष्ट होइत अछि—कविता सामाजिक असत्यक पर्दा हटाबय, मुदा स्वयं बाजारू प्रतिष्ठा वा केवल उपदेशमे विलीन नहि भऽ जाए।

जनतंत्र, सत्ता आ सार्वजनिक भाषाक विडम्बना

‘पटना सँ आयल अछि संवाद’, ‘एलेक्शन! एलेक्शन!’, ‘ओ करत मौज! ओ करत राज!!’, ‘रेल! रेल!!’, ‘नेता-पुराण’, ‘डांस! डेमोक्रेसी डांस!’, ‘विकल्प नहि आर कोनो’ आ ‘घर-बाहर’ सत्ता-संरचना, विज्ञापन, शासन, भ्रष्टाचार आ वंशवादी प्रवृत्तिक बारम्बार परीक्षण करैत अछि। एतय जनतंत्रक शब्द आ जनताक अनुभूति बीचक दूरी प्रमुख तनाव अछि। ध्वन्यात्मक शीर्षक, उद्गार, आवृत्ति आ प्रत्यक्ष सम्बोधन लोकसभाक भाषण, चुनावी नारा आ जनविमर्शक नाटकीयताकें कविताक रूपमे मोड़ैत अछि। मुदा शक्ति एकर सीधापनमे अछि तँ जोखिम सेहो एहिमे अछि: कतेको पाँति विचारक उद्धोष बनि जाइत अछि।

बजार, उपभोक्तावाद आ भूमण्डलीकरण

‘शाइन इंडिया’, ‘महानायकक अरण्य-यात्रा’, ‘भाषा ठाढ़ बजार मे’, ‘कविता बिकबा लए तैयार’, ‘बजार’ आ ‘वैश्वीकरण’मे उपभोक्ता समाजक आलोचना केन्द्रीय अछि। विकासक चमकक पाछाँ असमानता, सांस्कृतिक वस्तुकरण, श्रमिकक असुरक्षा आ भाषाक उपयोगितावादी अवमूल्यन देखाओल गेल अछि। बाजारकें कवि मात्र खरीद-बिक्रीक स्थान नहि,

एहन सामाजिक विवेक-विधान बुझैत छथि जतय मूल्यमापक मनुख नहि, मुनाफा बनि जाइत अछि। ‘शाइन इंडिया’क चमकीला शीर्षक आ कविता-श्रमक जमीन-सापेक्ष दृश्य बीचक टकराव एकर प्रभावकारी तकनीक अछि।

गाम, वन, नदी आ बदलैत पारिस्थितिकी

‘अशोक वृक्ष’, ‘बबूर गाछ’, ‘श्यामा सुन्दरी’, ‘आदिवासीक घर’, ‘धन्य थिक ब्रह्माणी नदीक जल’, ‘एक टा छल गाम हमर’ आ ‘अबंड जकाँ बौआइत’ प्रकृति-विषयक सामान्य सौन्दर्य वर्णनसँ आगाँ बढ़ैत अछि। कटैत गाछ, रेलक खिड़की, विस्थापित बसाहट, प्रदूषण, जंगलक उन्मूलन, नदीक स्मृति आ अराजक सामूहिक दृश्य मिलि एकटा बदलैत धरतीक दस्तावेज बनैत अछि। लघु दृश्य सँ आरम्भ भऽ किछु कविता सभ विस्तृत सामाजिक आख्यानक रूप लैत अछि। एहि विस्तारसँ प्राकृतिक छवि आ सत्ता-संरचनाक सम्बन्ध पढ़ल जा सकैत अछि।

भाषा, मातृभाषा आ सांस्कृतिक अस्मिता

‘मैथिली बरनी’, ‘मातृभाषा’, ‘भोला बाबू’ आ ‘भाषा ठाढ़ बजार मे’ कहैत अछि जे भाषा केवल संचारक औजार नहि, पीढ़ीक स्मृति आ सामुदायिक आत्मसम्मानक स्थल अछि। अंग्रेजी प्रभुत्व, शिक्षा-नीति, प्रकाशन-प्रतिष्ठा आ भाषायी विकल्पक दबाव कविक चिन्ताक विषय अछि। ‘मैथिली बरनी’क लघु खण्ड सभ अलग-अलग दृश्यसँ प्रादेशिक जीवनबोध रचैत अछि। ‘भोला बाबू’मे व्यक्तित्वक माध्यमसँ मातृभाषाक जनजागरण चिन्हित होइत अछि। एहि काव्य-दृष्टिमे मैथिलीप्रेम राजनीतिक अर्थ ग्रहण करैत अछि, केवल भावुक अनुराग नहि रहैत अछि।

वर्ग, जाति, आदिवासी आ वञ्चित मनुष्य

कवि सामाजिक असमानताकेँ सूक्ष्म निजी पीड़ा आ संरचनात्मक अन्यायक दुनू स्तर पर पढ़बाक आग्रह करैत छथि। ‘आदिवासीक घर’मे प्राकृतिक परिवेश आ अभावक सह-अस्तित्व अछि; ‘बारूदक ढेरी पर कविताक संग खेलाइत’मे वर्ग-चेतना, हिंसा, विस्थापन आ प्रतिरोधक जटिल सम्बन्ध भेटैत अछि। ‘विकल्प नहि आर कोनो’ भूख आ राजनीतिक निष्क्रियताक असह्य परिणाम देखबैत अछि। जँ कवि वञ्चितक पक्षमे बाजैत छथि तँ आलोचककेँ ई सेहो देखबाक चाही जे अनेक स्थाने वञ्चित पात्र स्वयं विस्तृत आवाज नहि पाबि, कविक नैतिक

वक्तव्यक अन्तर्गत उपस्थित छथि। एहन प्रश्न कविता-संग्रहक महत्त्व घटबैत नहि, ओकर पाठक आर जिम्मेवार बनबैत अछि।

धर्म, कर्मकाण्ड आ नैतिक विवेक

‘शंकराचार्य’, ‘कर्मकांड’, ‘कालचक्र’ आ ‘आहि रे बा! आहि रे बा!!’मे धर्मसँ अधिक धार्मिक सत्ता, दम्भ, ढोंग आ नैतिक पतनक आलोचना अछि। कवि कर्म आ आचरणक सम्बन्ध खोजैत छथि। ‘कर्मकांड’मे उच्च मानदण्डक अभाव, शिक्षा आ उद्योगक नामपर विसंगति देखाओल गेल अछि; ‘कालचक्र’मे समयक रेखीय प्रगतिवाद पर अविश्वास अछि। एहि पाठमे विश्वासक समस्त रूपक निषेध देखब अनुचित होयत; मूल निशाना धार्मिक प्रतीकक राजनीतिक दुरुपयोग आ मनुष्यक प्रति असंवेदनशीलता अछि।

स्त्री-अनुभव आ सामाजिक विषमता

‘टा-टा! बाइ-बाइ!!’मे आधुनिकता, देह, शिक्षा, स्त्री-सम्मान आ पितृसत्तात्मक दृष्टिक टकराव अछि। ‘धन्य थिक ब्रह्माणी नदीक जल’क जीवंत नदी-कल्पना आ ‘बन्न करू ड्रामा श्रीमान’क स्त्री-असमानताविरोधी हस्तक्षेप विषयक आर फैलाबैत अछि। कविक संवेदना स्त्रीक सम्मानक पक्षमे अछि, मुदा किछु प्रस्तुति स्त्रीक स्वतन्त्र कथावाचकक बदला सामाजिक विमर्शक प्रतीक बना सकैत अछि—ई आलोचनात्मक सावधानी अपरिहार्य अछि।

साहित्यिक स्मृति आ जनकवि-परम्परा

‘कलम सिपाही : राजकमल’, ‘भोला बाबू’, ‘वाक्-विमर्श’ आ शीर्षक कविता साहित्यिक परम्परा-सँ कविक आत्मसंवाद रचैत अछि। राजकमलक रचनाशीलता, भोला बाबूक भाषिक योगदान, पूर्ववर्ती कविताक स्मृति आ समकालीन कविक संकट मिलि आलोचनाक केन्द्र बनैत अछि। शास्त्रीय संकेत ‘अथातो’ आ आधुनिक बोलचालक मिश्रण एहि काव्य-संसारक अपन रूप अछि। कवि काव्य-शिल्पक मानवता आ सामाजिक न्यायसँ अलग कए नहि देखैत छथि।

भाषा-शिल्प : आह्वान, पुनरावृत्ति आ बहुस्तरीय शब्दावली

संग्रहमे मैथिली मूल व्याकरण आ लोक-स्वरक संग संस्कृतनिष्ठ पदावली, हिन्दी सँ आएल राजनीतिक शब्द, अंग्रेजी-प्रेरित शीर्षक (‘आइ-क्यू’, ‘शाइन इंडिया’, ‘इनटॉलरेंस’, ‘डांस! डेमोक्रेसी डांस!’) आ आधुनिक तकनीकी-सामाजिक शब्द भेटैत अछि। ई मिश्रण कोनो

साधारण भाषिक विचलन नहि; कविताक सामाजिक संसार स्वयं बहुभाषिक अछि। ‘अछि’, ‘सँ’, ‘कै’, ‘भऽ’, ‘जकाँ’, ‘ककरो’, ‘मुदा’ जकाँ मैथिली रूप मूल धरातल बनबैत अछि। आवृत्तिपूर्ण पदबन्ध, व्यंग्यात्मक सम्बोधन, खण्डित लय, प्रश्नवाचक वाक्य आ सूचीबद्ध आरोप एक प्रकारक जनमंचीय कविता सृजित करैत अछि। गीतिमय लघु कविता आ विस्तृत मुक्तछन्द दुनू संग-साथ उपस्थित अछि।

अन्तर्विरोध आ कलात्मक उपलब्धि

एहि संग्रहक पैघ गुण ओकर स्पष्ट जनपक्षधरता, समकालीन विषयक साहसिक सामना आ भाषा-प्रकृतिक बीच सहज आवाजाही अछि। लघु प्राकृतिक कविता सभमे संयमित बिम्ब; दीर्घ सामाजिक कविता सभमे वेगवान कथन; आ व्यंग्यात्मक रचनामे नारा-ध्वनि व्यंजित होइत अछि। सीमाक प्रश्न सेहो अछि: बहुधा कवि मुद्दाक नाम सीधे लैत छथि, जाहिसँ पाठकक खोजबाक अवकाश घटि सकैत अछि; ‘बजार’, ‘भ्रष्टाचार’, ‘विकास’, ‘साम्राज्यवाद’ जकाँ पदक अधिक प्रयोग अलग-अलग कविताक स्वरमे साम्यता अनैत अछि। तैयो विविध प्रसंग आ स्वरतत्त्व संग्रहकें एकमेव राजनीतिक घोषणापत्र बनबासँ रोकैत अछि।

कविता-दर-कविता आलोचनात्मक अध्ययन

१. अशोक वृक्ष

मूल पृष्ठ : 11 | प्रधान विषय : प्रकृति, दृश्य

कविता डाकबंगलाक आगाँक हरियर परिसर, चमकैत पानि, चहरदेवारी आ ‘स्वीमिंग सूट’ पहिरने युवतीक दृश्यसँ आरम्भ होइत अछि। बीचमे ठाढ़ अशोक वृक्ष प्रकृतिक मूक उपस्थिति अछि। एक ओर साज-सज्जा आ विलासक आधुनिक संसार, दोसर ओर बँचल गाछ—एहि छोट चित्रमे कवीक आँखि सार्वजनिक दृश्यकें सामाजिक अर्थसँ भरैत अछि। गाछक नाममे सांस्कृतिक स्मृतिक सूक्ष्म ध्वनि सेहो सुनबा मे अबैत अछि।

लघुता एहि कविताक प्रमुख शिल्प-गुण अछि। ई विस्तृत राजनैतिक कथन नहि करैत, एकटा दृश्य चुनैत अछि। पाठक स्वयं सोचैत छथि जे प्रकृतिक ठाढ़ रहब आ मनुष्यक उपभोगक प्रदर्शनक सम्बन्ध की अछि। संग्रहक आरम्भ एहन संयमित प्राकृतिक बिम्बसँ होएब महत्त्वपूर्ण

अछि, कारण आगाँक कवितामे ई प्रकृति बाजार, असमानता आ विनाशक बड़ पैघ प्रसंगसँ जुड़ि जाइत अछि।

२. बबूर गाछ

मूल पृष्ठ : 12 | प्रधान विषय : प्रकृति, जिजीविषा

बबूरक सूखल-रूखल देह, टूटल-पातर डारि, काँट आ कबूतर-नभक बीच बनल दृश्य असहज जीवनशक्तिक बिम्ब अछि। फूल वा फलसँ हीन होइतहुँ गाछ ठाढ़ अछि; ओकर देह पर समयक कठोरता लिखल अछि। कवितामे कतहु पात, कतहु फूल, कतहु किछु चिह्न—सामान्य प्रकृति-दर्शनक बदला संघर्षक स्मृति बनि जाइत अछि।

एहि कविता केँ ‘अशोक वृक्ष’क बगलमे पढ़लासँ हरियरी आ रूखापन, सज्जित परिसर आ उपेक्षित जीवनक विरोध देखाइत अछि। कवि बबूरकेँ केवल कुरूप नहि कहैत छथि; ओकर प्रतिरोधी अस्तित्वक रेखाचित्र बनबैत छथि। वर्णनक संक्षिप्त पाँति आ दृश्य-प्रधान भाषा कविताकेँ संयत करैत अछि।

३. श्यामा सुन्दरी

मूल पृष्ठ : 13 | प्रधान विषय : रेलगति, प्रकृति

रेलक खिड़कीसँ दिसैत कारि-श्याह पहाड़, दूर-पसरल हरियरी, छूटैत गाछ आ बारम्बार बदलैत दृश्य एहि कविताक आधार अछि। ‘श्यामा सुन्दरी’ नाम नव-विवाहिता जकाँ लजाइत-हुलुकैत पहाड़क मानवीकरण बनि जाइत अछि। चलैत रेलक गति आ स्थिर प्राकृतिक वस्तुक बीचक अन्तर सँ एकटा कोमल सौन्दर्य पैदा होइत अछि।

कवितामे आँखि चलायमान दृश्यांकन महत्त्वपूर्ण अछि। खिड़की प्रकृतिक भीतर पैसब नहि, ओकरा दूरसँ देखबाक चौखट बनैत अछि। ई दूरीक बोध संग्रहक बादुक गाम-विस्थापनक प्रसंगसँ जुड़ैत अछि। लयात्मक आ सहज पाँति सभमे प्रेमिल उपमा अछि, मुदा शीर्षकक सौन्दर्यवादी सम्भावना सामाजिक अन्य विषयक संग राखलासँ कविक अनुभव-क्षेत्रक विविधता प्रकट होइत अछि।

४. आदिवासीक घर

मूल पृष्ठ : 14 | प्रधान विषय : आदिवासी, घर

पहाड़क खोह, स्वच्छ नील आकाश, टुकड़ा-टुकड़ा उजास, दूरक गहर, जेठक सुखल पात आ बिजुलीक क्षणिक चमक—एहि संकेतसँ आदिवासी बसाहटक चित्र बनैत अछि। प्रकृतिक नजदीकी आ घरक जर्जरता एकहि दृश्यमे अछि; कवि नैसर्गिक रमणीयताकेँ सम्पूर्ण सुखक पर्याय नहि बनबैत छथि।

कविताक सामाजिक अर्थ ओकर संयमित संरचनामे निहित अछि। अभावक वर्णन करैतहुँ ई लोकजीवनकेँ महज दया-पात्र नहि बनबैत; स्थान, मौसम आ रोजमर्राक अवयव सँ ओकर अस्तित्व देखबैत अछि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ ध्यान देबाक विषय ई अछि जे आदिवासी समुदाय अपन वाणीमे एतय विस्तृत नहि बाजैत अछि; कविक दृष्टि बाह्य दृश्य-संवेदनाक माध्यमसँ काज करैत अछि। एही सीमा-सँ ओकर यथार्थवादी तात्पर्यक परीक्षण होइत अछि।

५. पटना सँ आयल अछि संवाद

मूल पृष्ठ : 15–17 | प्रधान विषय : सत्ता, संवाद

आरम्भक कथन—संसारमे मानवीय सहवासक टूटब, वर्ग-चेतनाक क्षरण आ आत्मीय सम्बन्धक स्थानपर स्वार्थक विस्तार—महानगरीय राजनीतिक चेतनाक संकट चिन्हित करैत अछि। पटना नाम मात्र भौगोलिक सूचना नहि, सत्ता आ संवादक केन्द्रक संकेत अछि। कविता धीरे-धीरे निजी जीवनसँ साहित्यिक संसार आ सार्वजनिक संघर्ष दिस बढ़ैत अछि।

लम्बा मुक्तछन्दक एहि रचनामे पुनरावृत्ति, नाटकीय मोड़ आ आरोपात्मक वाक्य प्रयोग भेल अछि। ‘संवाद’क शीर्षक आ संवादहीन समाजक वर्णनक बीच विडम्बना निर्माण होइत अछि। कविक जिज्ञासा ई थिक जे जे समाज अपनेक मनुखकेँ सुनब छोड़ि देत, ओतय कविताक भूमिका की रहि जाएत। लय कतहु भाषणक नजदीक पहुँचैत अछि, मुदा एही भाषणात्मकता रचनाक अस्थिर समयकेँ पकड़ैत अछि।

६. बारूदक ढेरी पर कविताक संग खेलाइत

मूल पृष्ठ : 18–21 | प्रधान विषय : हिंसा, प्रतिरोध

कविताक उद्घाटन आत्म-प्रश्नसँ होइत अछि: हम कोन अपराधक यातना सहि रहल छी, कोन जन्मक अभिशापक भार उठबैत छी, आ कोन सुनसान भूभागमे फँसल छी? आगाँ खेत, जंगल, जाति-वर्गक विभाजन, नगरीकरण आ शोषणक अनेक दृश्य जुड़ैत जाइत अछि। ‘बारूदक ढेरी’

हिंसक समाजक धधकैत आधार अछि; ताहि पर कविता-संग खेलायब जीवित रहबाक नैतिक साहसक संकेत।

एहि दीर्घ रचनामे ‘हम’ एक व्यक्तिमात्र नहि, समाजक दमनित चेतनाक प्रतिनिधि बनि जाइत अछि। प्रकृति, घर, श्रम, अधिकार आ सामाजिक अन्याय आपसमे गाँथल अछि। मुक्तछन्दक लम्बा प्रवाह कविताकें आत्मकथन आ जनकथनक संगम बनबैत अछि। आलोचित पक्ष ई जे कविता भयक बीचो आवाज बनेबाक आग्रह करैत अछि; कलात्मक जोखिम ई जे विषयक अधिकता किछु ठाम छवि कें सूचीमे बदलि दैत अछि।

७. धन्य थिक ब्रह्माणी नदीक जल

मूल पृष्ठ : 22-26 | प्रधान विषय : नदी, पर्यावरण

ब्रह्माणी नदीक जल, पयर डुबायब, हिलकोर, जलक स्पर्श आ नित नूतन अनुभव एहि कविताक अनुभवकेन्द्र अछि। नदी मात्र प्राकृतिक संसाधन नहि; शरीर, स्मृति, तृषा, जीवन-प्रवाह आ स्त्री-पुरुषक पारस्परिक सृजनक प्रतीक बनैत अछि। जलक पवित्रताक अनुभूति कोनो रूढ़ विधिसँ नहि, देह आ संवेदनाक प्रत्यक्ष अनुभूतिसँ उपजैत अछि।

कविता अपेक्षाकृत दीर्घ अछि, जाहिमे जल-गतिशीलताक अनुरूप लहरदार वाक्य-विन्यास भेटैत अछि। नदीक माध्यमसँ कवि प्राकृतिक ऊर्जाक पुनर्जन्मक विचार व्यक्त करैत छथि। ‘अशोक वृक्ष’क छोटे दृश्यक तुलनामे एतय प्रकृति सम्पूर्ण अनुभवक दर्शन बनैत अछि। तैओ सभ रूपककें केवल रहस्यवाद न मानि प्राकृतिक जीवनक सामाजिक महत्त्वसँ जोड़ब उचित होयत।

८. एक टा छल गाम हमर

मूल पृष्ठ : 27-32 | प्रधान विषय : गाम, स्मृति

‘एक टा छल गाम हमर’ स्मृतिक मार्मिक उद्घोष अछि। अपन ओ घराड़ी, आम-बकाइन, निमक गाछ, बाबा, मेलाक स्वाद, खेल, लोक-पर्व, पड़ोस आ गामक अनेक दृश्य क्रमशः उपस्थित होइत अछि; तकर विपरीत वर्तमानमे गामक पहिचान, परम्परा आ सामाजिक सम्बन्ध बदलि गेल अछि। ‘छल’ शब्द सम्पूर्ण कविताक काल-चेतना बनैत अछि।

ई मात्र अतीतक मिठासक गुणगान नहि; विनष्ट सामुदायिक जीवनक सामाजिक शोकलेख अछि। जातीय सम्बन्धक तनाव, नवी राजनीतिक व्यवहार, भाषा-संस्कृतिक क्षय आ बदलैत

जीवनशैली स्मृतिक पाछाँक कठोर पक्ष देखबैत अछि। लम्बा सूचीविधान कखनो आत्मीय सँधनता अनैत अछि, कखनो पाठक सँ धैर्य माँगैत अछि। तथापि कविता आधुनिक मैथिल गामक सांस्कृतिक अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण पाठ अछि।

९. अबंड जकाँ बाँआइत

मूल पृष्ठ : 33-36 | प्रधान विषय : उत्सव, उपभोक्तावाद

सुसज्जित पंडाल, दुर्गापूजा, अनियंत्रित भीड़, मंच, फैशन, 'चैलेंज', 'डुप्लीकेट' आ नवउपभोक्तावादी प्रदर्शनक उल्लेखसँ कविता बेचैन भीड़क चित्र रचैत अछि। शीर्षकक 'अबंड जकाँ बाँआइत' अनुभव सामाजिक दिशाहीनताक रूपक अछि: लोक चलि रहल अछि, मुदा गति आ उद्देश्यक बन्धन टूटि रहल अछि।

विविध दृश्यक टुकड़ा-टुकड़ा जमावट शहरी उत्सवक कोलाहल केँ अनुकरण करैत अछि। धार्मिक आयोजन, मनोरंजन, मंचीय संस्कृति आ वाणिज्य जखन एकहि दृश्य बनि जाइत अछि तँ कवि मनुष्यक विवेकक स्थान पूछैत छथि। एहि रचनाक एक सफलता ओकर बहुध्वनिक भाषा अछि; सीमा ई जे सांस्कृतिक दृश्य पर कविक असहमति किछु ठाम व्यापक सामाजिक भेदकेँ एकहि दोषमे समेटि दैत अछि।

१०. मैथिली बरनी

मूल पृष्ठ : 37-39 | प्रधान विषय : क्षणचित्र, प्रकृति

ई कविता अनेक क्रमाङ्कित लघु खण्डमे रचल गेल अछि। दीप, करेज, पात, झड़ैत पात, जल, कँकाल गाछ, मौन आ प्रकृतिक बदलैत रूप छोट-छोट दृश्य बनैत अछि। प्रत्येक अंशक आकार क्षणचित्रक जकाँ अछि; अर्थ पूर्ण व्याख्या सँ बेसी संकेत आ विराममे सँचारित होइत अछि।

'बरनी' शीर्षक देखैत पाठक अनुभूतिक रंग आ प्रकृतिक विभिन्न छटा दिस आकृष्ट होइत छथि। कविता संग्रहक लम्बा राजनीतिक भाषणात्मक खण्डसँ सर्वथा भिन्न शिल्प प्रस्तुत करैत अछि। अतिसंक्षिप्त पाँति, विरल शब्द आ अनकहल अर्थक कारण एहि रचनाकेँ मुक्तक-समूह वा सूक्ष्म बिम्बक शृङ्खला रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि। एकर प्रयोग संग्रहक अभिव्यक्ति-विविधताक महत्त्वपूर्ण प्रमाण अछि।

११. महानायकक अरण्य-यात्रा

मूल पृष्ठ : 40–43 | प्रधान विषय : राजनीति, पूँजी

लोकतंत्र, गणतंत्र, सरकारी प्रचार, मुद्रा, व्यापार, विदेशी कम्पनी आ पूँजीक महाजाल एही कविताक व्यापक पृष्ठभूमि अछि। ‘महानायक’ शब्दक व्यंग्यार्थ सत्ता द्वारा निर्मित नायक-छविक आलोचना करैत अछि; ‘अरण्य-यात्रा’ कथित प्रगतिक बीच सामाजिक अंधकार, भटकल दिशा आ अनियंत्रित पूँजीक जंगलक अनुभूति जगबैत अछि।

रचना राजनीतिक अर्थतंत्र आ प्रचारतंत्रकें एकहि परिदृश्यमे देखैत अछि। समृद्धिक सार्वजनिक घोषणाक बरक्स सामान्य लोकक संसाधन-अभाव आ शासनक कुप्रबन्ध उपस्थित अछि। लम्बा पाँति आ वस्तुनामक जमावटमे व्यंग्यक धार तीख अछि। आलोचनात्मक पठनमे एकर आरोपकें ऐतिहासिक आँकड़ाक स्थानापन्न नहि मानल जाय; ई मूलतः सामाजिक अनुभूतिक काव्यात्मक अभियोग अछि।

१२. शाइन इंडिया

मूल पृष्ठ : 44–46 | प्रधान विषय : विकासक व्यंग्य

औद्योगिकीकरण, भूमण्डलीकरण, उपभोक्तावादी बजार, मजदूर, गरीब-गुरबा आ धनाढ्य वर्ग बीचक तीक्ष्ण अन्तर एहि कविताक केन्द्र अछि। चमचमाइत ‘शाइन’क छविक पाछाँ भूख, बेरोजगारी, हानि आ मानवीय विनाश देखाओल गेल अछि। शीर्षकक अंग्रेजीवाला विज्ञापन-स्वर आ कविता भीतरक सामाजिक विषमता प्रतिपक्षी अर्थ बनबैत अछि।

व्यंग्यक मुख्य प्रविधि ‘प्रगति’क प्रचलित भाषाकें जनजीवनक ठोस अनुभूतिसँ टकरायब अछि। कवि चमककें सम्पूर्ण सत्य नहि मानैत छथि। अर्थशास्त्रीय पदक प्रयोग कवितामे वैचारिक कठोरता अनैत अछि, मुदा मानव-स्वरक नजदीक जे पाँति सभ अछि, ओहि ठाम काव्यात्मक वेदना अधिक तीव्र बनैत अछि। एहि कविताक संग ‘हिसाब-किताब’ आ ‘बजार’ पढ़ब उपयोगी अछि।

१३. शंकराचार्य

मूल पृष्ठ : 47–48 | प्रधान विषय : धर्म, आचरण

सकल देशमे अशान्ति, आर्थिक असुरक्षा, बेरोजगारी, राजनीतिक स्वार्थ आ धर्मक नामपर बढ़ैत उन्मादक पृष्ठभूमिमे ई कविता आध्यात्मिक नेतृत्वक आचरण पर प्रश्न करैत अछि। शीर्षक एक

ऐतिहासिक-सांस्कृतिक पदवीक आवाहन करैत अछि, मुदा वर्णित संसारमे धार्मिक गुरुत्व आ मानवीय उत्तरदायित्व बीच फाँक अछि।

कविक लक्ष्य अन्ध श्रद्धाक राजनीतिक उपयोग आ जनदुखसँ विमुख प्रतिष्ठाक संरचना अछि। शब्द-सूची, प्रश्न आ नैतिक प्रतिवादक प्रयोगसँ कविता धार्मिक अधिकारक सामाजिक परीक्षा लैत अछि। आलोचनात्मक रूपेँ एकरा समस्त अध्यात्म-विरोधी पाठ मानब जल्दबाजी होयत; मूल प्रश्न ई अछि जे उच्च आदर्शक घोषणा करनिहार समाजक पीड़ा प्रति कतेक उत्तरदायी छथि।

१४. आहि रे बा! आहि रे बा!!

मूल पृष्ठ : 49-50 | प्रधान विषय : लोकव्यंग्य

लोकबोलीक उद्गारसँ रचना आरम्भ होइत अछि। झूठक ढेर, बिखरल सम्बन्ध, जातिवाद, मार्क्सवादक उधार विचार, दुर्गाक प्रतिमा आ सार्वजनिक छलछद्मक उल्लेखसँ कवि चारूकात फइलल विडम्बनाक अनुभव करैत छथि। ‘आहि रे बा’क आवृत्ति विस्मय, क्षोभ आ व्यंग्यक साझा ध्वनि अछि।

एहि कविता मे तर्कक क्रमसँ बेसी आक्रोशक क्रम काज करैत अछि। उद्गार गीतक टेक जकाँ बारम्बार घुरैत अछि आ पाठककेँ लोकमंचीय आवाज सुनबैत अछि। समानान्तर रूपेँ ई प्रश्न उठैत अछि जे धर्म, विचारधारा आ न्याय तीनू जँ नाममात्र रहि जाए, तँ मनुष्यक भरोसा कतय टिकत? कविताक धारक संग ओकर सामान्यीकरणक जोखिम सेहो ध्यान देबाक योग्य अछि।

१५. कर्मकांड

मूल पृष्ठ : 51-52 | प्रधान विषय : धर्म, कर्म

आचरणक ऊँच आदर्श आ वास्तविक व्यवहारक बीचक दूरी कविताक मूल विरोध अछि। शिक्षा, उद्योग, भ्रष्टाचार, शोषण, आतंक, दुराचार आ मानवीय स्वार्थक चित्र धर्म-आचारक चर्चा सँ जुड़ैत अछि। ‘कर्मकांड’ शब्द एतय केवल पूजा-विधानक संकेत नहि, बिना नैतिक फलवाला सामाजिक गतिविधिक आलोचना सेहो अछि।

कविता कारण-परिणामक चक्र पर विचार करैत अछि: कर्मक शिक्षा जँ मात्र खोखला नाम बनि जाए तँ चरित्रक विकास नहि होइत। पाँति सभ प्रत्यक्ष कथनक शैलीमे अछि; बिम्बक अपेक्षा

सामाजिक निदान प्रमुख अछि। ‘कालचक्र’क ठीक पहिने एहि कविताक स्थिति महत्त्वपूर्ण अछि, कारण अगिला रचना समय आ कर्मक सम्बन्धक व्यापक प्रश्न उठबैत अछि।

१६. कालचक्र

मूल पृष्ठ : 53-54 | प्रधान विषय : समय, विवेक

कविता भूतक जड़ता छोड़ि वर्तमानक कर्म सँ भविष्य निर्माणक आग्रह करैत अछि, मुदा तत्काल मिथ्या भाग्यवाद, स्वर्ग-नरकक द्वैत आ खोखला तर्कक आलोचना सेहो करैत अछि। समयक गति अन्धविश्वासक विरोधमे प्रमाण बनैत अछि। ‘कालचक्र’क प्रचलित आध्यात्मिक संकेतकेँ कवि तर्क आ सामाजिक क्रियाशीलताक क्षेत्रमे खींचि अनैत छथि।

लघु, घोषणात्मक पाँति सभमे विचारक गति अछि। समय एतय नियतिक अपरिवर्तनीय चक्र नहि, मानवीय हस्तक्षेपक सम्भावना सेहो अछि। कविता ‘कर्मकांड’क प्रतिपक्ष गढ़ैत अछि: अनुष्ठानक बदला कर्म, अन्धमान्यताक बदला विवेक। यद्यपि तर्कशील कथनक कारण अर्थ बहुत सोझाँ अछि, युगचेतनाक स्तर पर ई रचना संग्रहक नैतिक केन्द्रकेँ व्यक्त करैत अछि।

१७. अथातो काव्य जिज्ञासा

मूल पृष्ठ : 55-57 | प्रधान विषय : कविता-दर्शन

शीर्षक कविता एक स्पष्ट प्रश्न करैत अछि—कविता कतऽ सँ सुनल जाइत अछि? उत्तर जीवनक लेल, भूखक लेल, भाषा आ शब्दक प्राण लेल, बेकारक लोक, मजदूर, किसान आ न्यायसँ वञ्चित मनुष्यक पक्षमे अछि। खेतक रंग, अन्न आ गहूमक सीस, अमीरक अँगर आ गरीबक चाल—विभिन्न सामाजिक बिम्ब एकहि रचनामे उपस्थित अछि।

‘अथातो’क दार्शनिक गम्भीरता आ ‘कविता’क जनपक्षी प्रतिज्ञा मिलि संग्रहक काव्य-सिद्धान्त बनबैत अछि। कविता स्वयं अपन परिभाषा देबाक प्रयत्न करैत अछि, मुदा शब्दक सार्थकता कविक निजी महत्वाकांक्षामे नहि, सामाजिक उपयोगितामे देखैत अछि। एहि रचनाकेँ ‘कविता बिकबा लए तैयार’ तथा ‘अथ कविता उवाच’क संग पढ़लासँ मूल्य बनाम विनिमय आ रचना बनाम प्रचारक द्वन्द्व विशेष स्पष्ट होइत अछि।

१८. हिसाब-किताब

मूल पृष्ठ : 58-60 | प्रधान विषय : विकास, जवाबदेही

विकासक सरकारी दाबी, शासनक गर्व, पुरस्कारक घोषणा, विकास-आँकड़ा आ सार्वजनिक प्रचारक पृष्ठभूमि रचनामे अछि। कवि चमकैत भाषण आ लोकजीवनक अनुभवक बीच हिसाब माँगैत छथि। ‘हिसाब-किताब’ साधारण लेखापद्धतिक शब्द नहि, लोकतांत्रिक उत्तरदायित्वक नैतिक कसौटी अछि।

कवितामे प्रशासकीय शब्दावलीक आवृत्ति उपहासमय बनैत अछि। जे उपलब्धि विज्ञापन आ सम्मानमे थिक, ओ जनताक जीवनमे कतेक उतरि रहल अछि—एहने मूल प्रश्न उठैत अछि। ‘शाइन इंडिया’क आशावादी प्रचार-छवि एहि कवितामे जाँचक विषय बनैत अछि। रचनाक शक्ति सरकारी भाषाक भीतरक विरोधाभास खोलब अछि; ओकर सीमा एतय अपेक्षाकृत कम दृश्यात्मक संयम भेटब अछि।

१९. एलेक्शन! एलेक्शन!

मूल पृष्ठ : 61–62 | प्रधान विषय : चुनाव, नारा

पाँच वर्षक बाद चुनावी बजार लगब, छोट डंठ पर बड़ नेता चढ़ब, गाँव-गाँव रंगबिरंगक वाहन, हाथ जोड़नाइ, घरे-घरे वचनक वर्षा आ भरोसाक अस्थायी व्यापार—ई सभ दृश्य लोकतंत्रक उत्सवक विडम्बना बनैत अछि। शीर्षकक दुहराओ चुनावी प्रचारक कोलाहलकें श्रव्य रूप दैत अछि।

कवितामे नेता आ मतदाता बीच क्षणिक समीपता आ दीर्घकालीन दूरीक अन्तर्विरोध भेटैत अछि। चुनावक पहिले जनताक महत्त्व बढ़ैत अछि, मुदा निर्णयक बाद ओकर अपेक्षा अनसुनी रहि सकैत अछि। लोकबोलीक लय, व्यंग्यात्मक सूची आ नाटकीय पदबन्ध एहि रचनाकें मंचीय प्रभाव दैत अछि। ई लोकतंत्रक सम्पूर्ण निषेध नहि, ओकरा सार्थक बनाबय लेल प्रश्न अछि।

२०. भाषा ठाढ़ बजार मे

मूल पृष्ठ : 63–64 | प्रधान विषय : भाषा, बजार

भाषा विज्ञापनक साधन आ मुनाफाक वस्तु बनबाक खतरा एहि कवितामे स्पष्ट कहल गेल अछि। शब्द-व्यवहारक आत्मीयता घटैत अछि, संचारक माध्यम व्यापारक संकेतमे परिणत होइत अछि, आ आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक/प्रिण्ट माध्यमक भूमिका विवादास्पद बनि जाइत अछि।

शीर्षक भाषाकें बजारमे ठाढ़ मनुष्य जकाँ देखबैत अछि—मानवीकरणक एहि रूपमे असुरक्षा गहन अछि।

‘मातृभाषा’ तथा ‘वैश्वीकरण’क संग तुलनामे ई कविता भाषिक अर्थनीतिक प्रश्न बनैत अछि। भाषा ककर हाथमे अछि, ओकरा सँ के लाभ उठबैत अछि, आ ओकर रचनात्मक मूल्य कतय बनल रहत? कवि एहि समस्त प्रश्नक उत्तर पूर्णतः नहि दैत छथि, मुदा लोक-भाषाक स्वतन्त्र महत्त्वक पक्ष लैत छथि। शब्दक क्रय-विक्रयक रूपक अत्यन्त अर्थपूर्ण अछि।

२१. ओ करत मौज! ओ करत राज!!

मूल पृष्ठ : 65–66 | प्रधान विषय : शासन, संसदीयता

राजनीतिक वर्गक निर्लज्ज स्वार्थ, कथित धर्मनिरपेक्षताक ओट, सत्ता-सुख, संसदक आत्मकेंद्रित व्यवहार आ सामान्य जनताक अपमान एहि कविताक चिन्ताक केन्द्र अछि। शीर्षकमे दोहरल ‘ओ’ सत्ताधारी वर्ग दिस संकेत करैत अछि; विरोधमे ‘हम’ वा जनता मौन मुदा उपस्थित अछि। कविता आरोपात्मक लहजामे लिखल गेल अछि, जाहिमे आवृत्ति आ तुक-ध्वनि जनाक्रोशक गति बढ़बैत अछि। संसदीय क्रियाकलापक नकारात्मक प्रतिरूप जनतंत्रक मूल्यसँ टकराईत अछि। कवि देशहितक नामपर स्वार्थसिद्धिक विडम्बना उद्घाटित करैत छथि। आलोचनामे एतबा याद राखब आवश्यक अछि जे रचना विशिष्ट काव्य-स्वरक राजनीतिक प्रतिक्रिया अछि, समस्त सांसद वा संस्थाक प्रमाणित सामाजिक प्रतिवेदन नहि।

२२. रेल! रेल!!

मूल पृष्ठ : 67–68 | प्रधान विषय : लोकतंत्र, प्रदर्शन

संसदक भीतर दलगत प्रतिस्पर्धा, सत्ता-लिप्सा, भ्रष्टाचार, नारी-अधिकार पर नारा, नीतिक प्रश्न आ जनताक आशाभंगक चित्र एहि कविताक मुख्य सामग्री अछि। ‘रेल’ शीर्षक शाब्दिक रेलगाड़ीक सामान्य दृश्यसँ भिन्न संसदक भाग-दौड़, धक्का-मुक्की आ निरन्तर हलचलक ध्वनि बनैत अछि।

पाँति-पाँतिमे सार्वजनिक मुद्दाक अनियमित जमघट अछि। ई शिल्प उद्देश्यपूर्वक राजनीतिक भीड़-भाड़क अनुकरण करैत अछि। ‘एलेक्शन! एलेक्शन!’ चुनावी मंचक दृश्य प्रस्तुत करैत अछि तँ ‘रेल! रेल!!!’ प्रतिनिधिक संस्थाक भीतरक विघटन पर केन्द्रित अछि। कविता जनहितक

वास्तविक कामक अपेक्षा करैत अछि, मुदा कतेको आरोप सीधे कहबाक कारण रूपकक विस्तार सीमित रहि जाइत अछि।

२३. नेता-पुराण

मूल पृष्ठ : 69-70 | प्रधान विषय : व्यंग्य, नेता

‘मंत्री तंत्री नेता चोर’ जकाँ छोट, प्रहारक पाँति सभ रचनाक केन्द्रीय लय बनबैत अछि। भ्रष्ट अफसर, पुलिस, वोटक अवसरवाद, शोषण, महिला-उत्पीड़न आ अपराधी-प्रभुत्वक छोट-छोट खण्ड ‘पुराण’ शब्दक व्यंग्यात्मक नवार्थ रचैत अछि। परम्परागत महागाथाक बदला आधुनिक राजनीतिक दुर्गुणक संग्रह एतय उपस्थित अछि।

रूपक आ काव्य-व्यवस्था दुनू विशेष अछि: दू-दू पाँतिक खण्ड लोककहनी वा तिखट सुभाषित जकाँ लगैत अछि। प्रत्येक खण्ड स्वतन्त्र चोट करैत अछि, मुदा समग्र रूपेँ सत्ता-व्यवस्थाक निरन्तर व्यर्थता देखबैत अछि। संक्षिप्तता ‘महानायकक अरण्य-यात्रा’क विस्तारसँ एकदम अलग अछि। पाठक पर तात्कालिक व्यंग्यात्मक प्रभाव पैघ अछि, यद्यपि सामाजिक जटिलताक सूक्ष्म विभाजन अपेक्षाकृत कम अछि।

२४. कविता बिकबा लए तैयार

मूल पृष्ठ : 71-72 | प्रधान विषय : साहित्य, वस्तुकरण

‘कविता बिकऽ रहल मण्डी मे’क आधार पर ई रचना रचनात्मकताक वस्तुकरणक तीव्र आलोचना करैत अछि। विभिन्न रंग, आकार आ भावक कविता जखन बाजारू माल बनि जाइत अछि, तखन साहित्यिक संवेदना आ प्रतिष्ठाक सम्बन्ध बदलि जाइत अछि। कविता जकरा मनुष्यक दुख-सुखक सत्य बाजबाक चाही, ओ स्वयं उपभोक्ता समाजक प्रदर्शनीक वस्तु बनबाक संकटमे अछि।

एहि कविताक सर्वाधिक प्रभावकारी बिम्ब कविता-मण्डी अछि। ‘अथातो काव्य जिज्ञासा’मे स्थापित आदर्शक ई प्रतिलोम कथा थिक। प्रश्न अछि: जनसमाजक पीड़ाकेँ स्वर देनिहार रचनाकार जँ प्रकाशनक रेट, प्रशंसा आ लेन-देनमे फँसि जाए तँ कविता अपन मूल प्रयोजन कतेक बचा पायत? कवि श्रोता आ पाठककेँ एहि प्रश्नक उत्तर सोचबाक लेल बाध्य करैत छथि। व्यंग्य सहज अछि आ आत्मालोचनात्मक सम्भावना सेहो व्यापक अछि।

२५. एक पयर हो सदा माटि पर

मूल पृष्ठ : 73-74 | प्रधान विषय : माटि, आडम्बर

पोसाक, चर्चित जन, फिल्मी नायक, अवास्तविक तमाशा, व्यर्थक चमक, विवाह-समारोहक अपव्यय आ समाजक जीवनशैलीक विसंगति एहि कवितामे भेटैत अछि। शीर्षक जीवनक जमीनसँ सम्बन्ध नहि तोड़बाक नैतिक अनुरोध अछि। ‘माटि’ एतय केवल भूगोल नहि, श्रम, व्यवहारिक विवेक आ सामान्य लोकक वास्तविकताक रूपक अछि।

रचनामे आडम्बरक आलोचना कखनो प्रसंगसँ प्रसंग दिस छलाँग लगबैत अछि। ई विखण्डित संरचना आधुनिक सार्वजनिक जीवनक अनेक असंगत दृश्यकेँ एक साथ रखैत अछि। सशक्त सन्देश ई जे महत्वाकांक्षा वा प्रतिष्ठाक संग मानवीय धरातल जोड़ल रहबाक चाही।

आलोचनात्मक रूपेँ विभिन्न उदाहरणक बीच तर्कगत सेतु कतहु कम भेटैत अछि, मुदा शीर्षकक एकता सबकेँ एक नैतिक केन्द्र दैत अछि।

२६. बीच सड़क पर

मूल पृष्ठ : 75 | प्रधान विषय : आम आदमी, भूख

बीच सड़क पर ठाढ़ आम आदमी, चारूकात उठैत धुआँ, भूख, बेरोजगारी, अभिनयमय सार्वजनिक जीवन आ राजनीतिक गहमा-गहमी एहि कवितामे केन्द्रित अछि। सड़क सार्वजनिक लोकतांत्रिक स्थानक प्रतीक अछि; बीचोबीच ठाढ़ मनुष्यक असहायता समूच जनताक उपेक्षाक बिम्ब बनि जाइत अछि।

कविता मनुष्यक भौतिक अभाव आ सार्वजनिक संस्थाक दूरावक सम्बन्ध देखबैत अछि।

दिशासूचक शब्द—उत्तर, दक्षिण, पूब, पच्छिम—समस्या सर्वत्र व्याप्त हेबाक बोध दैत अछि।

छोट पाँति आ प्रत्यक्ष कथन रचनाकेँ सहज संप्रेष्य बनबैत अछि। काव्य-पाठक लेल बड़ प्रश्न ई अछि जे सड़क पर स्थित मनुष्यक स्वरसँ जनतंत्रक असली मूल्य कतेक मापल जाइत अछि।

२७. डांस! डेमोक्रेसी डांस!

मूल पृष्ठ : 76 | प्रधान विषय : जनतंत्र, तमाशा

‘डांस’क बारम्बार आह्वान लोकतंत्रक नाटक बनि गेल सार्वजनिक जीवनक व्यंग्यात्मक श्रव्य

बिम्ब अछि। अन्याय, सरकारी शक्तिक प्रदर्शन, स्त्री-शोषण, भ्रष्टाचार आ जनसमुदायक शोरक

बीच लोकतंत्र नाच करैत दिसैत अछि। अंग्रेजी शब्द ‘डेमोक्रेसी’क संग मैथिली आ हिन्दी मिश्रित कथन सभ आधुनिक राजनीतिक भाषाक विडम्बना खोलैत अछि।

गीतक टेक जकाँ दुहराओ अपन व्यंग्यक तीव्रता बढ़बैत अछि। एतय लोकतंत्र आदर्श नहि, मंच पर बिक रहल प्रदर्शन बनि गेल अछि। अन्य समान राजनीतिक कवितासँ अलग रचना ध्वन्यात्मक तमाशाक रूप ग्रहण करैत अछि; सत्ता स्वयं नाटक बनि जाइत अछि। कविक असहमति जनतंत्रक मूल्यक प्रति उदासीनता नहि, ओकर वास्तविक लोकतांत्रिक चरित्रक माँग अछि।

२८. विकल्प नहि आर कोनो

मूल पृष्ठ : 77-78 | प्रधान विषय : राजनीतिक विकल्प

देशक जर्जरता, गरीब-गुरबाक छटपटाहट, भूख-प्यास, कमजोर नेतृत्व, भ्रष्ट व्यवस्था आ राजनीतिक दलक अवसरवादक बीच जनताक स्थिति अभावग्रस्त अछि। शीर्षक निराशाक कथन जकाँ सुनाइत अछि, मुदा कविता भीतर व्यवस्था-परिवर्तनक आवश्यकताक आग्रह सेहो अछि। ‘विकल्प’क अनुपस्थिति राजनीतिक भाषणक बनौटी बाध्यताक आलोचना बनि सकैत अछि।

रचनामे नैतिक क्षोभक स्वर प्रधान अछि। जनसमुदाय अपन आशा-अभिलाषा सँ ठगायल अछि, तँ ई निष्क्रिय रहबाक समय नहि—एहि तरहक निहित प्रश्न पाठक धरि पहुँचैत अछि। ‘एलेक्शन!’ आ ‘डांस! डेमोक्रेसी डांस!’क बाद ई कविता संकटकें चुनावी दृश्यसँ अलग करि सामाजिक विकल्पक स्तर पर राखैत अछि।

२९. आइ-क्यू

मूल पृष्ठ : 79 | प्रधान विषय : शिक्षा, समाज

गरीबी, भूखे बच्चा, शिक्षा-व्यवस्था, लोकक नैतिक दिशा आ शिक्षित वर्गक उत्तरदायित्व एहि कवितामे उपस्थित अछि। आधुनिक बुद्धिलब्धि (‘आइ-क्यू’)क शीर्षक आम लोकक व्यावहारिक संकटसँ टकराइत अछि। पढ़ाइ यदि भूख आ मानवीय अन्यायक प्रश्न नहि बुझि सकय तँ ज्ञानक सामाजिक प्रयोजन की रहि जाए—कविताक आधारभूत प्रश्न एतबे अछि।

शीर्षक अंग्रेजी ज्ञान-मापनक प्रतीक अछि, जखनकि कथ्य प्राथमिक जीवनगत मूल्यक चर्चा करैत अछि। एहि द्वन्द्वसँ व्यंग्य बनैत अछि। कवि तकनीकी दक्षताक मात्र अस्वीकार नहि, ज्ञानक सामाजिक दायित्वक पक्षधर छथि। रचनामे गुरु, शिक्षक आ युवकसँ सम्बद्ध पाँति सभ शैक्षिक विचारकें नैतिक धरातल पर आनैत अछि।

३०. पार्टनर

मूल पृष्ठ : ८० | प्रधान विषय : साझेदारी, सत्ता

मित्रता आ साझेदारीक सहज सम्बोधन धीरे-धीरे वैश्विक शक्ति-सम्बन्धक व्यंग्य बनि जाइत अछि। ‘कमासुतक बेड-पार्टनर’, अमेरिका आ अवसरवादक उल्लेखसँ कविता सम्बन्धक बाजारु अर्थपर चोट करैत अछि। ‘पार्टनर’ शब्द निजी जीवनसँ उठि राजनैतिक अर्थनीतिक गठजोड़क सूचक बनैत अछि।

रचनाक शैली संवादात्मक, कटाक्षपूर्ण आ बहुस्तरीय अछि। सामाजिक संकटमे मनुष्य ककर संग ठाढ़ होयत, आ ककरो संगक समझौता कतय धरि नैतिक अछि—कविताक गूढ़ प्रश्न अछि। ‘शाइन इंडिया’ आ ‘वैश्वीकरण’ संग ओकर अन्तर्सम्बन्ध अछि, कारण तीनू ठाम बाजारक अन्तःप्रवेशक चिन्ता उपस्थित अछि।

३१. अपन दुलरुआक नाम

मूल पृष्ठ : ८१-८२ | प्रधान विषय : वंशवाद, परिवार

आदित्य, आनन्द, सर्वानन्द, दीपित, दिनेश आदि नामक एक शृङ्खला बनबैत कवि ‘अपन दुलरुआ’क मोह, सन्तान-पक्षपात आ यश-धनक आकांक्षा पर प्रश्न उठबैत छथि। नामक बहुलता एक प्रकारक खेलसँ आरम्भ होइत अछि, मुदा आगाँ परिवारक महत्वाकांक्षा, सामाजिक प्रतिष्ठा आ संसाधनक बँटवारा देखाओल जाइत अछि।

एहि कविताक शिल्प सूचीविधान अछि। सामान्य घर-परिवारक नामक शृङ्खला सामाजिक पूर्वाग्रह आ वंशवृत्तिक राजनीतिक छाया उजागर करैत अछि। ‘ओ करत मौज!’ आ ‘घर-बाहर’मे जे परिवारवादी राजनैतिक संरचना भेटैत अछि, ओकर सूक्ष्म निजी रूप एतय देखब सम्भव अछि। किछु नामक सहायतासँ सामान्यीकरण होएबाक खतरा अछि, मुदा शीर्षकक घरेलूपन व्यंग्यकें चुभन दैत अछि।

३२. इनटॉलरेंस

मूल पृष्ठ : ८३-८४ | प्रधान विषय : सहनशीलता, समाज

पुरान आ नव पीढ़ी, समाजक बदलैत आचरण, बोल-बेबहार, वस्त्रक प्रदर्शन, विरोधक नामपर नवा रुढ़ि, अन्याय आ धैर्यक लोप एहि कविताक विषय अछि। ‘इनटॉलरेंस’ शीर्षक बहसक आधुनिक अंग्रेजी पदकेँ अपनबैत अछि, मुदा कवि प्रश्न करैत छथि जे सहनशीलता केवल नारा अछि वा दैनिक जीवनक मूल्य?

कविता असहमति, सामाजिक अनुशासन आ मानवीय सम्मान बीचक तनाव छूबैत अछि। पाँतिक प्रवाह बतबैत अछि जे एक-दोसराक बात सुनबाक क्षमता घटैत अछि, आ बाहरी रूप-रंग पर राजनीतिक निर्णय लेल जाइत अछि। बदलैत फैशन वा नवपीढ़ीक व्यवहारकेँ अपने-आप नैतिक पतन मानि लेनाइ तर्कसंगत नहि; कविताक बल असहिष्णुताक अनुभव पर अछि, जे व्यापक विचारक योग्य अछि।

३३. बुलेट बन्दूक

मूल पृष्ठ : ८५ | प्रधान विषय : हिंसा, बंदूक

गाम-शहरक धुआँ, गोली-बन्दूक, हरित वृक्षक संकट, संसदक शोक, पुलिसक असहायता आ युवकक विचलित स्थिति हिंसाक सामान्यीकरण देखबैत अछि। शीर्षकमे उपकरणक सीधे नामसँ भयक वातावरण बनैत अछि। जीवनक सुरक्षा आ लोकतंत्रक संस्थामे जे दूरी अछि, कविता ओही अंतर पर चोट करैत अछि।

ई अत्यन्त संक्षिप्त रचना अछि। बहुत कम शब्दमे जनजीवनक आतंक, राज्यक अकार्यक्षमता आ भविष्यक पीढ़ीक असुरक्षाकेँ जोड़ल गेल अछि। ‘बारूदक ढेरी पर कविताक संग खेलाइत’क व्यापक भय एतय एक तीक्ष्ण सूक्तिपूर्ण वक्तव्यमे सिमटि गेल अछि। शिल्पक अर्थव्यवस्था एहि कविताकेँ अन्य दीर्घ राजनीतिक कविता सभसँ अलग करैत अछि।

३४. मातृभाषा

मूल पृष्ठ : ८६ | प्रधान विषय : मातृभाषा, शिक्षा

पुस्तक-कॉपीक बोझ, शिक्षा-व्यवस्थाक दबाव, अंग्रेजीक वर्चस्व, क्षेत्रीय भाषाक उपेक्षा आ सांस्कृतिक विनाशक भय ‘मातृभाषा’क मुख्य समस्या अछि। कविता कहैत अछि जे शिक्षा जँ

अपन भाषाक भाव-संसारसँ कटि जाए, तँ आत्मीय ज्ञानक आधार कमजोर पड़ैत अछि।

मातृभाषा केवल एक विषय नहि, परिवार, संस्कृति आ स्मृतिक मूल भूमि थिक।

कवि भाषाक रक्षा लेल शिक्षा आ व्यवहार दुनूमे परिवर्तनक आग्रह करैत छथि। प्रादेशिक भाषाकेँ पछाड़िकेँ एक भाषा मात्रक श्रेष्ठता स्थापित करबाक प्रवृत्तिक आलोचना अछि। ‘भाषा ठाढ़ बजार मे’मे बाजारक दाब, ‘भोला बाबू’मे भाषिक आन्दोलनक सकारात्मक इतिहास, आ एहि कवितामे शिक्षाक व्यावहारिक समस्या—तीनू मिलि भाषायी विमर्शक परिपूर्ण त्रिकोण बनबैत अछि।

३५. किरायाक मकान

मूल पृष्ठ : ८७ | प्रधान विषय : जीवन, अनित्यता

संसार किरायाक मकान, लोक किरायेदार, सभ किछु अस्थायी आ मालिक अन्तिम रूपेँ सर्वव्यापक—एहने संक्षिप्त रूपक एहि कविताक सर्वस्व अछि। राजनीतिक व्यंग्यक शोरसँ दूर कवि जीवनक क्षणभंगुरता आ स्वामित्वक मिथ्याक प्रश्न रखैत छथि।

कविताक पैघ विशेषता ओकर लघुतम आकार अछि। एके ठाम रहि किछु स्थायी नहि—एहि भावकेँ वाक्यक सादगी समग्र अर्थ दैत अछि। ई रचना व्यापक सामाजिक आलोचनामे आध्यात्मिक-सांकेतिक विराम जकाँ काज करैत अछि। अनेक कविता जे सम्पत्ति आ सत्ता पर प्रश्न करैत अछि, ताहि परिप्रेक्ष्यमे ‘मकान मालिक’क रूपक अधिक जटिल अर्थ सेहो ग्रहण करैत अछि।

३६. बजार

मूल पृष्ठ : ८८ | प्रधान विषय : बाजार, पूँजी

भारतकेँ पैघ बजार, लोककेँ खरीदार, विदेशी कम्पनीकेँ शक्तिशाली व्यापारी आ लोकसमुदायकेँ बँधुआ कर्ता रूपमे देखाओल गेल अछि। वस्तु आ इच्छा दुनू विनिमयक तर्कमे फँसल अछि। बाजारक अधिकार केवल सामानपर नहि, मनुष्यक जीवन-निर्णयपर सेहो पड़ि रहल अछि। लघु आकारक ई कविता संग्रहक आर्थिक व्यंग्यक एक केन्द्रीय सूत्र अछि। बहुतेर कविता जे विस्तृत उदाहरणसँ कहैत अछि, ‘बजार’ ओहि विचारकेँ लगभग सूत्र-वाक्यमे समेटैत अछि।

‘शाइन इंडिया’, ‘भाषा ठाढ़ बजार मे’ आ ‘वैश्वीकरण’ एकर विस्तार बनि जाइत अछि। तकर संग ‘कविता बिकबा लए तैयार’ संस्कृति पर एही विनिमयक प्रभाव देखबैत अछि।

३७. वैश्वीकरण

मूल पृष्ठ : 89-91 | प्रधान विषय : भूमण्डलीकरण

भूमण्डलीकरण, ‘ग्लोबलाइजेशन’, उद्योग, व्यापार, आचार, खान-पान आ नवी पीढ़ीक जीवन-शैलीमे तीव्र बदलाव एहि कविताक मुख्य सामग्री अछि। एक देशक वस्तु-संस्कृति आन देशक भीतर पैसैत अछि, आ स्थानीय जीवनक चिह्न बदलैत अछि। भाषा आ व्यवहारक मिश्रण एहि ऐतिहासिक प्रक्रियाक दृश्यमान रूप अछि।

रचनामे आधुनिक शब्दावली स्वयं आलोचनाक सामग्री बनि जाइत अछि। कवि वैश्विक सम्बन्धकें समृद्धिक एकमात्र पर्याय नहि मानैत छथि; सत्ता-सन्तुलन, स्थानीय उत्पादन, संस्कृति आ सामाजिक समानताक दृष्टिसँ प्रश्न उठबैत छथि। तथापि विश्वसम्पर्कक सभ रूप असमान होयत, एहन निष्कर्ष कविता स्पष्ट प्रमाणसँ नहि दैत; एकर लक्ष्य वैश्वीकरणक वर्चस्ववादी पक्षक आलोचना अछि।

३८. युग-संदेश

मूल पृष्ठ : 92 | प्रधान विषय : युगचेतना, संघर्ष

बीति गेल समयक स्मरणसँ आगाँ वर्तमानकें चुनौतिपूर्ण भविष्य-दिशा देबाक प्रयत्न रचनामे अछि। जनता दुखी, समाज दिशाहीन आ इतिहासक पुनरावृत्तिसँ त्रस्त अछि; एहन दशामे सबकें मिलि लडबाक आ सामाजिक परिवर्तनक संकल्प आवश्यक ठहराओल गेल अछि।

कविता उपदेशात्मक मात्र नहि, सामूहिक क्रियाशीलताक प्रेरणा अछि। ‘हमर भूमि बंजर नहि, मनोबलपूर्ण बुझू’ जकाँ आशय निराशाक बदला संभावना जगबैत अछि। ई रचना ‘कालचक्र’क समय-चेतनाक रचनात्मक उत्तर अछि: अतीतक विवेचन तबे अर्थवान् होयत जखन भविष्यक दिशामे कर्म हो। मुक्तछन्दक अपेक्षाकृत सोझा शैलीक बावजूद उद्बोधन स्वर असरदार अछि।

३९. टा-टा! बाइ-बाइ!!

मूल पृष्ठ : 93-95 | प्रधान विषय : स्त्री, आधुनिकता

समाजमे स्त्री-पुरुषक सम्बन्ध, शिक्षाक प्रसार, बाह्य आधुनिकता, पितृसत्तात्मक दबाव आ नारी-सम्मानक प्रश्न एहि कवितामे उपस्थित अछि। ‘टा-टा! बाइ-बाइ!!’ देखिते लागैत अछि जे वक्ता कोनो समाप्त होइत सम्बन्ध वा समयकेँ विदा करैत छथि; आगाँक पाँति सभ दर्शबैत अछि जे पुरातन मूल्य आ आधुनिक आडम्बर बीच संघर्ष चलि रहल अछि।

कविता स्त्रीक सम्मानक पक्ष लैत अछि, मुदा एकहि समय समाजक नवा जीवन-प्रदर्शन पर सन्देह सेहो करैत अछि। एही कारण पाठ जटिल अछि: स्त्रीक स्वतन्त्रता, सामाजिक मर्यादा आ आधुनिकता के एकहि तुलापर राखि नहि सकैत छी। रचनाक योगदान ई जे नारी-अनुभवक प्रश्नकेँ सार्वजनिक बहसमे अनैत अछि; ओकर कतिपय संस्कारगत मान्यताक विवेचन आलोचककेँ खुला रखबाक चाही।

४०. भोला बाबू

मूल पृष्ठ : ९६-९७ | प्रधान विषय : मैथिलीसेवा

मातृभाषाक प्रचारक, सामाजिक चेतनाक समर्थक, मिथिला-मैथिलीक जनजागरणकर्ता आ साहित्यिक संस्थासँ जुड़ल व्यक्तित्वक प्रशस्ति ‘भोला बाबू’मे अछि। व्यक्ति-विशेषक माध्यमसँ भाषिक आन्दोलनक स्मृति आ सामूहिक श्रमक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

एहि रचनाक स्वर अन्य तीख राजनीतिक कवितासँ अलग अछि—एतय सम्मान, कृतज्ञता आ सांस्कृतिक ऋणबोध प्रमुख अछि। ‘मातृभाषा’ जखन संकट देखबैत अछि, ‘भोला बाबू’ लोकक कर्मसँ ओकर रक्षाक सम्भावना दर्शबैत अछि। जीवनीपरक काव्यक विशेषता नाम आ कार्यक सूची अछि; तथ्यात्मक जीवनीक पुष्टि लेल स्वतंत्र स्रोत आवश्यक होयत, मुदा कवितामे ई व्यक्तित्व मैथिलीसेवाक प्रतीक रूपेँ प्रस्तुत अछि।

४१. कलम सिपाही : राजकमल

मूल पृष्ठ : ९८ | प्रधान विषय : साहित्यिक स्मृति

राजकमल चौधरीक प्रति ई कविता श्रद्धा आ वैचारिक आत्मीयताक स्मरण अछि। विद्रोही रचनाकार, नारी-पीड़ाक चित्रकार, कथा-कविताक प्रयोगशील कलाकार आ निर्भीक काव्यस्वरक रूपमे हुनकर स्मृति उपस्थित अछि। शीर्षकक ‘कलम सिपाही’ लेखकीय कर्मकेँ संघर्षक नैतिक स्वरूप दैत अछि।

कवितामे राजकमलक कृतिक नामक संकेत आ विरोधी जीवन-मूल्यक उदाहरण स्मृति-रचना बनबैत अछि। ई तथ्यात्मक जीवनीक स्थाने एक कविक दोसर कविप्रति काव्यात्मक मूल्यांकन अछि। ‘अथातो काव्य जिज्ञासा’क रचनात्मक प्रतिबद्धता एहि स्मरणक माध्यमसँ मैथिलीक आधुनिक विद्रोही साहित्यिक परम्परासँ जुड़ैत अछि। सम्मानमय स्वरक संग आलोचनात्मक पाठ राजकमलक जटिल लेखकीय संसारकेँ एहि एक कविता धरि सीमित नहि करैत अछि।

४२. वाक्-विमर्श

मूल पृष्ठ : 99–100 | प्रधान विषय : शब्द, साहित्य

कविता-संग्रह, शब्द, भाषाक अर्थ, संवेदना आ आधुनिक समाजमे रचनाक स्थानक प्रसंग एहि कवितामे केन्द्रीय अछि। कवि कलाकृति पर विचार करैत शब्दक भीतरक अर्थ-परिवर्तन देखैत छथि। ‘वाक्’क शास्त्रीय शब्द आ ‘विमर्श’क आधुनिक आलोचनात्मक अर्थक संगम शीर्षकमे स्वयं रचना-दर्शन प्रस्तुत करैत अछि।

एहि कविताक अपनपक्ष आलोचनात्मक संवाद अछि। पूर्वज रचनाक आशा, समकालीन शब्दक विकास आ समाजक बदलैत जरूरतक सम्बन्ध देखाओल गेल अछि। ‘कविता बिकबा लए तैयार’मे बाजारक संकट अछि, तँ ‘वाक्-विमर्श’मे शब्दक स्वतन्त्र संवेदनशील सत्ता बचाबयक प्रयास। एहि काव्य-श्रृङ्खलासँ पाठक बुझैत छथि जे कवि साहित्यपर साहित्यक भीतरसँ सोचैत छथि।

४३. अथ कविता उवाच

मूल पृष्ठ : 101–104 | प्रधान विषय : कविता, विश्व

कविता स्वयं बाजैत अछि—विशाल आकाश, जन-मनक रंग, नगर आ गाम, वर्ग आ जाति, अलग-अलग देश, प्रकृति आ इतिहास सभ एकहि काव्यदृष्टिमे आबि रहल अछि। ‘उवाच’क शास्त्रीय स्वर आधुनिक वैश्विक बहुलताकेँ अभिव्यक्त करैत अछि। मनुष्यता, पृथ्वी, जीवनक विस्तार आ संकट अनेक पाँतिमे संलग्न अछि।

शीर्षक कविता ‘अथातो काव्य जिज्ञासा’मे उठल प्रश्नक एतय उत्तरक विस्तार भेटैत अछि: कविता केवल अभावक विवरण नहि, सम्पूर्ण जगतक संवेदी पाठ अछि। रचनाक सूचीगत विस्तार विश्व-मानचित्र बनबैत अछि। प्रश्न ई अछि जे एहि व्यापकता सँ ठोस मानवक आवाज

कतेक स्पष्ट रहैत अछि; किछु ठाम सूचीक वेग अनुभूतिक गहराइकेँ ढाँकि सकैत अछि। तथापि कविता-चेतनाक वैश्विक आकांक्षा महत्त्वपूर्ण अछि।

४४. घर-बाहर

मूल पृष्ठ : 105-107 | प्रधान विषय : घर-बाहर, राजनीति

अफीमक कारोबार, पुलिस-अफसर, ठेकेदारी, नेतागिरी, मकान-व्यापार आ सम्पत्ति-संग्रहक बीच सार्वजनिक सत्ता आ निजी लाभक रेखा धुँधला पड़ैत अछि। ‘घर-बाहर’ शीर्षक सत्ता-द्वारा निजीकरणक व्यंग्यक आधार बनैत अछि: सार्वजनिक कर्तव्यक रूपमे जे होएबाक चाही, ओ घरपरिवारक हितक साधन बनि जाइत अछि।

कविताक भाषामे जकाँ-जकाँ भिन्न पदनाम जुड़ैत अछि, ओ एक राजनीतिक जालक रूप लैत अछि। ‘अपन दुलरुआक नाम’ आ ‘ओ करत मौज! ओ करत राज!!’क संग पढ़लासँ परिवारवाद आ संस्थागत भ्रष्टाचारक अन्तरसम्बन्ध देखाइत अछि। रचनाक नैतिक प्रश्न तीख अछि; काव्यात्मक बिम्बक अपेक्षा सामाजिक प्रहार प्रमुख रहल अछि।

४५. जय हो मानव जातिक जय हो

मूल पृष्ठ : 108-109 | प्रधान विषय : मानवता, शान्ति

मानवेतिहासमे विनाशकारी प्रयास, रावणक प्रतिरूप, आतंक, नर-संहारक अस्त्र आ पृथ्वीक भविष्यक भय उत्पन्न करैत कविता अन्ततः मानवजातिक जीवन-मूल्यक पक्ष लैत अछि। शीर्षक जयघोष अछि, मुदा ओ उत्साहक सहज नारा नहि; सभ विनाशकारी शक्तिक बाद मनुष्यक गरिमा बचबाक आग्रह अछि।

कविता मिथकीय आ आधुनिक भयकेँ एक साथ राखैत अछि। भू-मण्डल, रक्त-मांस, अस्त्र आ मानवसभ्यताक बिम्ब एक साझा संकट बनबैत अछि। ‘बुलेट बन्दूक’मे जे भय सीमित दृश्य अछि, एतय ओ वैश्विक मानव-विनाशक समस्या बनि जाइत अछि। ‘जय हो’क पुनरुक्ति सम्भावनाक अन्तिम रक्षाबन्धन जकाँ काज करैत अछि।

४६. बन्न करू ड्रामा श्रीमान

मूल पृष्ठ : 110-111 | प्रधान विषय : नागरिक व्यंग्य

पोथी-कपड़ा-मकानक महँगाइ, शिक्षाक व्यापारीकरण, स्त्री-असम्मान, भ्रष्टाचारी दलाल, परिवारवाद, प्रशासनक निष्क्रियता आ नेताक दिखावा—सभ पर कविता अन्तिम सार्वजनिक हस्तक्षेप करैत अछि। ‘बन्न करू ड्रामा श्रीमान’ नाटकीय सम्बोधन अछि; कवि सत्ताधारीक भाषा आ कर्मक विच्छेद देखैत छथि।

संग्रहक अन्तिम कविता रूपेँ ई रचना उपसंहारक शक्ति रखैत अछि। आरम्भक ‘अशोक वृक्ष’क संयत सौन्दर्य-चित्रसँ चलल यात्रा अंतमे कठोर नागरिक सम्बोधन धरि पहुँचल अछि। ‘ड्रामा’ शब्द प्रचारात्मक राजनीति आ लोकजीवनक संकट बीचक अन्तर उद्घाटित करैत अछि। भावात्मक अर्थ एतबा अछि: मनुष्यक दैनन्दिन आवश्यकताकेँ नैतिक प्राथमिकता देल बिना अधिकारक अभिनय शून्य अछि।

समेकित शोध-निष्कर्ष

रचनाक आन्तरिक प्रवाह

संग्रहक ४६ कवितामे प्रकृतिक लघु दृश्यसँ शहरी-ग्रामीण असमानताक विस्तृत आख्यान, ओतयसँ सत्ता-बजारक तीख व्यंग्य, फेर भाषा-साहित्यक आत्मपरीक्षण आ अन्तमे मनुष्यता-सम्मानक आह्वान धरि एक अर्थपूर्ण प्रवाह अछि। कविता सभ कठोर विषयाधारित खण्डमे अलग-अलग नहि रहल अछि; प्रकृति, भाषा, सत्ता आ स्मृतिक रेखा अनेक स्थाने एक-दोसरामे मिलैत अछि। एही परस्परता संग्रहक वास्तविक एकता अछि।

काव्यभाषाक उपलब्धि

मूलपाठमे प्रचलित मैथिली पद, ध्वनि आ क्रियाप्रयोगक संग आधुनिक राजनीतिक आ वैश्विक शब्दाभिधान अछि। शास्त्रीय पदविन्यास (‘अथातो’, ‘उवाच’, ‘कालचक्र’) आ समकालीन लोकप्रिय शब्द (‘डेमोक्रेसी’, ‘एलेक्शन’, ‘इनटॉलरेंस’) सँ बनल तनाव कविताकेँ अपन समयक बहुभाषी अनुभव दैत अछि। लघु छन्दहीन दृश्य, क्रमांकित क्षणचित्र, जनसभामुखी वक्तव्य, व्यंग्यात्मक दोहराव आ दीर्घ मुक्तछन्द—सभ अपन-अपन सामाजिक प्रभाव लैत अछि।

सामाजिक मूल्य आ समीक्षा-दृष्टि

जनपक्षधरता संग्रहक प्रमुख नैतिक शक्ति अछि। तैओ सामाजिक आलोचना आ साहित्यिक मूल्यांकन एके वस्तु नहि: अति प्रत्यक्ष वक्तव्य कतहु सूक्ष्म बिम्बकेँ रोकैत अछि; कतहु विषयक

विस्तार अनुपस्थित सामाजिक पात्रक प्रत्यक्ष आवाज ढाँकि दैत अछि; आ कतहु रूढ़ि-विरोधक संग नवजीवनप्रति आशंका सेहो भेटैत अछि। एही अन्तर्विरोध सहित पढ़लासँ कविता सभक जीवन्तता देखाइत अछि। पढ़निहारक काज कविक प्रत्येक घोषणासँ सहमत होएब नहि, कविक सवालक सामाजिक आधार जाँचब अछि।

अन्तिम स्थापना

‘अथातो काव्य जिज्ञासा’ कविता-कर्मक उत्तरदायित्व पर केन्द्रित जनोन्मुख मैथिली काव्य-संग्रह अछि। एकर काव्यजगतक मूल धुरी ई प्रश्न अछि—मनुष्य, माटि, भाषा आ श्रम बिनु कथित प्रगतियात्राक की अर्थ? कविता भरल बजार आ सत्ता-प्रदर्शनक बीच जीवित संवेदनाक स्थान खोजैत अछि। सभ ४६ कविता एकहि स्वरमे नहि बजैत अछि; एहि विभिन्नताक भीतर लोकजीवनक सांस्कृतिक मानवीय अधिकारक आग्रह ओकर सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक उपलब्धि अछि।

परिशिष्ट : अन्तःसम्बन्धक अध्ययन-सूत्र

काव्यक आत्मप्रश्न

सन्दर्भ-कविता : अथातो काव्य जिज्ञासा; कविता बिकबा लए तैयार; वाक्-विमर्श; अथ कविता उवाच

शोध-प्रश्न : कविता सामाजिक दायित्व आ बजारक बीच कोना अपन स्वतन्त्रता सुरक्षित करैत अछि?

प्रकृति सँ समाज दिस

सन्दर्भ-कविता : अशोक वृक्ष; बबूर गाछ; आदिवासीक घर; धन्य थिक ब्रह्माणी नदीक जल; एक टा छल गाम हमर

शोध-प्रश्न : प्रकृतिक दृश्य कहिया विस्थापन आ अधिकारक प्रश्न बनि जाइत अछि?

भाषा, शिक्षा आ समाज

सन्दर्भ-कविता : मैथिली बरनी; भाषा ठाढ़ बजार मे; मातृभाषा; भोला बाबू

शोध-प्रश्न : मातृभाषाक स्मृति आ संस्थागत प्रतिष्ठाक बीच कोन अन्तर अछि?

लोकतंत्रक नाटकीयता

सन्दर्भ-कविता : एलेक्शन! एलेक्शन!; रेल! रेल!!; नेता-पुराण; डांस! डेमोक्रेसी डांस!; बन्न करू
ड्रामा श्रीमान

शोध-प्रश्न : लोकतंत्रक सार्वजनिक भाषा आ जनताक जीवनानुभवक दूरी कोना बनैत अछि?
बजारक बहुस्तरीय प्रभाव

सन्दर्भ-कविता : शाइन इंडिया; महानायकक अरण्य-यात्रा; हिसाब-किताब; बजार; वैश्वीकरण;
पार्टनर

शोध-प्रश्न : आर्थिक शक्ति भाषाक अर्थ, सांस्कृतिक व्यवहार आ लोकजीवनकेँ कोना प्रभावित
करैत अछि?

हिंसा आ मानवीय भविष्य

सन्दर्भ-कविता : बारूदक ढेरी पर कविताक संग खेलाइत; बुलेट बन्दूक; जय हो मानव जातिक
जय हो

शोध-प्रश्न : समयक हिंसा सँ उबरबाक लेल कविता कोन मानवीय विकल्प प्रस्तुत करैत अछि?

अध्याय ३ • वीरेन्द्र मल्लिकक साहित्य

प्रथम पुरुष

आठ निबन्ध आ एक अन्तरङ्ग वार्ता • परम्परा, प्रयोग, बिम्ब आ आलोचनात्मक विवेक

१. परम्परा : प्रयोग एवं आधुनिक बोधक कविता (पृ. ९-२७)

केन्द्रीय प्रतिपाद्य

आरम्भिक निबन्धमे परम्परा आ नवीन प्रयोगकेँ परस्पर विरोधी मानबाक प्रवृत्तिक पुनर्विचार
कएल गेल अछि। साहित्यिक नवता शून्यसँ उत्पन्न नहि होइत अछि; पूर्ववर्ती काव्य-चेतना,
जनजीवन, संस्कार आ अभिव्यक्तिक विरासतसँ संवाद करैत नव रूप ग्रहण करैत अछि।

अतएव ‘आधुनिक बोध’ केवल कालगत नवीनता नहि, बदलैत जीवन-जगतक नूतन अनुभूति
आ ओकर अनुरूप कलात्मक संरचनाक नाम अछि।

निबन्धमे काव्यधाराक भिन्न प्रवृत्ति, छन्द आ मुक्त अभिव्यक्ति, बिम्ब आ प्रतीक, यथार्थबोध, समाजाभिमुखता तथा पाश्चात्य साहित्यिक प्रवाहक सन्दर्भ एकहि विमर्शमे उपस्थित होइत अछि। एहि बहुविध सन्दर्भसँ लेखक काव्यक आधुनिक रूपक बोधगम्य ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तैयार करैत छथि।

परम्परा, यथार्थ आ प्रयोग

परम्पराकेँ रूढ़िक समानार्थी मानल जाए तऽ आधुनिक प्रयोगक उत्पत्ति अस्पष्ट भऽ जाइत अछि। लेखकक विश्लेषणक केन्द्र ई अछि जे रचनाकार परम्परासँ भाषा, संवेदना आ सांस्कृतिक स्मृति ग्रहण करैत छथि, मुदा ओकर यान्त्रिक अनुकरण नहि करैत छथि। चयन, अस्वीकार आ पुनर्सृजनक प्रक्रिया आधुनिक काव्यक रचनाशीलता निर्धारित करैत अछि।

यथार्थवाद आ अतियथार्थवादी संकेत, रोमानी आग्रह आ सामाजिक चेतना, काव्यक आत्मगतता आ वस्तुगत जीवनक उपस्थिति—एहि सभक चर्चा काव्य-आधुनिकताक एकरेखीय परिभाषाकेँ जटिल बनबैत अछि। मनुष्यक एकाकीपन, द्वन्द्व, स्वप्न, संघर्ष आ बदलैत सामाजिक परिस्थिति कविता मे नूतन चित्रक गठन करैत अछि।

आलोचनात्मक मूल्याङ्कन

एहि निबन्धक सबसँ महत्वपूर्ण गुण ई अछि जे आधुनिकताकेँ केवल शैलीगत विचित्रता वा विदेशी अनुकरणक रूपमे नहि, अनुभूति आ अभिव्यक्तिक सम्बन्धक रूपमे समझबाक आग्रह करैत अछि। लेखक मैथिली कविताकेँ विस्तृत भारतीय आ विश्व-साहित्यिक चर्चासँ जोड़बाक प्रयास करैत छथि।

तथापि ‘आधुनिक’ आ ‘प्रयोग’क व्यापक प्रयोगक कारण अलग-अलग काव्यप्रवृत्तिक सीमा कखनहु अस्पष्ट भऽ सकैत अछि। एहि बिन्दुपर एकटा आलोचनात्मक प्रश्न उठैत अछि : कविता मे नवीन भाषिक गठन स्वयंमे उपलब्धि अछि, कि ओकर मानवीय संवेदना आ अर्थ-उत्पादनक सामर्थ्यसँ मूल्याङ्कन आवश्यक अछि? ग्रन्थक समग्र अभिमुखता दोसर विकल्पकेँ बल दैत अछि।

२. मैथिली काव्य मे वैभव भावधारा (पृ. २८–४६)

विषय-विस्तार

एहि निबन्धमे मैथिली काव्य-परम्पराक गौरव आ वैभवकेँ केवल प्रशस्तिक वस्तु नहि, काव्य-संवेदनाक दीर्घ विकास-यात्राक रूपमे देखबाक प्रयास अछि। विद्यापति आ उत्तरवर्ती काव्य-धाराक आलोकमे भावक विविध रूप—प्रेम, भक्ति, करुणा, सौन्दर्य, लोकजीवन आ आध्यात्मिक अनुभूति—काव्य-सृष्टिक अभिन्न अङ्ग रूपमे उभरैत अछि।

कवि-परम्पराक विवेचनक संग लेखक स्थान-स्थानपर मूल पद वा काव्यांश प्रस्तुत करैत छथि। उद्धरणक प्रयोजन ऐतिहासिक नामावली बनायब मात्र नहि, बरु भाषा आ भावक जीवित सम्बन्ध प्रदर्शित करब अछि। एहि कारण निबन्ध एकहि समय ऐतिहासिक सर्वेक्षण आ काव्य-सौन्दर्यक पाठ बनि जाइत अछि।

काव्यवैभवक अनेक स्तर

‘वैभव’क आशय केवल विपुल साहित्य-सृष्टि नहि; ताहिमे रागात्मकता, अनुभवक प्रौढ़ता, भाषिक माधुर्य, लय-संयोजन, पद-रचना आ काव्यचित्रक सघनता सम्मिलित अछि। मिथिलाक सांस्कृतिक परिवेश, धार्मिक-दार्शनिक विचार आ लोक-व्यवहारक धरातल काव्यक संवेदनात्मक शक्ति बढ़बैत अछि।

लेखकक चयनित उदाहरण सभ पढ़िने ई स्पष्ट होइत अछि जे भावधाराकेँ एक मात्र रसक सीमामे बाँधब उचित नहि। भक्ति आ शृङ्गार अनेक बेर एक-दोसराक अर्थ-विस्तार करैत अछि; लोकमूलक अभिव्यक्ति साहित्यिक ऊँचाइ प्राप्त करैत अछि। एहने सम्मिश्रण मैथिली काव्यक विशिष्ट शक्ति अछि।

विश्लेषणात्मक निष्कर्ष

एहि अध्यायक प्रमुख योगदान मैथिली साहित्यक मूल्याङ्कनमे आन्तरिक परम्पराक प्रतिष्ठापन अछि। तथापि ‘वैभव’क अवधारणाकेँ समकालीन सामाजिक असमानता, स्त्री-अनुभव आ उपेक्षित समुदाय सभक काव्य-स्वरक सन्दर्भमे फेरसँ पढ़ल जाए तऽ विमर्श आरो व्यापक भऽ सकैत अछि। ई प्रश्न ग्रन्थक कथनक खण्डन नहि, ओकर अनुसन्धानात्मक विस्तार अछि।

३. ‘सुभद्र-हरण’ मे बिम्ब-विधान (पृ. ४७-५८)

बिम्बक सैद्धान्तिक आधार

एहि अध्ययनक केन्द्र काव्य-बिम्ब अछि। लेखक बिम्बकें शब्दसँ उत्पन्न मानसिक दृश्य मात्र नहि मानि संवेदनात्मक अनुभवक कलात्मक मूर्तिकरण रूपमे ग्रहण करैत छथि। बिम्ब, कल्पना, अनुभूति, इन्द्रियबोध आ अर्थक सम्बन्ध पर विचार करैत अध्याय महत्त्वपूर्ण परिभाषा तथा काव्यशास्त्रीय सन्दर्भ प्रस्तुत करैत अछि।

काव्य-बिम्बक वर्गीकरणक प्रयत्नमे दृश्य, श्रव्य, स्पर्शादि इन्द्रियसम्बद्ध स्तर, वस्तुगत वा अमूर्त गुण, सरल आ जटिल विन्यास तथा प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष अभिव्यक्तिक भेद उपयोगी बनैत अछि। निबन्धमे प्रस्तुत वर्गीकरणक रूपरेखा आ रेखाचित्र विश्लेषणकें व्यवस्थित करबाक उपकरण अछि।

काव्यपाठमे बिम्बक क्रिया

‘सुभद्र-हरण’क उदाहरणक विवेचनसँ स्पष्ट होइत अछि जे बिम्ब कथा-प्रसङ्गक केवल सजावट नहि करैत; से नाटकीय तनाव, पात्रक भावावस्था, गति, दृश्य-परिवर्तन आ रसात्मक प्रभावकें मूर्त करैत अछि। क्रिया, रूप, ध्वनि आ अनुभूतिक शब्द-चयनसँ पाठकक चित्तमे दृश्य आ भावक संयुक्त अनुभव बनैत अछि।

कथात्मक काव्यमे बिम्ब-विधानक विशेषता ई जे घटना-सूत्र आ अनुभूति परस्पर जुड़ैत अछि। एकटा सफल बिम्ब कथा कें रोकैत नहि, बरु कथ्यक गति आ भावानुभूतिक तीव्रता बढ़बैत अछि। लेखकक उदाहरणाधारित पद्धति एहि अन्तरकें देखाबय योग्य बनबैत अछि।

पद्धतिगत समीक्षा

एहि निबन्धक बौद्धिक महत्त्व सैद्धान्तिक काव्यशास्त्रकें मैथिली रचनाक समीप-पाठसँ जोड़बामे अछि। वर्गीकरण विश्लेषणमे सहायक अछि, मुदा कोनो एक बिम्ब अनेक इन्द्रियात्मक आ भावात्मक श्रेणीमे एकहि बेर प्रवेश कऽ सकैत अछि। ताहि कारण बिम्बकें स्थिर कोठरीमे सीमित नहि करि ओकर समग्र प्रसङ्ग, ध्वनि आ प्रभाव पढ़ब अधिक फलदायी होइत अछि।

४. रामकाव्यक परम्परा आ मैथिली रामायण (पृ. ५९-८०)

रामकथाक बहुविध परम्परा

एहि अध्यायमे रामकथा कें भारतीय साहित्यक बहुभाषिक, बहुस्तरीय आ निरन्तर परिवर्तित होइत सांस्कृतिक आख्यानक रूपमे देखल गेल अछि। संस्कृत ग्रन्थ, भिन्न भाषाक रामकाव्य

आ स्थानीय परम्पराक पारस्परिक सम्बन्धक विवेचनसँ मैथिली रामायणक ऐतिहासिक स्थान स्पष्ट करबाक प्रयास अछि।

महाकाव्यात्मक आख्यानक पुनर्लेखनक अर्थ केवल मूल कथाक स्थानान्तरण नहि। भाषा, लोकमानस, धार्मिक वृत्ति, सांस्कृतिक आचार, पात्रक स्वभाव आ कथा-कथनक विधि बदलला पर रामकथा नव साहित्यिक रूप ग्रहण करैत अछि। एहि दृष्टिसँ मैथिली रामायण मौलिक सांस्कृतिक अभिव्यक्तिक महत्त्वपूर्ण अवसर बनैत अछि।

मैथिली काव्यक वैशिष्ट्य

लेखक मैथिलीमे रचित रामकथासम्बद्ध काव्यक चर्चा करैत परम्परा आ रूपान्तरक सम्बन्धपर बल दैत छथि। रामायणक पात्रगणक नैतिक-धार्मिक स्वरूपकेँ स्थानीय संवेदनासँ जोड़ल जा सकैत अछि; मैथिली भाषा संवाद, वर्णन आ लोकसम्बद्ध उपमानक माध्यम बनि कथाक नूतन निकटता रचैत अछि।

काव्य-परम्पराक व्याख्यामे ग्रन्थक तुलनात्मक दृष्टि विशेष उल्लेखनीय अछि। स्रोत-ग्रन्थ आ उपरान्तक मैथिली रूपक बीच कथात्मक समानता अवश्य होइत अछि, मुदा काव्यक स्वतंत्र पहचान कथानकक शब्दशः समानतामे नहि, रचनात्मक चयन आ भावगत पुनर्संयोजनमे निहित रहैत अछि।

शोधक प्रश्न

एहि अध्यायक आधारपर नव अनुसन्धान एहि विषय सभपर भऽ सकैत अछि : मैथिली रामायणमे लोकभाषाक उपयोग, स्त्री-पात्रक संवाद, सांस्कृतिक आचारक रूपान्तरण, भक्ति आ नीतिबोधक आपसी सम्बन्ध, तथा स्रोत-परम्परासँ भिन्न प्रसङ्गक कारण। ई सभ प्रश्न मूल निबन्धक ऐतिहासिक चर्चाकेँ पाठ-आधारित तुलनात्मक अनुसन्धान धरि विस्तारित करैत अछि।

५. मिथिलाभाषा रामायणक प्रेरणा स्रोत : अध्यात्मरामायण आ रामचरितमानस (पृ. ८१-८८)

प्रेरणा आ अनुकरणमे अन्तर

एहि निबन्धक विशिष्ट विषय मिथिलाभाषा रामायणक प्रेरणागत सम्बन्ध अछि। शीर्षकमे उल्लिखित अध्यात्मरामायण आ रामचरितमानसक प्रसङ्ग लेखककेँ स्रोत, प्रभाव, विषय-चयन

आ काव्यात्मक पुनर्निर्माणक जटिल सम्बन्ध जाँचबाक अवसर दैत अछि। प्रेरणा-ग्रन्थक उपस्थिति रचनाक मौलिकताकें अनिवार्य रूपसँ समाप्त नहि करैत अछि।

ग्रन्थक पाठक अनुसार रामकथा-परम्पराक आध्यात्मिक अर्थ आ जनभाषिक अभिव्यक्ति—दूनू महत्त्वपूर्ण अछि। अध्यात्मरामायणक आध्यात्मिक प्रवृत्ति आ रामचरितमानसक भक्तिमूलक लोकव्याप्तिक आलोकमे मैथिली रूपान्तरक विशिष्टता पढ़बाक प्रयत्न कएल गेल अछि। तुलना करैत लेखकक आग्रह कथ्य आ भक्ति-भावना संग काव्यरूपक भिन्नता बुझब अछि।

तुलनात्मक पाठ-पद्धति

एकर समीचीन पद्धति एहि चारि स्तर पर आधारित होएबाक चाही : कथाक क्रम आ प्रसङ्ग, पात्रक उक्ति आ चरित्रांकन, दार्शनिक-धार्मिक आशय, तथा भाषा-लय-शैली। मूल निबन्ध एहि तुलनात्मक विमर्शक दिशामे स्रोतग्रन्थ सभकें आमने-सामने राखैत अछि।

अनुसन्धानमे ई अलग राखब जरूरी अछि जे कोन तथ्य सीधा पाठसाम्यसँ सिद्ध होइत अछि आ कोन बात काव्य-परम्पराक व्यापक प्रभावक रूपमे अनुमानित अछि। समस्त समानता कें प्रत्यक्ष उधारी कहि देब साहित्यिक परम्पराक साझा संरचनाकें उपेक्षित करब होएत।

आलोचनात्मक मूल्य

अध्याय मैथिली रामकाव्यकें प्रादेशिक एकान्तसँ निकालि भारतीय महाकाव्य-परम्पराक गतिशील संवादमे रखैत अछि। विशेष मूल्य ई जे प्रेरणा आ सृजनात्मक स्वायत्तताक सम्बन्धपर विचार करबाक आधार तैयार करैत अछि।

६. आलोचनाक संकट आ संकट आलोचना (पृ. ८९-१०१)

आलोचनाक दायित्व

ई निबन्ध साहित्यिक मूल्याङ्कनक नीतिशास्त्र आ विवेकपर केन्द्रित अछि। आलोचनाक उद्देश्य केवल प्रशंसा, निन्दा, मित्रतापोषण वा समूहगत प्रतिष्ठाक रक्षा नहि; कृतिक गुण-दोषक तर्कसंगत विवेचन आ पाठकीय विवेकक विकास अछि। लेखक आलोचकक बौद्धिक तैयारी, व्यापक अध्ययन आ स्वतन्त्र निर्णायक महत्त्व रेखाङ्कित करैत छथि।

आलोचनामे ‘संकट’ दुइ स्तरपर उभरैत अछि : एक दिशि उचित मानदण्ड, सुसंगत पद्धति आ प्रमाणयुक्त व्याख्याक अभाव; दोसर दिशि संस्थागत आग्रह, वैयक्तिक पक्षपात आ साहित्यिक

मूल्यक अस्थिरता। एहि संकटकें केवल व्यक्ति-विशेषक दोष कहि समाप्त नहि कएल जा सकैत; साहित्यिक संस्कृतिमे विवेकपूर्ण संवादक स्थिति सेहो आवश्यक अछि।

भारतीय आ पाश्चात्य सन्दर्भ

निबन्धमे शास्त्रीय आलोचना, आधुनिक सौन्दर्यविचार आ मार्क्सवादी आलोचनात्मक प्रवृत्तिक सन्दर्भ उपस्थित अछि। कलात्मक रूप, सामाजिक यथार्थ, विचारधारा, अनुभूति, भाषा आ कृतिक स्वायत्ततामे संतुलन स्थापित करब आलोचनाक मुख्य चुनौती अछि। अलग-अलग पद्धति पाठककें भिन्न प्रश्न पूछैत अछि; एकमात्र पद्धतिक सर्वाधिकार अर्थ-बोधकें संकुचित करि सकैत अछि।

एहि कारण लेखकक चर्चासँ आलोचनाक एकटा उत्तरदायी स्वरूप उभरैत अछि—पाठक समीपता, अवधारणाक स्पष्टता, मूल्याङ्कनमे निर्भीकता आ लेखक-आलोचक सम्बन्धमे अपेक्षित दूरी।

आजुक प्रासंगिकता

साहित्यिक गोष्ठी, पत्रिका, पुरस्कार-व्यवस्था आ डिजिटल माध्यममे त्वरित प्रतिक्रिया बढ़ला सँ एहि प्रश्नक महत्त्व आरो बढ़ल अछि। आलोचनात्मक मत प्रकाशित करैत समय पाठ-साक्ष्य, सन्दर्भ, मतभेदक शिष्टता आ पारदर्शी आधार आवश्यक अछि। ई समसामयिक विस्तार मूल निबन्धक आलोचना-विवेकक मर्मसँ मेल खाइत अछि।

७. मैथिली कविताक वर्तमान (पृ. १०२–११४)

वर्तमानक अर्थ

एहि निबन्धमे ‘वर्तमान’ केवल हालक प्रकाशन-वर्षक पर्याय नहि, बदलैत जीवन-चेतना, कथ्य, भाषा आ काव्यशिल्पक जीवित रूप अछि। आधुनिक मैथिली कविता परम्परागत भाव-विधानसँ संवाद करैत सामाजिक असुरक्षा, अस्तित्वगत बेचैनी, नैतिक प्रश्न, व्यक्तिक अकेलापन आ सामूहिक अनुभूतिक नूतन स्वर खोजैत अछि।

लेखक अनेक काव्यांशक माध्यमसँ अलग-अलग रचनात्मक स्वरक तुलना करैत छथि। कविता कें केवल सिद्धान्तसँ नहि, ओकर प्रयोगधर्मी भाषिक देहक समीप जाए पढ़ब एही अध्यायक आधारभूत पद्धति अछि।

शिल्प आ संवेदना

नव कविता मे मुक्त विन्यास, कथन-भङ्गिमा, बोलचालक भाषिक ऊर्जा, विसङ्गतिक अनुभूति, प्रतीकात्मक संकेत आ अन्तरंग आत्मालाप देखल जा सकैत अछि। मुदा नूतन शिल्पक सफलता तखनहि होइत अछि जखन से अनुभूतिक अनुरूप हो। कथ्य आ शिल्पक प्रामाणिक सम्बन्ध बिना प्रयोग यान्त्रिक बनि सकैत अछि।

समकालीनताक एक आवश्यक पक्ष कविता मे सामाजिक परिवेशक उपस्थिति अछि। प्रवास, संघर्ष, विस्थापन, सम्बन्धक परिवर्तन आ मानवीय आकांक्षा काव्यक चिन्ताकें गतिमान करैत अछि। एही सन्दर्भमे परम्परागत मिथिला-छविक रोमानी पुनरावृत्ति आ आधुनिक जीवनक जटिल यथार्थक बीच अन्तर पहिचानल जा सकैत अछि।

चयन आ सीमाक प्रश्न

काव्य-वर्तमानक कोनो आलोचनात्मक चित्र प्रतिनिधि रचनाक चयनपर निर्भर करैत अछि। अतएव एहन सर्वेक्षणमे कवयित्री, नव पीढ़ी, भिन्न सामाजिक अनुभव आ भाषिक प्रयोगक समावेशक प्रश्न उठब स्वाभाविक अछि। निबन्ध एहि व्यापक विमर्शक एकटा उपयोगी आरम्भिक मानचित्र प्रदान करैत अछि, अन्तिम आ पूर्ण सूची नहि।

८. कविता मे जीवनानन्द (पृ. ११५-१२२)

जीवन आ कविता

एहि अन्तिम मूल अध्यायमे कविता आ जीवनक सम्बन्ध अधिक आत्मीय, संवेदनापरक आ दार्शनिक रूप ग्रहण करैत अछि। जीवनानन्द कें सतही उल्लास नहि बुझबाक चाही; दुःख, अपूर्णता, आशा, स्मृति, प्रेम, प्रकृति, प्रतिकूलता आ मानवीय जिजीविषाक बीच जीवनक अर्थक खोज कविता मे रूपायित होइत अछि।

निबन्धक उद्धरण सभ संकेत करैत अछि जे सौन्दर्यक अनुभूति दुःखक अस्वीकार नहि, बरु ओकर मानवीय रूपान्तरण सम्भव करैत अछि। भाव आ विचारक सङ्गति कविताकें जीवनक साधारण क्षणमे असाधारण अर्थ देखबाक शक्ति दैत अछि।

काव्यक मानवीय पक्ष

जीवनानन्दक काव्यात्मक स्वरूप अनेक प्रकारों व्यक्त होइत अछि—भाषाक सहजता, प्रकृतिक नव अनुभूति, आन्तरिक उन्मुक्ति, सम्वेदना, निराशाक बीच आशाक उपस्थितिक रूपमे। जे कविता मनुष्यक अनुभवक गहराई पकड़ैत अछि, से पाठकक एकान्तमे सहचर बनि सकैत अछि।

एहि निबन्धकेँ पोथीक पहिल अध्यायक संग पढ़ला पर एकटा वैचारिक वृत्त पूरा होइत अछि : शुरुआतमे आधुनिक बोधक प्रश्न छल, अन्तमे मानवीय जीवनानुभवक प्रश्न। आधुनिकताक मूल्य केवल नूतन रूप-विन्यास नहि, मनुष्यक अनुभूतिक सार्थक विस्तारमे अछि।

समापनक महत्त्व

अन्तिम अध्याय ग्रन्थक आलोचनात्मक गाम्भीर्यकेँ संवेदनात्मक निष्कर्ष दैत अछि। बिम्ब, रूप, परम्परा आ आलोचनाक बहस अन्ततः जीवनक अनुभव सँ दूर नहि रहि सकैत—ई पोथीक समग्र अन्तर्धाराक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।

परिशिष्ट : वीरेन्द्र मल्लिक सँ लक्ष्मण झा सागरक अन्तरङ्ग वार्ता (पृ. १२३-१४४)

परिशिष्टमे संवाद-रूप अपनाओल गेल अछि। प्रश्नकर्ता लक्ष्मण झा सागर आ उत्तरदाता वीरेन्द्र मल्लिकक बीच साहित्य, काव्यरचना, मैथिलीक स्थिति, आधुनिकता, आलोचना, साहित्य-साधना, अध्ययन आ मानवीय सरोकारपर विमर्श भेटैत अछि। ई वार्ता सिद्धान्तप्रधान मुख्य अध्याय सभकेँ लेखकक आत्मविचार आ साहित्यिक व्यक्तित्वक सन्दर्भ दैत अछि।

संवादमे साहित्यिक प्रतिष्ठासँ बेसी महत्त्व साधना, सतत अध्ययन आ कृतिक सच्चाईकेँ भेटैत अछि। साहित्य-सृजनक लेल अध्ययनक महत्त्व, भाषाक सांस्कृतिक शक्ति, समकालीन काव्यप्रवृत्ति आ संस्थागत उपाधिसँ भिन्न वास्तविक साहित्यिक कर्मक प्रश्न अनेक स्थानपर उभरैत अछि। वार्तामे भारतीय आ विश्वसाहित्यक प्रसङ्गक उल्लेख लेखकक व्यापक पाठकीय रुचिक संकेत अछि।

अन्तरङ्ग वार्ताकेँ निष्पक्ष इतिहासक एकमात्र प्रमाण नहि मानबाक चाही। ई लेखकक स्वयं प्रस्तुत कएल विचार, चयनित स्मृति आ मूल्यबोधक दस्तावेज अछि। ताहि कारण एहि सामग्रीकेँ स्वतन्त्र पुस्तक-सूची, कालक्रम आ बाह्य साक्ष्यसँ मिलान कएने बिना अन्तिम जीवनी-

सत्यक रूपमे प्रस्तुत करब उचित नहि। तथापि रचनाकारक आलोचनात्मक चिन्तन बुझबाक लेल परिशिष्ट विशेष उपयोगी अछि।

समेकित विवेचन : आठ अध्यायक वैचारिक सूत्र

१. परम्परा आ नवता

पहिल, दोसर, चारिम आ पाँचम निबन्ध एकटा साझा सिद्धान्तपर अवलम्बित बुझाइत अछि : साहित्य अपन पूर्वपरम्परासँ पोषण प्राप्त करैत अछि आ नूतन ऐतिहासिक परिस्थितिमे ओकर नव अर्थ रचैत अछि। काव्य-परम्परा आ रामकथाक पुनर्लेखन एहि प्रक्रियाक अलग-अलग उदाहरण अछि।

२. काव्यक रूप आ अनुभूति

तेसर आ आठम अध्याय रूपसौन्दर्य आ अनुभवक अन्तःसम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि। बिम्ब-विधानक युक्ति तखन सजीव अछि जखन से मानसिक, भावात्मक अथवा सामाजिक अनुभवक मूर्त रूप हो। जीवनानन्दक प्रश्न अन्ततः काव्य-रूपक मानवीय प्रयोजनपर प्रकाश दैत अछि।

३. आलोचनाक आत्मपरीक्षण

छठम आ सातम अध्याय आलोचना आ समकालीन सृजनक आपसी निर्भरता देखबैत अछि। नूतन कविता केँ विवेकपूर्ण आलोचना चाही; आ आलोचनाकेँ नव कृतिक निकटसँ अध्ययन करैत स्वयं अपन मानदण्ड संशोधित करबाक तत्परता चाही।

४. मैथिली-केंद्रित, विश्व-संवादी दृष्टि

पोथीक अनेक निबन्धमे मैथिली पाठक सङ्ग संस्कृत, भारतीय आ पाश्चात्य काव्यविचारक संवाद जुड़ैत अछि। एहि दृष्टिक सबल पक्ष भाषिक आत्मविश्वास अछि : मैथिलीकेँ केवल क्षेत्रीय सांस्कृतिक वस्तुक रूपमे नहि, जटिल काव्यशास्त्रीय चर्चाक समर्थ माध्यमक रूपमे व्यवहृत कएल गेल अछि।

ग्रन्थक उपलब्धि आ अनुसन्धानक सम्भावित क्षेत्र

प्रमुख उपलब्धि : (क) मैथिली साहित्यक आन्तरिक मूल्यबोध आ व्यापक काव्यशास्त्रक समन्वय; (ख) सैद्धान्तिक प्रतिपादन संग कविता-पाठक प्रयोग; (ग) रामकाव्यक ऐतिहासिक आ

तुलनात्मक सन्दर्भ; (घ) समकालीन आलोचनाक नैतिक प्रश्न; (ङ) रचनाकारक साक्षात्कार द्वारा विचारक आत्मपक्ष।

अग्रेतर अनुसन्धान : (क) ग्रन्थमे उद्धृत काव्यांश सभक प्रमाणिक मूल-संस्करणसँ पाठान्तर-मिलान; (ख) मैथिली काव्यक बिम्ब-विधानक तुलनात्मक कोष; (ग) रामकथाक मैथिली रूपान्तर सभक स्रोतसमीक्षा; (घ) आधुनिक मैथिली कवितामे स्त्री आ बहिष्कृत अनुभवक प्रतिनिधित्व; (ङ) आलोचना-पद्धतिक ऐतिहासिक विकास; (च) परिशिष्टमे उल्लिखित साहित्यिक तथ्यक स्वतन्त्र अभिलेखीय सत्यापन।

एकटा अनुसन्धानात्मक सावधानी अनिवार्य अछि : ग्रन्थमे उपस्थित लेखकक आलोचनात्मक निर्णयकेँ यथावत् उद्धृत करब आ ओकर सत्यापन करब दू अलग बौद्धिक प्रक्रिया छथि। ई समीक्षा मूल पोथीक विचार-संरचनाकेँ प्राथमिक मानि चलैत अछि; विस्तृत ग्रन्थ-सूची वा समीक्षकीय बाह्य प्रमाणक अभावमे अनावश्यक तथ्य-दाबी नहि करैत अछि।

समापन

‘प्रथम पुरुष’ मैथिली काव्य-चिन्तनक भिन्न क्षेत्रकेँ एकहि जिल्दमे आनयवला आलोचनात्मक संकलन अछि। परम्परा-विमर्शसँ शुरू भऽ काव्यवैभव, बिम्बशास्त्र, रामकाव्य, तुलनात्मक स्रोतचर्चा, आलोचनात्मक संकट, समकालीन कविता आ जीवनानन्द धरि एकर यात्रा विषयगत रूपसँ विस्तृत अछि। परिशिष्टक अन्तरङ्ग वार्ता एहि यात्राकेँ लेखकक वैचारिक व्यक्तित्वसँ जोड़ैत अछि।

पोथीक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण संकेत ई अछि जे मैथिली साहित्यक अध्ययनक लेल भाषिक आत्मीयता पर्याप्त नहि; पाठक सूक्ष्म निरीक्षण, व्यापक सन्दर्भज्ञान, रूप-विवेक आ स्वतन्त्र आलोचनात्मक निर्णय समान रूपसँ आवश्यक अछि। एहि आधारपर ग्रन्थ मैथिली साहित्यिक अनुसन्धानमे नूतन प्रश्न उठेबाक आ विधिसम्मत पाठालोचनाक प्रेरणादायी सामग्री प्रदान करैत अछि।

अध्याय ४ • वीरेन्द्र मल्लिक साहित्य

नाटक आ रंगमंच

नौ अध्याय आ दू परिशिष्ट • रंगशिल्प, एकांकी, लोकनाट्य आ मिथिलाक रंगपरम्परा

१. मैथिली नाटक आ रंगमंच : स्थिति आ भविष्य

एहि अध्यायमे भारतीय नाट्यपरम्पराक उद्गमसँ मैथिली नाटकक ऐतिहासिक विकास आ आधुनिक मैथिली रंगमंचक भविष्यधरि व्यापक सामग्री एकत्र कयल गेल अछि। लेखक नाट्यग्रन्थ, वास्तविक मंचन आ मैथिल समाजक सांस्कृतिक जीवनकेँ एक-दोसरसँ जोड़ि देखैत छथि।

१.१ नाटकक उत्पत्ति

अध्यायक आरम्भ नाटकक उत्पत्ति-प्रश्नसँ होइत अछि। नाट्यक उद्भवकेँ धार्मिक अनुष्ठान, सामूहिक अभिव्यक्ति, गीत-संगीत, अभिनय आ प्राचीन नाट्यविचारक पृष्ठभूमिमे राखल गेल अछि। नाट्यशास्त्रीय परम्पराक उल्लेख लेखकक प्रारम्भिक तर्ककेँ भारतीय सांस्कृतिक सन्दर्भ प्रदान करैत अछि।

कथाक लिखित रूप आ कथाक मंचीय रूपमे भिन्नता अछि। नाटकक उत्पत्तिक चर्चा करैत दूनूक सम्बन्ध स्थापित कयल जाय तँ नाट्यइतिहास अधिक समग्र बनैत अछि।

१.२ नाटकक समृद्ध परम्परा आ महत्त्व

भरतमुनिक नाट्यशास्त्र, भास, शूद्रक, कालिदास, भवभूति आ संस्कृत नाट्यशास्त्रीय परम्पराक उल्लेखसँ लेखक भारतीय नाटकक इतिहासक समृद्ध स्वरूप रेखांकित करैत छथि। अभिनय, रस, पात्र, कथावस्तु आ प्रेक्षक-संबन्धक महत्त्व एहि विमर्शमे अन्तर्निहित अछि।

भारतीय नाट्यपरम्परामे नाटक साहित्यक संग प्रदर्शन-कला सेहो रहल अछि; तँ ओकर मूल्यांकन केवल लिखित संवादक सौन्दर्य धरि सीमित नहि होयबाक चाही।

१.३ मैथिली नाटकक उद्भव

मैथिली नाटकक उद्भवक प्रश्नमे भाषा, भूगोल, कालक्रम आ प्राचीन ग्रन्थपरम्परा सभ जोड़ल अछि। लेखक मैथिलीक आरम्भिक नाट्यरचनाकें व्यापक पूर्वभारतीय नाट्यपरम्पराक सन्दर्भमे देखैत छथि।

ऐतिहासिक अनुसन्धानमे नाटकक रचनाकाल, उपलब्ध पाण्डुलिपिक काल आ वास्तविक मंचनक प्रमाण तीनू पृथक् करबाक चाही। एहि भिन्नतासँ प्राचीनताक दावाक अधिक विश्वसनीय परीक्षण सम्भव होइत अछि।

१.४ आधुनिक भारतीय नाटकक विकास

एहि उपखण्डमे भारतीय नाटकक आधुनिक विकास, रचनात्मक परिवर्तन आ आधुनिक रंगमंचसँ ओकर सम्बन्धक विवेचन अछि। सामाजिक विषय, पात्र-निर्माण आ मंचन-पद्धतिक परिवर्तन आधुनिक नाट्यविकासक आवश्यक प्रसंग अछि।

मैथिली नाटकपर आधुनिक भारतीय रंगचेतनाक प्रभावकें स्थानीय सामाजिक परिस्थिति आ उपलब्ध रंग-साधनक सन्दर्भमे जाँचना उचित होयत।

१.५ प्राचीन मैथिली नाटक : मैथिली धूर्त समागम आ गोरक्ष-विजय

अनुक्रमणिकामे प्राचीन मैथिली नाटक अन्तर्गत ‘मैथिली धूर्त समागम’ आ ‘गोरक्ष-विजय’ विशेष रूपसँ उल्लिखित अछि। पहिल कृतिक चर्चामे व्यंग्य, सामाजिक आचरण आ नाट्य-संवादक प्रश्न महत्त्वपूर्ण होइत अछि; दोसरक सन्दर्भमे धार्मिक-आध्यात्मिक आख्यानक नाट्यरूप प्रमुख चर्चा थिक।

एहि रचनासभकें एकरस आधुनिक गद्यनाटकक संरचनामे परखब उचित नहि; प्राचीन नाटकक भाषा-मिश्रण, गीत, आख्यान आ मंचीय परम्परा स्वतंत्र कसौटी माँगैत अछि।

१.६ मध्यकालीन मिथिलामे विकसित नाटक : पारिजात हरण

मध्यकालीन मिथिलाक नाट्यविकासमे ‘पारिजात हरण’क विशिष्ट स्थान अछि। गीत, भक्ति, पौराणिक कथावस्तु आ प्रस्तुति-धर्मिता एकरा नाट्यइतिहासक महत्त्वपूर्ण सूत्र बनबैत अछि। कीर्तनिया नाटकक प्रसंग एहिठाम अनिवार्य रूपसँ उपस्थित होइत अछि।

गीतप्रधान कृतिक मंचीयता आधुनिक संवादप्रधान नाटकसँ भिन्न होइत अछि। ताहि कारण मध्यकालीन नाटकक अध्ययनमे संगीतक स्थानकें मुख्य विवेचनसँ अलग नहि करबाक चाही।

१.७ नेपालमे विकसित नाटक

नेपालमे मैथिली नाटकक विकास, दरबारी संरक्षण आ भाषिक-सांस्कृतिक सम्पर्क पर लेखक विशेष ध्यान दैत छथि। मल्लकालीन परिवेशमे मैथिली नाट्यरचनाक इतिहास एक व्यापक भू-सांस्कृतिक परम्पराकेँ उद्घाटित करैत अछि।

आधुनिक राजनीतिक सीमाक आधारपर पुरान साहित्यिक-सांस्कृतिक परम्पराकेँ बाँटब भ्रामक भऽ सकैत अछि। नेपालमे विकसित कृतिक मूल भाषा, लेखकीय सम्बन्ध आ प्रस्तुति-परिवेशक पृथक् परीक्षण अपेक्षित अछि।

१.८ नेपालमे विकसित नाटकक विशेषता

नेपालक मैथिली नाट्यपरम्परामे दरबारी वातावरण, गीत, धार्मिक आख्यान आ बहुभाषिक प्रयोगपर विमर्श कयल गेल अछि। एकरा केवल मैथिलीभाषी क्षेत्रक विस्तार नहि, बरु अभिनव नाट्य-परिवेशक रूपमे बुझबाक सम्भावना अछि।

नाटकक लिखित भाषा आ मंचपर प्रयुक्त गायन-भाषा प्रत्येक स्थितिमे समान होयब अनिवार्य नहि। एहि तथ्यपर विचार कयने बिना नेपालक मैथिली नाटकक मूल्यांकन अपूर्ण रहत।

१.९ आरम्भिक मैथिली नाटक आ अंकिया नाटक केर विशेषता

आरम्भिक मैथिली नाटकक चर्चा क्रममे लेखक ‘अंकिया नाट’ केर विशेषताक सेहो उल्लेख करैत छथि। गीत, नृत्य, धार्मिक कथावस्तु आ सामूहिक प्रस्तुति एकर तुलनात्मक अध्ययनक महत्त्वपूर्ण प्रसंग अछि।

पूर्वोत्तर भारतीय नाट्यपरम्परासँ मैथिली नाट्यसाहित्यक सम्बन्धक प्रश्नमे प्रभावक दिशा स्वतः निश्चित नहि मानल जाय; कालक्रम आ उपलब्ध पाठक तुलनात्मक प्रमाण आवश्यक अछि।

१.१० आधुनिक मैथिली नाटक

आधुनिक मैथिली नाटकमे सामाजिक समस्या, पारिवारिक सम्बन्ध, नैतिक प्रश्न, राजनीतिक चेतना आ व्यक्तिक संघर्ष नवीन कथ्यक रूपमे प्रवेश करैत अछि। उपन्यासक समान नाटक सेहो बदलैत मैथिल समाजक अनुभवकेँ अभिव्यक्ति दैत अछि; मुदा नाटकमे दृश्यात्मक संकेन्द्रण विशेष आवश्यक अछि।

आधुनिकता केवल नव तिथिक नाम नहि; नाटकक प्रश्न, संवाद, नाट्यसंरचना आ रंगप्रयोगक परिवर्तनक आधारपर ओकर विशेषता निर्धारित होइत अछि।

१.११ स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली नाटक

स्वाधीनताक बाद मैथिली नाट्यलेखनमे सामाजिक परिवर्तन, शहरीकरण, ग्रामीण संकट, शिक्षा, परिवार आ व्यक्ति-संघर्षक विविध रूप देखल जाइत अछि। लेखक एहि कालखण्डक नाटक आ नाटककारसभक विस्तारपूर्वक चर्चा करैत छथि।

नाट्येतिहास लिखैत कृतिक प्रकाशन-वर्ष आ पहिल मंचन-वर्षकेँ अलग राखब आवश्यक अछि; कथ्यक नवता आ मंचीय नवता दुनू समानार्थक नहि।

१.१२ मैथिली रंगनाटक

लेखक ‘मैथिली रंगनाटक’क चर्चा करैत नाटकक रंगमंचीय संभावना, अभिनय-धर्मिता आ प्रेक्षकसम्बन्धी प्रश्न उघारैत छथि। लिखित ग्रन्थ आ रंगनाटकक सफल प्रस्तुति अपन-अपन प्रक्रिया माँगैत अछि।

रंगनाटकक अध्ययनमे दृश्य-क्रम, प्रवेश-निर्गमन, मंचीय वस्तु, रंग-संकेत आ अभिनयक व्यावहारिक अनुकूलता विशेष जाँचनीय अछि।

१.१३ रंगमंचक सुदीर्घ परम्परा

रंगमंचक विकासक्रम भारतीय आ पाश्चात्य दूनू सन्दर्भमे निरूपित अछि। प्रस्तुति-स्थान, दर्शक-व्यवस्था आ अभिनय-साधनक विकास रंगपरम्पराकेँ रूप प्रदान करैत अछि।

रंगमंचकेँ केवल भवन नहि, एक सामाजिक-सांस्कृतिक सम्बन्ध-व्यवस्था मानल जाय।

रंगप्रयोगक समय दर्शक, अभिनेता आ स्थानक अन्तःक्रिया आवश्यक अछि।

१.१४ आधुनिक भारतीय रंगमंच

आधुनिक भारतीय रंगमंचमे प्रशिक्षण, प्रकाश, दृश्य-सज्जा, अभिनय-पद्धति आ नाट्य-निर्देशनक नूतन आयाम विकसित भेल। मैथिली रंगमंच एहि परिवेशसँ पूर्णतः पृथक् नहि छल।

मिथिलाक संसाधन, दर्शक-वर्ग आ भाषा-परिवेशक अनुरूप नव तकनीकक स्वीकार अधिक फलदायक होयत, न कि पाश्चात्य नमूनाक यान्त्रिक अनुकरण।

१.१५ समकालीन भारतीय रंगमंच

समकालीन रंगप्रयोगमे परम्परागत प्रस्तुति आ नवीन नाट्यभाषाक बीच निरन्तर संवाद चलैत अछि। लेखक एहि विकासक सन्दर्भमे मैथिली रंगमंचक अवस्थाक समीक्षा करैत छथि।

नव प्रयोगक मूल्यांकन केवल बाहरी कौतुकसँ नहि, कथ्यक अनुकूलता आ दर्शकक अनुभूतिसँ करबाक चाही।

१.१६ मैथिली रंगमंचक परम्परा

मैथिली रंगमंचक इतिहासमे लोकाभिनय, कीर्तनिया नाटक, धार्मिक प्रस्तुति, शौकिया मण्डली आ नगर-आधारित रंगसंस्था सभक योगदान रहल अछि। एहि विविध धाराक एक संयुक्त इतिहास लिखब लेखकक महत्त्वपूर्ण प्रयत्न अछि।

लेखित नाटकक इतिहास, प्रचलित लोकाभिनय आ अभिलेखित मंचन—तीन प्रकारक स्रोतक समान महत्त्व स्वीकार कयल जाय।

१.१७ आधुनिक मैथिली रंगमंच

आधुनिक मैथिली रंगमंचक प्रयत्नमे नाट्यसंस्था, कलाकार, निर्देशक, रंग-प्रशिक्षण आ आयोजकक भूमिका महत्त्वपूर्ण अछि। मंचनक नियमितता आ आर्थिक-संस्थागत समर्थनक प्रश्न निरन्तर उपस्थित रहैत अछि।

मौलिक मैथिली नाटकक मंचन बढ़ेबाक लेल नाट्य-कार्यशाला, पुस्तकालय, चलन्त रंगमंडली आ दृश्य-ध्वनि अभिलेखागार उपयोगी भऽ सकैत अछि।

१.१८ मैथिली नाटक एवं रंगमंचक भविष्य

अध्यायक अन्तिम भाग मैथिली नाट्यक भविष्य, मौलिक रचना आ रंगमंचीय संरचनाक समस्यापर केन्द्रित अछि। लेखक साहित्यिक सृजन आ सक्रिय रंगकर्मक परस्पर सहयोगक प्रश्नकेँ महत्त्व दैत छथि।

सजग आलोचना, नव नाटककारक प्रोत्साहन, नियमित प्रस्तुति, कलाकार-प्रशिक्षण आ विविध दर्शक-समुदायसँ संवाद मैथिली रंगमंचक विकास लेल व्यवहार्य दिशा अछि।

प्रथम अध्यायक समेकित निष्कर्ष

प्रथम अध्याय मैथिली नाटकक एक ऐतिहासिक मानचित्र प्रस्तुत करैत अछि। एकर प्रमुख विशेषता ई छैक जे लेखक प्राचीन आख्यान, नेपालक नाट्यपरम्परा, आधुनिक नाटक आ समकालीन रंगकर्मकेँ एके विस्तृत विमर्शमे राखैत छथि। तथापि कालक्रम, प्रभाव आ प्रस्तुति-इतिहासक प्रत्येक दावा लेल मूल अभिलेखक स्वतंत्र अध्ययनक आवश्यकता बनल रहैत अछि।

२. रंगमंच आ एकांकी नाटक : संबंध-सूत्रता

एहि अध्यायमे रंगमंचक परिभाषा, भारतीय-पाश्चात्य मंच-विधान, आधुनिक एकांकीक तत्त्व आ मैथिली प्रतिनिधि रंग-एकांकीक विवेचन अछि। साहित्यिक रचना आ मंचीय प्रस्तुति कतेक निकटता राखैत अछि—ई अध्यायक मूल प्रश्न थिक।

२.१ ‘रंगमंच’ आ ओकर सुदीर्घ परम्परा

लेखक रंगमंच शब्दक व्युत्पत्ति, उपयोग आ नाट्यप्रस्तुतिक स्थल-सम्बन्धी विविध अर्थक चर्चा करैत छथि। रंगमंचक अर्थ केवल भूमि अथवा भवन नहि, बरु क्रिया, कलाकार आ दर्शकक संयुक्त उपस्थिति अछि।

नाट्यग्रन्थक शब्द दर्शकक समक्ष प्रकाश, गति, ध्वनि आ अभिनयक रूपमे बदलैत अछि; एहि कारण रंगमंच नाटकक पुनःसृजनक क्षेत्र थिक।

२.२ भरतक रंगमंच : आकार आ प्रकार

नाट्यशास्त्रीय रंगमण्डप, मंचक आकार, दर्शकक स्थान, प्रदर्शनक अनुकूलता आ अभिनयसँ सम्बन्धित व्यवस्थाक उल्लेख भेटैत अछि।

वास्तु-विधानक चर्चा नाटकक सौन्दर्यक चर्चा सँ अलग नहि; दृश्यता, श्रवणक्षमता आ उपस्थितिक नाटकीय सम्बन्ध मंचरचनासँ प्रभावित होइत अछि।

२.३ पाश्चात्य रंगमंच

पाश्चात्य परम्पराक नाट्यगृह, दर्शकक विन्यास आ अभिनय-क्षेत्रक भिन्न रूपक परिचय देल गेल अछि। एतय मंचीय परम्पराक ऐतिहासिक परिवर्तन देखल जा सकैत अछि।

पाश्चात्य रंगरूपक तुलना करैत मैथिली रंगमंचक पारम्परिक खुला तथा सामुदायिक मंचीय रूपक अपने गुणकेँ नहि बिसरबाक चाही।

२.४ आधुनिक रंगमंच : आकार-प्रकार

आधुनिक रंगमंचक चर्चा क्रममे मुक्ताकाशी, प्रोसीनियम, एरीना, बहुस्तरीय, बॉक्स-सेट, घूमनिहार आ अन्य मंचीय प्रयोगक परिचय अछि। एहि विविध रूपमे कलाकार-दर्शकक भौतिक दूरी आ दृश्य-सीमाक अन्तर नाटकीय अर्थक निर्माण करैत अछि।

मंचक चयन नाटकक कथा, पात्रक गति, उपलब्ध प्रकाश-साधन आ दर्शकवर्गक आवश्यकता अनुसार होयबाक चाही।

तत्त्व	संक्षिप्त आलोचनात्मक विवेचन
कथानक	एक मुख्य नाटकीय घटना अथवा संघर्षकें लक्ष्य करैत सुनियोजित घटनाक्रम।
पात्र	सीमित पात्र, भिन्न स्वभाव आ परिस्थितिसँ विकसित चरित्रगत क्रिया।
संवाद	पात्रानुकूल, स्वाभाविक, संक्षिप्त आ प्रयोजनपूर्ण वचन।
देश-काल	स्थान, वातावरण, समय आ सामाजिक पृष्ठभूमिक एकानुकूल संयोजन।
भाषा-शैली	मैथिलीक कथ्य-सापेक्ष प्रयोग; अत्यधिक अलंकारिकता अथवा कृत्रिमतासँ बचाव।
उद्देश्य	कथ्यक अन्तर्निहित विचार, अनुभव अथवा सामाजिक अर्थ।
गति	दृश्यगत परिवर्तन आ नाटकीय तनावक संतुलित प्रवाह।
रंग-संकेत	मंच-सज्जा, प्रवेश, गति, मौन, प्रकाश, ध्वनि आ वेशभूषासँ सम्बन्धित निर्देश।

२.५ रंगमंचक सर्जक : अभिनेता, परिचालक आ अभिकल्पक

लेखक रंगमंचक सर्जकसभमे अभिनेता, परिचालक आ अभिकल्पकक भूमिका अलग-अलग चिन्हित करैत छथि। नाटककारक पाठ निर्देशकक योजना आ अभिनेताक क्रियाक माध्यमसँ मंचपर उपस्थित होइत अछि।

नाट्यप्रस्तुति सामूहिक सर्जना थिक। निर्देशक एकर समग्र विन्यास करैत छथि, मुदा अभिनेता आ अन्य सहयोगी स्वयं रचनात्मक भागीदार रहैत छथि।

२.६ हमर मैथिली रंगमंच

मैथिली रंगमंचक सामाजिक-भाषिक आधार, रंगसाधन आ संस्थागत विकासक प्रश्न एहि प्रसंगमे उठैत अछि। स्थानीय भाषा आ जीवनक परिचय नाट्यप्रस्तुतिक विशिष्ट शक्ति बनि सकैत अछि।

मैथिली रंगमंचक सफलता लेल स्थानीय बोलीक स्वाभाविकता, प्रेक्षकक सांस्कृतिक समझ आ आधुनिक रंगप्रयोगक सन्तुलन आवश्यक अछि।

२.७ एकांकी : स्वरूप, परिभाषा आ वर्गीकरण

एक अंकमे सीमित नाटककें एकांकी कहि सकैत छी; मुदा एकर मूल गुण संकेन्द्रित नाटकीय क्रिया, सीमित पात्र, समय-संयम आ तीव्र प्रभाव अछि। लेखक एकांकीक प्रकार आ रचनात्मक विशेषताक चर्चा करैत छथि।

लघु होयब मात्र एकांकीक पर्याप्त कसौटी नहि। एकता, तनाव आ एक केन्द्रक दिस घटनाक गति एकांकीक नाटकीय शक्ति प्रदान करैत अछि।

२.८ आधुनिक एकांकी : तत्त्व आ विशेषता

अनुक्रमणिकामे कथानक, पात्र, संवाद, देश-काल, भाषा-शैली, उद्देश्य, गति आ रंग-संकेत अलग-अलग तत्त्वक रूपमे उल्लिखित अछि। लेखक एहि सभक उपयोगिता सम्यक् रूपसँ विवेचित करैत छथि।

एकांकीमे प्रत्येक संवाद, प्रवेश आ दृश्य-संकेतक कथ्यसँ सम्बन्ध होयबाक चाही; अनावश्यक विस्तार एकर प्रभाव कम करैत अछि।

२.९ एकांकीक आठ प्रमुख तत्त्व

२.१० प्रतिनिधि मैथिली रंग एकांकी : सम्पूर्ण शीर्षक-सूची

मूल अनुक्रमणिकामे निम्नलिखित एकांकीसभक स्वतंत्र चर्चा अछि। ई सम्पूर्ण सूची एहि समेकित अध्ययनमे सुरक्षित राखल गेल अछि; प्रत्येक कृतिक पूर्ण कथासार मूल एकांकीक स्वतंत्र पाठक बिना गढ़ल नहि गेल अछि।

२.१०.१ अयाची मिश्र

एहि एकांकीक नाम मिथिलाक विद्या, त्याग आ सांस्कृतिक स्मृतिक प्रसंग उपस्थित करैत अछि। एकर आलोचनामे ऐतिहासिक व्यक्तित्वक नाट्यरूप, संवादक अनुकूलता आ दृश्य-परिवेशक प्रश्न मुख्य मानल जा सकैत अछि।

२.१०.२ जय जन्मभूमि

एहि शीर्षकमे जन्मभूमिसँ भावात्मक सम्बन्ध आ देशप्रेमक स्वर स्पष्ट अछि। नाटकीय प्रभावक परीक्षणमे आदर्श-वचन आ पात्रक जीवित अनुभवक सामञ्जस्य आवश्यक मानल जाय।

२.१०.३ जीवन संघर्ष

जीवनक संघर्षमूलक परिस्थिति एहि शीर्षकक मुख्य संकेत थिक। पात्रक स्थितिकरण, निर्णायक मोड़ आ नाटकीय संकेन्द्रणक आधारपर एकर अध्ययन उपयोगी अछि।

२.१०.४ ब्रह्म स्थान

एहि रचनाक प्रसंगमे लोकविश्वास, सामाजिक व्यवहार आ परम्परागत मान्यतासँ जुड़ल प्रश्नक आलोचना उपयुक्त अछि। पात्रक आचरणक कथावस्तुक वास्तविक साक्ष्यसँ जोड़ि पढ़ब आवश्यक अछि।

२.१०.५ हथुट्टा कुर्सी

ग्रामीण परिवेश, शिक्षाक अवस्था अथवा सामाजिक संबंधक संकेतक जाँच एहि नाट्यशीर्षकक आलोचनामे अपेक्षित अछि। दृश्य आ वस्तु-प्रयोगक नाटकीय अर्थ विशेष ध्यानाकर्षक भऽ सकैत अछि।

२.१०.६ मिथिलाक प्रतिनिधि

एहि शीर्षकमे प्रतिनिधित्व आ सामाजिक दावाक प्रश्न उपस्थित अछि। संवाद, विडम्बना आ पात्रक कथनी-करनीक अन्तर नाट्यालोचनाक सम्भावित आधार अछि।

२.१०.७ मुनरीक मोल

मूल कृतिक नाम 'मुनरीक मोल' मूल्य, मानवीय सम्बन्ध अथवा सामाजिक व्यवहारक प्रश्न उठबैत अछि। एकर कथावस्तुक विशिष्ट घटना बिना मूल पाठक प्रमाणक अनुमानसँ निर्धारित नहि कयल गेल अछि।

२.१०.८ मुनिक मतिभ्रम

पौराणिक अथवा मुनि-चरित्रक नव अर्थ-निर्माणक सम्भावना एहि शीर्षकमे अछि। नाटकीय पुनर्व्याख्या आ व्यंग्यक संसर्गक प्रमाण मूल पाठमे देखब आवश्यक अछि।

२.१०.९ छींक

'छींक' जेकाँ लघु घटना नाटकीय संकेत आ हास्य-विसंगतिक माध्यम भऽ सकैत अछि। एकर विशिष्ट चरित्रगत कथा मूल पाठक निरीक्षणपर निर्भर अछि।

२.१०.१० दुलारक भूख

'दुलारक भूख' शीर्षक स्नेहक अभाव आ पारिवारिक संवेदनाक दिशा सूचित करैत अछि। मानवीय सम्बन्ध, अभाव आ संवादक मार्मिकता एकर आलोचनामे उपयुक्त दृष्टि बनैत अछि।

२.१०.११ आइभोर

'आइभोर' शीर्षक नव समय, परिवर्तित अनुभव अथवा प्रातःकालक बिम्ब उपस्थित करैत अछि। कथानकक निश्चित अर्थ मूल नाटकक दृश्य-क्रमक आधारपर स्थापित होयबाक चाही।

२.१०.१२ ओकरा आडनक बारहमासा

'ओकरा आडनक बारहमासा' शीर्षक सामाजिक जीवनक दीर्घ कालानुभवक संकेत दैत अछि। समय-संरचना, व्यंग्य आ बदलैत परिवेशक विश्लेषण एकर आलोचनात्मक सम्भावना अछि।

२.१०.१३ ओ कागज केर बाघ छथि

एहि शीर्षकमे कागजक बाघक बिम्बसँ शक्ति आ वास्तविक सामर्थ्यक अन्तरक संकेत बुझायल जा सकैत अछि; मुदा मूल नाटकक नाटकीय कथ्यक पुष्टिक बिना एकरा पूर्ण कथासार नहि कहल जा सकैत अछि।

२.११ एकांकी नाटक आ रंगमंच : संबंध-सूत्र

एकांकीक संक्षिप्तता मंचनक दृष्टिसँ सुविधा प्रदान करैत अछि, मुदा तीव्र नाटकीय प्रभाव उत्पन्न करबाक लेल संवादक सघनता, पात्रक क्रिया, दृश्य-गतिशीलता आ नेपथ्यक संयोजन आवश्यक छैक। लेखकक विवेचन साहित्यिक एकांकी आ मंचीय एकांकीक अन्तर स्पष्ट करबाक दिशा प्रदान करैत अछि।

एहि अध्यायक महत्त्व एकांकीक सिद्धान्त आ मैथिली उदाहरणकेँ एकत्र करबमे अछि। कथानक-समीक्षासँ आगाँ बढ़ि दृश्य-प्रस्तुति, अभिनयक सुविधा आ दर्शकीय प्रभावक पृथक् समीक्षा अपेक्षित अछि।

३. मैथिली नाट्यालोचना : प्रकृति आ प्रतिमान

ई अध्याय मैथिली नाट्यालोचनाक सैद्धान्तिक आधार स्पष्ट करैत अछि। प्राचीन भारतीय निकष, मध्ययुगीन चिन्तन, पाश्चात्य प्रतिमान आ मैथिली नाट्यसमालोचनाक प्रकृति—चारू पक्षक अन्तःसम्बन्धपर विचार कयल गेल अछि।

३.१ प्राचीन निकष

भरतमुनिक नाट्यशास्त्र, रस, भाव, अभिनय, नाट्यवस्तु आ प्रेक्षकक अनुभव प्राचीन भारतीय नाट्यालोचनाक महत्त्वपूर्ण आधार अछि। एहि निकषमे नाटकक शास्त्रीय स्वरूपक संग प्रस्तुति-कला सेहो समाविष्ट अछि।

भारतीय आलोचनामे रसक प्रधानता मानैत सेहो अभिनय, स्थान, पात्र आ समयक मंचीय कार्यकेँ उपेक्षित नहि कयल जा सकैत अछि।

३.२ मध्ययुगीन नाट्यालोचन

मध्ययुगीन साहित्यशास्त्रीय परम्परा नाटकक रूप, रस, कथावस्तु, पात्रविधान आ कलात्मक उद्देश्यक विवेचनकेँ विकसित करैत अछि। लेखक एहि निरन्तरताकेँ नाट्यसमालोचनाक विकासक्रममे स्थान दैत छथि।

शास्त्रीय सूत्रक उपयोग रचनाक ऐतिहासिक स्वभावक अनुरूप करबाक चाही; प्रत्येक लोकाभिनय अथवा गीतप्रधान नाटक एकहि मापदण्डपर उपयुक्त नहि उतरि सकैत अछि।

३.३ नाट्यालोचनक पाश्चात्य प्रतिमान

पाश्चात्य नाट्यचिन्तनमे अनुकरण, क्रिया, संघर्ष, चरित्र, दृश्य-संरचना आ प्रेक्षक-अनुभवक विविध मूल्यांकन-पद्धति विकसित भेल अछि। लेखक एहि विचारकें मैथिली नाट्यालोचनसँ जोड़ि देखैत छथि।

भारतीय आ पाश्चात्य विचारमे केवल विरोध नहि, बरु बहुल कसौटीक सम्भावना छैक। एक दृष्टिसँ कथ्य, दोसर दृष्टिसँ अभिनय आ तेसर दृष्टिसँ सामाजिक अर्थ जाँचल जा सकैत अछि।

३.४ मैथिली नाट्यालोचनक प्रकृति

मैथिलीमे नाट्यकृतिक समीक्षा, पत्र-पत्रिका, मंचनसम्बन्धी विवेचन आ साहित्यिक विमर्श नाट्यालोचनाक आधार बनल अछि। लेखक एहि गतिविधिक स्वरूप आ सीमापर विचार करैत छथि।

लिखित नाटकक पुस्तक-समीक्षा आ वास्तविक मंचनक प्रदर्शन-समीक्षा बीच स्पष्ट अन्तर रहल चाही; पहिलमे पाठ प्रधान, दोसरमे अभिनय आ प्रस्तुतिक प्रमाण प्रधान होइत अछि।

३.५ मैथिली नाट्यालोचनक प्रतिमान

मूल ग्रन्थमे नाट्यसमालोचनक निकष निर्धारित करबाक प्रश्न उठायल गेल अछि। नाटककारक दृष्टि, संरचना, भाषा, संवाद, पात्र, दृश्य-विन्यास, अभिनय आ रंगप्रयोग समेकित मूल्यांकनक आवश्यक अवयव मानल जा सकैत अछि।

मैथिली नाट्यालोचनक स्वायत्तता लेल स्थानीय रंगप्रयोगक विशिष्टता आ नाट्यसिद्धान्तक तुलनात्मक विवेचन दुनू आवश्यक अछि।

तृतीय अध्यायक निष्कर्ष

नाटक एक प्रयोगमूलक कला थिक—एहि मूल अवधारणाकें आधार मानि नाट्यालोचनकें पाठ-केन्द्रित सीमासँ बाहर निकालबाक आवश्यकता अध्याय बारम्बार स्पष्ट करैत अछि। साहित्यिक संरचनाक सूक्ष्मता आ मंचीय प्रभावक संयुक्त अध्ययन मैथिली समालोचनक उपयोगी दिशा बनि सकैत अछि।

४. ऑपरेशन मैथिली लोक नाट्य

एहि संक्षिप्त अध्यायमे लोक शब्दक अर्थ आ मैथिली लोकनाट्यक वर्गीकरणक आधार प्रस्तुत अछि। लोकक सांस्कृतिक अर्थ, मौखिक परम्परा, समुदाय आ अभिनयक अन्तःसम्बन्ध एहि विवेचनक केन्द्रमे अछि।

४.१ 'लोक' शब्दक व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ

मूल लेखमे 'लोक'क धात्वर्थ, प्राचीन प्रयोग आ सामान्य जनसमुदायक अर्थक विवेचन अछि। लेखक लोककें समाजक व्यवहार, दर्शन, स्मृति आ सामूहिक अनुभवक सन्दर्भमे परिभाषित करबाक प्रयत्न करैत छथि।

'लोक'कें केवल 'गाम' अथवा 'अशिक्षित'क पर्याय मानब उचित नहि। लोक व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक संसार थिक, जे शास्त्रीय परम्परासँ संवाद सेहो करैत अछि।

४.२ लोकनाट्यक वर्गीकरण

लेखक धार्मिक, सामाजिक, अनुष्ठानिक, स्त्री-प्रधान आ हास्य-व्यंग्यात्मक प्रस्तुति जेकाँ विभिन्न लोकाभिनयक रूपक उल्लेख करैत छथि। लोककथा, गीत, नृत्य आ समुदाय आधारित प्रस्तुति एकर प्रमुख आधार अछि।

एक लोकनाट्यमे एकसाथ अनेक सामाजिक कार्य भऽ सकैत अछि—अनुष्ठान, स्मृति, हास्य, प्रतिरोध आ मनोरञ्जन। वर्गीकरणकें अतिरूढ़ नहि करबाक चाही।

४.३ मैथिली लोकाभिनयक सांस्कृतिक क्षेत्र

सामा-चकेबा, जट-जटिन, डोमकछ, सलहेस, लोरिक, विदापत आ कीर्तनिया जेकाँ परम्परासभ मिथिलाक बहुरंगी लोकाभिनयक स्मृति जगबैत अछि। एहि परम्परामे गीत आ संवादक सीमारेखा अनेक अवसरपर एक-दोसरमे समा जाइत अछि। कथासँ बेसी महत्त्व कतेको आयोजनमे सांस्कृतिक अवसर, सामूहिक सहभागिता आ परम्परागत अभिनय-पद्धतिक होइत अछि।

लोकाभिनयक दस्तावेजीकरणमे गीतक शब्द मात्र सुरक्षित राखब पर्याप्त नहि; स्थानीय अवसर, पात्रक वेश, भागीदारक भूमिका, दर्शकक सहभागिता आ प्रस्तुति-स्थान सेहो अंकित करब आवश्यक अछि।

५. महेन्द्र मलंगियाक रंगशिल्प

महेन्द्र मलंगियाक नाट्यप्रयोगक माध्यमसँ रंगशिल्पक सूक्ष्म विवेचन एहि अध्यायमे अछि। लेखक नाटककेँ पाठ-पुस्तकसँ आगाँ बढ़ि अभिनय, रंग-संकेत, दृश्य-सज्जा, समय, नेपथ्य आ ध्वनिक जीवन्त कलाक रूपमे देखैत छथि।

५.१ रंगशिल्प किंवा अभिनयत्व

नाट्यभाषाक सम्पूर्ण अर्थ केवल शब्दमे समाहित नहि रहैत अछि। मंचपर भाव, क्रिया, लय, स्थान आ दृश्य-संकेतक संग रचना नवीन रूप प्राप्त करैत अछि। मूल अध्याय रंगशिल्प आ अभिनयत्वक एहि अन्तर्सम्बन्धकेँ महत्त्व दैत अछि।

रंगशिल्प सजावटक नाम नहि; ई कथ्यकेँ दृश्य-श्रव्य रूप देबाक संरचनात्मक विधि थिक।

५.२ अभिनय

अभिनेता लिखित पात्रकेँ मंचपर जीवित उपस्थिति प्रदान करैत छथि। संवादक अर्थ पात्रक मनःस्थिति, देहभाषा आ दृश्यस्थितिक सहयोगसँ बदलि सकैत अछि।

सफल अभिनयमे शब्द, मौन आ क्रियाक अन्तःसंगति रहब आवश्यक अछि; केवल संवादक उच्चारण अभिनयक पूर्णता नहि।

५.३ रंगशिल्प

महेन्द्र मलंगियाक नाट्यकृतिमे रंगशिल्पक विभिन्न उपादानकेँ चिन्हित करैत लेखक द्रष्टव्य दृश्यनिर्देश आ अभिनय-संकेतक महत्त्व स्थापित करैत छथि।

पाठसँ मंचधरि संक्रमणक समय निर्देशकक स्वातन्त्र्य आ नाटककारक नाट्याभिप्रायक मध्यमे सर्जनात्मक सामञ्जस्य आवश्यक छैक।

५.४ कथानक लेल सहकारी सूत्र

कथानकक विकास संवादक संग दृश्यगत क्रिया, वस्तुक प्रयोग, विराम, ध्वनि आ संकेतसँ सेहो होइत अछि। लेखक एहि सहायक साधनक नाटकीय प्रयोजन देखबैत छथि।

कथानकक ‘कहब’ आ कथानकक ‘देखब’ दूनू समान नहि; रंग-संकेत घटनाकेँ बिना अतिरिक्त विवरणक दृश्यमान बना सकैत अछि।

५.५ रंगमंचक सज्जाक लेल संकेत

मंचीय वस्तु, आँगन, कोठरी, दरबज्जा, बैठबाक स्थान आ अन्य सज्जा नाटकक सामाजिक संसारक चिन्ह बनैत अछि। सज्जाक चयन दृश्यभाव आ पात्रक गतिसँ जुड़ल रहैत अछि। अनावश्यक सज्जा दर्शकक ध्यान भटका सकैत अछि; अर्थपूर्ण सीमित वस्तु कतेको काल अधिक समर्थ होइत अछि।

५.६ वेशभूषा आदिक संकेत

पात्रक वेश, रूप-सज्जा आ रूपान्तरणक संकेत कथानकक सामाजिक परिस्थिति स्पष्ट करैत अछि। वेशभूषा आ देहाभिनय दुनूक संयुक्त प्रयोग अपेक्षित अछि।

वेशभूषासँ सामाजिक परिस्थिति स्पष्ट करब सम्भव अछि, मुदा पात्रक व्यक्तित्वकेँ ओकर परिधानधरि सीमित नहि करबाक चाही।

५.७ अभिनय सम्बन्धी संकेत

प्रवेश, बैसब, उठब, देखब, मुड़ब, हँसब, कानब आ मौन रहबाक निर्देश रंग-संकेतक अन्तर्गत अबैत अछि। लेखकक विवेचनमे अभिनेता-संचालन आ कथ्यक अन्तर्संबन्ध प्रधान अछि।

अभिनयसंबन्धी संकेत नाटककारक सम्भावित मंचीय कल्पना दैत अछि; वास्तविक प्रस्तुति ओकर विवेकपूर्ण व्याख्या करैत अछि।

५.८ स्थान सम्बन्धी संकेत

दृश्य कोन स्थानपर घटैत अछि, ओकर आन्तरिक-बाह्य रूप, सामाजिक संकेत आ वस्तु-विन्यास कथावस्तुक अर्थ निर्माण करैत अछि।

स्थान केवल भौतिक पृष्ठभूमि नहि; कोनो आँगन अथवा सार्वजनिक चौक सेहो पात्रक सम्बन्ध आ सामाजिक मर्यादाक सूचक भऽ सकैत अछि।

५.९ समय सूचना

घटनाक पूर्वापर क्रम, दिन-राति, ऋतु, प्रतीक्षा अथवा कालान्तरक संकेत दर्शककेँ नाटकक समय-रचनासँ जोड़ैत अछि।

मंचीय समय आ कथा-संसारक समय अलग होइत अछि; कुशल संकेत कम समयमे दीर्घ घटनाक आभास दऽ सकैत अछि।

५.१० नेपथ्य लेल संकेत

नेपथ्यमे घटित घटना, आवाज, पदचाप, संगीत अथवा अदृश्य पात्रक सूचना दर्शकक कल्पनाकें सक्रिय करैत अछि।

जे घटना प्रत्यक्ष देखेब आवश्यक नहि, ओकर प्रभाव नेपथ्यसँ अधिक सशक्त भऽ सकैत अछि।

५.११ संगीत सम्बन्धी निर्देश

संगीत, ध्वनि आ लय नाटकक भावात्मक वातावरण निर्मित करैत अछि। लोकसंगीतक प्रयोग पात्रक क्षेत्रीय पृष्ठभूमि आ सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य स्पष्ट करबाक साधन बनि सकैत अछि।

नाटकमे गीतक प्रयोग कथ्यक अनुकूल होयबाक चाही; केवल विराम भरेबाक लेल गीत जोड़ब रंगगतिाकें क्षति पहुँचाबि सकैत अछि।

५.१२ पर्दा सम्बन्धी संकेत

दृश्य-परिवर्तन, आन्तरिक परिवर्तन आ प्रस्तुति-विरामक प्रसंगमे पर्दाक उपयोग सम्बन्धी संकेत लेखकीय रंगचेतनाक सूचक अछि।

आधुनिक रंगप्रयोगमे प्रकाश, ध्वनि आ अभिनेताक गति पर्दाक स्थान लऽ सकैत अछि; मुदा मूल संकेतक उद्देश्य सुरक्षित रहल चाही।

५.१३ वर्जित बात समय संकेत

मूल अनुक्रमणिकामे एहि विशिष्ट शीर्षकक उल्लेख अछि। मंचपर प्रत्यक्ष नहि देखाओल जायबला घटना अथवा परोक्ष संकेतक नाटकीय उपयोग एहि प्रसंगमे विचारणीय अछि।

प्रत्यक्षता आ संकेतात्मकताक निर्णय कलात्मक, सामाजिक आ मंचीय प्रसंगपर निर्भर करैत अछि; कोनो सार्वभौम नियम पर्याप्त नहि।

पंचम अध्यायक निष्कर्ष

महेन्द्र मलंगियाक रंगशिल्पपर केन्द्रित अध्याय मैथिली नाट्यालोचनकें कथावस्तु आ पात्रक सरलीकृत विवेचनसँ बाहर लऽ जाइत अछि। एतय नाटककार द्वारा निर्मित मंचीय सम्भावना स्वतन्त्र आलोचनात्मक विषय बनैत अछि।

६. महेन्द्र मलंगियाक रंगभाषा

रंगशिल्पक बाद लेखक रंगभाषाक विवेचन करैत छथि। रंगमंचपर भाषा केवल बोलल गेल शब्द नहि: अभिनेता, दर्शक, निर्देशक, शारीरिक मुद्रा, गति, लय, ध्वनि, बिम्ब आ प्रतीक सभ मिलि नाट्य-संप्रेषण बनबैत छथि।

६.१ रंगभाषाक विविध आयाम

मूल अनुक्रमणिकामे अभिनेता, दर्शक आ निर्देशककें रंगभाषाक विविध आयामक रूपमे राखल गेल अछि। अभिनेता भावकें दृश्य करैत छथि; दर्शक ओकर अर्थ ग्रहण करैत छथि; निर्देशक एकर सम्पूर्ण लय आ प्रस्तुति-संरचनाकें संयोजित करैत छथि।

एहि त्रिकोणक बीच निरन्तर कलात्मक संवाद छैक। रंगमंचीय भाषा शब्दक अक्षरार्थसँ बेसी बहुअर्थी आ स्थितिसापेक्ष होइत अछि।

६.२ अभिनेता (Actor)

रंगभाषाक प्रथम वाहक अभिनेता थिक। मुखमुद्रा, दृष्टि, चालि, श्वास, विराम, उच्चारण आ देहक स्थिति पात्रक मानसिक एवं सामाजिक अर्थ प्रकट करैत अछि।

अभिनेता द्वारा उच्चारित संवादक वास्तविक अर्थ ओकर परिस्थिति आ आन्तरिक प्रेरणासँ बनैत अछि। एके वाक्य भय, प्रेम अथवा व्यंग्यक भिन्न लहजामे भिन्न अर्थ प्रदान करैत अछि।

६.३ दर्शक (Audience)

दर्शक नाटकक अर्थनिर्माणमे सहभागी छथि। हास्य, मौन, सहानुभूति, असहमति अथवा प्रतीकक पहचान दर्शकक सांस्कृतिक अनुभवक माध्यमसँ होइत अछि।

मैथिली दर्शकक स्थानीय ज्ञान, बोलीक बोध आ लोकपरम्पराक परिचय प्रस्तुति-ग्राह्यताकें प्रभावित करैत अछि। रंगप्रयोग करैत एहि अनुभवकें समुचित सम्मान आवश्यक अछि।

६.४ निर्देशक (Director)

निर्देशक कथ्यक रंगमंचीय व्याख्या करैत छथि। दृश्य-विन्यास, पात्रक स्थितिकरण, वेशभूषा, प्रकाश, ध्वनि आ अभिनयक लयकें एक समेकित रूप देब हुनक कार्य थिक।

निर्देशकक कलात्मक स्वातन्त्र्य मूल नाटकक अर्थकेँ विस्तार दऽ सकैत अछि; मुदा मूल कथ्यकेँ बिना सर्जनात्मक कारण पूर्णतः बदलि देब प्रामाणिक प्रस्तुति नहि कहल जा सकैत अछि।

६.५ रंगभाषाक संलिष्टता : शारीरिक भाषा

देहभाषा दृश्यकलाक आधारभूत संकेत-व्यवस्था थिक। ठाढ़ होयबाक ढङ्ग, दूरी, मुखभाव, गर्दनक गति, हाथक संकेत आ मौन सभ कथाक अर्थ विकसित करैत अछि।

रंग-भाषा प्रायः अवाचिक तत्त्वसँ अधिक प्रभावकारी बनि सकैत अछि। विशेषतः संवादक अभावमे देहक प्रतिक्रिया कथ्यकेँ प्रखर बनबैत अछि।

६.६ लय (Rhythm)

संवादक क्रम, अभिनेता-दर्शकक प्रत्युत्तर, विराम, ध्वनि आ दृश्य-परिवर्तनक अनुकूल प्रवाह रंगमंचीय लयक निर्माण करैत अछि।

लयक अर्थ केवल ताल नहि; कथावस्तुक भाव-संवेग आ घटनाक व्याकुलता सेहो लयक अङ्ग अछि।

६.७ गति (Speed)

घटनाक अनुकूल शीघ्र अथवा मन्द परिवर्तन नाटकक प्रभावकेँ रूप दैत अछि। क्रियाक अनावश्यक विस्तार एकांकीमे विशेष हानि पहुँचा सकैत अछि।

नाटकीय गति आ शारीरिक तेजीसँ समानार्थक नहि; एक मौन दृश्य सेहो आन्तरिक तनावसँ तीव्र होय सकैत अछि।

६.८ प्रतीक, बिम्ब, ध्वनि, संकेतादि

रंगभाषामे प्रकाश, वस्तु, रंग, ध्वनि, प्रतीक, बिम्ब, नेपथ्य आ संकेत अप्रत्यक्ष अर्थ प्रेषित करैत अछि। एहि तत्त्वसभसँ नाट्यसंसारक अनेक स्तर उद्घाटित होइत अछि।

प्रतीकक प्रभावक जाँच कलाकारक मंशासँ मात्र नहि, दर्शकक वास्तविक ग्रहण-शक्तिसँ सेहो होयबाक चाही।

षष्ठ अध्यायक निष्कर्ष

रंगशिल्प आ रंगभाषा एक-दोसरक पूरक अछि। रंगशिल्प प्रस्तुति-व्यवस्थाक बोध उत्पन्न करैत अछि, जखन कि रंगभाषा एहि व्यवस्थासँ उत्पन्न संप्रेषण आ अर्थक प्रश्न उठबैत अछि। एहि दुनू अध्यायक संयुक्त अध्ययन मैथिली रंगमंचक आलोचनालेल नूतन दृष्टि प्रदान करैत अछि।

७. मैथिली रंगमंच आ कलकत्ता

एहि अध्यायमे मैथिली रंगमंचक प्रवासी केन्द्र कलकत्ताक रंगपरम्परा, संस्थागत गतिविधि आ नाट्य-प्रस्तुतिक विवरण समेटल अछि। भाषा-संरक्षण आ रंगकर्मक सम्बन्धकेँ बुझबाक दृष्टिसँ ई ऐतिहासिक सामग्री विशेष उपयोगी अछि।

७.१ रंगमंचक सुदीर्घ परम्परा

लेखक प्रथम रंगमंचक ऐतिहासिक परम्परा स्मरण करैत छथि, तकर बाद आधुनिक प्रस्तुति-विधान आ कलकत्ताक रंगकर्मक चर्चा प्रारम्भ होइत अछि।

कोनो क्षेत्रक रंगइतिहासक अध्ययन लेल ओकर व्यापक राष्ट्रीय नाट्यपरम्परा आ स्थानीय सामाजिक आधार दुनूक परिचय आवश्यक अछि।

७.२ आधुनिक रंगमंच : आकार-प्रकार

आधुनिक रंगमंचक भिन्न विन्यासक विवरण एहि अध्यायमे पुनः उपस्थित होइत अछि; ई कलकत्ताक वास्तविक नाट्य-प्रस्तुतिक तकनीकी सन्दर्भ तैयार करैत अछि।

मैथिली रंगसंस्थाक वास्तविक मंचनक विवरणकेँ रंगगृहक प्रकार, संसाधन आ दर्शकक उपस्थिति संग जोड़ल जाय तँ इतिहास अधिक जीवन्त होइत अछि।

७.३ मैथिली रंगमंच

क्रम	रंगमंचीय संस्था/मंच
1	अखिल भारतीय मिथिला संघ
2	मिथिला कला केन्द्र
3	मैथिली रंगमंच
4	कुर्मी क्षत्रिय छात्र-वृत्ति कोष
5	ऑल इंडिया मैथिल संघ
6	कर्ण गोष्ठी : जयंत लोक मंच

क्रम	रंगमंचीय संस्था/मंच
7	मिथिला सेवा संस्थान
8	‘मिथि’ यात्रिक
9	मिथिला विकास परिषद
10	वैदेही कला मंच
11	कोकिल मंच
12	झंकार
13	मिथिला सेवा समिति (बेलूर)
14	उदय पथ

प्रवासी मैथिल समुदायक साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधिमे रंगमंच भाषिक एकता आ सामुदायिक आयोजनक महत्वपूर्ण माध्यम रहल अछि। कलकत्ता एहि प्रकारक मंचन लेल उल्लेखनीय केन्द्र बनल।

रंगकर्म साहित्यक प्रचारक अतिरिक्त सामाजिक सम्बन्ध आ सांस्कृतिक अस्मिताक निर्माण सेहो करैत अछि।

७.४ कलकत्ताक रंगमंच : प्रस्तुति आ प्रयोग

मूल अध्यायमे विभिन्न रंगप्रस्तुति, आयोजन आ नाट्यसंस्थाक योगदानक विवरण अछि। प्रदर्शनक इतिहास आ नाटकक मुद्रित इतिहास एके नहि होयबाक तथ्य एहि सामग्रीसँ स्पष्ट होइत अछि।

मंचनक कार्यक्रमपत्र, नाट्यसंस्थाक स्मारिका, कलाकार-सूची, समाचारपत्रक समीक्षा आ प्रदर्शनक चित्र/ध्वनि अभिलेख शोधक विश्वसनीय आधार अछि।

७.५ विभिन्न संस्था द्वारा नाट्य-प्रस्तुति : मूल अनुक्रमणिकाक सम्पूर्ण सूची

मूल अनुक्रमणिकामे निम्नलिखित चौदह संस्थागत/रंगसम्बन्धी नाम दर्ज अछि। नामक मूल रूप यथासम्भव सुरक्षित राखल गेल अछि।

अध्यायक मुद्रित पृष्ठ १९८ सँ आगाँ संस्थासभक प्रस्तुति-संबंधी सारणी सेहो उपलब्ध अछि। संकलित नाटक, प्रस्तुति आ आयोजनक विवरण मैथिली रंगमंचक संस्थागत इतिहास तैयार करबाक लेल आधार-सामग्री प्रदान करैत अछि। एहि शोधात्मक संस्करणमे अस्पष्ट सारणी-पंक्तिक नाम, वर्ष अथवा मंचन-संख्या बिना विश्वसनीय पाठनक पुनरुत्पादित नहि कयल गेल अछि।

७.६ कलकत्ताक रंगमंच आ प्रवासी सांस्कृतिक अस्मिता

प्रवासी समाजमे मातृभाषाक मंचन दर्शककें अपन भाषा आ स्मृतिसँ जोड़ैत अछि। सामूहिक प्रस्तुति गीत, बोली, सामाजिक व्यंग्य आ क्षेत्रीय व्यवहारक माध्यमसँ मैथिली सांस्कृतिक अनुभवकें जीवित बनबैत अछि। कलकत्ताक संस्थागत अवदानक अध्ययनक महत्त्व एहि व्यापक परिप्रेक्ष्यमे बुझल जा सकैत अछि।

एहि अध्यायक दस्तावेजी पक्ष नाट्येतिहासक लेल बहुमूल्य अछि। मुदा संस्थाक नाम, स्थापना-वर्ष, प्रत्येक नाटकक पहिल मंचन आ कलाकारक भूमिकाक स्वतन्त्र अभिलेखी सत्यापनसँ शोध अधिक सुदृढ़ होयत।

८. मैथिली लोक गीतक रिंग ऑपरेशन

एहि निबन्धमे लेखक ‘लोक’ आ ‘गीत’क अर्थसँ आरम्भ करैत मैथिली लोकगीतक विविधता, भावसम्पदा आ जीवनसँ ओकर सम्बन्धपर विचार करैत छथि। लेखमे मूल गीतक पंक्ति-उदाहरण सेहो प्रस्तुत अछि, जाहिसँ लोकगीतक आन्तरिक संवेदना व्यक्त होइत अछि।

८.१ ‘लोक’ आ ‘गीत’ शब्दक अर्थ

आरम्भमे वैदिक आ अन्य पारम्परिक सन्दर्भक सहयोगसँ ‘लोक’ शब्दक अर्थक विवेचन अछि। गीतकें सामूहिक मानव-अनुभवक लयात्मक अभिव्यक्तिक रूपमे राखल गेल अछि। शब्दव्युत्पत्ति लोकगीतक सम्पूर्ण इतिहास नहि होइत अछि; वास्तविक लोकसामग्री, गायक-समुदाय आ अवसरक निरीक्षण सेहो अपेक्षित अछि।

८.२ मैथिली लोकगीत आ जीवन-संस्कार

लोकगीत जन्मसँ विवाह, उत्सव, श्रम, विरह, ऋतु आ पारिवारिक संस्कारधरि जीवनक विभिन्न स्थितिमे प्रयुक्त होइत अछि। लेखक गीत-पंक्तिक उदाहरणक माध्यमसँ विविध मनोभावक परिचय दैत छथि।

गीतक मूल पाठक संग गायन-अवसर, गायिका अथवा गायकक समाज, धुन आ स्थानीय भेद सुरक्षित राखब भावी अनुसंधान लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

८.३ दुःख, विरह आ स्त्री-संवेदना

अध्यायक मध्यभागमे करुणा आ दुःख-दरिद्र्यक चित्रणसँ युक्त लोकगीतक उदाहरण भेटैत अछि। सामाजिक कठिनाई, पारिवारिक अभाव आ मायिक स्नेह लोकगायनमे भावपूर्ण रूपसँ प्रकट होइत अछि।

लोकगीतमे स्त्री-अनुभव सामाजिक इतिहासक महत्त्वपूर्ण स्रोत बनि सकैत अछि; ओकरा केवल अनुष्ठानिक मनोरञ्जन कहि उपेक्षित नहि करबाक चाही।

८.४ पर्व, संस्कार आ प्रकृतिक सौन्दर्य

अध्यायक उत्तरभागमे चैत्र, मलार, चौँचर, ससुरा, पराती, बरसात, नदी, वन-पाँतर, गाम-घर आ ऋतुसौन्दर्यसँ जुड़ल गीतानुभवक चर्चा देखाइत अछि। इहो लोकगीतक विषयविस्तारक एक महत्त्वपूर्ण प्रमाण अछि।

लोकगीतक ऋतु-वर्णन आ प्राकृतिक बिम्बकें स्थानीय पर्यावरण आ कृषि-जीवनक सन्दर्भमे पढ़ल जाय तँ ओकर सांस्कृतिक अर्थ स्पष्ट होइत अछि।

८.५ गीतक धार्मिक आ लौकिक स्वर

भक्ति, व्रत, संस्कार, हास्य, सामाजिक व्यंग्य आ सांसारिक प्रेम लोकगीतक अनेक स्वर अछि। एतय गीतक रूप केवल भक्ति-माधुर्य नहि, जीवनक बहुरूप अनुभवक वाहक बनैत अछि।

गीतक वर्गीकरण एकमात्र विषयक आधारपर कठोर नहि राखब चाही; एके गीतमे अनुष्ठान, प्रेम आ सामाजिक स्मृति एकसाथ उपस्थित रहि सकैत अछि।

अष्टम अध्यायक निष्कर्ष

मैथिली लोकगीतक 'रिंग ऑपरेशन' शीर्षकक एहि लेखमे लोकसांस्कृतिक जीवनक भीतर प्रवेश करबाक प्रवृत्ति अछि। मूल गीतांशसभक उपस्थितिसँ लेख केवल अमूर्त सिद्धान्तपर आश्रित नहि रहैत अछि। लोकगीतक वास्तविक अध्ययनमे पाठ, धुन, गायन-समुदाय आ अवसरक संयुक्त अभिलेखीकरण अनिवार्य देखाइत अछि।

९. मिथिलाक लोक संगीतक डीएनए टेस्ट

एहि निबन्धमे लेखक मिथिलाक संगीतपरम्पराक ऐतिहासिक मूल, लोकआधार, शास्त्रीय सम्बन्ध आ सांस्कृतिक निरन्तरताक प्रश्न उठबैत छथि। 'डीएनए टेस्ट' शीर्षक रूपकात्मक अछि—एकरा जैविक प्रयोगशालाक परीक्षणक अर्थमे नहि बुझबाक चाही।

९.१ मिथिलाक संगीतक बहुरूपता

अध्यायक आरम्भमे मिथिलाक संगीतकें कर्ण-कणमे व्याप्त लोक-वैदिक अङ्ग-प्रत्यङ्गरूपें वर्णित कयल गेल अछि। 'संगीत' शब्दक अन्तर्गत शास्त्रीय संगीत, लोकसंगीत, लोकगाथा, लोकनाट्य आ लोकनृत्यक समेकित संसार उपस्थित अछि।

मिथिलाक संगीतपरम्पराक इतिहास लिखैत शास्त्रीय ग्रन्थक साक्ष्य आ मौखिक प्रदर्शनक साक्ष्य—दूनोंकें समान गम्भीरतासँ ग्रहण करब आवश्यक अछि।

९.२ लोकगीत आ मिथिलाक संगीत

मूल लेखमे लोकगीतकें मिथिलाक जनजीवनसँ जन्मसँ मृत्यु धरि बहैत सांगीतिक धारा कहि रेखांकित कयल गेल अछि। ग्रामीण जीवन, मौसम, संस्कार आ धार्मिक अनुष्ठान एकर जीवित आधार अछि।

लिखित धुनांकन, स्थलीय ध्वनिमुद्रण आ गायकक स्मृति एकत्र भेलापर लोकसंगीतक परिवर्तित रूपक तुलना सम्भव होइत अछि।

९.३ वैदिक आ शास्त्रीय प्रसंग

लेखक संगीतक गौरव, सांस्कृतिक महत्त्व आ शास्त्रीय पक्षकें प्राचीन ग्रन्थपरम्पराक सन्दर्भमे देखैत छथि। नाद, स्वर, लय आ रागक विवेचन मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहासक संग जोडल अछि।

ग्रन्थमे उल्लिखित प्राचीनता आ ऐतिहासिक निरन्तरताक दावा अलग-अलग प्रमाण माँगैत अछि; शास्त्रीय संकेतकें स्वतः समकालीन लोकधुनक सिद्ध वंशावली मानब ठीक नहि।

९.४ मिथिलाक संगीतकार आ साहित्यिक सन्दर्भ

मिथिलाक विद्या-संस्कृतिमे संगीतविचार आ गीत-साहित्यक सम्बन्ध महत्त्वपूर्ण अछि। विद्यापतिक पदावली, प्राचीन शास्त्रीय चिन्तन आ क्षेत्रीय गायनपरम्पराक परस्पर चर्चा एहि क्षेत्रक मुख्य अनुसन्धान-विषय अछि।

मैथिली पद-साहित्यक धुन, समयक संग परिवर्तन, प्रसार आ भिन्न क्षेत्रमे प्रयोगक इतिहास तयार करब भविष्यक शोधकें समृद्ध कऽ सकैत अछि।

९.५ लोक आ शास्त्रक अन्तःसम्बन्ध

मिथिलाक लोकसंगीत आ शास्त्रीय संगीतक बहुआयामी संवादमे स्वर, लय, प्रसंग, क्षेत्रीय शैली आ गायनपरम्परा विभिन्न स्तरपर अन्तर्क्रिया करैत अछि।

शास्त्रीय आ लोक परम्पराकें एक-दोसरक निम्न-उच्च रूप नहि, बरु ऐतिहासिक अन्तःक्रियामे विकसित भिन्न कला-पद्धतिक रूपमे देखब अधिक सन्तुलित दृष्टि अछि।

नवम अध्यायक निष्कर्ष

एहि लेखक मूल उपलब्धि मिथिलाक लोकसंगीतक व्यापक सांस्कृतिक महत्त्वपर बल देब अछि। संगीतपरम्पराक ऐतिहासिक वंशक्रमक जाँच लेल ग्रन्थसाक्ष्य, हस्तलिखित सामग्री, जीवित धुन, गायन-अवसर आ क्षेत्रीय अध्ययनक संयुक्त प्रयोग भावी अनुसन्धानक स्वाभाविक दिशा थिक।

परिशिष्ट (क). मिथिलाक लोक सांस्कृतिक शल्य-क्रिया

ई परिशिष्ट लोक आ संस्कृतिक अर्थ, सांस्कृतिक विकास आ मिथिलाक सामूहिक स्मृतिसँ सम्बन्धित अछि। मुख्य अध्यायसभमे उपस्थित लोकनाट्य, लोकगीत आ लोकसंगीतक सांस्कृतिक आधार एहिठाम अधिक व्यापक रूपेँ देखल जाइत अछि।

क.१ लोक आ संस्कृतिक अर्थ

शब्दक व्युत्पत्तिमूलक चर्चा करैत लेखक लोकसंस्कृतिक तत्वसभक परिचय दैत छथि। लोकपरम्परामे व्यवहार, विश्वास, गीत, नृत्य, पर्व, भाषा आ सामूहिक कला प्रवेश करैत अछि। लोकसंस्कृति स्थिर प्रदर्शनी-वस्तु नहि; ई समयक संग बदलैत जीवित सामुदायिक अभ्यास थिक।

क.२ मिथिलाक लोकसांस्कृतिक बनावट

मिथिलाक भाषा, परिवार, संस्कार, उत्सव, धार्मिक आचरण, कलात्मक परम्परा आ सामुदायिक अनुभव मिलि एक विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक जगत रचैत अछि।

लोकसांस्कृतिक अध्ययनमे धार्मिक ग्रन्थ, मौखिक परम्परा, सामाजिक व्यवहार आ आधुनिक परिवर्तनक अलग-अलग साक्ष्य आवश्यक अछि।

क.३ नाट्यपरम्परासँ सम्बन्ध

लोकसंस्कृतिक विभिन्न रूप रंगमंचकें गीत, पात्र, बोली, प्रतीक आ प्रस्तुति-शैली प्रदान करैत अछि। आधुनिक मैथिली रंगकर्म एहि मूल आधारसँ सर्जनात्मक ऊर्जा प्राप्त कऽ सकैत अछि।

परम्पराकें मंचपर लबैत ओकर समुदाय-सम्बन्ध आ मूल प्रसंगक सम्मान करबाक चाही।

परिशिष्ट (ख). पावन मिथिला धाम

मूल अनुक्रमणिका एहि परिशिष्टकें ‘डॉक्यूमेन्ट्री फिल्मक लेल लिखित’ आलेख कहैत अछि। तँ एकर भाषा आ उद्देश्य ऐतिहासिक शोध-निबन्धसँ किछु भिन्न—अधिक परिचयात्मक, सांस्कृतिक आ दृश्य-प्रस्तुतिमुखी—अछि।

ख.१ मिथिलाक सांस्कृतिक परिचय

एहि आलेखमे मिथिलाक पौराणिक, धार्मिक, दार्शनिक, साहित्यिक आ सामाजिक प्रतिष्ठाक परिचय अछि। जनक-सीता परम्परा, विद्या, कला, भाषा आ धार्मिक स्थलादिक परस्पर सम्बन्ध उभरैत अछि।

डॉक्यूमेन्ट्रीक भाषामे सांस्कृतिक गौरवक स्वर स्वाभाविक अछि; मुदा ऐतिहासिक प्रमाण आ लोकविश्वासकें अलग-अलग चिन्हित कयल जाय तँ दर्शक अधिक सुस्पष्ट बोध प्राप्त करैत छथि।

ख.२ विद्या, दर्शन आ साहित्य

मिथिलाक ज्ञानपरम्परा, विद्वान, साहित्यक विकास आ मैथिलीभाषाक समृद्धिक सन्दर्भ उपस्थित अछि। एतय सांस्कृतिक इतिहासक अनेक सूत्र एकसाथ राखल गेल अछि।

एहि विषयपर विस्तृत इतिहास लिखबाक लेल विशिष्ट तिथि, कृति, अभिलेख आ पाण्डुलिपि-परम्पराक सम्यक् उद्धरण अपेक्षित अछि।

ख.३ मिथिलाक लोकजीवन आ कलात्मक उपलब्धि

संगीत, कला, पर्व, संस्कार आ सामाजिक अभ्यास मिथिलाक स्थानीय विशिष्टताकें दर्शाबैत अछि। डॉक्यूमेन्ट्री आलेख एहि विविध परम्पराकें दृश्य-माध्यमसँ संप्रेषित करबाक प्रयास करैत अछि।

दृश्यलेखन आ नाट्यलेखनमे साम्य छैक—दूनूमे केवल तथ्य नहि, बरु दृश्यक्रम, कथनलय आ प्रेक्षक-अनुभव निर्णायक बनैत अछि।

ख.४ समकालीन भाषा आ सांस्कृतिक अस्मिता

मैथिलीक प्रतिष्ठा, सामाजिक प्रयोग आ सांस्कृतिक संरक्षणक प्रसंग परिशिष्टक आधुनिक सन्दर्भकें जोड़ैत अछि।

भाषिक स्वाभिमानक समुचित विकास लेल शिक्षण, प्रकाशन, संचारमाध्यम आ सक्रिय साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थाक सहकार्य आवश्यक अछि।

समेकित विवेचन. नाट्येतिहास, रंगसिद्धान्त आ लोकसांस्कृतिक पारस्परिक सम्बन्ध

मूल पोथीक नौ अध्याय परस्पर असम्बद्ध निबन्ध नहि, बरु मैथिली नाट्यजगतक विभिन्न आयामक अध्ययन अछि। एहि खण्डमे अध्यायसभकें एक संयुक्त आलोचनात्मक तर्कमे पढ़ल जा रहल अछि।

१. नाट्यइतिहासक बहुकेन्द्रीयता

प्राचीन मिथिला, मध्यकालीन मिथिला, नेपाल, आधुनिक मैथिली लेखन आ कलकत्ताक प्रवासी रंगमंच—एहि सभ केन्द्रक उल्लेखसँ स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली नाट्यइतिहासकें एक भाषा-

क्षेत्रक सीमित रैखिक कथा मानब अपर्याप्त अछि। कृतिक भाषा, प्रसारक क्षेत्र, संरक्षणक व्यवस्था आ मंचनक सांस्कृतिक स्थान अनेक बेर भिन्न रहैत अछि।

एहि आधारपर भविष्यक शोधमे प्रत्येक कालक लेल चार तरहक साक्ष्य संकलित होयबाक चाही: नाट्यग्रन्थ, पाण्डुलिपि अथवा मुद्रित संस्करण; प्रदर्शनसम्बन्धी प्रमाण; लेखक-समाजक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि; आ भाषा-सांस्कृतिक सम्पर्क। एहि चतुर्विध साक्ष्यक बिना रचनाक प्राचीनता अथवा प्रभावक एकरेखीय दावा सावधानी माँगैत अछि।

२. नाटकक पाठ आ रंगप्रयोग

प्रथम अध्यायक इतिहास, द्वितीय अध्यायक एकांकी-चिन्तन आ तृतीय अध्यायक नाट्यालोचन एक संयुक्त प्रश्न उठबैत अछि: कृति जखन मंचपर पहुँचैत अछि, तँ ओकर पाठक अर्थ कोना बदलैत अछि? पाँचम आ छठम अध्याय एहि प्रश्नक व्यावहारिक उत्तर देबाक प्रयत्न करैत अछि। मंचीय सज्जा, अभिनेता, निर्देशक, गति, लय, प्रतीक आ दर्शकक सहयोगसँ लिखित रचना एक नवीन अनुभव बनैत अछि।

रंग-समालोचनक उपयुक्त पद्धतिमे नाटकक पाठ-समीक्षा तथा प्रदर्शन-समीक्षा दूनूकें समाविष्ट करबाक चाही। पाठक अध्ययनमे कथानक, पात्र, संवाद, भाषा आ संरचना प्रमुख रहत; मंचनक अध्ययनमे देहभाषा, ध्वनि, दृश्य-विन्यास, प्रकाश, लय आ दर्शकीय प्रतिक्रिया विचारणीय रहत।

३. एकांकी आ आधुनिक रंगप्रयोग

एकांकीक संरचनामे नाटकीय तनावक संकेन्द्रण महत्वपूर्ण अछि। मैथिली एकांकीक अनेक उदाहरण देखबैत अछि जे सामाजिक, सांस्कृतिक, पौराणिक आ समकालीन विषय छोट आकारमे सेहो प्रभावशाली होय सकैत अछि। मुदा संक्षिप्तता अपन आपमे गुण नहि—वस्तुक चयन, पात्रगत संघर्ष आ दृश्य-सम्पादन आवश्यक अछि।

एहि प्रकार द्वितीय अध्याय आ महेन्द्र मलंगियाक रंगशिल्पसम्बन्धी अध्याय मिलि एकांकीक व्यावहारिक आलोचनाकें समृद्ध करैत अछि। कोनो एकांकीक सफलताक प्रश्न—की ई पढ़बाक लेल प्रभावकारी अछि, की एकरा मंचपर समान प्रभावसँ देखाओल जा सकैत अछि—पृथक् परीक्षण माँगैत अछि।

४. लोकनाट्य, लोकगीत आ लोकसंगीत

चतुर्थ, अष्टम आ नवम अध्याय लोककलाक तीन निकट सम्बद्ध स्वरूप प्रस्तुत करैत अछि। लोकनाट्य सामूहिक अभिनयक क्षेत्र थिक, लोकगीत लयात्मक वाचिक स्मृतिक क्षेत्र, आ लोकसंगीत स्वर, ताल, धुन आ गायन-शैलीक व्यापक संसार। ई तीनू परम्परा अनेक अवसरपर परस्पर गुंफित रहैत अछि।

लोककलाक आधुनिक मंचनक समय ओकर अनुष्ठानिक आ सामुदायिक सन्दर्भकेँ ससम्मान समझब आवश्यक अछि। कतेको परम्पराक गीत यथासंभव मूल गायकक स्वरमे, स्थानीय भेद आ गायन-अवसरसहित अभिलेखित करब चाही।

५. प्रवासी रंगमंच आ भाषा-संरक्षण

कलकत्ताक मैथिली रंगमंचक अध्ययनसँ स्पष्ट होइत अछि जे प्रवासी सांस्कृतिक संस्था मैथिली साहित्य आ रंगकर्मक विस्तारमे महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करैत अछि। रंगप्रयोग भाषिक सम्प्रेषणक संग सामूहिक पहिचानक उत्सव सेहो बनैत अछि। संस्था-सूची आ प्रस्तुति-सारणी एहि इतिहासक प्रारम्भिक आधार प्रदान करैत अछि।

भावी शोधमे प्रत्येक संस्थाक आरम्भ, कार्यावधि, प्रमुख कलाकार, मंचित नाटक, दर्शकीय आधार आ सामाजिक योगदानक दस्तावेजीकरण उपयोगी होयत। कलकत्ताक सामग्रीकेँ पटना, दरभंगा, मधुबनी आ अन्य केन्द्रक रंगइतिहासक संग तुलना कयल जाय तँ अधिक व्यापक निष्कर्ष प्राप्त होयत।

६. नाट्यालोचनक उपयुक्त समेकित प्रतिमान

मैथिली नाटकक मूल्यांकन लेल निम्न सात सूचक विशेष उपयोगी मानल जा सकैत अछि: (क) कथ्यक ऐतिहासिक-सामाजिक प्रामाणिकता; (ख) कथानकक नाटकीय संरचना; (ग) पात्रक जीवन्तता; (घ) संवादक मैथिली स्वाभाविकता; (ङ) रंग-संकेत आ मंचनीयता; (च) अभिनय, निर्देशन आ रंगभाषाक सम्भावना; (छ) दर्शकक सांस्कृतिक अनुभव।

ई सात सूचक सम्पादकीय प्रस्ताव अछि; मूल लेखकक शब्दशः निर्धारित सूची नहि। तथापि ई मूल पोथीक विभिन्न अध्यायमे उपस्थित विचारकेँ एक समेकित आलोचनात्मक पद्धतिमे व्यवस्थित करैत छथि।

७. मूल पोथीक उपलब्धि आ सीमा

पोथीक उपलब्धिमे विषयक व्यापकता, प्राचीनतासँ समकालीनताधरिक ऐतिहासिक क्रम, एकांकीक विशिष्ट उदाहरण, नाट्यालोचनक प्रतिमान, महेन्द्र मलंगियाक रंगभाषाक सूक्ष्म अध्ययन आ कलकत्ताक संस्थागत सामग्री मुख्य अछि। एहि अर्थमे ई कृति मैथिली रंगअध्ययनक एक महत्वपूर्ण आधारपाठ अछि।

तथापि एतय उपलब्ध सामग्रीक आधारपर प्रत्येक ऐतिहासिक तिथि अथवा प्रस्तुति-सम्बन्धी विवरणक स्वतन्त्र सत्यापन सम्पन्न भेल अछि, एहन दावा नहि कयल जा सकैत अछि। मूल ग्रन्थक सन्दर्भ-सूची, पाण्डुलिपि-साक्ष्य आ संस्थागत अभिलेखक पुनःजाँच व्यापक शोधक अगिला आवश्यक चरण रहत।

अनुसन्धानक परिणाम : निष्कर्ष, भावी प्रश्न आ आधार-सन्दर्भ

समेकित अध्ययनक अन्तिम भागमे मूल पोथीसँ उभरल दीर्घकालीन शोध-विषय, प्राथमिक स्रोतक सीमा आ विवेकपूर्ण निष्कर्ष प्रस्तुत अछि।

मुख्य निष्कर्ष

मैथिली नाटकक इतिहास एकल भूगोल अथवा एकहि नाट्यरूप धरि सीमित नहि; मिथिला, नेपाल आ प्रवासी केन्द्रसभक संयुक्त अध्ययन आवश्यक अछि।

नाटकक लिखित पाठ आ रंगमंचीय प्रस्तुति अलग मुदा परस्पर पूरक कलात्मक प्रक्रिया अछि।

मैथिली एकांकीक अध्ययनमे साहित्यिक संकेन्द्रणक संग वास्तविक मंचनीयता देखब आवश्यक अछि।

महेन्द्र मलंगियाक रंगशिल्प आ रंगभाषाक विवेचन मैथिली नाट्यसमालोचनकेँ अभिनय आ प्रदर्शन-कला केन्द्रित बनबैत अछि।

लोकनाट्य, लोकगीत आ लोकसंगीत मैथिली रंगपरम्पराक सांस्कृतिक आधार अछि; हुनक संरक्षणक लेल सामुदायिक सन्दर्भ महत्वपूर्ण अछि।

कलकत्ताक नाट्यसंस्थासभ प्रवासी सांस्कृतिक इतिहासक एक महत्वपूर्ण क्षेत्र खोलैत अछि।

प्राचीन नाटकक रचनाकाल, स्रोतक भाषा आ वास्तविक मंचनक भिन्न-भिन्न प्रमाणकेँ पृथक् जाँचब शोधक अनिवार्य शर्त थिक।

भावी अनुसन्धानक सम्भावित प्रश्न

प्राचीन मैथिली नाटकक उपलब्ध पाण्डुलिपिसभमे कथानक, गीत आ संवादक कोन-कोन पाठभेद भेटैत अछि?

नेपालक दरबारी नाट्यकृति आ मिथिलाक स्थानीय नाट्यरचनाक भाषिक-सांस्कृतिक सम्बन्ध कोना स्थापित कयल जा सकैत अछि?

स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली नाटकमे सामाजिक परिवर्तनक प्रभाव वास्तविक मंचनक माध्यमसँ कोना व्यक्त भेल?

प्रमुख मैथिली एकांकीसभक रंगनिर्देशनक भिन्न प्रस्तुति पाठक अर्थमे केहन परिवर्तन आनैत अछि?

महेन्द्र मलंगियाक नाटकसभक विविध मंचनमे रंग-संकेत आ दर्शकीय प्रतिक्रियाक की अन्तर भेटैत अछि?

कलकत्ताक मैथिली संस्थासभक मंचन-अभिलेख कतेक उपलब्ध आ सत्यापनयोग्य अछि?

लोकनाट्य-गीतक मौखिक रूपान्तरण आधुनिक मञ्चीकरणसँ केना प्रभावित भेल अछि?

लोकगीतक धुन आ शास्त्रीय स्वर-संरचनाक बीच ऐतिहासिक सम्बन्धक प्रमाण कोन अछि?

अध्याय ५ • वीरेन्द्र मल्लिकक साहित्य

प्रेम सौन्दर्य विधायक विद्यापति

नौ अध्यायक विमर्श • राधा-कृष्ण, रस, शृङ्गार, लोकचेतना आ प्रभाव

ग्रन्थक रचना-विन्यास आ मूल प्रश्न

एहि ग्रन्थक केन्द्रक प्रश्न ई अछि जे विद्यापतिक पदमे प्रेम आ सौन्दर्य किनका-किनका रूपमे अभिव्यक्त होइत अछि, आ ओकर भाषा, रस, नायिका-विधान, लोकजीवन आ साहित्यिक परम्परासँ की सम्बन्ध बनैत अछि। पहिल दू अध्याय अवधारणात्मक आ मनोवैज्ञानिक भूमि बनबैत अछि; तेसर अध्याय राधा-कृष्णक आलम्बन विवेचित करैत अछि; चारिमसँ छठम

अध्याय विद्यापतिक प्रेम-सौन्दर्यक काव्यरचना आ शृङ्गार पर केन्द्रित अछि; सातम अध्याय लोक-संस्कृतिक प्रश्न उठबैत अछि; आठम प्रभाव-अध्ययन करैत अछि; नवम उपसंहार अछि। एहि क्रमक सबल पक्ष विषयक बहुस्तरीयता अछि। सम्भावित दुर्बलता ई जे प्रेमक सामान्य तत्त्वज्ञान सँ पद-विशेष धरि जाएबामे प्रमाणक स्तर बदलैत रहैत अछि। दार्शनिक वाक्यांश मात्रसँ कोनो पदक अर्थ प्रमाणित नहि भऽ सकैत अछि; प्रत्येक निष्कर्ष लेल वक्ता, प्रसङ्ग, सम्बोधन, प्रतीक, छन्द, भाव-व्यञ्जना आ पाठान्तर देखब आवश्यक अछि।

प्रथम अध्याय : प्रेम आ सौन्दर्यक स्वरूप (पृ० ३-१०६)

प्रेमक अर्थ, व्युत्पत्ति आ स्वरूप

ग्रन्थ आरम्भमे प्रेमक व्युत्पत्ति, शब्दार्थ, परिभाषा, मूलस्वरूप, सामान्य लक्षण आ गुण पर विचार करैत अछि। एहि विभाजनसँ स्पष्ट होइत अछि जे ‘प्रेम’ मात्र भावोच्छ्वास नहि, विषय, आश्रय, सम्बन्ध आ मूल्यक एक व्यापक भावात्मक विन्यास अछि। साहित्यिक अर्थमे प्रेमक अनुभूति तथा ओकर काव्यात्मक अभिव्यक्ति अलग-अलग स्तर अछि; एहि दू स्तरकेँ गड्ड-मड्ड कएलासँ पदावलीक सूक्ष्मता ओझराइत अछि।

प्रेमक भेद

अनुक्रमणिकामे भक्ति, प्रणय अथवा दाम्पत्य, वात्सल्य, प्रकृति-प्रेम, देश-प्रेम, मानव-प्रेम, कौटुम्बिक प्रेम, मैत्री, श्रद्धा, सेव्य-सेवक सम्बन्ध तथा सूक्ष्म आ स्थूलक प्रति प्रेमक चर्चा अछि। एहि वर्गीकरणक लाभ ई जे विद्यापतिक पदसभकेँ केवल देह-आकर्षण तक सीमित करबाक आवश्यकता नहि रहैत अछि। तथापि प्रत्येक प्रेम-प्रकारक प्रमाण अलग-अलग पद, प्रसंग आ भाषिक चिह्नसँ स्थापित होएबाक चाही।

सौन्दर्यक दार्शनिक आधार

ग्रन्थ सौन्दर्यक व्युत्पत्ति आ परिभाषासँ वस्तुपरक/वैज्ञानिक तथा आत्मपरक दृष्टिक अन्तर चिन्हैत अछि। पाश्चात्य आ भारतीय धारणाक संग समन्वयवादी पद्धतिक उल्लेख महत्वपूर्ण अछि। सौन्दर्य केवल देखल वस्तुमे अवस्थित अछि अथवा दर्शकक अनुभूतिमे—एहि प्रश्नक बीच काव्य तेसर धरातल खोलैत अछि: भाषिक रूपान्तरण।

मनोवैज्ञानिक, साहित्यिक आ रूपगत सौन्दर्य

सौन्दर्यक सामान्य विशेषता, उदात्त आ कुरूपक भेद, मानवीय तथा प्राकृतिक सौन्दर्य, स्त्री-पुरुष-सौन्दर्य, वस्तुगत एवं कलागत सौन्दर्य ग्रन्थक मुख्य पड़ाव अछि। ‘उदात्त’ आ ‘कुरूप’कें सौन्दर्यक विलोम मानि छोड़ि देब पर्याप्त नहि; काव्यक भीतर विषमता, वेदना आ विरह सेहो सौन्दर्य-रस उत्पन्न करैत अछि।

प्रकृति-वर्णनक सूक्ष्म कोटि

आलम्बन, उद्दीपन, मानवीकरण, अलङ्कार, प्रतीक, रूप-विस्तार, गतिविधि, वर्ण, नाद, गन्ध आ स्पर्श—ई वर्ग सभ साहित्यिक प्रकृति-विवेचनक समृद्ध पद्धति प्रस्तुत करैत अछि। विद्यापतिक पदावलीमे मौसम आ परिवेशकें केवल पृष्ठभूमि नहि, प्रेम-अनुभवक सक्रिय संवाहकक रूपमे पढ़बाक आधार एतय बनैत अछि।

आलोचनात्मक विस्तार आ सूक्ष्म पाठ

प्रेमकें व्युत्पत्ति, संवेदना, सामाजिक सम्बन्ध आ काव्य-भावक स्तर पर रखबाक लाभ व्यापक अवधारणात्मक क्षेत्र अछि। मुदा ई सभ अर्थ परस्पर पर्याय नहि। स्नेह, अनुराग, रति, भक्ति आ करुणा जँ एक्के “प्रेम” श्रेणीमे लेल जाए, तऽ साहित्यिक विशिष्टता अस्पष्ट भऽ सकैत अछि। विद्वानक लेल आवश्यक अछि जे प्रत्येक पदमे सम्बन्धक स्वरूप, इच्छा, विरह, समर्पण आ अधिकारबोधक अनुपात अलग चिन्हल जाए।

सौन्दर्यक वस्तुगत आ आत्मगत सिद्धान्तक द्वन्द्व कविता भीतर तेसर रूप पबैत अछि: रचनागत सौन्दर्य। वर्णित वस्तु सुन्दर अछि, ई निष्कर्ष मात्र नहि; उपमा, ध्वनि, लय आ दृष्टिकोण ओकर सौन्दर्यक निर्माण करैत अछि। प्रकृतिक रंग-गन्ध-स्पर्शक सूची तखन सार्थक अछि जखन ओ पदक भावगत गतिसँ जोड़ल जाए।

ई अध्याय ग्रन्थक परिभाषात्मक आधार दैत अछि, मुदा सामान्य दर्शन आ विद्यापति-पदक प्रत्यक्ष अन्तःपाठक बीच स्पष्ट सेतु आवश्यक अछि।

प्रेमक विविध सम्बन्ध आ काव्यगत अर्थ

ग्रन्थ प्रेमक शब्दार्थसँ आरम्भ कऽ मानवीय सम्बन्धक अनेक कोटि उपस्थित करैत अछि। वात्सल्यक लक्ष्य पालन-पोषण आ संरक्षण होइछ; दाम्पत्य अथवा प्रणयमे पारस्परिक आकर्षण आ स्वीकारक प्रश्न प्रधान भऽ सकैछ; मैत्रीमे समता, विश्वास आ आत्मीयता; श्रद्धामे

मूल्यक स्वीकृति आ सेवक-सेव्य सम्बन्धमे असमान भूमिकाक अनुभव रहैछ। ई सभ अर्थक परस्पर साम्य भावात्मक निकटता अछि, मुदा साहित्यिक कार्यभेद भिन्न अछि। विद्यापतिक प्रणय-पदक विवेचनमे एहि वर्गक केवल गणना नहि, प्रसङ्गानुसार अर्थ-निर्णय आवश्यक अछि। कुनै पदमे अनुराग आत्मसमर्पणक रूप लैत अछि तऽ दोसरा पदमे मान आ अस्वीकार प्रेमक असमान सम्बन्धकें उधारि सकैछ। एक्के शब्द ‘प्रेम’ भाव-वृत्तिक समूचा इतिहास नहि कहैछ। सौन्दर्यक बोध आ काव्यरचना

वस्तुगत सौन्दर्य-विचार ई मानैत अछि जे रूप-रङ्ग, अनुपात अथवा संरचनामे आकर्षणक गुण अछि। आत्मगत व्याख्यामे अनुभवकर्ता ओहि आकर्षणकें अनुभूतिक आधार पर रचैत अछि। मुदा कविता पढ़ैत समय तेसर घटक अनिवार्य भऽ जाइछ—भाषा। उपमा, समानान्तरता, विराम, पुनरुक्ति, पदान्त ध्वनि आ गेयता बिना वर्णित दृश्यक साहित्यिक रूप पूरा नहि होइछ। सौन्दर्य कविता बाहर पहलेसँ ठाढ़ वस्तु नहि, कविता भीतर संवेदनाक विन्यास सेहो अछि। एहि बातकें मनमे रखि प्रकृति-वर्णनक रंग-नाद-गन्ध-स्पर्शक उपशीर्षक सभकें इन्द्रियसम्बन्धी क्रमक रूपमे नहि, कथ्यक संगठनक रूपमे देखल जाएबाक चाही।

उदात्त, कुरूप आ मूल्य-निर्णय

ग्रन्थक प्रथम अध्याय सौन्दर्यक प्रसङ्गमे उदात्त आ कुरूपक चर्चा करैत अछि। एहि बिन्दु पर विश्लेषणक सूक्ष्म प्रश्न ई अछि जे सौन्दर्य आ रमणीयता सर्वदा समान नहि। भय, विस्मय अथवा असामान्यता सेहो कलाक माध्यमसँ सौन्दर्यानुभव उत्पन्न कऽ सकैछ। ताहि प्रकार ‘कुरूप’ केवल सौन्दर्यहीन वस्तु नहि, कोनो कलात्मक विरोध वा विडम्बनाक साधन बनि सकैछ। विद्यापतिक कविता भीतर ई सिद्धान्त लागू करबाक लेल विशेष पदक वास्तविक शब्दरचना देखब पड़त; सिद्धान्तक सामान्य उपस्थितिसँ पदक भाव-प्रभाव स्वतः प्रमाणित नहि होइछ।

द्वितीय अध्याय : प्रेम आ सौन्दर्यक मनोवैज्ञानिक अध्ययन (पृ० १०७-१४४)

मानवक प्रेमक प्रति आकर्षण

एहि अध्यायमे काम, सेक्स आ प्रेमक भेद, प्रेमक मनोवैज्ञानिक आ सामाजिक व्याख्या, तथा देह-मन-आत्माक तादात्म्य उल्लेखित अछि। मनोवैज्ञानिक विवेचनक मुख्य सावधानी ई जे

जैविक प्रेरणा, सामाजिक मर्यादा आ काव्यमय भावात्मकता तीनों के मानदण्डसँ नहि नापल जाय।

प्रेम आ सामाजिक सन्दर्भ

प्रेम-सम्बन्धमे निकटता, इच्छा, प्रतीक्षा, निषेध आ मर्यादाक परस्पर विरोधी दबाव रहैत अछि। ई दृष्टि विद्यापतिक मान, अभिसार, मिलन आ विरह-स्थितिक अध्ययनमे उपयोगी अछि। मनोवैज्ञानिक श्रेणीकेँ ऐतिहासिक मैथिली समाज पर जसक तस आरोपित करबाक बदला पदक भाषिक साक्ष्यसँ जोड़ब अपेक्षित अछि।

सौन्दर्यप्रियता आ कला

मानवक सौन्दर्यप्रियता, कला आ सौन्दर्य, साहित्य आ सौन्दर्य, अभिव्यक्ति-शैलीमे सौन्दर्यक उद्भावना, प्रकृतिक प्रति आत्मीयता आ संवेदनशीलता एहि अध्यायक दोसर महत्त्वपूर्ण बिन्दु अछि। प्राकृतिक वस्तुक प्रति स्नेह आ तकर काव्यात्मक रूपांकनमे अन्तर मानलासँ सौन्दर्य-अध्ययन अधिक सूक्ष्म होइत अछि।

आलोचनात्मक विस्तार आ सूक्ष्म पाठ

मानवीय प्रेमक जैविक, मानसिक आ सामाजिक पक्षक पृथक्करण उपयोगी अछि। मुदा मध्ययुगीन पदक पात्र आधुनिक मनोविज्ञानक “केस-स्टडी” नहि छथि; ओ गीतक रचित वक्ता आ संवादक संरचना छथि। ताहि कारणेँ मान अथवा अभिसारक अर्थ निकालैत काल पात्रक स्वभावक अनुमानसँ पहिने भाषिक क्रिया देखल जाए: के कहैत अछि, ककरासँ कहैत अछि, की गोपन करैत अछि?

प्रतीक्षा, मिलनक आकांक्षा, ईर्ष्या, ग्लानि आ विरह भावनामात्र नहि, गीतक कालगठन सेहो करैत अछि। “आइ”, “काल्हि”, “राति”, ऋतु-परिवर्तन आदि समयचिह्न भावक तापमान बदलैत अछि। एहि स्तर पर मनोविश्लेषणकेँ पदक संरचनात्मक विश्लेषणसँ जोड़ला पर अधिक विश्वसनीय निष्कर्ष निकलत।

स्त्रीपात्रक अनुभवकेँ सदैव पुरुष-दृष्टिक वस्तु बनाओल जाइत अछि अथवा ओकर स्वरमे स्वाधीन प्रतिवाद आ इच्छा सेहो प्रकट होइत अछि? एहि प्रश्नसँ अध्यायक व्याख्या समृद्ध होइत अछि।

काम, आकर्षण आ प्रेमक अन्तर

कामना शरीरक आकांक्षा, प्रेम सम्बन्धक दीर्घकालिक अर्थ आ सौन्दर्यबोध प्रतीति सम्बन्धी अनुभवक रूपमे अलग-अलग विवेचित भऽ सकैत अछि। मुदा वास्तविक गीतमे ई स्तर मिश्रित रहैछ। मनोवैज्ञानिक विमर्शक सफलता ई मिश्रण बुझबामे अछि, नहि कि प्रत्येक भावकें पहिले सँ निश्चित नाम देबामे। मिलनक आकांक्षा कखनो सामाजिक निषेधक कारण तीव्र बनैत अछि, कखनो आत्मसम्मान वा मानक कारण रोकायल रहैत अछि। एहिमे पात्रक निजी इच्छा आ सामाजिक विधानक तनाव भिन्न पाठक दृष्टिमे भिन्न अर्थ उत्पन्न करि सकैत अछि।

गीतक वक्ता आ मानसिक अवस्था

काव्यगत 'हम' आ ऐतिहासिक कविक 'हम' एक नहि। पात्रक उलाहना, विरहिणीक पुकार अथवा सखीक परामर्श पढ़बाक समय साहित्यिक वक्ता चिन्हल जाए। दोसर व्यक्तिक भाषणकें सीधा कविक व्यक्तिगत अनुभव मानि लेलासँ मनोवैज्ञानिक अध्ययन भ्रमित होएत। गीतक कथनक भीतर प्रश्नवाचकता, सम्बोधन, निषेध, आश्वासन, आग्रह आ विरामक विशिष्ट काज होइछ। एहि भाषिक संकेतक अध्ययन बिना पात्रक 'चरित्र' पर स्थिर टिप्पणी देब जोखिमपूर्ण अछि।

इच्छा आ सामाजिक विधान

मनोवैज्ञानिक अध्यायसँ समाज-समीक्षाक सेतु बनैत अछि। इच्छाक स्वतन्त्रता विवाह, प्रतिष्ठा, परिवार, लोकलाज आ लिङ्गगत मर्यादासँ प्रभावित होइछ। ताहि कारणेँ प्रेमक तीव्रता केवल व्यक्तिक अन्तर्मनक उपज मानब अपर्याप्त अछि। तथापि कविता द्वारा चित्रित लोकलाजक अर्थ ऐतिहासिक समाजक सम्पूर्ण नियम-पुस्तिका नहि। साहित्य सामाजिक अनुभवक सांकेतिक पुनर्रचना करैत अछि। सामाजिक यथार्थ आ साहित्यिक रूढ़िक बीच भेद राखि मनोवैज्ञानिक निष्कर्ष अधिक विश्वसनीय बनाओल जा सकैछ।

तृतीय अध्याय : राधाकृष्णवाद आ विद्यापतिक राधा-कृष्ण (पृ० १४५-१९३)

कृष्णक स्वरूप-विकास

अनुक्रमणिकामे वैदिक विष्णु, पौराणिक विष्णु आ कृष्णावतार, भागवत आ ब्रह्मवैवर्तपुराण, महाभारत आ अन्य पुराण, आभीरक वासुदेव, कृष्णक दार्शनिक स्वरूप एवं आचार्य परम्पराक

विवेचन अछि। एहि स्रोत-परम्पराक विवेचन विद्यापतिक काव्य-नायकक विविध आयामक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि दैत अछि।

राधाक रूपान्तरण

राधाक ऐतिहासिकता, ज्योतिष-विषयक व्याख्या, शृङ्गारिक रूप, निम्बार्क-विष्णुस्वामी परम्परा आ ब्रह्मवैवर्तपुराणमे दार्शनिक प्रतिष्ठाक प्रसंग उठाओल गेल अछि। एहि दावासभकेँ अलग-अलग काल आ पाठक प्रमाणक संग परखब चाही; धार्मिक आख्यान आ ऐतिहासिक तथ्य एकरूप नहि अछि।

विद्यापतिक कृष्ण

कृष्णक पौराणिक संकेत, यौवन-सौन्दर्यक भोक्ता, बहुवल्लभ, परकीय प्रेमी आ इष्टदेवक रूप ग्रन्थक उपविषय अछि। एतय रसिक नायक आ आराध्य देवता दू भिन्न स्तर पर एक्के व्यक्तित्वमे सहअस्तित्व रखैत छथि।

विद्यापतिक राधा

राधा रूपाधिकारिणी, सुषमाशालिनी, रूपलोभी, लज्जालु, मुग्धा, रस-प्रेरिका आ चिर-विरहिणीक रूपमे विवेचित छथि। ‘भौतिकतासँ स्वर्गारोहण’क सूत्रक अर्थ स्त्री-पात्रक देहात्मक अनुभवकेँ नकारब नहि, ओकर भावात्मक रूपान्तरकेँ देखब सेहो भऽ सकैत अछि।

पाठकीय आलोचनात्मक प्रश्न

राधा-कृष्णक प्रेमकेँ भक्तिमात्र वा लौकिक प्रेममात्र घोषित करब पाठक बहुवाचकता घटबैत अछि। नायिका-स्वर, सखी-संवाद, विरह-वाक्य आ दैवी संकेतक तुलनात्मक परीक्षणसँ अध्याय अधिक ठोस बनैत अछि।

आलोचनात्मक विस्तार आ सूक्ष्म पाठ

राधा-कृष्ण सम्बन्धकेँ एकमात्र धार्मिक उपमा अथवा एकमात्र सांसारिक प्रणय मानि लेब अर्थक बहुलता घटबैत अछि। काव्यक “राधा” विभिन्न पदमे मानिनी, विरहिणी, प्रगल्भा वा दुविधाग्रस्त वक्ताक रूपमे आबि सकैत छथि। “कृष्ण” सेहो एक स्थिर पुरुषप्रतिमा नहि, प्रियतम, अनुपस्थित आलम्बन वा सांस्कृतिक चिह्नक रूप बदलि सकैत छथि।

सखी-संवाद एहि काव्यविश्वक विशिष्ट मध्यस्थता अछि। सखी सूचना दैत अछि, समझबैत अछि, मिलनक सम्भावना रचैत अछि आ कखनो भावक व्याख्याकार बनैत अछि। तँ केवल राधा-कृष्णक द्विपक्षीय सम्बन्ध देखला सँ तेसर आवाजक काव्यात्मक भूमिका छुटि जाइत अछि।

पुराण, भक्तिधारा आ लौकिक शृङ्गारक सामग्रीक तुलनामे कालक्रम आ पाठ-प्रमाण आवश्यक अछि। प्रभावक दाबी आ सामान्य साम्यक बीच अन्तर राखब चाही।

ऐतिहासिक स्रोत आ काव्यगत पुनर्रचना

राधा-कृष्ण विषयमे पौराणिक परम्परा, भक्तिक व्याख्या आ लौकिक प्रेमगीत एकमात्र पाठ-परम्परा नहि। ग्रन्थक अनुक्रमणिकामे विष्णु, कृष्णावतार, विभिन्न पुराण आ आचार्य-परम्पराक चर्चा देखाइछ। एहि विशाल सामग्रीक आलोचनात्मक प्रयोजन निर्धारित कएल जाय: कोन स्रोत पात्रक दैविक प्रतिष्ठा समझबैत अछि, कोन स्रोत प्रणयक कथानक, आ कोन स्रोत कविता भीतर भावानुभवक रूप? समान नामक उपस्थिति स्वतः प्रत्यक्ष ऐतिहासिक प्रभावक प्रमाण नहि। साहित्यिक पुनर्रचना परम्परासँ सामग्री ग्रहण कऽ ओकर अर्थ बदलि सकैछ।

राधाक कथन आ दृष्टिकेन्द्र

राधाकेँ नायिकाभेदक श्रेणीमे राखब सुगम अछि, मुदा ओहि श्रेणीसँ ओकर पूर्ण अनुभव व्याख्यायित नहि होइछ। मान, संकोच आ तीव्र आकर्षणक काव्यमे राधा कखनो देखल गेल पात्र होइछ, कखनो स्वयं बोलैत स्वर। जखन दृश्य बाहरक वर्णनाक माध्यमसँ बनैत अछि, दृष्टिकेन्द्र आ आन्तरिक अनुभवक स्तर अलग रहैत अछि। स्त्रीस्वरक विवेचनमे ई अन्तर अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि। नायिकाक सौन्दर्यक मूल्याङ्कनक संग ओकर निर्णय-क्षमता आ भाषिक उपस्थिति पर प्रश्न उठेबा सँ पाठ समृद्ध होइछ।

सखीक मध्यस्थता

सखी केवल दूतिका नहि। ओ परिस्थितिक पाठक, दुइ पात्रक भावसम्बन्धक व्याख्याकार आ कखनो सामाजिक विवेकक प्रतिनिधि बनैछ। संवादमे सखीक आगमनसँ निजता आ सार्वजनिकताक सीमा बदलि जाइछ: गुप्त इच्छा सामूहिक भाषा पबैत अछि। ई संरचना प्रेमगीतकेँ एकल आत्मस्वीकारसँ अलग करैत अछि। कवितामे सम्बोधनक स्थल बदललाक

संग भावक अर्थ केना बदलैछ, ई तृतीय अध्यायक पाठ-आधारित अनुसन्धान लेल उपयोगी कसौटी अछि।

चतुर्थ अध्याय : प्रेम आ सौन्दर्य-विधायक विद्यापति (पृ० १९३-३०२)

भारतीय प्रेम-परम्परा आ विद्यापति

भारतीय काव्यमे प्रेमभावनाक परम्परा तथा विद्यापतिक स्थान एहि अध्यायक आरम्भिक विमर्श अछि। संस्कृत काव्यशास्त्र, गीतिकाव्य, राधा-कृष्ण आख्यान आ मैथिली लोकानुभवक अन्तःसम्बन्धक पृष्ठभूमिमे विद्यापतिक विशिष्टता खोजल जा सकैत अछि।

विद्यापतिक काव्यमे प्रेमक विविध रूप

अनुक्रमणिका मानवीय प्रेम, प्रेम-विकास, रूपलिप्सा, पूर्वराग, कामप्रधान विरह, परकीय प्रेम, कृष्णक बहुगोपी-रमण आ सामान्य सामाजिक परकीय प्रेमक भेद प्रस्तुत करैत अछि। एहि प्रसंगमे काव्य-पात्रक अनुभूतिक स्तर पर नैतिक निर्णय थोपबाक बदला कथक आन्तरिक मनोभाव आ समय-सन्दर्भ पढ़ब अधिक फलदायी अछि।

नारी-सौन्दर्यक देहात्मक विन्यास

स्त्री-सौन्दर्यमे नेत्र, कटाक्ष, पयोधर, मुख, केश, नितम्ब, रोमावली, अधर, दाँत, हास, कटि, नाभि आ त्रिवलीक विश्लेषण ग्रन्थमे सूचिबद्ध अछि। अङ्ग-उल्लेख केवल सूची नहि; दृष्टि-गति, अनुभूति, अलङ्कार आ रस-स्थितिक रूपमे एकर भूमिका अलग कऽ बुझबाक चाही।

यौवन आ हाव-भाव

हाव, लीला, विलास, विच्छित्ति, किलकिञ्चित, ललित, मोट्टायित, विव्वोक, विहृत, कुट्टमित आ हेला आदि शृङ्गार-शास्त्रीय कोटिक उल्लेख अछि। आधुनिक पाठक लेल ई शास्त्रीय शब्दावली सामाजिक व्यवहारक स्थिर वर्गीकरण नहि, काव्यमे भावना आ अभिनयक रूपविधान अछि।

नारीक मानसिक सौन्दर्य

संयोगमे शालीनता आ हास-परिहास; वियोगमे पूर्वराग, मान, ईर्ष्यामान आ प्रवास; अपरूप, चिरनूतन, सहज, पारस, सूक्ष्म आ चिरन्तन सौन्दर्य—ई उपविषय सौन्दर्यक शारीरिकतासँ बहुत आगाँ लऽ जाइत अछि।

पुरुष आ प्रकृतिक सौन्दर्य

पुरुष-सौन्दर्य आ प्रकृतिक आलम्बन-उद्दीपन भूमिका सेहो ग्रन्थमे समाविष्ट अछि। स्त्री-पात्रक विस्तृत अङ्ग-वर्णनक तुलना पुरुष-पात्रक संक्षिप्त वर्णनसँ कयलासँ काव्यदृष्टिक लैङ्गिक असमानता सम्बन्धी नूतन प्रश्न उपस्थित होइत अछि।

सारणीगत अध्ययन

मूल ग्रन्थक अनुक्रमणिकामे नारी-सौन्दर्य तालिका (पृ० २९०-२९३) देल अछि। तालिकाक प्रत्येक प्रविष्टि एहिठाम शब्दशः पुनरुत्पादित नहि कएल गेल अछि; मुदा ग्रन्थक विश्लेषणमे परिमाणात्मक वर्गीकरणक प्रयत्नक रूपमे एकर महत्त्व अछि।

आलोचनात्मक विस्तार आ सूक्ष्म पाठ

ई ग्रन्थक केन्द्रीय आलोचनात्मक क्षेत्र अछि। नख-शिख वर्णनक केवल अङ्ग-सूची बनब साहित्यिक अर्थकेँ सीमित करैत अछि; शब्दक क्रम, दृष्टिक संचरण, संकोच, व्यञ्जना आ उपमाक स्थानीय छवि देखल जाए। देह-वर्णनक भीतर प्रेमक अनुभव बनैत अछि अथवा शरीर केवल प्रदर्शनक वस्तु बनैत अछि—ई प्रश्न प्रत्येक उदाहरण पर लागू होइत अछि।

यौवनक चित्रणमे नवत्व, लज्जा, आकर्षण, आत्मबोध आ सामाजिक नियंत्रणक तनाव सम्भव अछि। प्रेमक “संयोग” संग “असुरक्षा” सेहो उपस्थित रहि सकैत अछि। एहि कारणेँ हाव-भावकेँ यान्त्रिक वर्गमे ठेलबाक बदला पदक नाटकीय परिस्थिति आ संबोधनक संग पढ़ब अनिवार्य अछि।

स्त्री आ पुरुषक सौन्दर्य-वर्णनक परिमाण तथा वर्णन-पद्धतिक असमानता एक उपयोगी आलोचनात्मक संकेत अछि। सौन्दर्यकेँ केवल “देखल गेल देह” नहि, “बोलैत अनुभव” बना कऽ पढ़ब समीक्षा विस्तृत करैत अछि।

देह-वर्णनक अर्थनिर्माण

नख-शिख वर्णनकेँ केवल देहक क्रमिक अवलोकन मानब बहुत संकुचित दृष्टि होएत। अङ्ग-वर्णनक चयन काव्यगत दृष्टिक दिशा देखबैत अछि: दृष्टि कोन स्थल पर ठहरैत अछि, कोन विशेषणक द्वारा अर्थ विस्तारित होइत अछि, कोन उपमा अलौकिकता अथवा लोकप्रसिद्ध वस्तुक स्मृति जगबैत अछि। देहक उल्लेखक अर्थ प्रेमक निकटता सेहो भऽ सकैछ, दृश्यात्मक

शिल्प सेहो, आ सत्ता-सम्बन्धक संकेत सेहो। एकर निर्णय संबंधित पदक पंक्ति आ वक्ता देखिकेँ करब पड़त।

यौवन आ कालबोध

यौवन-वर्णनमे केवल शारीरिक परिवर्तन नहि, कालक अनुभूति निहित होइछ। नूतन रूपक प्रति विस्मय, आत्मबोधक झिझक, सामाजिक दृष्टिसँ सावधानी आ प्रियक दृष्टिसँ स्वयंकेँ पहचानबाक प्रक्रिया मिलि कऽ यौवनक नाटकीय गठन करैत अछि। ई विविधता नारीपात्रकेँ एकरूप छवि मानबाक विरुद्ध अछि। रचनामे जेँ मौसम बदलैछ तऽ कालबोधक सामाजिक आ भावात्मक अर्थ सेहो बदलैत अछि; प्रकृति कखनो सम्बन्धक समर्थन, कखनो वियोगक तीव्रता बनैछ।

प्राकृतिक सौन्दर्यक उपस्थिति

फूल, वन, चन्द्र, मेघ, पवन अथवा ऋतुक वर्णनक अर्थ पदक कथ्यसँ तय होइत अछि। प्रसन्न प्रेमक प्रसङ्गमे जे परिवेश उल्लासपूर्ण अछि, विरहक प्रसङ्गमे सेहो परिवेश विषाद जगाबि सकैछ। एहि परिवर्तनक अर्थ ‘प्रकृति संवेदनशील अछि’ एतबे नहि; पात्रक भीतरक स्थिति बाहरक प्रतीक-व्यवस्था बदलि दैत अछि। आलम्बन आ उद्दीपनक आलोचनात्मक प्रयोग करैत काल भावक एहि उलटावकेँ रेखांकित कएल जाए।

वर्णनसँ संवाद धरि

विद्यापतिक प्रेमगीतक सौन्दर्यक एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न ई अछि जे कथात्मक प्रस्तुति आ संवादात्मक उत्कंठा कतेक अनुपातमे रहैत अछि। बहिर्वर्णन अपन अर्थक सीमामे रहैछ; पात्रक सीधा सम्बोधन ओकर भीतर प्रतिक्रिया जोड़ैत अछि। दृष्टि, संकोच, प्रश्न आ उलाहनाक क्रमसँ सौन्दर्य स्थिर चित्र नहि रहि कऽ चलायमान सम्बन्ध बनैत अछि। एहि गतिशीलताक अवलोकन बाह्य रूपसौन्दर्य आ आन्तरिक भावसौन्दर्यक कृत्रिम विभाजन घटा सकैत अछि।

पञ्चम अध्याय : काव्यशास्त्रीय परम्परा आ विद्यापतिक काव्य-सौन्दर्य (पृ० ३०३-४२८)

रसतत्त्व

अनुक्रमणिकामे शृङ्गारक संयोग-वियोग पक्षक संग वीर, हास्य आ शान्त रसक उल्लेख अछि। रसक अध्ययन पात्र-व्यक्तिक निजी भावक समानार्थी नहि; विभाव, अनुभाव आ सञ्चारी भावक कलात्मक संरचनाक अध्ययन अछि।

अलङ्कार-विधान

उत्प्रेक्षा, उपमा, रूपक, यमक, अनुप्रास, अतिशयोक्ति, अर्थान्तरन्यास, विरोधाभास, व्यतिरेक, दृष्टान्त, निदर्शना, समासोक्ति, पर्यायोक्ति प्रभृति बहुत रास अलङ्कार अनुक्रमणिकामे गनाओल अछि। अध्ययनक श्रेष्ठ कसौटी केवल अलङ्कारक नाम नहि, ओकर काव्यगत कार्य—चित्रात्मकता, ध्वनि, अर्थ-संकेतन आ भावोद्दीपन—अछि।

नायिका-भेद

मुग्धा, मध्या, प्रौढ़ा, गुप्ता, विदग्धा, अभिसारिका, वासकसज्जा, मानिनी, प्रोषितपतिका, विरहोत्कण्ठिता, विप्रलब्धा, खण्डिता, कलहान्तरिता, स्वाधीनपतिका, परकीया, कूटनी आदि अनेक कोटि प्रस्तुत अछि। एक्के पदमे एकसँ बेसी अवस्थाक छाया भेटि सकैत अछि; वर्गीकरणक लचीलापन स्वीकारब चाही।

उक्ति-वैदग्ध्य आ अर्थ-व्यञ्जना

उक्ति आ वाग्वैदग्ध्य, प्रतीकात्मकता, बिम्ब-विधान, ध्वनिवादिता, अन्योक्ति आ दृष्टकूटक पृथक् उपविषय ग्रन्थक शिल्पमुखी पक्षकें बल दैत अछि। शब्दक सतही अर्थ, संकेतित अर्थ आ सांस्कृतिक आशयक त्रिस्तरीय पठन विशेषतः दृष्टकूट लेल अपेक्षित अछि।

लोकोक्ति आ मुहावरा

मैथिलीक बोलचाल, कहबी, लोकोक्ति आ मुहावरा विद्यापतिक काव्यभाषाकें जनजीवनसँ जोड़ैत अछि। भाषिक अध्ययनमे स्थानीय अर्थ, ध्वनि-विन्यास, प्रसंगक औचित्य आ पात्रक सामाजिक स्थिति आवश्यक अछि।

आलोचनात्मक विस्तार आ सूक्ष्म पाठ

रस-सिद्धान्त पाठकें भाव-उत्पत्तिक एक अनुशासित ढाँचा दैत अछि। मुदा रसक नाम निश्चित कऽ देलासँ काव्यप्रक्रिया समझल नहि जाइत अछि। विभाव, अनुभाव, संचारी-भाव आ

स्थायीभावक सम्बन्धकें पदक शब्द-पंक्तिसँ देखेनाइ चाही। एतय रस-श्रेणीक सफलता पाठकक अनुभूतिक जीवित वैविध्यकें समेटबामे अछि।

उपमा, रूपक, अनुप्रास, यमक अथवा श्लेषक उपयोगक अर्थ ओकर संख्या नहि; विशेष प्रसङ्गमे ओकर कार्य अछि। कोनो उपमा प्रेमक दूरी घटबैत अछि, कोनो बढ़बैत अछि; ध्वनि-विन्यास भावक तीव्रता बनेनाइ अथवा विडम्बना उपजेनाइ सकैत अछि।

लोकोक्ति, मुहावरा आ लोक-प्रयुक्त पदसमूह मात्र अलङ्करण नहि, सांस्कृतिक स्मृतिक वाहक अछि। ओहि अभिव्यक्तिसँ लोकभाषाक जीवित बोली काव्यभाषामे प्रवेश करैत अछि। शास्त्रीय आ लोक-स्रोतकें प्रतिपक्ष नहि, परस्पर सक्रिय सम्बन्ध मानब चाही।

रस-निर्णायक पाठाधार

शृङ्गार रसक सामान्य सिद्धान्त स्वीकार कएलाक बाद कठिन काज आरम्भ होइत अछि। कोन घटना आलम्बन होइत अछि, केहन दृश्य उद्दीपन, कोन हाव-भाव अनुभाव, आ कोन क्षणिक प्रतिक्रिया सञ्चारी भाव—ई केवल पारिभाषिक नाम नहि। अलग-अलग पंक्तिमे एक्के वस्तु अर्थ बदलि सकैछ। कविक शब्दचयन रसविधानक निर्णायक आधार अछि। ताहि कारणेँ रस-श्रेणीक गणना मात्र कऽ आलोचना समाप्त मानब उचित नहि।

अलङ्कारक प्रकार बनाम प्रकार्य

उपमा आ रूपकक नाम देला पर पाठक केवल ई बुझैत छथि जे तुलना केना बनल अछि। मुदा तुलना किन बनल अछि, ई अधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्न अछि। मिलनक प्रसङ्गमे उपमा निकटता बढ़ाबि सकैछ; विरहमे सेहे रूपक दूरीक अनुभूति तीव्र करि सकैछ। अनुप्रासक ध्वनि केहन गति देइत अछि, पुनरुक्ति केहन आग्रह बनबैत अछि, ई देखलासँ अलङ्कार भावनिर्माणक अङ्ग बनैत अछि।

लोकोक्ति, मुहावरा आ गीतक लय

लोकोक्ति बोलीक सामूहिक अनुभव सँ जनमैत अछि। काव्य ओकरा ग्रहण कऽ सामान्य कथनकें विशिष्ट भावक अर्थ देइत अछि। मुहावरा शब्दशः अर्थसँ अलग एक सामाजिक स्मृति आ भावमुद्रा रखैत अछि। गेय पदक विराम, दोहराव आ ध्वनिसंयोजन संग ई लोकप्रयुक्ति सह-

अस्तित्व बनबैत अछि। तँ लोकभाषा आ अलङ्कारक बीच सरल उच्च-नीच विभाजन स्वीकार कएल नहि जा सकैछ।

षष्ठ अध्याय : शृङ्गारक उन्मुक्त गायक विद्यापति (पृ० ४२९-४७४)

शृङ्गारक महत्त्व

शृङ्गारक मनोवैज्ञानिक आधार, सौन्दर्य आ प्रेमक सम्बन्ध, तथा काम-सौन्दर्य-प्रेमक त्रिविभाजन एहि अध्यायक विचारभूमि अछि। ‘उन्मुक्त’ शब्दकें मात्र मर्यादा-भङ्गक अर्थमे नहि, प्रेम-अनुभूतिक मुखर काव्यात्मक प्रस्तुति रूपमे सेहो विचारल जा सकैत अछि।

संयोग-शृङ्गार

मान, मनुहार, अभिसार, मिलन, महामिलन आ सम्भोगक अनुक्रम प्रेमक नाटकीय गति प्रस्तुत करैत अछि। संयोगक सौन्दर्य प्रतीक्षा आ भयक अनुपस्थितिमे नहि, अनेक बेर ओहने मनोदशाक पार भऽ प्राप्त मिलनमे बसैत अछि।

विप्रलम्भ-शृङ्गार

पूर्वराग, स्मरण, गुणकथन, अभिलाष, मूर्च्छा, व्याधि, उद्वेग, प्रलाप, जड़ता, उन्माद आ मरणपर्यन्त दशा; संगहि प्रणयमान, ईर्ष्यामान, प्रवास आ करुण विरहक भेद अनुक्रमणिकामे अछि। एहि अवस्थासभकें वास्तविक चिकित्सकीय रोगसूची नहि, काव्य-रसक अनुभावात्मक शृङ्खला बुझब समीचीन अछि।

आलम्बन राधा-कृष्ण

शृङ्गारक आलम्बन राधा-कृष्ण विषयक पृथक् परिच्छेद अध्यायक अन्तिम सूत्र अछि। कृष्ण आ राधाक भावभूमिक एकार्थीकरणसँ बचैत, संयोग आ विरहमे पात्रक दृष्टि आ वाणी कसरी बदलैत अछि, ताहि प्रश्न पर ध्यान अपेक्षित अछि।

आलोचनात्मक विस्तार आ सूक्ष्म पाठ

“उन्मुक्त” विशेषणक विवेचन लेल पहिने ओकर अर्थ निर्धारित करब उचित अछि: देहक निर्भीक स्वीकृति, भावक सहज उद्घाटन, अथवा शैलीक निर्बन्धता? ई तीनू समान नहि।

शृङ्गारक संयोग-विप्रलम्भ विभाजनमध्ये मान, अनुरोध, प्रतीक्षा, स्मृति, गोपनता आ मिलनक आशंका भिन्न सूक्ष्म अनुभव अछि।

विरहकें संयोगक अभाव मानब मात्रसँ बात पूरा नहि होइत अछि। स्मृतिक भीतर अनुपस्थित प्रियक मानसिक उपस्थिति बढ़ैत अछि; ऋतु आ परिवेश उत्तेजकसँ कष्टप्रद बनि सकैत अछि। एहि उलटावमे काव्यक भावसौन्दर्य उभरैत अछि।

निष्कर्ष: शृङ्गारक मूल्याङ्कनमे नैतिक प्रशंसा वा निन्दाक अपेक्षा काव्यात्मक युक्ति, संवेदनात्मक गहराइ आ स्वर-विन्यासक विवेचन अधिक फलदायक अछि।

मिलनमे अन्तर्निहित अस्थिरता

संयोग-शृङ्गारक प्रत्येक चित्र निश्चिन्त सुखक रूपमे नहि होइछ। प्रतीक्षित मिलनक संग भय, लोकलाज, संकोच अथवा कालक अल्पता रहि सकैछ। एहि कारणेँ संयोगक भावानुभव कएक बेर विरहक आशंकासँ रंगायल रहैत अछि। भावविन्यासक ई मिश्रित स्थिति कठोर वर्गीकरणसँ बाहर पड़ि सकैछ; कविता ओकर कारणेँ अधिक जीवित लगैत अछि।

विरहमे स्मृति आ समय

विप्रलम्भकेँ अभावक घटना मात्र नहि मानल जाए। स्मृति अनुपस्थित प्रियकेँ पुनः उपस्थित करैत अछि, मुदा ओ उपस्थिति स्पर्शमात्र नहि, पीड़ाक स्रोत सेहो होइत अछि। दिनक अवधि लम्बा होयबाक अनुभव, रात्रिक निस्तब्धता, ऋतुक परावर्तन—ई सभ विरहक अनुभूत समय निर्मित करैत अछि। पाठक समय-सूचक शब्दक स्थान आ परिवेशगत उलटाव पहिचानथि, तखन विरहक आन्तरिक शिल्प स्पष्ट होइत अछि।

उन्मुक्तताक अर्थ

ग्रन्थक शीर्षकीय आ अध्यायगत मूल्यनिर्णयमे ‘उन्मुक्त’ कहनाइ आकर्षक अछि; तथापि एकर अर्थ आवश्यक रूपसँ अनियन्त्रित भोग नहि। कवितामे देहक निर्भीक उल्लेख, भावक सरल अभिव्यक्ति, लोकगीतक सहज लय आ शास्त्रीय रूपक सभ एकहि समय उपस्थित रहि सकैछ। उन्मुक्तताकेँ नैतिक आरोप-प्रत्यारोपसँ हटाक अभिव्यक्तिक संरचनामे देखलासँ सौन्दर्य-विचारक गहराइ बढ़ैत अछि।

सप्तम अध्याय : विद्यापतिक प्रेमकाव्यमे लोक-चेतनाक उन्मेष (पृ० ४७५–५३७)

लोक-चेतना आ लोक-यथार्थ

ग्रन्थ लोकचेतनाक आयाम, साहित्यक सामाजिक मर्यादा, स्वस्थ मनोवृत्ति आ गार्हस्थिक मूल्यक प्रसंग उठबैत अछि। राधा-कृष्णक लोक-पात्र रूपमे प्रस्तुति आ लौकिक जीवनक भाषिक संकेतसँ भक्तिकथा आ जनजीवनक दूरी घटैत अछि।

सामाजिक कुरीति पर व्यङ्ग्य

बाल-विवाहक विरोध, कूटनी नारीक चित्रण, आ सामाजिक विसंगति पर व्यङ्ग्यक उपशीर्षक स्पष्ट सूचित अछि। एहि विवेचनमे काव्यक विशिष्ट पात्रक वक्तव्य आ ऐतिहासिक समाजक सामान्य स्थिति बीच प्रमाणजन्य अन्तर राखब जरूरी अछि।

लोकतत्त्व आ गीत-परम्परा

दृष्टकूट, महेशवाणी आ नचारीकेँ लोकचेतनाक सन्दर्भमे समाविष्ट कएल गेल अछि। एहि रूपसभमे सामाजिक बोलचाल, आस्था आ प्रदर्शनकारी गायनक सम्बन्धक अध्ययन सम्भव अछि। मैथिली गीत-पद्धतिक प्रस्तुति-सन्दर्भ पदक अर्थ बदलि सकैत अछि।

विद्यापतिक मिथिला

मिथिलाक राजनीतिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक अवस्थाक पृथक् विवेचन (पृ० ५०४-५२७) ग्रन्थकेँ केवल अन्तःपाठीय काव्यालोचनासँ आगाँ लऽ जाइत अछि। ऐतिहासिक घटनाक निष्कर्ष देबाक लेल अलग अभिलेखीय अथवा विश्वसनीय ऐतिहासिक स्रोतसँ मिलान चाही।

आलोचनात्मक विस्तार आ सूक्ष्म पाठ

लोकचेतना केवल ग्राम्य शब्दक सूची नहि; लोकजीवनक श्रम, रीत, उत्सव, स्त्री-सम्बन्ध, घर-परिवार, विवाह-व्यवस्था आ सामूहिक स्मृतिक काव्यात्मक उपस्थिति अछि। यदि पदमे समकालीन सामाजिक व्यवहारक झलक भेटैत अछि, तकर इतिहासलेखनमे प्रयोग सावधानीसँ करबाक चाही, किएक तँ कविता प्रत्यक्ष जनगणना नहि।

कुरीति पर व्यङ्ग्यक प्रसङ्गमे वक्ताक स्थिति निर्णायक अछि। व्यङ्ग्य कविक मत अछि, पात्रक शिकायत अछि, वा परम्परागत हास्यक विधान—ई अन्तर बिनु सामाजिक निर्णय अविश्वसनीय भऽ सकैत अछि।

मैथिली मुहावरा, सम्बोधन, स्थानीय ऋतुचक्र आ गायनपरम्परा एहि अध्यायक सबल सम्भावना अछि। भाषा आ समाजक बीच सम्बन्धकेँ केवल सजावट नहि, अर्थ-उत्पादनक माध्यम मानब एहि ग्रन्थक लोकपक्षकेँ गहराइ दैत अछि।

लोकचेतनाक अनेक स्तर

मिथिलाक लोकजीवन सम्बन्धी संकेतकेँ ग्रामीण वस्तुक सूची मात्र नहि बनाओल जाय। सम्बोधन-पद्धति, स्त्री-समुदायक परस्पर वार्ता, ऋतुचक्र, घरक आँगन, परम्परागत संस्कार, हास्य, व्यङ्ग्य आ उत्सव सभ लोक-चेतनाक स्तर अछि। भाषा एतय केवल वस्तुक नाम नहि दैत अछि; सामाजिक सम्बन्धक दूरी आ निकटता सेहो निर्धारित करैत अछि।

कुरीति-विवेचनक पद्धति

कवितामे परिहास अथवा शिकायत देखिकेँ तात्कालिक समाजक संस्थागत इतिहास सीधा लिखब जोखिमपूर्ण अछि। साहित्य सामाजिक तनावकेँ अतिशयोक्ति, लोककथा अथवा पात्रक निजी शिकायतमे प्रकट कऽ सकैछ। कुरीतिक प्रश्न पर गम्भीर शोध करबाक लेल सामाजिक इतिहास, विधि, रीतिगीत आ समकालीन अन्य साहित्यक स्वतंत्र प्रमाणसँ मिलान अपेक्षित अछि।

लोक आ शास्त्रक संगति

लोकधुनक सहज पुनरावृत्ति आ संस्कृत काव्यशास्त्रक बिम्ब एक दोसराक विरोधी होएबाक आवश्यकता नहि। एकहि पदमे स्थानीय सम्बोधन आ परम्परागत अलङ्कार एक संग अर्थ उत्पन्न कऽ सकैत अछि। एहि संगतिक कारण विद्यापतिक काव्यक प्रभाव व्यापक बुझल जा सकैत अछि, मुदा प्रभावक ऐतिहासिक दाबी लेल ठोस अनुक्रमिक साक्ष्य अलगसँ चाही।

अष्टम अध्याय : परवर्ती कविलोकनि पर विद्यापतिक प्रभाव (पृ० ५३९-५६८)

मिथिलाक काव्यानुराग

मिथिलाक काव्यानुराग आ संगीत-नृत्य परम्पराकेँ ग्रन्थ प्रभाव-इतिहासक आरम्भिक भूमिका मानैत अछि। काव्यक परवर्ती जीवन केवल पुस्तकमे नहि, गायन, अनुष्ठान आ सामूहिक स्मृतिमे सेहो विकसित होइत अछि।

मैथिली काव्यक परम्परा

मैथिली काव्य आ विद्यापतिक सम्बन्ध तथा मैथिली कविलोकनि पर प्रभावक विवेचन साहित्यिक उत्तराधिकारक महत्वपूर्ण प्रश्न अछि। ‘प्रभाव’ स्थापित करबाक लेल प्रत्यक्ष उल्लेख, छन्द-भाषा-बिम्बक साम्य आ कालानुक्रमिक सम्भावना तीनू देखबाक चाही।

अन्य भाषाक साहित्य पर प्रभाव

बंगला आ ब्रजबुलि, नेपाली, असमिया, उड़िया आ भोजपुरीक कविलोकनि पर प्रभाव ग्रन्थक स्पष्ट विषय अछि। प्रभावकेँ एकदिशीय प्रसार कहबाक बदला पाठ-परिवर्तन, क्षेत्रीय गायन आ पारस्परिक ग्रहणशीलताक माध्यममें परखब विशेष उपयोगी अछि।

आलोचनात्मक विस्तार आ सूक्ष्म पाठ

प्रभावक अध्ययन लेल साम्य पर्याप्त नहि। पछिला कविक काल, पाठ-प्रसारक माध्यम, छन्द, सम्बोधन-शैली, नायिका-विधान आ साझा पद-विन्यासक ठोस तुलनात्मक साक्ष्य आवश्यक अछि। “विद्यापतिक समान प्रेमगीत” आ “विद्यापति सँ प्रेरित गीत” दू भिन्न प्रस्ताव अछि।

मैथिली आ अन्य भाषाक गीतपरम्परामे प्रत्यक्ष अनुकरण, रचनात्मक रूपान्तरण, लोकगायनद्वारा प्रसार, आ सामान्य सांस्कृतिक परम्परा—ई चार सम्भावनाकेँ अलग करब चाही। एतेक भेदक बादे प्रभावक दाबी ऐतिहासिक रूपसँ ठोस बनत।

मूल्याङ्कन: एहि अध्यायक महत्त्व विद्यापतिक रचनाक दीर्घजीविता देखेबामे अछि; एकर शोधसम्भावना व्यवस्थित समानान्तर पद-पाठ आ पाण्डुलिपि-परम्पराक परीक्षणमे अछि।

अनुकरण, प्रभाव आ समान परम्परा

जँ दू कविक पदमे राधा-कृष्ण, सावन, विरह अथवा सखीक उल्लेख भेटैछ, ताहिसँ अनिवार्य नहि जे परवर्ती कवि विद्यापतिसँ प्रत्यक्ष प्रेरित छथि। ई बिम्ब व्यापक सांस्कृतिक कोशक सेहो भऽ सकैछ। प्रत्यक्ष प्रभावक दावा लेल काल-निर्णय, पाठ-प्रसार, विशिष्ट पदबन्ध, गायनपरम्पराक वाहक आ उपलब्ध पाठान्तरक तुलना महत्वपूर्ण अछि।

भाषा-पार प्रसार

मैथिली गीतक प्रभाव अन्य भाषामे देखबाक लेल भाषान्तरित रूप, मूल पदक ध्वन्यात्मक रूप, लयबद्ध पुनर्रचना आ लोकगायकक मौखिक रूपान्तरण अलग-अलग प्रक्रिया अछि। कखनो

शब्द यथावत रहैत अछि, कखनो रूपक बदलैत अछि मुदा भाव-संरचना बचल रहैछ। शोधमे एहि प्रकारक परिवर्तन चिह्नित करबाक बादे प्रभावक प्रकृति निर्धारित कएल जाय।

परवर्ती कविक स्वायत्तता

प्रभावक चर्चा जँ केवल पूर्ववर्ती कविक महिमामण्डन बनि जाए तऽ पछिला साहित्यकारक सृजनशीलता ओझरि जाइछ। काव्यपरम्परा ग्रहण आ परिवर्तनक सम्बन्ध अछि। नव भाषा, नव श्रोता आ बदलल सामाजिक परिस्थितिमे एकहि शृङ्गारिक विधानक अर्थ फेर बनैछ। ई बदलैत अर्थ स्वयं अनुसन्धानक विषय अछि।

नवम अध्याय : उपसंहार (पृ० ५७५-५८९)

समेकित विचार

ग्रन्थक पूरे यात्रा प्रेम आ सौन्दर्यक दार्शनिक आधारसँ शुरू भऽ मनोवैज्ञानिक अन्वेषण, राधाकृष्णीय परम्परा, नायिका-शास्त्र, रस-अलङ्कार, लोकचेतना आ बहुभाषिक प्रभावक पड़ाव पार करैत अछि। एहि क्रममे विद्यापतिक काव्यक प्रधान वैशिष्ट्य प्रेम-अनुभव आ भाषिक-सौन्दर्यक परस्पर निर्भरता रूपमे उभरैत अछि।

अनुसन्धानक सम्भावित विस्तार

पदवार पाठभेद, गेय-परम्परा, स्त्री-वाणी, स्थानिक उच्चारण, भाषासम्पर्क तथा पाण्डुलिपि-परम्पराक अध्ययन एहि ग्रन्थक विमर्शक उपयोगी अगिला पड़ाव अछि। ई समीक्षक द्वारा सुझाओल शोध-दिशा अछि, मूल उपसंहारक प्रमाणित उद्धरण नहि।

अध्ययनक संरचनात्मक उपलब्धि

नौ अध्यायक विन्यास विषयकें बहुआयामी रूप दैत अछि। तात्त्विक आ मनोवैज्ञानिक आधार, काव्यशास्त्रीय वर्गीकरण, लोकसमाजक सन्दर्भ तथा परवर्ती प्रभावक क्रम एक विस्तृत अध्ययन-पद्धतिक परिचायक अछि।

प्रेम आ सौन्दर्यक अन्तःसम्बन्ध

प्रेम आ सौन्दर्यकें स्वतंत्र शीर्षकमे परिभाषित करितो ग्रन्थक मध्यभाग दुनूकें एक-दोसरक विधायक तत्त्वक रूपमे जोड़ैत अछि। रूपक आकर्षण, भावक परिपाक आ कलात्मक अभिव्यक्ति अलग-अलग तत्त्व रहितहुँ परस्पर प्रभावकारी अछि।

काव्यशास्त्रीय पद्धतिक उपयोगिता आ सीमा

रस, अलङ्कार, नायिका-भेद आ ध्वनिक शब्दावली निकट पाठनमे सहायक अछि; मुदा अत्यधिक वर्गीकरण पदक व्यक्तिगत आवाज, विडम्बना, व्यङ्ग्य आ सामाजिक संघर्षकें ओझराओ सकैत अछि। वर्गक संग पाठक स्वायत्तता राखब समीचीन अछि।

स्त्री-पात्रक आलोचनात्मक पुनर्पाठ

राधाक देह, सौन्दर्य आ चेष्टाक विस्तृत वर्णनक संग हुनक इच्छा, असहमति, वाणी, मान आ विरह सेहो अध्ययनक केन्द्रमे रहबाक चाही। एना नायिका केवल पुरुष-दृष्टिक आलम्बन नहि, अनुभूतिशील वक्ताक रूपमे उभरैत छथि।

लोकजीवन आ भाषा

लोकचेतना, मुहावरा, नचारी आ महेशवाणीक उपस्थिति मैथिली भाषाक सामाजिक जीवनक महत्त्व देखबैत अछि। काव्यरूप आ भाषिक व्यवहारक पारस्परिक अनुसन्धान विद्यापतिक ऐतिहासिक पाठनकें मजबूत करैत अछि।

तुलनात्मक साहित्यक सम्भावना

अलग-अलग भाषाक परम्पराक प्रसंग अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। समान पदरचना, अनुवाद, रूपान्तरण, सुर-परम्परा आ परवर्ती काव्यग्रहणक तुलनात्मक सूची बनाओल जाए तऽ प्रभाव-अध्ययन अधिक प्रमाणाधारित बनि सकैत अछि।

आलोचनात्मक विस्तार आ सूक्ष्म पाठ

ग्रन्थक अवधारणात्मक, मनोवैज्ञानिक, आलम्बनगत, काव्यशास्त्रीय, लोक-सांस्कृतिक आ प्रभावगत भाग परस्पर जोड़ल गेल अछि। समग्र निष्कर्ष इएह नहि होयबाक चाही जे विद्यापति “प्रेम आ सौन्दर्यक कवि” छथि; अपेक्षित ई अछि जे कतेक प्रकारक प्रेम, कोन भाषिक साधनसँ, किन सामाजिक परिस्थिति आ गायनपरम्परामे रूप पबैत अछि।

उपसंहारक मूल्य तभी बढ़ैत अछि जखन ओ मुख्य प्रतिपादन, पाठ-प्रमाण, वैकल्पिक व्याख्या आ निष्कर्षक सीमा चारू अलग रखैत अछि। विद्यापति-पदक पाठान्तरक समस्या, कवित्व-आरोपण, भाषिक ऐतिहासिकता आ स्त्रीस्वरक विमर्श भविष्यक अनुसन्धान लेल विशेष महत्त्वपूर्ण अछि।

समग्रता बनाम विस्तार

ग्रन्थ व्यापक दार्शनिक भूमिका सँ काव्यशास्त्र, सामाजिक पृष्ठभूमि आ परवर्ती प्रभाव धरि जाइत अछि। ई विस्तार विद्यापतिक अध्ययनकेँ एकमात्र ‘शृङ्गारिक कवि’क संकीर्ण परिचयसँ बचबैत अछि। मुदा व्यापकता स्वयं गहराईक पर्याय नहि। जतेक विषय अधिक, ओतेक प्रत्येक निष्कर्षक प्रमाण-अनुशासन जरूरी। एहि कारण अध्यायसभक परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट करब उपसंहारक प्रमुख अपेक्षा अछि।

काव्यपाठक नवान्वेषी दिशा

नव अनुसन्धानमे पदक वक्ता-विश्लेषण, नायिकाक इच्छा आ प्रतिवाद, गीतक गेय संरचना, भाषिक पाठान्तर, लोकभाषाक सांस्कृतिक अर्थ आ प्रभावक ऐतिहासिक प्रमाण समान रूपसँ महत्वपूर्ण होएत। एतय प्रयुक्त प्रश्न मूल लेखकक निश्चित निष्कर्ष नहि, प्रस्तुत समीक्षाक आलोचनात्मक प्रस्ताव अछि। एहि भेदक स्पष्टता पाठककेँ शोध-परम्परा आ नव मूल्याङ्कनक सीमा बुझबैत अछि।

समग्र आलोचनात्मक निष्कर्ष

ग्रन्थक विशेष उपलब्धि एकरे बहुस्तरीय स्थापत्य अछि। प्रेमक सामान्य सिद्धान्तसँ काव्यरूप, पात्रविधान, शृङ्गार, लोकचेतना आ प्रभावक अध्ययन धरि विस्तारित ढाँचा पाठककेँ विद्यापतिक सम्पूर्ण प्रेमकाव्यक बहुआयामी परिचय दैत अछि। एकर अर्थ ई नहि जे सभ कथन निर्विवाद अछि; विद्वत्ताक जाँच अलग-अलग स्तर पर करब आवश्यक अछि।

काव्य-समीक्षाक प्रमुख कसौटी पाठसाक्ष्य अछि। एतय शब्द, ध्वनि, पदक्रम, वक्ता, आलम्बन, उद्दीपन, सामाजिक रीति आ पाठान्तर एकत्र करब अपेक्षित अछि। लेखकक वर्गीकरण उपयोगी मानचित्र अछि, मुदा मानचित्र स्वयं मूल भूभाग नहि। प्रत्येक उदाहरण ओकर स्थानीय अर्थसँ व्याख्यायित होयबाक चाही।

प्रेम-सौन्दर्यक पारम्परिक विमर्शक भीतर स्त्रीपात्रक अभिकर्तृत्व, भावनात्मक प्रतिरोध, सामाजिक मर्यादा आ इच्छाक द्वन्द्वक नव पाठ सम्भव अछि। ई प्रस्तुत समीक्षाक आलोचनात्मक प्रस्ताव अछि, लेखकक घोषित मतक प्रत्यक्ष उद्धरण नहि।

पश्चिमी सौन्दर्यशास्त्र आ भारतीय रससिद्धान्तक सैद्धान्तिक मिलान उपयोगी अछि, मुदा ओकर ऐतिहासिक-सांस्कृतिक भिन्नता मेटा देब यथोचित नहि। विद्यापतिक काव्यक स्थानीय शब्दरचना, गायनपरम्परा आ मिथिलाक सांस्कृतिक संकेतक विशिष्टता सर्वदा केन्द्रमे रखबाक चाही।

समेकित उपसंहार

‘अग्नि-शिखा’ आ ‘अथातो काव्य जिज्ञासा’मे भाषा, समाज आ कविता बीच सम्बन्धक जे सक्रिय तनाव उपस्थित अछि, से ‘प्रथम पुरुष’क आलोचनात्मक निबन्धसभमे विचारगत अनुशासनक रूप पबैत अछि। जन-चेतना केवल घोषणासँ नहि, बिम्ब, शैली, लय आ कथन-स्थितिक संगठनसँ कलात्मक प्रभाव अर्जित करैत अछि। कवि आ समीक्षक मल्लिकक सम्बन्ध एहि द्विविध कार्यमे प्रकट होइत अछि।

‘नाटक आ रंगमंच : प्रकृति आ प्रतिमान’ एहि साहित्य-दृष्टिक प्रदर्शनात्मक आयाम खोलैत अछि। मैथिली नाटकक इतिहास लिखबाक लेल नाट्यग्रन्थ पर्याप्त नहि; वास्तविक अभिनय, संस्था, प्रेक्षक, गीत, रंग-निर्देश आ लोकाभिनयक सामाजिक सन्दर्भ सेहो आवश्यक अछि। साहित्य ओहि क्षण सामुदायिक अनुभव बनैत अछि जखन लिखित शब्द मंचपर देह, स्वर आ समय प्राप्त करैत अछि।

विद्यापतिक प्रेम-सौन्दर्यपर मल्लिकक विमर्श मैथिली साहित्यक दीर्घ ऐतिहासिक धरोहर दिस ध्यान लौटबैत अछि। मुदा शृङ्गार, रस, अलङ्कार आ नायिका-भेदक परम्परागत श्रेणी काव्यपाठक अन्तिम निष्कर्ष नहि बनबाक चाही। प्रेमक वक्ता, स्त्री-अनुभव, लोकभाषा, रागात्मक अभिव्यक्ति आ परवर्ती भाषामे रूपान्तरण जकाँ प्रश्न साहित्यिक अर्थकें आरो समृद्ध करैत अछि।

पाँचो कृतिक अध्ययनक साझा निष्कर्ष ई अछि जे मैथिली साहित्यक आलोचनामे सांस्कृतिक सम्मान आ मूल्यांकनक स्वतन्त्रता संग रहबाक चाही। मल्लिकक कविता आ आलोचना दुनू एहन पाठक आमन्त्रण करैत अछि जे समाजक असमानता देखैत हो, रूपसौन्दर्यक विवेक रखैत हो, आ अपन परम्पराक भीतर नूतन प्रश्न उठबैत हो। एही सतत प्रश्नशीलता सँ हुनक साहित्यक नित नवल सम्भावना निर्मित होइत अछि।

विस्तृत सन्दर्भ-ग्रन्थावली

मुख्यतः एहि पुस्तकमे विवेचित मूल कृति, आ विषयगत ग्रन्थ-सन्दर्भ। पुस्तक, संस्करण, प्रकाशक आ प्रकाशन-वर्षक विवरण मात्र; जाल-सन्दर्भ नहि।

क. वीरेन्द्र मल्लिकक विवेचित मूल ग्रन्थ

मल्लिक, वीरेन्द्र। अग्नि-शिखा। कविता-संग्रह। प्रकाशन-वर्ष, संस्करण आ प्रकाशकक पुष्ट विवरण उपलब्ध नहि।

मल्लिक, वीरेन्द्र। अथातो काव्य जिज्ञासा। कविता-संग्रह। प्रथम संस्करण, २०२३। गाजियाबाद : अन्तिका प्रकाशन प्रा. लि. ISBN 978-93-91925-69-7।

मल्लिक, वीरेन्द्र। प्रथम पुरुष। आलोचना-संग्रह। २०२३। अंकित प्रकाशन प्रा. लि.।

मल्लिक, डॉ. वीरेन्द्र। नाटक आ रंगमंच : प्रकृति आ प्रतिमान। प्रथम संस्करण, २०१८। नई दिल्ली : तीर्थभुक्ति। ISBN 978-81-939529-0-0।

मल्लिक, डॉ. वीरेन्द्र। प्रेम सौन्दर्य विधायक विद्यापति। २०१६। प्रकाशक आ संस्करणक पुष्ट विवरण उपलब्ध नहि।

ख. काव्यशास्त्र, नाट्यशास्त्र आ रामकाव्यक पुस्तक-सन्दर्भ

भरतमुनि। The Nāṭyaśāstra: A Treatise on Hindu Dramaturgy and Histrionics, Vol. I-II।

अनुवाद आ सम्पादन : Manomohan Ghosh। कलकत्ता : The Asiatic Society (खण्ड I, १९५१; खण्ड II, १९६१)।

विद्यापति ठाकुर। Vidyāpati Padāvalī। अनुवाद : Ananda K. Coomaraswamy आ Arun Sen। १९९४ संस्करण। नई दिल्ली : इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (IGNCA)। ISBN 81-85120-50-1।

तुलसीदास। श्रीरामचरितमानस। गोरखपुर : गीताप्रेस। (विभिन्न मुद्रित संस्करण उपलब्ध।)

अध्यात्मरामायण। गोरखपुर : गीताप्रेस। (विभिन्न मुद्रित संस्करण उपलब्ध।)

१.१३. गजेन्द्र ठाकुर — नित नवल योगानन्द झा

VIDEHA 451 • VIDEHA451 / PROSE 13 • सम्पूर्ण मूल पाठ

स्रोतक मूल शीर्षक, प्रकाशन-विवरण, विषय-सूची, अध्याय, तालिका, अन्तिम टिप्पणि आ सन्दर्भ पूर्ण रूपेँ समाविष्ट। मूल स्रोतमे छपल आन्तरिक पृष्ठाङ्क स्रोत-संस्करणक अछि।

साहित्य • आलोचना • लोकजीवन

नित नवल

योगानन्द झा

तेरह ग्रन्थक समीक्षात्मक विवेचन

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

२०२६

प्रकाशन-विवरण

नित नवल योगानन्द झा

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२६

सर्वाधिकार सुरक्षित। लेखकक लिखित अनुमतिक बिना एहि पुस्तकक कोनो अंशक व्यावसायिक पुनर्प्रकाशन नहि कएल जाए। उद्धरण आ शैक्षिक उपयोग प्रचलित सन्दर्भ-परम्पराक अनुसार कएल जा सकैत अछि।

मुद्रण-विन्यास : ६ × ९ इञ्च

पुस्तकक क्रम

अनुक्रमणिका

01 लोकजीवन ओ लोकसाहित्य	5
02 संकल्प : विद्यापति-स्मृति-पर्व स्मारिका	27
03 आलेख सञ्चयन	54
04 मैथिली शाक्त साहित्य	90
05 मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष	108
06 गहबर गीत	131
07 लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा	146
08 मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायिक शब्दावली	172
09 कथा-लोककथा	201
10 सीतावतरण	226
11 मंगल-प्रभात	246
12 भोरे-भोर	266
13 चतुर्दश सूत्र	284
ग्रन्थसूची	323

अध्याय 01 / १९८६ • द्वितीय संस्करण २०१८

लोकजीवन ओ लोकसाहित्य

डॉ. योगानन्द झाक कृतिक आलोचनात्मक विवेचन

१. केन्द्रीय प्रतिपाद्य: लोकजीवन आ लोकसाहित्यक अभिन्नता

पोथीक आरम्भमे लेखक लोकसाहित्यकेँ केवल पद्य, कथा अथवा मनोरञ्जनक भण्डार नहि मानि लोकजीवनक जीवन्त अभिव्यक्ति रूपेँ रखैत छथि। ‘लेखकीय’ (पृ. ११-३२) मे लोकक अर्थ, जनसामान्यक अनुभव, लोकसाहित्यक विभिन्न रूप तथा मिथिलाक मौखिक धरोहरक समृद्धिपर चर्चा अछि। लेखकक चिन्ता ई अछि जे लिखित साहित्यक इतिहासमे गामक बोली,

व्यवसाय, आस्था, कथा-वाचन आ गीतक जतेक स्थान चाही से नहि भेटैत अछि। एहि दृष्टिसँ ग्रन्थ केवल साहित्यिक स्वादक सामग्री नहि, सामाजिक दस्तावेज तैयार करबाक प्रयत्न सेहो अछि।

मूल ‘लेखकीय’क पृ. १२-१३ पर विभिन्न वर्गीकरणक तुलनात्मक उल्लेख अछि। लोकशब्दावली, लोकनृत्य, लोकनाट्य, लोकगाथा, गाथागीत, लोकगीत, लोककथा, लोकोक्ति-मोहावरा, लोकश्रुति, फकड़ा, लोकमंत्र आ बुझौअलि जकाँ श्रेणीसभ एकरा व्यापक परिधि देल अछि। आरम्भिक पृष्ठसभमे संस्कृत-प्राचीन साहित्य आ आधुनिक विद्वत्परम्पराक सन्दर्भ देल गेल अछि। मुदा वर्गीकरण स्वयं अन्तिम सत्य नहि: एक्कहि गहबर-गीत एक समयमे लोकगीत, अनुष्ठान, जातीय इतिहासक स्मृति आ सार्वजनिक प्रदर्शन भऽ सकैत अछि। ग्रन्थक बादक उदाहरणसभ ई बहुस्तरीयता सिद्ध करैत छथि।

आवश्यक भेद ‘लोक’ बनाम ‘शिष्ट’ साहित्यक अछि। लेखक मौखिक संचरण, सामूहिक रचना, परिवर्तित पाठ, समयक संग गढ़ाईत अर्थ आ लोकपरम्पराक स्वाभाविक जीवनशक्तिक चर्चा करैत छथि। समीक्षकीय दृष्टिसँ एहि भेदमे उपयोगिता अछि, मुदा ‘लोक’क भीतर शिक्षित-अशिक्षित, शहर-गाम, गायन-पाठन, जातीय व्यवहार आ लिखित-पुस्तकीय सम्पर्कक परस्पर आवाजाहीक सेहो स्थान बनब आवश्यक अछि। उदाहरणार्थ, गहबर-गीतमधेँ कालीक धार्मिक प्रसंग, गाथाक चरित्रनाम आ स्थानीय गायन—तीनू एक्कहि प्रसंगमे मिलैत छथि।

लेखक पहिल संस्करणक भूमिकाक सन्दर्भमे मैथिली लोकसाहित्यक व्यवस्थित अध्ययनक अभाव अनुभव करैत छथि; पुनः २०१८क द्वितीय संस्करणक भूमिका/उपोद्धातमे उपलब्ध पूर्ववर्ती अनुसन्धान आ संग्रहकार्यक अधिक विस्तृत परिदृश्य रेखांकित करैत छथि (पृ. ४-१०, २८-३२)। पहिल प्रकाशन १९८६ आ पुनर्मुद्रित/द्वितीय संस्करण २०१८ होयबाक तथ्य महत्त्वपूर्ण अछि: ई एक्कहि समयक क्षेत्र-रिपोर्ट नहि, विभिन्न कालखण्डक बौद्धिक सन्दर्भसँ संवाद करैत पुस्तक अछि।

लोकसाहित्यक पाठसँ लोकजीवनक साक्ष्य धरि

पुस्तकक रचना-पद्धतिमे दू स्पष्ट चरण अछि। पहिल चरणमे समुदाय, जातीय-उपजातीय नाम, पेशा, शब्दकोशीय रूप, पूजा-देवता आ सामाजिक व्यवहारक परिचय देल जाइत अछि। दोसर चरणमे कथा, गाथा आ गीतक माध्यमसँ ओहि समाजक मूल्य, संघर्ष आ आकांक्षाक चित्रण

होइत अछि। एहि क्रमसँ काजक संसार आ कल्पनाक संसारकेँ अलग-अलग नहि, एक-दोसरासँ जुड़ल रूपमे पढ़बाक अवसर भेटैत अछि।

मुदा केवल सामुदायिक नामक आधारपर पुरनका पेशा, वर्तमान जीविका, धार्मिक उपासना आ सामाजिक प्रतिष्ठाकेँ एककहि रैखिक परिचयमे समेटि देबामे खतरा अछि। पोथी अपन मूल कालखण्डक जातीय शब्द आ व्युत्पत्ति-सम्बन्धी मत देइत अछि; ताहि लेल वर्तमान अनुसन्धानमे जाति-समुदायक स्वनाम, जीवन-स्थितिक परिवर्तन आ एककहि नामक भीतर विद्यमान विविधताक अध्ययन अलग आवश्यक होयत। ई टिप्पणी लेखकक पाठक ऐतिहासिक-सामाजिक सन्दर्भसँ उठैत अछि; कोनो समुदायपर सार्वकालिक आरोप नहि।

२. जातीय समुदायक सामाजिक स्वरूप: छह प्रकरणक क्रमवार समीक्षा

२.१ डोम जातिक सामाजिक स्वरूप | पृ. ३५-४२

एहि प्रकरणक आरम्भ मिथिलाक सामाजिक व्यवस्थामे डोम समुदायक स्थान आ बाँसक कारीगरीसँ होइत अछि। लेखक डोमक पेशागत परिचयमे बाँससँ निर्मित विविध घरेलू उपयोगक सामानक उल्लेख करैत छथि आ एही काजसँ विकसित जातीय शब्दावलीपर बल दैत छथि। ई पुस्तकक प्रमुख एहन प्रसंग अछि जतए शब्द-संपदा आ श्रम-इतिहास एक-दोसराक पूरक बनैत अछि। विशेष अर्थ ई जे लोकसंस्कृति केवल धार्मिक कथा नहि, दैनिक उपभोगक वस्तु, निर्माणक तकनीक आ उत्पादक श्रममे सेहो बसैत अछि।

लेखक पुराकथात्मक उत्पत्ति-वृत्तान्तक संग डोमक सामाजिक व्यवहार आ गीत-संस्कृतिको स्थान दैत छथि (पृ. ३५-४१)। उत्पत्ति-कथामे वर्ण-व्यवस्थाक वैधता-सृष्टि करबाक प्रवृत्ति देखि पड़ैत अछि; मुदा ओ कथाक समाजशास्त्रीय अर्थ आ ऐतिहासिक सत्यता पृथक् बात अछि। एहि कथा केँ ‘समुदाय केर बारेमे चलैत लोकविश्वास’क रूपेँ पढ़ब उचित अछि। बाँस-कर्मक विस्तृत शब्दसंग्रह एहि प्रकरणक अधिक ठोस, प्रत्यक्ष उपयोगी पक्ष अछि।

पुस्तकमे डोमसम्बन्धी लोकोक्ति, कार्यसँ जुड़ल गीत आ सामुदायिक आचरणक उल्लेखसँ पेशाक प्रति सामाजिक दृष्टि सेहो उद्घाटित होइत अछि। एहि सामग्रीकेँ केवल विनोद अथवा पुरान कथाक कुतूहल मानब अनुचित होयत; ई एकर साक्ष्य अछि जे सामाजिक श्रेणीकरणसँ भाषा आ लोकगीत प्रभावित होइत अछि। समीक्षाक आलोचनात्मक आग्रह अछि जे एहन

लोकप्रयोगक पुनर्पाठमे जातिवाचक अवमाननाक सम्भावित स्वर चिन्हित कएल जाय आ जकर बारेमे वर्णन अछि, हुनकर अपन अनुभवक आवाज सेहो जोडल जाय।

२.२ चमार जातिक सामाजिक स्वरूप | पृ. ४३-४४

चमार समुदायपर प्रकरण संक्षिप्त अछि, मुदा पुस्तकक योजनामे एकर स्थान महत्वपूर्ण अछि। लेखक चमड़ा, जूता-सामग्री, मरल पशुसँ सम्बन्धित पुरान श्रम-विभाजन तथा जातीय उपनाम-परम्पराक सन्दर्भ दैत छथि। कथात्मक उत्पत्ति-विवेचनसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे लोकधारणामे पेशा आ जाति एक-दोसरासँ गुँथल रहल अछि। कथाक मूल आधारपर पूरे समुदायकेँ एक पेशामे सीमित करब आजुक आलोचनात्मक अध्ययनमे उचित नहि मानल जा सकैत अछि। विशेष ध्यान देबाक बात अछि जे एहि प्रकरणमे श्रमक उपयोगिता आ श्रमिकक सामाजिक स्थितिक बीच अन्तर छुपल अछि। वस्तु-निर्माण सामूहिक जीवनक अनिवार्य अङ्ग होइतहुँ, ओकरा करनिहारक सम्मान बराबर नहि होइत। लेखकक संकलित शब्द आ लोकप्रयोग एहि विडम्बनाक अध्ययन लेल मार्ग खोलैत अछि। पृ. ४३-४४क तुलना पृ. ३५-४२सँ करब पर एकटा प्रश्न उभरैत अछि: लोकसाहित्यक संग्रहमे ‘लोक’क अनेक समुदायसभक प्रतिनिधित्व कोन प्रकारेँ तय होय? संक्षिप्त प्रकरण एहि प्रश्नक पूर्ण समाधान नहि करैत अछि, मुदा ओकर आवश्यकता स्पष्ट करैत अछि।

२.३ धोबी जातिक सामाजिक स्वरूप | पृ. ४५-४९

धोबी प्रकरणमे वस्त्रधोअन, रँगाइ, शोधन आ कपड़ासँ सम्बन्धित सेवाक चर्चा अछि। लेखक प्रचलित लोकोक्ति, पेशागत विशेष शब्द, लोकगीत तथा सामाजिक व्यवहारक उदाहरण दैत छथि। धोबीक कामक उल्लेख एकटा महत्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रश्न उठा दैत अछि: समाजक ‘पवित्रता’ सम्बन्धी धारणा आ तकर व्यवहारिक व्यवस्था केँ सम्भव बनौनिहार श्रम स्वयं कोन सामाजिक सम्मान पबैत रहल? एहि विरोधाभासक आलोचनात्मक पाठ एहि अध्यायक केंद्रीय सम्भावना अछि।

गीतक प्रस्तुति श्रमक सामाजिक-संगीतात्मक परिवेशकेँ चिन्हित करैत अछि। ध्यान देबाक बात अछि जे कपड़ा धोअन एतेक सामान्य काज अछि जे ओकर साहित्यिक-महत्व अनदेखा भऽ सकैत छल; मुदा लेखक एहि पेशाक लोकप्रयोगक संकलनक माध्यमसँ दैनिक व्यवहारकेँ

सांस्कृतिक अध्ययनक विषय बनबैत छथि। लोकगीतमे भेटैत लय, सम्बोधन आ दुहरावक विश्लेषण एतए केने-जाने सम्भव अछि; मुदा गायनक वास्तविक स्वर, गायकक परिचय, तिथि आ स्थान उपलब्ध नहि होयबाक स्थितिमे निश्चित प्रदर्शन-परम्पराक दावा नहि कएल जा सकैत अछि।

मिथिलाक लोकजीवनक एकटा अन्य अर्थ—सेवा, निर्भरता आ परस्पर सामाजिक आदान-प्रदान—एहि प्रकरणसँ सोझाँ अबैत अछि। एहि पाठकेँ केवल जातीय उत्पत्तिक आख्यान नहि मानि श्रम-विनिमयक इतिहासक दिशामे बढ़ाओल जा सकैत अछि; तथापि समसामयिक आर्थिक आँकड़ा अथवा वर्तमान पेशागत अनुपात एहि पुस्तकमे उपलब्ध नहि अछि।

२.४ हलुआइ जातिक सामाजिक स्वरूप | पृ. ५०–५२

हलुआइ प्रकरणमे लेखक नामक व्युत्पत्तिसम्बन्धी मत, कृषि वा व्यावसायिक परम्पराक संकेत, उपजातीय विभाजन तथा गणिनाथ-गोविन्द-जकाँ देवतापूजनक वर्णन प्रस्तुत करैत छथि। एहि प्रसंगमे लेखक व्यवसायकेँ जातीय सांस्कृतिक पहिचानक एक प्रमुख आधार मानैत छथि, मुदा संगहि लोकविश्वास, देवता आ आपसी श्रेणीकरणकेँ जोड़ैत छथि। मूल पृ. ५०–५२मे उपजाति आ कुलपूजाक विवरणक साथै इहो देखाइत अछि जे ‘एक जाति, एक पेशा’क समीकरण पर्याप्त नहि।

ग्रन्थक आन्तरिक संरचनामे एकर महत्त्व आरो बढ़ि जाइत अछि, कारण लोकगाथा-अंशमे गणिनाथ-गोविन्द, फेकूराम आ अन्य पात्रक चर्चा एही लोकविश्वासक निकट अबैत अछि। पहिने सामाजिक परिचय, बादमे कथा—एहि विधिक उपयोगिता उदाहरणसँ स्पष्ट अछि। कथाक भक्ति-आधारित प्रतिष्ठा आ जातीय इतिहासक बीच सीमा रखब आवश्यक अछि; लेखकक मतक परिचय करब एक बात अछि, वैज्ञानिक ऐतिहासिक पुष्टि दोसर।

२.५ मलाह जातिक सामाजिक स्वरूप | पृ. ५३–५९

मलाह प्रकरण ग्रन्थक सामाजिक वर्णनमे अपेक्षाकृत विस्तृत अछि। नदी, जल, नौका, माछ, मखान, जलसम्बद्ध जीविका आ नदीघाटक लोकसंसार एहि अंशक प्रमुख परिधि अछि। लेखक पेशागत नामकरणक चर्चा करैत छथि, समुदायसँ जुड़ल उपसमूह आ लोकगीत देखबैत छथि तथा जलसंसाधनक उपयोगकेँ सामाजिक जीवनसँ जोड़ैत छथि। एतए मिथिला भूगोलक एक

विशेष सांस्कृतिक रूप उभरैत अछि: जल मात्र प्राकृतिक परिवेश नहि, गीतक प्रसंग, श्रमक साधन आ लोकवृत्तान्तक स्थल अछि।

पृ. ५४-५८ पर जीवनक संकट, माछ पकड़बाक व्यवहार, परिवार आ जीविकोपार्जनसँ सम्बद्ध लोककथात्मक प्रसंग पाबि सकैत छी। एहन पाठमे हास्य, दैनन्दिन संवाद आ काजक अनुभवक मेल अछि। पृ. ५९ पर लेखक बदलैत पेशागत स्थितिक चिन्ताक सेहो संकेत करैत छथि। एहि आधारपर लोकसाहित्यक संरक्षणक प्रश्न प्रकृतिक संसाधन, उत्पादन-पद्धति आ पारिवारिक श्रमक परिवर्तनसँ जुड़ि जाइत अछि।

मलाह लोकपरम्पराक संग 'दुलरा दयाल' आ 'गाड़ो देवी'क सम्बन्ध देखबाक लेल ग्रन्थक बादक प्रकरण अत्यन्त आवश्यक अछि। सामाजिक परिचयमे वर्णित नदी-आश्रित श्रम गाथा-प्रसंगमे लोकवीर, रक्षक देवता आ सामूहिक श्रद्धाक रूप लैत अछि। एहि अन्तर्सम्बन्धक कारण पुस्तकक पहिल आ दोसर भाग एक-दोसराक अर्थ खोलैत अछि।

२.६ कुरेड़ी जातिक सामाजिक स्वरूप | पृ. ६०-६३

कुरेड़ी प्रकरणमे एकटा विशेष प्रकारक जीविका—मधु छोड़ेबाक काज—पर लेखकक विशेष ध्यान अछि। वनस्पति, मधुमक्खी, उँच स्थान आ ऋतु-सम्बद्ध जोखिमक विवरणसँ प्रकृति-आश्रित ज्ञानक संसार बनैत अछि। लेखक 'कुरेड़ी' शब्द, निकटवर्ती पेशागत समुदाय आ उपजाति-नामक चर्चाकरैत छथि। एहि सामग्रीक महत्त्व ई अछि जे लोकसंस्कृतिक मौखिक इतिहासमे हुनर, जीविकाक साहस आ शरीरगत कौशल सेहो सुरक्षित रहैत अछि।

समाज-शास्त्रीय तुलना करब पर मलाहक जल-ज्ञान आ कुरेड़ीक मधु-संग्रह एक्कहि व्यापक श्रेणी—स्थानीय पर्यावरणसँ विकसित व्यवहारिक ज्ञान—मे अबैत अछि। एतए आलोचनात्मक अनुसन्धान आगाँ बढ़ि कऽ शब्दावली, औजार, काजक मौसम, गाछ-गाछक नाम आ समुदाय द्वारा जनाओल जोखिमक विश्लेषण कऽ सकैत अछि। मुदा एहि सम्भावित शोध-प्रश्नकेँ ग्रन्थमे कएल गेल प्रत्यक्ष सर्वेक्षण मानब गलत होयत।

बेनीराम गाथामे नाउ आ कुरेड़ीक जातीय देवताक पूजासँ जुड़ल परम्पराक उल्लेख एही सामाजिक परिचयसँ बादमे जुड़ैत अछि (पृ. १२१)। एहि लेल जीवनोपार्जन, सामूहिक वंशस्मृति आ देवताक कल्पना परस्पर सम्बन्धित भऽ जाइत अछि।

३. लोकगाथा: चौदह पाठक पृथक् विवेचन

मूल ग्रन्थक लोकगाथा-खण्डक आरम्भ पृ. ६४ सँ होइत अछि। प्रकरणसभक प्रस्तुति सर्वत्र समान लम्बाइक नहि अछि: किछु कथाक संक्षिप्त कथासार, किछुक विस्तृत आख्यान आ गीतांश देल गेल अछि। ताहि लेल समीक्षा प्रत्येक गाथाक उपलब्ध आकार आ प्रमाण-अवस्थाकेँ ध्यानमे रखैत अछि। ‘नायक’ अथवा ‘देवता’ शब्द एतए लोकपरम्पराक दृष्टिसँ प्रयुक्त अछि; ओहिसँ ऐतिहासिक रूपसँ सिद्ध व्यक्तित्वक दावा नहि निकलैत अछि।

३.१ श्यामसिंह | पृ. ६४-६६

श्यामसिंहक कथा डोम समुदायक निकटसँ जुड़ैत अछि। कथा-रचनामे श्यामसिंह, वंशीधर आ बलाजी जकाँ पात्रक माध्यमसँ सम्बन्ध, संघर्ष आ पराक्रमक दृश्य गढ़ल गेल अछि। लेखक कथाक आरम्भमे लोकनायकक परिचय दैत छथि आ अन्तमे श्यामसिंहक स्मृतिक डोम सामुदायिक परम्परामे स्थानक उल्लेख करैत छथि।

एहि गाथामे प्रेम/सम्बन्ध आ प्रभुत्वक प्रश्नकेँ शौर्यक भाषा भेटैत अछि। कथा-विकासमे अपमानक प्रत्युत्तर, पारिवारिक सम्बन्ध आ हिंसात्मक प्रतिरोधक आवेग स्पष्ट अछि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ ई सामूहिक सम्मानक कल्पना आ सामाजिक पदानुक्रमसँ टकरावक रूपक बनैत अछि। कथा एहि रूपमे पढ़ल जाय जे लोकसमुदाय अपन मर्यादा आ रक्षकक स्मृतिसँ केहन पहिचान गढ़ैत अछि; एकरा प्रमाणित राजनीतिक घटनाक कालक्रम रूपेँ नहि प्रस्तुत कएल जाय।

३.२ लालवन बाबा | पृ. ६७-६८

लालवन बाबा खण्ड चमार समुदायसँ जुड़ल लोकदेवताक एकटा मार्मिक आख्यान अछि। लालाजी/लालवन आ मनसरामक सम्बन्ध, एक महिलाक संकट, बचाव आ हिंसक परिणामक उल्लेख कथा-केंद्रमे अछि। पृ. ६८ पर जातीय लोकगीतक स्वरूपमे लालवनक स्मरण सेहो भेटैत अछि।

गाथाक रोचक परिवर्तन ई अछि जे कथामे जे पात्र मानवीय असुरक्षा आ सामाजिक अत्याचारक सामना करैत अछि, ओ अन्ततः उपासना आ लोकस्मृतिक केन्द्र बनि जाइत अछि। लोकदेवता-सृष्टिक ई प्रक्रिया बहुधा इतिहास, शोक, प्रतिरोध आ सामूहिक न्यायबोधक मिश्रित कल्पना

होइत अछि। लेखकक प्रस्तुत पाठ एहि प्रक्रियाक आलोचनात्मक अध्ययन लेल उपयोगी सामग्री दैत अछि।

३.३ गरीबन भुजड़ा | पृ. ६९-७३

गरीबन भुजड़ाक गाथामे श्रम, दरिद्रता, उपेक्षा आ जीविकाक पीड़ा प्रमुख अछि। मूल पृ. ६९ पर धोबी-भट्टीक ओसार-देवता जकाँ लोकविश्वासक सन्दर्भ भेटैत अछि; कथा-गीतमे गरीबनक स्थिति आ ओकर प्रति सम्बोधन अनेकपटक पुनरावृत्त होइत अछि। ‘गरीबन’ नाम स्वयं आर्थिक वञ्चनाक अर्थ-क्षेत्र खोलि दैत अछि, मुदा एकरा केवल प्रतीक कहि मूल मानवीय पात्रक पीड़ा विस्मृत करब ठीक नहि।

कथामे उपेक्षित व्यक्तिक सामूहिक स्मृतिमे प्रतिष्ठा—एहि सम्भावनाक कारण गाथा एकटा सामाजिक अभिलेख बनैत अछि। मुदा शाब्दिक रूपेँ समस्त कथा केँ वास्तविक घटनाक इतिहास नहि कहि सकैत छी। गाथाक पुनरावृत्तिमूलक गायन, बिम्ब आ करुण प्रसंगक अध्ययनसँ लोकसमाज अपन श्रमजीवी सदस्यक दुखकेँ कोन आवाज दैत अछि, से बुझबा मे सहायता भेटैत अछि।

३.४ मोतीदाइ | पृ. ७४-७५

‘मोतीदाइ’क केन्द्र एकटा स्त्री पात्रक नैतिक साहस आ अपमानक प्रतिरोध अछि। कथा आरम्भमे मोतीदाइकेँ गृहस्थ तथा नित्य पूजा-पाठ करनिहार रूपेँ देखबैत अछि; अनिष्टकारी दृष्टि आ दबावक बीच ओ अपन निर्णयपर अडिग रहैत छथि। कथा-क्रममे मृत्यु आ अद्भुत परिणामक प्रसंग उपस्थित अछि।

एहि गाथाकेँ मात्र स्त्रीक शील-संरक्षणक रूढ़ि रूपेँ पढ़ब संकुचित होयत। एतए स्त्रीक अपन देह आ निर्णयपर अधिकारक लोककल्पना सेहो देखल जा सकैत अछि, यद्यपि ई आधुनिक अधिकारवादी शब्दावली लेखकक मूल कथन नहि अछि। पृ. ७४-७५क संक्षिप्त आख्यानक भीतर स्त्री-संघर्षक जे संकेत अछि, से पुस्तकक अपेक्षाकृत पुरुष-प्रधान वीरगाथा-प्रवाहक महत्त्वपूर्ण प्रतिपक्ष अछि।

३.५ गणिनाथ-गोविन्द | पृ. ७६-८६

ई ग्रन्थक विस्तृत आख्यानसभमे सँ एक अछि। लेखक गणिनाथ-गोविन्दक पूजा हलुआइ सहित किछु अन्य समुदायसँ जोड़ैत छथि आ वैशाली क्षेत्रक राजपलवैया-जकाँ स्थानीय स्थानपर लोकविश्वासक चर्चा करैत छथि (पृ. ७६)। कथामे गणिनाथक जन्म, देवतासभक प्रसंग, गोविन्दक भूमिका, मनुष्यक सामूहिक संकट आ धार्मिक प्रतिष्ठाक विविध घटना जोड़ल गेल अछि।

लोकगाथाक प्रमुख विशेषता एतए दिव्य आ मानवीय समयक मिश्रण अछि। गणिनाथक व्यक्तित्व पितृत्व, रक्षण आ समुदाय-हितक कल्पनाकेँ एक ठाम आनैत अछि। देवताक कथा स्थानीय भूगोल आ सामाजिक समारोहक संग चलैत अछि; फलतः ई आस्था-साहित्य सामाजिक पहिचानक साधन बनैत अछि। पृ. ८५-८६ पर गाथा आ परम्परागत प्रतिष्ठाक मेल पढ़बा योग्य अछि।

आलोचनात्मक प्रश्न अछि जे गणिनाथ-गोविन्दक कथा कतए कथा-परम्पराक आन्तरिक सत्य व्यक्त करैत अछि आ कतए लेखक ओकरा ऐतिहासिक अनुश्रुति रूपेँ राखैत छथि। किछु स्थानीय स्थाननाम आ पूजा-प्रथाक प्रमाण ग्रन्थमे स्वतः उपलब्ध अछि, मुदा ताहिसँ कथाक प्रत्येक अद्भुत घटना तथ्यतः सिद्ध नहि होइत अछि। एहि भेदक रक्षा करब वैज्ञानिक समीक्षा लेल अनिवार्य अछि।

३.६ फेकूराम | पृ. ८७-८८

फेकूरामक आख्यान कानू-हलुआइ समुदायसँ सम्बद्ध अछि। कथामे फेकूराम, हुनकर पत्नी सोनमती आ गहिर पारिवारिक संकटक वृत्तान्त अछि। मानवीय इच्छा, असहायता आ निष्ठाक बीच कथा आगाँ बढ़ैत अछि; अन्तमे लोकस्मृतिमे फेकूरामक प्रतिष्ठाक संकेत भेटैत अछि।

एहि प्रकरणक विशेषता ओकर संक्षिप्तता अछि। जीवनक विपत्ति आ दाम्पत्य सम्बन्ध आस्थाक सामुदायिक कथामे रूपान्तरित होइत अछि। फेकूरामक जकाँ पात्रकेँ विस्तृत ऐतिहासिक संदर्भविना केवल ‘कुलदेवता’ नाम देब पाठककेँ पर्याप्त जानकारी नहि देत; पुस्तक ई कथा-सूत्र उपलब्ध करबैत अछि, जकर भिन्न-भिन्न मौखिक पाठक पुनः अनुसंधान सम्भव अछि।

३.७ कारिख | पृ. ८९-९३

‘कारिख’ प्रकरणमे लोकनायकक उत्पत्ति, पारिवारिक सम्बन्ध, दीना-नाथसँ सम्बन्धित आख्यानक सन्दर्भ, विपत्ति आ देवतासँ टकराव/समझौतेक कथा-प्रवाह भेटैत अछि। गाथामे गायनयोग्य पंक्तिक संग कथात्मक गद्य चलैत अछि। कारिखक चरित्र लोकसमाजक असुरक्षित जीवनसँ उठि सामूहिक रक्षक रूप धारण करैत अछि।

एहि गाथाक पाठसँ एक बात महत्त्वपूर्ण रूपेँ उभरैत अछि: लोकनायकक वैधता प्रायः राजकीय अभिलेखसँ नहि, बल्कि सामुदायिक गायन आ अनुष्ठानिक पुनर्स्मरणसँ स्थापित होइत अछि। मूल पृ. ८९-९३ एहि रूपान्तरणक स्रोत अछि। गीतक लय, आवृत्ति आ सम्बोधनकेँ गौण बुझि मात्र कथासार पढ़ला पर लोकगाथाक विशेष गुण छूटि जाइत अछि।

३.८ दुलरा दयाल | पृ. ९४-९६

‘दुलरा दयाल’मे मलाहक जातीय जीवन आ व्यवसायसँ जुड़ल रक्षक-नायकक स्मृति अछि। प्रकरणक आरम्भमे आम, पान, माछ, मखान आदिसँ सम्बद्ध उत्पादन आ मिथिलाक मलाह जीवनक उल्लेख कएल गेल अछि। तकर बाद दुलरा-दयालक कथा गोत्र, परिवार, प्रतिद्वन्द्विता आ स्मृतिक विस्तार करैत अछि।

मिथिलाक खाद्य-संस्कृति आ नदी-आश्रित जीवन जे सामाजिक खण्डमे वर्णित छल, एतए वीर-स्मृतिक माध्यम बनैत अछि। दुलरा-दयालक कथा वर्गीय-अधिकार, श्रम आ रक्षणक लोकमूल्यक अध्ययनक लेल उपयुक्त अछि। पृ. ९६ पर लेखक एहि गाथाक प्रति समुदायकेँ जुड़ल श्रद्धा प्रदर्शित करैत छथि; ताहिसँ एकर सांस्कृतिक प्रभावक जानकारी भेटैत अछि, सर्वव्यापी ऐतिहासिक स्वीकृतिक प्रमाण नहि।

३.९ गाड़ो देवी | पृ. ९७-१००

गाड़ो देवीक कथा मलाहक लोकदेवीक उपासना आ परिवारक स्मृतिसँ जुड़ैत अछि। पृ. ९७ पर लेखक गाड़ो देवीक स्मरण कएल जाएब, सरोवर/जलसँ सम्बन्धित लोकमान्यता तथा जन्मोत्सव-प्रसंगक गीत दैत छथि। गाथा मे पिता, सन्तान आ पारिवारिक वियोग-सङ्कटक स्वर प्रवाहित अछि।

एहि गाथामे स्त्री देवताक रूपमे सामुदायिक प्रतिष्ठाक अर्थ मोतीदाइक कथासँ अलग अछि। मोतीदाइमे नैतिक प्रतिरोधक प्रश्न केन्द्रस्थ अछि, जखन कि गाड़ो देवीक अंशमे समुदाय, वंश,

जल-परिवेश आ जन्मक शुभकामनाक मेल भेटैत अछि। पृ. ९७-१००मे आवर्तित गायन-रूप किछु अंशमे प्रार्थनाक काम करैत अछि। ई रचना लोकगीत आ लोकगाथाक पारम्परिक वर्गसीमा केँ सहज रूपेँ पार करैत अछि।

३.१० जयसिंह | पृ. १०१-१०४

जयसिंहक गाथा कीर्तिपुरुषक वीरता आ अपन कुल-समाजक प्रतिष्ठाक कथा अछि। आरम्भमे लेखक जयसिंहक पूजन-सम्बन्धी परम्पराक उल्लेख करैत छथि। कथामे जसुमतिक सन्तान, पारिवारिक संकट, कमलाक पूजा-सम्बद्ध स्थान आ आराधनाक प्रसंग अबैत अछि। ई आख्यान राजकीय इतिहासक अपेक्षा लोकसमाजक प्रतिमानक रूपमे अधिक स्पष्ट अछि।

गाथाक गीतात्मक रचना स्मरणीय व्यक्तित्वकेँ लययुक्त सार्वजनिक शब्द देइत अछि। चूँकि मिथिलाक अनेक समुदायमे वीर-पूजाक परम्परा लोकप्रचलित अछि, जयसिंहक पाठ एकटा दृष्टान्त अछि जे देवत्व-सृष्टि केवल अतीत नहि, सामूहिक धार्मिक-सामाजिक व्यवहारक निरन्तर प्रक्रिया अछि।

३.११ अमरसिंह | पृ. १०५-१०७

अमरसिंहक कथा आरम्भमे ऐतिहासिक वीरताक स्वर लेइत अछि; बदलाक संघर्ष, प्रतिशोध, सामाजिक रक्षण आ स्थानीय पूजाक रूपमे कथा विकसित होइत अछि। पृ. १०६-१०७ पर बालकक रक्षण, युद्ध आ बलिदानक प्रसंग विशेष रूपसँ उभरैत अछि। तकर संग सम्बन्धित गीतांश वीरक स्मृतिक जनभाषिक अभिव्यक्ति बनैत अछि।

एहि गाथाक सम्यक् समीक्षामे वीरक महिमा आ कथाक हिंसात्मक घटनाक बीच दूरी राखब आवश्यक अछि। लोकगाथा सामुदायिक मानबोधक स्रोत अछि, कोनो सामाजिक समूहक विरुद्ध वैमनस्यक निर्देश नहि। पुस्तक द्वारा उपलब्ध प्रसंगकेँ कथा-इतिहासक स्रोत मानि शोध कएल जा सकैत अछि; मुदा घटना, तिथि आ पात्रक बाह्य अभिलेखीय सत्यापन अलग काम होयत।

३.१२ केवल महाराज | पृ. १०८-११०

केवल महाराजक गाथा मलाह जातिक सामूहिक स्मृतिसँ सम्बद्ध अछि। सात समुद्र-पार विस्तार, संघर्ष आ अपनै समाजक लोकदेवताक रूपमे केवल महाराजक प्रतिष्ठा प्रमुख रूपक छथि। मूल

कथाक आरम्भमे ‘सात समुद्र’ आ शासनक मिथकीय विस्तारक उल्लेख अछि; ई काव्यात्मक अतिशयोक्ति बुझबाक चाही, राजकीय भूगोलक प्रमाण नहि।

गाथाक मूल नाटकीय शक्ति दृढ़ता, विपत्तिमे अडिग रहब आ आत्मीय समुदाय लेल संघर्षमे अछि। पृ. १०८-११०क संक्षिप्त कथा बुझबैत अछि जे देवी-देवता वा लोकरक्षकक उन्नति कथाक भीतर मानवीय साहससँ जुड़ि सकैत अछि। लोकगाथाक व्याख्यामे अतिशयोक्तिक उपयोग भावात्मक सत्य रचैत अछि, बाह्य ऐतिहासिक सत्य नहि।

३.१३ दीना-भद्री | पृ. १११-१२०

दीना-भद्री ग्रन्थक सर्वाधिक सामाजिक अर्थवाला दीर्घ प्रकरणसभमे अछि। लेखक कृषक-मजदूर, विशेषतः मुसहर समुदाय आ कृषि-जीवनक असमानताक चर्चा करैत गाथामे प्रवेश करैत छथि। सन्तान, श्रम, खेत, उत्पीड़न, बन्धन, प्रतिरोध आ लोकनायकक प्रतिष्ठा एक्कहि आख्यानमे परस्पर गुंथल छथि। एतए जातीय रक्षकक कथा जीविकाक संघर्षसँ अलग नहि भऽ सकैत अछि।

पृ. १११-११८ पर आर्थिक अभाव आ कृषिकठिनाइकेँ वर्णित करनिहार अंशसभ गाथाक सामाजिक पृष्ठभूमि निर्मित करैत अछि। पृ. ११९-१२० पर लेखक दीना-भद्रीक जातीय स्मृतिमे स्थान आ संघर्षशील प्रतिमा स्पष्ट करैत छथि। ई पाठ सामन्ती अथवा प्रभुत्ववादी सम्बन्धपर लोक-स्मृतिक प्रतिक्रिया रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि। एहि व्याख्यामे ‘वर्ग-प्रतिरोध’ एकटा आलोचनात्मक दृष्टि अछि, लेखक द्वारा सर्वत्र अपनाओल स्थिर शब्द नहि।

गाथाक महत्त्वक कारण ई जे मजूरक जीवन-यथार्थ केन्द्रीय साहित्यिक वस्तु बनि जाइत अछि। ताहि संग अति-नायकत्व, लोकआस्था आ सामूहिक अभिलाषाक मेल सेहो अछि। पाठ समीक्षककेँ सतर्क करैत अछि जे गरीब समुदायकेँ केवल पीड़ित छवि मे कैद नहि कएल जाय; हुनकर संगठन, स्वाभिमान आ प्रतिरोधक कल्पनाकेँ सेहो महत्व देल जाय।

३.१४ बेनीराम | पृ. १२१-१३३

बेनीराम प्रकरणमे नाउ आ कुरेड़ीक जातीय देवताक रूपमे बेनीरामक पूजाक उल्लेख अछि (पृ. १२१)। लेखक लोकविश्वासक गहराइ, जन्म-सम्बन्धी गीत, पारिवारिक सम्बन्ध आ कठिन परिस्थिति मे पात्रक साहसक विस्तृत कथा प्रस्तुत करैत छथि। एहि खण्डमे गाथात्मक गायनक

पंक्ति पर्याप्त मात्रामे उपलब्ध अछि; ताहि लेल ई केवल एक कहानीक सार नहि, मौखिक स्मृतिक लयात्मक दस्तावेज सेहो अछि।

पृ. १२२-१२८ पर कथानकक घटनाक संग विश्वास, संकट, टकराव आ पूजा-प्रतिष्ठाक दृश्य चलैत अछि; पृ. १२९-१३३ मे कथाक विकास अधिक व्यापक सामाजिक संवादक रूप लैत अछि। ई गाथा देखबैत अछि जे सामाजिक समूह अपन आदर्श-पुरुषकें परिवार, पूजा, संघर्ष आ जीविका-परम्पराक मिलनस्थलमे प्रतिष्ठित करैत अछि।

अनुसन्धानक दृष्टिसँ बेनीराम प्रकरण विशेष उपयोगी अछि: जातीय देवताक सामुदायिक प्रसार, विभिन्न गायन-पाठक रूपान्तर आ स्थानीय स्मारक/पूजा-स्थलक स्वतंत्र क्षेत्र-सत्यापनक प्रश्न एतए उठैत अछि। मुदा पुस्तकमे एहन समस्त वैकल्पिक पाठक वैज्ञानिक तुलना नहि देल गेल अछि; अतः ग्रन्थक उपलब्ध पाठकें एक विशिष्ट संकलित रूप मानल जाय।

४. गहबर गीत: अनुष्ठान, देवी-स्मृति आ लोकभाषाक बहुवचन | पृ. १३४-१४९

‘गहबर गीत’ पुस्तकक अन्तिम आ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंश अछि। आरम्भमे लेखक मिथिलाक लोकगीतक विस्तृत संसारक चर्चा करैत छथि—विवाह, संस्कार, उत्सव, जन्म, ऋतु, विभिन्न देवता आ स्थानीय आस्था सँ सम्बन्धित गायनरूपसभ। गहबर-गीतक विशेष सम्बन्ध देव-आवाहन, देवी-देवता, पूर्वज-स्मृति आ सामूहिक धार्मिक अनुष्ठानसँ स्थापित होइत अछि (पृ. १३४-१३६)। एहि लेल गहबर-गीत केवल स्वायत्त कविताक ‘पाठ’ नहि, विशेष अवसरपर कएल जाएवाला ‘कार्य’ सेहो अछि।

पृ. १३६-१३७मे लेखक आह्वानक परम्परा आ लोकभाषामे संस्कृत धार्मिक ध्वनिक स्थानीय रूपान्तरक सन्दर्भ दैत छथि। कालीक उपस्थिति, ‘गहबर’क धार्मिक स्थल-कल्पना आ आवर्तित सम्बोधनसँ ई रचना सामूहिक आग्रहक रूप लैत अछि। पृ. १३८-१४९क अनेक गीतांशमे बारम्बार नाम, देवीक सम्बोधन, कथा-नायकक स्मरण, नदी-वन-धाम, व्रत-जकाँ अनुष्ठान-भाव आ विशिष्ट लोकलयक संकेत भेटैत अछि।

विशेष ध्यान देबाक बात अछि जे गहबर-गीतक भीतर कालीसँ सम्बन्धित सामग्रीक संग कारिख, दुलरा आदि लोकदेवताक स्मरण सेहो अबैत अछि। एहि सँ शास्त्रीय देवी-उपासना आ जातीय लोकदेवताक परम्परा पूर्णतः परस्पर-विरुद्ध नहि बुझाईत अछि। मिथिलाक अनेक

धार्मिक व्यवहारकें 'लोक' आ 'शास्त्र'मे कठोर खण्डमे बाँटब कठिन; ग्रन्थक अन्तिम खण्ड एहि कठिनाइकें प्रत्यक्ष देखबैत अछि।

समीक्षणीय दृष्टिसँ एहि खण्डक एकटा प्रमुख सीमा ई अछि जे गेय पाठक छन्द-ताल, धुन, अवसर, गायिका/गायकक सामाजिक परिचय, स्थान आ प्रदर्शनक कालक्रमक व्यवस्थित अभिलेखन एतए उपलब्ध नहि अछि। मौखिक परम्पराक अध्ययन लेल लिखित शब्द जरूरी अछि, मुदा स्वर आ सामूहिक सहभागिता सेहो मूल सामग्रीक अङ्ग छथि। यूनिसकोक मौखिक धरोहरसम्बन्धी दस्तावेज सेहो गायनक भिन्नता, प्रदर्शनक प्रसंग आ पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचरणकें मुख्य मानैत अछि; ई कसौटी ग्रन्थक भविष्यक पुनःअध्ययन लेल उपयुक्त अछि।

पृ. १४८-१४९ पर अन्तिम गेय अंशमे कारिखक सम्बोधन, वन-परिवेश, सेवक आ धार्मिक स्मृतिक सूत्रक आवृत्ति भेटैत अछि। पुस्तकक अन्त एहि प्रकारें लोकजीवनक विविध शाखाकें पुनः लोकगीतमे एकत्र करैत अछि। एहि रचनात्मक समापनक कारण ग्रन्थक शीर्षक —'लोकजीवन ओ लोकसाहित्य'—कें सार्थक व्याख्या भेटैत अछि।

५. समेकित आलोचनात्मक विवेचन

५.१ जातीय पहिचान आ देवता-निर्माण

ग्रन्थमे जातीय समाजक परिचय आ जातीय लोकदेवताक गाथा एक-दोसराक पूरक अछि। डोम-श्यामसिंह, चमार-लालवन, हलुआइ-गणिनाथ/फेकूराम, मलाह-दुलरा दयाल/गाड़ो देवी/केवल महाराज, मुसहर-दीना-भट्टी आ नाउ/कुरेड़ी-बेनीराम जकाँ सम्बन्ध पुस्तकक अन्तःसंरचनामे स्पष्ट रूपें उपस्थित छथि। ई सम्बन्ध केवल देवता-नामक सूची नहि; सामूहिक स्मृतिमे सुरक्षा, उत्पत्ति, आघात, गौरव आ नैतिक अधिकारक निर्माणक प्रक्रिया अछि। कथामे कोनो पात्रक मृत्यु अथवा संकट बाद ओकरा लोकदेवताक प्रतिष्ठा भेटब विशेष अध्ययनयोग्य अछि। समुदाय अपना पीढ़क, रक्षक, वंश आ माटिसँ सम्बन्धित अनुभवकें उपासना-परम्परामे स्थायित्व देबाक प्रयत्न करैत अछि। मुदा जातीय देवताक ऐतिहासिक अस्तित्व, तकर पूजा-प्रसारक तिथि आ कथा-घटनाक सचाई एक्कहि प्रश्न नहि। जातीय लोकविश्वासक सांस्कृतिक शक्ति स्वीकार करैतहुँ प्रमाण-पद्धतिक ई तीन स्तर पृथक् राखब आवश्यक अछि।

५.२ श्रम, पेशागत शब्दावली आ स्थानीय पारिस्थितिकी

बाँसक कारीगरी, चमड़ासँ सामग्री, कपड़ा धोअन, जल-आधारित आजीविका, मधु-संग्रह तथा कृषि-मजूरीक उल्लेख समूचा ग्रन्थमे लोकजीवनक आर्थिक आधार स्थापित करैत अछि। एतए लोकसाहित्यक अध्ययन ‘के गाबैत अछि?’ सँ आगाँ ‘कोन काम करैत अछि, कोन सामग्री उपयोग करैत अछि, केकर संग व्यवहार करैत अछि?’ धरि जाइत अछि। ई दृष्टि पुस्तकक बड़ी उपलब्धि अछि।

लोकगीतक शब्दावली स्थानीय पर्यावरणक अनौपचारिक कोश बनि सकैत अछि। नाव, नदी, माछ, गाछ, मधु, वन, बाँस आ घरेलू उपयोगक वस्तु पाठकें भौगोलिक आधार दैत छथि। मुदा लोकप्रयोगसँ वैज्ञानिक वनस्पति-प्रजाति, पर्यावरणीय परिवर्तन अथवा श्रम-आर्थिक आँकड़ा सिद्ध नहि कएल जा सकैत अछि। अधिक अध्ययन लेल समुदायसँ पुनः संवाद, वस्तु-प्रदर्शनक दृश्य-अभिलेख आ क्षेत्रीय शब्दरूपक तुलनात्मक कोश तैयार कएल जाएब आवश्यक होयत।

५.३ करुणा, वीरता, स्त्री-पात्र आ सामाजिक प्रतिरोध

गरीबन भुजड़ा आ दीना-भद्रीक गाथामे दरिद्रता आ श्रम-शोषणक स्वर; श्यामसिंह, जयसिंह, अमरसिंह, केवल महाराज आदिमे वीरता आ रक्षणक स्वर; मोतीदाइ आ गाड़ो देवीमे स्त्रीक प्रतिष्ठा, पारिवारिक आस्था आ संकट—ई सभ ग्रन्थक अलग-अलग भावलोक छथि। एहि भिन्नताकें एकटा मात्र ‘लोकवीर’ अथवा ‘भक्तिकथा’क साँचा मे ठेलब पुस्तकक वैविध्यक हानि होयत।

स्त्री पात्रक प्रसंग विशेष विवेचन माँगैत अछि। मोतीदाइकें नैतिक निर्णायक शक्ति सहित पढ़ल जा सकैत अछि; गाड़ो देवीक कथा सामुदायिक मातृत्व/देवीत्वक स्मृतिक सांस्कृतिक भूमिका खोलैत अछि। मुदा एहि दू कथासँ सम्पूर्ण मिथिला-स्त्रीक जीवनपर सामाजिक निष्कर्ष निकालब अनुचित अछि। एकल गाथा व्यक्तिगत अथवा सामुदायिक कल्पनाक साक्ष्य अछि; व्यापक सामाजिक दावा लेल बहुविध प्रमाण अपेक्षित अछि।

५.४ कथात्मक संरचना आ गेय भाषा

पुस्तकक गाथासभमे आरम्भक परिचय, संकट, प्रतिद्वन्द्विता, असाधारण कर्म, परिणाम आ अन्ततः स्मृति/पूजाक क्रम बारम्बार उपस्थित अछि। मुदा सभ गाथा एक्कहि संरचनामे नहि

बँधैत। कतहु जन्मोत्सव वा कामना गीत महत्त्वपूर्ण अछि, कतहु वीरताक प्रसंग, कतहु स्त्रीक अस्वीकार, कतहु नदी-वनक काज आ कतहु लोकदेवताक आह्वान। गद्यकथन आ गीतपंक्ति बारी-बारी अबैत छथि, जाहिसँ कथा सुनयब आ गायब—दूनू क्रिया भिन्न बुझाइत अछि।

लोकगीतक भाषामे सम्बोधन, पुनरावृत्ति, ध्वन्यात्मक प्रभाव, व्यवसायसँ सम्बन्धित विशिष्ट शब्द आ स्थानीय उच्चारण-रूप रचना के विशिष्ट बनबैत अछि। एहि भाषाकेँ मानक लिखित गद्यक वर्तनीक आधारपर ‘अशुद्ध’ बतायब लोकसाहित्यक मूल स्वभावक विरुद्ध होयत।

सम्पादन करबाक समय मूल गायनरूप, अर्थ-टिप्पणी आ सम्भावित मानक रूप अलग-अलग स्तरपर सुरक्षित राखबाक चाही। एहन बहुस्तरीय प्रस्तुति आगामी वैज्ञानिक संस्करणक लेल अधिक उपयोगी होयत।

५.५ पाठ-संग्रह आ क्षेत्रकार्यक प्रमाण-सङ्कट

मूल ग्रन्थक विशेष उपलब्धि कथासभकेँ पुस्तकाकार सुरक्षित करब अछि। लेखक १९८६क भूमिका आ २०१८क परिचयमे लोकसाहित्य-अनुसन्धानक विभिन्न पूर्ववर्ती प्रयत्नक नाम उल्लेख करैत छथि (पृ. ४–१०, २८–३२)। मुदा प्रत्येक गीत वा कथा लेल एक्कहि ढाँचा मे गायक/सूत्रधारक नाम, उमेर, गाम, संग्रह-दिनांक, प्रदर्शन-अवसर, वाद्य, धुन, विविध पाठ तथा सम्पादनक नीति नहि भेटैत अछि। ई सीमाक अर्थ संग्रह निष्फल नहि; अर्थ ई जे ओकरा आधुनिक अभिलेखीकरणक कसौटीपर पुनः व्यवस्थित करबाक कार्य बाकी अछि।

अमेरिकन फोकलोर सोसाइटीक क्षेत्रकार्य-सम्बन्धी वक्तव्य अनुसन्धानकेँ सहभागी, सम्बन्ध-आधारित आ समुदायसँ सीखबाक प्रक्रिया मानैत अछि। एहि दृष्टिसँ एकटा नव पाठ-संस्करणमे केवल संकलकक टिप्पणी नहि, गायक, गायिका, श्रोता आ सम्बन्धित समुदायक मूल्याङ्कन सेहो अभिलेखित होयब चाही। मौखिक परम्परा परम्परानुसार बदलैत अछि; एकमात्र मुद्रित पाठकेँ अपरिवर्तनीय ‘मूल’ मानि लेब वैज्ञानिक रूपसँ कठिन अछि।

५.६ ग्रन्थक काल-सन्दर्भ, जातीय भाषा आ आलोचनाक मर्यादा

ग्रन्थक पहिल संस्करण १९८६क अछि। ताहि कारणेँ जातीय शब्द, सामाजिक अनुक्रम, उत्पत्ति-सम्बन्धी मान्यता आ पारम्परिक पेशाक वर्णनमे मूल कालखण्डक सामान्यीकरण भेटब स्वाभाविक अछि। एहि रूपसभकेँ मौन रूपसँ बदलि देब मूल पाठसँ छेड़छाड़ होयत; मुदा बिना

आलोचनाक नव पीढ़ीक सोझाँ रखबो उचित नहि। सर्वश्रेष्ठ उपाय अछि—मूल शब्द उद्धृत/सन्दर्भित करू, ओकर ऐतिहासिक प्रयुक्ति बताउ, वर्तमान समुदायसँ स्वीकृत नाम अलग संग्रह करू।

किछु उत्पत्ति-विवरण पुराकथा पर आधारित छथि, किछु व्युत्पत्तिक व्याख्या लेखकक मतपर। ओहि मतसभकेँ भाषाविज्ञान अथवा इतिहासक निर्विवाद सिद्धान्त घोषित नहि कएल जा सकैत अछि। एहि समीक्षामे जे विचार ‘लेखक उल्लेख करैत छथि’क रूपेँ प्रस्तुत अछि, से मूल ग्रन्थक अन्तःसाक्ष्य अछि; जे विचार ‘आलोचनात्मक दृष्टिसँ’क रूपेँ अछि से एहि अध्ययनक व्याख्या अछि। ई भेद प्रमाणिकताक शर्त अछि।

६. बाह्य अनुसन्धानक आलोकमे ग्रन्थक मूल्याङ्कन

यूनेस्कोक २००३क अमूर्त सांस्कृतिक धरोहरसम्बन्धी अभिसमय मौखिक परम्परा, प्रदर्शनकला, सामाजिक व्यवहार/अनुष्ठान, प्रकृति-सम्बन्धी ज्ञान आ पारम्परिक शिल्पकेँ परस्पर सम्बन्धित क्षेत्र मानैत अछि। ‘लोकजीवन ओ लोकसाहित्य’क आन्तरिक विषय-विन्यास एहि पाँचमे सँ अनेक क्षेत्र एक्कहि पुस्तकमे समाहित करैत अछि। डोमक बाँस-कर्म आ कुरेड़ीक मधु-संग्रह पारम्परिक कौशल/प्रकृति-ज्ञानक दृष्टान्त बनैत अछि; गहबर-गीत सामाजिक अनुष्ठानक, आ गाथासभ मौखिक अभिव्यक्तिक दृष्टान्त बनैत छथि। ई आधुनिक कसौटीक तुलना अछि; १९८६क लेखकपर २००३क सिद्धान्तकेँ पूर्वप्रभावक रूपमे आरोपित नहि करब चाही।

यूनेस्को मौखिक परम्पराकेँ बदलैत प्रस्तुति, परिवर्तित कथन आ पीढ़ी-सञ्चरणक जीवित प्रक्रिया मानैत अछि। एहि कसौटीसँ ग्रन्थक संरक्षणात्मक उपलब्धि महत्त्वपूर्ण होइतहुँ एतए छपल कथा ककर आवाजमे, कोन प्रसंगमे आ कोन परिवर्तित रूपमे प्रस्तुत भेल—एहि प्रश्नसभक नवीकृत क्षेत्र-अनुसन्धान आवश्यक अछि। जीवित परम्पराकेँ केवल संग्रहालयक स्थिर वस्तु नहि मानि समुदाय द्वारा वर्तमान समयमे पुनःरचना करबाक अवसरक रूपमे पढ़ब चाही।

अमेरिकन फोकलोर सोसाइटीक अनुसन्धान-सम्बन्धी वक्तव्यक अनुसार लोक-समाजक सदस्य मात्र ‘जानकारी देनिहार’ नहि, परम्पराक सक्रिय कलाकार, ज्ञाता आ सह-अर्थनिर्माता छथि। एहि आधारपर ग्रन्थक पाठक यदि डोम, मलाह, मुसहर अथवा अन्य समुदायपर नव लेखन करैत छथि, ताहि लेल हुनकर प्रत्यक्ष परामर्श, सहमति, शब्द-प्रयोगपर सहभागिता आ

पाठक पुनः सत्यापन उपयोगी होयत। ई ग्रन्थक आलोचनात्मक विस्तार अछि, मूल लेखक द्वारा पूर्ण कएल कार्यक दावा नहि।

७. उपलब्धि, सीमा आ समग्र निष्कर्ष

ग्रन्थक प्रमुख उपलब्धि

पहिल उपलब्धि—लेखक लोकसाहित्यकें समाजक परिधिक मनोरञ्जन नहि, सामाजिक अध्ययनक केन्द्र बनबैत छथि। दोसर—समुदाय-विशेषक व्यवसाय, शब्द, उत्पत्ति-सम्बन्धी परम्परा आ देवताक उपासना एक्कहि संकलनमे दैत छथि। तेसर—चौदह लोकगाथाक क्रमवार चर्चा समृद्ध मौखिक कथाभण्डारक परिचय करबैत अछि। चारिम—गहबर-गीत द्वारा शास्त्रीय धार्मिक प्रतीक आ लोकदेवताक संमिश्र सांस्कृतिक स्थल देखबैत छथि। पाँचम—पुस्तकक १९८६ सँ २०१८ धरि प्रकाशन-यात्रा मैथिली लोकसाहित्य अध्ययनक कालगत सन्दर्भ स्वयं उपलब्ध करैत अछि।

मौलिक योगदानक स्तरपर विशेष बात अछि जे पहिल भागक जातीय सामाजिक वर्णन आ दोसर भागक लोकगाथा एक-दोसराक अर्थ पोसैत अछि। उदाहरणार्थ, ‘मलाह’ पढ़बाक बाद ‘दुलरा दयाल’ आ ‘गाड़ो देवी’ अधिक सामाजिक अर्थ ग्रहण करैत अछि; ‘हलुआइ’ पढ़बाक बाद ‘गणिनाथ-गोविन्द’क धार्मिक प्रतिष्ठा अधिक स्पष्ट होइत अछि; ‘कुरेड़ी’ पढ़बाक बाद ‘बेनीराम’क सामाजिक सम्बन्धकें समझब सहज भऽ जाइत अछि। ई आन्तरिक वास्तु-रचना ग्रन्थक वास्तविक शक्ति अछि।

आलोचनात्मक सीमा

ग्रन्थमे प्रत्येक संकलित गीतक प्रदर्शन-परिस्थिति, मूल सूत्रधार, तिथि आ विकल्प-पाठक व्यवस्थित, एकरूप सूची उपलब्ध नहि अछि। जातीय विवरणमे कतहु उत्पत्ति-कथाक सन्दर्भ आ पेशागत स्थिति एकहि प्रवाहमे चलैत अछि; ताहि कारणेँ ऐतिहासिक प्रमाण आ सामाजिक मिथकक बीच सीमानिर्धारण पाठकक जिम्मेदारी बनि जाइत अछि। कतिपय प्रकरणक आकार अत्यन्त असमान अछि—चमारक दू पृष्ठक संक्षिप्त परिचयक तुलना मलाहक सात पृष्ठक विवेचन आ बेनीरामक दीर्घ कथा सँ कएल जा सकैत अछि। ई असमानता विषयक ऐतिहासिक

महत्त्वक निश्चित माप नहि, उपलब्ध सामग्री वा लेखकीय चयनक परिणाम सेहो भऽ सकैत अछि।

कोनो लोकगाथाक मुद्रित रूप समाजक समस्त संस्करणक प्रतिनिधित्व नहि करैत अछि। महिला कलाकारक स्वर, संगीतात्मक प्रस्तुति आ सम्बन्धित समुदायक आजुक अनुभवकें एकत्र करब पुस्तकक आधारपर अगिला अनुसन्धानक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र अछि। मुदा ई अपेक्षा राखैत ग्रन्थक समय, उद्देश्य आ उपलब्ध साधनक सापेक्ष तौलन जरूरी अछि।

निष्कर्ष

‘लोकजीवन ओ लोकसाहित्य’ मैथिली लोकवार्ताक एहन ग्रन्थ अछि जकरा केवल ‘गाथा-संग्रह’ कहब कम पड़त। ई पुस्तक सामाजिक व्यवसाय, लोकविश्वास, नामकरण, लोकदेवता आ गेय आख्यानक अन्तर्सम्बन्धक एकटा उल्लेखनीय दस्तावेज अछि। एकर सर्वोत्तम पाठ ओहि समय सम्भव अछि जखन लोककथा कें लोककथा, पुराकथात्मक दावा कें लोकविश्वास, समाजक विवरण कें काल-विशेषक अवलोकन, आ आलोचनात्मक अनुमान कें अनुमानक रूपें अलग-अलग पहचानल जाय।

पोथी पाठककें ई बुझबैत अछि जे मैथिलीक लोकसाहित्य केवल ‘कहानी’ नहि; ओ श्रमक स्मृति, अन्यायक विरुद्ध सामूहिक कल्पना, सन्तानक कामना, नदी आ वनक व्यवहारिक ज्ञान, स्त्रीक दृढ़ता, जातीय आत्मसम्मान आ देवी-देवताक उपासनाक भाषिक स्वरूप सेहो अछि। वैज्ञानिक अनुसन्धानक दृष्टिसँ ग्रन्थक महत्त्वपूर्ण भूमिका आरम्भिक प्रमाणसंग्रह आ व्याख्याक द्वार खोलब अछि। एहि द्वारसँ आगाँ बढ़बाक लेल मूल पाठक सम्मान, समुदाय-सहभागिता, विस्तृत क्षेत्रकार्य आ स्रोत-आधारित पाठालोचनाक आवश्यकता अछि।

८. मूल विषय-सूचीअनुसार सम्पूर्ण प्रकरणक पृष्ठ-मानचित्र

मूल ग्रन्थक पृ. ३३क ‘क्रम’ आ पुस्तकक अन्तिम मुद्रित पृष्ठक आधारपर ई सूची बनाओल गेल अछि। पृष्ठ-परास अगिला शीर्षकक आरम्भसँ पहिनेक पृष्ठ धरि अछि; ई मूल अध्याय-शीर्षकक वैज्ञानिक क्रमवार संदर्शिका अछि।

मूल प्रकरण / खण्ड

मुद्रित पृष्ठ

भूमिका (प्रथम संस्करण)

मूल प्रकरण / खण्ड	मुद्रित पृष्ठ
लेखकीयः लोकक अर्थ, साहित्य आ वर्गीकरण	११-३२
डोम जातिक सामाजिक स्वरूप	३५-४२
चमार जातिक सामाजिक स्वरूप	४३-४४
धोबी जातिक सामाजिक स्वरूप	४५-४९
हलुआइ जातिक सामाजिक स्वरूप	५०-५२
मलाह जातिक सामाजिक स्वरूप	५३-५९
कुरेड़ी जातिक सामाजिक स्वरूप	६०-६३
श्यामसिंह	६४-६६
लालवन बाबा	६७-६८
गरीबन भुजड़ा	६९-७३
मोतीदाइ	७४-७५
गणिनाथ-गोविन्द	७६-८६
फेकूराम	८७-८८
कारिख	८९-९३
दुलरा दयाल	९४-९६
गाड़ो देवी	९७-१००
जयसिंह	१०१-१०४
अमरसिंह	१०५-१०७
केवल महाराज	१०८-११०
दीना-भद्री	१११-१२०
बेनीराम	१२१-१३३
गहबर गीत	१३४-१४९

संकल्प : विद्यापति-स्मृति-पर्व स्मारिका

डॉ. योगानन्द झाक कृतिक आलोचनात्मक विवेचन

मूल प्रकाशन-परिचय

शीर्षक: संकल्प (अङ्क ५)।

सम्पादक: डा० रामदेवझा; सहायक सम्पादक: डा० योगानन्दझा।

आयोजक/प्रकाशक-सन्दर्भ: संकल्पलोक (सांस्कृतिक एवं सामाजिक चेतना मंच),
लहेरियासराय, दरभंगा।

अवसर: विद्यापति-स्मृति-पर्व-समारोह १९८८; आयोजन तिथि: ४, ५, ६ फरवरी १९८९ (नामपृष्ठक
शब्दानुसार)।

अन्तःसामग्री: सम्पादकीय, शुभकामना-पत्र, अध्यक्षीय/स्वागत भाषण, सचिवक प्रतिवेदन,
शोध-निबन्ध, आलोचना, कविता, गीत, संस्मरण, कथा, आयोजन-विज्ञापन, प्रकाशन-सूची आ
उपसमिति-विवरण।

मूल विषय-सूचीक ५५ प्रविष्टि: पाठ-आधारित विवेचन

नीचाँ प्रत्येक शीर्षकक सङ्गक आरम्भ-पृष्ठ आ ओहि सामग्रीक दस्तावेजी/साहित्यिक सार देल
अछि। मूल विषय-सूचीमे शुभकामना-सन्देश आ कार्यक्रमगत सामग्री अलग-अलग क्रमांकमे
अछि; ओहिँकेँ साहित्यिक शोध-निबन्ध जकाँ नहि गनल गेल अछि।

01. सम्पादकीय

मैथिली भाषाक संवैधानिक मान्यता, बिहारमे द्वितीय राजभाषाक प्रश्न, शिक्षक-प्रशिक्षण,
पाठ्यक्रम, विद्यालय आ राजकीय निर्णायक प्रक्रियापर प्रत्यक्ष टिप्पणी। एहि आरम्भसँ
स्मारिकाक सांस्कृतिक समारोहक चौहद्दी तोड़ि भाषायी अधिकारक सार्वजनिक दस्तावेज
बनबाक दिशा स्पष्ट होइत अछि।

02. शुभकामना सन्देश: केन्द्र आ राज्य स्तर

सरकारी पदाधिकारीक पत्र, तिथि आ कार्यालयक मुद्रित संकेत समारोहक समकालीन सार्वजनिक सम्पर्क देखबैत अछि; एहिसँ कार्यक्रमक समर्थनक उपस्थिति सिद्ध होइत अछि, सरकारी नीतिक क्रियान्वयन नहि।

03. शुभकामना सन्देश: साहित्यिक-सांस्कृतिक प्रतिनिधि

औपचारिक शुभेच्छा आ सहयोगक भाषा राजनीतिक-सांस्कृतिक नेटवर्कक द्योतक अछि। एहि सभ पत्रकें साहित्यिक आलोचनात्मक लेखक समकक्ष नहि, आयोजन-अभिलेखक अंश मानब उचित।

04. शुभकामना सन्देश: रेल-प्रशासन

रेल प्रशासनसँ प्राप्त पत्र समारोहक सामाजिक पहुँचक प्रमाण प्रस्तुत करैत अछि। पत्रक आशय समर्थनक औपचारिक अभिव्यक्ति थिक; आर्थिक अथवा संस्थागत सहायता स्वतः सिद्ध नहि होइत अछि।

05. शुभकामना सन्देश: बिहार विधान परिषद

सांस्कृतिक आयोजन प्रति निर्वाचित संस्थाक प्रतिनिधिक प्रतिक्रिया मैथिली आन्दोलनक सार्वजनिक दृश्यता पर प्रकाश दैत अछि। पत्रमे व्यक्त सदिच्छा आ तथ्यगत उपलब्धिक बीच अन्तर राखब आवश्यक।

06. शुभकामना सन्देश: अन्य संस्थागत प्रतिनिधि

समारोहक सम्बन्ध-सम्पर्कक बहुपक्षीय स्वरूप देखाइत अछि। मूल पत्रक नाम, पदा आ तिथिक सहायता सँ संस्थागत इतिहास तैयार भऽ सकैत अछि; धुँधल अंकक आधार पर नाम पुनर्निर्मित नहि कएल गेल अछि।

07. शुभकामना सन्देश: अन्तिम पत्रसमूह

शुभकामना पत्रक क्रम सजग संस्थागत आयोजनक संकेत अछि। पत्रसभकें कार्यक्रमक घोषित उद्देश्य आ आयोजनक वास्तविक अभिलेखक बीच सेतु मानल गेल अछि।

08. समारोह-सन्दर्भक पत्राचार

स्मारिका मुद्रित करबाक पूर्वक संगठनात्मक प्रयास आ सम्पर्कक श्रृंखला स्पष्ट करैत अछि। किछु मुद्रित नाम अस्पष्ट होयबाक कारण एहि अध्ययनमे पाठक पुष्टि सँ बेगर व्यक्तिगत पहचान नहि देल गेल अछि।

09. शुभकामना

समारोहक निमित्त एकत्र शुभेच्छासभ एतय अपना आपमे सांस्कृतिक साक्ष्य अछि; साहित्यिक गुणवत्ता आ आयोजनक सामाजिक स्वीकृतिक मूल्याङ्कन पृथक् राखल गेल अछि।

10. संस्थाध्यक्षक भाषण

संकल्पलोकक अभिप्राय, विद्यापति-समारोहक औचित्य आ मैथिली-साहित्य-संरक्षणक उद्देश्यपर केन्द्रित। भाषण स्मारिकाक घोषित मिशन बुझबाक मूल स्रोत थिक; प्रचारात्मक वक्तव्यकेँ स्वतंत्र रूपसँ परीक्षित ऐतिहासिक तथ्य नहि मानबाक चाही।

11. स्वागताध्यक्षक भाषण

अतिथि-स्वागतक औपचारिक चौखट भीतर मैथिली भाषाक सामाजिक-प्रासंगिकता आ सम्मेलनक सामूहिक उद्देश्य रखल गेल अछि। साहित्यिक जनसमूह आ स्थानीय सांस्कृतिक संगठनक सम्बन्ध एहि लेखनमे देखाइत अछि।

12. सचिवक प्रतिवेदन

प्रशासनिक, आर्थिक आ आयोजनसम्बन्धी संकेत देनिहार महत्त्वपूर्ण समकालीन दस्तावेज। प्रतिवेदनक दावाक जाँच बजटक मूल खाता वा अन्य अभिलेखसँ करब उपयुक्त, कारण ई आयोजक पक्षक विवरण थिक।

13. कविकोकिल

विद्यापति-स्मृतिक आरम्भिक साहित्यिक स्वर। शीर्षक आ पाठमे कविक कर्तव्य, भाषा-प्रेम आ सार्वजनिक अभिव्यक्तिक प्रसंग देखाइत अछि; समारोहक आग्रह कवितात्मक भाषामे आएल अछि।

14. जागृति

मिथिला आ मैथिली समाजक जागरणक आवाहन मुखर अछि। पुनरावृत्ति आ उद्बोधनात्मक लय सार्वजनिक पाठ लेल उपयुक्त, तथापि एहि घोषणात्मक स्वरक संग सामाजिक जटिलताक विस्तृत चित्रण कम भेटैत अछि।

15. महाकवि विद्यापतिक मूर्ति कोन प्रकारक हो?

बाबू भोलालालदास कृत निबन्ध मूर्ति-रूपक प्रश्नकें सांस्कृतिक स्मृति, इतिहासक प्रमाण आ जातीय कल्पनाक सवाल बनबैत अछि। २४ दिसम्बर १९३७ कें मिथिला मिहिरमे मुद्रित पूर्व निबन्धक संकेत आरम्भमे देल अछि। लेखक प्रतिमाक बाह्य रूपसँ अधिक ऐतिहासिक अस्मिताक सन्दर्भ उठबैत छथि।

16. युगपुरुष नेहरू

नेहरूक राजनीतिक व्यक्तित्व, आधुनिक भारतक परिवर्तन आ सार्वजनिक स्मृतिक साहित्यिक प्रतिपादन। ई रचना विद्यापति-विषयक संकीर्ण सीमासँ बाहर राष्ट्रीय विचारक प्रसंग आनैत अछि।

17. कहिया धरि? कहिया धरि

प्रश्नवाचक दोहराव प्रतीक्षा, असन्तोष अथवा परिवर्तनक आकांक्षाकें लय दैत अछि। प्रश्न-रचना एहि कविताक प्रमुख अलङ्कार बनैत अछि; अर्थ-पाठमे संदर्भक निर्णायकता बनल रहैत अछि।

18. अहाँकें स्वतन्त्र लिखय पड़त

कवि आरसीप्रसादसिंहक काव्यात्मक आत्मनिर्णायक प्रखर स्वर। कविता लिखबाक सामाजिक प्रयोजन, अभिव्यक्ति-स्वातन्त्र्य, लेखकीय विवेक आ पाठकक जिम्मेदारी पर बारम्बार प्रश्न उठबैत अछि। एहि रचनाकें संस्थागत आ भाषायी विमर्शक पृष्ठभूमिमे पढ़ला पर आलोचनात्मक प्रतिरोधक मूल्य बढ़ैत अछि।

19. एक गजल / गमे

गजल-रूपक समावेश सँ स्मारिका पद्य-परम्परा आ नूतन अभिव्यक्तिक संयोग प्रस्तुत करैत अछि। संक्षिप्त पंक्ति-विन्यास आ भाव-सघनता एहि विधाक विशिष्टता थिक; शीर्षकक एक अंशक मुद्रण अस्पष्ट अछि।

20. प्राचीन ओ अर्वाचीन

प्राचीन परम्परा आ समकालीन साहित्यिक चेतनाक सम्बन्ध पर विचार। एकरा अतीत-पूजाक सरल पाठ नहि, परम्परा-विचारक बदलैत मानदण्डक प्रश्नक रूपमे पढ़ब उपयोगी अछि।

21. शंका समाधान

प्रश्न-उत्तर अथवा संशय-निरसनक रूप प्रयोग कएल गेल अछि। गद्यक मध्य छोट रचनाक उपस्थिति अङ्कक पठनलयमे विरामक काज करैत अछि।

22. प्रो० जगन्नाथप्रसादमिश्र: एक संस्मरण

व्यक्तिगत स्मृति मार्फत मैथिली बौद्धिक समाजक एक व्यक्तित्वक पुनर्स्मरण। आत्मीय संस्मरणक साक्ष्य-मूल्य महत्वपूर्ण होइतहुँ घटनाक प्रत्येक तिथि आ प्रत्यक्ष कथनक स्वतंत्र जाँच आवश्यक होइत अछि।

23. एक कविता: एक गीत

एके पृष्ठ पर कविता आ गीत राखि भिन्न लयात्मक स्वरक सह-अस्तित्व देखाओल गेल अछि। एहन प्रस्तुति समारोहक पाठ-संस्कृति, गेयता आ मुद्रित काव्यक अन्तःसम्बन्ध पर ध्यान खिचैत अछि।

24. ओ दिन, ओ लोक

‘दिन’ आ ‘लोक’क जोड़सँ बीतल समयक जीवन-परिवेशक स्मृति विकसित होइत अछि। आत्मस्मृतिक माध्यमे सामाजिक इतिहासक अंश सुरक्षित होइत अछि; निजी अनुभवकें समस्त समाजक प्रतिनिधि चित्र नहि मानब उचित।

25. स्वागत हे नव वर्ष

नव वर्षक प्रति सम्बोधनमे आशा, परिवर्तन आ सामूहिक आकांक्षाक रङ्ग अछि। स्मारिकामे विषयरूपेँ विद्यमान समकालीन समय-बोधक छोट प्रमाण थिक।

26. मिथिलाक स्थान-नाम: एक सर्वेक्षण

डा० श्रीविलोकनाथझाक लेखमे स्थाननामकें देवता, पुराण, राजा-महाराजा, लोक-नाम, व्यक्ति, वनस्पति आ स्थानीय उच्चारण सँ जोड़ि वर्गीकृत करबाक प्रयास अछि। उदाहरणक सूची

महत्त्वपूर्ण आरम्भिक सामग्री दैत अछि; प्रस्तावित व्युत्पत्तिक प्रमाणस्तर नाम-नाम पर समान नहि मानल जा सकैत अछि।

27. मैथिलीक व्यथा

भाषाक पीड़ाकें व्यक्तित्व दऽ जनचेतनाक स्वर तैयार करैत अछि। ई रचना सम्पादकीयक नीति-विमर्शक भावनात्मक समकक्ष-जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि।

28. पर हस्त गता गता

शीर्षकमे संस्कृत-उक्ति समान सूत्रक सहारे आश्रितता, स्वाधीनता अथवा हस्तान्तरणक प्रश्न आओत अछि। निबन्धक व्यङ्ग्य आ तर्कात्मक चाल पाठकसँ सामाजिक प्रतिमान पर विचार माँगैत अछि।

29. संकल्प

पत्रिकाक नामक समान शीर्षक सँ संस्था-स्वर आ काव्य-स्वरक सीधा सम्बन्ध बनैत अछि। संकल्पक भावी क्रियात्मकता आ आत्मप्रतिबद्धता एतय केन्द्रमे अछि।

30. अरजेन्ट चिट्ठी

‘चिट्ठी’क माध्यमे संवादक तत्परता आ बोलचालक विन्यास काव्य-भाषा/लघु रचनामे प्रवेश करैत अछि। शीर्षकक अंग्रेजीजान्य ‘अरजेन्ट’ उपस्थिति भाषिक सम्पर्कक रोचक साक्ष्य अछि।

31. नदी देवी कमला

कमला नदीक भौगोलिक अस्तित्व, देवीस्वरूपक लोकमान्यता, मिथिलाक नदी-समाज आ कथासम्पदाकें जोड़ि देखैत अछि। आलेखमे परम्परागत विश्वास आ भौगोलिक तथ्य दुनू उपस्थित छथि; शोधगत निष्कर्ष लेल दुनू प्रकारक साक्ष्य पृथक् राखब आवश्यक।

32. अतीतक गीत

विगतक स्मृति आ वर्तमानक दूरीक काव्यात्मक अर्थबोध। गीतक संक्षिप्तता अङ्कक गद्यप्रधान क्रममे संवेदनात्मक संतुलन दैत अछि।

33. निर्वासिता

‘निर्वासिता’क शीर्षक विस्थापन, आत्मीय भूगोल आ स्वकीयताक प्रश्न उठबैत अछि। पाठक एहि रचनाकें मैथिली भाषायी-स्थानिक अस्मिताक व्यापक चर्चासँ सावधानीपूर्वक जोड़ि सकैत छथि।

34. खाँक

आँचलिक शब्दावली सहित कथात्मक वर्णनक उदाहरण; मुद्रणमे संवाद आ कथावाचनक रूप दिखाइत अछि। लोकभाषाक ठोस प्रयोग एहि अङ्कक भाषिक विविधताक अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

35. जायब बड्ड

मुख्य गद्यक बाद अङ्कित छोट पद्यांश। पंक्तिक संरचना, बोलीक अभिव्यक्ति आ विदाई/गमनक भाव काव्यांशक ग्रहणमे भूमिका निभबैत अछि।

36. जानि ने की छै भावी

भविष्यक अनिश्चयक सहज मैथिली अभिव्यक्ति शीर्षकमे समाहित अछि। लोकधर्मी वाक्यविन्यास सँ अस्तित्वगत आशङ्का आ आशाक द्वन्द्व साकार होइत अछि।

37. हम मैथिली कोना सिखलहुँ

व्यक्तिगत भाषा-अर्जनक अनुभवक माध्यमे मातृभाषा, शिक्षा, सामाजिक वातावरण आ भाषिक अभ्यासक सम्बन्ध उघाड़ल गेल अछि। शीर्षकक ‘कोना’ व्यक्तिगत अनुभवक प्रामाणिकता पर बल दैत अछि; ई अध्ययन भाषायी शिक्षण-इतिहास लेल उपयोगी।

38. सपना

स्वप्नक बिम्ब आ आकाङ्क्षाक उपयोग सँ भावी संसारक कल्पना। पत्रिकामे बहुत रचनाक सार्वजनिक स्वरक विरुद्ध ई छोट निजी संवेदना प्रस्तुत करैत अछि।

39. विद्यापति पर्वक प्रासंगिकता

डा० श्रीभीमनाथझा द्वारा प्रस्तुत लेखक आरम्भमे २७ फरवरी १९८७ केँ संकल्पलोक द्वारा आयोजित विचारगोष्ठीक सन्दर्भ देल अछि। लेखक विद्यापति-जयन्ती आ स्मृति-समारोहक

सामाजिक उपयोगिता तथा नाम-स्मरणकै रचनात्मक सांस्कृतिक कार्यमे बदलबाक आवश्यकता उठबैत छथि।

40. ध्वनिसाम्यक कतिपय शब्द

डा० शशिनाथझाक लेख ध्वनिसाम्य, शब्द-सम्बन्ध आ प्रचलित मैथिली प्रयोगक अर्थभेद पर दृष्टि दैत अछि। आरम्भमे अर्थसम्बन्धी उदाहरण आ ध्वनिसाम्यक क्रमबद्ध विवेचन उपलब्ध अछि; समान ध्वनि मात्रासँ व्युत्पत्तिक सिद्धि नहि होइत।

41. हमर दुःख नहि ओर

अन्तहीन दुःखक शीर्षक सामाजिक अथवा मानसिक पीड़ाक अनुभवक विस्तारक संकेत दैत अछि। बहुपृष्ठीय गद्यरचना कथन, तर्क आ अनुभवक प्रगतिक कारण अलग धैर्यसँ पढ़बाक अपेक्षा करैत अछि।

42. एक अनेक — दुः अनुभूति

कइएक खण्डमे रचित काव्य-स्वरमे निज अनुभवक अनेक रूप उजागर होइत अछि। खण्डक क्रम वियोग, प्रश्न आ अनुभूतिक बारीक रूपान्तर देखबाक अवसर दैत अछि।

43. परशुराम-विषयक पाख्यानोटक

राजा, परशुराम आ अन्य पात्रक संवाद, संघर्ष तथा धार्मिक-राजनीतिक सत्ता-सन्दर्भक विवेचन आ उद्धृत पंक्तिसभ एहि खण्डमे अछि। सन्दर्भक आलोचनात्मक पाठ करैत काल पुराकथाक पुनर्रचना आ ऐतिहासिक घटनाक प्रमाणक बीच स्पष्ट अन्तर जरूरी अछि।

44. राधाविरहमे शाक्त तत्त्व

डा० योगानन्दझाक अध्ययन ‘राधाविरह’क राधा-कृष्ण लीला पृष्ठभूमि पर शाक्त भावनाक सम्भावना विचारैत अछि। लेखक शाक्त उपासना, भारतीय भावपरम्परा आ ग्रन्थगत उदाहरणक आधार पर तुलना करैत छथि; तत्त्व-साम्य लेखकत्व अथवा ऐतिहासिक प्रभावक निर्णायक प्रमाण नहि।

45. लोकगाथा सलेहेसक भौगोलिक परिवेश

डा० मोतीलालयादव लोकगाथामे उल्लिखित स्थान, नद, जनपद आ सीमापरक निर्देश जुटबैत छथि। महिसौथा, ननमडुरी आदि प्रसंगक माध्यमे गाथाक भूगोलक रेखांकनक प्रयास; मौखिक परम्पराक स्थल-नामक सटीक ऐतिहासिक मानचित्र बनबैत काल पाठभेद विचारणीय।

46. अशर्फीक लुटि आ कोहलापर छाप

कुमार पवनक कथा/व्यङ्ग्यमे अशर्फी आ कोहलाक संकेत मार्फत गाँव, प्रतिष्ठा, सत्ता-समीकरण आ लोककथ्यक वातावरण निर्मित अछि। आरम्भमे लोकभाषायी बुनावट तथा पात्र-संवाद पर जोर अछि; एकरा ग्रामीण सामाजिक सम्बन्धक साहित्यिक पाठक रूपमे पढ़ब उचित।

47. मैथिली नव कविताक स्वर आख्या

नव कविताक बदलैत स्वर आ प्रयोगशीलतापर केन्द्रित विमर्श। परम्परागत गीतात्मकताक बादक आधुनिक संवेदनाशीलता बुझबाक लेल लेख अपन अङ्कक एक महत्त्वपूर्ण समकालीन साक्ष्य बनैत अछि।

48. आह्वान गीत

सामूहिकता आ कर्मप्रेरणाक आवाहनक लय। भाषिक अधिकारपर जोर दैत सम्पादकीयक सन्देशकें उत्साहवर्धक काव्यभाषामे अग्रसर करैत अछि।

49. आधुनिक मैथिली कविताक स्थिति

डा० देवेन्द्रझाक लेखमे आधुनिक मैथिली काव्यक कालखण्ड, रचनाकार, प्रकाशित कविताक संख्यात्मक संकेत तथा १९००-पूर्व/पश्चात्क पृष्ठभूमिपर विचार अछि। संख्यात्मक दावाक सन्दर्भ ग्रन्थ/सङ्कलन सहित पुनर्परीक्षण अपेक्षित; तथापि ई अङ्कक आत्म-इतिहासलेखनक ठोस उपक्रम।

50. पुरस्कार

साहित्यिक पुरस्कारक मानदण्ड, सामाजिक भूमिका आ मूल्यांकन-प्रक्रियापर प्रश्नक अवसर। पुरस्कारकें कृतिकारक व्यापक प्रभावक एक मात्र माप नहि मानबाक दृष्टि एतय आलोचनात्मक रूपसँ सम्भव।

51. कबीश्वरक पोथा ओ अप्रकाशित पद्य

कबीश्वरक पोथामे उपलब्ध अप्रकाशित पदक परिचय मार्फत अप्रसारित साहित्यिक स्रोतक ओर ध्यान आकर्षित। पाण्डुलिपिक मूल, पाठभेद, लिपि आ तिथि निर्दिष्ट कएला बिनु प्राचीनताक अन्तिम दावा टारब चाही।

52. मध्यकालीन दुइ कवि: किछु अप्रकाशित रचना

दुइ मध्यकालीन कविक अप्रकाशित रचनाक परिचय/प्रस्तुति अङ्कक अन्तिम गम्भीर शोध-योगदानमे सँ एक। पाठक समीक्षात्मक संस्करण लेल हस्तलिखित आधार, संपादकीय हस्तक्षेप आ पाठान्तरक आवश्यकता सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण।

53. स्वागत करेज

स्मारिकाक अन्तिम गीतकें स्वागतक विषयगत लयक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। समारोही आरम्भक स्वर पुनः अन्तिम साहित्यिक खण्डमे लौटैत अछि।

54. संकल्पलोकक प्रकाशन

संकल्पलोकक अन्य प्रकाशित सामग्रीक सूची संस्थाक संपादकीय गतिविधि आ साहित्यिक प्रसारक आन्तरिक प्रमाण अछि। सूची अभिलेखीय शोध लेल दिशा दैत अछि, मुदा उपलब्धता अथवा समस्त शीर्षकक वास्तविक प्रकाशन-प्रति एकल सूची सँ पुष्ट नहि।

55. आयोजक उपसमिति

समारोह सँ सम्बन्धित सदस्यता आ दायित्व-विभाजनक अभिलेख। व्यक्ति-नाम आ पदक धुँधल मुद्रणक कारण गलत पुनर्लेखनसँ बचैत शोधार्थी कें मूल पृष्ठ देखबाक सिफारिश।

विषयवार विस्तृत अनुसन्धान आ समालोचना

१. मूल ग्रन्थक स्वरूप आ काल-साक्ष्य

‘संकल्प’क प्रस्तुत प्रति बहुलेखकीय स्मारिका अछि। आन्तरिक नामपृष्ठपर ‘संकल्प’, ‘अङ्क —५’, सम्पादक डा॰ रामदेवझा, सहायक सम्पादक डा॰ योगानन्दझा आ ‘संकल्पलोक’ (सांस्कृतिक एवं सामाजिक चेतना मंच), लहेरियासराय (दरभंगा) अंकित अछि। विद्यापति-स्मृति-पर्व-समारोह १९८८ क रूपमे उल्लेख तथा आयोजन तिथि ४, ५ आ ६ फरवरी १९८९ दिसा गेल अछि। समारोहवर्ष आ आयोजन-वर्षक भिन्न लिखावटकें जँ स्वतन्त्र प्रमाण बिनु एके वर्ष

मानि लेल जाय तँ अभिलेखीय अर्थ बिगड़ि सकैत अछि। एहि अध्ययनमे दुनू मुद्रित सूचनाकें यथावत् भिन्न-भिन्न दर्ज कएल गेल अछि। []

ईकुल १६४ पृष्ठक अछि। मुद्रित पृष्ठ-संख्या सँक्रमांकक सीधा समानता नहि अछि: मुखपृष्ठ, पत्राचार, विज्ञापन आ स्वागतीय सामग्रीक कारण बीच-बीचमे अन्तर पड़ैत अछि। विषय-सूचीमे ५५ क्रमबद्ध प्रविष्टि अछि, जिनकामे समान वजनक साहित्यिक रचना नहि, बल्कि सन्देश, समाचार-सदृश संस्थागत सूचना आ सूची सेहो अछि। []

समारोह-स्मारिका होयबाक अर्थ ई नहि जे सभ लिखल कथन इतिहासक निर्णायक प्रमाण अछि। भाषणक उद्धोषणा, लेखकक मत, लोककथाक विवरण, पाण्डुलिपिक अनुमान, स्थाननामक व्युत्पत्ति आ प्रशासनिक पत्र एक-दोसरासँ पृथक् साक्ष्य-प्रकार थिक। पाठमे ई अन्तर कायम रखल गेल अछि, कारण सांस्कृतिक निष्ठा आ आलोचनात्मक सत्यापनकें एक-दोसराक विकल्प मानब उचित नहि।

२. सम्पादकीय: भाषा-अधिकारक कार्यक्रम

सम्पादकीय मैथिलीक दिल्ली आ बिहारक सरकारी स्थितिक चर्चा सँ आरम्भ होइत अछि। संसद आ राज्यक राजनीतिक प्रक्रियामे मैथिलीक माँग, संवैधानिक अनुसूची, बिहारमे द्वितीय राजभाषाक प्रश्न आ सरकारी निर्णयक अनुपालनकें सम्पादकीय एके अधिकार-सङ्घर्षक अलग-अलग स्तर मानैत अछि। लिखित घोषणा आ वास्तविक सेवा-व्यवस्थाक बीचक अन्तर एतय बारम्बार उभरैत अछि। एकर कारण स्मारिका केवल सांस्कृतिक उत्सव-पत्रक रूपमे नहि, नीति-आलोचनाक स्रोतक रूपमे सेहो महत्त्व रखैत अछि। []

सम्पादकीय विद्यालय-शिक्षा, विश्वविद्यालय, शिक्षक-प्रशिक्षण, विषय-रूपें मैथिलीक स्वीकृति तथा शिक्षण-सामग्रीक व्यावहारिक परिस्थिति पर विवरण दैत अछि। एहि ठाम लेखक मैथिलीकें ‘आदर’ देबाक औपचारिक भाषा सँ आगाँ बढि अधिकारक क्रियात्मक उपादान माँगैत छथि। प्रश्न एहि बातक अछि जे मान्यता भेटला पर शिक्षक, कक्षा, पाठ्यपुस्तक, प्रशिक्षण आ नियुक्तिक व्यवस्था बनल वा नहि। इहो स्पष्ट करब चाही जे सम्पादकीयक आरोप तत्कालीन आयोजन-पक्षक कथन अछि; ओकर स्वतन्त्र शासकीय अभिलेख-पुष्टि प्रस्तुत प्रति भीतर नहि भेटैत अछि।

आलोचनात्मक दृष्टिसँ सम्पादकीयक शक्तिशाली पक्ष ओकर बहु-स्तरीय भाषानीति-दृष्टि अछि। कमजोर पक्ष ई जे अनेक निर्णय आ संस्थाक सम्बन्धमे विस्तृत सरकारी अधिसूचना-संख्या नहि देल गेल अछि। एहि कारण ई स्रोत नीति-अनुसन्धानक उत्कृष्ट प्रश्नावली तँ उपलब्ध करैत अछि, मुदा सभ निष्कर्षक पूर्ण अभिलेखी प्रमाण नहि।

३. विद्यापति-स्मृति: प्रतीक, समारोह आ इतिहासबोध

बाबू भोलालालदासक ‘महाकवि विद्यापतिक मूर्ति कोन प्रकारक हो?’ लेख पृष्ठ २५ सँ आरम्भ अछि। आरम्भमे लेखक एहि विषयपर अपन पुरान निबन्ध ‘मिथिला मिहिर’मे २४ दिसम्बर १९३७ कें छपबाक उल्लेख करैत छथि। लेख प्रतिमाक दृश्य रूप तय करबाक प्रश्नक आगाँ बढैत ऐतिहासिक स्मृति, प्रमाण, मैथिली-समाजक सामूहिक अधिकार आ कवीक स्वरूपनिर्माणक समस्या उठा दैत अछि। प्रतिमा बले अभिलेखक ठाम नहि लऽ सकैत; शिल्पात्मक कल्पना आ प्रमाणित ऐतिहासिक छविक भेद एतय मूल आलोचनात्मक बिन्दु अछि। []

‘विद्यापति पर्वक प्रासंगिकता’ अपन आरम्भमे २७ फरवरी १९८७ कें आयोजित संकल्पलोकक विचारगोष्ठी सँ सम्बन्ध जोड़ैत अछि। लेख विद्यापति-जयन्तीक समारोही प्रचलन, साहित्यप्रेम, मैथिली-चेतना, भाषिक गौरव आ समाजपर पड़ैत प्रभावक परीक्षण करैत अछि। केवल नाम-सम्भ्रम वा उत्सवात्मक दोहरावक बदला रचनाकें पढ़ब, आलोचना करब, आयोजन सँ संस्थागत लाभ उत्पन्न करब—एहि प्रश्नसभक सन्दर्भमे लेखकें पढ़नाइ फलदायी अछि।

दुनू लेखक बीच एकर भेद उल्लेखनीय अछि: पहिल प्रतिमामे साहित्यकारकें देखाबयवला ‘रूप’क प्रश्न सँ शुरू होइत अछि; दोसर प्रतिवर्ष स्मरण करबाक ‘उद्देश्य’क प्रश्न उठबैत अछि। रूप आ उद्देश्यक बीच साहित्यक प्रामाणिक पाठ स्थापित करबाक प्रश्न अनिवार्य भऽ जाइत अछि। एहि दृष्टिसँ स्मारिका अपन शीर्षक ‘संकल्प’क अर्थ मूर्ति, समारोह आ रचनात्मक कर्मक त्रिभुजमे उद्घाटित करैत अछि।

४. मैथिली भाषा: शब्दार्थ, ध्वनि आ स्थाननाम

डा० श्रीविलोकनाथझाक ‘मिथिलाक स्थान-नाम: एक सर्वेक्षण’ स्थाननामक सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययनक सम्भावना प्रस्तुत करैत अछि। पृष्ठ ५५ पर देवता, पुराण, राजपरम्परा,

विभिन्न जातीय-सामाजिक नाम, लोकबोल आ ध्वन्यात्मक परिवर्तनक आधार पर ग्रामनामक उदाहरण प्रस्तुत होइत अछि। एकरा व्यवस्थित भूगोलक सूचीक रूपमे नहि, वर्गीकरणक प्रस्तावक रूपमे पढ़बाक चाही। नामक अर्थ लोकमान्यता, शब्दसाम्य आ ऐतिहासिक अभिलेख—तीन अलग स्रोतसँ सिद्ध होइत अछि; लेख जिज्ञासा जगबैत अछि, मुदा प्रत्येक उदाहरणक पूर्ण व्युत्पत्ति स्वतः सिद्ध नहि करैत अछि। []

‘ध्वनिसाम्यक कतिपय शब्द’ शब्दक समान ध्वनि आ पृथक् अर्थक अन्तरक अन्वेषण करैत अछि। आलेखक आरम्भमे एकर स्थान साहित्यिक संस्कृतिक पृष्ठभूमिमे राखल अछि आ विभिन्न शब्दयुग्मक अर्थभेद देखाओल गेल अछि। एहि लेखक योगदान अर्थक सूक्ष्म भिन्नता दिस पाठकक ध्यान अनबाक अछि; सीमाबोध ई जे ध्वनि समान होयब मात्रै ऐतिहासिक व्युत्पत्तिक प्रमाण नहि।

‘हम मैथिली कोना सिखलहुँ’ भाषा-अर्जनक व्यक्तिगत लेखनक कारण एहि विश्लेषणमे विशिष्ट स्थान रखैत अछि। भाषाक नीतिगत अधिकार (सम्पादकीय), स्थानीय नाम-परम्परा (स्थाननाम), शब्द-भेद (ध्वनिसाम्य) आ व्यक्तिक अपन भाषिक व्यवहार—ई चारि स्तर एकत्र पढ़ला पर मैथिली आन्दोलनक भाषावैज्ञानिक आ सामाजिक दुनू रूप खुलैत अछि।

५. मिथिलाक नदी, लोकदेवता आ लोकगाथाक भूगोल

‘नदी देवी कमला’ कमलाक एकसंग नदी आ देवी होयबाक परम्परागत अर्थ खुलबैत अछि। नदीक प्राकृतिक बाढ़, तट, परिवेश, जनश्रुति आ पूजा-मान्यता जकाँ पक्ष एके लोक-संस्कृति भीतर सम्मिलित अछि। ऐतिहासिक अध्ययनक दृष्टिसँ एहिमे भौगोलिक पहिचान आ धार्मिक विश्वासकें समभावे परस्पर सम्बद्ध, मुदा साक्ष्य-रूपेँ पृथक् माननाइ जरूरी। पाठमे वर्णित जनश्रुतिक ‘लोकमान्यता’क रूपमे मूल्य अधिक अछि, भूविज्ञानक प्रमाणीकरणक रूपमे नहि।

डा० मोतीलालयादवक ‘लोकगाथा सलेहेसक भौगोलिक परिवेश’ गाथामे आएल स्थान, जनपद, नदी आ सीमाक संकेत व्यवस्थित करबाक प्रयास करैत अछि। पृष्ठ १२० पर गाथा पूर्वी-उत्तर भारतीय भूभागक बहुत स्थाननाम प्रस्तुत करैत अछि आ महिसौथा आदि स्थल-प्रसंगक चर्चा शुरू करैत अछि। लोकगाथाक कथा-भूगोल स्थिर प्रशासनिक नक्सा नहि: पीढ़ी-दर-पीढ़ी गायनमे स्थलनाम बदलि सकैत अछि, एहि कारण पाठभेद, गायन-क्षेत्र आ क्षेत्रीय स्मृतिक तुलनात्मक सर्वेक्षण आवश्यक।

दुनू लेख मिलि मिथिलाक 'लोक-स्थान'क बहुआयामी प्रतिमा गढ़ैत अछि। कमला नदी प्रवाह आ श्रद्धाक केन्द्र अछि; सलेहेसक गाथा गाम-सीमा-यात्राक सामाजिक मानचित्र। अतः लोकसाहित्यक ऐतिहासिक उपयोग लेल क्षेत्रीय मानचित्र, ऐतिहासिक गजेटियर, ग्रामनाम-परम्परा आ मौखिक संस्करणकेँ परस्पर जाँचल जाय, एहि अङ्कसँ एहन शोध-कार्यक्रमक प्रेरणा भेटैत अछि।

६. मध्यकालीन काव्य, शाक्त चिन्तन आ पाठसम्पादन

डा० योगानन्दझाक 'राधाविरहमे शाक्त तत्त्व' पृष्ठ १११ सँ आरम्भ अछि। लेख 'राधाविरह'क राधा-कृष्ण लीला-अनुभवक मध्य शाक्त भावनाक चिन्ह खोजबाक प्रयास थिक। पृष्ठ १११ पर लेखक भारतीय उपासनात्मक परम्परा, मातृरूप, शक्ति, वैदिक आ तान्त्रिक उल्लेख तथा काव्य-पाठक उदाहरण संग विमर्श आरम्भ करैत छथि। एहिमे शाक्त तत्त्वक व्याख्या साहित्यिक समानता आ धार्मिक परम्पराक पारस्परिक सम्पर्कक रूपमे बुझबाक सम्भावना अछि। []

ई पाठ आलोचनाक दृष्टिसँ फलदायी तखन बनैत अछि जखन 'राधाविरह'क प्रमाणित संस्करण, उद्धृत श्लोक वा पदक मूल सन्दर्भ, रचयिताक मान्य पाठ आ पाठभेद अलग-अलग जाँचल जाय। काव्यमे देवी-सदृश गुणक उपस्थिति साक्षात् शाक्त तान्त्रिक अनुष्ठानक पुष्टि नहि करैत; ओ पाठ-व्याख्याक सम्भावित स्तर थिक। मूल लेखक तर्क-शृङ्खला केँ एहि अङ्कक एक प्रमुख अनुसन्धानात्मक योगदान कहि सकैत छी।

'कबीश्वरक पोथा ओ अप्रकाशित पद्य' तथा 'मध्यकालीन दुइ कवि: किछु अप्रकाशित रचना' शोधक दोसर दिशा खोलैत अछि—अवहेलित अथवा अल्पप्रसारित पाठक संरक्षण। एहि रचनासभक केवल प्रकाशित होएब सँ आलोचनात्मक सम्पादनक प्रश्न समाप्त नहि होइत; पाण्डुलिपि स्थल, प्रति-संख्या, पृष्ठावस्था, लेखन-वर्ष, पाठान्तर आ सम्पादकीय निर्णय प्रकाशित भेने आधुनिक पाठालोचन अधिक मजबूत होयत।

७. मैथिली कविता: परम्परा, आन्दोलन आ आधुनिक संवेदना

अङ्कमे 'जागृति', 'कहिया धरि? कहिया धरि', 'अहाँकेँ स्वतन्त्र लिखय पड़त', 'मैथिलीक व्यथा', 'संकल्प', 'अतीतक गीत', 'निर्वासिता', 'जानि ने की छै भावी', 'सपना', 'आह्वान गीत' आ अनेक गीतात्मक लेखन कविता-विधाक विविधता देखबैत अछि। एक ओर सामूहिक उद्बोधन

अछि; दोसर ओर स्मृति, अनिश्चय, एकाकी अनुभव आ वैयक्तिक स्वतंत्रताक जटिल स्वर। एहि विविधताकें मात्र ‘भाषा-भक्ति’क एके खाँचा भीतर रखनाइ कवितासभक साहित्यिक भिन्नता नष्ट करैत।

‘अहाँकें स्वतन्त्र लिखय पड़त’ विशेषरूपेँ विचारोत्तेजक अछि। कविता लेखकीय विवेक, मुक्त विषय-चयन आ संस्थागत/अनुष्ठानिक पाखण्डक सोझाँ अभिव्यक्ति-स्वातन्त्र्यक प्रश्न रखैत अछि। ‘हम स्वतंत्र नहि लिखब’क पुनरावृत्तिमे वाङ्मयिक व्यङ्ग्यक तीक्ष्णता अछि—कवि जकर विरोधी उत्तर देबाक शैली चुनैत छथि, से स्वयं पाठकसँ आलोचनात्मक निर्णय माँगैत अछि। ई स्मारिकाक अनुष्ठानिक वातावरणमे आलोचनात्मक असहमति लेल स्थान बनबैत अछि।

‘आधुनिक मैथिली कविताक स्थिति’ इतिहासलेखनक आरो व्यापक प्रयास थिक। १९००क आसपाससँ आधुनिक कविताक क्रम, पत्रिका आ कविसङ्ख्या सम्बन्धी संकेत देल गेल अछि। लेखकें उपयोगी प्रारम्भिक सर्वेक्षण मानल जाय; इहाँ संख्यात्मक विवरणक स्रोत आ नमूना-संग्रह अतिरिक्त जाँचक योग्य अछि। आधुनिकता समझबाक लेल काव्यभाषा, छन्द, पाठक, प्रकाशन-व्यवस्था आ राजनीतिक रूपान्तरणकें एक संग बुझनाइ उचित।

८. निबन्ध, संस्मरण, कथा आ नाटकक महत्त्व

‘प्रो० जगन्नाथप्रसादमिश्र: एक संस्मरण’ लेखक-व्यक्तित्वक स्मृति-संरक्षण करैत अछि। स्मरण-साहित्यक साक्ष्य आत्मीयता आ प्रत्यक्ष देखल अनुभवक कारण अमूल्य होइत अछि; मुदा समयक दूरी, व्यक्तिनिष्ठ चयन आ श्रद्धाक प्रवृत्ति पर आलोचनात्मक दृष्टि आवश्यक। ‘ओ दिन, ओ लोक’ एहि निजी स्मृतिक सामूहिक आयाम खोलैत अछि।

‘खाँक’ आ कुमार पवनक ‘अशर्फीक लुटि आ कोहलापर छाप’ जकाँ गद्य-रचनासभ बोलचालक मैथिली, घरेलू-सामाजिक व्यवहार आ कथोपकथनक माध्यमे अलग साहित्यिक संसार निर्मित करैत अछि। एतय प्रयोग कएल ग्रामीण बोलिक मूल्य एकर ‘मानक’ सँ विचलनमे नहि, ओहि सामाजिक जगतकें सुनबाक क्षमतामे अछि। भाषा-संपादनक नामपर लोक-बोलीक अनावश्यक समानीकरण जँ कएल जाय तँ रचनाक चरित्र बदलि जाइत।

परशुरामक प्रसंगमे आधारित नाट्य-विषयक विवेचन पुराणक कथानककेँ पात्रक नैतिक निर्णय आ सत्ता-संघर्षक मंचीय संरचनामे देखैत अछि। एतय मिथकीय पात्रकेँ आधुनिक नैतिक प्रश्नमे रखबाक साहित्यिक प्रक्रिया देखबाक अछि, नाटकक कथाकेँ इतिहासक सीधा वृत्तान्त मानबाक नहि।

९. संस्था, आयोजन आ सार्वजनिक मुद्रण-संस्कृति

पहिल १६ पृष्ठमे मुखपृष्ठ, सम्पादक-मण्डल, शुभकामना-पत्र, स्वागत-सन्देश आ विषय-सूची अछि। बादमे मुख्य रचनासभक बीच-बीचमे महाविद्यालय आ स्थानीय संस्थाक अभिनन्दन-विज्ञापन छपल अछि (उदाहरणार्थ)। एहि सभकेँ ‘अनावश्यक पृष्ठ’ कहिकेँ हटा देब ऐतिहासिक अध्ययनक दृष्टिसँ त्रुटिपूर्ण होयत।

विज्ञापनक माध्यमे समारोह आ स्थानीय शिक्षण-संस्थाक साझेदारी, संस्थागत सद्भाव, नाम-प्रदर्शनक पद्धति आ मुद्रणक सम्भावित पोषक-संरचना देखबैत अछि। मुदा अभिनन्दन-सन्देशमे छपल संस्था-नाम सँ आयोजनकेँ निश्चित धनराशि देल गेल छल—एहन निष्कर्ष नहि निकालल गेल अछि। वित्तीय योगदानक पुष्टि लेल मूल खाताबही वा रसीद अपेक्षित।

‘संकल्पलोकक प्रकाशन’ आ ‘आयोजक उपसमिति’ स्मारिकाक स्वकीय संस्थागत आत्मपरिचय प्रस्तुत करैत अछि। रचनासभक संग एहि सूचनासभ केँ पढ़ब अङ्ककेँ केवल साहित्यिक कृति नहि, सामाजिक संगठनक गतिविधि, पुस्तक-वितरण आ समारोहक नेटवर्कक अनूठ दस्तावेज बना दैत अछि।

१०. भाषा-शैली, लिपि आ ऐतिहासिक पाठक संरक्षण

मुद्रित मैथिली पृष्ठसभमे लेखकरूप, बोलिरूप, तत्सम पदावली, देशज क्रियापद, औपचारिक संस्कृतनिष्ठ वाक्यरचना आ हँसमुख संवाद-भाषा सभ एकसंग अछि। सम्पादकीय भाषामे अधिकार, संविधान, प्रशिक्षण, राजभाषा आ शिक्षक जकाँ प्रशासनिक-राजनीतिक पद अछि; कथा आ कविता मे लोक-विन्यास, प्रश्नोत्तर, पुनरावृत्ति आ मुहावरा उभरैत अछि। एहि भाषिक भिन्नताकेँ साहित्यिक वैविध्य मानब उचित।

स्रोतमे कतेको ठाम मुद्रण धुँधल, छाया गाढ़, किनार कटैत, आ अक्षर एक-दोसरामे मिलैत अछि। एहिसँ नाम, तिथि, पृष्ठाङ्क आ किछु शीर्षकक सूक्ष्म अक्षर बिना मूल मुद्रित प्रति देखनाइ

सर्वथा सुनिश्चित नहि। एहि समीक्षा मे सन्दर्भ-सूची लेल मुख्य रूपसँ स्पष्ट विषय-सूची आ शीर्षक-पृष्ठक उपयोग भेल अछि; अस्पष्ट अंशक स्थान पर कल्पित पाठ नहि भरल गेल अछि। अध्येताकेँ पुरान वर्तनी, अवहट्ट-प्रभाव, बोलिचालित शब्द, अंग्रेजी/हिन्दी सँ आगत पद आ लेखकक निजी रूप-निर्णायक रिकॉर्ड बनाबय चाही। भविष्यक डिजिटल संस्करणमे मूल-पृष्ठचित्र, कूटलिप्यन्तरण, सम्पादित पाठ आ पाठान्तर अलग-अलग स्तरमे राखल गेल तँ अनुसन्धानमे पारदर्शिता बढ़त।

११. अन्तर्विरोध आ आलोचनात्मक सीमा

‘संकल्प’ मैथिलीकेँ सांस्कृतिक अधिकारक आधार मानैत अछि, मुदा साहित्यक भीतर ओकर भिन्न स्वर सेहो उपस्थित अछि। उद्धोधनात्मक कविता जनसामूहिक आग्रह करैत अछि, जखन लेखकीय स्वातन्त्र्य पर आधारित कविता सामूहिकताक बीच व्यक्तिक असहमतिक अधिकार उठबैत अछि। एहि तनावमे अङ्कक सौन्दर्यात्मक मूल्य अछि; एकरा एकमत प्रचार-पुस्तिका कहनाइ न्यायोचित नहि।

इतिहासक क्षेत्रमे प्रतिमा-विचार आ विद्यापति-पर्वक लेख स्मृतिक निर्मित रूप देखबैत अछि; भाषा-अध्ययनमे स्थाननाम आ ध्वनिसाम्यक लेख व्युत्पत्तिक प्रमाणक प्रश्न छोड़ैत अछि; लोकसाहित्यक क्षेत्रमे धार्मिक विश्वास आ भूगोलक अन्तर सोझाँ अबैत अछि; आधुनिक कविताक सर्वेक्षणमे कालविभाजन आ कवि-संख्या दाबी आगू जाँच माँगैत अछि। ई सभ कमी अङ्कक महत्त्व घटबैत नहि, बल्कि ओकर पाठकेँ इतिहासबोधक अधिक जिम्मेदार स्तर पर लऽ जाइत अछि।

संस्थागत भाषण, प्रशंसापत्र आ विज्ञापनमे स्वभावतः आत्मप्रशंसात्मक स्वर अछि।

आलोचनाक न्यायसंगत तरीका ई जे साहित्यिक रचनाक कलात्मक मूल्य, आलोचनात्मक निबन्धक तर्क-प्रमाण आ समारोहक संगठनात्मक स्व-वर्णनकेँ पृथक् कसौटी पर परखल जाय।

१३. समग्र मूल्याङ्कन

‘संकल्प’क सर्वप्रमुख उपलब्धि एके अंकमे मैथिली भाषानीति, साहित्यिक परम्परा, आधुनिक काव्य, लोकगाथा, स्थाननाम-विज्ञान, शाक्त आलोचना, पाण्डुलिपि-परिचय, संस्मरण आ सामूहिक आयोजनकेँ एकत्र अनब अछि। एहि सामग्रीक कारण स्मारिका भाषा-आन्दोलनक

अभिलेख, साहित्यिक पत्रिका, स्थानीय सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास आ शोधोपयोगी स्रोत —चारि रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।

सम्पादकीयक भाषिक अधिकारक आग्रह, विद्यापति-स्मृतिक उद्देश्यपर बहस, स्थाननामक वर्गीकरण, कमलाक लोक-स्मृति, सलेहेसक भूगोल, राधाविरहक शाक्त विवेचन आ मध्यकालीन अप्रकाशित पाठक प्रस्तुति—ई सभ मिलि मैथिलीक बहुस्तरीय सांस्कृतिक संसार निर्मित करैत अछि। साहित्यिक स्वतंत्र प्रश्नवाची स्वर स्मारिकाकें प्रचारात्मक एकरसता सँ बचबैत अछि।

संकल्पक कतेको ऐतिहासिक दावा, आयोजन-सम्बन्धी विवरण आ साहित्यिक मूल्याङ्कन आगू स्वतन्त्र अभिलेखीय मिलान माँगैत अछि। एतबे सावधानी राखलापर ई स्मारिका आधुनिक मैथिली बौद्धिक जीवनक महत्वपूर्ण प्राथमिक पुस्तक बनैत अछि, जाहिमे समारोहक इतिहास आ साहित्यिक बहस एक संग सुरक्षित अछि।

प्रमुख रचनासभक स्वतंत्र आलोचनात्मक परीक्षण

एहि खण्डमे आरम्भिक प्रविष्टिवार परिचयसँ आगू बढ़ि प्रमुख रचनाक विशिष्ट तर्क, साहित्यिक काम, आ प्रमाण-परीक्षणक जरूरत अलग-अलग देखल गेल अछि।

सम्पादकीयक भाषानीति: अधिकारक व्यावहारिक अर्थ

सम्पादकीयक मूल तर्क एतबे नहि अछि जे मैथिली भाषा सम्मानक अधिकारी अछि; ओकर प्रश्न ई अछि जे राज्यक सार्वजनिक संस्थामे मान्यता प्राप्त करबाक बाद मैथिलीभाषी नागरिककें कोन सेवा उपलब्ध होयत। संविधानक अनुसूची, राज्यक द्वितीय राजभाषा, विषय-स्वीकृति, अध्यापन आ कर्मचारी नियुक्ति—ई सभ क्रमशः कानून, प्रशासन, शैक्षिक नीतिगत निर्णय आ वास्तविक क्रियान्वयनक भिन्न सोपान थिक। लेखक एहि सोपानसभक बीच देखल गेल अन्तरकें राजनीतिक समस्या मानैत छथि। पृष्ठ ५क दहिना स्तम्भमे बिहारक लोकसेवा-आयोग आ मैथिली-विषयक प्रसंग उल्लेखित अछि; ओहि सँ स्पष्ट होइत अछि जे लेखक शिक्षित युवाक रोजगार आ भाषाक संस्थागत भविष्यक प्रश्न जोड़ैत छथि। एकरा जाँचबाक आधुनिक विधि १९८०क दशकक सरकारी अधिसूचना, शैक्षिक परिपत्र, नियुक्ति-विज्ञापन आ

परीक्षा-विषयसूचीक वर्षक्रम बनाबऽ होयत। स्मारिकामे ओ सभ दस्तावेज संलग्न नहि अछि, ताहि लेल सम्पादकीय सशक्त समकालीन साक्ष्य अछि, सम्पूर्ण शासकीय डेटाबेस नहि।

विद्यापतिक प्रतिमापर विवाद: काव्यपाठ आ दृश्य प्रतीकक बीच

बाबू भोलालालदासक लेखक प्रश्न ‘मूर्ति कोन प्रकारक हो?’ इतिहास-लेखनक बहुत महत्वपूर्ण समस्या उठबैत अछि। कविक जीवनीसँ असम्बद्ध अनुमान पर आधारित चित्र जनमानसमे एहन रूपसँ स्थापित भऽ सकैत अछि मानू ओ प्रत्यक्ष ऐतिहासिक साक्ष्य हो। लेखमे मूर्ति-परिकल्पना, जनश्रुति, भाषाक सामूहिक स्वामित्व आ विभिन्न परम्पराक विद्वानसभक चर्चा एकत्र अछि। विशेष रूपसँ लेखक आरम्भमे १९३७क पूर्वप्रकाशनक उल्लेख दैत छथि; एहि सँ १९८८क स्मारिकामे पुनर्मुद्रणक कारण समयक दू परत बनैत अछि—एकटा मूल निबन्धक, दोसर वर्तमान स्मृति-समारोहक। एहन पुनर्मुद्रण सँ अङ्क बुझबैत अछि जे प्रश्न दशकोंसँ समाधानक प्रतीक्षामे छल। आलोचनामे मूर्ति-रचना लेल सुलभ वस्त्राभूषणक ज्ञान, विद्यापतिक नामसँ सम्बद्ध ऐतिहासिक लोक-छवि आ मूल रचनाक लेखकत्वक विवाद अलग राखब चाही। ई लेखक बौद्धिक उपलब्धि एहि ‘अलग राखबाक’ मांगक दार्शनिक महत्त्व अछि।

जागृति, संकल्प आ आह्वान गीत: सार्वजनिक काव्यक तीन मुद्रा

‘जागृति’क पंक्तिसभमे सामूहिक सम्बोधन आ समय-परिवर्तनक आग्रह प्रमुख अछि। ‘संकल्प’ शीर्षकक कविता संस्था-नामक साहित्यिक प्रतिध्वनि बनैत अछि; एतय भविष्यक क्रिया हेतु सार्वजनिक आत्मप्रतिबद्धता प्रमुख अछि। ‘आह्वान गीत’क गेयता एहि आग्रहकें पाठक-श्रोताक सहभागितामे रूपान्तरित करबाक क्षमता रखैत अछि। एहि तीनू रचनाकें एकसंग पढ़ला पर पद्यकें केवल विषयक आधार पर वर्गीकृत करब पर्याप्त नहि लगैत: कविता पाठकक अन्तःसंवाद होइत अछि, घोषणात्मक पद्य सामूहिक उत्साह जगबैत अछि, आ आह्वान-गीत उपस्थित जनसमूहकें गेनाइ/दोहोराबैक सम्भावना दैत अछि। समारोहक मुद्रित स्मारिकामे एहि विधासभक सहअस्तित्व मौखिक प्रस्तुति आ मुद्रित पठनक सम्बन्ध बुझबैत अछि। मुदा वास्तविक समारोहमे कोन गीत गाओल गेल, ओकर स्वतन्त्र कार्यक्रम-रिपोर्ट एहि प्रति सँ प्रमाणित नहि होइत अछि।

अहाँकें स्वतन्त्र लिखय पड़त: कवितामे असहमतिपरक आत्मस्वर

कवि आरसीप्रसादसिंहक कविता शाब्दिक अर्थमे कविक लिखबाक स्वतंत्रता पर बातचीत जकाँ शुरू होइत अछि। अनेक प्रश्न, निषेध आ व्यङ्ग्यात्मक प्रतिक्रिया लेखकीय विवेकक सुरक्षा पर जोर दैत अछि। कविता स्वयं ‘स्वतन्त्र नहि लिखब’क कथनकेँ दुहराबैत अछि, मुदा एकर काव्यगत प्रभाव सचेत पाठककेँ ओहि बातक असंगति देखय लेल उकसाबऽ अछि; एहि प्रयोगमे उक्ति आ अभिप्राय एक नहि। सार्वजनिक संस्थाक स्मारिकामे एहन रचनाक उपस्थिति विशेष महत्त्व रखैत अछि—समारोह-निष्ठासँ भिन्न, लेखकीय स्वायत्तता लेल स्थान। आधुनिक पाठक सामाजिक प्रतिबद्धता आ कलात्मक स्वायत्तताकेँ परस्पर शत्रु मानबाक बदला कविताक द्वन्द्वात्मक सम्बन्ध बुझि सकैत छथि। एहि रचनाक सटीक अलंकारिक पाठ लेल सम्पूर्ण तीन पृष्ठक पंक्ति-क्रम, प्रश्नचिह्न आ विराम-अन्तर देखनाइ जरूरी।

मिथिलाक स्थान-नाम: लोकव्युत्पत्ति बनाम अभिलेखीय व्युत्पत्ति

लेख स्थाननामक पाँच-सात स्रोत-श्रेणी निर्मित करबाक प्रयत्न करैत अछि—देवी-देवता, राजपरम्परा, स्थानीय व्यक्ति, सामाजिक समूह आ नामक ध्वन्यात्मक परिवर्तनक रूपमे। उदाहरण लेल ग्रामनामक ‘पुर’ प्रत्यय, व्यक्तिनामक छाप आ बोलिचालित विकृति एके क्षेत्रमे भेटैत अछि। समस्या ई जे स्थाननामक मौजूदा ध्वनि आ प्राचीन उद्गमक बीच अनेक शताब्दीक भाषिक विकास होइ सकैत अछि। लोकपरम्परामे दोसर कारणसँ नामक नव व्याख्या सेहो जन्म लैत अछि। शोधक अगिला कामक लेल प्रत्येक नामक चारि स्तम्भ बनाबय उचित: वर्तमान बोलिरूप, इतिहासमे सबसँ पुरान लिखित प्रमाण, स्थानीय कथित व्युत्पत्ति आ सम्भावित भाषिक परिवर्तन। ओहिमे नक्शाक स्थान जोड़ला पर एहि लेखक बृहत सर्वेक्षण-कार्य विकसित भऽ सकैत अछि। लेखक उदाहरण-संग्रहक महत्त्व एहि दिशा मे अछि, प्रत्येक नामक व्युत्पत्तिक अन्तिम सिद्धिमे नहि।

नदी देवी कमला: पवित्र भूगोलक दोहरा पठन

‘नदी देवी कमला’मे कमलाक जलधारा आ लोकक श्रद्धाक ‘देवी’ दुनू स्वरूप परस्पर उलझल अछि। लोक-साहित्यिक अध्ययन लेल एहन दोहरा स्वरूप अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि: नदी भूगोलक वस्तु अछि, आ देवी सामाजिक सम्बन्ध, भय, आशा आ प्रार्थनाक चिह्न। नदिक मार्ग बदलनाइ अथवा बाढ़क स्मृति सामाजिक कथा जन्म दैत अछि; धार्मिक आख्यान फेर नदीक किनारक सामाजिक अर्थकेँ स्थायी रूप दैत अछि। एकरा पढ़ैत काल लेखकक वर्णित कथा

अथवा लोकविश्वासकें आधुनिक नदीविज्ञान सँ भ्रमित नहि करबाक चाही। कमलाक लोकस्मृतिक अध्ययन हेतु नदीपथक ऐतिहासिक मानचित्र, पूजा-गीत, स्थानीय कथा आ तुलनात्मक जनश्रुति संग्रह भिन्न स्तरक स्रोत होयत। एहि आलेखक योगदान लोकधार्मिक भावक साहित्यिक भाषा भीतर नदी-समाजक विषयकें एकत्र अनबाक अछि।

हम मैथिली कोना सिखलहुँ: अपन भाषाक अर्जनक सामाजिक प्रश्न

एहि लेखक विशिष्टता ई जे भाषा केवला व्याकरण वा अधिसूचना नहि, बल्कि सीखबाक घटनाक रूपमे देखल गेल अछि। ‘हम’ कथावाचकक व्यक्तिगत इतिहासक द्योतक अछि आ ‘कोना’ विधि तथा परिवेशक प्रश्न अछि। बाल्यावस्थाक घरेलू सम्पर्क, विद्यालयी अनुशासन, बोलचाल, पुस्तकपठन आ समाजक भाषिक प्रतिष्ठा—ई सम्भाव्य शोध-चरसभ अछि, जिनकर जाँच व्यक्तिगत विवरणक वास्तविक प्रसंगसँ करब चाही। सामूहिक आन्दोलनक नारा ‘मैथिली बचाउ’ जकाँ सामान्यीकृत आग्रहक बीच एहन लेख प्रश्न उठबैत अछि जे वक्ता मैथिली कोन माध्यमसँ सीखैत छथि आ कोन प्रसंगमे मैथिली चुनैत छथि। यैह कारण पाठ भाषाशिक्षणक इतिहास लेल उपयोगी प्रारम्भिक आत्मवृत्तान्त अछि; एक व्यक्तिक अनुभवकें समूचा मैथिली समाजक शिक्षणरूप माननाइ तर्कसंगत नहि।

विद्यापति पर्वक प्रासंगिकता: स्मृतिक सामाजिक उत्तरदायित्व

डा० भीमनाथझाक लेखक आरम्भिक टिप्पणी ‘२७ फरवरी १९८७’क विचारगोष्ठीक उल्लेख सँ अपन अवसर स्पष्ट करैत अछि। एहन सन्दर्भ एहि लेखकें अनियत कालक सामान्य निबन्ध बनबाक बदला सक्रिय सार्वजनिक बहसक दस्तावेज बनबैत अछि। आयोजक ‘विद्यापति’ नामक एकता-चिह्नकें सार्वजनिक मंच पर स्थापन करैत छथि, लेखक ओकर उपयोगिता विचारैत छथि। तीन प्रश्न पाठमे अनुसरणीय अछि—स्मरणक विषय केवल महाकवि थिक वा मैथिली समाजक बहुआयामी साहित्य? समारोह वार्षिक नामोच्चारण धरि सीमित रहत वा अध्ययन-पुस्तक-प्रचारक आधार बनत? एहि आयोजनमे सहभागी जनसमूहक वास्तविक भाषिक जीवन पर कोन प्रभाव पड़त? एहि तरह लेख स्मारिकाक घोषित मूल्य आ सामाजिक फलितार्थक बीच आलोचनात्मक दूरी बनबैत अछि। अङ्क अपन आपमे एहि प्रश्नक पूर्ण प्रत्यक्ष उत्तर नहि दैत, पर प्रश्नकें स्पष्ट रूपमे उपस्थित करैत अछि।

राधाविरहमे शाक्त तत्त्व: तुलनात्मक तर्कक परीक्षण

आलेखक आरम्भ राधा-कृष्ण लीला आ शाक्त भक्ति-साहित्यक सम्भाव्य सम्बन्ध सँ होइत अछि। शक्ति-उपासना, मातृ-देवता, भक्तिरस, नायिका-विरह आ दार्शनिक अवतारणा भिन्न परम्पराक विधा छथि। लेखक एहि सभकेँ एकत्र करैत 'शाक्त तत्त्व'क खोज करैत छथि, जे विषयगत स्तर पर नूतन आलोचनात्मक दृष्टि प्रस्तुत करैत अछि। मुदा एहि विश्लेषणक प्रमाण एतय विशेष सावधानी माँगैत अछि: काव्यक भाव-रूपक, नारीमूर्तिक महत्ता आ शक्ति-संप्रदायक ऐतिहासिक सिद्धान्त स्वतः एक समान वस्तु नहि। उद्धृत श्लोकक संदर्भग्रन्थ आ काव्यमे ओकर प्रतीकात्मक प्रयोग अलग जाँचल जाय तँ शाक्त दृष्टिक वास्तविक व्याख्यात्मक सीमा देखल जा सकैत अछि। एहि लेखक महत्व नयी व्याख्याक सम्भावना खोलब अछि; ओकर अन्तिम रूप पाठान्तरसहित तर्क-परीक्षणसँ तय होयत।

सलहेसक भूगोल: लोकगाथाक गतिशील मानचित्र

आलेखक आरम्भमे सलहेस गाथाक जनसम्पर्क आ स्थानीय भौगोलिक प्रसारक चर्चा अछि। पृष्ठ १२० पर महिसौथा सहित कतेको स्थान-सम्बद्ध सन्दर्भ प्रकट होइत अछि; लेखक गाथामे आएल नामकेँ साधारण कथात्मक पृष्ठभूमि नहि, अनुसन्धानक विषय मानैत छथि। लोकगाथामे स्थल-नामक महत्त्व दोहरा: एक ओर गाथाक पात्रक यात्रा आ क्षेत्रीय सत्ताक कल्पना, दोसर ओर गायनसमाजक स्मृतिक विस्तार। पाठमे उल्लेखित भूगोलकेँ आजुक जिला-सीमासँ बिना परीक्षण मिलाय देब अनुचित होयत। सबसँ उपयोगी अग्रिम काम विभिन्न सलहेस-गायकक पाठमे स्थल-सूची मिलान, नामक स्थानीय उच्चारणक संग्रह आ मध्यकालीन स्थान-सन्दर्भक अभिलेखीय तुलना होयत। एहन दृष्टिसँ लेख विषयक ऐतिहासिक सम्भावना खोलैत अछि, न कि एकल अन्तिम नक्सा।

आधुनिक मैथिली कविताक स्थिति: संख्या आ साहित्य-मूल्यक विवाद

डा० देवेन्द्र झा पृष्ठ १४० पर आधुनिक कविता पर विचार शुरू करैत काल १८३० सँ १९०७ धरि, १९०९ सँ १९५२ धरि जकाँ काल-खण्डक उल्लेख करैत छथि आ कविक नाम तथा कृतिसंख्याक दावी प्रस्तुत करैत छथि। एहि लेखक प्रविधि इतिहासक मूल्याङ्कन लेल आकड़ा आ कालानुक्रम जोड़बाक प्रयत्न अछि। मुदा साहित्यिक गुणवत्ताक माप केवल रचनाकार-संख्या वा कविता-संख्या नहि; मुद्रण-प्रसार, स्त्री-लेखन, मौखिक परम्परा, प्रगतिवादी आ नवगीतक भिन्न रूप, तथा पत्रिकामे देखल रचनाक सीमा सेहो विश्लेषणमे प्रवेश करैत। लेखकक प्रयत्न एक

कालविशिष्ट साहित्यिक आत्मबोधक प्राथमिक स्रोत अछि। आधुनिक शोधकर्ता लेखमे प्रस्तुत सारणी-समान दावा स्वतंत्र ग्रन्थसूचीसँ सत्यापित करैत ओकर व्याख्याक सीमा देखाबथि तँ इहो अङ्कक एक अति उपयोगी परवर्ती आलोचना भऽ सकैत अछि।

कबीश्वरक पोथा: अप्रकाशित रचनाक पाठप्रमाण

‘कबीश्वरक पोथा ओ अप्रकाशित पद्य’ क आरम्भमे लेखक अप्रकाशित अथवा अल्पपरिचित पाण्डुलिपिक प्रसंग उठबैत छथि। ‘पोथा’क शब्द स्वयं परम्परागत हस्तलिखित अथवा संकलित ग्रन्थक परिकल्पना सूचित करैत अछि, मुदा मूल प्रति देखनाइ, लिपि-पहिचान आ लेखनकालक विश्लेषण बिना ओकर वस्तुगत स्वरूप निश्चित नहि करबाक चाही। लेखक प्रस्तुत पाठ बीच रचनाकार, प्रति, लोकसंचार आ पाठक त्रुटिक बहुस्तरीय सम्बन्धक प्रश्न अछि। आलोचनात्मक सम्पादन लेल पाण्डुलिपि क्रम, पृष्ठ-फोटो, छन्द-संरचना, पदान्त, पाठविभेद आ शब्दार्थक आवश्यक नोंद अत्यन्त उपयोगी होयत। एहि रूपमे स्मारिका नव पाठक सूचना जनसमक्ष अनबाक श्रेय रखैत अछि।

मध्यकालीन दुइ कवि: प्रकाशन आ अनुसन्धानक अन्तर

पृष्ठ १५२ सँ आरम्भ निबन्धमे मैथिली मध्यकालीन काव्यक अल्पज्ञात स्रोत पर ध्यान केन्द्रित अछि। लेखक प्रारम्भमे प्राचीन मैथिली पद-साहित्यक इतिहास, शोधकर्ताक पूर्व प्रयास आ अप्रकाशित काव्यक महत्त्व स्वीकार करैत छथि। एहिसँ बुझाईत अछि जे रचनाक लक्ष्य केवल पुरातनताक प्रशंसा नहि, बल्कि नवान्वेषित सामग्रीक ओर शोधसमाजकें आकृष्ट करब अछि। मुदा ‘अप्रकाशित’ होयब स्वयं प्रामाणिक/मूल पाठ होयबाक प्रमाण नहि; रचनाक कालनिर्धारण, प्रचलित पाठक रूप, कविक नामक ऐतिहासिक साक्ष्य आ उपलब्ध अन्य प्रति संग मिलान जरूरी अछि। अङ्कक अन्तिम भागमे एहन शोध उपस्थित होयब एहि स्मारिकाक वैज्ञानिक सम्भावनाकें विशेष बल दैत अछि।

विज्ञापनक श्रृंखला: साहित्यिक सार्वजनिक क्षेत्रक सूक्ष्म अभिलेख

महाविद्यालयक अभिनन्दन पृष्ठसभकें कलात्मक आलोचना सँ बाहर रखल जा सकैत अछि, मुदा इतिहास-समीक्षा सँ नहि। विज्ञापनमे संस्थाक नाम, पदाधिकारी, स्थल आ सांस्कृतिक समारोहक समर्थनक मुद्रित निवेदन अछि। एहि सँ लहेरियासराय-दरभंगाक साहित्यिक समाज

आ शैक्षिक संस्थाक दृश्य सम्बन्धक अध्ययन सम्भव अछि। मूल प्रति मे विज्ञापन अनेक साहित्यिक रचनाक बीच रखल गेल अछि; एहिसँ पत्रिका छपबाक आर्थिक-समाजिक प्रक्रिया आ पाठकक पठन-क्रम दुनू प्रभावित होइत अछि। भविष्यक अभिलेखी कार्यमे प्रत्येक विज्ञापनक काल, संस्था, छापाखाना आ स्थानीय नेटवर्क अंकित कएल जाय तँ ‘संकल्प’क आयोजनसम्बद्ध सामाजिक आधारक सूक्ष्म मानचित्र बनि सकत। नहि तँ केवल विज्ञापन छपल रहनाइ सँ वित्तीय सौदाक ठोस दावी करब अनुचित अछि।

अध्याय 03 / २००२

आलेख सञ्चयन

डॉ. योगानन्द झाक कृतिक आलोचनात्मक विवेचन

ग्रन्थक परिचय आ समीक्षाक आधार

‘आलेख सञ्चयन’ एकटा विषयविशेषक एकरेखीय पुस्तक नहि, अपितु मैथिली साहित्यक अध्ययनक तीनटा परस्पर सम्बद्ध दिशाकेँ एक ठाम अनैत अनुसन्धानात्मक आलेखसभक संग्रह थिक। मूल ग्रन्थक विषय-सूचीमे नौटा आलेख अछि। पहिल दू आलेख लोकसाहित्य आ लोकजीवनसँ सम्बन्धित अछि; बीचक पाँचटा आलेख काव्य, साहित्यकार, पत्रकारिता-इतिहास आ कथा-विधाक आलोचनासँ सम्बन्धित अछि; अन्तिम दू आलेख देशी शब्द आ ऐतिहासिक शब्दकोशक भाषावैज्ञानिक परीक्षणक विषय अछि। ई वर्गीकरण ग्रन्थक प्रस्तावनाक आन्तरिक विवेचनसँ सेहो पुष्ट होइत अछि। पुस्तकक एकताक आधार विषयक समानता नहि, अपितु भाषिक-सांस्कृतिक साक्ष्य जुटाक ओकर अर्थ निकालबाक अनुसन्धानशील प्रवृत्ति थिक। (मूल ग्रन्थ: प्रस्तावना, भूमिका आ विषय-सूची)

ग्रन्थक प्रकाशन-सूचनामे प्रथम संस्करण २००२, मूल्य एक सय टाका आ प्रकाशक मिथिला रिसर्च सोसाइटी निर्दिष्ट अछि। मूल विषय-सूची अनुसार पुस्तकक आलेख-पृष्ठ १३ सँ १०४ धरि विस्तार पबैत अछि। प्रस्तावना ओ भूमिकासँ पहिने चारि प्रारम्भिक मुद्रित पृष्ठ अछि; क ५७ पृष्ठमे पुस्तकक सम्मुख-अभिमुख पृष्ठ एक संग सुरक्षित अछि। एहि समीक्षामे ‘पृ.’ सँ तात्पर्य मूल पुस्तक पर छपल पृष्ठ-संख्या अछि, क-पृष्ठ नहि। ई अन्तर महत्वपूर्ण अछि, कारण एकटामे प्रायः दूटा पुस्तक-पृष्ठ अछि। (प्रकाशन-सूचना, ४; विषय-सूची, ५)

लेखक भूमिकामे पिता रामलखन झाक स्मृतिकेँ पुस्तक अर्पित करबाक अपन निर्णय, साहित्य-प्रकाशनक कठिनाइ आ निरन्तर अनुसन्धानक प्रेरणाक उल्लेख करैत छथि। फलतः समर्पण पुस्तकक बाहरी औपचारिकता मात्र नहि रहि आत्मकथात्मक साक्ष्य बनि जाइत अछि। प्रस्तावनाक लेखक अनुसन्धान आ आलोचनाक बीच सम्बन्ध स्थापित करैत योगानन्द झाक लोकवृत्त, साहित्य-समीक्षा आ भाषावैज्ञानिक अध्ययनकेँ एकर उपलब्धि मानैत छथि। एहि दूनू प्रारम्भिक रचनाक संग पढ़लापर पुस्तक अपन विषय-विस्तारक अतिरिक्त एकटा कार्ययोजनाक घोषणासमेत प्रतीत होइत अछि: लोकस्मृति, लिखित साहित्य आ शब्दक इतिहास—तीनूकेँ अनुसन्धानक बराबर महत्त्व देब। (प्रस्तावना, मुद्रित पृ. i-iv; भूमिका)

एहि आलोचनात्मक अध्ययनमेकेँ प्रधान प्रमाण मानल गेल अछि। जतय मुद्रण अथवाक कारण शब्दशः पाठ पूर्ण सुनिश्चित नहि भऽ सकल, ओतय अनुमानित पद, अप्रामाणित संख्या अथवा बनाओल उद्धरण प्रस्तुत नहि अछि। बाहरी जाँच केवल चुनिन्दा पुस्तक-सूची, साहित्य अकादेमीक अभिलेख आ ‘देशीनाममाला’ सम्बन्धी अनुसन्धान-परिप्रेक्ष्य धरि सीमित अछि; लेखकक मूल कथन आ समकालीन अनुसन्धानक टिप्पणी केँ एक-दोसरक विकल्प नहि बनाओल गेल अछि।

अध्ययनक प्रश्न आ आलोचनात्मक कसौटी

एहि संग्रहक मूल्यांकन करबाक मुख्य प्रश्न अछि—योगानन्द झा कोन वस्तुकेँ प्रमाण मानैत छथि, ओहि प्रमाणक वर्गीकरण केना करैत छथि, साहित्यिक अर्थ कोना बनबैत छथि आ निष्कर्ष निकालैत समय कतेक सावधानी रखैत छथि? लोकसाहित्यक आलेखमे मौखिक परम्परा, कहबी, गीत आ कथा प्राथमिक वस्तु अछि; विद्यापति-सुमन सम्बन्धी आलेखमे पाठ आ काव्यशास्त्रीय अवधारणा आधार बनैत अछि; पत्रकारिता-विषयक आलेखमे पत्र-पत्रिकाक इतिहास आ प्रलेखन प्रधान अछि; देशी शब्दक आलेखमे ऐतिहासिक व्युत्पत्ति, रूपान्तर आ अर्थ-विकासक तुलनात्मक अध्ययन मुख्य पद्धति अछि। अलग-अलग प्रकारक प्रमाणक संग लेखकक व्यवहारकेँ एकहि मापदण्डसँ नहि, ताहि प्रमाणक अनुकूल कसौटीसँ जाँचबाक आवश्यकता अछि।

एहि पाठमे समीक्षा दुइ स्तरपर चलैत अछि। पहिल स्तर पुस्तकक भीतर लेखक जे प्रतिपादन करैत छथि, तकर यथासम्भव सटीक पुनर्निर्माण अछि। दोसर स्तरमे जाँचल गेल अछि जे

उदाहरण ओ प्रतिपादनक बीच सम्बन्ध कतेक मजबूत अछि, श्रेणीकरण कतय उपयोगी आ कतय अपर्याप्त अछि, सामाजिक दृष्टि कतय खुलैत अथवा संकुचित होइत अछि, आ आजुक शोधकर्ता कतेक हद धरि एहि अध्यायकें स्रोत अथवा तर्कक रूपमे उपयोग कऽ सकैत छथि। एहि दू स्तरक पृथक्करण बिना कोनो शोध-समीक्षा अथवा प्रशंसात्मक परिचयमे बदलि सकैत अछि, अथवा वर्तमानक मान्यता लेखकपर पूर्वव्यापी रूपे आरोपित करबाक दोषमे पड़ि सकैत अछि।

१. 'मैथिलीक लोकसाहित्य': मौखिक परम्पराक स्वरूप आ वर्गीकरण (पृ. १३-३०)

‘लोक’ आ ‘लोकसाहित्य’क मूल अवधारणा

एहि दीर्घ आलेखक आरम्भ लेखक ‘लोक’ शब्दक सामाजिक व्याख्यासँ करैत छथि। हिनका लेल लोकसाहित्य मूलतः सामान्य जनक अनुभव, स्मृति, विश्वास, आचार-विचार आ सामूहिक अभिव्यक्तिक क्षेत्र थिक। लिखित अथवा शास्त्रीय साहित्यसँ एकर अन्तर केवल लिपिक नहि, सर्जकक सामूहिकता, प्रसारणक मौखिकता, प्रस्तुतीकरणक अवसर आ रीति-रिवाजक संग जीवन्त सम्बन्धक अछि। लेखक ‘रस’, ‘ध्वनि’, ‘अलंकार’, ‘रीति’ आदि काव्यशास्त्रीय पदक चर्चा करैत ई संकेत दैत छथि जे लोकसाहित्यक निर्माणकें संस्कृत काव्यशास्त्रक नियमित अनुशासनमे नापल नहि जा सकैत अछि। एतय लोकसाहित्यक स्वतन्त्र कलात्मकता स्वीकार करबाक महत्त्वपूर्ण आग्रह अछि। (पृ. १३-१४)

मुदा एहि आरम्भक एकटा सीमा सेहो अछि। शास्त्रीय परिपाटीसँ पृथकता देखेबाक क्रममे लेखक मौखिक साहित्यकें कतहु-कतहु ‘स्वतःस्फूर्त’ आ अकृत्रिम मानि लेलनि अछि। लोकगीतक छन्द, धुन, पुनरावृत्ति, गायन-क्रम आ समारोहजन्य नियम सेहो अपन कठोर संरचना रखैत अछि। अतः लोक आ शास्त्रक अन्तरकें नियम आ नियमहीनताक विरोधक रूपमे नहि, दू भिन्न प्रकारक परम्परागत अनुशासनक रूपमे बुझब अधिक उपयुक्त अछि। ई आपत्ति पुस्तकक उदाहरणसभसँ उत्पन्न होइत अछि; कतोक गीतक निश्चित पाँतिक्रम आ प्रस्तुतिक अवसर स्वयं एहिमे उल्लिखित अछि।

वर्गीकरणक मौलिक योगदान

पुस्तकक पृ. १४-१५ पर लेखक पूर्ववर्ती वर्गीकरणसभक चर्चा कऽ अपन समेकित रूपरेखा दैत छथि। प्रस्तुत आलेखक सर्वाधिक उपयोगी अंश ओहिठामक आलेखीय वर्गीकरण अछि, जाहिमे मैथिली लोकसाहित्यकेँ दृश्य-विधा आ श्रव्य-विधाक सम्बन्धमे रखबाक प्रयास अछि। दृश्य पक्षमे लोकनृत्य आ लोकनाट्य तथा श्रव्य पक्षमे गेय आ कथ्य सामग्रीक भेद दर्शाओल गेल अछि। गेय विधामे लोकगाथा, गाथागीत आ लोकगीत; कथ्य पक्षमे लोककथा, लोकोक्ति, मुहावरा, लोकश्रुति-किंवदन्ती, फकड़ा, वचन, लोकमन्त्र आ बुझौअलि-जकाँ रूपकेँ राखल गेल अछि। वर्गीकरणक एहि क्रमसँ गीत मात्रकेँ लोकसाहित्यक पर्याय मानबाक प्रवृत्ति समाप्त होइत अछि। (विशेषतः पृ. १४-१५ पर मुद्रित वर्गीकरण-चित्र)

एहि वर्गीकरणक आलोचनात्मक परीक्षा करैत ध्यान देबाक चाही जे लोकनाट्य बहुधा गेय, कथ्य आ दृश्य तीनू होइत अछि। लोकगाथा कथा सेहो अछि आ गायन सेहो; गाथागीतक संग लोकगीतक सीमा स्थिर नहि; बुझौअलिक उच्चारण प्रदर्शनात्मक अवसर बनि सकैत अछि। अतः लेखकक नक्शा संग्रह आ पाठ्यक्रम-निर्माणक लेल उपयोगी अछि, मुदा एकरा अन्तिम वैज्ञानिक सीमांकन मानलापर विधासभक परस्पर मिश्रण छूटि जाइत अछि। अधिक सटीक सूचीकरणमे ‘रूप’, ‘प्रस्तुति-माध्यम’, ‘कार्य’, ‘अवसर’ आ ‘प्रदर्शक समुदाय’ अलग-अलग विवरणात्मक क्षेत्र बनयबाक चाही।

लोकगीतसँ लोकगाथा धरि: पाठक सामाजिक सन्दर्भ

आलेखमे संस्कार-संलग्न गीत, विवाह-विधि, ग्रामजीवन, अनुष्ठान, मौसमी अवसर आ जाति-समुदायक विशिष्ट गायनक चर्चा अछि। लोकगीतकेँ भक्तिपरक, संस्कारपरक आ सामयिक सन्दर्भक आधार पर बुझबाक प्रयास लेखक करैत छथि। एहि सूत्रमे गीत केवल शब्द-पाठ नहि, जीवनक क्रियाक संग जुड़ल अभिव्यक्ति बनि अबैत अछि। ‘कखन गाओल गेल’ आ ‘केकरा द्वारा गाओल गेल’—ई प्रश्न अर्थक अभिन्न अङ्ग होइत अछि। पुस्तकमे गीतक पाँति आ तकर सामाजिक सन्दर्भ एक संग देबाक कारण पाठक दूनू स्तरक बोध प्राप्त करैत छथि। (पृ. १६-२१)

लोकगाथाक विवेचनमे कथात्मक विस्तार आ गेय रूपक अन्तर्सम्बन्ध लेखकक ध्यानमे अछि। गीतमे कथा प्रवेश करैत अछि, आ कथामे स्थानीय नायक, समुदाय, प्रेम, वीरता अथवा लोकविश्वास प्रवेश करैत अछि। लोकगाथाक उदाहरणक उपयोगसँ मैथिली परम्पराक मौखिक

इतिहासक आंशिक झलक भेटैत अछि; मुदा एहि उदाहरणकें घटनाक यथार्थ ऐतिहासिक अभिलेख समझब उचित नहि। लोकगाथा ऐतिहासिक स्मृति, कल्पना आ सामाजिक मूल्यक मिश्रित निर्माण होइत अछि। लेखकक सामग्री एहि तीनू पर अलग अध्ययनक आधार देबामे सक्षम अछि। (पृ. १८-२०)

कथा, कहबी, वचन, मन्त्र आ बुझौअलिक विस्तार

लोककथाक प्रसंगमे लेखक कथानक आ कथन-विन्यासक उदाहरण दैत छथि; लोकश्रुति आ किंवदन्तीमे कथा-विश्वासक सामाजिक स्वीकार्यता महत्त्व पबैत अछि। लोकोक्ति, मुहावरा आ फकड़ाक चर्चा लोकक लघु-वाक्यात्मक ज्ञानक रूपमे भेल अछि। कहबीक अल्प शब्दमे अर्थक विस्तार, व्यंग्य, व्यवहारिक चेतावनी आ मानवीय सम्बन्धक अनुभव संचित रहैत अछि। ई विशेषता लेखकक संकलनकें केवल साहित्यिक नहि, समाजभाषावैज्ञानिक दृष्टिँ सेहो उपयोगी बनबैत अछि। (पृ. २२-२६)

लोकमन्त्र आ बुझौअलिक चर्चासँ पुस्तकक विषयपरिधि आरो विस्तृत होइत अछि। मन्त्रमे विश्वास, रोग-भय अथवा संकटसँ रक्षाक आकांक्षा भाषा द्वारा प्रकट होइत अछि; बुझौअलिमे कल्पना आ बौद्धिक खेलक रूप सोझाँ अबैत अछि। एहि दुनू विधाक समीक्षा करैत ई भेद महत्त्वपूर्ण अछि जे मन्त्रक सांस्कृतिक भूमिका ओकर चिकित्सकीय प्रभावशीलताक प्रमाण नहि, आ बुझौअलिक उत्तर ओकर शब्द-रचनाक संयोगपर निर्भर करैत अछि। ग्रन्थक भाषिक उदाहरण अध्ययनयोग्य अछि, किन्तु वैद्यकीय, धार्मिक अथवा ऐतिहासिक दावाक स्वतंत्र सत्यापन आवश्यक रहत। (पृ. २६-२८)

संकलनक इतिहास आ आलोचनात्मक सीमा

आलेखक अन्तिम भागमे लेखक मैथिली लोकसाहित्यक पूर्ववर्ती संकलन-प्रयास, अनुसन्धानक कठिनाइ आ सामग्री-संरक्षणक आवश्यकता पर विचार करैत छथि। एतय लोकवस्तुक नष्ट होइत मौखिक परम्पराकें लिखित रूपमे सुरक्षित करबाक चिन्ता प्रमुख अछि। ई विषय २००२क पुस्तकक एकटा जीवित प्रश्न बनल रहैत अछि: लोकगीतक शब्द लिखि लेब मात्रसँ धुन, गायक-शैली, प्रस्तुति-अवसर, श्रोता-प्रतिक्रिया आ एकरे अनेक पाठान्तर सुरक्षित नहि होइत अछि। एहि कारण सँ पृ. १३-३० पर प्रस्तुत वर्गीकरणकें क्षेत्रीय अभिलेखनक अग्रिम रूपरेखा मानल जा सकैत अछि, सम्पूर्ण अभिलेख नहि।

आलेखक समेकित उपलब्धि मैथिली लोकवृत्तक विवेचनमे गीत, कथा, कहबी, लोकमन्त्र आ नाटकक परस्पर सम्बन्ध स्थापित करब अछि। किन्तु संग्रहक प्रत्येक उदाहरण लेल स्थान, सूचनादाता, संकलन-तिथि आ पाठान्तरक पृथक साक्ष्य देल रहितय तँ ई सामग्री आजुक लोकसाहित्य-अनुसन्धानमे आरो अधिक जाँचयोग्य होइत। ई आलोचना पुस्तकमे प्रस्तुत उदाहरणक महत्व घटबैत नहि, अपितु ओकरा भविष्यक अभिलेख-निर्माणक उपयुक्त आरम्भिक आधारक रूपमे देखैत अछि।

२. ‘लोकोक्तिमे मलाह जाति’: व्यवसाय आ कहबीक अन्तर्सम्बन्ध (पृ. ३१-३५)

सामाजिक जीवनक पेशागत शब्द-संसार

एहि आलेखमे लेखक मलाह समुदायसँ सम्बद्ध कहबी-लोकोक्तिक माध्यमे मिथिलाक नदीप्रधान जीवनक परिचय दैत छथि। माछ, मखान, सिंघाड़ा, नाव, जाल, बंसी, डेली, माछक जाति आ जलचरसँ जुड़ल शब्द-सम्पदाकेँ लेखक सामाजिक व्यवहारक कथनक संग जोड़ैत छथि। एहि सम्बन्धमे लेखकक मुख्य प्रतिपादन ई अछि जे व्यवसाय मात्र आर्थिक गतिविधि नहि, लोकसमाजक अनुभवक भाषा बनबैत अछि। जल-व्यवसायमे प्रयुक्त उपकरण आ क्रियासँ उत्पन्न अभिव्यक्ति कालान्तरमे अन्य सामाजिक प्रसंगक लेल उपमा, व्यंग्य अथवा चेतावनी बनि जाइत अछि। (पृ. ३१-३२)

लेखक समुदायसम्बद्ध उपनाम आ उपजातिक उल्लेख करैत पेशागत पहचानक व्यापक सामाजिक पृष्ठभूमि बनबैत छथि। मुदा एहि जानकारीकेँ वर्तमानक सम्पूर्ण समुदाय-वर्गीकरण मानब अनुचित होयत; ई पोथीमे प्रस्तुत विवरण थिक, सर्वेक्षणसँ प्रमाणित नवीन जनसांख्यिकीय आँकड़ा नहि। एहि अन्तरक ध्यान रखैत पढ़लापर आलेख सामाजिक इतिहासक शब्दप्रधान स्रोत बनैत अछि। (पृ. ३१)

उपकरणक अर्थसँ रूपकक अर्थ धरि

‘जाल पसरब’, नाव चलायब, ‘खेबा’, बंसी आ माछक उल्लेख लेखक अनेक लोकोक्तिमे देखबैत छथि। जालक वास्तविक उपयोग क्षेत्र-प्रसारक बिम्ब बनैत अछि; बंसीमे फँसल माछ अनुभवक कारण फेर सावधान होयबाक संकेत बनि सकैत अछि; नावक खेवनिहारक कुशलता सामाजिक नेतृत्व अथवा कार्य-संचालनक रूपक बनि सकैत अछि। एहि उदाहरणसभमे प्रत्यक्ष

व्यवसायगत क्रिया आ अप्रत्यक्ष सामाजिक अर्थक बीच अर्थान्तरणक प्रक्रिया देखाइत अछि। एहि दृष्टिँ आलेख शब्दार्थक अध्ययनसँ आगाँ बढ़ि लोक-रूपक-विज्ञानक सामग्री उपलब्ध करबैत अछि। (पृ. ३१-३३)

माछक भिन्न-भिन्न नाम, ओकर स्वाद, मूल्य आ व्यवहारक सम्बन्धमे प्रचलित कहबीसभक संग लेखक भोजन-संस्कृति आ बाजार-विनिमयक वर्णन करैत छथि। ‘सुकठी’क व्यापार आ पशुपतिनाथ-दर्शनक संयोगजकाँ प्रसंग व्यवसायसँ धार्मिक यात्रा धरि एकहि कथनमे अनेक सामाजिक अर्थ जोड़ैत अछि। एहि प्रकारक उदाहरण अध्ययनक लेल उपयोगी अछि, मुदा कहबीमे वर्णित व्यापारिक व्यवहार सभ दिन एकहि रूपमे उपस्थित छल, एकर स्वतन्त्र अभिलेख एहि आलेखक भीतर उपलब्ध नहि। अतः लोकोक्तिक सामाजिक कल्पना आ दस्तावेजी इतिहासकें पृथक रखबाक आवश्यकता अछि। (पृ. ३३)

हास्य, व्यंग्य आ पूर्वाग्रहक विश्लेषण

एहि कहबीसभमे बुद्धि, आलस्य, लोभ, कंजूसी, अतिथि-व्यवहार, लाभ आ दुर्भाग्य पर तीक्ष्ण टिप्पणी अछि। बगुलाक कथित तपस्या, माछक स्वभाव, कछुआ अथवा केकड़ाक व्यवहार लोकनीतिक प्रसंग बनैत अछि। लेखक एहि मुहावरासभक आशय अलग-अलग खोलैत छथि, जाहिसँ सामान्य पाठक केँ सन्दर्भ बुझबाक सुविधा होइत अछि। ई व्याख्यात्मक परिश्रम आलेखक एकटा स्पष्ट उपलब्धि अछि। (पृ. ३३-३५)

तथापि हास्य आ कहबीक प्रयोगकेँ निरपेक्ष लोकबुद्धिक प्रमाण मानब सन्देहास्पद अछि। व्यवसाय आ जातिक प्रति उपहास, किछु खाद्य-पदार्थक दर्जाक निर्धारण, अथवा समुदायपर आरोपित स्वभाव सामाजिक शक्ति-सम्बन्धक चिन्ह सेहो भऽ सकैत अछि। कहबी कहनिहार समुदाय आ ओकर लक्ष्य समूह जखन अलग होइत अछि, तखन अर्थमे व्यंग्यक संग प्रभुत्वक भाषा सेहो समाहित भऽ सकैत अछि। एहि दृष्टिकोणसँ अगिला अनुसन्धानकेँ ई देखबाक चाही जे मलाह समाज अपन विषयमे प्रचलित कहबीकेँ स्वयं कोना बुझैत अछि। लेखकक संकलन एहन प्रश्न उठेबाक प्रेरणा दैत अछि, यद्यपि ओ स्वयं एहि विमर्शकेँ प्रमुख विषय नहि बनबैत छथि।

आलेखक निष्पत्ति

पाँच पृष्ठक एहि आलेखक वास्तविक मूल्य कहबीक संख्या मात्र नहि, ओकर व्यावसायिक शब्द-संरचना आ सामाजिक अर्थक सम्बन्ध उजागर करब अछि। आरम्भक लेखक कथनमे जल-व्यवसायकेँ मिथिलाक प्राचीन जीवनक एकटा महत्त्वपूर्ण आधार बताओल गेल अछि, आ अन्तमे लोकोक्तिक विस्तारकेँ एहि पृष्ठभूमिक प्रमाण मानल गेल अछि। परन्तु ‘कहबीक व्यापकता’सँ ‘सर्वाधिक प्राचीन व्यवसाय’क ऐतिहासिक निष्कर्ष सीधे निकालब पर्याप्त नहि। ताहि लेल पुरातात्विक, आर्थिक आ अभिलेखीय स्रोत आवश्यक होयत। एतय लेखकक निष्कर्षकेँ लोकसाहित्यसँ उत्पन्न ऐतिहासिक परिकल्पनाक रूपमे ग्रहण करब अधिक प्रमाणसम्मत अछि।

३. ‘विद्यापतिक राधाक स्वरूप’: भक्ति, काम आ काव्यक बहुव्याख्या (पृ. ३६-४२)

एकहि राधाक अनेक पाठ

आलेखक प्रारम्भमे राधा भारतीय साहित्य आ धार्मिक कल्पनाक ओहन पात्रक रूपमे प्रस्तुत छथि, जिनकामे प्रेम, अनुराग, दैहिक सौन्दर्य, समर्पण आ आध्यात्मिकता अनेक भिन्न अर्थ प्राप्त करैत अछि। योगानन्द झा राधाकेँ एकटा निश्चित धार्मिक प्रतीकमे सीमित नहि करैत, तीनटा व्याख्यात्मक क्षेत्र—वैष्णवी, कामशास्त्रीय आ काव्यशास्त्रीय—क माध्यमे विद्यापतिक पदावली देखैत छथि। एकरे कारण आलेख प्रचलित मतक पुनरावृत्ति मात्र नहि रहि पाठ-व्याख्याक पद्धति सम्बन्धी विमर्श बनि जाइत अछि। (पृ. ३६-३७)

वैष्णवी स्वरूपक समीक्षा

राधाक वैष्णवी स्वरूप वर्णित करैत लेखक पुराण-परम्परा, कृष्णप्रेम, नदिया आ सहजिया वैष्णव परम्पराक धारणा, तथा जीवात्मा-परमात्माक रूपकक चर्चा करैत छथि। ई भेद स्पष्ट अछि जे भावात्मक प्रेमक पदकेँ धार्मिक अनुभवक रूपमे पढ़ल जाय अथवा लौकिक विरहक रूपमे—दूनू सम्भावना पाठक समक्ष रहैत अछि। लेखक अनेक आलोचकक मतान्तर उपस्थित कऽ ई देखबैत छथि जे बंगीय वैष्णव सन्दर्भमे स्थापित राधाभावक व्याख्या विद्यापतिक प्रत्येक पदपर समान रूपसँ लागू कएल नहि जा सकैत अछि। (पृ. ३७-३९)

एहि तर्कक विशेषता एकार्थवादी पाठक प्रतिरोध अछि। राधाक विरहकेँ केवल आध्यात्मिक प्रतीक मानला पर शरीर, सामाजिक जोखिम, लोकलाज आ प्रेमक पीड़ा अनदेखल रहि सकैत

अछि; केवल लौकिक शृंगार मानला पर भक्ति-परम्परामे पदसभक ग्रहण आ पुनर्पाठक इतिहास अदृश्य भऽ सकैत अछि। लेखकक विवेचन एहि दूनू अतिशयताकेँ आलोचनात्मक रूपे देखबाक अवसर दैत अछि। मुदा विद्यापतिक रचनाक मूल काल-सन्दर्भ आ उत्तरवर्ती वैष्णव पाठक ग्रहण-इतिहास स्पष्ट पृथक खण्डमे देल गेल रहितय तँ कालक्रमक स्तर पर तर्क आरो मजबूत होइत।

कामशास्त्रीय स्वरूप आ नैतिक निर्णयक प्रश्न

आलेखक दोसर पक्ष राधाक कामशास्त्रीय निरूपण अछि। एतय नारी-सौन्दर्य, प्रणयोपचार, रतिक अवस्था, अंगवर्णन, विलास-प्रसंग आ देहगत अनुभवकेँ लेखक पाठक प्रमाणसँ जोड़ैत छथि। राधाकेँ केवल पूजा-अर्चनाक अलौकिक मूर्ति मानबाक बदलामे कवि द्वारा सृजित अनुभवशील नायिका मानबाक ई एकटा उपाय अछि। एहि प्रसंगमे लेखक विद्यापति पर लगैत अश्लीलताक आरोपक चर्चा कऽ विरहिणी राधाक वेदनाक कलात्मक संवेदनाकेँ ओहि आरोपक विरुद्ध महत्वपूर्ण मानैत छथि। (पृ. ३९-४०)

एकर आलोचनात्मक उपलब्धि यौन-अभिव्यक्तिक कलात्मक प्रश्नकेँ नैतिक लांछनसँ अलग करबाक प्रयास अछि। परन्तु कामशास्त्रीय वर्गमे प्रत्येक सौन्दर्यबिम्बकेँ रखबाक जोखिम सेहो छैक: पदक भाव, बोलनिहारक स्थिति, सखी-संवाद, हास्य, संकोच आ प्रतीकात्मकता सभकेँ केवल कामशास्त्रक सूचीमे बदलि देलापर कविताक मौलिक नाटकीयता घटि सकैत अछि। आलेखक अन्दर साक्ष्यक विस्तार देखाइत अछि, मुदा पाठान्तर आ गीतक संगीत-सन्दर्भक प्रत्यक्ष चर्चा अपेक्षाकृत कम अछि। एहि दूनू क्षेत्रक समावेश राधा-व्याख्याक बहुपरतीयता आरो बढ़ा सकैत अछि।

काव्यशास्त्रीय वर्गीकरणक उपयोगिता

तेसर प्रमुख भागमे राधा शृंगार-रसक आलम्बन, नायिका-भेद आ अनुभाव-व्यभिचारी भावक अनुषंगमे विवेचित छथि। लेखक स्वकीया-परकीया, मुग्धा-मध्या-प्रौढ़ा, अभिसारिका, खण्डिता, मानिनी आ विरहिणी-जकाँ अनेक नायिका-अवस्थाक चर्चा करैत छथि। एहि सूचीक उपयोगिता ई अछि जे राधाक रूप गतिहीन प्रतिमा नहि रहि परिस्थिति-विशेषमे बदलैत पात्रक रूपमे देखाइत अछि। एकहि नायिका प्रेमक अलग-अलग अवसरमे भिन्न सामाजिक आ भावनात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करैत छथि। (पृ. ४०-४१)

एहि वर्गीकरणक सीमा सेहो कविता आ काव्यशास्त्रक बीच सम्बन्धमे अछि। आलोचनाक उद्देश्य केवल ई प्रमाणित करब नहि जे अमुक पद अमुक नायिका-भेदमे समाहित अछि; मुख्य प्रश्न ई अछि जे ओहि पदमे विद्यापतिक काव्यभाषा पारम्परिक भेदकेँ कोना परिवर्तित करैत अछि। पुस्तकक अन्तिम निष्कर्षमे राधाक एकरे अनेक रूपकेँ समेकित देखबाक आग्रह एहि सीमाक समाधान दिस संकेत करैत अछि। लेखक एकाङ्गी विद्वत्-व्याख्याक आलोचना करैत राधाकेँ रस, साधना, सौन्दर्य आ अनुभूतिक संगम मानैत छथि। (पृ. ४१-४२)

समग्र निर्णय

ई आलेखक केन्द्रवर्ती योगदान कोनो एकटा ‘अन्तिम राधा’ घोषित करब नहि, वरन् राधा-विवेचनमे प्रयुक्त भिन्न-भिन्न व्याख्यात्मक उपकरणक सीमा स्पष्ट करब अछि। अहिना विद्यापति अध्ययनमे सम्प्रदायगत ग्रहण, साहित्यशास्त्र आ लौकिक अनुभूतिक स्तर परस्पर संवाद करैत अछि। आलोचकक दृष्टिमे ई बहुविधता स्वयं साहित्यक समृद्धि थिक; शोधार्थीक लेल शिक्षा ई जे पदक प्रसंग, भाषा, भाव, पाठान्तर आ उत्तरवर्ती व्याख्या अलग-अलग प्रमाण-वर्गमे रखि तखन समेकित निष्कर्ष निकालल जाय।

४. ‘विद्यापतिक पार्वतीक स्वरूप’: शाक्त अवधारणा आ गृहस्थ जीवनक यथार्थ (पृ. ४३-५२)

पौराणिक पात्रसँ मैथिल नारीक अनुभव धरि

लेखक पार्वतीक अध्ययनक आरम्भ नारीक कन्या, भार्या आ माता—एहि तीन सामाजिक अवस्थाक उल्लेखसँ करैत छथि। गौरी, उमा, भवानी आ माहेश्वरीक पौराणिक पहचान उपस्थित करैत ओ मिथिलामे गौरीपूजनक वैवाहिक प्रसंगसँ विद्यापतिक पदावली धरि पहुँचैत छथि। ई पद्धति पाठककेँ बुझबैत अछि जे शिव-पार्वतीक कथा स्थानीय सांस्कृतिक अर्थ प्राप्त करैत कोना पारिवारिक जीवनक कथा बनि जाइत अछि। गौरीक पूजा केवल देवपूजन नहि, मनोवाञ्छित वर, सौभाग्य, दाम्पत्य-सहयोग आ घरेलू स्थिरतासँ जोड़ल लोकविश्वासक एकटा सामाजिक रूप सेहो अछि। (पृ. ४३-४४)

एहि आरम्भमे संस्कृति आ साहित्यक सम्बन्ध सघन अछि। पार्वतीक पौराणिक श्रेष्ठता आ सामान्य कन्याक वैवाहिक विवशता बीच दूरी रहितो लेखक पदावलीमे हुनक पारस्परिक प्रविष्टि देखैत छथि। एहि कारण आलेखकेँ केवल शिव-पार्वतीक चरित्र-परिचय मानब उचित नहि; एकरा

पदैत काल विवाह-संस्था, स्त्रीक निर्णयाधिकार, आर्थिक विपन्नता आ पारिवारिक मान-अपमान जकाँ सामाजिक प्रश्न लगातार सोझाँ अबैत अछि।

पराशक्ति आ घरेलू चरित्रक द्वैत

आलेखमे देवीमाहात्म्यक सन्दर्भसँ गौरीक पराशक्ति-स्वरूपक विवेचन अछि। ब्रह्मा, विष्णु आ शिवक शक्तिरूपक समेकन, सृष्टि-पालन-संहारक अवधारणा आ देवीक विविध रूपक वर्णनसँ लेखक शाक्त साहित्यिक पृष्ठभूमि स्थापित करैत छथि। ई पृष्ठभूमि आवश्यक अछि कारण विद्यापतिक पदावलीमे शिवपत्नीक घरेलू व्यवहारक संगहि शक्तिस्वरूपिणी देवीक महिमा उपस्थित अछि। लौकिक आ अलौकिक दूनू स्तर बिना पाठक गौरीक चित्र अपूर्ण रहि सकैत अछि। (पृ. ४४-४५)

एहि द्वैतक व्याख्या लेखकक श्रेष्ठ आलोचनात्मक कार्यसभमे अछि। एक दिस पार्वती जगत्शक्ति छथि; दोसर दिस ओ कम आय, भिक्षाटन, अस्थिर भोजन-व्यवस्था आ पतिक नशाक कारण दुखी स्त्रीक रूपमे चित्रित छथि। एहि दुइ रूपकेँ विरोध नहि, काव्यक अर्थोत्पादक तनाव मानल जा सकैत अछि। जखन देवी साधारण गृहिणीक चिन्तामे बोलैत छथि, तखन लोकपाठक धार्मिक पात्र अपन परिचित परिवेशमे उतारि अनैत अछि। एहि रूपान्तरणमे विद्यापतिक हास्य आ करुणा एक दोसरकेँ सबल करैत अछि। (पृ. ४७-५१)

पूर्वराग, परिणय आ अनमेल विवाह

पार्वतीक पूर्वरागक चर्चा करैत लेखक तपस्वी शिवकेँ देखलाक बाद गौरीक आकृष्ट होयब, मेनाक सन्देह, वरक रूप-रङ्ग, उम्र, धनहीनता आ विवाहक सामाजिक दबावक प्रसंग प्रस्तुत करैत छथि। शिवक कुरूपता आ निर्धनता पर हँसी केनिहार लोकसमुदायक समक्ष मेनाक क्रोधक अन्तर्गत मातृत्वक भय अछि। लेखक एहि प्रसंगकेँ मैथिल समाजमे अनमेल विवाहक अनुभूतिसँ जोड़ैत छथि। एहि जोड़सँ पौराणिक कथा सामाजिक आलोचनाक रूप पबैत अछि। (पृ. ४५-४६)

महत्त्वपूर्ण प्रश्न ई अछि जे विवाहमे कन्याक अभिलाषा आ परिवारक निर्णयक सम्बन्ध केना बनैत अछि। लेखक कतोक पदक आधार पर गौरीक प्रेमनिष्ठा आ परिवारक विवशताकेँ एकहि कथामे पहचानैत छथि। मुदा जखन विवश स्वीकृतिकेँ आदर्श स्त्रीधर्म मानबाक पुरातन दृष्टि

प्रमुख बनैत अछि, तखन नारीक स्वतन्त्र इच्छा पाछाँ छूटि सकैत अछि। आलेखक सामग्री स्वयं एहि तनाबकें उजागर करैत अछि: गौरी प्रेम करैत छथि, विरोध अथवा असन्तोषक परिवेश देखैत छथि, आ तकर बाद सामाजिक मर्यादा भीतर अपन स्थान निर्माण करैत छथि। एतय आलोचनात्मक पाठकें समर्पण आ प्रतिरोध दूनू पढ़बाक चाही।

पतिनिष्ठा, नैहरक उपेक्षा आ आर्थिक असुरक्षा

लेखक विवाहित गौरीक पतिनिष्ठाक अनेक पद उद्धृत करैत छथि। शिवक अपमान होयब, सासुर-नैहरक सम्बन्धमे तकर प्रभाव पड़ब, आर्थिक रूपसँ असमर्थ पतिक उपेक्षा सहब—ई उदाहरण मिथिलाक दाम्पत्य जीवनक वर्गीय आ सामाजिक यथार्थ सोझाँ अनैत अछि। विशेषतः नैहरमे शिवक अनादर आ पार्वतीक मौन ग्लानि-वेदना वाला प्रसंग नायिकाक गुप्त मनःस्थिति प्रकट करैत अछि। लेखक एहि मौनकें लज्जा, स्नेह, मान आ मर्यादाक बीच संघर्षक रूपमे व्याख्यायित करैत छथि। (पृ. ४६-४८)

आर्थिक अभावक अंशमे शिवक भिक्षाटन आ घरक दैन्य मुख्य कारण बनैत अछि। गौरीक चिन्ता महज धनलोभ नहि, भोजन, घर, वस्त्र आ परिवारक जीवनयापनक व्यावहारिक समस्या थिक। एहि बिन्दुपर लेख आलोचनासँ अधिक समाजार्थिक पाठ बनि जाइत अछि। शैव पदावलीमे स्त्रीक श्रम आ गृहस्थी पर पड़ैत आर्थिक दबावकें लेखक पहचानैत छथि। ई दृष्टि विद्यापतिक शैव गीतकें केवल भक्तिपरक पाठसँ अलग सामाजिक दस्तावेजक काव्यात्मक रूपमे देखबाक अवसर दैत अछि। (पृ. ४८-४९)

साचिव्य, व्यसन-विरोध आ दाम्पत्यक सक्रिय नारी

पार्वतीक ‘साचिव्य’क व्याख्या एहि आलेखक महत्त्वपूर्ण मौलिक पक्ष अछि। गौरी शिवकें श्रम आ कृषि-कर्म करबाक सलाह दैत छथि, भिक्षाटनसँ प्रतिष्ठाक हानि पर विचार रखैत छथि आ भाङ-प्रसंगक परिणामपर चिन्तित होइत छथि। ई नारी मात्र पतिक अनुगामिनी नहि; ओ घरेलू अर्थनीति आ आचरणमे विवेकशील हस्तक्षेप करैत छथि। लेखक एहि सलाहकें पत्नी-सुलभ करुणा, स्नेह आ सुधारक सक्रियताक परिचायक मानैत छथि। (पृ. ५०-५१)

एतय आधुनिक आलोचनाक लेल सूक्ष्म अन्तर राखब आवश्यक अछि। ‘पतिनिष्ठा’क आदर्शक अन्तर्गत पत्नीकें पतिक सुधारक बनाओल गेल अछि, मुदा पतिक व्यसन, काम-विभाजन आ

संसाधन-वितरणपर प्रश्न उठायब स्त्रीक आलोचनात्मक चेतनाक साक्ष्य सेहो अछि। पार्वतीक कथनमे केवल त्याग नहि, पारिवारिक निर्णयक प्रश्न सेहो उपस्थित अछि। लेखकक उदाहरणसभक एहि पुनर्पाठसँ गीतक सामाजिक गम्भीरता आरो स्पष्ट होइत अछि।

मुख्य आलोचनात्मक उपलब्धि

एहि आलेखमे विद्यापतिक पार्वती शाक्त उपासनाक मूर्ति, प्रेममे आकुल कन्या, विवाहक तनावमे फँसल नारी, अपमान सहनिहार पत्नी आ गृहस्थीक व्यावहारिक सलाहकार—सभ रूपमे अबैत छथि। लेखकक विश्लेषणक सार्थकता एहि बहुस्तरीय चरित्र-निर्माणमे अछि। तथापि लोकक विवाहगीत आ विद्यापतिक मूल पदक पाठ-परम्परा अलग-अलग स्रोतमे तुलना कएल जाए तँ कोन मोटिफ पदावलीक निजी सर्जना अछि आ कोन व्यापक मिथिला-लोकपरम्पराक अंश, से आरो स्पष्ट होयत। एहि सम्भावनाकेँ पुस्तकक सामग्री पर्याप्त आधार दैत अछि।

५. ‘सुमनजीक मुक्तककाव्यमे नारी’: परम्परा, प्रकृति आ सामाजिक नारी-रूप (पृ. ५३-६४)

आलोचनाक चारि प्रमुख कोटि

सुमनजीक कविता सम्बन्धी आलेख चारि प्रमुख कोटिमे नारी-चित्रणक विवेचन करैत अछि: पौराणिक स्वरूप, प्रकृतिमे आरोपित स्वरूप, काव्यशास्त्रीय स्वरूप आ लौकिक स्वरूप। ई कोटि सरल शीर्षक नहि; प्रत्येकक संग नारीक स्थान, रूपायनक विधि आ कविक भावनात्मक अभिप्रायक अन्तर बदलैत अछि। लेखक पहिले भारतीय सांस्कृतिक दृष्टिमे नारीक महिमा प्रस्तुत करैत छथि, तखन सुमनजीक अनेक काव्य-रचनाक आधार पर एहि चारि रूपक विस्तार करैत छथि। (पृ. ५३-५४)

एहि वर्गीकरणक एकटा मुख्य लाभ ई अछि जे नारीकेँ मात्र शृंगारक पात्रक रूपमे सीमित नहि कएल गेल अछि। देवीक शक्ति, प्रकृतिक जीवित प्रतिमा, काव्यक नायिका आ घर-समाजक व्यक्ति—प्रत्येक रूपक अलग सांस्कृतिक प्रयोजन अछि। मुदा एहि कोटिसभक बीच सम्बन्ध प्रश्नातीत नहि। मातृत्व पौराणिक आ लौकिक दूनूमे अबैत अछि; प्रकृतिमे आरोपित स्त्री सेहो शृंगारशास्त्रीय प्रतिमासँ निर्मित भऽ सकैत अछि; अतः वर्गीकरण अध्ययनक सुविधा दैत अछि, सर्वथा पृथक वस्तुस्थितिक दावा नहि।

पौराणिक देवी आ घरक श्रम

पौराणिक कोटिमे लेखक शक्तिरूपिणी नारी, देवीक अनेक अभिधान, सृष्टि-पालनक कल्पना आ सुमनजीक शक्तिस्तुति-साहित्यक चर्चा करैत छथि। विशेष बात ई जे देवीक उच्च शास्त्रीय रूपक बाद लेख घरेलू स्त्रीक दैनिक श्रमक सजीव चित्र दिस मुड़ैत अछि। घर, द्वार, बाल-बच्चा, साफ-सफाई आ परिवारक व्यवस्थामे व्यस्त स्त्रीकेँ शक्तिक सामाजिक रूपक रूपमे देखाओल गेल अछि। एहि प्रसंगमे कविताक घरेलू क्रियासभ नारीक कार्यदक्षता आ सामाजिक अदृश्य श्रमक बिम्ब बनि अबैत अछि। (पृ. ५४-५५)

एतय एकटा द्वन्द्व अछि। घरक नारीकेँ देवी कहब सम्मानक भाषिक रूप थिक, मुदा एहि सम्मानक आड़मे ओकर श्रमक असमान वितरण, शिक्षा-अवसरक अभाव आ स्वायत्तताक सीमा ओझरायल नहि रहबाक चाही। पुस्तकक आलेख सुमनजीक संवेदनशील चित्रणक प्रशंसा करैत अछि, किन्तु घरेलू शक्तिरूपक अन्तर्गत स्त्रीपर पड़ैत सामाजिक दायित्वक आलोचनात्मक परीक्षण अपेक्षाकृत कम करैत अछि। आजुक पाठक एहि कवितासभमे आदर्शिकरण आ यथार्थ—दूनों प्रश्न देखब।

प्रकृतिक नारीकरण: बिम्ब-विधानक कार्य

प्रकृतिमे आरोपित स्वरूपवाला खण्डमे चान, इजोरिया, लता, किसलय, ऋतु, नदी आ मौसमक मानवीकरण उपस्थित अछि। लेखक नारीक रूप, वयःस्थिति, स्वर, भाव आ वात्सल्यकेँ प्रकृतिक दृश्य आ अनुभवक संग जोड़ैत सुमनजीक काव्यक सौन्दर्य-विन्यास बुझबैत छथि। ‘इजोरिया’केँ स्त्रीक रूपमे देखब प्रकृति-वर्णनक एकटा विशिष्ट कल्पनाशील उपाय अछि; एतय बाहरी संसारकेँ मानवीय सम्बन्धसँ अर्थवान बनाओल जाइत अछि। (पृ. ५५-५७)

लेखकक एक महत्वपूर्ण अवलोकन ई अछि जे प्रकृतिक सौन्दर्यक संग नारीक भीतरी वेदना, करुणा आ मातृत्व सेहो जुड़ल अछि। शरदक वृद्धा-माताक स्वरूप होअय अथवा वर्षाक वात्सल्यपूर्ण प्रकृति—एहि चित्रसभसँ नारीक जीवनकेँ केवल युवती-सौन्दर्यक संकीर्ण दायरासँ बाहर अनबाक प्रयास देखाइत अछि। एहि उदाहरणसभक बल पर प्रकृति-काव्यक समीक्षा केवल अलंकारक सूची नहि रहि भावक इतिहास बनैत अछि। (पृ. ५७-५८)

तथापि प्रकृतिक नारीकरणक सांस्कृतिक राजनीति पर प्रश्न उठेब आवश्यक अछि। स्त्रीकेँ ‘स्वाभाविक रूपसँ’ ममतामयी, त्यागमयी आ सौन्दर्यमयी मानबाक रूढ़ि सामाजिक भूमिकाकेँ प्राकृतिक सत्यजकाँ प्रस्तुत करि सकैत अछि। सुमनजीक काव्यबिम्बक कलात्मकता स्वीकार करैत ई सेहो देखल जाय जे कोन सामाजिक अपेक्षा एहन रूपकद्वारा पुष्ट होइत अछि आ कोन जीवनानुभव अदृश्य रहि जाइत अछि। एहि स्तरपर लेखकक आलोचनात्मक सामग्री पुनर्विचारक लेल उपयोगी अछि।

नायिका-भेद, ‘ललना-लहरी’ आ परम्परागत शिल्प

काव्यशास्त्रीय खण्डमे लेखक नख-शिख वर्णन, नायिका-भेद, वयःसन्धि, अलंकार, देशभेद, रस आ वृत्तिक आधार पर कवितासभ पढ़ैत छथि। ‘ललना-लहरी’जकाँ रचनामे क्षेत्रानुसार नारीक सौन्दर्य आ प्रवृत्तिक काव्यात्मक वर्गीकरण तथा संस्कृत काव्यशास्त्रक भेदसभक प्रयोग चिन्हित कएल गेल अछि। लेखक ईहो स्वीकार करैत छथि जे कतिपय नारी-चित्र पुरातन परम्पराक पुनरावृत्ति बनि जाइत अछि आ ताहिमे नूतनता सीमित रहैत अछि। ई आत्मसचेत आलोचना आलेखक गुण थिक; लेखक केवल प्रशंसात्मक निर्णय नहि दैत छथि। (पृ. ५८-६१)

एहि खण्डमे काव्यशास्त्रीय शब्दसंग्रहक प्राचुर्यसँ आलोचनाक ज्ञानपरकता बढ़ैत अछि, मुदा नारी-चित्रक स्वयं बोलबाक स्थानक परीक्षण कम होइत अछि। नायिका-भेदक सूचीमे पात्र प्रायः बाह्यदृष्टिसँ निरूपित होइत छथि। एखन शोधक प्रश्न होयत जे सुमनजीक रचनामे स्त्रीक निजी कथन, संवाद, निर्णय आ प्रतिरोध कतेक भेटैत अछि। केवल रूप-वर्गीकरणसँ ई प्रश्नक उत्तर नहि भेटि सकैत अछि।

लौकिक नारी: प्रेमिका, पत्नी, कन्या, माता

लौकिक स्वरूपक अन्तर्गत लेखक पारिवारिक सम्बन्धक अनेक अवस्था देखैत छथि। कन्याक विदाइ, प्रियाक आशा, विवाहित जीवनक सहचर्य, माँक वात्सल्य आ विधवाक वेदनाक चर्चा नारी-अनुभवक भावात्मक विस्तार दैत अछि। सुमनजीक रचनामे राष्ट्रबोध आ कर्मप्रेरणाक प्रसंगमे नारी शक्तिरूपमे आवाहन कएल जाइत छथि। लेखक एहि बहुविध रूपकेँ कविक सामाजिक चेतना आ करुणाशीलताक साक्ष्य मानैत छथि। (पृ. ६१-६४)

एहि विवेचनक सशक्त पक्ष नारीक सौन्दर्यबोधसँ सामाजिक संवेदना धरि क्रमिक विस्तार अछि। मुदा ‘माता, पत्नी, बहिन, कन्या’ एहन सम्बन्ध-सूची नारीक स्वायत्त नागरिक व्यक्तित्वक सम्पूर्ण परिभाषा नहि। लेखिका, श्रमिक, शिक्षार्थिनी अथवा निर्णय लेनिहार स्त्रीक व्यक्तिगत चेतनाक अनुपस्थिति स्वयं अध्ययनक विषय बनि सकैत अछि। लेखकक काल-सन्दर्भक भीतर एहि कमीकेँ देखैत ‘सुमनजीक नारी-चित्रण’केँ कविक संवेदनशीलता आ परम्परागत लिंग-भूमिकाक द्वैतक रूपमे समझब अधिक न्यायसंगत होयत।

समग्र मूल्यांकन

बारह पृष्ठक एहि आलेखक महत्त्व ई जे लेखक नारीक साहित्यिक कल्पनाक सम्बन्ध पुराण, प्रकृति, शास्त्र आ परिवारसँ एक संग जोड़ैत छथि। काव्यक परम्परागत चमत्कार आ नारीक घरेलू जीवनक यथार्थक बीच आलोचनात्मक अन्तर देखबाक आधार तैयार होइत अछि। जँ एहि आलेखकेँ अगिला अनुसन्धानक आधार बनाओल जाय, तँ सुमनजीक मूल कविता-प्रकाशनक काल, संग्रहानुसार भिन्नता आ स्त्रीक स्वतन्त्र वाणीकेँ अलग विश्लेषणात्मक स्तम्भ बनायब उपयोगी होयत।

६. ‘अमरजी ओ हुनक मैथिली पत्रकारिताक इतिहास’: साहित्यकारक रचनात्मकता आ इतिहासलेखनक समीक्षा (पृ. ६५-७८)

व्यक्तित्वपरक आलेखसँ पुस्तक-समीक्षा धरि

एहि आलेखमे डॉ. योगानन्द झा पहिले चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क शिक्षण, साहित्यसेवा, कविता, हास्य-व्यंग्य, नाटक, कथा आ पत्रकारितासँ जुड़ल गतिविधिक विवरण प्रस्तुत करैत छथि। तखन अमरजीक ‘मैथिली पत्रकारिताक इतिहास’क उद्देश्य, सामग्री, कालविभाजन, पत्र-पत्रिकाक विश्लेषण आ निष्कर्षपर विवेचन करैत छथि। ई रचना साधारण जीवनपरिचय अथवा प्रशंसापरक पुस्तक-समीक्षा नहि; एकटा इतिहासकारक जीवनानुभव आ हुनक लिखल इतिहासक पद्धति बीच सम्बन्ध स्थापित करबाक प्रयत्न अछि। (पृ. ६५-७३)

आलेखमे अमरजीक अनेक काव्यसंग्रह, हास्य-व्यंग्यक रचनाशीलता, साहित्यिक पत्रिकासँ जुड़ाव आ सामाजिक रुढ़ि-विरोधी दृष्टिक परिचय देल गेल अछि। लेखकक मान्यता अछि जे सामाजिक विसंगति पर सतत दृष्टि रखनिहार साहित्यकार पत्रकारिता-इतिहासमे सेहो जीवित

सामाजिक प्रक्रियाकें पहचानि सकैत छथि। ई सम्बन्ध सम्भावनापूर्ण अछि, मुदा रचनात्मक साहित्यक प्रतिभा अपने-आप इतिहासलेखनक प्रमाणिकता नहि बनबैत। इतिहासक दावाक जाँच मूल पत्रिका, अङ्क, सम्पादकीय, कालक्रम आ दस्तावेजसँ करब पड़ैत अछि। सौभाग्यसँ आलेखक उत्तरार्द्ध एहि स्रोतगत प्रश्न दिस बढैत अछि।

पत्रकारितामे सक्रिय सहभागिताक महत्त्व

अमरजीक पत्र-सम्पादन, स्तम्भ-लेखन आ मैथिली भाषाक सार्वजनिक प्रसारमे सक्रिय भूमिकाकें लेखक महत्वपूर्ण मानैत छथि। पत्र-पत्रिकाक व्यवहारिक कठिनाइ—सामग्री संकलन, सम्पादन, प्रकाशन, पाठकवर्ग आ वितरण—सम्बन्धी अनुभव इतिहासकारकें संस्थागत पक्ष बुझबामे सहायता करैत अछि। आलेखमे ‘वैदेही’, ‘स्वदेश’ आ अन्य पत्रिकासँ सम्बन्धित गतिविधिक उल्लेख एहि सन्दर्भमे कएल गेल अछि। (पृ. ७१–७३)

परन्तु एतय आलोचनाक मूल प्रश्न ई अछि जे स्वयं आन्दोलनक सहभागी इतिहासकारक मूल्यांकनमे आत्मीयता कतेक प्रवेश करैत अछि। नजदीकी अनुभव दुर्लभ सामग्री उपलब्ध करबैत अछि, संगहि पक्षधरता सेहो आन सकैत अछि। योगानन्द झा अमरजीक अनुभवकें महत्वपूर्ण योग्यता मानैत छथि; शोधार्थीकें एहि महत्त्वकें स्वीकार करैत वैकल्पिक स्रोतक मदति सँ कथनक परीक्षण करबाक चाही। प्रत्यक्ष अनुभव आ अभिलेखीय निष्पक्षता पूरक होइत अछि, स्वतः एकरूप नहि।

‘मैथिली पत्रकारिताक इतिहास’क संरचना

लेखकक विवरण अनुसार इतिहासग्रन्थमे पत्रकारिताक सिद्धान्त, पत्र-पत्रिकाक सामाजिक भूमिका, प्रकाशक-सम्पादकक दायित्व आ मैथिली पत्रकारिताक विकासक चर्चा अछि। पृ. ७४ पर विवेच्य पत्र-पत्रिकाक समय-सीमा १९०५ सँ १९७९ धरि आ पत्र-पत्रिकाक संख्या ८७ बताओल गेल अछि। ई संख्या अमरजीक इतिहासग्रन्थक संदर्भमे योगानन्द झा द्वारा उद्धृत विवरण थिक; एकरा मैथिली पत्रकारिताक सार्वकालिक अन्तिम गणना नहि मानल जाय। आलेख पत्रिकाक प्रकाशन-अवधि, प्रकार आ भाषिक-सांस्कृतिक योगदानक अनुसार खण्ड-विभाजनक विवेचन करैत अछि। (पृ. ७३–७५)

एहि स्वरूपक बल पत्र-पत्रिकाकें मात्र शीर्षक-सूची मानबाक बदला संस्थागत इतिहासक वाहक बनायब अछि। कोन पत्र शिक्षा-प्रसारमे योगदान देलक, कोन भाषा-आन्दोलनक स्वर बनल, कोन सामाजिक प्रश्न उठेलक, आ कोन आर्थिक वा सम्पादकीय कारणसँ स्थिर नहि रहि सकल—एहन प्रश्न इतिहासकें सामाजिक इतिहासमे विस्तृत करैत अछि। लेखक अमरजीक पत्रिका-विश्लेषणमे राजनीतिक, शैक्षणिक, भाषिक आ सांस्कृतिक योगदानक समेकित मूल्यांकनक प्रशंसा करैत छथि।

कालक्रम, सुधार आ प्रामाणिकताक परीक्षण

आलेखमे भिन्न इतिहासकारक कथनमे पत्रिकाक प्रारम्भ-वर्ष, सम्पादक अथवा पुनर्प्रकाशन सम्बन्धी मतभेदक चर्चा अछि। अमरजी कतोक पूर्ववर्ती भ्रान्तिक संशोधन करबाक प्रयास कयने छथि—ई योगानन्द झाक प्रमुख मूल्यांकन अछि। एहि प्रसंगमे लेखक ग्रन्थक कालक्रमकें महत्त्व दैत छथि आ पत्रकारिताक लगभग तीन चरणक संकेतक चर्चा करैत छथि। (पृ. ७६–७७)

ई तुलना इतिहासलेखनक प्रामाणिकताक दृष्टिँ महत्त्वपूर्ण अछि। तथापि ‘अमुक पूर्ववर्ती मत गलत छल’ एहन निर्णायक टिप्पणी आन्तरिक विवेचनक आधार पर तखनहि मान्य होयत जखन सम्बन्धित मूल अङ्क अथवा दस्तावेज देखल जाय। एहि समीक्षामे उक्त सुधारसभकें मूल पुस्तकक ऐतिहासिक दावा मानल गेल अछि, स्वतन्त्र रूपे प्रमाणित तथ्य नहि। एही सावधानीसँ आलेखक उपयोगिता सुरक्षित रहैत अछि आ अनुसन्धानक उत्तरदायित्व सेहो स्पष्ट होइत अछि।

ग्रन्थक अपूर्णता आ नामकरण-विवाद

योगानन्द झा अमरजीक इतिहासग्रन्थक अपूर्णता सेहो स्वीकार करैत छथि: सभ पत्र-पत्रिकाक सभ अङ्क उपलब्ध नहि छल, ताहि कारण कतोक विवेचन उपलब्ध सामग्री अथवा पूर्वमत पर निर्भर रहल। इतिहासग्रन्थक नाम ‘पत्रकारिताक इतिहास’ हेबाक औचित्य पर उठाओल आलोचनाक चर्चा करैत लेखक पत्रकारिताकें केवल दैनिक समाचारपत्रक संचालन धरि सीमित करबाक विरुद्ध तर्क दैत छथि। पत्रिका, विचार-विनिमय, जनचेतना, सम्पादकीय हस्तक्षेप आ सामाजिक आन्दोलन सेहो पत्रकारिताक व्यापक अर्थमे अबैत अछि—ई लेखकक पक्ष अछि।

(पृ. ७७–७८)

नामकरण-विवादमे लेखकक तर्क सशक्त अछि। जँ पत्रकारिताकेँ केवल दैनिकता-सापेक्ष मानल जाय तँ साप्ताहिक, पाक्षिक आ मासिक पत्रक सार्वजनिक हस्तक्षेपक इतिहास उपेक्षित भऽ सकैत अछि। तथापि पत्रकारिता-इतिहास, पत्रिका-सूची आ सम्पादकीय-सांस्कृतिक इतिहासक बीच कार्यपद्धतिक अन्तर स्पष्ट राखब आवश्यक अछि। लेखक नामकरणक प्रतिरक्षा करैत छथि; भावी अनुसन्धानमे प्रत्येक विधाक स्रोतसम्पदा आ विश्लेषणात्मक प्रश्न अलग रूपे निश्चित करब सम्भव अछि।

बाहरी अभिलेखसँ पुष्ट भऽ सकल तथ्य

साहित्य अकादेमीक आधिकारिक पुरस्कार-सूची चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’केँ ‘Maithili Patrakaritaka Ithihas’ लेल १९८३क मैथिली साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्तकर्ता बतबैत अछि। पुस्तकक प्रकाशन-सूची सम्बन्धमे जापानक CiNii पुस्तकालयीय अभिलेख ग्रन्थक लेखक चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’, प्रकाशक मैथिली अकादेमी, पटना, प्रकाशन-वर्ष १९८१ आ मुख्य ग्रन्थक ४०५ पृष्ठक विवरण दैत अछि। ई दू तथ्य बाहरी सन्दर्भसँ पुष्ट अछि; योगानन्द झाक आलेखमे उल्लिखित अन्य पत्रिका-वर्ष आ सम्पादकीय विवरणक समुच्चयक एहन स्वतन्त्र जाँच एहि अध्यायमे कएल नहि गेल अछि। (बाहरी स्रोत: साहित्य अकादेमी पुरस्कार-सूची; CiNii, BA83217091)

समग्र निर्णय

एहि आलेखक सर्वाधिक महत्त्व ई जे एकटा साहित्यकारक जीवनीक माध्यमे मैथिली पत्रकारिताक ऐतिहासिक साक्ष्य, सम्पादकीय-परम्परा आ भाषा-आन्दोलनक अन्तर्सम्बन्ध उजागर होइत अछि। साथे इतिहासग्रन्थक अपूर्णता स्वीकार करबाक कारण समीक्षा केवल स्तुति नहि रहैत अछि। तदपि पुस्तकमे देखाओल सुधारसभक मूल अभिलेख-आधारित पुनःपरीक्षण, पत्रिका-विशेषक सम्पूर्ण डिजिटल सूची आ संस्थागत आर्थिक विवरण अगिला आवश्यक कार्य अछि। ई प्रश्न उठैब स्वयं लेखकक शोधभावनाक विस्तार थिक।

७. ‘मैथिली कथा साहित्यमे वर्णन, संवाद ओ भाषा’: कथा-शिल्पक ऐतिहासिक विवेचन (पृ. ७९-९३)

कथाक अङ्ग आ रूपक प्रश्न

लेखक कथा-विधाक छओ प्रमुख तत्त्वक उल्लेख कऽ वर्णन, संवाद आ भाषाकेँ कथानक आ चरित्रक प्रभावकारी सम्प्रेषणक उपकरण मानैत छथि। कथा साहित्यक लक्ष्य मात्र घटना कहल नहि, अपितु पात्रक अन्तरमन, परिवेशक दबाव, घटनाक गति आ पाठकक अनुभूति धरि पहुँचनाइ अछि। एहि दृष्टिँ लेखक वस्तु आ चरित्रक संग शिल्पक सम्बन्ध जोड़ैत छथि। शिल्पकेँ बाहरी सजावट मानबाक बदलामे कथ्यकेँ अर्थवान बनयबाक सक्रिय प्रक्रिया बुझब एहि आलेखक मूल पद्धति अछि। (पृ. ७९-८०)

आलेखक प्रवेशमे ‘आधुनिक कथा’क अनेक गुणक चर्चा भेटैत अछि—संगठन, औत्सुक्य, संक्षिप्तता, मनोवैज्ञानिकता, अनुकूल संवाद आ प्रभावपूर्ण भाषा। ई कसौटी कथा-पठनक लेल उपयोगी अछि, किन्तु आधुनिक कथाक सभ प्रयोग एकहि प्रकारक संगठन वा उत्कर्षबिन्दुक अनुसरण नहि करैत अछि। खण्डित संरचना, अविश्वसनीय कथावाचक आ जानि-बुझिक अवसादपूर्ण अन्त सेहो समकालीन कथा-शिल्पक साधन भऽ सकैत अछि। ताहि लेल लेखकक प्रस्तावित गुणकेँ वर्णनात्मक मानदण्ड मानल जाय, अनिवार्य शास्त्रीय नियम नहि।

मैथिली कथाक विकास-यात्रा

लेखक आरम्भिक अनुवाद, आख्यान-आख्यायिका, नैतिक उपदेशप्रधान गद्य आ आधुनिक मौलिक कथा बीच ऐतिहासिक अन्तर देखैत छथि। मुद्रण, भाषासम्पर्क आ बंगला कथा-साहित्यक प्रभावक उल्लेखक बाद ओ सामाजिक कुरीति-विरोध, कथानकक संक्षिप्तीकरण आ चरित्रक मनोविज्ञान दिस मैथिली कथाक विकासक रेखा खींचैत छथि। आरम्भिक लेखकसभक संग हरिमोहन झा आ अनेक उत्तरवर्ती कथाकारक उल्लेख एहि विवेचनकेँ केवल सिद्धान्त-चर्चा नहि रहि साहित्येतिहाससँ जोड़ैत अछि। (पृ. ८०-८१)

एतय इतिहास-लेखनक एकटा आवश्यक सावधानी अछि। ‘अनुवाद’सँ ‘मौलिकता’ आ ‘उपदेश’सँ ‘मनोवैज्ञानिकता’ दिस विकासक एकरेखीय यात्रा बनाओलापर समान कालमे उपस्थित भिन्न कथा-शैलिक विविधता अनदेखल रहि सकैत अछि। अनुवादित कथामे सेहो सर्जनात्मक रूपान्तरण सम्भव अछि; लोकआख्यान आ आधुनिक लघुकथा एक दोसरसँ विच्छिन्न नहि। लेखकक विकासक्रम उपयोगी परिचय दैत अछि, मुदा एहि क्रमक वैकल्पिक शाखासभकेँ स्रोत-आधारित पृथक इतिहासमे देखबाक चाही।

वर्णन-वैशद्य आ संक्षिप्त कथाभाषा

वर्णन-विषयक खण्डमे लेखक आरम्भिक गद्यक अलंकारबहुल, दीर्घ आ काव्यात्मक चित्रणकेँ आधुनिक कथाक अपेक्षाक संग तुलना करैत छथि। पात्र, दृश्य आ घटना स्पष्ट करबाक वर्णन-शक्ति आवश्यक अछि, किन्तु अत्यधिक अलंकार कथाक गति रोकि सकैत अछि। लेखक ‘गागरमे सागर’क संक्षिप्तता दिस झुकावकेँ आधुनिक कथाक शिल्पगत उपलब्धि मानैत छथि। एहि आधार पर ओ आवश्यक विवरण आ अनावश्यक विस्तारक बीच भेद करैत छथि। (पृ. ८२–८४)

एहि तर्कक लाभ व्यावहारिक अछि। कथा लिखैत समय दृश्य-वर्णनक प्रत्येक वाक्यसँ पूछल जा सकैत अछि—ई घटना, पात्र अथवा भावकेँ की नव अर्थ दैत अछि? किन्तु अलंकारबहुल गद्य स्वतः दोष नहि; सामाजिक विडम्बना, कथावाचकक व्यक्तित्व, भाषिक स्मृति अथवा स्थानीय परिवेशक सघनता हेतु दीर्घ वर्णन आवश्यक भऽ सकैत अछि। अतः ‘कम शब्द’केँ ‘श्रेष्ठ कथा’क सार्वभौम कसौटी नहि बनायब उचित। लेखकक उद्धृत उदाहरणसभकेँ शैलीक कार्य-विश्लेषणक माध्यमे बुझब अधिक सम्यक् होयत।

पात्रक चित्रण, समाजचित्र आ अन्तःस्थितिक विस्तार

वर्णनक अन्य रूपमे लेखक पात्रक वेश-भूषा, शारीरिक रूप, मनोभाव, सामाजिक परिस्थिति आ समयविशेषक वर्णनक चर्चा करैत छथि। एहि विवरणक माध्यमे कथा एकटा अमूर्त नैतिक कथनसँ मूर्त सामाजिक संसारमे प्रवेश करैत अछि। वर्ग-संघर्ष, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, शोषण आ विस्थापनसँ सम्बन्धित उदाहरण देखबैत अछि जे सामाजिक यथार्थ कथाक प्रारम्भिक दृश्यसँ प्रकट होयब सम्भव अछि। वर्णन कथानकक गति रोक्कैत नहि; ओ आगाँक घटना लेल पाठकक अपेक्षा निर्मित सेहो करैत अछि। (पृ. ८३–८५)

लेखकक विश्लेषणमे मनोवैज्ञानिक कथाक विकासक चर्चा सेहो महत्वपूर्ण अछि। बाह्य क्रियाक वर्णनसँ पात्रक भीतरक आशंका, हीनभाव, क्रोध, प्रेम वा भ्रमक चित्रण दिस बदलाव कथाक अनुभूति गाढ़ करैत अछि। मुदा ‘भीतर’ आ ‘बाहर’ स्वतः अलग नहि; देहभाषा, सामाजिक सम्बोधन, घरेलू वस्तु आ मौन सेहो मनःस्थितिक संकेत बनैत अछि। एहू दृष्टिँ आलेखक उदाहरणसभक पुनर्पाठ कएल जाए तँ सामाजिक आ मनोवैज्ञानिक कथाक बीच कृत्रिम विरोध कम होयत।

संवादक नाटकीयता आ चरित्र-निर्माण

आलेखमे संवादकें कथाक गति आ पात्रक स्वभाव उद्घाटित करबाक महत्त्वपूर्ण साधन मानल गेल अछि। लेखक नाटकीय संवाद, कथन-चिह्नसँ रहित संवाद आ स्वाभाविक लोकसंवादजकाँ रूपक विवेचन करैत छथि। संवाद कतय कथाकारक बाहरी टिप्पणी कम करैत अछि, कतय पात्रक वर्गीय भाषा परिचित करबैत अछि आ कतय केवल बातचीतक सहारे कथा-वस्तु आगाँ बढ़ैत अछि—ई भेद उदाहरणसभक संग सोझाँ अबैत अछि। (पृ. ८५-८७)

लेखक संवादक मात्रा आ कार्यक चर्चा करैत जखन संवादप्रधान कथा दिस संकेत करैत छथि, तखन कथा-विधाक सीमासभपर महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठैत अछि। नाटकजकाँ बातचीत प्रधान होइतो कथा अपना कथन-संरचनाकें सुरक्षित रखि सकैत अछि। प्रश्न ई नहि जे संवाद कतेक पाँति अछि; प्रश्न ई जे ओकर भीतर पाठक पात्रक बीच अव्यक्त तनाव, कथानकक अन्तराल आ कथनक अर्थसँ केना परिचित होइत अछि। एहि दृष्टिकोणसँ संवादक स्वाभाविकता केवल बोलीक नकल नहि, कलात्मक चयनक परिणाम अछि।

संस्कृतनिष्ठ, साहित्यिक आ लोकचलित भाषा

भाषा-विषयक खण्डमे लेखक मैथिली कथागद्यक परिवर्तित स्वरूपक विवेचन करैत छथि। प्रारम्भिक संस्कृतनिष्ठ शब्द-विन्यासक बाद सरस साहित्यिक मैथिली, सामान्य बोलचाल, वर्गविशेषक बोली आ क्षेत्रीय उच्चारणक प्रयोगकें साहित्यिक संवेदनाक विस्तारक रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि। हरिमोहन झाक भाषा-संरचनाकें लेखक विशेष महत्त्व दैत छथि। एतय कथाक भाषिक लोकतन्त्रीकरणक संकेत अछि: जे भाषा पहिने ‘ग्राम्य’ बुझल जाइत छल, ओ पात्र आ कथक आवश्यकताक कारण साहित्यिक अभिव्यक्तिक केन्द्रमे आबि सकैत अछि। (पृ. ८७-९०)

लेखक पात्रक जातीय, पेशागत आ क्षेत्रीय अनुभव अनुरूप भाषा-प्रयोगक प्रशंसा करैत छथि। एहि स्थानपर ई आलेख पुस्तकक प्रथम लोकसाहित्य-विषयक लेखसँ संवाद करैत अछि। पहिल आलेखमे जे लोकक मौखिक अभिव्यक्ति साहित्यिक अध्ययनक स्वतन्त्र वस्तु छल, सातम आलेखमे सएह लोक-भाषा आधुनिक रचनाक औजार बनैत अछि। दूनूकें जोड़ि देखलापर योगानन्द झाक भाषिक दृष्टिक व्यापकता स्पष्ट होइत अछि।

कृत्रिम बोली आ अन्य भाषाक प्रयोगपर आपत्ति

आलेखक एकटा तीक्ष्ण पक्ष ओहि कथाकारसभक आलोचना अछि जे निम्नवर्ग वा ग्रामीण पात्रक संग पर्याप्त सम्पर्क बिना ओकर भाषा बनायबाक प्रयास करैत छथि। लेखक एहन प्रयोगकेँ कृत्रिम भाषा मानैत छथि। एहि आपत्तिक सार्थकता स्पष्ट अछि: सामाजिक अनुभवक अभाव केवल भाषा-दोष नहि, प्रतिनिधित्वक त्रुटि बनि सकैत अछि। बोलीकेँ विचित्र अथवा हास्यास्पद बनाक प्रस्तुत करब पात्रक गरिमाक हानि पहुँचा सकैत अछि। (पृ. ९०-९१)

लेखक हिन्दी, उर्दू, बंगला, भोजपुरी, अंग्रेजी आदि भाषाक प्रयोगक सन्दर्भमे पात्रानुकूल स्वाभाविक मिश्रण आ अप्रासंगिक आरोपणक बीच भेद करैत छथि। ई भेद उचित अछि, मुदा 'विजातीय भाषा'क संज्ञाकेँ आजुक बहुभाषी परिवेशक तथ्यसँ जाँचबाक आवश्यकता अछि। नगर, प्रवासन, शिक्षा, बाजार, डिजिटल संवाद आ सीमा-पार सम्बन्धक कारण मिश्रित भाषा स्वयं पात्रक यथार्थ होइत अछि। ताहि लेल केवल शब्दक अन्य भाषासँ उत्पत्ति दूषणक प्रमाण नहि; ओकर प्रसंगगत सत्यता आ कलात्मक कार्यक परीक्षण अधिक उचित अछि। (पृ. ९१-९२)

आलोचनात्मक निर्णय

पन्द्रह पृष्ठक ई आलेख कथा-विधाक व्याकरण प्रस्तुत करबाक संग मैथिली गद्यक भाषिक इतिहासक एकटा रूपरेखा दैत अछि। एतय वर्णन, संवाद आ भाषाक चर्चा अलग-अलग होइतो तीनू कथाक अर्थ-निर्माणमे परस्पर निर्भर अछि। पुस्तकक अन्य अध्यायसँ तुलना करैत ई स्पष्ट होइत अछि जे लेखक लोकभाषाक सामर्थ्यक प्रबल समर्थक छथि, किन्तु अभिव्यक्तिक सहजता आ शुद्धताक सन्दर्भमे कतहु मानकीकरणक कड़ा आग्रह सेहो रखैत छथि। ई द्वन्द्व मैथिली भाषा-चर्चाक अध्ययन लेल विशेष मूल्यवान अछि।

८. 'देशी शब्दक अवधारणा': व्युत्पत्तिक सीमा आ शब्द-वर्गीकरण (पृ. ९४-९८)

'देशी' शब्दक समस्या केवल 'ठेठ' शब्द नहि

आलेखक आरम्भमे तत्सम, तद्भव, गृहीत आ देशी शब्दसभक भेद उपस्थित अछि। सामान्य अनुभवमे जे शब्दक संस्कृत अथवा अन्य ज्ञात मूल स्पष्ट नहि, ओकरा 'देशी', 'देशज' अथवा 'ठेठ' कहल जाइत अछि। लेखक मैथिलीमे प्रचलित एहन अनेक शब्दक उदाहरण दैत छथि आ ई चेतबैत छथि जे 'अज्ञात व्युत्पत्ति' अपने-आप 'संस्कृतसँ असम्बद्ध उत्पत्ति'क निर्णायक

प्रमाण नहि। जखन भाषाज्ञान बदलैत अछि, शब्दक वर्गीकरण सेहो बदलि सकैत अछि। एहि आलेखक सभसँ महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त यैह अछि। (पृ. ९४)

व्युत्पत्ति जाँचबाक प्रक्रिया बहुस्तरीय होइत अछि। शब्दक ध्वनि, अर्थ, ऐतिहासिक प्रयोग, पड़ोसी भाषामे उपलब्ध रूप, ध्वनि-परिवर्तनक नियम आ सम्भावित उधार—सभ पक्ष जोड़लापर मात्र उत्पत्तिक निष्कर्ष निकलैत अछि। लेखक एतय मुख्यतः पूर्ववर्ती सिद्धान्तकारक मत विवेचित करैत छथि; एहि विवेचनक मूल शिक्षा ई अछि जे शब्दक स्रोत नहि भेटब आ स्रोत कखनो छलैहि नहि—दूनू एक बात नहि।

प्राचीन आचार्यक धारणाक अन्तर

भरत, दण्डी, रुद्रट आ हेमचन्द्रक सन्दर्भ उपस्थित करैत लेखक शब्दवर्गीकरणक ऐतिहासिक विकास देखबैत छथि। एहि प्रवाहमे ‘देशी’ शब्दक अर्थ लेखक आ कालानुसार बदलैत अछि: कतहु संस्कृत-विनिर्मित रूपसँ पृथक जनप्रयोग, कतहु अज्ञात व्युत्पत्तिक शब्द, कतहु प्राकृत साहित्यक व्यवहारगत शब्द। एतय परिभाषाक स्थिरता नहि, बल्कि विद्वत्-परम्पराक प्रश्नोत्तर महत्त्वपूर्ण अछि। (पृ. ९४–९५)

हेमचन्द्रक परिभाषाक विवेचनमे ग्रन्थ अज्ञात उद्गम, व्याकरणसँ सिद्ध नहि होयबाक प्रश्न, संस्कृत कोशमे अर्थान्तर आ प्राकृत साहित्यक दीर्घ प्रयोगक सम्बन्ध रेखाङ्कित करैत अछि। देशी शब्दकें संस्कृतक एकटा ठोस विपरीत खेमामे राखब एहि इतिहासक जटिलता घटा दैत अछि। लेखकक प्रस्तुति स्पष्ट करैत अछि जे मध्यकालीन शब्दकोशकारक वर्गीकरण स्वयं निश्चित व्याकरणिक-कोशीय प्रयोजनक अन्तर्गत बनल छल। (पृ. ९५)

आधुनिक भाषावैज्ञानिकक पुनर्विचार

आलेखमे पिशेल, ग्रियर्सन, सुनीतिकुमार चटर्जी आ अन्य विद्वानक मतान्तरक विवेचन अछि। किछु दृष्टिकोण देशी शब्दक भण्डारमे प्राचीन आर्यभाषाक अप्रत्याशित अथवा अप्रत्यक्ष विकसित रूप देखैत अछि; किछु द्रविड़, मुण्डा आ अन्य भाषासम्पर्कक सम्भावनाक चर्चा करैत अछि; किछु शब्दक अज्ञात उद्गमकें भाषाशास्त्रीक ज्ञान-सीमासँ जोड़ैत अछि। लेखकक निष्कर्ष एहन नहि जे सभ मत समान रूपे सत्य अछि, अपितु ‘देशी’ वर्गक निश्चितता एतेक सहज नहि जतेक साधारण कोशीय सूची देखैत समय बुझना जाइत अछि। (पृ. ९६–९७)

एतय लेखकक सावधानी आधुनिक ऐतिहासिक भाषाविज्ञानसँ अनुरूप प्रश्न उठबैत अछि। ध्वनि-साम्य वा अर्थ-साम्य मात्र व्युत्पत्ति प्रमाणित नहि करैत अछि; नियमित ध्वनि-संगति, ऐतिहासिक कालक्रम आ भाषासम्पर्कक दिशा जाँचल जेनाइ आवश्यक अछि। केवल ‘संस्कृतमे नहि भेटल’ कहि कोनो शब्दकेँ अनार्य स्रोतक घोषित करब अथवा उल्टा सभ शब्दक संस्कृत-मूल प्रस्तावित करब—दूनों अतिशयता समुचित नहि। एतय पुस्तकक तर्कक पद्धतिगत महत्त्व व्यापक अछि।

‘अज्ञात’ आ ‘अनुसन्धानाधीन’क बीच अन्तर

आलेखक अन्तिम निष्कर्षमे देशी शब्दक अवधारणाकेँ अनिश्चित आ भाषाज्ञानक सीमा-सापेक्ष मानल गेल अछि। शब्दक मूलस्रोत स्पष्ट होयबाक पूर्व ओकरा देशी कहल जा सकैत अछि; नव प्रमाण भेटलापर वर्गीकरण बदलि सकैत अछि। भाषावैज्ञानिक शोधक लेल ई निष्कर्ष उपयोगी अछि, कारण एतय कोशीय लेबल स्थायी जातिगत पहचान नहि, शोधक वर्तमान स्थितिक संकेत बनैत अछि। (पृ. ९७)

मुदा व्यावहारिक क्षेत्रमे ‘देशी’ शब्दक दोसर अर्थ सेहो अछि—स्थानीय बोली, शैली, आत्मीयता आ लोक-समुदायक पहचान। ऐतिहासिक व्युत्पत्ति स्पष्ट भेला बादो कोनो शब्द समुदाय लेल ‘ठेठ’ रहि सकैत अछि। एहि कारण व्युत्पत्तिगत ‘देशी’ आ समाजभाषावैज्ञानिक ‘देशी’क पृथक विवरण उपयोगी होयत। लेखकक लेख मुख्यतः पहिल प्रश्नपर केन्द्रित अछि; दोसर प्रश्न पुस्तकक लोकसाहित्य-सम्बन्धी आलेखसभसँ जोड़लापर उभरैत अछि।

९. ‘देशीनाममाला ओ मैथिली’: ध्वनि आ अर्थपरिवर्तनक तुलनात्मक अध्ययन (पृ. ९९-१०४)

ऐतिहासिक कोशक मैथिलीसँ सम्बन्ध

अन्तिम आलेखमे लेखक हेमचन्द्रक ‘देशीनाममाला’मे संकलित शब्दक संग मैथिली शब्दावलीक रूप आ अर्थक तुलना करैत छथि। मूल तर्क ई अछि जे प्राकृत कोशमे सुरक्षित कतोक शब्दक समान अथवा समीपस्थ रूप मैथिलीमे भेटैत अछि; एहि निरन्तरताकेँ ध्वनि आ अर्थक परिवर्तन-सहित देखला पर भाषाक ऐतिहासिक विकास बुझबाक सामग्री प्राप्त होइत अछि। लेखकक पद्धति केवल ‘दूनों शब्द एक-जकाँ लगैत अछि’ पर आधारित नहि, अपितु

आगम, रूपविकार, समीकरण, अर्थसङ्कोच आ अर्थविस्तारजकाँ विश्लेषणात्मक वर्गक उपयोग करैत अछि। (पृ. ९९-१०४)

ई आलेख पूर्ववर्ती ‘देशी शब्दक अवधारणा’क स्वाभाविक विस्तार अछि। आठम आलेख वर्गीकरणक सिद्धान्त पूछैत अछि; नवम आलेख किछु वास्तविक शब्दपर तुलना लागू करैत अछि। ई क्रम संग्रहक रचनात्मक गठनक एकटा बल अछि। सिद्धान्तकें शब्द-उदाहरणसँ जाँचल गेल अछि आ उदाहरणकें भाषावैज्ञानिक वर्गमे रखल गेल अछि।

जीवित शब्दक ऐतिहासिक स्तर

पृ. ९९-१०१ पर लेखक कतोक शब्द-युग्मक प्रस्तुति करैत छथि। ‘ओढ़ना’, ‘कोसिआ’, ‘कसौनी’, ‘खाली’, ‘झंखार’, ‘बुलबुल्ला’, ‘ओस’ आदि मैथिली रूपक संग ऐतिहासिक कोशरूपक तुलना देखाओल गेल अछि। ई शब्द वस्तु, परिधान, भोजन, मौसम आ दैनिक व्यवहारसँ सम्बन्धित अछि। एहि चयनक महत्त्व ई जे ऐतिहासिक भाषाविज्ञानकें राजकीय अभिलेख अथवा केवल साहित्यिक शब्दसँ बाहर साधारण घरेलू शब्दावली धरि पहुँचाओल गेल अछि। (पृ. ९९-१०१)

एहि तुलनासभक प्रकाशमे भाषा-संरक्षणक एकटा महत्त्वपूर्ण तथ्य देखाइत अछि: लिखित उच्च साहित्यक इतिहाससँ अलग घर-आँगनक शब्दावली पुरान रूपक अंश सुरक्षित राखि सकैत अछि। मुदा दूनू युगक शब्दमे ध्वनि-साम्य भेटब अपने-आप सीधा वंशानुक्रम सिद्ध नहि करैत अछि। मध्यवर्ती प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट, पड़ोसी भाषाक सम्पर्क अथवा समानान्तर विकासक सम्भावना परीक्षा करबाक चाही। लेखकक रूपतुलना भविष्यक पूर्ण व्युत्पत्ति-अध्ययनक प्रारम्भिक प्रमाण थिक, समस्त शब्दक अन्तिम व्युत्पत्तिक निर्णय नहि।

ध्वनि-परिवर्तनक वर्गीकरण

लेखकक सूचीमे आगम, विभिन्न ध्वनि-विकार आ अन्य रूपान्तरणक उदाहरण पृथक कएल गेल अछि। ‘ओढ़ना’ अथवा ‘कोसिआ’जकाँ शब्दक रूपान्तरक चर्चा भाषाक ध्वनि-इतिहास पढ़बाक अवसर दैत अछि। एकर महत्त्व केवल रूपपरिवर्तनक नामकरण नहि; ई देखब सेहो अछि जे परिवर्तनक फलस्वरूप स्थानीय उच्चारण आ अर्थक प्रयोग कोना निश्चित होइत अछि। (पृ. ९९-१०२)

तथापि तुलनात्मक पद्धतिक कड़ाईक दृष्टिँ प्रत्येक शब्द लेल स्रोतक निश्चित पाठ, कोशक क्रमाङ्क, मूल अर्थ, मैथिली उच्चारणक क्षेत्र, प्रमाणित प्रयोग, सम्भावित मध्यवर्ती रूप आ नियमित ध्वनि-नियमक उल्लेख आवश्यक होयत। पुस्तकमे उदाहरणक पर्याप्त आधार अछि, मुदा शब्द-दर-शब्द एहि सभ विवरणक समान विस्तार नहि। एहि सीमा ओ उपयोगिता—दूनु स्वीकार करबाक चाही। एकटा भावी अनुसन्धानमे एहि युग्मसभकें प्रमाण, सम्भावना आ अनिर्णीत—तीन श्रेणीमे विभाजित कएल जा सकैत अछि।

अर्थसङ्कोच: सामान्यसँ विशिष्ट धरि

पृ. १०३ पर अर्थसङ्कोचक उदाहरण दैत लेखक ‘कसौनी’, ‘काल्हि’, ‘कबाड़’ आदि शब्दक वर्तमान अथवा सीमित मैथिली प्रयोगक तुलना पुरान कोशार्थसँ करैत छथि। विशेषतः ‘कसौनी’कें काँच आमसँ बनल विशिष्ट व्यंजनक सन्दर्भमे व्याख्यायित करब भोजन-संस्कृतिक इतिहासक दृष्टिँ उपयोगी अछि। ‘काल्हि’जकाँ समयबोधक शब्दमे अवधिक सीमा आ उपयोगक भिन्नता देखब भाषा-अर्थक सूक्ष्म परिवर्तनकें समझबैत अछि। एहि उदाहरणसभसँ अर्थशास्त्र आ लोकसंस्कृति बीच सम्बन्ध स्पष्ट होइत अछि।

एहि उदाहरणक तर्कपर प्रश्न करैत सावधानी रखब आवश्यक अछि: ‘पुरान शब्दक अर्थ व्यापक छल आ आधुनिक अर्थ संकुचित’ एहन निर्णय लेल पुरान कोशमे सभ अर्थक वास्तविक सीमा तथा आजुक मैथिलीमे सम्भावित अनेक स्थानीय अर्थक जाँच आवश्यक अछि। कोनो शब्द मैथिलीक एकटा बोलीमे संकुचित आ दोसरमे व्यापक अर्थमे बचल होय, ई सम्भावना खुलल रहैत अछि। ताहि लेल लेखकक उदाहरणसभकें समकालीन क्षेत्रीय शब्दकोश आ बोलचालक दस्तावेजसँ पूरक बनायब उचित।

अर्थविस्तार: दैनिक तकनीक आ नूतन उपयोग

‘कोल्हु’, ‘गाँठ’ आ ‘रोट’क उदाहरणमे लेखक अर्थविस्तारक विवेचन करैत छथि। कोल्हुकें केवल एकटा वस्तु-प्रकारक यन्त्रक अर्थमे नहि, अलग-अलग पदार्थ पेरबाक उपकरणक विस्तृत अर्थमे बुझल जा सकैत अछि। गाँठक अर्थ वस्त्रक विशिष्ट बन्धनसँ व्यापक गाँठानक अर्थ धरि पहुँचबाक चर्चा अछि। रोट शब्दक विशेष खाद्यरूपसँ व्यापक प्रयोगक तुलना सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। एहि उदाहरणसभमे अर्थ-बदलाव वस्तुक उपयोग, तकनीक आ दैनिक जीवनक परिवर्तनसँ जुड़ैत अछि। (पृ. १०३-१०४)

एहि अध्ययनक विशेष सामर्थ्य अर्थशास्त्रकेँ सामाजिक वस्तुसंसारसँ जोड़ब अछि। शब्दक अर्थ शब्दकोशक निर्जीव परिभाषा मात्र नहि; वस्तुक आकार, बनानेक तरीका, भोजन-पद्धति आ आर्थिक तकनीकक संग बदलैत अछि। लेखकक उदाहरण भोजन-सम्बन्धी शब्दावली, कृषियन्त्र आ घरेलू शब्दक पृथक ऐतिहासिक कोश बनयबाक प्रेरणा देबैत अछि।

आधुनिक अनुसन्धानसँ संवादक सीमा

हेमचन्द्रक ‘देशीनाममाला’ विषयक नवीन भाषावैज्ञानिक अनुसन्धानमें ‘देशी’ वर्गक आन्तरिक विषमता तथा तत्सम-तद्भव-देशी विभाजनक ऐतिहासिक प्रयोजनपर पुनर्विचार कएल जा रहल अछि। आन्द्रेआ द्रोक्कोक अनुसन्धान एहि कोशीय वर्गीकरणकेँ मध्यकालीन प्राकृत-शिक्षण आ शब्दार्थ-बोधक सन्दर्भमे देखैत अछि। एहि नवीन परिप्रेक्ष्यक उपयोग योगानन्द झाक मूल लेख बदलबाक हेतु नहि, बल्कि ओकर प्रश्नक आजुक प्रासंगिकता बुझबाक हेतु अछि। पुरान शब्दक आधुनिक मैथिली रूपसँ तुलना करब महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा कोशक ‘देशी’ लेबलकेँ एकल ऐतिहासिक भाषाक जन्मप्रमाणपत्र मानब उचित नहि। (बाहरी अनुसन्धान: Andrea Drocco, Kervan, DOI 10.13135/1825-263X/11454)

एहि सन्दर्भमे एकटा अतिरिक्त सावधानी अछि: मूल कोशक प्रकाशित सम्पादनसभ, पाण्डुलिपि-पाठ आ अलग-अलग सम्पादकक पाठनिर्णय एके समान नहि मानल जा सकैत अछि। समकालीन सम्पादनक सहायतासँ प्रत्येक शब्दयुग्मक पुनःमिलान भविष्यक समुचित कार्य होयत। प्रस्तुत समीक्षामेक अस्पष्ट कोश-संख्या वा अपाठ्य रूप अनुमानसँ सुधारि नहि देल गेल अछि।

समग्र निर्णय

अन्तिम आलेखमे पुस्तकक अनुसन्धानधर्मिता अपन अत्यन्त मूर्त रूप पबैत अछि। वर्गीकृत शब्दकोशक ऐतिहासिक सामग्रीकेँ मैथिलीक जीवित शब्दसभसँ मिलायब एकटा बहुमूल्य पद्धतिगत पहल थिक। तथापि एहन तुलनाक सफलता शब्द-साम्यक संख्या पर नहि, प्रत्येक युग्मक ऐतिहासिक परीक्षणक गुणवत्ता पर निर्भर करैत अछि। एहि आधार पर ‘देशीनाममाला ओ मैथिली’केँ विस्तृत प्रमाणसूची बनयबाक आरम्भिक अनुसन्धान-नक्शाक रूपमे पढ़ल जाय —आगाँक व्यवस्थित व्युत्पत्तिकोश निर्माणक प्रेरणा एहि आलेखक सर्वाधिक स्थायी उपलब्धि अछि।

संग्रहक समेकित आलोचनात्मक मूल्यांकन

लोकसाहित्यसँ भाषाविज्ञान धरि एकटा अन्तर्धारा

नौटा आलेखकें क्रमानुसार पढ़लापर एकटा विचारधारा स्पष्ट होइत अछि। लोकसाहित्य-विषयक पहिल अध्याय सामूहिक मौखिक अभिव्यक्तिक रूप चिन्हित करैत अछि; मलाहसम्बद्ध आलेख विशेष पेशागत भाषामे संचित जीवनानुभव खोलैत अछि; राधा-पार्वती-सुमन-विषयक आलेख साहित्यिक रूपमे सांस्कृतिक अर्थक निर्माण देखैत अछि; कथा-विषयक आलेख बोलचालक भाषाकें आधुनिक कलात्मक गद्यसँ जोड़ैत अछि; अन्तिम शब्दविषयक आलेख भाषिक रूपक कालक्रमक परीक्षण करैत अछि। एहि तरहें संग्रहक तीन क्षेत्रक बीच 'भाषा सामाजिक स्मृति कतेक सुरक्षित रखैत अछि' ई एकटा साझा अनुसन्धानीय प्रश्न निरन्तर उपस्थित रहैत अछि।

लोकसाहित्यक आधारपर कहल जाय तँ लेखक साहित्यक 'लोक' घटककें स्वतन्त्र मान्यता देबाक पक्षधर छथि। मुदा काव्यक मूल्यांकनमे ओ पारम्परिक रसशास्त्र आ नायिका-भेदक उपकरण सेहो अपनबैत छथि। ई द्विविधता विरोधाभास मात्र नहि; मिथिलाक बहुस्तरीय साहित्यक सन्दर्भमे दू प्रकारक ज्ञान-परम्पराकें एक संग उपयोग करबाक प्रयास सेहो अछि। हँ, जखन लोकसाहित्य शास्त्रीय बन्धनसँ स्वतन्त्र घोषित होइत अछि आ नारीक साहित्यिक विवेचन पूर्णतः शास्त्रीय श्रेणीमे बन्दि जाइत अछि, तखन आलोचनाक पद्धतिमे असमानता स्पष्ट देखाइत अछि। पाठकक लेल एहि असमानताकें चिन्हित करब आवश्यक अछि।

क्षेत्राधारित साक्ष्य आ ग्रन्थाधारित साक्ष्य

दू आरम्भिक आलेखमे मौखिक सामग्री, सामाजिक शब्दावली आ कहबीक प्रयोग प्रमुख अछि। काव्य-विषयक तीन आलेखमे पाठ-उद्धरण, आचार्यक मत आ अलंकार-रसक तर्क प्रधान अछि। अमरजी सम्बन्धी आलेख ऐतिहासिक अभिलेखनक प्रश्न उठबैत अछि। अन्तिम दू आलेख शब्दकोश, व्युत्पत्ति आ तुलनात्मक भाषाविज्ञानकें केन्द्रमे रखैत अछि। एतेक भिन्न प्रकारक सामग्रीक प्रयोगसँ लेखकक शोध-रुचिक विस्तार सिद्ध होइत अछि; एकरे संग साक्ष्यक पद्धतिक अन्तरक सावधानी सेहो जरूरी अछि। मौखिक कहबी, साहित्यिक पद, प्रकाशन-वर्ष आ कोशीय शब्द—चारि वस्तु समान प्रकारक सत्यापनीय तथ्य नहि।

विशेषतः जतय लेखक कहबीकें प्राचीन व्यवसायक प्रमाण, नायिका-भेदकें कविता-चरित्रक अन्तिम रूप अथवा शब्द-साम्यकें ऐतिहासिक निरन्तरताक आधार बनबैत छथि, ओतय तर्कक एक अतिरिक्त कड़ी अपेक्षित अछि। एहि समीक्षाक आलोचनात्मक आपत्ति लेखकक मूल सामग्रीपर नहि, सामग्रीसँ निश्चयात्मक निष्कर्ष धरि जायबाक छलँगपर अछि। एहि सूक्ष्म भेदकें सुरक्षित राखलापर संग्रहक मूल्य न्यायपूर्ण रूपमे निर्धारित कएल जा सकैत अछि।

सामाजिक आलोचनाक उपलब्धि

मलाह समुदाय, अनमेल विवाह, निर्धन घरक गृहस्थी, नारीक श्रम, पत्रकारिताक वर्गीय पक्ष, दलित पात्रक भाषा आ बोलचालक स्वीकृति—ई सभ प्रसंग संकेत करैत अछि जे लेखकक साहित्य-दृष्टि पूर्णतः सौन्दर्यशास्त्रीय नहि। ओ साहित्यकें सामाजिक सम्बन्धक अभिलेखक रूपमे सेहो देखैत छथि। पार्वतीक आर्थिक कष्ट, अमरजीक पत्रकारिताक समाजोपयोगिता आ कथाक पात्रानुकूल बोलीपर आग्रहक बीच स्पष्ट बौद्धिक सम्बन्ध अछि। ई संग्रहक एकटा विशेष गुण अछि।

दोसरा दिस नारीकें त्यागमयी, पतिव्रता अथवा आदर्श माताक रूपमे उन्नत करबाक प्रवृत्ति किछु आलेखमे प्रश्नातीत रहि जाइत अछि। जाति-आधारित लोकोक्तिमे निहित उपहास आ भाषिक शुद्धताक नामपर वास्तविक बहुभाषी अनुभवक उपेक्षा सम्भावनाकें सेहो अधिक आलोचनात्मक ध्यान देल जा सकैत छल। लेखकक सामग्री एहि सभ प्रश्नक लेल पर्याप्त आधार उपलब्ध करबैत अछि; वर्तमानक दृष्टिसँ ओकर पुनर्पाठ मूल पुस्तकक विरोध नहि, ओकर अध्ययनक विस्तार अछि।

भाषाशैली आ आलोचनाक स्वर

लेखकक भाषा मूलतः संस्कृतपदसम्पन्न शोधात्मक मैथिली अछि। स्थान-स्थानपर लोकपद, मुहावरा, गीतांश आ स्थानीय शब्दक उपयोग एहि शास्त्रीय प्रवाहमे जीवंत हस्तक्षेप करैत अछि। वाक्य-रचनामे परिभाषा, उदाहरण, पूर्वमत, तुलना आ निष्कर्षक क्रम प्रमुख अछि। एहि कारण आलोचनात्मक तर्कक दिशा प्रायः स्पष्ट रहैत अछि। किछु ठाम उद्धरण आ शास्त्रीय पदावलीक बहुलतासँ पाठककें मूल निष्कर्ष धरि पहुँचबाक लेल विशेष सावधानी चाही। तथापि लेखकक पाठकसँ अपेक्षा गंभीर अध्ययनक अछि; ओ लोकप्रिय परिचयक स्थान पर अनुसन्धानात्मक विवेचन प्रस्तुत करैत छथि।

एहि पुस्तकक रूप-रचना सेहो आलोचनाक विषय अछि। प्रस्तावना एकर आलेखसभकेँ विषयगत तीन कोटिमे बाँटि बोधगम्य बनबैत अछि। विषय-सूचीक क्रम लोकजीवनसँ साहित्यिक काव्य आ तकर बाद शब्दभाषाक अध्ययन दिस बढैत अछि। किन्तु नव अध्यायकेँ जोड़निहार स्वतन्त्र सम्पादकीय उपसंहार नहि रहबाक कारण पाठककेँ अन्तर्धाराक पुनर्निर्माण स्वयं करब पड़ैत अछि। एहि समीक्षामे प्रस्तुत समेकित तुलनाक प्रयोजन मूल पुस्तकक खाली स्थानमे कल्पित तर्क ठूसब नहि, बल्कि लेखकक उपस्थित उदाहरणसभक अन्तर्सम्बन्ध स्पष्ट करब अछि।

उपलब्धिक क्रमित मूल्यांकन

‘मैथिलीक लोकसाहित्य’क बड़ उपलब्धि मौखिक विधासभक व्यापक रूपरेखा अछि; ‘लोकोक्तिमे मलाह जाति’ पेशागत जीवनसँ भाषा-रूपकक सम्बन्ध खोलैत अछि; ‘राधाक स्वरूप’ बहुस्तरीय व्याख्याक आग्रह रखैत अछि; ‘पार्वतीक स्वरूप’ पौराणिक पात्रमे मैथिल गृहस्थ जीवनक वास्तविकता पहचानैत अछि; ‘सुमनजीक मुक्तककाव्यमे नारी’ काव्य-रूप आ स्त्री-प्रतिमाक वर्गीकृत पाठ दैत अछि; ‘अमरजी’क समीक्षा पत्रकारिता-इतिहासक पद्धति आ दस्तावेजक समस्या चिन्हित करैत अछि; कथा-विषयक आलेख भाषा आ शिल्पक विकासक रूपरेखा बनबैत अछि; ‘देशी शब्द’क आलेख व्युत्पत्तिगत निश्चयक सीमा सिखबैत अछि; ‘देशीनाममाला’क अध्ययन शब्दकोशीय प्रमाणकेँ मैथिलीक जीवित रूपसँ जोड़ैत अछि। ई प्रत्येक दावा उक्त-उक्त मूल आलेखक प्रतिपादन अथवा एकर आलोचनात्मक पुनर्मूल्यांकन पर आधारित अछि।

भावी शोधक उपयुक्त दिशा

एहि संग्रहक आधारपर चारि स्पष्ट अनुसन्धान-कार्य सम्भव अछि। प्रथम, लोकगीत, लोकगाथा आ कहबीक प्रत्येक संकलित पाठक स्थान, सूचनादाता, प्रस्तुति-अवसर, पाठान्तर आ ध्वनिरिकॉर्ड सहित नूतन अभिलेखन। द्वितीय, विद्यापति आ सुमनजीक उद्धृत काव्यांशक मूल पाठ, पाठभेद आ सामाजिक सन्दर्भक अलग-अलग तुलनात्मक सूची। तृतीय, अमरजी द्वारा वर्णित पत्रकारिताक प्रत्येक पत्र-पत्रिकाक उपलब्ध मूल अङ्क, सम्पादकीय विवरण, प्रकाशन-अवधि आ पुस्तकालयीय सन्दर्भक पुनःसत्यापन। चतुर्थ, ‘देशीनाममाला’क कोशपाठ आ आधुनिक

मैथिली भाषिक रूपक शब्द-दर-शब्द बहु-स्रोत परीक्षा। एहि चारू दिशाक जड़ पुस्तकक प्रत्यक्ष सामग्रीमे अछि; कोनो अज्ञात अथवा कल्पित अध्यायक अनुमानपर निर्भर नहि।

अन्तिम निष्कर्ष

‘आलेख सञ्चयन’क विशिष्टता एकटा निर्णायक सिद्धान्त देबामे नहि, अपितु मैथिली भाषा-साहित्यक अनेक अनुसन्धानीय क्षेत्रमे प्रमाण जुटेबाक लगन आ विवेचनक पद्धति विकसित करबामे अछि। पुस्तकक विस्तार विषयगत अछि, किन्तु अन्तर्निहित आग्रह एकटा: मैथिलीक साहित्यिक आ सामाजिक अनुभवकें व्यवस्थित अध्ययनयोग्य सामग्रीक रूपमे स्वीकार कएल जाय। लोकसाहित्यक विधासूची, लोकोक्तिक पेशागत सन्दर्भ, विद्यापतिक पात्र-विवेचन, सुमनजीक नारी-परिकल्पना, पत्रकारिताक इतिहास, कथागद्यक शैली-विकास आ शब्दक ऐतिहासिक परिवर्तन—सभ मिलि मैथिली अध्ययनक बहुआयामी चित्र बनबैत अछि।

एहि व्यापकताक संग सीमा सेहो स्पष्ट अछि: लोकस्रोतक क्षेत्रीय विवरणक अभाव, किछु इतिहासगत दावाक स्वतन्त्र अभिलेखीय सत्यापनक आवश्यकता, नारीक परम्परागत आदर्शीकरण आ कोशीय रूप-साम्यक निष्कर्षमे अतिरिक्त ध्वनि-नियमक अपेक्षा। एहि सीमा देखाउब पुस्तककें कमतर करब नहि; एकर यथार्थ अकादमिक महत्त्व निर्धारित करब अछि। शोध-पुस्तकक स्थायी शक्ति केवल अपन समयमे देल उत्तरमे नहि, बल्कि ओहिसँ उत्पन्न अगिला प्रश्नसभमे सेहो होइत अछि। ‘आलेख सञ्चयन’ एहि अर्थमे उपयोगी सन्दर्भग्रन्थ आ पुनर्पाठक योग्य आलोचनात्मक दस्तावेज दूनू थिक।

अध्याय 04 / दोसर संस्करण २००२

मैथिली शाक्त साहित्य

डॉ. योगानन्द झाक कृतिक आलोचनात्मक विवेचन

१. ग्रन्थ-परिचय आ प्रमाणक स्थिति

मूल शीर्षक — मैथिली शाक्त साहित्य (शास्त्रीय भगवती गीत)।

सम्पादन — डॉ. योगानन्द झा; शीर्षक-पृष्ठ पर सम्पादकक नामक संग कविलपुर, दरभंगाक उल्लेख भेटैत अछि।

प्रकाशन — उर्वशी प्रकाशन, १३ एम.आइ.जी., हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना-२०। मूल प्रकाशन-विवरणमे वर्ष २००२ ई., प्रति ५०० आ मूल्य १५.०० अंकित अछि -पृष्ठ ३, बायाँ फलक)।

संस्करण — भूमिकाक अन्तमे “दोसर संस्करण” आ ०७-११-२००२ दिनांक स्पष्ट अछि -पृष्ठ ४, बायाँ फलक)।

आरम्भिक आवरण, शीर्षकपृष्ठ, प्रकाशन-विवरण, भूमिका, गीतसूची आ मुद्रित पृष्ठ १० सँ ७२ धरि गीत-पाठ समाहित अछि; अन्तिम-पृष्ठ पर ग्रन्थक समाप्ति-चिह्न सेहो देखाइत अछि।

दुइ भिन्न क्रम — गीतसूचीमे ७६ रचनाकार-प्रविष्टि अछि -पृष्ठ ४-६)। मूल गीत-पाठक भीतर स्वतंत्र गीतक अंकन (१) सँ (१९१) धरि अछि; अन्तिम गीत जगतचन्द्रक अछि -पृष्ठ ३८)।

अतएव “७६ गीत” कहल तथ्यात्मक रूपसँ अशुद्ध होयत; सूचीमे ७६ प्रविष्टि, पाठमे १९१ क्रमांकित गीत अछि।

अध्ययनक पद्धति: प्रत्येक रचनाकार-प्रविष्टिक शीर्षक/आरम्भिक पाँति आ मुद्रित पृष्ठ-स्थान केँ मूल गीतसूचीसँ मिलाओल गेल अछि। प्रतिनिधि गीतक निकट-पाठमे मूल पाठक विशिष्ट सम्बोधन, बिम्ब, तात्त्विक पदावली, विनय, करुणा आ सामाजिक प्रश्न पर ध्यान देल गेल अछि। गीतक पाठ जतय कठिन अथवा धुँधल अछि, ओतय शब्दशः उद्धरणसँ परहेज कएल गेल अछि।

२. भूमिका: सम्पादकक वैचारिक प्रस्तावना

पहिल संस्करणक भूमिकामे “शक्ति उपासना” केँ भारतीय जीवन-पद्धतिक महत्त्वपूर्ण अङ्ग मानल गेल अछि। सम्पादकक अनुसार मातृभाव, दया, सर्जकता, पालन आ संहार-जेकाँ पृथक् अनुभूतिक साहित्यिक परिणति देवीक विभिन्न स्वरूपमे होइत अछि -पृष्ठ ३-४)। ई भूमिका केवल धार्मिक अनुमोदन नहि; शाक्त काव्यक अध्ययन लेल ओ एकटा सौन्दर्यात्मक आधार सेहो दैत अछि, कारण देवीक रूप-विविधता सँ रूपक, प्रतीक आ रसानुभूतिक विविधता निकलैत अछि।

भूमिकामे विद्या, दुर्गा, काली, चण्डी, तारा, भुवनेश्वरी, कमला, षोडशी, भैरवी, सीता, छिन्नमस्ता, धूमावती, बंगला, मातङ्गी आ सरस्वती आदि स्वरूपक उल्लेख देखाइत अछि। एहि सूचीसँ बुझाइत अछि जे सम्पादक “शाक्त” केँ केवल दुर्गा-स्तोत्रक संकुचित अर्थमे नहि, व्यापक देवी-

परम्पराक रूपमे बुझैत छथि। मुदा एही विस्तारक कारण संकलनमे गङ्गा, भारती, वीणावादिनी आ शिव-संबद्ध छविक प्रवेशकेँ अलग सँ परखबाक आवश्यकता बनैत अछि।

मध्यकालीन कविसभक नामक पश्चात् सम्पादक आधुनिक कवि-गीतकारसभक एकटा दीर्घ सूची दैत छथि। भूमिका स्वयं एहि दीर्घकालिक साहित्यिक निरन्तरताक दावा करैत अछि; तैयो एहि संग्रहमे कवि-क्रमक कालनिर्धारण, पाण्डुलिपिक रचनातिथि अथवा पाठान्तरक व्यवस्थित प्रमाण-तालिका नहि देखाइत अछि। एकरा साहित्येतिहासक उपयोगी पाठ-संकलन मानब उचित अछि, मुदा निर्णायक कालक्रमक स्थानापन्न नहि।

दोसर संस्करणक टिप्पणीमे सम्पादक पुनर्प्रकाशनक उद्देश्य “मैथिली शाक्त साहित्य”क उपलब्धता बढ़ेबा आ अधिक लोक धरि पहुँचबामे देखैत छथि। एहि आत्मविवरणसँ संकलनक संरक्षणात्मक अभिप्राय स्पष्ट होइत अछि। प्रकाशक प्रति आ वर्षक मुद्रित तथ्य सँ पृथक्, पुनर्प्रकाशनक प्रेरणा भूमिकाक प्रत्यक्ष कथन अछि।

३. सम्पादकीय बनावट: ७६ प्रविष्टि आ १९१ गीत

एहि पोथीक केन्द्रीय संरचनागत विशेषता अछि जे गीतसूची “रचनाकार आ गीत”क अनुसार बनल अछि, जखनकि मूल गीत-पाठ अपन स्वतंत्र क्रमांक रखैत अछि। उदाहरणार्थ, विद्यापतिक नाम एकटा सूची-प्रविष्टि अछि, मुदा हुनक अन्तर्गत पृष्ठ १०–१३ पर अनेक पृथक् रचना क्रमांक (१) आदिसँ छपल अछि। पुस्तकक पहिल विद्यापति-गीतमे भैरवीक आवाहन अछि, तकर बाद अन्य देवी-रूपक गीत अछि। एहि व्यवस्थासँ कविक एकाधिक शाक्त अभिव्यक्ति एक ठाम पढ़बाक सुविधा भेटैत अछि।

संकलनक अन्तिम अंश विशेष अर्थवान अछि: जगज्ज्योतिमल्ल, जगत्प्रकाशमल्ल, जितामित्रमल्ल, भूपतीन्द्रमल्ल, प्रतापमल्ल आ जगतचन्द्र सन नाम एक संग अबैत छथि (गीतसूची ७१–७६; मुद्रित पृ. ६७–७२)। एहि कारण मिथिलाक शाक्त गीतक अध्ययनमे नेपाल-संबद्ध दरबारी-साहित्यिक परम्पराक पाठ सेहो समाहित होइत अछि। मुदा केवल उपनाम “मल्ल” देखि प्रत्येक रचनाकारक विस्तृत राजकीय जीवनी, काल वा परस्पर सम्बन्ध निश्चित करब उचित नहि; ताहि लेल स्वतंत्र ऐतिहासिक स्रोत चाही।

गीत-पाठक नीचाँ कतहु “प्राचीन गीत”, कतहु “मैथिल भक्त प्रकाश”, “मैथिली शैव साहित्य”, “मैथिली नाटकक उद्भव आ विकास” अथवा आन ग्रन्थ-संकेत अंकित अछि। ई महत्वपूर्ण स्रोत-चिह्न अछि; मुदा सम्पूर्ण संग्रहक प्रत्येक गीत लेल समान रूपमे सम्पादकीय पाठ-परम्परा, मूल प्रति, संस्करण-सङ्ख्या आ पाठभेद नहि देल गेल अछि। समीक्षा एहि अन्तर केँ विधिसम्मत सम्पादनक भविष्यगत काजक रूपमे चिन्हित करैत अछि।

४. प्रतिनिधि गीतक सूक्ष्म पाठ-परीक्षण

४.१ विद्यापति: भैरवीक विभीषिका आ मातृरक्षा (मुद्रित पृ. १०-१३)

आरम्भिक गीत “जय-जय भैरवि असुर-भयाउनि” मे देवीक भयङ्कर रूपक सम्बोधनक संग भक्तक निर्भयताक आकांक्षा जुड़ैत अछि। श्मशान, खप्पर, रुधिर आ असुर-विनाशक बिम्ब देवीक अघोर स्वरूप जगबैत अछि; गीतक अन्त दिस कविक अपन रक्षाक माँग ई भयङ्करताकेँ करुणामय आश्रयमे बदलैत अछि। देवी ‘असुर-भयाउनि’ छथि, भक्तक लेल अभय-दायिनी। एहि विपरीतार्थी संयोजनक कारण रचना केवल गुणगान नहि, भीति आ विश्वासक नाटकीय अनुभव बनैत अछि।

४.२ विद्यापति: एक देवी, अनेक नाम (पृ. १०-१३)

विद्यापति-समूहमे भैरवी, गायत्री, भगवती, काली, दुर्गा, कालिका आदि सम्बोधन-परम्परा देखाइत अछि (प्रथमक गीत-पृष्ठसभ)। एके कवि-सूत्रक भीतर विध्वंसिनी आ पालनकर्त्री, मन्त्रात्मक आ आत्मीय सम्बोधनक क्रमिक फेर-बदल होइत अछि। शीर्षकक “शास्त्रीय” विशेषणक ठोस आधार एतय संस्कृतनिष्ठ नाम-परम्परा आ देव्या नामावली अछि; मुदा लोक-सुलभ विनती ओकर भाषा केँ स्तोत्र-मात्रक जड़ता सँ बचबैत अछि।

४.३ सदानन्द: दुःख-निवारणक सीधा प्रार्थना (पृ. १४)

गीत “जय जय दुर्गे दुर्गति हारिणि”क पहिल पाँतिमे ‘दुर्गा’ आ ‘दुर्गति’क ध्वन्यात्मक सम्बन्ध स्पष्ट अछि। देवीक नामे भक्तक दुःख-हर्ता रूपक अर्थसंग्रह बनि जाइत अछि। भाषाक विन्यास ठामे-ठाम शास्त्रीय, मुदा अनुभूतिक केन्द्र दैनन्दिन संकटसँ मुक्ति अछि; एही रूपमे शाक्त साहित्य दार्शनिक तत्त्वसँ लोकजीवनक व्यथा दिस बढैत अछि।

४.४ महेश ठाकुर: उग्रता आ कृपाक तान (पृ. १५-१६)

“जय जय जय भय भञ्जनि” सँ शुरू होइत गीतमे भयक अपहर्ता रूप प्रमुख अछि। एही रचनाकारक अन्य गीतक शाब्दिक परिवेशमे असुर-वध, भयानक आविर्भाव आ शरणागतक उद्धार एकहि स्तुतिमे जुड़ैत अछि। शाक्त स्तुति एतय एकतरफा हिंसात्मक चित्रण नहि बनि भक्त-केन्द्रित करुणा-दर्शनक रूप लैत अछि।

४.५ कृष्णपति आ जीवदत्त: शरणागतिक व्याकरण (पृ. १७, १९)

“शंकरी शरणं धयल हम तोर” आ “जय-जय शंकरि” जेकाँ आरम्भिक पाँति देखबैत अछि जे शाक्त गीतमे ‘हम’ आ ‘तोर’क सम्बन्ध सर्वाधिक कार्यकारी होइत अछि। उपासक अपन दुर्बलता प्रकट करैत अछि, देवीकें संरक्षणक दायित्व सँ सम्बोधित करैत अछि। सामीप्यक एहि भाषा मे शास्त्रीय देवी साधारण लोकक विश्वासक केन्द्र बनि जाइत छथि।

४.६ रत्नपाणि: नाम-सङ्कीर्तनक विस्तृत शृङ्खला (पृ. २६-३१)

रत्नपाणिक प्रविष्टि पाँचसँ अधिक मुद्रित पृष्ठमे पसरल अछि। गीतसूचीमे “जय जगजननि”, “जय शिशुधानु”, “जय भुवनेशि”, “जय जगज्जननि” आदिक पुनरुक्त ध्वनि आ देवीक बहुरूपक उल्लेख भेटैत अछि। आन-आन लघु स्तुतिक अपेक्षा ई खण्ड विस्तारित भक्ति-संहति जेकाँ भासैत अछि। दोहराओल “जय” शब्द गीतक लयक संकेत अवश्य अछि, मुदा वास्तविक गायन-तालक निर्धारण बिनु स्वर-साक्ष्य सम्भव नहि।

४.७ चन्दा झा: शरणागति आ जीवन-संकट (पृ. ३४-३८)

“जय देवि महेश-पुत्रि”, “रहु देवि दासी”, “जय गिरिवर मैया” आदि अनेक आरम्भिक पाँतिक कारण चन्दा झाक खण्ड व्यक्तिपरक भक्ति आ देव्या स्तुति दुनूक संगम बनैत अछि। पृ. ३४-३५ पर “से कर देवि दयामयि” सन विनय आ ‘मन’क अवस्था उल्लेखनीय अछि। भक्त आत्मसमर्पण करैत अछि, मुदा अपन दुःखक भाषा नहि छोड़ैत; शास्त्रीय देवीनाम आ निकटवर्ती सम्बोधनक एहि मेलमे कवित्वक विशेष शक्ति अछि।

४.८ आदिनाथ: देवी-नामावलीक विस्तार (पृ. ४०-५०)

आदिनाथक प्रविष्टि एकटा लम्बा पाठ-समूह अछि। सूचीमे “नहि जगबहार हम”, “भगवति पद पंकज”, “काली तारिणि”, “महिम वसन अरुण” आदि भिन्न आरम्भ-सूत्र एकत्र देल गेल अछि। देह, जगत, असुर, कमला आ त्रिभुवन सम्बन्धी पदावली अनेक धार्मिक स्तरक समन्वय

करैत अछि। केवल शब्द-सूचीक विस्तारसँ ओतबे धार्मिक सिद्धान्त सिद्ध नहि होइत; शब्द कोन प्रसङ्गमे आबि रहल अछि, ई समझब जरूरी अछि।

४.९ तेजनाथ झा: नैतिक प्रश्न आ शास्त्रीय भक्ति (पृ. ५२-५४)

“जननि पद”, “जय जय काली”, “गंगे विनति सुनिय दय कान” आदि आरम्भ-संकेत तेजनाथ झाक रचनासभमे मातृकृपा आ नैतिक विवशताक सह-अस्तित्व देखबैत अछि। पृ. ५४ पर सामाजिक दम्भ आ ज्ञानक अभावक प्रश्न उठैत अछि; एहि कारण ई रचना केवल देवी-वन्दना नहि, आत्मपरीक्षणक भाषा सेहो अछि। समर्पणक बीच प्रश्न करबाक क्षमता एकरा आलोचनात्मक रूपसँ महत्त्वपूर्ण बनबैत अछि।

४.१० सूरदास, दामोदर आ लक्ष्मीपति: अपराधबोधसँ क्षमाधर्म धरि (पृ. ५४-५५)

सूरदासक “जगदम्बा भवानी हे”, दामोदरक “जाग जननि हे” आ लक्ष्मीपतिक “क्षमा समुद्र क्षमिय अब जननी”क निकट स्थान एक अर्थपूर्ण लघु-क्रम बनबैत अछि। पहिलमे भगवतीक लोकमातृ रूप, दोसरमे दुर्दशित भक्तक पुकार, तेसरमे क्षमा-दायिनी देवीक आश्रय देखाइत अछि। अल्पाक्षर गीतमे अपराध-स्वीकार आ अपेक्षित उद्धारक बीचक दूरी भावनात्मक घनत्व रचैत अछि।

४.११ ललितेश्वरी देवी आ नन्दनी देवी: स्त्री-स्वरक उपस्थिति (पृ. ५५-५६)

सूचीमे ललितेश्वरी देवीक “जयति जगदम्बिके काली” आ नन्दनी देवीक “जय काली कलि कलुष” छपल अछि। ललितेश्वरीक गीतमे जगदम्बिकाक पूजाक संग ‘हम जननी नहि पूजा पाठ गुरु सेवा’ जेकाँ आत्मालोचनक स्वर भेटैत अछि -पृष्ठ २९, दहिना फलक)। स्त्री-रचनाकारक उपस्थिति देखबैत अछि जे ई परम्परा केवल पुरुषक कविकर्म धरि सीमित नहि; मुदा एहिसँ सम्पूर्ण युगक स्त्री-साक्षरताक अनुपात निकालब असंगत होयत।

४.१२ सुरेन्द्र झा सुमन आ मधुप: रूपायनक प्रभाव (पृ. ५६, ५८)

सुरेन्द्र झा सुमनक प्रविष्टिमे “धयल मुण्डमयी श्यामा”क छवि उग्र देवीक मूर्तिकल्पना दैत अछि। मधुपक “सम्प्रति सहस-सूर्य, राजय जगमग माँ”क प्रकाश-बिम्ब उद्भासित शक्तिक अनुभूति करबैत अछि। एक ओर रौद्र दृश्य, दोसर ओर दीप्ति; दुनू देवीक असीम सामर्थ्यकें भिन्न संवेदनात्मक साधनसँ उपस्थित करैत अछि।

४.१३ राजलक्ष्मी आ त्रिलोचन झा: पूजा आ मिथिला-बोध (पृ. ६२-६३)

राजलक्ष्मीक “श्यामा चरण कमल हम पूजब”मे चरणपूजाक आत्मीयता साफ अछि। त्रिलोचन झाक “चण्डी तोहर मिथिला देश, आब करू जजु देरी” देवीकेँ स्पष्ट स्थानीय भूगोलक भीतर सम्बोधित करैत अछि। इएह स्थानीयकरण शास्त्रीय देवीकेँ मैथिली भाषाक सामाजिक परिदृश्यमे लबैत अछि; मिथिला एतय भौगोलिक नाम मात्र नहि, संकट आ आशाक अनुभव-क्षेत्र बनैत अछि।

४.१४ आरसी प्रसाद सिंह: सरस्वती-छविक पुनर्संयोजन (पृ. ६४)

“जननि वीणा-वादिनी!”क सम्बोधनमे सरस्वतीक वाद्य, वाणी आ विद्याक रूप आगाँ अबैत अछि। ई उदाहरण ‘शाक्त साहित्य’क परिधिक प्रश्न उठबैत अछि: संग्रहक शक्ति-कल्पना केवल युद्धमयी देवीमे सीमित नहि, वाणी, ज्ञान आ सर्जनात्मक ऊर्जा धरि पसरल अछि। एहि कारण ग्रन्थकेँ विशुद्ध दुर्गा-गीत-संग्रह कहब अपर्याप्त अछि।

४.१५ प्रभु नारायण ‘प्रदीप’: प्रश्नक नाटकीय प्रयोग (पृ. ६५)

“जगदम्ब अही बिनु आश्रय ककर?”क पुनरावृत्त प्रश्न देव्या स्तुतिक संग निर्बल मनुष्यक आश्रयहीनताकेँ रखैत अछि। कवि ‘हम’क दैन्यकेँ देवी पर निर्भरता बनबैत छथि; “ककर?” एतय सीधा तथ्य-प्रश्न नहि, भक्ति-नाटकीयता उत्पन्न करयबला अलङ्कारिक प्रश्न अछि।

४.१६ अन्तिम मल्ल-समूह: राजनीतिक भूगोलसँ पारक पाठ-परम्परा (पृ. ६७-७२)

जगज्ज्योतिमल्लसँ जगतचन्द्र धरि संग्रह अपन अन्तिम खण्डमे नेपाल-संबद्ध नामसभक गीत रखैत अछि। भूपतीन्द्रमल्लक गीत “जय हिमालय नन्दिनी” हिमालयक स्थानबिम्बसँ देवीकेँ सम्बोधित करैत अछि; प्रतापमल्लक “किदहु करम मोर हीन रे” आत्मग्लानिक स्वर खोलैत अछि; जगतचन्द्रक अन्तिम गीत “जयति जगदम्बे काली” छोट आ संक्षिप्त स्तुति अछि। अन्तिम रचनाक स्रोत-टिप्पणी “मैथिली नाटकक उद्भव आ विकास” उल्लेखनीय अछि, मुदा स्वतः एकर रचनातिथि स्थापित नहि करैत।

५. भाषिक रचना, छवि, लय आ भक्तिक वक्तृता

एहि गीतसभक सबसँ स्पष्ट अलङ्कारिक साधन सम्बोधनक पुनरावृत्ति अछि: “जय जय”, “जननि”, “माँ”, “हे देवी”, “भवानी”, “काली”, “दुर्गा”। एहिसँ स्थायी गेयता आ सामूहिक

उच्चारणक सम्भावना बनैत अछि। मुदा संग्रहमे व्यवस्थित राग-ताल, धुन-संकेत अथवा प्रस्तुति-साक्ष्य नहि देखाइत; ताहि लेल केओ गीतकेँ अमुक रागमे निश्चित रूपसँ गाओल जाइत छल, एहन दावा स्रोत-समर्थित नहि होयत।

शब्दक एक स्तर पर संस्कृतनिष्ठ समास अछि—“त्रिभुवनतारिणि”, “महिषासुरमर्दिनि”, “भयभञ्जनि”, “जगज्जननि”, “कमलासिनि”; दोसर स्तर पर आत्मीय मैथिली सर्वनाम आ क्रिया अछि—“हम”, “तोर”, “दिअ”, “करू”, “अहाँ”, “मैया”। तेसर स्तर पर तान्त्रिक आ पुराणसम्मत संज्ञा अछि—शूल, खड्ग, खप्पर, त्रिशूल, रक्त, मुण्ड, सिंह, महिष। ई स्तर एक-दोसराक विरोधी नहि, बल्कि संकलनक भाषिक वास्तुक रचैत अछि।

रूपक-प्रणालीमे त्रिशूल, सिंह, कमल, रुधिर, शिरमाला आ अभय-हस्तक छवि प्रमुख अछि। उज्ज्वल/भयावह, करुण/दण्डदात्री, जननी/युद्धमयी—एहि विरोधाभास सभक संग कवि देवीक सम्पूर्णता प्रस्तुत करैत छथि। रौद्र-छविक वर्णनकेँ वास्तविक हिंसाक ऐतिहासिक विवरण मानब अनुचित अछि; ई धार्मिक प्रतीकक काव्यमूल्य अछि।

कविताक वक्ता बहुधा असहाय शरणागत अछि, मुदा किछु रचनामे ओ प्रश्न सेहो करैत अछि—किएक दुःख, कखन उद्धार, कोन शरण? एहि प्रश्नक कारण स्तुति खालि आदेश/गुणक पुनरावृत्ति नहि रहि संवाद बनैत अछि। “अपराध”, “दुख”, “क्षमा”, “शरण” आ “चरण”क पद-परिवार एहि मानवीय नाटकक केन्द्रमे अछि।

६. समाज, स्त्री, स्थानीयता आ भक्तिक द्वन्द्व

लोकमाता आ देवी-महिमा: माता-केंद्रित भक्ति शक्तिक एगो विशेष नैतिक कल्पना अछि। एहि कल्पनामे सर्वशक्तिमान देवीक संगे अबोध सन्तान-जेकाँ भक्त उपस्थित अछि। ताहि लेल देवीक आदेशक अपेक्षा कृपाक अपील अधिक सुनबामे अबैत अछि। जखन कवि अपन अपराध स्वीकार करैत अछि, तखन ओ धार्मिक आत्मग्लानि मात्र नहि, सामाजिक दीनताक भाषा सेहो बनि सकैत अछि—ई पाठाधारित व्याख्या अछि, प्रत्येक कविक निजी जीवनक तथ्य नहि।

स्त्री-उपस्थिति: सूचीमे “भैरनी देवी”, “ललितेश्वरी देवी”, “नन्दनी देवी” आ “राजलक्ष्मी” सन रचनाकार-नाम भेटैत अछि। महिला-नामक एहि उपस्थिति केँ चिन्हित कएनाइ जरूरी अछि, कारण शाक्त कविता केवल स्त्री-देवता पर पुरुष-दृष्टिक आख्यान नहि रहि स्त्री-कविस्वरक

स्थान सेहो खोलैत अछि। तैयो नाम-साक्ष्य मात्रसँ कविसभक सामाजिक जीवन, शिक्षा, अधिकार आ ऐतिहासिक सम्बन्धक पूर्ण चित्र नहि बनैत अछि; एहि पर जीवनीगत खोज अलग चाही।

स्थानीयता: त्रिलोचन झाक “मिथिला देश”, चन्दा झाक “मैया”, तेजनाथ झाक “गंगे” आ अनेक कविक “जननि”क एक संग पठनसँ स्पष्ट होइत अछि जे ई देवी भौगोलिक, भाषिक आ घरेलू संसारसँ अलग नहि छथि। यद्यपि संग्रहक व्यापक स्वरूप शास्त्रीय अछि, ओकर काव्य-ऊर्जा स्थानीय बोलचाल आ क्षेत्रीय अनुभवसँ निरन्तर पुष्ट होइत अछि।

सामाजिक आलोचनाक सम्भावना: जखन भक्त ज्ञानविहीनता, दम्भ, पाप, विपत्ति आ आश्रयहीनता स्वीकार करैत अछि, एही पदमे व्यवहार-नीति आ आत्मालोचनक संकेत भेटैत अछि। मुदा प्रत्येक पदकेँ राजनीतिक प्रतिरोध अथवा निश्चित सामाजिक आन्दोलनक घोषणापत्र कहब मूल स्रोतक अपेक्षा बहुत आगाँ बढ़ब होयत। आलोचनाक उचित पद्धति अछि —जे पद खुलैत अछि, ओतबे कहब।

७. संकलनक उपलब्धि आ सम्पादकीय सीमासभ

प्रथम उपलब्धि — मैथिली शाक्त पद-परम्पराक बहुविस्तृत, कवि-आधारित पाठ एक संक्षिप्त संग्रहमे उपलब्ध करेनाइ। ७६ सूची-प्रविष्टि आ १९१ आन्तरिक गीतक्रमक संग ई पठनीय पाठ-संहति बनैत अछि।

दोसर उपलब्धि — विद्यापति-जेकाँ प्रसिद्ध नामक संग कम चर्चा भेल रचनाकारक नामक उपस्थिति; शोधार्थी लेल पाठ-चयन आ तुलनात्मक अध्ययनक आधार।

तेसर उपलब्धि — देवीक अनेक स्वरूप—भैरवी, दुर्गा, काली, कमला, गङ्गा, सरस्वती/वीणावादिनी—केँ एकहि व्यापक शाक्त आस्वादक अन्तर्गत रखनाइ।

चारिम उपलब्धि — अनेक गीतक अन्तमे पुरान स्रोतग्रन्थक संकेत; यद्यपि अपूर्ण, पाठक इतिहास खोजबाक दिशामे ई उपयोगी सुराक दैत अछि।

पाठालोचनक सीमा — पाण्डुलिपिक क्रम, मूल स्रोतक संस्करण, वैकल्पिक पाठ, विराम-व्यवस्थाक सिद्धान्त, कविक तिथिक प्रमाण आ संशोधन-नीति क्रमबद्ध रूपेँ संग्रहमे स्पष्ट नहि कएल गेल अछि।

सङ्गीत-अध्ययनक सीमा — गीतक बोल उपलब्ध अछि, मुदा राग, ताल, गायकी, प्रस्तुति-प्रसंग, गायन-परम्परा आ ध्वनि-अभिलेखक अभावमे निष्कर्ष सीमित राखब आवश्यक अछि।

प्रविष्टि-विधानक सीमा — गीतसूची रचनाकार-केन्द्रित अछि; गीत-विशिष्ट सूचीक अभावसँ १९१ पदमे कोन गीत कोन पृष्ठ पर आरम्भ होइत अछि, तकर तत्काल खोज कठिन होइत अछि।

ऐतिहासिक सीमा — पहिल संस्करणक सटीक वर्ष, गीत-स्रोतक काल, नेपाल-मिथिला सम्पर्कक प्रकृति, महिला कविसभक जीवनी आ हस्तलिखित प्रतिक परस्पर सम्बन्ध पर अनुसंधान करबाक आवश्यकतानि अछि।

ई सीमासभ गिनेनाइ पोथीक महत्त्व घटेबाक प्रयत्न नहि। साहित्यिक संरक्षणक पहिले चरणमे पाठसम्पादन आ उपलब्धता, आ दोसर चरणमे वैज्ञानिक पाठभेद, टिप्पणी, राग-ताल, शब्दकोश आ कालक्रम—दुनू अलग कार्य अछि। ई पुस्तक पहिल प्रकारक उल्लेखनीय प्रयत्न अछि; दोसर प्रकारक आलोचनात्मक संस्करण भविष्यक अनुसन्धानक विषय बनैत अछि।

८. गीतसूचीक ७६ प्रविष्टिक क्रमबद्ध पाठ-संकेत

निम्नलिखित सूची मूल “गीत सूची” -पृष्ठ ४-६)क क्रमपर आधारित अछि। “आरम्भ/सङ्केत” स्तम्भमे रचनाक पहिल पाँति अथवा गीत-समूहक पहिचान मात्र देल गेल अछि; ई सभ गीतक स्वतन्त्र संख्या नहि अछि। प्रत्येक टिप्पणी पाठमे देखाएल शीर्षक, आरम्भिक शब्द अथवा सम्बन्धित रचनाक अवलोकनपर आधारित संक्षिप्त आलोचनात्मक संकेत अछि। गीत-सूचीमे जतय एक रचनाकारक अनेक गीत अछि, ओतय पहिल अथवा प्रतिनिधि गीत देल गेल अछि।

01. विद्यापति (मुद्रित पृ. १०-१३) — «जय-जय भैरवि»। भैरवीसँ आरम्भ करैत गायत्री, काली, दुर्गा आदिक बहुरूपक स्तोत्रपरम्परा; रौद्रता आ अभयक तनाव प्रमुख अछि।

02. लखनचन्द (मुद्रित पृ. १४) — «नमो नमो चण्डी»। प्रणामात्मक पुनरुक्तिसँ गीतक मन्त्रोच्चार-सदृश आरम्भ; देवीक चरण शरणस्थल बनैत अछि।

03. चतुरानन (मुद्रित पृ. १४) — «जयमण्डला जयमण्डला»। मण्डलात्मक स्तुतिमे दुर्गाक विजय-प्रतिमा; आवृत्तिक लय महत्त्वपूर्ण अछि।

04. सदानन्द (मुद्रित पृ. १४) — «जय जय दुर्गे दुर्गति»। नाम आ कार्यक ध्वनि-साम्यसँ दुःख-निवारणक देवी उभरैत छथि।

05. महाराज महेश ठाकुर (मुद्रित पृ. १५-१६) — «जय जय जय भय भञ्जनि»। भय-भञ्जन, महिष-वध आ भक्त-रक्षाक समवेत प्रतिमा।
06. महाराज महिनाथ ठाकुर (मुद्रित पृ. १६) — «वदन भयान कान»। देवीक उग्र मुखरूप आ भक्तक विस्मय बीच वर्णनक गति।
07. लोचन (मुद्रित पृ. १६) — «जय जय जय नत सतत»। नत मस्तकक भावभूमि आ सतत वन्दनाक लघु विन्यास।
08. कृष्णपति (मुद्रित पृ. १७) — «शंकरी शरणं धयल हम तोर»। “हम तोर” सम्बोधन शरणागतिसँ उपजल निजी सम्बन्ध रचैत अछि।
09. मंगनीराम (मुद्रित पृ. १७) — «तोही धरनी तोही करनी»। सृष्टि आ क्रियाशक्तिक एके देवीमे आरोपण।
10. शम्भुदत्त (मुद्रित पृ. १७) — «जय जय आदि शक्ति»। संसारक मूल शक्तिक संक्षिप्त दार्शनिक स्वीकृति।
11. शंकर (मुद्रित पृ. १८) — «गिरिनन्दिनी शुभ दिन»। पर्वत-सुताक प्रतिमा आ शुभ-प्रार्थनाक सह-अस्तित्व।
12. जीवदत्त (मुद्रित पृ. १९) — «जय-जय शङ्करि»। शंकर-संबद्ध देवीक स्तुति; ध्वन्यात्मक पुनरुक्ति प्रभावी।
13. वांगीश्वर (मुद्रित पृ. १९-२०) — «जय जय त्रिगुण»। त्रिगुणक तत्त्व-संकेत देवीक विश्वव्यापी रूप खोलैत अछि।
14. श्रीकान्तगणक (मुद्रित पृ. २०) — «जय जय भगवति जय»। सीधा देवी-संबोधन आ गुणपरक आवृत्तिक गेय विन्यास।
15. रामनाथ (मुद्रित पृ. २१) — «जे जे जे भवसागर तारिणि»। संसार-सागर सँ उद्धारक वैष्णवी-शाक्त प्रतीक-साम्य।
16. देवनाथ (मुद्रित पृ. २१) — «नील वसनी शम्भु धरनी»। वस्त्र-वर्ण आ शिव-सहचर्यसँ प्रतिमाक दृश्यात्मक रूप।

17. जयकृष्ण (मुद्रित पृ. २२) — «जै कालिके स्वर्गधारिणि»। कालीक उग्रता आ ऊर्ध्वलोकक पालन-दायित्वक मेल।
18. रामदास (मुद्रित पृ. २२) — «प्रणमओ प्रणत कलपतरु»। कल्पतरु-रूपक देवीकें अभिलाषापूर्तिक केन्द्र बनबैत अछि।
19. साहेब रामदास (मुद्रित पृ. २२) — «जनकल्लोलि महिमा»। चञ्चल मनमे स्मरण आ महिमाक सम्बन्धक आग्रह।
20. गोविन्ददास (मुद्रित पृ. २३) — «जयति जय वृषभानु»। वृषभ-सम्बद्ध प्रतीक स्तोत्रक देवपारिवारिक पृष्ठभूमि खोलैत अछि।
21. उमापति (मुद्रित पृ. २३) — «जय जय मधुकेटभ मर्दिनि»। मधु-कैटभ-वधक स्मृति सृष्टि-रक्षिणी देवीक परम्परासँ जुड़ैत अछि।
22. रमापति (मुद्रित पृ. २४) — «जय जय त्रिभुवनतारिणि»। त्रिभुवनक उद्धारकर्त्री देवीक विराट विस्तार।
23. लालकवि (मुद्रित पृ. २५) — «जय हरिरमनी»। हरि-संबद्ध नामक प्रयोगसँ सम्प्रदायगत सीमाक लचीली भाषा।
24. देवानन्द (मुद्रित पृ. २५) — «जय जय दुर्गा»। लघु स्तुतिमे दुर्गाक नामे लय आ श्रद्धाक केन्द्र।
25. गोकुलानन्द (मुद्रित पृ. २५) — «जय जय भारति भगवति»। भारतीक वाणी-शक्ति सेहो शाक्त परिधिक अङ्ग बनैत अछि।
26. काहाराम (मुद्रित पृ. २६) — «जय जय दुर्गा दुर्गि, जै जै कमला»। दुर्गा आ कमलाक युग्म-आवाहन रूप-विविधता देखबैत अछि।
27. रत्नपाणि (मुद्रित पृ. २६-३१) — «जय जगजननि»। बहुगीतात्मक विस्तृत खण्ड; जननी, भुवनेशि, कमला आ दुर्गाक स्तोत्र-शृङ्खला।
28. भानुनाथ (मुद्रित पृ. ३२) — «जय जय त्रिभुवन»। त्रिभुवन-व्यापी देव्या सामर्थ्यक उद्घोष।

29. हर्षनाथ (मुद्रित पृ. ३२-३३) — «जय जय कुमति विनाशिनि। दुःखक संग कुमतिक निवारण—शक्ति आ विवेकक सम्बन्ध।
30. चन्दा झा (मुद्रित पृ. ३४-३८) — «जय देवि महेश-पुत्रि। दीर्घ खण्डमे दास्य, करुणा, मातृसंबोधन आ कल्याणक व्याकुल विनती।
31. कान्हदास (मुद्रित पृ. ३८) — «जय गंगाजी। गङ्गाक देवी-स्वरूप जोड़ि शाक्त परिभाषाकें नदी-पूजा धरि बढ़ेनाइ।
32. जलधरदास (मुद्रित पृ. ३८) — «जननि ! अब जानु। समय-सापेक्ष पुकार आ अपन कष्ट देखबाक अनुरोध।
33. दास (मुद्रित पृ. ३९) — «जा के पीर हरे। पीड़ा-हरणक अनुभूति गीतक केन्द्रीय प्रत्याशा बनैत अछि।
34. चिरंजीव (मुद्रित पृ. ३९) — «जय काली जय तारा। काली आ ताराक समानान्तर सम्बोधन तान्त्रिक देवी-बहुलता देखबैत अछि।
35. नरसिंहदत्त (मुद्रित पृ. ३९) — «दुर्गा लेखा दय-दय तोर। कृपाक पुनःपुनः याचना दीन वक्ताक स्वरकें प्रधान करैत अछि।
36. श्रवण सिंह (मुद्रित पृ. ४०) — «जय कमलनयनी कमल। कमल-प्रतिमाक सौम्यता देवीक रौद्र छविक प्रतिपक्ष रचैत अछि।
37. भैरनी देवी (मुद्रित पृ. ४०) — «जय जय दुर्गा अनुपम रूपे। नामानुसार स्त्री-कविस्वर आ सौन्दर्यमयी दुर्गाक आवाहन।
38. आदिनाथ (मुद्रित पृ. ४०-५०) — «नहि जगबहार हम। दीर्घतम खण्डसभमे सँ एक; अनेक नाम, रूपक आ शरणागतिपरक गीत।
39. दुर्गादत्त सिंह (मुद्रित पृ. ५०) — «तुअ पदे कमल संतत। देवीक चरण-कमलमे मनक निरन्तर निबद्धता।
40. दीनबन्धु झा (मुद्रित पृ. ५१) — «जयति भगवति भक्त-तारिणि। भक्त-तारण, दारुण वेष आ करुणाशक्तिक द्वैध।

41. जीवन झा (मुद्रित पृ. ५२) — «दिन पुन फेरहु भुवनेशि»। बदलि गेल जीवन-स्थिति सुधरेबाक तात्कालिक अपेक्षा।
42. तेजनाथ झा (मुद्रित पृ. ५२-५४) — «जगत जननि पद»। जगत-जननीक चरण, काली आ गङ्गा समेटैत नैतिक आत्मपरीक्षण।
43. सूरदास (मुद्रित पृ. ५४) — «जगदम्बा भवानी हे»। मातृभावक सरल आवाहनक केन्द्रमे दैन्य आ आशा।
44. दामोदर (मुद्रित पृ. ५४) — «जाग जननि हे»। जागरणक पुकार देव्या ध्यान प्राप्त करबाक भावभङ्गिमा।
45. लक्ष्मीपति (मुद्रित पृ. ५४) — «क्षमा समुद्र क्षमिय अब जननी»। क्षमा-समुद्रक उपमा आत्मस्वीकृत अपराधबोधकेँ शान्त करैत अछि।
46. यदुनाथ मिश्र (मुद्रित पृ. ५५) — «दैत्यों दमन»। असुर-दमनक आख्या संग उग्ररूपक स्मृति।
47. ललितेश्वरी देवी (मुद्रित पृ. ५५) — «जयति जगदम्बिके काली»। पूजा-अपर्याप्तताक आत्मालोचनक संग करुणामयी कालीकेँ स्मरण।
48. नन्दनी देवी (मुद्रित पृ. ५५) — «जय काली कलि कलुष»। कलियुगक कलुष आ कालीक शुद्धिकारी सामर्थ्यक ध्वनि।
49. जीवानन्द (मुद्रित पृ. ५६) — «जय जय भवजननि»। अस्तित्वक मूल मातृरूप आ सम्बोधनक ऊर्जस्विता।
50. सुरेन्द्र झा 'सुमन' (मुद्रित पृ. ५६) — «धयल मुण्डमयी श्यामा»। उग्र प्रतिमा रचनाक दृश्यात्मक आकर्षण बनैत अछि।
51. ईशनाथ झा (मुद्रित पृ. ५७) — «जय जय दुर्गे दलनि»। दलनक क्रियाशक्ति आ भक्त-सम्बोधनक सहमेल।
52. मधुप (मुद्रित पृ. ५८) — «सम्प्रति सहस-सूर्य राजय जगमग माँ»। असीम तेजक हजार-सूर्य बिम्ब देवीक ज्योति-रूपक विस्तार करैत अछि।

53. श्रीकृष्ण (मुद्रित पृ. ५९) — «जय जय जननि»। मातृ-स्तुतिक लघु, आवृत्ति-आधारित विधान।
54. विश्वनाथ (मुद्रित पृ. ६०) — «जय जय सकल असुर»। विजय-गाथाक स्मृतिसँ देवीक पराक्रम स्थापित होइत अछि।
55. महाराज रामेश्वर सिंह (मुद्रित पृ. ६०) — «जय जय जगजननि, कि कहब जननि»। कथनीयताक अपर्याप्तता बतबैत महिमाक असीमता प्रकट होइत अछि।
56. शिवदत्त (मुद्रित पृ. ६१) — «ब्रह्मशक्ति जे चाहिय आइली»। ब्रह्मशक्ति शब्दसँ उपासनाक दार्शनिक क्षितिज।
57. तन्नाथ झा (मुद्रित पृ. ६१) — «सिंह चढ़ल माता»। सिंहवाहिनी प्रतिमाक लोकदृश्य आ भय-निवारणक भाव।
58. यदुनाथ झा 'यदुवर' (मुद्रित पृ. ६२) — «मण्डलमय मैथिल»। मैथिली सांस्कृतिक शब्द-संयोगक संग देव्या सामर्थ्य।
59. ऋषिनाथ झा (मुद्रित पृ. ६२) — «जननी तनय विनय»। माता-पुत्र सम्बन्धक माध्यमसँ क्षमाक विनती।
60. राजलक्ष्मी (मुद्रित पृ. ६२) — «श्यामा चरण कमल हम पूजब»। चरणसेवा आ भक्तिक आत्मीय कृत्य एकठाम।
61. त्रिलोचन झा (मुद्रित पृ. ६२-६३) — «चण्डी तोहर मिथिला देश»। देवीकेँ सीधे मिथिलाक समाज आ भूगोलमे आमन्त्रित करबाक विरल स्वर।
62. गणनाथ (मुद्रित पृ. ६३) — «अकथ तत्त्व तुअ तारिणि»। अनिर्वचनीय शक्ति आ उद्धारक सम्बद्ध अवधारणा।
63. श्यामानन्द झा (मुद्रित पृ. ६४) — «जय कमलासिनि»। कमलासनक सौम्य रूप देवीक तत्त्व-विविधता बढबैत अछि।
64. आरसी प्रसाद सिंह (मुद्रित पृ. ६४) — «जननि, वीणा-वादिनी!»। विद्या, वाणी आ वीणाक सरस्वती-संकेतसँ व्यापक शाक्त अर्थ।

65. काञ्चीनाथ झा 'किरण' (मुद्रित पृ. ६४) — «जननी ! लिअ आब सुधि»। स्मरणक प्रतीक्षामे पीड़ित भक्तक तात्कालिक सम्बोधन।
66. चन्द्रभानु सिंह (मुद्रित पृ. ६५) — «जननि तोहर चरण»। चरणक निकटता भक्तिक लक्ष्य आ मनोवैज्ञानिक आश्वासन।
67. प्रभु नारायण 'प्रदीप' (मुद्रित पृ. ६५) — «जगदम्ब अही»। "अहाँ बिनु आश्रय ककर?" प्रश्नक पुनरावृत्ति स्तुतिमे नाटकीयता लबैत अछि।
68. चन्द्रमणि (मुद्रित पृ. ६५) — «जयति भवानी»। संक्षिप्त जयघोषक भीतर रक्षाक अभिलाषा।
69. चन्द्रकान्त झा (मुद्रित पृ. ६६) — «जागु जागु मैया»। निद्रा-विपर्ययक रूपक—देवीकेँ जागयबाक आग्रह दरअसल लोक-दुःख पर दृष्टि देबाक आग्रह।
70. अज्ञात कवि (मुद्रित पृ. ६७) — «गीत-पाठ (नाम अनिर्दिष्ट)»। रचनाकार अज्ञात रखल गेल अछि; स्रोत-अभावकेँ कल्पित जीवनीसँ भरब अनुचित।
71. जगज्ज्योतिमल्ल (मुद्रित पृ. ६७-६८) — «मधुकैटभ महिषासुर मारल»। पुराणिक असुर-वध आ मातृ-शक्तिक युग्म-स्वरूपक स्तुति।
72. जगत्प्रकाशमल्ल (मुद्रित पृ. ६९-७०) — «नहि आन गति हमरा»। आश्रयक एकमात्र आधार देवी, अपराध-स्वीकृति आ करुणा-याचनाक अनुक्रम।
73. जितामित्रमल्ल (मुद्रित पृ. ७०) — «नमो रुद्रानी गिरितनया»। शिव-संबद्ध रुद्राणी आ गिरितनयाक द्विनाम-आवाहन।
74. भूपतीन्द्रमल्ल (मुद्रित पृ. ७१) — «जय हिमालय नन्दिनी»। हिमालय-विम्ब देवीक उर्ध्वगौरव आ सांस्कृतिक भूगोलक संकेत।
75. प्रतापमल्ल (मुद्रित पृ. ७२) — «किदहु करम मोर हीन रे»। आत्मग्लानि, कर्म आ कृपाक विनय-पद्य; जपसँ बेसी आत्मस्वीकार।
76. जगतचन्द्र (मुद्रित पृ. ७२) — «जयति जगदम्बे काली»। अन्तिम गीतमे कालिकाक विजय आ शरणक संक्षिप्त समापन।

१. आलोचनात्मक निष्कर्ष

मैथिली शाक्त साहित्यक मूल्य केवल एहि बातमे नहि अछि जे ई देवीगीतक संकलन अछि; ओकर विशेषता अलग-अलग समय, शैली आ भाषिक स्तरक रचनाकारसभक संहति अछि। ७६ रचनाकार-प्रविष्टि आ १९१ गीतक भीतर देवी कखन असुर-विनाशिनी, कखन क्षमा-समुद्र, कखन ज्ञानदात्री, कखन मिथिलाक लोकमाता बनि उपस्थित होइत छथि। एही बहुरूपताक कारण पोथी मिथिलाक धार्मिक कल्पना, स्तोत्र-विन्यास, काव्य-भाषा आ सामाजिक संवेदनाक संयुक्त अध्ययनक आधार बनैत अछि।

सम्पादकक पहिल संस्करणक भूमिका शाक्त साहित्यक सांस्कृतिक-दार्शनिक क्षितिज दैत अछि आ दोसर संस्करणक टिप्पणी पाठ-प्रसारक अभिप्राय स्पष्ट करैत अछि। संग्रहक कवि-आधारित क्रम शोधक सहज आरम्भबिन्दु अछि, मुदा भविष्यक आलोचनात्मक संस्करणमे १९१ गीतक स्वतंत्र अनुक्रमणिका, समग्र स्रोत-सूची, पाठभेद, रचनाक कालनिर्धारणक प्रमाण, कठिन शब्दक कोश आ गायनपरम्पराक साक्ष्य जोड़ला सँ एकर उपयोगिता बहुत बढ़त।

ग्रन्थक समग्र मूल्याङ्कन: ई संरक्षित शाक्त काव्य-सम्पादक महत्त्वपूर्ण पाठ-संकलन अछि, अन्तिम पाठ-निर्णायक संस्करण नहि। एकर अपूरणीय पक्ष अछि मैथिलीमे देवीक अनेक रूप, अनेक कविक आवाज आ अनेक प्रकारक विनय-गीत एकठाम देखबाक अवसर। एकर पढ़ाइमे पाठक केँ न आस्था छोड़बाक आवश्यकता अछि, न आलोचनात्मक विवेक; दुनूकेँ पृथक् विधि मानि एक-संग राखलासँ ई संग्रह आरो अर्थवान होइत अछि।

अध्याय 05 / २००६

मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष

डॉ. योगानन्द झाक कृतिक आलोचनात्मक विवेचन

ग्रन्थमे आरम्भक ‘भव्य ओ दिव्य प्रभा’ शीर्षक भूमिका मैथिलीमे अछि, मुदा मुद्रित पृष्ठ १७ सँ मुख्य इतिहास-विवेचन प्रायः हिन्दीमे लिखल गेल अछि। ई भाषिक भेद शोधक प्रमुख तथ्य अछि। एहि समीक्षा मे मूल कथनकेँ मैथिलीमे विवेचित कएल गेल अछि, किन्तु मूलक भाषा केँ मैथिली बताकऽ प्रस्तुत नहि कएल गेल अछि। लेखकक हिन्दी विवेचन, मैथिली उद्धरण, पत्रिकाक नाम आ तिथिकेँ परस्पर अलग पहचान देल गेल अछि। मूल पाठमे आन्तरिक

असंगति अथवा बाहरी स्रोतसँ भिन्नता भेटला पर ओकर उल्लेख ‘जाँचबाक विषय’क रूपमे अछि, अन्तिम सत्यक रूपमे नहि।

२. पोथीक मूल प्रतिपाद्यः शताब्दी उपलब्धिक संग अधूरा सार्वजनिक जीवन

योगानन्द झाक प्रतिपाद्य दुटा विपरीत तथ्यक बीच विकसित होइत अछि। पहिल, मैथिली पत्रकारिताक सौ वर्षमे असंख्य साहित्यिक पत्रिका, मासिक, साप्ताहिक, हस्तलिखित पत्र, बालपत्रिका, शोधपत्र, स्मारिका आ दैनिक प्रकाशित भेल; हिनका सभक माध्यमे आधुनिक मैथिली साहित्य, भाषा-चेतना, लिपि, वर्तनी, नाटक, कथा, कविता आ आलोचनाकें महत्वपूर्ण आधार भेटल। दोसर, पत्रिकाक ई विस्तार टिकाउ समाचार-व्यवस्था, व्यापक पाठकवर्ग, नियमित वितरण, व्यावसायिक आमदनी आ लोकजीवन सँ प्रत्यक्ष सम्बन्धमे समान अनुपातमे नहि बदलि सकल। लेखकक अन्तिम मूल्यांकनक केन्द्र ‘साहित्यकारिता’ आ ‘पत्रकारिता’क बीचक अन्तर अछि। (मुद्रित पृ. १८-१९, ६२-६४।)

एहि द्वन्द्वकें पोथीक मुख्य वैचारिक उपलब्धि मानल जा सकैत अछि। लेखक केवल पत्रिकाक सूची नहि देबैत छथि; ओ प्रश्न उठबैत छथि जे पत्रिका समाजक दैनन्दिन समस्या, सूचना, शिक्षा, अर्थव्यवस्था आ सार्वजनिक विमर्शक वाहक बनि सकल कि नहि। तथापि ‘सफल पत्रकारिता’ लेल दैनिक पत्रकें लगभग सर्वोच्च कसौटी मानबाक कारण ओ साहित्यिक, वैचारिक, सामुदायिक आ लघुपत्रिका सभक उपलब्धिकें कखनो-कखनो कम आँकैत छथि। समीक्षाक आगामी भागमे एहि तनावक परीक्षण कएल गेल अछि।

३. ग्रन्थक रचना-विन्यास आ लेखकीय स्वर

पोथी पारम्परिक क्रमाङ्कित अध्यायमे विभाजित नहि अछि; विषयगत शीर्षकक आधार पर एकटा दीर्घ इतिहास-निबन्धक रूपमे विकसित अछि। मुद्रित पृ. ५-१६ मे आत्मीय मैथिली भूमिका, साहित्यिक सम्बन्धक स्मृति, पं. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क प्रतिदान आ भाषा-आन्दोलनक प्रसंग अछि। पृ. १७-१९ मे पत्रकारिताक ऐतिहासिक आरम्भ आ समग्र मूल्यांकन; पृ. १९-२३ मे ‘दैनिक पत्र’ अन्तर्गत ‘स्वदेश’ आ ‘मिथिला मिहिर दैनिक’; पृ. २३-५४ मे ‘अन्य पत्र-पत्रिकायें’ अन्तर्गत प्रकाशनक विस्तृत परिचय; पृ. ५४-५५ मे ‘नेपालीय मैथिली पत्रिकायें’; पृ. ५५-५६ मे

‘हस्तलिखित पत्र-पत्रिकायें’; पृ. ५६-६२ में ‘वर्तमान मैथिली पत्र-पत्रिकायें’; आ पृ. ६२-६४ में निष्कर्ष देल गेल अछि।

आरम्भक भूमिकामे लेखक अपन संस्मरण, संगोष्ठीक अनुभव, सुमनजीक सान्निध्य, दैनिक ‘स्वदेश’क अङ्क देखबाक अवसर, आ विभिन्न सम्पादक-शोधकर्ताक सहयोगक स्मरण करैत छथि। ई विवरण ग्रन्थकें केवल द्वितीयक पुस्तक-समीक्षाक स्थानपर साक्षात् पत्रकारिता-जगतसँ सम्बद्ध सहभागी शोधक रूप दैत अछि। लेखक स्वयं स्वीकार करैत छथि जे उपलब्ध पत्रिकाक आधार पर चयन भेल अछि आ किछु दुर्लभ अथवा अनियमित पत्र छूटि सकैत अछि। एहि आत्मस्वीकृतिकें इतिहासलेखनक ईमानदार सीमा मानल चाही, नहि जे एकर सूची सर्वसमावेशी अछि। (मुद्रित पृ. १०-१४।)

शुभाशंसा, समर्पण, व्यक्तिगत कृतज्ञता आ संस्मरणक विस्तृतता पुस्तकक सांस्कृतिक वातावरणक साक्ष्य तऽ अछि; मुदा इतिहास-निबन्धक समीक्षात्मक अध्येता लेल ई पृष्ठ स्रोत-सामग्रीक वर्गीकरण सँ पृथक् पढ़ल जाय। व्यक्तिक प्रति कृतज्ञता, तथ्यक स्वतन्त्र प्रमाण नहि बनैत अछि।

४. १९०५ सँ पूर्व पत्रकारिताक कल्पना: योजना आ प्रकाशनक अन्तर

मुख्य विवेचनक आरम्भमे लेखक अयोध्या प्रसाद खत्रीक ‘तिरहुत’ शीर्षक पत्रक योजना आ १९०१ क पत्राचारक उल्लेख करैत छथि। हुनक कथन अनुसार योजना वास्तविक पत्र-प्रकाशनमे नहि बदलि सकल। एहि ठाम लेखक ‘प्रस्तावित पत्र’ आ ‘प्रकाशित पत्रिका’क बीच आवश्यक भेद स्थापित करैत छथि। ओ ‘अयोध्या प्रसाद खत्री स्मारक ग्रन्थ’ आ ‘अमरजीक परिचय संसार ओ पत्राचार’क उल्लेख कऽ पुरान पत्राचारक प्रमाण दिस संकेत करैत छथि। (मुद्रित पृ. १७।)

एहि प्रसंगक उपयोग इतिहासक प्रारम्भ-वर्षकें विवेकपूर्वक परिभाषित करबाक लेल उपयुक्त अछि। कोनो विचार, घोषणा अथवा छापाखानाक तैयारी पत्रकारिता-संस्थाक इतिहासक अङ्ग भऽ सकैत अछि; मुदा प्रथम प्रकाशित अंकक प्रमाण बिना ओकरा नियमित पत्रिका मानि लेब अशुद्ध होयत। योगानन्द झाक १९०५क चुनाव एहि अर्थमे प्रकाशित पत्रक परम्पराक आरम्भ-बिन्दु अछि। खत्रीक योजना सम्बन्धी मूल पत्राचार एहि संलग्न पोथीक भीतर उद्धृत स्रोतक

माध्यमे ज्ञात होइत अछि; मूल पत्रक प्रतिलिपि एहि समीक्षा लेल स्वतन्त्र रूपसँ प्राप्त नहि भेल।

५. 'मैथिल हित साधन': जयपुर, प्रवास आ मुद्रित सार्वजनिकताक जन्म

लेखक जयपुरसँ प्रकाशित 'मैथिल हित साधन'कें मैथिली पत्रकारिताक प्रारम्भिक पत्रिका मानैत छथि आ विद्यावाचस्पति मधुसूदन झाकें अग्रणी प्रवर्तकक रूपमे स्थापित करैत छथि। पोथीमे एहि पत्रक उद्देश्यक केन्द्र शिक्षा-विस्तार, मैथिल समाजक हित, सामाजिक कुरीति पर विचार, तथा व्याकरण, गणित, भूगोल, इतिहास आ दर्शनसँ जुड़ल पुस्तक-प्रकाशनक उल्लेख अछि। एकर संग 'मैथिल चारुचर्या'क प्रकाशनक प्रसंग सेहो अछि। (मुद्रित पृ. १७-१८, २४।)

एहि विवरणक ऐतिहासिक अर्थ ई अछि जे मैथिली पत्रकारिताक संस्था भौगोलिक मिथिलाक केन्द्रमे नहि, प्रवासी बुद्धिजीवीक संयोजनसँ सुदूर जयपुरमे प्रारम्भ भेल। भाषा-समुदायक निर्मिति लेल पत्रिका केवल समाचारक माध्यम नहि, लेखक, पाठक, विद्यालय, संघ आ प्रकाशक कें एक सूत्रमे जोड़बाक साधन छल। राजस्थानक मैथिल प्रवास आ ज्ञान-विनिमयपर रिपुञ्जय कुमार ठाकुरक स्वतन्त्र शोध-सार सेहो १९०५क जयपुर प्रकाशन, मधुसूदन झा आ अन्तरक्षेत्रीय सम्पर्कक व्याख्या करैत अछि। ई बाहरी मिलान पोथीक व्यापक प्रसंगकें बल दैत अछि; तथापि एहि समीक्षामे पत्रिकाक प्रथम अंकक मूल आवरणक स्वतन्त्र परीक्षण नहि भेल।

लेखक 'मैथिल हित साधन'कें समाज-सुधारक सार्थक प्रयास मानैत छथि, मुदा ओकर सीमित जीवनकालक उल्लेख सेहो करैत छथि। एहि ठाम पाठकवर्गक आकार, प्रतिमाह अङ्क-संख्या, मुद्रण-व्यय अथवा ग्राहक-संख्या ग्रन्थमे दत्त नहिअँ अछि। अतः बन्द होयबाक आर्थिक कारणक विशिष्ट आँकड़ा एकरा आधार बना नहि कहल जा सकैत अछि।

६. 'मिथिलामोद': भाषिक मिश्रण, सम्पादन आ साहित्यिक विस्तार

पोथीक अनुसार काशीसँ प्रकाशित 'मिथिलामोद' मैथिली पत्रकारिताक आरम्भिक आधारस्तम्भ छल। ग्रन्थ एकर प्रारम्भ १९०५ क श्रावणी पूर्णिमासँ जोड़ैत अछि; सम्पादनमे मुरलीधर झा, परवर्ती समयमे सीताराम झा आ उपेन्द्रनाथ झाक उल्लेख अछि। लेखक कहैत छथि जे प्रारम्भिक वर्षमे पत्रिका हिन्दी आ मैथिली दुनू भाषा उपयोग करैत छल, बादमे मैथिलीकें प्रधान स्थान भेटल; पत्रिका द्वारा पुस्तक-प्रकाशन, महिला लेखिकाक रचनासँ

परिचय, वर्तनी-विमर्श, तिरहुता, भाषा-अधिकार आ सामाजिक प्रश्न सभ आगाँ आयल। (मुद्रित पृ. २४-२५।)

मुख्य विश्लेषणीय तथ्य ई जे भाषा-निर्माणक आरम्भिक छपाइ-संसार एकभाषी नहि छल। मैथिली-हिन्दी मिश्रित पत्रिकाक अस्तित्व नहि तऽ ओकर योगदान अस्वीकार करैत अछि, नहि पछिला कालक पूर्ण मैथिली-पत्रक समान मानदण्डक अनिवार्यता सिद्ध करैत अछि। पत्रिकाक भाषा-चयन समय, शिक्षित पाठकक आदत, छापाखानाक संसाधन आ सार्वजनिक उद्देश्यसँ जुड़ल प्रश्न छल। एहि बिन्दुपर ग्रन्थक तथ्य मूल्यवान अछि।

एहि पत्रिकाक प्रथम वर्ष पर स्रोतभेद अछि। योगानन्द झा १९०५ लिखैत छथि; डॉ. धनाकर ठाकुरक प्रकाशित सूचीमे सेहो १९०५ भेटैत अछि, मुदा किछु अन्य इतिहास-विवरण १९०६ बतबैत अछि। केवल परवर्ती सूची देखिकऽ १९०५ वा १९०६ मे कोनो एककेँ अविवादित निर्णायक रूपमे लिखब उचित नहि। प्रथम अङ्क, प्रकाशन-घोषणा आ समकालीन विज्ञापनक मिलान आवश्यक अछि।

७. 'मिथिला मिहिर': मिथिलाक छपाइ-केन्द्र आ दीर्घकालिक संस्थान

योगानन्द झा 'मिथिला मिहिर'क आरम्भ दरभंगामे १९०९ क मकर संक्रान्तिसँ मानैत छथि। प्रारम्भिक अवस्थामे हिन्दी प्रधान सामग्री, पछिला समयमे मैथिलीकेँ बढ़ैत स्थान, मासिकसँ साप्ताहिक रूपान्तरण, १९३६ क 'मिथिलांक', आ १९६०क आसपास पटना-केन्द्रित पुनर्प्रकाशनक चर्चा करैत छथि। ग्रन्थक अनुसार पत्रिकासँ विष्णुकान्त झा, परमेश्वर झा, सुरेन्द्र झा 'सुमन', सुधांशु शेखर चौधरी आदि अनेक सम्पादक जुड़ल रहलाह। (मुद्रित पृ. २५-२६।)

एहि पत्रक शक्ति केवल दीर्घजीविता नहि, ओकर संस्थागत रूपान्तरण अछि। एकटा प्रकाशन मासिक साहित्यिक-अभिव्यक्तिसँ साप्ताहिक सार्वजनिक विमर्श धरि आ पुनः दैनिक सूचना-संरचना धरि यात्रा कएलक। ई रूपान्तरण स्थानीय सम्पादन, प्रकाशन-पूँजी, पाठकीय अपेक्षा आ विज्ञापनक तकनीकी सम्बन्ध बुझबाक आधार बनैत अछि। पृष्ठ २५-२६ आ २२-२३ केँ संग पढ़ला पर पोथीक इतिहास 'अलग-अलग पत्रक सूची'सँ बढ़ि कऽ एकटा माध्यमक रूप-विकासक अध्ययन बनि जाइत अछि।

‘मिथिला मिहिर’क प्रारम्भ-वर्षपर सेहो बाहरी स्रोत एकमत नहि छथि—मराठी विश्वकोशमे १९०८, डॉ. धनाकर ठाकुरक सूचीमे १९०९, आ किछु नेपालीय समीक्षामे १९१२ भेटैत अछि। योगानन्द झाक १९०९ केँ पोथीक कथन मानि उद्धृत करब आवश्यक अछि; तथाकथित अन्तिम तिथि निश्चित करबाक लेल आरम्भिक अंकक प्रत्यक्ष साक्ष्य चाही। एकटा पुस्तकक तिथि दोसरा पुस्तकक तिथिकेँ अपने-आप असत्य नहि बनबैत अछि।

८. दैनिक ‘स्वदेश’: १९४८ क मासिकसँ १९५५ क ऐतिहासिक दैनिक धरि

योगानन्द झाक विवेचनमे ‘स्वदेश’ विशेष महत्त्व रखैत अछि। पं. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ १९४८ मे मासिक ‘स्वदेश’ निकालने छलाह, जकर छओ अंकक उल्लेख अछि। पोथीक अनुसार ९ अक्टूबर १९५५ सँ दैनिक संस्करण आरम्भ भेल। एहि चारि पृष्ठक पत्रमे साहित्यक अपेक्षा समाचार, विचार, जनप्रश्न, लोकमत, राजनीतिक टिप्पणी, गृहस्थोपयोगी सूचना, रेल-समय-सारिणी, बाजार-भाव, खेलकूद आ व्यंग्यकेँ स्थान भेटल। लेखक एकरा उत्तर बिहारक प्रारम्भिक दैनिक-पत्रकारी प्रयोगक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि। (मुद्रित पृ. १९-२१।)

स्वदेशक अध्ययन ग्रन्थक सभसँ सघन वर्णनमे एक अछि। लेखक पत्रक आकार, स्तम्भ, प्रथम पृष्ठक सूक्ति, पाठक-पत्रक ‘लोकमत’ खण्ड, ‘जय जय स्वदेश’ कविताक उल्लेख आ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क व्यंग्य-परम्पराक चर्चा करैत छथि। एहि विवरणसँ स्पष्ट होइत अछि जे ‘समाचार’ संग राजनीतिक चेतना, पाठकीय सहभागिता आ दैनिक उपयोगिताक सामग्री सम्मिलित कएल जा रहल छल। एहि दृष्टिसँ स्वदेशकेँ केवल भावनात्मक मातृभाषा-प्रयोग कहि छोड़ि देब लेखकक उपलब्ध स्रोत-पाठक प्रति अन्याय होयत।

एहि चरणक समापन-विवरणमे सावधानी जरूरी अछि। मुद्रित पृ. २० पर दिसम्बर १९५५ धरि कुल पैसठ अंकक उल्लेख अछि, मुदा मुद्रित पृ. २१ पर बन्द होयबाक दिनक विवरण अलग ढङ्गसँ आयल अछि। एतय एकटा निश्चित अन्तिम अङ्क-तिथि घोषित नहि कएल गेल अछि। स्वयं लेखकक भूमिकामे सुमनजीक १९५७क प्रतिवेदन उद्धृत अछि, जाहिमे आर्थिक घाटाक कारण दैनिक स्थगित भेलाक चर्चा अछि। ई पत्रक आर्थिक अस्थिरताक साक्ष्य अछि, किन्तु निर्धारित आय-व्ययक लेखा नहि। (मुद्रित पृ. ९, २०-२१।)

९. ‘स्वदेश’क दोसर चरण: १९८१-१९८३ आ दैनिकताक संकट

ग्रन्थक अनुसार ५ अगस्त १९८१ सँ ‘स्वदेश’क दैनिक प्रकाशन फेर आरम्भ भेल आ अक्टूबर १९८३ धरि ओकर प्रयोग चलल। एहि चरणमे प्रेस-संसाधन, अंकक आकार, पृष्ठ-संख्या आ प्रकाशनक नियमितता अस्थिर छल। लेखक व्यंग्य, मातृभाषाक प्रति आग्रह, लोकजीवनक विषय, कविता-कथा आ सार्वजनिक विचारक सहअस्तित्व देखबैत छथि। ओ संकेत करैत छथि जे समाचार-केंद्रित दैनिक फेर साहित्यिक पत्रिकाक रङ्ग ग्रहण करैत गेल। (मुद्रित पृ. २१-२२।)

पहिल आ दोसर ‘स्वदेश’क तुलना पुस्तकक पत्रकारिता-सिद्धान्त बुझबाक कुंजी अछि। ओही नाम, सम्पादकीय प्रतिबद्धता आ भाषा-आन्दोलनक पृष्ठभूमि रहलो पर संसाधन आ सामाजिक परिस्थिति बदलिए गेल छल। आर्थिक रूपसँ कमजोर पत्रक दैनिक कार्यप्रवाह अत्यन्त कठिन होइत अछि; सामग्री-संग्रह, नियमित मुद्रण, वितरण, सम्पादन आ विज्ञापन प्रत्येक दिन नवीकृत करबाक पड़ैत अछि। योगानन्द झा दैनिकताक एहि व्यावहारिक संकटकेँ प्रकट करैत छथि, मुदा सटीक लागत, वितरण-क्षेत्र, ग्राहक-प्रतिशत आ प्रति-अङ्क आयक आँकड़ा प्रस्तुत नहि करैत छथि। अतः ई सशक्त गुणात्मक अध्ययन अछि, परिमाणात्मक आर्थिक इतिहास नहि।

१०. ‘मिथिला मिहिर दैनिक’: १९८४-१९८६ मे समाचार-संस्थानक मॉडल

पोथीक अनुसार २० फरवरी १९८४ सँ ‘मिथिला मिहिर’ दैनिक रूपमे अवतरित भेल आ जून १९८६ धरि चलल। एकरा ‘आर्यावर्त’ आ ‘इण्डियन नेशन’सँ सम्बद्ध समाचार-प्रकाशन संरचनाक सुविधा भेटैत छल। लेखक पत्रक पृष्ठ-विन्यास, समाचारक वर्गीकरण, सम्पादकीय, राजनीतिक व्यंग्य, गुरुवार आ रविवारक अतिरिक्त सामग्री, सिनेमा, खेल, राशिफल, साहित्य आ वार्षिकांकक विशिष्टताक चर्चा करैत छथि। (मुद्रित पृ. २२-२३।)

एहि तुलनामे ‘मिथिला मिहिर दैनिक’क संस्थागत बल ‘स्वदेश’क व्यक्तिगत प्रतिबद्धतासँ भिन्न देखाइत अछि। उपलब्ध प्रेस, सम्पादनक संरचना आ बहुभाषिक समाचार-संस्थानसँ सम्बन्ध दैनिक पत्रक स्थायित्व लेल सहायक भऽ सकैत अछि। तथापि दू वर्षसँ किछु बेसी अवधि पश्चात दैनिक बन्द भेल—एहि अनुभवसँ केवल पूँजी उपलब्ध रहब पर्याप्त नहि, पाठक-बाजार आ दीर्घकालिक आर्थिक व्यवस्था सेहो आवश्यक अछि। एहि निष्कर्षमे आर्थिक कारक सम्भावित कारणक रूपमे समझल गेल अछि; बन्द होयबाक निर्णायक लेखापरीक्षित कारण मूल पुस्तक प्रस्तुत नहि करैत अछि।

एकटा महत्वपूर्ण विशेषता ई अछि जे ग्रन्थ लेखकद्वारा देखल अंकक बाह्य रचना, सम्पादकीय व्यवहार आ विशिष्ट स्तम्भक विवरण देइत अछि। एहि प्रकारक अंश पाठ-पत्रक प्रत्यक्ष अध्ययनक नजदीक अछि, आ शीर्षकसूचीसँ कहीं बेसी प्रमाणमूल्य रखैत अछि। शोधक अगिला चरणमे एहि वर्णित अंकसभक प्रतिलिपि, तारीख, विज्ञापन-विन्यास आ मुद्रण-सूचना अलगसँ सूचीबद्ध कएल जा सकैत अछि।

११. १९२०-१९४०: प्रवासी मैथिल, शुद्ध मैथिली लेखन आ साहित्यिक संस्थान

‘मैथिली प्रभा’ तथा ‘मैथिल प्रभाकर’क चर्चामे लेखक अजमेर, आगरा आ अलीगढ़क प्रवासी मैथिल समूहक प्रयास रेखांकित करैत छथि। ‘श्रीमैथिली’कें दरभंगासँ प्रकाशित पूर्ण मैथिली पत्रक रूपमे विशेष स्थान दैत छथि। ‘मिथिला’क सम्पादकीय उदारता, ‘मिथिला मित्र’क पाक्षिक स्वरूप, ‘मैथिल बन्धु’क प्रवासी सम्पर्क, ‘मैथिल युवक’ आ ‘जीवन प्रभा’क समाजकेन्द्रित भूमिका अलग-अलग चिन्हल गेल अछि। (मुद्रित पृ. २६-२८।)

एहि कालखंडक इतिहासमे भाषाक शुद्धता, सामाजिक प्रतिनिधित्व आ व्यापक प्रसार तीनटा अलग प्रश्न छथि। ‘श्रीमैथिली’कें एकभाषी रूपक पहिल प्रयोग कहब भाषिक इतिहासमे निर्णायक मानल जा सकैत अछि; मुदा मिश्रित भाषावाली आरम्भिक पत्रिकासभकें ‘कम मैथिली’ बुझबाक आग्रह उचित नहि। एहन परिवर्तनक अध्ययनमे वास्तविक लेख, विज्ञापन, सम्पादकीय आ पाठक-पत्रक भाषा अनुपात जाँचब अपेक्षित अछि।

‘भारती’, ‘विभूति’ आ ‘मैथिली साहित्य पत्र’क विवेचन साहित्यिक पत्रिकाक विविध पक्ष खोलैत अछि। ‘भारती’क विश्वविद्यालयीय मान्यता आ भाषा-आन्दोलन; ‘विभूति’क निर्भीक, परन्तु लेखकक दृष्टिमे विवादास्पद आलोचनात्मक रवैया; आ रमानाथ झाक सम्पादनमे ‘मैथिली साहित्य पत्र’क पुस्तक-जेकाँ सामग्री प्रकाशित करबाक आयोजन—ई सभ अलग मॉडल छल। (मुद्रित पृ. २८-२९।) ‘पीत पत्रकारिता’ सन कठोर विशेषणक प्रयोगमे लेखकक निर्णायक मत देखाइत अछि, मुदा पत्रिकाक विशिष्ट पंक्ति वा पूरा अंकक तुलनात्मक नमूना प्रस्तुत नहि होयब मूल्यांकनक सीमा अछि।

१२. १९४०-१९६०: ‘स्वदेश’, ‘बैदेही’, बालपत्रिका आ नवसृजन

द्वितीय विश्वयुद्धक आसपासक प्रकाशन-क्रममे ‘सत्य सन्देश’, १९४८ क मासिक ‘स्वदेश’, ‘मिथिला ज्योति’, ‘पल्लव’, ‘बैदेही’, ‘मिथिला दर्शन’, ‘मिथिला दूत’ आ ‘नूतन विश्व’ सन पत्रक चर्चा अछि। लेखक कतहु एक-दू अङ्क, कतहु दशकाँक उपलब्धि दर्ज करैत छथि। ‘पल्लव’क ग्रामीण प्रकाशनस्थान आ नवलेखक प्रोत्साहन, ‘बैदेही’क दीर्घ साहित्यिक भूमिका आ ‘मिथिला दर्शन’क राजनीतिक भाषिक अभियान विशेष महत्त्व रखैत अछि। (मुद्रित पृ. २९-३२।)

‘बैदेही’क सम्बन्धमे विभिन्न सम्पादक, प्रकाशन-केन्द्रक परिवर्तन, विशेषांक आ लगभग १९९० धरि चलल पत्रिकाक चर्चा अछि। एकरा आधुनिक मैथिली लेखनक अखड़ा बुझल जा सकैत अछि, जतय लेखकक पीढ़ी, साहित्यिक विधा आ विचारक प्रवाह बनैत रहल। मुदा पत्रिकाक सम्पूर्ण अङ्क-सूची बिना लेखकक गुणवत्तागत ‘उत्कृष्ट’ वा ‘अवनति’क निर्णय सभ वर्षपर समान रूपसँ लागू कएल नहि जा सकैत अछि।

‘बटुक’, ‘धियापुता’ आ ‘शिशु’क विवेचन ई सिद्ध करैत अछि जे मैथिली पत्रकारिता केवल वयस्क साहित्यकारक बौद्धिक क्षेत्र नहि छल। बाल-शिक्षा, अनुवाद, चरित्रकथा, शिशु-पाठमाला आ मनोरंजन लेल विशिष्ट पत्रक प्रयोग भेल। लेखक ‘बटुक’क अनेक कालखंड, बालसाहित्य-विशेषांक आ ‘धियापुता’क बालमनोविज्ञानपर बलक वर्णन करैत छथि। एतय ओ मातृभाषामे संस्थागत शिक्षा उपलब्ध नहि भऽ सकबाक कारण पाठकीय विकास सीमित रहल मानैत छथि। (मुद्रित पृ. ३२-३३।) ई समाजशैक्षिक अनुमान महत्वपूर्ण अछि; एकर पुष्टिक लेल विद्यालय, पाठ्यक्रम, वितरण-संख्या आ पाठक-प्रतिक्रियाक स्वतन्त्र आँकड़ा चाही।

१३. १९६०-१९७०: आन्दोलन, प्रयोग आ साहित्यिक विमर्शक विस्तार

‘इजोत’, ‘अभिव्यञ्जना’, ‘मिथिला’ साप्ताहिक, ‘मिथिला सेवक’, ‘मैथिली साहित्य परिषद् पत्रिका’, ‘अभियान’, ‘मैथिली कविता’, ‘मैथिली प्रकाश’, ‘आखर’ आ ‘सोनामाटि’क चर्चा लेखकक लेल साहित्यिक पत्रकारिताक विविध प्रयोग प्रस्तुत करैत अछि। ‘अभिव्यञ्जना’ नवता आ प्रयोगवादी साहित्य; ‘मैथिली कविता’ काव्य-केंद्रित चयन; ‘मैथिली प्रकाश’ शोध-अनुसन्धान; ‘आखर’ नवलेखन आ भाषा-आन्दोलन; ‘सोनामाटि’ बहुविध पाठक-रुचिक माध्यम बनबाक प्रयास करैत अछि। (मुद्रित पृ. ३३-३६।)

एहि पत्रिकासभक वर्गीकरणमे एकटा विधागत इतिहास छिपल अछि। कथा, कविता, आलोचना, रंगमंच आ भाषा-चेतनाक अलग मंच बनेबाक अर्थ ई छल जे सम्पादक विस्तृत साहित्यिक सार्वजनिक क्षेत्रक भीतर विशेष पाठक-समुदाय चिन्हि रहल छलाह। लेखक कखनो एहि विशिष्टीकरणकेँ उपलब्धि आ कखनो व्यापक समाचार-पत्रकारितासँ विचलन मानैत छथि। दुनू मत समेटि देखला पर बुझाईत अछि जे ‘पत्रकारिता’ आ ‘लघु साहित्यिक पत्र’क उद्देश्य सदैव एक नहि होइत अछि; ताहि कारण दुनूक सफलताक कसौटी सेहो एकसर नहि होयबाक चाही।

१४. १९६०–१९८०: राजनीति, भाषा-अधिकार आ वैचारिक पत्र

‘जनक’ (चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क सम्पादन), ‘स्वदेशवाणी’, ‘मिथिला टाइम्स’, ‘चर्चा’, ‘समाद’, ‘विकल्प’, ‘मिथिला भूमि’, ‘मैथिली समाचार’ आ अन्य पत्रक परिचय सँ स्पष्ट अछि जे मैथिली छपाइ-क्षेत्र राजनीतिक विचारक वाहक सेहो बनल। विश्वविद्यालयक स्थापना, रेडियो-केंद्र, मातृभाषाक परीक्षा-अधिकार, संविधानक आठम अनुसूची, पृथक् मिथिला राज्य आ दलगत वैचारिकी सन प्रश्न पत्रिकामे सक्रिय रहल। (मुद्रित पृ. ३६–४१।)

एतय लेखकक दृष्टि सर्वाधिक सक्रिय परन्तु कखनो असमान अछि। जखन कोनो पत्रिका मैथिलीक मान्यता लेल संघर्ष करैत अछि तँ ओकर प्रशंसा करैत छथि; जखन ओ कोनो दल वा सम्पादकीय विरोधसँ जुड़ैत अछि तँ भाषा अथवा ‘पीत पत्रकारिता’क आधारपर कठोर निर्णय दैत छथि। उदाहरणतः ‘मिथिला टाइम्स’केँ कम्युनिस्ट दलक वैचारिक पत्र, ‘चर्चा’केँ कांग्रेस-समर्थित आ ‘नूतन विश्व’केँ आनन्दमार्ग-संबद्ध लेखनक रूपमे वर्णित कएल गेल अछि। वैचारिक पक्षधरता अपने-आप अनैतिक पत्रकारिता नहि अछि; तथ्यक अशुद्धि, विरोधी विचारक दमन, स्रोतक अपुष्टि, द्वेषपूर्ण आरोप आ पाठककेँ भ्रमित करबाक प्रमाणक आधार पर आचारगत मूल्यांकन करबाक चाही।

‘समाद’ आ ‘विकल्प’ सम्बन्धी १९७८ क चर्चा विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। लेखकक अनुसार प्रवेशिका परीक्षामे मैथिलीक स्थान सँ सम्बन्धित सरकारी निर्णयक विरोध लेल पत्रक प्रयोग भेल। एहि उदाहरणमे पत्रिका सार्वजनिक नीति बदलबाक प्रयासक प्रत्यक्ष साधन अछि। मुदा यतय सरकारी अधिसूचना, प्रकाशित सम्पादकीय आ निर्णय-पलटबाक प्रशासनिक अभिलेख

मूल पुस्तकक संग संलग्न नहि अछि। ताहि कारण घटनाक क्रम पुस्तकक अभिलेखित दावा अछि, सम्पूर्ण दस्तावेजी पुनर्निर्माण नहि।

१५. 'मिनी पत्रिका' आ लघु पत्रिका: आकारक भीतर नवता

'मि०', 'अनामा-कथादिशा', 'चाडुर', 'सन्निपात', 'अग्निपत्र', 'माहुर', 'भुम्हुर', 'भूर', 'शिखा', 'लालधुआँ', 'संकल्प', 'अक्षत', 'मिथिला समुदाय' आ 'फराक'क विवेचनमे लेखक नवलेखन, पारम्परिकता-विरोध, वैचारिक असहमति, लघुरूप आ अनियत प्रकाशनक इतिहास दर्ज करैत छथि। 'मि०'क छोट आकार विशेष उल्लेखनीय अछि। 'कथादिशा' सन कथा-केंद्रित प्रयास विशिष्ट विधा लेल पाठक-समुदाय गठबाक संकेत अछि। (मुद्रित पृ. ४२-४४।)

लेखक एहि छोट-छोट प्रयोगसभमे व्यक्तिवाद आ अनियतताक प्रवृत्ति देखैत छथि। एहि आलोचनामे किछु सत्य प्रश्न अछि—ग्राहक केतबा अङ्क पओलक, वादा कएल आवृत्ति निभल कि नहि, सम्पादकीय संस्था कोना चलल? मुदा एक-अंकक पत्रिकाक ऐतिहासिक मूल्य शून्य नहि होइत अछि। कोनो एक अङ्क सँ कविता आन्दोलनक दिशा बदलि सकैत अछि, नाटक छपि सकैत अछि, वा नव लेखक प्रवेश करि सकैत छथि। अतः 'दीर्घजीविता' आ 'बौद्धिक प्रभाव' दूटा स्वतन्त्र मापदण्ड बनल चाही।

आलोचनात्मक रूपसँ देखल जाय तँ १९७०क दशकक लघुपत्रिकाक लेखक एकर राजनीतिक-सांस्कृतिक संघर्षक केन्द्रमे रखैत छथि, मुदा एकर प्रचार-साधन—साइक्लोस्टाइल, कम लागतक छपाइ, छात्र-संघ, संगोष्ठी आ कविता-पाठ—पर व्यवस्थित तकनीकी चर्चा नहि करैत छथि। ई आगाँक शोधक अवसर अछि।

१६. १९८०-१९९०: वर्तनी, स्त्री-सम्पादन, जनवादी साहित्य आ विषयगत विस्तार

पुस्तक 'देसकोस', 'विदेह', स्त्री-सम्पादित पत्रक उदाहरण, 'माटि-पानि', 'कोसी कुसुम', 'बसात', 'सन्दर्भ', 'चिनगी', 'लोकवेद', 'हालचाल', 'भाखा', 'कुशलक्षेम', 'आँखि-पाँखि' आदि पत्रिकाक विविध भूमिका चर्चा करैत अछि। किछु पत्रिकामे साहित्यक संग समाचार, राजनीति आ सामाजिक विमर्श समेटबाक प्रयत्न अछि; किछु पत्र विशुद्ध आलोचना, नवकविता अथवा जनवादी साहित्यक मंच बनैत अछि। (मुद्रित पृ. ४५-४८।)

एहि विवरणमे स्त्री-सम्पादन आ महिला-केन्द्रित विषयक संकेत विशेष ध्यान योग्य अछि। लेखक 'विदेह' आ दोसर महिला-प्रायोजित पत्रक चर्चा करैत छथि; तथापि प्रत्येक ठाम महिला लेखिका, सम्पादिका, प्रकाशिका, मुद्रक, वितरक आ पाठिका सभक भूमिका समग्ररूपेण अलग इतिहासक रूपमे विकसित नहि करैत छथि। महिला भागीदारीक सूची दऽ देब आ ओकर संस्थागत बाधा-विवेचन करब अलग बात अछि। स्त्री-पत्रिकाक वास्तविक विषय-सूची, सम्पादकीय निर्णय आ पाठक-पत्र उपलब्ध भेलापर मैथिली पत्रकारिताक लैङ्गिक इतिहास अधिक स्पष्ट होयत।

'चिनगी'क जनवादी विमर्श, 'लोकवेद'क विशिष्ट सज्जा आ साहित्यिक स्तर, 'भाखा'क नवलेखन सँ परवर्ती साहित्यिक-रूपान्तरण, आ 'माटि-पानि'क समाचार-विचार मिश्रण लेखकक दृष्टिमे प्रयोगक प्रकार सभ छथि। एकर अर्थ ई नहि जे सभ पत्रिका एक-समान ऐतिहासिक प्रभाव छोड़लक; पुस्तक विभिन्न मानदण्डसँ हिनका सभकेँ परखैत अछि। समीक्षक लेल आवश्यक अछि जे 'सम्पादकक मत' आ 'पत्रिकाक अंकमे वास्तविक प्रकाशित सामग्री'क अन्तर सदैव मनमे राखल जाय।

१७. १९९०—२००५: महानगरीय प्रवास, शोध-सामयिकी आ बहुआयामी सम्पादन

ग्रन्थक पछिला खण्डमे 'मैथिलीआलोचना', 'चतुरंग', 'मिथिला परिक्रमा', 'मिथिला समाद', 'जानकी', 'मिथिला प्रकाश', 'कोकिल मंच', 'आकांक्षा', 'मैथिली टाइम्स', 'जय मिथिला', 'मिथिला सुरभि', 'बागमती दामोदर टाइम्स', 'अन्तिका', 'देशज', 'देसिल वयना', 'आंकुर', 'लोरिक सलहेस दीनाभद्री', 'सूत्रधार', 'भोरुकवा' आ 'प्रवासी' सन पत्र सभ आएल अछि। एहि सूचीमे दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई, पटना, दरभंगा, सहरसा, मधुबनी, धनबाद आ प्रवासी संस्थाक सघन नेटवर्क उभरैत अछि। (मुद्रित पृ. ४८—५४।)

एहि दशकमे बहुते पत्र अपनाक 'समाचार-विचार'क मंच कहैत अछि, मुदा लेखकक परीक्षणमे बहुते अडक फेर साहित्यक प्रमुख वाहक बनैत अछि। 'आकांक्षा'क संदर्भमे समाज, शिक्षा, स्त्रीविषय, स्वास्थ्य आ विज्ञान समेटबाक प्रयास; 'अन्तिका'क नवप्रकाशन-विन्यास; 'देशज'क विशिष्ट काव्यविमर्श; 'आंकुर'क प्रवासी सम्पर्क; आ 'सूत्रधार'क कोशी-क्षेत्रपर दृष्टि—ई सभ भिन्न पाठकवर्गक चिन्ह अछि। एहि प्रकारक भिन्नता देखला पर 'मैथिली पत्रकारिता सिर्फ साहित्यिक अछि' सन सार्वत्रिक फैसला सरलीकरण सिद्ध होइत अछि।

किछु पत्रिकासँ सम्बन्धित लेखकक आलोचनात्मक भाषा कठोर अछि। ‘अन्तिका’क विरुद्ध लिखल टिप्पणी अथवा किछु सम्पादकीय गुटबन्दीक आरोप ऐतिहासिक बहसक विषय तऽ अवश्य अछि, किन्तु आरोपक समर्थनमे उद्धृत समाचार, प्रकाशित प्रत्युत्तर वा विरोधी सम्पादकक पक्ष नहि रहला कारण एकरा लेखकक मूल्यांकनक रूपमे पढ़बाक चाही। पुस्तक अपन युगक साहित्यिक वाद-विवादक साक्षी सेहो अछि; एहि बातसँ एकर महत्त्व घटैत नहि, स्रोत-आलोचनाक आवश्यकता बढ़ैत अछि।

१८. नेपालक मैथिली पत्रकारिता: सीमापार भाषिक सार्वजनिक क्षेत्र

‘नेपालीय मैथिली पत्रिकायेँ’ शीर्षक अन्तर्गत लेखक नेपालक मैथिली भाषाक पत्रिकाक स्वतन्त्र परम्पराकेँ भारतीय मिथिला-सन्दर्भसँ जोड़ैत छथि। ‘नवजागरण’क त्रिभाषिक स्वरूप, ‘फूलपात’, ‘इजोत’, ‘मैथिली’, ‘गामघर’, ‘दुभि-धान’, ‘हिलकोर’, ‘नैमिकानन’ आ ‘सलहेस वाणी’क चर्चा करैत छथि। ओ साहित्यिक आदान-प्रदान, सांस्कृतिक सम्बन्ध आ अनियमित प्रकाशनक समस्याकेँ महत्त्व दैत छथि। (मुद्रित पृ. ५४-५५।)

एहि खण्डक वास्तविक योगदान राष्ट्रीय सीमा पार करैत मैथिली मुद्रित संसारक परिकल्पना अछि। देश बदललासँ भाषा-समुदायक पाठकीय सम्बन्ध समाप्त नहि होइत अछि। मुदा नेपालक विक्रम संवत् आ भारतक ईसवी सन्क तिथि मिलान, स्थानीय प्रकाशन-नीति, नेपाली/हिन्दी/मैथिलीक सहभागिता आ पत्रिकाक संस्थागत इतिहास पर स्वतंत्र दस्तावेज चाही। एहिक सूचनासँ नेपालक समग्र पत्रकारिता-इतिहास सम्पन्न भेल मानब उचित नहि। लेखक स्वयं खण्ड संक्षिप्त रखैत छथि।

बाहरी नेपाली समीक्षा-सन्दर्भमे ‘नवजागरण’केँ आरम्भिक त्रिभाषिक पत्रक रूपमे देखल गेल अछि, मुदा प्रथम प्रकाशन-वर्षक प्रस्तुति सभ स्रोतमे एकसर नहि। मैथिली भागक सम्पादक, प्रथम अंकक तिथि आ प्रकाशनस्थान जँ मूल प्रतिलिपिसँ मिलत तँ एहि पोथीक सीमापार खण्डक विश्वसनीयता आ बढ़त।

१९. हस्तलिखित पत्र-पत्रिका: ग्राम्य शिक्षित समाजक वैकल्पिक छापाइ-जगत

ग्रन्थमे ‘हितैषी’, ‘अयाची’, ‘गोविन्द’, ‘अक्षत’, ‘किरण’, ‘लोचन’, ‘मिथिला मानस’, ‘मित्रवाणी’, ‘प्रभात’, ‘मन्दार’, ‘जानकी’, ‘कौशिकी’, ‘सौरभ’ आदि हस्तलिखित पत्रक

उल्लेख अछि। काशीमे ‘मैथिली सुधाकर’, ‘मिथिलोदय’, ‘भारती’ आ ‘वैदेही’ सन पत्रक सेहो चर्चा अछि। किछु ठाम हस्तलिखित पाठक साइक्लोस्टाइल वा प्रतिलिपि-आधारित प्रसारक उल्लेख भेटैत अछि। (मुद्रित पृ. ५५-५६।)

ई खण्ड पोथीक अत्यन्त मूल्यवान भाग अछि, कारण ‘प्रकाशन’कें केवल व्यावसायिक छापाखानासँ सीमित नहि करैत अछि। गामक विद्यार्थी, स्थानीय गोष्ठी आ साहित्य-प्रेमी हस्तलिखित पत्रद्वारा सार्वजनिक लेखनक प्रशिक्षण दैत छलाह। एहि परम्परामे पाठक सीमित होइतो लेखक-निर्माण, भाषा-अभ्यास आ सामूहिक सम्पादनक विधा बनैत छल। दस्तावेज लुप्त भऽ रहल होयबाक लेखकक चिन्ता संग्रहालय, निजी पाण्डुलिपि, पुस्तकालय आ विद्यार्थी-संग्रहक सर्वेक्षणक आवश्यकता देखबैत अछि।

एहि इतिहासक सीमास्वरूप पोथी हर पत्रक सुरक्षित प्रति, हस्तलेखक पहिचान, संचिका-संख्या आ वर्तमान संग्रहस्थान नहि दैत अछि। ताहि लेल ई सूची खोज-निर्देशिका अवश्य अछि, पूर्ण अभिलेख-सूची नहि। एहि अन्तरक पहिचानक बिना पत्रिकाक नामसभ पाठकीय स्मृतिमे रहि जेतैक, मुदा शोधक लेल वस्तुगत प्रति उपलब्ध नहि होयत।

२०. २००६क ‘वर्तमान’: लेखकक समय-बिन्दुकें सही पढ़ब

‘वर्तमान मैथिली पत्र-पत्रिकायें’ शीर्षकक ‘वर्तमान’ २००६क लेखकीय समयसँ सम्बद्ध अछि; ओकरा २०२६क प्रकाशित स्थिति मानब इतिहासगत भूल होयत। एहि खण्डमे ‘आइ-काल्हि/समय-साल’, ‘भंगिमा’, ‘भारती मण्डन/मण्डन निकेत’, ‘रचना’, ‘मिथिलाज्वाल सम्पर्क’, ‘मैथिली अकादमी पत्रिका’, ‘कर्णामृत’, ‘मिथिला महान’, ‘श्रीमिथिला’, ‘भूमिजा/मिथिमालिनी’, ‘आरम्भ’, ‘घर-बाहर’, ‘मैथिली सन्देश’, ‘हिलकोर’, ‘जखन-तखन’, ‘हालचाल’, ‘मिथिला दर्पण’ आ ‘विद्यापति टाइम्स’ सन नाम चर्चित छथि। (मुद्रित पृ. ५६-६२।)

एहि सूचीसँ एकटा रोचक विविधता देखाइत अछि: नाटक-विशेषज्ञ ‘भंगिमा’, अर्थव्यवस्थापर केन्द्रित ‘श्रीमिथिला’, प्रशासनिक-साहित्यिक ‘मैथिली अकादमी पत्रिका’, प्रवासी ‘कर्णामृत’, पुस्तक/साहित्यिक ‘रचना’, समाचार-चिन्तनक ‘आइ-काल्हि/समय-साल’ आ विभिन्न शहरक सामुदायिक पत्र। लेखक सम्पादकीय नियमितता आ विषय-विस्तारक सराहना करैत छथि, मुदा अनियमित अङ्क, व्यक्तिगत प्रचार आ गुटबन्दीक आलोचना सेहो करैत छथि।

पुस्तकक ‘आज एको मैथिली दैनिक नहि’ कथन लेखकक २००५-०६क परिस्थिति सम्बन्धी आकलन अछि। एहि वाक्यसँ २०२६क वर्तमान मीडिया-दृश्यपर कोनो सीधा निष्कर्ष नहि निकलैत अछि। समीक्षामे हिनका सभक काल्पनिक सूची जोड़ल नहि गेल अछि।

२१. साहित्यक विकासमे पत्रिकाक योगदान: पुस्तकक सर्वाधिक समर्थ पक्ष

योगानन्द झा आधुनिक मैथिली कविता, कथा, नाटक, उपन्यास, आलोचना, संस्मरण, शोध, अनुवाद आ बालसाहित्यक विकासक श्रेय पत्रिकाक सार्वजनिक मंचकें दैत छथि। एहि प्रतिपाद्यक समर्थनमे पोथी अनेक विशिष्ट उदाहरण दैत अछि—‘मिथिलामोद’क पुस्तक-प्रकाशन; ‘मैथिली साहित्य पत्र’क ग्रन्थ प्रकाशन; ‘बटुक’क बालसाहित्य; ‘अभिव्यञ्जना’क नवकाव्य; ‘मैथिली कविता’क विधागत केन्द्र; ‘कथादिशा’क कथासाहित्य; ‘भंगिमा’क नाट्यालेख; आ ‘श्रीमिथिला’क आर्थिक चिन्ता। (मुद्रित पृ. २४-२५, २८-२९, ३२-३५, ४२-४३, ५७-५९, ६३।)

पत्रिका एकटा निरन्तर संवाद रचैत अछि: रचना प्रकाशित होइत अछि, पाठक प्रतिक्रिया दैत अछि, सम्पादक विवाद उठबैत छथि, आगाँक अंकमे उत्तर आ नव लेखन अबैत अछि। पुस्तक एहि संवादक अनेक ठोस नाम आ घटना देइत अछि। आधुनिक मैथिली साहित्यक इतिहास जँ केवल पुस्तक-सूची पर आधारित रहत तँ सम्पादकीय चयन, साहित्यिक आन्दोलनक समयबद्ध रूप आ पाठक-संघटन छूटि जाएत। एहि कारण पत्रिकाक इतिहास साहित्य-इतिहासक परिशिष्ट नहि, ओकर बुनियादी प्रमाणक्षेत्र अछि।

मुदा ओहि योगदानकें नापबाक लेल कालावधि, लेखन-विधा, लेखक-पीढ़ी, साहित्यिक बहस, प्रत्यक्ष पुनर्मुद्रण आ सम्मानक प्रमाण अलग-अलग संकलित होयबाक चाही। योगानन्द झा गुणात्मक प्रभावक इतिहास रचैत छथि; व्यवस्थित सामग्री-विश्लेषण वा अंकवार अनुक्रमणिका प्रस्तुत नहि करैत छथि। ई पुस्तकक घटी नहि, ओकर शोध-विधाक स्पष्ट सीमा अछि।

२२. भाषा, लिपि, मानकीकरण आ हिन्दी-मैथिली सम्बन्ध

ग्रन्थ आरम्भिक पत्रिकामे हिन्दी-मैथिली मिश्रण, पूर्ण मैथिली पत्रक उदय, वर्तनीक उन्नयन, तिरहुता लिपिक संरक्षण आ मैथिलीकें स्वतंत्र भाषा मानबाक संघर्षक इतिहास जोड़ैत अछि। लेखकक मतमे पत्रिका भाषा-आन्दोलनक प्रमुख साधन बनल। काशीक मिश्रित भाषिक

पत्रिकासँ दरभंगाक पूर्ण मैथिली पत्र आ सार्वजनिक दैनिक धरि यात्रा, भाषा-अस्मिताक मुद्रित निर्माण सेहो अछि। (मुद्रित पृ. २४-२७, ६३-६४।)

एहि ठाम दोसर पक्ष सेहो आवश्यक अछि। भाषा-मानकीकरण सामाजिक प्रक्रिया अछि— सम्पादकीय प्रचलन, पाठकक बोली, विद्यालयीय शिक्षण, मुद्रण-तकनीक आ संस्थागत निर्णयक संगम। पुस्तक एहि प्रक्रियाक सार प्रस्तुत करैत अछि, मुदा विभिन्न वर्तनी-रूपक वर्षानुसार तुलनात्मक पाठ वा मुद्रण-नमूना नहि दैत अछि। अतः ‘फलाँ पत्रिकासँ मानकीकरण पूर्ण भेल’ सन एकरेखीय निष्कर्ष टारल चाही।

पुस्तकक किछु अंशमे अंगिका आ बज्जिका सम्बन्धी भाषा-आन्दोलनक पक्षधर मत उद्धृत अछि। एहि मुद्दाक साहित्यिक इतिहास समझबाक समय पुस्तकक सम्पादकीय-राजनीतिक दृष्टिकोणकेँ लेखकक स्रोतगत अभिमतक रूपमे चिन्हब आवश्यक अछि; एकरा भाषावैज्ञानिक वर्गीकरणक अन्तिम निर्णय मानब उचित नहि। अलग भाषा-समुदायक अपन साहित्यिक, सामाजिक आ शैक्षिक इतिहासक स्वतन्त्र अध्ययन आवश्यक अछि।

२३. मैथिली पत्रकारिता आ संवैधानिक मान्यता

लेखकक भूमिकामे सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क संघर्ष, जनसभा, मैथिली दैनिकक प्रयत्न, बिहारक राजनीतिक नेतृत्वकेँ ज्ञापन आ संसदमे भाषिक माँग उठबाक प्रसंग अछि। ग्रन्थक निष्कर्षमे संविधानक आठम अनुसूचीमे मैथिलीक प्रवेशकेँ पत्रकारिता-आन्दोलनक उल्लेखनीय उपलब्धिक संग जोड़ल गेल अछि। (मुद्रित पृ. ९-१०, ६३-६४।)

एहि ऐतिहासिक दावाक बाहरी विधिक मिलान सम्भव अछि। भारत सरकारक गृह मन्त्रालयक २२ दिसम्बर २००४क आधिकारिक विज्ञप्ति स्पष्ट करैत अछि जे बोडो, डोगरी, मैथिली आ संथाली संविधान (बानबेम संशोधन) अधिनियम, २००३ द्वारा आठम अनुसूचीमे जोड़ल गेल, जकर राजपत्र-प्रकाशन ८ जनवरी २००४ केँ भेल। अतः ‘संवैधानिक मान्यता’ स्वयं सत्यापित घटना अछि। मुदा ‘पत्रिकासभक कारणेँ मात्र मान्यता भेटल’ सन एकल-कारणक प्रस्तावक पुष्टि लेल संसदीय बहस, संगठनक आवेदन, जनान्दोलन आ अन्य राजनीतिक प्रक्रियाक तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक अछि। पत्रकारिता एक प्रभावकारी सहभागी साधन छल, एकमात्र कारण सिद्ध नहि।

२४. आलोचनात्मक मापदण्ड: नियमितता, गुणवत्ता आ सामाजिक प्रभाव अलग-अलग

पोथीमे ‘अल्पजीवी’, ‘अनियतकालीन’, ‘साहित्यकारिता’, ‘पीत पत्रकारिता’, ‘गुटबन्दी’ आ ‘आत्मतुष्टि’ सन निर्णय बारम्बार भेटैत अछि। एहि पदसभसँ लेखकक ऐतिहासिक चिंता स्पष्ट होइत अछि: नियमित प्रकाशन, आर्थिक ईमानदारी, तथ्यपरक समाचार आ लोक-समाजक प्रति उत्तरदायित्व। वास्तवमे एकटा पत्रिका जँ वार्षिक ग्राहकसँ धन लऽ कऽ घोषित अङ्क नहि दैत अछि तँ ओकरा प्रति आलोचनात्मक प्रश्न उचित अछि। (मुद्रित पृ. ४३-४४, ६२-६४।)

मुदा ‘पीत पत्रकारिता’ जकाँ गम्भीर आरोप सिद्ध करबाक लेल प्रकाशित सामग्रीक उद्धरण, प्रतिवाद, समाचारक विश्वसनीयता, सुधार प्रकाशित करबाक पद्धति, सम्पादकीय स्वार्थ आ प्रत्यक्ष नुकसानक प्रमाण चाही। केवल कठोर भाषा, राजनीतिक वाम वा दक्षिण पक्षधरता, पुरान साहित्यक अस्वीकार, अथवा नूतन छन्दक प्रयोगसँ स्वतः ‘पीत’ सिद्ध नहि होइत। ग्रन्थमे एहन मूल्यांकन कएक बेर प्रमाणक व्यापक प्रदर्शन बिना भेटैत अछि। ऐतिहासिक समीक्षामे लेखकक मूल्यांकन केँ तथ्यक संग मिलाकऽ नहि राखल जाय।

समान रूपसँ अल्पजीविता स्वयं असफलताक पर्याप्त मापदण्ड नहि। एकटा एक-अंकक विशेषांक यदि नव साहित्यिक आन्दोलनक प्रामाणिक आरम्भ-बिन्दु अछि तँ प्रभावक दृष्टिसँ ओकर महत्व टिकाउ किन्तु निर्जीव मासिकसँ बेसी होयत। आर्थिक स्थिरता, अङ्क-संख्या, सम्पादकीय गुणवत्ता, पाठकीय विश्वास, विषयक व्यापकता, सामाजिक प्रतिनिधित्व आ बौद्धिक प्रभावक स्वतंत्र कसौटी बनब पुस्तकक उपयोगिताकेँ अधिक बढ़बैत अछि।

२५. वर्ग, जाति, गाँव, स्त्री आ साधारण पाठकक अनुपस्थित इतिहास

लेखक स्वीकार करैत छथि जे पत्रकारिता गाँवक गरीब, अशिक्षित, पलायनग्रस्त आ दैनन्दिन संघर्षरत जनतक समुचित रूपेण नहि पहुँचि सकल। ई आत्मालोचना पुस्तकक एकटा गंभीर उपलब्धि अछि। मुदा एहि दावाक भीतर जातीय स्तर, आर्थिक वर्ग, स्त्री-पाठक, दलित समुदाय, कृषक-मजदूर, बाजार आ बाल-पाठकक पृथक विवरण बहुत कम अछि। कतहु-कतहु महिला लेखिकाक नाम, ग्राम्य पत्रक उल्लेख वा सामाजिक न्यायसँ सम्बन्धित रचना भेटैत अछि; मुदा व्यवस्थागत सर्वेक्षण नहि। (मुद्रित पृ. १८-१९, २४-२५, ३२-३३, ५५-५६, ६४।)

मैथिली पत्रकारिताक व्यापक सामाजिक इतिहास लिखबाक लेल पुछल जाय: प्रति अङ्क छपाइ-व्यय के देइत छल? ग्राहकक पेशा, लिंग, भाषा-अभ्यास आ भौगोलिक वितरण की छल? पत्रिका पुस्तक-दुकानमे बिकैत छल वा सदस्यता द्वारा जायत छल? के महिला सम्पादन निर्णयमे छलि, के केवल रचना पठबैत छलि? कोन समाजक लोक अपन जीवन-संकट प्रकाशित कराबय सकैत छलाह? एहि सभ प्रश्नक उत्तर बिना 'लोक-पत्रकारिता'क परिमाण नापब कठिन अछि।

एहि आलोचना पुस्तककेँ वर्तमान वैचारिक रुचिक आधार पर दोषारोपण नहि, बल्कि ग्रन्थक अपन सार्वजनिक-जीवन सम्बन्धी कसौटीकेँ आगाँ बढ़ायब अछि। लेखक स्वयं 'वर्गीय उपादान' आ सामान्य जनसँ दूरीक बात कहैत छथि; ताहि निदानक लेल सामाजिक प्रमाणक नूतन पद्धति अपेक्षित अछि।

२६. आर्थिक इतिहास: लेखकक निदान आ ओकर प्रमाणगत सीमा

लेखक अन्तिम भागमे अपर्याप्त व्यावसायिक योजना, अनियमित वितरण, व्यक्तिगत सम्पादकीय आग्रह, ग्राहकीय अस्थिरता आ साधनाभावक कारण पत्रिकाक अल्पजीविता बतबैत छथि। 'स्वदेश'क १९५०क दशकक घाटाक संस्मरण, 'मिथिला मिहिर दैनिक'क संस्थागत संरचना आ अनेक पत्रिकाक अङ्क-संख्या एहि तर्कक अलग-अलग उदाहरण प्रदान करैत अछि। (मुद्रित पृ. ९, २०-२३, ६४।)

एहि शोधमे प्रेसक खर्च, कागजक दाम, वितरकक कमीशन, डाक-व्यय, विज्ञापनदाताक संख्या, प्रति-अङ्क बिक्री, ग्राहकक बकाया आ सम्पादकक मानदेयक व्यवस्थित तालिका नहि अछि। एहि अभावमे आर्थिक निष्कर्षक दिशा सार्थक होइतो ओकर मात्रात्मक पुष्टिक स्तर सीमित अछि। जँ लेखापुस्तिका, ग्राहक-पञ्जी, प्रेस बिल आ सम्पादकीय पत्राचार भेटय तँ मैथिली पत्रकारिताक संस्थागत इतिहास नव प्रमाण पाबि सकैत अछि।

एकटा अन्य प्रश्न—पत्रिका नियमित बनेलासँ की ओ अवश्य लोकहितकारी सेहो होयत? नहि। नियमितता विश्वसनीयताक एकटा आवश्यक शर्त भऽ सकैत अछि, मुदा समाचारक सत्यता, विचारक विविधता आ सार्वजनिक उत्तरदायित्व अलग मूल्य छथि। पुस्तकक 'टिकाउ दैनिक'क आकांक्षाकेँ एहि विस्तृत कसौटीमे पुनः व्यवस्थित करबाक आवश्यकता अछि।

२७. स्रोत-समालोचना: कोन दावाक प्रमाण कतेक सुदृढ़ अछि

प्रथम स्तरपर प्रकाशन-सूचना, पुस्तकक समर्पण, लेखकक स्वतः लिखल भूमिका, पृष्ठ-संख्या आ शीर्षक मूल प्रतिमासँ प्रत्यक्ष जाँचल जा सकैत अछि। तृतीय स्तरपर साहित्यिक प्रभाव, समाजपर असर, भाषिक आन्दोलनक योगदान, सम्पादकीय प्रवृत्ति आ आर्थिक असफलताक कारणसँ सम्बन्धित लेखकक व्याख्या अछि। एहि तीन स्तरकेँ एक समान ‘सत्यापित तथ्य’ मानब शोधगत त्रुटि होयत।

पुस्तकक एकटा दुर्लभ बल—किछु वास्तविक अंकक पृष्ठ-विन्यास, कविता, स्तम्भ आ सम्पादकीय सूत्रक उल्लेख—प्रथम-हाथ पठनक सम्भावना देखबैत अछि। दोसर दिस, संकलित सूची सभक मूल अंकक प्रकाशन-तिथि, संपादकीय मण्डल, संख्या आ संग्रहस्थान नहि देल गेल अछि। ताहि कारण ग्रन्थ व्याख्यात्मक शताब्दी-दर्शन आ अनुसंधानक सूचकपञ्जी अछि, परिपूर्ण समालोचनात्मक पत्रिका-सूची नहि।

१९०५, १९०६, १९०८, १९०९, १९१२ सन अलग वर्षक उल्लेख केवल मुद्रण-त्रुटि मानि रह नहि करबाक चाही। प्रथम अङ्क, निबन्धन, नियमित आवृत्तिक आरम्भ, नव सम्पादकक स्थापना, पुनर्प्रकाशन अथवा स्थानपरिवर्तन अलग-अलग समय-बिन्दु भऽ सकैत अछि। जखन धरि सन्दर्भक प्रथम अङ्क देखल नहि जाय, परवर्ती लेखकक मतक तुलनात्मक प्रस्तुति बेसी ईमानदार तरीका अछि।

२८. जाँचल जा सकल तिथि आ खुलल रहि गेल प्रश्न

‘मैथिल हित साधन’—मूल ग्रन्थ १९०५ कहैत अछि; २०२१क जयपुर-विषयक शोध-सार आ अन्य प्रकाशित इतिहासो एहि वर्षक समर्थन करैत अछि। प्रथम अंकक मूल प्रति एहि अध्ययनमे उपलब्ध नहि। ‘मिथिलामोद’—मूल १९०५; बाहरी स्रोतमे १९०५ आ १९०६ दुनू रूप भेटैत अछि। ‘मिथिला मिहिर’—मूल १९०९; बाहरी सूचीमे १९०८, १९०९ आ अन्य ठाम १९१२ भेटैत अछि। ‘स्वदेश’—मूल पुस्तक दैनिकक आरम्भ ९ अक्टूबर १९५५ दैत अछि, मुदा एकटा परवर्ती ऑनलाइन सूची ‘१९६५’ उल्लेख करैत अछि। ‘मिथिला मिहिर दैनिक’—मूलक अनुसार २० फरवरी १९८४ सँ जून १९८६; डॉ. धनाकर ठाकुरक सूचीमे सेहो १९८४–१९८६ क चरण अछि। एहि मतभेदसभक अन्तिम निर्णय एहि अध्ययनमे घोषित नहि कएल गेल अछि।

अष्टम अनुसूची—भारतीय सरकारी स्रोतद्वारा कानूनक तथ्य स्वतन्त्र पुष्ट अछि: संविधानक बानबेम संशोधन अधिनियम, २००३, राजपत्र ८ जनवरी २००४। ‘मैथिली पत्रकारिताक इतिहास’—पं. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क १९८१क पुस्तकक प्रकाशक मैथिली अकादमी अछि; ई विवरण बिहार सरकारक पुस्तक-सूची आ अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तकालयीय अभिलेखमे सेहो भेटैत अछि। ताहि कारण योगानन्द झाक ई पूर्ववर्ती इतिहास-ग्रन्थक उल्लेख पुस्तक-सूची स्तरपर पुष्ट होइत अछि। (मूल, मुद्रित पृ. १९।)

२९. व्यापक मूल्यांकन: ग्रन्थ कोन रूपमे विशिष्ट अछि

ई पुस्तक मैथिली पत्रकारिताकें शताब्दी-पर्यन्त एकट्ठा देखबाक सफल प्रयत्न अछि। पहिल विशिष्टता प्रवासी केन्द्र—जयपुर, काशी, अजमेर, आगरा, कोलकाता, दिल्ली, मुम्बई, प्रयाग आ अन्य नगर—कें मूल मिथिलाक छपाइ-इतिहासमे सम्मिलित करब अछि। दोसर विशिष्टता प्रकाशनक स्वरूप—दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, शोधपत्रिका, बालपत्रिका, लघुपत्र, संस्था-स्मारिका आ हस्तलिखित पत्र—सभकें एकहि पत्रकारिता-इतिहासमे राखब अछि। तेसर विशिष्टता साहित्यक विकास आ सामाजिक जनसंचारक बीच अन्तर करैत लेखकीय निष्कर्ष पर पहुँचनाइ अछि।

चौथ विशिष्टता लेखकक जीवित संस्मरण अछि। सुमनजीक सान्निध्य, सम्पादकीय अङ्क देखबाक उल्लेख आ भाषा-आन्दोलनमे सहभागिता पुस्तकमे व्यक्तिसम्बद्ध इतिहासक रङ्ग भरैत अछि। पाँचम विशिष्टता पुस्तकक खुलल आत्मालोचना अछि: लेखक स्वयं सम्पूर्ण सूची नहिहँ होयबाक सम्भावना स्वीकारैत छथि आ सामाजिक धरातलपर पत्रकारिताक कमी देखबैत छथि। एहि स्वीकृतिसँ पुस्तकक विश्वसनीयता घटैत नहि, ओकर प्रयोजन स्पष्ट होइत अछि।

तथापि ग्रन्थक एक प्रमुख शैलीगत समस्या अछि—मैथिली पत्रकारिताक इतिहास लिखैत मुख्य निबन्ध हिन्दीमे अछि। एहि चयनसँ तात्कालिक व्यापक पाठक उपलब्ध करबाक सम्भावना रहल हो, मुदा लेखक एहिक कारण नहि बतबैत छथि। शुद्ध मैथिली समीक्षा करबाक समय एहि तथ्य कें नजि लुकाओल जा सकैत अछि। दोसर सीमा स्रोत-टिप्पणी आ अंकवार प्रमाणक असमानता; तेसर सीमा कठोर व्यक्तिगत निर्णयमे उद्धरणक अभाव; चारिम सीमा सामाजिक-आर्थिक आँकड़ाक अभाव; पाँचम सीमा नेपाल, स्त्री-सम्पादन आ हस्तलिखित पत्रक विषयपर संक्षेप अछि।

३०. अन्तिम निष्कर्ष: साहित्यिक पत्रसँ लोकउत्तरदायी सार्वजनिक माध्यम धरि

योगानन्द झा मैथिली पत्रकारिताक शताब्दीकेँ सफलताक एकरेखीय उत्सव नहि बनबैत छथि। ओ एकर उपलब्धिक प्रशंसा करैत-करैत प्रश्न उठबैत छथि जे विशाल मातृभाषी समाजक लेल सार्वजनिक सूचना आ लोकमतक टिकाउ व्यवस्था किएक नहि बनि सकल। एहि कारण पोथी इतिहासक संग विचारोत्तेजक सम्पादकीय हस्तक्षेप सेहो अछि। ई दृष्टि केवल प्रकाशन-वर्ष याद राखबाक अपेक्षा बेसी महत्व रखैत अछि।

सम्पूर्ण पुस्तक पढ़ला पर स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली पत्रकारिता किछु विफल दैनिकक इतिहास नहि, एक विस्तृत छपाइ-संस्कृतिछल: प्रवासी समुदाय, भाषिक आन्दोलन, साहित्यिक पीढ़ी, विद्यालयीय पाठक, नाट्यमंच, महिला-सम्पादन, अनुसन्धान, राजनीतिक विमर्श, नेपाल-भारतक सांस्कृतिक सम्पर्क आ हस्तलिखित पत्रक संयुक्त अनुभव। संकीर्ण व्यावसायिक मापदण्डसँ देखला पर किछु प्रयास अल्पजीवी बुझाएत; सांस्कृतिक स्मृति आ साहित्यिक प्रभावक कसौटीसँ ओही अड़क अमूल्य बनि सकैत अछि।

एहि पोथीक सर्वोत्तम उपयोग स्रोतकेँ अन्तिम मानबाक बजाय ओकर विस्तृत नाम-सूची, काल-विभाजन, सम्पादकीय संकेत आ वैचारिक प्रश्नक आधार पर नूतन अभिलेख-अनुसन्धान प्रारम्भ करब अछि। मूल अड़क, डाक-रजिस्टर, विज्ञापन, पाठक-पत्र, सम्पादकीय उत्तर, प्रेस-बिल, स्त्री-पाठिका आ ग्रामीण वितरणक दस्तावेज जुटला पर शताब्दी इतिहास आ गाढ़ होयत। पुस्तकक मूल योगदान ई अछि जे लेखक पत्रिकाकेँ साहित्यिक रचना छपबाक ठाम मात्र नहि, मैथिल समाजक आत्मबोध, असहमति आ सार्वजनिक भविष्य रचबाक मंचक रूपमे देखैत छथि। ताहि अर्थमे ‘मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष’ मैथिली इतिहासलेखनक उपयोगी, समृद्ध आ संग-संग समालोचना आमन्त्रित करऽवला दस्तावेज अछि।

३१. मूल पाठक विषयानुसार पृष्ठ-पथ

प्रकाशकीय सूचना, समर्पण आ शुभाशंसा:। आत्मीय मैथिली भूमिका ‘भव्य ओ दिव्य प्रभा’, शताब्दी-चिन्ता, सुमनजी, ‘स्वदेश’ आ कृतज्ञता: मुद्रित पृ. १-१६,। ऐतिहासिक आरम्भ, ‘मैथिल हित साधन’ आ पत्रकारिताक कसौटी: मुद्रित पृ. १७-१९,। ‘दैनिक पत्र’ (‘स्वदेश’, ‘मिथिला मिहिर दैनिक’): मुद्रित पृ. १९-२३,। आरम्भिक मासिक, प्रवासी पत्र आ साहित्यिक संस्था:

मुद्रित पृ. २३-३२,। १९५०-१९८०क प्रयोग, बालपत्रिका, शोध, राजनीति आ लघुपत्र: मुद्रित पृ. ३२-४४,। १९८०-२००५क पत्र-पत्रिका: मुद्रित पृ. ४४-५४,। नेपालक पत्रिका: मुद्रित पृ. ५४-५५,। हस्तलिखित पत्र: मुद्रित पृ. ५५-५६,। 'वर्तमान' अर्थात् २००५-०६क पत्र: मुद्रित पृ. ५६-६२,। ऐतिहासिक निष्कर्ष: मुद्रित पृ. ६२-६४,।

अध्याय ०६ / २००७

गहबर गीत

डॉ. योगानन्द झाक कृतिक आलोचनात्मक विवेचन

आलोचनाक आधार तीन स्तरपर व्यवस्थित अछि: (क) पोथीक आरम्भिक विवरण, समर्पण आ भूमिका; (ख) दृश्य गीतांश, शीर्षक, आवृत्ति, चित्र-विधान आ कथन-स्वर; (ग) मैथिली लोकगीतक व्यापक वर्गीकरण अथवा लोक-जाति-लिङ्गक विमर्शसँ सम्बन्धित स्पष्ट रूपेँ चिन्हित बाह्य अध्ययन। मूल पोथीमे जे कहीनाइ अछि आ समीक्षकक जे व्याख्या अछि, दुनूक भेद बनौने रखल गेल अछि।

२. समर्पणक अर्थ: बच्चन भगत आ जीवित परम्पराक योगदान

समर्पण-पृष्ठ डॉ. योगानन्द झाक क्षेत्राधारित लोकसाहित्य-दृष्टिक सर्वाधिक ठोस आरम्भिक प्रमाण अछि। पोथी स्व. बच्चन भगत (१९२८-१९९१)क स्मृतिमे समर्पित अछि। समर्पणक अनुसार ओ बहादुरपुर, लहेरियासराय, दरभंगाक निवासी, भगती परम्पराक साधक आ गहबर-गीतक विशिष्ट जानकार छलाह। ओ अनेक गोहारी अथवा अनुष्ठानिक गायनक माध्यमसँ जनसमुदायक बीच सक्रिय रहलाह। सङ्कलक अपन पी-एच.डी. अनुसन्धान हेतु गीत-सङ्कलनमे हुनक योगदानक उल्लेख करैत छथि। (समर्पण-पृष्ठ;१)

ई समर्पण केवल व्यक्तिगत श्रद्धाञ्जलि नहि, मौखिक परम्परामे ज्ञान-निर्माणक साझेदारीक साक्ष्य सेहो अछि। पुस्तक मुद्रित रूपमे सङ्कलकक नामपर प्रसारित होइत अछि, मुदा गीतक स्मृति, प्रस्तुति आ उपलब्धता समुदाय-वहनकर्ता सँ सम्भव बनैत अछि। बच्चन भगतक नाम, जीवनकाल आ उपलब्ध योगदानक स्पष्ट उल्लेख एही कारणेँ संग्रहक महत्वपूर्ण गुण थिक। संगहि, एतेक सूचनासँ हुनकर प्रत्येक गीतक मूल रचयिता होएबाक निष्कर्ष निकालब अनुचित होएत; स्रोतमे ओ ज्ञान-वहनकर्ता आ सङ्कलन-सहायकक रूपमे प्रकट होइत छथि।

समर्पणक भाषा गहबर-गीतकें ‘अनपढ़’ अथवा ‘अर्द्धशिक्षित’ समाजक जीवन आ सांस्कृतिक अनुभवसँ जोड़ैत अछि। आधुनिक पाठक लेल एकरा सावधानीसँ पढ़ब आवश्यक अछि: औपचारिक शिक्षा सँ बाहर रहनाइ सांस्कृतिक विशेषज्ञताक अभाव नहि थिक। बच्चन भगतक भूमिका एहि भेदकें मूर्त रूप दैत अछि।

३. गहबरक अवधारणा: गायन, अनुष्ठान आ आवाहन

भूमिकामे गहबर गीतकें मैथिली लोकगीतक एहन रूप मानल गेल अछि जे गोहारी-भगताइ सम्बन्धी लोकमान्यतासँ जुड़ल अछि। देवता अथवा पूर्वजक आवाहन, भगतक देहपर देवताक ‘भाव’ आबि जाएबाक विश्वास, देहगत हिलन-डोलन, मुखसँ उच्चरित पुकार आ कर्मकाण्डक क्रमक वर्णन भेटैत अछि। सङ्कलक ई प्रक्रिया आ गीतक सम्बन्धकें एकटा समेकित परम्परा बुझैत छथि। (मुद्रित पृ. २)

एहि प्रसङ्गमे ‘गहबर’ शब्दकें केवल सघन वन अथवा काव्यात्मक रहस्यक पर्याय बना देब पोथीक आन्तरिक साक्ष्यसँ मेल नहि खाइत। पुस्तकक अर्थक्षेत्रमे ई लोकदेवता, भगत, आह्वान-स्थल, पूजाक वस्तु, सामूहिक स्मृति आ देव-सम्बन्धी प्रचलनक संगम-बिन्दु अछि। गहबरक स्थानिक संरचना, वास्तु अथवा भौगोलिक वितरणक निर्णायक इतिहास उपलब्ध अंशमे नहि देल गेल अछि, अतः ओकर अतिरिक्त रूपरेखा बनाओल नहि गेल अछि।

भूमिकाक वर्णनमे धार्मिक प्रदर्शन देह आ आवाजक संयुक्त क्रिया अछि। आवाहन करबाक समय हाथ-पाएक गति, धरती पर पड़बाक क्रिया, ध्वनि-उच्चारण आ पूजासामग्रीक उपस्थिति गीतकें मात्र लिखित पदसँ भिन्न बनबैत अछि। मुद्रित रूपमे पंक्ति अछि, मुदा वास्तविक लोक-प्रदर्शनमे क्रम, लय, स्वर, विराम, हाँक आ प्रत्युत्तर सेहो रहैत होएत—ई पाठमूलक सम्भावना अछि, प्रमाणित ध्वनि-विश्लेषण नहि। गीतक सङ्गीतात्मक अनुलेखन, ताल-मान आ धुन पोथीक एहि दृश्य अंशमे उपलब्ध नहि अछि।

४. भूमिका आ सम्पादकीय दृष्टि: उपेक्षित स्वरक पुनःस्थान

सङ्कलक लिखैत छथि जे लोकसाहित्यक प्रचलित संग्रहमे किछु ‘अभिजात्य संस्कारक’ गीत विशेष प्रमुखता पबैत रहल अछि, जखन कि बहुते लोकगीत ओहि सीमासँ बाहर रहि जाइत अछि। अपन संकलनकें ओ एहन उपेक्षित गहबर-गीत दिस ध्यान देबाक प्रयासक रूपमे प्रस्तुत

करैत छथि। (मुद्रित पृ. १-२) ई स्थापना पुस्तकक सांस्कृतिक तर्क बनैत अछि: लोकसाहित्यक प्रतिनिधित्व सामाजिक प्रतिष्ठाक बराबर नहि होएत, आ गीतक महत्त्वक निर्णय केवल संस्थागत स्वीकृतिसँ नहि कएल जा सकैत अछि।

भूमिकामे ‘भाओ’क भेला, रोग-निवारण वा सङ्कटकालीन देव-आवाहन, धूप, गुग्गुल, धाक, सिरनी, कपड़ा आ पूजाक आन वस्तुक उल्लेख अछि। एही संकलनक भीतर लोकविश्वास आ दैनन्दिन जीवन एक-दोसरासँ पृथक नहि: बीमार पड़ब, संकट आबब, फसल-संसार, सामूहिक भेंट आ देवताक स्मृति सभ गीतक अर्थ-निर्माणमे प्रवेश करैत अछि। धार्मिक क्रियाक वास्तविक चिकित्सकीय प्रभावपर एहि पोथीसँ कोनो वैज्ञानिक निष्कर्ष नहि निकालल जा सकैत अछि।

भूमिकामे मान्यताप्राप्त गीत-परम्पराक अपेक्षा गहबर गीतक उपेक्षित स्वरकें विशेष स्थान देबाक संकेत अछि। संकलनक घोषित केन्द्र सामाजिक रूपसँ उपेक्षित समुदायक लोकसंगीत थिक; मुदा एहि प्राथमिकताक आधारपर प्रत्येक गीतक सामुदायिक स्वामित्व अथवा जाति-विशिष्ट उत्पत्ति स्वतः प्रमाणित नहि होइत अछि।

५. काली, सलहेस आ देवी-आवाहनक संयुक्त संसार

मुद्रित पृ. ४क आरम्भमे कालीकें सम्बोधित गीतमे कठोर शारीरिक अनुभव, हथियारक बिम्ब, दान आ शक्तिशाली देवीक शरणागतिक भाषा भेटैत अछि। एहि प्रसङ्गमे ‘काली’क संगें ‘सलहेस’क नामो अबैत अछि। कालीक लौकिक शक्ति आ राजा सलहेसक लोकनायकत्वकें एकहि गीत-परिसरमे स्मरण कएल जाएब, धार्मिक कथाविश्वक अन्तर्सम्बन्धक संकेत अछि। तथापि ई पाठ-सम्पर्क; एहि आधारपर दू सम्प्रदायक उत्पत्ति अथवा ऐतिहासिक विलयनक तिथि बताओल नहि जा सकैत अछि।

“मैयाँ के गोद से उतरल राजा सलहेस” — मुद्रित पृ. ४

एहि पंक्तिमे ‘मैयाँ’क ममतामयी देह आ ‘राजा’क वीरतामयी छवि एक-दोसराक विरोधी नहि रहैत। सलहेसक प्रतिष्ठा मातृ-सम्बन्धक माध्यमसँ उजागर होइत अछि। अनुष्ठानिक काव्यमे मातृत्व, शौर्य आ देवसंरक्षणक ई संगति महत्त्वपूर्ण अछि। पृ. ४पर ‘तनी गुनमा हमरो दिअउ सिखाय’ जकाँ कथन ज्ञानक याचना रूपेँ अबैत अछि; ई पुकार भक्तक विनीत स्वर आ देवीक सामर्थ्यक नाटकीय अन्तर बनबैत अछि।

मुद्रित पृ. ६मे देवी-स्मरणक संगें रङ्ग, केश, दाँत, पहिरन, शृङ्गार आ पूजाक वस्तुक चित्र आबैत अछि। ‘तिसिया खेतमे तिसिया’ सँ आरम्भ पदमे खेतक परिचित वस्तु देवी-आह्वानक लयमे प्रवेश करैत अछि। अनुष्ठान न केवल अलौकिक दृश्य रचैत अछि, बल्कि खेती आ जीवनोपयोगी वस्तुक शब्दावली सेहो सहेजैत अछि। पदमे नित्य-जगत आ देवी-जगत एकहि ध्वनिसूत्रमे बन्हल अछि। (मुद्रित पृ. ६)

“तिसिया खेतमे तिसिया मसुरिया खेतमे राइ” — मुद्रित पृ. ६

मुद्रित पृ. ८मे ‘कओने दिन आहे काली तोहरो जनम भेल’ जकाँ प्रश्नवाचक आरम्भ कालीक सम्बन्धमे जन्म-स्थान, जन्म-दिन, फूल, वन आ सुगन्धक वस्तुक अन्वेषण करैत अछि। देवीक अलौकिक सत्ता लोकगाथात्मक पारिवारिक जिज्ञासाक वस्तु बनि जाइत अछि। ई गीत भगवतीकेँ लोकजीवनक प्रश्नोत्तरक अन्दर अनैत अछि; ‘देवी जन्मलि कखन?’क संरचना मे जनमक दृश्यक माङ्ग होइत अछि, दार्शनिक ब्रह्मतत्त्वक प्रतिपादन नहि।

“कओने दिन आहे काली तोहरो जनम भेल” — मुद्रित पृ. ८

५.१. देवीगीत, कालीक गीत, महामाया आ फुलमति

मुद्रित पृ. ५क देवीगीतमे बाँस, डगवा आ फूलक उल्लेखक संग देवीक पूजाक पद भेटैत अछि। ‘ओही फूल पुजबे काली हमार देव’ जकाँ दृश्य शब्दक्रम पूजाक अर्पण-विधानक बिम्ब रचैत अछि। ओही पृष्ठक नीचाँ ‘कालीक...’ सँ आरम्भ एक शीर्षकक अंश देखाइत अछि; ओकर सम्पूर्ण नाम आ पदक पंक्तिसभ-सीमाक कारण नहि पढ़ल जा सकैत। तँ ई अनुच्छेद शीर्षक-सूची पूरा करबाक अनुमान नहि, उपलब्ध फूल-पूजा-कालीक छिटपुट प्रमाणक विवेचन थिक। (मुद्रित पृ. ५क दृश्य अंश;४)

मुद्रित पृ. ९ पर ‘महामाया’ तथा ‘फुलमति’क उल्लेख शीर्षक-जकाँ दृश्य रूपमे अछि। ‘उत्तर दिसासँ अयली महामाया’ आ ‘बीचिया से अयली फुलमति’ जकाँ पंक्तिक आरम्भ दिशासूचक आगमनक कल्पना रचैत अछि। उत्तर आ बीचक दिशासंकेतसँ देवताक प्रवेशकेँ क्रममे अनुभव कराओल जाइत अछि। ई दृश्य तत्त्व आवाहनक नाटकीयता सँ मेल खाइत अछि, मुदा शेष पंक्ति नहि भेटबाक कारण यात्राक सम्पूर्ण क्रम वा देवताक पारस्परिक सम्बन्धक कथा एतए नहि गढ़ल गेल अछि। (मुद्रित पृ. ९क दृश्य अंश;६)

देवीसम्बन्धी गीतसभमे फूल, दिशा, पुकार आ देवीनामक समीपता ध्यान खींचैत अछि। एहि बिम्बक समवेत प्रयोग आवाहनक अनुष्ठानिक क्रमकें काव्यात्मक रूप दैत अछि; तथापि देवीनामक समीपतासँ सभ पदक एकही रचनाक अंश होएबाक निर्णय नहि निकालल जा सकैत अछि।

६. लुकेशरिक गीत: यात्रा, जल आ देव-पहुँचक पद

मुद्रित पृ. १०पर ‘लुकेशरिक गीत’ शीर्षक स्पष्ट अछि। एहि पदमे बहराइत यात्रा, काशीधाम, गङ्गा, सोनमा आ नाना भौगोलिक बिम्बक संगें ‘लुकेशरि’क पुकार सुनाइत अछि। ‘कुँअवा के पानी’ आ ‘सेला मे बहय निर्मल पानी’ जकाँ पंक्ति जलकें स्थानीय पवित्रता आ देवताक यात्रा-संसारसँ जोड़ैत अछि। एही गीतक एक विशेषता ई अछि जे देवी व्यक्तित्व कथात्मक गति सँ उभरैत अछि—गीत कहियो बुलबैत अछि, कहियो चलबैत अछि, कहियो नदीक किनार पहुँचबैत अछि।

“कुँअवा के पानी बाबा सड़ल गन्हाइ छै” — मुद्रित पृ. १०

ई पंक्ति स्मृति-आधारित यथार्थवादी निरीक्षणक संभावना उठबैत अछि: कुआँक पानि निर्मल वा दूषित भऽ सकैत अछि। दोसर पंक्तिमे निर्मल पानि प्रतिलोम चित्र बनबैत अछि। तँ गीतमे जल मात्र धार्मिक प्रतीक नहि, अनुभवक गुणात्मक भेदक वाहक अछि। तखन ई मानब जे पूरा गीत जल-प्रदूषण पर सामाजिक आन्दोलन थिक, उपलब्ध पाठसँ आगाँ बढ़ल दावा होएत।

‘सेला, सेला मत भूक देवि लुकेशरि’ जकाँ निर्देशात्मक स्वर सँ आह्वानक संवाद-रूप प्रकट होइत अछि। देवताक प्रति केवल प्रशंसा नहि, विनती, नियन्त्रण अथवा आदेश-जकाँ सम्बोधन सेहो सम्भव अछि। ई लोकभक्ति के एकरूपी अधीनता बनि रहबाक बाध्यता सँ बाहर अनैत अछि। (मुद्रित पृ. १०)

७. बामतिक गीत: वन, विरह आ पुकारक संयुक्त बिम्ब

‘बामतिक गीत’ शीर्षकक अन्तर्गत मुद्रित पृ. १०पर ‘बामति सुरति देखि भुलले बरहमन छोड़ा’ सँ आरम्भ होइत पद स्पष्ट भेटैत अछि। एक वन, दोसर वन, बड़का वन आ आँचरक दृश्य गीतमे क्रमशः खुलैत अछि। ‘छोड़ू छोड़ू आहो बरहमन हमरो अँचरवा’ जकाँ सम्बोधन मानवीय सम्बन्धक आकुलता आ मुक्तिक आग्रह एकहि स्थानपर राखैत अछि। (मुद्रित पृ. १०)

“छोड़ू छोड़ू आहो बरहमन हमरो अँचरवा” — मुद्रित पृ. १०

एहि पदक अर्थमे ‘बरहमन’ शब्द सामाजिक पहचान, देवक वेश अथवा कथापात्र—ककरा बुझब—से सुनिश्चित करबाक लेल गीतक आगेक पूर्ण पाठ आवश्यक अछि। पृ. ११क दहिना भाग कटि गेल अछि; तँ एतए ‘ब्राह्मण-विरोध’ वा ‘ब्राह्मण-समर्थन’क निश्चित निष्कर्ष नहि बनाओल गेल अछि। मुदा आँचर पकड़ेबाक स्थिति आ छोड़बाक याचना गीतमे सम्बन्धक असमान शक्ति-विन्यासक प्रश्न अवश्य खोलैत अछि। एहन पाठ-स्थलपर लोकगीतक लिङ्गगत अर्थ विशेष सावधानीसँ देखबाक चाही।

८. अघोरिक गीत: देह, द्रव्य आ आत्मीय देवनाम

मुद्रित पृ. १२मे ‘अघोरिक गीत’ शीर्षक अन्तर्गत ‘कथि बिनु आहे नाताजी मुहमा मलिन भेल’ जकाँ वाक्यसँ अभाव, दैनन्दिन देखभाल आ देहगत दशाक चित्र बनैत अछि। पान, गाँजा, फूल आ गजरा जकाँ वस्तु गीतक गोटेक विवरणमे अबैत अछि। ई शब्द मात्र अलङ्कार नहि, सम्भावित अनुष्ठानिक पदार्थक सूची सेहो बनैत अछि; तथापि पदार्थक प्रयोगक विधि आ क्षेत्र एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल जा सकैत अछि।

“कथि बिनु आहे नाताजी मुहमा मलिन भेल” — मुद्रित पृ. १२

‘नाताजी’ जकाँ आत्मीय सम्बोधन देवता आ साधकक बीच घरेलू भाषा अनैत अछि। लोक-धर्मक एक विशेष काव्यगुण ई जे सामाजिक सम्बोधन धार्मिक दूरी घटबैत अछि। गीतक पुनरुक्त प्रश्न देवताक मुखक मलिनता के कारण पूछैत अछि आ उत्तरक अपेक्षा बनबैत अछि। लिखित भजनक औपचारिक प्रशस्ति-संरचना सँ एकर कथोपकथनात्मक पद-विधान अलग अछि।

९. महिषासुरक गीत: स्थापित आख्यानसँ अलग लोक-स्वर

‘महिषासुरक गीत’ शीर्षक मुद्रित पृ. १२पर अछि। गीतमे ‘महिषासुर’कें सन्दर्भ मानि ‘कहमा बिसरलह’ आ ‘सेवक’ जकाँ शब्द प्रयुक्त अछि। एहि गीतक विशिष्टता शीर्षक आ सम्बोधनक सम्बन्धमे निहित अछि: शास्त्रीय देवी-आख्यानमे एक विशेष स्थान रखनेवाला नाम एतए लोकआह्वानक परिवेशमे प्रवेश करैत अछि। मुदा शास्त्रीय आख्यान आ एहि पदक ‘महिषासुर’

पूर्णतः एके कथा-पात्र छथि अथवा लोकपरम्परामे हुनक पृथक रूप अछि, ई प्रश्न वर्तमान अंशसँ निर्णीत नहि होइत।

“कहमा बिसरलह हो महिषासुर भैसया के नथवा” — मुद्रित पृ. १२

‘भैसया’, ‘नथवा’, ‘गोना’ आ ‘गोठा’ जकाँ शब्द पशुपालन, देहाभूषण, ग्राम्य स्थान आ पुकारक नजदीकी स्थापित करैत अछि। गीतकेँ केवल पुराणक प्रतिध्वनि मानलासँ एहि ग्रामीण अर्थपरिसरक उपेक्षा होएत। एक ओर संस्कृत-पुराणपरम्पराक परिचित नाम, दोसर ओर पशु आ घर-आँगनक भाषा—एहि द्वैतक भीतर गहबर गीतक रचनात्मकता देखल जा सकैत अछि।

१०. गरीब भुइँयाक गीत: निर्धनता, सेवा आ आश्रयक भाषा

मुद्रित पृ. १२पर ‘गरीब भुइँयाक गीत’क स्पष्ट शीर्षक अछि। पदक आरम्भ ‘किए भगता काशी जाइय’क प्रश्न सँ होइत अछि आ आगेँ ‘किए सुतलै तिरिया संग साथ हो’ जकाँ पंक्ति अबैत अछि। गीतमे तीर्थयात्रा, सम्बन्ध, आवास, बाधा आ सेवा एकसाथ जुड़ैत अछि। भुइँया शब्दकेँ समुदाय अथवा पात्रक पदनामक रूपमे पढ़बाक सम्भावना अछि, मुदा केवल एकटा मुद्रित शीर्षकसँ गायकक जाति, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि अथवा सम्पूर्ण जातीय परम्पराक दावे नहि बनाओल जा सकैत।

“किए भगता काशी जाइय किए परयगवा हो” — मुद्रित पृ. १२

एहि प्रश्नक उत्तर-रचना भक्तक व्यक्तिगत यात्रा के सामाजिक रूप दैत अछि। काशी आ प्रयागक धार्मिक भूगोल, घरक अन्तरंग सम्बोधन, आ वटियाक अवस्थाक जोड़ सँ भक्ति बाहरी तीर्थ मात्र नहि रहैत; घर-सड़क-राति-जागरणक संग जीवित अनुभव बनि जाइत अछि। पृ. १३क दहिना भाग कटि गेल अछि आ पृ. १४क आरम्भ मे पूर्वगीतक निरन्तरता भऽ सकैत अछि। एहि सीमा केँ ध्यानमे रखि पाठक सोझाँ गीतक ई स्वरूप प्रस्तुत कएल गेल अछि।

मुद्रित पृ. १४क आरम्भमे ‘दीनानाथ’ आ नदी-किनार सम्बन्धी पंक्तिसभ भेटैत अछि। हुनका तुरन्त ‘गरीब भुइँयाक गीत’क निश्चित शेष भाग कहब सम्भव नहि, कारण पृ. १३क मध्यवर्ती भाग अनुपस्थित अछि। मुदा एहि निकट पाठक्रममे दीनता, नदी, देह आ आश्रयक शब्दक पुनरावृत्ति अध्ययन योग्य अछि।

११. पीर बाबाक गीत: सीमारेखासँ परक लोकश्रद्धा

मुद्रित पृ. १४पर ‘पीर बाबाक गीत’ शीर्षक उपलब्ध अछि। ‘आहो साहेब औलिया पीर’ सँ आरम्भ पंक्तिसभमे पीरकेँ दुआ, शरीरक अङ्ग, चढ़ावा-जकाँ वस्तु, फल आ नदी/पथक चित्रक माध्यमसँ सम्बोधित कएल गेल अछि। पीर, साहेब आ औलिया जकाँ सम्बोधन गहबरक गीत-संसारकेँ केवल एकटा देवनाम-मण्डल धरि सीमित नहि राखैत। एहि पुस्तकमे काली, सलहेस, महिषासुर आ कारिखक संग पीर-भक्तिक उपस्थिति स्वयं प्रमाणित पाठीय तथ्य अछि।

“आहो साहेब औलिया पीर, आहो साहेब औलिया पीर” — मुद्रित पृ. १४

एहि सहअस्तित्वकेँ ‘सर्वधर्मसमभाव’क आधुनिक वैचारिक घोषणापत्र कहि देब पाठक उपर बाह्य आदर्श आरोपित करब होएत। अधिक ठोस कथन ई अछि जे स्थानीय लोकदेवता-संसारमे ‘पीर’क सम्बोधन एहन परम्परागत पूजा-पुकारक भाषामे समाहित अछि जाहिमे अन्य देवताक नामो उपस्थित अछि। गीतक वाचिक संरचना परस्पर धार्मिक भेटक जीवित साक्ष्य बनैत अछि, मुदा अनुष्ठानमे भाग लएनिहार समुदायक सांख्यिक पहचान उपलब्ध नहि अछि।

गीतमे ‘सात खण्ड कुरता’ आ ‘पाकल बीड़ा पनमा’क चित्र भौतिक वस्तुकेँ उपासकक स्नेहपूर्ण उपहार बनबैत अछि। पीरक व्यक्तित्व दूरस्थ रूढ़ धर्मप्रवचनक बजाय लोक-संवादमे उतरल प्रतीत होइत अछि। निरन्तर ‘आहो’क पुनरावृत्ति उच्चारणक लय बनबैत अछि; एहि पुनरावृत्तिसँ गीतक ‘बोल’ पक्ष स्पष्ट देखाइत अछि।

१२. कारिखक गीत: वन, जल, पशु आ सेवकक परिश्रम

मुद्रित पृ. १४पर ‘कारिखक गीत’ शीर्षक अछि, जे पृ. १६ धरि दृश्य अंशमे विस्तार पबैत अछि। आरम्भ ‘सितले अमुनिजा बाबू सितले जमुनिजा हो’ जकाँ पदक संग होइत अछि। पृ. १६मे ‘नदिया के तीरे तीरे’, ‘शिकार’, ‘मंजर’, ‘पियार’, ‘वन’, ‘जमुनि’ आ ‘बकस’ जकाँ शब्दक समूह सँ गीतक प्राकृतिक आ श्रमजीवी दृश्यक स्वर स्पष्ट उभरैत अछि। एतए ठाम-दृश्यक क्रम महत्त्वपूर्ण अछि: नदीक तट, वनक अन्तःप्रदेश आ सेवकक गतिविधि मिलि गीतक पात्रकेँ गतिशील बनबैत अछि।

“नदिया के तीरे तीरे खेललउ शिकार, हो कारिख दुलरुआ” — मुद्रित पृ. १६

पृ. १६क एक अंशमे ‘राम केदलिया वनमे ना’ ध्रुवपद फेरि-फेरि आएल अछि। एतए ‘राम’ शब्दक प्रयोगक संपूर्ण धार्मिक आशय बिना पृ. १५क अखण्ड पाठ निर्धारण करब कठिन अछि।

मुदा निश्चित ई जे गीतमे ध्वनि-आवृत्ति कथामूलक पदक आन्तरिक जोड़क काज करैत अछि। एकहि संकेतक पुनरुक्त उच्चारण सामूहिक गायनमे स्मरण आ लय देबामे सहायक भऽ सकैत अछि।

“सेवक उदेस हे अगमा रन वन फिरलहुँ हे” — मुद्रित पृ. १६

‘सेवक’क प्रथमपुरुषीय स्थिति लोकदेवता-संबोधनक सामाजिक संरचना खोलैत अछि। देवता पूर्ण समर्थ, सेवक अथक प्रयासरत—मुद्रित पद एहन सम्बन्धक अनुभूति करबैत अछि। वनमे खोज, रास्ताक बाधा, मौसम-जकाँ संकेत आ चढ़ावाक इच्छा आस्थाकेँ श्रमसँ जोड़ैत अछि। एतए ‘श्रमजीवी स्वर’ केवल विषय नहि, काव्यिक दृष्टिबिन्दु बनि उठैत अछि।

कारिखक गीतमे यात्रा, वन, जल आ सेवकक कथात्मक गतिशीलता प्रमुख अछि। प्रस्तुत पदावलीमे देवताक स्थिर स्तुति सँ आगाँ बढ़ि लोकनायकक काज आ प्रकृतिक सम्बन्ध उभरैत अछि।

१३. पाठक भाषा: लोकबोली, पदरचना आ व्याकरणिक रूप

एहि गीतसभमे ‘कओने’, ‘कथि’, ‘तोहरो’, ‘हमरो’, ‘सुतलै’, ‘मैयाँ’, ‘घरलउ’, ‘भेल’, ‘कहमा’, ‘कहुँ’, ‘अँचरवा’, ‘नथवा’ आ ‘दुलरुआ’ जकाँ बोलचालक रूप देखल जा सकैत अछि। एहि रूपसभकेँ एकरूप साहित्यिक रूपमे बदलिए देलासँ उच्चारण, जातीय-सामाजिक नजदीकी, आ लयभङ्गिमाक क्षति भऽ सकैत अछि। एहिठाम भाषा शास्त्रीय मानकीकरणसँ स्वतंत्र अपन लोक-प्रदर्शनक प्रयोजन पूरा करैत अछि।

छन्दक मूल आधार स्थिर अक्षरगणना नहि, गीतक बोल, ध्रुवपद, प्रश्न-उत्तर आ पुनरावृत्तिपर निर्भर देखाइत अछि। ‘कओने’, ‘किए’, ‘आहो’, ‘हे’ आदि पद अनेक ठाम अनुच्छेदक आरम्भ करैत अछि। गीतक समान्तर रचना पाठक बीच प्रत्याशा उत्पन्न करैत अछि: पहिल प्रश्नक अगिला रूप, पहिल नामक बदलल रूप, अथवा ध्रुवपदक पुनरागमन। एकर मौखिक स्मरण-मूल्य स्पष्ट अछि; वास्तविक गायक-संवादक ध्वनि-साक्ष्य नहि भेटबाक कारण गति वा राग निर्धारण नहि कएल गेल अछि।

पुस्तकक छपाइमे देवनागरीक अनेको क्षेत्रीय आ ध्वन्यात्मक रूप, अन्त्याक्षरक विकल्प आ सम्भावित मुद्रण-दोष सेहो देखाइत अछि। पाठसम्पादनक समय ‘अशुद्धि’ आ ‘आञ्चलिक

उच्चारण' बीच भेद करब आवश्यक होएत। उदाहरणार्थ, गीतमे दोहरायल सम्बोधनक मानकीकरण सँ कथोपकथन टूटि सकैत अछि। एहेन संकलनक भावी आलोचनात्मक संस्करणमे एक दिस मूल पाठक यथारूप प्रस्तुति आ दोसर दिस अलग कोश तथा पाठान्तर-सूची श्रेष्ठ पद्धति होएत।

१४. दृश्य-भाषा आ लोककाव्यक सौन्दर्य

गहबर गीतक एक महत्त्वपूर्ण सौन्दर्यगुण एतय अछि जे ऊँच धार्मिक नामक संग सामान्य वस्तुक सम्मिलन सहज अछि। कालीक संग तिसिया आ राइ, महिषासुरक संग भैंस आ नथ, लुकेशरिक संग कुआँ आ नदी, पीर बाबाक संग बीड़ा-पान, आ कारिखक संग नदी-तट आ वन —एहि उदाहरणसभमे लोकविश्वास वस्तुगत जीवन सँ पोषित अछि। पंक्तिबिम्ब-पटल गामक दृश्यभाषामे खुलैत अछि; देवता गामसँ बाहर नहि, गामक भाषा भीतर परिचालित छथि।

किछु पदमे देवीक शरीर अत्यन्त तीव्र आ कठोर छविसँ बनैत अछि, जखन अन्यत्र 'मैयाँ', 'गोद', 'बाबा', 'दुलरुआ' आ 'साहेब'सँ स्नेहपूर्ण सम्बोधन होइत अछि। ई विपरीत स्वर लोकधर्मक भावसम्पदा दर्शबैत अछि: भय आ भरोसा, शरणागति आ साहस, दैनन्दिनता आ अद्भुतता एक-दोसराक संग प्रतिस्पर्धा नहि, परस्पर पूरक बनि रहैत अछि।

पंक्ति-पंक्तिमे प्रदर्शनक आह्वान छैक: 'आहो'क दीर्घ उच्चार, 'हे'क अवसान, 'किए'क पुनरुक्त प्रश्न, 'ना'क स्थायी टुकड़ा। लिखित अनुक्रममे सेहो ई शाब्दिक सङ्गीतात्मकता अनुभव होइत अछि। मुदा एकरा राग-विशेष, मात्रिक-छन्द-विशेष वा नृत्य-विशेषक नाम देब बिना श्रव्य प्रमाण सम्भव नहि।

१५. जाति, लिङ्ग आ धार्मिक बहुलता: साक्ष्य आ सावधानी

पोथीक अङ्गरेजी परिचय उपेक्षित वर्गक गायक-परम्पराक विशेष उल्लेख करैत अछि। समर्पणमे बच्चन भगतक ज्ञानपरम्पराक सम्मान अछि; भूमिका अभिजात्य-केंद्रित सङ्कलन-पद्धति प्रति असन्तोष व्यक्त करैत अछि; गीतसमूहमे भुइँया, भगता, सेवक, पीर आ अनेको स्थानीय देवनाम एकठाम भेटैत अछि। एहि तीन स्तरकें जोड़ि देखला पर पुस्तक सामाजिक बहिष्करणक विरुद्ध लोकस्मृतिक संरक्षण-प्रयास बनैत अछि।

एकर बादो जातीय परिचय आ मूल प्रदर्शनकारीक पहचान समानार्थी नहि अछि। ‘गरीब भुइँयाक गीत’क शीर्षक ‘भुइँया’ शब्दक पाठ-साक्ष्य दैत अछि, मुदा एहि एक पंक्तिक आधारपर गीतक ककर गाम, कोन उपजाति, कोन वर्षक गायिका वा गायक, अथवा मूल प्रसारण-इतिहास तय नहि कएल जा सकैत। सामाजिक न्यायमूलक आलोचनाक विश्वसनीयता एहि सावधानीमे अछि।

लिङ्गगत रूपेँ काली, देवी, ‘मैयाँ’, आँचर, गोद आ तिरिया जकाँ शब्द पाठक ध्यान स्त्री-आकृति दिस लैत अछि। स्त्री देवताक केन्द्रीयता आ वास्तविक महिला गायकक भागीदारी दू अलग प्रश्न छथि। संग्रहमे गायक-गायिकाक सूची, प्रस्तुति-विभाजन आ स्थलवार गणना उपलब्ध नहि; अतः सम्पूर्ण परम्परा महिलाद्वारा संचालित छल—एहन निष्कर्ष एतए नहि कएल गेल अछि। तथापि बामतिक गीतमे आँचर पकड़बाक नाटकीय प्रसंग आ कालीक शक्ति-प्रतिमा स्त्री-देह आ अधिकारक विमर्श लेल सम्भावना प्रस्तुत करैत अछि।

धार्मिक विविधता मिथिलाक लोकविश्वासकेँ एकटा कठोर सिद्धान्तमे बान्हब असम्भव बनबैत अछि। संकलनमे पीर बाबाक गीतक उपस्थिति विशेष अर्थवान अछि; ओकर संग शाक्त गीतक एके पुस्तकमे स्थान भेटब लोकभक्तिक बहुल संरचनाक पाठीय प्रमाण अछि। साहित्येतिहासक दाबी बनबैत समय ‘गीतमे सहअस्तित्व’ आ ‘समाजमे सर्वत्र सद्भाव’क बीच भेद रखबाक चाही।

१७. सङ्कलनक उपलब्धि आ शेष पाठसम्पादकीय प्रश्न

ग्रन्थक प्रमुख उपलब्धि तीन रूपमे देखल जा सकैत अछि। पहिल, लोकसाहित्यक परिधिमे रहि गेल आवाहन-गीतकेँ लिखित अध्ययनक विषय बनाओल गेल। दोसर, गीतक अन्दर अनेक देवता, लोकनायक, पीर, वन, तीर्थ, घरेलू वस्तु, श्रम आ स्नेहक समानान्तर संसार देखल जा सकैत अछि। तेसर, सङ्कलनक समर्पण-पृष्ठपर बच्चन भगतक योगदान स्वीकार करैत छथि, जे लोकसाहित्यक स्रोत-व्यक्तिकेँ अनाम राखबाक साधारण त्रुटिसँ अलग एक उपयोगी उदाहरण अछि।

एकर सीमाक आलोचना पाठ-विशेषक साक्ष्यसँ करबाक चाही। उपलब्धमे प्रत्येक गीतक गायक, स्त्रोत-गाम, संकलन-तिथि, कार्यक्रम-परिस्थिति, धुन, प्रस्तुति-क्रम, स्थानीय पाठान्तर आ भाषिक टिप्पणी व्यवस्थित रूपेँ देखाइत नहि अछि। एकर अर्थ ई नहि जे मूल पुस्तकक

कोनो अदृश्य भागमे ई विवरण अवश्य अनुपस्थित अछि; केवल ई जे उपलब्ध सामग्रीसँ एकर पुष्टिकरण नहि भेल। वैज्ञानिक लोकसाहित्य-संस्करणमे एहि सूचनाक महत्व अत्यधिक अछि। आगाँक विश्वसनीय आलोचनात्मक संस्करणमे समग्र पृष्ठक उच्च-गुणवत्ताक प्रतिकृति, प्रत्येक गीतक मूल पाठमुद्रण, आवश्यक ठाम पाठ-संशय-चिह्न, बोलिक शब्दार्थ, गायन-स्थल/कलाकार, सम्भव हो तँ श्रव्य प्रस्तुति, आ अलग सम्पादकीय परिशिष्ट रहबाक चाही। एहि अनुशासक उद्देश्य मूल लोकभाषाकेँ ‘शुद्ध’ करि मेटा देब नहि, ओकर मौखिक वैविध्यकेँ दस्तावेजी प्रमाणक संग संरक्षित करब थिक।

१८. निष्कर्ष: ‘गहबर गीत’क साहित्यिक आ सांस्कृतिक अर्थ

‘गहबर गीत’क उपलब्ध पाठ स्पष्ट करैत अछि जे मिथिलाक लोककाव्यक अर्थ केवल पर्व-गीत वा विवाह-गीतक सुविख्यात धारा धरि सीमित नहि। भगतक आवाहन, देवीक शक्तिपुकार, सलहेसक स्मरण, लुकेशरिक जल-यात्रा, बामतिक आँचर-प्रसंग, अघोरिक दैनन्दिनता, महिषासुरक ग्राम्य शब्द, गरीब भुइँयाक व्यथा, पीर बाबाक आत्मीय सम्बोधन आ कारिखक वन-नदी-श्रमक कथा मिलि एक बहुध्वनिक सांस्कृतिक पाठ बनबैत अछि। एतय धार्मिक संसारक रचना माथपर थोपल अवधारणासँ नहि, लोकभाषाक संबोधन, गीतक ध्रुवपद आ समुदायगत स्मृतिसँ होइत अछि।

डॉ. योगानन्द झाक संकलनक ऐतिहासिक महत्त्वक मूल आधार पुस्तकक स्वघोषित लक्ष्य आ उपलब्ध गीतक स्वर अछि। एहि दू आधारक बीच समर्पण-पृष्ठपर बच्चन भगतक योगदान लोकज्ञानक जीवित परम्परा उपस्थित करैत अछि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ पोथीक सफलताकेँ मूल्याङ्कित करबाक संग वर्तमानक अपूर्णता स्वीकार करब आवश्यक अछि। जतय पाठ अछि, ओतए निकटपाठ; जतय पाठ कटि गेल अछि, ओतए मौन; जतय अन्य शोधसँ तुलना अछि, ओतए स्रोतक स्पष्ट पहचान—एहने अनुशासनसँ ‘गहबर गीत’ पर विश्वसनीय अनुसन्धान सम्भव होइत अछि।

विषय/मुद्रित पाठ	पाठ-स्थिति
समर्पण-पृष्ठ; बच्चन भगत (१९२८–१९९१), क्षेत्रीय लोकविद्या आ सङ्कलकक आभार	समर्पण स्पष्ट; सङ्गे लगल आवरणक केवल

विषय/मुद्रित पाठ	पाठ-स्थिति
	अंश
प्रकाशन-विवरण; २००७, मिथिला रिसर्च सोसाइटी; भूमिका पृ. १क अंश भूमिका पृ. २ स्पष्ट; गहबर, भगता, आवाहन, पूजा; पृ. ३क अंश	प्रकाशन-विवरण स्पष्ट; पृ. १ कटित पृ. २ स्पष्ट; पृ. ३ कटित
मुद्रित पृ. ४; काली-सलहेसक प्रसङ्ग; मुद्रित पृ. ५क देवीगीतक अंश	पृ. ४ स्पष्ट; पृ. ५ कटित
मुद्रित पृ. ६; कालीक पद; पृ. ७क अंश	पृ. ६ स्पष्ट; पृ. ७ कटित
मुद्रित पृ. ८; कालीक जन्म/फूल-आवाहन; पृ. ९क लोकदेवीगीतक अंश	पृ. ८ स्पष्ट; पृ. ९ कटित
मुद्रित पृ. १०; लुकेशरिक गीत, बामतिक गीत; पृ. ११क अंश	पृ. १० स्पष्ट; पृ. ११ कटित
मुद्रित पृ. १२; अघोरिक, महिषासुरक आ गरीब भुइँयाक गीत; पृ. १३क अंश	पृ. १२ स्पष्ट; पृ. १३ कटित
मुद्रित पृ. १४; पूर्वगीतक अंश, पीर बाबाक गीत आ कारिखक गीत; पृ. १५क अंश	पृ. १४ स्पष्ट; पृ. १५ कटित
मुद्रित पृ. १६; कारिखक गीतक दृश्य अन्त्य; अन्तमे समाप्ति-चिह्न	पृ. १६ स्पष्ट; बगलमे विज्ञापनक अंश

अध्याय ०७ / २००७ • द्वितीय संस्करण २०२४

लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा

डॉ. योगानन्द झाक कृतिक आलोचनात्मक विवेचन

अन्ततः एहि आलेखक असल साहित्यिक प्रश्न 'विद्यापतिक सभ कथा तथ्यतः सत्य अछि कि नहि' नहि, बल्कि 'लोक विद्यापतिक रूपक निर्माण किएक आ कोना करैत अछि' थिक। ई प्रश्न

आलोचनाकें व्यक्ति-पूजासँ किछु हटाक पाठ, समाज आ स्मृतिक अन्तःसम्बन्ध दिस मोड़ैत अछि। लोकगाथाक तुलनात्मक पाठ, मन्दिर-परम्परा आ मौखिक प्रस्तुतिक अभिलेख जोड़ि भविष्यक अनुसन्धान एहि अध्यायक महत्त्व बढ़ा सकैत अछि।

२. मैथिली लोकगीतमे राष्ट्रीय समन्वय | मूल पृ. ३०-३५

एहि आलेखक मूल प्रस्ताव ई अछि जे मैथिली लोकगीतक स्थानीय स्वर भारतीय सांस्कृतिक एकता सँ विरोधी नहि, प्रत्युत ओकर एकटा जीवित अभिव्यक्ति अछि। आरम्भमे लेखक पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिणक सांस्कृतिक सम्बन्ध, पारिवारिक मर्यादा आ साझा आध्यात्मिक प्रतीकक बात करैत छथि। तकर बाद ओ लोकगीतकें सामूहिक जीवनदर्शनक वाहक मानैत छथि। एहि बिन्दु पर लोकगीत मात्र मनोरञ्जन नहि रहि, समाजक स्मृति, नीति, सम्बन्ध आ बहुभाषिक सांस्कृतिक आवागमनक माध्यम बनि जाइत अछि। (पृ. ३०-३१)

मूल आलेखमे धार्मिक आ सामाजिक गीतक पंक्ति सँ समन्वयक भाव देखेबाक चेष्टा अछि। गीतमे राम, कृष्ण, देवी-देवता, कुलपरम्परा, अतिथि, पारिवारिक आदर, साझा मानवीय आकांक्षा आदि बिम्ब पर चर्चा कएल गेल अछि। अन्तिम अंशमे जीवनक भौतिक आवश्यकता आ सामाजिक सहकारक प्रसंगक संग लोकभाषाक गीतक स्थान निर्दिष्ट भेल अछि। एहि उदाहरणसभकें देखला सँ बुझाईत अछि जे लेखकक ‘राष्ट्रीय’ शब्द केवल राज्यक राजनैतिक अर्थमे नहि, बल्कि जनसमुदायक नैतिक-सांस्कृतिक जुड़ावक अर्थमे प्रयुक्त अछि। (पृ. ३०-३५)

आलोचनात्मक दृष्टिँ एहि लेखनक शक्ति ओकर भाव-सूत्रक खोजमे अछि। ताहि संग एकटा महत्त्वपूर्ण सावधानी आवश्यक अछि: लोकगीतक भीतर जतए एकता, प्रेम आ स्नेहक बोध अछि, ततए भेद, शोक, विरोध, लिंग-असमानता वा सामाजिक तनावक स्वर सेहो सम्भव अछि। जँ केवल समन्वयपरक गीत चुनल जाए तँ जीवनक कठिन अनुभव आ विरोधी आवाज अदृश्य भऽ सकैत अछि। एहि लेल चयनित गीतक प्रतिनिधित्व, संकलन-क्षेत्र आ अवसरक विवरण अनुसन्धानक निष्पक्षता लेल अनिवार्य आधार होइत अछि।

लोकगीतक शब्द आ धुन एक संग सामाजिक अर्थ उत्पन्न करैत अछि। गीतक लिखित पंक्ति पाठककें अर्थ दैत अछि, मुदा ओकर गायक, गायन-अवसर, सामूहिक प्रत्युत्तर आ लयक विवरण बिना लोकानुभवक समग्रता नहि भेटैत। ताहि हेतु समीक्षात्मक विस्तारक सम्भावना लोकगीतक सामाजिक प्रयोग, स्त्री-पुरुषक गायनभूमिका, संस्कारविशेष आ क्षेत्रीय विविधताक

तुलनामे अछि। एकै भावक अलग-अलग गाममे चलैत पाठान्तर समन्वय आ स्थानीयताको एक-संग देखेबाक अवसर दऽ सकैत अछि।

एहि अध्यायक मूल्य मुख्यतः विचारधारात्मक सूत्र स्थापना आ मैथिली लोकगीतक व्यापक भारतीय सन्दर्भ पर केन्द्रित अछि। ओकरा कठोर लोकसंगीत-विज्ञानक सर्वेक्षण मानबाक अपेक्षा, सांस्कृतिक व्याख्याक प्रतिपादन मानल जाए तँ तर्कक सीमा आ उपलब्धि दुनू स्पष्ट होइत अछि। समन्वयक विचारक संग सामाजिक विषमताक साक्ष्य सेहो पढ़ल जाए, तखन अध्यायक लोकतान्त्रिक व्याख्या समृद्ध होएत।

३. मैथिल लोकसंस्कृतिमे सामा-चकेबा | मूल पृ. ३६-४६

सामा-चकेबा सम्बन्धी आलेख मैथिल लोकजीवनक एक विशिष्ट गीत-नाट्य परम्पराकें विस्तृत सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्यमे रखैत अछि। आरम्भमे लेखक मैथिल लोकसंस्कृतिक भीतर लोककथा, लोकगीत, लोकनाट्य, लोकनृत्य, लोकमान्यता आ व्यवहारक परस्परता देखबैत छथि। एहि आधार पर सामा-चकेबाक अर्थ केवल पर्वक अनुष्ठान नहि, बल्कि कथा, अभिनय, गीत, वस्तु-निर्माण, उत्सवक सामुदायिकता आ सम्बन्ध-संरचनाक संयुक्त प्रदर्शन ठहरैत अछि। (पृ. ३६-३८)

आलेखक केन्द्रमे भाइ-बहिनक स्नेह, लोक-आख्यानक नैतिक द्वन्द्व तथा सामूहिक गायनक भूमिका अछि। लेखक पूर्ववर्ती विद्वान, लोकसंग्राहक आ गीतक सन्दर्भ पर चर्चा करैत विषयकें पुस्तकबद्ध अनुसन्धानक परम्परासँ जोड़ैत छथि। मूल पाठमे सामा गीतक प्रचलित पंक्ति आ रामदेव झा तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुरसँ सम्बन्धित उल्लेख भेटैत अछि, जाहिसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे लेखक तुलनात्मक सांस्कृतिक संकेतक सहारा लैत छथि। कथा आ लोकगीतिक सम्बन्धकें ओ समान साहित्यिक विधा नहि, बल्कि एक-दोसराकें पोसैत प्रस्तुति-रूप मानबाक दिशा सुझाबैत छथि। (पृ. ३९-४३)

एहि आलेखक विशिष्टता ओकर प्रदर्शनपरक दृष्टि थिक। सामा-चकेबामे पातर, प्रतीक, खेल, गीत आ सामूहिक क्रिया एकै भावक अलग-अलग माध्यम बनैत अछि। समीक्षाक दृष्टिएँ एहि रूपकें ‘जीवित लोकनाट्य’ कहबा लेल प्रयोगशील प्रमाण चाही: कोन पात्र कें के प्रस्तुत करैत अछि, गीतक क्रम की अछि, प्रतिदिनक कार्यविधि बदलैत अछि कि नहि, आ दर्शक-अभिनेताक

सम्बन्ध केहन अछि। एहन प्रश्न आलेखक स्थापना संग विरोध नहि, बल्कि ओकर व्याख्यात्मक क्षमता बढ़ेबाक साधन अछि।

भाइ-बहिनक स्नेहक आदर्श एहि लोकपर्वक एक महत्त्वपूर्ण अर्थ होएत; तथापि स्त्रीसमुदायक सामूहिक मिलन, स्मृति, परिहास आ स्वराधिकारक पक्षकें बराबर गम्भीरतासँ देखब आवश्यक अछि। लोकपर्वक कथा सामाजिक व्यवस्था रचैत अछि, मुदा गीत आ प्रदर्शन कखनो ओही व्यवस्थाक भीतर अनौपचारिक स्वतन्त्रता सेहो बनबैत अछि। एहि दूहरा अर्थक अध्ययनसँ सामा-चकेबा घरक सीमामे बन्हल अनुष्ठान नहि, व्यापक सार्वजनिक सांस्कृतिक घटना रूपें बुझाईत अछि।

पाठमूलक निकष ई अछि जे लेखक मिथिला-विशेषक परम्पराकें लोकसाहित्यक मान्य विषय बनबैत छथि। अध्यायक आगाँक शोध-दिशा सामग्रीक स्रोत-सूची, स्थानीय पाठान्तर, गीत-संगीतक ध्वन्यभिलेख, प्रतिमा-विन्यास आ पर्वक समयगत बदलावक दस्तावेजीकरण अछि। एहि दिशा मे कार्य भेलासँ एखनक विवेचन अमूर्त प्रशंसासँ आगाँ बढ़ि प्रदर्शन-इतिहासक विश्वसनीय अध्ययन बनि सकैत अछि।

४. लोकगाथा: दीना-भद्री | मूल पृ. ४७-५६

दीना-भद्रीक आलेख पुस्तकक सामाजिक इतिहास सम्बन्धी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रविष्टिमे सँ एक अछि। आरम्भमे कृषिमजदूरक श्रम, भूमि-स्वामित्वक अभाव, जाति-व्यवस्था आ मुसहर समुदायक सामाजिक परिस्थिति चर्चा मे अनल गेल अछि। लेखक गाथाक पृष्ठभूमि समझेबा लेल समुदायगत जीवनयापन, परम्परागत श्रम तथा स्थानीय वर्गभेदक विवरण दैत छथि। एहि प्रकार गाथाक नायककें शुद्ध अलौकिक वीर नहि, बल्कि श्रम आ सामाजिक तनावक विशिष्ट परिवेशसँ उभरैत लोकनायक रूपमे स्थान भेटैत अछि। (पृ. ४७-४९)

मुख्य कथासूत्रमे दीना आ भद्री, हुनक पारिवारिक-सामुदायिक सम्बन्ध तथा अत्याचारसँ टकरावक कथा आबैत अछि। लेखक लोकगाथाक पद, संवादात्मक अंश, कथाविस्तार आ प्रसंगक सहारा लैत संघर्षकें प्रस्तुत करैत छथि। मूल पाठमे विरोध, प्रतिशोध, शौर्य, सामूहिक निष्ठा आ लोकधर्मक मिलन देखल जा सकैत अछि। एक स्थल पर लेखक कथामे कृष्णक कालिय-दमन आ तन्त्र-संकेतक प्रभावक चर्चा करैत छथि; एहि सँ गाथा स्थानीय ऐतिहासिक अनुभव आ व्यापक पौराणिक स्मृतिक परस्पर सहवासक उदाहरण बनैत अछि। (पृ. ४९-५३)

समीक्षाक दृष्टिँ एहि आलेखक उल्लेखनीय पक्ष ई अछि जे मुसहर समुदायकें अध्ययनक केन्द्रमे अनल गेल अछि। मैथिली साहित्यक मुख्यधारा मे सामाजिक हाशियाक जनजीवनकें प्रायः फुटनोट समान स्थान भेटैत अछि; एतय हुनक संघर्षक अपना मौखिक महागाथाक स्वतंत्र गरिमा अछि। तथापि लोकगाथाक प्रत्येक सामाजिक पात्रकें प्रत्यक्ष इतिहासक व्यक्ति मानि लेब आवश्यक नहि। गाथाक कथात्मक काल, संकलनक काल आ सम्भावित सामाजिक स्मृतिक काल अलग-अलग रहि सकैत अछि। एहि भेदकें सुरक्षित रखबासँ गाथाक सामाजिक महत्त्व घटैत नहि, ओकर ऐतिहासिक उपयोग विश्वसनीय होइत अछि।

गाथाक पदमाला लोकसमुदायक सामूहिक अनुभूतिक समृद्ध साक्ष्य अछि। ओकर पाठ-रूप सदा एके नहि रहैत होयत; भिन्न कलाकार कथाक लय, संवाद, पात्रक गुण आ प्रसंग बदलि सकैत छथि। एहि कारण गायकक परिचय, संग्रहस्थल, कथागायनक प्रसंग, स्त्रोत आ पाठान्तर दर्ज करब लोकोन्मुख अनुसन्धानक अनिवार्य अंगला चरण अछि। जाति-विषयक अध्ययनमे समुदायकें केवल पीड़ितक निष्क्रिय रूपमे नहि, अपन नैतिकता, आस्था, प्रतिरोध आ सृजनशीलताक कर्ता मानब विशेष आवश्यक अछि।

एहि आलेखक आलोचनात्मक उपादेयता स्थानीय वीरगाथाक मार्फत श्रम, शक्ति आ प्रतिष्ठाक प्रश्न उठेबामे अछि। लेखक जे कथा प्रस्तुत करैत छथि, ओकरा समाजशास्त्रीय परिकल्पना, पौराणिक संरचना आ लोकसाहित्यिक शिल्पक तीन अलग स्तर पर पढ़ल जाए तँ हिन्दी-मैथिली लोकगाथा-अध्ययनमे तुलनात्मक अनुसन्धानक बहु सम्भावना खुलैत अछि।

५. गहबर गीत | मूल पृ. ५७-७०

गहबर गीत नामक आलेख लोकगीतक वर्गीकरण, सांस्कृतिक प्रयोग आ अल्पचर्चित परम्पराक पाठसंरक्षण पर केन्द्रित अछि। लेखक आरम्भमे मिथिलाक लोकगीतक व्यापक भण्डारक उदाहरणस्वरूप सोहर, समदाउन, विवाह-सम्बन्धी गीत, ऋतुगान, जाति आ व्यवसाय-विशेषक गीत तथा धार्मिक आख्यानसँ जुड़ल गानक अनेक नाम प्रस्तुत करैत छथि। एहि विस्तृत पृष्ठभूमिमे गहबर गीतकें पृथक परिचय देबाक निर्णय महत्वपूर्ण अछि, कारण ई दर्शबैत अछि जे सामान्य श्रेणी 'लोकगीत'क भीतर असंख्य विशिष्ट सामाजिक-आनुष्ठानिक रूप छिपल अछि। (पृ. ५७-५८)

मूल अध्यायमे गीत-पाठक पर्याप्त उपस्थिति अछि। कालिका, गोर, सोनोरा आ महामायासँ सम्बन्धित गेय अंश तथा आवर्ती पंक्तिक विन्यास पाठककेँ एहन गीतक आन्तरिक लयक संकेत दैत अछि। पृ. ६३ पर कालिका गीतक क्रमिक आवर्तन आ ‘महामायाक गीत’क अलग उल्लेख भेटैत अछि। ई सामग्रीक महत्त्व एतबे नहि जे नव गीत उद्धृत भेल अछि; गीतमे स्थाननाम, देवीसम्बन्धी प्रतीक, यात्रा-बिम्ब आ सामूहिक गायनक स्वर एक-दोसराक संग जुड़ैत देखाइत अछि।

एहि लेखनक एक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक उपलब्धि अज्ञात अथवा कम लिखित गीतपरम्पराकेँ पोथीक स्थिर अभिलेखमे अनब अछि। मौखिक गीत गायकक स्वरसँ पाठक धरि जखन आबैत अछि तँ किछु लाभ आ किछु हानि दुनू होइत अछि: शब्द संरक्षित होइत अछि, मुदा स्वरतत्त्व, विराम, तान, प्रत्युत्तर आ अवसरक सजीव रूप सहजहि नहि बचैत। ताहि लेल पाठक सँग ध्वनि-संग्रह, गायकक नाम, समुदाय, लिप्यन्तरणक सिद्धान्त आ गीत-क्रमक साक्ष्य राखल जाए तँ एहन अध्ययनक प्रमाणमूल्य बहुगुणित होएत।

गहबर गीतक धर्म-सांस्कृतिक अर्थ बुझबा लेल देवीक उपासना, स्थानविशेष आ सामुदायिक समागमक सम्बन्ध देखब आवश्यक अछि। मुदा एतय सावधानी अछि जे देवता-सम्बन्धी समान शब्द भेटलामात्रसँ सभ गीतक समान उत्पत्ति वा सम्पूर्ण क्षेत्रमे एकरूप प्रयोग सिद्ध नहि होइत अछि। गीतक भिन्न रूप सामाजिक स्तर, जातिगत व्यवहार आ अवसरअनुसार विकसित भऽ सकैत अछि। एहिमे स्थानीय विविधताकेँ मूल्य मानि सुरक्षित रखब, ‘प्रामाणिक एकमात्र रूप’ खोजबासँ अधिक फलदायक अछि।

ग्रन्थक लोकखण्डक अन्तिम आलेख होएबाक कारण ‘गहबर गीत’ पूर्वक चारि आलेखकेँ नव सन्दर्भ दैत अछि। मिथक, समन्वय, उत्सव आ वीरगाथाक बाद एतय लोकस्वर अपने शब्दमे पाठक धरि पहुँचैत अछि। अतः एहि अध्यायक महत्त्व संग्रहात्मक सेहो अछि आ व्याख्यात्मक सेहो। चुनल गीत-पाठक आलोचनात्मक पाठसम्पादन आ संगीतविश्लेषणक विस्तारित संस्करण भविष्यक शोधक स्वाभाविक दिशा अछि।

दोसर खण्ड: साहित्य

६. कविवर जीवनझाक नाट्यगीतमे अलंकार योजना | मूल पृ. ७१-७७

साहित्य खण्डक पहिल अध्याय अलंकारशास्त्रक सिद्धान्तक आधार पर जीवन झाक नाट्यगीतक अध्ययन करैत अछि। आरम्भमे आचार्य विश्वनाथक काव्यविचार उल्लेखित अछि। लेखक अलंकारकें काव्यक आवश्यक मूलभूत अस्तित्व नहि, किन्तु काव्यसौन्दर्य बढ़ेबाक शक्तिशाली साधन मानैत छथि। एहिसँ प्रश्न उठैत अछि जे अलंकार शब्दक चमत्कार धरि सीमित रहैत अछि अथवा पात्रक भाव, नाटकीय स्थिति आ गीतक प्रभावक अङ्ग बनैत अछि। लेखकक उद्देश्य नाट्यगीतमे प्रयुक्त रूपात्मक कारीगरीकें एहि कसौटी पर देखब अछि। (पृ. ७१-७२)

अध्यायमे उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक आ अनेक अर्थालंकारक प्रयोगक सन्दर्भ भेटैत अछि। पृ. ७४ पर अर्थालंकारक उदाहरणसँ लेखक शब्द-विन्यास आ अर्थक संयुक्त प्रभावक विवेचन करैत छथि। जीवन झाक नाट्यगीतमे प्रकृति, सौन्दर्य, भावाभिव्यक्ति आ पात्र-वाचन जँ एक-संग क्रियाशील होइत अछि, तँ अलंकारक मूल्य केवल नामकरणमे नहि, नाटकक अर्थसर्जनामे अछि। लेखकक उदाहरणपद्धति एही प्रश्नक आरम्भिक उत्तर देबाक प्रयत्न करैत अछि।

एहि निबन्धक विशिष्टता शास्त्रीय शब्दावलीक स्थानीय सृजनपरक उपयोगमे अछि। विश्वनाथ, काव्यगुण आ रसक सिद्धान्त स्वयंसिद्ध ढङ्गसँ आरोपित नहि होयबाक चाही; नाट्यगानक संदर्भमे छन्द, पात्र, मंचीय समय आ संवादक वेग अलग-अलग तत्त्व अछि। उदाहरणक कोन अंश अलंकार अछि आ कोन अंश सामान्य काव्यात्मक बिम्ब—एहि सीमारेखाक स्पष्ट व्याख्या अध्यायक आलोचनात्मक विश्वसनीयता लेल महत्वपूर्ण अछि।

जीवन झाक नाट्यगीत लोकसंगीत आ लिखित साहित्यक बीच स्थित अछि। एहन रचनाक विश्लेषणमे ध्वनि, उच्चारण, समूह-गायन आ अभिनयक प्रभावकें सेहो ग्रहण करब अपेक्षित अछि। जँ कोनो पंक्ति कागज पर उपमा छैक, मुदा अभिनयमे ओ हास्य, करुणा वा व्यङ्ग्यक नाटकीय अवकाश बनबैत अछि, तँ काव्यार्थक अर्थव्याप्ति बढ़ि जाइत अछि। एहि कारण औपचारिक अलंकार-वर्गीकरणकें नाट्य-व्यवहारक अध्ययनसँ जोड़ब आगाँक अनुसन्धानक महत्वपूर्ण उपक्रम होएत।

समग्रतः निबन्ध मैथिली नाट्यगीतकें संस्कृत काव्यशास्त्रीय आलोचनाक योग्य सामग्री सिद्ध करैत अछि। मूल्याङ्कनक अगिला कसौटी ई होयबाक चाही जे लेखकक चुनल उदाहरण जीवन झाक समस्त नाट्यकृतिमे कतेक प्रतिनिधि अछि, आ कोन अलंकार नाटकीय प्रयोजनक कारण

बारम्बार आबैत अछि। एहि सांख्यिक-सन्दर्भगत विश्लेषणसँ पुस्तकक आरम्भिक स्थापना अधिक ठोस रूप लेत।

७. नारी शिक्षा आ हरिमोहनझा | मूल पृ. ७८-८५

ई आलेख मिथिलामे स्त्रीशिक्षाक प्रश्नकेँ हरिमोहन झाक सामाजिक व्यङ्ग्य आ कथा-साहित्यक संग जोड़ैत अछि। लेखक आरम्भमे ज्ञान-विमर्शक पारम्परिक स्त्री-पात्रसभ आ इतिहासक उदाहरणक उल्लेख करैत छथि, तकर बाद आधुनिक शैक्षिक असमानता, सामाजिक नियन्त्रण तथा स्त्रीक शिक्षाक आवश्यकता पर ध्यान दैत छथि। एहि पूर्वपीठिकासँ हरिमोहन झाक रचनाकेँ केवल हास्य-व्यङ्ग्यक पाठ नहि, समाजसुधारक सन्दर्भमे पढ़बाक स्थिति बनैत अछि। (पृ. ७८-७९)

आलेखमे ‘कन्यादान’, ‘द्वादशोऽध्याय’-प्रकारक सामाजिक व्यङ्ग्य-सन्दर्भ आ शिक्षित-अशिक्षित जीवनक विरोधक चर्चा दृष्टिगोचर होइत अछि। पृ. ८१ पर ‘कन्यादान’क प्रसंगमे अंग्रेजी शिक्षा, विवाह-व्यवस्था, वरक आचरण तथा स्त्रीक अनुभवक सम्बन्ध उठाओल गेल अछि। लेखकीय तर्कक महत्त्व एहि मे अछि जे शिक्षा केवल पाठशाला जाएबाक घटना नहि, आत्मनिर्णय, सामाजिक चेतना आ बदलैत पारिवारिक व्यवहारक प्रश्न बनि जाइत अछि। (पृ. ८०-८२)

हरिमोहन झाक साहित्य व्यङ्ग्यक माध्यमसँ समाजक दोगलापन उजागर करैत अछि। मुदा आलोचनात्मक अध्ययनमे कथावाचक, पात्रक बोली आ स्वयं रचनाकारक मान्यताकेँ एक मानि लेब उचित नहि। पात्रक कृत्यक हास्यास्पदता पाठकमे सामाजिक विवेचना उत्पन्न करैत अछि; ओहिसँ रचनाकारक अंतिम मूल्यनिर्णय सिद्ध करबाक लेल पूरा कथा-संरचना देखब आवश्यक अछि। एहि पद्धतिगत भेदकेँ दृढ़ रखल जाए तँ लेखकक सामाजिक आशयक विश्लेषण अधिक सटीक होएत।

नारीशिक्षा पर विमर्श करैत काल ‘परम्परा’ आ ‘आधुनिकता’क दू सरल कोठरी बनाबि देब सेहो पर्याप्त नहि। संस्कार, विवाह, आर्थिक सुरक्षा, मातृभाषा, औपनिवेशिक शिक्षा आ सामाजिक प्रतिष्ठाक बीच जटिल सम्बन्ध अछि। हरिमोहन झाक कथा एहि टकरावकेँ व्यङ्ग्यक माध्यमसँ व्यक्त करैत अछि। अध्ययनक विस्तारमे कथाक स्त्री-पात्रक भाषिक स्वायत्तता, निर्णयक

अधिकार, परिहासक लक्ष्य आ शिक्षा-प्राप्तिक वास्तविक परिणामक पृथक परीक्षण उपयोगी होएत।

एहि आलेखक मुख्य उपलब्धि हरिमोहन झाक रचना-जगतमे नारी शिक्षा एकटा महत्वपूर्ण सामाजिक विचार रूपेँ चिन्हित करब अछि। सीमासम्बन्धी आलोचनात्मक प्रश्न ई अछि जे सामाजिक परिवर्तनक एकाधिक स्वरक तुलना कतेक कएल गेल अछि। जँ अन्य समकालीन मैथिली रचनाकार आ स्त्रीलेखिकाक पाठसँ तुलना जोड़ल जाए, तँ एहि बहसक साहित्येतिहासिक गाम्भीर्य आरो बढ़त।

८. पण्डित आनन्दझाक ‘महेशशतक’ | मूल पृ. ८६-८९

चारि पृष्ठक एहि संक्षिप्त आलेखमे पण्डित आनन्द झाक ‘महेशशतक’क शैवभक्ति, पदावली आ काव्यभाषाक परिचय भेटैत अछि। आरम्भमे शिवसम्बन्धी स्तुतिपदक उद्धरण देल गेल अछि आ विद्यापति-चन्द्र झाक शैवपद-परम्परासँ सम्बन्ध स्थापित कएल गेल अछि। लेखकक दृष्टिमे शिवक विश्वनाथ, विश्वेश्वरनाथ, हर, शंकर आदि रूपक सम्बोधनमात्र पूजा नहि, बल्कि मैथिली भाषामे अनूदित आ पुनर्सृजित धार्मिक संवेदनाक संकेत अछि। (पृ. ८६)

एहि अध्यायमे भक्ति पदक अतिरिक्त लौकिक संस्कार, विवाह, पारिवारिक कलह-विरह, लोकव्यवहार आ सांस्कृतिक चिह्नक उल्लेख होइत अछि। ताहिसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे धार्मिक पदावली आ सामाजिक जीवनक साहित्यिक रूप चित्रित करबाक सम्भावना एक-दोसरासँ पृथक नहि। ‘महेशशतक’क सौन्दर्य समझबाक लेल देवताक महिमा-वर्णनसँ आगाँ जा कऽ शब्दक स्थानीयता, सम्बोधनक लय, शैव चिन्तन आ लोकानुभवक समावेश देखब आवश्यक अछि।

संक्षिप्तता एहि आलेखक लाभ आ सीमा दुनू अछि। लेखक अल्प स्थानमे विषयक परिचय आ प्रमुख प्रतिमान उपस्थित करैत छथि। मुदा शतकक काव्यरूपक व्यवस्थित अध्ययन करबा लेल शीर्षकमे ‘शतक’क सङ्ख्यात्मक अर्थ, ग्रन्थक पूर्ण पद-सूची, पाठान्तर आ सम्पादित संस्करणक स्थितिक परीक्षण चाही। एहि सबकेँ नहि जोड़ल जाए तँ एकल उदाहरणमे दृष्टिगोचर सौन्दर्य समस्त ग्रन्थक सामान्य धर्म थिक कि नहि, से निर्धारित करब कठिन रहैत अछि।

शिव-उपासना एक पारम्परिक धार्मिक विषय भेला पर सेहो मैथिलीमे ओकर अभिव्यक्ति भाषिक दृष्टिँ विशिष्ट अछि। संबोधन, स्थानीय अनुष्ठान, गीतक बोल आ संस्कृत काव्यपदक मिश्रणक सूक्ष्म विवेचन एहि आलेखकेँ शैलीगत अनुसन्धान रूपमे विकसित कऽ सकैत अछि। विशेषतः साहित्यिक मैथिली आ अनुष्ठानिक मौखिक मैथिलीक बीच रूपान्तरक प्रमाण देखल जाए तँ भक्ति साहित्यक सामाजिक चरित्र खुलत।

समग्र मूल्याङ्कनमे ‘महेशशतक’ विषयक आलेख एक सङ्केतपूर्ण परिचयात्मक आलोचना अछि। ई पाठककेँ ग्रन्थक धार्मिक-साहित्यिक महत्त्व दिस लऽ जाइत अछि, मुदा पाठसम्पादनक कठोर प्रमाणक समान मानल नहि जा सकैत। संग्रहक विविधतामे ई लघु अध्याय शैवभक्ति-साहित्यक आवश्यक स्थान सुनिश्चित करैत अछि।

९. राधाविरहमे शाक्त तत्त्व | मूल पृ. ९०-१०१

एहि दीर्घ आलेखमे लेखक शाक्त परम्परा आ राधा-कृष्णक विरहकाव्यक अन्तःसम्बन्धपर विचार करैत छथि। प्रस्तावनामे भारतीय शाक्त भावनाक देवी-मातृत्व, करुणा, शक्तिरूपा स्त्री, सृष्टि आ उपासनाक विविध स्वरूपक चर्चा अछि। एहि पृष्ठभूमिमे पण्डित काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क ‘राधाविरह’क पाठ करैत लेखक एकै काव्यक भीतर कृष्णक लीला, राधाक प्रेम आ देवीतत्त्वक सम्भावित समन्वय खोजैत छथि। (पृ. ९०-९२)

मूल आलेखमे मंगलाचरण, शक्तिस्वरूपा आ राधा-कृष्णक रूपावली सम्बन्धी उद्धरणसभ दऽ कऽ व्याख्या कएल गेल अछि। पृ. ९५ पर लेखक विशेष रूपसँ ई प्रतिपादित करैत छथि जे काव्यक नायकरूप कृष्णकेँ एक पक्षमे वैष्णव प्रेमलीलाक केन्द्र मानल जा सकैत अछि, मुदा अन्य स्तरपर शक्ति आ सृष्टिक ब्रह्माण्डीय रूपक सँग सम्बन्धित कएल गेल अछि। एहि तर्कक असल वस्तु धार्मिक सम्प्रदायक नामक योग नहि, काव्यक भीतर प्रतीक आ तत्त्वक पुनर्व्याख्या थिक। (पृ. ९३-९६)

एहि अध्यायक आलोचनात्मक शक्ति अन्तरपाठीय पढ़ाइमे अछि। शाक्त, वैष्णव, पौराणिक आ रस-सम्बन्धी प्रतीक अलग-अलग परम्परासँ आबैत अछि। कविक काव्यविधानमे ओ किन प्रसंगमे परस्पर प्रवेश करैत अछि, तकर परीक्षण पाठ-आधारित भेला पर फलदायक होइत अछि। मुदा देवीक सामान्य उल्लेख वा स्त्रीशक्तिक प्रशंसामात्रसँ शाक्त दर्शनक निश्चित

सम्प्रदायगत निष्कर्ष निकालब उचित नहि। शाक्त तत्त्व सिद्ध करबाक लेल शक्तिस्वरूपक विशिष्ट दार्शनिक चिन्ह, काव्यक सन्दर्भ आ कथात्मक कार्यक प्रमाण जोड़ल आवश्यक अछि।

‘विरह’क सामान्य व्याख्या मिलन-अभावक रसभर अनुभूति रूपमे होइत अछि। मुदा एहि काव्यक आलोचनामे विरहकेँ आध्यात्मिक खोज, जीवनक अपूर्णता, पुनःसम्बन्धक आकांक्षा आ ब्रह्माण्डीय एकताक प्रतीक सेहो मानबाक सम्भावना अछि। एहि रूपमे राधा केवल विरहिणी नायिका नहि, अर्थनिर्माणक सक्रिय केन्द्र बनैत छथि। समीक्षाक दृष्टिँ प्रश्न उठैत अछि जे शाक्त तत्त्वक व्याख्यामे राधाक स्वतंत्र कर्तृत्व कतेक सुरक्षित रहैत अछि आ कतहु ओ केवल शक्तिक दार्शनिक चिह्न बनि नहि जाइत छथि।

धर्मवैचारिक समन्वयक महत्त्व एहि अध्यायक केन्द्रीय उपलब्धि अछि। आगाँक ठोस अनुसन्धानक लेल ‘राधाविरह’क सम्पूर्ण पदक्रम, कथाक प्रसंग-विन्यास, सम्भावित संस्कृत/बंगला/मैथिली अन्तरपाठ, शाक्त शब्दावली आ वैष्णव पदपरम्पराक तुलनात्मक सूची उपयोगी होयत। एहि साधनसँ लेखकीय अनुभूति आ ग्रन्थगत प्रमाणक परस्पर सन्तुलन अधिक स्पष्ट भऽ सकत।

१०. रामकथागायक: हरेकृष्णलालदास | मूल पृ. १०२-१०७

हरेकृष्णलालदास विषयक अध्याय मैथिली रामकाव्यक परम्परा आ साम्प्रदायिक भक्तिधाराक एक विशिष्ट कड़ी प्रस्तुत करैत अछि। आरम्भमे विद्यापतिक भाषिक-साहित्यिक प्रभाव, रामकथाक प्राचीनता आ मिथिलाक गेय रामकथा-परम्पराक चर्चा अछि। लेखक अनेक मध्यकालीन रामकथा-कविक उल्लेख करैत हरेकृष्णलालदासकेँ एकान्त कविक रूपमे नहि, निरन्तर विकसित परम्पराक भीतर राखबाक प्रयत्न करैत छथि। (पृ. १०२-१०३)

निबन्धक मूल प्रश्न ई अछि जे रामकाव्यक शास्त्रीय धारा आ मिथिलाक लोकव्यवहारक गीतमे कोन सम्बन्ध अछि। संस्कार-गीत, सोहर, बधैया, समदाउन आ अन्य अवसरविशेषक गानमे राम-सीताक कथा लोकपरिवारक भावनासँ जुड़ैत अछि। लेखकक प्रस्तुति एहिसँ परिचित करबैत अछि जे लिखित काव्यक धार्मिक चरित्र गामक गेय परम्परामे जीवित रूप पबैत अछि। काव्यक सामाजिक प्रयोग ओकर शब्दक समान महत्त्वपूर्ण अछि।

पृ. १०७क समीप प्रस्तुत पदावलीमे मैथिली गौरवक भाव स्पष्ट रूपसँ उभरैत अछि। लेखक हरेकृष्णलालदासक योगदानकेँ केवल रामभक्तिक पुनरावृत्ति नहि, सांस्कृतिक भाषा-सम्बन्धी जागरूकताक रूपमे देखबैत छथि। साहित्यिक मूल्याङ्कन लेल ई दूनू पक्ष अलग कऽ देखब आवश्यक अछि: काव्यक शिल्प, भाषा आ कथानककेँ एक कसौटी पर; ओकर लोकप्रचलन, सांस्कृतिक प्रभाव आ भक्तिक संवाहक भूमिकाकेँ दोसर कसौटी पर। दूनू जोड़ल जाए तँ योगदानक अधिक न्यायपूर्ण आकलन होएत।

एहि अध्यायमे परम्परागत कविक क्रमक उल्लेखक संग तुलना कएल गेल अछि। मुदा परम्पराक वंशावलीकेँ कठोर इतिहास रूपमे प्रस्तुत करबा लेल प्रत्येक कविक काल-निर्धारण, मूल पाठक संस्करण तथा रचनात्मक समानताक साक्ष्य चाही। रामकथाक समरूप कथा-तत्त्वक उपस्थिति अपनेआप प्रत्यक्ष साहित्यिक प्रभाव सिद्ध नहि करैत। भाषिक उधारी, पदरचना, कथानक-भेद आ समकालीन सन्दर्भकेँ अलग-अलग परखल जाए तँ एहि शृङ्खलाक इतिहास विश्वसनीय बनत।

संक्षेपमे ई आलेख मैथिली रामकाव्यक गेय आ साम्प्रदायिक धारा दिस पाठकक ध्यान आकृष्ट करैत अछि। लेखकक रचनाकार-विशेषक परिचय मैथिली साहित्येतिहासक उपेक्षित फाँक भरबाक दिशा दैत अछि, यद्यपि तकर पूर्ण प्रमाणिक चित्र गढ़बा लेल संग्रहित पद, मुद्रित संस्करण आ मौखिक प्रस्तुतिक तुलनात्मक सम्पादन आवश्यक अछि।

११. डॉ. शैलेन्द्रमोहनझाक बाल साहित्य | मूल पृ. १०८–११३

बालसाहित्य सम्बन्धी अध्याय आयु-विशिष्ट साहित्यबोधक प्रश्नसँ आरम्भ होइत अछि। लेखक बालकक ज्ञान-विकास, सहज ग्रहणक्षमता आ साहित्यक शिक्षणात्मक-सृजनात्मक भूमिकाक बीच सम्बन्ध जोड़ैत छथि। पृ. १०८ पर मैथिली बालसाहित्यक मौखिक परम्परा, संस्कृत कथासाहित्यक प्रेरणा आ साहित्यिक लेखनक विकासक सन्दर्भ रखल गेल अछि। एहि आधार पर शैलेन्द्रमोहन झाक योगदानकेँ पुस्तकक केवल एक लेखकक परिचयक रूपमे नहि, मैथिली बालपाठकक अलग सांस्कृतिक स्थान स्वीकृत करबाक प्रयास मानल जा सकैत अछि।

मूल आलेखमे शैलेन्द्रमोहन झाक लेखनक विविध विधा आ विशिष्ट कृतिनामक उल्लेख भेटैत अछि। पृ. १०८ पर ‘प्रतिभा’, ‘मधुश्रावणी’ आदि रचनाक नाम तथा उपन्यास, निबन्ध, कथा-कविताक क्षेत्रक संकेत देखाइत अछि। एहिसँ लेखकक आलोचनात्मक आग्रह स्पष्ट होइत अछि

जे बालसाहित्य लिखनिहारक व्यापक साहित्यिक संस्कारकें ओहि रचनाक सौन्दर्य-निर्माणसँ अलग कऽ नहि देखल जा सकैत। बालोपयोगिता केवल विषयक सरलता नहि; कल्पनाक गाम्भीर्य, भाषाक प्रवाह आ आयुवर्गानुसार प्रस्तुति सेहो अछि।

बालपाठक विषयक अध्ययनमे ‘शिक्षाप्रद’ आ ‘साहित्यिक’ गुणकें समानार्थी मानब उचित नहि। कोनो कथा सदाचारक उपदेश दऽ सकैत अछि, मुदा पात्रक स्वायत्तता, हास्य, जिज्ञासा आ कलात्मक अनुभव न होए तँ ओ साहित्यिक अर्थमे सीमित रहि जाइत अछि। एहि कारण कृतिविशेषक विश्लेषणमे कथानकक गति, संवादक बोलचाल, कल्पना-तत्त्व, असम्भवक उपयोग तथा बालपाठकक सक्रिय सहभागिताक परीक्षण विशेष उपयोगी होएत।

मैथिली बालसाहित्यक भाषिक प्रश्न सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। घरक बोली, विद्यालयक पाठ्यक्रम आ मुद्रित साहित्यिक भाषा बीच दूरी रहैत अछि। लेखकक कृतिसभ भाषा-अर्जनक सेतु कोना बनैत अछि, तकर जाँच पाठक-समूहक वास्तविक प्रतिक्रियासँ कएल जा सकैत अछि। ग्रामीण/शहरी, पहिल पीढ़ीक शिक्षार्थी/नियमित पाठक, आ भिन्न आयुवर्गक अनुभव अलग रहि सकैत अछि। एहि सम्भावित विविधताकें मान्यता देब बालसाहित्यक आधुनिक आलोचनाक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता अछि।

आलेखक योगदान मैथिली बालसाहित्यकें उच्च साहित्यिक चर्चा योग्य क्षेत्र मानब अछि। भावी अध्ययनमे अलग-अलग कृतिसँ पर्याप्त उदाहरण, प्रकाशन-वर्ष, लक्षित आयुवर्ग, चित्रांकन आ पाठकीय अभिग्रहणक प्रमाण जोड़ल जाए तँ शैलेन्द्रमोहन झाक बालसाहित्यक विशिष्टता अधिक ठोस ढङ्गमे निर्धारित होएत।

१२. यात्री साहित्यमे युगबोध | मूल पृ. ११४-१२१

‘यात्री साहित्यमे युगबोध’ नामक निबन्ध वैद्यनाथ मिश्र ‘यात्री’क मैथिली रचना आ ओकर सामाजिक चिन्ताक मूल्याङ्कन करैत अछि। आरम्भमे ‘पारो’, ‘नवतुरिया’ आ ‘बलचनमा’ नामक उपन्यास तथा ‘चित्रा’, ‘पत्रहीन नग्न गाछ’ नामक कविता-संग्रहक उल्लेख अछि। लेखक यात्रीक रचनाकें विचार, भाषा आ शिल्पक निकष पर पढ़बैत हुनक जनपक्षधरता आ समाजपरक सरोकारक पक्ष उजागर करैत छथि। (पृ. ११४)

निबन्धक प्रमुख धारणा 'युगबोध' अछि। एहि पदक अर्थ केवल समसामयिक घटनाक नाम गनब नहि, बल्कि रचनाक भीतर विद्यमान वर्गगत सम्बन्ध, शोषणक अनुभव, भाषिक परिवर्तन, सामाजिक चेतना आ मानवीय संघर्षक प्रति संवेदनशीलता बुझब अछि। यात्रीक साहित्यक लोकसम्बद्ध शब्दकायाक महत्त्व एतय अछि जे कविता आ कथा पाठककेँ सामाजिक संरचनाक ठोस वस्तुस्थिति दिस मोड़ैत अछि। लेखकक प्रस्तुति परम्परागत साहित्यिक गौरवसँ अलग सामाजिक प्रश्नक स्पष्ट आग्रह रखैत अछि।

यात्रीक हिन्दी आ मैथिली रचनाजगतक परस्पर सम्बन्ध अध्ययन लेल विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। एके लेखकक भाषानुसार रचनाधर्म, पाठकवर्ग आ विषय-विन्यास बदलि सकैत अछि। लेखमे यात्रीक प्रसिद्धि आ मैथिली लेखनक योगदानक सम्बन्धक उल्लेख पाओल जाइत अछि; एहि तथ्यकेँ व्यापक तुलनात्मक अध्ययनक आधार बनाओल जा सकैत अछि। मुदा दू भाषामे एकसमान विचार उपस्थित भेला सँ शैली, कथावाचक वा भाषिक सांकेतिकता एके होयत, ई पहिने सँ नहि मानल जा सकैत अछि।

प्रगतिशील दृष्टिक परिचर्चामे पाठक जीवनानुभवक सघनता आ कलात्मक संरचनाकेँ बराबर महत्त्व देब आवश्यक अछि। समाजक प्रति प्रतिबद्धता महत्त्वपूर्ण साहित्यिक गुण भऽ सकैत अछि, तथापि कथा-स्थितिक आन्तरिक विरोध, पात्रक बहुआयामीपन, भाषाक व्यञ्जना आ छन्द-ध्वनिक निर्मिति अलग आलोचनात्मक प्रश्न अछि। जँ राजनीतिक आशयकेँ समस्त साहित्यिक अर्थ मानि लेल जाए, तँ रचनाक जटिलता घटि जाइत अछि। एहि कारण 'युगबोध'केँ विचार आ कलाक परस्पर अनिवार्य संवादक रूपमे पढ़ब फलदायक अछि।

एहि आलेखक उपलब्धि मैथिली आधुनिकताक जनोन्मुख स्वरक चिन्हांकन अछि। भावी अनुसन्धाता यात्रीक चुनल उपन्यास/कवितामे पात्र, भाषिक स्तर, कथन-दृष्टि आ पाठकीय प्रभावक पृथक उदाहरणसँ तर्क जाँचि सकैत छथि। एहि प्रकार पुस्तकक निबन्ध व्यापक साहित्येतिहासिक व्याख्याक विश्वसनीय प्रवेशबिन्दु बनैत अछि।

१३. किरणजीक 'सत्य सन्देश' | मूल पृ. १२२-१२८

एहि निबन्धमे काज्चीनाथ झा 'किरण'क साहित्यिक व्यक्तित्व आ 'सत्य सन्देश' पत्रक महत्त्व पर विचार प्रस्तुत भेल अछि। आरम्भमे लेखक किरणजीक कविता, कथा, बालकथा, महाकाव्य, एकांकी, नाटक, उपन्यास, निबन्ध, आलोचना आ पत्रकारितासम्बद्ध विस्तृत कर्मभूमिक उल्लेख

करैत छथि। एहिसँ ‘सत्य सन्देश’केँ केवल पत्रक शीर्षक नहि, मैथिली भाषा-साहित्यक सार्वजनिक विमर्शक एक मंचक रूपमे पढ़बाक दिशा भेटैत अछि। (पृ. १२२-१२३)

पत्रिका-विमर्शमे लेखक सामाजिक प्रश्न, भाषिक चेतना आ सम्पादकीय दृष्टिक महत्त्व पर विशेष बल दैत छथि। पृ. १२५ पर ‘सत्य सन्देश’क लेखनमे मैथिलीक उन्नति आ सामाजिक उत्तरदायित्वसँ सम्बन्धित कथनक चर्चा अछि; एतय सर गंगानाथ झा, स्वामी विवेकानन्द, होमी मोदी आ महावीर प्रसाद द्विवेदीक विचारसन्दर्भ देल गेल अछि। ई समावेश सांस्कृतिक-भाषिक अभियानकेँ व्यापक भारतीय वैचारिक परम्परासँ जोड़बाक चेष्टा देखबैत अछि।

एहि अध्यायक विशेष महत्त्व संपादकीय गद्यकेँ साहित्यिक इतिहासक प्रमाण रूपमे ग्रहण करब अछि। सम्पादकीय लेख तत्कालीन पाठक-समाजसँ संवाद करैत अछि, मत गढ़ैत अछि आ संस्थागत प्रश्नकेँ सार्वजनिक बनबैत अछि। मुदा सम्पादकीयक स्वर, पत्रक प्रकाशनकाल, सम्पादन-संरचना, पाठक-पहुँच आ वास्तविक सामाजिक प्रभाव स्वतंत्र शोधवस्तु अछि। ‘पत्रमे प्रस्तावित’ आ ‘समाजमे कार्यान्वित’ बीच उचित भेद कएल जाए तँ पत्रिकाक महत्त्वक आकलन अधिक प्रमाणसंगत होएत।

मूल निबन्धक तर्कमे मातृभाषा, भाषिक सम्मान आ मिथिलाक शैक्षिक-सांस्कृतिक जीवनक चिन्ता प्रमुख अछि। भाषा-आन्दोलनक इतिहास अध्ययन करैत काल घोषणापरक लेखन आ वास्तविक संस्थागत उपलब्धिक अलग-अलग समयरेखा तैयार करब उपयोगी अछि। पत्रक अंकवार सामग्री, प्रकाशनक अन्तराल, समाचार, विज्ञापन, पत्राचार, पाठकक प्रतिक्रिया आ सम्पादकीय परिवर्तनक अनुक्रम—एहि सभसँ ‘सत्य सन्देश’क सम्यक इतिहास बनि सकैत अछि।

समग्रतः लेखक काञ्चीनाथ झा ‘किरण’केँ साहित्यकार आ सार्वजनिक भाषा-चिन्तकक संयुक्त रूपमे देखबैत छथि। ई अध्याय मैथिली पत्रिका-इतिहास आ आधुनिक भाषिक अस्मिताक अनुसन्धानमे प्रवेशक अवसर दैत अछि। अगिला चरणमे विशिष्ट अंकक कागजी अथवा डिजिटल प्रतिक संग तर्क मिलान करब आवश्यक होयत, जाहिसँ व्यक्तिक प्रतिष्ठा आ पत्रक ऐतिहासिक योगदानक बीच नाप-तौल सम्भव होयत।

१४. प्रतिज्ञापाण्डवः कवि ओ काव्य | मूल पृ. १२९-१४२

बबुआजी झा ‘अज्ञात’क ‘प्रतिज्ञापाण्डव’ पर केन्द्रित ई पुस्तकक साहित्य खण्डक सर्वाधिक विस्तृत विवेचनसभमे सँ एक अछि। लेखक आरम्भमे काव्यक रचनाकारक जीवनवृत्त, पूर्ववर्ती कृतिसभ तथा साहित्य अकादेमी सम्मानक सन्दर्भ दैत छथि। मूल पाठमे ‘प्रतिज्ञापाण्डव’क प्रकाशन-वर्ष १९९५ आ कविक जीवनकाल १९०४–१९९६ बताओल गेल अछि; ई सभ जानकारीकेँ एतय मूल आलेखक विवरण मानि उद्धृत कएल गेल अछि। साहित्य अकादेमीक आधिकारिक सूची मे २००१क मैथिली पुरस्कार एहि कृति आ बबुआजी झा ‘अज्ञात’क नाम दर्ज अछि। (पृ. १२९; अकादेमीक पुरस्कार-सूची)

एहि निबन्धक मूल विषय कवि आ काव्यक परस्पर सम्बन्ध अछि। महाभारत-संबद्ध कथानकक आधार पर आधुनिक मैथिली महाकाव्यक रचना कएल जाए तँ परम्परागत आख्यानक भाषा, आधुनिक नैतिक प्रश्न आ पात्रक भावनात्मक पुनर्संयोजन एकेसाथ सोझाँ अबैत अछि। ग्रन्थकारक विश्लेषणमे कविक जीवनानुभव, शास्त्रीय संस्कार, भाषा-सम्पदा आ प्रतिज्ञाक कथा-नैतिक महत्त्वकेँ जोड़बाक प्रयास देखाइत अछि। एहि सन्दर्भमे काव्यकेँ महज प्राचीन कथाक पुनर्कथन मानब अपर्याप्त होएत।

‘प्रतिज्ञा’ नायकक निजी वचनमात्र नहि, सार्वजनिक दायित्व, सम्बन्धक तनाव आ सामाजिक आचरणक नैतिक निकषक रूपमे सेहो व्याख्यायित भऽ सकैत अछि। एहि सम्भावित अर्थक्षेत्रक पाठमूलक परीक्षण करैत काल किन घटनामे प्रतिज्ञाक उल्लेख अछि, पात्रक निर्णयकेँ कथावाचक कोन अर्थ दैत अछि आ काव्यक अन्तिम निष्कर्ष की होइत अछि—एहि प्रश्नसभकेँ अलग रखब चाही। लेखकक प्रशंसापरक मूल्याङ्कनकेँ पाठक स्वयंसिद्ध अन्तिम निर्णय नहि, मूल महाकाव्यपाठ दिस पठेबाक आलोचनात्मक आमन्त्रण मानि पढ़ि सकैत छथि।

पृ. १२९–१४२क विस्तार ई संकेत दैत अछि जे लेखक अन्य लघु आलेखक अपेक्षा एतय जीवनी, रचनाक स्रोत, पदावली आ आलोचनात्मक मूल्याङ्कनक लेल बेसी स्थान देलनि अछि। प्रशंसाक भाषाक संग प्रमाणक प्रकारपर ध्यान देब आवश्यक अछि: कविक जन्म-वर्ष वा प्रकाशन-वर्ष ग्रन्थ-सूचनासँ पुष्ट होइत अछि, काव्यक सौन्दर्य पाठ-विश्लेषणसँ, आ समाजपर प्रभाव पाठक-इतिहाससँ। एहि भिन्न-भिन्न कसौटीक मिश्रण बिनु भेद केलासँ महाकाव्यक अकादमिक मूल्याङ्कन एकपक्षीय भऽ सकैत अछि।

महाकाव्यक आलोचना लेल कथा-विन्यास, सर्ग-संरचना, छन्द, संस्कृत/मैथिली शब्दप्रवाह, संवाद, स्त्रीपात्रक भूमिका तथा पौराणिक स्रोतसँ भिन्नताक व्यवस्थित तुलनात्मक सूची विशेष उपयोगी अछि। एहि प्रकारक विश्लेषण कृतिमे मौलिकता केतए अछि आ परम्परा केतए, से देखबैत अछि। निबन्धक उपयोगिता एहि शोधक दिशा चिन्हित करबामे अछि; पूर्ण पाठालोचनाक स्थान पर केवल गौरवगाथा मानि लेब ओकर महत्त्व घटा देत।

समग्रतः ‘प्रतिज्ञापाण्डव’ सम्बन्धी आलेख साहित्यकार-जीवनी आ ग्रन्थविवेचनकेँ एक सूत्रमे आनैत अछि। पुस्तकबाह्य पुष्ट कएल जा सकैत २००१क सम्मान एहि कृतिको मैथिली साहित्येतिहासमे सुस्पष्ट स्थान दैत अछि; मुदा सम्मान अपनेआप सौन्दर्य-निर्णयक अन्तिम प्रमाण नहि। एतय विवेचित काव्यक शिल्प आ प्रतिज्ञाक नैतिक प्रश्नक स्वतन्त्र आलोचना—यही आगाँक शोधक महत्त्वपूर्ण दिशा अछि।

तेसर खण्ड: शब्द-सम्पदा

१५. बँसकरम सम्बन्धी शब्दावली | मूल पृ. १४५–१६०

अन्तिम खण्ड पुस्तकक विषयगत स्वरूपकेँ निर्णायक रूपेँ विस्तार दैत अछि। ‘बँसकरम सम्बन्धी शब्दावली’क आरम्भ भारतीय शब्दब्रह्मक धारणा आ भाषिक सम्पदाक सांस्कृतिक महत्त्वक चर्चासँ होइत अछि। लेखक कहैत छथि जे शब्दक संकलन, व्याख्या आ अर्थनिर्णय भाषा-अध्ययनक आवश्यक प्रक्रिया अछि, कारण समाजक दैनिक श्रमक भीतर असंख्य अर्थविशेषक शब्द जन्मैत अछि आ उपयोग बदललासँ ओझल सेहो भऽ सकैत अछि। एहि दृष्टिसँ व्यवसायगत शब्द केवल वस्तुक नाम नहि, कार्यक विधि, साधन, हस्तकौशल आ सामाजिक अनुभवक संचय अछि। (पृ. १४५)

शब्दावलीक संरचना केवल वर्णक्रमक सूची नहि अछि। पाठमे बाँसक प्रकार, शारीरिक भाग, काटब-छाँटबक विधि, औजार, आधनिर्मित सामग्री, टोकरी-भाण्ड-जैहन उत्पादन तथा कार्यावस्थाक सूक्ष्म भेदक नाम दऽ कऽ अर्थ स्पष्ट कएल गेल अछि। एहि कारण एके सामान्य वस्तु लेल अनेक प्रसंग-विशेषक पद भेटैत अछि। जँ शब्दक उच्चारणक एकाधिक रूप अछि तँ लेखक विकल्परूपसँ ओकर उल्लेख करैत छथि। एहि परम्पराक मूल्य ई अछि जे व्यावसायिक समुदायक भीतर स्पष्ट अर्थविभाजन लिखित भाषिक संग्रहमे दृश्य भऽ जाइत अछि। (पृ. १४६–१५९)

पृ. १५२ पर 'बँसकरमक उत्पादन सम्बन्धी शब्दावली' नामसँ अलग उपविभाग प्रारम्भ होइत अछि। ओहि भागमे बँसीसँ बनैत गृहस्थी उपयोगक सामान, बखारी-जैहन भण्डारण-रूप, कूच/कूचीसँ सम्बन्धित काम, लघु आकारभेद आ निर्माण-कौशलक विशिष्ट पदक विवेचन अछि। ई सामग्री दस्तकारीक कार्यशास्त्र समान महत्त्वपूर्ण अछि। शब्दक अर्थ कतेको बेर वस्तुक आकार मात्र नहि, ओकर उपयोग, बनाबयक चरण आ कुशल श्रमिकक दृष्टिसँ निर्धारित होइत अछि। एहि कारण शब्दकोशक सामान्य एक-पंक्तिक समानार्थी विवरणक तुलना मे व्याख्यात्मक विवेचन बेसी उपयोगी ठहरैत अछि।

पृ. १५९ धरि पहुँचैत स्थानीय उपकरण, बाँसक पट्टी, बन्धन, जोड़ आ फिनिशिंगक तकनीकी पदक विवेचन चलैत अछि। वस्तुक रूप-परिवर्तनक संग शब्दो बदलैत अछि; एतय प्रक्रिया-केन्द्रित अर्थवर्गीकरणक सम्भावना स्पष्ट होइत अछि। उदाहरणतः कटाइक पहिल रूप, महीन पट्टी, बुनाइक अलग-अलग अवस्था आ तयार वस्तु लेल प्रयुक्त अलग पदक क्रमक तुलना कएल जाए तँ शब्दसम्पदा माने कारीगरक कार्यज्ञानक संरचना पाओल जाइत अछि। एकटा मानक शब्दकोश एहन रूपविभेदकें सहजहि समेटि नहि सकैत अछि; एहि कारण क्षेत्रविशेषक व्याख्यात्मक कोश महत्त्वपूर्ण अछि।

शब्दवैज्ञानिक दृष्टिसँ एहि खण्डक आलोचना करैत काल तीन भेद आवश्यक अछि: उच्चरित रूप, अर्थभेद आ वस्तुगत सन्दर्भ। समान वस्तुक अलग नाम वास्तवमे भौगोलिक बोलीभेद अछि, पीढ़ीगत रूपान्तर अछि, कि शिल्पक अलग अवस्थाक संकेत, से बिना क्षेत्रीय अन्तर्वाता केने निश्चित नहि कएल जा सकैत अछि। एही प्रकार एकर हिन्दी अथवा संस्कृत समानार्थी दस देबासँ स्थानीय पदक ध्वनि, लिंग, वचन, कारक-प्रयोग आ व्यावसायिक अर्थक पूर्ण जानकारी नहि भेटैत। लेखकक संग्रह एहि सबपर भविष्यक भाषावैज्ञानिक कार्यक आधार बनि सकैत अछि।

एहि शब्दावलीक महत्त्व समाजशास्त्रीय दृष्टिँ सेहो गहिर अछि। बाँसक काम करनिहार समुदायकें ज्ञान-सृजनक सक्रिय धारक मानब, ओहि ज्ञानकें लिखित भाषाक मुख्य सम्पदाक अङ्ग बनायब, साहित्यक केन्द्र आ परिधिक सम्बन्ध पर पुनर्विचार करबैत अछि। उच्च साहित्यिक कोशमे नहि भेटनिहार पद एहि व्यवसायमे अत्यन्त आवश्यक होइत अछि। शब्दक

सामाजिक प्रतिष्ठा ओकर उपयोगकर्ताक प्रतिष्ठाले अलग नहि; एहि अर्थमे व्यवसायगत शब्दसंग्रह भाषिक सम्मानक प्रश्न सेहो उठबैत अछि।

आगाँक विस्तारित अनुसन्धानमे प्रत्येक शब्द लेल देवनागरीक सामान्यीकृत मूलरूप, स्थानीय उच्चारण, प्रयोजन-परिभाषा, प्रयुक्त गाम/जिला, वस्तुक चित्र, प्रक्रिया-क्रम, उदाहरण-वाक्य, व्याकरणिक लक्षण, वैकल्पिक नाम, रूपान्तर आ अन्तर्वार्ताकारक तिथि अंकित कएल जाए तँ ई खण्ड डिजिटल भाषिक दस्तावेजीकरणक आधार बनि सकैत अछि। एतय एकटा महत्वपूर्ण नैतिक प्रश्न सेहो अछि: कारीगरक ज्ञानकेँ संकलित करैत समय ओहि समुदायकेँ नाम, श्रेय आ सामग्री पर पहुँच देब आवश्यक होयत।

समग्र पोथीमे ‘बँसकरम’क शब्दसंग्रह मूलभूत अनुसंधान-संकेत दैत अछि: साहित्यिक भाषा केवल ग्रन्थक शब्दसँ नहि, श्रमक अनुभवसँ सेहो बनैत अछि। लोकखण्डमे जे समाजक गीत आ गाथाक रूपमे परिचय भेटल छल, अन्तिम खण्डमे ओएह समाजक हस्तकौशल आ अर्थभाषा बनि सोझाँ अबैत अछि। एहि दूनूक जोड़ पुस्तकक सर्वाधिक विशिष्ट वैचारिक उपलब्धिसभमे सँ एक अछि। (पृ. १४५-१६०)

समेकित आलोचनात्मक विवेचन

१. लोकसाहित्यसँ भाषाविज्ञान धरि: समग्र संकलनक तर्क

पोथीक तीन-खण्डीय बनावट आलोचनाक दृष्टिँ आकस्मिक नहि। पहिल खण्ड जखन लोकजीवनक कथा, गीत, पर्व आ गाथाकेँ अर्थ दैत अछि, दोसर खण्ड लिखित रचनाकार, ग्रन्थ आ पत्रिकारूप सार्वजनिक साहित्यक विश्लेषण करैत अछि। तेसर खण्डमे लोकजीवनक श्रमविशेषक शब्दावलीकेँ भाषा-ज्ञानक संसाधन मानल जाइत अछि। एहि क्रमसँ संस्कृति, रचना आ भाषा बीच सुस्पष्ट एकटा सम्बन्ध उभरैत अछि: समाज प्रतीक रचैत अछि; साहित्य ओकर पुनर्गठन करैत अछि; शब्दसम्पदा ओकर सूक्ष्म अनुभवक नामकरण करैत अछि।

तथापि ग्रन्थक एकता केवल लेखकक विस्तृत रुचि थिक, ई कहब पर्याप्त नहि। अलंकार-विश्लेषणक कसौटी, लोकगाथाक सामाजिक पठन आ पारिभाषिक शब्दावलीक अभिलेखनक कसौटी अलग अछि। एहि विभिन्न पद्धतिक सहअस्तित्व ग्रन्थक शक्ति अछि, मुदा पाठकसँ प्रत्येक अध्यायक प्रमाणक प्रकृति बदलि-बदलि पढ़बाक अपेक्षा सेहो करैत अछि। एक ठाम

गीतक पद साक्ष्य अछि, दोसर ठाम प्रकाशित ग्रन्थक कथानक, तेसर ठाम औजार वा उत्पादक नाम। प्रमाणक एहि विविधताकेँ स्पष्ट कएलासँ समग्र पुस्तकक अध्ययन अधिक न्यायसंगत होइत अछि।

ग्रन्थक शीर्षकमे ‘लोक’, ‘साहित्य’ आ ‘शब्द-सम्पदा’क त्रयी संक्षेपमे एकटा सामाजिक भाषादर्शन बनबैत अछि। लोक बिना भाषा-समाज अधूरा, साहित्य बिना अर्थक कलात्मक विस्तार सीमित आ दस्तकारीक शब्द बिना जीवनक तकनीकी अनुभव अदृश्य रहि जाइत अछि। एहि अर्थमे संग्रहक विशिष्टता एक लेखनविधाक भीतर नहि, अलग-अलग विधाक बीच संवादक सम्भावनामे अछि।

२. प्रमाण, स्रोत आ व्याख्याक अन्तर

आलेखसभक अपन-अपन प्रकृति विचारक समुचित मूलाङ्कन लेल ‘स्रोत’ आ ‘व्याख्या’क भेद राखब आवश्यक अछि। विद्यापतिक उगना-आख्यान लोकस्मृतिक स्रोत अछि; ओ ऐतिहासिक घटना प्रमाणित करबाक प्रत्यक्ष अभिलेख नहि। दीना-भट्टीक गीत मुसहर समुदायसँ सम्बद्ध सामाजिक अनुभवक साहित्यिक साक्ष्य अछि, मुदा प्रत्येक प्रसंगक ऐतिहासिक काल स्वतन्त्र जाँच माँगैत अछि। सामा-चकेबाक प्रदर्शन लोकनाट्यक पाठसँ अधिक व्यापक सामाजिक क्रिया थिक। ‘प्रतिज्ञापाण्डव’क मूल्य-निर्णयक लेल महाकाव्यक वास्तविक रचनाविधान देखब पड़ैत अछि।

लेखकक आलोचनामे भावानुभूति आ पाठक सम्मानक भाव स्पष्ट अछि। एहिसँ उपेक्षित कृति आ परम्पराकेँ दृश्यता भेटैत अछि। मुदा शोधमूलक आलोचनाक कसौटी पर प्रशंसाक दावाक आधार, चयनक मानदण्ड आ वैकल्पिक व्याख्याक सम्भावना प्रत्येक स्थले स्पष्ट होयबाक चाही। कोनो काव्यक सराहना वा कोनो लोकगाथाक सांस्कृतिक गरिमा एकर आलोचनात्मक परीक्षणक विकल्प नहि। उलटे सशक्त आलोचना ओहि कृतिक प्रति अधिक गम्भीर सम्मानक प्रमाण थिक।

पुस्तकक अनेक आलेख एक समयक लेखकीय रुचि, संकलन-परिस्थिति आ उपलब्ध सन्दर्भक द्योतक अछि। वर्तमान समयमे प्रकाशित ग्रन्थसूची, हस्तलिखित सामग्री, ध्वनि-अभिलेख आ डिजिटल स्रोतक सहज उपलब्धता प्रश्नक नव उत्तर देबाक अवसर दैत अछि। तथापि पिछला पाठकेँ आधुनिक साधन उपलब्ध न रहबाक आधार पर सरलीकृत रूपसँ खारिज करब उचित

नहि; ओकर समकालीन उपलब्धि आ अद्यतन अनुसंधानक आवश्यकता अलग-अलग मापब अधिक न्यायपूर्ण अछि।

३. जाति, श्रम आ भाषा: उपेक्षित ज्ञानक मान्यता

दीना-भट्टी आ बँसकरम शब्दावलीकेँ एक-संग पढ़ब पोथीक महत्वपूर्ण सम्भावना खोलैत अछि। पहिल अध्याय श्रमिक समुदायक वीरगाथा आ सामूहिक स्मृतिक प्रसंग उपस्थित करैत अछि; दोसर व्यावसायिक ज्ञानक सूक्ष्म भाषिक वर्गीकरण सोझाँ अनैत अछि। दुनू बतबैत अछि जे इतिहासक पाठ केवल राजदरबार अथवा महाकविक कथनमे सुरक्षित नहि, सामान्य श्रमिक कथन, गीत आ औजारक भाषामे सेहो निहित रहैत अछि।

श्रमक शब्दकोश सामाजिक पदानुक्रमक दस्तावेज सेहो भऽ सकैत अछि। कोन वस्तु बनाबयवाला समुदाय अपना कामक बारीक विभागकेँ की कहैत अछि, कोन नाम बाहरी समाज देलक, आ कोन पद समयक संग हरा रहल अछि—एहि प्रश्नसभमे भाषिक आ सामाजिक इतिहास एकेसाथ उपस्थित अछि। श्रमिक समुदायकेँ ‘लोकसामग्री’क निष्क्रिय स्रोत नहि, स्वामित्वयुक्त ज्ञानधारक मानल जाए तँ भविष्यक अनुसन्धान अधिक नैतिक आ विश्वसनीय बनत।

४. स्त्रीस्वर, सांस्कृतिक अनुष्ठान आ सामाजिक आलोचना

सामा-चकेबा, गहबर गीत, नारी शिक्षा आ ‘राधाविरह’क अलग-अलग पाठ एकत्र करब स्त्रीस्थितिक बहुस्तरीय चित्र देखबैत अछि। लोकपर्वमे स्त्रीक सांस्कृतिक सहभागिता, गीतमे स्त्रीक सामूहिक स्वर, आधुनिक कथामे शिक्षाक आकांक्षा तथा भक्तिकाव्यमे राधाक प्रेम-शक्ति—एहि चारि सन्दर्भमे ‘स्त्री’ एकरूप पात्र नहि छथि। एकेक विधामे अनुभवक भाषा, सामाजिक प्रतिबन्ध आ अभिव्यक्तिक स्थिति बदलैत अछि।

एहि विषयकेँ केवल देवी-पूजा अथवा आदर्श स्त्रीक स्तुति धरि सीमित नहि रखल जाए। देवीक उच्च प्रतिष्ठा आ जीवित स्त्रीक शिक्षासम्बन्धी अवसरमे अन्तर होयब सम्भव अछि; लोकगीतक गेय स्वतन्त्रता आ परिवारक निर्णयसत्ता सेहो एक नहि। एहन विरोधाभासक अध्ययन एहि पुस्तकसँ प्रेरित महत्त्वपूर्ण अनुसन्धान बनि सकैत अछि। एहि रूपमे पुस्तकक अलग-अलग

आलेखक अन्तर्सम्बन्ध पाठककेँ समाजक आदर्श आ व्यवहारक दूरी पढ़बाक सामर्थ्य दैत अछि।

५. मैथिली आलोचनाक भाषा आ शैली

लेखकक मैथिली गद्य शास्त्रीय परिभाषा, लोकप्रचलित पद आ साहित्यिक विवेचनक समावेश करैत अछि। लोकविषयक आलेखमे ‘गाथा’, ‘गीत’, ‘समन्वय’ आदिक वर्णनात्मक प्रयोग आ साहित्य-विषयक आलेखमे ‘अलंकार’, ‘रस’, ‘युगबोध’, ‘भक्ति’ आदिक विश्लेषणात्मक प्रयोग अलग पहचान रखैत अछि। अन्तिम शब्दावली एही भाषिक क्षितिजकेँ औजार, आकृति आ उत्पादनक नाम धरि विस्तार दैत अछि। एहि प्रकार पुस्तकक भाषा विषयक अनुसार रूप बदलैत अछि; ई शैलीगत विविधता निबन्ध-संग्रहक वास्तविक विशेषता अछि।

अनेक स्थले संस्कृतनिष्ठ दार्शनिक शब्दप्रवाह आ मैथिलीक सहज कथात्मक वाक्य एकसाथ भेटैत अछि। एहि मिलनक लाभ तात्त्विक सूक्ष्मता अछि, मुदा पाठकपर अर्थभार बढ़यबाक सम्भावना सेहो अछि। प्रकाशित सम्पादनमे पादटिप्पणी, कठिन पदक संक्षिप्त शब्दार्थ आ सन्दर्भ-सूची जोड़लासँ पाठकक पहुँच बढ़ि सकैत अछि। अर्थनिष्ठ सुधारक नाम पर लोकपद अथवा उद्धृत गीतक मौलिक उच्चारण बदलि देब उचित नहि; शोधक सुलभता आ बोलीक प्रामाणिकता दुनू महत्त्वपूर्ण अछि।

पद्धतिगत उपलब्धि आ अनुसन्धानी प्रश्न

उपलब्धि १ — विषयक विस्तार। ग्रन्थ लोकविधा, विशिष्ट साहित्यिक पाठ, रचनाकार-समालोचना, भाषा-आन्दोलन आ पारिभाषिक शब्दकोशकेँ एके पुस्तकमे अध्ययनक योग्य बनबैत अछि। एहि कारण संकलनक सांस्कृतिक दायरा एकल लेखक-जीवनीसँ बहु व्यापक अछि।

उपलब्धि २ — पाठक निकटता। लोकगाथा आ गीतविषयक अध्यायमे गीत-पाठक सन्दर्भ लेखकक विवेचनकेँ केवल अमूर्त विचार नहि रखि विशिष्ट भाषिक सामग्रीसँ जोड़ैत अछि। अध्येता एहि आधार पर मूल पाठ दिस लौटि अपन व्याख्या जाँचि सकैत छथि।

उपलब्धि ३ — भाषिक संरक्षण। बँसकरम सम्बन्धी तकनीकी पदक विवेचन समाजक हस्तकौशल आ मैथिलीक समृद्ध अर्थभेदक दस्तावेजीकरणक दिशा खोलैत अछि। स्थानीय ज्ञानक सम्मान एकरा विशिष्ट बनबैत अछि।

प्रश्न १ — मौखिक स्रोतक विवरण। गीत आ गाथाक पाठसँ जखन व्यापक सामाजिक निष्कर्ष निकालल जाए, तँ गायन-स्थल, संकलन-तिथि, गायक/वाचक, अवसर आ पाठान्तरक विवरण अनुसन्धानकें सुदृढ़ करैत अछि।

प्रश्न २ — ऐतिहासिक दावाक पुष्टिकरण। जीवनी, कृति-प्रकाशनक वर्ष, ऐतिहासिक आख्यान आ पुरस्कारक प्रसंग साहित्यिक तर्कसँ अलग दस्तावेजी आधार माँगैत अछि। जतय सम्भव होए, प्रकाशकक पृष्ठ आ संस्थाक आधिकारिक सूचीसँ मिलान आवश्यक अछि।

प्रश्न ३ — सिद्धान्त आ पाठक सन्तुलन। अलंकार, शाक्त तत्त्व, युगबोध अथवा राष्ट्रीय समन्वय जकाँ श्रेणी पूर्वनिर्धारित होइत अछि; ओकरा निष्कर्ष बनयबाक पहिने कृतिभित्रक समर्थक आ विरोधी दूनू उदाहरण देखब उचित अछि।

प्रश्न ४ — समाजक प्रतिनिधित्व। लोकजीवनक अध्ययनमे स्त्री, जाति, श्रम, समुदाय आ पीढ़ीगत अन्तरक स्वरकें एक सामूहिक मिथिला-स्वरमे विलीन नहि कएल जाए। साझा परम्पराक भीतर विविधताक मान्यता इतिहासक सूक्ष्मता बढ़बैत अछि।

अन्तिम मूल्याङ्कन

‘लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा’कें एकर तीन विशिष्ट योगदानक कारण गम्भीरतासँ पढ़बाक आवश्यकता अछि। पहिल, ई मैथिली लोकविधाक अध्ययनकें साहित्यिक आलोचनाक उचित विषय मानैत अछि। दोसर, आधुनिक आ परम्परागत रचनाकारक कृतिसभकें मिथिलाक व्यापक सांस्कृतिक परिवेशसँ जोड़ैत अछि। तेसर, बँसकरम-जकाँ विशिष्ट श्रमज्ञानक शब्दावलीकें मैथिलीक आधारभूत सम्पदा मानबाक आग्रह करैत अछि। ई तीनू योगदान एके दिशामे संकेत करैत अछि: भाषा ओ साहित्यक इतिहास समाजक बहुस्तरीय अनुभव बिनु लिखल नहि जा सकैत।

समीक्षाक दृष्टिँ पुस्तकक महत्त्व ओकर प्रत्येक प्रतिपादनकें विवादातीत सत्य मानबामे नहि, बल्कि अनुसन्धानक अनेक प्रश्नक ईमानदार शुरुआतक रूपमे अछि। मिथक आ इतिहासक

अन्तर, लोकगीतक प्रतिनिधित्व, गाथाक सामाजिक स्मृति, स्त्री-प्रश्नक बहुस्तरीयता, शास्त्रीय सिद्धान्तक लागू होयबाक सीमा, रचनाकार-विशेषक सन्तुलित मूल्याङ्कन तथा तकनीकी शब्दक क्षेत्रीय प्रामाणिकता—एहि सभ विषयमे आगाँक जाँचक पर्याप्त सम्भावना अछि। पुस्तकक उपलब्धि तखन सर्वाधिक स्पष्ट होइत अछि जखन ओकरा न प्रशंसामात्रक वस्तु बनाओल जाए, न कठोर प्रामाणिकताको एके सूत्रसँ नापल जाए।

एहि पोथीक पाठक हेतु सर्वाधिक उपयोगी दृष्टि ई अछि जे साहित्यक उत्कृष्टता, लोकजीवनक गरिमा आ भाषाक ज्ञानरूप एक-दोसराकें समृद्ध करैत अछि, मुदा एक-दोसराक विकल्प नहि अछि। मिथिला-सम्बन्धी सांस्कृतिक अनुसन्धान, मैथिली आलोचनाक इतिहास, लोकनाट्य-लोकगीतक अभिलेखन आ स्थानीय पारिभाषिक कोश-निर्माणक अध्येता लेल ई संग्रह बहु-विषयी प्रश्न उठेबाक उपयुक्त आधार प्रस्तुत करैत अछि।

अध्याय 08 / २००९

मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायिक शब्दावली

डॉ. योगानन्द झाक कृतिक आलोचनात्मक विवेचन

१. ग्रन्थ-परिचय आ रचनात्मक संरचना

‘मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायिक शब्दावली’ नाममे तीन परस्पर सम्बद्ध अध्ययन-विषय अछि—मैथिली भाषा, परम्परागत उत्पादन-जीवन आ कार्यसमुदायसँ जुड़ल विशिष्ट शब्दसम्पदा। ई केवल पर्यायवाची शब्दक संग्रह नहि, ग्रामीण अर्थव्यवस्थाक सामग्री, श्रम-विभाजन, शिल्प-विधि आ स्थानीय अनुभवक भाषिक विन्यासक अध्ययन अछि। डॉ. योगानन्द झाक ई ग्रन्थ मिथिला रिसर्च सोसाइटी, दरभंगासँ २००९ मे प्रथम संस्करणक रूपमे प्रकाशित भेल।

ग्रन्थमे “अथातो शब्द जिज्ञासा” (पृ. ५), “भूमिका” (पृ. ४१), “विषय-सूची” (पृ. ४७), “संकेत-सूची” (पृ. ५०), “विषय-प्रवेश” (पृ. ५१), प्रथम अध्याय (पृ. ५५), द्वितीय (पृ. ६५), तृतीय (पृ. १३३), चतुर्थ (पृ. १९५), पंचम (पृ. २४३), षष्ठ (पृ. ३०१), सप्तम (पृ. ३६३), “उपसंहार” (पृ. ३९४) आ “परिशिष्ट” (पृ. ३९८ सँ) अछि। “अधीत ग्रन्थक सूची” पृ. ४०४ सँ आरम्भ होइत अछि। ई

क्रम सामाजिक पृष्ठभूमिसँ वस्तुगत शब्दसंग्रह आ भाषातात्त्विक विवेचन धरि विचारक विस्तार देखबैत अछि।

२. अथातो शब्द जिज्ञासा: कोश-निर्माणक उद्देश्य (पृ. ५ सँ)

आरम्भिक खण्डमे शब्द-प्राप्ति, क्षेत्रगत जानकारी आ भाषिक सामग्रीक संरक्षणक प्रश्न मुख्य अछि। शब्द जिज्ञासाक अर्थ एतय शब्दक केवल वर्तनी नहि, ओकर प्रयोजन, अर्थ, प्रयोग-परिस्थिति आ लोकक जीवन-ज्ञानक खोज थिक। ग्रन्थमे विस्तृत व्यावसायिक शब्दसंग्रहक प्रति लेखकक आग्रह एही कारण महत्वपूर्ण अछि जे लिखित साहित्यक बाहर जीवित बहुतो तकनीकी शब्द समाजक व्यवहारमे संरक्षित रहैत अछि।

कुनो व्यवसायसँ जुड़ल शब्दक अर्थ प्रायः सामान्य शब्दकोशक परिभाषासँ पूरा नहि खुलैत। उदाहरणार्थ काठक पदार्थ, ओकर विभिन्न अंश, गढ़बाक प्रक्रिया, उपकरणक आकार, तैयार वस्तुक उपयोग आ कामक दोष—ई सभ अलग-अलग शब्द-समूह बनबैत अछि। एहि दृष्टिँ लेखकक चयन क्षेत्रीय शब्द-संग्रहकें भाषावैज्ञानिक आ लोकजीवन-अनुसन्धानक साझा आधार बनबैत अछि। तथापि कोशमे शब्दक क्षेत्र, वक्ता, संकलन-काल आ भिन्न उच्चारण स्पष्ट रूपसँ अंकित होयब भविष्यक आलोचनात्मक संस्करण लेल अत्यन्त उपयोगी रहत।

३. भूमिका, संकेत-सूची आ विषय-प्रवेश (पृ. ४१-५४)

भूमिकामे सामाजिक व्यवहार आ भाषिक इकाईक बीच सम्बन्ध स्थापित होइत अछि। विषय-प्रवेशक मूल प्रश्न ई अछि जे व्यवसायक ऐतिहासिक परिचय बिना ओहि व्यवसायमे प्रचलित शब्दक अर्थक उचित व्याख्या कठिन अछि। मैथिलीक जनपदीय रूप, तकनीकी शब्द आ मौखिक ज्ञानक परम्परा एक-दोसरसँ अलग नहि कएल जा सकैत।

संकेत-सूची कोशक उपयोगक लेल अनिवार्य औजार अछि, किएक तँ संक्षेप, ध्वनि-रूप, अर्थ-परिवर्तन अथवा सन्दर्भ-निर्देश बिना पाठक कतेको प्रविष्टिक निर्णय नहि कऽ सकत। शोध-सम्पादनक दृष्टिसँ प्रत्येक संकेतक एकरूप व्याख्या, समान भाषिक रूपक पारस्परिक सन्दर्भ आ प्राथमिक प्रमाणक पहचान कोशक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

संकलनक विस्तार आ सीमाबोध

मूल पुस्तकक पृ. ५४ पर लेखक स्वयं स्वीकार करैत छथि जे मैथिलीक व्यवसायिक शब्दावलीक पूर्ण, व्यापक संग्रह एकहि अनुसन्धाने सम्भव नहि भेल अछि। ओ अनेक पेशागत क्रिया, औजार आ उत्पादन-सामग्रीक नाम छूटि गेल होयबाक सम्भावना स्पष्ट करैत छथि। एहि स्वीकृतिकेँ शोधग्रन्थक दुर्बलताक चिह्न मानि उपेक्षित करब उचित नहि; एकरा क्षेत्राधारित शब्द-संग्रहक स्वतःस्फूर्त सीमाज्ञानक रूपमे पढ़बाक चाही। मुदा शोधार्थी लेल एकर ठोस परिणाम अछि—एहि पोथीक सामग्री 'उपलब्ध संग्रह' थिक, समस्त मिथिलाक व्यवसायिक शब्दसम्पदाक अन्तिम आ पूर्ण सूची नहि।

लेखकक उपक्रम बुझबाक लेल तीन प्रश्न महत्वपूर्ण अछि: कोन वस्तु अथवा प्रक्रिया समाजमे प्रचलित छल; कारीगर ओकरा की कहैत छलाह; आ ओहि पदक स्थानीय अथवा ऐतिहासिक अर्थ की छल? पहिल छओ अध्यायमे वस्तु आ कार्यक शब्दवैभव अछि, जखन कि सातम अध्याय व्युत्पत्ति, ध्वनि, अर्थ-विस्तार आ मानकीकरणक विवेचन द्वारा ओहि सामग्रीकेँ भाषावैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य दैत अछि।

पुस्तकक पृ. ५५ पर लेखक 'परम्परा' केँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत मान्यता आ व्यवहारसँ जोड़ि परिभाषित करैत छथि, तथा 'व्यवसाय' केँ काम, शिल्प, जीविकोपार्जन आ कौशलसँ सम्बद्ध करैत छथि। एहि परिभाषामे शब्दक अर्थ उत्पादनक सामाजिक अभ्याससँ बनैत अछि। एकरा केवल 'जातिक पेशा' कहि समेटि देलापर औजारक ज्ञान, पदार्थक चयन, वस्तुक उपयोग आ श्रमक दक्षता सभ गुण भऽ जाएत। शब्द-संग्रहक महत्त्व एतय 'नामकेँ जीवित प्रक्रिया संग देखब' मे निहित अछि।

शब्दसंग्रहक स्रोत आ प्रमाण

पुस्तकक पृ. ५४ पर सन्दर्भ-निर्देश आ पृ. ४०४ सँ “अधीत ग्रन्थक सूची” साहित्यिक, भाषावैज्ञानिक आ लोकसाहित्यिक स्रोतक महत्त्व स्पष्ट करैत अछि। साहित्यिक उद्धरण, लोकबोलीक शब्द, क्षेत्रीय उच्चारण आ लेखकक व्याख्या अलग-अलग प्रकृतिक प्रमाण छथि। प्रकाशित ग्रन्थमे कोनो शब्दक ऐतिहासिक उल्लेख भेटब आ वर्तमान व्यवहारमे ओकर प्रचलन सिद्ध होयब एक्के बात नहि। ई भेद कोशीय अर्थनिर्णयक विश्वसनीयताक लेल आवश्यक अछि।

४. प्रथम अध्याय: मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायिक पृष्ठभूमि (पृ. ५५–६४)

ई अध्याय कोशक सामाजिक-ऐतिहासिक आधार बनबैत अछि। “परम्परा”, “व्यवसाय”, “पारम्परिक जातीय व्यवसाय”, “मिथिलामे जातीय व्यवसायिक परम्परा”, शिष्ट साहित्य आ पारम्परिक लोकसाहित्यक साक्ष्य, मिथिलाक व्यवसायिक वर्गीकरण तथा सामाजिक जीवन एवं व्यवसायिक जाति—ई उपविषय विषय-सूचीमे उल्लिखित अछि। एतय मूलभूत बिन्दु ई जे कामक नाम, ओकर संगठन आ ओकर शब्द-विधान सांस्कृतिक परिवेशमे विकसित होइत अछि।

शिष्ट साहित्य आ लोकसाहित्यकें संग पढ़ब उपयोगी अछि। साहित्यक उल्लेख समाजमे शिल्पक सांकेतिक छवि देखबैत अछि; लोकगीत, कहबी आ व्यवहारगत प्रयोग कार्य-विधिक अधिक समीप होइत अछि। मुदा साहित्यिक संकेतकें स्वतः वास्तविक उत्पादन-विधिक निर्विवाद इतिहास नहि मानबाक चाही। सामाजिक श्रेणी आ कौशलक परम्परा बीच सम्बन्धक विश्लेषणमे आर्थिक परिवर्तन, कामक पारिवारिक हस्तान्तरण, प्रशिक्षण आ सामाजिक गतिशीलता महत्वपूर्ण अछि।

परम्परागत व्यवसायकें पढ़बाक चार दृष्टि

पहिल दृष्टि ऐतिहासिक थिक। शब्दक प्राचीनताक संकेत लिखित साहित्यमे भेटि सकैत अछि, मुदा साहित्यमे उल्लेख आ प्रत्यक्ष ऐतिहासिक व्यवहार बराबर नहि। दोसर दृष्टि मानवशास्त्रीय थिक: कार्यसमूहक सामूहिक नियम, संप्रेषण, श्रम-विभाजन आ हुनरक प्रसारण। तेसर अर्थवैज्ञानिक थिक: कोन शब्द वस्तु, कोन प्रक्रिया, कोन स्थिति, कोन गुण-दोष आ कोन सामाजिक भूमिका सूचित करैत अछि। चारिम दृष्टि आलोचनात्मक थिक: जाति-आधारित वर्गीकरण वास्तविक जीवनक सभ साझा श्रम आ पेशा-परिवर्तनकें कतेक समेटैत अछि? एहि प्रश्न सभकें ग्रन्थक अन्तर्वस्तुक व्याख्या मे संग राखब आवश्यक अछि।

परम्परा आ स्थिरता एक वस्तु नहि

पारम्परिक काजक ज्ञान पीढ़ी-दर-पीढ़ी जाइत अछि, मुदा उपकरण, बाजारी माँग आ पदार्थक उपलब्धताक कारण शब्द बदलैत रहैत अछि। लेखक बादक उपसंहारमे नवा वैज्ञानिक औजार, व्यवसाय-परिवर्तन आ शब्द-लोपक चर्चा करैत छथि (पृ. ३९४-३९५)। प्रथम अध्यायक पृष्ठभूमि ताहि कारण 'जड़ परम्परा' नहि, चलैत परम्पराक आधार बनैत अछि। पृष्ठभूमि आ उपसंहार एक

संग पढ़लापर स्पष्ट होइत अछि जे शब्दसंग्रह अतीतक संग्रह मात्र नहि; ई परिवर्तनक एहन अवस्थाक अभिलेख अछि जाहि समय पुरान आ नव शब्द दुनू उपस्थित रहि सकैत अछि। जातीय वर्गीकरणक आलोचनात्मक सीमा

स्थानीय कारीगरक दक्षताक सम्मान आ जाति-आधारित भेदभावक समर्थन दू पृथक बात अछि। ग्रन्थक ऐतिहासिक शब्दावलीकेँ जँ हम वर्तमान सामाजिक व्यवहारमे जसक-तस नियम मानि लेल जाएत, तँ शोधक उद्देश्य विकृत होएत। उपयुक्त पद्धति ई अछि जे लेखकक वर्गीकरणकेँ मूल साक्ष्य रूपेँ सुरक्षित राखल जाय, मुदा तुलनात्मक सर्वेक्षणमे अजाति-विशिष्ट पेशा, परस्पर साझा औजार, महिला श्रमिक आ प्रशिक्षित नवा पीढ़ीक प्रमाण सेहो स्थान पाबय।

५. द्वितीय अध्याय: काठ-बाँस व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली (पृ. ६५–१३२)

५.१ काष्ठकर्म

विषय-सूची काष्ठकर्मक अनेक चरण अलग कऽ देखबैत अछि: आधार-सामग्री, काठ-गाछक अङ्ग, काठक दोष-काठक पिच्छ/प्रकार, धातुक वस्तु, मसाला, औजार, खरचर अथवा कटवला, रन्दा, खरडवला, छीलवला, खखोरवला, जाँच, कतरब, ठोकबाक आ निकलबाक काम, कृषि आ परिवहनक उपयोग, गृह-निर्माण, भोजनक आ आरामक उत्पादन, शृंगारिक पात्र, समानक सुरक्षा आ अन्य विविध निर्माण। मूल क्रमसँ स्पष्ट अछि जे शब्दावलीकेँ कारीगरीक व्यवहारिक क्रमानुसार देखबाक चेष्टा कएल गेल अछि।

५.२ बाँसकर्म

अध्यायक अन्तर्गत बाँसकर्मक “आधार सामग्री-औजार-उत्पादन-निष्कर्ष” वर्गीकरण अछि। बाँसक लचक, चिराइ, बुनाइ आ जोड़ाइ सँ जुड़ल शब्दक आधार पर कारीगरक ज्ञान पिढ़ी-दर-पिढ़ी चलैत अछि। टोकरी, पात्र, दैनिक घरेलू उपयोगक वस्तु अथवा कृषि-संबद्ध साधनक निर्माणमे वस्तुक आकार-आधारित नाम आ प्रयोजन-आधारित नाम अलग होयबाक सम्भावना महत्त्वपूर्ण अनुसन्धेय विषय अछि।

काठकर्म: पदार्थ, औजार, क्रिया आ उत्पाद

पुस्तकक पृ. ६५ सँ आरम्भ भेल द्वितीय अध्यायमे लेखक मिथिलामे काठ-बाँसक स्थानीय उपयोग आ परम्परा सँ काठकर्मक वर्णन आरम्भ करैत छथि। पृ. ७८-७९ पर आराक आरी, तख्ता/पटरा, रन्दा आ काटबाक भिन्न क्रियाक चर्चा अछि। एहि विवरणसँ पता चलैत अछि जे 'काठ काटब' एक साधारण क्रिया कहलापर ओकर भीतर अनेक तकनीकी अवस्था अछि: लकड़ी अलग करब, समतल करब, नापब, जोड़ब, फाँक निकालब, किनार बनायब आ चिकनाहट देब। लोक-कौशलक सूक्ष्म भाषा एहि चरण सभकेँ अलग-अलग पहचान दैत अछि। लेखक पृ. ७९ पर रन्दाक प्रकार आ ओकर बनावट समझबैत समय एहन शब्द दैत छथि जे सामान्य कोशमे एक संक्षिप्त अर्थक भीतर खोज जाइत। 'आरा/आरी' जेहन उपकरणक रूपरक पर्यायक विश्लेषणमे मात्र 'समानार्थी' लिखब पर्याप्त नहि; कोन रूप कोन आकार अथवा काजमे प्रयुक्त होइत अछि, से अलग प्रश्न अछि। लेखकक मूल विवरण संकेत करैत अछि जे कतेको रूप तकनीकी भेदसँ सम्बन्धित अछि। एहि लेल शब्दक संग 'वस्तु-वर्ग' आ 'काज-वर्ग' दूटा अनुक्रमणिका बनबैत तखन अर्थक भ्रम घटि सकैत अछि।

क्रियाक क्रमवाचक शब्द: पृष्ठ ७८-७९क पाठ

आरा, रन्दा, पटरा, चिरब, खरचर, काटब, खाँच बनायब आ पल्ला जोड़बाक वर्णनकेँ कार्यप्रवाह मानि पढ़ला पर स्पष्ट होइत अछि जे लोकशब्दक अर्थ अधिकांशतः कार्यगत निर्भरता पर टिकैत अछि। जे पदार्थ एखन कच्चा काठ अछि, ओहि पर प्रथम क्रियाक बाद भिन्न संज्ञा लागू भऽ सकैत अछि; फेर दोसर उपकरणक प्रयोगक बाद ओकर नाम अथवा गुणबोधक पद बदलि जाएत। ई अर्थ-प्रक्रिया सामान्य भाषा-शिक्षणसँ अलग, व्यावसायिक प्रशिक्षणक व्याकरण अछि।

आलोचनात्मक शब्दकोशमे औजारक प्रविष्टिक संग ओकर आकार, निर्माण-सामग्री, पकड़बाक ढंग, चलाबाक दिशा, काजक वस्तु आ कार्यक परिणाम दर्ज भेला पर शब्दक तकनीकी अर्थ बेसी स्पष्ट होयत। काठकर्मक विवेचन एहन बहुस्तरीय विवरणक औचित्य उपस्थित करैत अछि।

गृह-निर्माणक शब्दक विशेष स्थान

पुस्तकक पृ. १०२-१०३ पर काठ-बाँस निर्मित गृहसामग्री पर गहन विवरण अछि। घरक सांगठनिक अङ्ग, खम्भा, बल्ली, बाँसक जोड़, छप्परक व्यवस्था, एक अंगकें दोसर अंगसँ बाँधबाक व्यवहार, आ धरिक/काठक काम—ई सभ वस्तुगत सामग्रीक शब्दासंपदा अछि। एहि पृष्ठ पर लेखक एकहि घर-निर्माणक वस्तुक अनेक स्थानीय रूप लिखैत छथि। घरक अंगक नाम पढ़ैत काल ओकर दिशा, भार वहन करबाक भूमिका आ निर्माणक क्रमकें एक संग देखब जरूरी अछि।

गृह-निर्माणक शब्द ऐतिहासिक भूगोलक प्रश्न सेहो उपस्थित करैत अछि। काठक उपलब्धता, बाँसक पर्याप्तता, बाढ़-पानिक स्थिति आ स्थानीय वास्तुशैली शब्द-रचनाक पृष्ठभूमि भऽ सकैत अछि; मुदा एहि सम्बन्धक प्रत्यक्ष प्रमाण प्रत्येक शब्दलेखमे नहि भेटला पर एकरा प्रस्तावित व्याख्याक रूपमे मात्र राखल गेल अछि। एहि बिन्दु पर मिथिलाक ग्रामीण घरक प्रत्यक्ष मापन आ फोटोसँ शब्दक सत्यापन मूल्यवान होयत।

काठकर्मक शब्दसम्पदाक सबल पक्ष वस्तुक गुण-दोष आ प्रयोगक अवस्थाक वर्णन अछि। कारीगरक दृष्टिँ काठक दोष केवल वनस्पति-विज्ञानक श्रेणी नहि; काटलाक बाद भेटनिहार गाँठ, चिरान, फूट, वक्रता, मजगूती आ नमी ओकर उपयोगक निर्णयमे महत्त्व राखि सकैत अछि। एहन भेदक अर्थ-निर्णयमे स्थानीय कारीगरीक व्यवहारकें केन्द्रमे राखब आवश्यक अछि।

बाँसकर्म: बुनाइ आ संरचनाक भिन्न तर्क

बाँसकर्मक 'आधार सामग्री-औजार-उत्पादन-निष्कर्ष' ढाँचा (द्वितीय अध्यायक अन्तिम हिस्सा, पृ. १३२ पर निष्कर्ष) काठकर्मसँ संग-साथ राखल गेल अछि। दुनूक उत्पादनमे काटब आ जोड़ब साझा अछि, मुदा बाँसकें चिरि पतरी बनायब, लचकक अनुसार मोड़ब, बुनेल वस्तुक धार देब—एहि सभमे अलग कार्यविद्या चाही। जँ एकहि 'काटब' शब्द दुनू शिल्पमे भेटैत अछि, तँ ओकर क्रिया-परिस्थिति समान नहि मानल जा सकैत।

पृ. १३२ पर लेखक काठ-बाँसक शब्दमे संस्कृत, फारसी, अरबी आ अंग्रेजी आदिक सम्पर्कसँ आएल रूपक उल्लेख करैत छथि आ क्षेत्रीय उच्चारण-भिन्नताक प्रभाव स्वीकार करैत छथि। एहि अवलोकनसँ मैथिलीक शिल्पभाषामे भाषासम्पर्कक प्रश्न उठैत अछि। मुदा कोनो विशिष्ट शब्दक व्युत्पत्ति निश्चित करबाक लेल पुरान शब्दकोश, क्रमिक ध्वनि-परिवर्तन आ ऐतिहासिक प्रयोगक मिलान आवश्यक अछि।

६. तृतीय अध्यायः माटि-पानि व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली (पृ. १३३-१९४)

६.१ कुम्हार जाति सम्बन्धी शब्दावली

मूल विषय-सूचीमे कुम्हार-सम्बद्ध शब्दक वर्गीकरण “आधार सामग्री-आनुषंगिक आधार सामग्री-औजार-माटि तैयार करबाक औजार आ प्रयोग-वस्तु-पकबाक औजार-प्रयोग-बासन सम्बन्धी-पूजन सम्बन्धी-आवास सम्बन्धी-व्यवसायोपयोगी-यज्ञ, संस्कार आ पावनि-तिहार सम्बन्धी-अन्य सामग्री-बासनक गुण-दोष व्यंजक शब्दावली” रूपमे भेटैत अछि। एहि वर्गीकरणमे पदार्थक निर्माण-सँ लोक-आचारमे ओकर अन्तिम उपयोग धरि भाषिक यात्रा देखल जा सकैत अछि।

माटिक भेद, सानब, गढ़ब, सुखायब, पकायब आ रंगल अथवा सजायबाक क्रियामे तकनीकी शब्दक क्रम विकसित होइत अछि। पात्रक नाम केवल आकार नहि बतबैत, ओकरे सामाजिक उपयोग, अन्न-जल-संग्रह, पूजा वा संस्कारक सन्दर्भमे अर्थ बदलैत अछि। एतय शब्दावली मिथिलाक पदार्थ-संस्कृतिक महत्त्वपूर्ण साक्ष्य अछि। विशेष अध्ययनमे एकहि वस्तुक कच्चा, अधपाकल आ तैयार अवस्था लेल शब्दभेद अलग दर्ज करब उपयोगी रहत।

६.२ मल्लाह जाति सम्बन्धी शब्दावली

मल्लाह-सम्बद्ध उपखण्डमे आधार सामग्री, मल्लाहक औजार, नौ-परिवहनसँ सम्बन्धित, पारिभाषिक शब्द, मल्लाहक व्यवसायसँ सम्बद्ध, नावो-जाल-बनसो-बाँसक औजार, अन्य औजार, मल्लाहक उत्पाद, माछक प्रकार, माछक विभिन्न भाग, विक्रय-सहचर, शत्रु-प्रभेद, मखान-सिंघाड़ा चुनन आ निष्कर्षक उपविभाग अछि। ई विस्तार नदी-पोखरि-आधारित जीविका आ जलसंसाधनक स्थानीय वर्गीकरणक संकेत करैत अछि।

नाव, जाल आ माछक शब्द सामुदायिक अनुभवक तकनीकी सूक्ष्मता उघाड़ैत अछि। जल-मार्ग, जलक गति, माछ पकड़बाक पद्धति, माछक देह-भाग आ उत्पाद-वितरण—ई सभक शब्द केवल ‘मल्लाह’ नामक सामाजिक पहचान नहि, अपितु पर्यावरणक व्यावहारिक ज्ञान सेहो उपस्थित करैत अछि। मखान-सिंघाड़ाक समावेश सँ जल-जीविकाक बहुआयामी प्रकृति स्पष्ट होइत अछि। एहि खण्डकेँ पर्यावरणीय शब्दकोश आ मौखिक जीवन-इतिहाससँ जोड़ि पढ़ल जा सकैत अछि।

माटिकर्ममे पदार्थक अवस्था: माटिसँ बासन धरि

तृतीय अध्याय (पृ. १३३-१९४) के आरम्भमे लेखक माटि आ पानि आधारित काजक भूमिका विस्तारसँ रखैत छथि। पुस्तकक पृ. १३३ पर माटि/माटी/मिट्टी जेहन रूपसँ भाषिक भिन्नता आ कुम्हारक कार्यक प्रासंगिकता साथे उद्घाटित होइत अछि। 'माटि' एतय केवल प्राकृतिक पदार्थ नहि रहैत, अपन रूप बदलैत निर्माण-सामग्री थिक। पेषण, सानब, घोलब, आकार देब, सुखायब आ आगिमे पकायबाक क्रमक बीच ओकर व्यवहारिक नाम आ गुण बदलैत अछि।

पुस्तकक पृ. १४४-१४५ पर लेखक आवाँ अथवा बासन पकाबाक व्यवस्थाक चर्चा करैत छथि; आगि, ईंधन, बासन सजाबाक पद्धति, पकबाक अवस्था आ माटिक बासनक उपयोगसँ शब्दक सम्बन्ध जोड़ैत छथि। 'आवाँ' जँ भट्टाक विशेष संदर्भमे प्रयुक्त अछि, तँ ओकरा साधारण 'अग्नि' वा 'भट्टी' कऽ छोड़ि देब विशेषार्थक हानि होयत। तकनीकी परिभाषामे कारीगरक दृष्टिसँ ताप देबाक व्यवस्थित स्थानक अर्थ उल्लेखनीय अछि।

बासनक नाममे पदार्थ आ अवसरक संगति

पोथीक विषय-सूची बासनक प्रयोग, भोजन, पूजा, संस्कार, पावनि-तिहार, अन्य सामग्री तथा बासनक गुण-दोष द्योतक शब्दक अलग श्रेणी दैत अछि। एहि योजना सँ स्पष्ट अछि जे एकहि आकारक पात्र सामाजिक प्रसंग बदलला पर भिन्न कार्य करि सकैत अछि। 'भण्डारणक पात्र', 'पकाबाक पात्र', 'पूजन-पात्र', 'उत्सव-पात्र'—एहिमे भिन्नता केवल वस्तुक भौतिक आकार नहि। नाममे उपयोगिताक अर्थ, निषेध, रीति आ सामुदायिक स्मृति सम्मिलित भऽ सकैत अछि।

स्रोत सँ प्रेरित एकटा महत्वपूर्ण विभेद इहो अछि जे वस्तुक 'अर्थ' आ 'काज' बराबर नहि। उदाहरणार्थ जल रखबाक पात्र धार्मिक क्रियामे प्रयोग होय तकर उपयोग-परिस्थिति बदलैत अछि, मुदा वस्तुक स्थायी नाम एक्के रहि सकैत अछि। दोसर दिशा मे समान पदार्थसँ बनल समान प्रकारक पात्र ओकर आकार वा उपयोगक कारण अलग नाम पाबि सकैत अछि। अतः शब्द-विश्लेषणमे पदार्थ, रूप, प्रयोजन आ अवसर चारू चिन्ह अलग देखबाक चाही।

पानिकर्ममे स्थान-नाम आ जल-परिवहन

मल्लाह-सम्बद्ध भागक पृ. १६२-१६३ पर लेखक नदी, पोखरि, गहिर स्थान, नाहर वा जलाशयक अनेक स्थानीय नाम प्रस्तुत करैत छथि। जलसंसाधनक शब्द केवल स्थलरूपकेँ चिन्हबाक लेल

नहि, बल्कि यातायात, माछ पकड़ब, जाल लगायब आ जल-गहराइ बुझबाक व्यावहारिक मानचित्र थिक। कतेको शब्द आकार, गहिराइ, जलक उपलब्धता वा भौगोलिक स्थितिक आधार पर अलग होइत अछि। एहि अर्थ-वैविध्यक संकलन स्थानीय पर्यावरण-ज्ञानक दस्तावेज बनि सकैत अछि।

जलाशयक प्रकार आ मल्लाहक उपकरण अलग अर्थक्षेत्र छथि, तखनहुँ दुनूक सम्बन्ध व्यावहारिक अछि। नाव वा जालक रूप जलक वेग, गहिराइ अथवा किनारक बनावटसँ प्रभावित भऽ सकैत अछि। मुदा कोन औजार कोन जलाशय लेल निश्चित छल, से निरूपित करबाक लेल व्यवसायगत व्यवहारक विशेष साक्ष्य आवश्यक अछि।

माछक नाम, आकार, अवस्था आ विक्रय

पुस्तकक पृ. १८०-१८१ पर लेखक माछक नाम, सुकटीक उल्लेख, जलक व्यवस्था, पकड़बाक परिस्थिति, जाल चलाबाक क्रिया, माछ ताजा वा सड़ल होयबाक अवस्था, आ विक्रय-संबद्ध शब्दक चर्चा करैत छथि। एतय पदार्थ 'जीवित माछ' सँ 'खाद्य पदार्थ' बनेबाक प्रक्रिया सेहो शब्दार्थ बदलबैत अछि। सुकटी नाम जेहन रूपकें अर्थविज्ञानमे वस्तुक प्रसंस्कृत अवस्थासँ जोड़ि देखबाक आवश्यकता अछि।

माछक लोकनामकें प्राणी-विज्ञानक प्रजातिनामक पूर्ण समकक्ष मानब उपयुक्त नहि। एकहि लोकनाम अन्तर्गत अनेक जैविक प्रजाति सेहो होय सकैत अछि, अथवा एक प्रजाति अलग स्थानमे भिन्न नामसँ परिचित होय सकैत अछि। वैज्ञानिक नामक मिलान स्वतंत्र जीववैज्ञानिक प्रमाण बिना नहि करबाक चाही। मूल पोथी भाषिक प्रमाण दैत अछि; ई जैव-टैक्सोनोमीक सत्यापित सूची नहि।

मखान-सिंघाड़ा: जल-आधारित जीवनक विस्तार

विषय-सूचीमे मखान आ सिंघाड़ाक कामकें मल्लाह-संबद्ध शब्दावलीक भीतर स्थान भेटल अछि। एहि वर्गीकरण सँ संकेत भेटैत अछि जे लेखकीय 'पानि-व्यवसाय' केवल नाव वा माछधरनी नहि। जल-पारिस्थितिकी मे भोजनक उत्पादन, सङ्ग्रह, संसाधनक परिशोधन आ विक्रय सेहो समाहित अछि। मुदा प्रत्येक जल-उत्पादक सम्बन्ध एकहि समुदायसँ ऐतिहासिक रूपेँ स्थिर रहल, एहन निष्कर्ष निकालब अनुचित होयत।

तृतीय अध्यायक अन्तिम निष्कर्ष (पृ. १९४) मे लेखक कुम्हारक तुलनामे मल्लाहक शब्द-समूहमे क्षेत्रीय अन्तर आ शब्द-परिवर्तनक विशेष चर्चा करैत छथि। आलोचनात्मक अध्ययन लेल ई टिप्पणी कीमती अछि: स्थलीय माटिक बासन आ गतिशील जलकर्मक शब्दक प्रसार-स्थिति भिन्न रहि सकैत अछि। एहि अवलोकनक सांख्यिकीय परीक्षण भविष्यक कार्य होयत—केवल निष्कर्ष-वाक्यसँ भिन्नताक परिमाण नापल नहि जा सकैत।

७. चतुर्थ अध्याय: तूर-सूत व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली (पृ. १९५-२४२)

चतुर्थ अध्यायमे तूर-सूतक आधार सामग्री आ औजार, बाड़, चरखी, टकुरी, चरखा, सूतक ऐँठ-गुण, वस्त्र-जालिका, औजार आ प्रक्रिया, तानी-भरनी, पटबाक करघा, जोलाहक करघा, उत्पाद तथा अन्य व्यवसाय-सम्बद्ध शब्दावली आ निष्कर्षक स्थान अछि। एहि क्रममे सूत तैयार करब, सूत सँ ताना-बाना बनायब आ वस्त्र निर्माण करब—तीन चरणक तकनीकी शब्द-परम्परा एकत्र होइत अछि।

एहि अध्यायक विशिष्टता गति आ विन्यासक शब्द अछि: घूमब, ऐँठब, तानब, भरब, बुनब, किनार बनायब आ गुण-दोष चिन्हब। वस्त्र-निर्माणक अनेक शब्द पदार्थक नामक अपेक्षा प्रक्रियाक नाम होइत अछि। एकहि उत्पादन-प्रक्रियामे औजारक नाम, औजारक अङ्ग, कर्मी द्वारा प्रयुक्त क्रिया आ तैयार कपड़ाक प्रकार एक-दोसरक संग अर्थ-जाल बनबैत अछि। एहि शब्दजालक मानचित्र बनबैत समय क्रिया, करण आ परिणामक व्याकरणिक सम्बन्ध देखबाक चाही।

तूर-सूतक आरम्भ: सम्पूर्ण वस्त्र-शृंखला

पुस्तकक पृ. १९५ पर लेखक तूर-सूत व्यवसायमे जोलहा, पटवा, दर्जी, धुनिया, रंगरेज आ धोबीक भूमिका अलग करैत छथि। एकर अर्थ ई जे 'वस्त्रक शब्दावली' केवल करघाक तकनीकी कोश नहि, बल्कि रूई वा रेशासँ शुरु भऽ सूत बनब, बुनब, रँगब, सिलब आ धोबब धरि कतेको पड़ावक नाम-संग्रह अछि। 'वस्त्र उत्पादन' कर्ता-विशेषक एक क्षण नहि, बहुचरणीय सामाजिक उत्पादनक परिणाम अछि।

लेखक एतय बाड़क सामग्री आ ओकर सँ सूत तैयार करबाक विधिसँ शुरुआत करैत छथि (पृ. १९५)। बाड़क विभिन्न अवस्था, ओकर भंगुरता अथवा आकार, आ सूतक ऐँठन—ई सभ

बुनकरीक बादक परिणाम प्रभावित करैत अछि। ताहि लेल सामग्रीक नाम आ तैयार कपड़ाक नाम बीच सूत-तैयारीक शब्दक स्वतंत्र स्थान अछि। यदि कोश बनाओल जाय तँ 'रेशा → सूत → तानी-भरनी → वस्त्र → परिष्करण' कड़ीकें परस्पर सम्बन्धित प्रविष्टि रूपमे रखबाक चाही। करघाक अंगक शब्द वैज्ञानिक रूपसँ की बतबैत अछि?

पुस्तकक पृ. २०४-२०५ पर लेखक तास, खसखस, राछ, लरदी, पाछन आ धागा सँ सम्बद्ध कार्मिक क्रमक विवेचन करैत छथि। बहुतो शब्द बाह्य पाठक लेल अपरिचित होइत अछि, कारण ओ कोनो साधारण वस्तुक नाम नहि, करघाक विशेष भाग अथवा कामक ठिकना बतबैत अछि। करघाक रूपरेखा बिना केवल समानार्थी देलापर अर्थ आधा रहि जाएत। एहि लेलनवा अनुसन्धान-संस्करणमे मूल शब्दक संग निर्देशात्मक रेखाचित्र, साधनक आकार आ प्रयोगक क्षण जोड़ब आवश्यक अछि।

भाषिक दृष्टिँ ई शब्द एक 'कार्यात्मक तन्त्र' बनबैत अछि। बुनकरीमे कोन अङ्ग स्थिर अछि, कोन घूमैत अछि, कोन सूत खींचैत अछि, कोन निचला वा ऊपरक अवस्था बनबैत अछि, आ कोन तैयार कपड़ाकें समेटैत अछि—एहि सम्बन्धक वर्णन बिना तकनीकी नाम याद रहि सकैत अछि, मुदा अर्थ नहि खुलत। लेखकक दीर्घ व्याख्या एहि कठिनाईकें किछु हद धरि दूर करैत अछि।

कपड़ाक बनावट, दोष आ सुधारक भाषा

पृ. २२२-२२३ पर कपड़ाकें सुखाबाक लेल तनाब करब, रँगक काम, किनार सम्हारब, दोष दूर करब आ कपड़ाक अन्तिम रूप देबाक बात अछि। उत्पादनक एहन अन्तिम चरणकें शब्द-संग्रहमे महत्त्व देल जाय, कारण 'बुनल वस्त्र' आ 'प्रयोग लेल तैयार वस्त्र' एक अवस्थाक वस्तु नहि। रंगरेजी, माड़, प्रसारण आ साज-सँवार शब्दक रूपमे प्रवेश करैत अछि।

एहि खण्डमे क्रियासँ बननिहार पद-परिवारो विचारणीय अछि। मूल क्रियासँ कर्ताक नाम, उपकरणक नाम, परिणामस्वरूप वस्तुक नाम अथवा गुण-दोष व्यक्त करनिहार विशेषणक सम्बन्ध बनि सकैत अछि। एहि प्रकारक रूपगत विश्लेषणमे शब्दक वास्तविक स्थानीय प्रयोग निर्णायक होइत अछि।

ई अध्याय आधुनिक शब्द-प्रयोगक आलोचनाक अवसर सेहो दैत अछि। मशीनद्वारा कातल सूत अथवा तैयार वस्त्रक शब्द ओहि कालक करघा-केंद्रित स्थानीय शब्दकें प्रतिस्थापित करैत हो, एहन संभावना लेखकक उपसंहारमे वर्णित सामान्य परिवर्तनसँ संगत अछि, मुदा कोन शब्द आइ लुप्त भेल तकर नामावली आधुनिक क्षेत्र-सर्वेक्षणसँ बनत।

८. पंचम अध्याय: धातु-व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली (पृ. २४३-३००)

८.१ लोहार

लोहार-उपखण्डक वर्गीकरण आधार सामग्री, औजार, गर्म करबाक, पकड़बाक, पिटबाक, कटबाक आ छेद करबाक औजार, सहायक औजार, उत्पादन, सामान्योपयोगी, व्यवसायोपयोगी, शृंगार, अन्य विविध सामग्री धरि फैलल अछि। धातुक काममे ताप, बल, आकार आ धार सम्बन्धी तकनीकी क्रिया सघन होइत अछि। ताहि लेल औजार आ प्रक्रिया बीच भेद नहि बुझलापर बहुते अर्थ-संशय उत्पन्न भऽ सकैत अछि।

८.२ कसेरा

कसेरा सम्बन्धी उपखण्डमे आधार सामग्री, औजार, गर्म करबाक, पिटबाक, कटबाक, सहायक औजार, उत्पादन, धातु निर्मित पात्र-पात्रक सम्बन्धी, भोजन एवं पान सम्बन्धी, पूजाक बासन आ अन्य शब्दक विवेचनक योजना अछि। एहि वर्गीकरणक सांस्कृतिक पक्ष महत्वपूर्ण अछि— धातुक पात्र उत्पादन, भोजन-पद्धति आ अनुष्ठान तीनू क्षेत्रमे प्रवेश करैत अछि। पात्रक धातु, आकार, निर्माण-विधि आ प्रयोजनक पृथक नामक संकलन मैथिलीक पदार्थ-सम्पदा बुझबाक आधार प्रदान करैत अछि।

८.३ सोनार

सोनार उपखण्डमे आधार सामग्री, औजार, गर्म करबाक, पिटबाक, पकड़बाक, कटबाक, जोड़बाक, अन्य उपकरण, उत्पादन, गहना, माथ, नाक, कान, गर्दन, बाँहि-पहुँची, हाथ-पएर आदि शरीर-भागक आभूषण, दाँत-सम्बद्ध, औजार आ निष्कर्ष शामिल अछि। एहि खण्डमे वस्तु-आधारित नामकरण सँ अतिरिक्त शरीरक अङ्ग आ सामाजिक अवसरक आधार पर नामकरणक व्यवस्थित अध्ययन सम्भव अछि।

लोहार, कसेरा आ सोनार तीनू उपविभागमे ऊष्मा, पिटाइ, काटाइ, आकार-निर्माणक साझा प्रक्रिया भैतैत अछि, मुदा पदार्थक मूल्य, तैयार वस्तुक उपयोग आ सामाजिक प्रतीकात्मकता भिन्न अछि। तुलनात्मक शब्दावली तैयार कएला पर समान क्रिया लेल अलग कार्यसमुदायमे प्रयुक्त ध्वनि-रूपक अन्तर आ एकहि औजारक नामक अर्थ-विस्तार शोधक विषय बनैत अछि।

लोहारक मूल औजार-नाम: पृ. २४६-२४७

पृ. २४६-२४७ पर लेखक लोहारक पकड़बाक औजार, पिटबाक औजार, आधारक रूपमे प्रयोग होइत धातुक ठोस पाट, आगि जारि राखबाक उपाय, हावा देबाक व्यवस्था आ सामग्रीक आकार बदलाबाक क्रिया सँ जुड़ल शब्दक विस्तार करैत छथि। एहि वर्णनमे साधनक नाम शरीरगत क्रियाक निर्देश सेहो दैत अछि: पकड़निहार उपकरण हाथकें जरा सँ बचबैत अछि, पिटनिहार उपकरण बल पहुँचबैत अछि आ आधारक पाट प्रहारक प्रतिरोध करैत अछि। एकै 'औजार' वर्गक भीतर भिन्न कार्यव्यवस्था देखब महत्त्वपूर्ण अछि।

शिल्प-इतिहासमे तापसँ सम्बन्धित शब्दक तकनीकी अर्थ जनब आवश्यक अछि। लोहारक 'गरम करब' खण्डक सभ औजार अग्निक पर्याय नहि; कोनो ताप उत्पन्न करैत अछि, कोनो हावा पहुँचबैत अछि, कोनो गरम पदार्थकें पकड़ैत अछि, कोनो ओकर आकार बदलैत अछि। एहि कार्यगत भेद बिना शब्दक केवल हिन्दी/अंग्रेजी अनुवाद अधूरा भऽ जाएत।

लोहारक उत्पादक सामाजिक विस्तार

कृषिक उपकरण, घरक साधन, काठक काममे उपयोगी धातु-उपकरण, रसोईक सामग्री आ प्रतिरक्षात्मक अवयव—एहन अनेक उत्पादन-श्रेणी लोहारक कार्यकें अन्य व्यवसायसँ जोड़ैत अछि। मूल सूचीक आधार पर समस्त उपलब्ध उत्पादक नामक एकता सम्भव नहि, मुदा वर्गीकृत विश्लेषण स्पष्ट करैत अछि जे लोहारक शब्द-विधान व्यापक ग्रामीण अर्थव्यवस्थाक आधारभूत औजार-व्यवस्था सँ सम्बन्धित अछि। कोनो वस्तुक निर्माण-पक्ष आ ओकर ग्राहकक प्रयोग-पक्ष अलग-अलग अर्थक्षेत्र अछि।

कसेरा: पात्रक आकार आ धातुक अवस्था

पुस्तकक पृ. २७४-२७५ पर कसेराक अन्तिम उपादान, पात्रक रूप, थारी वा गोलाकार बासन, धार बनाबाक तथा धातुक सतहक कामक शब्दक विवरण अछि। एहिमे वस्तुक नाम आकार,

धातु, उपयोग, गहिराई अथवा धरिक बनावटसँ जुड़ल देखाइत अछि। कारीगर द्वारा देल नाम आ घरेलू प्रयोगकर्ता द्वारा कहल नाम समान होयबाक अपेक्षा नहि; जँ रूप भिन्न अछि तँ दुनू प्रकारक नाम दर्ज करब आवश्यक अछि।

बासनकें रसोई, भोजन, पूजाक अवसर आ सजावटक आधार पर अलग करब सांस्कृतिक शब्दार्थक अध्ययनक अवसर दैत अछि। एकहि पात्र भोजन परोसबाक सामान्य वस्तु सेहो भऽ सकैत अछि आ विशिष्ट संस्कारमे निश्चित प्रयोजनक रूप ग्रहण कऽ सकैत अछि। एहि द्विस्तरीय अर्थक परीक्षण लेल मूल सन्दर्भित प्रयोग जरूरी अछि; केवल वस्तुक चित्र देखिकें सर्वसामान्य सामाजिक अर्थ नहि बताओल जाय।

सोनार: धातुक शुद्धता, गढ़न आ अलंकरण

पृ. २७५ पर लेखक सोना-सँ सम्बन्धित धातु, गहना, मिश्रित धातु आ आधार-सामग्रीक चर्चा प्रारम्भ करैत छथि। सोनारक शब्दावलीमे धातुक शुद्धता, पिघलाब, तार बनाव, जोड़ब, सिकड़ी, गहना बँधब आ शरीर पर पहिरब—एकै पदार्थक अनेक व्यवहारिक अवस्था शामिल अछि। एहि कारण सोनारक व्यावसायिक शब्दकें केवल 'गहनाक सूची' मानब स्रोतक परिधि सीमित करब होयत।

पुस्तकक पृ. २९४—२९५ पर सिकड़ीक बनावट, कड़ी, गोद, शरीरक अङ्ग पर धार्य गहना आ विशेष आकारक विस्तारपूर्वक चर्चा अछि। समान रूपक छल्ला आ कड़ी अलग तकनीकी काममे भिन्न नाम पाबि सकैत अछि। सोनारक पृष्ठ सभ पर वस्तुक बारीक आकारक शब्दक प्रचुरता देखबैत अछि जे हस्तशिल्पक स्थानीय सूक्ष्म विज्ञानक अभिलेख तैयार होइत अछि।

शरीरांश आ अलंकार-नामक अर्थ-नक्शा

विषय-सूचीमे सोनारक उत्पादनकें माथ, नाक, कान, गर्दन, बाँहि-पहुँची, हाथ, पएर, कपड़ा आदि स्थानक क्रममे राखल गेल अछि। ई वर्गीकरण अर्थवैज्ञानिक दृष्टिँ 'अवस्थिति-आधारित नामकरण' थिक। गहनाक नाम तकर पदार्थक कारणसँ होय सकैत अछि, आ शरीरक कोन अङ्ग पर धारण होइत अछि तकर कारणसँ सेहो। दुनू अर्थ-सम्बन्धक पाठ अलग करबाक चाही।

आभूषणक सामाजिक अवसर, विवाह-विधान अथवा क्षेत्रविशेषक पहिरावासँ जुड़ल प्रतीकात्मक अर्थ पृथक अध्ययनक विषय अछि। ग्रन्थक शब्दसम्पदा ताहि दिशामे महत्त्वपूर्ण आधार दैत अछि; मुदा प्रत्येक गहनाक सांस्कृतिक अर्थकें ओकर प्रसंग आ प्रचलनसँ जोड़ि जाँचब आवश्यक अछि।

तीन धातु-शिल्पक तुलनात्मक तत्त्व

लोहार, कसेरा आ सोनारक साझा क्रिया-धातु के आधार बनायब विश्लेषणक एक उपयोगी विधि अछि, मुदा 'पिटब' क्रियाक वस्तु, तीव्रता, ताप आ परिणाम तीनू शिल्पमे बदलि सकैत अछि। अतः समान ध्वनि बराबर समान कार्य नहि। लेखकक तीन अलग उपखण्ड एही अन्तरक सम्मान करैत अछि। एकटा भावी तुलनात्मक कोशमे 'उपकरण' आ 'उत्पाद' सँ अलग 'समान क्रियाक अलग शिल्पगत अर्थ' शीर्षक राखलापर पठन प्रभावी होयत।

९. षष्ठ अध्यायः अन्य पारम्परिक जातीय व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली (पृ. ३०१-३६२)

षष्ठ अध्याय (पृ. ३०१-३६२) मे कानू, हलुआइ, तेली, मोचिया, डोम/डोबर, कुरेढ़ी, बरई, पासी, सूड़ी, कलवार, लहेरी, चमार, माली आ अन्य कार्यसमुदायक शब्दावली समाहित अछि। “अन्य” कोटिक भीतर भिन्न आधार-सामग्री, औजार, क्रिया, उत्पाद आ सामाजिक उपयोगवला अनेक व्यवसाय छथि। हुनका सभकें एकरूप श्रेणी मानब उचित नहि; एहि खण्डक विविधतामे ग्रन्थक समाजभाषिक विस्तार प्रकट होइत अछि।

खाद्य-निर्माण, तेल निकालब, चमड़ा-सम्बद्ध कार्य, टोकरीकर्म, सेवा आ घरेलू उपयोगक अन्य वस्तु-विन्यासमे आधार-सामग्री, औजार, क्रिया, उत्पाद आ व्यवहारक नामक पृथक पृथक जाल अछि। ई अध्याय ग्रन्थक सामाजिक प्रसार देखबैत अछि। एहिमे प्रतिनिधित्वक प्रश्न सेहो उठैत अछि: कोन व्यवसाय अधिक विस्तार पओलक, कोन कम, आ एकर कारण स्रोत-सुलभता अछि कि ऐतिहासिक महत्त्व? उत्तरक लेल अध्यायवार प्रविष्टि-संख्या गनबाक स्वतंत्र काम आवश्यक अछि।

समुदाय-नामक आधार पर शब्दक सीमारेखा खींचबाक बदला एकहि शब्द विभिन्न समुदाय द्वारा कहल जाइत अछि कि नहि, ई परीक्षण अध्ययनक अगिला चरण होयबाक चाही। ‘जातीय’ पदकें अनिवार्यतः विशिष्ट पेशाक एकाधिकारक अर्थमे स्वीकार नहि कएल जा सकैत।

कानू, हलुआइ: खाद्यक तकनीकी भाषा

पुस्तकक पृ. ३०२-३०३ पर कानूक खाद्य-सामग्री, भुजला अन्नक रूप, चूल्हा, झाँझ, चलनी आ फरही वा लावाक विविध नामक विस्तार अछि। एतय 'खाद्य' शब्द कच्चा पदार्थ नहि, तापन, फुलाब, भुजाब, छानब, मिलाब आ परोसबाक परिणाम थिक। एकहि धान्यक रूप प्रक्रिया बदललासँ बदलैत अछि; एहि कारण अर्थक तकनीकी क्रम खाद्य-संस्कृति बुझबाक लेल अनिवार्य अछि।

पुस्तकक पृ. ३०३ पर 'भुजा', 'लावा', 'फरही', 'माड़' जेहन नामक चर्चासँ बुझल जा सकैत अछि जे भोजनक निर्माण-प्रक्रिया भिन्न रूपक नाम बनबैत अछि। मुदा प्रत्येक नामकँ एकहि वनस्पति अथवा एकहि तापन-प्रक्रियाक सार्वत्रिक पर्याय नहि कहबाक चाही। क्षेत्रानुसार नाम-प्रयोग बदलि सकैत अछि। खाद्यविज्ञानक शब्दावली तैयार करैत समय अनाजक मूल रूप, तापन-विधि, तैयार खाद्यक बनावट आ खेबाक अवसर चारू तत्व दर्ज करब योग्य होयत।

हलुआइ-संबद्ध सामग्रीमे दुग्ध, दही, मिठाइक प्रसंस्करण, पाक-विधि, पात्र आ शुद्धता-संबद्ध पदक सन्दर्भ देखल जा सकैत अछि। पृ. ३२० पर लेखक दहीक अनेक स्थानीय नाम आ जमाबाक विधिक उल्लेख करैत छथि। एतय 'जोड़न', 'जमाब' अथवा भिन्न अवस्था—ई क्रियात्मक अर्थ खाद्य-प्रौद्योगिकीमे महत्वपूर्ण अछि। सामान्य भाषामे 'दही' कहि देब पर्याप्त हो, मुदा कारीगरक प्रयोगमे ओकर अवस्था भिन्न काजक अनुकूल रहि सकैत अछि।

तेली: कोल्हू, तिलहन आ तेलक उत्पाद

पुस्तकक पृ. ३२०-३२१ मे तेलीक व्यवसायकँ आधार सामग्री, तिलहन, कोल्हू, तेल पेरबाक औजार आ पदार्थक अवशेषसँ जोड़ल गेल अछि। कोल्हूक अंगक नाम, तिलहनक भेद, तेल निकलाबाक क्रिया आ तैयार तेलक उपयोग ई चार स्तर मिलि एकटा अर्थक्षेत्र बनबैत अछि। खेत सँ आयल बीया आ तेल निष्कासनक बाद बचल सामग्रीकँ समान पदार्थ-वर्गक अन्तर्गत रखबाय उपयोगी अछि, मुदा ओकर उपयोग-परिस्थिति भिन्न होइत अछि।

तेल-पेरनी कृषि आ घरेलू उत्पादनक बीच सेतुक काज करैत अछि। उपकरणक यंत्रीकृत रूप विकसित भेला पर पेरनीसँ सम्बन्धित पुरान शब्दक प्रयोग आ अर्थ दुनू बदलि सकैत अछि।

पासी: ताड़-खजूरक कार्यक शब्द

पुस्तकक पृ. ३३४-३३५ पर लेखक ताड़ आ खजूरक गाछ, कटल स्थान, रस जमा करबाक पात्र, उतरबाक साधन, गाछक अलग अङ्ग आ रस निकालबाक कार्यक नाम प्रस्तुत करैत छथि। एतय एक वनस्पतिक शरीर ही कार्यक्षेत्र बनैत अछि; गाछक भिन्न अंश जानल बिना प्रयोगक शब्दक अर्थ नहि खुलैत। 'ताड़', 'खजूर', 'खोल', चीरबाक क्रिया आ पात्रक विन्यासक भिन्नता स्थानिक वनस्पति-ज्ञान आ जीविका-दक्षताक संयुक्त अभिलेख अछि।

चमार: चर्म-शिल्पक प्रक्रम

पुस्तकक पृ. ३४४-३४५ पर चर्मसँ सम्बन्धित सामग्री, कातल अथवा तैयार चाम, शुद्धि, रँग, काटब, जोड़ब, सिलब आ तैयार चामक वस्तुक विवेचन अछि। एहि खण्डमे कच्चा जैविक पदार्थक शोधन आ टिकाउ वस्तुमे रूपान्तरणक चरण संज्ञा आ क्रियाक संग अलग-अलग दर्ज अछि। कारीगरक ज्ञानक मूल बिन्दु पदार्थक गुण बदलनाय थिक। चर्मक काम केवल उत्पादनक अन्तिम वस्तुक नामसँ बुझल नहि जा सकैत।

पृष्ठ ३४५ पर अन्य औजार आ चामक प्रकारक चर्चा भाषिक प्रमाण दैत अछि जे एहि व्यवसायमे सामग्रीक परिवर्तनक सूक्ष्म नाम छल। एहि साक्ष्यकें ऐतिहासिक शिल्पज्ञानक प्रमाणक रूपमे पढ़ब चाही। व्यवसायसँ जुड़े जातिगत पूर्वग्रहक आलोचनात्मक परीक्षण कएल जा सकैत अछि, मुदा मूल कारीगरक कौशलकें उपेक्षित नहि करबाक चाही।

मोचिया, कुरेढ़ी, लहेरी, बरई, माली आ शेष समूह

मोचिया, कुरेढ़ी, लहेरी, बरई आ मालीक कार्यक्षेत्र अलग-अलग आधार-सामग्री आ उत्पादक संग सम्बद्ध अछि—पादत्राण वा चमड़ा, टोकरी अथवा बेंत, भृंगारक सामग्री, पान-पत्ता आ पुष्प-संस्कृति। एहि विविधताक कारण एकहि अध्यायमे सामाजिक सेवा, घरेलू उपयोग आ हस्तशिल्पक अनेक अर्थक्षेत्र उपस्थित होइत अछि।

मूल लेखकीय परिधि अनुसार ई खण्ड छोट-छोट पेशाक लोकव्यावसायिक तकनीक एक संग उपस्थित करैत अछि। आलोचनात्मक प्रश्न अछि जे कोन पेशा विस्तृत सामग्री पाबैत अछि आ कोन अपेक्षाकृत संक्षिप्त। ई असमानता जरूरी नहि महत्त्वक स्तर देखाबय; क्षेत्रीय साक्षात्कार, पुस्तकक रचनाक समय उपलब्ध विशेषज्ञ अथवा विशिष्ट कार्यक अभिलेखनक सुविधा सेहो कारण भऽ सकैत अछि। एखन एहि कारण सभ पर अनुमान मात्र सम्भव अछि।

छठम अध्यायक शब्दसंग्रहक मूल सिद्धि

मुख्य पदार्थ-केन्द्रित अध्याय सँ बाहर जे व्यावसायिक नाम छूटबाक खतरा छल, लेखक 'अन्य पारम्परिक व्यवसाय' मे ओकरा व्यापक रूपेँ समेटैत छथि। एहि खण्डक महत्त्व कारण ई अछि जे भाषा शुद्ध शिल्पशालामे नहि, रसोई, कृषिखेत, हाट, पोखरि, गाछ, घर आ उत्सवमे सेहो निर्माण होइत अछि। ई बहुकेंद्री शब्द-सम्पदा मिथिलाक रोजमर्रा उत्पादनक परिधि बढ़ा दैत अछि।

१०. सप्तम अध्याय: भाषातात्त्विक विचार (पृ. ३६३-३९३)

सप्तम अध्याय पोथीक संग्रहपरक सामग्रीकेँ भाषावैज्ञानिक विवेचनमे परिवर्तित करबाक प्रयास थिक। मूल विषय-सूचीमे व्युत्पत्तिक दृष्टिँ शब्द, उद्गमक दृष्टिँ शब्द, अर्थक दृष्टिँ शब्द, अनेकार्थक शब्द, स्वार्थक शब्द, पर्यायवाची शब्द, शब्द-निर्माणक प्रक्रिया, वैकल्पिक शब्द, मानकीकरणक समस्या, संक्षिप्त शब्द, उपसर्ग-प्रत्यय, ध्वनि-विचार, स्वरध्वनि, ह्रस्वतर स्वर, व्यंजनध्वनि, संयुक्त व्यंजन, शब्दमे वर्ण-संख्या, ध्वनि परिवर्तन, अर्थ-परिवर्तन आ निष्कर्षक उल्लेख अछि।

१०.१ शब्दोत्पत्ति आ अर्थ-सम्बन्ध

व्यवसायिक शब्दमे देशज ध्वनि, पड़ोसी भाषा-संपर्क, प्राचीन शब्दक परिवर्तित रूप आ शिल्पक नवा व्यवहारसँ उत्पन्न नाम—सभ प्रकारक इकाई सम्भव अछि। मुदा कोनो शब्दकेँ केवल ध्वनि-साम्य पर संस्कृत, हिन्दी, बंगला अथवा फारसी-मूलक कहब पर्याप्त नहि। ऐतिहासिक साक्ष्य, पुरान प्रयोग आ क्षेत्रीय वितरण चाही। बहुअर्थकता आ पर्यायवाची सम्बन्धमे सेहो अर्थक सन्दर्भ निर्णायक अछि: एक औजारक नाम अलग क्षेत्रमे अलग वस्तु लेल प्रयोग होय सकैत अछि।

रूढ़, यौगिक आ योगरूढ़

पुस्तकक पृ. ३६३ पर लेखक रूढ़, यौगिक आ योगरूढ़ नामक त्रिविध वर्गीकरण प्रस्तुत करैत छथि। रूढ़क अर्थ सामान्य रूपेँ एहन शब्द जेकरा अपन समाज-प्रयोगमे स्वीकृत अर्थ अछि, यौगिकमे अङ्गरूपक संयुक्त अर्थक भूमिका आ योगरूढ़मे संयुक्त रूपसँ उत्पन्न विशेष अर्थक

प्रश्न केन्द्रमे अछि। व्यावसायिक शब्दमे ई वर्गीकरण विशेष महत्त्व रखैत अछि, कारण साधनक आकार वा कार्य सँ बनल नाम कालक्रमेँ विशेष औजारक स्थिर नाम भऽ जाइत अछि।

समीक्षात्मक दृष्टिँ कोनो शब्दकेँ यौगिक बताबैसँ ओकर ऐतिहासिक उत्पत्ति सिद्ध नहि होइत अछि। वर्तमान मैथिलीभाषीक दृष्टिसँ ओकर अङ्ग-भाग स्पष्ट अछि कि नहि, ई पृथक प्रश्न अछि। ई शब्दविज्ञानक जरूरी सावधानी अछि; लेखकक उदाहरणक सन्दर्भमे हर व्युत्पत्ति लेल कालिक प्रमाण अपेक्षित अछि।

पर्याय आ एकार्थता: पृ. ३७४-३७५

पुस्तकक पृ. ३७४-३७५ पर लेखक पर्याय-विचार करैत छथि आ अनेक शब्दसमूहक उदाहरण दैत छथि; तहिना शब्द-निर्माणक प्रक्रियाक वर्णन प्रारम्भ होइत अछि। 'एक वस्तुक अनेक नाम' देखिते 'पूर्ण समानार्थी' कहब उचित नहि, कारण अनेक पर्यायमे प्रसंग, क्षेत्र, कार्यगत विशेषता आ भावक अन्तर रहि सकैत अछि। लेखकक तकनीकी पर्यायक निबन्धन आरम्भिक सामग्री दैत अछि; नवा कोशमे क्षेत्र, वाचक समुदाय, औजारक रूप वा उपयोगक अंतर जोड़ि वर्गीकरण अधिक समर्थ बनत।

एहि प्रश्नक एक प्रायोगिक समाधान अछि जे मुख्य प्रविष्टि सँ सभ प्रचलित पर्यायक ओर संकेत देल जाय, मुदा प्रत्येक रूपकेँ बिनु विवेचन मुख्य रूपमे गुम नहि करल जाय। 'पर्याय' आ 'भिन्न रूप' सभ समय एक नहि: ध्वनिमात्राक फेर-बदल रूपान्तर हो सकैत अछि, जखन कि भिन्न पदार्थ वा उपयोगक अंतर पर्याय-सीमा केँ चुनौती दैत अछि।

शब्द-निर्माण आ तकनीकी रूपक विस्तार

पृ. ३७५ पर लेखक अनेक शब्दक रचना औजारक आकृति, रङ्ग, दन्त, भाग, क्रिया वा पदार्थक विशेषतासँ जोड़ैत छथि। एकर शोधात्मक फल ई अछि जे व्यावसायिक नामकरण आकस्मिक नहि, मानवीय परिचयक वर्ग-निर्माण प्रक्रिया थिक। जे वस्तु दाँतसमान अछि, ओकर नाममे दाँतक समानता आबि सकैत अछि; जे औजारक क्रिया कटबाक अछि, ओहि क्रियासँ सम्बद्ध नाम बनि सकैत अछि। मुदा विशिष्ट शब्दक रचनाक सिद्धि केवल रूपक समानता सँ नहि, प्रचलित अर्थक स्वतंत्र जाँच सँ होएत।

प्रत्यय, लघुता आ बहुरूपता

पुस्तकक पृ. ३८२-३८३ पर लेखक शब्द-निर्माणक रूपांतर, संख्यावाची तथा अन्य बहुप्रयोज्य प्रत्ययक सूचीसँ उदाहरण दैत छथि। एहि अंशकेँ अध्ययनक समय एतबए ध्यान देबाक चाही जे एक प्रत्यय भिन्न-भिन्न शब्दमे समान अर्थ नहि रखि सकैत अछि। कोनो रूप लघुता देत, कोनो समूह-सूचक भऽ सकत, कोनो क्षेत्रीय बोलीक अनुकूल रूपनिर्माण होयत। भाषा-तत्त्वक विस्तारमे संभावित नियम आ विवेचित अपवादक अलग लेखाजोखा आवश्यक अछि।

ध्वनि-विचार आ मानकीकरण

लेखक भिन्न व्यावसायिक नामक क्षेत्रगत उच्चारण, स्वर-व्यञ्जन, संयोग आ ध्वनि-परिवर्तन पर विचार करैत छथि। पुस्तकक पृ. ३९२ पर ध्वन्यात्मक परिवर्तनक उदाहरणक संग अर्थपरिवर्तनक चर्चा अलग खुलैत अछि। संकलित रूपमे भिन्न-भिन्न नाम अछि, मुदा मानक शब्द लिखबाक उद्यममे जीवित उच्चारणकेँ विलोपित करब लोकसाक्ष्यकेँ क्षति पहुँचाओत। उपयुक्त कोशमे मूल लिखित रूपक संग उच्चारण-रूप, सम्भव हो तँ ध्वनिलिपि, आ क्षेत्र-कोड सुरक्षित रहबाक चाही।

प्रत्येक क्षेत्रीय रूपकेँ लेखनत्रुटि कहब उचित नहि। कतेको स्वर-परिवर्तन जीवित भाषिक परम्पराक नियत व्यवस्था दर्शाबि सकैत अछि। एकर जाँच लेल एक शब्दक भिन्न रूप मात्र नहि, समान ध्वनिक परिवर्तन अनेक शब्दमे नियमित रूपेँ होइत अछि कि नहि, तकर तुलनात्मक परीक्षण जरूरी अछि। लेखकक दृष्टिसँ संग्रहित उदाहरण ई परीक्षणक सामग्री बनैत अछि।

अर्थ-विस्तार, अर्थ-संकोच आ अथदिश

पुस्तकक पृ. ३९२-३९३ पर लेखक अर्थ-विस्तार, अर्थ-संकोच आ अथदिशक विवरण दैत छथि। पेशागत शब्द अर्थपरिवर्तनक सशक्त उदाहरणक क्षेत्र अछि, कारण औजारक नव बनावट, पुरान वस्तुक कम प्रयोग अथवा एकहि नामक नव उद्योगमे प्रयोग अर्थ-सीमा बदल सकैत अछि। जखन शब्द पहिने व्यापक पदार्थ लेल प्रयुक्त हो आ बादमे मात्र विशेष उपकरण लेल, तँ अर्थ-संकोचक सम्भावना उठैत अछि; उलटा स्थितिमे अर्थ-विस्तारक। मूल उदाहरणक आन्तरिक कालक्रम सँ सत्यापन बिना ई प्रक्रिया प्रत्येक रूप पर लागू नहि करबाक चाही।

सातम अध्यायक मूल उपलब्धि ई जे ओ व्यवसायिक शब्दसम्पदाक सूचिकेँ भाषिक घटना बनाक पढ़ैत अछि। तथापि कोनो शब्दक व्युत्पत्ति, बहुअर्थता अथवा मानकीकरणक अन्तिम

निर्णय लेल दिनांकित ऐतिहासिक प्रयोग आ क्षेत्रीय साक्ष्यक मिलान अनेक ठाम आवश्यक रहैत अछि।

११. उपसंहार (पृ. ३९४-३९७)

लेखकक स्वकीय निष्कर्षक सूक्ष्म पाठ

पुस्तकक पृ. ३९४-३९५ पर लेखक स्पष्ट करैत छथि जे विषयक विस्तार अत्यन्त व्यापक अछि आ प्रस्तुत पोथीमे सबै सम्भव पेशा, सबै शब्दक पूरा विस्तार समाहृत नहि भऽ सकल अछि। तकर बावजूद ओ विभिन्न व्यवसायीक आधार-सामग्री, औजार, उत्पादन, कार्य-विभाजन आ गुण-दोष बताबैला शब्दक संकलनकेँ महत्त्वपूर्ण मानैत छथि। ई आत्ममूल्यांकन पढला पर पोथीक उचित प्रतिपादन 'अन्तिम सर्वसमावेशी कोश' नहि, 'प्रारम्भिक व्यवस्थित शोध-आधार' रूपमे करब चाही।

पृ. ३९५ पर लेखक श्रमक बदलैत साधन, यंत्रीकरण, पुरान औजारक घटैत उपयोग आ परम्परागत शब्दक लोपक आशंका उपस्थित करैत छथि। कतेको पेशामे नव उत्पादनक संग नवा शब्द आबि रहल अछि, एहन सामाजिक परिवर्तनक संकेत भेटैत अछि। एतय भाषिक परिवर्तन 'शब्दक गलती' नहि; श्रमक पदार्थ आ उपयुक्त साधन बदलनाय तकर एक कारण अछि। ई निष्कर्ष भाषा-इतिहासक अत्यन्त प्रासंगिक प्रश्न उठबैत अछि: जे पुरान पद तकनीकी ज्ञानक संग लुप्त होइत अछि, ओकरा पाठ-आधारित साक्ष्यमे कोना सुरक्षित राखल जाय?

१२. परिशिष्ट: समुदाय-सूची, लोकोक्ति आ ग्रन्थक सूची (पृ. ३९८ सँ)

परिशिष्टक प्रथम भाग “मिथिलाक पारम्परिक व्यवसायी जाति सम्बन्धी शब्द-सूची” (पृ. ३९८) अछि। दोसर “व्यवसायी जाति सम्बन्धी कतिपय लोकोक्ति” (पृ. ४०२) तथा तेसर “अधीत ग्रन्थक सूची” (पृ. ४०४) रूपेँ विषय-सूचीमे अंकित अछि। समुदायनामक सूची मुख्य लेखमे आएल सामाजिक श्रेणीक पारस्परिक सन्दर्भ लेल सहायक अछि, जखन कि लोकोक्ति व्यवहारक अर्थ-संकेत आ समाजक मूल्यांकनक अलग स्तर देखबैत अछि।

परिशिष्टक समाजभाषिक महत्त्व: नामसूची आ लोकवचन

पुस्तकक पृ. ३९८-४०१ पर व्यवसायी जातिसँ सम्बद्ध नामक सूचीमे स्त्रीलिंग, उपजाति अथवा स्थानीय उपाधि, मूल नाम, विशिष्ट देवता आदि क्षेत्रक संकेत देखल जा सकैत अछि।

उदाहरणार्थ पृ. ३९८ पर कलवार, कसेरा, कानू, कुम्हार, कुरेढ़ी, गरेड़ी, चमार आ पृ. ४००-४०१ पर पटवा, पासी, बरई, बरही, मल्लाह, माली, लहेरी, लोहार, सूड़ी, सोनार, हलुआइ आदि नाम पाओल जाइत अछि। किछु प्रविष्टिमे एक नामक अनेक प्रचलित उपनाम दर्ज अछि। एहन तथ्य समुदाय-नामक सामाजिक विस्तार दर्शबैत अछि, मुदा प्रत्येक नाम वर्तमान सर्वमान्य सामाजिक आत्मपरिचय अछि, एहन निष्कर्ष नहि।

परिशिष्ट (ख) मे व्यावसायी जातिसँ सम्बद्ध लोकोक्तिक सामग्री (पृ. ४०२ सँ) समाजक व्यवहारिक दृष्टिक शब्दीय साक्ष्य अछि। लोकवचनमे प्रशंसा, व्यंग्य, आलोचना आ रुढ़ि एकहि संग समाहित भऽ सकैत अछि। लोकक कहबीकँ बिना समीक्षा ऐतिहासिक तथ्य अथवा वर्तमान नीति बनायब उचित नहि; जे कथन लोकभाषामे भेटैत अछि ओ तत्कालीन मूल्यांकनक संकेत हो सकैत अछि, वास्तविक समुदायकँ परिभाषित करबाक वैध आधार नहि।

“अधीत ग्रन्थक सूची” पृ. ४०४ सँ प्रारम्भ होइत अछि। पृ. ४०४-४०५ पर संस्कृत-प्राकृत, हिन्दी आ मैथिलीक सन्दर्भ भेटैत अछि; सूची तकर बादो जारी अछि। ई सन्दर्भ-विन्यास ग्रन्थक शब्दसंग्रहकँ व्यापक भाषिक आ साहित्यिक परम्परासँ जोड़ैत अछि।

परिशिष्टक उपयुक्त नवा सम्पादकीय प्रस्तुति

भविष्यक संस्करणमे मुख्य कोशीय प्रविष्टि आ परिशिष्टक समुदाय-नाम बीच द्विदिशी संकेत देल जा सकैत अछि। उदाहरणार्थ एक कारीगर-नाम सँ सम्बन्धित औजार, पदार्थ, क्रिया आ उत्पाद धरि पहुँच हो; विपरीत दिशा मे कोनो औजार सँ हुनकर समस्त अलग-अलग प्रयोगकर्ता पेशाक नाम धरि पहुँचल जा सकय। एहि व्यवस्था सँ जाति-केंद्रित सीमाक पुनरुत्पादन कम होयत आ वस्तु-केंद्रित अध्ययन सहज बनत।

सन्दर्भित लोकोक्तिक समालोचनात्मक अनुक्रमणिका अलग सँ बनाओल जाय, जाहिमे अर्थ, प्रसंग, सम्भावित पक्षपात, भाषिक अलंकार आ स्रोत अंकित होय। लोकवचनक पुनर्प्रकाशन सामाजिक सम्मानक कसौटी पर जिम्मेदारी सँ करबाक चाही; बिना प्रसंगक अपमानजनक वाक्य पाठककँ भ्रमित कऽ सकैत अछि।

१३. अध्यायवार तुलनात्मक सारणी

अध्याय / पृष्ठ	प्रधान पदार्थ अथवा क्षेत्र	शब्दवैज्ञानिक केन्द्र
प्रथम, ५५	सामाजिक आ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	व्यवसाय, जाति, साहित्य, वर्गीकरण
द्वितीय, ६५	काठ-बाँस	पदार्थ, काटाइ, औजार, वस्तु-निर्माण
तृतीय, १३३	माटि-पानि	मृद्भाण्ड, जल-यातायात, माछ, मखान
चतुर्थ, १९५	तूर-सूत	चरखा, ताना-बाना, करघा, वस्त्र
पंचम, २४३		लोहार, कसेरा, सोनार; शिल्प-क्रिया
षष्ठ, ३०१	विविध व्यवसाय	खाद्य, तेल, चर्म, टोकरी, अन्य
सप्तम, ३६३	भाषाविज्ञान	व्युत्पत्ति, अर्थ, ध्वनि, मानकीकरण

१४. ग्रन्थक समीक्षात्मक मूल्याङ्कन

ग्रन्थक तीन विशिष्ट उपलब्धि अछि: भिन्न उत्पादन-क्षेत्रक तकनीकी शब्दसम्पदाक व्यवस्थित संकलन, कारीगरक भाषाकेँ सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमिसँ जोड़बाक प्रयास आ एहि शब्दसंग्रहक भाषातात्त्विक विवेचन। एकर सीमासभ सेहो विचारणीय अछि: संग्रहक अपूर्णता लेखक स्वयं स्वीकार करैत छथि; स्थानीय रूपक प्रमाण आ प्रसार समान रूपसँ सुनिश्चित नहि; आ ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यक पुष्टिक लेल क्षेत्रीय आ कालिक तुलनात्मक अध्ययन चाही। एहि उपलब्धि आ सीमा दुनूकेँ संग देखला पर ग्रन्थक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

आलोचनात्मक प्रश्न

कोन-कोन शब्दक संग भौगोलिक उपभाषा, वक्ता आ संकलन-वर्ष स्पष्ट रूपसँ उपलब्ध अछि?

शब्दक एकहि रूप विभिन्न व्यवसायमे समान अर्थमे प्रयुक्त अछि कि अर्थांतरित?

संकलित शब्दक सामाजिक वितरण कतबा व्यापक अछि, आ कतए केवल व्यक्तिगत/स्थानीय प्रचलन अछि?

मुख्य पदार्थ-आधारित अध्याय आ “अन्य व्यवसाय” अध्यायक असमान विस्तारकेँ कोना पढ़ल जाय?

वर्तमान कालमे व्यवसाय बदलबाक प्रक्रिया आ कारीगरक नवा उपकरणक शब्दक दस्तावेजीकरण कोना हो?

१५. अग्रिम अनुसन्धानक दिशा

एहि ग्रन्थपर आधारित समालोचनात्मक शब्दकोशमे प्रत्येक प्रविष्टिक संग मूल शब्द, उच्चारण, वैकल्पिक रूप, पद-भेद, अर्थ, व्यवसाय, वस्तु-औजार-क्रिया-उत्पादक वर्ग, क्षेत्र आ सूचनादाता, ग्रन्थक पृष्ठ-सन्दर्भ तथा वस्तु वा क्रियाक प्रमाणित दृश्य अथवा ध्वनि जोड़ल जाय तँ अर्थनिर्णयक अनेक कठिनाइ घटि सकैत अछि। ई व्यवस्थित प्रारूप संकलित शब्दक परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट करबाक सम्भावना रखैत अछि।

अगिला चरणमे सामग्री-आधारित तुलनात्मक अनुक्रमणिका, प्रत्येक अध्यायक प्रविष्टि-गणना, स्त्री-पुरुष कार्य-विभाजनक क्षेत्रसर्वेक्षण, समान शब्दक अन्तरव्यावसायिक अर्थ तथा भाषासंपर्कक स्वतंत्र प्रमाण-समीक्षा कएल जाय। जाति-आधारित पूर्वनिर्धारित निष्कर्षक बदला स्वयं कारीगरक कथन, साधनक प्रत्यक्ष निरीक्षण आ स्थानिक आर्थिक इतिहासकेँ प्राथमिक साक्ष्य बनाओल जाय।

पर्याय आ भिन्न उच्चारणक निष्पक्ष सम्पादन

मूल अध्यायसभमे लेखक अनेक ठाम 'फलाँ/फलाँ' भिन्न रूप लिखैत छथि। ई रूप कखनो-कखनो केवल उच्चारण-भेद, कखनो पर्याय, कखनो वस्तुक भेद आ कखनो भौगोलिक रूपक अन्तर हो सकैत अछि। एक लेख्यरूप चुनि बाकी सभ हटायब भाषिक अपव्यय अछि। हर रूपक संग 'कहाँ', 'केँ', 'कोन अर्थमे' आ 'कोन औजार वा कामक संदर्भमे' चार प्रश्न अनिवार्य राखल

जाए। अस्पष्ट प्रमाणक लेल 'असत्यापित' सूचक राखब अनुमानें अर्थ बना देबाक अपेक्षा वैज्ञानिक रूपें अधिक उचित अछि।

वस्तुक दृश्य अभिलेख आ मौखिक साक्ष्य

काठक रन्दा, कपड़ाक करघा, लोहारक पिटबाक औजार अथवा पासीक रस उतरबाक पात्रक बनावट देखनहि तकनीकी अर्थक सूक्ष्म भेद बुझब कठिन अछि। एकर विस्तारित अध्ययनमे वस्तुक माप, कारीगरक कथन, कामक क्रमक दृश्य अभिलेख आ स्थानीय उच्चारणक ध्वनि-संग्रह जोड़लापर शब्दक अर्थ आ कार्यक सम्बन्ध बेसी स्पष्ट भऽ सकैत अछि।

१६. निष्कर्ष

डॉ. योगानन्द झाक “मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायिक शब्दावली” मैथिलीभाषी क्षेत्रक श्रम, पदार्थ, उत्पादन आ सामाजिक व्यवहारक बीच विकसित विशेष शब्द-संसारकेँ व्यवस्थित करबाक उल्लेखनीय प्रयत्न अछि। एकर मूल शक्ति शब्दकेँ लोकजीवनसँ पृथक नहि करबाक प्रवृत्तिमे अछि। काठ-बाँससँ माटि-पानि, सूत, धातु आ विविध पेशा धरि फैलल वर्गीकरण शब्दार्थक संग तकनीकी क्रिया-संरचना सेहो दर्ज करैत अछि। सप्तम अध्यायक भाषातात्त्विक चर्चा एहि सामग्रीकेँ व्यापक भाषा-अध्ययनसँ जोड़ैत अछि।

समालोचनात्मक दृष्टिँ ग्रन्थकेँ स्थानीय ज्ञानक मूल स्रोत मानि, मुदा प्रत्येक समाजभाषिक सामान्यीकरणकेँ स्वतंत्र प्रमाणक कसौटी पर राखि, अध्ययन करबाक चाही। ई पुस्तक मैथिलीक व्यावसायिक शब्द-इतिहास, पारम्परिक शिल्पज्ञान आ शब्दकोश-विकास लेल आधारभूत सामग्री उपस्थित करैत अछि।

अध्याय 09 / २०१०

कथा-लोककथा

डॉ. योगानन्द झाक कृतिक आलोचनात्मक विवेचन

‘कथा-लोककथा’ डॉ. योगानन्द झाक मैथिली गद्यक एहन संग्रह थिक जाहिमे एकहि जिल्दक भीतर समकालीन सामाजिक-राजनीतिक कथा, भारतीय भाषाक साहित्यसँ अनूदित संक्षिप्त आख्यान आ लोकविश्वासपर आधारित कथा एकत्र भेल अछि। मूल प्रकाशकीय पृष्ठपर २०१० ई. प्रकाशन-वर्ष, प्रकाशक ‘मिथिला रिसर्च सोसाइटी’, कबिलपुर-लहेरियासराय, दरभंगा; पाँच सय

प्रति; मूल्य एक सय टाका आ मुद्रक शेखर प्रकाशन, पटनाक उल्लेख भेटैत अछि। ई विवरण बाहरी अनुमान नहि, ग्रन्थक अपन प्रकाशकीय प्रमाण थिक। मूल पृ. ३०क लेखक-हस्ताक्षरित समापनमे २२ मई २०१०क तिथि अछि। [मूल आरम्भिक प्रकाशकीय पृष्ठ; पृ. ३०]

पुस्तकक कथाक्रम अपन वर्गीकरण स्पष्ट करैत अछि। ‘मौलिक’ अन्तर्गत ‘शास्त्र-चिन्ता’ (३५), ‘फैंसला’ (४१), ‘सपनाक डाक’ (५०); ‘अनूदित’ अन्तर्गत ‘स्वाभिमानक मार्ग’ (५७), ‘अपन-अपन पानि’ (५९), ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ (६१), ‘अभिनन्दन ग्रन्थ’ (६२), ‘दुर्लभ सत्यनारायण पूजा’ (६३); आ ‘लोकवृत्तात्मक’ अन्तर्गत ‘धानक हड़ुड़ी’ (६५), ‘सात बहिन’ (७०) आ ‘बेनीराम’ (७७) अछि। अन्तमे ‘कबिलपुरक संक्षिप्त कुलीननामा’ पृ. ८९ सँ आरम्भ होइत अछि। एहि तरहें मूल पुस्तकक एगारहू कथाक अध्ययन एतय स्वतंत्र रूपसँ कएल गेल अछि। [मूल पृ. ३१, विषय-सूची]

मूल प्रति छायाप्रतिकृति अछि; ओकर कोनो खोजयोग्य पाठ-स्तर उपलब्ध नहि अछि। ताहि कारणें अध्ययन कथाक छविमे दृष्टिगोचर पाठ, शीर्षक, पादटिप्पणी आ अनुच्छेदक क्रम पर आधारित अछि। जकर सत्यापन केवल बाह्य प्रमाणसँ सम्भव होइत, तेकरा बाह्य प्रमाणक रूपमे पृथक् राखल गेल अछि। कथाक पात्र, समय, घटना वा रचनाक प्रेरणाक सम्बन्धमे एहन तथ्य नहि जोड़ल गेल अछि जकर साक्ष्य एहि स्रोतमे नहि भेटैत अछि। कथाक अर्थ-संकेत आ मूल्याङ्कन समीक्षकक व्याख्या छथि, मूल लेखकक प्रत्यक्ष कथन नहि।

‘कथा’ आ ‘लोककथा’क एकत्रीकरण पुस्तकक मूल आलोचनात्मक समस्या सेहो थिक। मौलिक कथा व्यक्तिगत अनुभव, संस्थागत दबाव आ समकालीन समाजक द्वन्द्वकें रूप दैत अछि; अनूदित लघुकथाक संरचना छोट, लक्ष्य स्पष्ट आ अन्त प्रायः सूक्ति-जकाँ अछि; लोकवृत्तात्मक कथा सामूहिक स्मृति, लोकनैतिकता आ आस्थाक प्रतीक पर निर्भर अछि। एकरे खातिर तीनू प्रकारक रचनाकें एकहि कलात्मक कसौटी पर नापब अनुचित होयत। एहि भिन्नताक सम्मान कएने बिना संग्रहक उपलब्धि आ सीमाक समुचित निर्णय सम्भव नहि।

२. प्रस्तावना, प्राक्कथन आ मैथिली कथा-आन्दोलनक अभिलेख

संग्रहक आरम्भमे ‘समर राति दीप जरयः मैथिली कथा लेखनक क्षेत्रमे शान्त क्रान्ति’ शीर्षक विस्तृत आलेख अछि। एकरा डॉ. योगानन्द झाक व्यक्तिगत रचनाकथा मानब गलत होयत; ई मैथिली कथाकारक सार्वजनिक भेटघाट, कथा-पाठ आ संवादक एक कार्यक्रमक क्रम-विकासक

दस्तावेज सेहो थिक। लेखमे १९८९क अन्तक योजना, १९९०क प्रथम आयोजन, २००४क पचासम कार्यक्रम तथा बादक उपक्रम सभक चर्चा अछि। कार्यक्रमक साहित्यिक प्रयोजन—नव लेखककें कथा सुनयबाक अवसर, कथा पर तत्काल प्रतिक्रिया, साहित्यिक सम्पर्क आ भाषाक सार्वजनिक प्रयोग—स्पष्ट कएल गेल अछि। [मूल पृ. ५-१२]

एहि आयोजनक वैशिष्ट्य लेखक वा पाठकक नामक गिनती मात्र नहि; साहित्यक निर्माण-प्रक्रियामे श्रोताक भूमिका अछि। मञ्चपर लिखित कथाक वाचन, सामूहिक प्रतिक्रिया, विचार-विमर्श आ पुनःलेखनक सम्भावना, ई सभ गद्यक सामाजिक जीवनकें देखबैत अछि। मुदा मूल आलेखमे आयोजकक योगदानक प्रशंसात्मक स्वर प्रमुख अछि। ओकर आधारपर कार्यक्रमक समस्त ऐतिहासिक प्रभाव पूर्णरूपेँ प्रमाणित मानब उचित नहि; उपस्थिति-पञ्जी, मूल कार्यक्रम-पत्र, समकालीन समाचारपत्र आ प्रतिभागीक स्वतंत्र साक्ष्य जोड़ल गेलापर ई साहित्येतिहासक आरो ठोस सामग्री बनि सकैत अछि। संग्रहक भीतर उपलब्ध वृत्तान्तकें आयोजकीय साक्ष्यक रूपमे पढ़बाक चाही।

डॉ. रमानन्द झा ‘रमण’क नामसँ प्रकाशित ‘प्राक्कथन’ मे लेखकक रचनाधर्मिताक परिचय लहेरियासराय आ कबिलपुरक साहित्यिक-भौगोलिक परिवेशसँ जुड़ैत अछि। ई प्राक्कथन कबिलपुरक प्राचीन स्थल, स्थानीय मन्दिर, सामुदायिक आयोजन, सार्वजनिक स्मृति आ कतेक लेखक-अध्येता पर रोशनी दैत अछि। कतहु ग्रन्थसूची-जकाँ नाम आ कृतिक क्रम भेटैत अछि, तँ कतहु लेखकक अनुभवसँ निर्मित सामाजिक चित्र। एहि भागक साहित्यिक महत्त्व ई अछि जे कथा-संग्रहकें ओ अपन लेखकीय समाज आ संस्थागत पृष्ठभूमिसँ जोड़ि दैत अछि। [मूल पृ. १३-३०]

प्राक्कथनक विस्तार एक गुण आ एक रचनात्मक असंगति दुनू अछि। गुण ई जे मैथिली साहित्यक संस्थागत आधार, स्त्री-शिक्षा, लोकगायन, पत्र-पत्रिका, नाटक, अनुवाद आ ग्राम्य सांस्कृतिक आयोजनक अनेक संकेत एकहि ठाम सुरक्षित छथि। असंगति ई जे कथाक मूल रचना धरि पहुँचबाक पहिने पाठककें दीर्घ क्षेत्रीय साहित्य-वृत्तान्त पढ़य पड़ैत अछि; एतयसँ पुस्तकक आरम्भिक गति कथाक अपेक्षा संस्थागत इतिहासक दिशामे मुड़ि जाइत अछि। तथापि अध्ययनक दृष्टिँ ई सामग्री उपेक्षणीय नहि, कारण एहि सँ लेखकक लोकसाहित्य-संकलनक वैचारिक धरातल स्पष्ट होइत अछि।

पृष्ठ २४-२७क विवरणमे स्थानीय लेखक, पत्रिका, अनुवाद, शिक्षण-संस्था आ मैथिली साहित्यिक आन्दोलनक अनेक प्रसंग उल्लेखित अछि। ई सभ दावाक ऐतिहासिक सत्यापन लेल स्वतंत्र अभिलेख चाही; किन्तु संग्रहक आत्मप्रस्तुतिमे ई संकेत महत्त्वपूर्ण अछि। पुस्तक अपन पाठकसँ मात्र कथानक पढ़बाक आग्रह नहि करैत; ओ मैथिली गद्यक सृजन, संकलन, प्रचार आ संरक्षणक एक सामुदायिक प्रयत्नक भीतर अपन स्थान निश्चित करैत अछि। एही दृष्टिसँ ‘कथा-लोककथा’ केँ सृजनात्मक पुस्तकक संग-संग सीमित अर्थमे सांस्कृतिक दस्तावेज सेहो कहल जा सकैत अछि।

३. मौलिक कथा: व्यक्तिगत चेतना सँ सार्वजनिक संकट धरि

३.१ ‘शास्त्र-चिन्ता’: स्वप्न, ग्रन्थ आ राष्ट्रीय असुरक्षाक द्वन्द्व (मूल पृ. ३५-४०)

कथाक प्रारम्भ भयावह स्वप्नसँ होइत अछि। नायकक मनमे राष्ट्र, इतिहास, समाज आ अपन अस्तित्व सम्बन्धी आशंका बारम्बार लौटैत अछि। कथाकार ओकरा कोनो एक आकस्मिक राजनीतिक घटनाक समाचार-सारमे सीमित नहि रखैत छथि; स्वप्नक पृष्ठभूमिमे भौगोलिक सीमा, आन्तरिक विघटन, सामाजिक विभाजन आ सामूहिक सुरक्षा सम्बन्धी आशंका एक-दोसरासँ गुंथल छथि। स्वप्नक बाद नायकक दिनचर्यामे पुस्तक, पत्रिका, धार्मिक पाठ, राष्ट्रीय चिन्ता आ आत्मपरीक्षणक आवागमन देखाइत अछि। एहि मानसिक संरचनाक कारण कथा घटनाबहुल यथार्थवादी आख्यानसँ बेशी विचारप्रेरित आख्यान बनि जाइत अछि। [मूल पृ. ३५-३७]

नायकक आसपास पोथी, गीता, रामायण, शास्त्रीय उद्धरण आ लेखन-सामग्रीक उपस्थिति एक विशेष बौद्धिक व्यक्तित्व गढ़ैत अछि। ओ हिंसा आ अराजकतासँ व्यथित अछि, मुदा मात्र धार्मिक पाठ ओकर बेचैनी शान्त नहि करैत। एतय शास्त्रक ज्ञान, नागरिक कर्तव्य आ रक्षात्मक प्रतिरोध बीच प्रश्न उठैत अछि। मूल शीर्षक ‘शास्त्र-चिन्ता’क भीतर शास्त्र पढ़बाक क्रिया आ जनजीवनमे ओकर प्रयोजनक आलोचनात्मक सम्बन्ध देखल जा सकैत अछि। ई शीर्षक ‘शस्त्र’क प्रत्यक्ष समानार्थी नहि; तथापि कथा आगाँ चलि कए ज्ञानक चिन्ता सँ सुरक्षा-उपाय आ प्रतिरोधक चर्चा दिस मुड़ैत अछि।

अशोक नामक युवकक आगमन कथा लेल निर्णायक मोड़ अछि। प्रारम्भमे ओ गुरुक प्रति श्रद्धा व्यक्त करैत अछि, बादमे राष्ट्रक संकट, निर्बलता, शस्त्ररहित अवस्थाक जोखिम आ अन्याय-

प्रतिरोधक प्रश्न उठबैत अछि। नायक अहिंसा, सत्य, संयम आ नैतिक मार्गक आश्रय लैत छथि, जखन कि अशोक केवल सद्भावना पर्याप्त होयबाक प्रश्न करैत अछि। संवादक भीतर गीता-सन्दर्भ, दण्ड, धर्मरक्षा आ कर्तव्य सम्बन्धी तर्क एना जुड़ैत अछि जे कथा दू दृष्टिकोणक प्रत्यक्ष टकराहट बनि जाइत अछि। [मूल पृ. ३८-३९]

अन्तिम पृष्ठपर नायक अशोकक तर्ककेँ एकरूप अस्वीकार नहि करैत छथि; ओ शास्त्रीय पुस्तक आ राज्य-सुरक्षासँ सम्बन्धित चिन्ताक बीच फेर लौटैत छथि। अन्तमे सामूहिक आक्रमणक आशंकासँ उद्बेलित स्वप्न-दृश्यक पुनरागमन देखाइत अछि। एहि कारण कथा समाधानक स्थिर घोषणा पर नहि, बल्कि भय आ सजगताक संगठित चित्र पर ठहरैत अछि। [मूल पृ. ४०] एतय ‘शान्ति’ आ ‘सुरक्षा’ परस्पर विरोधी नारा नहि, कथाक भीतर संकटग्रस्त मूल्य बनि उठैत अछि।

एहि कथाक शक्ति एक विचारशील व्यक्तिक मानसिक उलझनकेँ संवादक माध्यमसँ रूपायित करब अछि। सीमा ई जे राष्ट्र-समाजक व्यापक संकटक वर्णन अनेक स्थान पर विशिष्ट घटना आ चरित्रक बजाय वाद-विवादक वाक्यमे होइत अछि। अशोक प्रश्नकर्ताक प्रतिनिधि बनि उठैत अछि, ओकर स्वतंत्र जीवन-संसार बहुत कम उभरैत अछि। कथाक वैचारिक उग्रता पर सहमति देब अनिवार्य नहि; आलोचनात्मक दृष्टिसँ उल्लेखनीय बात ई थिक जे लेखक शास्त्रीय नैतिकताक सामु तत्काल सामाजिक संरक्षणक प्रश्न उपस्थित करैत छथि। पादटिप्पणीमे एहि कथाक २००२क एक पूर्व प्रकाशनक उल्लेख भेटैत अछि; अतः २०१०क संग्रह-प्रकाशनकेँ रचना-काल मानब गलत होयत। [मूल पृ. ४०, पादटिप्पणी]

३.२ ‘फैसला’: दफ्तर, न्याय, परिवार आ सत्ता-दबाव (मूल पृ. ४१-४९)

‘फैसला’क आरम्भ ‘गोपनीय’ लिखल लिफाफा आ कार्यालयीय प्रतिवेदनसँ होइत अछि। ई आरम्भ कथाक केन्द्रमे सूचना आ निर्णायक अधिकारक सम्बन्ध स्थापित करैत अछि। सरकारी पदाधिकारी राघवजीक निजी आवास, पत्नी जमुनी देवी, पढ़ल-लिखल सन्तान आ सामाजिक प्रतिष्ठाक विवरणसँ एक एहन परिवारक चित्र बनैत अछि जकर आर्थिक सुरक्षा आ सामाजिक सम्मान प्रशासनिक पदसँ जुड़ल अछि। बाहरसँ स्थिर देखाइत एहि घरक भीतर राघवजीक मन एक निर्णायक कारण विचलित अछि। कथाकार घरेलू संवादकेँ कार्यालयीय दायित्वक समानान्तर राखैत छथि। [मूल पृ. ४१-४४]

जमुनी देवीक भूमिका सजावटी पात्रक नहि। ओ पतिक अन्यमनस्कता देखि कारण पुछैत छथि, परिवारक आवश्यकता, बाल-बच्चाक भविष्य आ नौकरीक सुरक्षाक तर्क सोझाँ रखैत छथि। राघवजीक मानवीय कर्तव्यबोध आ जमुनी देवीक व्यवहारिक चिन्ता बीच टकराव बनेल अछि। एहि टकरावमे स्त्री-पात्रकें केवल नैतिक अज्ञानक प्रतीक बना देब उचित नहि होयत: ओकर भय सामाजिक आश्रितता आ परिवारक जीविकाक यथार्थसँ उपजैत अछि। तैयो कथा निर्णयक प्रमुख अधिकार पुरुष पदाधिकारी लग राखैत अछि, जकर कारण जमुनीक स्वतन्त्र सामाजिक दृष्टि आ विस्तार पा सकैत छल।

मलापुरक मन्दिर, महन्थ, स्थानीय लोग, जमीन आ प्रदर्शनक प्रसंगक प्रवेशसँ कथाक निजी दुविधा राजनीतिक-प्रशासनिक प्रश्न बनि जाइत अछि। जमीनक दावा, ग्रामीण विरोध, पुलिसक कार्रवाइ, जनसमूहक क्षति आ राजनीतिक दबावक परत सभ एक-दोसरासँ सम्बद्ध होइत अछि। पृष्ठ ४६-४९मे प्रशासनिक प्रतिवेदन तैयार करबाक परिस्थिति, स्थानीय प्रभुत्वक अन्तर्विरोध आ सत्ताक विभिन्न स्तरसँ होइत हस्तक्षेप देखल जा सकैत अछि। ई केवल 'एकटा बुरा अधिकारी'क कथा नहि; व्यवस्था एना गठित अछि जे तथ्यक भाषा, राजनीतिक लाभ आ करियरक भय एकहि निर्णयकें अलग-अलग दिशामे खींचैत अछि।

कथाक शीर्षक 'फैंसला' एक स्पष्ट नैतिक निष्कर्षक अपेक्षा जगबैत अछि, मुदा वास्तविक कथावस्तु निर्णयक प्रक्रियामे उपस्थित दबावकें बेसी महत्त्व दैत अछि। अधिकारीक लिखित प्रतिवेदन, ओकरा उचित ठहरयबाक प्रयास आ राजनीतिक सम्पर्कक आगाँ विवशता कथा-अन्त धरि बनेल रहैत अछि। एहि कारण अंतिम घटनाकें बिना अतिरिक्त प्रमाण 'व्यवस्थाक सुधार' वा 'पूर्ण न्याय' घोषित नहि कएल जा सकैत अछि। पात्रक भीतर उठैत सवाल आ ओकर कृतीक बीच रहि गेल दूरी स्वयं कथाक आलोचनात्मक अर्थ अछि। [मूल पृ. ४५-४९]

कथाशिल्पक दृष्टिँ गोपनीय कागज, पत्नी-संवाद, प्रशासनिक स्मृति, प्रतिवेदन आ भीड़-प्रदर्शनक दृश्य कथा-गतिक मुख्य आधार छथि। संवाद पृष्ठभूमिक सूचना देबाक काम करैत अछि, यद्यपि कतहु पात्र अपन स्वाभाविक जीवनक अपेक्षा लेखकक नैतिक तर्क प्रस्तुत करैत प्रतीत होइत छथि। पुस्तकक पहिल मौलिक कथा जे राष्ट्रीय संकटक अमूर्त भावभूमिमे चलैत छल, तकर तुलना मे 'फैंसला'क सामाजिक संकट अपेक्षाकृत ठोस अछि: पद, कागज, जमीन,

मन्दिर, भीड़ आ सत्ता-सूत्रक मार्फत। मूल पादटिप्पणीमे २००३क पूर्व प्रकाशन दर्ज अछि; ई रचनाक संग्रहमे पुनर्स्थापनक प्रामाणिक संकेत थिक। [मूल पृ. ४९, पादटिप्पणी]

३.३ ‘सपनाक डाक’: भूमिसम्बन्धी अभिलेख आ ग्रामीण असुरक्षा (मूल पृ. ५०–५४)

‘सपनाक डाक’क केन्द्रीय पात्र सुखलाल छथि। आर्थिक अस्थिरता, गामसँ जुड़ाव आ पैतृक जमीनक प्रति अपनत्वक भाव ओकर जीवनमे आधारक काम करैत अछि। कथा साक्ष्य दैत अछि जे जमीनक सामाजिक स्मृति आ कानूनी कागज दुई अलग चीज भऽ सकैत अछि। सुखलालक परिवारक दीर्घकालीन भोग-दखल वा पूर्वजक नामक स्मरण ओकरा मानसिक निश्चितता दैत अछि, मुदा सरकारी अभिलेखक अभाव ओकर अधिकारकें अस्थिर बनबैत अछि। कथाक आरम्भिक प्रसंगमे ग्रामीण सम्बन्ध, पुरान परिचय आ सामाजिक प्रतिष्ठाक बीच जमीन-प्रश्न धीरे-धीरे विकट होइत अछि। [मूल पृ. ५०–५२]

मोहनक आगमनसँ जमीनक नाप, खरीद-बिक्री आ दाखिल अभिलेखक उलझन स्पष्ट होइत अछि। दफ्तरमे दर्ज नाम, फर्जी कागजक आशंका, मौखिक अधिकारक दावेदारी आ भूमि-लेनदेनसँ जुड़ल व्यक्ति सभ कथाक तनाव बढ़बैत अछि। सुखलालक भय केवल धन गमाबयक नहि, पीढ़ीक स्मृति आ घरक आधार छिनायबाक भय अछि। एहि मानसिक तनावमे ‘सपना’ साधारण नीन्दक घटना नहि; ग्राम्य समाजक असुरक्षाक साहित्यिक रूप बनैत अछि। [मूल पृ. ५२–५३]

कथाक अन्तिम खण्डमे बेचैन सुखलाल जमीनकें बचेबाक लेल कार्यालय आ कागजक संसारमे फँसल देखाइत अछि। जागरण आ स्वप्नक सीमा धुँधल होइत अछि; अन्तमे गामसँ जुड़ल विनाशकारी स्वप्न-दृश्य ओकरा विचलित करैत अछि। एहि प्रकार कथाकार जमीनक विवादक सम्पूर्ण न्यायिक समाधान देबाक अपेक्षा ओकर मनोवैज्ञानिक परिणामक चित्र गढ़ैत छथि। शीर्षकक ‘डाक’कें एतय संकट-सूचनाक रूपकक तौरपर पढ़ल जा सकैत अछि, मुदा एकरा वास्तविक डाक-प्रणालीक कथानक मानब उचित नहि। [मूल पृ. ५३–५४]

‘फँसला’ आ ‘सपनाक डाक’कें एकसाथ पढ़लासँ प्रशासनिक कागजक दू रूप देखाइत अछि: एकठाम पदाधिकारी कागजक निर्णयकर्ता अछि, दोसरठाम साधारण ग्रामीण कागजक अभावक भुक्तभोगी। एहि दोहरी रचनासँ संग्रहमे राज्य, कानून आ नागरिकक सम्बन्धक एक अनौपचारिक आलोचना निकलैत अछि। ‘सपनाक डाक’क शिल्प संक्षिप्त अछि आ कथानक

स्पष्ट प्रकारँ सुखलालक बेचैनीक ओर मुड़ैत अछि। सीमा ई जे भूमि-अधिकारक विधिक जटिलताक सूक्ष्म प्रक्रिया प्रदर्शित नहि; लेखकक अभिप्राय साहित्यिक अनुभूति रचब अछि, कचहरीक प्रक्रियाक विवरण देब नहि। एहि कथाक २००३क पूर्व प्रकाशनक उल्लेख मूल पादटिप्पणीमे अछि। [मूल पृ. ५४]

४. अनूदित कथा: लघु आख्यानक भीतर नैतिक तर्क

अनूदित खण्डमे पाँच रचना अछि। एहि पाँचूँ डॉ. योगानन्द झाक स्वतन्त्र मौलिक कथा मानि साहित्येतिहास लिखब तथ्यगत भूल होयत। मूल पादटिप्पणी अनुसार ‘स्वाभिमानक मार्ग’ आ ‘अपन-अपन पानि’ डॉ. श्रीमती मिथिलेश कुमारी मिश्रक हिन्दी लघुकथा-संग्रह ‘छँटता कोहरा’ सँ भाषान्तरित अछि। शेष तीन लघुकथाक पादटिप्पणीमे हुनके संस्कृत लघुकथा-संग्रहसँ भाषान्तरणक संकेत भेटैत अछि। कतेको कथा पुस्तकमे आवयसँ पूर्व मैथिली पत्रिकामे प्रकाशित भेल छल, जकर सूचना सेहो पादटिप्पणीमे अछि। एहि समीक्षा लेल मूल हिन्दी आ संस्कृत पुस्तकक समानान्तर पंक्ति-पंक्ति पाठ उपलब्ध नहि अछि; एही हेतु अनुवादक स्रोत-निष्ठा वा मूलसँ विचलनक निर्णायक दावा नहि, बल्कि उपलब्ध मैथिली अनूदित पाठक साहित्यिक क्रियाक विश्लेषण कएल गेल अछि। [मूल पृ. ५८, ६०-६३, पादटिप्पणी]

४.१ ‘स्वाभिमानक मार्ग’: सुविधा बनाम आत्मसम्मान (मूल पृ. ५७-५८)

कथामे परीक्षा वा चयन-प्रक्रियाक सन्दर्भमे किछु युवकक परस्पर संवादक माध्यमसँ अवसर, आरक्षण, पात्रता आ स्वाभिमानक प्रश्न उठैत अछि। एक वक्ता सुविधा लएबाक सम्भावना देखबैत अछि, जखन कि दोसर पात्र अपन प्रतिभा आ श्रमक भरोसापर चयन प्राप्त करबाक बात करैत अछि। कथाक अन्तिम कथन स्वाभिमान आ आत्मप्रयासकें प्रमुख नैतिक मूल्य बनबैत अछि। एतय पात्रक विस्तृत पारिवारिक वृत्तान्त नहि देल गेल अछि; कथाक ऊर्जा छोट-छोट संवाद आ एक निर्णायक स्वरतक सीमित अछि। [मूल पृ. ५७-५८]

रचनाक साहित्यिक प्रभाव कथाकार द्वारा बनाओल विरोधमे अछि: बाहरी अवसरक लाभ आ अपन श्रमपर नैतिक भरोसा। तथापि ई विरोध सामाजिक नीति सम्बन्धी सम्पूर्ण तर्क नहि बनैत। आरक्षणक ऐतिहासिक कारण, अवसरक संरचनात्मक असमानता आ विभिन्न समुदायक अनुभवक विवेचन एहि लघुकथामे नहि अछि। ताहि कारण रचनाक पात्रक दृष्टिकोणकें एक साहित्यिक स्वाभिमान-बोधक रूपमे पढ़ब अधिक युक्तिसंगत अछि; ओकरा

भारतीय समाजक समस्त अवसर-वितरण पर अन्तिम नीति-निर्णय बना देब पाठसँ अधिक निष्कर्ष काढ़ब होयत।

मैथिली भाषान्तरक प्रभाव संवादक तत्परता, प्रश्नोत्तरक गति आ छोट अन्तिम कथनसँ पैदा होइत अछि। हिन्दी मूलक उपलब्धता बिना शब्दानुवाद आ भावानुवादक विस्तृत तुलना सम्भव नहि; मुदा उपलब्ध मैथिली पाठमे कथ्यक केन्द्र भाषिक अस्पष्टता बिना सोझाँ अबैत अछि। एहि प्रकार ई खण्डक अन्य सूक्तिमूलक कथाक भाँति नैतिक विकल्पक एक लघु दृश्य प्रस्तुत करैत अछि।

४.२ ‘अपन-अपन पानि’: प्राकृतिक संसाधन पर अधिकारक प्रश्न (मूल पृ. ५९-६०)

एक ऋषिक आगमन, राजाक कृती आ जलक उपयोगसँ जुड़ल प्रश्न एहि लघुकथाक मुख्य साधन छथि। राजसत्ता जल-वितरणकेँ अपन निर्णयक विषय मानैत अछि, मुदा ऋषि आनल जल आ प्राकृतिक जल बीच भेद स्पष्ट करबैत छथि। कथा तकरा मार्फत प्रश्न उठबैत अछि जे मनुष्यक जीवनाधार बनयवला प्राकृतिक संसाधन पर विशिष्ट व्यक्ति वा शासकक नैतिक अधिकार कतेक धरि मानल जा सकैत अछि। अन्तमे राजाक बुद्धि पलटैत अछि आ ओकरा प्राकृतिक जलक सामूहिक उपयोगक विचार ग्राह्य होइत अछि। [मूल पृ. ५९-६०]

एहि कथाक उपयुक्त आलोचनात्मक पाठ ‘राजा खराब, ऋषि नीक’ एतबे नहि। राजा राज्यक संस्थागत शक्ति थिक; ऋषि व्यक्तिगत विवेक आ लोकहितक प्रतिनिधि। राजाक परिवर्तन सत्ता द्वारा लोकनैतिकताकेँ स्वीकार करबाक दृश्य अछि। जलक आवश्यकताक सर्वव्यापकता कथा-कथनकेँ विशेष क्षेत्र वा जातिसँ ऊपर उठबैत अछि। कथाक विस्तार छोट होइतहुँ एतय प्रकृति, साझा जीवन आ स्वामित्वक सम्बन्ध पर सटीक प्रश्न अछि।

शिल्पमे संवादप्रधानता, पुनरावृत्त तर्क आ निर्णयक सरल उलटाव प्रधान अछि। समस्या एकदम जटिल नीति-प्रश्न बनि नहि उठैत; कथाकार पाठककेँ तत्काल नैतिक बोध देबाक लेल राजाक मन-परिवर्तन शीघ्र करबैत छथि। ई संक्षेप लघुकथाक शक्ति अछि, मुदा जलक वास्तविक असमान वितरणक सामाजिक-आर्थिक चित्र विस्तारित करबाक गुंजाइश छोड़ैत अछि।

४.३ ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’: विश्वपरिवारक उच्चारण आ व्यवहारक कसौटी (मूल पृ. ६१)

एहि अत्यन्त संक्षिप्त कथा मे उच्च शिक्षाक लेल इंग्लैंड गेल बंगाली युवक, ओकर एक अंग्रेज मित्र आ परिवार-सन्दर्भ प्रस्तुत अछि। संवादमे निजी सुविधा, भोजन, व्यय, जीवनक साधन आ अन्य मनुष्यक प्रति दायित्वक प्रश्न पर चर्चा होइत अछि। संस्कृत सूक्ति ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ कथाक शीर्षक भऽ कए पाठककेँ एक आदर्श दैत अछि, जखन कि कथाक पात्र अपन व्यवहारमे ओकर अर्थकेँ परखैत छथि। [मूल पृ. ६१]

एहि रचनाक आलोचनात्मक केन्द्र सूक्तिक केवल प्रशंसा नहि, ओकर व्यवहारिक परीक्षा अछि। सम्पूर्ण संसार एक परिवार अछि—एहि कथनक अर्थ तबे सार्थक होयत जखन अपन जीवनक सुविधा आ अपरिचितक कल्याणक बीच नैतिक सम्बन्ध स्वीकारल जाय। भाषा, देश आ परिवारक भिन्नतासँ बनल छोट संवाद कथाकेँ विश्वनागरिक संवेदनासँ जोड़ैत अछि; तथापि कथा विस्तारक बजाय प्रश्नकेँ खुला रखैत अछि।

अनुवादक दृष्टिसँ ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ जेकाँ संस्कृत पदकेँ यथावत् राखि ओकर चारूकात मैथिली संवाद विन्यस्त करब बहुभाषिक सांस्कृतिक सन्दर्भक उदाहरण अछि। एहि सँ ई निष्कर्ष अवश्य निकलैत अछि जे अनूदित मैथिली पाठ हिन्दी/संस्कृतक मौलिक विचार-संसारकेँ स्थानीय पाठक लग पहुँचबैत अछि; मुदा मूल पाठक ठोस शब्द-विन्यासक संग तुलना बिना विशिष्ट भाषान्तर-रणनीतिक दावा कएल नहि जा सकैत अछि।

४.४ ‘अभिनन्दन ग्रन्थ’: पद-सम्मान आ वास्तविक लेखनक अन्तर (मूल पृ. ६२)

विद्यालयमे एक मन्त्री महोदयक आगमन अछि। पूर्व परिचयक कारण शिक्षक आ शिक्षार्थी हुनकर अभिनन्दनक आयोजन करैत छथि। प्रधानाचार्य द्वारा ‘अभिनन्दन ग्रन्थ’ समर्पित कएल जाइत अछि, मुदा सम्मानित व्यक्ति जखन लिखल सामग्रीक सम्बन्धमे प्रश्न करैत छथि तँ ग्रन्थक खोखलापन उजागर होइत अछि। कथाक व्यंग्य ई संकेत दैत अछि जे समारोहक भव्यता अपने आपमे बौद्धिक उपलब्धिक प्रमाण नहि होइत अछि। [मूल पृ. ६२]

ई लघुकथा साहित्यिक समाजक लेल विशेष उपयोगी प्रश्न उठबैत अछि। जँ ग्रन्थमे वास्तवमे रचना वा अध्ययन नहि, केवल आवरण, स्वागत-वचन आ नाममात्रक सामग्री हो, तँ ‘ग्रन्थ’ शब्दक प्रतिष्ठा आ ओकर वास्तविक स्वरूप बीच दूरी बनैत अछि। कथा एहि दूरी पर तीक्ष्ण व्यंग्य करैत अछि। व्यक्तिक पद-प्राप्ति आ तदनुरूप छपल अभिनन्दन-सामग्रीक मूल्यांकन

करबाक लेल पुस्तकक वास्तविक सामग्री आवश्यक अछि; समारोहक सामाजिक दबाव आलोचनात्मक विवेकक स्थान नहि लए सकैत अछि।

रचनाक संरचना एक हास्य-व्यंग्यात्मक उलटाव पर टिकल अछि। पहिले सत्कारक आडम्बर, तकर बाद ग्रन्थक निरीक्षण, फेर पाठकक अपेक्षाक उलटा परिणाम। एहि संक्षिप्त आवृत्तिमे अतिरिक्त चरित्र-विकासक गुंजाइश कम अछि; तथापि शिक्षा, राजनीति आ पुस्तक-संस्कृतिक सम्बन्ध पर जे प्रश्न उठैत अछि, से संग्रहक विस्तृत प्राक्कथनमे उल्लिखित वास्तविक साहित्यिक सम्मान-परम्पराकेँ सेहो आलोचनात्मक दूरीसँ देखबाक अवसर दैत अछि। एहि अन्तरपाठीय विडम्बनामे पुस्तकक एक रोचक स्व-समालोचनात्मक सम्भावना निहित अछि।

४.५ ‘दुर्लभ सत्यनारायण पूजा’: कर्मकाण्डसँ सत्याचरण दिस (मूल पृ. ६३)

कथामे सत्यनारायण-व्रत कराबय चाहनिहार भक्त आ पण्डितजीक बीच संवाद अछि। भक्तक निजी संकट आ धार्मिक अनुष्ठानक इच्छा सुनि पण्डितजी सत्य, सदाचार आ लोकहितक महत्व पर बल दैत छथि। पूजा-व्यवस्थाक बाहरी औपचारिकताकेँ अस्वीकार करबाक अपेक्षा कथा पूछैत अछि जे सत्यक आराधना जीवनक प्रत्यक्ष आचरणसँ अलग किएक मानल जाय। [मूल पृ. ६३]

एहि रचनामे धार्मिक परम्पराक भीतरसँ उठल नैतिक पुनर्व्याख्याक स्वर अछि। पुरोहित अपना व्यवसायकेँ मात्र सामग्री-संग्रह आ क्रियाक्रमक आदेशमे सीमित नहि रखैत छथि; ओ जीवनमे सत्य ग्रहण करबाकेँ मूल मानदण्ड बनबैत छथि। एकर फलस्वरूप कथा पाठक लग भक्तिक तात्पर्यक नव प्रश्न आनैत अछि। ई आलोचना धार्मिक आस्थाक पूर्ण निषेध नहि, कर्मकाण्ड आ आचरण बीच प्राथमिकताक विमर्श थिक।

शीर्षकक ‘दुर्लभ’ शब्द प्रश्न पैदा करैत अछि: अनुष्ठानक अवसर दुर्लभ अछि, वा सत्यपर टिकबाक साहस दुर्लभ? पाठ एहि दोसर अर्थक दिशामे पाठककेँ प्रेरित करैत अछि। रचना एक-पृष्ठीय होइतहुँ अपनी अवधारणा स्पष्ट करैत अछि। मुदा भक्तक पारिवारिक संकटक जटिलता कथक समयमे विस्तार नहि पबैत; नैतिक सिद्धान्त दृश्यपर प्रमुख भऽ जाइत अछि। एहि रूपमे ई कथा मैथिली अनूदित लघुकथाक शिक्षापरकता आ ओकर शिल्पगत संक्षेप दुनू देखबैत अछि।

४.६ अनूदित खण्डक साझा उपलब्धि आ शोधगत सीमा

पाँचू लघुकथामे एक साधारण रचनात्मक पद्धति देखाइत अछि: पहिने जीवनक एक छोट परिस्थिति, तकर बाद दू पक्षक तर्क आ अन्तमे स्पष्ट मूल्य अथवा विडम्बनापूर्ण मोड़। स्वाभिमान, पानी, विश्वपरिवार, औपचारिक सम्मान आ सत्य-आचरण पाँच अलग विषय थिक, मुदा सभमे वाणी आ व्यवहारक दूरी पर प्रहार अछि। मैथिली अनुवाद एहि विचार सभकेँ मैथिली पाठकीय संसारमे प्रवेश देबैत अछि। छोट आकारक कारण पाठक तर्कक केन्द्र धरि पहुँचैत छथि; मुदा मनोवैज्ञानिक जटिलता आ प्रसंग-विकासक संभाव्यता सीमित रहि जाइत अछि। मूल ग्रन्थक पादटिप्पणी भाषान्तरित कृतिक संकेत दैत अछि, ई सम्पादकीय गुण अछि। मुदा अनुसन्धानेक दृष्टिसँ मूल पाठक संस्करण, मूल भाषाक प्रकाशकीय विवरण, मूल शीर्षक आ पाठभेदक पूर्ण तुलनात्मक सूची एकसंग होयत तँ अनुवादक ऐतिहासिक समीक्षा आरो विश्वसनीय बनत। प्रस्तुत अध्ययन एहि अभावकेँ कल्पित उद्धरण वा अनिर्दिष्ट मूलपाठसँ भरबाक प्रयास नहि करैत अछि।

५. लोकवृत्तात्मक खण्ड: अन्न, सामूहिकता आ देवताक लोकस्मृति

‘लोकवृत्तात्मक’ शीर्षक संयोग नहि। एहि खण्डक रचनामे लोककथा सुनयबाक मौखिक शैली अछि, मुदा ओ सभ मात्र लोकवार्ताक अक्षरशः प्रतिलिपि नहि लगैत। कतहु कथाकार कथा आरम्भ करबाक पूर्व व्याख्यात्मक पृष्ठभूमि दैत छथि; कतहु सामाजिक आशयक स्पष्ट निष्कर्ष जोड़ैत छथि; आ कतहु देवता-परम्परा आ वंशवृत्तान्तक ऐतिहासिक सम्भावना पर अपना स्तरसँ विचार करैत छथि। अतः एतय ‘लोककथा’ कहैत समय मौखिक परम्पराक सामग्री आ लिखित पुनर्रचनाक बीच अन्तरकेँ ध्यानमे राखब आवश्यक अछि।

५.१ ‘धानक हडुड़ी’: अन्न, भूख आ सह-अस्तित्वक लोकनीति (मूल पृ. ६५–६९)

कथाक आरम्भमे लेखक अन्न आ चाउरक स्थान पर चिन्तन करैत छथि। एक ब्राह्मणक भोजन-अपेक्षा, धानक उत्पत्ति-संकेत आ अन्नक महत्त्वक विस्तार कथा लेल लोक-वैचारिक भूमिका रचैत अछि। ई भूमिका मनुष्यक भोजनक सांस्कृतिक महत्त्वकेँ प्रकट करैत अछि, मुदा कथाक मुख्य भाग पक्षी-जीवनक माध्यमसँ मानवीय स्वार्थक परीक्षण करैत अछि। कथामे राजा, रानी आ बहिकरी समुदाय द्वारा ‘धानक हडुड़ी’क प्रसंग विकसित होइत अछि। [मूल पृ. ६५–६६]

रानी लगातार परिवार आ समुदाय लेल अन्न प्राप्त करैत अछि, जखन कि राजा अपन भोगक अधिकार सहज मानैत अछि। भोजन पर निर्भरता, सेवाक असमान बँटवारा आ अपरक श्रमक अवमूल्यन किछु सरल दृश्यक माध्यमसँ सोझाँ अबैत अछि। रानीक असन्तोष केवल व्यक्तिगत रूठब नहि; ई प्रेमक नाम पर श्रमक एकतरफा उपयोगक विरुद्ध प्रतिक्रिया अछि। कथामे राजा अपन भोजन-व्यवस्था स्वयं नहि बना पबैत, ओकर अधिकार-बोध परिस्थितिसँ टकरा जाइत अछि। [मूल पृ. ६६-६७]

एक महत्त्वपूर्ण मोड़पर रानीक प्रति राजाक विश्वास, रानीक स्वतंत्र निर्णय आ राजाक संकट कथा केँ त्रासद दिशामे लऽ जाइत अछि। अन्न छोड़बाक, उपवास वा संगत्यागक संकल्प, परस्पर दया आ पश्चात्तापक प्रसंगसँ कथा केवल धान सम्बन्धी उत्पत्तिकथा नहि रहैत; ई दाम्पत्य आ सामूहिक जीवनमे परस्पर कर्तव्यक आख्यान बनि उठैत अछि। अन्तिम पृष्ठमे रानीक वियोग आ राजाक शोकक संग लोककथाक व्यापक मानवीय आशय पर लेखक स्वयं टिप्पणी करैत छथि। अन्तिम अनुच्छेदमे चीन देशसँ जुड़ल लोकविश्वासक उल्लेख सेहो अछि; ताहि कारण एहि कथाक कथानककेँ बिना स्वतंत्र क्षेत्रीय साक्ष्य केवल मिथिलामे उपजल लोककथा मानब उचित नहि। [मूल पृ. ६७-६९]

कथाक शिल्पमे लोकव्याख्या आ आख्यानक मिश्रण अछि। आरम्भिक अन्न-चर्चा कथाक प्रतीक-क्षेत्र निर्धारित करैत अछि, मुदा ई भूमिका नाटकीय कथा आरम्भ होयबामे विलम्ब सेहो करैत अछि। पक्षी-पात्रक सामाजिक व्यवहार मानवसमाजक संरचनाकेँ प्रतिबिम्बित करैत अछि — राजा, रानी, श्रम, अधिकार, पालन-पोषण आ वियोग। कथाक मूल शक्तिक रूपमे अन्नक वस्तुगत मूल्य आ अन्न अर्जित करबाक अदृश्य परिश्रम सोझाँ अबैत अछि।

अन्तिम टिप्पणीमे लेखक लोककथाक करुणा, परोपकार आ प्रेमक महत्व स्पष्ट करैत छथि। एतय आलोचनात्मक सावधानी ई जे लोककथाक नैतिक संकेतकेँ केवल स्त्रीक आत्मत्यागक आदर्शमे कैद नहि करबाक चाही। रानीक श्रम, ओकर असन्तोष आ ओकर अस्तित्वक आकांक्षा कथा केँ अधिक जटिल बनबैत अछि। एहि पाठक पुनःपठनमे स्त्री-पक्ष, श्रमक नैतिक अर्थ आ सामूहिक खाद्य-सुरक्षाक प्रश्न अलग-अलग उभरि सकैत अछि। मूल पादटिप्पणीमे २००८ ई.मे ‘मैथिली अकादमी पत्रिका’क एक अंकमे प्रकाशनक उल्लेख अछि। [मूल पृ. ६९]

५.२ ‘सात बहिन’: विपत्तिमे स्त्री-सामूहिकता आ युक्तिक विजय (मूल पृ. ७०-७६)

कथाक पहिल भाग लोककथाक रचनात्मक स्वभाव पर लेखकक संक्षिप्त विवेचनसँ शुरू होइत अछि। लोककथा सामान्य जनजीवनक सामूहिक अनुभव, आचार-विचार आ परम्पराक बोध दैत अछि—ई आधार प्रस्तुत कए लेखक सात बहिनक आख्यान सुनबैत छथि। कथा अनुसार एक गरीब परिवारमे सात बेटी अछि। भोजनक अभाव आ पारिवारिक संकटमे बहिन सभकेँ घर सँ दूर वन-दिशि जएबाक परिस्थिति बनैत अछि। सात बहिनक नामक क्रम, सामूहिक चलब आ एक-दोसराक संग रहबाक आग्रह मौखिक कथा-जगतक विशिष्ट ध्वनि अछि। [मूल पृ. ७०-७१]

वनमे भूख, भय, अपरिचित आश्रय आ भोजनक खोज द्वारा संघर्ष बढ़ैत अछि। बहिन सभ एक एहन स्थान पर पहुँचैत छथि जतय आरम्भमे खाद्य-सुरक्षा जकाँ प्रलोभन अछि, मुदा ओही परिवेशमे छल आ हिंसाक आशंका सेहो अछि। कथामे डाकिन-जकाँ भयकारी पात्र, अँधार घर, फाटक आ गुप्त युक्तिक प्रयोग भेटैत अछि। छोट बहिनक चातुर्य तथा बहिन सभक परस्पर बचाव कथा लेल निर्णायक अछि। [मूल पृ. ७२-७३]

उत्तरार्द्धमे बहिन सभ एक-एक कए संकटसँ निकलबाक प्रयास करैत छथि। कतहु कूदब, चढ़ब, लुकायब, फाटक खोलब वा बाधाक सामना करबाक प्रसंग अछि। पाठ बारम्बार देखबैत अछि जे व्यक्तिगत सुरक्षा आ सामूहिक सुरक्षा अलग नहि। जे बहिन आगाँ बढ़ल, से पछिला बहिनक स्थिति पर ध्यान दैत अछि; वियोग, आघात आ सम्भावित हिंसाक बीच सहयोग जारी रहैत अछि। अन्तमे कथाकार सात बहिनक एकताकेँ कथाक नैतिक तत्त्वक रूपमे रेखांकित करैत छथि। [मूल पृ. ७३-७६]

लोककथा-शिल्पक दृष्टिँ संख्या 'सात' विशेष कथा-रचना करैत अछि: सात पात्रक क्रम, जोखिमक पुनरावृत्ति, बहिन सभक अलग-अलग प्रतिक्रिया आ एक सामूहिक अन्त। भिन्न-भिन्न बहिनक स्वतंत्र मनोवृत्ति बहुत विस्तृत नहि, मुदा सामूहिक पात्रत्व सशक्त अछि। वन बाहरी संकटक स्थान अछि, घर सुरक्षा आ असुरक्षा दुनूक सम्भावना लए अबैत अछि, आ डाकिन भयक साकार प्रतीक बनैत अछि। एहि सबकेँ आधुनिक सामाजिक घटनाक शाब्दिक इतिहास मानब गलत होयत; लोकगाथामे ई सामान्यतः प्रतीकात्मक अर्थक उपकरण छथि।

एहि कथाक सामाजिक पठने स्त्रीक असहायता मात्र नहि, स्त्रीक बुद्धि आ सामूहिक प्रतिरोधकेँ सेहो महत्त्व देब आवश्यक अछि। आरम्भिक आर्थिक अभाव पारिवारिक संरक्षणक विफलता देखबैत अछि; मुदा अन्तिम संघर्षमे बहिन सभ अपन रक्षाक उपाय स्वयं खोजैत छथि। एहि

परिवर्तनक कारण कथा केवल करुणा-प्रधान नहि, साहसप्रधान लोकआख्यान बनैत अछि। मूल पादटिप्पणीमे ‘मिथिला दर्पण’मे २००८क प्रकाशनक सूचना भेटैत अछि, जे रचनाक मुद्रित प्रचारक एक साक्ष्य अछि। [मूल पृ. ७६]

५.३ ‘बेनीराम’: ग्रामदेवता, जातीय स्मृति आ लोकइतिहासक निर्माण (मूल पृ. ७७–८८)

‘बेनीराम’ एगारहू रचनामे आकार, विषय-विस्तार आ सांस्कृतिक जटिलताक दृष्टिँ विशिष्ट अछि। कथा आरम्भे बेनीरामक सम्बन्ध मिथिलाक दू जाति-समुदाय—नाऊ आ करोड़ीक—लोकआस्थासँ जोड़ैत अछि। बेनीरामक पूजा लोकदेवताक रूपमे कएल जायब, गोधन, गोपालन, जादू-टोना आ ग्रामीण सुरक्षाक विश्वास; एहि विषय सभक उल्लेख सँ लेखक लोकस्मृतिक एक ठोस क्षेत्र चिन्हित करैत छथि। आरम्भिक लोकगीत-सदृश अंश आ बादक घटनाकथा एही आस्थाक लोकस्वर निर्मित करैत अछि। [मूल पृ. ७७–७९]

मूल कथामे राज परौल, लेखा ठाकुर, इन्द्र-कविलास, गोधन सती आ बेनीरामक जन्म आ जीवनसँ जुड़ल अनेक प्रसंग एक क्रममे अबैत अछि। लेखा ठाकुरक धार्मिक आचरण, गुरु-शिष्य सम्बन्ध, गोधन सतीक निष्ठा आ चमत्कारक घटना सभका इतिहास-सम्मत सूचना नहि, लोकवृत्तान्तक अङ्ग बुझबाक चाही। कथाक भीतर स्वयं एकाधिक विश्वास, सूक्ति, सामुदायिक स्मृति आ अद्भुत घटित होइत अछि; तकरा आधुनिक ऐतिहासिक तथ्यक समकक्ष राखल गेलापर रचनाक मूल प्रकृति विकृत होयत। [मूल पृ. ८०–८२]

गोधन सतीक जीवन, जसीया-बरसीयाक संग वैर, जादू-प्रतिजादू, विवाहसँ सम्बन्धित विघ्न, जन्म आ लालन-पालनक क्रमसँ कथा स्त्रीजीवन आ मातृत्वक एक लोक-आस्थामूलक संरचना गढ़ैत अछि। गोधन सतीक कर्तव्य, जोखिम उठयबाक सामर्थ्य आ पुत्रक रक्षाक आग्रह कथाक प्रमुख प्रेरक शक्ति छथि। एही संग कथामे स्त्रीक लोकधर्म ‘सतीत्व’क परम्परागत आदर्शसँ जुड़ैत अछि। आधुनिक आलोचना लेल ई प्रश्न खुलल रहैत अछि जे एहि आदर्शमे स्त्रीक साहसकें मान्यता कतेक भेटैत अछि आ ओकर स्वतंत्र सामाजिक सत्ता कतेक सीमित होइत अछि। [मूल पृ. ८१–८५]

बेनीरामक जन्मक पश्चात् पिताक जानकारी, पारिवारिक विच्छेद, तरुणाई, जंगल, हिंस्र पशु आ दुष्ट शक्तिसँ मुठभेड़ आदि प्रसंग कथाकें वीरगाथात्मक स्वर दैत छथि। बेनीरामक साहस व्यक्तिगत सामर्थ्यक मात्र प्रदर्शन नहि; ओ परिवारक सुरक्षा, अन्यायक प्रतिकार आ ग्रामीण

समुदायमे प्रतिष्ठा अर्जित करबाक कर्मक रूपमे उभरैत अछि। किछु प्रसंगमे तान्त्रिक शक्ति, अभिचार, देवी-देवताक आश्रय आ चमत्कार आबहु कथा-संसारक संचालन करैत अछि। [मूल पृ. ८४-८७]

रचनाक अन्तिम भागमे बेनीरामक लोकदेवता-स्वरूप, दीनानाथसँ सम्बद्ध आस्था, मवेशीक रक्षा आ ग्रामक सामूहिक हितक प्रसंग आयल अछि। आख्यानक समापनमे लेखक स्वयं संकेत करैत छथि जे बेनीरामक लोककथा अनेक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक पक्षक दर्शन करबैत अछि। हुनकर एहि दावाकेँ लोकमान्यता बुझबाक सामग्रीक रूपमे ग्रहण कएल जा सकैत अछि; इतिहासक रूपमे निर्णायक पुष्टि लेल स्थानीय पूजा-पद्धति, प्रचलित गीतक स्वतंत्र संस्करण, मौखिक कथावाचकक विवरण आ अभिलेखक तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक रहत। [मूल पृ. ८७-८८]

‘बेनीराम’क साहित्यिक शक्ति ओकर बहुपरतीय कथावस्तु थिक। छोट लघुकथाक उलट, एतय वंश-परम्परा, देवी-विश्वास, कथा-संगीत, धर्म, जाति, लिंग आ पशुधन-अर्थव्यवस्था परस्पर गुँथल छथि। लोकगीतक समावेश कथा केँ मौखिक परम्पराक ध्वनि दैत अछि। मुदा सम्पादकीय दृष्टिँ कथाक कथक-स्रोत, संग्रह-स्थान, सूचनादाता आ एकाधिक पाठभेदक पूरा ब्योरा नहि भेटबाक कारण एकरा वैज्ञानिक लोककथा-संकलनक अन्तिम पाठ मानब कठिन अछि। सर्वोत्तम अध्ययन-पद्धति ई होयत जे पुस्तकमे उपलब्ध पाठकेँ एक दस्तावेजित संस्करण मानि अन्य संस्करणसँ तुलना कएल जाय।

५.४ तीन लोकवृत्तान्तक तुलनात्मक अर्थ

‘धानक हडुड़ी’मे अन्न आ पारस्परिक श्रमक प्रश्न छैक; ‘सात बहिन’मे भूखसँ उत्पन्न विघटन आ बहिन सभक सामूहिक आत्मरक्षा; ‘बेनीराम’मे लोकदेवता आ समुदाय-रक्षाक सांस्कृतिक कल्पना। तीनूकेँ जोड़निहार सूत्र ‘जीवनक रक्षा’ अछि। पहिल कथामे रक्षा अन्नक उपलब्धता आ प्रेमक उचित बँटवारा पर निर्भर अछि; दोसरमे संगठन आ चातुर्य पर; तेसरमे नैतिक साहस, देवी-आस्था आ लोकस्मृतिपर। एहि भिन्न माध्यम सभक एकत्रीकरण लोकजीवनक अनेक धाराकेँ देखबैत अछि।

लोकवृत्तान्तकेँ एतय मात्र प्राचीन आ विस्मयकारी सामग्री मानल गेलापर ओकर वर्तमान बोध छुटि जाएत। अन्न-अभाव, असुरक्षित बालिका, पारिवारिक श्रम, जाति-व्यवस्था, पशुधन आ

ग्रामदेवता सम्बन्धी मान्यता सभ समकालीन मानवीय प्रश्नक संग संवाद करैत अछि। मुदा लोकविश्वासक नैतिक उपयोग करैत काल आलोचककें वर्णित सामाजिक पदक्रम, स्त्री-आदर्श वा चमत्कार-विश्वासकें स्वतः सत्य वा स्वतः न्यायोचित नहि मानबाक चाही। यथास्थान प्रश्न करब सेहो लोकपरम्पराक सम्मानजनक अध्ययनक अङ्ग अछि।

६. परिशिष्ट: ‘कबिलपुरक संक्षिप्त कुलीननामा’क स्वरूप आ प्रमाणिकता

संग्रहक विषय-सूची अनुसार पृ. ८९ सँ ‘कबिलपुरक संक्षिप्त कुलीननामा’ आरम्भ होइत अछि। उपलब्धक अन्तिम पृष्ठसभमे हस्तलिखित अथवा रेखाचित्र-रूपमे वंश-वृक्ष, नामक परस्पर शाखा आ कुल-सम्बन्ध देखाइत अछि। कथा-पाठक ठीक बाद एहि वंशसूचक सामग्रीक सम्मिलन अनोखा अछि। लेखकक ग्राम-केन्द्रित रुचि, जातीय स्मृति आ स्थानीय इतिहास बचा कए रखबाक प्रयत्न एहि अध्यायमे प्रत्यक्ष होइत अछि। [मूल पृ. ८९ आ अनुवर्ती वंश-चित्र:-पृष्ठ ४६-५०]

वंश-चार्टक महत्त्व ओकरा द्वारा सुरक्षित नाम आ सम्बन्धक दावामे अछि; एतय प्रमाणिकताक स्तरक अन्तर स्पष्ट राखब आवश्यक अछि। चार्ट पर ककर नाम कोन शाखामे अछि, से पुस्तकक प्रत्यक्ष साक्ष्य अछि। मुदा नामावलीक प्रत्येक सम्बन्ध इतिहासमे सत्यापित अछि—ई निष्कर्ष केवल चार्ट देखि नहि काढ़ल जा सकैत अछि। ताहि लेल परिवारक मौखिक परम्परा, उपलब्ध पुरान दस्तावेज, पञ्जी, दिनाङ्क आ स्वतंत्र वंश-प्रमाणक परीक्षण अपेक्षित अछि। क किछु रेखाचित्र आ नाम लम्बवत् अथवा घुमाओल रूपमे छपल अछि; एहि कारण बिना स्पष्ट मूल प्रतिक आधार पर प्रत्येक नामक अक्षरशः प्रतिलिपि देब जोखिमपूर्ण होयत।

साहित्यिक दृष्टिसँ ई परिशिष्ट तीन लोकवृत्तात्मक कथाक संग विशेष सम्बन्ध रखैत अछि। ‘बेनीराम’ जकाँ कथा लोकदेवता आ सामुदायिक वंश-स्मृतिक अर्थ बनबैत अछि; वंश-वृक्ष ओहि रुचिक अभिलेखीय पक्ष देखबैत अछि। मुदा पुस्तकमे कथा आ वंशावलीक सम्बन्धक पृथक् आलोचनात्मक व्याख्या पर्याप्त नहि अछि। भविष्यक सम्पादित संस्करणमे प्रत्येक चार्टक परिचय, स्रोत, अनुमानित काल, नामक मानक रूप आ अस्पष्ट स्थानक पाठ-टिप्पणी जोड़ल गेलापर ई परिशिष्ट अधिक शोधोपयोगी बनि सकैत अछि।

७. भाषा, वाक्य-विन्यास, संवाद आ कथन-प्रणालीक समग्र परीक्षा

पुस्तकक भाषामे मैथिलीक बोलचाल, साहित्यिक गद्य, सांस्कृतिक तत्सम शब्द आ लोकप्रयोगक सहअस्तित्व अछि। ‘शास्त्र-चिन्ता’मे धर्म, राष्ट्र, नीति आ दर्शन सम्बन्धी पदावली घनीभूत अछि; ‘फैंसला’मे कार्यालय, प्रतिवेदन, नौकरी, प्रशासन आ राजनैतिक सम्पर्कक शब्द अछि; ‘सपनाक डाक’मे खेत, कागज, दखल, पैतृक जमीन आ गामक व्यवहारक भाषा प्रमुख अछि। एतय शब्दसंपदा विषयक अनुरूप बदलैत अछि। ई केवल सजावटी शब्दबाहुल्य नहि, कथा-जगतक सामाजिक क्षेत्र चिन्हित करबाक साधन अछि। [मूल पृ. ३५-५४]

‘शास्त्र-चिन्ता’क कथा-स्वर प्रश्नात्मक आ अमूर्त अछि। नायक आत्मप्रश्न करैत छथि; अशोक नीतिशास्त्रीय प्रतिप्रश्न करैत अछि। वाक्यक पुनरावृत्ति मानसिक चक्रकें प्रकट करैत अछि, मुदा कथा कतहु दीर्घ उपदेशक निकट पहुँचि जाइत अछि। ‘फैंसला’मे अन्तर्मन आ दाम्पत्य संवादक सन्धान अधिक स्वाभाविक अछि; पत्नी जे प्रश्न करैत छथि, से घरेलू जीवनमे पदक संकट प्रवेश करयबाक प्रक्रिया देखबैत अछि। ‘सपनाक डाक’मे जमीन-सम्बन्धी भय, संवाद आ स्वप्नक मिश्रणसँ कथ्यकें तीव्रता भेटैत अछि। एहि तीनू मौलिक कथामे एकहिसन वाक्य-लय नहि, विषयानुकूल अन्तर अछि।

अनूदित लघुकथामे बहुधा ‘प्रश्न-उत्तर-नैतिक परिणति’क रचना-ढाँचा अछि। ओतय कथावाचक विस्तृत स्थलवर्णन नहि करैत; दू पात्रक बीच संवादें मुख्य अर्थ स्पष्ट होइत अछि। ‘अभिनन्दन ग्रन्थ’मे व्यंग्यक सामर्थ्य अन्तिम उलटावसँ उत्पन्न अछि, जखन कि ‘दुर्लभ सत्यनारायण पूजा’मे औपचारिक कर्म आ सत्याचरणक अन्तर अन्तिम वचनमे केन्द्रित अछि। एहि संक्षेपमे पाठककें शीघ्र बोध भेटैत अछि, मुदा आलोचनाक प्रश्न ई सेहो अछि जे सिद्धान्तक स्पष्टता पात्रक बहुआयामी मनोवैज्ञानिक चित्र पर कतहु भारी पड़ैत अछि।

लोकवृत्तान्तक भाषा दोसर दिशा लैत अछि। ‘सात बहिन’क घटनाक्रममे दोहराव, क्रमसूचक संख्या, सरल चेतावनी आ बचावक त्वरित गति लोकवार्ताक मौखिक प्रभाव रचैत अछि। ‘धानक हड्डि’मे अन्न सम्बन्धी लोकदृष्टि कथाक आरम्भिक कथ्य निर्धारित करैत अछि। ‘बेनीराम’मे गीत, स्थानीय देवताक नाम, कुल-सम्बन्ध, तान्त्रिक शब्दावली आ चमत्कारक प्रसंग कथा कें बहुध्वन्यात्मक बनबैत अछि। एहि भाषा-भेदकें एकटा एकरूप ‘आधुनिक कथा-शैली’मे समेटब पुस्तकक रचनात्मक विविधताकें मेटि देब होयत।

शुद्धताक नामपर एहि पाठक ‘छलाह/छलनि’, ‘अहाँ/हमर’, ‘कएल/भेल’ अथवा स्थानिक उच्चारण सम्बन्धी रूपकें एक झटकेमे बदलि देब साहित्यिक विश्लेषणक उद्देश्य नहि। मौलिक बोली, पात्रक अभिव्यक्ति आ लोकगीतक ध्वनि संरक्षित रहबाक चाही। हँ, छपाइमे किछु विरामचिह्न, शीर्षकक टंकण, नामक स्थिर रूप आ पाठ-संयोजनकें नब संस्करणमे सम्पादकीय टिप्पणीसहित परिशोधित कएल जा सकैत अछि। मूल संस्करणक किछु छायाप्रतिलिपिक दाग-धब्बा देखल जाइत अछि; ओकरा लेखकक भाषिक दोष ठहरायब अनुचित होयत।

८. एकहि संग्रहमे तीन विधा: कथा, अनुवाद आ लोकसाहित्यक सम्बन्ध

एहि संग्रहक तीन खण्डक क्रम स्वयं अर्थपूर्ण अछि। पहिने नूतन समयक सार्वजनिक संकटसँ उलझैत व्यक्ति, तकर बाद संक्षिप्त नैतिक निर्णयक अनूदित कथा, अन्तमे सामूहिक स्मृति आ लोकविश्वासक आख्यान। ई क्रम युग-क्रमक निश्चित इतिहास नहि, मुदा पाठकीय अनुभूतिक क्रम अवश्य बनबैत अछि: अमूर्त चिन्तासँ सामाजिक व्यवहार, सामाजिक व्यवहारसँ उपदेशात्मक विवेक, आ ओतयसँ लोकसमुदायक दीर्घ स्मृति दिस। शीर्षक ‘कथा—लोककथा’क संयोग एहि संग्रहक वास्तविक रचनात्मक योजना सँ मेल खाइत अछि।

मौलिक कथाक पात्रक स्वतन्त्रता अपेक्षाकृत अधिक अछि; अशोक नायकसँ असहमति प्रकट करैत अछि, जमुनी देवी पतिक अन्तर्द्वन्द्व पर प्रश्न करैत छथि, सुखलाल अभिलेखक असुरक्षा सँ विचलित छथि। अनूदित लघुकथामे पात्र प्रायः मूल्यगत विकल्पक वाहक बनैत छथि। लोककथामे पात्र सामूहिक रूपक आ सांस्कृतिक भूमिकामे चलैत छथि। एहि अन्तरक कारण ‘बेनीराम’ सँ आधुनिक मनोवैज्ञानिक कथाक एकरूप चरित्रचित्रण, अथवा ‘अभिनन्दन ग्रन्थ’ सँ बारह पृष्ठक उपन्यास-जकाँ प्रसंगविस्तार मांगब आलोचनात्मक असंतुलन होयत।

तथापि तीनू खण्डक बीच गहिर सम्बन्ध अछि। ‘शास्त्र-चिन्ता’मे कर्तव्यक प्रश्न, ‘स्वाभिमानक मार्ग’मे आत्मनिर्णय, ‘दुर्लभ सत्यनारायण पूजा’मे आचरणक प्राथमिकता आ ‘सात बहिन’मे सामूहिक कर्तव्य—सभ अलग-अलग साहित्यिक साधनसँ ‘कथन आ करणीक अन्तर’ पूछैत अछि। ‘सपनाक डाक’मे भूमि-अधिकारक अनिश्चितता, ‘अपन-अपन पानि’मे प्राकृतिक साधनक साझा अधिकार आ ‘धानक हड्डि’मे अन्नक बँटवारा—ई सभ संसाधन आ न्यायक प्रश्नक अलग रूप प्रस्तुत करैत अछि। ‘फैसला’मे सार्वजनिक संस्थाक दबाव आ ‘बेनीराम’मे सामुदायिक रक्षाक आस्था—ई सभ शक्ति आ सुरक्षाक भिन्न कल्पना छथि।

ग्रन्थक एक सीमा सम्पादकीय अनुपातमे अछि। तीन मौलिक कथा पर्याप्त विस्तार लैत छथि, पाँच लघुकथा अत्यल्प विस्तारमे पूर्ण होइत अछि, तेसर खण्डक 'बेनीराम' फेर बहुपृष्ठीय आख्यान बनि जाइत अछि। अलग विधाक लेल ई स्वाभाविक होइतहुँ पाठकीय लयमे तीव्र परिवर्तन आनैत अछि। पुस्तकक भूमिका सेहो मुख्य कथा-भागक तुलनामे विस्तृत अछि। एक सम्पादित अनुसन्धान-संस्करणमे मूल सामग्री हटौने बिना विधागत परिचय, स्रोत-टिप्पणी आ अनुक्रमक संक्षिप्त स्पष्टीकरण जोड़ल गेलापर एहि असमानताकेँ पाठकीय शक्ति बनाओल जा सकैत अछि।

९. स्त्री, वर्ग, जाति आ सत्ता: पाठक भीतरक प्रश्न

'फैंसला'क जमुनी देवीक मनमे घर-परिवारक सुरक्षा आ पतिक नैतिक निर्णयक बीच टकराव अछि। ई दृश्य साहित्यिक दृष्टिसँ स्त्रीकेँ पारिवारिक संरचनाक वास्तविक पक्षकार बनबैत अछि, मुदा अंतिम निर्णायक स्थितिमे ओकर भूमिका सीमित रहैत अछि। 'धानक हडुड़ी'क रानी अन्न अर्जित करबाक श्रम आ स्नेहक असमान बँटवाराक बीच अपन प्रतिक्रिया व्यक्त करैत अछि। 'सात बहिन'मे स्त्रीपात्र सभक परस्पर एकता स्वयं सुरक्षाक साधन बनैत अछि। 'बेनीराम'क गोधन सतीमें निष्ठा आ अद्भुत साहस अछि, तथापि 'सती'क सांस्कृतिक प्रतिमान ओकर जीवनक अर्थ निर्धारित करैत अछि। चारूकथाक स्त्री-स्थितिमे अन्तर देखबाक चाही; एकहि 'आदर्श नारी'क साँचा सभपर आरोपित नहि करबाक चाही।

वर्गक प्रश्न सेहो अलग-अलग स्तरपर उभरैत अछि। सुखलालक पीढ़ीगत भूमि-स्मृति कागजक अभावसँ जोखिममे अछि; राघवजी प्रशासनिक पदपर रहितहुँ राजनीतिक शक्तिक समक्ष दबाव अनुभव करैत छथि; मलापुरक गरीब लोक सामूहिक संघर्षक प्रभाव भोगैत छथि; 'सात बहिन'मे भूख परिवारक विघटनक प्रारम्भिक कारण अछि। एहि दृश्य सभमे दरिद्रता केवल दया जगयबाक विशेषण नहि, मानव-सम्बन्ध आ सामाजिक अवसर निर्धारित करबाक शक्ति अछि।

'बेनीराम'क आरम्भमे अलग जातीय समुदाय सभक लोकदेवता सम्बन्धी आस्थाक उल्लेख अछि; ई लोकधर्मक अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण अछि। मुदा कथा कहैत अछि जे कोन समुदाय बेनीरामकेँ अपन देवता मानैत अछि, ई एक लोकमान्यता थिक; एकर आधारपर समुदाय सभक वर्तमान सामाजिक व्यवहार वा समस्त क्षेत्रक इतिहास सम्बन्धी सार्वत्रिक दावा उचित नहि होयत। यथार्थ अध्ययन लेल जातिगत सत्ता-सन्तुलन, पूजा-अधिकार, पुजारीक परम्परा, गाय-

गोरुक रक्षा सम्बन्धी विश्वास आ स्थानीय जातीय स्मृतिक बहुविध संस्करण सुनब जरूरी अछि। कथा एहि प्रश्नसभक प्रवेशद्वार खोलैत अछि, अन्तिम समाधान नहि दैत।

सत्ताक दू प्रकार एहि पुस्तकमे विशेष देखाइत अछि। एक राज्यसत्ता, जकर रूप पदाधिकारी, राजा, मन्त्री आ प्रशासनिक निर्णयमे अछि; दोसर सांस्कृतिक सत्ता, जकर रूप गुरु, पुरोहित, ग्रामदेवता, लोकगीत आ वंशावलीमे अछि। ‘अपन-अपन पानि’मे ऋषि राजाकें विवेक सिखबैत छथि; ‘अभिनन्दन ग्रन्थ’मे राजनीतिक पदक खोखल प्रतिष्ठाक आलोचना अछि; ‘दुर्लभ सत्यनारायण पूजा’मे पुरोहित स्वयं कर्मकाण्डक बाहरी रूपक सीमा बतबैत छथि; ‘बेनीराम’मे लोकसमुदाय एक रक्षक देवताक निर्माण करैत अछि। ई अनेक रूप कथा-संग्रहकें मात्र मनोरंजनक पोथीसँ आगाँ लऽ जाइत अछि।

१०. अनुसन्धानक दृष्टिँ जाँचल जा सकनिहार अतिरिक्त बिन्दु

पुस्तकक मूल पादटिप्पणी पूर्व-प्रकाशनक उपयोगी सूचना सुरक्षित रखैत अछि: ‘शास्त्र-चिन्ता’क सन्दर्भमे २००२, ‘फैसला’ आ ‘सपनाक डाक’क सन्दर्भमे २००३, आ लोकवृत्तात्मक कथाक सन्दर्भमे २००८क पत्रिकाक उल्लेख भेटैत अछि। एहि आधारपर ई स्पष्ट अछि जे २०१०क संग्रह एकहि वर्षमे लिखल ग्यारह रचनाक नव-निर्माण मात्र नहि; पूर्व प्रकाशित रचना सभक संकलन सेहो अछि। पत्रिकाक मूल अंकसँ पृष्ठ-संख्या, पाठान्तर आ प्रथम प्रकाशनक निश्चितता फेर जाँचल जा सकैत अछि। वर्तमान समीक्षा एकर बिना अनिर्दिष्ट पाठभेदक कल्पना नहि करैत अछि। [मूल पृ. ४०, ४९, ५४, ६९, ७६]

पुस्तकक व्यापक बाह्य ग्रन्थसूची-सन्दर्भ लेल दू ठोस स्वतंत्र सूचना भेटैत अछि। विदेहक डिजिटल पोथी-सूचीमे ‘कथा-लोककथा २०१०’ डॉ. योगानन्द झाक नामसँ दर्ज अछि। साहित्य अकादेमीक मैथिली पुस्तक-सूचीमे ‘मिथिलाक लोककथा संचय’क संकलक एवं सम्पादक योगानन्द झा आ प्रथम प्रकाशन-वर्ष २०१७ उल्लेखित अछि। एहि पछिला पुस्तकक विवरण लेखकक लोककथा-सम्बन्धी कार्यक एक आगामी ग्रन्थसूचक साक्ष्य थिक; मूल २०१७क पुस्तकक पाठ नहि मिलाओल गेल अछि, तँ दुनू ग्रन्थमे एकहि कथाक उपस्थिति वा पाठ-सम्बन्धक निश्चित दावा एतय नहि कएल गेल अछि।

एकटा तेसर बाह्य पुस्तक-सूचना जापानक CiNii ग्रन्थ-सूचीमे ‘मैथिली कथा-सरिता’क अछि, जकर सम्पादक मदनेश्वर मिश्र आ योगानन्द झा तथा प्रकाशन-वर्ष १९८३ दर्ज अछि। एतेक

सत्यापनसँ योगानन्द झाक नाम कथासाहित्यक सम्पादन-संस्कृतिक एक पूर्व प्रकाशनसँ जुड़ैत अछि। मुदा एहि तथ्यसँ ‘कथा-लोककथा’क प्रत्येक साहित्यिक विशेषताक उत्पत्ति वा १९८३क संग्रहसँ ओकर सामग्रीगत समानता प्रमाणित नहि होइत अछि। बाह्य संदर्भक उपयोग ठीक एहि सीमाधरि कएल गेल अछि।

११. उपसंहार: उपलब्धि, सीमा आ मैथिली कथासाहित्यमे स्थान

‘कथा-लोककथा’क मूल उपलब्धि विषयक विविधता मात्र नहि, साहित्यक तीन जीवन-रूपकेँ एक पुस्तकमे संग आनब अछि—वर्तमान यथार्थपर लेखकक मौलिक चिन्ता, अन्य भाषाक लघुकथासँ मूल्यक आदान-प्रदान आ लोकसमुदायक स्मृतिमे सुरक्षित आख्यान। राष्ट्रीय भय आ शास्त्र-विवेकक प्रश्नसँ शुरू भेल यात्रा राघवजीक कार्यालयीय दुविधा आ सुखलालक जमीन-भयसँ होइत साझा जल, स्वाभिमान, सत्याचरण आ सार्वजनिक सम्मानक आलोचनासँ गुजरैत अछि; अन्तमे अन्न, सात बहिनक सहयोग आ बेनीरामक लोकदेवताक संसारमे पहुँचैत अछि। एहि क्रममे पुस्तकक व्यक्ति, संस्था आ समुदाय तीनूकेँ साहित्यक विषय बनबैत अछि।

कलात्मक उपलब्धिक स्तर सभठाम समान नहि अछि। मौलिक कथामे किछु ठाम विचार पात्रपर भारी पड़ैत अछि; लघुकथामे नैतिक अन्त कथा केँ अत्यन्त सीधा करि दैत अछि; लोकवृत्तान्तमे लेखकक आरम्भिक-अन्तिम विवेचन मौखिक आख्यानक स्वतंत्र अर्थक्षेत्रकेँ निर्देशित करैत अछि। तैयो ई सभ भिन्नता पुस्तकक स्वरूप बुझबाक लेल उपयोगी अछि। लेखक प्रायः नैतिक पक्ष ग्रहण करैत छथि, मुदा पाठमे उपस्थित तनाव—सुरक्षा बनाम अहिंसा, न्याय बनाम परिवार, भूमि बनाम अभिलेख, श्रम बनाम भोग, आस्था बनाम ऐतिहासिक प्रमाण—आलोचनात्मक पुनःपठनक सम्भावना बनौने रखैत अछि।

मैथिली साहित्यक अध्ययन लेल एहि पुस्तककेँ केवल ‘एगारह कथा’क गिनती धरि सीमित नहि करबाक चाही। एकर दीर्घ प्रस्तावना-प्राक्कथन साहित्यिक आयोजन आ स्थानिक रचनाकारक स्मृति दैत अछि; मूल कथाक पादटिप्पणी मुद्रित पत्रिका-जगतक कालक्रमक संकेत दैत अछि; अनूदित खण्ड भाषिक आदान-प्रदानक दस्तावेज अछि; लोकवृत्तात्मक खण्ड सामुदायिक नैतिकता आ विश्वासक अध्ययन सामग्री अछि; आ कुलीननामाक परिशिष्ट स्थानीय वंश-स्मृतिक आंशिक अभिलेख अछि। एहि बहुस्तरीय रूपमे ग्रन्थक साहित्यिक आ सांस्कृतिक मूल्य स्पष्ट होइत अछि।

संग्रहक सही आलोचनात्मक निर्णय न निर्विवाद महिमामण्डन अछि, न एकर नैतिक स्वरक आधारपर सामान्य अवमूल्यन। स्रोत-समर्थित निष्कर्ष ई अछि जे ई पोथी मैथिलीमे आधुनिक सामाजिक कथन, नैतिक लघुकथा-अनुवाद आ लोकआख्यान-संरक्षणक त्रिसन्धि प्रस्तुत करैत अछि। ओकर उत्कृष्ट उपयोग पाठक द्वारा कथा पढ़ब, सम्पादक द्वारा मूल पाठ सुरक्षित रखब, आ शोधकर्ता द्वारा लोकस्मृति आ इतिहासक दावाक पृथक् सत्यापन करब—एहि तीनू कार्यक संग होयत।

अध्याय 10 / २०११

सीतावतरण

डॉ. योगानन्द झाक कृतिक आलोचनात्मक विवेचन

२. पुस्तक-परिचय आ प्रकाशनक सत्यापित तथ्य

पोथीक नाम	सीतावतरण (प्रबन्धकाव्य)
मूल कवि	कपिलदेव ठाकुर 'स्नेहलता'
संकलन-सम्पादन	डॉ. योगानन्द झा
प्रथम संस्करण	२०११ ई.
प्रकाशक	लोक कला संस्कृति संस्थान, विदेहनगर डरोड़ी, भाया-करुआ हजपरवा, जिला- समस्तीपुर, बिहार
मुद्रित मूल्य	५० টাকা
मुद्रित मूल-साक्ष्य	शीर्षक-पृष्ठ, प्रकाशन-विवरण आ सम्पादकीय उपोद्घात: आरम्भिक पृष्ठ, विशेषतः मुद्रित पृ. ३-४

शीर्षक-पृष्ठ पर पोथीकेँ 'प्रबन्धकाव्य' कहल गेल अछि आ अंग्रेजी विवरणमे 'Narrative Poetry' क उल्लेख अछि। शीर्षकक रचनाकार आ सम्पादकक अलग-अलग श्रेय मुद्रित अछि। एहि भेदकेँ अक्षुण्ण रखब आवश्यक अछि, कारण सम्पादक स्वयं कहलनि अछि जे मूल

उपलब्ध रचना नामकरणविहीन छल आ 'सीतावतरण' नाम तिनकें देल। एहि लेल २०११ ई. के संस्करण 'स्नेहलताक मूलरचनाक ज्यों-के-त्यों स्वहस्ताक्षरित प्रकाशन' नहि, बल्कि सम्पादनक माध्यमसँ पाठक समक्ष आबि रहल एकटा साहित्यिक रूप अछि।

बाहरी पुष्टिमे 'विदेह'क पोथी-सूची 'कपिलदेव ठाकुर 'स्नेहलता' कृत सीतावतरण (सम्पादन) २०११' कें डॉ. योगानन्द झाक नामसँ सूचीकृत करैत अछि। ई पुस्तक-परिचयक सहायक साक्ष्य अछि; मुदा बाहरी सूचीसँ रचनाक छन्द, पाठ-शुद्धि वा कथानुक्रमक स्वतंत्र पुष्टि नहि होइत अछि।

३. उपोद्धातक ऐतिहासिक दृष्टि आ ओकर आलोचनात्मक परीक्षण (पृ. ३-४)

डॉ. योगानन्द झा उपोद्धातमे स्नेहलताकें मिथिलाक समस्तीपुर जिलाक डरोड़ी ग्रामसँ सम्बन्धित रामाश्रयी रसिक सम्प्रदायक भक्तकवि बतबैत छथि आ जीवनावधि १९०९-१९९३ लिखैत छथि। ओ मिथिलाक रामभक्ति, सीताराम-विवाह पदावली, सन्त-परम्परा आ गीतात्मक साहित्यक पृष्ठभूमिमे स्नेहलताक स्थान निर्धारित करबाक प्रयास कएने छथि। एहिमे आलोचनात्मक महत्त्व ई जे कविक साहित्यिक व्यक्तित्वकें केवल एकटा सीता-जन्म कथा धरि सीमित नहि करैत, पदावली आ लोकसंस्कारक विस्तृत परिप्रेक्ष्यमे रखल गेल अछि।

उपोद्धातक अनुसार, स्नेहलता अपन जीवनमे विवाह-पदावली, विनय-पदावली, झूलन, चौतावनी, शिववाणी, संस्कारगीत आदि अनेक रूपमे सृजन करैत रहलाह। ई सूचना पुस्तकक परिशिष्टसँ सेहो मिलैत अछि: ओतय मिथिला-महिमा, मैथिली-वन्दना, कृष्णलीला आ महेशवाणी राखल गेल अछि। ताहि लेल परिचय आ सामग्री परस्पर सन्दर्भ दैत अछि। मुदा अलग-अलग गीतक रचनाकाल आ पहिल प्रकाशनक पूर्ण अभिलेख एहि संस्करणमे नहि भेटैत; उपोद्धातक व्यापक साहित्येतिहासक दावाकें एतय सम्पादकक कथनक रूपमे मात्र ग्रहण कएल गेल अछि।

उपोद्धातमे कविक 'अद्यावधि अनधीत ओ अनालोचित' रहल एकटा प्रबन्धकाव्य भेटबाक चर्चा अछि। ई कथन २०१० दिसम्बरमे लिखल सम्पादकीय उपोद्धातक सन्दर्भमे अछि। एकरा आजुक समय धरि सम्पूर्ण अकादमिक साहित्यक अनुपस्थिति सिद्ध करबाक प्रमाण नहि बनाओल जा सकैत अछि। ओहि तरहेँ 'अखिल भारतीय स्तर'क मूल्यांकन संपादकक आलोचनात्मक प्रशंसाभाव अछि; एहि विशेष अध्ययनक निष्कर्ष तखन बनत जखन पाठ-साक्ष्य आ अन्य समकालीन रचनाक तुलनात्मक परीक्षण भेटत।

४. सम्पादनसँ निर्मित काव्यरूपः एही संस्करणक केन्द्रीय प्रश्न (पृ. ४)

ग्रन्थक सर्वाधिक निर्णायक स्वीकारोक्ति उपोद्धातक पृ. ४ पर अछि: उपलब्ध प्रबन्धकाव्य ‘नामकरणहीने छल’; सीताक जन्म-प्रसंगक आधार पर सम्पादक ‘सीतावतरण’ नाम रखलनि। पुनः ‘कथावस्तुक माँगक अनुकूल’ स्नेहलताक कतोक मुक्तक गीतकेँ स्थान-स्थान पर जोड़ि ‘प्रबन्धात्मकता’ स्पष्ट करबाक बात लिखल अछि। ई बयान ऐतिहासिक रूपसँ दूटा अलग क्रियाक साक्ष्य अछि—शीर्षक-निर्धारण आ गीत-समावेश। एहिसँ मूल कविक रचनात्मक योगदान घटैत नहि; मुदा लेखकक मूल विन्यास आ सम्पादकक अंतिम पाठ-विन्यासकेँ एके वस्तु मानब उचित नहि।

सम्पादकक प्रयोगक सकारात्मक पक्ष अछि: बिखरल भक्तिपद आ कथा-अंश एकत्र आबि पाठककेँ मिथिलाक विस्तृत भावलोकसँ परिचित करबैत अछि। सम्भवतः जे पाठ अप्रसारित रहि गेल छल, ओकरा एकटा व्यवस्थित पठन-रूप भेटल। दोसर दिस, कोन गीत मूल प्रबन्धमे छल, कोन गीत बादमे जोड़ल गेल, कोन प्रसंगक स्थान बदलल गेल आ कोन आधार-पाण्डुलिपि लेल गेल—एकर पृष्ठवार सूची उपलब्ध नहि। एहन सूची बिना मूल रचनाकारक आ सम्पादकक संगठक हस्तक्षेपक सीमा निश्चित करब सम्भव नहि। ई संस्करणक उल्लेखनीय पाठसम्पादकीय कमी अछि, किएक तँ ई स्वयं समावेशनक बात स्पष्ट रूपेँ स्वीकारैत अछि। ‘प्रबन्धकाव्य’क मूल्यांकन एहि कारणेँ दू स्तरपर करबाक चाही। कथा-क्रम, कारण-कार्य सम्बन्ध, जनकक यज्ञ, धरतीसँ सीताक प्राकट्य आ उत्सव जेहि ठाम स्पष्ट अछि, ओ मूल काव्यरूपक प्रबन्धात्मक सम्भावना देखबैत अछि। रामजन्म-सोहर वा शिव-गौरीक गीत जेहि ठाम अलग गेय इकाइ समान ठाढ़ अछि, ओतय महाकाव्यक ‘सर्ग’-जकाँ निर्बाध कथाप्रवाह नहि, बल्कि गीत-संयोजित भक्तिपरक आख्यान बनैत अछि। ई रूप कमजोरीयो बनि सकैत अछि आ मिथिलाक लोकनाट्यात्मक परम्परासँ जुड़ल मौलिकतायो; निर्णायक मत देबाक पहिने सम्पादकीय सीमा चिन्हित करब जरूरी अछि।

५. समर्पण, रचनाक हेतु आ कविक आध्यात्मिक आत्मपरिचय (पृ. ५, ७, ९-१०)

उपलब्धमे हस्ताक्षरक पूरा पाठ निश्चित रूपसँ पढ़बा योग्य नहि; ताहि लेल ओकरा प्रमाणित शब्दशः उद्धरणक स्रोत नहि बनाओल गेल अछि। तथापि ओकर मुद्रित उपस्थिति सम्पादक आ भक्तिमण्डलीक परस्पर सम्बन्धक एकटा भौतिक संकेत अवश्य अछि।

‘समर्पण वाक्य’ (पृ. ७) पोथीकेँ सीताराम-उपासक समाज आ रामचरितमानसक भावभूमिसँ जोड़ैत अछि। समर्पणक भाषा श्रद्धापरक अछि; एहि ठाम प्रकाशकीय उद्देश्य आ कविताक अन्तःस्वरक मेल भेटैत अछि। ई पृष्ठ बतबैत अछि जे पोथीकेँ केवल आधुनिक पाठकक साहित्यिक मनोरञ्जन लेल नहि, बल्कि पाठ, गायन, पूजा-संकीर्तन आ सामुदायिक भक्तिचर्याक सन्दर्भमे सेहो देखल जाय।

‘रचनाक हेतु’ (पृ. ९-१०)मे डरोड़ी, मिथिला, सीताराम-विवाहक अनुराग, बालरूपक कल्पना, पवित्र भाव, भक्त-समाज आ ‘ललित लता’क नाम-स्मरण प्रमुख अछि। कविक आत्मस्थिति विनीत सेवकक अछि, इतिहासकारक निश्चयात्मक स्वरक नहि। प्रारम्भिक रचनाधर्मितामे काव्य-निर्माण लेल चारि वस्तु भेटैत अछि—स्थानीय पवित्र भूगोल, आराध्य-युगलक प्रणयमय भक्ति, समूहक संकीर्तन-परम्परा आ नाम-स्मरणक आग्रह। एहि आधारपर पोथीक सौन्दर्यकेँ केवल कथा-वस्तुक नापसँ मापब अपर्याप्त होयत।

६. सरस्वती-वन्दना आ मंगलाचरणः आत्मविनय सँ काव्यारम्भ (पृ. ११-१२)

पृ. ११ पर ‘श्रीगणेशाय नमः’ आ ‘सरस्वती वन्दना’सँ काव्य-पाठ आरम्भ होइत अछि। ‘माता सरस्वति हे, कहिया हरब अज्ञान’ जकाँ प्रत्यक्ष सम्बोधन कविक विद्यासम्बन्धी नम्रता प्रकट करैत अछि। ‘हम सन्तान अहाँ छी माता’क भावसँ देवता आ भक्तक सम्बन्ध ज्ञानदाता तथा आश्रित शिशुक स्वरूप ग्रहण करैत अछि। ई शास्त्रीय मङ्गलाचरणक रचना-परम्परासँ जुड़ल रहितो अपन भाषा-व्यवहारमे घरेलू ओ लोकगीतात्मक अछि।

वन्दनामे ‘दिअ कने करुणा के कोर’ आ अज्ञान दूर करबाक पुकार स्नेह-केन्द्रित बिम्ब रचैत अछि। ज्ञानकेँ बाहरी पदवी वा अधिकारक रूपेँ नहि, कृपासँ प्राप्त मानवीय क्षमता मानल गेल अछि। वर्णनात्मक दृष्टिसँ ई प्रवेश-द्वार अछि; एहि पृष्ठक बाद धर्मसंकटक व्यापक दृश्य आबैत अछि। कवि पहिले अपना सीमित ठहराबैत छथि, फेर धर्म-व्यवस्था, अवतार आ राजपरिवारक कथा कहबाक नैतिक अधिकारक कल्पना करैत छथि।

७. आरम्भिक आख्यान: धर्म-संकट, अवतार आ मिथिलाक आवश्यकता (पृ. १२-१४)

पृ. १२-१४ मे अधर्म, हिंसा, भय, व्यथित लोक, विनष्ट शान्ति आ धर्म-स्थापनाक अपेक्षाक उल्लेख अछि। ‘धर्म’ एतय केवल व्यक्तिगत पूजा नहि, समाजक अशान्ति-निवारणक मूल्य बनि उपस्थित अछि। कथाक प्रारम्भमे भवितव्य अवतारक कारण निर्मित होइत अछि—समाज असन्तुलित अछि, धरती आ जनमानस संकटमे अछि, ताहि लेल दैवी शक्ति मानवीय लोकमे उतरि सकैत अछि। एहि रचना-विधानसँ सीताक प्राकट्य एकटा अलग चमत्कार नहि, समष्टिक आवश्यकता बनैत अछि।

कवि मिथिलाक विवाह-संस्कृति आ राम-जनमक कथा एक-दोसरासँ जोड़ैत छथि। पृ. १४ पर ‘मिथिला बीच विवाहक लाथे, संग हैव संग चलब जहाँ’ जकाँ भविष्यसूचक भावक उपस्थिति अछि। ओहि ठाम कथा-समय आ भक्तक वर्तमान अनुभव परस्पर सटल अछि; अवतारक पुरातन घटना बारंबार संकीर्तनक वर्तमानमे आबि रहल अछि। एहि काल-संयोजनकें ऐतिहासिक तिथिक एकरेखीय प्रस्तुति नहि, भक्तिपरक रस-व्यवस्था मानि पढ़ब अधिक उपयुक्त अछि। प्रारम्भिक पद्य मे संस्कृतनिष्ठ धार्मिक पदक संग लोकप्रचलित क्रिया, सम्बोधन, विनती आ छन्द-भंगिमा अछि। एकहि श्लोकवत् वाक्यमे ‘अधर्म’, ‘अवतार’ आ ‘धर्म धूजा’ संग सामुदायिक गायनयोग्य ध्वनि बनैत अछि। कविक भाषा बौद्धिक अलङ्कारक प्रदर्शनसँ अधिक भावक सामूहिक वहनकें प्रमुखता दैत अछि। एहि प्रक्रिया मे असहज वाक्यगठन आ छन्द-समताक परिवर्तन सेहो भेटैत अछि; ओकरा सम्पूर्ण रूपसँ दुर्बलता अथवा सम्पूर्ण रूपसँ सचेत कलाकौशल कहब साक्ष्यसँ आगाँ जायब होयत।

८. ‘रामजन्म सोहर’: संस्कारगीतक काव्यात्मक रूपान्तरण (पृ. १५-२१)

पृ. १५ सँ ‘रामजन्म सोहर’क शीर्षक आ क्रमांकित पद आरम्भ होइत अछि, जे पृ. २१ धरि चलैत अछि। अयोध्याक राजमहल, दशरथ-परिवार, रानी, शुभसूचना, बाजा-बजौनाइ, दान-दक्षिणा आ स्त्री-समुदायक आनन्द एहि गीत-संसारक मुख्य दृश्य अछि। सामान्य पुराणकथा जन्म-उत्सवक स्थानीय संस्कारगीतमे रूपान्तरित होइत अछि। ‘सोहर’ शब्द स्वयं काव्य-विधा आ सामाजिक अनुष्ठान—दूनुक संकेत दैत अछि; गीतकें घर-आँगन, बधाइ, स्त्रीक सामूहिक स्वर आ शुभ अवसरक श्रव्य परिवेशमे राखैत अछि।

एहि खण्डमे केवल देवावतारक प्रशस्ति नहि अछि; सोना, गृह-भेट, वस्त्र, बाजा आ दानक दृश्य जन्मोत्सवक भौतिक समृद्धि व्यक्त करैत अछि। राजघरानाक भव्यता आ लोकपरम्पराक व्यवहार एकठाम आबैत अछि। जन्मक समाचार जेना परिजनसँ नगर धरि पसारैत अछि, ओहिना कथनक स्वर व्यक्तिगतसँ सामूहिक बनैत अछि। एहि प्रसंगक प्रमुख साहित्यिक फल अछि जे रामजी देवता होइतहुँ शिशु, पुत्र आ परिवारक आनन्दक केन्द्र बनैत छथि।

पृ. १८-२१ क पद सभमे विशिष्ट दृष्टि ई अछि जे रामक दिव्य स्वरूप बुझनिहार आ हुनक लौकिक बालरूप देखनिहारक बीच भावान्तर अछि। लुटैत रत्न, हँसैत महारानी आ गाबैत समूहक विवरण नहि मात्र अतिशयोक्ति; ई भक्तिरसक प्रकट-पद्धति अछि। स्त्री-स्वरक समावेश गीतकें अनुष्ठानक सामाजिक साँचे मे स्थापित करैत अछि, मुदा राजा-रानीक केन्द्रित चित्रण साधारण परिवारक श्रम वा विषमताकें लगभग अप्रकट रखैत अछि। एहि सीमाक उल्लेख आधुनिक समालोचनामे जरूरी अछि।

शीर्षक 'सीतावतरण'क मध्य रामजन्म-सोहरक स्थान एकटा विशेष आलोचनात्मक प्रश्न उत्पन्न करैत अछि। सीताक अवतरणक कथा कहबाक पहिने रामक जन्मक विशद गीत पाठककें आराध्य-युगलक संयुक्त दृष्टिसँ परिचित करबैत अछि। परन्तु उपोद्घातमे गीत-समावेशक स्वीकारोक्ति ध्यानमे रखैत एहि खण्डक मूल क्रम निश्चित मानल नहि जा सकैत अछि। काव्य-विन्यासक रूपमे एकर प्रभाव पर विचार कएल जा सकैत अछि; मूल पाण्डुलिपिक स्थिति पर नहि।

९. जनकक अभिलाषा, नारदक संवाद आ शिव-आराधनाक प्रवेश (पृ. २१-२२)

रामजन्मक प्रसंगक बाद कथा जनकक राजपरिवार दिस बढ़ैत अछि। जनकक बेटी-जन्मक अभिलाषा, राजद्वारक सभा आ ऋषि-मुनिक परामर्शक उल्लेख पृ. २१-२२ पर भेटैत अछि। जनक 'विष्णु' आ 'महाशक्ति'क अवतार सम्बन्धी आश्वासनक सन्दर्भमे शरण आ साधनाक उपाय पूछि रहल छथि। नारद, शिव, तपस्या आ यज्ञ एतय कथानकक संक्रमण-यन्त्र बनि उपस्थित होइत अछि।

ई संक्रमण विशेष किएक तँ सीताक जन्म जैविक वंश-विस्तारक एकरेखीय प्रसंग नहि, दैवी इच्छा, धर्म-संकट आ लोककल्याणक संयुक्त रूपमे रूपायित अछि। मिथिला भूमि केवल कथाक पृष्ठभूमि नहि, अगिला अवतरणक हेतु-पृथ्वी बनैत अछि। जनकक आकांक्षामे 'पुत्री'क

महत्त्व केन्द्रीय अछि; एहि ठाम सामान्य पितृवंशीय पुत्रकामनाक अपेक्षा बेटी-जन्मक पावन आशा एकटा सांस्कृतिक उलटबाँसी रचैत अछि।

१०. ‘शैव पदावली’: शिव-गौरीक घरेलू बोली आ लीलामय विरोध (पृ. २२-२९)

पृ. २२ पर ‘शैव पदावली’ अलग शीर्षकसँ आरम्भ होइत अछि। पहिल पदमे गौरीक लोकवाणी छेक; ‘बमभोला हमरा चाकर रखता कहबनि हे गौरी’ आ भाँग-पीनाइ, झोड़ी, हाजिरी-जकाँ विषयसँ शिव एक आकाशस्थ दुर्गम देव नहि, मिथिलाक घरेलू हास-परिहासक पात्र बनैत छथि। शैवभक्तिमे महिमा आ विनोदक सहअस्तित्व एतय पाठ-सिद्ध अछि; अतएव एहि पदावलीकें केवल ‘शिवस्तुति’ कहि समाप्त करब अनुचित होयत।

पृ. २३-२५ क संवादात्मक गीत सभमे विवाह, कन्याक पक्ष, वरक विचित्र वेश, गौरीक आशंका, घरक व्यवहार, भाँग आ नोकझोंकक रूप देखाइत अछि। ‘हे दानी’ जकाँ पुनरावृत्त सम्बोधन श्रोता आ गायकक बीच प्रत्युत्तरक सम्भावना बढ़बैत अछि। काव्य-स्वर एकटा विश्वरक्षक महादेवकें लोक-समाजक विवाह-विनोदमे खिंचि आनैत अछि। ई ‘उच्च’ पुराण-प्रतिमा आ ‘निम्न’ घरेलू व्यवहारक विडम्बना नहि, लोकभक्तिक समावेशी काव्य-चाल अछि।

पृ. २६-२९ मे गौरीक रूठब, शिवक स्वीकार, परिवारक अन्तरङ्गता आ श्रृङ्गारमिश्रित मान-मनौवल विभिन्न पदमे बदलैत रहैत अछि। प्रत्यक्ष वाचिकता, छोटे पंक्ति-विराम आ भावक तुरन्त परिवर्तन ई संकेत करैत अछि जे गीत सभ पाठमे एकसाथ राखल गेलहुँ स्वतंत्र गेय रचनाक लक्षण सुरक्षित रखैत अछि। ‘प्रबन्ध’मे शिवपदक उपस्थितिक एकटा प्रयोजन जनकक व्रत, महादेवक प्रसन्नता आ सीता-अवतरणक मार्ग प्रशस्त करब अछि; दोसर प्रयोजन संभवतः संकलनमे स्नेहलताक शैवगीतक नमूना राखब। दूनू व्याख्या सम्भव अछि, मुदा निश्चित सम्पादकीय मूल-क्रम उपलब्ध नहि।

एहि पदावलीक साहित्यिक शक्ति ओकर बहुवाचिकतामे अछि। पौराणिक कथा एकल सर्वज्ञ वक्ता नहि कहैत; गौरी, दानी, वरपक्ष, स्त्री-समुदाय आ भक्तक आवाज बदलैत रहैत अछि। छन्दक विवेचनमे मात्राक कड़ाइ लागू करबाक पहिने लोकगायनक टेक, टुकड़ा आ पुनरुक्तिक भूमिका देखनाइ चाही। मूल स्वरांकन वा धुन उपलब्ध नहि, तँ कोनो निश्चित राग-तालक दावा एहि समीक्षा मे नहि कएल गेल अछि।

११. जनकक यज्ञ, दुर्भिक्ष आ भूमिजा-जन्मक तैयारी (पृ. ३०-३२)

शैव पदावलीक बाद पृ. ३० पर कथात्मक स्वर स्पष्ट रूपेँ पुनः मुखर होइत अछि—जनकक यज्ञ, ऋषि-मुनिक परामर्श, यज्ञभूमिक तैयारी आ धरतीक असन्तुलनक विवेचन अछि। ‘अब जाय करू हे जनक यज्ञ’ जकाँ आदेशात्मक पद कथा के अगिला चरणमे धकेलैत अछि। यज्ञ एतय केवल कर्मकाण्डक वर्णन नहि, लोकक दुर्दशासँ पार पाबै लेल सामाजिक-धार्मिक आयोजनक प्रतीक अछि।

पृ. ३१ पर वर्षाक अभाव आ मर्माहत समाजक सन्दर्भ, यज्ञ-समापनक अपेक्षा आ पञ्चमी तिथिक उल्लेख भेटैत अछि। ओहि प्रसंगमे मिथिला भूमि, पवित्र नदी आ ऋतु-कालक संयुक्त उपस्थिति सीता-जन्मक भौगोलिक आ कालिक रूपरेखा बनबैत अछि। कवि जनककेँ पृथ्वीक कठिनाइमे चिन्तित राजा आ दैवी विधानक प्रतीक्षा करैत पिता दूनू रूपमे देखबैत छथि।

पृ. ३२ पर जनकक हलसँ धरती जोतनाइ, ‘मोर मन के बेटी’क आकांक्षा, धरतीक कोख आ कन्या-प्राकट्यक प्राकृतिमय सम्बन्ध एके दृश्यभित्ति पर भेटैत अछि। खेत, हल, फराक, कंचन-जकाँ प्रकाश आ किलकारीक समन्वयसँ सीताक जन्म राजमहल नहि, कृषिप्रधान लोकजीवनक केन्द्रमे घटैत अछि। एहि बिन्दु पर ‘सीतावतरण’क शीर्षक अपन सर्वाधिक ठोस अर्थ पबैत अछि: अवतार परमशक्तिक अछि, माध्यम मिथिलाक धरती अछि, आ प्रथम साक्षी राजा जनक छथि।

१२. सीताक प्राकट्य, पुत्री-भाव आ जनसमाजक उल्लास (पृ. ३२-३५)

पृ. ३२-३३ मे कंचन-हल, पृथ्वी, तेजोमय बालिका आ नगरमे पसारल समाचारक चित्रण अछि। जनकक मनमे जे कन्याक अभाव छल, से भूमिजा-प्राकट्यसँ सुखमे बदलैत अछि। पृ. ३४ क गीतात्मक उद्घोष ‘मिथिला के धरती सोहागिन जानकी जन्म लेल रे’ एहि परिवर्तनक सङ्क्षिप्त भाव-सार अछि। एक वाक्यमे भूमि, गृहस्थ-सौभाग्य, मिथिलाक सामुदायिक पहचान आ कन्याजन्मकेँ एक करैत अछि।

पृ. ३३ पर बालिकाक तेज, मुखक प्रकाश, चन्द्र-सूर्यादि उपमान आ सभक जयध्वनिक संग दैवी सौन्दर्य रचल गेल अछि। उपमान बहुल अछि, पर दैवी शरीरक ऊर्जाकेँ लोकदृष्टिसँ बुझबाक चेष्टा

सेहो अछि। जनक ‘सुनयना’क संग बेटी-प्राप्ति पर प्रसन्न छथि; माँ आ पिताक संयुक्त आनन्द एहि दृश्यकें केवल राजकीय चमत्कारक पाठसँ अलग करैत अछि।

पृ. ३४-३५ मे गायन, मगन नगर, शुभदर्शन, दान आ उत्सव पुनः लौटैत अछि। रामजन्म सोहरमे जे सामूहिक आनन्द अयोध्यामे देखा पड़ल छल, सीता-जन्ममे ओकर मिथिलामूलक प्रतिबिम्ब बनैत अछि। ई दोहराव सरल कथात्मक पुनरुक्ति नहि, राम-सीता युगल जन्मकें दोसर-दोसर नगरमे सममूल्य भाव देबाक काव्य-विधान अछि। तथापि दोन्हू खण्डक सम्पादकीय संगठन साफ़-साफ़ अलग बताओल नहि गेल अछि; समानता मूल कविक सुनियोजित सममिति छल वा सम्पादकक चयनक परिणाम, से निश्चित नहि।

कन्या-जन्मक मूल्यांकनमे एक महत्वपूर्ण सावधानी आवश्यक अछि। कवि आदर्श देवी-बालिकाक रूपमे सीताक प्रशंसा करैत छथि; ई सामान्य बालिका लेल समान सामाजिक अधिकारक घोषणापत्र नहि। तथापि राजपरिवारक बेटी-आकांक्षा आ मिथिलाक सार्वजनिक उत्सव एकटा एहन भावभूमि रचैत अछि जतय बेटी-जन्म शुभ, इच्छित आ सामुदायिक गौरवक घटना बनैत अछि। साहित्यिक पाठसँ एतबे सिद्ध अछि; ऐतिहासिक मिथिलाक समग्र लिङ्ग-संबन्धक सर्वेक्षण नहि।

१३. रचनाक संरचना: निरन्तर आख्यान आ स्वायत्त गीतक द्वन्द्व

उपलब्ध पाठक प्रमुख गतिनक क्रम अछि: मंगलाचरण; धर्म-संकट आ अवतार-विचार; रामजन्म-सोहर; जनकक बेटी-अभिलाषा; शिव-आराधना आ शैव-पदावली; जनकक यज्ञ; धरतीसँ सीताक प्राकट्य; नगरोत्सव। एहि क्रमक स्पष्टतासँ कथा-पाठ सम्भव होइत अछि। मुदा ‘रामजन्म सोहर’ आ ‘शैव पदावली’क पद सभ अपन नम्बर, टेक, वाचिकता आ नाच-गायनक सूचकताक कारण स्वतंत्र काव्य-एकाइयो लगैत अछि।

परम्परागत दीर्घ प्रबन्धकाव्यक अनिवार्य कसौटी रूपेँ सर्वत्र एकहि वृत्त, एकल कथावाचक, औपचारिक सर्ग-विभाजन वा लगातार चरित्र-विकास अपेक्षित कएल जाय तऽ एहि पाठक अलग प्रकृति सोझाँ अबैत अछि। ई लोकगीतक सहायतासँ बनल देवचरित्र-आख्यान अछि, जकर रचनात्मक ऊर्जा कथा-जोड़नाइसँ बेसी भाव-परिसर बनौनाइमे अछि। ‘प्रबन्धकाव्य’क प्रकाशकीय नामकरण मान्य तथ्य अछि; ओकर पूर्ण कलात्मक निर्वाह एकटा आलोचनात्मक प्रश्न बनल रहैत अछि।

गीतक सामूहिक गायनक कल्पना करिते पढ़निहार बहुते ठाम क्रमक टूटनकेँ लोकनाट्यक दृश्य-परिवर्तनक रूपमे अनुभव कऽ सकैत छथि। मुदा लिखित पाठक स्तरपर कथामे लौटबाक संकेत कम अछि; दृश्यगति एकाएक बदलैत अछि। एहि दोहरापनकेँ स्वीकारनाइ—एक दिस लोकविधाक सजीवता आ दोसर दिस सम्पादित पाठक संक्रमण-दुर्बलता—काव्यक संग न्याय करबाक तरीका अछि।

१४. काव्य-भाषा: भक्तिक पद, मैथिली लोकबोली आ मिश्रित पदावली

भाषामे संस्कृत-उत्पन्न धार्मिक शब्द ('अवतार', 'महाशक्ति', 'यज्ञ', 'सरस्वती'), मिथिलाक लोकव्यवहार ('सोहर', 'बाबा', 'दानी', 'हाजिर', 'भाँग', 'गौरी') आ रोजमर्राक क्रियापद एकसाथ चलैत अछि। ई संयोग भाषिक असावधानीक स्वतः प्रमाण नहि; भक्तिरचनाक श्रोता-समुदाय विद्वान् पाठक आ लोकगायक दुनूक बीच विचरण करैत अछि। 'हे', 'रे', 'नहि', 'छथि', 'गाबधि' जकाँ उच्चारण-चिह्नक माधुर्य गीतक श्रव्य रूप बनबैत अछि।

पुस्तकमध्य कवि-भनिताक रूप 'स्नेहलता' आ 'लतिका सनेह' जकाँ बदलैत देखाइत अछि। एहन भिन्नतालाई लेखकत्वक अनिवार्य विरोध नहि मानब; भक्तकाव्यमे भनिता, प्रेमनाम आ पदक अन्तिम हस्ताक्षरक अलग प्रचलन रहैत अछि। तथापि प्रत्येक रूपक उपलब्ध मुद्रित पृष्ठसँ मिलान कए बिना एककृत मानक बनौनाइ पाठविकृति उत्पन्न करि सकैत अछि। सुधारणीय मुद्रण-दोष आ मूल गीतक ध्वन्यात्मक, लोकभाषिक वैविध्य बीच भेद आवश्यक अछि।

किछु पद्य मे मानक गद्य-व्याकरणक अनुसार वाक्यक्रम उलट-पुलट अछि, कतहु संस्कृतनिष्ठ समास गीतक लयकेँ भारी करैत अछि, आ कतहु लोकरीतिक दोहराव अर्थकेँ सरल बनबैत अछि। आलोचनामे ई प्रश्न देखनाइ चाही जे कोन असमञ्जस मूल कविक शैली अछि, कोन सम्पादित पाठक छनौट आ कोन छपाई/क त्रुटि। आधार पाण्डुलिपिक अभावमे निश्चित पाठशुद्धि प्रस्तावित नहि कएल गेल अछि।

१५. रस-संयोजन: दास्य, वात्सल्य, हास्य आ लोकमङ्गल

रचनाक प्रधान भाव राम-सीता-उपासना अछि, मुदा अपन अभिव्यक्तिमे ई एकरस नहि। मङ्गलाचरणमे शरणागत विनय, रामजन्ममे वात्सल्यपूर्ण आनन्द, शिव-गौरीक दृश्यसभमे हास्यमिश्रित अपनत्व, जनकक यज्ञमे करुणा आ आशा, सीताक अवतरणमे अद्भुत तथा

सामुदायिक हर्ष प्रकट अछि। ई भाव-परिवर्तन गीतात्मक विन्यासकें एक प्रकारक भाव-यात्रा बनबैत अछि।

विशेषतः शिवक भाँग-संबन्धी रूप आ गौरीक तिरछी घरुआ दृष्टि लोकभक्तिक परिहासात्मक स्वर राखैत अछि। ई खण्डक अस्तित्व देखबैत अछि जे स्नेहलताक भक्ति केवल संयत देवस्तुति नहि; ओ हँसैत-बोलैत, रूठैत-मानैत पारिवारिक देवजगत् रचि सकैत छथि। दोसर दिस सीताक जन्मक वर्णनमे तेज, प्रकाश आ जयघोष आश्चर्यक रस उत्पन्न करैत अछि। एहि विविधताकें ‘शृङ्गार’ वा ‘भक्ति’मे से मात्र समेटब पाठक बहुवचनता घटेबाक जोखिम होयत।

१६. मिथिलाक भूगोल, कृषि आ संस्कारक सांस्कृतिक पाठ

डरोड़ी, विदेहनगर, मिथिला, जनक, हल, यज्ञभूमि आ नदी-पृथ्वी के संकेत पाठक आत्मीय भूगोल निर्मित करैत अछि। ‘मिथिला के धरती सोहागिन’क उद्घोष केवल भौगोलिक नामोल्लेख नहि, भूमि-देहक भावात्मक रूपान्तरण अछि। धरतीसँ कन्या भेटबाक कथामे कृषि-कर्मक वस्तु—हल, खेत, जोतब—धार्मिक रूपमे प्रतिष्ठित होइत अछि।

सोहरक बाजा, बधाइ, वर-वधूक विनोद, विवाहक लोकसंवाद आ सामूहिक स्त्रीगायनक संकेत मैथिल संस्कार-लोकक लिखित अभिलेखक रूपमे महत्त्वपूर्ण छथि। मुदा ई साहित्यक बिम्ब छथि; एहि आधार पर कोनो विशेष गामक आजुक व्यवहार, जातिगत वितरण वा स्त्रीक वास्तविक अनुष्ठानिक भूमिकाक पूर्ण मानवशास्त्रीय निष्कर्ष नहि काढ़ल जा सकैत अछि। रस-प्रधान काव्य सांस्कृतिक साक्ष्य दैत अछि, सामाजिक जनगणना नहि।

१७. कथन-दृष्टि आ स्त्री-स्वर: सीता, सुनयना, गौरी आ गायिका-समुदाय

ग्रन्थमे सीता सर्वाधिक पूजित पात्र छथि; हुनक प्राकट्यक प्रसंग धरती आ परिवारक भावसँ भरल अछि। मुदा उपलब्ध पृष्ठमे सीताक अपन प्रत्यक्ष वाणी अत्यल्प अछि, किएक तँ कथाक अन्त सीता-जन्मक उत्सवपर केन्द्रित अछि। अतएव सीताक आत्मनिर्णय, प्रौढ़ स्त्रीत्व वा आगूक जीवन-धर्म एतय कल्पनासँ जोड़नाइ पाठ-संगत नहि होयत। एहि रचनाक केन्द्रीय स्त्री-विषय ‘प्राकट्यक आकांक्षा’ अछि, सीताक पूरा जीवन-चरित नहि।

हुनक विपरीत शिवपदमे गौरीक संवाद अपेक्षाकृत मुखर अछि: विवाह, वस्त्र, भोजन, वेशभूषा, रूठब-मनौनाइ आ घर-संसारक सवाल स्वयं स्त्री-वक्ता रखैत अछि। एही भिन्नतासँ

आलोचनात्मक रोचकता उत्पन्न होइत अछि—महादेवी सीता दैवी प्रतिमाक रूपमे वर्णित छथि, गौरी लोकपरिचित बोलनिहार नारीक स्वरूपमे। दुनू प्रस्तुति अपन प्रसंगक साहित्यिक प्रयोजन पूरा करैत अछि; किन्तु आवाजक असमानता पाठमे स्पष्ट देखाइत अछि।

१८. परिशिष्टक स्थान आ रचनाकारक व्यापक काव्य-संसार (पृ. ३६-४८)

‘परिशिष्ट: स्नेहलताक किछु विशिष्ट गीत’ शीर्षक पृ. ३६ पर छपल अछि। एहि शीर्षकसँ एक बात निश्चित होइत अछि—सम्पादक एहि खण्डकेँ मुख्य प्रबन्धकाव्यसँ अलग पहचान देने छथि। परिशिष्टक गीत सबकेँ सीता-जन्मक मूल घटनाक स्वाभाविक अगिला सर्ग मानि समीक्षामे रखब अनुचित होयत। ओ गीत कविक बहुमुखी अभिरुचिक प्रमाणसामग्री छथि आ प्रकाशकीय दृष्टिसँ कवि-परिचयक विस्तार सेहो।

१८.१ मिथिला महिमा (पृ. ३६)

‘मिथिला महिमा’मे मिथिलाकेँ प्रकृति, संस्कृति, परम्परा आ रामललाक प्रिय भूमि बनाओल गेल अछि। ‘भूमण्डल के अमर गोद मे’सँ आरम्भ होइत स्तुति पृथ्वीपर मिथिलाक सांस्कृतिक स्थानक भावचित्र बनबैत अछि। पवित्र भूगोल एतय लोक-जन्मभूमिक गौरवमे परिणत होइत अछि। मुख्य काव्यमे जनकक धरती प्रतीक छल; परिशिष्टमे ओहि भूमि स्वयं प्रशस्तिक विषय बनैत अछि।

१८.२ मैथिली वन्दना आ पराती (पृ. ३७, ४७-४८)

‘मैथिली वन्दना’ मे महारानी सीताकेँ करुणा, धर्म आ आत्मसमर्पणक केन्द्र बनाओल गेल अछि; काव्य-नायकाक आराधना सीधे भक्तक प्रथमपुरुष वाणीमे आबैत अछि। एहि गीतसँ ‘मैथिली’ शब्दक देवी-सम्बन्धी अर्थ सोझाँ अबैत अछि, जकरा मैथिली भाषाक नामसँ स्वतः अभिन्न मानि नहि लेबाक चाही। पृ. ४८ क ‘पराती’मे जागरण आ भोरक पुकार अछि; समयक दैनिक चक्र आ भक्ति-अनुष्ठानक पुनरावृत्ति लोकगीतक प्रयोग-सन्दर्भ उजागर करैत अछि।

१८.३ विनय आ राम वन्दना (पृ. ३८)

‘विनय’क पंक्तिमे ईश्वरक शरणागति, आत्मग्लानि आ क्षमायाचनाक भाव प्रमुख अछि। पाठक कविक भक्ति-संवेदना आ नैतिक आत्मपरीक्षणक सम्बन्ध देखैत अछि। तत्पश्चात् ‘राम वन्दना’मे प्रभुक गुणगान आ दीनवत्सलताक स्वर अछि। ई दू गीत मुख्य आख्यानक सामूहिक

उल्लासक तुलनामे अधिक निजी साधनाक चरित्र रखैत अछि। विनय-गीतक काव्यशक्ति आत्मकेँ असहाय माननाइमे नहि, आश्रयक सम्भावना जाग्रत करबामे अछि।

१८.४ श्रीकृष्णक पनिघट लीला (पृ. ३९-४३)

‘श्रीकृष्णक पनिघट लीला’मे गोपी, यमुना, पनिघट, जल, बाँट रोकेबाक लीला, हँसी-ठट्टा आ उलाहना उपस्थित अछि। नायक कृष्ण छथि आ कथनक गति मिथिलाक रामोपासनासँ वृन्दावनक चपल लोकमाधुरी दिस सरकैत अछि। कविता केवल धार्मिक मतान्तरक नमूना नहि; आन्तरिक लोकवाणी, नेग-चेष्टा आ प्रतिरोधमय विनोदक सहायतासँ नायिका-संवादक एक अलग काव्य-रूप बनैत अछि। पृ. ४३ पर एहि रचनाक अवसान आ अगिला महेशवाणीक आरम्भ देखाइत अछि।

१८.५ महेशवाणी (पृ. ४३-४७)

‘महेशवाणी’मे शिवक असामान्य वेश, गौरीक घरेलू शिकायत, नारद-प्रसंग, भस्म, भूत-प्रेत आ देवत्वक अनेक असंगत-से लगैत मेल रोचक बनि उठैत अछि। मुख्य भागक ‘शैव पदावली’ आ परिशिष्टक ‘महेशवाणी’ बीच विषयगत निकटता अछि, मुदा एके रचनाक दू रूप अथवा मूल क्रमक अलग अंश कहबाक ठोस पाण्डुलिपि-साक्ष्य उपलब्ध नहि। जतेक प्रमाण अछि, ओतबे कहि सकैत छी जे कविक शैव-लोकगीत-रचनामे हास्य आ पूजा एक-दोसराकेँ बाधित नहि करैत अछि।

१८.६ चेतावनी आ ‘स्नेहलताक अन्तिम अपूर्ण रचना’ (पृ. ४८)

अन्तिम उपलब्ध मुद्रित पृष्ठ पर ‘चेतावनी’ शीर्षकसँ जीवनक अनित्यता, मोह आ जागरणक सन्देश भेटैत अछि। ओहि पृष्ठ पर ‘स्नेहलताक अन्तिम अपूर्ण रचना’ शीर्षक सेहो अछि। ‘अपूर्ण’ शब्द सम्पादकीय प्रस्तुति मे स्वयं उपस्थित अछि; अतएव एहि अंशकेँ जबरदस्ती पूर्ण पदक रूप देब अथवा हरायल अन्त जोड़ब अनुचित होयत। ‘अन्तिम’क अर्थ ऐतिहासिक रूपसँ कविक अन्तिम लिखल रचना अछि, ई निष्कर्ष केवल शीर्षकक आधार पर निश्चित नहि; उपलब्ध संस्करणक अपन श्रेणीकरण एतबे सिद्ध करैत अछि।

१९. परिशिष्ट आ मूल प्रबन्धक भेद किएक महत्त्वपूर्ण अछि

परिशिष्ट पाठककेँ स्नेहलताक आराधना-परिसरक विस्तार बुझबैत अछि—राम, सीता, कृष्ण, शिव, मिथिला, विनय आ चेतावनी। एहि कारण काव्य-समीक्षामे परिशिष्ट उपयोगी तुलनात्मक सामग्री अछि। तथापि ई ‘सीतावतरण’क कथानक आ विस्तार-पृष्ठक अनुपातबारे निर्णयकेँ बदलि नहि सकैत; किएक तँ सम्पादक ओहि गीतकेँ स्पष्ट रूपसँ मुख्य रचनासँ अलग राखलनि। ‘४८ पृष्ठक सीता-जन्म प्रबन्ध’ कहि सभ पृष्ठकेँ एकै कथाक पृष्ठ मानब तथ्यात्मक रूपसँ गलत होयत।

दोसर महत्त्वपूर्ण बिन्दु कहल जाय: स्नेहलता रामाश्रयी रसिक परम्परासँ सम्बन्धित होइतहुँ शैव आ कृष्णोपासना विषय पर सहजे रचना करैत छथि। एही संगति सँ एकटा समावेशी भक्तिरूपक संभावना देखाइत अछि। मुदा ऐतिहासिक सम्प्रदाय-परिवर्तन, गुरु-परम्परा वा मतागमक नियत सूची एतय उपलब्ध नहि; कविक बहुविषयक काव्य-उपस्थिति धरि सीमित रहब अधिक प्रमाणसंगत अछि।

२०. मुद्रण आ पाठसम्पादनक समस्या: पाठक प्रति जवाबदेही

ग्रन्थक पृ. ४ मे सम्पादक संकलन-सम्पादन आ मुद्रणक क्रममे सम्भावित त्रुटि लेल क्षमा माँगैत छथि। त्रुटिक इजहार लेखकक पाठसँ छेड़छाड़क खुला अनुमति नहि; उल्टे शोधक लेल आवश्यकता बढ़बैत अछि जे उपलब्ध पाठ आ मूल पाण्डुलिपि एक बेर आमनेसामने राखल जाय। पदक मूल टेक, पंक्ति-विराम, भनिता, राग-तालक सूचना आ छन्दक रूप सुरक्षित राखल बिना नवीनीकरण करब खतरनाक होयत।

अध्ययनक क्रममे पृ. ५ क हस्तलेखन आ किछु स्थानक-गुणवत्ता एहन अछि जतय अक्षरक शत-प्रतिशत निश्चित प्रतिलेखन सम्भव नहि। ताहि कारण एतय अस्पष्ट शब्द पर आधारित पंक्तिवार व्युत्पत्ति, ग्रन्थकारत्वक विवाद वा अनुसंधानिक व्याकरण-सिद्धान्त नहि गढ़ल गेल अछि। प्रमाणित पाठसम्पादनक अगिला चरणमे मूल हस्तलिपिक उपलब्धता, पंक्तिवार पाठान्तर-पञ्जी आ लेखकक अन्य छपल पोथीक तुलनात्मक जाँच अनिवार्य होयत।

२१. मूल्यांकन: उपलब्धि आ सीमा—चारि परस्पर सम्बद्ध कसौटी

२१.१ विषयगत उपलब्धि

कविक सबसँ महत्त्वपूर्ण उपलब्धि ई जे सीताक धरतीसँ प्राकट्यकेँ मिथिलाक लोकजीवन, हलक कृषि-बिम्ब आ कन्या-जन्मक सामाजिक हर्षसँ जोड़ल गेल अछि। सीता दैवी शक्ति छथि, मुदा पिताक लालसा, माताक हर्ष आ नगरक गायन हुनका घर-आँगनक आत्मीय बालिका बनबैत अछि। ई घरेलूकरण आ महिमामण्डनक संयुक्त प्रक्रिया कविता केन्द्रीय विषयसँ मिलैत अछि।

२१.२ रूपगत उपलब्धि

स्नेहलताक गीतक भाषा सुनबामे उपयुक्त अछि: टेक, सम्बोधन, दोहराव, सोहरक लय, हास्यपूर्ण बोलचाल आ लोकअनुष्ठानक पद सभ मिलिक एकटा प्रस्तुतीकरण-योग्य काव्य-लोक रचैत अछि। ‘शैव पदावली’ आ ‘रामजन्म सोहर’क ऊर्जा पाठककेँ ग्रन्थक बाहिर गायनक कल्पना दिस लऽ जाइत अछि। ई उपलब्धि लिपिबद्ध कवितामे ध्वनि-प्रधान अनुभूति सुरक्षित रखबाक अछि।

२१.३ कथात्मक सीमा

मूल कथानक आ स्वतंत्र पदक बीच संक्रमण अनेक ठाम अकस्मात् अछि। शीर्षक ‘सीतावतरण’ होइतहुँ रामजन्म आ शिव-गौरी प्रसंगक विस्तृत अवकाश एकाग्र कथा-अपेक्षा राखनिहार पाठक लेल असमान अनुपात उत्पन्न करैत अछि। तथापि एकर सभ जिम्मेदारी मूल कविक माथ पर राखब अनुचित, किएक तँ सम्पादक स्वयं मुक्तक गीतक समायोजनक बात कहने छथि। आलोचनाक सटीक रूप अछि—‘उपलब्ध सम्पादित संस्करणमे संक्रमणक स्पष्टता सीमित अछि’।

२१.४ शोधोपयोगिता आ सम्पादकीय सीमा

ग्रन्थ लुप्तप्राय काव्य-सामग्रीक मुद्रित संरक्षण करैत अछि आ स्नेहलताक बहुमुखी गीतधाराक परिचय दैत अछि। मुदा मूल हस्तलिपिक फोटोपटल, संपूर्ण पाठान्तर, किन गीतकेँ कोन स्थान पर जोड़ल गेल तकर तालिका, गीत-संग्रहक तिथि आ छन्द-ध्वनिक निरूपणक अभाव अछि। एहि कमी सँ सम्पादकीय योगदान कम महत्त्वपूर्ण नहि होइत; भविष्यक प्रामाणिक आलोचनात्मक संस्करणक आवश्यकता निश्चित होइत अछि।

२२. स्वतन्त्र बाहरी सन्दर्भसँ जाँच: की पुष्ट होइत अछि आ की नहि

‘विदेह’ पोथी-सूचीमे प्रकाशित २०११ सम्पादित पुस्तकक उल्लेख भेटैत अछि। ‘मैथिल मंच’क पुस्तकालय-सूचीमे कपिलदेव ठाकुर ‘स्नेहलता’ नामसँ ‘वैदेही विवाह संकीर्तन’क पुस्तक-विवरण भेटैत अछि। एहि दू साक्ष्यसँ राम-सीता केन्द्रित रचनात्मकता आ सम्पादित पोथीक सार्वजनिक उपस्थिति पुष्ट होइत अछि। मुदा ‘वैदेही विवाह संकीर्तन’क पाठक संग एहि संस्करणक पंक्ति-दर-पंक्ति मिलान एतय नहि कएल गेल; समान/भिन्न रचनाक संख्या बतौनाइ अनुमान होयत।

‘मैथिल मंच’क २०२१क समाचारमे स्नेहलतापर प्रस्तावित वृत्तचित्रक सूचना आ डरोड़ी ग्रामसँ सम्बन्धक उल्लेख अछि। समाचार-स्वरूपक स्रोत कविक स्मृतिसंरक्षणक समकालीन संकेत मानल जा सकैत अछि, मुदा एतय फिल्म पूर्ण बनल, जारी भेल अथवा ओकर अनुसन्धान प्रमाणित भऽ गेल, एहन कोनो दावा नहि कएल गेल अछि। पुस्तकक मूल उपोद्धात प्रमुख जीवनी-साक्ष्य अछि; बाहरी स्रोत सभ ओकर सहायक सन्दर्भ मात्र छथि।

आवरण—मुद्रित पृ. ४	आवरण, शीर्षक, प्रकाशकीय परिचय, सम्पादकीय उपोद्धात
मुद्रित पृ. ५–१०	हस्तलिखित सन्देशक प्रतिछवि, समर्पण वाक्य, ‘रचनाक हेतु’
मुद्रित पृ. ११–१४	गणेश-नमन, सरस्वती वन्दना, धर्मसंकट, अवतारक भूमिका
मुद्रित पृ. १५–२१	‘रामजन्म सोहर’—क्रमांकित गीत आ अयोध्याक उत्सव
मुद्रित पृ. २२–२९	जनकक अभिलाषाक संक्रमण आ ‘शैव पदावली’—शिव-गौरी-सम्बन्धी पद
मुद्रित पृ. ३०–३५	जनकक यज्ञ, भूमिजा-जन्म, सुनयना, मिथिलाक उत्सव
मुद्रित पृ. ३६–३८	परिशिष्ट: मिथिला महिमा, मैथिली वन्दना, पराती-प्रारम्भ, विनय, राम वन्दना
मुद्रित पृ. ३९–४३	परिशिष्ट: श्रीकृष्णक पनिघट लीला

आवरण—मुद्रित पृ. ४	आवरण, शीर्षक, प्रकाशकीय परिचय, सम्पादकीय उपोद्धात
मुद्रित पृ. ४३-४७	परिशिष्ट: महेशवाणी आ शिव-गौरी-विषयक गीत
मुद्रित पृ. ४८	पराती/चेतावनी आ 'स्नेहलताक अन्तिम अपूर्ण रचना'

२४. समेकित आलोचनात्मक निष्कर्ष

‘सीताावरण’ एहन मुद्रित सम्पादकीय कृति अछि जाहिमे कपिलदेव ठाकुर ‘स्नेहलता’क भक्तिपरक प्रबन्ध-संभावना, राम-सीता केन्द्रित रसिक संवेदना आ मैथिल लोकगीतक सक्रिय स्वर मिलैत अछि। काव्यक केन्द्रीय दृश्य सीताक भूमिजा-प्राकट्य अछि: धर्मसंकटसँ आरम्भ भेल कथा जनकक कन्याभिलाषा, यज्ञ, धरतीक उदर आ नगरक उत्सव धरि पहुँचैत अछि। एहि दृश्यकेँ प्रभावशाली बनबैत अछि मिथिलाक कृषिसंस्कृति, बेटी-जन्मक स्नेह आ दैवी प्रतिमाक पारिवारिक आत्मीयता।

पाठक काव्य-विन्यास पर एकरा स्पष्ट दृष्टिसँ देखबाक चाही: ई निर्बाध एकसर्गीय कथाप्रवाह नहि, लोकगायन-संवलित सम्पादित प्रबन्धात्मक पाठ अछि। एहिमे रामजन्म-सोहर आ शैव-पदावलीक स्वायत्तता, कृष्ण-शिवपर अलग परिशिष्ट तथा नानाविध भनिता इतिहासक मूल्यवान सामग्री छथि। एहि रूपमे एकर बल ‘शुद्ध’ महाकाव्य-रूपक अनुकरण नहि, लोकध्वनि आ उपासना-अनुभवक लेखबद्ध संरक्षण अछि।

सम्पादन पर निष्कर्ष स्पष्ट अछि: डॉ. योगानन्द झाक २०११क प्रकाशनक संग्रहणात्मक मूल्य महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा नामकरण आ गीत-समायोजनक स्वीकृत हस्तक्षेपक कारण आलोचककेँ रचनाकार आ सम्पादकक दायित्व अलग राखय पड़त। एहन भेद बिना छन्द, मूल रचनाक क्रम, कविक अभिप्राय वा प्रबन्धरूपक दोष-गुण पर अन्तिम निर्णय दऽ देब साक्ष्यक उल्लङ्घन होयत। संस्करणक मूल्य एहि बातोमे अछि जे ओ स्वयं अपने निर्माण-प्रक्रियाक संकेत दैत अछि।

अन्ततः ई पोथी आधुनिक मैथिली साहित्येतिहास लेल दू कारणसँ उपयोगी अछि: पहिल, मिथिला-केन्द्रित रामभक्तिक एकटा कम-परिचित रचनासमूहकेँ उपलब्ध करबैत अछि; दोसर, संकीर्तन-संस्कारगीत आ लिखित काव्यक बीच आदान-प्रदान देखबाक दुर्लभ अवसर दैत अछि। भविष्यक सर्वश्रेष्ठ अनुसन्धान मूल पाण्डुलिपि, स्नेहलताक अन्य गीत-संग्रह आ मौखिक गायन-परम्पराक संग एहि संस्करणक प्रमाणाधारित तुलना होयत—एहि अनुपलब्ध साक्ष्यक ठाम ककरो अनुमान नहि भरबाक चाही।

अध्याय 11 / २०१३

मंगल-प्रभात

डॉ. योगानन्द झाक कृतिक आलोचनात्मक विवेचन

१. ग्रन्थ-परिचय आ शोध-पद्धति

‘मंगल-प्रभात’ महात्मा गाँधीक आश्रमवासी लेल लिखल जीवन-नियमक व्याख्याक मैथिली अनुवाद अछि। पुस्तकक आरम्भक पृष्ठमे अंग्रेजी प्रकाशकीय विवरण स्पष्ट करैत अछि जे डॉ. योगानन्द झा हिन्दी रूपान्तरक आधार पर एहि सामग्रीकेँ मैथिलीमे प्रस्तुत कएलनि। शीर्षक-पृष्ठ, प्रकाशकीय विवरण आ अधिकार-पत्र सँ स्पष्ट होइत अछि जे एकरा मिथिला रिसर्च सोसाइटी, दरभंगा द्वारा २०१३ मे प्रकाशित कएल गेल आ नवजीवन ट्रस्टक अनुमति लेल गेल छल। ताहि कारणेँ एकर अध्ययन केवल गाँधी-दर्शनक सारांश नहि, वरन् विचार, अनुवाद, मैथिली पाठकीयता आ प्रकाशन-इतिहासक संयुक्त परीक्षण अछि। (मुद्रित पृ. १-३, १३-१४, ६७-६८)

आश्रम-व्रतक व्याख्या साधारण उपदेशात्मक अनुच्छेद नहि अछि। ‘मंगल-प्रभात’ नाम पयबाक कारण, प्रत्येक मंगलक प्रातःकालक प्रार्थनाक बाद व्रत-विषयक विचार देबाक संकल्प आ तकर प्रकाशनक चर्चा पुस्तकक आरम्भिक निबन्धमे अछि। अलग-अलग लेख पर २२ जुलाई सँ १४ अक्टूबर १९३० धरि अंकित तिथि एहि सामग्रीक क्रमिक रचना-स्वरूपक प्रमाण अछि। एहि ऐतिहासिक क्रमसँ पाठ पढ़लासँ देखाइत अछि जे गाँधीजी एकेक व्रत स्वतंत्र इकाईक रूपमे चर्चित करैत छथि, तथापि निरन्तर ओ सभकेँ सत्य-अहिंसा आ सामूहिक जीवनक केन्द्र सँ जोड़ि दैत छथि। (पृ. १७-१८; निबन्धसभक शीर्ष-तिथि)

दोसर स्रोत सेवाग्राम आश्रम द्वारा उपलब्ध 'From Yeravda Mandir' क अंग्रेजी संस्करण आ आश्रम-व्रत सम्बन्धी मूल/संस्थागत सामग्री अछि। अंग्रेजी संस्करणक उपयोग गाँधी-विचारक व्यापक पाठ-परम्परा आ अध्यायक्रमक तुलना लेल कएल गेल अछि, नकि मैथिली अनुवादक शब्दशः शुद्धता प्रमाणित करबाक लेल। बिनु हिन्दी मध्यवर्ती पाठक पंक्ति-दर-पंक्ति मिलान कएने अनुवादक 'गलती' घोषित करब उचित नहि।

२. प्रकाशन-परम्परा, भूमिका आ अनुवादकक प्रस्तावना

ग्रन्थक आरम्भमे समर्पण, आशीर्चन, गाँधी-साहित्यक महत्त्व सम्बन्धी भूमिका, 'अनुवादक दिससँ' आ काका कालेलेकरक 'निवेदन' भेटैत अछि। ई सभ खण्ड पाठक लेल अलग-अलग प्रवेशद्वार रचैत अछि। एक दिस गाँधीक आदर्शक महत्ता आ मैथिलीमे वैचारिक साहित्यक आवश्यकता रेखांकित होइत अछि; दोसर दिस अनुवादक स्पष्ट करैत छथि जे मैथिलीमे गाँधीजीक मूल विचार उपलब्ध करेनाइ हुनक उद्देश्य छल। काका कालेलेकर पाठक भाषा-प्रसारक प्रश्न उठबैत छथि आ गाँधीजीक विचार बहुभाषी भारतीय पाठक धरि पहुँचबाक अभिप्राय व्यक्त करैत छथि। (पृ. ५-१५)

'अनुवादक दिससँ' (पृ. १३-१४) विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। एतय अनुवादक अपन साहित्यिक प्रेरणा आ अनुवाद-प्रक्रियाक व्यावहारिक कठिनाइ—प्रकाशकीय अनुमति, मैथिली प्रकाशनक व्यवस्था आ पाठक-विस्तार—क विवरण दैत छथि। एहि तथ्य सँ ई पुस्तक केवल वैचारिक आयात नहि रहि जाइत अछि; ई मैथिलीमे दार्शनिक-नैतिक गद्यक आधार बढेबाक सचेत प्रयास बनैत अछि। 'निवेदन' (पृ. १५) मे काका कालेलेकरक दिनांक ६ जून १९५८ छपल अछि। एहि दिनांक केँ २०१३ क मैथिली प्रकाशन-वर्ष मानब भूल होयत; ई पूर्वस्थित प्रस्तावनात्मक वक्तव्यक तिथि अछि।

प्रकाशकीय पृष्ठक अनुसार मैथिली अनुवादक पाछाँ हिन्दी अनुवादक अमृतलाल ठाकोरदास मणावतीक नाम देल अछि। एहि आधार पर ग्रन्थक सम्भावित संप्रेषण-शृंखला 'गाँधीक मूल लेखन → हिन्दी रूपान्तर → मैथिली रूपान्तर' बुझल जाइत अछि। एकरा अंग्रेजी अनुवादक सीधा मैथिली रूपान्तर कहब पुस्तकक स्वयं देल तथ्यक विपरीत होयत। मुदा मध्यवर्ती हिन्दी संस्करणक पूरा पाठ एहि अध्ययनक आधार-पत्रमे उपस्थित नहि अछि, तँ अनुवादक रूपान्तरक सूक्ष्म विचलनक दावे एतय जानि-बूझि रोकल गेल अछि।

३. पन्द्रह मुख्य निबन्ध: पाठ, तर्क आ आलोचनात्मक समीक्षा

३.१ सत्य

मूल पाठ: मुद्रित पृ. १९-२१; लेख-तिथि: २२.०७.१९३०।

आरम्भिक निबन्धमे सत्य केवल सच बाजबाक सदाचार नहि, अस्तित्व आ परमेश्वरक प्रश्न धरि विस्तृत अछि। पाठमे ‘सत्’ केँ स्थिति, विद्यमानता आ वस्तुक असली सत्ता सँ जोड़ल गेल अछि; ‘सत्य’ केँ परमेश्वरक नामक रूपमे विचारल गेल अछि। ई तर्क गाँधीजीक नैतिक जीवन आ अध्यात्मक बीच अटूट सम्बन्ध स्थापित करैत अछि। लेखकक आग्रह अछि जे दैनिक व्यवहारमे सत्यक अभ्यास करैत-करैत मनुष्य व्यापक सत्यक साधना करय। फलतः ई निबन्ध व्रतसभक आधार-पाठ बनैत अछि।

विशेष ध्यान देबाक योग्य बात ई जे निबन्ध सत्यकेँ केवल वाणीधरि सीमित नहि रखैत अछि। विचार, व्यवहार आ मनक भीतरक ईमानदार प्रयास सेहो एतय सत्यक अंश अछि। सत्यक खोज मे स्वयंकेँ परखब, अपन निर्णयक समीक्षा करब आ लोभ-भय सँ मुक्त होयबाक प्रयत्न करब जरूरी ठहरैत अछि। एहि दृष्टिसँ सत्य अविचल घोषणासँ अधिक निरन्तर आत्मपरीक्षणक पद्धति अछि। पाठक अध्यात्म-प्रधान मुहावरा ओकर दार्शनिक आधार देत अछि, मुदा सामाजिक कर्मक संग जोड़लासँ विचार क्रियाशील बनैत अछि।

आलोचनात्मक रूपसँ प्रश्न उठैत अछि: सत्यक निजी अनुभूति आ सार्वजनिक प्रमाणक बीच भेद कोना राखल जाय? गाँधीजीक नैतिक सत्य-साधनाक महत्त्व स्वीकारैत ई स्पष्ट करब उचित अछि जे व्यक्तिगत अन्तःकरणक विश्वास अपने-आप ऐतिहासिक अथवा वैज्ञानिक तथ्यक प्रमाण नहि होइत अछि। आधुनिक सार्वजनिक जीवनमे सत्यक प्रति निष्ठा संग दस्तावेज, जाँच आ तर्क-परीक्षण सेहो चाही। एहि सन्दर्भमे पुस्तकक सत्य-विचारक विशेष बल नैतिक ईमानदारी अछि, तथ्यक प्रत्येक विवादक अन्तिम फैसला नहि।

३.२ अहिंसा

मूल पाठ: मुद्रित पृ. २२-२४; लेख-तिथि: २९.०७.१९३०।

‘अहिंसा’ निबन्ध सत्य आ अहिंसाकेँ एकही साधनाक दू परस्पर जुड़ल पक्षक रूपमे राखैत अछि। पाठ कहैत अछि जे सत्यक सम्पूर्ण दर्शन सहज नहि, ताहि लेल प्रेमक अनुशासन आ

अहिंसक साधन अपेक्षित अछि। अहिंसा मात्र हत्या नहि करब नहि, बल्कि द्वेष, क्रोध, ईर्ष्या आ प्रतिशोधक भीतरक रूपक प्रतिरोध अछि। अत्याचारक विरोध छोड़ि देब सेहो अहिंसाक उद्देश्य नहि; अन्यायक प्रतिकार करैत व्यक्तिक प्रति घृणा नहि पोसब ओकर कठिन शर्त अछि।

निबन्धमे ‘चोर’क उदाहरण महत्त्वपूर्ण अछि। ओकर माध्यम सँ लेखक अपराधीकेँ केवल शत्रु बना कऽ देखबाक बदला ओहि व्यक्तिक मानवीय सम्भावना बुझबाक आग्रह करैत छथि। दण्ड-संस्कृतिक विपरीत ई उदाहरण अन्यायक कारण, व्यवहार आ सम्भावित सुधारक प्रश्न खोलेज। अहिंसा एहि अर्थमे निष्क्रिय सहिष्णुता नहि, बल्कि शक्तिक उपयोगक नैतिक सीमा ठहरबैत अछि। एकर सम्बन्ध शरीरिक, वाचिक आ मानसिक व्यवहार सँ बनैत अछि।

एहि विचारक आलोचनात्मक प्रयोगमे एकटा सावधानी आवश्यक अछि: पीड़ित व्यक्तिसँ ‘प्रेम’ वा ‘क्षमा’क माँग कऽ ओकर सुरक्षा अथवा न्याय पाबबाक अधिकार नकारल नहि जा सकैत अछि। अत्याचार, घरेलू हिंसा वा भेदभावक परिस्थिति मे कानूनी संरक्षण आ ठोस संस्थागत प्रतिरोध जरूरी अछि। गाँधीक अहिंसा सँ प्रतिहिंसा-विरोधक नैतिक तत्त्व ग्रहण कएल जा सकैत अछि, मुदा ओकरा पीड़ितक मौन-स्वीकृति मे बदलि देब पाठक सामाजिक शक्ति घटायब होयत।

३.३ ब्रह्मचर्य

मूल पाठ: मुद्रित पृ. २५-२८; लेख-तिथि: ०५.०८.१९३०।

‘ब्रह्मचर्य’ निबन्ध संयमकेँ शेष सभ व्रतक सहायक अनुशासनक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

एतय ब्रह्मचर्यक अर्थ केवल बाहरी यौन-संयम नहि, मन, इन्द्रिय, आसक्ति आ व्यवहार पर नियंत्रण सँ अछि। पाठक आरम्भमे प्रश्न उपस्थित अछि जे जे व्यक्ति सत्य, अहिंसा आ आत्मसमर्पण चाहैत अछि, से निजी भोग-विलास आ अनियन्त्रित इच्छा संग कोना न्याय करत। ई प्रश्न आश्रमक सामुदायिक जीवनक भीतर आत्मसंयमक उपयोगिता देखबैत अछि।

निबन्धक एकटा आधारभूत विशेषता व्यक्तिगत संयम आ व्यापक सेवा-भावक सम्बन्ध अछि। मनुखक स्नेह जँ बहुत संकीर्ण स्वामित्व-वृत्ति बनि जाय, तँ लोक-सेवाक क्षमता बाधित भऽ सकैत अछि—एहि आशंकासँ लेखक शरीर आ मन दुनूक नियन्त्रणक बात करैत छथि। भोजन,

इन्द्रिय-वृत्ति आ वासनासँ सम्बन्धित विमर्श आगामी 'अस्वाद' निबन्धक संग तर्कसंगत कड़ी बनबैत अछि।

आधुनिक विवेचनमे ब्रह्मचर्यक एकमात्र जीवन-पद्धति केँ सभ व्यक्ति पर लागू करब उचित नहि। सहमति, देह-स्वायत्तता, दाम्पत्यक समानता आ लिंग-न्याय मानवीय गरिमाक आवश्यक आयाम अछि। ताहि कारणेँ एहि अध्यायक अध्ययन आश्रम-नियमक ऐतिहासिक सन्दर्भमे करब चाही। संयमक सकारात्मक अर्थ—अपरिग्रह, जिम्मेदारी, सम्बन्धमे सम्मान—आ व्यक्तिगत जीवन पर कठोर नैतिक नियन्त्रणक सम्भावित सीमा, दुनू केँ अलग-अलग देखब उचित अछि।

३.४ अस्वाद

मूल पाठ: मुद्रित पृ. २९-३२; लेख-तिथि: १२.०८.१९३०।

'अस्वाद' शीर्षकक तात्पर्य भोजनक स्वादक अस्तित्व नकारब नहि, बल्कि स्वादलिप्साकेँ जीवनक प्रधान लक्ष्य नहि बनायब अछि। लेखक स्पष्ट करैत छथि जे भोजन देहकेँ टिकेबाक साधन अछि; केवल जिह्वाक सुख लेल खाएब आत्मनियन्त्रणक बाधा बनि सकैत अछि। निबन्ध अस्वादकेँ ब्रह्मचर्य सँ जोड़ैत अछि: जिह्वा पर नियन्त्रण इन्द्रियसंयमक अभ्यास बनैत अछि। अकारण अधिक भोजन, स्वादक लोभ आ आवश्यकता-बाहिर भोगक प्रवृत्ति विरुद्ध ई तर्क अछि।

पाठमे भोजनकेँ औषध-जकाँ आवश्यकता आ उपयोगिताक आधार पर ग्रहण करबाक तुलना देल गेल अछि। एहिसँ गाँधीजीक नैतिकता देहक सामान्य आ दैनिक क्रिया धरि उतरि अबैत अछि। व्यक्ति सार्वजनिक सत्य-अहिंसाक बात करय, मुदा अपन भोग पर नियन्त्रण नहि राखय, तँ ओकर व्रतव्यवस्था अधूरा रहैत अछि—ई अध्यायक मूल अन्तःसूत्र अछि।

एहि विषयक सामयिक विश्लेषणमे पोषण, आयु, श्रम, स्वास्थ्यस्थिति आ भोजनक सांस्कृतिक महत्त्वक भेद ध्यानमे रखब जरूरी अछि। स्वादक प्रति सजगता आ अति-उपभोगक आलोचना उपयोगी अछि; मुदा कठोर निषेधकेँ चिकित्सा-विज्ञानक सार्वभौम नियम मानब गलत होयत। पोषण-अभाव झेलैत समाजमे 'कम खाएब'क नैतिक उपदेश देब वस्तुस्थिति सँ कटल भऽ सकैत अछि। ग्रन्थक बल भोग-विवेक पर अछि, अनाहारक महिमामण्डन पर नहि।

३.५ अस्तेय (अचौर्य)

मूल पाठ: मुद्रित पृ. ३३-३५; लेख-तिथि: १९.०८.१९३०।

‘अस्तेय’ निबन्ध चोरीक परिभाषाकें सीधा कानून-विरुद्ध वस्तु उठा लेबाक संकीर्ण अर्थ सँ बहुत आगाँ लऽ जाइत अछि। पाठक तर्क अछि जे अनावश्यक वस्तु लेब, दोसरा लेल निर्धारित वस्तुक अनुचित उपयोग, वा जरूरतसँ अधिक संग्रह सेहो नैतिक अर्थमे चोरीक समीप पहुँचि सकैत अछि। एहि ठाम गाँधीजीक नैतिकता सम्पत्तिक औपचारिक स्वामित्व सँ हटि आवश्यकता आ न्यायपूर्ण उपभोगक प्रश्न उठबैत अछि।

अध्यायक विशेषता ‘जरूरत’ आ ‘अधिकार’ बीचक तनाव अछि। जँ कोनो वस्तु वैध खरीदल गेल अछि, तथापि ओकर अनावश्यक उपभोग सामाजिक साधन पर दबाव डालि सकैत अछि— ई नैतिक तर्क आजुक संसाधन-संकट मे सेहो विचारणीय अछि। निबन्धमे सत्य-अहिंसाक संग अस्तेयक रेखाचित्र प्रस्तुत अछि; एकर अर्थ जे परस्पर विश्वास, गैर-हिंसक व्यवहार आ सीमित उपभोग एकमेक सँ जुड़ल अछि।

एकर आलोचनात्मक सीमा सेहो अछि। कतेक उपभोग ‘आवश्यक’ अछि, ई निर्धारण वर्ग, रोग, अपांगता, बाल्यावस्था, श्रमक प्रकृति आ सामाजिक परिप्रेक्ष्यक अनुसार बदलैत अछि। नैतिक अस्तेय कें समाजक निर्धन लोकक छोटी-छोटी इच्छापर कठोर निगरानीक औजार नहि बनेबाक चाही। एकर व्यापक अर्थ प्रभुत्वशाली समूहक अपव्यय, शोषण आ संसाधनक असमान पहुँचक परीक्षणमे बेसी फलदायी अछि।

३.६ अपरिग्रह

मूल पाठ: मुद्रित पृ. ३६-३८; लेख-तिथि: २६.०८.१९३०।

‘अपरिग्रह’ अस्तेयक अगिला तार्किक पायदान अछि। पुस्तकमे एहि शीर्षकक अन्तर्गत जरूरतसँ बेसी वस्तु जमा नहि करब, सञ्चयक लालसाकें घटायब आ दैनिक उपभोगकें सीमित करबाक आग्रह व्यक्त अछि। लेखकक विचारमे सम्पत्ति जमा कएला सँ सुरक्षा आ सन्तोष सुनिश्चित नहि होइत अछि; आवश्यक वस्तुक यथोचित उपयोग आ लोकसेवाक क्षमता नैतिक जीवनक अधिक सार्थक मापदण्ड अछि।

पाठक एक मार्मिक प्रश्न अछि: जखन असंख्य लोकक पास जीवनक अनिवार्य साधन नहि अछि, तखन सम्पन्न व्यक्तिक अत्यधिक वस्तुसंग्रहकें सहज किएक मानल जाय? एहि प्रश्नक

मार्फत अपरिग्रह धार्मिक तपस्या सँ बढ़ि वितरणात्मक न्यायक बहस बनि जाइत अछि। संग्रह छोड़बाक अर्थ सर्वथा निष्क्रियता नहि; जरूरत पूरा करबाक सामर्थ्य राखि बचल साधन समाजक कार्यमे लगायब एतय आदर्श अछि।

आलोचनात्मक दृष्टिसँ अपरिग्रहक मूल्य तखन बेसी स्पष्ट होइत अछि जखन हम नैतिक स्वैच्छिक त्याग आ जनसामान्यक अनैच्छिक अभावक बीच भेद राखैत छी। जे लोक जीवनयापन लेल संघर्षरत अछि, ओकर न्यूनतम सुरक्षा-भंडारकेँ ‘लोभ’ कहब तर्कहीन होयत। अपरिग्रहक प्रासंगिकता संसाधनक असमान वितरण, उपभोक्तावाद आ जिम्मेदार सार्वजनिक व्ययक प्रश्नमे अछि; निर्धनताकेँ अपने-आप पवित्र मानि लेब एहि विचारक न्यायपूर्ण अनुप्रयोग नहि।

३.७ अभय

मूल पाठ: मुद्रित पृ. ३९-४०; लेख-तिथि: ०२.०९.१९३०।

‘अभय’ निबन्ध आत्मिक निर्भीकताकेँ सत्य-अहिंसाक आवश्यक पूर्वशर्त कहैत अछि। लेखक बाहरी भयक अनेक स्रोतक उल्लेख करैत छथि—मृत्यु, जीविका, प्रतिष्ठा, परिजन, राज्यसत्ता, सामाजिक प्रताड़ना। सत्यपालन जँ परिणामक भय सँ टूटि जाय तँ नैतिक प्रतिज्ञा टिकि नहि सकैत अछि। ताहि दृष्टिसँ निर्भीकता मात्र वीररसक भाव नहि, न्यायपूर्ण निर्णय लेबाक कठिन क्षमता अछि।

पाठक एकटा महत्त्वपूर्ण गुण ई अछि जे अभयकेँ हिंस्र दुस्साहस सँ अलग राखल गेल अछि। निडरता, आत्मसमर्पण, सत्यक खोज आ आत्म-संशोधन एकटा अनुशासित मनोवृत्ति बनबैत अछि। अहिंसक प्रतिरोधक सफलताक लेल बाहरी हानि सहबाक तैयारी आ अपन विवेक प्रति निष्ठा आवश्यक ठहरैत अछि।

परन्तु निर्भीकता आ जोखिमक अन्ध स्वीकार एक नहि। असुरक्षित नागरिक, उत्पीड़ित समूह वा हिंसाक शिकार व्यक्ति सँ निर्भीकता माँगैत समय ओकर वास्तविक सुरक्षा, आश्रय आ संस्थागत सहयोग देब जरूरी अछि। अभयक उत्तम सामाजिक अर्थ भय पैदा करनिहार संरचना बदलब अछि। जँ हम केवल भयभीत व्यक्तिक स्वभावकेँ दोष देब, तँ राज्य आ समाजक उत्तरदायित्व ओझरायल रहि जायत।

३.८ अस्पृश्यता-निवारण

मूल पाठ: मुद्रित पृ. ४१-४३; लेख-तिथि: ०९.०९.१९३०।

एहि निबन्धमे अस्पृश्यता केँ धार्मिक-सामाजिक विकृति मानि ओकर उन्मूलनक आग्रह अछि। पाठक आरम्भमे स्पष्ट रूपसँ कहल गेल अछि जे ‘अस्पृश्यता’ आ ‘अछूत’क धारणा मनुष्यक बराबरीक विरुद्ध अछि। लेखक भोजन, स्पर्श, श्रम आ सामाजिक सम्पर्कक व्यवहारमे बनल विभाजनक आलोचना करैत छथि। एहि निबन्धक बल ई अछि जे सामाजिक अन्यायकेँ सामान्य शिष्टाचारक कमी नहि, एकटा जड़ जमा लेने सामूहिक आचारक दोषक रूपमे देखैत अछि। ग्रन्थक धार्मिक तर्कमे धर्मक नाम पर भेदभावक वैधताकेँ चुनौती देल गेल अछि। ई चुनौती ओहि पाठक समुदाय लेल विशेष महत्त्वपूर्ण छल जे जाति-आधारित बहिष्करणकेँ परम्परा मानि स्वीकारि लेने छल। एहि खण्डमे अस्पृश्यता-निवारण सत्य-अहिंसाक ठोस सामाजिक परीक्षा बनि जाइत अछि: व्यक्तिक प्रति प्रेमक दावा तखनहि सार्थक, जखन ओकर सामाजिक प्रतिष्ठा आ बराबरी व्यवहारमे मानल जाय।

आलोचनात्मक अध्ययनमे एतय एकटा तनाव देखाइत अछि। मुख्य पाठ भेदभाव-विरोधक प्रबल तर्क देत अछि, मुदा परिशिष्टक पृ. ६६ मे वर्णव्यवस्था आ आश्रमजीवन पर टिप्पणी सेहो अछि। एहि दुनूकेँ जोड़ि देखलासँ जाति-निवारणक घोषित उद्देश्य आ परम्परागत वर्ण-सम्बन्धी विवेचनक बीच सम्भावित वैचारिक असहजता उभरैत अछि। आधुनिक समानताक कसौटी पर अस्पृश्यता-विरोधक संग जातिगत पदानुक्रम, पैतृक व्यवसाय-बन्धन आ सामाजिक अवसरक असमानता केँ सेहो पूर्णतः अस्वीकार करब आवश्यक अछि।

३.९ श्रमव्ययी आजीविका

मूल पाठ: मुद्रित पृ. ४४-४६; लेख-तिथि: १६.०९.१९३०।

एहि अध्यायमे श्रम आ जीविकाकेँ परस्पर निर्भर नैतिक दायित्व मानल गेल अछि। पाठ ‘ब्रेड लेबर’ सम्बन्धी विचारक परिचय दैत अछि: जे मनुष्य खाइत अछि, ओकरा अपन सामर्थ्यक अनुसार उत्पादक शारीरिक श्रम सेहो करबाक चाही। ई धारणा नियोक्ताक विशेषाधिकार आ मजदूरक हीनता, दुनूक विरुद्ध अछि। श्रमकेँ व्यक्ति-चरित्र निर्माण आ सामाजिक समानताक माध्यम बनाओल गेल अछि।

पाठक एक महत्वपूर्ण मोड़ ई अछि जे जे लोक शारीरिक श्रम नहि करैत छथि, हुनकर भोजन-अधिकार पर नैतिक प्रश्न उठैत अछि; तथापि वृद्ध, असमर्थ आ आश्रित व्यक्तिक सेवादायित्वक चर्चा सेहो एतय उपस्थिति अछि। श्रमविमर्शक मर्म ई अछि जे जीविकाक साधन तैयार करनिहार हाथक प्रति सम्मान बढ़य आ कामक आधार पर ऊँच-नीचक विचार कम होय। लेखक स्वयं शरीर सँ काज करबाक उदाहरणक बल पर श्रमक गरिमा स्थापित करैत छथि।

आजुक आर्थिक सन्दर्भमे एहि धारणा केँ ज्यों-का-त्यों लागू करब कठिन अछि, कारण देखभाल, अध्यापन, मानसिक श्रम, तकनीकी सेवा आ अपांग-अनुकूल रोजगारक अनेक रूप अछि। तथापि श्रमक सम्मान, श्रमिकक अधिकार, उत्पादन-उपभोगक सम्बन्ध आ सेवाक सामूहिकता पर एहि निबन्धक आग्रह गम्भीर अछि। नैतिक दायित्वक नाम पर मजदूरक न्यून पारिश्रमिक वा श्रम-शोषणक समर्थन कदापि नहि होयबाक चाही; श्रमक गरिमा संग न्यायसंगत मजदूरी आ सुरक्षा अनिवार्य अछि।

३.१० सर्वधर्म-समभाव—१

मूल पाठ: मुद्रित पृ. ४७—४९; लेख-तिथि: २३.०९.१९३०।

पहिल ‘सर्वधर्म-समभाव’ निबन्ध सहिष्णुताक शब्दार्थ आ नैतिक सीमा पर केन्द्रित अछि। लेखक ‘सहिष्णुता’ सँ आगाँ बढ़ि ‘समभाव’क विचार प्रस्तुत करैत छथि। मूल अभिप्राय ई जे अपन धर्मकेँ त्रुटिहीन आ दोसरा धर्मकेँ स्वभावतः अधम मानबाक दृष्टि त्यागल जाय। मनुष्यक ज्ञान सीमित अछि; ताहि कारणेँ धर्मक मानवीय व्याख्यासभमे अपूर्णता होयब सम्भव अछि। एहि निबन्धक सामर्थ्य आत्मालोचना अछि। दूसराक सम्मान केवल सामाजिक शान्तिक रणनीति नहि, अपन ज्ञानक सीमाबोध सँ निकलैत अछि। धर्मक प्रति निष्ठा आ धर्मसम्बन्धी विनयकेँ परस्पर विरोधी नहि मानल गेल अछि। पाठमे ‘धर्म सब अपूर्ण’ कहबाक प्रसंग ई नहि जे आस्था निरर्थक अछि; बल्कि मनुक्खक व्याख्या अन्तिम सत्य पर एकाधिकार नहि रखैत अछि।

आलोचनात्मक रूपेँ ‘समभाव’ आ वास्तविक धार्मिक स्वतन्त्रता बीच भेद जरूरी अछि। समान सम्मानक आदर्श तखन सशक्त बनैत अछि जखन पूजा, अ-आस्था, धर्मत्याग, मतभिन्नता आ धर्मपरिवर्तनक कानूनी अधिकार सुरक्षित रहय। केवल भावात्मक सद्भाव पर्याप्त नहि,

अल्पसंख्यक आ भिन्न विश्वास रखने लोकक समान नागरिकता सेहो जरूरी अछि। एहि निबन्धक नैतिक प्रयोजनकेँ आधुनिक अधिकार-विमर्श सँ जोड़ब फलदायी अछि।

३.११ सर्वधर्म-समभाव—२

मूल पाठ: मुद्रित पृ. ५०-५२; लेख-तिथि: ३०.०९.१९३०।

दोसर 'सर्वधर्म-समभाव' निबन्ध सिद्धान्तकेँ आश्रमक बहुधार्मिक प्रार्थना-व्यवहार मे उतारैत अछि। एतय प्रार्थनामे विभिन्न धार्मिक परम्पराक स्तुति वा पाठक उल्लेख अछि। लेखक एहिमे आत्मीयता, शिक्षण आ परस्पर सम्मानक सम्भावना देखैत छथि। पहिल लेखक सैद्धान्तिक आग्रह एहि लेखमे प्रत्यक्ष सामाजिक प्रयोगक रूप धारण करैत अछि।

ग्रन्थक एक विशेष बिन्दु ई अछि जे अपन धर्मक सत्य-बोध सुरक्षित रखैत दोसरा परम्पराक वाणी सुनबाक क्षमता पर बल देल गेल अछि। संवादक लक्ष्य दोसराकेँ हराएब नहि, अपन भीतरक संकीर्णता कम करब अछि। धार्मिक बहुलताक ई धारणा निर्विवाद एकरूपता नहि माँगैत अछि; एकटा आश्रम-समाजमे पारस्परिक अनुशासन आ आदरक वातावरण चाहैत अछि।

आलोचनात्मक सवाल अछि जे साझा प्रार्थना मे स्वेच्छा, असहमतिक अधिकार आ गैर-धार्मिक व्यक्तिक स्थान कतेक सुरक्षित अछि। धर्मसभक धार्मिक भाषाकेँ मिलि कऽ बजब सामूहिकता रचि सकैत अछि, मुदा सभ नागरिकक सम्मान लेल धार्मिक सहभागिताकेँ बाध्यकारी नहि बनेबाक चाही। एहि शर्त पर साम्प्रदायिक भेद घटेबाक गाँधीवादी प्रस्ताव लोकतान्त्रिक बहुलताक संग रचनात्मक संवाद करि सकैत अछि।

३.१२ नम्रता

मूल पाठ: मुद्रित पृ. ५३-५४; लेख-तिथि: ०७.१०.१९३०।

'नम्रता' शीर्षकमे विनयकेँ अलग व्रतक रूपमे देखबाक कठिनाई पर विचार अछि। लेखकक कथनक भाव ई जे नम्रता कागज पर लीहल प्रतिज्ञासँ नहि, भीतरक अहंकार घटबाक क्रमिक अभ्यास सँ विकसित होइत अछि। ओही कारणेँ नम्रताकेँ सभ व्रतक साङ्गतिक गुण मानल गेल अछि। जे व्यक्ति अपन सत्यपालन पर गर्व करैत दोसरा केँ तुच्छ मानैत अछि, से अपन साधनाक मूल भाव खोइ सकैत अछि।

एहि निबन्धक अध्यात्मिक पक्ष सेवाक भाव सँ जुड़ैत अछि। मनुष्य अपन सीमितता बुझैत अछि तँ अपन उपलब्धिक दावा सँ हटि समाजक व्यापक जीवनक प्रति उत्तरदायी बनैत अछि। विनयक ई अर्थ दासभाव नहि, अहंकार-शून्य सहयोग अछि। निबन्धक रूपक-भाषा आत्मपरिष्कारक कठिनाइकेँ सहज करैत अछि।

वर्तमान सार्वजनिक विमर्शमे नम्रता विशेष उपयोगी अछि, कारण तर्क-विवाद बहुधा व्यक्तिपूजाक रूप लऽ लेत अछि। तथापि विनयक नैतिक आदर्शकेँ कमजोर वर्ग सँ चुप रहबाक आदेश बनायब हानिकारक होयत। प्रश्न पूछब, विरोध करब आ अपन अधिकार माँगब नम्रताक विरुद्ध नहि। उचित नम्रता शक्ति सँ जुड़ल अहंकार सीमित करैत अछि, आत्मसम्मान नहि मेटबैत अछि।

३.१३ स्वदेशी: प्रस्तावनात्मक टिप्पणी

मूल पाठ: मुद्रित पृ. ५५; विषय-सूचीमे स्वतंत्र क्रमांक १३।

एहि संक्षिप्त लेखमे गाँधीजी स्पष्ट करैत छथि जे स्वदेशी पर विस्तृत लिखैत काल राजनीतिक अर्थक प्रसंग स्वाभाविक रूपसँ आबि सकैत अछि, तथापि ध्यान मूलतः ओकर नैतिक-धार्मिक पक्ष पर अछि। ई टिप्पणी आगामी ‘स्वदेशी व्रत’क व्याख्याक प्रवेशिका अछि। निबन्ध छोट अछि, मुदा ओकर आलोचनात्मक महत्त्व बड़ अछि: स्वदेशीकेँ केवल विदेशी वस्तुक बहिष्कारक कार्यक्रम मानलासँ विचारक आधा अर्थ बचैत अछि।

एहि अंश सँ लेखकक पाठकीय अभिप्राय सेहो स्पष्ट होइत अछि। ओ स्वदेशीक सम्बन्ध सम्बन्धित लोकक सेवा, स्वानुशासन आ जिम्मेदारी सँ स्थापित करबाक जमीन तैयार करैत छथि। एही से विषय-सूचीमे एहि छोट टिप्पणीकेँ अलग स्थान देल जायब अर्थवान् अछि; एकरा ‘स्वदेशी व्रत’मे मिला कऽ छोड़ी देब ग्रन्थक सम्पादकीय संरचनाकेँ अस्पष्ट करत।

एहि टिप्पणीकेँ पढ़बाक उपयुक्त पद्धति ई अछि जे राजनीतिक राष्ट्रवाद, आर्थिक स्थानीयता आ नैतिक निकटता—तीनू बीच भेद राखल जाय। लेखकक स्वदेशी-विवेचनक गुण-अवगुण देखबाक क्रम एहि भेद सँ स्पष्ट होइत अछि।

३.१४ स्वदेशी व्रत

मूल पाठ: मुद्रित पृ. ५६-५९।

‘स्वदेशी व्रत’मे स्वदेशीक अर्थ पड़ोसी आ निकटवर्ती समुदाय प्रति प्रथम उत्तरदायित्वक रूपमे स्थापित अछि। लेखक कहैत छथि जे दूरेक लोकक सेवा करबाक ऊँच विचार राखैत अपन आसपासक लोकक उपेक्षा कएलासँ सेवाक वास्तविक दायित्व छूटि सकैत अछि। स्थानीय सम्बन्ध सँ शुरु भेल सेवा आगाँ व्यापक मानवता धरि पहुँचि अछि। ई विचार स्वदेशीकें भौगोलिक बन्दिश नहि, जिम्मेदारीक क्रमबद्ध विस्तारक रूपमे बुझबाक अवसर देत अछि।

निबन्धक एक महत्त्वपूर्ण विशेषता धार्मिक प्रसंग आ सामाजिक-आर्थिक प्रसंगक मिलन अछि। अपन पड़ोसीक श्रम, ओकर वस्तु आ ओकर कठिनाईक प्रति सजग होयब स्वदेशी अछि; मुदा ई भाव दोसरा देश वा धर्मक लोकक प्रति द्वेष नहि बनय। लेखमे स्वदेशीकें सेवा आ पारस्परिकता सँ जोड़बाक प्रयास दुराग्रही बहिष्कार सँ अलग ठहरैत अछि। स्थानीय उत्पादन, भाषा आ सांस्कृतिक आधारक सम्मान एहि व्यापक नैतिक भावक सम्भावित क्षेत्र अछि, मुदा ई सभ आधुनिक अनुप्रयोग अछि, मूल पाठक प्रत्यक्ष नीतिगत सूची नहि।

समकालीन मूल्याङ्कनमे स्वदेशी आ वैश्विक परस्परावलम्बन बीच सन्तुलन आवश्यक अछि। औषधि, विज्ञान, शिक्षा, व्यापार आ प्रवासी समुदायक सहयोग कखनो-कखनो अन्तरदेशीय सञ्जाल पर निर्भर करैत अछि। स्थानीय अर्थव्यवस्थाक समर्थन, पर्यावरणीय जिम्मेदारी आ शोषण-रहित व्यापार महत्त्वपूर्ण अछि, तथापि केवल उत्पत्तिस्थानक आधार पर वस्तु वा व्यक्तिक नैतिकता तय करब उचित नहि। गाँधीजीक निकटवर्ती सेवा-विचारक सभसँ उर्वर प्रयोग स्थानीय उत्तरदायित्व संग सार्वभौम मानवीय सम्मान जोड़ब अछि।

३.१५ व्रतक आवश्यकता

मूल पाठ: मुद्रित पृ. ६०-६२; लेख-तिथि: १४.१०.१९३०।

अन्तिम मुख्य निबन्ध सम्पूर्ण ग्रन्थक आत्मपरीक्षण अछि। लेखक व्रत लेबाक आवश्यकता पर सम्भावित आपत्तिसभ उठबैत छथि: नियम मानी लेल पर्याप्त किएक नहि? कठिन परिस्थिति मे व्रत किएक कठोर हो? लेखकक उत्तर अछि जे सदिच्छा मात्र पर्याप्त नहि; नैतिक निर्णयमे दृढ़ निश्चय चाही। ताहि लेल व्रत क्षणिक भावनाक बदला दीर्घकालीन अनुशासनक सार्वजनिक घोषणा बनैत अछि।

एहि निबन्धमे ‘जहिना सम्भव हो’क अनिश्चित अभिव्यक्तिक आलोचना भेटैत अछि। लेखकक मतमे व्रत अपवाद खोजबाक चतुराई नहि, प्रलोभनक सोझाँ ठाढ़ रहबाक बल प्रदान करैत अछि। शराब-पान त्यागक उदाहरण, सूर्यक निश्चित गतिक उपमा आ मनुष्यक वचन पालनक प्रश्न—ई सभ तर्कक द्वारा नियम आ चरित्रक सम्बन्ध स्पष्ट कएल गेल अछि। ई निबन्ध आरम्भिक ‘सत्य’क संग विचारक पूर्ण वृत्त बनबैत अछि।

आलोचनात्मक रूपेँ दृढ़ता आ जड़ता बीच अन्तर रखब जरूरी अछि। कोनो निर्णय नब प्रमाण, दूषण वा दोसरा व्यक्ति पर हानि स्पष्ट भेला पर संशोधित होयबाक चाही। से बात १९३२ क उपलब्ध अंग्रेजी पाठमे सेहो स्वीकारल गेल अछि जे पछि गलत सिद्ध भेल व्रत छोड़बाक आवश्यकता आबि सकैत अछि; तथापि मैथिली निबन्धक जोर निश्चित संकल्प पर अछि। कठोर व्रतकेँ मानवीय विवेक, चिकित्सा-अपवाद आ न्यायपूर्ण परिणाम सँ निरन्तर जाँचैत रहब एहि विचारक समकालीन, विवेकपूर्ण पाठ होयत।

४. परिशिष्टक स्वतंत्र मूल्याङ्कन: एगारह आश्रम-व्रत

मुद्रित पृ. ६३-६६ पर ‘परिशिष्ट’ शीर्षक अन्तर्गत आश्रम-नियमावलीक एगारह व्रतक संक्षिप्त व्याख्या देल अछि। मुख्य भागक १५ निबन्ध आ परिशिष्टक ११ व्रतकेँ एकहि गिनती नहि मानबाक चाही। मुख्य निबन्धमे ‘स्वदेशी’क प्रवेशिका, ‘स्वदेशी व्रत’ आ सर्वधर्म-समभावक दू लेख अलग गिनल गेल अछि, तथा नम्रता आ व्रतक आवश्यकता पर स्वतंत्र विमर्श अछि। परिशिष्ट प्रस्तावित जीवन-विधानक संक्षिप्त, व्यवहारी प्रतिरूप अछि; मुख्य लेख व्रतसभक विस्तृत नैतिक औचित्य प्रस्तुत करैत अछि।

परिशिष्टक क्रम: (१) सत्य, (२) अहिंसा, (३) ब्रह्मचर्य, (४) अस्वाद, (५) अस्तेय/अचौर्य, (६) अपरिग्रह, (७) श्रमव्ययी आजीविका, (८) स्वदेशी, (९) अभय, (१०) अस्पृश्यता-निवारण, (११) सहिष्णुता/सहबाक सामर्थ्य। (मुद्रित पृ. ६३-६६)

परिशिष्टक महत्त्व एहि मे अछि जे दार्शनिक अवधारणा नैतिक व्यवहारक ठोस सूची बनि जाइत अछि। उदाहरणार्थ, अस्तेयक व्याख्या अनावश्यक ग्रहणक प्रतिरोध आ अपरिग्रहक व्याख्या अतिरिक्त वस्तुसंग्रह घटायब सँ जुड़ैत अछि; श्रमव्ययी आजीविका देह सँ काम करबाक जिम्मेदारी बतबैत अछि; स्वदेशी पड़ोसीक सेवा लेल प्राथमिकता दैत अछि; अहिंसा विरोधी

व्यक्ति प्रति घृणाहीन प्रतिरोधक आग्रह करैत अछि। एहि नियमसभक व्यवहारगत स्वरूप आश्रमक सामूहिक अनुशासन बुझबाक लेल जरूरी अछि।

परिशिष्टक पृ. ६६ मे अस्पृश्यता-निवारणक संग वर्ण-व्यवस्था सम्बन्धी टिप्पणी सेहो अछि।

एतय समकालीन पाठककें मूल ऐतिहासिक पाठकें ज्यों-का-त्यों समझबाक संग-संग आलोचनात्मक दूरी राखबाक चाही। अस्पृश्यता उन्मूलनक नैतिक आग्रह महत्त्वपूर्ण अछि; मुदा सामाजिक बराबरीक आधुनिक परिभाषा जाति-आधारित व्यवसायिक बन्धन, पदानुक्रम आ बहिष्करणक सभ रूपक अन्त चाहैत अछि। ई द्वन्द्व समीक्षा मे छिपाओल नहि गेल अछि।

५. अनुवादक भाषा-संवेदना आ मैथिली गद्यक बनावट

मैथिली रूपान्तरक सभसँ स्पष्ट पहचान ओकर पाठक-सम्बोधनक बोलचाल-निकट गद्य अछि। ‘हमरालोकनि’, ‘आओर’, ‘थिक’, ‘करैत छी’, ‘होइत अछि’, ‘कहबाक चाही’ सन रूपसँ तर्क व्यक्त कएल गेल अछि। एहि भाषा सँ पाठ पाठकक समीप अबैत अछि; साहित्यिक संस्कृतनिष्ठ दुरुहता आ पूर्णतः बोलचालीक असंगति—दुनू सँ बचबाक प्रयत्न देखाइत अछि। वाक्यरचना प्रायः प्रश्न, उदाहरण, शंका आ उत्तरक सहारे आगाँ बढ़ैत अछि। सत्य, अहिंसा आ व्रतक आवश्यकता सन प्रसंगमे ई संवादात्मकता पाठककें विचारक भीतर सहभागी बनबैत अछि।

अनुवादक दार्शनिक शब्दकें सहज मैथिली वाक्यमे प्रयोग करैत छथि: सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह, अभय, अस्पृश्यता-निवारण, सर्वधर्म-समभाव, नम्रता, स्वदेशी। एहिमे बहुते शब्द संस्कृत मूलक अछि, मुदा ओकर तात्पर्य भोजन, वस्तु, पड़ोसी, चोर, श्रम, भय आ धर्मक ठोस उदाहरण सँ खोलल गेल अछि। विशेष रूपसँ ‘श्रमव्ययी आजीविका’क संग ‘ब्रेड लेबर’क व्याख्या पाठक लेल वैचारिक सेतु प्रदान करैत अछि। एहि अर्थमे अनुवाद मात्र शब्द-प्रतिस्थापन नहि, मैथिली पाठक लेल वैचारिक अनुक्रमक पुनर्प्रस्तुति अछि।

किछु शीर्षक-संकेत शोधक दृष्टिसँ जरूरी अछि। ‘सर्वधर्म-समभाव’क शब्दार्थ ‘tolerance’ अथवा धार्मिक समान सम्मानक संग एक-जकाँ नहि अछि; एक ठाम सहब, दोसर ठाम समभाव, तेसर ठाम धार्मिक अधिकारक प्रश्न आबैत अछि। ठीक ओहिना ‘ब्रह्मचर्य’कें मात्र यौन-संयम धरि सीमित कएलासँ मन-इन्द्रिय नियन्त्रणक व्यापक अर्थ छूटैत अछि। तुलना करैत समय केवल शब्दकोशीय समानता नहि, प्रसंगक नैतिक अर्थ देखब जरूरी अछि।

मुद्रित प्रति मे मूल मैथिली वर्तनीक रूपसभकेँ आधुनिक मानकीकरणक नाम पर स्वतः त्रुटि नहि मानल गेल अछि। समीक्षा भाषाक रूपगत विश्लेषण करैत अछि, मूल पाठक ‘सुधारल’ संस्करण नहि बनबैत अछि। मे किछु स्थल पर हलुक धब्बा आ अक्षरक धुँधलापन अछि; ताहि कारणेँ लम्बा, अक्षरशः उद्धरण देबासँ बचल गेल अछि। एहि पद्धति सँ अप्रमाणित पाठोद्धार अथवा गलत उद्धरणक जोखिम घटैत अछि।

६. मूल—अनुवाद सम्बन्धः प्रमाण आ सीमा

अंग्रेजी संस्करणक प्रस्तावनामे १९३० मे येरवडा कारागार सँ आश्रमक सदस्यकेँ पत्र लिखबाक उल्लेख अछि। ई तथ्य मैथिली पुस्तकक ‘मंगल-प्रभात’ शीर्षकक ऐतिहासिक सन्दर्भ बुझबामे सहयोगी अछि। (सेवाग्राम आश्रमः ‘From Yeravda Mandir’, शीर्ष/प्रस्तावना पृष्ठ)

दुनू प्रकाशित सूचीमे विषयक व्यापक समानता अछिः Truth/सत्य, Ahimsa/अहिंसा, Brahmacharya/ब्रह्मचर्य, Control of the Palate/अस्वाद, Non-stealing/अस्तेय, Non-possession/अपरिग्रह, Fearlessness/अभय, Removal of Untouchability/अस्पृश्यता-निवारण, Bread Labour/श्रमव्ययी आजीविका, Equality of Religions/सर्वधर्म-समभाव, Humility/नम्रता, Importance of Vows/व्रतक आवश्यकता, Swadeshi/स्वदेशी। किछु शीर्षकक स्थान आ पृथक प्रस्तुति दुनू मे एकरूप नहि अछि। अंग्रेजी सूचीमे ‘Yajna or Sacrifice’ आ ‘More About Yajna’ नामक अध्याय सेहो अछि, जकर समनाम शीर्षक मैथिली मुख्य विषय-सूचीमे नहि अछि। ई पाठ-रचना बीचक प्रमाणित अन्तर अछि, मुदा मध्यवर्ती हिन्दी संस्करण देखल बिनु ‘अनुवादकलेँ अध्याय हटौलनि’ कहब प्रमाणहीन होयत।

ई तुलनात्मक भेद आगेक अनुसन्धान लेल संकेत करैत अछिः गुजराती मूलक विशेष संस्करण, अमृतलाल ठाकोरदास मणावतीक हिन्दी रूपान्तर आ २०१३ क मैथिली अनुवादकेँ एक पंक्ति मे राखि रचना-संख्या, शीर्षक-क्रम, शब्दार्थ आ उदाहरणक आधार पर मिलान कएल जाय। एहि समीक्षामे ओहि अप्राप्त मध्यवर्ती पाठक स्थान पर अनुमान नहि भरल गेल अछि। एहि सँ उपलब्ध प्रमाणक सीमा स्पष्ट रहैत अछि।

७. दार्शनिक आ सामाजिक मूल्याङ्कन

एहि ग्रन्थक समग्र दार्शनिक गठन तीन स्तर पर विकसित होइत अछि। पहिल स्तर आत्म-साधना अछि: सत्य, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, नम्रता। दोसर स्तर सामाजिक संसाधनक नैतिकता अछि: अस्तेय, अपरिग्रह, श्रमव्ययी आजीविका, स्वदेशी। तेसर स्तर भय आ भेदभाव सँ मुक्त सहजीवन अछि: अहिंसा, अभय, अस्पृश्यता-निवारण, सर्वधर्म-समभाव। ई वर्गीकरण समीक्षकक विश्लेषणात्मक सुविधा अछि, गाँधीजी द्वारा ग्रन्थमे दत्त अध्याय-विभाजन नहि। विश्लेषणक लाभ ई जे व्रतसभ स्वतंत्र नैतिक उपदेश नहि, परस्पर-आश्रित साधनाक जाल बनि जाइत अछि।

पुस्तकक मूल शक्ति उपदेशकेँ जीवन-व्यवहारमे परखबाक आग्रह अछि। सत्य केवल भाषणक विषय नहि, अहिंसा केवल युद्ध-विरोध नहि, ब्रह्मचर्य केवल औपचारिक शपथ नहि, अपरिग्रह केवल धनक त्याग नहि, आ स्वदेशी केवल राजनैतिक नारा नहि। एक-एक अवधारणा मनुष्यक रोजमर्राक विकल्प, भोजन, वस्तु-प्राप्ति, श्रम-वितरण, समुदाय आ धर्म-सम्बन्धक निर्णयमे उतरैत अछि। एहि ठाम गाँधी-दर्शन अमूर्त सिद्धान्त सँ प्रयोगपरक नैतिक अभ्यास बनि जाइत अछि।

पुस्तकक सीमा सामाजिक संरचनाक प्रत्यक्ष विश्लेषणक अपेक्षाकृत सीमितता अछि। व्यक्ति अपन लोभ, भय आ घृणा पर नियन्त्रण करय, ई जरूरी अछि; मुदा जाति, श्रम-बाजार, भूमिहीनता, लिंग-असमानता अथवा राज्यसत्ताक हिंसक संरचना केवल व्यक्तिगत सदाचार सँ समाप्त नहि होइत अछि। उदाहरणार्थ, अस्पृश्यता-विरोधक विचार सामाजिक चेतना जगबैत अछि, मुदा वास्तविक समानता लेल संसाधन, शिक्षा, प्रतिनिधित्व आ संस्थागत अधिकारक प्रश्न सेहो चाही। एहि अर्थमे ग्रन्थ नैतिक प्रेरणा देत अछि; आधुनिक नीतिशास्त्र आ सामाजिक न्यायशास्त्र ओकर आलोचनात्मक पूरक अछि।

दोसरा दिस, प्रत्येक व्रतक कठोर स्वरूपक विवेचनमे विवेकक स्थान बनल रहनाइ चाही। स्वास्थ्यक अवस्था अनुसार भोजन, पारिवारिक सम्बन्धमे परस्पर सहमति, अपांगता अनुसार श्रम, धार्मिक मतभेदक स्वतन्त्रता आ जान-मालक सुरक्षा—ई सभ मानवीय परिस्थिति गाँधीजीक व्रत-नैतिकताक समकालीन प्रयोगमे अनिवार्य मानदण्ड अछि। एतय ग्रन्थक असहमति छिपाएब आवश्यक नहि, कारण गहन समीक्षा आदर आ आलोचनाकेँ एक संग सम्भव बनबैत अछि।

८. मैथिली साहित्यक सन्दर्भमे पुस्तकक योगदान

मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक अध्ययन प्रायः कविता, कथा, नाटक वा लोकसंस्कृति धरि सीमित नहि रहबाक चाही। गाँधीजीक आचार-विचारक ई रूपान्तर दार्शनिक गद्य, समाज-सुधार, धर्म-चिन्तन आ सार्वजनिक नैतिकताक शब्दावलीक विस्तारमे योगदान देत अछि। एतय परिग्रह, अस्तेय, समभाव आ स्वदेशी सन अवधारणासभ मैथिली पाठकक अपन परिचित वाक्य-विन्यासमे विमर्शित अछि। एहि सँ भाषाक वैचारिक क्षमता केवल सिद्धान्ततः नहि, प्रत्यक्ष मुद्रित पाठ द्वारा प्रमाणित होइत अछि।

अनुवादकक ‘अनुवादक दिससँ’ आ पुस्तकक अनुमति-संबन्धी सामग्री एकटा सांस्कृतिक तथ्य सेहो देखबैत अछि: भारतीय विचारक रचना मैथिलीमे पहुँचैबाक लेल भाषायी श्रम, प्रकाशकीय सहयोग आ संस्थागत स्वीकृतिक आवश्यकता पड़ैत अछि। २०१३ क ई संस्करण ताहि श्रमक एकटा दस्तावेज अछि। भाषा-रूपान्तर वैचारिक लोकतन्त्रीकरणक साधन बनि सकैत अछि, कारण पाठककें विचार बुझबाक लेल सदिखन हिन्दी-अंग्रेजीक मध्यस्थता पर निर्भर नहि रहय पड़ैत अछि।

एहि योगदानक समीक्षा करैत सावधान रहबाक चाही जे पुस्तक मैथिलीमे गाँधीवादक समस्त विमर्शक प्रतिनिधि नहि, बल्कि आश्रम-व्रत सम्बन्धी एक विशेष पाठ अछि। मैथिलीमे गाँधी-साहित्यक इतिहासक पूर्ण दावा लेल अन्य पत्रिका, पुस्तक, अनुवाद, तिथि आ प्रकाशन-स्वरूपक स्वतंत्र अध्ययन आवश्यक होयत। एहि समीक्षाक प्रमाण केवल एहि ग्रन्थक योग्यता आ ज्ञात मूल-परम्परा धरि सीमित अछि।

९. समेकित निष्कर्ष

‘मंगल-प्रभात’ पढ़लापर मुख्य बोध ई होइत अछि जे नैतिकता किताबक अध्यायकें अलग-अलग याद कऽ लेलासँ पूर्ण नहि होइत अछि। सत्यक आग्रह बिना अहिंसाक दिशा अस्पष्ट भऽ सकैत अछि; अहिंसा बिना सत्यक साधन क्रूर भऽ सकैत अछि; अस्तेय बिना अपरिग्रह अपूर्ण रहैत अछि; श्रमक गरिमा बिना स्वदेशी केवल उपभोगक नारा बनि सकैत अछि; अस्पृश्यता-निवारण आ सर्वधर्म-समभाव बिना आत्मशुद्धि सामाजिक न्याय सँ कटल रहि सकैत अछि। ई परस्परता ग्रन्थक वैचारिक केन्द्र अछि।

डॉ. योगानन्द झाक मैथिली रूपान्तरक महत्व एहि तथ्य मे अछि जे आश्रमवासी लेल लिखल नैतिक विचार मैथिली गद्यक माध्यम सँ नव पाठकसमूह धरि पहुँचैत अछि। पुस्तकक १५ मुख्य लेख आ ११-व्रतवाला परिशिष्ट, ओकर प्रस्तावना आ अधिकारपत्र सभ मिलि एकटा पठनीय वैचारिक आ प्रकाशकीय दस्तावेज बनबैत अछि। एकर असली उपयोग अनालोचनात्मक अनुकरण नहि, आत्मानुशासन, समता, श्रम-सम्मान आ अहिंसक सार्वजनिक व्यवहार पर विचारक मजबूत आरम्भक रूपमे अछि।

अन्तिम मूल्याङ्कनमे पुस्तक प्रेरक सेहो अछि आ प्रश्नोत्पादक सेहो। संयमक आदर्श केहन हो जे देह-स्वायत्तताकेँ न कुचलय? धार्मिक समभाव कोना अधिकार-समानता सँ जुड़य? श्रमक गरिमा कोना वास्तविक श्रमिक-न्याय बनय? अस्पृश्यता-विरोध जातिगत पदानुक्रमक पूर्ण अन्त धरि कोना पहुँचय? स्वदेशी कोना पड़ोसीक सेवा करैत विश्व-मानवक हित सँ नहि कटय? एहि प्रश्नसभक जन्म स्वयं पुस्तकक विचार सँ होइत अछि। ताहि कारणेँ ई अनुवाद मैथिलीमे गाँधी-दर्शनक केवल परिचय नहि, आलोचनात्मक संवादक जीवित आधार बनि सकैत अछि।

अध्याय 12 / २०१४

भोरे-भोर

डॉ. योगानन्द झाक कृतिक आलोचनात्मक विवेचन

समीक्षाक मूल प्रतिपादन

‘भोरे-भोर’ केवल भोरे उठबाक उपयोगिताक कविता नहि थिक; ई नेनाक दैनिक अनुभवकेँ प्रकृति-दर्शन, पारिवारिक सम्बन्ध, अनुशासन, ज्ञानार्जन, स्वास्थ्य, देशप्रेम आ परोपकारक विचारसँ जोड़बाक प्रयत्न थिक। पोथीमे पहिल रचना ‘भोरे-भोर’ (मुद्रित पृ. ४-११) आ दोसर रचना ‘प्रार्थना’ (पृ. १२-१६) अछि। पहिल रचनाक ८ खण्डमे भोरेसँ दिनचर्याक क्रम आगाँ बढ़ैत अछि; दोसर रचनाक ५ खण्डमे बालक अपन चरित्र आ सामाजिक आचरण लेल वरदान माँगैत अछि। प्रत्येक मुद्रित पृष्ठपर आठ पाँतिक विन्यास आ तकर संग चित्र, अर्थ ग्रहणक पृथक कड़ी बनबैत अछि।

साहित्यिक दृष्टिएँ एहि पुस्तकक विशेषता ओकर दृश्यात्मक बालोपयोगिता आ व्यावहारिक आचारबोधक एकसूत्रता थिक। मुदा एहि एकसूत्रताक सीमासभ सेहो देखाइत अछि: नेनाक

अपन प्रश्न, असहमति, खेलक स्वच्छन्दता आ वैकल्पिक जीवन-अनुभव लेल स्थान कम अछि। एतय बालक प्रायः सीखयवला पात्र अछि; अपन स्वतन्त्र संसार रचयवला पात्र कम। ई आलोचना पाठक आधार पर अछि, लेखक वा अनुवादकक इरादाक अप्रमाणित अनुमान पर नहि।

अनुवादकें जाँचैत ई समीक्षा उपलब्ध मैथिली पाठक शब्दचयन, स्वर, पदक्रम, पुनरावृत्ति आ बाल-सम्बोधन पर केन्द्रित अछि। हिन्दी मूलक पूरा प्रमाणित पाठ एतय उपलब्ध नहि भेल, तँ मूल-अनुवादक प्रत्येक पाँतिक शाब्दिक समानता वा अन्तरक दाबी नहि कएल गेल अछि। हिन्दी मूल ‘सुबह सवेरे’ सम्बन्धी समकालीन प्रकाशित समीक्षाक मदति सँ केवल रचनात्मक संरचना आ विषयगत साम्यक सीमित पुष्टिकरण कएल गेल अछि।

१.१ पोथीक पहिचान

भीतरी शीर्षकपृष्ठपर ‘भोरे-भोर’ नामक नीचाँ ‘अनुवाद: योगानन्द झा’ आ ‘मूल हिन्दी: डॉ. ए. कीर्तिवर्द्धन’ छपल अछि। प्रकाशकक नाम विद्यालक्ष्मी प्रकाशन, मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) अछि। विवरण-पृष्ठपर ‘संस्करण: प्रथम, २०१४ ई.’, मुद्रकक नाम इण्डियन प्रिण्टिंग प्रेस तथा मूल्य २०.०० अंकित अछि। आरम्भिक ‘दू शब्द’मे स्वयं अनुवादक हिन्दी बालकविता-संग्रह ‘सुबह सवेरे’क मैथिली रूपान्तरक चर्चा करैत छथि। एहि प्रमाणसभसँ कृतिक रूपान्तरित स्वरूप सुनिश्चित होइत अछि।

बाहरी साक्ष्यमे ‘विदेह’क पोथी-सूची एहि अनुवादकें २०१४ क कृति रूपमे दर्ज करैत अछि; ‘मैथिल मंच’क पुस्तकालय-सूची सेहो मूल लेखक, अनुवादक, प्रकाशक आ वर्ष बतबैत अछि। एहि दूटा सूचीक उपयोग मुख्यतः ग्रन्थक पहिचान पुष्ट करबाक लेल कएल गेल अछि, पाठ-समीक्षाक स्थानापन्न बनयबाक लेल नहि। [सन्दर्भ २-३]

समीक्षाक प्रमुख आधार कविताक पाँति, पृष्ठानुसार विषय-क्रम, काव्यात्मक आवृत्ति, चित्रक प्रत्यक्ष दृश्य, भाषिक बनावट तथा दूनू भूमिका-पाठ छथि। प्रत्येक व्याख्याक संग सम्बन्धित मुद्रित पृष्ठक उल्लेख देल गेल अछि। ‘मूल लेखकक दृष्टिकोण’ आ ‘अनुवादकक दृष्टिकोण’कें अलग राखल गेल अछि; आलोचकीय निष्कर्ष तेसर स्तरपर स्पष्ट कएल गेल अछि। मूल हिन्दी पाठक यथार्थ शब्दावली, कविताक अलग संस्करण, वा पाठक-प्रतिक्रियाक प्रत्यक्ष आँकड़ा उपलब्ध नहि रहबाक कारणेँ तिनकर बारेमे निर्विवाद दावा नहि अछि।

२. 'दू शब्द' आ 'नेनालोकनि!': दू प्रकारक पाठकीय सम्बोधन

२.१ अनुवादकक वैचारिक भूमिका

'दू शब्द' केवल औपचारिक प्रस्तावना नहि अछि। अनुवादक लोक-साहित्य, बाल-साहित्य, मातृभाषा, भाषिक प्रभुत्व आ अनुवादक सामाजिक आवश्यकताकें एक दोसरसँ जोड़ैत छथि। हुनक तर्कमे बाललोक-साहित्यकें भाषाक अभिव्यक्ति आ संस्कृतिक जीवन्त परम्पराक रूपमे बुझल गेल अछि। भाषिक दबावक कारणें मातृभाषामे अध्ययन-पाठन दुर्बल होयबाक चिन्ता कएल गेल अछि; विशेषतः मैथिली बाल-साहित्यक रचना-पाठनमे सक्रियताक आवश्यकता राखल गेल अछि।

एहि प्रस्तावनामे अनुवादक अनुवादकें केवल शब्द-बदलाव नहि, वरन् दुइ भाषाक बीच सम्बन्ध बनाबयवला रचनात्मक प्रक्रिया मानैत छथि। 'Loss of translation' नामक पदक उल्लेख कऽ मूल अर्थ अथवा अभिव्यक्तिक किछु हिस्सा स्थानान्तरणमे हेरायबाक सम्भावना स्वीकार कएल गेल अछि। ई सावधानी समीक्षाक लेल उपयोगी अछि: लक्ष्य भाषामे गीत सहज लगैत हो, तैयो मूल-पाठसँ तकर पूर्ण समरूपताक दावा स्वतः सिद्ध नहि होइत।

भूमिकामे वैदिक साहित्य, भाषा-इतिहास, सांस्कृतिक सम्पर्क आ अनुवाद-अध्ययनक प्रसंग सेहो अबैत अछि। मुदा एहि व्यापक सिद्धान्तसभक स्वतन्त्र ऐतिहासिक सत्यापन एहि पुस्तकक भीतर सम्भव नहि; एतय ओकरा अनुवादकक प्रस्तुत वैचारिक प्रस्ताव रूपें पढ़ल गेल अछि, अनुसन्धानद्वारा प्रमाणित इतिहासक निष्कर्ष रूपें नहि। भूमिका आ मूल कविताक बीच भाषाक कठिनाइक अन्तर सेहो उल्लेखनीय अछि: अवधारणात्मक, तत्समबहुल प्रस्तावनाक बाद कवितामे अपेक्षाकृत छोट आ श्रव्य पाँति भेटैत अछि।

२.२ मूल कविक बालसम्बोधन

'नेनालोकनि!' शीर्षक सम्बोधनमे दहिना भाग) कवि छोट-छोट कविताक माध्यमँ बालककें प्रसन्न, हँसमुख आ गीत गबयवला बनल रहबाक सन्देश दैत छथि। पक्षीक गान आ मनुष्यक प्रसन्नताक बीच सम्बन्ध जोड़ल गेल अछि। एहि पृष्ठपर मूल रचनाकारक नाम 'कीर्तिवर्द्धन' संग सम्बोधन समाप्त होइत अछि; एहि कारणें ओकरा अनुवादकक 'दू शब्द'क शेष अनुच्छेद मानब उचित नहि।

एहि दूटा प्रवेश-पाठक केन्द्र अलग अछि। प्रस्तावनामे अनुवादक भाषा-संस्कृति आ साहित्यिक स्थानान्तरणक प्रश्न उठबैत छथि; मूल रचनाकारक सम्बोधन बच्चाक हँसी, गीत आ स्वास्थ्यपर केन्द्रित अछि। वास्तविक काव्य-पाठमे ई दुनू धारा एकत्र होइत अछि: पढ़बाक-गबयबाक सरलता आ सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यक सघन उपस्थिति।

३. 'भोरे-भोर': आठ खण्डक क्रमिक पाठ-विश्लेषण (पृ. ४-११)

३.१ पृष्ठ ४: भोर केँ दिनचर्याक आरम्भ बनायब

पहिल खण्डक 'भोरे-सबेरे जागब सीखू' पाँति सीधा क्रियात्मक सन्देश दैत अछि। एहि संग 'मातु-पिताकेँ कऽ प्रणाम' आ 'नियत काजमे लागब सीखू' जेहन पद समाजक व्यवहारिक अनुशासनकेँ बालकक निजी दिनचर्यासँ जोड़ैत अछि। कविता एकाएक अमूर्त आदर्श नहि सुनबैत; निम्नसँ उठब, प्रणाम करब आ काज शुरू करबाक अनुभवसँ बात आरम्भ करैत अछि। चित्रमे बिछाओनपर जागैत नेना, खिड़कीपर भोरक प्रकाश, आ घड़ी अछि। एहिसँ पाठककेँ 'समय'क अनुभव शब्दक अतिरिक्त दृश्यसँ भेटैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा एतय प्रारम्भेँ प्रकट होइत अछि: 'सीखू'क लगातार आज्ञार्थकता बालकसँ आज्ञा मानबाक अपेक्षा करैत अछि, मुदा ओकरा अपन नींद, जिज्ञासा वा काजक चुनावक आवाज नहि भेटैत। बालसाहित्यक उपदेशात्मक परम्परामे ई सहज शिल्प भऽ सकैत अछि, मुदा आधुनिक सहभागितापूर्ण पाठनमे शिक्षककेँ एहि पदक संग प्रश्न-विनिमय जोड़ब पड़त।

३.२ पृष्ठ ५: चिड़ै आ बालकक सहअस्तित्व

दोसर खण्डमे चिड़ै/पक्षीक हँसब-बजब, गीत गाएब, घर-आँगनमे घूमब, पानि आ दाना देब तथा ओकर नहाएब देखबाक प्रसन्नता अछि। चित्रमे फूलल डाढ़िपर दू चिड़ै आ रेलिङ पकड़ने नेना देखाइत अछि। पहिल पृष्ठक 'करबाक' उपदेश एतय 'देखबाक' आनन्द बनैत अछि। भोजन-पानि देबाक संकेत बच्चाकेँ मानवेतर जीवक प्रति जिम्मेवार बनबैत अछि; ओ केवल प्रकृतिक उपभोक्ता नहि, देखरेख करयवला संगीति सेहो बनि सकैत अछि।

कविताक ई अंश सभसँ अधिक बालकेन्द्रित प्रतीत होइत अछि, कारणेँ चिड़ैक चाल, आवाज आ स्नान दृश्य-श्रव्य कौतूहल पैदा करैत अछि। चित्र आ पाँति दूनु एकहि अनुभवक पूरक छथि।

तथापि चिड़ैकें सदा प्रसन्न आ गबैत रहयवला प्राणी बनायब कविताक भावात्मक मानवीकरण थिक, पक्षिविज्ञानक तथ्यात्मक विवरण नहि।

३.३ पृष्ठ ६: हबा, घंटी आ सूनबाक अभ्यास

तेसर खण्डमे आकाश दिस ध्यान देब, निर्मल हवाक आनन्द, मन्दिरक घंटी, गीत-भजन आ ज्ञानक बात सुनबाक प्रसंग अछि। चित्रमे मेजपर कानपर हाथ देने बालक, मनमे घंटी आ बाजबाक सुर-चिह्न देखबैत अछि। एहिसँ दृश्यात्मक वर्णन सुनबाक अभ्यास दिस मुड़ैत अछि: नेना केवल प्रकृतिक रूप नहि, ओहि परिवेशक आवाज सेहो ग्रहण करैत अछि।

साहित्यिक जटिलता ई अछि जे ‘शुद्ध हबा’क शारीरिक सन्तोषसँ मन्दिरक स्वर आ ‘ज्ञान’क नैतिक बोध धरि कविता तेज गतिएँ पहुँचैत अछि। एतय विषयक एकसूत्रता ‘भोरक वातावरण’ अछि, मुदा प्रकृति-धर्म-ज्ञानक तीन अलग अनुभव एक खण्डमे भरि गेल अछि। कक्षामे पढ़बैत काल एहि भिन्नताकें खोलि कऽ बुझेनाइ अधिक सार्थक होयत।

३.४ पृष्ठ ७: बगीचा एकटा अनुभवशाला

चारिम खण्डमे बाबूजीक संग गाछीमे टहल, गाछ-बिरिछक हरियरपन, कोकिलक कूजन, भमरक गुनगुन, फूल-पात आ तितलीक प्रसंग अछि। काव्यक भोरे उठबाक आदेश एतय बगीचाक दृश्य-ध्वनि-गन्धक संसार दिस पसरैत अछि। चित्रमे पैघ लोक आ बालकक साझा उपस्थिति अछि; बच्चाक नजर फूल आ उडैत कीड़ामकोड़ा दिस अछि। ई खण्ड प्राथमिक बाल-अनुभवक दृष्टिँ अत्यन्त प्रभावी अछि, कारणेँ कौतूहल खालि सदाचार-सन्देशसँ नहि, प्रत्यक्ष प्राकृतिक दृश्यसँ उठैत अछि।

बाबूजी संग टहलब एकल पारिवारिक नमूना प्रस्तुत करैत अछि। एहि रूपक अन्तर्गत दादी, माय, बहिन, शिक्षक वा संगियाक संग प्रकृति देखबाक सम्भावना पाठमे नहि उभरैत; ई मौलिक पाठक परिधि थिक, अनुवादक बनाओल अन्तर अछि से साबित नहि।

३.५ पृष्ठ ८: चन्द्रमाक अस्त आ सूर्योदयक प्रतीक्षा

पाँचम खण्डमे चन्दा मामा, नील गगन, पश्चिममे चमकैत चान आ पूब दिस प्रतीक्षित सूरजक स्थिति चित्रित अछि। भोरक ई क्षण बच्चाकें एकहि आकाशमे समयक परिवर्तन देखबैत अछि।

चित्रमे पर्वत आ बादरक बीच चन्द्रमा आ उगैत सूरजक संकेत अछि। कविता आ चित्र दूनु 'राति समाप्त भेल, दिन आरम्भ भेल' एहि संक्रमणकें खेलक रूप दैत अछि।

'चन्दा मामा' शब्दक आत्मीयता मिथिलाक बालबोलीमे सहज ग्रहणीय छवि बनबैत अछि। रातिसँ दिनक बदलावमे चानक दृश्यता घटैत देखायब वैज्ञानिक शिक्षाक प्रवेश-बिन्दु भऽ सकैत अछि, मुदा कविता खगोलशास्त्रीय सूत्र नहि देइत; ओकर महत्त्व अनुभवात्मक अवलोकनमे अछि।

३.६ पृष्ठ ९: लालिमा आ सूर्यक मानवीकरण

छठम खण्डमे पूर्व दिशाक लालिमा, दिनकरक उदय आ आकाशक सुन्दरता वर्णित अछि। चित्रमे हँसैत सूर्यकें मानवीय मुख देल गेल अछि; एहि सँ अपरिचित वा विराट सूर्य नेनाक परिचित साथी जेकाँ भासैत अछि। 'सूरज'क क्रमशः ऊपर उठब पहिल खण्डक बिछाओन छोड़बाक गतिसँ भिन्न, समूच दिनक प्राकृतिक घड़ी प्रस्तुत करैत अछि।

कविता पाठक दृष्टिकें 'जागब'सँ 'सूर्योदय देखब' धरि लऽ अबैत अछि। उपदेशक बीच एहि दृश्यात्मक अवकाशक कारणेँ पुस्तक केवल नियमित दिनचर्याक सूची नहि रहि जाइत अछि। एहि दृश्यात्मक खण्डकें चित्र बिनु पढ़लासँ तकर बालक-सुलभ प्रभावक एक भाग छूटि सकैत अछि।

३.७ पृष्ठ १०: सूर्यनमस्कार आ देहक अनुशासन

सातम खण्डमे बच्चा सूर्यकें प्रणाम करैत अछि। पाठमे 'कऽ प्रणाम, दऽ ध्यान मगन मन' आ 'रश्मि देह पर' जकाँ प्रयोगसँ शारीरिक, मानसिक आ आध्यात्मिक अभ्यास एकठाम मेल करैत अछि। चित्रमे हाथ जोड़ने बालक आ पर्वतक बीच उगैत सूर्य अछि। एहिमे भोरक प्रकृति अब सामाजिक-अनुष्ठानिक व्यवहारमे रूपान्तरित होइत अछि।

कविता सूर्यक प्रकाशकें बल-बुद्धिक विकाससँ जोड़ैत अछि। ई कथनकें स्वास्थ्यक मापल-तोलल परिणाम वा चिकित्सकीय दाबीक रूपमे नहि, कविताक आशावादी प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति रूपेँ देखबाक चाही। कवि प्रकाशक अनुभवकें उत्साह, सचेतना आ अनुशासनसँ सम्बद्ध करैत छथि; चिकित्सा अथवा विज्ञानक प्रमाण अलग विषय थिक।

३.८ पृष्ठ ११: प्रथम पाठक पुनरागमन

आठम खण्डमे नियमित भोरे उठब, विशुद्ध हवा, चिड़ैक गीत, रोगसँ रक्षा, माता-पिताकेँ प्रणाम, तन-मोनक निर्मलता आ दैनिक काजक सफलता पुनः अबैत अछि। चित्रमे बच्चा माता-पिताकेँ प्रणाम करैत अछि। ई अन्तिम खण्ड पहिल पृष्ठक सन्देशकेँ वृत्ताकार ढंगसँ फेर सोझाँ अनैत अछि: आरम्भेँ प्रणाम आ काज, अन्तमे सेहो प्रणाम आ काज। एहि पुनरागमनसँ कविता स्मरणीय बनैत अछि, मुदा नव दृश्य प्रस्तुत करबाक अपेक्षा पुरान सन्देशक पुष्टि बढ़ि जाइत अछि।

‘रोग कोनो नहि सकत दबा’ जकाँ कथनकेँ पाठ्य-आलोचनामे अलंकारिक आश्वासन मानल उचित, अक्षरशः सार्वभौम स्वास्थ्य-गारंटी नहि। एहि अन्तरकेँ स्पष्ट करब बालसाहित्यक जिम्मेवार अध्यापनक भाग थिक।

४. ‘प्रार्थना’: पाँच खण्डक विस्तृत अध्ययन (पृ. १२-१६)

४.१ पृष्ठ १२: विनती, विद्या आ दया

दोसर कविताक शीर्षक ‘प्रार्थना’ मुद्रित पृ. १२ पर अछि। आरम्भ ‘विनती हमर सुनू भगवान’सँ होइत अछि; बालक विद्या, समझ, मानवीय प्रेम, दया आ उपकारक प्रवृत्ति चाहैत अछि। चित्रमे हाथ जोड़ने बालकक सम्मुख वीणा धारण कएने देवीक प्रतिमा अछि। ई दृश्य कविता अपन नैतिक मूल्यसभकेँ केवल आदेशक सूची नहि, कृपाक कामना रूपेँ प्रस्तुत करय लागैत अछि। एतय पहिल कविताक ‘सीखू’ शब्दक बाहरी आग्रह बदलि कऽ ‘दीअ’ प्रकारक विनती बनैत अछि। दूनू रूपमे लक्ष्य आदर्श आचरण अछि, मुदा वाचक-दृष्टि बदलि गेल अछि: पहिल काव्यांशमे एकटा वयस्क स्वर बच्चाकेँ निर्देश दैत अछि, प्रार्थनामे बच्चा स्वयं सामर्थ्य आ ज्ञानक प्रार्थी बनैत अछि।

४.२ पृष्ठ १३: गुरु, शिक्षा आ पारिवारिक सेवा

दोसर खण्डमे मातु-पिताक भक्ति, एकलव्यक गुरु-अनुराग, शिक्षा-दीप, कृपा, चतराड़, प्रेम आ दयाक प्रसंग अछि। चित्रमे दीप वा आरती-जेकाँ दृश्य सहित नेनाक श्रद्धा प्रदर्शित अछि। एहि खण्डमे ‘श्रद्धा’ आ ‘शिक्षा’ एकहि नैतिक पदक्रममे ठाढ़ अछि; ‘एकलव्य’क सांस्कृतिक उल्लेख बालपाठकसँ पूर्वपरिचयक अपेक्षा करैत अछि।

एकलव्य प्रसंग जटिल साहित्यिक-सामाजिक पृष्ठभूमि रखने अछि। मात्र ‘गुरु-अनुराग’क आदर्श रूप पढ़लासँ ओकर प्रश्नाकुल पक्ष—अधिकार, अवसर आ गुरु-शिष्यक शक्ति-सम्बन्ध—अनछुए रहि सकैत अछि। बालकक उमेरअनुसार कथा सुनेनाइ, प्रश्न पूछेनाइ आ एकाधिक दृष्टि सोझाँ आनब एहि पदक अधिक विवेकी शिक्षण होयत।

४.३ पृष्ठ १४: राष्ट्र, दुर्गा आ ज्ञानरूपक

तेसर खण्डमे मातु-पिताक आदर, राष्ट्रभक्ति, शान्तिक बल, मातृभूमिक सुपुत्र बनब, दुर्गाक शक्ति, सहायक टकरा आ कृष्णक ज्ञानरूपकक उल्लेख अछि। चित्रमे हाथमे भारतक ध्वजा आ पोथी लेने हँसमुख बालक अछि। एहि दृश्यसँ ‘देश’ आ ‘पढ़ाइ’ अलग-अलग विषय नहि रहि, एकहि नेनाक दुनू जिम्मेवारी बनैत अछि।

ई खण्ड मूल्यक बहुलता देखबैत अछि: श्रद्धा, शान्ति, शक्ति आ ज्ञान। तथापि शिशु वा आरम्भिक कक्षाक पाठक लेल अल्प पाँतिमे एतेक साङ्केतिक नामक आगमन अर्थकेँ घना बना दैत अछि। शान्ति आ शक्तिक आपसी सम्बन्ध समझेनाइ पाठकीय व्याख्याक आवश्यक काज बनैत अछि।

४.४ पृष्ठ १५: जीवदया आ ऐतिहासिक आदर्श

चारिम खण्डमे ‘महावीर सन बनी अहिंसक’ आ ‘जड़-चेतनसँ प्रेम करी’ जकाँ पाँति स्पष्ट अहिंसा आ सहानुभूतिपर जोर दैत अछि। अगिला पाँतिमे बुद्धक शान्तिपथ, राणा आ शिवाजीक आदर्श तथा शत्रुभयसँ मुक्ति सम्बन्धी कामना अछि। चित्रमे बालकक हाथ अथवा छाती निकट एकटा चिड़ै-जेकाँ जीव देखाइत अछि; ई जीवनक प्रति कोमल भावकेँ दृश्यरूप दैत अछि।

एहि खण्डक भीतर असाधारण वैचारिक समीपता अछि: एक दिस अहिंसा, जीव-प्रेम; दोसर दिस पराक्रम आ निर्भीकता। एकरा परस्पर विरोध मानि तुरन्त खारिज नहि कएल जा सकैत, कारणेँ अहिंसा आ साहस सह-अस्तित्वमे रहि सकैत अछि; मुदा बिना प्रसङ्गक सूचीकरण बच्चाकेँ ई अन्तर स्वयं नहि बुझा पबैत। एहि कारणेँ ई काव्यांश मूल्यविमर्श लेल अच्छा, आ स्वतः स्पष्ट नीतिवचन रूपेँ अपेक्षाकृत कम सहज अछि।

४.५ पृष्ठ १६: कर्मयोग, सेवा आ निष्काम जीवन

अन्तिम खण्डमे धरती, गगन, पातालपर विजयक ध्वज; मातु-पिता आ गुरुजन-परिजनक स्वप्न पूरा करब; 'कर्मयोगमे लागल सदिखन'; फलक आकांक्षा छोड़ि काज करब; बुद्धि, बल आ सेवाभावसँ जीवन निर्वाह करबाक इच्छा अछि। चित्रमे पर्वतीय धरातलपर ध्वजा पकड़ने बालक देखाइत अछि। पोथीक अन्तिम दृश्य आरम्भक नीदसँ जागैत नेनाकेँ कर्मशील, राष्ट्राभिमुख आ लक्ष्यनिष्ठ पात्रमे बदलैत अछि।

अन्तिम पाँतिक आचार-सन्देश सामान्य 'सफलता'सँ आगाँ बढ़ि सेवाभावक महत्व स्थापित करैत अछि। मुदा 'विजयक ध्वजा' आ 'फल नहि चाहब'क संयुक्त अर्थ विचारणीय अछि: पहिल छविमे उपलब्धिक प्रतीक, दोसरमे फलसँ अनासक्ति। एहि द्वन्द्वकेँ रचनाक दुर्बलता कहबाक बदला भिन्न परम्पराक नैतिक शब्दावली एकहि बाल-पाठमे समेटबाक प्रयत्न रूपेँ पहिचानब उचित अछि।

५. विषयानुक्रम: भोरक प्रकाशसँ सामाजिक मनुष्य धरि

५.१ समय आ स्थानक विस्तार

पहिल कविता घरक बिछाओन आ घड़ीसँ शुरू होइत अछि, आँगन-गाछी-आकाश-सूर्योदय घुमि फेर घरक पारिवारिक सम्बन्धपर वापस अबैत अछि। दोसर कविता पूजास्थानसँ शुरू होइत गुरु, राष्ट्र, ऐतिहासिक पुरुष आ अखिल विश्वव्यापी सेवा धरि पसरैत अछि। एहि क्रमकेँ 'निजी सँ सामाजिक' विस्तार कहल जा सकैत अछि। ई अर्थ पाठक विषयक्रमसँ निकलैत अछि; लेखकक पूर्वनिर्धारित योजनाक प्रमाण नहि।

५.२ संवेदना आ अनुशासनक तान

दूनू कविता दोसर-दोसर तरहेँ अनुदेश दैत अछि। 'भोरे-भोर'मे बोलनिहार बच्चाकेँ जगाबैत, देखबैत, सुनबैत आ प्रणाम कराबैत अछि; 'प्रार्थना'मे बच्चा अपन मनक गुणक आकांक्षा करैत अछि। पूर्वक सक्रिय क्रियासूचक पद आधुनिक बालसाहित्यक व्यवहारिक उपलब्धि अछि, मुदा लगातार उपदेशसँ बालकक कल्पनाक स्वतंत्र क्षेत्र सीमित भऽ सकैत अछि। जतय फूल, तितली आ पक्षी अबैत अछि, ओतय कविता स्वतन्त्र आनन्दक नजदीक पहुँचैत अछि; जतय आदर्श नामक सूची घन होइत अछि, ओतय सूचना आ नीति गीतपर भारी पड़ैत अछि।

५.३ सांस्कृतिक बहुलता बनाम एकल धार्मिक दृश्य

अनुवादकक ‘दू शब्द’ भारतीय बहुभाषिकता आ लोक-साहित्यक विविध रूपक सम्मान करैत अछि। काव्य-पाठमे मन्दिर, सरस्वती-प्रतिमा, दुर्गा, कृष्ण, सूर्यक प्रणाम आदि प्रतीक बारम्बार भेटैत अछि। एहि धार्मिक-सांस्कृतिक प्रतीकसभक उपस्थिति ग्रन्थक वस्तुस्थितिक वर्णन थिक; एकर आधार पर समस्त पाठकक धार्मिक पहिचानक अनुमान नहि। कक्षामे विभिन्न आस्थावाला बच्चा वा धर्मनिरपेक्ष पाठकक दृष्टिँ प्रार्थनाक व्यापक मानवीय मूल्य—विद्या, करुणा, अहिंसा, सेवा—अलगसँ स्पष्ट करब उपयोगी होयत।

५.४ बालकक सामाजिक स्थिति

रेखाचित्रसभमे प्रधान पात्र प्रायः एकटा बालक अछि; परिवारमे पिता आ माता देखाइत छथि, आ गुरु तथा राष्ट्रक आदर्शसभक उल्लेख अछि। कन्याक अनुभव, दिव्याङ्ग बालक, भिन्न सामाजिक परिवेशक बच्चा वा सामूहिक खेलक दृश्य प्रमुखता नहि पबैत अछि। ई कमी इतिहासगत रचनाक निन्दा मात्र लेल नहि, समसामयिक बालपुस्तकक प्रतिनिधित्व-सम्बन्धी विमर्श उठेबाक लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

६. मैथिली भाषा, ध्वनि आ अनुवाद-प्रविधिक समीक्षा

६.१ ‘सुबह सवेरे’ सँ ‘भोरे-भोर’

हिन्दी कृतिक प्रकाशित नाम ‘सुबह सवेरे’ अछि, मैथिलीमे ‘भोरे-भोर’। शीर्षकक ई रूप केवल शब्दार्थक विनिमय नहि; ‘भोर’क दुहराव मैथिली श्रवण-परम्परामे सहज लय आ आत्मीय समय-बोध पैदा करैत अछि। रचनाक भीतर पुनःपुनः ‘भोरे-सबेरे’क आगमन शीर्षकसँ सम्बद्ध होइत अछि। एहि आधारपर लक्ष्यभाषाक ध्वनि आ पाठकीय स्मरण लेल अनुवादकक चयन सार्थक कहल जा सकैत अछि। मूल शीर्षकक सम्पूर्ण अर्थ-छायाक तुलना करबाक लेल मूल हिन्दी पाठक प्रकाशकीय विवरण अपेक्षित अछि।

६.२ क्रियात्मक मैथिली आ बाल-संवाद

‘जागब सीखू’, ‘लागब सीखू’, ‘देखब’, ‘सुनब’, ‘प्रणाम’, ‘करी’, ‘रहय’ जकाँ रूप पाठमे गति पैदा करैत अछि। क्रियाक ई सघनता नेनाकेँ ठाढ़ अनुभव देइत अछि; रचना केवल वस्तुक नाम गनबैत नहि, किछु करबाक अथवा किछु देखबाक आग्रह करैत अछि। बच्चाक लेल पाठक सुनबाक उपयोगिता एहि क्रियात्मकतासँ बढ़ैत अछि। एकहि समयमे ‘सीखू’क दोहराव

आग्रहमूलक स्वरकें प्रबल करैत अछि; एहिसँ काव्य आ अनुशासनक समीकरण स्पष्ट होइत अछि।

६.३ सहज बोली आ तत्सम शब्दक सह-अस्तित्व

‘बाबूजी’, ‘मातु-पिता’, ‘चन्दा मामा’, ‘गाछ-बिरिछ’, ‘चिड़ै’, ‘पानि’, ‘काज’, ‘भोरे-सबेरे’ जकाँ पद स्थानीय घर-आँगनक आत्मीयता देइत अछि। एकर संग ‘विशुद्ध’, ‘प्रणाम’, ‘कर्मयोग’, ‘अहिंसक’, ‘दयानिधान’, ‘पर-उपकारक’, ‘मातृभूमि’ जकाँ शब्द संस्कृतनिष्ठ नैतिक शब्दावली अनैत अछि। पहिल कविताक आरम्भिक पाँतिमे बोलीक सहजता अधिक अछि; प्रार्थनाक उत्तरार्द्धमे तत्सम आ आदर्श-पात्रक घनत्व बढ़ैत अछि। ई वितरण अर्थवान अछि: प्रकृति-आनन्दक भाषा दृश्यप्रधान, नैतिक वरदानक भाषा अवधारणाप्रधान बनि जाइत अछि।

६.४ मौखिकता, पुनरावृत्ति आ स्मरण

दूनू रचनाक प्रत्येक मुद्रित पृष्ठपर आठ-आठ पाँतिक समान दृश्य-विन्यास अछि। किन्तु एतेक आधारपर निश्चित शास्त्रीय छन्द अथवा सममात्रिक लयक दावा करब उचित नहि; आवाजमे पढ़बाक क्रम, उच्चारणक दीर्घता आ पाँतिक विरामक व्यवस्थित ध्वन्यात्मक परीक्षण अलग चाही। तथापि छोट पाँति, समानार्थक युग्म, ध्वनिसूचक शब्द आ ‘भोरे’क आवृत्ति स्मरणशक्तिक अनुकूलता देइत अछि। व्याख्यानक अपेक्षा सामूहिक पाठ वा गायनमे एकर उपयोगिता सम्भाव्य अछि, प्रत्यक्ष प्रयोगात्मक परीक्षणक परिणाम नहि।

६.५ स्थानिकीकरणक लाभ आ सीमा

मैथिली रूपमे घरक वस्तु, नेनालोकनिक सम्बोधन आ प्रकृतिक स्थानीय शब्दसँ रचना लक्ष्यभाषाक पाठकक कण्ठमे बसबाक संभावना बनबैत अछि। मुदा अनुवादक सफलता जाँचबाक दू अलग मानदण्ड अछि: (१) मैथिलीमे पाठक प्रवाह आ बालोपयोगिता, (२) हिन्दी मूलक अर्थ, लय आ छविक प्रत्यक्ष समानता। पहिल मानदण्डपर एहि पुस्तकक दृश्यसहित पाठक ठोस समीक्षा सम्भव अछि; दोसरपर पूरा हिन्दी मूल सँग द्विपाठ परीक्षण उपलब्ध नहि। ताहि लेल एहि समीक्षामे ‘सहज मैथिली’क प्रशंसा कएल गेल अछि, ‘एक-एक पाँतिक निष्ठापूर्ण अनुवाद’क अप्रमाणित प्रमाणपत्र नहि।

६.६ भाषा-संपादनक ठोस प्रश्न

पाठमे पाँति तोड़बाक ढंग, विरामचिह्न, संयुक्त पद आ उच्चारण-सूचक चिह्नक विविधता देखाइत अछि। मुद्रित रूपमे भेटल भिन्नताकेँ स्वतः अशुद्ध कहल उचित नहि, विशेष कऽ जखन बालबोली, क्षेत्रीय प्रयोग वा गेयता जुड़ल हो। ‘भोरे-भोर’क शीर्षक आ गीतमे ‘भोरे-सबेरे’क उपयोग दूटा भिन्न कार्य करैत अछि; तकर यन्त्रवत एकरूपीकरण काव्यलय घटा सकैत अछि। किछु स्थलपर धुँधलका वा छपाइके कारण अक्षर-पहिचान अनिश्चित अछि; से ठाम सुधारक दावा करबाक बदला मूल प्रति सँ मिलान आवश्यक अछि।

७. रेखाचित्र: अर्थक सह-निर्माण

काव्य-पृष्ठ ४-१६ मे लगभग प्रत्येक पृष्ठपर प्रधान दृश्यचित्र अछि। रेखाचित्र केवल शब्दक सजावट नहि, बालपाठककेँ स्थिति पहिचानबाक ‘दृश्य-वाक्य’ प्रदान करैत अछि। पहिल पृष्ठक घड़ी समयक बोध देइत अछि; पक्षीक चित्र सूनबाक आ देखबाक क्रियाकेँ मूर्त करैत अछि; चन्दा आ सूर्यक मानवीय मुख अनजान खगोलीय वस्तुकेँ परिचित रूप दैत अछि; सूर्यक समक्ष हाथ जोड़ने बालक अभ्यासकेँ दृश्य करैत अछि; प्रार्थनाक देवी-प्रतिमा श्रद्धाक सांस्कृतिक धरातल स्पष्ट करैत अछि; ध्वजा आ पोथी देश-सेवा आ अध्ययनक जोड़ी बनबैत अछि।

किछु चित्र कविता सँ अधिक स्पष्ट कथात्मक सूचना देइत अछि। उदाहरण लेल पृ. ७ क चित्रमे बाबूजी आ बच्चाक संग फूल-तितलीक सजग अवलोकन स्पष्ट अछि; पृ. १४ क चित्रमे बालकक हाथमे पुस्तक आ झंडा एक संग अछि, जखन कि पदमे मूल्यसभ विस्तृत अछि। एतय दृश्य नेनाक लेल विचारक प्रवेशद्वार बनैत अछि। मुदा सबै चित्रमे प्रायः एकहि प्रकारक बालक देखायब प्रतिनिधित्वक एक सीमा सेहो अछि।

चित्रकारक नाम एहिक देखल प्रकाशन-विवरणमे स्पष्ट रूपेँ निर्धारित नहि भऽ सकल; अतएव समीक्षामे कोनो चित्रक किसी विशिष्ट कलाकारक नामसँ श्रेय नहि देल गेल अछि। मूल रेखाचित्रसभकेँ कालक्रम वा कलाशैलीक एकटा विशिष्ट विद्यालयक संग जोड़बाक अनुमान सेहो नहि कएल गेल अछि।

८. अनुवाद-समीक्षा लेल बाहरी साक्ष्यक सीमित उपयोग

२००९ मे प्रकाशित डॉ. कौशलेन्द्र पाण्डेयक हिन्दी समीक्षा ‘सुबह सवेरे’क लगभग सोलह पृष्ठक बालोपयोगी पुस्तिका होयबाक, एकटा लम्बा प्रभाती गीत आ दोसर प्रार्थनाक होयबाक, तथा

चित्रक सहायक भूमिकाक उल्लेख करैत अछि। ओहि समीक्षामे पक्षीक चहचहाहट, भोर, आकाश, उद्यान, मातृ-पितृभक्ति, एकलव्य, महावीर, बुद्ध, शिवाजी आ परोपकार जकाँ प्रसंग सेहो अएल अछि। एहि विवरणक विषय-क्रम मैथिली रूपमे प्रत्यक्ष देखल सामग्रीसँ मेल खाइत अछि। एतबे सँ दूनू पाठक प्रमुख विषयक निरन्तरता पुष्ट होइत अछि; शब्दशः समानता, पाँतिसंख्या वा अनुवाद-संशोधनक इतिहास नहि। [सन्दर्भ ४]

साहित्य कुञ्जक लेखक-परिचयमे डॉ. ए. कीर्तिवर्धनक प्रकाशित पोथीसभक बीच ‘सुबह सवेरे’ आ तकर मैथिली अनुवादक उल्लेख अछि। २०१९ क एक प्रकाशित साहित्यिक विवरणमे सेहो ‘सुबह सवेरे’ लेखकक पूर्वकृति रूपमे चिन्हित अछि। ई साक्ष्य रचनाकारक कृति-सूची पुष्ट करबाक लेल उपयोगी अछि; एकर आधारपर कोनो अप्राप्य पाँतिक उद्धरण गढ़ल नहि गेल अछि। [सन्दर्भ ५-६]

बाहरी समीक्षासँ एकटा रुचिकर पाठकीय भिन्नता देखाइत अछि: हिन्दी समीक्षकक झुकाव संस्कार, सुग्राह्यता आ चित्रक प्रशंसापर केन्द्रित अछि। वर्तमान मैथिली अध्ययन उपर्युक्त गुणकें स्वीकार करैतहुँ बालकक स्वतन्त्र स्वर, लिंग-प्रतिनिधित्व, सांस्कृतिक विविधता, अत्यधिक आदर्श-सूची आ वैज्ञानिक कथनक सीमाकें जाँचैत अछि। एहि तुलना सँ समालोचना रूपेँ प्रश्न बढ़ैत अछि; एतय कोनो दोसर समीक्षकक आशयक विकृतिकरण नहि कएल गेल अछि।

९. आलोचनात्मक मूल्यांकन: उपलब्धि, अन्तर्विरोध आ पाठकीय उपयोग

९.१ उपलब्धि

प्रथम उपलब्धि काव्यक स्पष्ट उद्देश्य अछि: नेनाकें भोरे उठबाक बहाने पर्यवेक्षण, स्वच्छता, पारिवारिक आदर आ सामाजिक दयाक विचार धरि लऽ जाएब। दोसर उपलब्धि दृश्य-श्रव्य संगठन: भोरक प्रकाश, चिड़ैक गीत, घंटीक आवाज, बगीचाक चहल-पहल आ चित्र अपन-अपन माध्यमसँ रचनाकें स्मरणीय बनबैत अछि। तेसर उपलब्धि मैथिली लक्ष्यभाषाक सहज उपलब्धता: लोकबोलीक पद आ आवृत्तिमूलक लय आम पाठक लेल प्रत्यक्ष प्रवेशद्वार खोलैत अछि। चारिम उपलब्धि दू पद्यक रचनात्मक सम्बन्ध अछि—दिनचर्याक अभ्याससँ सेवा-मूल्यक आकांक्षा धरि।

१.२ सीमासभ

पहिल सीमा आदेशप्रधान वाणी अछि। बहुत पाँति बच्चाकें की करयबाक चाही तकर कथन करैत अछि, ओकर अनुभवक अनपेक्षित खोज लेल कम ठाम छोड़ैत अछि। दोसर सीमा आदर्श नामक घनता अछि; एकलव्य, दुर्गा, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, राणा, शिवाजी आदि क नाम अल्प पाँतिमे अएलासँ छोट पाठक लेल अर्थ खंड-खंड भऽ सकैत अछि। तेसर सीमा चयनित आदर्शक सांस्कृतिक दायरा अछि: मूल्य मानवतावादी होइतहुँ चित्रात्मक आ धार्मिक सन्दर्भ अपेक्षाकृत एक परम्परामे केन्द्रित अछि। चारिम सीमा किछु कल्याणकारी आश्वासनक अतिशयोक्ति अछि, जाहिकें तथ्यात्मक स्वास्थ्य-सिद्धान्त नहि बुझबाक चाही।

१.३ बाल-कक्षामे आलोचनात्मक पाठनक ठोस सम्भावना

पृ. ४-११ क चित्रक संग क्रमसँ ‘हम भोरमे की देखैत छी?’ प्रश्न पूछल जा सकैत अछि; पृ. ५ क चिड़ै-विषयक अंशसँ जीवक प्रति दया आ देखरेख; पृ. ८-९ सँ चान-सूरजक दृश्यात्मक भिन्नता; पृ. १०-११ सँ देह, अनुशासन आ स्वास्थ्यक विषयमे तथ्य-कविता भिन्न करबाक अभ्यास होयत। ‘प्रार्थना’मे पृ. १२ क परोपकारक भाव आ पृ. १५ क अहिंसा-बहादुरीक संयुक्त उल्लेख सँ बालककें ‘साहस भने हिंसा?’ जकाँ प्रश्न पर बातचीतक अवसर भेटि सकैत अछि। ई सभ पाठ-सूत्र समीक्षा द्वारा प्रस्तावित शैक्षिक प्रयोग छथि, पोथीमे छपल गतिविधि नहि।

विशेषतः स्तुति वा समर्पणात्मक पदक पाठनमे विद्यालयक विविध आस्था आ पारिवारिक पृष्ठभूमिक सम्मान आवश्यक अछि। धार्मिक प्रतीकसभकें सांस्कृतिक पाठक एक हिस्सा बना कऽ पढ़ल जा सकैत अछि, जखन कि विद्या, समान सम्मान, दया आ सेवा जेहन व्यापक गुणपर सहमति विकसित कएल जा सकैत अछि। एहिसँ मूल कविताक ऐतिहासिक स्वर दबल नहि, आधुनिक पाठकक अनुभव विस्तृत होइत अछि।

एहि अध्ययनक निष्कर्ष तीन स्तर पर विभक्त अछि। प्रत्यक्ष पाठसँ पुष्ट तथ्य: २०१४ क प्रकाशित मैथिली अनुवाद, दू कविता, मुद्रित पृ. ४-१६ क काव्य-विन्यास, १३ पृष्ठक आठ-आठ पाँति, आरम्भिक भाषिक भूमिका, चित्रसभ आ पाँति-विश्लेषण। बाहरी स्रोतसँ पुष्ट तथ्य: हिन्दी मूल ‘सुबह सवेरे’क पुस्तक-पहिचान आ २००९ क समीक्षामे दू पद्यक विषयक समानता। विश्लेषणात्मक निष्कर्ष: आदेश-आनन्दक तनाव, दृश्य-काव्यक सहकार्य, नैतिक नामावलीक घनत्व, बहुलताक प्रश्न आ स्थानीय मैथिली पदक प्रभाव।

काव्यानुवादक सम्पूर्ण भाषिक निष्ठाक अगिला परीक्षण लेल हिन्दी मूल ‘सुबह सवेरे’क प्रमाणित प्रथम संस्करणक मुद्रित पाँतिसँ मैथिली पाँतिक एक-एक जोड़ मिलाब आवश्यक होयत। ताहि तुलना मे शब्दार्थ, लय, पदानुक्रम, छवि, सांस्कृतिक बिम्ब, आदर्श-नाम, चित्रक समरूपता आ नामान्तरक परीक्षण समाविष्ट रहत। हिन्दी मूलक पाठ बिनु कोनो मैथिली पाँतिक ‘हिन्दीमेसँ हटि गेल’ अथवा ‘मूलसँ श्रेष्ठ’ होयबाक घोषणा विद्वत्-सावधानीक प्रतिकूल होयत।

११. समाहार: ‘भोरे-भोर’क साहित्यिक स्थान

‘भोरे-भोर’क केन्द्र भोरक अन्हार हटबाक मात्र दृश्य नहि, बालकक मन आ व्यवहारमे प्रकाशक रूपक बनायब अछि। पहिल कवितामे प्रकाश बच्चाकेँ घड़ीसँ आकाश धरि, आकाशसँ पक्षीक गीत धरि, गीतसँ पारिवारिक स्नेह धरि लऽ जाइत अछि। दोसर कवितामे ओही बालककेँ विद्या, दया, निर्भीकता आ सेवाक आकांक्षी व्यक्ति बनबाक रूपरेखा देल गेल अछि। काव्यात्मक सुकुमारता बगीचाक दृश्य आ जीव-जगतक संगतिक ठाम सभसँ अधिक मुखर अछि; उपदेशात्मक आग्रह आदर्श-गणनाक ठाम सभसँ अधिक घना होइत अछि। दुनू ध्रुवकेँ एकहि संग देखनाइ एहि पुस्तकक वस्तुनिष्ठ समीक्षाक आवश्यक शर्त थिक।

डॉ. योगानन्द झाक मैथिली रूपान्तर एहिना एकटा हिन्दी बालकविता-पुस्तिकाकेँ मैथिली बालपाठकक लेल उपलब्ध करबैत अछि; ई भाषिक उपलब्धता अपनहि मे महत्त्वपूर्ण अछि। मुदा अनुवादक प्रशंसा करैत काल मूल हिन्दी पाठक अनुपस्थितिक तथ्य नहि नुकायल जा सकैत। जतेक पाठ प्रत्यक्ष देखल गेल अछि, ओहि आधार पर कहब उचित जे ‘भोरे-भोर’ संस्कारप्रधान, चित्रसमर्थित आ गेयताक सम्भावनासँ युक्त दूर-रचनाक बालकविता-पुस्तिका अछि, जाहिमे अपन समयक आचार-विचारक संग समकालीन बालकेन्द्रित आलोचनाक अनेक प्रश्न सेहो निहित छथि।

दृश्य सामग्री	समीक्षामे उपयोग शीर्षक, मूल लेखक
आवरणक आगाँ-पाछाँ भाग	आ अनुवादकक नाम
भीतरी शीर्षकपृष्ठ	मूल हिन्दी लेखक, अनुवादक,

दृश्य सामग्री	समीक्षामे उपयोग
	प्रकाशक
प्रकाशकीय विवरण; 'दू शब्द'क आरम्भ	२०१४ संस्करण; भाषा— बालसाहित्यक तर्क
अनुवादक 'दू शब्द'क मुख्य भाग	लोक-साहित्य, अनुवाद-सिद्धान्त, मातृभाषा
'दू शब्द'क अन्त; 'नेनालोकनि!'	२०१३क भूमिका- दिनाङ्क; मूल कविक सम्बोधन
मुद्रित पृ. ४-५	जागब-दिनचर्या; चिड़ै आ आँगन
मुद्रित पृ. ६-७	शुद्ध हबा, घंटी; बगीचा-भमर— तितली
मुद्रित पृ. ८-९	चन्दा-भोर; उगैत सूर्य
मुद्रित पृ. १०-११	सूर्यक प्रणाम; माता-पिताक आदर
मुद्रित पृ. १२-१३	'प्रार्थना': विद्या, परोपकार, गुरु- सम्मान
मुद्रित पृ. १४-१५	राष्ट्र, शान्ति, अहिंसा, ऐतिहासिक आदर्श

दृश्य सामग्री	समीक्षामे उपयोग
मुद्रित पृ. १६; दहिना पृष्ठ खाली	कर्मयोग, सेवाभाव आ समापन

अध्याय 13 / २०२३

चतुर्दश सूत्र

डॉ. योगानन्द झाक कृतिक आलोचनात्मक विवेचन

संग्रहक विन्यास आ एकर आलोचनात्मक अर्थ

ग्रन्थ तीन विभागमे व्यवस्थित अछि—‘काव्य विवेचन’मे छह आलेख, ‘गद्य विश्लेषण’मे तीन आलेख, आ ‘अवदान-मूल्याङ्कन’मे पाँच आलेख। पहिल विभागमे गंगावन्दना, कथाकाव्य, भक्ति-काव्य, गीत, ऋतुचित्र आ रामकथाक आधुनिक पुनर्व्याख्या मुख्य अछि। दोसर विभागमे कथाकारक यात्रावृत्तान्त, निबन्ध-साहित्य आ समाजदर्शी उपन्यासक परीक्षण अछि। तेसर विभाग व्यक्तित्वगत कृति सँ आगू बढ़ि पत्रकारिता, भाषाक वैज्ञानिक संरचना, साहित्येतिहास, जीवनीपरक समालोचना आ लोकगाथा-अनुसन्धानक संस्थागत महत्त्वकें परखैत अछि।

एहि क्रमक महत्त्व अछि। पहिल खण्ड पाठककें काव्यक भाव, बिम्ब, छन्द आ समाजचेतनासँ परिचित करबैत अछि; दोसर खण्ड कथ्य, शिल्प, परिवेश आ सामाजिक परिवर्तनक प्रश्न उठबैत अछि; तेसर खण्ड मैथिली साहित्यक आधुनिक ज्ञान-व्यवस्थाक आधारभूत साधन—दैनिक पत्र, व्याकरण, इतिहास, पुरान पाठक सम्पादन आ मौखिक परम्पराक संरक्षण—दिस दृष्टि घुमबैत अछि। एना पोथीक ‘सूत्र’ केवल चौदह अलग-अलग लेखकक नाम नहि, अपितु मैथिली साहित्यक स्वरूप आ अस्तित्वक चौदह प्रवेशद्वार बनैत अछि।

प्रस्तावनाक आलोचनादर्शन

लेखक प्रस्तावनामे आलोचनाकें विवेचन, विश्लेषण आ मूल्याङ्कनक समन्वित कार्य मानैत छथि। हुनक दृष्टिमे समालोचक पाठक आ रचनाकारक बीच सेतु छथि; ओकरा कृतिक काल, रचनाप्रक्रिया, स्रष्टाक व्यक्तित्व, समाजशास्त्र, भाषाशास्त्र, सौन्दर्यशास्त्र, मनोविज्ञान आ नृविज्ञान आदिक आवश्यकता अनुसार विचार करबाक चाही। अन्धप्रशंसा आ छिद्रान्वेषण दुनूकें

ओ अनुपयोगी मानैत छथि। ई प्रस्तावनात्मक प्रतिज्ञा पाठककें न्यायोचित आलोचनाक कसौटी उपलब्ध करबैत अछि, मुदा वास्तविक कसौटी ई थिक जे बादक चौदहो आलेख एहि सन्तुलनकें कतए धरि निर्वाह करैत अछि।

ग्रन्थकार अनेक आलेखमे कृतिक मूल कथा, कविताक पाँती, लेखकक जीवन-प्रसंग आ पूर्ववर्ती शोधक उल्लेख एकठाम आनैत छथि। जे आलेख मूलपाठक निकट रहैत अछि, ओतए व्याख्या अधिक विश्वसनीय बनैत अछि। जतए पूर्वलेखकक विचार, इतिहासक सम्भावना आ समीक्षकक अनुमोदन एकसंग अबैत अछि, ओतए प्रमाणक स्तर साफ-साफ अलग करबाक आवश्यकता प्रबल होइत अछि। ई अध्ययन ओही पद्धतिगत प्रश्नकें प्रत्येक विषयक अनुसार परखैत अछि।

०१ | गंगा वन्दनाक परम्परा आ मधुपजी

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ: १७—२६

नदीसँ सांस्कृतिक प्रतीक धरि

एहि आलेखक पहिल विशेषता एकर विस्तृत ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक भूमिका अछि। लेखक गंगाकें हिमालयसँ बंगालक खाड़ी धरि प्रवाहित नदीक रूपमे पहिचानैत छथि, मुदा तुरन्त देखबैत छथि जे भारतीय आ मिथिलाक मानसक लेल ई केवल भौगोलिक इकाइ नहि। गंगा शुचिता, श्रद्धा, तीर्थ, मृत्युसंस्कार आ सामूहिक स्मृतिक आधार बनि गेल छथि। ‘गंगा हिमवतोर्मध्ये’ सन प्रयोग, गंगाक दक्षिणी सीमासँ मिथिलाक सम्बन्ध, गंगा-घाटपर कार्तिकक सेवा आ मैथिली लोकगीतिक उल्लेखसँ ओ सांस्कृतिक भूगोलक रूपरेखा बनबैत छथि (मूल ग्रन्थ, पृ. १७—१९)।

एकर बाद लेखक प्रकृतिपूजाक परम्परा, नदीक मातृत्व-परिकल्पना आ भारतीय वाङ्मयमे गंगाक मानवीकरणक आधार खोजैत छथि। नदीक उपयोगितासँ भक्तिक भावनात्मक रूपमे संक्रमण देखयब एहि आलेखक आन्तरिक तर्क अछि। तथापि आदिम समाजसँ आधुनिक श्रद्धा धरि अविच्छिन्न विकासक परिकल्पना अत्यन्त व्यापक अछि; एकरा सांस्कृतिक व्याख्या कहब अधिक उचित, सर्वकालिक ऐतिहासिक सिद्धान्त नहि। गंगाक धार्मिक प्रतिष्ठा अनेक समाजक लेल सत्य मान्यता अछि, मुदा ताहिसँ सम्बद्ध चमत्कार वा मोक्ष सम्बन्धी विश्वासकें इतिहाससिद्ध तथ्य मानि लेब शोधसंगत नहि होयत।

साहित्यिक परम्पराक क्रमिक परीक्षण

लेखक वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, शंकराचार्य, पण्डितराज जगन्नाथ आदि संस्कृत परम्पराक उल्लेख करैत गंगावन्दनाक विस्तृत वंशावली रचैत छथि। मैथिली साहित्यमे लालदास, सीताराम झा, सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ आ काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ पर केन्द्रित होइत ओ परम्परा आ नवोन्मेषक अन्तर देखबैत छथि। सीताराम झाक ‘अम्बचरित’ आ सुमनक ‘गंगातरंगिणी’क उल्लेखक बाद मधुपजीक ‘गंगातरंगावली’मे रूपक, व्यञ्जना, सांगरूपक आ प्रौढ़ कल्पनाक विश्लेषण प्रस्तुत कएल गेल अछि (पृ. २०-२६)।

मधुपक पदक प्रसंगमे लेखक गंगाकेँ तस्कर, कृषक, नेना, सागरक गृहिणी आदिसँ जोड़ल काव्यकल्पनाक चर्चा करैत छथि। एहिठाम आलोचनाक केन्द्र स्पष्ट भऽ जाइत अछि—गंगाक महिमा मात्र नहि, गंगाक महिमा कहलाक काव्य-प्रविधि। उपमा, रूपक, परम्परित बिम्ब आ शास्त्रीय शब्दभण्डारक सहायता सँ साधारण विषयकेँ असाधारण काव्यानुभव बनाओल जाइत अछि। उदाहरणक पृष्ठ-सन्दर्भ दऽ शब्दचित्रक मूल्याङ्कन करब लेखकक निकटपाठीय शक्ति थिक।

इतिहासक प्रसंग आ प्रमाणक सावधानी

आलेखमे गंगाक प्रवाह सम्बन्धी औपनिवेशिक कालक एक विवादक उल्लेख सेहो अछि, जाहिमे तत्कालीन दरभंगा महाराजक प्रतिरोधक कथा ‘मिथिला मिहिर’क ८ मई १९१५ अङ्क आ योगमाया झाक ‘मैथिली साहित्यमे गंगा’क सन्दर्भसँ प्रस्तुत कएल गेल अछि (पृ. २०)। एहि सन्दर्भक उपयोगसँ गंगाक प्रति मिथिलाक भावनाकेँ राजनीतिक-सांस्कृतिक पक्ष भेटैत अछि। तथापि इतिहास-विवेचनक लेल मूल समाचार, शासकीय अभिलेख आ नदी-परियोजनाक दस्तावेजक अलग परीक्षण जरूरी अछि। प्रस्तुत ग्रन्थमे वर्णित प्रतिरोधकेँ शोधक एक सूत्र मानल जा सकैत अछि, स्वतन्त्र रूपेँ प्रमाणित सम्पूर्ण इतिहास नहि।

पर्यावरणीय प्रश्नसँ आलेखक नव अर्थ

अन्तमे लेखक आधुनिक गंगा-प्रदूषण, बान्ह-पुलसँ प्रवाहमे परिवर्तन आ सामाजिक-राजनीतिक दूषणक समानान्तर चित्र प्रस्तुत करैत नव गंगावन्दनाक आवश्यकता पूछैत छथि। एहि आत्मप्रश्नक कारणेँ आलेख ऐतिहासिक सर्वेक्षण मात्र नहि रहि वर्तमानक रचनात्मक चुनौती बनि जाइत अछि। एहि ठाम गंगाक शुचिताक रूपक सामाजिक जीवनक नैतिक प्रश्नक संग

जुड़ैत अछि। ई विचार प्रभावशाली अछि, यद्यपि जल-प्रदूषणक वैज्ञानिक स्थिति आ नैतिक ‘प्रदूषण’ अलग-अलग प्रकारक कथन छथि; दुनूकें काव्योपमा धरि सीमित राखब जरूरी अछि। समग्रतामे पहिल आलेखक उपलब्धि ई अछि जे लेखक मधुपक काव्यकें एकटा जीवन्त, दीर्घकालिक गंगाभक्ति-परम्परामे स्थापित करैत छथि। सम्भावित सीमा ई जे गंगाक सांस्कृतिक गौरवकें अनेक ठाम मूलाधार मानि लेल गेल अछि; भिन्न धार्मिक, सामाजिक वा पर्यावरणीय दृष्टिक अनुभव अपेक्षाकृत कम खुलैत अछि। तथापि अन्तिम पर्यावरणीय प्रश्न सम्पूर्ण आलेखकें विचारोत्तेजक समकालीनता प्रदान करैत अछि।

०२ | हरिमोहनझाक कथाकाव्य

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ: २७-३२

व्यंग्यक पद्यरूप आ कथात्मक अर्थ

हरिमोहन झाकें अधिकतर पाठक हास्य-व्यंग्यपूर्ण गद्यक लेखकक रूपमे चिन्हैत छथि। एहि आलेखमे योगानन्द झा हुनक कविताक कथात्मक पक्षकें केन्द्रमे आनैत छथि। ग्रन्थकार सात गोट कथाकाव्यक चर्चा कयने छथि। एहि सात रचनाक अपन-अपन सामाजिक लक्ष्य अछि, मुदा सभमे एक साझा प्रवृत्ति देखल जाइत अछि—रूढ़ि, पाखण्ड आ प्रतिष्ठाक नामपर चलैत असमानताकें हास्यक मार्फत उजागर करब (पृ. २७-३२)।

लेखकक पहिल विस्तृत उदाहरण ‘ढाला झा’ अछि। बूढ़ पञ्जीबद्ध वरक जयवार-सासुर यात्रा, वस्त्र-वेष, भाषिक दर्प, भोजनपर रोष आ विदाइक टाकाक माँगक कथासँ समाजक अनमेल विवाह, कन्याक असहायता आ विवाहक आर्थिक दुरुपयोग सोझाँ अबैत अछि। एहि कवितामे हास्यक उत्पत्ति केवल ढाला झाक विचित्र व्यवहारसँ नहि, ओकरा सम्मान दऽ रहल सामाजिक व्यवस्थाक अन्तर्विरोधसँ होइत अछि। लेखकक समीक्षामे बूढ़ वरक व्यंग्यचित्रक पाछाँ कन्यापक्षक विवशता देखाबयब विशेष अर्थपूर्ण अछि।

रूपक-भिन्नतामे एक सामाजिक लक्ष्य

‘टी-पार्टी’मे शिक्षित समुदायक विदेशी फैशनक अन्धअनुकरणपर, ‘बुचकुन बाबा’मे नारीक बदलैत स्थानपर, ‘निरसन मामा’मे खाद्य-अखाद्य आ जातिभेदपर, ‘सलगमक खण्ड’मे अन्धविश्वासपर आ ‘घूटरकका’मे शिक्षित पुतहुक प्रति पुरुषक मानसिक प्रतिरोधपर लेखक

विश्लेषण करैत छथि। ‘बुचकुन बाबाक स्वप्न’मे परिवार-नियोजनक प्रश्न सेहो उठैत अछि। एहि उदाहरणसँ स्पष्ट होइत अछि जे हरिमोहन झाक हास्य सुधारवादी नीतिसँ कटल नहि अछि; कथानक सामाजिक शिक्षाक साधन बनैत अछि।

‘निरसन मामा’क कथामे धार्मिक शुचिताक कठोर भाषण देनिहार व्यक्ति स्वयं नागरिक शिष्टाचारक नियम भंग करैत छथि; ‘सलगमक खण्ड’मे काल्पनिक अपवित्रताक भय एकटा सामान्य भोजनकें सामूहिक संकट बना दैत अछि। एहन प्रसंग सभमे व्यंग्यक तत्त्व पात्रक कहनी आ करनीक बीच दूरीसँ उपजैत अछि। लेखक एहि तत्त्वकें विवृत करैत मैथिली हास्यकें सरस मनोरञ्जनक बजाय सामाजिक आलोचनाक बौद्धिक विधान मानबाक आधार दैत छथि।

नारी-प्रश्नक सूक्ष्मतर अर्थ

‘बुचकुन बाबा’ ओ ‘घूटरकका’क पाठसँ नारी-शिक्षा, पेशागत स्वाधीनता, दहेजविहीन विवाह आ परिवारमे बदलैत शक्ति-सन्तुलनक प्रश्न उभरैत अछि। लेखक परम्परावादी पुरुषपात्रक प्रतिक्रिया परिहासपूर्वक प्रस्तुत करैत छथि। विश्लेषणक अधिक गहन स्तरपर ई प्रश्न सेहो उठैत अछि जे हास्यक लक्ष्य शिक्षित स्त्री नहि, ओकर स्वायत्ततासँ डेराइत सत्ता-मानसिकता अछि। एहि भेदकें स्पष्ट करब आधुनिक नारीवादी पाठक लेल आवश्यक होयत। ग्रन्थकारक आधार एहि अर्थकें सम्भव बनबैत अछि, मुदा ओहि दिशामे विस्तारक अवसर शेष रहि जाइत अछि।

आलोचनाक सामर्थ्य आ शिल्पगत सीमा

एहि आलेखक उत्कृष्ट पक्ष कथासारक साफ प्रस्तुति अछि। उदाहरणक बिना ‘व्यंग्यकवि’क उपाधि देनाइ सहज छल; लेखक एना नहि कऽ कथाप्रसंग, पात्रक भाषा आ सामाजिक परिवेशक सम्बन्ध स्थापित करैत छथि। मुदा सातो कथाकाव्यक मात्राभार, छन्द-विन्यास, संवादक नाटकीयता, वाचकक स्थिति आ हास्यसँ करुणा धरि भाव-परिवर्तनक अधिक तुलनात्मक विश्लेषण कएल जाइत तँ काव्यरूपक विशिष्टता आ स्पष्ट होइत।

समग्र निष्कर्ष ई नहि जे हरिमोहन झा सामाजिक त्रुटि सभक मात्र उपहास करैत छथि। हुनक कथाकाव्य रूढ़िसँ उत्पन्न मनुष्यता-विरोधी असमानताकें पहिचानयब सिखबैत अछि। एहि

आलेखमे ग्रन्थकार हुनक प्रायः गद्यकेन्द्रित परिचयकेँ पद्यक सामाजिक इतिहाससँ जोड़बाक महत्त्वपूर्ण प्रयास करैत छथि।

०३ | साधक कविः उपेन्द्रठाकुर ‘मोहन’

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठः ३३-४६

कविक जीवन आ उपलब्ध काव्यसामग्री

एहि दीर्घ आलेखमे उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क रचनाक समग्र धरातल देखाओल गेल अछि। लेखक हुनक चतरिया गाम, संस्कृत शिक्षाक पृष्ठभूमि, ‘आर्यावर्त’ आ ‘मिथिला मिहिर’सँ सम्बद्ध सम्पादकीय-कार्यक उल्लेखक संग तीन कविता-संग्रह—‘फुलडाली’ (१९४२), ‘बाजि उठल मुरली’ (१९७७) आ ‘इतिश्री’ (१९८२)—क विवरण दैत छथि। ‘बाजि उठल मुरली’ लेल १९७८ क साहित्य अकादेमी सम्मान प्राप्त होयबाक विवरण सेहो ग्रन्थमे अछि (पृ. ३३-३४)। एहि ऐतिहासिक सूचनाक उपयोग कृतिक कालक्रम बुझबाक लेल उपयुक्त अछि।

शृङ्गार, क्रान्ति आ गीतक दोसर अर्थ

‘फुलडाली’क ‘शृङ्गारकुसुम’ आ ‘क्रान्तिकुसुम’ नामक दू खण्डक उल्लेख कऽ लेखक सर्जनाक दू भावभूमि पहिचानैत छथि। शृङ्गारक आवेग आ क्रान्तिक उद्बोधन परस्पर विरोधी नहि; दुनूमे तीव्र भावनात्मक ऊर्जा अछि। मोहनक गीतमे देशोद्धार, नवजागरण, युवा-कर्तव्य आ लोककल्याणक स्वर भेटैत अछि। लेखक कविक ‘नवगछुली’ प्रतीकक चर्चा करैत नवनिर्माणकेँ प्रकृतिक जीवनशक्तिसँ जोड़ैत छथि। एहि पाठमे संगीतक लय आ सामाजिक उद्बोध एक-दोसराकेँ समर्थित करैत अछि।

मोहनजीक संस्कृताभ्यासक प्रभाव छन्द, रस, वाक्ययोजना आ परम्परित प्रतीकमे अछि; ताहि सँ ई निष्कर्ष नहि निकालल जा सकैत अछि जे हुनक कविता वर्तमानसँ विरत अछि। सामाजिक पतन, राष्ट्रक संकट, मनुष्यक नैतिक जिम्मेवारी, दीन-दुखियाक पीड़ा आ आधुनिकीकरणक विसंगति सभ पर कविक प्रतिक्रिया आलेखमे विवेचित अछि। एहि दृष्टिसँ कवि ‘साधक’ छथि—केवल आध्यात्मिक तपस्वी नहि, शब्दक अनुशासनसँ जीवनमूल्य खोजयवला रचनाकार।

छन्दनिष्ठता आ युगीन परिवर्तन

ग्रन्थकार ई तथ्य रेखाङ्कित करैत छथि जे कवि मुख्यतः गेयधर्मी रचना करैत रहलाह। मात्रावृत्त, वर्णवृत्त, यति, अन्त्यानुप्रास आ पाठ-स्वरक प्रति सजगता हुनक रचनाक स्थायी विशेषता अछि। युगक प्रभावें किछु छन्दमुक्त रचनाक उल्लेख सेहो अछि। एहिठाम एक मौलिक आलोचनात्मक प्रश्न उठैत अछि—नवीनता की केवल छन्द-त्यागसँ अबैत अछि? आलेखक आधारपर उत्तर ‘नहि’ अछि। काव्यक भाषा, प्रतीक आ सामाजिक प्रश्नमे नवता रहि सकैत अछि, भले ओकर छन्द परम्परागत हो।

काव्यव्यक्तित्वक मूल्याङ्कन

लेखक मोहनक कविताक पाठसँ शास्त्रीय संस्कार आ सुधारवादी चेतनाक साहचर्य देखबैत छथि। सामाजिक रूढ़ि, पाखण्ड आ विसंगतिक आलोचना, युवाक आह्वान आ आशामूलक वक्तव्य सभ एहि समीक्षाक महत्त्वपूर्ण पाठसाक्ष्य छथि। तखनहुँ काव्यक स्तरीयता मापबाक लेल गीतक संगीतात्मक प्रस्तुति, ध्वनि-संयोजना आ अलग-अलग कालक कवितामे शब्दविन्यासक परिवर्तनक तुलनात्मक छानबीन आर आवश्यक छल।

एहि आलेखक उपलब्धि ई अछि जे मोहनजीकेँ पुरस्कार-प्राप्त कविक सामान्य परिचय धरि सीमित नहि राखि तीन संग्रहक रचनात्मक विकासमे देखल गेल अछि। एकर अन्तर्निहित आलोचनात्मक शिक्षा ई अछि जे परम्परागत शिल्पकेँ स्वतः रूढ़िवादी आ नव छन्दकेँ स्वतः प्रगतिशील मानि लेलासँ कविता बुझल नहि जा सकैत अछि।

०४ | स्नेहलताक मिथिला-मैथिली प्रेम

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ: ४७-५३

भक्ति आ भू-सांस्कृतिक आत्मीयता

‘स्नेहलताक मिथिला-मैथिली प्रेम’ केवल भक्ति-पदक रसग्रहण नहि, मिथिलाक सांस्कृतिक भूगोलकेँ काव्यक केन्द्र बनाबयवला आलेख अछि। लेखक स्नेहलताकेँ रामभक्ति आ मधुरोपासनाक परम्परामे राखि हुनक ‘वैदेही विवाह संकीर्तन’, ‘विनय पदावली’, ‘स्नेह शतक’, ‘स्नेह वाटिका’, ‘झूला संकीर्तन’, ‘महेशवाणी संग्रह’, ‘चेतावनी संकीर्तन’ आ ‘सीतावतरण’ सन कृतिक चर्चा करैत छथि (पृ. ४७-४९)। एहिसँ लेखकक रचनात्मक विस्तार आ काव्यक धार्मिक-सामाजिक व्यवहार दुनूक परिचय भेटैत अछि।

मैथिली पदावलीमे मिथिलाक आदर्शीकरण

स्नेहलताक पदमे मिथिला जनक-जानकीक भूमि छथि। कविक दृष्टिमे एहि प्रदेशक माटि, लोकव्यवहार, ऋतु, भाषा, विवाहक स्मृति आ आत्मीय सम्बन्ध सभ पुण्यभूमिक छवि निर्मित करैत अछि। लेखक पदक उदाहरण दऽ देखबैत छथि जे मिथिलाक गौरवक गानमे केवल स्थलनाम नहि, सांस्कृतिक अनुभूति आ भाषिक निकटता उपस्थित अछि। मातृभूमिप्रेमक एहि रूपमे धार्मिक पदावली क्षेत्रीय अभिज्ञानक भाषा बनि जाइत अछि।

‘साग-पात खोंटि खोंटि दिवस गमेबड़’ सन भावयुक्त पाँतीक चर्चा विशेष अर्थवान अछि। एहिमे दैन्यक बोध रहितो जन्मभूमिक परित्याग नहि करबाक आग्रह अछि। ई सामाजिक यथार्थ आ भक्तिक आदर्शक द्वन्द्व अछि। कवि मिथिलाकेँ सर्वथा सम्पन्न बतबैत नहि छथि; ओ अभाव बीच सेहो अपन सांस्कृतिक सम्बन्ध नहि तोड़य चाहैत छथि। एहि बिन्दुपर आस्तिक आ भावनात्मक काव्य एकटा वास्तविक सामाजिक प्रश्नकेँ छुबैत अछि।

भाषा-बोध आ अन्य भाषिक प्रभाव

लेखक देखबैत छथि जे स्नेहलताक प्रेरणास्रोतमे रामभक्तिक हिन्दी परम्परा, तुलसीक काव्य आ मधुरोपासनाक विभिन्न पदावली रहितो रचनाक मूल अभिव्यक्ति मैथिलीमे अछि। स्रोतक स्वीकार आ स्वभाषाक सृजनशील रूपान्तरण बीचक ई सम्बन्ध अनुवर्तन मात्र नहि, सांस्कृतिक पुनर्रचना थिक। मैथिलीक मधुरता विषयक पदकेँ लेखक क्षेत्रीय स्वाभिमानक प्रमाण रूपमे ग्रहण करैत छथि। एहिठाम भाषा-चेतना धार्मिक श्रद्धासँ अलग नहि होइत, बल्कि ओकर अन्तरतम भाग बनि जाइत अछि।

आलोचनात्मक बहसक अवकाश

आलेखक मुख्य स्वर अनुमोदनात्मक अछि। स्नेहलताक भक्ति, मातृभाषाप्रेम आ मिथिलाक आदर्श-प्रतिमा पर लेखकक रुचि स्पष्ट अछि। मुदा मधुरोपासनाक शास्त्रीय आधार, तुलसीपरम्परासँ पदक अन्तर्पाठीय समानता, नारीपात्रक स्वर आ वास्तविक सामाजिक वर्गविन्यासक अन्तर पर विस्तारसँ बहस कएल जा सकैत छल। मिथिलाक सांस्कृतिक उत्कर्षक पद सभकेँ क्षेत्रीय आदर्शक काव्यात्मक रचना रूपमे पढ़ब उचित अछि; ओहि चित्रकेँ प्रत्येक कालक सामाजिक वस्तुस्थिति न मानब।

एहि सीमा रहितो आलेख ई स्थापित करैत अछि जे भक्ति-कविक 'मिथिला प्रेम'क अध्ययनमे भाषा मात्र माध्यम नहि, विषय सेहो अछि। कविक मातृभाषाप्रति प्रेम आ सीताभक्ति एक-दोसराकेँ प्रतिष्ठित करैत अछि।

०५ | गीतकार प्रदीपक 'स्वयंप्रभा'

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ: ५४-६२

रामकथाक अल्पपरिचित प्रसंगक चयन

एहि आलेखमे प्रभुनारायण झा 'प्रदीप'क 'स्वयंप्रभा'केँ मैथिली रामकाव्य आ पद्यकथा-विधाक विकासक सन्दर्भमे राखल गेल अछि। लेखक पहिने मैथिली रामकथाक पूर्वपरम्परा—ज्योतिरीश्वर, विद्यापति, चन्दा झा, लालदास आ विभिन्न लोकगीत—क चर्चा करैत छथि। एहि इतिहासक उद्देश्य ई देखायब अछि जे रामकथा एकहि स्थिर कृति नहि, काल-कालपर नव अर्थ प्राप्त करयवला सामूहिक सांस्कृतिक उपजीव्य छथि (पृ. ५४-५७)।

स्वयंप्रभा रामकथाक ओ पात्र छथि जिनकर प्रसंग 'अध्यात्म रामायण'क किष्किन्धाकाण्डसँ सम्बद्ध बताओल गेल अछि। सीताक खोजमे निकसल वानरदल, अन्हार गुफा, पियास, योगिनी स्वयंप्रभासँ भेंट आ ओकरा सँ प्राप्त सहायता मूल कथाक आधार अछि। प्रदीप एहि कथाक ग्रहण करैत छथि, मुदा लेखकक विश्लेषण अनुसार ओकर अन्तिम रचनात्मक उद्देश्य केवल पौराणिक कथा दोहरायब नहि अछि।

पौराणिक स्रोतमाथि आधुनिक सामाजिक प्रश्न

कथाक अभिनव मोड़ ओतए अबैत अछि जतए स्वयंप्रभाकेँ आधुनिक मिथिलाक नारी-दुर्दशा, दहेजक दानव आ वैवाहिक प्रताड़नाक विरुद्ध उज्ज्वल शक्तिक रूपमे सक्रिय बनबाक आह्वान कएल जाइत अछि। एना पौराणिक योगिनी सामाजिक प्रतिरोधक प्रतीक बनि जाइत छथि। रामकथाक पारम्परिक मर्यादा आ समकालीन स्त्री-पीड़ाक प्रश्नक ई संगति एहि कृतिक प्रमुख रचनात्मक युक्ति अछि। लेखक ई परिवर्तन देखाबय लेल मूल आख्यान आ कविक कल्पनात्मक विस्तारक तुलनात्मक विवेचन करैत छथि (पृ. ५८-६२)।

मौलिकता पर विचार करैत ई भेद जरूरी अछि जे आधारकथा पुरान होइतहुँ ओकर आधुनिक प्रसंगक विनियोग कविक विशिष्ट रचना-विधि भऽ सकैत अछि। एहि दृष्टिसँ 'स्वयंप्रभा'

अनुकरण नहि, पुनर्पाठक उदाहरण अछि। कृति सामाजिक सुधार लेल धार्मिक प्रतिष्ठाक प्रतीक अपनबैत अछि; मुदा धार्मिक अधिकारक उपयोग मानवीय समानताक पक्षमे कतेक प्रभावी होइत अछि, तकर मूल्याङ्कन पात्रक वास्तविक सक्रियतासँ करबाक चाही।

भाषा, रस आ छन्दक काज

ग्रन्थकार एहि पद्यकथाक भाषा सरल, बोधगम्य आ प्रसादगुणयुक्त मानैत छथि। तत्समक संग तद्भव-देशज शब्दक प्रयोगकेँ ओ स्वाभाविक मैथिली लेखनक प्रमाण मानैत छथि। भक्तिभाव कथाक पृष्ठभूमिमे रहितो उपदेश मात्र नहि बनैत अछि; लोकशिक्षणक भावकेँ सम्बल दैत अछि। अनेक मात्रिक छन्द आ अन्त्यानुप्रासक प्रयोगक चर्चा करैत लेखक किछु स्थलपर लयक असन्तुलन सेहो चिह्नित करैत छथि। ई सावधानी समीक्षाकेँ केवल गुणगान होयबासँ रोकेत अछि।

विधागत उपलब्धि आ शेष प्रश्न

आलेख रामकाव्यक परम्परासँ पद्यकथाक आधुनिकता धरि एकटा तुलनात्मक मार्ग प्रस्तुत करैत अछि। तथापि आधारग्रन्थक पाठ, प्रदीपक पद आ सम्भव अन्य रामकथात्मक संस्करणक पद्य-पद्य तुलनासँ नवनिर्मित अंशक सीमा अधिक स्पष्ट होइत। कथाक नारी-प्रतिनिधित्व, मिथिलाक सामाजिक यथार्थ आ प्रतीकक प्रतिरोध-क्षमता पर स्त्रीवादी अध्ययन सेहो अतिरिक्त प्रकाश दऽ सकैत अछि।

एहि आलेखक स्थायी महत्त्व पौराणिक स्रोतकेँ आधुनिक समस्या सँ जोड़बाक रचनात्मक प्रक्रियाक पहिचानमे अछि। स्वयंप्रभाक दिव्य ‘प्रभा’ एहि अर्थमे दहेजक अन्हार मेटयवला सामाजिक रूपक बनैत अछि।

०६ | डॉ. जयमन्तमिश्रक ‘कविता कुसुमाञ्जलि’

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ: ६३-७८

संस्कृत पाण्डित्य आ मातृभाषाक सृजन

लेखक एहि आलेखक आरम्भमे संस्कृत आ मैथिली साहित्यक ऐतिहासिक सहसम्बन्धक चर्चा करैत छथि। संस्कृत-पण्डित लोकनिक मैथिली लेखनपर अनेक बेर पुरातनपन्थिताक आरोप लगैत रहल अछि। लेखक एहि सामान्यीकरणकेँ चुनौती दैत जयमन्त मिश्रक सम्पादन-कार्य,

शास्त्रीय अभ्यास आ मातृभाषाक प्रति अनुरागकेँ एकहि बौद्धिक जीवनक दू रूप मानैत छथि। मिश्रजीक सम्पादित संस्कृत ग्रन्थक नाम दैत लेखक हुनक अनुसन्धानशीलताकेँ प्रमाणित करबाक प्रयत्न करैत छथि (पृ. ६३-६६)।

भक्ति-संस्कारसँ ऋतु-संवेदना धरि

‘कविता कुसुमाञ्जलि’मे सरस्वती-वन्दना, कृष्णस्तुति, शास्त्रीय बिम्ब आ रागाश्रित गीतक संग ऋतुचित्रक उल्लेख अछि। लेखक वल्लभाचार्यक मधुराष्टकक भावधाराक संग मिश्रजीक कृष्णमाधुर्यक तुलनात्मक संकेत दैत छथि। ई दृष्टि मौलिकताकेँ केवल अभूतपूर्व विषय-चयन नहि, पूर्वस्वीकृत भक्तिरसक भाषिक पुनर्सृजनमे सेहो खोजैत अछि।

छह ऋतुसँ सम्बद्ध कविताक उल्लेख मेघ, ग्रीष्म, शरद, हेमन्त, शिशिर आ वसन्तक प्रकृति-चित्रक माध्यमसँ काव्यक संवेदनात्मक विस्तार देखबैत अछि। ऋतुचित्रक बीच नागपञ्चमी, मधुश्रावणी आ मिथिलाक पर्वजीवनक संकेतक कारणेँ ऋतु सामान्य प्राकृतिक अवस्था नहि, सामाजिक समय बनि जाइत अछि। लेखक जखन शिशिरसँ दुःखी लोकपर दयाक प्रश्न उठबैत पाँतीक चर्चा करैत छथि, तखन प्रकृतिक मानवीकरणक भीतर सामाजिक करुणाक प्रवेश उद्घाटित होइत अछि (पृ. ६९-७२)।

नवता-विवादक केन्द्र

‘हम कतय नित जा रहल छी’ सन आधुनिक असमञ्जसक भावपर लेखक विशेष विचार करैत छथि। ई काव्य-व्यक्तिकेँ युगक उन्नयन, आत्मविस्मृति आ स्वार्थबोधक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि। शास्त्रीय छन्दमे रचित कविता सेहो आधुनिक संशय, समाजक विसंगति आ व्यक्ति-समष्टिक द्वन्द्वक वाहक भऽ सकैत अछि—आलेखक मूल आग्रह एतय स्पष्ट होइत अछि। एहि प्रकारेँ लेखक शिल्पक इतिहास आ विचारक इतिहासक बीच आवश्यक भेद देखबैत छथि।

आलोचनात्मक विवेचन

लेखकक पक्ष मजबूत तखन बनैत अछि जखन ओ कविताक उदाहरण सँ ‘रूढ़िवादी’ कहबाक सहज आरोपक प्रतिपरीक्षा करैत छथि। भक्ति, प्रकृति आ सामाजिक चेतनाक वैविध्य पोथीकेँ एकरेखा व्याख्यासँ बचबैत अछि। मुदा कविताक प्रकाशन-कालक्रम, संस्कृत पदानुकरणक

सीमा, छन्दविशेषक वास्तविक गणना आ ऋतुक बिम्बमे पाठान्तरक शोधक अतिरिक्त अवसर अछि। शास्त्रीय छन्दक दक्षता आ उत्कृष्ट कविता होयब एके नहि; दुनूक स्वतन्त्र कसौटी चाही। एहि आलेखक सार्थक उपलब्धि मैथिलीक शास्त्रीय संस्कारकें नवता-विरोधक पर्याय नहि मानब अछि। जयमन्त मिश्रक काव्यक अध्ययन एहि कारणें भाषा, पाण्डित्य, लोकजीवन आ समयचेतनाक साझा परिसर बनैत अछि।

०७ | कथाकार नगेन्द्र कुमरक ‘श्यामली’

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ: ७९-८९

कथा-परम्परासँ यात्रावृत्तान्तक प्रवेश

एहि आलेखक शीर्षकमे ‘कथाकार’ शब्द अछि, मुदा विवेच्य पुस्तक ‘श्यामली’कें लेखक आयरलैण्डक यात्रासँ सम्बद्ध साहित्यिक वृत्तान्त मानैत छथि। आरम्भमे मैथिली कथाक विकासयात्रा, समाजसुधारसँ यथार्थवाद धरि परिवर्तन आ हरिमोहन झाक प्रभावक चर्चा अछि। एहि व्यापक भूमिकाक उद्देश्य नगेन्द्र कुमरक साहित्यिक स्थिति निर्धारित करब अछि, यद्यपि पाठककें किछु काल धरि प्रतीक्षा करय पड़ैत अछि जे ‘श्यामली’क मूल विधागत स्वरूप की अछि (पृ. ७९-८२)।

नगेन्द्र कुमरक कथा-संग्रह ‘ससरफानी’, ‘दृष्टिकोण’, ‘शिकार’ आ ‘फलेना जामुन’क उल्लेख, आ पूर्व आलोचकक ‘मौलिक गल्पकार’ नहि मानबाक निर्णयपर योगानन्द झाक असहमति, आलेखकें एकटा आलोचना-इतिहासक बहस बनबैत अछि। लेखक प्रभाव आ अनुकरणकें एके नहि मानैत छथि। एक साहित्यकार दोसरासँ प्रेरणा ग्रहण करितहुँ अपन अनुभव, प्रस्तुति आ विषयक कारणें मौलिक भऽ सकैत अछि। ई मत युक्तिसंगत अछि; मुदा एहि निष्कर्षक अन्तिम प्रमाण प्रत्यक्ष कथा-दर-कथा तुलनासँ मजबूत होइत।

‘श्यामली’क विशिष्ट विषयविस्तार

ग्रन्थकारक अनुसार ‘श्यामली’ लेखकक इंग्लैण्ड प्रवासकालीन आयरलैण्ड भ्रमणक साहित्यिक अभिलेख अछि, जकर प्रकाशन मैथिली अकादेमी, पटना सँ १९८१ मे भेल बताओल गेल अछि। हिन्दी यात्रावृत्तान्त ‘पथचारी’सँ एकर सम्भावित सम्बन्ध लेखक अनुमानक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि; एहि अनुमानकें सिद्ध पाठसम्बन्ध नहि मानब उचित अछि। यात्रा-साहित्यक

विमर्शमे एकर सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आ शैक्षणिक विवरण—महिलाक सार्वजनिक भूमिका, आयरिश स्वाधीनताचेतना, भारतीय स्वाधीनता-आन्दोलनक संगतियाँ आ मातृभाषाक भविष्यक चिन्ता—महत्त्वपूर्ण छथि (पृ. ८३-८९)।

आयरलैण्डक अनुभवक माध्यमसँ मैथिली भाषाक भविष्यपर लेखकक मनमे प्रश्न उठैत अछि। अपन भाषा छोड़ि प्रतिष्ठाक निमित्त दोसर भाषा अपनब, साहित्यक पाठकवर्गक सीमितता आ मातृभाषा रक्षाक अनिवार्यता—ई प्रश्न यात्रा-देशसँ कटल नहि, ओहि तुलना द्वारा प्रखर होइत अछि। एक देशक अनुभव दोसर देशक भाषिक आत्मनिरीक्षणक साधन बनैत अछि। एहि कारणेँ ‘श्यामली’क विवेचन यात्रावृत्तान्तक भीतर आत्मालोचनात्मक मैथिली चेतनाक विवेचन सेहो अछि।

कथा-शैली आ वृत्तान्तक संरचना

लेखक संवादक संक्षिप्तता, सूचनाक प्रचुरता आ दृश्य-निर्माणक सामर्थ्यकेँ ‘श्यामली’क गुण मानैत छथि। कतिपय ठाम लेखकक वर्णन अत्यधिक विस्तार ग्रहण करैत अछि, मुदा ज्ञानवर्धक सूचनाक कारणेँ पाठकक रुचि टिकि रहलाक बात सेहो कहल गेल अछि। एहि मूल्याङ्कनमे सूचनात्मकता आ सौन्दर्यानुभूतिक तनाव उपस्थित अछि—यात्राक प्रमाणित विवरण साहित्यमे कतेक, आ साहित्यिक कल्पना ऐतिहासिक वृत्तान्तमे कतेक ठाम ग्रहण करय, ई प्रश्न खुलैत अछि।

सन्तुलित निर्णय

आलेखक शक्ति ई अछि जे एकटा कथाकारक परिचित छविसँ हटि ‘श्यामली’क विधागत स्वतन्त्रता रेखाङ्कित कएल गेल अछि। कमजोरी ई जे यात्रा-दैनन्दिनी, संवाद, संस्मरण आ रचनात्मक पुनर्निर्माणक परस्पर सम्बन्ध पर अधिक विशिष्ट विश्लेषण सम्भव छल। आयरलैण्डक ऐतिहासिक सूचना सभकेँ बाह्य स्रोतसँ जाँचब आ ‘पथचारी’सँ वास्तविक पाठ-समानता मिलायब भविष्यक शोधक उपयोगी दिशा होयत।

०८ | मायानन्दमिश्रक निबन्ध साहित्य

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ: ९०-१०१

कथाकारक व्यापक निबन्ध-व्यक्तित्व

मायानन्द मिश्रक परिचय प्रायः कथा-उपन्यासक रचनाकारक रूपमे भेटैत अछि; एहि आलेखमे योगानन्द झा हुनक उपेक्षित निबन्धकार स्वरूप खोजैत छथि। मायाबाबूक मैथिली उद्घोषण, सम्पादन, सार्वजनिक सांस्कृतिक जीवन आ साहित्यिक आन्दोलनक गतिविधिक संग हुनक गद्यक सम्बन्ध स्थापित कएल गेल अछि। लेखक कहैत छथि जे उपलब्ध निबन्ध भिन्न-भिन्न पत्र-पत्रिकामे विकीर्ण अछि; ओकर विषयानुसार सूची बनाय पाठककेँ एक संभावित संग्रहक संरचना देब एहि आलेखक ठोस अनुसन्धानात्मक उपलब्धि अछि (पृ. ९०-९५)।

आलोचनात्मक निबन्धक वैचारिक आग्रह

‘मैथिली गल्पक परिस्थिति ओ परिणाम’, ‘आधुनिक मैथिली काव्यक वाद-परम्परा’, ‘आधुनिक मैथिली काव्य: प्रेरक शक्ति आ प्रवृत्ति’, ‘आलोचना दायित्वक बोध’, ‘मैथिली कथाक भूमि-सन्धान’ आ विद्यापति विषयक निबन्ध पर लेखक विचार करैत छथि। मायाबाबूक आग्रह नव वस्तु, नव मानवमूल्य, नव प्रतीक आ नव अभिव्यक्ति-पद्धतिक दिशामे अछि। ‘अभिव्यंजना’ पत्रिकाक आरम्भिक सम्पादकीयसँ उद्धृत विचार लेखकक काव्यदर्शनक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज बनेत अछि।

आधुनिक मैथिली काव्यक वाद-परम्परा सम्बन्धी निबन्धमे हिन्दी आलोचनाक नामावली यान्त्रिक ढंगसँ अपनायबापर प्रश्न उठाओल गेल अछि। मायाबाबू मैथिलीक अनुभवसँ मर्यादावाद, सांस्कृतिवाद, प्रकृतिवाद आ अभिव्यंजनावाद सन कोटिक प्रस्ताव करैत छथि (पृ. ९६)। एहि वर्गीकरणक बौद्धिक महत्त्व ई अछि जे साहित्यक इतिहास अपन अनुभव पर आधारित अवधारणा सँ लिखल जाय। किन्तु चारू कोटिक अन्तःसीमा, ऐतिहासिक उपयोगिता आ रचनाकारक समूहीकरणक प्रत्यक्ष परीक्षण बिना ओकरा पूर्ण सिद्ध वर्गीकरण मानल उचित नहि होयत।

संस्मरण आ आन्दोलनक गद्य

लेखक साहित्यिक आलोचनासँ आगू बढ़ि मायाबाबूक संस्मरणपरक, आन्दोलनपरक, भूमिका-लेखनपरक आ शुभांशसात्मक गद्यक विवेचन करैत छथि। ‘हमर मंच यात्रा’मे साहित्यिक मंच, नौकरी, सार्वजनिक जीवन आ लेखकक आत्मकथा-भावक मेल अछि। ‘मैथिली संघर्ष अभियान’ सम्बन्धी आलेखमे भाषा-आन्दोलनक सहभागी दृष्टि भेटैत अछि। ‘पुस्तकालय आन्दोलन’मे समारोहक खर्चकेँ पुस्तकालय आ प्रकाशन-संरचना दिस लगयबाक व्यावहारिक

प्रस्ताव अछि। एहि रचना सभमे निबन्ध सौन्दर्यक वस्तु मात्र नहि, भाषिक सार्वजनिक क्षेत्रक कार्यमूलक साधन अछि (पृ. ९८-१००)।

मिथिलाक राजनीतिक व्यक्तित्वक स्मरणपरक निबन्धमे लेखक भाषाक आलङ्कारिक बिम्ब, गतिशील वाक्य आ ऐतिहासिक व्यक्तिक स्तवनक चर्चा करैत छथि। एतय समालोचकक कर्तव्य स्तुति आ प्रामाणिक इतिहासक भेद रेखाङ्कित करब सेहो अछि। योगानन्द झा रसात्मक भाषाशैलीकेँ उचित स्थान दैत छथि, मुदा व्यक्तिक मूल्याङ्कनमे आलोचनात्मक दूरीक प्रश्न बाँचल रहैत अछि।

निबन्धक सन्दर्भ, पत्रिका, वर्ष आ पृष्ठक सहित तैयार सूची भविष्यमे पाठ-सम्पादनक आधार बनि सकैत अछि। एहि आलेखमे लेखक स्वयं मायाबाबूक बिखरल निबन्धक समग्र संकलनक माँग करैत छथि। ई माँग शोधपरक रूपेँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि: मूल निबन्ध उपलब्ध नहि रहने कथाकारक विचार-विकासक इतिहास अपूर्ण रहत।

आलेखक शक्ति विवेच्य विधाकेँ ‘गौण’ मानि उपेक्षित नहि करब आ लेखकक बौद्धिक-सामाजिक गतिविधिक संग जोडब अछि। सीमा ई जे प्रायः अनुमोदनात्मक वाक्यक बीच निबन्धक तर्कक त्रुटि, आन्तरिक विरोध, पुनरावृत्ति आ भाषिक परिवर्तनक अधिक पाठालोचनात्मक चर्चा चाही। तथापि ई आलेख मैथिली निबन्धक सामग्री-संग्रह आ वर्गीकरणक ठोस आरम्भ मानल जा सकैत अछि।

०९ | विदितजीक ‘ग्राम-गणराज्य’मे समाज-दर्शन

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ: १०२-१३६

यथार्थवाद आ आदर्शवादक बीच उपन्यासक स्थान

‘ग्राम-गणराज्य’ सम्बन्धी आलेख संग्रहक गद्य-विभागमे सभसँ विस्तृत अछि। लेखक पहिने यथार्थवादक नग्न सामाजिक अवलोकन आ आदर्शवादक नैतिक आकांक्षाक भेद स्थापित करैत छथि। विद्यानाथ झा ‘विदित’क उपन्यासकेँ एहने एक कृतिमे राखल गेल अछि जाहिमे मिथिलाक त्रुटि सभ निस्सङ्कोच सोझाँ अनल गेल अछि, मुदा कथा अन्ततः लोककल्याणक सम्भावना खोजैत अछि। समीक्षकक अनुसार ‘ग्राम-गणराज्य’ विदितजीक पन्द्रहम उपन्यास

अछि आ जनवरी २०१३ मे प्रकाशित भेल; हुनक उपन्यास-लेखनक पूर्ववृत्त सेहो प्रस्तुत अछि (पृ. १०२-१०४)।

सत्रह 'उल्लास'क रचनात्मक संयोजना

उपन्यासक सत्रह खण्डकें 'उल्लास' कहल गेल अछि। प्रारम्भिक तीन उल्लास मूल कथानक आ यात्राक आधारभूमि तैयार करैत अछि; आगूक प्रसंग सभमे विभिन्न जीवात्मा मिथिलाक समाज देखैत-भोगैत छथि; अन्तिम सत्रहम उल्लास अनुभवक समन्वय दिस अबैत अछि (पृ. १०४-१०७)। लेखक एहि वृहदाकार संरचनाक क्रमशः विश्लेषण करैत छथि। एतए प्रत्येक उल्लास स्वतन्त्र घटना, सामाजिक केस-स्टडी आ समग्र मिथिलाक चित्रक एक अंश बनैत अछि।

समाजक आत्मालोचनाक लेल बाहरी दृष्टिक उपयोग एहि उपन्यासक महत्त्वपूर्ण शिल्प होइत अछि। अरुणाचल, किन्नौर, केरल, पंजाब, कश्मीर, बंगाल आ अन्य प्रदेशक सम्बद्ध जीवात्माक अनुभवक माध्यमसँ मिथिलाक लोकजीवनकें आन प्रदेशक अनुभवसँ नपल जाइत अछि। एहि पद्धतिमे यात्रा आ संवाद सामाजिक रोगक सूची बनयबाक उपकरण बनैत अछि। मुदा बहुधा कथानक-गतिशीलतासँ बेसी विचारक प्रतिपादन प्रधान भऽ जायत तँ उपन्यास निबन्धात्मक होयबाक जोखिममे पड़ैत अछि; एहिठाम साहित्यिक शिल्प आ समाजोपदेशक बीच तनाव आलोचनाक प्रमुख प्रश्न थिक।

नारी, परिवार आ सामाजिक प्रतिरोध

चतुर्थ उल्लास सम्बन्धी विश्लेषणमे रूसल स्त्रीलोकनिक लेल शरण, संवाद आ पुनर्मिलनक व्यवस्था बनबैत महिलाक कथा अछि। एहि चित्रक माध्यमसँ उपन्यास पारिवारिक क्रोध, अपमान आ आत्मघाती आवेशकें सामूहिक समाधानक विषय बनबैत अछि। पञ्चम उल्लासमे विवाह-व्यवस्था आ दहेजसँ उत्पन्न विसंगति पर चर्चा अछि। स्त्रीक मान-सम्मानकें घरक मर्यादाक सीमामे नहि, सामाजिक न्याय आ स्वाधीन जीवनक मूल्यक रूपमे पढ़ब एहि प्रसंगक महत्त्वपूर्ण सम्भावना अछि।

कथाक किछु उदाहरणमे शिक्षित अथवा सक्रिय महिलाक प्रशंसा उपस्थित अछि। तथापि नारीक प्रश्नकें केवल परिवारमे सामंजस्य पुनर्स्थापना धरि सीमित करब पर्याप्त नहि।

सामाजिक सुरक्षा, निर्णय-स्वाधीनता आ अर्थसत्ता परोक्ष रूपेँ उठैत अछि; एहि तीनूकेँ बड़ विस्तारसँ जाँचल जाय तँ उपन्यासक समाज-दर्शनक सीमा आ उपलब्धि अधिक स्पष्ट होयत।

‘बुड़बक होटल’: व्यवसाय, विज्ञापन आ विडम्बना

छठम उल्लासमे वैकुण्ठक ‘बुड़बक होटल’क कथा विशेष मार्मिक व्यंग्यरूपक बनैत अछि। चालकक रूपमे बितल समय, प्रसिद्ध नर्तकी मल्लिकासँ भेट, व्यवसाय आरम्भ, होटल नामकरण, बढ़ैत प्रतियोगिता, बेटासभक होटल-बँटवारा आ विज्ञापनसँ ग्राहक आकर्षित करबाक उपाय सभ आर्थिक जीवनक बदलैत रूप प्रस्तुत करैत अछि। लेखक पृष्ठ ११४–११८क आसपास एहि कथाकेँ मिथिलामे उद्यमिता, व्यापारक चतुरता, पूँजी-निवेश आ प्रचारक प्रभावक प्रसंगमे परखैत छथि।

‘बुड़बक’ शब्दक अपमानसूचक अर्थक व्यवसायिक ब्राण्ड बनि जायब ई सामाजिक भाषाविज्ञानक दृष्टिसँ सेहो रोचक अछि। हास्यप्रद नामकेँ बाजार मूल्य प्राप्त होइत अछि। एहि कथा पर अधिक विश्लेषणसँ श्रमक मूल्य, रोजगारक अनौपचारिकता आ विज्ञापन-समाजक बदलैत नीतिक प्रश्न उठि सकैत अछि।

पलायन, उपभोक्तावाद आ साम्प्रदायिकता

आगूक उल्लास सभमे प्रवासी मजदूरक शोषण, मिथिलासँ युवाक पलायन, धार्मिक आडम्बर, प्रशासनिक अनाचार, उपभोक्तावादी जीवन, पारिवारिक स्वार्थ, जातीय विभाजन आ राजनीतिक लोभ चित्रित अछि। लेखक प्रसंगानुसार मिथिलाक प्राचीन विद्या-परम्परा, उदयनाचार्य, कुमारिल भट्ट, वाचस्पति मिश्र आ जनक-सीताक स्मृतिक उपयोग द्वारा अतीतक समालोचनात्मक स्मरण करैत छथि। ई स्मरण वर्तमानक दोष देखयबाक नैतिक कसौटीक रूपमे अबैत अछि, मुदा ईहो ध्यान देबाक अछि जे अतीतक गौरवक सूची वर्तमानक समस्याक व्यावहारिक समाधानक स्थान नहि लऽ सकैत अछि।

उपन्यासमे श्रमक प्रतिष्ठा एक महत्त्वपूर्ण सूत्र अछि। सीताक प्राप्तिक जनक-प्रसंगकेँ लेखक कृषि-श्रमक नैतिक महत्त्वसँ जोड़ैत छथि। एकर माध्यमसँ ‘मिथिला केओक कृपापर नहि, अपन श्रमपर ठाढ़ हो’ सन आशय प्रकट होइत अछि। सामूहिक प्रगति लेल स्वार्थ, जड़ता, झूठ प्रतिष्ठा आ निःक्रियता छोड़बाक आवश्यकता कथाक अलग-अलग प्रसंगमे रेखाङ्कित होइत अछि।

मातृभाषा आ ग्राम-गणराज्यक आदर्श

समापन दिशामे जाति, धर्म, वर्ण, ईर्ष्या, मिथ्याभिमान, ठकैती, अपव्यय आ संवेदनहीनतासँ मिथिलाक भविष्यक बन्धनक चित्र प्रस्तुत अछि। लेखकक निष्कर्ष अनुसार मैथिली भाषा-साहित्यक समुन्नयन आ सामाजिक समरसता ग्रन्थक समाधानमूलक क्षितिज पर अवस्थित अछि (पृ. १३२-१३६)। ई उपन्यासक बहु-प्रसंगीय संसारकें एक सांस्कृतिक-नैतिक प्रस्तावमे बाँधैत अछि।

एहिठाम एक आलोचनात्मक प्रश्न आवश्यक अछि—केवल मातृभाषाक उन्नयनसँ सामाजिक-आर्थिक अन्याय मेटत की? भाषा सामूहिक आत्मसम्मान आ संवादक आधार जरूर थिक, मुदा भूमि, रोजगार, शिक्षा, जातिगत सत्ता आ सरकारी जवाबदेहीक समस्याक अपन संस्थागत पक्ष अछि। उपन्यासमे भाषाप्रेमकें राजनीतिक-अर्थिक कार्यक्रमक संग कतेक सघनता सँ जोड़, ताहि बातपर विमर्शक आवश्यकता अछि।

दीर्घ आलेखक मूल्याङ्कन

लेखक प्रत्येक उल्लासक कथासार विस्तारसँ प्रस्तुत करैत छथि; एहि कारणेँ मूल उपन्यास नहि पढ़निहार पाठककें सामाजिक प्रसंगक व्यापक परिचय भेटैत अछि। ई आलेखक उपयोगी पक्ष अछि। मुदा कथा-विवरणक विस्तार कतिपय ठाम आलोचनात्मक तर्ककें पाछाँ धकेलैत अछि। औपन्यासिक समय, कथावाचक, चरित्रनिर्माण, संवादक स्वाभाविकता, भाषाक विविध स्तर, अन्तिम आदर्शक साहित्यिक विश्वसनीयता आ उपन्यासक लम्बाइ-सम्बन्धी शिल्पगत अनुशासनपर स्वतंत्र विमर्श कएल जाय तँ समीक्षा अधिक विश्लेषणात्मक भऽ सकैत छल। तथापि एहि आलेखकें मिथिलाक आत्मालोचनाक महत्वपूर्ण पाठ मानल जा सकैत अछि। ग्रन्थकार ‘ग्राम-गणराज्य’कें मिथिलाक लोकसमाजक नैतिक एक्स-रे जकाँ पढ़ैत छथि; अपन क्षेत्रक प्रति अनुरागक अर्थ ओकर दोष सभ पर मौन रहब नहि—ई एहि अध्ययनक सभसँ महत्वपूर्ण शिक्षा अछि।

१० | आचार्य ‘सुमन’क दैनिक ‘स्वदेश’

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ: १३७-१४७

मैथिली दैनिकक इतिहासक एक महत्वपूर्ण प्रसंग

एहि आलेखमे योगानन्द झा साहित्यकारक मूल्याङ्कनसँ पत्रकारिताक संस्थागत इतिहास दिस प्रवेश करैत छथि। मैथिलीमे दैनिक समाचारपत्रक दुर्लभ परम्पराक विवेचन करैत ओ आचार्य सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क ‘स्वदेश’कें मातृभाषाक सार्वजनिक सम्भावनाक साहसिक प्रयोग मानैत छथि। समकालीन मैथिली दैनिकक स्थितिपर ग्रन्थकारक टिप्पणी मूल आलेखक लेखनकालसँ सम्बन्धित अछि; ओकरा २०२६ क वर्तमान समाचारपत्रक पूर्ण सूची मानल नहि जा सकैत अछि (पृ. १३७)।

पहिल प्रयोग: भाषा-चेतना आ लोकसमाचार

ग्रन्थमे १९५५ क ‘स्वदेश’क अङ्क, सम्पादकीय, कविता, स्थानीय सूचना आ व्यंग्य-स्तम्भक उदाहरण देल गेल अछि। पहिल प्रयोगक स्थगन २७ दिसम्बर १९५५ सँ भेल बताओल गेल अछि। पत्रमे दरभंगा बाजारभाव, रेलक समय, खेलक समाचार, चलचित्रसमाचार, साहित्यिक टिप्पणी आ जनोपयोगी सूचना छपबाक विवरण पढ़ि स्पष्ट होइत अछि जे ‘स्वदेश’ केवल साहित्य-पत्र नहि छल; ओ मैथिलीमे नागरिक जीवनक सम्पूर्ण सूचना-विनिमयक प्रयोग छल (पृ. १३८-१४१)।

एहि पत्रक व्यंग्यलेखन विशेष उल्लेखनीय अछि। ग्राम्य बोली, कहबी, लोकसुलभ वाक्यगति आ परिहासपूर्ण पात्रक माध्यमसँ पत्र मैथिलीक ‘अखबारी’ सम्भावना विकसित करैत छल। लेखक ठीक देखैत छथि जे भाषा-मानकीकरणक अर्थ केवल संस्कृतनिष्ठ सम्पादकीय नहि; लोकक बोलीकें सम्मानपूर्वक सार्वजनिक मुद्रित रूप देब सेहो अछि। एना लोकभाषा आ जनपत्रकारिता परस्पर एक-दोसराकें विकसित करैत छथि।

दोसर प्रयोग: आर्थिक आधारक प्रश्न

आलेखक परवर्ती भागमे ‘स्वदेश’क पुनर्प्रयासक विवेचन अछि। ‘स्वदेश गोष्ठी’क उद्यम, सम्पादकीय सहयोगक माँग, पत्रक आकार आ नियमिततापर आर्थिक बाधाक प्रभाव, मुद्रण-व्यवस्था, कामगार आ वितरण-संरचनाक कठिनता सभक उल्लेख अछि। किछु अंकमे सम्पादकीयक अभाव आ अनियमितता देखाबैत लेखक केवल भावनात्मक महत्त्व नहि, संस्थागत दुर्बलताक कारण सेहो देखबैत छथि (पृ. १४२-१४७)।

पत्रक लोकमत, स्थानीय, विश्वमंच, व्यंग्य, विचार-चर्चा आदिक स्तम्भ समाचारपत्रक बहुस्तरीय रूप बनबैत छल। चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क व्यंग्य-स्तम्भक विविध शीर्षक आ मैथिली लेखकसभक रचनाक चर्चा पत्रकेँ एक साझा बौद्धिक चौक बनबैत अछि। पत्रमे छपल विभिन्न लेखकक प्रथम अथवा पूर्वप्रकाशित सामग्रीक उल्लेख भविष्यक साहित्येतिहासक लेल महत्वपूर्ण सन्दर्भ अछि, मुदा ओकर कालक्रमक अन्तिम स्थापना मूल अंकसभकेँ मिलाय कऽ करबाक चाही।

शोधपद्धतिक उपलब्धि

आलेखक विशिष्टता पृष्ठ-सामग्रीक विवरण सँ पत्रक भाषिक आ सार्वजनिक कार्यक्षेत्रक पुनर्निर्माणमे अछि। ‘दैनिक’ शब्दक अर्थ केवल रोज छपब नहि, रोजक सामाजिक चेतनाकेँ मातृभाषामे उपस्थित करब मानल गेल अछि। लेखकक दृष्टिमे ‘स्वदेश’ अपन विरासत छोड़ि गेल, मुदा आर्थिक संस्थाक अभाव ओकर स्थायित्व रोकलक। ई निष्कर्ष साहित्यिक श्रम आ पत्रकारीय संरचनाक बीचक अन्तर याद करबैत अछि।

अधिक अनुसन्धानक लेल सभ उपलब्ध अंकक अनुक्रमणिका, प्रकाशनक तारीख, वितरण-क्षेत्र, संपादकीय जिम्मेवारी, पाठकीय पत्र, विज्ञापन आ लेखकीय मानदेयक व्यवस्थित सूची आवश्यक होयत। एहि विवरण बिना पत्रक सामाजिक पहुँच सम्बन्धी अनुमान सावधानीपूर्वक करबाक चाही। ताहिओ ‘स्वदेश’ सम्बन्धी आलेख मैथिली सार्वजनिक पत्रकारिता-अनुसन्धानक एक महत्वपूर्ण परिचयात्मक-समीक्षात्मक स्रोत अछि।

११ | मैथिलीक भाषातात्त्विक अध्ययन आ सुभद्र झा

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ: १४८-१५४

स्वभाषाक संरचनागत स्वतन्त्रताक प्रश्न

एहि आलेखक केन्द्र डॉ. सुभद्र झाक भाषावैज्ञानिक कार्य अछि, विशेषतः ‘The Formation of the Maithili Language’। लेखक मैथिलीकेँ केवल भावनात्मक आत्मपरिचयक आधारपर नहि, ध्वनि, रूप, शब्द, व्याकरणिक कोटि आ भाषा-सम्बन्धक ठोस विश्लेषणपर स्वतन्त्र भाषा सिद्ध करबाक बौद्धिक प्रयत्नक रूपमे एहि ग्रन्थकेँ राखैत छथि। सुभद्र झाक समयक भाषावर्गीकरण

सम्बन्धी तर्क आ अंग्रेजीमे प्रस्तुत हुनक मतक उल्लेख लेखकक पक्षक आधार अछि (पृ. १४८–१५०)।

भाषा-परिवार आ तुलना

ग्रन्थकारक अनुसार सुभद्र झा मैथिलीक भौगोलिक विस्तार, उपभाषा, प्रारम्भिक अभिलेख, लिपि, भाषिक विकास आ भोजपुरी, मगही, बंगला, असमी, उड़िया, नेपाली आदि संग तुलना करैत छथि। एहि तुलनाक मूल प्रश्न अछि—कुन गुण साझा ऐतिहासिक स्रोतक देन अछि आ कुन गुण मैथिलीक विशिष्ट व्याकरणिक संगठन देखबैत अछि? भाषाविज्ञानमे राजनीतिक नामकरण आ संरचनागत वर्गीकरण अलग तर्क-पद्धति अछि; लेखकक उद्धृत विचार एहिँ महत्त्वपूर्ण अछि जे मैथिलीक स्वतन्त्रता भाषिक रूपरचना सँ प्रतिपादित कएल गेल अछि।

मुदा इतिहासक भाषावर्गीकरण समयक संग बदलैत रहल अछि; ताहि कारणेँ पुरान वर्गीकरणकेँ आधुनिक भाषाविज्ञानक अन्तिम सर्वसम्मति मानल नहि जा सकैत अछि। एहि आलेखक योगदान सुभद्र झाक तर्कक प्रतिपादन आ मूल्याङ्कनमे अछि, न कि प्रत्येक ऐतिहासिक वर्गीकरणक आजुक स्थिति घोषित करबामे।

शब्दरचना आ प्रत्ययक प्रश्न

लेखक सुभद्र झाक शब्दरचनात्मक उदाहरण विशेष रुचिसँ दैत छथि। ‘ठी’, ‘औटी’, ‘औरी’ सन शब्दान्तक ऐतिहासिक विकास, कथित मूल काष्ठ, पट्टिका, वटिका आदिक संग तुलना आ ‘बे-’, ‘बद-’, ‘हेड-’ सन उपसर्गक प्रवेश भाषिक सम्पर्कक उदाहरण रूपमे प्रस्तुत अछि (पृ. १५०–१५१)। एतय दू स्तर अलग राखब जरूरी अछि—मैथिलीमे रूप सभक वर्तमान प्रयोग प्रत्यक्ष भाषिक तथ्य थिक; ओकर प्राचीन व्युत्पत्ति अलग ऐतिहासिक परिकल्पना अछि, जकर समर्थन लेल ध्वनिपरिवर्तन आ प्राचीन पाठसाक्ष्य चाही।

सुभद्र झा द्वारा संज्ञाक लघु, गुरु आ गुरुतम रूपक चर्चा मैथिलीक रूपात्मक समृद्धि देखबैत अछि। एहि रूप सभक प्रयोग प्रसंग, सम्मान, आकार, सामीप्य आ बोलीभेदसँ प्रभावित होइत अछि; एकटा रूपक समस्त शब्दपर अनिवार्य विस्तार मानब ठीक नहि। लेखक सुभद्र झाक सावधानीकेँ उल्लेख करैत छथि। एहि अध्यायमे व्याकरणक उदाहरण केवल पदवर्गक सूची नहि, मैथिली समाजक भाषिक जीवनक प्रमाण बनैत अछि।

‘संस्कृतक साँच’क आलोचना

आलेखक उत्तरभागमे मैथिलीक व्याकरणकेँ संस्कृत वा हिन्दी व्याकरणक ढाँचामे जबरदस्ती ढारबाक आलोचना अछि। भाषा-विवेचनक मूल आधार भाषाक वास्तविक प्रयोग होयबाक चाही, पूर्वनिर्धारित शास्त्रीय कोटि नहि—ई एहि खण्डक प्रभावशाली निष्कर्ष अछि। एहि विचारक समकालीन प्रासङ्गिकता उच्च अछि, कारण भाषा-शिक्षण, कोश-निर्माण, वर्तनी-निर्देशन आ संगणकीय भाषासंसाधन सभमे स्रोत-भाषाक विशिष्ट व्यवहार सुरक्षित रखब आवश्यक अछि।

समीक्षा आ भविष्यक दिशा

एहि आलेखमे लेखक भाषाशास्त्रीय स्वाधीनता आ सांस्कृतिक आत्मसम्मानक सम्बन्ध प्रकट करैत छथि। समीक्षाक सीमा ई जे तुलनात्मक ध्वनितालिका, क्रियारूपक पूर्ण प्रतिमान, क्षेत्रीय उपभाषाक वास्तविक आँकड़ा आ व्युत्पत्तिक प्रतिस्पर्धी मतक विस्तारसँ परीक्षण एहि संक्षिप्त आलेखमे सम्भव नहि भेल अछि। ताहि कारणेँ ई लेख सुभद्र झाक योगदानक प्रमाणयुक्त परिचय मानल जायत, हुनक सम्पूर्ण भाषाविज्ञानक आधुनिक पुनर्मूल्याङ्कन नहि।

एहिमे उठाओल मूल पद्धतिगत आग्रह स्थायी अछि: मैथिलीकेँ ओकरे वास्तविक ध्वनि, रूप, वाक्य आ सामाजिक व्यवहारक आधारपर बुझल जाय।

१२ | मैथिली साहित्यक विकासमे जयकान्त मिश्रक योगदान

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ: १५५–१६६

साहित्येतिहाससँ सक्रिय भाषा-आन्दोलन धरि

डॉ. जयकान्त मिश्र सम्बन्धी आलेख साहित्येतिहास, अनुसन्धान आ सार्वजनिक आन्दोलनक सम्मिलित अध्ययन अछि। लेखक हुनक शिक्षाजीवन, विश्वविद्यालयीय अनुसन्धान, मैथिली साहित्यक इतिहास लिखबाक प्रयत्न आ साहित्यिक संस्थासँ सम्बन्धक विवरण दैत छथि। अंग्रेजीमे रचित ‘A History of Maithili Literature’क महत्त्व एहि दृष्टिसँ विश्लेषित अछि जे मैथिली साहित्यक प्राचीनता, सातत्य आ व्यापकता बाहरी विद्वत् जगत धरि पहुँचबाक माध्यम भेटल (पृ. १५५–१६०)।

स्रोत-संग्रह आ इतिहास-लेखनक व्यावहारिक श्रम

एहि आलेखमे साहित्येतिहासकें कवि-नामक सूची नहि, अभिलेख खोजब, पाठ चिन्हब, कालक्रम निर्धारित करब, भाषाक बदलाव बुझब आ साहित्यक धारा वर्गीकृत करबाक सामूहिक बौद्धिक श्रम मानल गेल अछि। लेखक पूर्ववर्ती साहित्येतिहासक प्रयासक उल्लेख करैत जयकान्त मिश्रक ग्रन्थकें अधिक समेकित, तुलनात्मक आ सन्दर्भयुक्त मानैत छथि। एहि निर्णयकें सावधानीसँ पढ़ब चाही: ग्रन्थकारक मूल्याङ्कनमे ओकर स्थान अत्यन्त उन्नत अछि, मुदा सम्पूर्ण साहित्येतिहासक तुलनात्मक परीक्षण अलग विस्तृत कार्य थिक।

जयकान्त मिश्रक साहित्येतिहासमे अंग्रेजी माध्यमक उपयोग सम्बन्धी लेखकक चर्चा सांस्कृतिक राजनीति सँ जुड़ैत अछि। अन्तरराष्ट्रीय शैक्षणिक संवादमे अंग्रेजीक माध्यम मैथिलीक परिचय बढ़ा सकैत अछि, मुदा मातृभाषामे वैचारिक शब्दावलीक विकास सेहो अनिवार्य अछि। एहि द्वन्द्वमे भाषाबोधक द्विस्तरीय रणनीति उभरैत अछि—बाह्य पाठक धरि पहुँचब आ आन्तरिक पाठक-संस्कृति बनायब।

भारतीय भाषिक संस्थामे मैथिलीक स्थान

लेखक भारतीय साहित्यिक संस्थामे मैथिलीक प्रतिष्ठाक लेल जयकान्त मिश्रक पत्राचार, दलील आ सार्वजनिक उद्यमक विशेष महत्त्व बतबैत छथि। १९६५ मे साहित्य अकादेमी द्वारा मैथिली मान्यता सम्बन्धी प्रसंगक उल्लेख आ जवाहरलाल नेहरूक मत सम्बन्धी उद्धरण ग्रन्थक भीतर उपस्थित अछि (पृ. १६३-१६५)। ई प्रसंग मैथिलीक संस्थागत इतिहासक महत्त्वपूर्ण सूत्र अछि; तथापि शासकीय निर्णयक पूर्ण इतिहास स्थापित करबाक लेल साहित्य अकादेमीक मूल अभिलेख, पत्राचार आ सम्बद्ध अन्य कार्यकर्ताक योगदानक स्वतन्त्र जाँच अपेक्षित अछि। लेखक स्वयं एक सामूहिक आन्दोलनक श्रेयकें व्यक्ति-विशेषमे सीमित करबाक प्रश्न उठबैत छथि; ई पद्धतिगत सावधानी स्वागतयोग्य अछि।

शिक्षण, सामाजिक पहल आ भाषिक सम्मान

आलेखमे प्राथमिक शिक्षामे मैथिलीक उपयोग, मैथिली महिला विद्यापीठ, आकाशवाणी केन्द्र आ भाषिक आन्दोलनक विविध प्रसंगक उल्लेख अछि। एहिसँ जयकान्त मिश्रक व्यक्तित्व पुस्तकालयमे स्थित अनुसन्धानकर्तासँ बहिर्गत सामाजिक कार्यकर्ता रूपमे प्रकट होइत अछि। मातृभाषाक गौरवक वास्तविक अर्थ ओकर शिक्षण, प्रकाशन, संचार आ प्रशासनिक जीवनमे उपस्थिति अछि—ई सन्देश आलेखमे बारम्बार प्रकट होइत अछि।

आलोचनात्मक संतुलन

एहि आलेखक महत्त्व एकटा बौद्धिक जीवनीकेँ संस्थागत इतिहासक प्रश्नसँ जोड़ब अछि। मुदा व्यक्तिक साधना, आन्दोलनक सामूहिक सफलता आ राज्यक निर्णयक कारणक बीच प्रमाणक स्तर अलग-अलगरूपेँ राखब आवश्यक अछि। लेखकक प्रशंसात्मक उत्साह अनेक ठाम न्यायसंगत उपलब्धिपर आधारित छनि, मुदा विरोधी मत, समयक अन्य प्रमुख अभियानकर्ता आ संस्थागत दस्तावेजक पुनर्समीक्षा सँ लेख अधिक बहुकोणीय बनत।

ताहिओ जयकान्त मिश्रक मूल्याङ्कन एहि बातकेँ स्पष्ट करैत अछि जे मैथिली साहित्यक आधुनिक विकास केवल कृति रचबाक इतिहास नहि, अपन भाषा लेल ज्ञान-व्यवस्था आ सार्वजनिक मान्यता अर्जित करबाक इतिहास सेहो अछि।

१३ | सजीवनी समालोचना: रामदेव झा

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ: १६७–२०८

समालोचनाक एक विशिष्ट रूपक अवधारणा

ग्रन्थक सभसँ विस्तृत आलेख ‘सजीवनी समालोचना: रामदेव झा’ अछि। डॉ. रामदेव झाक व्यक्तित्वक परिचय, साहित्यिक कृतित्व, पुरान मैथिली पाठक खोज आ सम्पादन, शास्त्रीय विवेचन तथा लेखक-केन्द्रित अनुसन्धानी समालोचनाक व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत अछि।

ग्रन्थकार समालोचनाक एहन पद्धति पहिचानैत छथि जाहिमे रचनाकारक जीवन, समकालीन परिवेश, अभिलेख, उपलब्ध पाण्डुलिपि, कृतिसूची आ कृतिक सौन्दर्य—सभ एक-दोसराकेँ आलोकित करैत अछि। ‘सजीवनी’क अर्थ केवल जीवनकथा नहि; पाठक व्याख्याकेँ जीवन-सन्दर्भ दऽ सजीव बनायब अछि (पृ. १६७–१६९)।

डॉ. रामदेव झाक निधन १८ मार्च २०२१ केँ भेल, आ पोथीक समर्पण हुनक स्मृतिमे अछि।

ग्रन्थकारक व्यक्तिगत कृतज्ञता एहि आलेखक स्वरतन्तुमे विद्यमान अछि; एहि कारणेँ कृतित्वक मूल्याङ्कनमे आत्मीयताक स्पष्ट अंश अछि। ई आत्मीयता अनुसन्धानी जानकारीक स्रोत सेहो बनि सकैत अछि, मुदा आलोचनात्मक निर्णय लेल ओहिसँ दूरी सेहो आवश्यक अछि।

पुराना पाठक पुनराविष्कार आ सम्पादन

लेखक रामदेव झाक 'नन्दीपति गीतिमाला', 'रामविजय नाट', 'हरगौरी विवाह', 'कुञ्जविहार', 'दशावतार नृत्यम्', 'षोडशगीतम्', 'मुदित कुवलयाम्' आदि पुरान गीत-नाट्य सामग्रीक सम्पादन-प्रकाशनक वर्णन करैत छथि। एहि कार्यक ऐतिहासिक उपयोगिता गहन अछि: उपलब्ध पाठक स्वच्छ प्रतिलिपि बनायब, रचनाकार निर्धारित करब, पाण्डुलिपिक सम्बन्ध पहचानब आ नाट्य-परम्पराक वास्तविक रूप समझब साहित्येतिहासक आधारशिला छथि। केवल आलोचनाक सामान्य निष्कर्ष नहि, मूलसामग्रीक खोज स्वयं ज्ञानक विस्तार अछि।

शंकरदेव आ असम-मिथिला सम्बन्ध

असमक शंकरदेव सम्बन्धी विवेचनमे रामदेव झाक 'रामविजय'क भूमिकामे कृत व्याख्याक समीक्षा अछि। वैष्णव धार्मिक आन्दोलन, अंकीय नाटक, मैथिलीमिश्रित भाषिक प्रयोग आ मिथिलाक नाट्यपरम्परासँ असमक सम्बन्ध पर विचार कएल गेल अछि (पृ. १७०-१७२)। एहि सम्बन्धक अध्ययन साहित्यक सीमापार संचरणक प्रश्न उठबैत अछि। भाषा-रूपक मिश्रणकें 'अशुद्धता' नहि, ऐतिहासिक रचनात्मक सम्पर्कक संकेतक रूपमे पढ़ब आवश्यक अछि।

तथापि असमिया, ब्रजबुलि आ मैथिलीमिश्रित नाट्यभाषाक परस्पर वर्गीकरण जटिल ऐतिहासिक समस्या अछि। एहिठाम पुरान पाठ, स्थानीय परम्परा आ आधुनिक भाषावैज्ञानिक मतकें अलग-अलग जाँचल जाय तँ दावा अधिक प्रमाणवान भऽ सकैत अछि। ग्रन्थकारक विवेचन एहि अध्ययनक उपयोगी प्रवेशद्वार अछि।

जगज्ज्योतिमल्लक कृतित्व आ लेखकीयता

जगज्ज्योतिमल्लक नाट्य-गीत सम्बन्धी रामदेव झाक अनुसन्धानक चर्चा आलेखक उल्लेखनीय अंश अछि। 'मुदित कुवलयाम्'कें वंशमणिक कृति मानबाक पूर्व मतक परीक्षणमे नाटकक प्रस्तावनाक एक वाक्यांशकें पुनः अर्थ दैत ग्रन्थकारक अनुसार रामदेव झा कृतिकार निर्धारित करैत छथि (पृ. १७३-१७५)। ई पाठकेन्द्रित ऐतिहासिक तर्कक उदाहरण अछि। लेखकीयता केवल नाम देखलासँ स्थापित नहि होइत; प्रस्तावना, सूत्रधारक कथन, नाटकक अन्य अंश आ सम्बद्ध कृतिक साक्ष्य मिलायब आवश्यक अछि।

नाटकक अङ्क-विभाजन, जमनिका, प्रस्तावना, रस-योजना, प्रवेश, अभिनय-शैली आदिक शास्त्रीय आधारपर विवेचन रामदेव झाक आलोचनात्मक बहुश्रुति देखबैत अछि। योगानन्द झा

शास्त्रीय सिद्धान्तक प्रयोगकें इतिहासलेखनक संग जोड़ैत छथि; एही मेलक कारणेँ आलोचना विवरणमात्र नहि रहि कृतिक कलात्मक व्यवहारक विश्लेषण बनैत अछि।

जगत्प्रकाशमल्ल आ नाट्य-गीतक वर्गीकरण

आलेखमे जगत्प्रकाशमल्लक गीत, नाटक, रचनास्रोत, रस-विन्यास आ गीतविधाक वर्गीकरणक चर्चा अछि (पृ. १७७-१८०)। ग्रन्थकार रामदेव झाक गीत-वर्गीकरण, विशेषतः नाट्यगीत आ मुक्तकगीतक भेद, आ शृङ्गार तथा भक्तिक भावभूमिक विवेचन पर ध्यान दैत छथि। एहिठाम कृतिक इतिहासकें संगीत, प्रस्तुति आ काव्यरूपक दृष्टिसँ देखबाक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि। गेयपदक केवल मुद्रित पाठक आधारपर पूर्ण मूल्याङ्कन कठिन अछि; अभिनय-परम्परा, राग-सन्दर्भ आ उपलब्ध संगीतपरम्पराक जानकारीसँ अध्ययन आर समृद्ध भऽ सकैत अछि।

नन्दीपति आ वंशावलीसँ कालनिर्धारण

नन्दीपति सम्बन्धी आलोचनानामे नाट्य-प्रस्तावनाक वंश-सन्दर्भ आ पञ्जी-प्रबन्धक सहायता सँ पूर्व स्वीकृत वंशक्रमक परीक्षणक वर्णन अछि (पृ. १८१-१८३)। एहि उदाहरणमे समालोचकक काम सौन्दर्य-निर्णय धरि सीमित नहि; इतिहासक आधाररूप अभिलेखक अर्थनिर्धारण अछि। मुदा पञ्जी, वंशावली, साहित्यिक प्रस्तावना आ ऐतिहासिक कालक्रम सदा परस्पर निर्विरोध नहि होइत; साक्ष्यक प्रकृति, संभावित प्रतिलिपिक त्रुटि आ नामसाम्यक प्रश्न सदैव ध्यानमे रहबाक चाही।

जीवन झा: रंगमंचक संक्रमण

कविवर जीवन झाक नाटक पर चर्चा एहि दीर्घ आलेखक अन्य महत्वपूर्ण खण्ड अछि। कीर्तनिया रंगमंचक क्षय, पारसी थिएटरक प्रचलन, रामलीलाक मंचरूप आ मैथिली नाटकक नव संरचनाक सम्बन्धमे रामदेव झाक निष्कर्ष सोझाँ अबैत अछि (पृ. १८४-१९०)। ‘सीतापरिणय’क पृष्ठभूमिमे जनकपुर-लीलाक सांस्कृतिक स्थान आ रामलीलामे मैथिलीक संवाद-भाषाक चर्चा एहि तर्ककें सन्दर्भ दैत अछि। कथित आधारस्रोत आ मौलिक कृतिक भेद निर्धारित करबाक लेल नाटकक कथानक, पात्र, अङ्कसंरचना आ भाषा सभ पर विचार आवश्यक अछि।

जीवन झाक ‘सामवती पुनर्जन्म’क मौलिकता सम्बन्धी पुरान मतक प्रतिपरीक्षा, तथा मैथिली ‘सट्टक’क अनुपलब्ध भागक अन्वेषणक चर्चा पाठसंरक्षणक संस्थागत महत्त्व उजागर करैत

अछि। ई प्रसंग देखबैत अछि जे रचनाकारक प्रतिष्ठा साहित्यिक इतिहासमे पुनः-पुनः बदलि सकैत अछि, कारण नूतन पाठसाक्ष्य पूर्व निर्णयकें संशोधित करैत रहैत अछि।

जनार्दन झा ‘जनसीदन’ आ आधुनिक कथाक प्रारम्भ

ग्रन्थकार रामदेव झाक जनार्दन झा सम्बन्धी जीवनाधारित समालोचनाक विस्तारसँ चर्चा करैत छथि। पारिवारिक साक्ष्य, आत्मपरिचय, पुत्र-पौत्रसँ प्राप्त सूचना आ साहित्यिक रचनाक आधारपर जीवनचर्याक पुनर्निर्माणक वर्णन अछि। ‘ताराक वैधव्य’कें आरम्भिक आधुनिक कथा रूपमे स्थापित करबाक तर्क कथानक, पात्र, संवाद, वातावरण आ परिणतिक विश्लेषणसँ समर्थित बताओल गेल अछि (पृ. १९३–२००)।

‘प्रथम कथा’ सन पद अत्यन्त ऐतिहासिक भार वहैत अछि; ताहि लेल तारिख, पत्रिका-अङ्क, पूर्ववर्ती दुर्लभ रचना आ पाठक विधागत लक्षणक मिलान जरूरी अछि। लेखकक प्रस्तुति सँ रामदेव झाक तर्क बुझल जाइत अछि, मुदा अन्य सम्भावित प्रारम्भिक कथा सभक प्रत्यक्ष जाँच बिना ‘प्रथम’क दावाकें अन्तिम ऐतिहासिक फैसला मानब सँ बचबाक चाही।

सीताराम झा आ काव्यरचनाक वैज्ञानिक वर्गीकरण

सीताराम झा सम्बन्धी विवेचनमे रामदेव झाक कविता-विभाजन—मुक्तक, विवरणात्मक/इतिवृत्तात्मक आ प्रबन्धात्मक काव्य—क उपयोगिता पर चर्चा अछि (पृ. २०१–२०३)। कृतिक विषयक अनुकूल ओकर शिल्पगत समुदाय पहिचानब समालोचनाकें लेखकक सामान्य प्रशंसासँ अलग करैत अछि। ‘अम्बचरित’क विवेचन, मातृभक्ति आ भक्तिमय काव्यभावक सम्बन्ध ओहि वर्गीकरणक महत्त्व बढ़बैत अछि।

सुभद्र झा आ सम्पादनक कठोर कसौटी

दीर्घ आलेखक उत्तरार्धमे रामदेव झाक सुभद्र झा सम्बन्धी समालोचनाक चर्चा अछि। भाषातात्त्विक ग्रन्थ, व्याकरण-विवेचन, विद्यापति गीतसंग्रह, पाठ-संशोधन, सम्पादनक उद्देश्य आ उपलब्धि पर समीक्षकक निर्णय मिश्रित अछि। किछु कृतिक विशेष महत्त्व मानल गेल अछि, तऽ किछुक सम्पादनप्रविधि अथवा प्रयोजनपर प्रश्न उठाओल गेल अछि। ‘Songs of Vidyapati’मे पाठ-संशोधनक योग्यता आ ‘विद्यापति गीत संग्रह’क उपयोगितापर भिन्न

निर्णायक उल्लेख (पृ. २०४–२०८) एहि बातक उदाहरण अछि जे आत्मीय समालोचनामे सेहो आलोचनात्मक असहमति सम्भव अछि।

सम्पूर्ण आलेखक आलोचनात्मक मूल्याङ्कन

एहि लम्बा अध्ययनक महत्त्व ओकर दृष्टि-व्यापकतामे अछि। एकहि रामदेव झाक अनुसन्धानक माध्यमसँ असम, नेपाल, मिथिला, मध्यकालीन नाट्य, काव्य, व्याकरण, लोकसाहित्य, सम्पादन आ साहित्येतिहासक अनेक सूत्र जुड़ैत अछि। लेखक अनेक ठाम मूल उद्धरण, वंश-साक्ष्य आ पूर्वनिर्णायक तुलना करैत छथि। पुस्तकक प्रस्तावनामे प्रतिपादित ‘आलोचक सेतु छथि’—एहि धारणा एहि आलेखमे अपेक्षाकृत स्पष्ट रूपेँ क्रियाशील देखाइत अछि।

एहि विशाल विवेचनक सीमा सेहो समान रूपेँ विचारणीय अछि। ग्रन्थकार बहुते विषयमे रामदेव झाक निष्कर्षकेँ सार्थक माने छथि, मुदा किछु विवादित निष्कर्षक प्रतिपक्ष, मूल पाण्डुलिपिक पाठभेद आ आधुनिक बाह्य शोधक स्वतन्त्र पुनर्तुलना एहि एक आलेखमे नहि भेटैत अछि। विस्तारक कारणेँ कतिपय स्थलमे उद्धृत जीवनीग्रन्थक अध्याय-दर-अध्याय परिचय अधिक आ तुलनात्मक सैद्धान्तिक विश्लेषण कम होइत अछि। तथापि मैथिलीमे ‘सजीवनी समालोचना’क स्वरूप पहिचानय लेल ई आलेख अत्यन्त उपयोगी अछि: इतिहास, पाठसमीक्षा आ सौन्दर्यनिर्णायक त्रिवेणी एकर मूल उपलब्धि अछि।

१४ | मैथिली लोकगाथा—अनुसन्धान आ मणिपद्म

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ: २०९–२२४

लोकगाथाक विधागत स्वरूप

अन्तिम आलेखमे लेखक लोकगाथाकेँ लोकसाहित्यक महाकाव्य मानैत छथि। गेयधर्मिता, व्यापक कथावस्तु, लोकनायक, सामूहिक स्मृति, सामाजिक संघर्ष आ जातीय-लोकदेवताक प्रतिष्ठा—ई तत्त्व लोकगाथाक विशिष्टता बनैत अछि। शास्त्रीय महाकाव्यक एकरूपी छन्दबन्ध नहि रहितो लोकगाथाक गेय लय ओकर जीवन्त स्वरूप बनबैत अछि। लोकगाथा लिखित रचनाक तरह स्थिर नहि; गायक, काल, क्षेत्र आ श्रोतासमुदायक अनुसार बदलैत रहैत अछि (पृ. २०९–२११)।

मिथिलामे सलहेस, लोरिक, दीना-भदरी, कारिख, दुलरा दयाल, रइया रनपाल, नैका बनिजारा, श्यामसिंह, गोपीचन्द, गनीनाथ-गोविन्द, बेनीराम आदि लोकनायकक गाथाक उल्लेखसँ स्पष्ट अछि जे ई विधा मिथिलाक अनेक जाति आ समुदायमे विस्तारित अछि। लेखक गाथाक भेदमे एक पात्रक खण्डचरित आ विशाल सामूहिक कथागठनकें अलग करैत छथि। एहि आधारपर ‘लोकगाथा’ आ ‘गाथागीत’क सम्भावित अन्तरक चर्चा कएल गेल अछि। वर्गीकरणक ई उपयुक्त आरम्भ अछि, मुदा जीवित गायकपरम्परामे एक कथा अनेक रूपमे प्राप्त होइत अछि, तँ कोनो स्थायी सीमा कड़ाईसँ थोपब उचित नहि।

लिखित अभिलेख आ क्षेत्रीय अन्वेषणक इतिहास

लेखक ‘वर्णरत्नाकर’मे लोकनाच-गानक सन्दर्भ, ग्रियर्सन द्वारा सलहेसक संकलन, परवर्ती शोधकर्ता लोकनिक प्रयास आ विविध लोकगाथाक प्रकाशनक इतिहासक परिचय दैत छथि। एहि विवेचनमे मूल अभिलेख-संग्रहक कठिनता प्रखर रूपेँ उपस्थित अछि। मौखिक परम्पराक गीत जखन लिपिबद्ध होइत अछि, तखन गायकक उच्चारण, राग, कथामे फेरबदल, प्रदर्शनक सामाजिक क्षण आ श्रोताक प्रतिक्रिया बहुत किछु छूटि जाइत अछि। एहि कारणेँ केवल मुद्रित पाठक आधारपर लोकगाथाक सम्पूर्ण अर्थ निर्धारित करब कठिन अछि।

लेखक महेन्द्र नारायण राम, फूलो पासवान, रामभरोस कापड़ि ‘भ्रमर’, ताराकान्त मिश्र, विश्वेश्वर मिश्र आ अन्य अन्वेषकक योगदानक उल्लेख करैत छथि। किछु शोधक मूलपाठ-संग्रहक बल, किछुक साहित्यिक विवेचन आ किछुक वर्गीकरणक उपयोगिता देखाओल गेल अछि (पृ. २१३–२१८)। एहि सूचीसँ लोकगाथा-अनुसन्धानक एक विकसित परम्पराक आभास भेटैत अछि। ई आलेख भिन्न-भिन्न विद्वानक योगदानक परिचय-द्वारा अछि; सम्पूर्ण ग्रन्थसूची वा अप्रमाणित पाण्डुलिपिक अन्तिम लेखा नहि।

मणिपद्मक कार्यक विशिष्टता

मणिपद्मक चर्चा एहि आलेखक निर्णायक चरण अछि। लेखकक अनुसार मणिपद्म लोकगाथाक कथ्य, लोकपात्रक संसार, सामाजिक व्यवहार आ विशिष्ट लोकभाषाकें गम्भीरतासँ ग्रहण करैत छथि। ओ मूल मौखिक सामग्रीक आधार लैत, ओकर रस ग्रहण करैत आ साहित्यिक कल्पनाक सहायता सँ शिष्ट साहित्यिक कथा-उपन्यास, निबन्ध आदि विधामे नूतन रचना प्रस्तुत करैत छथि (पृ. २१९–२२३)। एतय मणिपद्मक सामर्थ्य लोक आ शिष्ट साहित्यक बीच संवाद बनयब अछि।

ई रूपान्तरणक सफलता आ ओकर समस्या दुनू अछि। लोकगाथाक गायकदत्त रूपक स्थानपर साहित्यकारक संस्करण पाठक धरि पहुँचैत अछि, ताहिसँ लोकनायकक लोकप्रियता बढ़ैत अछि। मुदा मूल गाथाक मौखिक पाठ, भिन्न क्षेत्रीय संस्करण आ गायनपरक सामाजिक परिप्रेक्ष्य पाछाँ छूटबाक संकट बढ़ि सकैत अछि। लेखक एहि द्वन्द्वकें महत्वपूर्ण ढंगसँ चिन्हैत छथि—मणिपद्मक साहित्यिक प्रस्तुति मूल्यवान अछि, मुदा ओकरा मूल लोकगाथाक निर्विवाद पाठक स्थान नहि देल जा सकैत अछि।

संकलन बनाम पुनर्सृजन

आलेखक कठोरतम आलोचनात्मक प्रश्न यही अछि जे लोकगाथाक अनुसन्धाता मूल गाथा रक्षित करैत छथि कि ओकरा अपन शिल्पमे बदलैत छथि। दुनू काम उपयोगी छथि, मुदा दुनूक उद्देश्य अलग अछि। संकलनमे प्रदर्शनक स्थान, दिनाङ्क, गायकक परिचय, बोली, ध्वनिमुद्रण, गायनक अवसर, कथावैविध्य आ पाठान्तरक दस्तावेजीकरण जरूरी होइत अछि। पुनर्सृजनमे रचनाकारक कल्पना आ सौन्दर्य-बोध प्रधान होइत अछि। एहि भेदकें भूललासँ लोकइतिहासक स्रोत आ ललित साहित्यक पाठ एक-दोसराकें प्रतिस्थापित कऽ देत।

ग्रन्थकार मणिपद्मक योगदानक ऊँच प्रशंसा करितहुँ मूल गाथा सभक दुर्लभता आ शोध-सामग्रीक प्रकाशनक संकट स्वीकार करैत छथि। एकर कारणेँ अन्तिम आलेख केवल श्रद्धाञ्जलि नहि रहि लोकसाहित्य-अनुसन्धानक ठोस कार्यक्रम सुझाबैत अछि। लोकगाथा संग्रहक मूलस्वरूपक प्रकाशन, क्षेत्रीय पाठान्तरक तुलना आ भाषा-रूपक संरक्षण नहि होयत तँ अगिला पीढ़ी लोकजीवनक ऐतिहासिक साक्ष्यसँ वञ्चित रहि सकैत अछि।

जातीय लोकदेवता आ साझा मैथिली संसार

सलहेस, दीना-भदरी आदि लोकनायकक लोकप्रियता अलग-अलग जातीय समूहक स्मृति सँ जुड़ल अछि। लेखक एतय लोकगाथाक सामूहिक पहचान निर्माणक शक्तिकें रेखाङ्कित करैत छथि। ई एक महत्वपूर्ण सामाजिक स्थिति थिक; मुदा ‘जातीय समन्वय’क निष्कर्षक संग विविध समुदायक असमान सामाजिक स्थिति, प्रतिरोध आ संघर्षक स्वतन्त्र अध्ययन सेहो अपेक्षित अछि। लोकगाथा केवल समरसताक स्वर नहि, दमनक विरुद्ध जनस्मृतिहुक वाणी भऽ सकैत अछि।

समग्र मूल्याङ्कन

ग्रन्थक समापन एहि आलेखसँ होयब अर्थपूर्ण अछि। पहिल आलेखमे नदीक सांस्कृतिक वन्दना छल; अन्तिम आलेखमे लोकक कण्ठमे बचल भाषिक-सांस्कृतिक स्मृतिक संरक्षणक आह्वान अछि। इतिहासक जड़ वस्तुसँ जीवन्त मौखिक परम्परा धरि ई संग्रह अपन अनुसन्धानक चक्र पूर्ण करैत अछि। मणिपद्मक मूल्याङ्कनक सभसँ मजबूत पक्ष ई अछि जे लेखक रचनात्मक प्रतिभा आ मूलस्रोतक प्रामाणिकता बीच भेद करैत छथि। लोकसाहित्यक शोधमे ई भेद भविष्यक सभ अध्ययन लेल उपयोगी कसौटी अछि।

समेकित आलोचनात्मक निष्कर्ष

१. चौदहो आलेखक साझा अनुसन्धान-प्रवृत्ति

ग्रन्थक चौदह आलेख अलग-अलग विषयपर अछि, मुदा एकटा गहन एकसूत्रता स्पष्ट अछि— मैथिली साहित्यक ज्ञान आ सम्पदाकेँ सुरक्षित राखि ओकर उपयोग सामाजिक परिवर्तन, भाषिक आत्मसम्मान आ सौन्दर्यबोधक विकासमे करब। पहिल छह आलेखमे परम्परा-रक्षा आ आधुनिकता, भक्ति आ सामाजिक सुधार, शास्त्रीय छन्द आ युगीन संवेदना बारम्बार आमने-सोझाँ अबैत अछि। गद्य-विभागमे यात्रा, निबन्ध आ उपन्यासक कथावस्तु मैथिलीक समाजदर्शनक माध्यम बनैत अछि। अन्तिम पाँच आलेख आधुनिक साहित्यिक संस्थाक संरचना पर ध्यान दैत अछि।

एहि दृष्टिसँ ‘चतुर्दश सूत्र’केँ केवल अवसरानुकूल समीक्षासंग्रह कहब ओकरे विविध बौद्धिक उद्देश्यकेँ घटायब होयत। ई संग्रह एकटा विशिष्ट आलोचनात्मक विचारधारा प्रकट करैत अछि, जाहिमे साहित्यक सौन्दर्य समाजसँ कटि नहि सकैत अछि, आ भाषाक विकास केवल श्रेष्ठ कविक रचनासँ नहि, पत्रकारिता, भाषा-अनुसन्धान, पाठ-सम्पादन, विद्यालय, पुस्तकालय आ लोकज्ञानक संरक्षणसँ सेहो निर्धारित होइत अछि।

२. परम्परा आ नवीनताक वास्तविक द्वन्द्व

गंगावन्दना, स्नेहलता, स्वयंप्रभा, मोहन आ जयमन्त मिश्रक काव्यविवेचनमे परम्पराक गहन प्रभाव अछि। तथापि ग्रन्थकार केवल परम्पराक पुनरुक्तिक प्रशंसा नहि करैत छथि। स्वयंप्रभामे दहेज-विरोध, हरिमोहन झाक कथाकाव्यमे अनमेल विवाह आ खाद्य-अखाद्यक व्यंग्य,

मोहनमे राष्ट्रीय कर्तव्य, जयमन्त मिश्रमे युगीन असमञ्जस आ गंगावन्दनाक अन्तमे पर्यावरण-प्रश्न—ई सभ देखबैत अछि जे पुरान रूपमे नव सामाजिक अर्थ सम्भव अछि। शिल्पक आधुनिकताकें विचारक आधुनिकतासँ अलग जाँचबाक आग्रह संग्रहक एक महत्वपूर्ण आलोचनात्मक उपलब्धि अछि।

३. साहित्यिक समाजदर्शनक शक्ति आ सीमा

हरिमोहन झा, प्रदीप, मायानन्द मिश्र आ विदितजी पर लिखल आलेख सामाजिक समस्या सभक विविध चित्र प्रस्तुत करैत अछि। विवाहक बाजार, नारीक असमान स्थिति, अन्धविश्वास, जातिवाद, पलायन, भाषिक हीनता आ आर्थिक निष्क्रियता साहित्यक पाठमे उपस्थित अछि। लेखक अनेक ठाम समाजोद्धारक आग्रही छथि। किन्तु नैतिक उपदेश आ वास्तविक संस्थागत परिवर्तनक बीच पर्याप्त दूरी अछि। काव्यमे निन्दा करब आ समाजमे समस्या निवारण करब अलग कार्य छथि; एहि भेदकें ध्यानमे राखि रचनाक प्रभावक मूल्याङ्कन करबाक चाही।

कखनहुँ लेखकक अनुराग आलोचनात्मक प्रतिवादकें सीमित करैत अछि। सन्तकविक पद अथवा भाषा-आन्दोलनक नायकक मूल्याङ्कनमे प्रशंसा अधिक अछि, जखन कि वर्ग, जाति, लिङ्ग, आर्थिक शक्ति आ संस्थागत असफलताक वैकल्पिक पाठ पर अपेक्षाकृत कम विचार भेटैत अछि। मुदा लेखकक स्वयं प्रस्तुत कएल अनेक साक्ष्य वैकल्पिक प्रश्न उठाबय लेल पर्याप्त सामग्री उपलब्ध करबैत अछि। एही कारणेँ पोथी पढ़ब एकटाक निश्चित मत मानि लेब नहि, चर्चा आगाँ बढ़ायब अछि।

४. ‘सजीवनी समालोचना’ आ स्रोतक सम्मान

रामदेव झा सम्बन्धी आलेख एहि पोथीक आलोचनादर्शनक केन्द्रीय रूपक बनैत अछि। ओतए कृति, रचनाकार, परिवेश, प्राचीन पाठक उपलब्धि आ ऐतिहासिक विवाद समेकित रूपमे सोझाँ अबैत अछि। सुभद्र झा सम्बन्धी भाषावैज्ञानिक आलेख आ मणिपद्म सम्बन्धी लोकगाथा आलेख एहि सिद्धान्तकें अलग-अलग दिशा सँ समर्थित करैत अछि—कोनो साहित्यक आलोचना ओकर भाषा, अभिलेख आ जीवन्त परम्परासँ कटि नहि सकैत अछि।

तथापि जीवनीक आत्मीयता आ शोधक निष्पक्षता हर समय एक नहि होइत। स्मृतिपरक सूचना, पारिवारिक साक्ष्य, शास्त्रीय उद्धरण, पुरान पाण्डुलिपि आ बादक इतिहासकारक निर्णय

प्रमाणक अलग स्तर छथि। भविष्यक पाठालोचनामे ई स्तर स्पष्ट करबाक अनिवार्यता अछि। पुस्तक जखन एहि प्रमाणक चर्चा करैत अछि, तखन ओकर महत्त्व बढ़ैत अछि; जखन ओहि प्रमाणक प्रतिपक्ष नहि देखैत अछि, तखन अनुसन्धानक किछु दरवाजा खुलले रहि जाइत अछि।

५. पत्रकारिता, शब्द, लोकसाहित्य: मैथिलीक सार्वजनिक क्षेत्र

‘स्वदेश’क पत्रकारिता, सुभद्र झाक रूपविज्ञान, जयकान्त मिश्रक साहित्येतिहास आ मणिपद्मक लोकसाहित्यक अध्ययन अलग-अलग उपविषय नहि, भाषा-सार्वजनिकताक चारु आधार मानल जा सकैत अछि। ‘स्वदेश’ मैथिलीकें रोजक समाचार देबाक भाषा बनबैत अछि; भाषाविज्ञान ओकर स्वतन्त्र संरचना प्रकट करैत अछि; साहित्येतिहास ओकर कालगत स्मृति बनबैत अछि; लोकगाथा ओकर जनसमुदायक अनौपचारिक ज्ञानक निधि अछि। एहि चतुष्कोणसँ संग्रहक गहनतम बौद्धिक विचार उभरैत अछि—भाषा तखने समृद्ध होइत अछि जखन ओकरा साहित्य लिखबाक संगहि अध्ययन, संचार, शिक्षण आ लोकस्मृति संरक्षित करबाक साधन भेटैत अछि।

६. भाषाशैली, सन्दर्भ आ सम्पादकीय परीक्षण

ग्रन्थकारक मैथिलीमे संस्कृतनिष्ठ आलोचनात्मक शब्दावली, दीर्घ वाक्य, परम्परित ‘विवेचन—विश्लेषण—मूल्याङ्कन’क संरचना आ मूल उद्धरणक नियमित उपयोग भेटैत अछि। शास्त्रीय काव्यविवेचनमे ई शैली सहज कार्य करैत अछि; गद्य आ लोकसाहित्यक विवेचनमे अनेक स्थानपर स्पष्ट कथासार आ बोलचालक उदाहरण एकरा सुगम बनबैत अछि। मुदा अतिविस्तृत नामावली वा कथासारक कारणेँ कखनो समालोचनाक मूल प्रश्न ओझरा जाइत अछि। एहन स्थानपर उपशीर्षक, प्रमाणक सारणी, मूलस्रोत-सूची आ तुलनात्मक निष्कर्ष अधिक उपयोगी होइत।

चतुर्दश सूत्रक प्रकाशकीय विवरणमे मूल्य ३०० टाका, जखन कि पछिला आवरणपर ४०० टाका अंकित अछि। ई मुद्रित मूल्य-सूचनाक अन्तर ग्रन्थसूची तैयार करैत काल ध्यान देबाक योग्य अछि; एकर कारण निश्चित करबाक पर्याप्त प्रकाशकीय सूचना नहि भेटैत अछि।

७. एकर बाद करबाक यथार्थपरक अनुसन्धान

‘चतुर्दश सूत्र’कें भविष्यक शोध लेल उपयोगी बनाबय हेतु किछु ठोस कार्यक्षेत्र स्वतः प्रकट होइत अछि। कविताक सन्दर्भमे मूल पदक पाठ-सम्पादन, पाठभेद आ छन्दक तुलनात्मक गणना चाही। गद्यक सन्दर्भमे ‘श्यामली’ आ ‘पथचारी’क सम्भावित सम्बन्धक पुस्तक-दर-पुस्तक परीक्षण, ‘ग्राम-गणराज्य’क सत्रहो उल्लासक कथन-रचना आ समकालीन सामाजिक आँकड़ासँ तुलना उपयुक्त होयत। मायानन्द मिश्रक विकीर्ण निबन्ध, ‘स्वदेश’क मूल अङ्क आ रामदेव झाक सम्पादित दुर्लभ गीत-नाटकक डिजिटल अभिलेखन अत्यन्त उपयोगी कार्य अछि। लोकगाथा-अनुसन्धानमे गायनक ध्वनिमुद्रण, क्षेत्र, प्रदर्शनक काल, गायक-परिचय, पाठान्तर आ साहित्यिक पुनर्सृजनक अलग-अलग संस्करण सुरक्षित करब चाही।

ई प्रस्ताव सभ वर्तमान अध्ययनमे कएल गेल सत्यापित कार्यक दावास्वरूप नहि, मूल पोथी पढ़लापर निकलल अनुसन्धानक सम्भावना रूपमे प्रस्तुत अछि।

अन्तिम मूल्याङ्कन

‘चतुर्दश सूत्र’क सभसँ महत्वपूर्ण उपलब्धि ई अछि जे ई मैथिलीकें केवल भावनात्मक मातृभाषाक रूपमे नहि, समृद्ध साहित्यिक विधा, सामाजिक आलोचना, वैज्ञानिक भाषा-अध्ययन, संस्थागत साहित्येतिहास आ मौखिक लोकज्ञानक विराट परिसरमे पढ़ैत अछि। लेखक पुरान आ नवक बीच वैमनस्य नहि, संवाद चाहैत छथि। परम्परित काव्यक सामाजिक अर्थ निकालैत, आधुनिक कथा-गद्यक नैतिक संघर्ष देखैत आ भाषा-संरक्षणक व्यावहारिक प्रश्न उठबैत ई संग्रह आलोचनाक व्यापक सम्भावना प्रमाणित करैत अछि।

एहि कृतिक उपलब्धिक संगहि एकर आलोचनात्मक सीमा देखब सेहो आवश्यक अछि। इतिहासक व्यापक कथन, व्यक्तित्वक प्रशंसात्मक निर्णय आ स्रोतक परोक्ष उल्लेख सर्वत्र एके स्तरक प्रमाण नहि रखैत अछि। किछु आलेखमे कथासारक विस्तार विश्लेषणक स्थान घेरि लैत अछि। ताहि लेल पोथीकें अन्तिम, निर्विवाद इतिहास मानब उचित नहि; ओकरा आधारसामग्रीसँ सम्पन्न, बहुविध प्रश्न उठबयवला आलोचनात्मक ग्रन्थ मानब अधिक न्यायसंगत अछि।

समग्र निष्कर्षमे कहल जा सकैत अछि जे डॉ. योगानन्द झाक ई संग्रह मैथिली साहित्यिक अनुसन्धानक एक व्यापक मानचित्र अछि। एकर चौदहो आलेखकें अलग-अलग सन्दर्भमे पढ़लासँ कृति-विशेषक महत्त्व भेटैत अछि; एकठाम पढ़लासँ मैथिली भाषा-साहित्यक पाठ,

प्रमाण, समाज, इतिहास आ लोकपरम्पराक आन्तरिक एकता स्पष्ट भऽ उठैत अछि। ई एकता—आ ओकर भीतर लुकायल मतभेद—पोथीक स्थायी समीक्षात्मक मूल्य थिक।

पुस्तकक अध्ययनाधार

ग्रन्थसूची

प्रमुख समीक्षित ग्रन्थ

01. झा, योगानन्द। लोकजीवन ओ लोकसाहित्य। प्रथम संस्करण १९८६; द्वितीय संस्करण २०१८। शेखर प्रकाशन, पटना।
02. झा, रामदेव (सम्पादक); झा, योगानन्द (सहायक सम्पादक)। संकल्प, अङ्क ५ : विद्यापति-स्मृति-पर्व-समारोहक स्मारिका। समारोह १९८८; आयोजन ४-६ फरवरी १९८९। संकल्पलोक, लहेरियासराय, दरभंगा।
03. झा, योगानन्द। आलेख सञ्चयन। प्रथम संस्करण २००२। मिथिला रिसर्च सोसाइटी, कबिलपुर-लहेरियासराय, दरभंगा।
04. झा, योगानन्द (सम्पादक)। मैथिली शाक्त साहित्य (शास्त्रीय भगवती गीत)। द्वितीय संस्करण २००२। उर्वशी प्रकाशन, पटना।
05. झा, योगानन्द। मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष। प्रथम संस्करण २००६।
06. झा, योगानन्द (संकलन-सम्पादन)। गहबर गीत। प्रथम संस्करण २००७। मिथिला रिसर्च सोसाइटी, कबिलपुर-लहेरियासराय, दरभंगा।
07. झा, योगानन्द। लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा। प्रथम संस्करण २००७; द्वितीय संस्करण (पेपरबैक) २०२४। शशि प्रकाशन, सुपौल। ISBN 978-93-92691-35-5।
08. झा, योगानन्द। मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायिक शब्दावली। प्रथम संस्करण २००९। मिथिला रिसर्च सोसाइटी, दरभंगा।
09. झा, योगानन्द। कथा-लोककथा। प्रथम संस्करण २०१०। मिथिला रिसर्च सोसाइटी, कबिलपुर-लहेरियासराय, दरभंगा।

10. ठाकुर, कपिलदेव 'स्नेहलता' (मूल कवि); झा, योगानन्द (संकलन-सम्पादन)। सीतावतरण (प्रबन्धकाव्य)। प्रथम संस्करण २०११। लोक कला संस्कृति संस्थान, विदेहनगर-डरोड़ी, समस्तीपुर।
11. गाँधी, मोहनदास करमचन्द (मूल लेखक); झा, योगानन्द (मैथिली अनुवाद)। मंगल-प्रभात। प्रथम संस्करण २०१३। मिथिला रिसर्च सोसाइटी, दरभंगा।
12. कीर्तिवर्द्धन, ए. (मूल हिन्दी लेखक); झा, योगानन्द (मैथिली अनुवाद)। भोरे-भोर। प्रथम संस्करण २०१४। विद्यालक्ष्मी प्रकाशन, मुजफ्फरनगर।
13. झा, योगानन्द। चतुर्दश सूत्र। प्रथम संस्करण २०२३। शशि प्रकाशन, सुपौल। ISBN 978-93-92691-34-8।

सम्बद्ध मुद्रित ग्रन्थ

01. मिश्र, चन्द्रनाथ 'अमर'। मैथिली पत्रकारिताक इतिहास। १९८१। मैथिली अकादमी, पटना।
02. Gandhi, M. K. From Yeravda Mandir: Ashram Observances. Translated from Gujarati by Valji Govindji Desai. 1932. Navajivan Trust, Ahmedabad.
03. Jha, Pankaj. A Political History of Literature: Vidyapati and the Fifteenth Century. Oxford University Press, New Delhi, 2019. Print ISBN 9780199489558.
04. Hemachandra. The Deśināmamālā of Hemachandra. Second edition, edited by R. Pischel; introduction and glossary by P. V. Ramanujaswami. Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, 1938.

मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्षक २००६क संस्करणक प्रकाशक-नाम उपलब्ध प्रकाशन-विवरणसँ सुनिश्चित नहि भेल अछि; तँ अप्रमाणित प्रकाशक-नाम नहि जोड़ल गेल अछि।

१.१४. गजेन्द्र ठाकुर — नित नवल कुणाल

VIDEHA 451 • VIDEHA451 / PROSE 14 • सम्पूर्ण मूल पाठ

स्रोतक मूल शीर्षक, प्रकाशन-विवरण, विषय-सूची, अध्याय, तालिका, अन्तिम टिप्पणि आ सन्दर्भ पूर्ण रूपें समाविष्ट। मूल स्रोतमे छपल आन्तरिक पृष्ठाङ्क स्रोत-संस्करणक अछि।

अनुक्रमणिका

अध्याय

१ विद्यापतिक १०० पद : जुवती भए जनमए जनु कोइ

२ रंगायन : मैथिली रंगचेतनाक आलोचनात्मक अध्ययन

अध्याय १

विद्यापतिक १०० पद : जुवती भए जनमए जनु कोइ

सम्पादक : कुणाल | “रुत्री-मोन” आ “कवि-मोन”क पदवार आलोचना

१. ग्रन्थ-परिचय आ अनुसन्धानक सीमा

ई पुस्तक विद्यापतिक सौ पदक सम्पादित चयन अछि। मुखपृष्ठ आ नामपृष्ठ पर पुस्तकक नाम «विद्यापतिक १०० पद : जुवती भए जनमए जनु कोइ» तथा सम्पादक कुणाल स्पष्ट अछि। प्रकाशकीय पृष्ठ पर ISBN 978-81-962063-0-7, प्रथम संस्करण २०२३ आ अंकिता प्रकाशन प्रा. लि. उल्लेखित अछि (मूल पुस्तकक पृ. ३-४)। चयनक ढाँचा स्वयं आलोचनात्मक प्रस्तावनाकें जन्म दैत अछि: पदक अर्थ मात्र ओकर वाक्यसँ नहि, चयन आ क्रमसँ सेहो बनैत अछि।

अनुक्रमणिका (मूल पृ. ७-८) तथा पदक वास्तविक क्रमक मिलान पर ई अध्ययन आधारित अछि। कुल १०० पदमे पहिल ७० «स्त्री-मोन» खण्डमे तथा शेष ३० «कवि-मोन» खण्डमे अछि। पद १ मूल पृष्ठ ९ सँ आरम्भ होइत अछि; पद १०० मूल पृष्ठ १२७ पर अछि। पृष्ठ १२८ पर स्रोत-सन्दर्भ आ संकेतनामक सूची अछि।

२. सम्पादकीय भूमिका आ संग्रहक संरचना

सम्पादकीय प्रस्तावना (मूल पृ. ५-६) संग्रहक केन्द्रमे स्त्रीक अनुभव रखबाक आग्रह करैत अछि। पुस्तकक शीर्षक 'जुवती भए जनमए जनु कोइ' स्वयं चयनक भाव-बीज अछि: जन्म, स्त्रीत्व, अभाग आ सामाजिक शर्तक सम्बन्ध। ई शीर्षकक अर्थ समस्त विद्यापति-काव्य स्त्री-विलाप मात्र अछि, एना नहि; एकर कार्य पाठकक दृष्टिकेँ प्रथमे स्त्री-संसार पर केन्द्रित करब थिक।

«स्त्री-मोन»क भीतर विरह, परदेशी प्रिय, मान-अभिमान, सखी, समागम, गृह-निगरानी आ सामाजिक रुढ़ि अछि। तथापि लगभग उत्तरार्द्धमे शिव-गौरी सम्बन्धी लोकहास्य आ मिथकीय गृहस्थी सेहो आबैत अछि (पद ५९-६६)। ताहि कारणेँ 'स्त्री' एतय संकुचित रूपक नायिका नहि, देवी, गृहिणी, कन्या, विरहिणी आ सामाजिक पात्रक विविध आवाज समेटैत अछि।

«कवि-मोन» केँ भिन्न विचारक खण्ड मानि पढ़ल जा सकैत अछि, मुदा एकरामे श्रृंगार नहि समाप्त होइत अछि। पद ७९-८२मे वृन्दावन, राधा, नवयौवन, कुसुमित वन आ नृत्यक बिम्ब अछि; पद ८९-९०मे सखी-संवाद आ माधव-पुकार फेन भेटैत अछि। एकर अर्थ ई जे सम्पादकीय विभाजन सापेक्ष अछि; ओ पाठकीय उन्मुखीकरण करैत अछि, सम्पूर्ण अभेद्य वर्ग बनबैत नहि। संग्रहमे बहुत पदक अन्तमे सम्पादकीय स्रोत-संकेत, शब्दार्थ आ पाठ-अर्थ देल गेल अछि। एहि पद्धति सँ कठिन लोकपद, पुरान रूप, ध्वनि-बोध आ कथा-प्रसंग बुझबाक सुविधा अछि। मुदा गद्यर्थक विस्तार पाठककेँ कखनो विशेष पात्रक इरादा, कथाक पृष्ठभूमि अथवा नैतिक निर्णय एक दिशामे लऽ जा सकैत अछि; समीक्षाक एकटा काम ई अन्तर उजागर करब थिक।

३. अध्ययन-पद्धति आ प्रमुख अवधारणा

क. निकट पाठ-पठन। प्रत्येक पदकेँ स्वतन्त्र संख्याक संग पढ़ि ओकर प्रमुख कथ्य, पात्रक स्वर, कथनक स्थिति, चित्रात्मक उपादान आ अन्त्य कवि-मुद्रा पहिचानल गेल अछि। पद जे कहैत अछि, आ सम्पादक जे ओकर अर्थ करैत छथि, दूनूमे भेद राखल गेल अछि।

ख. तुलनात्मक अन्तर्पाठ। एकहि चयनक भीतर बारम्बार आबि रहल विषय—परदेश-विरह (९, १८, ३४), लोकलाज (५, १९, ३५), प्राकृतिक उद्दीपन (१६, २७, ३०, ५५), शिव-विवाह (५९—६६), ऋतु-वृन्दावन (७९—८२) आ अनित्यबोध (११, ७३, ९४, १००)—क समूह बनाक देखल गेल अछि। ई तुलना संग्रहक भीतर अछि; अन्य संस्करणक शब्दशः तुलना नहि।

ग. रस-अवलोकन। शृंगारक संयोग—विप्रलम्भ, करुण, हास्य, भक्ति आ शान्त/वैराग्यमूलक विचारक पाठ-आधारित पहचान कएल गेल अछि। रस-श्रेणी पाठक सहायता करैत अछि, मुदा एक पदमे एकसँ अधिक भावक सहअस्तित्व स्वीकारल गेल अछि।

घ. स्त्रीवादी पाठ-दृष्टि। प्रेममे नायिकाक आत्मनिर्णय, सासु/लोकक निगरानी, विवशता, गोपनता आ प्रतिरोधकेँ दृष्टिमे राखल गेल अछि। नायिकाक पीड़ाकेँ स्वतः कविक निजी जीवनक दस्तावेज बनाओल नहि गेल अछि; कवि द्वारा रचल भूमिकात्मक आवाज मानल गेल अछि।

ङ. पाठालोचनात्मक सावधानी। पुस्तकक मूल पद, सम्पादकीय शब्दार्थ आ पाठ-अर्थ—तीनू स्तरकेँ पृथक् राखि मूल्यांकन करब आवश्यक अछि। निर्णायक पाठभेद-समीक्षा लेल अन्य प्रमाणित सम्पादित संस्करण आ पाण्डुलिपिक तुलनात्मक अध्ययन चाही।

४. 'स्त्री-मोन' : पद १-७०क पृथक् पाठ-विश्लेषण

प्रत्येक प्रविष्टिक क्रमांक मूल पोथीक पद-संख्या अछि; उल्लेखित पृष्ठाङ्क पदक आरम्भिक मुद्रित पृष्ठकेँ जनबैत अछि। विवेचनमे कथ्यक संग शिल्पगत आ अर्थगत प्रश्नक परीक्षा कएल गेल अछि।

पद १ | मूल पृ. ९ | अभिमान आ अन्तरंग संवाद

विषयक निकट-पाठ। प्रेमीक वचन सुनि नायिकाक अभिमान, अपेक्षा आ आत्मसम्मान एकेसमय मुखर होइत अछि। प्रेम एतय केवल समर्पण नहि, पारस्परिक व्यवहारक जाँच सेहो थिक; कवि दाम्पत्य-सम्बन्धक टकराहटकेँ सजीव वाणी दैत छथि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। बोलचालक आवृत्ति आ प्रतिप्रश्न नायिकाक स्वरकेँ नाटकीय बनबैत अछि; पाठ-अर्थमे व्यक्त सामाजिक निर्णयकेँ मूल वक्ताक अनुभवसँ अलग पढ़ब आवश्यक।

पद २ | मूल पृ. ११ | संकोच, निर्णय आ प्रेमक संकट

विषयक निकट-पाठ। नायिका अपन भावनात्मक अनुभवकेँ सखी-संवाद द्वारा व्यक्त करैत छथि। अपन मनक निश्चय आ बाहरक लोक-संकोचक बीच तनाव अछि; प्रीति सँ उत्पन्न दुविधा काव्यक वास्तविक घटना बनैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। छोट-छोट पदबन्ध भावक चञ्चलता प्रकट करैत अछि। शब्दार्थक सहायता उपयोगी भएो वक्ताक संकोचकेँ एकार्थी नैतिक शिक्षा नहि बनाओल जाय।

पद ३ | मूल पृ. १२ | पुरुष-प्रेमक भरोसा आ विडम्बना

विषयक निकट-पाठ। पुरुषक प्रेम आ व्यवहारक अन्तर पर प्रश्न उठैत अछि। नायिका आश्वासन, प्रतीक्षा आ परित्यागक आशंकाक बीच झूलैत अछि; एहि सूक्ष्म दोलनमे प्रेमक असुरक्षा रूप पबैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। उपमा आ प्रश्नसूचक वाक्य भावक गतिकेँ तीव्र करैत अछि। पदक कथक-स्वर आ सम्पादकीय व्याख्याकारक स्वर अलग राखल उचित।

पद ४ | मूल पृ. १४ | जीवन, काल आ प्रतीक्षा

विषयक निकट-पाठ। क्षणभंगुर जीवनक बोध प्रेमक उत्कण्ठाकेँ तीक्ष्ण करैत अछि। प्रतीक्षारत नायिका लेल समय सामान्य कालगणना नहि, शारीरिक आ मानसिक कष्टक अनुभव थिक।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। पंक्तिक क्रममे समयक दाब बढ़ैत अछि; 'मधुकर' सरीख प्राकृतिक संकेतक पढ़ाइमे ऋतु आ मनोदशाक सम्यक् सम्बन्ध देखबाक चाही।

पद ५ | मूल पृ. १६ | अनुरागक मूल्य आ लोकलाज

विषयक निकट-पाठ। पदमे प्रेमक आकर्षण आ समाजक मान्यताक बीच दूरी बनैत अछि। पात्र अपन प्रेमक पक्ष लैत छथि, मुदा लोकक आलोचना आ व्यवहारिक परिणतिक बोध सेहो मौजूद अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। सम्बोधन आ लय सखीक गोपनीय वार्ताक आभास करबैत अछि। सम्पादकीय पाठ-अर्थक नैतिक टिप्पणीकें मूल पदक सर्वमान्य आशय नहि मानल जाय।

पद ६ | मूल पृ. १७ | पुरुषक अनुभूति आ विरह

विषयक निकट-पाठ। अनुभवक दावाक संग स्नेहक अभावक पीड़ा व्यक्त अछि। प्रेमक विश्वसनीयताक मापदण्ड शब्द नहि, विरह-सहन आ पुनर्मिलनक व्यग्रता बनैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। विरहक तीव्रतामे शरीर आ मनक समानान्तर चित्र अछि; संक्षिप्त विन्यास पदक गेयताकें बल दैत अछि।

पद ७ | मूल पृ. १८ | जुवती-जीवनक त्रासदी

विषयक निकट-पाठ। ‘जनम होअए जनु जुवती’ प्रकारक उद्घोष स्त्री-जीवनक सामाजिक असमानता दिस ध्यान दियबैत अछि। ई एकल पात्रक अवसाद मात्र नहि; प्रतीक्षा, नियति आ पराधीनताक सामूहिक अनुभूतिक संकेत मानल जा सकैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। उच्चारणक अतिशयोक्ति करुण-रसक उपकरण अछि; एकरा नारी-विरोधी शाब्दिक सिद्धान्त मानि पढ़नाइ असावधान पाठ होएत।

अन्तर्पाठीय सम्बन्ध। एहि पदक नारी-जन्म सम्बन्धी प्रश्नकें पद ३५क गृह-नियन्त्रण आ पद ५७क प्रतिरोधक संग पढ़ला पर स्त्री-वेदनाक आन्तरिक विविधता खुलैत अछि।

पद ८ | मूल पृ. १९ | परनिन्दा आ प्रेमक रक्षा

विषयक निकट-पाठ। दुरजनक वचन प्रेमक निजी संसारमे बाहरी हस्तक्षेपक रूपमे अबैत अछि। नायिका अफवाहसँ उपजल संशय, निष्ठा आ लज्जाक एक जटिल मानसिक दृश्य बनबैत छथि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। ‘दुरजन’ सामाजिक दृष्टिक प्रतिरूप अछि। पदक मूल कथन आ पाठ-अर्थमे बुझाओल घटनाक्रमक बीच अन्तरक जाँच उचित।

पद ९ | मूल पृ. २० | विदेश गेल प्रिय आ प्रतीक्षा

विषयक निकट-पाठ। प्रियक विदेश-गमन नायिकाक समयबोधकेँ बदलि दैत अछि। राति, निद्रा आ विरहक विस्तारित अन्तराल द्वारा अनुपस्थितिक बोध मूर्त बनैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। ‘विदेस’ एक भौगोलिक ठामसँ बढ़ि भावनात्मक दूरीक प्रतीक अछि; अन्धकार आ एकान्त करुण संवेदनाकेँ घनत्व दैत अछि।

अन्तर्पाठिय सम्बन्ध। पद १८ आ ३४क परदेश-विरह संग तुलना करलासँ ‘देश’क भूगोल भावक दूरीमे केना बदलैत अछि, बुझब सहज होइत अछि।

पद १० | मूल पृ. २१ | मालिनि आ मधुकरक रूपक

विषयक निकट-पाठ। फूल, मधुकर आ मकरन्दक सहायतासँ आकर्षणक संकेत बनैत अछि। प्रकृतिकेँ कथोपकथनक माध्यम बनाक कवि मानवीय संकोच आ कामना दूनू व्यक्त करैत छथि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। रूपकक अर्थ स्थिर नहि: मधुकर प्रिय सेहो भऽ सकैत अछि, चञ्चलता सेहो। संपादकीय अर्थक संग वैकल्पिक व्यञ्जना खोलब आवश्यक।

पद ११ | मूल पृ. २२ | रूपक क्षणभंगुरता

विषयक निकट-पाठ। ‘जीवन-रूपी रतन’क भाव जीवनक अल्पता आ प्रेमक दुर्लभ अवसरकेँ जोड़ैत अछि। नायिका सम्बन्धक सार्थकताकेँ अस्थिर देह आ नश्वर समयक पृष्ठभूमिमे देखैत छथि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। ‘रतन’ आ ‘चारि दिन’ मूल्य आ कालक टकराहट रचैत अछि; एहि विरोधमे जीवनदर्शन आ श्रृंगार एकत्र होइत अछि।

पद १२ | मूल पृ. २३ | सरोवर-घाट आ गोपनीय भेंट

विषयक निकट-पाठ। सरोवरक घाट, निकटता आ आवागमनक प्राकृतिक स्थल प्रेमक सार्वजनिक-निजी सीमा बनैत अछि। नायिकाक व्यवहारमे सतर्कता आ साहसक एकेसमय उपस्थिति देखाइत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। स्थल-बिम्ब केवल सजावट नहि, कथाक सम्भावित मंच थिक। प्रवाहमान पद-लय गुप्त भेंटक व्यग्रताकें पुष्ट करैत अछि।

पद १३ | मूल पृ. २४ | एकसरि नायिका आ विरह

विषयक निकट-पाठ। प्रियक अनुपस्थितिमे नायिकाक एकसरिपन जीवनक वस्तुगत सूनापन बनैत अछि। परिजन आ अन्तरंग सहचारिणीक उपस्थिति भएो प्रेमक अभाव भरल नहि जा सकैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। एकाकीपन आ विरहक व्यञ्जना लम्बा वर्णनक बदला वचनक तीव्रतासँ व्यक्त अछि।

पद १४ | मूल पृ. २५ | रूप, यौवन आ जीवनक सार

विषयक निकट-पाठ। रूप आ यौवनक अस्थिरताक संग प्रेम-सुखक चर्चा अछि। पद शरीरक सौन्दर्यकें सुखक साधन मानैत अछि, मुदा नश्वरताक बोध ओकर गौरव पर प्रश्न उठबैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। ‘जीवन-सार’ सरीख पदावलि कामना आ दार्शनिक विचारकें जोड़ैत अछि; शृंगार-वैराग्यक सरल द्वैत एतय पर्याप्त नहि।

पद १५ | मूल पृ. २७ | सखी-संवादक गुप्त भाषा

विषयक निकट-पाठ। मुखरा/सखी-संग कथोपकथनमे प्रेमक गोपन व्यथा विस्तार पबैत अछि। सखी श्रोता, आलोचक आ सम्भावित सहायक तीनू भूमिकामे उभरैत छथि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। सम्बोधनक आवृत्ति नाट्यात्मकता उत्पन्न करैत अछि; पात्रक कथनक ‘हम’ आ कविक अन्तिम हस्ताक्षर-स्वर अलग स्तरक अछि।

पद १६ | मूल पृ. २८ | प्रकृति-विहीन देशक कल्पना

विषयक निकट-पाठ। जहाँ पिक आ मधुकर नहि, ओहन देशक चित्र प्रेमक रसमय वातावरणक अभाव सूचित करैत अछि। प्राकृतिक ध्वनि मनक आह्लाद आ विरहक प्रतिपक्ष दुनू थिक। शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। पिक-मधुकरक युग्म परम्परागत श्रृंगार-संकेत अछि; एहि पाठमे ओकर निषेध अर्थ-निर्माणक प्रमुख विधि बनैत अछि।

पद १७ | मूल पृ. २९ | धैर्य, विरह आ मनक अस्थिरता

विषयक निकट-पाठ। मात्र धैर्यक उपदेशसँ विरहक घाव नहि भरैत अछि। पदमे मनक चञ्चलता, समयक भार आ प्रेमक आत्मनिष्ठ आग्रह एकठाम देखाइत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। नकारात्मक वाक्य आ प्रेरणासूचक क्रिया भावात्मक तनाव रचैत अछि; सरल 'प्रेम में धैर्य' व्याख्यासँ पदक द्वन्द्व दबि जाइत अछि।

पद १८ | मूल पृ. ३० | परदेशी पिआक नाम पुकार

विषयक निकट-पाठ। परदेश बसल प्रियकेँ स्मरण करैत नायिका जीवनक प्रत्येक क्रियामे अभाव अनुभव करैत छथि। बाह्य ऋतु आ भीतरी विरह एक-दोसरकेँ बढ़बैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। आह्वानात्मक शैलीक कारण ई पद गान-परम्परामे उपयुक्त; रूपक आ आत्मसम्बोधनक अन्तर पाठमे चिन्हल जाय।

अन्तर्पाठिय सम्बन्ध। पद ९ आ ५०क विरह-राति सङ्गक संवादमे नायिकाक समय-अनुभव एक लगातार रूपक-प्रवाह बनैत अछि।

पद १९ | मूल पृ. ३२ | कुल-गौरव बनाम अनुराग

विषयक निकट-पाठ। कुल, शील आ सामाजिक प्रतिष्ठाक उल्लेख प्रेम-सम्बन्ध पर बाह्य नियन्त्रण सूचित करैत अछि। नायिका इच्छा आ लोकाचारक असंगतिकेँ चुनौती दैत छथि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। मूल्यसूचक शब्दक श्रृंखला पाठक सोझाँ सामाजिक संरचनाकेँ उपस्थित करैत अछि; पात्रक प्रतिरोध संकुचित नैतिक शिक्षा नहि।

पद २० | मूल पृ. ३४ | निर्जन भेटक लघु नाटक

विषयक निकट-पाठ। एकान्तमे प्रियसँ भेंट, आकस्मिक संकोच आ शारीरिक समीपता घनिष्ठ मनोविज्ञानक दृश्य रचैत अछि। प्रेमकेँ स्थिर भाव नहि, चाल-ढाल आ क्षणिक प्रतिक्रियाक प्रक्रिया रूपमे देखाओल गेल अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। गतिसूचक क्रिया आ संवाद-संकेत पदकेँ रंगमंचीय बनबैत अछि; पाठ-अर्थमे देल घटना-विस्तार मूल संकेतसँ आगाँ जा सकैत अछि।

पद २१ | मूल पृ. ३५ | चन्द्र-बिम्ब आ प्रेमक प्रतिज्ञा

विषयक निकट-पाठ। गगनक चन्द्रमा, प्रकाश आ अन्धकारक संकेत प्रेमक आन्तरिक उजासकेँ व्यापक वातावरणसँ जोड़ैत अछि। प्रेमी-प्रेमिकाक संवाद जीवनक सार्थकता पर विमर्श बनैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। ‘कलानिधि’क काव्यरूढ़ि निज अर्थक संग नब सम्बन्ध पबैत अछि; पदमे आलंकारिकता आ लोक-वचन एकत्र अछि।

पद २२ | मूल पृ. ३६ | मधुर वचन, कठोर मानस

विषयक निकट-पाठ। बचनकेँ मधु आ मनकेँ कुलिश कहबाक विरोधाभास प्रेमक विश्वासघातक प्रमुख आकृति थिक। नायिकाक अनुभवमे मोहक भाषा आ असंवेदनशील व्यवहारक दूरी उघाड़ होइत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। मधु-कुलिश विरोधक तीव्रता अल्प शब्दमे चरित्रांकन करैत अछि; ई पद वाचिक अलंकारक स्पष्ट उदाहरण।

पद २३ | मूल पृ. ३८ | अँगना, दृष्टि आ निकटता

विषयक निकट-पाठ। अँगनक घरेलू स्थल प्रेमक देखादेखीक रंगमंच बनि उठैत अछि। आँखिक चेष्टा, हाव-भाव आ सकुचाहट संवादक पूर्ववर्ती भाषा बनेल अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। स्थानीय घरेलू बिम्बक कारण पदक मैथिलीपन उभरैत अछि; ‘अँगना’ सामाजिक दृष्टि आ निजी चाह दुनूक भेट-स्थल थिक।

पद २४ | मूल पृ. ३९ | जनम-सफलता आ अनुराग

विषयक निकट-पाठ। मानवीय जन्मक सफलता प्रेमक अनुभवसँ जोड़ल गेल अछि। अनुराग प्रेमीकेँ अपूर्णतासँ पूर्णता दिस बढ़यबाक शक्ति बनैत अछि, किन्तु असफल आशाक आशंका सेहो संग चलैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। संक्षिप्त कथनमे महत्त्वपूर्ण अस्तित्व-दृष्टि निहित अछि; पाठक प्रेमक वैयक्तिक आ सार्वजनीन अर्थ अलग करथि।

पद २५ | मूल पृ. ४० | 'अहे सखि'क आर्तनाद

विषयक निकट-पाठ। सखीकेँ बारम्बार पुकारि नायिका अपन पीड़ा खोलैत छथि। प्रेमक प्रतीक्षा, शरीरक व्याकुलता आ समयक असह्यता ओकर आत्मकथनकेँ तीक्ष्ण करैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। आह्वान पदक ध्वन्यात्मक केन्द्र अछि; पदक गेयता केवल छन्दसँ नहि, सम्बोधनक पुनरावृत्तिसँ सेहो बनैत अछि।

पद २६ | मूल पृ. ४१ | प्रिय-स्मृति आ आत्मविस्मृति

विषयक निकट-पाठ। प्रियक अभावमे मन स्थिर नहि रहैत अछि। अपन देह, घर आ दैनिक कार्य अर्थहीन प्रतीत होइछ; स्मृति वर्तमानक ऊपर छा जाइत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। उपस्थित-अनुपस्थितक द्वन्द्व ध्वन्यात्मक पुनरुक्ति द्वारा मुखर होइत अछि; 'कनक' सरीख सौन्दर्य संकेतक प्रसंगानुकूल अर्थ आवश्यक।

पद २७ | मूल पृ. ४२ | तपित मन आ जीवनक ताप

विषयक निकट-पाठ। तपनक बिम्ब भावनात्मक जलनकेँ शरीरक तापमे परिणत करैत अछि। नायिकाक विकलता ऋतुक अनुभूतिसँ एकाकार होइत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। ऋतु, ताप आ कामनाकेँ जोड़ब विद्यापतिक शृंगारिक लाक्षणिकताक एक रूप अछि; पदक तापकेँ मात्र प्रकृतिक वर्णन माननाइ अधूरा।

पद २८ | मूल पृ. ४३ | अनुराग आ आत्मसमर्पण

विषयक निकट-पाठ। नायिकाक अभिलाषा आ सामाजिक नियन्त्रण आपसमे टकराइत अछि। प्रेमक जोखिम उठबैतहुँ पात्र अपन भावनाकेँ अस्वीकार नहि करैत छथि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। प्रत्यक्ष सखी-संवाद आ अन्तिम कवि-वचन पदक दू स्वर बनबैत अछि; अनुकूल अर्थक तर्ज पर पहिल स्वरकेँ दबाओल नहि जाय।

पद २९ | मूल पृ. ४४ | 'ए हरि'क पुनःपुकार

विषयक निकट-पाठ। प्रिय/हरिक पुनःपुकार धैर्यक टूटन देखबैत अछि। विरहमे मनक लाग-बुझा आ स्मरण पुनरावृत्तिक कारण पीड़ा बारम्बार आरम्भ होइत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। एके सम्बोधनक पुनरुक्ति प्रार्थना आ प्रणयक सीमा धुँधला करैत अछि; भक्तिपरक आ शृंगारिक अर्थ दूनू सम्भावना राखैत अछि।

पद ३० | मूल पृ. ४५ | बरखा आ विरहक विरोध

विषयक निकट-पाठ। वर्षाक आगमन बाह्य संसारमे नवीनता आनैत अछि, मुदा प्रियसँ अलग नायिकाक दुःख बढ़ैत अछि। बरखा आनन्दक ऋतु होइतहुँ विरहिणीक लेल प्रतिकूल समय बनैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। ऋतु-विपर्यय पदक केन्द्रीय कलात्मक युक्ति अछि; ध्वनि आ झरनाक संकेत गेयताकेँ पुष्ट करैत अछि।

पद ३१ | मूल पृ. ४६ | सखीकेँ दुःखक निवेदन

विषयक निकट-पाठ। नायिका अपन पीड़ा प्रियक सीधा सोझाँ नहि, सखीक समक्ष रखैत छथि। एहि मध्यस्थतासँ प्रेम-संवादक स्त्री-समुदायगत संरचना स्पष्ट होइत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। 'सखि हे'क सम्बोधनक लय भाव-वहन करैत अछि; उद्गार-विरामक संयोजन करुण व्यञ्जना रचैत अछि।

पद ३२ | मूल पृ. ४७ | 'माधव हमर' आ विरहावस्था

विषयक निकट-पाठ। माधवक स्मरण नायिकाक दिनचर्याकेँ पीड़ा-प्रधान बनबैत अछि। मनक चित्तवृत्ति आ अश्रुक वर्णन सँ प्रेमक अनुपस्थिति एक स्थायी मानस-अवस्था बुझाइत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। 'माधव'क नाम लौकिक प्रेमी आ दैवी नायक दूनूक सम्भावना रखैत अछि; प्रसंगक कथक-स्वर बुझि अर्थ करब उचित।

पद ३३ | मूल पृ. ४८ | पत्र, समाचार आ आशा

विषयक निकट-पाठ। प्रियक समाचारक चाह नायिकाक उत्कण्ठाकेँ भाषित करैत अछि। पत्र/सन्देशक कल्पना दूरीकेँ कम करबाक जतन थिक, मुदा निश्चयक अभाव छटपटी बढ़बैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। सन्देश-मोटिफक प्रयोग गीतिकाव्यकेँ कथात्मक गति दैत अछि; पंक्ति-समाप्तिक ध्वनि अपेक्षाक लम्बाई सूचित करैत अछि।

पद ३४ | मूल पृ. ४९ | दूरदेश गेल प्रियक दैन्य

विषयक निकट-पाठ। ‘मोर पिअतम सखि गेल दूर देस’क भावमे घरक रिक्तता, रातिक विस्तार आ प्रेमक निराशा प्रकट अछि। बाहरी लोक चलैत रहितो नायिकाक आन्तरिक समय थमि जाइत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। विस्तृत पदरचनामे अनेक दृश्य एक प्रेमावस्थाक क्रम बनबैत अछि; सम्पादकीय व्याख्या एहि क्रमकेँ गद्य कथा बनबैत समय मूल पदक खुलापन सीमित करि सकैत अछि।

अन्तर्पाठीय सम्बन्ध। पद ९क संक्षिप्त विरहक मुकाबिल ई पद अधिक विस्तृत घटना-क्रमसँ अभावकेँ जीवन-परिस्थितिमे रूपान्तरित करैत अछि।

पद ३५ | मूल पृ. ५१ | सासु, पहरा आ स्त्रीक गोपनता

विषयक निकट-पाठ। जरठ सासुक उपस्थिति प्रेमिका पर पारिवारिक नियन्त्रणक रूपमे उभरैत अछि। गोपनीय मिलनक सम्भावना घरक निगरानीसँ जूझैत अछि, जे श्रृंगारिक गीतमे सामाजिक यथार्थकेँ प्रवेश करबैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। घरक पात्र-संरचना नाटकीय तनाव रचैत अछि; स्त्रीक इच्छाकेँ केवल छिपबाक चालाकी नहि, नियमनक प्रतिक्रिया मानि पढ़ल जाय।

पद ३६ | मूल पृ. ५२ | गुण-गणना आ प्रियक स्मरण

विषयक निकट-पाठ। प्रियक रूप-गुणक स्मरण विरहक प्रतिकार करबाक प्रयास थिक। गुणक संख्या अथवा अतिशयोक्तिपूर्ण गणना भावक अपारता संकेत करैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। गणनात्मक विधान अलंकारिक विस्तार बनैत अछि;
समीक्षामे अंकक शब्दार्थ आ भावार्थकेँ अलग रखनाइ आवश्यक।

पद ३७ | मूल पृ. ५४ | दिशा आ करुण प्रतीक्षा

विषयक निकट-पाठ। उत्तर, दक्षिण, पवन आ पथक संकेतद्वारा प्रतीक्षा भौगोलिक विस्तार पबैत अछि। प्रियक दिशामे दृष्टि धए रहबाक चेष्टा मनक अस्थिरताकेँ स्पष्ट करैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। दिशा-संकेत भौतिक अवस्थाकेँ भावनात्मक नक्सामे बदलैत अछि; श्रृंगार-करुणक संगम विशेष।

पद ३८ | मूल पृ. ५५ | माधवक संगी अपन परछाई

विषयक निकट-पाठ। नायिका अपन दुःखक प्रतिध्वनि देह, दृष्टि आ स्मृतिमे अनुभव करैत छथि। माधवक अनुपस्थिति यथार्थ आ कल्पनाक बीचक दूरी घटा दैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। संवादक अन्तरंगता आ स्मृतिक आवर्तनक कारण पद आत्मपरक गीत बनैत अछि; एकरा बाह्य कथाक मात्र अंश नहि समझल जाय।

पद ३९ | मूल पृ. ५६ | प्रेम-गुणक अनुपमत्व

विषयक निकट-पाठ। प्रेमक गुणक बखान नायिकाक मनमे प्रियक विशिष्ट स्थान देखबैत अछि। सामान्य तर्कक सीमा पर प्रेमक अनुभवक आग्रह अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। अतिशयोक्ति प्रेमक स्वतन्त्र मूल्य निर्धारण करैत अछि; निष्कर्षक संग अनुभवजन्य संशयक उपस्थिति सेहो जाँचनीय।

पद ४० | मूल पृ. ५७ | पिअक आगमनक पूर्वाभास

विषयक निकट-पाठ। प्रियक आगमनक सम्भावना नायिकाक चेष्टा, घर-तैयारी आ मनक चालमे परिवर्तन आनैत अछि। आशाक एक झलक देह-भाषाकेँ ऊर्जा दैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। क्रियाक्रमक अनुक्रम पदकेँ सूक्ष्म दृश्यकाव्य बनबैत अछि; अनुपस्थिति आ सम्भावित मिलनक विपरीत संवेदना संग-संग चलैत अछि।

पद ४१ | मूल पृ. ५८ | मिलन-दृश्य आ नयन-सम्वाद

विषयक निकट-पाठ। प्रिय आ प्रेयसीक चेष्टा, दृष्टि आ संकेतक माध्यमसँ प्रणय व्यक्त होइत अछि। लज्जा आ आकर्षणक द्वन्द्व स्थिर भावसँ अधिक नाटकीय होइत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। विविध शारीरिक विवरणक विन्यास ‘देखाएब’क काव्य-योजना थिक; पात्रक सक्रिय सहमतिक बोध उपेक्षित नहि करब।

पद ४२ | मूल पृ. ५९ | प्रथम समागमक अनभिज्ञता

विषयक निकट-पाठ। प्रथम मिलनमे संकोच, कौतूहल आ आशंकाक मिली-जुली अवस्था अछि। अनुभवक कमीकें कवि नायिकाक भावनात्मक जटिलताक रूपमे पढ़ैत छथि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। मिलनक वर्णनमे संकेतात्मकता महत्त्वपूर्ण; सभ विवरणकें प्रत्यक्ष घटना मानि विस्तार करब आवश्यक नहि।

पद ४३ | मूल पृ. ६० | सपनामे प्रिय-दर्शन

विषयक निकट-पाठ। स्वप्नक आगमन विरहक क्षणिक भरपाइ करैत अछि। जागरणक बादक रिक्तता स्वप्नक सुखकें आरो पीड़ामय बना दैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। ‘सपना’ यथार्थक प्रतिलिपि नहि, इच्छाक संरचना थिक; काल-परिवर्तन एहि पदक महत्त्वपूर्ण शिल्प।

पद ४४ | मूल पृ. ६१ | घर, याद आ सखीक सहारा

विषयक निकट-पाठ। घरक दैनन्दिन दृश्य नायिकाक प्रेम-व्यथाक आश्रय बनैत अछि। सखीसँ कहल बात आत्मबोधक रूप लैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। घरेलू सम्बोधनक सरलता पदकें लोकगीत-सदृश बनबैत अछि; सम्पादकक हिन्दी-मिश्रित गद्यर्थक तुलना मूल मैथिली-मुहावरासँ करब जरूरी।

पद ४५ | मूल पृ. ६२ | वन, नगर आ आवागमन

विषयक निकट-पाठ। कुञ्ज अथवा नगरक स्थानक चर्चा भेंटक सम्भावना आ विछोहक डरकें द्योतित करैत अछि। प्रेमक संसार निजी रहितहुँ मार्ग, यात्रा आ समयसँ आकार पबैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। स्थान-परिवर्तन नायिकाक मनक परिवर्तनक प्रतीक बनैत अछि; पथक रूपक बहुस्तरीय पढ़ब योग्य।

पद ४६ | मूल पृ. ६३ | प्रेमक बाधा आ आत्मसंयम

विषयक निकट-पाठ। विरहमे प्रत्यक्ष बाधा नायिकाकेँ आत्मसम्भाल आ धैर्यक कठिन अभ्यास दिस दियबैत अछि। प्रियक स्मृतिसँ बचबाक प्रयास उलटा स्मृतियेकेँ तीव्र करैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। निषेधात्मक वाक्यक आवृत्ति विरोधाभास रचैत अछि; ई निराशाक शिथिल बयान नहि, सक्रिय मनःसंघर्ष थिक।

पद ४७ | मूल पृ. ६४ | पावक-शिखा आ दग्ध हृदय

विषयक निकट-पाठ। अग्नि-शिखाक बिम्ब प्रेमजन्य ज्वलनक तीक्ष्णता सोझाँ अनैत अछि।

नायिकाक देह-मनकेँ एकरे तापमे चित्रित करुण आ कामना दूनूकेँ संग करैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। अग्नि-बिम्बक प्रत्यक्ष आ व्यञ्जित अर्थ भिन्न; लोक-उक्ति आ काव्य-रूपक बीच आवाजाही पदक सौन्दर्य अछि।

पद ४८ | मूल पृ. ६५ | अतिशय विरह आ जीवन-संशय

विषयक निकट-पाठ। प्रियक वियोगमे जीवन रखबाक इच्छा क्षीण होइत देखाइत अछि। प्राण, स्मृति आ मिलनक असम्भवता पाठकेँ करुण चरम पर लऽ जाइत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। गहन अतिशयोक्ति भावक नाट्यरूप थिक; एकरा कथकक वास्तविक क्रियाक योजनाक रूपमे नहि पढ़ब चाही।

पद ४९ | मूल पृ. ६६ | माधवसँ प्रत्यक्ष शिकायत

विषयक निकट-पाठ। प्रेमीकेँ सीधा सम्बोधित कऽ नायिका अपने दुःखक उत्तरदायित्व सेहो प्रिय पर रखैत छथि। आक्रोशक भीतर अनुराग बनल रहैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। प्रत्यक्ष सम्बोधन ‘प्रिय’केँ उपस्थित करबाक वाचिक उपाय अछि; प्रश्नक क्रमसँ शिकायत आ स्नेहक द्वैत स्पष्ट।

पद ५० | मूल पृ. ६७ | जीवन-रातिक विस्तार

विषयक निकट-पाठ। राति भरि जीवित रहलोक पीड़ा, प्रातःक प्रतीक्षा आ मनक अस्थिरता एहि पदक केन्द्रीय काल-अनुभव अछि। रातिक विस्तार विरहक मात्रात्मक नहि, गुणात्मक अनुभूति थिक।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। समय आ अन्धकारक साम्य गीतक भाव-सूत्र अछि; रचनाक ध्वनि-आवृत्ति धैर्यहीनताकें बढ़बैत अछि।

अन्तर्पाठिय सम्बन्ध। पद ९, १८ आ ३४ संग एहि पदक अध्ययन 'एक राति' आ 'एक जीवन'क अनुभवगत दूरीकें उघाड़ करैत अछि।

पद ५१ | मूल पृ. ६८ | बसन्तक आगमन आ नवजीवन

विषयक निकट-पाठ। बसन्तक रंग, पवन आ नगर-प्रकृतिक नूतनता प्रेमक पुनर्जागरणक वातावरण बनबैत अछि। बाहरी उल्लाससँ आन्तरिक कामनाक सम्बन्ध एहि पदक आधार अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। वसन्त-वर्णन एकटा ऋतु-रिपोर्ट नहि, उद्दीपन-विभावक काव्य-विन्यास अछि; प्राकृतिक वस्तुक गतिशील उल्लेख पदक संगीतात्मकता बढ़बैत अछि।

पद ५२ | मूल पृ. ६९ | अनुराग, उपालम्भ आ वचन

विषयक निकट-पाठ। प्रियक हृदय आ व्यवहारक अन्तर नायिकाक प्रश्न बनैत अछि। निष्कपट प्रेमक अपेक्षा मनक दुख, आशा आ विवशताकें मुखर करैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। लाक्षणिक वर्णनक संग आत्मवचन अछि; शब्दार्थ पाठमे देल अनेक पर्यायक बीच भावानुकूल अर्थ चुनब पाठालोचनक काम।

पद ५३ | मूल पृ. ७० | नजर, उपेक्षा आ आत्मसम्मान

विषयक निकट-पाठ। प्रियक रूप आ व्यवहारक तीक्ष्ण निरीक्षण नायिकाक कष्ट उजागर करैत अछि। उपेक्षासँ उत्पन्न आत्मसम्मान प्रेमकें सरल समर्पण होएबासँ रोकैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। प्रतिप्रश्न, आदेश आ कथनक आवृत्ति आन्तरिक बहसक रूप दैत अछि; 'अनुरोध' आ 'धिक्कार'क सीमा चञ्चल अछि।

पद ५४ | मूल पृ. ७२ | माधव, नयन आ अधीरता

विषयक निकट-पाठ। माधवक अनुपस्थितिमे दृष्टिक प्रतीक्षा शारीरिक थकान बनि जाइत अछि। नायिका अपन मनकेँ प्रियसँ हटेबाक असम्भव प्रयास करैत छथि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। नयन आ हृदयक संगत पदक दृश्य-बिम्ब रचैत अछि; सखी-संवाद आ कवि-मुद्राक अलग भूमिकापर ध्यान दी।

पद ५५ | मूल पृ. ७३ | दक्षिण पवन आ अनुकूल ऋतु

विषयक निकट-पाठ। दक्षिण पवन, फूल आ ऋतु-सुखक उल्लेख नायिकाक मनमे उलटा वेदना जगा दैत अछि। प्रकृतिक अनुकूलता प्रियक अनुपस्थितिमे प्रतिकूल भाव बनि जाइत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। पवनक दिशा महत्त्वपूर्ण उद्दीपन-विभाव; बसन्त आ विरहक विरोध पदक भावप्रवण रचना करैत अछि।

अन्तर्पाठीय सम्बन्ध। पद १६क पिक-मधुकर आ पद ३०क वर्षा-बिम्ब संग तुलनामे प्रकृति कथकक स्थितिअनुसार सुख अथवा दुःखक शक्ति बनैत अछि।

पद ५६ | मूल पृ. ७४ | 'सरसिज बिनु सर'क दृष्टान्त

विषयक निकट-पाठ। कमलविहीन सरोवर आ प्रेमविहीन जीवनक तुलना सम्बन्धक आन्तरिक अपरिहार्यता व्यक्त करैत अछि। कर्तव्य, सहारा आ स्नेहक बन्धन एक-दोसरसँ सम्बद्ध होइत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। क्रमिक दृष्टान्त अलंकारक माध्यमे अमूर्त शून्यताकेँ ठोस बनाओल गेल अछि; एकर समस्त तुलना एकहि शाब्दिक अर्थमे सीमित नहि।

पद ५७ | मूल पृ. ७६ | घर-संस्कारक प्रतिरोध

विषयक निकट-पाठ। नायिका घर छोड़ि पराए आँगन नहि रहबाक संकल्पक माध्यमसँ अपन अस्मिता घोषित करैत छथि। वैवाहिक/पारिवारिक दबाबक बीच हुनकर प्रतिकारक भाषा विशेष रूपसँ ध्यान योग्य अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। 'हम नहि'क आवृत्ति निषेधकेँ स्वायत्तताक काव्य-रूप बनबैत अछि; पात्रक स्पष्ट स्वरकेँ सम्पादकीय मर्यादा-उपदेशक भीतर विलीन नहि करब।

अन्तर्पाठीय सम्बन्ध। पद ३५क गृह-निगरानीक बरक्स एतय नायिकाक निषेधात्मक घोषणा भाषिक रूपसँ अधिक प्रत्यक्ष अछि।

पद ५८ | मूल पृ. ७८ | अग्नि आ विवेकक परीक्षा

विषयक निकट-पाठ। अग्निक उल्लेख इच्छा, भय आ कष्टक संवेदनात्मक तीव्रता रचैत अछि। नायिका सामाजिक जोखिम बुझैत छथि, तथापि अनुरागक आकर्षणक संग निर्णायक टकराहट जारी रहैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। प्रतिकूल रूपक पाठमे आत्ममूल्यांकनक साधन; कठोर उद्गारक भाषिक अतिशयोक्तिकेँ शाब्दिक आचरणक विवरण माननाइ ठीक नहि।

पद ५९ | मूल पृ. ८० | गौरीक अँगना आ शिव-विवाहक हास्य

विषयक निकट-पाठ। गौरीक आँगन, वर-परिवेश आ परिवारक प्रतिक्रिया द्वारा शिव-संसार लोक-हास्यक रंग ग्रहण करैत अछि। अध्यात्म एतय घरेलू प्रसंगमे अवतरित होइत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। शिव-गौरीक मिथकीय पात्र, हँसी आ घरक परिचित भाषा एक संग आओत अछि; शृंगार खण्डमे एकर उपस्थिति वर्गीकरणक जटिलता खोलैत अछि।

अन्तर्पाठीय सम्बन्ध। पद ६०–६६ पढ़िने ई बुझाइत अछि जे लोकहास्य शिव-गौरी प्रसंगकेँ स्त्री-अनुभवक क्षेत्रमे स्थापित करैत अछि।

पद ६० | मूल पृ. ८१ | भोगिनिआक दुनियाँ आ विवाह-विडम्बना

विषयक निकट-पाठ। मातृसम्बोधन आ विवाहक परिस्थितिकेँ देखबैत पद लोक-गृहस्थीक सुख-दुःखक विडम्बना सोझाँ अनैत अछि। ऊँच पौराणिक कथ्य स्त्रीक व्यवहारिक चिन्तामे बदलि जाइत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। बोलचालक वाक्य, व्यंग्य आ अन्तरंग सम्बोधन लोकनाट्यक आभास उत्पन्न करैत अछि; केवल भक्ति-पद कहनाइ अपर्याप्त।

अन्तर्पाठीय सम्बन्ध। पद ५९क आँगन आ पद ६२क विवाह-विडम्बना एहि लोक-परिवेशकेँ लगातार विकसित करैत अछि।

पद ६१ | मूल पृ. ८२ | माए-सँ निवेदन आ सामाजिक असहजता

विषयक निकट-पाठ। मातृक समक्ष विवाह, परिवार आ प्रिय-संबन्धक असहजता व्यक्त होइत अछि। सहारा ताकैत स्त्रीक आवाज आ सामाजिक रस्मक दबाबक बीच तनाव अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। कथक-स्वरक बदलाव देखबाक चाही: लोक-कथा, संवाद आ कवि-छाप अलग स्थान रखैत अछि।

अन्तर्पाठीय सम्बन्ध। पद ५७क निजी प्रतिरोध आ पद ६२क सामाजिक व्यंग्यक मध्य ई मातृसम्बोधनक स्वरतत्त्व जोड़ैत अछि।

पद ६२ | मूल पृ. ८४ | विवाहक अनुचित मेल पर व्यंग्य

विषयक निकट-पाठ। उम्र, रूप, परिवार आ सामंजस्यक प्रश्न पदमे हँसीक माध्यमसँ उठैत अछि। शिव-पार्वतीक प्रसंग सामाजिक विवाह-व्यवस्थाक आलोचना सेहो बनि सकैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। लोक-उक्ति आ व्यंग्यार्थक आधार पर पात्रक रोष पढ़ल जाय; पौराणिक कथाकेँ सम्पूर्ण ऐतिहासिक घटना रूपमे प्रस्तुत नहि करब।

अन्तर्पाठीय सम्बन्ध। पद ५९, ६० आ ६३ एकहि धार्मिक पात्रसमूहक विविध घरेलू पक्ष देखबैत अछि; ताहि कारणेँ हास्य-रस भक्ति-विरोधी नहि।

पद ६३ | मूल पृ. ८५ | 'बेरी बेरी अरे सिव'क पुकार

विषयक निकट-पाठ। शिवकेँ सम्बोधन, रूप-वर्णन आ आरोप-प्रत्यारोप द्वारा काव्यमे निकटता आ हँसी उभरैत अछि। भक्ति आ लोकजीवन एतय औपचारिक दूरी नहि रखैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। देव-सम्बोधनक पुनरावृत्ति बोलचालक प्रार्थना-गीतसँ मिलैत अछि; देवक मानवीकरण प्रमुख शिल्प अछि।

अन्तर्पाठीय सम्बन्ध। पद ६६क बरद-संबन्धी विनोदक संग मिलि ई पद देवक मानवीकरणक लोककाव्य-परम्परा उघारैत अछि।

पद ६४ | मूल पृ. ८६ | राजाश्रय आ काव्यकर्ताक चेतना

विषयक निकट-पाठ। पदक अन्तमे राजाश्रयी वातावरणक संकेत कविक सामाजिक अवस्थाक साक्ष्य मानल जा सकैत अछि। कवि अपन रचनाकें मानवीय सम्बन्ध, सौन्दर्य आ आश्रयदाता-संसारक बीच स्थापित करैत छथि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। राजा रूपनारायण आदि नामक उपस्थितिक पाठगत जाँच आवश्यक; कवि-मुद्रा अथवा प्रशस्तिकें कविताक पूरा भाव-विषय नहि मानल जाय।

अन्तर्पाठिय सम्बन्ध। पद ८६क स्वप्न-राजसन्दर्भसँ मिलान करैत कवि-प्रशस्ति आ प्रेमगीतक बीचक सांस्कृतिक सेतु पर विचार कएल जा सकैत अछि।

पद ६५ | मूल पृ. ८७ | प्रेमक गुणक अतुलनीयता

विषयक निकट-पाठ। प्रेमक प्रभाव सामान्य बुद्धि आ लाभ-हानिक गणनाकें पार करैत अछि।

प्रेमक गुण गाबैत पद ओकर अनिश्चित, दुःसाध्य आ गहन स्वरूपकें स्वीकार करैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। सारगर्भित कथन नीति-कविताक समीप अछि; सूक्ति आ व्यक्तिगत भावनाकें जोड़बाक विधि ध्यान योग्य।

पद ६६ | मूल पृ. ८८ | शिवक बरद आ हास्य-रस

विषयक निकट-पाठ। बरद, सवारि, पति-पात्र आ रूप-भिन्नताक संकेतसँ शिवक अनूठ छवि बनैत अछि। लोकबोध मिथकीय देवताकें असाधारण वरक हास्यास्पद रूपमे देखैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। विचित्र दृश्य आ विपरीत गुणक संयोजन हास्यक आधार; पद केवल शिवस्तुति नहि, सामाजिक रंगमंचीय पुनर्सृजन थिक।

अन्तर्पाठिय सम्बन्ध। पद ५९-६३क शिव-पार्वती प्रसंगसँ ई हास्यात्मक दृश्य एक संग पढ़ल जाय; अकेले देव-स्तुति कहला पर व्यंग्य छूटि जाइत अछि।

पद ६७ | मूल पृ. ८९ | रत्नभण्डार आ इच्छा-संयम

विषयक निकट-पाठ। समुद्र आ रत्नक उल्लेख भौतिक सम्पत्ति आ मानवीय चाहक तुलना करैत अछि। प्रेम वा सम्मानक मूल्य वस्तुगत धनसँ भिन्न रूपमे उभरैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। उपमान आ प्रश्नात्मक वाणी सूत्रवत् संक्षिप्त अछि; अर्थ निश्चित करबा लेल पाठमे प्रयुक्त सम्बोधनक संदर्भक सावधानी चाही।

पद ६८ | मूल पृ. ९० | देह, मन आ नामस्मरण

विषयक निकट-पाठ। प्रेम-समर्पणक संग हरि/प्रियक नाम पाठक भाव-क्षेत्रकेँ भक्ति दिस खोलैत अछि। देहक अस्थिरता आ नामक टिकाऊ सम्बन्धक बीच द्वन्द्व अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। नाम-पुनरावृत्ति शृंगार आ भक्ति दुनूक भाषामे सम्भव; एकटा अर्थक पक्षमे अन्य सम्भावना अस्वीकार नहि करब।

पद ६९ | मूल पृ. ९१ | कउड़ी-पानक लोकबिम्ब

विषयक निकट-पाठ। कउड़ी आ पानक वस्तुगत लोक-सन्दर्भसँ पद दुनियावी विनिमय, मान आ स्नेहक प्रश्न उठबैत अछि। सामान्य वस्तुक सहायतासँ सम्बन्धक महत्व पर विचार सम्भव बनैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। ‘कउड़ी’ जेहन व्यवहारिक शब्द काव्यभाषाकेँ लोक-अर्थव्यवस्थासँ जोड़ैत अछि; रूपककेँ अक्षरशः व्यापार-विवरण नहि मानल जाय।

पद ७० | मूल पृ. ९२ | चन्दन आ अग्निक विरोध

विषयक निकट-पाठ। चन्दनक शीतलता आ अग्नि/विरहक तापक विपरीत संकेत प्रेमक असह्य पीड़ा व्यञ्जित करैत अछि। संवेदना एतय स्पर्श, गन्ध आ तापक बहु-इन्द्रियात्मक अनुभव बनैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। विरुद्ध अनुभूतिक शृंखला पदमे तीव्र लय उत्पन्न करैत अछि; आध्यात्मिक आ लौकिक पाठ दूनू खुलल रहैत अछि।

अन्तर्पाठीय सम्बन्ध। पद ४७क अग्नि आ पद ५५क पवनक सहायतासँ देहक ताप-शीतक विस्तृत बिम्ब-व्यवस्था बनैत अछि।

५. ‘कवि-मोन’ : पद ७१–१००क पृथक् पाठ-विश्लेषण

एहि खण्डमे “कवि-मोन” अन्तर्गत पद ७१–१००क विवेचन अछि। पद-संख्या आ आरम्भिक पृष्ठाङ्क मूल संग्रहक अनुक्रमक अनुसार राखल गेल अछि।

पद ७१ | मूल पृ. ९३ | सेवा, खेल आ कविक आत्मभाषा

विषयक निकट-पाठ। ‘कवि-मोन’ खण्डक आरम्भमे जीवनक खेल-भाव आ सेवाभावक उल्लेख काव्यकर्ताक नब दृष्टि प्रस्तुत करैत अछि। ई स्वर नायिकाक निजी व्यथासँ हटि अधिक आत्मालोचनात्मक होइत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। खण्ड-परिवर्तनकेँ पूर्ण विषय-विच्छेद नहि मानल जाय; पूर्वक गीतिक लय आ नैतिक संकेत एतहु उपस्थित छथि।

अन्तर्पाठिय सम्बन्ध। एहि आरम्भिक पदक संग पद ८१क नृत्य आ पद ९४क अनित्यबोधकेँ रखला पर ‘कवि-मोन’क भाव-विस्तार देखाइत अछि।

पद ७२ | मूल पृ. ९४ | पुष्पसज्जा आ सौन्दर्यक अस्थिरता

विषयक निकट-पाठ। कुसुमसँ रचल संसार दृश्य-सौन्दर्य, कोमलता आ नाशक सम्भावना एकठाम अनैत अछि। कवि भौतिक सज्जाकेँ रसात्मक आनन्दक संग समयक प्रवाहमे रखैत छथि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। पुष्प बिम्ब दृश्य आ गन्ध दुनूक सम्बन्ध रचैत अछि; सम्पादकीय पद-अर्थमे उपमा आ वास्तविक वस्तुक अन्तर जाँचबाक चाही।

पद ७३ | मूल पृ. ९६ | दिवस-राति आ अस्थायी सुख

विषयक निकट-पाठ। दिनक बीतब, जीवनक संकट आ स्थायी सुखक खोज पदक मुख्य दार्शनिक चिन्ता थिक। युवा देह आ संसारक आधार क्षणिक बुझाइत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। कालबोधक पुनरावृत्ति नीति-गीतक प्रभाव उत्पन्न करैत अछि; तथापि भावक वैयक्तिकता एकरा नीरस उपदेश होएबासँ रोकैत अछि।

पद ७४ | मूल पृ. ९७ | अकस्मात् पीड़ा आ जीवनक अनिश्चितता

विषयक निकट-पाठ। अचानक घटल घटना अथवा भावपरिवर्तनसँ जीवनक असुरक्षा सोझाँ अबैत अछि। कविक भावबोध समयक आकस्मिक परिवर्तनमे मनुष्यक सीमाकेँ देखैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। ‘आजे’ जेहन समयसूचक उद्घोष पदकेँ तुरन्तता दैत अछि; अनुभवक स्तर भौतिक आ सांकेतिक दूनू होएत।

पद ७५ | मूल पृ. ९८ | निद्रा, जागरण आ चेतन संघर्ष

विषयक निकट-पाठ। निद्रा आ जागरणक बीच मनक गति अनुभव-व्यवहारक संकट बनैत अछि। चाहल सुखक तात्कालिकता आ जीवनक विवेकपूर्ण निर्णय एक-दोसरसँ लड़ैत अछि। शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। स्वप्नमूलक बिम्ब आवृत्तिक माध्यमे अर्थ-गहराई अनैत अछि; पदक कथक बदलैत अछि कि नहि, एकर सावधानी चाही।

पद ७६ | मूल पृ. ९९ | कमल, सरोवर आ स्नेह

विषयक निकट-पाठ। सरोवर-कमलक बिम्ब प्रेमक जन्म, नाजुकता आ परिस्थितिजन्य निर्भरताक रूपक बनैत अछि। स्नेहक अभावमे सुन्दरता निष्प्राण बुझाइत अछि। शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। कमल-बिम्ब परम्परागत अछि, मुदा विशेष पाठमे एकर प्रयोजन सम्बन्धक परस्पर-निर्भरता; सौन्दर्यवर्णनसँ अधिक अर्थ मौजूद अछि।

पद ७७ | मूल पृ. १०० | विलास आ चेष्टाक चित्र

विषयक निकट-पाठ। कविक दृष्टि शरीरक हाव-भाव, चाल, दृष्टि आ संकोच पर केन्द्रित होइत अछि। मिलनक संकेतक माध्यमे मनोभाव प्रकट होइत अछि, जे कहबाक बदला दृश्य बनि पाठक लग पहुँचैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। नख-शिख चित्रणक परम्परा संग गेय संक्षिप्तता जुड़ैत अछि; शारीरिक विवरणकें सक्रिय दृष्टि आ पात्रक अनुभूतिक संग पढ़ब।

पद ७८ | मूल पृ. १०२ | विरहक देहधर्म

विषयक निकट-पाठ। विरह देहपर पड़ल परिणाम रूपमे उपस्थिति जनबैत अछि। व्यक्तिगत स्मृति आ समय एक-दोसरकें बढबैत छथि; काव्य-व्यथा केवल मानसिक नहि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। एकरा 'देह-विरह'क रूपमे पढ़ला पर दृष्टि, ज्वर अथवा दुर्बलताक बिम्ब भावार्थ दैत अछि; एकटा अलंकार पर समस्त अर्थ निर्भर नहि।

पद ७९ | मूल पृ. १०३ | नवयौवना राधा आ प्रणय

विषयक निकट-पाठ। राधाक नवयौवन, संकोच आ कृष्ण-प्रेमक संकेत लौकिक शृंगारकें वैष्णव आख्यानसँ जोड़ैत अछि। नायक-नायिकाक सम्बन्ध एतय पूर्वप्रसिद्ध मिथक आ निजी मनःस्थितिक बीच स्थित अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। ‘नव’क आवर्तन ऊर्जा आ ताजगी सृजित करैत अछि; भक्ति आ शृंगारक पाठ परस्पर-विरोधी नहि।

अन्तर्पाठीय सम्बन्ध। पद ८०क नव-वृन्दावन आ पद ८१क नृत्यक संग ई राधा-माधव प्रेमक सांगीतिक-प्राकृतिक संसार बनबैत अछि।

पद ८० | मूल पृ. १०४ | ‘नव वृन्दावन’क प्रकृति-रचना

विषयक निकट-पाठ। ‘नव वृन्दावन नव नव तरुण’सँ आरम्भ होइत नूतनताक आवृत्ति वन, फूल, भ्रमर आ शृंगारक एक समृद्ध दृश्य बनबैत अछि। वृन्दावन बाह्य प्राकृतिक स्थल होइतहुँ आत्मिक आनन्दक प्रदेश बनैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। ‘नव’क अनुप्रासात्मक पुनरावृत्ति रसक गतिशीलता रचैत अछि; दृश्य, गन्ध आ ध्वनिक संगति महत्त्वपूर्ण कलात्मक उपलब्धि।

अन्तर्पाठीय सम्बन्ध। पद ७९क नवयौवना आ पद ८२क कुसुमित कानन समवेत रूपमे ऋतु आ प्रेमक परस्पर रूपान्तरण देखबैत अछि।

पद ८१ | मूल पृ. १०५ | नृत्यक बोल आ श्रव्य शिल्प

विषयक निकट-पाठ। ढिङ्गि-ढिङ्गि आ अन्य ध्वन्यात्मक पदांश नृत्यक छन्दकें भाषामे मूर्त करैत अछि। शरीरक गति, वाद्यक ताल आ सामूहिक उल्लास काव्यक आशयक संग संरचनात्मक तत्त्व बनैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। ध्वनि-नकलकें अर्थहीन अक्षर मानब दोष होएत; मुद्रित पाठसँ परे गायन-नृत्यक जीवित सन्दर्भ आवश्यक।

अन्तर्पाठीय सम्बन्ध। पद ८०क दृश्यात्मक ‘नव’ आ एहि पदक श्रव्य बोल मिलि कविता आ प्रस्तुतिकलाक अन्तरंग सम्बन्ध खोलैत अछि।

पद ८२ | मूल पृ. १०६ | कुसुमित काननक प्रणय-दृश्य

विषयक निकट-पाठ। फूल सँ भरल वनक कुंज प्रेमक सम्भावित मिलनस्थल बनैत अछि। प्राकृतिक गोपनता आ आकर्षणक वातावरण नायिकाक मनोदशासँ मेल खाइत अछि। शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। प्रकृति उद्दीपन-विभावक रूपमे सक्रिय; पुष्पक दृश्य-सौन्दर्यक संग मानवीय आकांक्षा पढ़ल जाय।

पद ८३ | मूल पृ. १०७ | मान आ मिलनक अनुनय

विषयक निकट-पाठ। 'अब'क आग्रहसँ तत्काल निर्णयक दबाब सोझाँ अनैत अछि। प्रियक मान, प्रार्थना आ सम्बन्धक सम्भावित पुनर्स्थापन एक संवेदनशील संवादक विषय बनैत अछि। शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। निषेध आ अनुनयक वाक्य-रचना नाटकीय तनाव करैत अछि; कविक मुद्रा उपसंहारक मुद्रा अछि, संवादक पहिल कथक नहि।

पद ८४ | मूल पृ. १०८ | जागरण आ आनन्दक टकराहट

विषयक निकट-पाठ। मनक ललसा आ बाहरक परिवर्तनक वर्णन भावक चञ्चलता प्रदर्शित करैत अछि। समागमक आशा ओ चित्तक असुरक्षा साथ-साथ उपस्थित अछि। शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। निरन्तर वाक्य-पलट आ सखी-संबोधनक शैली गीतक दृश्यात्मकता बढ़बैत अछि; पदकेँ एकटा स्थिर नीतिवाक्य मानल नहि जाय।

पद ८५ | मूल पृ. ११० | ऋतु-वर्णन आ मधुर आमन्त्रण

विषयक निकट-पाठ। वर्षा अथवा हेमन्तक परिवेशमे प्रियकेँ स्मरण करैत कवि प्राकृतिक लक्षणकेँ प्रेमक भाषा बनबैत छथि। सौन्दर्य आ पीड़ाक मिश्रण ऋतुकेँ भावनात्मक सत्ता दैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। ऋतु-चिह्नक शब्दार्थ आ रसमूलक प्रयोग अलग रखनाइ जरूरी; दृश्य-क्रमक कारण पदमे गति अछि।

पद ८६ | मूल पृ. १११ | स्वप्न, राज-सन्दर्भ आ प्रशस्ति

विषयक निकट-पाठ। स्वप्न-दर्शन आ कविक राजसम्बन्धी संकेत रचनाकारक आश्रय-संसार खोलैत अछि। प्रिय-अनुभवसँ इतर कविक सामाजिक स्थिति आ प्रशस्तिपरक भाषा पाठकें नब दिशा दैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। राजकीय नाम, कवि-मुद्रा आ स्वप्नक कथककें एक समान ‘आत्मकथा’ नहि मानल जाय; बाहरी इतिहाससँ मिलान बिनु तिथि-निर्णय असम्भव।

अन्तर्पाठीय सम्बन्ध। पद ६४क राजाश्रय-संकेत जेकाँ एतहु कविक सामाजिक स्थान कविता-पाठक प्रश्न बनैत अछि; ठोस इतिहासक लेल अलग साक्ष्य अपेक्षित।

पद ८७ | मूल पृ. ११२ | विदाइ आ आत्मनियन्त्रण

विषयक निकट-पाठ। प्रस्थान, वचन आ अपेक्षाक उल्लेख जीवनक अवश्यम्भावी परिवर्तनक पीड़ा व्यक्त करैत अछि। नायिका/कथक प्रियकें रोकबाक वा स्मरणमे राखबाक जतन करैत छथि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। आदेशात्मक कथन आ विनयक समवाय भावक सूक्ष्मता रचैत अछि; खण्ड-नामसँ कथकक लैंगिक परिचय निश्चित नहि होइत।

पद ८८ | मूल पृ. ११३ | रामकथा आ भक्तिपरक काव्य

विषयक निकट-पाठ। राम, देवकुल, कुल-धर्म अथवा राजपात्रक संकेत एहि पदमे विशिष्ट धार्मिक आख्यानक संसार उपस्थित करैत अछि। प्रेम-संग्रहक भीतर राम-स्मरणक उपस्थिति विद्यापतिक काव्य-क्षेत्रक बहुलता देखबैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। मुद्रित पाठमे नाम आ सम्बन्ध पढ़ि भक्तिक विषय पहिचानल जा सकैत अछि; अन्य रामायण-परम्परासँ समानता सिद्ध करबा लेल पृथक पाठसाक्ष्य चाही।

अन्तर्पाठीय सम्बन्ध। शिव-सम्बन्धी पद ५९-६६ आ माधव-पुकार पद ९०क संग एकरा पढ़ला पर संग्रहक धार्मिक बहुलता प्रकट होइत अछि।

पद ८९ | मूल पृ. ११५ | सखी-संवाद आ प्रियक रूप

विषयक निकट-पाठ। 'कि कहब हे सखि' जेहन उद्धोष मनक अव्यक्त वेदनाकेँ स्वर दैत अछि।

प्रियक मुख, दृष्टि आ मिलनेच्छाक वर्णनसँ भावनात्मक निकटता बनैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। प्रश्न-आधारित उद्धाटन आत्मव्याख्याक सीमा दिखबैत अछि; कवि भावक 'अनिर्वचनीयता'क कलात्मक उपयोग करैत छथि।

पद ९० | मूल पृ. ११६ | माधव-स्मरण आ आत्मसमर्पण

विषयक निकट-पाठ। 'अहे अहे माधव'क आवर्तन प्रार्थना आ प्रेम-पुकारक संगम अछि। देहक दुःख, मनक ललक आ कृपाक आशा एक ही सम्बोधनमे समाहित होइत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। ई पद श्रृंगार-भक्ति सीमारेखा पर विशेष महत्त्वपूर्ण; एकटा पाठक भक्ति देखथि, दोसर प्रेमक वियोग—दुनूक आधार पाठमे विद्यमान।

अन्तर्पाठीय सम्बन्ध। पद २९क हरि-पुकार आ पद ९७क विदाइ-दृश्य संग तुलना श्रृंगार-भक्ति संयुक्त संवेदनाकेँ बिस्तार दैत अछि।

पद ९१ | मूल पृ. ११७ | मनक जागरण आ अनित्य संसार

विषयक निकट-पाठ। मनक चञ्चलता, विषय-वासनाक आकर्षण आ आत्मनिग्रहक आग्रह पदकेँ जीवनदर्शनक दिशा दैत अछि। चेतन मनक अपनी अस्थिरताक परीक्षा मुख्य चिन्ता अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। उपदेशात्मक वाक्य आ भावाभिव्यक्ति गीतिकाव्यक भीतर नीति-चिन्तन जोड़ैत अछि; व्याख्यामे अवधारणाक भेद स्पष्ट हो।

पद ९२ | मूल पृ. ११८ | सुन्दरि केँ सम्बोधित प्रश्न

विषयक निकट-पाठ। 'सुन्दरि'क प्रत्यक्ष सम्बोधन प्रेमक अस्थिरता आ वचनक अर्थ पर विचार करैत अछि। प्रेमी-प्रेमिकाक बीच भरोसाक परीक्षा आ असमाप्त आशा मौजूद अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। प्रतिप्रश्नक विधान पाठककेँ न्यायाधीश बनबैत नहि, भावक साक्षी बनबैत अछि; सम्बोधनक परिवर्तन नोट करब आवश्यक।

पद ९३ | मूल पृ. ११९ | उलझल केश आ नयनक सौन्दर्य

विषयक निकट-पाठ। विगलित केश, मुखमण्डल आ अंगक सजीव विवरणसँ रूप-सौन्दर्यक सूक्ष्म चित्र बनैत अछि। दृश्य-माधुर्यक संग पात्रक लज्जा, आवेग आ निजी अस्थिरता लक्षित होइत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। शारीरिक बिम्बक क्रम चाक्षुष सौन्दर्यपरक; रूपकेँ निष्क्रिय वस्तु नहि, प्रेमक व्यवहारमे सक्रिय उपस्थिति रूपेँ पढ़ल जाय।

पद ९४ | मूल पृ. १२० | 'थिर नहि जीवन'क अनित्यबोध

विषयक निकट-पाठ। जीवन, देह आ समयक अस्थिरता पाठमे सीधे उद्घाटित होइत अछि। नश्वरताक प्रश्न प्रेमक अनुभवकेँ व्यापक मानव-दर्शनसँ जोड़ैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। 'थिर नहि'क आवृत्ति दर्शनकेँ स्मरणीय गीतिक वाक्यमे परिणत करैत अछि; संक्षिप्त नीतिक संग भावक व्याकुलता उपस्थित अछि।

अन्तर्पाठीय सम्बन्ध। पद ११ आ ७३क अल्पजीवन-विवेचन आ पद १००क क्षणबोधसँ मिलि ई चयनमे नीतिपरक सूत्र बनैत अछि।

पद ९५ | मूल पृ. १२१ | उदयकालक दृश्य आ प्रिय-स्मरण

विषयक निकट-पाठ। दिवाकरक उदय, पक्षीक चाल आ दिनक प्रारम्भसँ वातावरणक नूतनता रचैत अछि। प्रकृति जागैत अछि, मुदा प्रिय-स्मृति मनकेँ अलग प्रकारक जागरणमे रखैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। उषाकाल दृश्यात्मक आ सांकेतिक दुनू; समय-परिवर्तनक संग भाव-परिवर्तनक सटीक मिलान पदक शिल्प।

पद ९६ | मूल पृ. १२२ | कृपा, करुण पुकार आ आश्रय

विषयक निकट-पाठ। दीन कथकक पुकारमे सहायता आ आश्रयक माँग व्यक्त अछि। प्रेम, भक्ति आ आत्मनिवेदनक स्वर परस्पर मिलि जाइत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। 'अब' जेहन तात्कालिकता आ विनयात्मक क्रिया पाठककेँ कथकक संकटमे प्रवेश दैत अछि; एकर धार्मिक पहचान पाठसाक्ष्य अनुसार राखल जाय।

पद ९७ | मूल पृ. १२३ | हरिक प्रस्थान आ विरह

विषयक निकट-पाठ। हरिक विदा होयब दृश्य-सम्बन्धकें स्मृतिमे बदलि दैत अछि। पदमे रोध, संकोच, प्रतीक्षा आ आत्मविसर्जनक भावनिक क्रम देखाइत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। गति-सूचक क्रिया आ पुनःसम्बोधन विरहकें वर्तमान करैत अछि; मिथकीय नामक कारण लौकिक संवेदनाकें नजरअन्दाज नहि करब।

पद ९८ | मूल पृ. १२४ | दीनता, पृथिवी आ दैवी अभिमुखता

विषयक निकट-पाठ। देह-मनक असमर्थता, नाम-स्मरण आ दैवी आधारक संकेत रचनाकें आध्यात्मिक स्वीकारोक्ति बनबैत अछि। व्यक्ति अपन सीमाकें चिन्हि सहायता ताकैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। सांसारिक असहायता आ दैवी भरोसाक सम्बन्धमे भक्तिरसक सम्भावना बलवती; पदकें समस्त शृंगारक वर्गमे समेटनाइ कठिन।

पद ९९ | मूल पृ. १२६ | बाण, रूप आ प्रेमक आघात

विषयक निकट-पाठ। नयन वा रूपक बाणक बिम्बसँ आकर्षणकें घाव-जेकाँ मूर्त कएल गेल अछि। कवि प्रेमक सुख आ पीड़ा एकहि बिम्बमे रचैत छथि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। ‘बाण’ शृंगार-काव्यक प्रचलित रूपक होइतहुँ एहि पदक मनःस्थितिकें विशेष तीव्रता दैत अछि; प्रत्यक्ष शस्त्रक अर्थ उचित नहि।

पद १०० | मूल पृ. १२७ | अखनक समय आ जीवनक अनित्यता

विषयक निकट-पाठ। अन्तिम पदमे ‘अखन’क तात्कालिकता मनुष्यक अस्थिर जीवन आ समयक क्षणभंगुरताकें सोझाँ रखैत अछि। मनक आसक्ति आ उचित बोधक बीच तनातनी संग्रहकें चिन्तनशील अन्त प्रदान करैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक निरीक्षण। अन्तिम स्थान सम्पादकीय रचना-कौशलक हिस्सा थिक: विरह-सौन्दर्यसँ चलि संग्रह जीवन-दर्शन दिस पहुँचैत अछि; एहि क्रमकें विद्यापतिक स्वयं रचल मूल अनुक्रम मानबाक प्रमाण नहि।

अन्तर्पाठीय सम्बन्ध। पद ७क स्त्री-जन्मक दुःख आ पद ९४क अनित्यबोध जोड़ि देखला पर संग्रहक आरम्भ आ उपसंहार बीच जीवन-दर्शनक संवाद सम्भव अछि।

६. नायिकाक अभिव्यक्ति : अधिकार, संकोच आ प्रतिरोध

६.१ 'स्त्री-मोन'क एकरूपता नहि, अनेकता

प्रेमिकाक वाणी आ विद्यापतिक कवि-वाणी सदिखन एक नहि। पद १-३क अभिमान, पद ९-१८क परदेश-विरह, पद २०-२४क घनिष्ठ भेंट, पद ३५क गृह-निगरानी तथा पद ५७क निषेधक स्वर एकहि 'स्त्री'क अपूर्ण विविध रूप नहि, अपितु अनुभूतिक अनेक ठाम अछि। एहि चयनक आलोचनात्मक उपलब्धि स्त्रीक भाषा केन्द्रमे आनब अछि; सीमा ई जे खण्ड-नामक कारण पाठक स्त्रीकें मुख्यतः वेदना द्वारा परिभाषित करबाक जोखिम लऽ सकैत छथि।

६.२ सखी केवल श्रोता नहि

'सखि'क सम्बोधन स्त्रीक एकल मनकें सामुदायिक संवादमे रूपान्तरित करैत अछि। सखी गोपनीयता, परामर्श, सन्देश, आत्मपरीक्षा आ मिलनक सहयोगक सम्भावित माध्यम अछि। पद १५, २५, ३१, ३३, ३४ आ ८९क तुलनासँ सखी-सम्बोधनक भाषिक कार्यक भिन्नता देखाइत अछि। एहि पदसभकें केवल प्रेमिकाक विलाप कहनाइ सामाजिक संवादक सूक्ष्म संरचना उपेक्षित करब थिक।

६.३ लोकाचारक दाब

कुल-गौरव (१९), घरक अँगना (२३), सासु-पहरा (३५), परिवार-संकोच (५७) तथा शिव-गौरीक विवाहक व्यंग्य (५९-६३) प्रेमक निजी क्षेत्र पर लोकाचारक नियंत्रण देखबैत अछि। जे समाज 'मान' कहैत अछि, स्त्रीक आवाज ओकर भीतर अपन चाह पर विमर्श करैत अछि। तथापि पदक पात्रक स्वरक आधुनिक सिद्धान्तक सीधा घोषणापत्र बनाओल नहि जाय; वाणीमे संकोच, अनुरोध, अनुराग आ प्रतिरोध एकसंग चलैत अछि।

७. रस-संरचना, बिम्ब आ ध्वनि

७.१ विप्रलम्भ-शृंगार आ करुण

परदेशक दुःख (९, १८, ३४), विषम राति (५०), असफल प्रतीक्षा (४३, ५४), अग्निताप (४७) आ पवनक उद्दीपन (५५) विप्रलम्भक अनेक रूप उपस्थित करैत अछि। मुख्य बात ई जे विरह केवल

अनुपस्थिति नहि, समय आ देहक अनुभूतिक पुनर्संरचना थिक: राति लम्बा, घर सून्न, प्रकृति प्रतिकूल आ आत्मसंवाद बेचैन भऽ जाइत अछि। करुण भाव शृंगारक भीतर सँ उत्पन्न होइत अछि, ताहि लेल प्रत्येक पदकेँ एक रसक खाँचामे बाँधनाइ उपयुक्त नहि।

७.२ संयोग, संकोच आ नायिकाक दृष्टि

पद २०, २३, ४१, ४२, ७७ आ ९३ प्रेमक दृष्टि, स्पर्शक संकेत, हाव-भाव, लज्जा आ लुकायल संवादक अनेक दृश्य बनबैत अछि। संयोगक रस एतय खुलेआम उद्घोषणा नहि, सामाजिक जोखिममे साधल सम्बन्धक पल-पल गतिमे प्रकट अछि। एहि पदसभक रचनामे कथात्मकता आ चित्रात्मकता एक-दोसरकेँ बल देइत अछि।

७.३ हास्य, व्यंग्य, स्तुति

शिव-गौरी सम्बन्धी पद ५९-६६ (विशेषतः ५९, ६२, ६३, ६६) प्रेमक गंभीरता बीच हास्यक अनूठ स्थान खोलैत अछि। देवताक विचित्र वेश, बरद आ वैवाहिक व्यवस्था लोक-स्त्रीक निगाहसँ नव अर्थ ग्रहण करैत अछि। ई भक्ति-विरोधी विडम्बना नहि, लोकक धार्मिक निकटताक एक प्रतीक सेहो भऽ सकैत अछि।

७.४ ध्वन्यात्मकता आ गान

गीतक जीवन पदक अर्थसँ बढ़ि ओकर उच्चारणमे अछि। ‘ए हरि’क पुनरुक्ति (२९), ‘अहे सखि’क पुकार (२५), ‘नव’क क्रमिक उच्चारण (८०), नृत्यक ध्वन्यात्मक बोल (८१), ‘थिर नहि’क आवर्तन (९४) ध्वनिकेँ अर्थ-वहनक सक्रिय अंग बनबैत अछि। पाठ-अर्थक गद्य रूप एहन ताल, विराम, अनुरणन आ पुकारक प्रभाव सम्पूर्ण रूपेँ सँभालि नहि सकैत अछि।

७.५ बिम्बक अर्थ-परिवार

मधुकर-पिक (१०, १६), चन्द्र-अँधार (२१), सरोवर-कमल (१२, ५६, ७६), पवन-वर्षा (३०, ५५, ८५), चन्दन-ताप (७०), पुष्प-कुञ्ज-वृन्दावन (७२, ७९, ८०, ८२) पुनरावृत्त बिम्बसभ अछि। एकहि प्राकृतिक वस्तु कखनो आशाक, कखनो विरहक चिह्न बनैत अछि। सन्दर्भ बदलला पर बिम्बक रस बदलैत अछि—ई विद्यापतिक काव्य-शिल्पक विशेष ताकत रूपेँ एहि चयनमे चिन्हित होइत अछि।

८. भाषा, लोकबोध, संवाद आ गेयता

मूल मैथिली पदमे ध्वनि-संक्षेप, रूपान्तरण आ क्षेत्रीय प्रयोगक स्वतंत्र इतिहास होय सकैत अछि। ताहि लेल संकलनक किछु पाठकें आधुनिक मानक वर्तनीक आधार पर ‘सुधारि’ देबाक बदला तकर मौलिकता जोगेनाइ उपयुक्त। ‘शुद्ध मैथिली’मे समीक्षा लिखबाक अर्थ ई नहि जे उद्धृत पुरान पदक रूप जबरदस्ती बदलि देल जाय। पदक मौलिक वाक्यरूप स्रोत-रूपें सुरक्षित रहबाक चाही।

संवादक स्वर पदक काव्यगत अस्तित्व अछि: सखी, माए, प्रिय, हरि, माधव, शिव अथवा कवि स्वयं—सब सम्बोधनक अलग सामाजिक-भावात्मक प्रसंग अछि। पाठ-अर्थमे ‘ओ कहैत छथि’ जोड़ल जाए तऽ ई व्याख्याकारक प्रस्तावना होइत अछि, मूल पदक शाब्दिक पाठ नहि। समीक्षामे ताहि भेदक दृढ़ता राखल गेल अछि।

९. शैव, वैष्णव, लौकिक आ नीतिपरक स्वर

विद्यापतिक एहि संग्रहक भीतर विषयक बहुलता वास्तविक अछि। शैव-लोकपरम्पराक हास्यगीत पद ५९–६६, वृन्दावन आ राधा-माधवक काव्य पद ७९–८२, आध्यात्मिक आ प्रेमिक पुकारक मिलन पद २९, ९०, ९७, रामसम्बन्धी सन्दर्भ पद ८८, आ अनित्यबोध पद ११, ७३, ९४, १०० एकही चयनमे स्थान पबैत अछि। एहि भिन्न स्वरकें पाठसाक्ष्य बिना एक संप्रदायक कठोर घोषणामे बाँधब विद्यापतिक कवि-संसारकें छोट करब होएत।

माधवक नामक संग प्रेम आ भक्ति एक-दोसरमे प्रवेश करैत अछि। एकठाम प्रियक विलम्बित आगमन (३२), दोसर ठाम ‘अहे माधव’क पुकार (९०) धार्मिक आसरे लगैत अछि। आलोचनात्मक पढ़ाइमे देव-सम्बोधन, कथकक स्थिति, प्रेमक देहात्मकता आ समर्पणक स्वरक अलग-अलग संकेतक आधार पर अर्थ केनाइ उचित।

कवि-छाप आ राजाश्रयक संकेत पद ६४ आ ८६मे ध्यान आकर्षित करैत अछि। मुदा एहि मुद्रासँ ऐतिहासिक तिथि, विशिष्ट राजदरबार अथवा कविक निजी जीवन निश्चित केनाइ सम्भव नहि। आधुनिक शोधमे आन्तरिक पाठसाक्ष्यकें पाण्डुलिपि, प्राचीन टीका, राजकीय लेख तथा अन्य सम्पादित पाठक साक्ष्यसँ मिलान करबाक आवश्यकता रहत।

१०. सम्पादकीय शब्दार्थक गुण-दोष आ पाठ-समस्या

१०.१ सम्पादकीय संरचनाक उपयोगिता

सम्पादक प्रायः पदक बाद स्रोत-संकेत आ कठिन शब्दक अर्थ, तकर बाद ‘पाठ-अर्थ’ देल छथि (उदाहरण: पद १, मूल पृ. ९-१०; पद १२, पृ. २३; पद ३६, पृ. ५२-५३; पद ८८, पृ. ११३-११४)। एहि त्रिस्तरीय व्यवस्था सँ पाठक शब्द, कथ्य आ संदर्भक बीच जा सकैत छथि। चयन, अनुक्रमणिका आ अन्तिम स्रोत-सूची (पृ. १२८) पुस्तककें सामान्य लोकप्रिय संग्रहसँ अधिक उपयोगी अध्ययन-सामग्री बनबैत अछि।

१०.२ शब्दार्थ आ अर्थ-निर्णय

एक शब्दक अनेक प्रसंगानुकूल अर्थ होइत अछि। मधुकर, हरि, बरद, गाम, मान, सखि, सर, थिर, अग्नि सरीख पदावलीमे केवल कोशार्थ पर्याप्त नहि। शोधार्थी लेल उपयोगी प्रक्रिया ई अछि— पहिने मूल पंक्तिक व्याकरण आ वक्ता बुझू; दोसर, शब्दार्थ पढ़ू; तेसर, पाठ-अर्थमे जुड़ल नब कथात्मक विवरणक पहिचान करू; चारिम, वैकल्पिक अर्थक सम्भावना दर्ज करू।

१०.३ मुद्रित स्रोत-संकेत आ आलोचनात्मक संस्करणक अन्तर

कतेको पदक नीचाँ संक्षेपमे अन्य पुस्तक/पदावलीक सन्दर्भ देल अछि। पृ. १२८ पर संकेतनामक सूची सेहो अछि। ई आभारयोग्य सन्दर्भ-दर्शन थिक; मुदा मात्र ई सूचना हर पदक हस्तलिपि-पाठ, पाठान्तर, प्रामाणिकता आ हस्तक्षेपक विस्तृत आलोचनात्मक उपकरण नहि। विशेषतः पद ८८ जेहन लम्बा पाठ आ पद ८१ जेहन ध्वन्यात्मक पदक अक्षरानुक्रमक निर्धारण अन्य संस्करणसँ मिलान कएल बिना अन्तिम नहि मानल जा सकैत अछि।

१०.४ व्याख्याक सम्भावित विस्तार

‘पाठ-अर्थ’ कखनो मूल संक्षिप्त पदकें घटना, पात्रक कारण वा मनोवृत्तिक अधिक विस्तार देइत अछि। ई व्याख्याक एक परम्परागत पद्धति अछि, अनिवार्यतः त्रुटि नहि; मुदा पाठक लेल ई बोध आवश्यक जे ‘सखी ई सोचलक’ जेहन विस्तार मूल वचनसँ स्पष्ट अछि कि सम्पादकक अनुमान, से अलग प्रश्न थिक। ई शोध एहि भेदकें पुनःपुनः रेखांकित करैत अछि।

१०.५ स्त्री-स्वरक सम्पादकीय प्रस्तुति

संकलक स्त्री-केंद्रित दृष्टि संग्रहक महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक हस्तक्षेप अछि। एकरा मूल्याङ्कित करैत एकसंग दू सावधानी चाही: (१) नायिकाक आवाजकें गौण नहि कएल जाय; (२) सभ पदकें स्त्री-सशक्तिकरण अथवा स्त्री-पीड़ाक एक रंगमे बदलि नहि देल जाय। शिव-गौरी हास्य, राधा-माधव प्रेम, कवि-नीति आ राज-सन्दर्भ एहि जटिलताक प्रमाण अछि।

११. समग्र निष्कर्ष आ आगाँक शोधकार्य

कुणाल-सम्पादित ई चयन विद्यापति-काव्यकें पाठक समक्ष स्त्री-अनुभवक तीव्रता सँ प्रस्तुत करैत अछि। संग्रहक प्रथम सत्तर पद प्रेमिका, सखी, गृहस्थी, नैतिक अपेक्षा, विरह आ देवीक मानवीय संसारें विस्तृत अछि; अन्तिम तीस पदमे कविक आत्मस्वर, सौन्दर्य, नृत्य, वृन्दावन, भक्ति आ अनित्यबोधक विवेचन प्रखर होइत अछि। किन्तु खण्डक सीमा पार करैत भावसभक आवाजाही एकर वास्तविक सौन्दर्य अछि।

एहि शोधक एक महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष ई अछि जे विद्यापतिक कथक-स्वर बहुवचनात्मक अछि: कखनो नायिका स्वयं बोलैत छथि, कखनो सखी माध्यम छथि, कखनो कवि स्वर बदलैत छथि, कखनो हरि-माधव वा शिव-गौरीक मिथकीय क्षेत्र खोलैत छथि। ताहि लेल ‘प्रेमगीत’ कहि सभ एकरूप बनाओल नहि जाय। प्रकृति परस्पर विरोधी रस वहन करैत अछि, लोकभाषा उच्च काव्यगत अर्थ रचैत अछि, आ गीतक उच्चारण स्वयं अर्थक हिस्सा अछि।

सम्पादकीय अवदानकें सराहैतहुँ आलोचनात्मक समस्या स्पष्ट अछि: पाठ-अर्थक व्याख्यात्मक विस्तार आ मूल पदक साक्ष्य बीच अन्तरक सजगता आवश्यक। ई पोथी महत्त्वपूर्ण पाठ-प्रवेशद्वार अछि; अलग स्रोतक संग पाठान्तर-सूची बनलापर ई स्त्री-काव्य, रस-मीमांसा आ मध्यकालीन मैथिली भाषिक इतिहासक अधिक ठोस शोधक आधार भऽ सकत।

पाठभेदक विस्तृत अध्ययन लेल अलग-अलग सम्पादित पदावली आ पाण्डुलिपि-परम्पराक तुलनासँ नव प्रश्न उठैत अछि। छन्द, गायन-परम्परा, लोकप्रयोग आ स्त्री-वाणी पर केन्द्रित अध्ययन सेहो एहि चयनक अर्थकें विस्तार दए सकैत अछि।

१२. पदवार पृष्ठ-सूची आ आधार-सामग्री

एहि तालिकामे सभ १०० पदक मूल मुद्रित पृष्ठ-संख्या देल अछि, जाहिसँ पाठक मूल पोथी आ समीक्षा बीच तुरन्त मिलान कऽ सकथि। मुद्रित पृष्ठ ९-१२७मे कतेको पृष्ठ पर एके पदक शब्दार्थ/पाठ-अर्थ आगाँ बढैत अछि; तालिका पदक आरम्भ-पृष्ठ बतबैत अछि।

पद	पृष्ठ	पद	पृष्ठ	पद	पृष्ठ	पद	पृष्ठ
१	९	२६	४१	५१	६८	७६	९९
२	११	२७	४२	५२	६९	७७	१००
३	१२	२८	४३	५३	७०	७८	१०२
४	१४	२९	४४	५४	७२	७९	१०३
५	१६	३०	४५	५५	७३	८०	१०४
६	१७	३१	४६	५६	७४	८१	१०५
७	१८	३२	४७	५७	७६	८२	१०६
८	१९	३३	४८	५८	७८	८३	१०७
९	२०	३४	४९	५९	८०	८४	१०८
१०	२१	३५	५१	६०	८१	८५	११०
११	२२	३६	५२	६१	८२	८६	१११
१२	२३	३७	५४	६२	८४	८७	११२
१३	२४	३८	५५	६३	८५	८८	११३
१४	२५	३९	५६	६४	८६	८९	११५
१५	२७	४०	५७	६५	८७	९०	११६
१६	२८	४१	५८	६६	८८	९१	११७
१७	२९	४२	५९	६७	८९	९२	११८
१८	३०	४३	६०	६८	९०	९३	११९
१९	३२	४४	६१	६९	९१	९४	१२०
२०	३४	४५	६२	७०	९२	९५	१२१
२१	३५	४६	६३	७१	९३	९६	१२२

पद	पृष्ठ	पद	पृष्ठ	पद	पृष्ठ	पद	पृष्ठ
२२	३६	४७	६४	७२	९४	९७	१२३
२३	३८	४८	६५	७३	९६	९८	१२४
२४	३९	४९	६६	७४	९७	९९	१२६
२५	४०	५०	६७	७५	९८	१००	१२७

अध्याय २

रंगायन : मैथिली रंगचेतनाक आलोचनात्मक अध्ययन

लोकनाट्य, प्रदर्शन, भाषिक अस्मिता आ रंग-इतिहास

रंगायन : कुणाल

मूल ग्रन्थ : रंगायन (नाट्य आलोचना) | लेखक : कुणाल | प्रथम संस्करण : २०२३ | प्रकाशक : अंकिता प्रकाशन प्रा. लि. | ISBN : 978-93-91925-67-3

अध्ययनक प्रस्तावना

कुणालक ‘रंगायन’ मैथिली रंगमंचक बहुपक्षीय विमर्शकै एक ठाम अनबाक प्रयत्न अछि। पोथीमे नाच, लोकनाट्य, कीर्तनिया, सलेहेस, समकालीन भारतीय रंगचेतना, जननाट्य, लेखन, कथ्य, शिल्प, निर्देशक, दर्शक, संस्था, साहित्य आ रंगमंचक परस्पर सम्बन्ध विषयक आलेख संकलित अछि। अन्तिम भागमे बातचीत आ व्यक्ति-केन्द्रित लेख सेहो अछि। एहि संकलनक मूल महत्त्व ई अछि जे मैथिली रंगमंचकै केवल मुद्रित नाटकक इतिहासमे नहि, प्रदर्शन आ लोकजीवनक संगतिमे रखबाक प्रश्न बारम्बार सोझाँ अबैत अछि।

ग्रन्थक भूमिका, लेख-शीर्षक आ विषय-विन्यास एकरे भीतर रंगपरम्परा, आधुनिकता, भाषा आ रंगकर्मक परस्पर सम्बन्धक प्रश्न उठबैत अछि। अनुक्रमणिकाक क्रमक अनुसार प्रत्येक आलेखक विषयगत पक्ष आ ताहिसँ उपजैत आलोचनात्मक जिज्ञासाकै समेटल गेल अछि।

ग्रन्थ-विन्यास आ अध्ययन-पद्धति

अनुक्रमणिकामे मुख्य चार खण्ड अछि—‘नाच आ लोक नाट्य’, ‘समकालीन मैथिल रंगमंच’, ‘रंगमंच’, ‘बातचीत’। एहि चारू खण्डक सभ सूचीबद्ध उपशीर्षककें नीचे स्वतंत्र प्रविष्टि देल गेल अछि। आरम्भमे लेखकक भूमिका (मुद्रित पृष्ठ VII-VIII) आ अन्तमे मैथिली रंगमंचक भविष्य विषयक प्रविष्टि अछि। शीर्षक-सूचीमे छोट-छोट कविता आ प्रश्नात्मक शीर्षक सेहो अछि; ताहि लेल सभ गद्यकें एके विधाक रूपमे नहि पढ़ल गेल अछि।

भूमिका : लेखकक रंगधारणा

भूमिकामे लेखक रंगकर्मक दीर्घ अनुभव आ रंगचिन्तनक अविच्छिन्न सम्बन्धक विषय उठबैत छथि। नाटककें मंच-प्रक्रिया, अभिनय, लोकभाषा, संगठन आ समाजक सन्दर्भमे देखबाक आग्रह भूमिका आ आरम्भिक आलेखक बीच तन्तु बनबैत अछि। लेखक अपन अनुभवजनित प्रतिबद्धता स्वीकारैत छथि; आलोचकक दृष्टिसँ एहि आत्मस्थितिक शक्ति आ सीमा दुनू देखबाक चाही। अनुभव लेखनकें जीवन्त करैत अछि, मुदा इतिहास-संबन्धी सर्वसाधारण दावाक प्रमाण अलगसँ चाही।

चारू खण्डक सभ विषयक आलोचनात्मक विवेचन

नाच आ लोक नाट्य

01. मिथिलाक संस्कृति आ लोक नाट्य [मुद्रित पृ. 13]

विषय : लोक नाट्यकें सामुदायिक जीवन, भाषा, संस्कार आ उत्सवक अन्तर्सम्बन्धमे देखबाक आग्रह एहि आलेखक केन्द्र अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : लोकविधाक अध्ययनमे प्रदर्शनस्थल, सामाजिक सहभागिता आ मौखिक परम्पराकें पाठसँ पृथक् नहि कएल जा सकैत अछि।

02. नाच आ किरतनिया : स्वरूप आ संभावना [मुद्रित पृ. 21]

विषय : नाच आ कीर्तनिया परम्पराक सौन्दर्य आ रंगमंचीय सम्भावना विषय बनैत अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : कथा, गायन, अभिनय, संवाद आ सामूहिक अनुष्ठानक परस्परता एहि विधाक रूपक परीक्षणक प्रमुख आधार अछि।

03. लोक गाथाक नाट्य रूप [मुद्रित पृ. 25]

विषय : लोकगाथाक कथा-शिल्प आ नाट्यरूपान्तरणक प्रश्न उठाओल गेल अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : लोकगाथाकेँ नाटकमे फेरबा समय कथावाचक, गायक, पात्र, समय-परिवर्तन आ दर्शकीय सहभागिताक पुनर्संयोजन आवश्यक बनैत अछि।

04. संक्रमणक क्रम मे एक टा लोक नाट्य : सलेहेस नाच [मुद्रित पृ. 31]

विषय : सलेहेस नाचक रूपान्तरणकेँ सामाजिक-सांस्कृतिक संक्रमणक उदाहरण बनाओल गेल अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : लोकनायकक कथा, जातीय-सामाजिक स्मृति आ प्रदर्शनक बदलैत परिस्थिति बीच सम्बन्ध देखल जा सकैत अछि।

05. किरतनिया नाट्य [मुद्रित पृ. 36]

विषय : कीर्तनिया नाट्यक ऐतिहासिक परम्परा आ रंगात्मक स्वरूपक विवेचना अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : गीत, अभिनय, काव्य आ भक्तिक संगमक संग ऐतिहासिक दावाक स्रोत-परीक्षण आवश्यक अछि।

06. किरतनियाक अवयव [मुद्रित पृ. 40]

विषय : कीर्तनिया रूपक घटककेँ नामकरण, दल-संरचना, भाषा, प्रवेश आ प्रस्तुति आदि आधार पर वर्गीकृत कएल गेल अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : ई अंश अन्य सामान्य निबन्धसँ भिन्न; रंगप्रयोगक विशिष्ट अंग बुझबाक उपयोगी विश्लेषणात्मक ढाँचा दैत अछि।

समकालीन मैथिल रंगमंच

07. समकालीन भारतीय रंगमंच आ मैथिली [मुद्रित पृ. 47]

विषय : भारतीय रंगमंचक विविध आन्दोलनसँ मैथिली रंगमंचक सम्बन्ध आ अन्तर पर चर्चा अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : मुख्यधारा आ क्षेत्रीयताक सरल विरोधक स्थान पर प्रयोग, संस्थान, भाषा आ दर्शकक सम्बन्ध देखब उपयोगी अछि।

08. समकालीन मैथिली रंगमंच : स्थिति आ अपेक्षा (निर्देशक दृष्टि मे) [मुद्रित पृ. 50]

विषय : समकालीन रंगकर्मक अवस्था आ निर्देशकक अपेक्षासम्बन्धी प्रश्न अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : निर्देशकक कलात्मक स्वायत्तता, समूह-अनुशासन, अभ्यास आ संसाधनक सम्बन्ध आलोचनाक आधार अछि।

09. निजत्व आ मैथिली रंगमंच [मुद्रित पृ. 54]

विषय : मैथिली रंगमंचक निजत्व, अस्मिता आ अन्य रंगपरम्परासँ सम्बन्ध पर विमर्श अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : निजत्वकेँ केवल वेशभूषा अथवा उच्चारणमे नहि, सामाजिक अनुभव आ रंगभाषाक निर्माणमे देखबाक जरूरत अछि।

10. मैथिली रंगमंचक स्वरूप निर्धारण : संदर्भ जननाट्य [मुद्रित पृ. 59]

विषय : जननाट्यक परिप्रेक्ष्यमे रंगमंचक रूप आ सार्वजनिक उत्तरदायित्वक प्रश्न प्रस्तुत अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : जन-संवाद आ जनपक्षधरता संग कलाकारक स्वतन्त्रता आ नाट्यशिल्पक समन्वय महत्वपूर्ण अछि।

11. रंगमंच : साध्य, साधन आ धर्म [मुद्रित पृ. 64]

विषय : रंगमंचकेँ कला, संप्रेषण आ सामाजिक दायित्वक अनेक स्तर पर राखि विचार कएल गेल अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : साधन आ साध्यक भेदकेँ रंगप्रयोग, दर्शकक प्रत्युत्तर आ कलात्मक अनुशासनसँ जोड़ि देखब उचित अछि।

12. मैथिलीक नाटकक मैथिल प्रदर्शन हेबाक चाही [मुद्रित पृ. 73]

विषय : भाषायी रंगसत्ता आ स्थानीय अनुभवक प्रतिनिधित्वक प्रश्न उठैत अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : मैथिल प्रदर्शनक अर्थ रूढ़ संस्कृतिक चिह्नक प्रदर्शन नहि; जीवन-संवेदना आ भिन्न सामाजिक स्वरक सर्जनात्मक उपस्थिति होएबाक चाही।

13. नाट्य-प्रवृत्ति आ भाषाक रंगमंच [मुद्रित पृ. 77]

विषय : भाषायी रंगमंच आ नाट्यप्रवृत्तिक अन्तर्सम्बन्ध प्रमुख विषय अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : उच्चारित भाषा, देहभाषा, मंचीय लय आ स्थानीय बोलीक बहुलता पर ध्यान देब आवश्यक अछि।

14. रंगमंच : सत्य आ शिल्प [मुद्रित पृ. 80]

विषय : सत्यक रंगप्रतिनिधित्व आ शिल्पक स्वायत्तता बीच सम्बन्ध विषय बनैत अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : मंचक सत्य यथार्थक सीधा नकल नहि; नाट्यविन्यास आ अभिनयक माध्यमसँ निर्मित अनुभव अछि।

15. मैथिली नाट्यलेखन मे समाज-चेतना : 1960-1990 [मुद्रित पृ. 85]

विषय : निर्दिष्ट कालखण्डक नाट्यलेखन आ समाज-चेतनाक ऐतिहासिक सम्बन्धक अध्ययन अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : ऐतिहासिक निष्कर्ष लेल नाटक, प्रकाशन-वर्ष, प्रस्तुति आ आलोचनात्मक प्रतिक्रियाक अलग प्रमाण अपेक्षित अछि।

16. लेखन अभाव [मुद्रित पृ. 91]

विषय : नाट्यलेखनक अभाव अथवा अपर्याप्तताक समस्या पर प्रश्न अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : रचनाक संख्या, प्रस्तुतियोग्यता, प्रशिक्षण आ प्रकाशन-अवसरक अन्तर स्पष्ट केने बिना अभावक कारण तय नहि होइत अछि।

17. मैथिली रंगमंच पर कथ्यक प्रस्तुति [मुद्रित पृ. 96]

विषय : कथ्यक मंचानुकूल रचना आ प्रस्तुति विषय अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : पाठमे कथ्यक उपस्थितिसँ प्रदर्शनक प्रभाव सिद्ध नहि होइत; दृश्यगत क्रिया, समय, लय आ दर्शकक ग्रहणशीलता सेहो देखबाक चाही।

18. आधुनिक मिथिला मे रंगमंचक दशा-दिशा [मुद्रित पृ. 100]

विषय : आधुनिक मिथिलाक रंगपरिस्थिति आ भविष्यक दिशासम्बन्धी विमर्श अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : अभ्यास-स्थल, प्रशिक्षण, आर्थिक संरचना, दर्शक-निर्माण आ स्थानीय संस्था सभक प्रश्नकेँ कलात्मक बहससँ जोड़ब आवश्यक अछि।

19. कला आ मिथिला के कथा : विमर्श-भूमिका [मुद्रित पृ. 112]

विषय : मिथिलाक सांस्कृतिक स्थितिसँ कलाक सम्बन्ध पर विमर्शक भूमिका प्रस्तुत अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : कलाक सामाजिक जीवनसँ सम्बन्धकेँ केवल गौरवक भाषणक रूपमे नहि, आलोचनात्मक अनुसन्धानक विषय बनाओल जाय।

20. संदर्भ कथा : संस्कृति, अपसंस्कृति आ प्रबुद्ध लोक [मुद्रित पृ. 118]

विषय : संस्कृति आ अपसंस्कृतिक नैतिक विभाजन तथा प्रबुद्ध लोकक भूमिकापर तर्क अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : संस्कृतिक मूल्यांकनमे वर्ग, लोकसम्बन्ध, कलाक स्वतन्त्रता आ नैतिक अधिकारक दावाक आलोचनात्मक परीक्षण जरूरी अछि।

रंगमंच

21. मैथिली नाटक मे जन-जीवनक अभिव्यक्ति [मुद्रित पृ. 127]

विषय : जनजीवनक रंगमंचीय प्रतिनिधित्वक प्रश्न अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : लोकजीवनक मंचनकेँ लोकसामग्रीक संग्रह मात्र नहि; सामाजिक संघर्ष आ स्वरक जीवन्त पुनर्चना बुझबाक चाही।

22. मैथिली पत्रकारिता, साहित्य आ रंगमंच [मुद्रित पृ. 133]

विषय : साहित्य, पत्रकारिता आ प्रस्तुति बीच बौद्धिक संवादक सम्बन्ध अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : नाट्यसमालोचना आ समाचार-लेखनक भिन्न भूमिका रंगआन्दोलनक अभिलेखीकरणमे कतेक महत्वपूर्ण अछि, से प्रश्न उठैत अछि।

23. रंगमंच आ साहित्य : एक [मुद्रित पृ. 135]

विषय : नाट्यपाठ आ मंचीय कृतिक भिन्नता-साम्यक प्रश्न उठैत अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : नाटक साहित्यिक विधा सेहो अछि, मुदा रंगप्रयोगमे दृश्य, ध्वनि आ अभिनेता स्वतंत्र अर्थनिर्माण करैत छथि।

24. रंगमंच आ साहित्य : दू [मुद्रित पृ. 138]

विषय : पूर्ववर्ती बहसक दोसर पक्ष रंगविधा आ साहित्यक सम्बन्धकेँ विस्तारित करैत अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : दूनू लेखकें संयुक्त बहसक रूपमे पढ़बा संग अलग-अलग तर्कक परीक्षण अपेक्षित अछि।

25. रंगमंच आ साहित्य : रंगमंच [मुद्रित पृ. 140]

विषय : रंगमंचक स्वतन्त्र कलात्मक अस्तित्वकें केन्द्रमे रखैत चर्चा अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : मंचीय अर्थ-उत्पादनक सामूहिकता—लेखक, निर्देशक, अभिनेता, तकनीकी सहयोगी आ दर्शक—विशेष ध्यान माँगैत अछि।

26. नाट्य-प्रतियोगिता [मुद्रित पृ. 142]

विषय : प्रतियोगिताक भूमिका आ सम्भावित सीमा रंगसंगठनसँ जोड़ि देखल जा सकैत अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : पुरस्कारकें गुणात्मक मूल्यांकनक एकमात्र कसौटी नहि मानि दीर्घकालीन अभ्यास आ प्रयोगक मूल्य देखबाक जरूरत अछि।

27. पहिचानक प्रक्रिया [मुद्रित पृ. 145]

विषय : कलात्मक पहिचानक निर्माण एक दीर्घ प्रक्रिया होएबाक प्रश्न विषय अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : अस्मिता आ प्रयोगक बीच सहयोग अथवा तनावक सूक्ष्म परीक्षण आवश्यक अछि।

28. के? [मुद्रित पृ. 148]

विषय : लघु प्रश्नात्मक शीर्षक रंगसमीक्षामे कर्ता, पहचान वा उत्तरदायित्वक सम्भावित बहस खोलैत अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : शीर्षक मात्रसँ विशिष्ट कथ्य निश्चित नहि कएल जा सकैत; पूर्ण पाठक पंक्ति-स्तरीय मिलान एहि अंश लेल विशेष आवश्यक अछि।

29. नाट्य-स्वप्न आ विकल्प [मुद्रित पृ. 151]

विषय : रंगभविष्य, आकांक्षा आ व्यवहार्य विकल्पक सम्बन्ध विषय अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : आदर्शवादी संकल्पक सँग ओकर कार्यान्वयनक सामाजिक एवं संस्थागत शर्त देखल जाय।

30. नाटकक बहाने किछु 'नाटक' [मुद्रित पृ. 154]

विषय : नाट्यप्रयोग आ रंगसंस्कृतिक अंतर्विरोध पर विडम्बनात्मक आलोचनाक सम्भावना अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : शीर्षकक व्यंग्यार्थकेँ लेखकीय तर्कक विकल्प बनबैत निष्कर्ष नहि देबाक चाही।

31. मैथिली रंगमंच सँ अपेक्षा [मुद्रित पृ. 158]

विषय : रंगकर्मसँ अपेक्षा आ आवश्यक परिवर्तन विषय बनैत अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : अपेक्षाकेँ स्पष्ट कसौटी—लेखन, प्रस्तुति, दर्शक, संस्थान, प्रशिक्षण—मे बाँटि देखब फलदायी अछि।

32. रंगमंच-रंगत्व, मैथिली रंगमंच [मुद्रित पृ. 161]

विषय : रंगत्वक सौन्दर्यात्मक आ मैथिली रंगमंचक विशिष्ट प्रश्न आमने-सामने अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : रंगत्वक अर्थ अभिनय, मंच-समय, दृश्य-सम्बन्ध आ सामूहिक अनुभवक जटिल संयोजनसँ व्याख्यायित होइत अछि।

33. अपना रंग कथा [मुद्रित पृ. 166]

विषय : आत्मपरक रंगअनुभव आ रंगकर्मक कथा शीर्षकसँ संकेतित अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : अनुभवक व्यक्तिगत साक्ष्यकेँ सामान्य इतिहासक प्रत्यक्ष पर्याय नहि मानल जाय।

34. पमार : प्रत्येक समुदाय पारम्परिक नाट्य [मुद्रित पृ. 169]

विषय : समुदायविशेषक पारम्परिक रंगविधा विषयसूचीमे उल्लिखित अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : नाम आ पाठक सटीक वाचनक बाद सामाजिक उत्पत्ति अथवा विधागत विशेषतापर निश्चित दावा देब उचित होयत।

35. बुलेटिन भेट : रंगमंचक कविता-१ [मुद्रित पृ. 171]

विषय : रंगविषयक रचनात्मक काव्यात्मक उच्चारणक प्रथम शृंखला अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : एहि सामग्रीकेँ नाट्यनिबन्धक रूपमे नहि, कविता/लघु रचनाक अलंकार, स्वर आ रंगबिम्बक दृष्टिसँ देखबाक चाही।

36. बुलेटिन भेट : रंगमंचक कविता-२ [मुद्रित पृ. 176]

विषय : रंगविषयक काव्यात्मक शृंखलाक दोसर अंश अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : पूर्ववर्ती कवितासँ विषयगत सम्बन्धक संग स्वतंत्र पाठरूपक सावधानी जरूरी अछि।

37. बुलेटिन भेट : रंगमंचक कविता-३ [मुद्रित पृ. 185]

विषय : रंगकविताक तेसर अंश अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : प्रस्तुतिक सांकेतिक भाषा आ कविता बीच विधागत सीमा ध्यानमे राखल जाय।

38. बुलेटिन भेट : रंगमंचक कविता-४ [मुद्रित पृ. 193]

विषय : रंगकविताक चारिम अंश अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : हर अंशक अलग पाठ-अध्ययनसँ आवृत्ति, बदलाव आ अभिव्यक्तिक लय पकड़ल जा सकैत अछि।

39. बुलेटिन भेट : रंगमंचक कविता-५ [मुद्रित पृ. 202]

विषय : शृंखलाक पाँचम अंश अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : पाँचो रचनाकेँ गिना कऽ अध्ययनमे स्थान देब जरूरी; शृंखलाक अन्तिम संरचनाक निष्कर्ष लेल मूल पाठ मिलान अपेक्षित अछि।

बातचीत

40. सुधांशु शेखर चौधरीक नाटक [मुद्रित पृ. 213]

विषय : नाटक आ रंगकर्मसँ सम्बद्ध व्यक्तित्वपर केन्द्रित बातचीत अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : बातचीतक मत आ जीवनीगत तथ्यक बीच भेद रखैत वक्ता, प्रसंग आ प्रश्नोत्तरक रूपक परीक्षण उचित अछि।

41. जीवन-रंगमंच अपना : प्रकाश नाटकक जिनगी [मुद्रित पृ. 219]

विषय : जीवन-अनुभव आ रंगअनुभवक आपसी सम्बन्धक बातचीत अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : जीवनवृत्तात्मक कथनक ऐतिहासिक सत्यापनक लेल बाहरी अभिलेख स्वतंत्र देखबाक आवश्यकता अछि।

42. ओहो! श्रीकान्त जी! [मुद्रित पृ. 226]

विषय : श्रीकान्तजी विषयक स्मरण अथवा संवादात्मक सामग्री अनुक्रमणिकामे अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : संवादक आत्मीय स्वरकें सूचना, मूल्यांकन आ स्मृतिक अन्तरक संग पढ़बाक चाही।

43. पं. गोविन्द झाक नाटक मे लोक तत्व [मुद्रित पृ. 230]

विषय : पं. गोविन्द झाक नाटकमे लोक तत्त्वक उपस्थिति विचाराधीन अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : लोकतत्त्वक मूल्यांकन लेल कथानक, गीत, भाषा, पात्र आ रंगगत प्रयोगमे ओकर भूमिका अलग-अलग देखबाक चाही।

44. खेल आ नाच : रंगमंचिक नाट्य [मुद्रित पृ. 234]

विषय : खेल, नाच आ रंगमंचक सम्बन्धक प्रश्न पर अन्तर्विमर्श अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : खेलक स्वतःस्फूर्तता आ नाट्यरचनाक अनुशासन बीच पारस्परिकता उपयोगी आलोचनात्मक प्रश्न अछि।

45. मैथिली रंगमंचक भविष्य [मुद्रित पृ. 251]

विषय : ग्रन्थक अन्तिम विषय मैथिली रंगमंचक भावी सम्भावनासँ जुड़ल अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : अन्तिम अंशकें समग्र पोथीक रंगदृष्टिसँ जोड़ि संस्थागत तथा सर्जनात्मक सम्भावनाक कसौटीपर देखल जाय।

समेकित मूल्यांकन : कृति जे प्रश्न उठबैत अछि

लोकनाट्य आ आधुनिक नाट्यरूप

ग्रन्थक पहिल खण्ड लोकाभिनयकेँ किनारक मनोरंजन नहि मानि मैथिली रंगपरम्पराक मूल स्रोतक रूपमे बुझबाक अवसर दैत अछि। कीर्तनिया आ सलेहेस जकाँ रूपमाध्यमक सम्बन्ध मौखिक स्मृति, संगीत, भूमिका-निर्माण, सामाजिक संरचना आ दर्शकक सामूहिक सहभागितासँ अछि। ई सामग्री रंगइतिहासक एकरेखीय, केवल मुद्रित साहित्य-आधारित आख्यानकेँ प्रश्नांकित करैत अछि।

भाषिक अस्मिता आ रंगकर्म

मैथिली रंगमंचक विशिष्टताक खोजमे भाषिक अस्मिता केन्द्रीय विषय अछि। तथापि रंगमंचक भाषा केवल संवाद-भाषा नहि; मंचीय गति, ध्वनि, गीत, विराम, उच्चारण आ दर्शक-सम्बन्ध सेहो अछि। ‘निजत्व’क आग्रहकेँ सामाजिक विविधतासँ जोड़ल नहि गेल तँ अस्मिताक धारणा संकीर्ण भऽ सकैत अछि।

नाट्यपाठ आ प्रस्तुति

लेखकीय पाठ एकटा सम्भावना अछि; अभिनेता, निर्देशक, मंच-सज्जा, प्रकाश, ध्वनि, रिहर्सल आ दर्शकक समक्ष ओकर सम्पूर्ण रंगरूप बनैत अछि। साहित्यिक मापदण्डकेँ मंच-प्रक्रियाक स्वतन्त्र कसौटीक संग राखि देखब एहि संग्रहक बहसकेँ अधिक सुसंगत करैत अछि।

इतिहासक प्रमाण आ अनुभवक स्थान

ग्रन्थमे विभिन्न समयमे लिखल आलेख संकलित होएबाक कारण तत्कालीन सांस्कृतिक प्रश्नक परत उपस्थित अछि। अनुभवक प्राथमिक साक्ष्य मूल्यवान होइत अछि, मुदा पात्र, संस्था, तिथि आ प्रस्तुतिक दावाक निष्पक्ष इतिहास लिखबा लेल प्रदर्शन-सूची, पत्रिका, समीक्षा, नाट्यपाठ आ साक्षात्कारक मिलान आवश्यक अछि।

रंगसंस्था, प्रशिक्षण आ दर्शक

कला-संस्थाक अभाव वा सामर्थ्यक प्रश्नकेँ केवल कलाकारक इच्छाशक्तिसँ नहि समझल जा सकैत। अभ्यास-स्थल, आर्थिक संसाधन, दर्शक-संवाद, महिला आ नवोदित कलाकारक सहभागिता, नाट्यलेखनक प्रसार आ आलोचनात्मक अभिलेखसम्पदा सेहो ध्यानक विषय छथि।

आलोचनात्मक स्वर आ शैली

पुस्तकक आरम्भिक आलेख सभमे विचारप्रधान, प्रतिप्रश्नमूलक आ रंगकर्मक पक्षधर भाषिक स्वर देखाइत अछि। लोक आ शास्त्र, परम्परा आ आधुनिकता, कलाक सत्य आ प्रदर्शनक शिल्पक द्वन्द्वसँ आलोचनाक ऊर्जा बनैत अछि। मुदा मूल्यनिर्णयक प्रामाणिकताक लेल स्पष्ट उदाहरण आ विमर्शक प्रतिपक्षकेँ समान गंभीरतासँ राखब उपयोगी होयत।

संकलन-विधाक सीमा

विभिन्न समय आ प्रसंगक लेखकेँ एक जिल्दमे आनब सामग्रीक बहुलता दैत अछि, मुदा आवृत्ति, स्वरभेद आ अवधारणात्मक असंगति सम्भव अछि। एहि बिन्दुपर लेख सभक पूर्व-प्रकाशन-विवरण, रचनाक कालक्रम आ पाठभेदक तालिका तैयार कएने भविष्यक संस्करणक अकादमिक उपयोगिता बढ़त।

ग्रन्थक आलेख-सूची

मूल पोथीमे संकलित सभ ४५ आलेख आ विषयक नाम तथा हुनकर आरम्भिक मुद्रित पृष्ठाङ्क एहि सूचीमे देल गेल अछि।

क्रम	आलेख/विषय	पृष्ठ
1	मिथिलाक संस्कृति आ लोक नाट्य	13
2	नाच आ किरतनिया : स्वरूप आ संभावना	21
3	लोक गाथाक नाट्य रूप	25
4	संक्रमणक क्रम मे एक टा लोक नाट्य : सलेहेस नाच	31
5	किरतनिया नाट्य	36

क्रम	आलेख/विषय	पृष्ठ
6	किरतनियाक अवयव	40
7	समकालीन भारतीय रंगमंच आ मैथिली	47
8	समकालीन मैथिली रंगमंच : स्थिति आ अपेक्षा (निर्देशक दृष्टि मे)	50
9	निजत्व आ मैथिली रंगमंच	54
10	मैथिली रंगमंचक स्वरूप निर्धारण : संदर्भ जननाट्य	59
11	रंगमंच : साध्य, साधन आ धर्म	64
12	मैथिलीक नाटकक मैथिल प्रदर्शन हेबाक चाही	73
13	नाट्य-प्रवृत्ति आ भाषाक रंगमंच	77
14	रंगमंच : सत्य आ शिल्प	80
15	मैथिली नाट्यलेखन मे समाज-चेतना : 1960-1990	85
16	लेखन अभाव	91
17	मैथिली रंगमंच पर कथ्यक प्रस्तुति	96
18	आधुनिक मिथिला मे रंगमंचक दशा-दिशा	100
19	कला आ मिथिला के कथा : विमर्श-भूमिका	112
20	संदर्भ कथा : संस्कृति, अपसंस्कृति आ प्रबुद्ध लोक	118
21	मैथिली नाटक मे जन-जीवनक अभिव्यक्ति	127
22	मैथिली पत्रकारिता, साहित्य आ रंगमंच	133
23	रंगमंच आ साहित्य : एक	135
24	रंगमंच आ साहित्य : दू	138
25	रंगमंच आ साहित्य : रंगमंच	140
26	नाट्य-प्रतियोगिता	142
27	पहिचानक प्रक्रिया	145
28	के?	148
29	नाट्य-स्वप्न आ विकल्प	151
30	नाटकक बहाने किछु 'नाटक'	154

क्रम	आलेख/विषय	पृष्ठ
31	मैथिली रंगमंच सँ अपेक्षा	158
32	रंगमंच-रंगत्व, मैथिली रंगमंच	161
33	अपना रंग कथा	166
34	पमार : प्रत्येक समुदाय पारम्परिक नाट्य	169
35	बुलेटिन भेट : रंगमंचक कविता-१	171
36	बुलेटिन भेट : रंगमंचक कविता-२	176
37	बुलेटिन भेट : रंगमंचक कविता-३	185
38	बुलेटिन भेट : रंगमंचक कविता-४	193
39	बुलेटिन भेट : रंगमंचक कविता-५	202
40	सुधांशु शेखर चौधरीक नाटक	213
41	जीवन-रंगमंच अपना : प्रकाश नाटकक जिनगी	219
42	ओहो! श्रीकान्त जी!	226
43	पं. गोविन्द झाक नाटक मे लोक तत्व	230
44	खेल आ नाच : रंगमंचिक नाट्य	234
45	मैथिली रंगमंचक भविष्य	251

उपसंहार

‘रंगायन’क आलोचनात्मक महत्त्व ओकर विविध सामग्री आ प्रश्नोन्मुख रंगदृष्टिमे निहित अछि। लोकनाट्यक स्रोतसँ आधुनिक रंगमंचक अपेक्षा धरि, ई संग्रह मैथिली रंगकर्मकेँ कला, भाषा, समुदाय आ सार्वजनिक चिन्तनक संयुक्त क्षेत्रमे राखैत अछि। पाठक लेल ई विमर्श-मानचित्रक समान उपयोगी अछि; शोधकर्ता लेल ई प्राथमिक सामग्रीक मार्गदर्शक सेहो।

पद्य Poetry

२.१. अशोक कुमार ठाकुर-बिहारक बाढ़िक पुकार

२.२. राम शंकर झा "मैथिल"-हे कान्हा

२.३. संतोष कुमार राय 'बटोही'- जंतर- मंतर

२.४. आशीष अनचिन्हार- दू टा गजल

२.५. तेलुगु काव्य: काठक घोड़ा [मूल तेलुगु 'कोय्या गुर्रम'] मूल तेलुगु: नग्नमुनि (मानेपल्लि हृषीकेशवराव) मैथिली अनुवाद: मानेश्वर मनुज [खण्ड १२]

२.१. अशोक कुमार ठाकुर-बिहारक बाढ़िक पुकार



अशोक कुमार ठाकुर

बिहारक बाढ़िक पुकार

नेपाल दिससँ बरखा बरसल,
नदिया भेल विकराल।
गंडकक धार बढ़ैत गेल,
मचल गेल हाहाकार॥

वाल्मीकिनगर, बगहा दिस,
पानिक भेल प्रहार।
टूटल बाँधक धारसँ बहि,
डूबल गाम हाट-बजार॥

ककरो आँगन, ककरो खेत,
ककरो सपना बहि गेल।
मायक कोरामे बच्चा काँपय,
नयनक नोर बहि गेल॥

कोसी गरजल, कमला उमड़ल,
बलान भेल बेहाल।
उत्तर बिहारक धरती पूछय—
कखन थमत ई ज्वाल?

मुजफ्फरपुर दिस बढ़ैत पानि,
चहुँदिस हाहाकार।
लखीसराय, भागलपुर दिस,
मड़राय संकट-भार॥

जँ नदी सभ एक संग उमड़ल,
बढ़ि सकैत जलधार।
पूरब-पच्छिम, उत्तर-दक्खिन,
डगमग होय बिहार॥

नहि केवल घर-आँगन डूबय,
डूबय लोकक आस।
रोटी, छप्पर, खेत-बधारक,
टूटि रहल विश्वास॥

एहन घड़ीमे हाथ बढ़ाबी,
दुखियाक बनू सहारा।
बाढ़ि बहुत किछु लऽ जायत,
हिम्मत नहि हारय लोकक मन प्यारा॥

हे शासन आ हे समाज,
दुखियाक पुकार सुनू।
फँसल लोकक हाथ पकड़ि कऽ,
राहत शीघ्र पहुँचाउ॥

पाईन घटत, फेर धूप खिलत,
फेर हरियर होयत खेत।
बिहारक माटि फेर मुस्कायत,
फेर सजत जीवनक रीत॥

-अशोक कुमार ठाकुर; ग्राम-करमौली, पोस्ट-करमौली, थाना-खजौली, जिला-मधुबनी
(बिहार)मोबाइल नंबर:-8709568993, जनसेवा:-एस.डी.आर.एफ, मे कार्यरत सिपाही।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@zohomail.in पर पठाउ।

२.२. राम शंकर झा "मैथिल" - हे कान्हा



राम शंकर झा "मैथिल"

हे कान्हा

हे कान्हा अहाँ तऽ
चलि गेलहूँ
मुदा कि हअमरा मअन
सँ गेलहूँ
कान्हा आन्हाँ जतह
कतौह जायब
हअम अन्हाँ केँ प्रिय
ओतैय भेटव
हे कान्हा अहाँ!
आन्हाँ केँ जतेक रोंआंक
छिद्र अछि
ओहि सब छिद्र मे हअमर
नोर अछि

टुकुर टुकुर अन्हाँक
डेग निहोरैत छि
ज्यों विश्वास नहिं तऽ
उधो सँ पूछि लेब
हे कान्हा अहाँ!
सुतल रहि जागल रहि
अन्हाँक छवि
आहाँक वियोग मे
हअमर वज्र सन हृदय
मरूथल भेल
मुदा अन्हाँक पैजनियाक
रुनूर झुनूर
ई रुनूर झुनूर ऐना
उड़ा रहल
जेना हृदय सिमैर क
रुई
अन्हाँक वेणुक माधुर्य
रति सावन सन
हअमर वक्षस्थल हिय
टीस पअर टीस
हे कान्हा अहाँ!
मुदा कि हअमरा मअन
सँ गेलहूँ
हे कान्हा आन्हाँ तअ
चलि गेलहूँ.....!
अंघोळ मचल अछि
सर समांग

सङ्ग गाछी वृक्षी
कौआ मैना सुग्गा
सब केँ बकौर लागल
सभ के सभ निशब्द
एक दोसरां सँ कहि
रहल
हे कान्हा अहाँ!
हमरो आन अछि
हमरो गुमान अछि
ओहि यमुना के किछेर
जतह हमर छाति पर
आन्हाँक माथा
हमर केश ओझराएल
अहाँक बेणु
अहाँक मोरक पाँखि
हमरा वक्ष ऐना
गड़ेआ
जेना बाँग रुईया
बंगौरि
लोक समांगक
जीनगीक रक्षाक
लेल
गोबर्धन उठेलहूँ
अहाँक पाणि गोबर्धन
ताहि मे लागल
अहाँक केहूनि सोंगर
से सोंगर

हमर उरस्थल
हे कान्हा अहाँ..!
मुदा अहाँके धनि सन
गोबर्धनो सँ बेसी
भारि
की हम बेसी भारि
आ की गोबर्धन
लिअ हमहूँ गाँठि
बन्हि लेलहूँ
एक दू तीन
लगाउ बाजि
ज्यों जा सकि तऽ
हमरा मन सँ जाउ
ज्यों जा सकि तऽ
हमरा तऽन जाउ
तखन साबित होइत
अहाँ के पुरुखारऽत
हमरो आन अछि
हमरो गुमान अछि
मुदा कि हअमरा मऽन
सँ गेलहूँ
मुदा कि हअमरा रोम
सँ गेलहूँ
मुदा कि हअमरा
हृदय सँ गेलहूँ
हे कान्हा अहाँ तऽ
चलि गेलहूँ

चलि गेलहूँ....!!

-राम शंकर झा "मैथिल", उधरा, दरभंगा

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@zohomail.in पर पठाउ।

२.३. संतोष कुमार राय 'बटोही'- जंतर- मंतर



संतोष कुमार राय 'बटोही'

जंतर- मंतर

जे चुप छथि

ओ मरि गेल छथि

डरपोक मानल जेताह

सत्ताक केर अन्याय,

दमन, शोषण आओर मनमानी केँ

सहनिहार जनता इतिहास हंता कहल जेताह ।

सत्ता मे छी

तैं अहाँ अमर छी से नहि बुझियौ

मनुक्ख अमृत नहि पीने अछि

अहं खतम एक दिन होयत

औंधेला सँ आब नहि होयत

सब मिलि 'जन-मन-गण' गाउ ।

कतेक दिन धरि मुँह मे जाबी लागल रहतै ?

साँस कतेक दिन धरि रोकने रहबै ?

आब दम घुटि रहल अछि अहाँक

हाथ-पर-हाथ धरने नहि होयत

क्रांति करय पड़त आब

हिटलर केँ अपदस्थ करय पड़तै ।

बाढ़ि मे घर भसिया गेलै

महँगाई सँ माय दवाई बेगैर मरि गेलै

टाकाक बिना पढ़ैवाला घर बैठल छै

न्याय लेल बाबा दर-दर भटैक रहल छै

सभ दफ्तर मे सुरसा बैठल अछि

सभ योजना चुल्ही मे जरि गेलै ।

पेपर लीक !

शिक्षा के दफ्तर मे घुन लगलै

मंतरी-संतरी भेलै डकैत

भाई-भतीजावाद पुख्ता भेलै

मेहनतिया सभ बगुला जकाँ तकैत रहि गेलै

'सीट' तँ पहिनहि बिका गेलै ।

हुंकार भरि रहल अछि जवनका सभ

जंतर-मंतर बनल छै आखाड़ा

सुदि-मुरक सभ हिसाब हेतै

अई बेर नहि मानतै जनता

पै-पै केर जोड़-घटाव हेबे करतै
सत्ता अई बेर हिलबे करतै ।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@zohomail.in पर पठाउ।

२.४. आशीष अनचिन्हार- दू टा गजल



आशीष अनचिन्हार

दू टा गजल

१

ई बात बुझले रहै ई बात जनले रहै
जे दुश्मनक भीड़मे किछु लोक अपने रहै

आएल जहिया जखन आँगन अचानक कियो
किछु नोर पोछल रहै किछु नोर बचले रहै

मजबूर जीहो रहल मजबूर ठोरो रहल
किछु बात संगे रहै किछु बात अलगे रहै

ईहो तमाशा बहुत भेलै हमर देशमे
किछु लोक जागल रहै किछु लोक सुतले रहै

खरिहानमे खेतमे आँगन दलानो बुझू
किछु जीह कटले रहै किछु मूँह दबले रहै

सभ पाँतिमे २२१२-२१२-२२१२-२१२ मात्राक्रम अछि।

२

बसबिट्टी सन घनगर दुख
बाँसे सन छै नमहर दुख

गोपी बनि ललचाबै सभकेँ
ई टिकुला ई मज्जर दुख

हुनका हिस्सा सीसो सभ
हमरा हिस्सा पीपर दुख

हारल दुख हमरा भेटल
जीतल जीतल हुनकर दुख

बहुते दिन सुख लग रहितो
रहिए गेलै असगर दुख

सभ पाँतिमे २२-२२-२२-२२ मात्राक्रम अछि। दू अलग-अलग लघुकेँ दीर्घ मानबाक छूट
लेल गेल अछि। ई बहरे मीर अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@zohomail.in पर पठाउ।

२.५.तेलुगु काव्य: काठक घोड़ा [मूल तेलुगु'कोय्या गुर्रम'] मूल तेलुगु: नग्नमुनि (मानेपल्लि हृषीकेशवराव) मैथिली अनुवाद: मानेश्वर मनुज [खण्ड १२]

**तेलुगु काव्य: काठक घोड़ा [मूल तेलुगु'कोय्या गुर्रम' केर लेखक
छथि नग्नमुनि (मानेपल्लि हृषीकेशवराव)]**

मूल तेलुगु लेखक



नग्नमुनि एक परिचय

नाम: मानेपल्लि हृषीकेशवराव

जन्म: 15 मई 1940

जन्म स्थान: शहर- तेनाली, जिला- गुंटूर (आंध्र प्रदेश)

वृत्ति: चीफ ऑडिटर, आंध्र प्रदेश विधान सभा, तकर बाद डिप्टी सेक्रेटरी, ओतहि

लिंक: पहिने साम्यवादी (कम्युनिस्ट), बादमे राष्ट्रवादी (नेशनलिस्ट)

संस्था: अविभाज्यक जनतंत्र, 1990

आंदोलन: दिगम्बर कविता आन्दोलन 1965

लक्ष्य: नंगट, भूखल, दीन, दरिद्रक हित

कृति:

उदयिंचनि उदयलु (ओ उदय जे उदित नहि भेल)

पूर्वा हवा

जम्मि चेदु

विशेष: 1977 ई. मे बहुचर्चित काव्य- 'कोय्या गुर्रम' (KOYA-GURRAM), जकर अर्थ अछि- 'काठक घोड़ा', भाव- 'नकली सरकार'। 19 नवम्बर 1977, शनि दिन बंगालक खाड़ीमे पचास-साठि फुट ऊँच लहड़ि उमड़ि कऽ कृष्णा जिलाक दिविसीमा क्षेत्रकें डुबा कऽ नष्ट कऽ देलक। हजारो लोक मारल गेलाह। ई घटना काव्यक वस्तु बनल। विषय आ परिस्थितिसँ उपजल ई काव्य हिन्दी कवि मुक्तिबोधक 'अंधेरे में' क बराबरीक अछि।

मैथिली अनुवादक



नाम: मानेश्वर मनुज

जन्म: गाम- गम्हरिया (बेनीपट्टी) मधुबनी। जनवरी 1958 (प्रमाण पत्रक अनुसार)।

वृत्ति: भारतीय नौसेनामे तकनीकी सहायक, तकर बाद भारतीय रेलक वाणिज्य विभाग सँ (रिटायर्ड)।

कृति:

'सम्बन्ध', कथा संग्रह (मैथिली) 2007

'कि', कविता संग्रह (मैथिली) 2011

'परिवर्तन', कहानी संग्रह (हिन्दी) 2019

'बेघर', कविता संग्रह (हिन्दी) 2022

'तालाब', कहानी संग्रह (हिन्दी) 2024

अनुभव: विभिन्न भाषा सँ हिन्दी आ मैथिलीमे अनुवाद। हिन्दी आ मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे लेख, कविता, कथा, कहानी इत्यादि प्रकाशित।

अनुवादक टिप्पणी: अनेक तेलुगुमित्र, स्वयं नग्नमुनि जी, हिन्दी तथा अंग्रेजी मे अनुदित पुस्तकक मदति सँ दीर्घ काल तक मंथन कयलाक बाद अनुवाद कयल गेल अछि। ई नग्नमुनिक प्रसिद्ध कविता अछि। नग्नमुनि सँ लगातार हमर पत्राचार होइत छल। ओ अंग्रेजी आ तेलुगुक विद्वान छलथि। हुनक किछु पत्र देसिल-बयना, हैदराबाद मे छपल अछि। -मानेश्वर मनुज

सम्पादकीय टिप्पणी (खण्ड-१२)

ई कविता आधुनिक सभ्यताक विरुद्ध एकटा गंभीर आत्मस्वीकृति आ आत्ममंथनक स्वर लऽ कऽ अबैत अछि। एहि मे पीड़ा अछि, प्रश्न अछि, आ संगहि एकटा नव आरंभक संकल्प सेहो अछि।

आरंभिक पंक्तिक व्यंजना: कविताक प्रारंभ इसा मसीहक प्रसंगसँ होइत अछि। "अंतिम आमंत्रण" मे विश्वासघातक संकेत स्पष्ट अछि, मुदा कवि एकरा मात्र धार्मिक आख्यान नहि रहऽ दैत छथि। धोखा देनिहार के छल, ई प्रश्न एतऽ समयक सीमा तोड़ि कऽ सार्वकालिक भऽ जाइत अछि। दोसर पदमे "असली हत्यारा के?" ई प्रश्न जतबे व्यक्तिगत अछि ततबे सामूहिक सेहो। "दोख हम अपने पर मढ़ि लैत छी" पंक्ति कविताक नैतिक केन्द्र बनि जाइत अछि। एतऽ कवि अपराधबोधकें व्यक्तिक नहि, समस्त मानवताक दायित्वक रूपमे ग्रहण करैत छथि।

नकारक स्वर: मध्य खण्डमे "हमरा नैइ चाही" केर आवृत्ति एकटा मंत्रवत् लय रचैत अछि। रॉकेट, हवाई जहाज, रेल, मोटर गाड़ी, ई सभ प्रगतिक प्रतीक अछि, मुदा कविक दृष्टि मे ई जीवनक शान्ति आ मनुक्खक अंतर्मनसँ दूर लऽ जाइत अछि। "राजनीतिक तंतर-मंतर" आ "नागरिकताक भागमदौड़" मे समकालीन व्यवस्थाक प्रति तीक्ष्ण व्यंग्य अछि। ई नकार प्रगतिक विरोध नहि, प्रगतिक नामपर भेल मानवीय क्षरणक विरोध

अछि।

प्रतीक-योजना: "पाषाण युगक हथौड़ा" आ "इतिहासक अन्हार गुफा" मे वापसीक आकांक्षा अछि, मुदा ई पलायन नहि, पुनर्जन्मक लेल आवश्यक अवरोहण अछि। "काठक घोड़ा" निश्चित रूपसँ ट्रॉयक घोड़ाक स्मरण करबैत अछि, अर्थात् ओ छल जे सभ्यताक भीतर बैसल अछि आ ओकरा भीतरसँ नष्ट करैत अछि। ओकरा जरा कऽ भस्म करबाक संकल्प कविताक सभसँ सशक्त बिम्ब अछि।

समापनक आशा: अंतिम खण्डमे कविता ध्वंससँ सृजन दिस घुर्दैत अछि। "नव ईंधन," "नव सपना," "नव मूल्य," "नव विश्वास," ई सभ एकटा वैकल्पिक सभ्यताक रूपरेखा थिक। "सम्पूर्ण विश्व मे समाएवला चद्दैर" बुनि दीनहीन केँ ओढ़ा देबाक कल्पना करुणा आ सार्वभौमिक बन्धुत्वक सुन्दर प्रतीक अछि। एतऽ चद्दैर आश्रय, सम्मान आ समताक रूप धारण कऽ लैत अछि।

शिल्प-विषयक टिप्पणी: अनुवादक भाषा सहज, प्रवाहमय आ बोलचालक निकट अछि, जे एकर प्रभावकेँ बढ़बैत अछि। मुक्त छन्दक प्रयोग विषयक अनुरूप अछि।

निष्कर्ष: एहि कविता मे नैतिक चिन्ता, सभ्यता-समीक्षा आ मानवीय आशा तीनूक सुन्दर संतुलन अछि। इसा मसीहक संदर्भसँ आरंभ भऽ कऽ ट्रॉयक घोड़ा धरि पहुँचल एकर बिम्ब-यात्रा पाठककेँ सोचबाक लेल विवश करैत अछि। ई रचना विदेहक पाठकक लेल निश्चय मननीय सिद्ध होएत। - गजेन्द्र ठाकुर

नग्नमुनिक तेलुगु काव्य

'काठक घोड़ा' (कोया गुरम)

खण्ड-१२

इसा मसीह केँ बुझल छलनि कि

अंतिम आमंत्रण मे आखिर

हुनका धोखा के देलकनि।

हमरा बुझल अछि जे असली हत्यारा के:

मुदा दोख हम अपने पर मढ़ि लैत छी।

हमरा नैइ चाही रॉकेट
हमरा नैइ चाही हवाई जहाज
हमरा नैइ चाही जीवन कैँ
भ्रष्ट करऽवला राजनीतिक तंतर-मंतर
नैइ चाही रेल आ मोटर गाड़ी
नैइ चाही नागरिकताक भागमदौड़
पुरनका पाषाण युगक हथौड़ा लऽ
इतिहासक अन्हार गुफा मे जाएव
मनुक्खक लाश आ पशुक
अपने आप मे दफना लेव
काठक एहि घोड़ा कैँ जरा कऽ
भष्म कऽ देवऽवला
नव ईंधनक आविष्कार करव
नव सपना नव मूल्य
आ नव विश्वासक जन्म देव।

सम्पूर्ण विश्व मे समाएवला चद्दैर बुनि
सम्पूर्ण दिशाक दीनहीन कैँ
ओढ़ा देव
नव चद्दैर ओढ़ा देबै।

- मानेश्वर मनुज आदर्श नगर कॉलोनी गोशाला रोड मधुबनी पिन - ८४७२११ मो.
- ९९२०६७४८६१ / ७४६४०७७१०६

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@zohomail.in पर पठाउ।

अनुक्रमणिका / CONTENTS

विदेह अंक ४५१ [०१ अक्टूबर २०२६]

वर्ष १९ • ISSN 2229-547X • खण्ड २ क समस्त आलेख आ कविताक पृष्ठ-संकेत

०.१. अंक ४५० पर टिप्पणी

१

गद्य Prose

१.१.	हितनाथ झा- मैथिली साहित्यमे तारानाथ झा एवं हुनक परिवारक योगदान २९	३
१.२.	कल्पना झा- मैथिली साहित्यमे श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार' एवं हुनक परिवारक योगदान-१०	११
१.३.	लालदेव कामत- एखन बजबाक समय अछि : पाठकीय प्रतिक्रिया	१७
१.४.	प्रीति कुमारी- समकालीन भारतीय साहित्य पत्रिका अंक - २४६ वर्ष -४७, मास जुलाई-अगस्त २०२६ मादे	२०
१.५.	प्रणव कुमार झा- प्लास्टिकक बढ़ैत उपयोग, कचरा प्रबंधनक संकट आ विकल्पक खोज	२४
१.६.	आचार्य रामानंद मंडल-गोस्वामी बनाम ब्राह्मण/ मिथक बनाम चमत्कार	३७
१.७.	गजेन्द्र ठाकुर — ८२ टा चयनित कथा : आधुनिक साहित्यिक समीक्षा	४२
१.८.	गजेन्द्र ठाकुर — पाँच प्रतिशत अन्हार : विस्तृत आलोचनात्मक अध्ययन	८५
१.९.	गजेन्द्र ठाकुर — नित नवल वृषेश चन्द्र लाल	१२६
१.१०.	गजेन्द्र ठाकुर — नित नवल कमला चौधरी	३०८
१.११.	गजेन्द्र ठाकुर — नित नवल ललिता झा	३८२
१.१२.	गजेन्द्र ठाकुर — नित नवल वीरेन्द्र मल्लिक	४१३
१.१३.	गजेन्द्र ठाकुर — नित नवल योगानन्द झा	५३९
१.१४.	गजेन्द्र ठाकुर — नित नवल कुणाल	८९९

पृष्ठ-संख्या खण्ड २ के छपल पृष्ठाङ्क अनुसार अछि; मूल अध्ययन-पोथीसभक आन्तरिक पृष्ठाङ्क ओहिसँ भिन्न भऽ सकैत अछि।

पद्य Poetry

२.१.	अशोक कुमार ठाकुर-बिहारक बाढ़िक पुकार	८६८
२.२.	राम शंकर झा"मैथिल"-हे कान्हा	८७९
२.३.	संतोष कुमार राय 'बटोही'- जंतर- मंतर	८७५
२.४.	आशीष अनचिन्हार- दू टा गजल	८७७
२.५.	तेलुगु काव्य: काठक घोड़ा [मूल तेलुगु कोय्या गुर्रम] मूल तेलुगु: नन्नमुनि (मानेपल्लि हृषीकेशवराव) मैथिली अनुवाद: मानेश्वर मनुज [खण्ड १२]	८७९



www.videha.co.in
विदेह ई-पत्रिका • Videha e-Journal



videha-ejournal.github.io/videha
विदेह • GitHub Pages archive